

**TEXT PROBLEM
WITHIN THE
BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_196142

UNIVERSAL
LIBRARY

~~pt~~ vol D

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No M349.546 Accession No. 71433

Author M52V

Title

This book should be returned on or before the date last marked below

| | | | |
|--|--|--|--|
| | | | |
|--|--|--|--|

श्रीमन्महाभारत.

या ग्रंथाचें

मराठी सुरस भाषांतर.

पुस्तक पाचवें.

कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व आणि स्त्रीपर्व.

हा ग्रंथ

रा० रा० रामचंद्र भिकाजी दातार,

रा० रा० कृष्णाजी नीलकंठ द्रविड, एम. ए., व

रा० रा० यशवंत गणेश फफे,

यांनी लिहिला

आणि

बाळकृष्णशास्त्री उपासनी

यांनी तपासला.

प्रकाशक—गणेश विष्णु चिपळूणकर आणि मंडळी,
बुधवार पेठ, पुणे.

मुद्रक—रा० केशव रावजी गोंधळेकर, जगद्धितेच्छु छापखाना, पुणे.

(दुसरी आवृत्ति—शके १८३२ साधारणनाम संवत्सरे.)

हा ग्रंथ गणेश विष्णु चिपळूणकर आणि मंडळीचे व्यवस्थापक रा० बाळकृष्ण पांडुरंग ठक ' यांनी पुणे पेठ शनिवार येथील रा० रा० केशव रावजी गोंधळेकर यांच्या जगद्धितेच्छु छापखान्यांत छापवून पुणे पेठ बुधवार घर नंबर १५९ येथे प्राप्त केला.

(या पुस्तकाचे सर्व मालकी हक्क सन १८६७ च्या २५ व्या अक्काप्रमाणे नोंदून प्रकाशकांनी आपणाकडे ठेविले आहेत.)



नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

ज्या अखिलब्रह्मांडनायकाच्या लीलेने या जगाची यज्ञयावत्
कार्ये घडतात, ज्याच्या कृपेने ह्या अनिवार. मायामोहाचे
निरसन करितां येते व अल्पशक्ति जीवांना परमपद
प्राप्त करून घेतां यावे म्हणून जो त्यांस
बुद्धिसामर्थ्य देतो, त्या

परमकारुणिक

श्रीमन्नारायणाच्या चरणीं

त्याच्याच कृपेने पूर्ण झालेला हा ग्रंथ
अर्पण असो,

। शुभं भवत ।

(पहिली आग्रति.)

प्रकाशकांचे दोन शब्द.

‘ श्रीमन्महाभारताचें मराठी सुरस भाषांतर ’ या राष्ट्रीय ग्रंथाचीं जीं पुस्तकें प्रसिद्ध होत आहेत, त्यांपैकी हें पांचवें पुस्तक होय. यांत कर्ण, शल्य, सौप्तिक व स्त्री हीं पर्वें संपूर्ण आलीं आहेत. आमचे मंडळीचे मुख्य रा. गणेश विष्णु चिपळूणकर हे कैलासवासी झाल्या-मुळें, हा ग्रंथ आतां कशाचा निघतो असें पुष्कळांस वाटत होतें व अद्यापही वाटत आहे. त्याचें हें वाटणें अस्थानी नाही हें आम्ही प्रांजलपणें कबूल करितों. कारण, महाभारतासारख्या महत्कार्यांत संकटेंही महत् यावयाची. पण ज्या भगवंतांन हें जहान समुद्रांत लोटण्याची प्रेरणा केली, तोच तें पेलथडीस नेऊन लावील असा आमचा निश्चय आहे; पूर्ण करणारा तो समर्थ आहे. ‘ कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ’ या त्याच्या आज्ञेप्रमाणें आमचें काम प्रयत्न करण्याचें आहे; तें आम्ही करीत आहों; फलाविषयी आपण कशाला उगीच वाटघाट करीत बसा ’ तथापि, ज्यानें पांडवांस एवढ्या भयंकर संशयांतून—संकटांतून—मारामारीतून—जीवितसंशयांतून वांचवून यश संपादन करून दिलें, आणि ज्याच्या कृपेमुळेंच सर्वे संकटांतून उत्तीर्ण झालेल्या पांडवांस पुढें शांतपणें सुखाचा अनुभव घेतां आला, त्याच श्रीभगवंतांन आम्हासही सर्वे संकटांतून तारून पुढील शांतिमुखाचा—शांतिपर्वाचा—आस्वाद घेण्यास जिवंत ठेवून सामर्थ्य द्यावें, अशी आम्ही त्याची कर्तुणा भाकती. आतांपर्यंत आम्ही इतक्या भयंकर आणि अदृष्टपूर्व संकटांतून मार्ग क्रमीत आलों आहों कीं, एकवार सिंहावलोकन केलें असतां, ज्या संकटकंठकमय मार्गांतून आम्ही हा प्रवास केला, तो पाहून अंगावर रोमांच थरारून उभे रहातात ! आणि असें वाटतें कीं, एवढ्या भयंकर मार्गांतून आम्ही इतके दूर आलों तरी कसे ! अर्थात् भगवत्साहाय्यावांचून हें घडलें नाही; व पुढेही त्याचेंच साहाय्य भाकून मार्ग चालूं लागलों म्हणजे परतीरी पांचल्यावांचून रहाणार नाही ! मात्र कधी थोडाबहुत उशीर झाला तर आश्रयदात्यांनीं पूर्वप्रेमांत कमतरता होऊं देऊं नये एवढीच सप्रेम विनंती आहे, ती ते पूर्ण करतील आणि हस्त—नेत्र—दोषांविषयी क्षमा करतील, अशी आशा बाळगून आम्ही पुढील उद्योगास लागण्याकरितां आश्रयदात्यांची रजा घेतों.

विजयादशमी, शके १८२९.

व्यवस्थापक.

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|-------------------------------------------------------------------------|--------|----------------------------------------------------------------------------|--------|
| ५२ वा-सकुलयुद्ध. | १३५ | ७४ वा-अर्जुनाचे भाषण. | १९५ |
| ५३ वा-सशस्त्रकवध. | १३७ | ७५ वा-सकुलद्वन्द्वयुद्ध. | १९८ |
| ५४ वा-शिखंडीचा पराजय. सुकेतुवध. कृतवर्मा व धृष्टद्युम्न यांचे युद्ध. | १३९ | ७६ वा-भीमसेन व विशोक ह्यांचा सवाद. | १९९ |
| ५५ वा-अश्वत्थाम्याचा पराक्रम. | १४१ | ७७ वा-शकुनीचा पराभव. | २०२ |
| ५६ वा-संकुलयुद्ध. | १४३ | ७८ वा-कर्णाचा पराक्रम. | २०६ |
| ५७ वा-अश्वत्थाम्याची प्रतिज्ञा. | १५० | ७९ वा-शल्यकृत कर्णप्रोत्साहन. | २०८ |
| ५८ वा-कृष्णकृत समरभूवर्णन. | १५१ | ८० वा-सकुलयुद्ध. | २१४ |
| ५९ वा-अश्वत्थाम्याचा पराभव ! | १५३ | ८१ वा-संकुलयुद्ध. | २१६ |
| ६० वा-श्रीकृष्णाचे भाषण. | १५६ | ८२ वा-दुःशासन व भीमसेन ह्यांचे युद्ध. | २१९ |
| ६१ वा-सकुलयुद्ध. | १६० | ८३ वा-दुःशासनाचा वध ! | २२१ |
| ६२ वा-संकुलयुद्ध. | १६४ | ८४ वा-नकुलाचा पराजय. | २२४ |
| ६३ वा-धर्माचा पराभव ! | १६५ | ८५ वा-संकुलयुद्ध. वृषसेनाचा वध ! | २२७ |
| ६४ वा-धर्मराजाचा शोध. | १६७ | ८६ वा-श्रीकृष्णाचे उत्तेजनपर भाषण. | २३० |
| ६५ वा-युधिष्ठिर व कृष्णार्जुन ह्यांची भेट. | १७० | ८७ वा-कर्णार्जुनसमागम. | २३१ |
| ६६ वा-युधिष्ठिराचे भाषण. | १७१ | ८८ वा-अश्वत्थाम्याचा दुर्योधनास उपदेश. | २३६ |
| ६७ वा-अर्जुनाचे भाषण. | १७४ | ८९ वा-कर्णार्जुनांचे द्वैरथयुद्ध. | २३९ |
| ६८ वा-युधिष्ठिराचा क्रोध ! | १७५ | ९० वा-कर्णार्जुनयुद्ध. पार्थकिरीटपात ! कर्णाच्या रथाच्या चक्राचे प्रसन. | २४६ |
| ६९ वा-कृष्णकृत सत्यासत्यनिर्णय. धर्माधर्म विचाराचे मर्म. | १७८ | ९१ वा-कर्णाचा वध ! | २५४ |
| ७० वा-युधिष्ठिराचे सत्त्वन. | १८३ | ९२ वा-शल्येचे परत येणे. | २५८ |
| ७१ वा-अर्जुनाची प्रतिज्ञा. | १८६ | ९३ वा-कौरवसैन्याचे पलायन. | २५९ |
| ७२ वा-कृष्णाचे प्रोत्साहनपर भाषण. | १८८ | ९४ वा-रणभूमीचे वर्णन. | २६३ |
| ७३ वा-कृष्णकृत अर्जुनपराक्रमवर्णन, अर्जु- नाला उत्तेजन. | १९० | ९५ वा-शिविरप्रयाण. | २६८ |
| | | ९६ वा-युधिष्ठिराचा हर्ष. कथामाहात्म्य. | २६९ |

शल्यपर्व.

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|--------------------------------------------|--------|------------------------------------|--------|
| शल्यसैनापत्याभिषेकपर्व | | ८ वा-व्यूहरचना. | २१ |
| पाहिला-मंगलाचरण. धृतराष्ट्राचा प्रमोह. | १ | ९ वा-सकुलयुद्ध. | २३ |
| दुसरा-धृतराष्ट्राचा विलाप. कथाप्रस्ताव. | ४ | १० वा-संकुलयुद्ध. | २६ |
| तिसरा-कौरवाच्या सैन्यांची पळापळ. | ८ | ११ वा-भीमसेन व शल्य ह्यांचे युद्ध. | २९ |
| चौथा-कृपाचार्याचे भाषण. | ११ | १२ वा-संकुलयुद्ध. | ३२ |
| ५ वा-दुर्योधनाचे भाषण. | १८ | १३ वा-शल्येचे युद्ध. | ३६ |
| ६ वा-शल्येभिषेकविचार. | १७ | १४ वा-सकुलयुद्ध. | ३८ |
| ७ वा-शल्यसैनापत्याभिषेक. युधिष्ठिरोत्तेजन. | १९ | १५ वा-सकुलयुद्ध. | ४० |

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय | पृष्ठ. |
|---------------------------------------------|--------|-----------------------------------------------|--------|
| १६ वा-शल्य व युधिष्ठिर ह्यांचे युद्ध. | ४३ | ४० वा-सारस्वतोपाख्यान | ११५ |
| १७ वा-शलयाचा वध! | ४६ | ४१ वा-सारस्वतोपाख्यान. | ११६ |
| १८ वा-संकुलयुद्ध. | ५२ | ४२ वा-सारस्वतोपाख्यान. | ११८ |
| १९ वा-संकुलयुद्ध. | ५४ | ४३ वा-सारस्वतोपाख्यान. | १२० |
| २० वा-शालवाचा वध. | ५८ | ४४ वा-कुमाराभिषेकोपक्रम. | १२२ |
| २१ वा-सात्यकि व कृतवर्मा ह्यांचे युद्ध. | ६० | ४५ वा-स्कंदाभिषेक. | १२४ |
| २२ वा-संकुलद्रुंयुद्ध. | ६१ | ४६ वा-तारकाचा वध. | १२८ |
| २३ वा-संकुलयुद्ध. | ६४ | ४७ वा-सारस्वतोपाख्यान. | १३३ |
| २४ वा-अर्जुनाचा पराक्रम. | ६८ | ४८ वा-बदरपाचनतीर्थवर्णन. | १३४ |
| २५ वा-संकुलयुद्ध. | ७२ | ४९ वा-इंद्रतीर्थादिवर्णन. | १३७ |
| २६ वा-धृतराष्ट्राच्या अकरा पुत्रांचा वध. | ७५ | ५० वा-जैगीपर्ववृत्तांत. | १३८ |
| २७ वा-सुदर्शन व सुशर्मा यांचा वध. | ७७ | ५१ वा-सारस्वतोपाख्यान. | १४१ |
| २८ वा-शत्रुनि व उलूक ह्यांचा वध. | ७९ | ५२ वा-वृद्धकन्याख्यान. | १४३ |
| | | ५३ वा-कुरुक्षेत्रमाहात्म्य. | १४४ |
| ऋद्धप्रवेशपर्व. | | ५४ वा-सारस्वतोपाख्यानसमाप्ति. | १४५ |
| २९ वा-दुयाधनाचा ऋद्धप्रवेश. | ८४ | ५५ वा-समतपचक्रगमन. | १४७ |
| गदायुद्धपर्व. | | ५६ वा-गदायुद्धारंभ. | १४९ |
| ३० वा-दुर्योधनाचा जोध. | ८९ | ५७ वा-गदायुद्ध. | १५१ |
| ३१ वा-सुर्योधनयुधिष्ठिरसंवाद. | ९२ | ५८ वा-दुर्योधनवध ! | १५५ |
| ३२ वा-युधिष्ठिरसुर्योधन संवाद. | ९५ | ५९ वा-युधिष्ठिरविलाप ! | १५७ |
| ३३ वा-भीमदुर्योधनाची युद्धाची तयारी. | ९९ | ६० वा-बलदेवक्रोधसात्वत. | १५९ |
| ३४ वा-बलरामाचे आगमन. | १०१ | ६१ वा-पांडव व कृष्ण आणि दुर्योधन यांचा संवाद. | १६२ |
| ३५ वा-बलदेवतीर्थयात्रा, प्रभासोत्पत्ति-कथन. | १०२ | ६२ वा-अर्जुनरथज्वलन ! वासुदेवप्रेषण. | १६५ |
| ३६ वा-त्रिताख्यान. | १०६ | ६३ वा-धृतराष्ट्र व गांधारी यांचे संवदन. | १६६ |
| ३७ वा-सारस्वतोपाख्यान. | १०८ | ६४ वा-दुर्योधनाचा विलाप ! | १७० |
| ३८ वा-सप्तसारस्वतवर्णन. | १११ | ६५ वा-अश्वत्थाम्यास सैन्यापत्याचा अभिषेक. | १७३ |
| ३९ वा-सारस्वतोपाख्यान. | ११३ | | |

सौप्तिकपर्व.

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|------------------------------------------|--------|-----------------------------------------------|--------|
| सौप्तिकपर्व. | | चाथा-कृपाचार्योच भाषण अश्वत्थाम्याचा कोप. | ८ |
| पहिला-मंगलाचरण. उल्लेखोपदेशग्रहण. | १ | ५ वा-शिविरद्वारा आगमन. | १० |
| दुसरा-कृपाचार्याचा अश्वत्थाम्याला उपदेश. | ५ | ६ वा-महद्भूतदर्शन. अश्वत्थाम्याचा पश्चात्ताप. | १२ |
| तिसरा-अश्वत्थाम्याची मसलत. | ७ | | |

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|----------------------------------------------------------|--------|
| ७ वा-अश्वत्थाम्याचें ईशस्तवन. शंकराच्या गणाचें दर्शन. अश्वत्थाम्यास शिव-दर्शन व खड्गप्राप्ति ! | १४ | ११ वा-भीमाचे मणिहरणार्थ गमन. | ३० |
| ८ वा-रात्रियुद्ध व सर्वसंहार ! | १८ | १२ वा-अश्वत्थाम्याचा एक अविचार ! | ३२ |
| ९ वा-दुर्योधनाला सौप्तिककथन. दुर्योधन-प्राणत्याग ! | २५ | १३ वा-अश्वत्थामकृत अस्त्रप्रयोग. | ३४ |
| १० वा-युधिष्ठिराचा शोक ! | २९ | १४ वा-अर्जुनकृत अस्त्रप्रयोग. | ३५ |
| | | १५ वा-अर्जुनकृत अस्त्रोपसंहार. | ३५ |
| | | १६ वा-अश्वत्थाम्याला कुण्णशाप. मणि-हरण व द्रौपदीसांत्वन. | ३७ |
| | | १७ वा-कुण्णकथित शिवमाहात्म्य. | ३९ |
| | | १८ वा-कुण्णकथित शिवमाहात्म्य. | ४० |

स्त्रीपर्व.

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|--------------------------------------|--------|--------------------------------------------------------|--------|
| जलप्रदानिकपर्व. | | स्त्रीविलापपर्व. | |
| पहिला-मगलाचरण. धृतराष्ट्राचा शोक. | | १७ वा-गांधारीचा दुर्योधनाविषयी विलाप ! | २६ |
| सजयकृत धृतराष्ट्रसांत्वन. | | १८ वा-गांधारीचा दुःशासनादिकांविषयी विलाप ! | २८ |
| दुसरा-विदुरकृत धृतराष्ट्रसांत्वन. | ४ | १९ वा-गांधारीचा विकर्णादिकांविषयी विलाप ! | २९ |
| तिसरा-धृतराष्ट्रविशोककरण. | ६ | २० वा-गांधारीचा अभिमन्यूविषयी विलाप ! | ३० |
| चौथा-भूवोत्पत्त्यादिकथन. | ८ | २१ वा-गांधारीचा कर्णाविषयी विलाप ! | ३२ |
| ५ वा-संसाररूपक. | ९ | २२ वा-गांधारीचा जयद्रथाविषयी विलाप ! | ३३ |
| ६ वा-रूपकाचा स्पष्टार्थ. | १० | २३ वा-गांधारीचा भीष्मद्रोणादिकांविषयी विलाप ! | ३४ |
| ७ वा-संसारनिवृत्त्यर्थ तत्त्वोपदेश. | ११ | २४ वा-गांधारीचा भूरिश्रव्याविषयी विलाप. | ३६ |
| ८ वा-व्यासांचा उपदेश. | १२ | २५ वा-गांधारीचा शोकातिरेक. गांधारीचा श्रीकृष्णास शाप ! | ३७ |
| ९ वा-विदुराचें सांत्वनपर भाषण. | १४ | श्राद्धपर्व | |
| १० वा-धृतराष्ट्र निर्गमन. | १५ | २६ वा-और्ध्वदेहिक. | ४० |
| ११ वा-ऋषि द्रौणि-भोज-दर्शन. | १७ | २७ वा-कर्णगूढजत्वकथन. | ४२ |
| १२ वा-लोहभीमभंग ! | १८ | | |
| १३ वा-धृतराष्ट्रकोपविमोचन. | १९ | | |
| १४ वा-व्यासकृत गांधारीसांत्वन. | २० | | |
| १५ वा-गांधारीकोपशमन. पृथापुत्रदर्शन. | २१ | | |
| १६ वा-गांधारीस रणभूदर्शन. | २४ | | |

चित्रांची सूचि.

पृष्ठ.

कर्णपर्व.

- १ बुद्धिमान् भीमसेन दुःशासनाच्या रक्ताची रुचि घेउन क्रोधमुद्रें
आसमंताद्वागी अवलोकन करीत म्हणाला. २२३
- २ “ हे महाधनुर्धरा पार्था, क्षणभर थांब! हें भूमीत रुतलेलें चक्र मला
वर काढूं दे! ” २५४

शल्यपर्व.

- ३ त्याला बाहेर निघालेला पाहून.....त्यांनीं एकमेकांचे हातांवर
हात मारिले. ९७
- ४ त्यानें डाव्या पायानें दुर्योधनाचे मस्तकावर लाथ मारिली. १५८
- ५ अर्जुन म्हणाला, “ गोविंदा, हे भगवन्, हा रथ अग्नीवांचून
कसा जळला ’ ” १६५
- ६ कृपाचार्यांनी राजाज्ञेवरून अश्वत्थाम्यास सैन्यापत्याभिषेक केला. १७४

सौप्तिकपर्व.

- ७ उलूकोपदेशग्रहण. १
- ८ अश्वत्थाम्याने त्यावर दिव्य अस्त्रांची वृष्टि केली. १३

स्त्रीपर्व.

- ९ श्रीकृष्णानें हातांनी भीमास मागे ढकलून भीमाचा लोखंडी
पुतळा पुढें केला! १८



श्रीमन्महाभारत.

कर्णपर्व.

(उपपर्व नार्हा)

अध्याय पहिला.

मंगलाचरण.



नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयगुदीरयेत् ॥

ह्या अग्निल ब्रह्मांडांतील यच्चयावत् स्थावर-जंगम पदार्थांच्या ठिकाणी चिदाभामरूपानें प्रत्ययास येणारा जो नरसंज्ञक जीवात्मा, नर-संज्ञक जीवात्म्यास मदासर्वकाल आश्रय देणारा जो नारायण नामक कारणात्मा, आणि नर-नारायणात्मक कार्यकारण सृष्टीहून पृथक् व श्रेष्ठ असा जो नरोत्तमसंज्ञक सच्चिदानंदरूप पर-मात्मा, त्या सर्वांस मी अभिवंदन करितों; तसेंच, नर, नारायण व नरोत्तम ह्या तीन तत्त्वांचें यथार्थ ज्ञान करून देणारी देवी जी सरस्वती, तिलाही मी अभिवंदन करितों; आणि त्या परमकारुणिक जगन्मातेनें लोकहित करण्याविषयीं माझ्या अंतःकरणांत जी स्फूर्ति उत्पन्न केली आहे, तिच्या साहाय्यानें ह्या भव-बंधविमोचक जय म्हणजे महाभारत ग्रंथाच्या कर्णपर्वीस आरंभ करितों, प्रत्येक धर्मशील पुरु-

षानें सर्वपुरुषार्थप्रतिपादक अशा शास्त्राचें विवे-चन करितांना प्रथम नर, नारायण आणि नरो-त्तम ह्या भगवन्मूर्तींचें ध्यान करून नंतर प्रति-पाद्य विषयाचें निरूपण करण्यास प्रवृत्त व्हावें हें सर्वयैव इष्ट होय.

दुर्योधनादिकांचें अश्वत्थाम्याकडे गमन.

वेशपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, द्रोणाचार्यांचा वध झाल्यानंतर दुर्योधन व कौरव पक्षाचे इतर राजे मोठ्या उद्विग्न मनानें द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ह्याजकडे गेले. तेथें गेल्या-वर त्यांचा शोक अनावर होऊन त्यांचें धैर्य अगदींच खचलें, व ते दुःखार्त होऊन आचार्या-विषयी शोक करीत अश्वत्थाम्याच्या भोव-ताली बसले. नंतर कांहीं वेळपर्यंत त्यांनीं शास्त्रवचनांचा विचार करून चित्ताचें स्वास्थ्य पुनः संपादितें; आणि प्रदोषकाळीं ते सर्व

भूपाल आपआपल्या मुक्कामास परत गेले. राजा, ते जरी आपआपल्या स्थानीं परत गेले, तरी, आतां पुढें मोठा क्षय होणार, असें त्यांच्या मनांत वारंवार येऊं लागले; व ते दुःखानें अगदीं विव्हाल होऊन त्यांस रात्री झोंप आली नाही. दुर्योधनराजा. मृतपुत्र कर्ण, दुःशामन व महाबल शकुनि हे तर विशेषच चिंताक्रांत झाले. त्या रात्रीस कर्ण, दुःशामन व शकुनि हे आपल्या ठाण्यांत न जातां दुर्योधनाच्या तंबूतच राहिले. त्यांनी उदारधी पांडवांना जे क्लेश दिले होते, ते त्यांच्या मनांत एकसारखे घोलत होते. आपण धृतांत द्रौपदीच्या दुःख देऊन तिला सभेंत ओढून आणिलें. ही गोष्ट त्यांच्या चित्ताला अतिशय ग्वाळू लागली, आणि त्यामुळें त्यांचें मन अत्यंत दुःखानें व्याकूल झालें. राजा, कपटधृतानें पांडवांस दिलेल्या वनवासादि क्लेशांचें व कचकर्षणादिक द्रौपदीच्या यातनांचें त्यांना त्या रात्रीस एकसारखे स्मरण होऊन कांहीं केल्या. चैन पडेना व त्या चिंतेनें त्यांना ती रात्र शंभर वर्षांइतकी लांबच लांब वाटली !

दोन्ही सैन्यांचें युद्धार्थ निर्गम .

राजा, नंतर एकदांचा प्रभातकाल प्राप्त होऊन स्वच्छ उजेड पडला; तेव्हां सर्वांनी वर्णाश्रमधर्मास अनुसरून आवश्यक अशी नित्य कर्मे यथाविधि आटोपिली. नित्यकर्में केल्यावर त्यांनी पुनः चित्ताची एकाग्रता करून कर्तव्या-कर्तव्यविचार ठगविला; आणि सैन्याची सिद्धता करून व कर्णाम सेनापति नेमून त्याच्या हातांत मंगलकंकण बांधिलें; मग त्यांनी मोठ-मोठ्या ब्राह्मणांची दधिपात, घृत, अक्षता इत्यादिकांनी पूजा केली; आणि त्यांस गार्ह, षोडे, सुवर्णाचे अलंकार, उंची वस्त्रे वगैरे देऊन पौराणिक, मागध, स्तुतिपाठक इत्यादिकांकून विनयप्राप्तीविषयी आशीर्वाद मिळत

असतां ते सर्वजण युद्धार्थ बाहेर पडले. इकडे पांडवही पौराणिक क्रिया आटोपून युद्धार्थ सिद्ध झाले व तात्काळ आपआपल्या ठाण्यांतून निघाले. जनमेजया, नंतर कौरव व पांडव ह्यांच्या सैन्यांचें मोठें तुमुल युद्ध सुरू झालें. ती दोन्ही दळे परस्परांना जिंकण्याच्या ईर्ष्येनें एकमेकांवर इतकी तटून पडली की, त्यांचें तें निकराचें रण पाहून अंगावर कांटा उभा राहिला ! राजा, कर्णाकडे मैनापत्य असतां त्या कौरवपांडवांचें तें अद्भुत युद्ध दोन दिवस एकसारखें चाललें होतें. त्यांत कर्णानें शत्रूसैन्याचा अतिशय विध्वंस केला; परंतु अखेरीस धृतराष्ट्रपुत्रांच्या समक्ष अर्जुनानें कर्णाम ठार मारिलें ! नंतर संजय लागलाच हस्तिनापुरास गेला व त्यानें रणभूमीवर घडलेलें सर्व वृत्त धृतराष्ट्राजाम निवेदन केलें.

जनमेजयाची पृच्छा.

जनमेजय म्हणाला :— हे द्विजवर्षा, ज्याला गंगापुत्र भीष्म पडल्याचें वर्तमान ऐकून व त्याप्रमाणेंच महारथ द्रोणांचा वधवृत्तांत श्रवण करून दुःसह दुःख झालें, त्या वृद्ध धृतराष्ट्राला कर्णाच्या मरणाचें वर्तमान समजलें तेव्हां त्याची काय अवस्था झाली असेल बरें ! महा-मुने, कर्ण हा दुर्योधनाच्या हिताकरितां नित्य झटत असे. धृतराष्ट्राची सर्व भिस्त काय ती कर्णावरच होती. कर्ण सेनापति झाला म्हणजे खचीत आपल्या पुत्रांस विजय मिळेल, असा धृतराष्ट्रामोठा भरंवसा होता. तेव्हां कर्णवध श्रवण करून धृतराष्ट्र निवंत कसा राहिला, हेंच मला आश्चर्य वाटतें. ज्या अर्थी कर्णाच्या वधाची वार्ता ऐकून धृतराष्ट्रानें प्राण सोडिला नाही, त्या अर्थी, मनुष्यांना कितीही संकट प्राप्त झालें तरी त्या संकटांत दुःखावेगानें मरून जाणें त्यांच्या हातीं नाही, असें माझे मत आहे. हे ब्रह्मवर्षा, वृद्ध शांतनव

भीष्म, त्याप्रमाणेच बालहीक, द्रोण, सोमदत्त, भूरिश्रवा, तसेच दुसरे आसमुहद् व पुत्रपौत्र ह्या सर्वांचे वधवृत्त श्रवण करूनही धृतराष्ट्र पुनः जिवंत राहिलाच; तेव्हां प्राणत्याग करणे हे दुष्कर होय. ह्यांत संदेह नाही. ह्यास्तव, हे द्विजश्रेष्ठा, हे सर्व वर्तमान सविस्तर प्रकारें मला निवेदन करावे. आपल्या पूर्वजांचा तो श्रेष्ठ इतिहास कितीही श्रवण केला तरी माझी तृप्ति होत नाही.

अध्याय दुसरा.

—०:—

धृतरा व संजय ह्यांचा संवाद.

वैशंपायन भांगतात:—राजा जनमेजया, कर्ण पतन पावल्यावर राज्ञीम गवल्गणाचा पुत्र संजय हा अत्यंत दीन होत्समाता वायुवेगानें अश्व चालवून हस्तिनापुरास प्राप्त झाला. तेथे पोहोचल्यावर तो अतिशय विव्र मनानें धृतराष्ट्राच्या सदनीं गेला. राजा, त्या समर्थी धृतराष्ट्राच्या घरीं फारशी आसस्वकीयांची गर्दी नव्हती. धृतराष्ट्राच्या ममीप जाऊन संजयानें अवलोकन केलें तों, तो चिनेन व दुःखानें त्रस्त होऊन अगदीं हताश झाला आहे, असे त्यास आढळलें. नंतर त्यानें हात जोडून धृतराष्ट्र राजाच्या पायांवर मस्तक ठेविलें, आणि नेहमीच्या रितीप्रमाणें त्याची पूजा करून ‘अरेरे!’ असे उद्गार काढिले व त्यास ह्मटलें, “राजा, मी संजय आहे. तूं खुशाल आहेसना? अरे, स्वतांच्या अपराधांनीं तूं आपणाम संकटांत घालून घेतलें असून अद्यापि तुझी चित्तवृत्ति चांगली आहेना? विदुर, द्रोण, भीष्म, केशव ह्यांनी तुला पुष्कळ हिताच्या गोष्टी सांगितल्या, पण त्या सर्व तुजपुढें व्यर्थ झाल्या; तेव्हां त्यांच्या स्मरणानें तुला पश्चात्ताप होत नाहीना? तसेंच,

राजा. परशुराम, कैशव, नारद वगैरे पुष्कळ थोर पुरुषांनीं, तुझे हित कशांनें होईल, हे तुला सभेमध्ये विशद करून सांगितलें, पण तूं त्याचा अंगीकार केला नाहीस, तेव्हां आतां त्याच्या चित्तनानें तुझ्या मनास दुःख होत नाहीना? बरे! राजा, तुझ्या हिताकरितां झटत असलेले भीष्म-द्रोण आदिकरून तुझे आस व सुहृद् युद्धामध्ये शत्रूकडून मारले गेले, हे मनांत येऊन तरी तुला दुःख वाटतें काय?”

जनमेजया, संजयानें हात जोडून धृतराष्ट्राशीं ह्याप्रमाणें भाषण केलें, तें ऐकून धृतराष्ट्रानें मोठा मुस्कारा टाकिला व दुःखित होऊन तो बोलूं लागला.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, काय सांगू रे! दिव्यास्त्रवेत्ता शूर भीष्म व महाधनुर्धर द्रोण हे पडल्याचें जेव्हां मी ऐकिलें, तेव्हां माझ्या मनास अतिशय दुःख झालें! बाबा, त्या भीष्माचा काय पराक्रम वर्णावा? तो पराक्रमी वसुसंभव भीष्म प्रत्येक दिवशीं दहा सहस्र कवचधारी रथ्यांना ठार करीत असे; प्रत्यक्ष भार्गवरामानेंच त्यास बाळपणीं धनुर्विद्या शिकविली व त्यानेंच त्या महात्मास दिव्य अस्त्रें अर्पण केलीं; आणि अशा त्या प्रबळ वीराला अर्जुनानें यज्ञसेनाचा पुत्र शिवंडी ह्याच्या करवीं—शिवंडीच्या संरक्षणार्थ त्याच्या पाठीमागें उभें राहून—पाडिलें, असें जेव्हां माझ्या कानीं आलें, तेव्हां तर मला अपार खेद झाला! तसेंच, त्या द्रोणाचें मामर्थ्य तरी लहान होतें काय? त्याच्या प्रसादानेंच कुंतीपुत्रांना व दुसऱ्या राजांना महारथत्व प्राप्त झालें. संजया, तो महाधनुर्धर द्रोण आपली प्रतिज्ञा खरी करण्यास उद्युक्त झाला असतां रणभूमीवर धुष्ट-युद्धानें त्याचा वध केला म्हणून जेव्हां मी ऐकिलें,

१ उद्योगपर्व अध्याय ९६ पहा. २ उद्योगपर्व अध्याय ९७ पहा. ३ उद्योगपर्व अध्याय १२३ पहा.

तेव्हां तर माझी फारच खिजावस्था झाली ! संजया, मुक्त, अमुक्त, यैवमुक्त व मुक्तामुक्त— चारही प्रकारच्या शस्त्रास्त्रांमध्ये सर्व लोकांत ज्यांची बरोबरी करणारा एकही पुरुष नाही, त्या श्रीज्मद्रोणाची तरी व्यवस्था झाली तेव्हां काय बरें म्हणावें ? वा संजया, ज्याची अस्त्रविद्येत बरोबरी करणारा सर्व त्रैलोक्यांत एकही पुरुष मिळावयाचा नाही, त्या द्रोणाचा वध झाल्याचें ऐकून माझ्या पक्षाच्या वीरांनीं पुढें काय बरें केले ? तसेंच, संजया, महात्म्या पंडुपुत्र धनंजयांनें पराक्रम करून संशप्तकांचें सैन्य यम-मदनीं पावेंत केल्यावर व त्याप्रमाणेंच बुद्धिमान द्रोणपुत्राच्या नारायणास्त्राचा उच्छेद उडविल्यावर जेव्हां सेनांची जिकडे तिकडे पळा-पळ झाली, तेव्हां मग माझ्या पक्षाच्या वीरांनीं काय केले बरें ? संजया, द्रोणाचार्याच्या वधानंतर कौरवसैन्याची जी पळापळ उडाली, ती मनांत आणिली म्हणजे मला असें वाटतें की, समुद्रांत तारूं फुटून त्यांतले लोक पाण्यांत बुडूं लागले असतां आपला प्राण वांचविण्याकरितां ज्या-प्रमाणें ते धडपड करूं लागतात, त्याप्रमाणेंच द्रोणवधानें शोकसमुद्रांत बुडूं लागलेले ते सैनिक आपला प्राण वांचविण्याकरितां धडपड करून इतस्ततः पळत होते ! असो, संजया, ह्याप्रमाणें आपल्या सैन्याची दाणादाण होऊन कौरववीर दाही दिशांस पळ काढूं लागले असतां दुर्योधन, कर्ण, भोजदेशचा राजा कृतवर्मा, मद्रदेशचा राजा शल्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, माझे अवशिष्ट राहिलेले पुत्र व इतर योद्धे ह्यांच्या मुखावर कसकशी कला दगोचर झाली वगैरे सर्व वृत्तांत जसा घडला असेल तसा मला सांग. त्याचप्रमाणें, पांडवांच्या सैन्यानें

व माझ्या पुढांच्या सैन्यानें जो कांही पराक्रम करून दाखविला असेल तोही वर्णन कर.

संजयांनें झटलें:—हे आर्या, कौरवसैन्या-मध्ये तुझ्या अपराधामुळे जें कांही घडलें आहे, तें ऐकून तूं दुःख करूं नको. हे महाराजा, दैवघटनेनें ज्या गोष्टी घडून येतात, त्यांच्या योगानें सृष्ट पुरुष दुःखित होत नाहीत. कोणतीही गोष्ट घडणें किंवा न घडणें हें दैवाधीन आहे. ह्यास्तव एखादी गोष्ट घडली अथवा न घडली, तरी तीपासून सृष्ट पुरुषास विषाद वाटत नाही.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, मला कोण-त्याही प्रकारें विशेष दुःख वाटणार नाही. हें सर्व पूर्वीच देवानें रेखून ठेविलें आहे, असें मी मानितो. तुला जें कांही सांगावयाचें असेल तें सांग.

अध्याय तिसरा.

—०:—

संक्षेपतः कर्णवधकथन.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, द्रोणाचार्याचा वध होतांच. तुझे पुत्र महारथ होते तरी त्यांच्या तोंडचें पाणी पळालें, त्यांची उमेद खचली व ते अगदीं मृतवत् झाले ! तेव्हां सर्वेच शस्त्रधार्यांची एकच गाळण उडून त्यांनीं माना खाली घातल्या व ते दुःखित होऊन एकमेकांकडे पाहूं लागले; पण त्यांच्या मुखावाटे एकही शब्द निघाला नाही ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या वीरांची दीन अवस्था अवलोकन करून तुझ्या सेना भयभीत झाल्या आणि शोकाकुल होऊन पुनःपुनः वर पाहूं लागल्या ! राजेंद्रा, द्रोणाचार्य युद्धांत पडले असें पाहून तुझ्या सैन्याच्या हातांतलीं रुधिरानें माखलेली शस्त्रे भराभर गळून पडलीं, आणि तीं अवलोकन करून जणू काय पुढें ओढवणाऱ्या अरिष्टाच्या सूचनेस्तव आकाशांतून उल्कांची

१ बाण वगैरे. २ खड्ग वगैरे. ३ गोळीबार वगैरे.

४ अस्त्र सोडून त्याचा उपसंहार करणे वगैरे.

वृष्टीच होते आहे की काय असें भासलें ! हे महाराजा, ह्या प्रकारें तुमें सैन्य अगदीं निर्वीर्य व हाताश झालेलें दुर्योधनानें पाहिलें तेव्हां तो म्हणाला, “ वीरहो, तुमच्या बाहुबलावर भिस्त ठेवून मी पांडवसैन्याला युद्धार्थ आव्हान केलें व हें युद्ध सुरू झालें; परंतु तेंच तुमचें बाहुबल द्रोणाचार्याच्या पतनामुळे अगदीं नष्टवत् दिसत आहे ! अहो, युद्ध करित असतां योद्ध्यांचा वध होणें हें सावेलिकच आहे ! युद्ध करणाऱ्या पुरुषाला कदाचित् जय मिळेल किंवा कदाचित् धारातीर्थी देह ठेवावा लागेल ! ह्यांत विशेष तें काय आहे ? तेव्हां तुम्ही सर्वत्र दृष्टि पोहोचवून युद्ध करूं लाग. अहो, आज ह्या समर्थी पांडवांची मरशी झाली आहे, एवढ्यावर जाऊ नका; ह्यापुढें आतां आपणांसच विजय प्राप्त होईल अशी खातरी बाळगून निकरानें युद्ध करा. हा पहा महाधनुर्धर महात्मा वैकर्तन कर्ण रणभूमीवर युद्धार्थ संचार करित आहे; दिव्य अस्त्रांच्या प्राप्तीमुळे याच्याशी युद्ध करण्यास कोणीही समर्थ नाही. समरांगणांत ह्याला पाहिलें म्हणजे कुंतीपुत्र धनंजय नित्य भयभीत होऊन पळून जातो. सिंहापुढें क्षुद्र भृंगाची जी अवस्था, तीच अवस्था ह्या वीरापुढें अर्जुनाची होते ! वीरहो, दहा हजार हत्तीचें बळ एकट्या भीमाच्या ठिकाणी आहे. परंतु त्या महाबलवानाची कर्णानें केवळ सामान्य मानुष युद्धांतच कशा प्रकारची दीन अवस्था करून टाकिली तें पाहिलेंतना ? अहो, कर्णाचा पराक्रम सामान्य नव्हे; त्यानें दिव्यास्त्र-वेत्ता शूर मायावी घटोत्कच ह्यास भयंकर शब्द करून आपल्या अमोघ शक्तीनें ठार मारिले. वीरहो, त्या दुर्धरप्रतापी व अचूक बाणसंधान करणाऱ्या महाबुद्धिमान् कर्णाचें अक्षय्य बाहुबल आज संग्रामांत अवलोकन करा. त्याप्रमाणेंच द्राणेपुत्र अश्वत्थामाही आपल्या अमोघ वीर्यानें आज

समरांगण गाजवून टाकाल. ह्यास्तव कर्ण व अश्वत्थामा ह्यांचा पराक्रम पाहून जणूं काय विष्णु व इंद्र हेच रणभूमीवर पराक्रम गाजवीत आहेत असें पांडवांना वाटूं द्या. वीर हो, पांडवांना समरांगणांत ससैन्य ठार करण्यास तुम्हां सर्वांपैकी प्रत्येकजण एकैकठा समर्थ आहे, मग तुम्ही सर्व वीर एकत्र होऊन पांडवांशी युद्ध करूं लागल्यास त्यांचा संहार कराल ह्यांत संदेह तो कसला ? ह्यास्तव आज तुम्ही आपला प्रताप व रणकौशल्य हीं परम्परांना दाखवा. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें भाषण करून तुझा पुत्र महावीर्यशाली दुर्योधन ह्यानें कर्णाला सेनापत्याधिकार देण्याचा आपल्या भ्रात्यांसह निश्चय करून त्याप्रमाणें त्यास तो दिला. तो अधिकार प्राप्त होतांच महारथ कर्ण सिंहनाद करून मोठ्या आवेशानें युद्ध करूं लागला. त्यानें सर्व सृंग्यांचा, पंचालांचा, केकयांचा व विदेहांचा मोठा संहार उडविला ! राजा, कर्णाच्या धनुष्याच्या प्रत्येकपासून ज्या शतावधि बाणपंक्ति सुरू झाल्या, त्या—एका बाणाचें पुंख व दुसऱ्या बाणाचें अग्र हीं अगदीं एकमेकांशीं भिडलेली असल्यामुळे—जणूं काय भृंगांच्या पंक्तिच चालल्या आहेत, असें भासूं लागलें. हे निष्पापा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें बाणावर बाण सोडून कर्णानें पंचालांना व पराक्रमी पांडवांना ‘ त्राहि भगवन् ’ करून सोडिले व सहस्रावधि वीरांना रणभूमीवर निजविले; परंतु अखेरीस त्या कर्णाचा अर्जुनानें वध केला !

अध्याय चौथा.

—०:—

धृतराष्ट्राचा विलाप.

बैशांपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, कर्णाचें वधवृत्त ऐकून अंबिकासुत धृतराष्ट्राला

अपार दुःख झालें व त्यास दुर्योधनच वध पावला असे वाटून तो शोकविह्वल होऊन भूतलावर हत्तीसारखा निश्छ्रेष्ठ पडला ! हे भरत-सत्तमा, ह्याप्रमाणें तो राजाधिराज धृतराष्ट्र दुःखाकुल होऊन भूमीवर पडतांक्षणींच ख्रियांनीं एकत्र दुःखाचा टाहो फोडिला ! राजा, त्या कलहोलानें सर्व पृथ्वी अगदी व्याप्त झाली ! कौरवस्त्रिया अगाध शोकसागरांत बुडून जाऊन दीनम्बरानें मोठमोठ्यानें आक्रंद लागल्या ! गांधारी धृतराष्ट्राच्या समीप गेली व त्याची ती अवस्था पाहून भूमीवर बेसुद्ध पडली ! आणि अंतःपुरांतील इतर स्त्रियांचीही तीच स्थिति होऊन सर्वत्र एकत्र आकांत झाला !

राजा जनमेजया, नंतर मोठा दुःखाक्रोश करून नेत्रांवाटे अश्रु दाळीत निश्छ्रेष्ठ पडलेल्या त्या स्त्रियांना संजयानें चार गोष्टी सांगून शुद्धीवर आणिले व त्यांस धीर दिला. परंतु वाच्यानें इतस्ततः हालणाऱ्या केळींप्रमाणें त्या भयानें एकसारख्या कांपत राहिल्या ! नंतर विदुरानें धृतराष्ट्रावर थोडेंमें पाणी शिंपडलें तेव्हां तो हळूहळू शुद्धीवर आला. मग संजयानें व विदुरानें त्याचें सांत्वन केलें. नंतर राजानेंही तेथील तो सर्व प्रकार मनांत आणिला व स्त्रीवर्गाची ती अवस्था जाणून तो वेड्यासारखा स्तब्ध बसला ! मग त्यानें बराच वेळ मनन करून पुनःपुनः दुःखाचे मुस्कारे टाकिले; आणि तो आपल्या पुत्रांची निर्भर्त्सना करून पांडवांची स्तुति करूं लागला ! त्यानें वारंवार आपल्या स्वतांच्या व सौबलशकुनीच्या बुद्धीला दोष लाविला, आणि फिरून बराच वेळ विचार करून भयानें कांपूं लागला ! नंतर त्यानें पुनः मन आवरून धरिलें व मोठा धीर करून संजयाला विचारिलें.

धृतराष्ट्र म्हणालाः—बा संजया, तूं जें कांहीं सांगितलेस. तें सर्व मी ऐकिलें; तर मग,

सूता, नेहमी जयाची आशा करणारा, पण आतां जयाविषयी निराश झालेला माझा पुत्र दुर्योधन यमसदनीं गेला नाहीना ? संजया, आतां तूं जी ही हकीकत सांगितलीस. तीच तूं पुनः सविस्तर रीतीनें सांग.

राजा जनमेजया, ह्याप्रमाणें धृतराष्ट्रानें विचारल्यावर संजयानें त्यास सांगितलें कीं, “ राजा, आपले पुत्र, महाधनुर्धर भ्राते व हातावर शिर धेऊन लढणारे इतर सूनपुत्र यांसहवर्तमान महारथ कर्ण हा मारला गेला ! त्याचप्रमाणें, त्या भाग्यशाली पांडुपुत्र भीमानें युद्धांत दुःशामनाला मारून क्रोधानें त्याचें रक्त प्राशन केलें ! ”

अध्याय पांचवा.

—०—

कौरवांकडील कोणकोणते वीर पडले ?

वैशंपायन सांगतातः—राजा जनमेजया, ह्याप्रमाणें वृत्तांत श्रवण करून धृतराष्ट्रानें शोकाकुल होऊन संजयास म्हटलें, “ बा संजया, कर्णाचा वध हें माझ्या अल्पायुषी पुत्राच्या दुष्ट राजनीतीचें फल होय. ह्याकरितां कर्णाच्या वधाची वार्ता ऐकून माझे काळीज अगदीं तिळतिळ तुटत आहे ! म्हणून कौरवांकडील व पांडवांकडील कोण कोण जिवंत आहेत व कोण कोण मेले हें सांगून तूं माझ्या मनाचा संशय दूर कर व मला शोकसमुद्राच्या तीराम लाव ! ”

संजय म्हणालाः—राजा धृतराष्ट्रा, महाप्रतापशाली व अजिंक्य योद्धा भीष्म दहा दिवसांत पांडवपक्षाच्या हजारों वीरांस मारून आपण स्वतः पडला ! त्याप्रमाणेंच महाधनुर्धर द्रोणाचार्य पांचालांकडील रथ्यांचा युद्धांत वध करून दुर्धर्ष झाले, परंतु अखेरीस वध पावले ! राजा, महात्मा भीष्म व द्रोण ह्यांच्या तडाक्यां-

तून पांडवांचें जें सैन्य वांचलें होतें, त्यापैकी अर्धे सैन्य मारून ठाकून वैकर्तन कर्णानें भारातीर्थी देह ठेविला ! महाराज. महाबलिष्ठ राजपुत्र विविशति ह्यानें शेंकडें आनर्त योद्ध्यांना ठार केलें व शेवटी आपण पडला ! राजा, तीच गति तुझा पुत्र विकर्ण ह्याची झाली ! त्याचे अश्व व आयुधें हीं जरी नाहीतशीं झाली, तरी तो शूर आपल्या क्षात्रधर्माकडे लक्ष देऊन शत्रूंच्या समोर जो उभा राहिला होता तो तेथून मुळीच ढळला नाही; परंतु दुर्योधनानें द्रौपदीला जे अनेक भयंकर क्लेश दिले होते ते मनांत आणून भीमसेनानें आपल्या प्रतिज्ञेनुसार त्यास ठार मारिलें ! अवंतीचे राजपुत्र महारथ विन्द आणि अनुविन्द हेही घोर पराक्रम करून अखेरिस यममदनाम चालते झाले ! राजा, जयद्रथाचीही तीच अवस्था झाली ! सिंधुराष्ट्रादिक दहा राष्ट्रे त्या वीराच्या ताब्यांत अमून तो तुझ्या आज्ञेंत पूर्णपणें वागत असे; परंतु अर्जुनानें त्या जयद्रथाच्या अकरा अक्षौहिणी सैन्यावर आपले तीक्ष्ण बाण सोडून त्याची दाणादाण केली व अखेरिस त्या महावीर्यशाली नरश्रेष्ठाला यममदनाम पाठवून दिलें ! त्याप्रमाणेंच, महावेगवान्, युद्धांत पराजित न होणारा आणि पित्याची आज्ञा पूर्णपणें पाळणारा असा दुर्योधनाचा जो पुत्र, त्यास सुभद्रापुत्र अभिमन्यु ह्यानें मारिलें ! तमाच दुःशासनाचा पुत्र दौःशासनि हाही मोठा शूर व पराक्रमी अमून युद्धांत शत्रूंना अगदी नकोसें करून सोडीत असे, पण त्यालाही द्रौपदीपुत्रानें गांठून मृत्युमुखांत लोटिलें ! त्याप्रमाणेंच किरातांचा व सागरतीरी राहणाऱ्या दुसऱ्या लोकांचा अधिपति धर्मात्मा भगदत्त हा देवराजाचा बहुमान्य प्रिय मित्र अमून क्षात्रधर्मांत नित्य रममाण असे; परंतु धनंजयानें मोठा पराक्रम करून त्यास ठार मारिलें ! त्याप्रमा-

णेंच, हे राजा, कौरवांचा दाय्याद-शूर व महा-यशस्वी भूरिश्रवा यानें शस्त्राचा त्याग केला अमतां सात्यकीनें युद्धांत त्यास वधिलें ! तमाच अंबछराजा श्रुतायु क्षत्रियामध्ये धुरंधर अमून मोठ्या धैर्यानें रणभूमीवर संचार करीत असे, पण त्याला धनंजयानें युद्धांत मारिलें ! त्याप्रमाणेंच, शस्त्रास्त्रांत निपुण व युद्धामध्ये अजिंक्य आणि पांडवांविषयी मदेदित जळफळणारा तुझा पुत्र जो दुःशामन, त्यास भीमसेनानें ठार मारिलें ! त्याप्रमाणेंच, राजा, ज्यापाशीं महत्त्वावधि अद्भुत गजसैन्य होतें, त्या मुदक्षिणालाही युद्धामध्ये अर्जुनानें वधिलें ! राजा, कोमलदेशाचा राजा मोठा पराक्रमी अमून त्यानें युद्धांत शत्रूंकडले शतावधि वीर मारिले, पण त्यास शेवटी अभिमन्युनें मोठ्या शौर्यानें ठार केलें ! त्याप्रमाणेंच, तुझा पुत्र चित्रसेन ह्यानें महारथ भीमसेनाशीं पुष्कळ युद्ध केलें, परंतु त्यास भीमसेनानें युद्धांत वधिलें ! राजा, तमाच मद्राधिपतीचा शूर पुत्र-ज्याच्याशीं युद्ध करितांना शत्रु भयभीत होऊन जात, तो ढाल-तरवार घेऊन लढत अमतां, अभिमन्युच्या हस्ते मरण पावला ! राजा, कर्णपुत्र वृषसेनाचा पराक्रम काय वर्णावा ! तो युद्धामध्ये प्रतिकर्णच वाटे; तो महान् प्रतापी अमून अतिशय त्वरेनें अस्त्र-योजना करीत असे; परंतु अभिमन्युच्या वधानें चवताळून जाऊन अर्जुनानें जी प्रतिज्ञा केली होती त्या प्रतिज्ञेचें स्मरण करून, कर्णाच्या समक्ष त्यानें त्या तेजस्वी वीराला ठार मारिलें ! राजा धृतराष्ट्रा, श्रुतायु राजा नेहमी पांडवांशीं वैर करीत असे; ह्यास्तव हननप्रसंगी त्याला त्या वैराची आठवण देऊन अर्जुनानें वधिलें ! त्याप्रमाणेंच शल्याचा पुत्र रुक्मरथ हा मोठा पराक्रमी अमून सहदेवाचा मामेभाऊ अमतांही सहदेवानें युद्धांत त्यास ठार मारिलें ! वृद्ध राजा भगीरथ व केकयर राजा बृहत्क्षत्र हे

दोघेही मोठे पराक्रमी व शूर होते, परंतु त्यांस धारातीर्थी पडवें लागले ! राजा भगदत्ताचा पुत्र महाबुद्धिवान् व महाबलवान् असतांही युद्ध-भूमीवर श्येनपक्षासारवा संचार करणाऱ्या नकुलानें तो यमसदनास पांचविला ! तुझा पितामह महाबल व महाशूर बाल्हीक आणि त्याच्या बरोबर असणारे दुसरे बाल्हीकयोद्धे ह्यांस भीमसेनानें मारिले ! त्याप्रमाणेंच जरासंधाचा पुत्र जयत्सेन हा मोठा वीर्यशाली होता; पण त्या मागध भूपतीचा महात्म्या सौमद्वानें युद्धांत वध केला ! राजा, तुझे पुत्र दुर्मुख व दुःसह हे महारथ असून पराक्रमाविषयी त्यांची मोठी ख्याति होती; परंतु त्यांस भीमसेनानें गदेच्या प्रहारांनी ठार मारिले ! त्याप्रमाणेंच दुर्मषण, दुर्विषह व दुर्जय हेही महारथ असून त्यांनीं समरांगणांत मोठा पराक्रम गाजविला, परंतु अखेरीस त्यांस यमसदनाची वाट धरणें भाग पडले ! राजा. त्याप्रमाणेंच कलिंग व वृषक हे दोघे भाऊ युद्धांत मोठे अजिंक्य असे होते; पण ते घोर प्रताप प्रकट करून अखेरीस युद्धांत पडले ! राजा, तुझा अमात्य वृषवर्मा मोठा शूर व विजयशाली होता; पण भीमसेनानें मोठ्या शौर्यानें त्यास ठार मारिले ! त्याप्रमाणेंच महान् पौरव राजा—ज्यास दहा हजार हत्तींचें बल होतें त्यास—पांडुपुत्र अर्जुनानें समरांगणांत वधिले ! तसेच दोन हजार शूर वसाति व विजयशील शूरसेन हे सर्व युद्धांत पतन पावले ! त्याप्रमाणेंच कवचें धारण करणारे रणधुरंधर शूर अभीषाह व श्रेष्ठ रथी शिबि ह्यांचा कालिंगांमह वध झाला ! तसेंच, राजा, नित्य गोकुळांत वाढलेले व युद्धांत नेहमी क्षुब्ध होणारे ते संशप्तकांचे जोडीदार अपावृत्तक वीर नारायण गोप हे धनंजयाच्या हस्ते युद्धभूमीवर शायन करिते झाले ! त्याप्रमाणेंच सहस्रावधि श्रेणि व संशप्तकांच्या टोळ्या ह्यांची अर्जु-

नार्शी गांठ पडतांच त्यानें त्या सर्वांचा नाश करून टाकिला ! त्याप्रमाणेंच, राजा, तुझे मेहुणे वृषक व अचल हे दोन राजे ह्यांनीं तुझ्याकरितां अतिशय पराक्रम गाजविला; परंतु अखेरीस त्यांस अर्जुनानें ठार मारिले ! तसाच शाल्वदेशाचा महाधनुर्धर राजा उग्रकर्मा हा नांवाप्रमाणेंच परक्रमानेही होता; परंतु त्या प्रतापशाली राजाला भीमसेनानें लोळविले ! त्याप्रमाणेंच, हे महाराजा, ओधवान् व बृंहंत हे दोघे एकत्र होऊन रणभूमीवर आपल्या मित्राकरितां (दुर्योधनाकरितां) मोठ्या निकरानें लढत असतां यमसदनास चालते झाले ! तसेंच रथिश्रेष्ठ क्षेमधूर्ति ह्याम भीमसेनानें गदेनें ठार मारिले ! त्याप्रमाणेंच महाबलिष्ठ व महाधनुर्धर जलसंध ह्यानें शत्रुपक्षाचे अनेक वीर मारिले, परंतु शेवटीं तो सात्यकीच्या हस्ते रणांत पतन पावला ! तसाच राक्षसांचा अधिपति अलंबुष—ज्याचा रथ गर्दभ जोडल्यामुळे मोठा विचित्र दिग्मत होता, तो—प्रदोत्कचानें मोठा पराक्रम करून यमसदनास पाठविला ! त्याप्रमाणेंच, सूतपुत्र राधेय, त्याचे महारथ भ्राते आणि सर्व केकय वीर ह्या सगळ्यांचा अर्जुनानें फडशा पाडिला ! आणि तसेंच, हे राजा, मालव, मद्रक, उग्रकर्मा द्रविड, यौधेय, ललित्य, क्षुद्रक, उशीनर, मावेळक, तुंडिकेर, साविती-पुत्र, प्राच्य, उदीच्य, प्रतीच्य, दाक्षिणात्य इत्यादि सर्व योद्ध्यांना धनंजयानें यमपुरी दाखविली ! राजा, पायदळांच्या अनेक टोळ्या, लक्षावधि घोडे, रथांचे समुदाय आणि अनेक मोठमोठे हत्ती ह्यांचा युद्धांत नाश झाला ! त्याप्रमाणेंच, श्रेष्ठ कुलांत जन्मास आलेले व कुशल पुरुषांनीं वाढविलेले असे अनेक शूर वीर आपले ध्वज, आयुधें, कवचें व वस्त्रांलंकार यांसह अद्याहृतपर्णे शौर्य गाजविणाऱ्या अर्जुनाकडून समरभूमीवर मारिले गेले ! राजा,

हे सर्व वीर व त्याप्रमाणेच दुसरे पुष्कळ अपार-
वीरशाली महत्त्वावधि वीर परस्परांचा वध कर-
ण्याची इच्छा करीत अमतां आपआपल्या
सैन्यांसह समरांगणांत पतन पावले ! राजा, तू
मला जे कांही विचारिलेस, त्याची हकीकत
ही अशी आहे.

धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे कौरवांकडील योद्ध्यांचा
संहार उडाला. आतां कर्ण व अर्जुन
ह्यांचा संग्राम झाला त्या वेळी जो प्रकार झाला,
त्याचे काय वर्णन करावे ! महेन्द्राने ज्याप्रमाणे
वृत्रासुराचा वध केला, अथवा रामाने जमैं राव-
णाला मारिले, किंवा कृष्णाने ज्याप्रमाणे नरका-
सुर व मुरु ह्यांचा वध केला, अगर भागव-
रामाने जसा कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) मारिला.
किंवा स्कंदाने महिषासुराचा वध केला, अथवा
रुद्राने अंधकामुराला मारिले, त्याप्रमाणे अर्जु-
नाने द्वैतयुद्धांत कर्णाला मारिले ! राजा,
तो शूर व अजिंक्य कर्ण आपल्या ज्ञातिबंध-
वांमह अर्जुनाशी लढत असतां त्याने इतके
घोर युद्ध केले की. तें पाहून उभें वैलोक्य
आश्चर्यचकित झाले ! परंतु अवेरीस. ज्याच्या
साहाय्याने आपण विजयी होऊं असे धार्त-
राष्ट्राम वाटत होते व ज्याच्यामुळेच त्यांचे व
पांडवांचे भांडण उत्पन्न झाले. तो युद्धभुरंभर
कर्ण अमात्य व बांधव ह्यांमहवर्तमान अर्जुना-
च्या हस्ते मरण पावला ! राजा, पांडव हे महान
पराक्रमी आहेत. त्यांच्याशी वेर करणे प्रशस्त
नाहीं, इत्यादि गोष्टी तुझ्या हितचिंतक आस-
मुहदांनीं तुला सांगितल्या होत्या. पण त्यांवर
तुझा विश्वास बसला नाही, आणि आपल्या
पुत्रांच्या नादास लागून पांडवांच्या सामर्थ्याचे
योग्य अनुमान तूं आधींच बांधिलें नाहीं,
त्यामुळेच हा महाभयंकर प्रसंग तूं आपल्यावर
आणिला आहेस ! राजा, राज्यजेथी पुत्रांच्या

हिताकरितां उद्युक्त होऊन तूं ज्या भलत्याच
गोष्टी केल्यास त्यांचेच हें फल प्राप्त झाले आहे !

अध्याय सहावा.

—:०:—

पांडवांकडील कोणकोणते वीर पडले ?

धृतराष्ट्र विचारतो :—संजया, माझ्या पक्षाचे
कोणकोणते वीर रणभूमीवर पांडवांनीं वधिले,
हे तूं सांगितलेस; आतां माझ्या मुलांनीं पांडवां-
कडले कोणकोणते वीर मारिले, तें मला माग.

संजय सांगतो :—राजा, कुंतिराजे हे
युद्धांत मोठा पराक्रम गाजविणारे, महाशक्ति-
मान् व महाबलष्ठ असे होते; परंतु गांगेयाने
त्यांना आस व अमात्य यांमहवर्तमान युद्धांत
ठार मारिले. नारायण, बलभद्र व इतर शता-
विधि शूर वीर पांडवांविषयी अत्यंत अनुरक्त
असे होते; परंतु त्यांम युद्धामध्ये भीष्माने वधिले.
राजा, मत्पुत्रित हा संग्रामामध्ये बल व शौर्य
ह्यांविषयी अगदी अर्जुनाप्रमाणे होता; परंतु
अचुक नेम मारणाऱ्या द्रोणाचार्यांनीं त्यांम
युद्धांत पाडिले. पंचालांपैकी अनेक महाधनुर्धर
योद्धे युद्धक्रियेंत मोठे विशारद होते; परंतु
त्यांशी द्रोणाचार्यांनीं युद्ध करून त्या सर्वांम
यमलोकी पाठविले. त्याप्रमाणेच विराट व द्रुपद
हे दोन बद्ध राजे आपल्या पुत्रांमह पांडवां-
करितां मोठ्या शौर्याने लढत अमतां त्यांचाही
द्रोणाचार्यांनी अंत केला. राजा, पांडवांकडील
अभिमन्यूचा पराक्रम काय वर्णावा ? तो जरी
लहान होता, तरी तो युद्ध करूं लागला तेव्हां
जणू अर्जुनाप्रमाणे, ध्रीकृष्णाप्रमाणे किंवा बल-
रामाप्रमाणे अजिंक्य वीर आहे असे भासले !
त्या शूर महारथाने शत्रूंचे फारच कंदन केले.
त्या वेळी द्रोण, द्रोणि, शल्य, कर्ण, कृप व कृत-
वर्मा ह्या सहा मुख्य महारथांनीं त्यास वेढा
दिला; व आपल्या हातून अर्जुनाचा नाश

करवत नाही त्या पक्षी आतां त्याच्या ह्या पुत्राचा तरी नाश करावा, 'असे मनांत आणून त्यांनीं त्यास विरथ केलें; आणि अखेरीस, क्षात्रधर्मावर भिस्त ठेवून रहाणाऱ्या त्या सौभद्रास दुःशामनाचा पुत्र दुःशामनि ह्यानें ठार मारिलें! राजा, अंबछाचा पुत्र श्रीमान् हा शत्रूंचा नाश करण्यांत मोठा पटाईत होता, आणि त्यानें आपले मित्र पांडव ह्यांच्याकरितां युद्धांत पुष्कळ पराक्रमही गाजविला; परंतु अखेरीस त्याची व दुर्योधनाचा पुत्र लक्ष्मण ह्याची समरांगणांत गांठ पडली, तेव्हां त्यास लक्ष्मणाच्या हस्ते मरण प्राप्त झालें. राजा, वृहत हा मोठा पराक्रमी व महाधनुर्धर अमून शस्त्राक्षांत मोठा वाकवगार होता; परंतु त्या रणमस्त वीरास अखेरीस दुःशामनानें मोठ्या शौर्यानें वधिलें. मणिमान् व दंडवाग हे दोन राजे मोठे अजिंक्य होते; ते पांडवांकरितां निकराचें युद्ध करीत असतां द्रोणांनं त्यांस मारिलें. त्याप्रमाणेंच भोजराज अंशुमान् हा महारथ अमून आपल्या सैन्यामह द्रोणाचार्याशी युद्ध करीत असतां द्रोणाचार्यानी मोठ्या शौर्यानें त्यास सैन्यामह वधिलें. हे भारता. समुद्रकिनाऱ्याचा राजा चित्रमेघ हा आपल्या पुत्रासह लढत असतां त्यास समुद्रमेघानें मोठ्या आवेशानें यमसदनास पाठविलें. त्याप्रमाणेंच समुद्रीराचा दुसरा राजा नील आणि प्रतापशाली व्याघ्रदत्त ह्यांना अश्वत्थामानें व विकर्णानें रणभूमीवर ठार मारिलें. राजा, चित्रायुध व चित्रयोधी ह्यांनी समरांगणांत फारच वीर मारिले व मोठा पराक्रम करून दाखविला; परंतु अखेरीस युद्धामध्ये विकर्णानें त्यांस मारिलें. कैकेय राजा हा भीमसेनाप्रमाणें मोठा पराक्रमी होता; त्यास कैकेयवीरांनीं गराडा घातला व त्याच्या भावानेंच शौर्यानें त्यास ठार मारिलें. पर्वतप्रांताचा राजा प्रताप-

शाली जनमेजय हा गदायुद्ध करीत असे; त्यास तुआ पुत्र दुर्मुख ह्यानें वधिलें. रोचमान नांवाचे दोन पुरुषश्रेष्ठ जण कथ प्रकाशमान अशा ग्रहांप्रमाणें तेजस्वी होते; परंतु त्यांवर एकदम बाण टाकून त्या दोघांना द्रोणाचार्यानी स्वर्गलोकीं पाठविलें. राजा, दुसरे पुष्कळ राजे पांडवांकरितां लढत असतां त्यांनी मोठा पराक्रम करून अनेक मोठमोठे वीर मारिले, परंतु त्यांस शेवटीं धारातीर्थी देह ठेवावे लागले. राजा, पुरुजित् व कृतिभोज ह्या दोन्ही अजुनमातुलांस द्रोणाचार्यानी बाण मारून स्वर्गलोकीं पाठविलें. काशिराज अभिभू हा अनेक काशिकांसह लढत असतां वसुदानाच्या पुत्रानें त्यास रणभूमीवर देह ठेवावयास लाविलें. अमितौजा, युधामन्यु व वीर्यवान् उत्तमौजा ह्यांनी शतावधि वीर मारिले; परंतु त्यांस आपल्या वीरांनीं ठार मारिले. पंचालदेशचे राजपुत्र मित्रवर्मा व क्षत्रधर्मा हे मोठे धनुर्धर होते; त्यांस द्रोणाचार्यानी यमसदनास पाठविलें. शिखंडीचा पुत्र क्षत्रदेव हा योद्ध्यांमध्ये मोठा अग्रणी होता; त्याला तुआ नातू लक्ष्मण ह्यानें युद्धांत मारिलें. त्याचप्रमाणें मुचित्र व चित्रवर्मा हे उभयतां पितापुत्र महारथ होते. हे दोन्ही महावीर रणभूमीवर लढत असतां त्यांस द्रोणाचार्यानी वधिलें. हे महाराजा. वार्धक्षेमि हा पर्वकाली वाढलेल्या समुद्राप्रमाणें पराक्रमांनं अगाध होता; परंतु त्याच्या आयुष्याचा क्षय झाल्यावरोंवर त्याच्या आयुष्याचाही क्षय झाला. त्याप्रमाणेंच सेनाबिंदुसुत हा युद्धकलेमध्ये मोठा प्रवीण अमून श्रेष्ठ योद्धा होता; पण त्यास कौरवेंद वाल्हीक ह्यानें ठार मारिलें. तसाच चेदीचा श्रेष्ठ रथी धृष्टकेतु ह्यानें मोठा पराक्रम केल्यावर त्यास धारातीर्थी पडवें लागलें. त्याप्रमाणेंच सत्यधृति हा मोठा वीर अजून त्यानेंही शत्रूंचा पुष्कळ संहार उडविला;

परंतु तो पांडवांकरितां पराक्रम करीत असतां त्यास यमपुरीचा मार्ग धरावा लागला. राजा, हीच अवस्था कुरुश्रेष्ठ सेनाबिंदूची झाली. शिशुपाल राजाचा पुत्र सुकेतु ह्यानें शत्रूकडील पुष्कळ योद्धे मारिले; परंतु द्रोणाचार्यानीं त्यास युद्धांत वधिलें. त्याप्रमाणेंच वीर सत्यधृति, वीर्यवान् मदिराश्च व पराक्रमी मर्यदत्त हे सर्व द्रोणाचार्यांच्या हस्ते मरण पावले. त्याप्रमाणेंच श्रेणिमान् हा मोठ्या पराक्रमानें लढत असतां मोठें कर्म करून शेवटी यमसदनास गेला. तमाच शस्त्रास्त्रांत निपुण. समरांगणांत अद्भुत पराक्रम करणारा, व शत्रूचा निःपात उडविणारा मागध देशाचा राजा भीष्मांच्या हस्ते रणभूमीवर मरून पडला. त्याप्रमाणेंच विराटाचा पुत्र शंग व महारथ उत्तर ह्यानीं युद्धांत अद्भुत पराक्रम दाखविला; परंतु अश्वरीस त्यांस यमलोकाचा मार्ग धरावा लागला. त्याप्रमाणेंच वसुदान ह्यानें युद्धांत अतिशय कंदन केलें. पण द्रोणाचार्यानीं त्यास मोठ्या शौर्यानें वधिलें. राजा, हे व ह्याप्रमाणेंच दुसरे पुष्कळ पांडवांकडील महारथ द्रोणांनीं मोठ्या पराक्रमानें मारिले. राजा, तूं जें मला विचारिलेंस, तीं हकीकत ही अशी आहे.

अध्याय सातवा.

—:—

कौरवांकडील कोणकोणते वीर जिवंत आहेत?

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, माझ्या ह्या सैन्याचा जो कांही स्वत्वांश तो सर्व नाहीसा झाला आहे; ह्यातील श्रेष्ठ श्रेष्ठ जे वीर ते सर्व पडले आहेत; ह्यास्तव उर्वरित राहिलेले हें सर्व सैन्य मला मृतवतच वाटतें! पहा, एखाद्या तलावांतला पाट काढून तें पाणी दूर एखाद्या शेतांत सोडून दिलें, तर तो तलाव कोरडा पडून, असून

नसून सारखाच होणार नाही काय? वा संजया, जे वीर पडले त्यांची केवढी योग्यता! ते भीष्मद्रोण म्हणजे कौरवसैन्याचे मुख्य आधारस्तंभ! त्यांनी केवळ माझे (कौरवांचे) कल्याण करावें इतक्याकरितांच हातांत महाधनुष्य घेतलीं होती! ह्याकरितां ते पडल्याचें ऐकून, माझ्या ह्या जगण्यांत कांहीच अर्थ नाही, असें मला वाटतें. संजया, कर्णाचें मामर्घ्य कांहीं लहानसहान नव्हे. त्याच्या बाहूंच्या ठिकाणीं दहा हजार हत्तीचें मामर्घ्य होतें; व त्याचें तें युद्धकांडाल्य पाहून समरांगणांत मोठी अपूर्व शोभा उत्पन्न होई; परंतु भीष्म व द्रोण ह्यांचा नाश करणें शत्रूंना जितकें अवघड. तितकें कर्णाचा नाश करणें अवघड नव्हतें; म्हणून कर्णाच्या वधानें जरी मला अत्यंत दुःख होत आहे, तरी त्याबद्दल तितकें आश्चर्य वाटत नाही! वरें असो. माझ्या सैन्यांतले अमुक अमुक अग्रणी पुरुष पडले म्हणून जमें सांगितलेंस, तसेंच आतां जे कोणी अवशिष्ट राहिले आहेत, त्यांची काय स्थिति आहे ती कथन कर. कौरवांच्या सैन्यांतले जे वीर मेले म्हणून तूं सांगितलेंस, त्यांच्या पश्चात् जे आतां जिवंत आहेत, ते सर्व मृत-तुल्यच होत असें मला वाटतें!

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, ज्या वीराला ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्यानीं चित (ज्यांपासून नानाप्रकारचीं अनेक आयुधे प्राप्त करून घेतां येतात अशी), शुभ्र (महादेदीप्यमान्), विहित (धनुर्वेदांत सांगितलेली) आणि दिव्य (देवादिकांपासून प्राप्त झालेलीं) अस्त्रे समर्पण केली आहेत, जो महारथ आहे, ज्यानें शरसंधान किंवा गदाप्रहार केला असतां तो कधीं निष्फल होत नाही, ज्याचें हस्तलाघव मोठें अपूर्व आहे, ज्याच्या हातांतले शस्त्र कधीं ढळत नाही, ज्याची मूठ मोठी बळकट आहे व ज्याचा बाण मोठा सुदृढ असतो, तो पराक्रमी व वेग-

वान् द्रोणपुत्र अश्वत्थामा तुङ्ग्यासाठी युद्ध करण्यास सिद्ध आहे. त्याप्रमाणेच आनते देशांत रहाणारा, हृदीकाचा पुत्र, सात्वतांचा अधिपति भोजदेशाचा राजा महारथ कृतवर्मा हा अस्त्र विद्येत निपुण असून स्वतः तुङ्ग्याकरिता लढण्यास तयार आहे. तमाच युद्धभूमीवरून अणुरेणु न दळणारा आर्तायनपुत्र शल्य हा तुङ्ग्या सैन्याचा मुख्य धुरीण असून, आपले वचन सत्य करण्याकरिता, आपले भाचे जे पांडव त्यांस सोडून देऊन तुङ्ग्या पक्षाकडे आलेला आहे. ह्या विजयशाली वीरांनी युधिष्ठिराच्या पुढे अशी प्रतिज्ञा केली होती की. मी युद्धामध्ये कर्णाचा तेजोभंग करीन. राजा, देवेंद्राप्रमाणे अपार सामर्थ्य अंगी असलेला हा पराक्रमी वीर शल्य तुङ्ग्याकरिता युद्ध करण्यास सिद्ध आहे. त्याप्रमाणेच अजानेय, सैवव, पार्वतीय (पर्वतादिकांवर राहणारे), नदीज, कांबोज व वनायुज लोकांच्या आपल्या सैन्यामह गांधारांचा राजा तुङ्ग्याकरिता लढण्यास तयार आहे. तसाच बाहुवीर्यशाली शारद्वत गौतम हा नानाप्रकारची विचित्र अस्त्रे योजून लढणारा असून मोठे दुर्धर विचित्र धनुष्य हातांत घेऊन तुङ्ग्याकरिता युद्ध करण्यास सिद्ध आहे. त्याप्रमाणेच, हे कुरुवीरा. केकयराजाचा पुत्र हा महारथी असून, उत्तम अश्व जोडलेल्या व पताका लाविलेल्या रथांत आरूढ होऊन तुङ्ग्याकरिता लढण्यास तयार आहे. तमाच तुझा पुत्र पुरुमित्र हा कौरवांपैकी मोठा शूर वीर असून प्रज्वलित अग्नीप्रमाणे देदीप्यमान अशा रथांत बसून सूर्य ज्याप्रमाणे अंतरिक्षांत शोभतो, त्याप्रमाणे तो रणभूमीवर शोभत असून युद्धार्थ सिद्ध आहे. त्याप्रमाणेच दुर्योधन हा मुवणाच्या अलंकारांनी शृंगारलेल्या रथांत बसून, हत्तीच्या कळषांत जसा सिंह झळकत असतो, तसा रणभूमीवर युद्ध करितांना झळकत आहे. हे

नैरद्रा, सुवर्णभूषणांनी चित्रविचित्र दिसणारे चिलखत घातलेल्या दुर्योधनास जेव्हां मी राजमंडळांत पाहिले, तेव्हां तो पद्मप्रभ पुरुषश्रेष्ठ मला धूमरहित अग्नीप्रमाणे किंवा मेघमंडलाच्या मध्यभागी असलेल्या प्रकाशमान सूर्याप्रमाणे भासला. त्याप्रमाणेच, हातांत ढालतरवार असलेला सुषेण व महान् योद्धा सत्यमेन हे तुझे पुत्र मोठ्या उल्हामाने चित्तेभेनासह रणभूमीवर पाडवांशी युद्ध करण्यास सिद्ध आहेत. त्याप्रमाणेच, हे भारता. विनयशील राजपुत्र उग्रायुध, क्षणांत भोजन करणारा, रूपमंपन्न व श्रेष्ठ अमा जारामंधि, अट्ट, चित्रायुध, श्रुतवर्मा, जय, शल, सत्यव्रत, दुःशल हे सर्व श्रेष्ठ राजपुत्र आपआपल्या सैन्यांसहवर्तमान युद्धभूमीवर लढण्यास सिद्ध आहेत. तसाच, केतव्यांचा अधिपति हा मोठा शूर व मानी असून प्रत्येक युद्धांत शत्रूंचा नाश करित असतो. हा राजपुत्र आपल्याचरोवर चतुरंग सैन्य घेऊन तुङ्ग्याकरिता युद्ध करण्यास सिद्ध आहे. त्याप्रमाणेच वीर श्रुतायु, धृतायुध, चित्रांगद, चित्रसेन हे सर्व प्रबल योद्धे मोठे अभिमानी व अचूक बाण मारणारे असून तुङ्ग्याकरिता लढण्यास तयार आहेत. तमाच कर्णाचा पुत्र महात्मा सत्यमंध तुङ्ग्यासाठी युद्धास सिद्ध आहे. ह्याशिवाय कर्णाचे दुसरे दोन पुत्र अश्वविद्येत निपुण असून त्यांचे बाण मारण्याचे हस्तकौशल्य उत्तम प्रकारचे आहे. त्यांच्याजवळ मोठे सैन्य असून सामान्य प्रतीच्या सैन्याने त्याचा भेद होण्यासारखा नाही. राजा, हे दोन्ही कर्णपुत्र तुङ्ग्यासाठी युद्ध करण्यास सिद्ध आहेत. हे कुरुश्रेष्ठा, ह्या व अशा प्रकारच्या अमितप्रभावाच्या अनेक श्रेष्ठ योद्ध्यांनी परिवेष्टित होतसाता तुझा पुत्र दुर्योधन पाडवांशी युद्ध करून महेंद्राप्रमाणे जय मिळविण्यास सिद्ध असून

हत्तींच्या समुदायांत सिंहने शोभावे तसा तो शत्रुसैन्यांत शोभत आहे !

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, तूं कौरवांकडील योद्ध्यांपैकी कोण पडले व कोण जिवंत आहेत, ह्याची सविस्तर हकीकत सांगितलीस, त्यावरून मला असे स्पष्ट दिसते की, कौरवांना आता जयाची आशा करावयास नको !

धृतराष्ट्रास मूर्च्छा.

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, धृतराष्ट्र असे बोलत आहे तोच 'एकदम आपल्या सैन्यांतील प्रधान वीर नष्ट होऊन आपले सैन्य अगदी उध्वस्त झाले व जे काहीं अवशिष्ट आहे ते अगदी थोडे आहे' असा विचार त्याच्या मनांत आला व त्याचे चित्त शोकग्रस्त होऊन त्यास तात्काळ मूर्च्छा प्राप्त झाली. राजा, ज्या वेळी आपले देहभान सुटत चालले असे धृतराष्ट्राला वाटले, त्या वेळी तो संजयाला म्हणाला, 'संजया, क्षणभर थांब, तूं जे हे अत्यंत दुःखकारक वृत्त निवेदन केलेंस ते ऐकून माझी चित्तवृत्ति गोघळू लागली, माझे ज्ञान नष्ट झाले व हा देह माझ्या अधीन नाहीसा झाला; ह्यास्तव आतां आपले भाषण पुरे कर.' राजा जनमेजया, असे बोलून पृथ्वीपति धृतराष्ट्र देहभान नष्ट होऊन मूर्च्छित पडला !

अध्याय आठवा.

—:०:—

धृतराष्ट्राचा कर्णाविषयी विलाप.

जनमेजय विचारितो:—हे द्विजश्रेष्ठा, धृतराष्ट्रने आपल्या पुत्रांचा व कर्णाचा युद्धांत वध झाल्याचे ऐकले, तेव्हां त्यास तो दुःखभार सहन न होऊन तो मूर्च्छित पडला, म्हणून आपण सांगितले; पण आतां माझे आपणास असे विचारणे आहे कीं, तो राजेंद्र काहींसा सावध झाल्यावर मग काय बोलला? मुनिवर्या, धृतराष्ट्र

राष्ट्र राजाला ते पुत्रवधाचे मोठे दुःख प्राप्त झाल्यावर मग त्याच्या मुखावाटे काय काय उद्गार बाहेर पडले, ते मला सांगा.

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, धृतराष्ट्रने कर्णाच्या वधाचे वृत्त ऐकिले तेव्हां त्या गोष्टीवर त्याचा विश्वास बसेना; त्याला ते मोठे अद्भुत वाटले; सर्व प्राण्यांना मूर्च्छा उत्पन्न करणारा तो भयंकर वृत्तांत ऐकून जणू काय मेरु पर्वतच कोमळल्याचा भास झाला; आणि महामति शुक्राचार्याची बुद्धि जशी मोह पावण्यास अपात्र, भयंकर कर्मे करणाऱ्या इंद्राचा शत्रूपामून पराभव होणे जसे दुर्घट, महाद्युतिमान् आदित्याचे आकाशांतून पृथ्वीवर पतन पावणे जसे अशक्य, अपरंपार भरलेल्या उदधीचे संशोषण होणे जसे सर्वथा असंभवीय, पृथ्वी, अंतरिक्ष, दिशा व उदक ह्यांचा समूळ नाश घडणे जसे अद्भुत, अथवा पापकर्मपासून व पुण्यकर्मपासून प्राप्त होणारी फले टाळणे जसे सर्वतोपरी असंभाव्य, तसे कर्णामारण्या दुर्धर्ष योद्ध्याला समरांगणांत शत्रूने वधेणें सर्वतोपरी असंभाव्य होय, असे त्याने मानिले ! राजा, नंतर त्याने बराचसा विचार केला तेव्हां त्याच्या मनांत आले की, " अरे, मी हें काय म्हणतो ? ज्यास म्हणून उत्पत्ति आहे, त्यास विनाश हा आहेच ! पहा, मोठ-मोठे दुमरे प्राणी जर मृत्युवश होतात, तर हा युद्धधुरंधर कर्णच कां वर युद्धांत मृत्युवश होणार नाही ! तेव्हां अरे ! कर्णाचा वध होणे अशक्य म्हणून जे काहीं मी मानीत आहे, ते व्यर्थ होय ! " राजा जनमेजया, धृतराष्ट्राच्या अंतःकरणांत हे विचार उत्पन्न होताच त्याचा अंतःरात्मा शोकाग्निने दग्ध होऊ लागला; त्याची कला बदलली; चित्तवृत्ति व्याकुल झाली; हस्तपादादिक गात्रे गळून गेली; तो अगदी दीन होऊन दुःखाचे सुस्कारे टाकू लागला; आणि हाय ! हाय ! असे

उद्गार काढून अतिशय विलाप करूं लागला !

धृतराष्ट्र म्हणाला:—बा संजया, अधिरथाचा पुत्र कर्ण ह्याची केवढी शक्ति सांगावी बरें ? त्या वीराचा पराक्रम केवळ सिंह किंवा हत्ती यांप्रमाणे होता; त्याचा खांद्या वृषभाच्या खांद्याप्रमाणे भरदार व पुष्ट होता; त्याची दृष्टि व चालण्याची दम वृषभामाखीच होती. आणि वृषभा-वृषभांचें झुंज लागलें असतां जसा कोणताही वृषभ मागे परतत नाही, तसा तो वज्राप्रमाणें मुद्दम असा तरुण वीर एकदां शत्रुवर तुटून पडला ह्मणजे तो शत्रु प्रत्यक्ष इंद्र असला तरी त्यापुढें तो मागे परतत नसे ! बा संजया, कर्णानें एकदां प्रत्येकाचा ठणत्कार केला किंवा त्याच्या बाणवृष्टीचा एकदां मोमोटा सुरू झाला, म्हणजे केवळ तो ध्वनि कानी पडताच राख. अथ, नाग व पत्ति ह्यांची जेव्हा उडून ते सम रांगणांतून पळून जात. ह्या महाममर्थ वीराच्या पराक्रमावर भिस्त ठेवून पांडवांना जिकण्याची दुर्योधनांनं हाव धरिली व त्यानें पांडवांशी वर आरंभिले ! तेव्हां, बा संजया, असा तो दुःसहप्रतापी महाराथ पुरुषशार्दूल कर्ण अर्जुनांनं युद्धांत मोठ्या शौर्यानें ठार मारिला म्हणून तूं म्हणतोस हें कसे ? अरे, त्या कर्णाला स्वतःच्या बाहुवीर्याविषयी इतकी स्वातरी होती की, त्यास कृष्ण व अर्जुन यांची अथवा यादव व द्रुपदे वीर ह्यांची केव्हाही पर्वा वाटली नाही. सर्व, राज्यलोभानें अंध झालेल्या व चिंतातुर होऊन गेल्या मान घालून बसलेल्या दुर्योधनाला तो नेहमी म्हणे की, ' अरे, गांडीवधारी अर्जुन व शार्ङ्गधारी कृष्ण ह्या दोघांम मी एकदा एकदम जिंकून त्यांच्या त्या दिव्य रथांतून त्यांना रणभूमीवर पाडीन ! ' संजया, कर्णानें पूर्वी सामान्य पराक्रम करून दाखविला काय ? त्यानें दुर्योधनाच्या राज्याचा विस्तार व्हावा ह्मणून आपल्या तीक्ष्ण व जलाल कंकपुंख बाणांनीं सर्व कांभोज

देशांतले वीर, केकय देशांतले वीर, तसेच आवन्त्य, गांधार, मदक, मत्स्य, त्रिगर्त, गण, शक, पंचाल, विदेह, कलिंद, काशिकोशल, सुह्य, अंग, वंग, निषाद, पुंड्रचिरक, वत्स, कलिंग, तरल, अश्मक व ऋषिक हे वीर जिंकून त्यांस आपली खंडणी देणारे बनविले ! संजया, अशा प्रकारच्या महापराक्रमी दिल्यास्त्रदेच्या वैकर्तन कर्णाला सैन्याचें पाठवळ असतां शूर पांडवांनीं मोठा पराक्रम करून रणभूमीवर ठार मारिले. हें कसे झाले बरें ? अरे, देवांमध्ये जसा महेंद्र श्रेष्ठ, तसा नरांमध्ये कर्ण श्रेष्ठ ! ह्या दोघांव्यतिरिक्त निमरा श्रेष्ठ मीं त्रिभुवनांत ऐकिला नाही ! अरे, अश्वामध्ये उत्तरेःश्रवा मुख्य, यक्षांत कुबेर मुख्य, देवांमध्ये महेंद्र मुख्य आणि योद्ध्यांमध्ये कर्ण मुख्य ! अरे, शूर, समर्थ व वीर्यशाली राजांशी युद्ध करून दुर्योधनाची राज्यलक्ष्मी वाढवावी म्हणून मी त्याची योजना केली व त्या कर्णानें माझ्या आज्ञेनुसार सर्व भूमंडळ जिंकिले ! संजया, मागधराजानें सामादि उपायांनी कर्णाशी जेव्हां स्नेह संपादन केला, तेव्हां यादव व कौरव हे खेरीज करून बाकी सर्व यक्षयावत् क्षत्रियांस त्यानें युद्धांत जबर केले. ह्यास्तव अशा त्या महपराक्रमी कर्णाला द्वैतयुद्धांत अर्जुनानें वधिले असें ऐकून फुटण्या नोकेप्रमाणें मी शोकममुद्रांत बुडून गेलो ! बा संजया, त्या महाराथाचें वधवृत्त ऐकून, नोकेंतून समुद्रांत पतन पावलेल्या मनुष्याप्रमाणें मी शोकममुद्रांत गडगळ्या ग्वात आहे ! बाबा, असल्या ह्या घोर दुःखांतूनही जर का मी वाचलो, तर माझे मन वज्रापेक्षाही कठोर आहे. असे म्हणण्यास हरकत नाही ! मृता, पुत्र, मित्र, आसमुद्दत् इत्यादिकांची ही अशी दुर्दशा ऐकून ह्या जगांत माझ्यावाचून दुसरा कोणता पुरुष प्राण टाकिल्याशिवाय राहील बरें ! ह्यासाठी या प्रसंगी विषप्राशन करवें.

अर्थांत उडी टाकावी किंवा पर्वनावरून कडेलेट करून घ्यावा, हेंच मला प्रशस्त वाटतें ! संजया, आतां मला हें दुःसह दुःख सोमवत नाही !

अध्याय नववा.

—:—

धृतराष्ट्राचा आणखी विलाप.

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, तुझी योग्यता काय वर्णावी ? तुझी राजलक्ष्मी, तुझें कुल, तुझें यश, तुझी तपश्चर्या व तुझें ज्ञान ही मनांत आणून थार लोक तुला आज नहुषपुत्र ययातीप्रमाणें मान देत आहेत ! राजा, तुझ्या ठिकाणी ज्ञान तर अगदी महर्षीप्रमाणें असल्यामुळें तूं धन्य होम; ह्यास्तव मन मुस्थिर कर, असा वेद करून घेऊं नको.

धृतराष्ट्र म्हणाला:— संजया, मला दैवच प्रधान वाटतें; पराक्रम हा अनर्थावह होय; ह्यास्तव त्यास धिक्कार असो ! पहा, शालवृक्षासारखा कर्ण, पण तो युद्धांत मारला गेला ! ज्या महारथांनं युधिष्ठिराचें सैन्य बघिलें, पंचालांचे रथिमूह भरा केले, बाणवृष्टीनं दाही दिशा जाळल्या. आणि ज्याप्रमाणें देवेंद्रानें दैत्यांमं ' सलो की पळो ' करावें, त्याप्रमाणें ज्यानं समरांगणांत पांडवांना ' सलो की पळो ' करून सोडिलें, तो कर्ण वाच्यानं उन्मळून पडलेल्या वृक्षाप्रमाणें रणभूमीवर मरून पडावा काय ? आतां ह्या शोकमागाराचा अंत होईल असें मला वाटत नाही ! माझी चिंता उत्तरेत्तर अनिश्चयच वाढत आहे ! ही पहा मला मूर्च्छा उत्पन्न होण्याच्या वेतांत आहे ! पहा. कर्ण व अर्जुन ह्यांच्या युद्धांत कर्णाला मृत्यु प्राप्त व्हावा आणि अर्जुनाला जय मिळावा ही गोष्ट मला विश्वसनीय वाटत नाही ! संजया, खरीत माझे हें हृदय वज्राचा जो अत्यंत टणक अंश त्याचें बनविलेलें असावें ! नाही तर,

पुरुषव्याघ्र जो कर्ण तो पडल्याची वार्ता ऐकून नें भरा झाल्याशिवाय कसे राहिलें असतें बरें ! अरेरे ! पूर्वीं देवतांनी खरोखरी दीर्घ आयुष्य माझ्या कपाळीं लिहून ठेविलें आहे; आणि त्यामुळेंच, मी कर्णवधानें इतका जरी दुःखित झालों आहे, तरी मरण पावत नाही ! माझ्या ह्या जीविताला धिक्कार असो ! अरे, सुहृदांनी सोडून दिलेल्या म्यां आतां जगून काय करावयाचें आहे ! संजया, कायरे माझी ही विपन्न अवस्था ! कायरे माझे हें दैन्य ! आतां सर्वांनी माझ्याबद्दल हळहळत रहावें व तेवढ्यावरच म्यां मृगानें हे दुःखाचे दिवस कंठावेना ! संजया, जो मी पूर्वीं सर्व लोकांच्या आदराम पात्र झालों, त्या माझा आतां लोकांकडून अवमान झाला म्हणजे माझ्यानं हा देह कसा धारण करवेल बरें ! संजया, भीष्मद्रोणांच्या वधानें आधीच मी दुःखग्रस्त होऊन महान् संकटांत पडलों होतो; व आतां तर कर्णाच्या वधानें माझ्या दुःखाम पारावारच नाहीसा झाला व संकटांतून मुक्त होण्याची आशाही संपली. संजया, कर्ण हा माझ्या पुतांचा मोठा आधार होता; आणि तो तर आतां युद्धांत पतन पावला; मग माझ्या जगण्यांत अर्थ तो कोणता ? अरे, अधिरथाचा पुत्र कर्ण हा बाणविद्ध होऊन रथांतून ग्वालो पडला म्हणजे खरीत जणू काय वज्रपातानें पर्वताचे शिखरच विदीर्ण होऊन ग्वाली पडलें असें मला वाटतें ! असो, संजया, तो कर्ण आज रक्तवंवाळ देहानें पृथ्वीला शोभवीत रणभूमीवर मरून पडला आहेना ? अरेरे ! उन्मत्त द्विपेंद्रानें जमा एखादा द्विप मारावा तसा हा प्रकार झाला, नाही बरें ? हा ! हा ! कायरे त्या कर्णाची महती आणि केवढीरे त्यावर कौरवांची भिस्त ! धार्तराष्ट्रांना कर्ण हा केवळ आपलें बळ वाटे ! पांडवांना जें काही भय होतें तें तरी फक्त या कर्णाचेंच

आणि अखेरीस तो कर्ण अर्जुनाच्या हस्ते मृत्युमुखी पडला काय ! अरेरे, कर्ण म्हणजे सर्व धनुर्धारी योद्ध्यांचा केवळ ध्वज ! तो महाधनुर्धर वीर ह्मणजे शत्रूंचे मूर्तिमंत भय; आणि देवेंद्राने ज्याप्रमाणे पर्वत पाडवा त्याप्रमाणे तो रणभूमीवर अर्जुनाने पाडला काय ? संजया, आतां कौरवांनी जयाशा धरूं नये; आतां दुर्योधनाची मनीषा तृप्त व्हावयाची नाही ! पांगळ्याने मार्गक्रमण करणे जसे दुर्घट अथवा द्रिष्ट्याचे मनोरथ सिद्धीस जाणे जसे दुष्कर, किंवा तृषिताची तृषा चार जलविंदूनी भागणे जसे अशक्य, तसेच दुर्योधनाचे हेतु परिपूर्ण होणे अशक्य होय ! अरेरे, बेत काय केला, आणि परिणाम काय झाला ! अहो, दैवगति किती प्रचळ, आणि काल किती दुरतिक्रम आहे बरे ! बा संजया, माझा पुत्र दुःशासन अगदी हतवीर्य व बेहोष होऊन रणभूमीवर पळून जात अमतां मारिला काय ? अरे, त्याने युद्धामध्ये कांही लांछनास्पद आचरण केले नाहीना ? बाबा, अन्य क्षुद्र क्षत्रियांप्रमाणे त्या शूर दुःशामनाचा वध झाला नाहीना ! संजया, युधिष्ठिर हा, ' लढाईवर मजल आणू नको ' असे दुर्योधनास सर्वदा सांगत असतां त्या मुर्खाला ते रुचले नाही, त्यास काय म्हणावे ? बाबा, योग्यच आहे; औपध हे हितकर खरे, पण रोगी ते घेईल तर ना ? संजया, शरतल्यावर शयन करणाऱ्या महात्म्या भीष्माने अर्जुनापाशी उदक मागितले अमतां त्या पांडुपुत्राने बेदिनीतल्या वेध करून जलाची धारा निर्माण केली, तेव्हां त्या विजयशाली भीष्माने दुर्योधनास सांगितले की, " बा दुर्योधना, पांडवांशीं वेर करूं नको; पांडवांशीं जर गोडी करशील, तर तुझं कल्याण होईल; ह्या तुमच्या युद्धाचा माझ्याबरोबर अंत कर. अरे, पांडवांशी वंशुवाने वागून ह्या पृथ्वीचा उभय-

वर्गांनी उपभोग घ्यावा. " संजया, त्या महामति भीष्माचा हा उपदेश दुर्योधनाने ऐकिला नाही; आणि आतां त्यास खचीत पश्चात्तापांत पडण्याची वेळ आली पहा ! त्या दूरवर दृष्टि देणाऱ्या भीष्माचे वचन आतां प्रत्ययास येत आहे ! अरेरे, मी तरी आपल्या कर्तव्याचा विचार करावयाचा होता ! संजया, आतां मला सल्लागारही कोणी राहिला नाही; आणि माझे पुत्रही गेले रे ! हे सर्व अरिष्ट उत्पन्न होण्याचे कारण झूत ! पक्ष्याचे पंख छाटून टाकले म्हणजे त्याची जशी स्थिति होते, तशी आतां माझी स्थिति झाली ! मुले खेळतांना एकाद्या पांखराचे पंख तोडून टाकिताना व मग त्यास मोठ्या मौजेने सोडितात, पण मग त्या बिचाऱ्या पांखराला जागेवरून हालतांही येत नाही. त्याप्रमाणे माझी अवस्था झाली आहे ! ते पांखरू जसे सर्वतोपरी दीन व लाचार बनते, तसाच मी आतां बनलो आहे ! आतां माझ्या सर्व पुरुषार्थांची इतिश्री झाली; मी आपल्या पुत्रांना व आप्तमुहूर्तांना अंतरले; आणि सर्वतोपरी दीन व हाताश झालेला हा मी आतां शत्रूच्या हातीं मांपडलो म्हणजे मग माझी काय काय दुर्दशा होईल ती कोण जाणे !

वेशपायन सांगतात:—राजा जनमेजया. अत्यंत दुःखित होऊन धृतराष्ट्राने ह्याप्रमाणे पुष्कळ विलाप केला आणि शोकपरिप्लुत होऊन त्याने संजयाम पुनः म्हटले.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, ज्याने सर्व कांवोज वीरांना, केकयांसह अवघांना, गांधारांना व विदेहांना युद्धांत जिंकून आपले हेतु सिद्धीस नेले, आणि ज्याने सर्व भूमंडल जिंकून दुर्योधनाच्या राज्याचा विस्तार केला, त्या महाधनुर्धर पराक्रमी कर्णाला वीर्यशाली अर्जुनाने धारातीर्थी पाडिले, तेव्हां तेथे समरभूमीवर कोणकोणने काय लढन होते, ते मला सांग.

संजया, कर्णाळा जेव्हां पांडवांनीं मारिलें, तेव्हां तो रणांगणांत एकटाच असून त्याचे साथीदार पळून कोरे गेले नव्हतेना? बाबा, आपल्या-कडील वीरांना शत्रूंकडून कशा रीतीनें वधण्यांत आले, हें तूं पूर्वीं सांगितलें आहेसच. पहा, ज्याच्याशीं सामना करण्यास कोणीही समर्थ नव्हता, त्या सर्वे शस्त्रधान्यांमध्ये श्रेष्ठ अशा भीष्माला शिखंडीनें उत्तम बाण मारून रणांत पाडिलें; त्याचप्रमाणें महाधनुर्धर द्रोणाचार्य सर्वे आयुधांचा त्याग करून युद्धभूमीवर मरण्यास सिद्ध होऊन बसल्यानंतर दुपदपुत्र धृष्टद्युम्न ह्यानें त्यांजवर बहुत बाण टाकिले, आणि अखेरीस खडू उचलून त्यानें त्यांस ठार केलें! सारांश, हे संजया, भीष्म व द्रोण ह्यांचा पांडवांनीं जो वध केला, तो अन्यायांनें व त्यांत-ही विशेषेकरून कपटांनें केला आहे! भीष्म व द्रोण ह्यांसंबंधानें मीं असेही ऐकिलें आहे कीं, प्रत्यक्ष वज्रधारी इंद्राकडूनही न्यायानें युद्ध करणाऱ्या त्या दोघां वीरांचा वध झाला नसता! संजया, मी सांगतो हें अगदी सत्य आहे! आतां कर्णविषयी विचारशील तर त्याच्या वधाचें मला मोठेंच नवल वाटत आहे. पहा, कर्ण म्हणजे अगदी देवेंद्रतुल्य वीर; आणि असें असतां मृत्यूनें त्याला स्पर्श करण्याचें कसें धाडस केलें बरें! पहा, त्याच्या अंगीं नानाप्रकारचीं दिव्य आणि बहुत अस्त्रे सोडण्याचें सामर्थ्य; त्याला प्रत्यक्ष पुरंदरानें विशुद्धतेप्रमाणें देदीप्यमान, सुवर्णमंडित व शत्रुसंहारक दिव्य शक्ति कुंडलां-बद्दल दिली; व त्याच्या भात्यामध्ये सुवर्णालंकृत सर्पमुख दिव्य बाण चंद्रनाचा चूर्णांत शत्रूंचा प्राण घेण्यास सिद्ध होता; आणि असें असतां त्या कर्णाचा अशा प्रकारें अंत न्हावा काय?

संजया, कर्णाच्या ठिकाणी केवढा रे वीर-श्रीचा अभिमान? भीष्मद्रोणादिक महारथांना देखील तो जुमानून नसे! जमदग्निपुत्र परशु-

रामापासून त्यानें महाशोर ब्राह्म अस्त्र संपादन केलें होतें! द्रोणप्रभृति वीर अभिमन्यूच्या शर-प्रहारांनीं त्रस्त होऊन मात्सर घेऊं लागले तेव्हां त्या प्रतापशाली कर्णानें अभिमन्यूच्या त्या धनुष्यावर तीक्ष्ण बाण टाकून तें भग्न केलें. ज्याला दहा हजार हत्तीचें सामर्थ्य व वज्राच्या वेगाप्रमाणें वेग, त्या अजिंक्य भीमसेनाला देखील त्या कर्णानें एकाएकी विरथ करून त्याचा उपहास केला! त्यानें बांकदार पेरी असलेल्या बाणांचा वर्षाव करून सहदेवाला जिंकून त्यास रथहीन केलें, पण अधर्मत्वरणाचा व निष्ठुरपणाचा दोष प्राप्त होईल, 'ह्या भीतीनें त्यास वधिलें नाहीं! त्यानें धोऱ्वाच्याच्या सहस्त्रावधि मायांचा विनाश करून त्या राक्ष-सेंद्राला इंद्रशक्तीच्या योगानें ठार मारिलें! आणि हा त्याचा अपूर्व पराक्रम अवलोकन करून धनंजयासही भय वाटलें व त्यानें काहीं दिवसपर्यंत त्याच्याशीं द्वैरथयुद्ध करण्याचा विचार सोडून दिला! संजया, कर्णाशी युद्ध करण्याचें टाळण्याकरितां अर्जुनाला ही युक्ति लढवावी लागली! "हे संशप्त वीर पुनः पुनः मला मुख्य रणभूमीवरून एकीकडे ओढून नेतात ह्यास्तव प्रथम मी संशप्तकांचा नाश करून मग ह्या कर्णाचा वध करावा हें चांगलें!" असा बहाणा अर्जुनानें केला व त्यानें कर्णाशी युद्ध करण्याचें पुढें लोटिलें! सारांश, हे संजया, अशी अद्वितीय शक्ति ज्या कर्णाच्या हाथी होती, त्या शत्रुसंहारक महान् योद्ध्याला अर्जुनानें रणांत मारिलें हें घडलें तरी कसें! अरे, जर कर्णाचा रथ भग्न झाला नसता, धनुष्य तुटलें नसतें, व अस्त्रांचा नाश झाला नसता, तर त्या वीरांचे कसा बरें वध झाला असता? संजया, कर्णाचें सामर्थ्य किती तरी अगाध! तो एकदां स्मर-भूमीवर महान् धनुष्य घेऊन भयंकर शारांची वृष्टि करून दिव्य अस्त्रे सोडूं लागला, म्हणजे

शार्दूलप्रमाणे महावेगवान् अशा त्या वीरशार्दूलास जिंकण्यास कोणीही समर्थ नसे ! निःसंशय, त्याचे धनुष्य तुटले, रथ पृथ्वीने गिळिला, अथवा त्यास अस्त्रे आठवतनाशी झाली, म्हणूनच तू सांगत आहेस त्याप्रमाणे कर्णाचा वध झाला असेल ! ह्यावांतून कर्णाच्या नाशाला अन्य कारण संभवत नाही.

संजया, जोपर्यंत मी फाल्गुनास (अर्जुनास) ठार मारिले नाही, तोपर्यंत मी पादप्रक्षालन करणार नाही, अशी ज्या महात्म्या कर्णाची घोर प्रतिज्ञा; ज्याच्याबरोबर युद्ध करण्याची पाळी येईल ह्या भीतीमुळे पुरुषश्रेष्ठ युधिष्ठिराला तेरा संवत्सरपर्यंत निद्रा प्राप्त झाली नाही; ज्या वीरशाली पुरुषाच्या सामर्थ्यावर विस्त ठेवून राझ्या पुढांने बलात्कारांने पांडवांच्या स्त्रीला पांडवांच्या देवत समेत ओढून आणिले, व त्या पांचालीला कौरवांसमक्ष ' दासभार्या ' असे म्हटले; तसेच ज्याने, " हे कृष्णे, आतां तुझे पति नष्टवद् आहेत, त्या सर्वांची अवस्था बांध्या तिळांप्रमाणे अगदी तुच्छ झाली आहे; ह्याकरितां, हे सुंदरी, तू आतां दुसरा पति कर. " असे कठोर शब्द समेत क्रोधाने काढिले; त्याप्रमाणेच, " युद्धाविषयी आत्मश्लाघा करणाऱ्या भीष्माने किंवा युद्धांम अजिंक्य असणाऱ्या द्रोणाने पक्षपातबुद्धीने जरी पांडवांना मारिले नाही, तरी, हे दुर्योधना, मी एकदा त्या सर्वजणांना मारीन, हे खचित समजून तू आपल्या मनाची तळमळ अगदी नाहीशी कर. दुर्योधना, अर्जुनाचे गांडीव धनुष्य किंवा त्याचे ते दोन महान् अक्षय्य साते, चंदनचूर्णाने माखलेला माझा बाण से से करीत उडी टाकीत चालला म्हणजे त्यापुढे काय करणार ? " असे शब्द उत्सासाने दुर्योधनापार्शी उच्चारिले, तो महाबलिष्ठ वीर कर्ण आज अर्जुनांने मारिला हें खरे काय ? अरे, ज्या कर्णाला गांडीवापामून

सुटलेल्या बाणांच्या भयंकर स्पर्शाची मुळीच पर्वा वाटत नसे, ज्याने " हे कृष्णे, तू आतां अपति (पतिरहित) आहेस ! " असे शब्द काढून पांडवांकडे टोकारून पाहिले, स्वतःच्या बाहुबलावर भरंवसा असल्यामुळे ज्याला पुत्रांसहित किंवा कृष्णासहित पांडवांचे क्षणभर भय वाटत नव्हते, त्याचा वध देवांसहित इंद्राकडून सुद्धां होईल असे वाटत नाही; मग सेरावैरा चाल करून येणाऱ्या पांडवांकडून तो होणे हें तर दुरापास्तच !

संजया, कर्णाचा पराक्रम काय वर्णावा ? त्या अधिरथपुत्राने प्रत्येकाला स्पर्श केला पुरे, किंवा तल्लवांने चढविलीं पुरेत, कीं कोणत्याही पुरुषाची त्याच्यापुढें उभे रहाण्याची छाती होत नसे ! कदाचित् पृथ्वीवरील सोम, सूर्य व वह्नि ह्यांची तेजें एक वेळ नष्ट होतील, पण त्या युद्धांतून पलायन न करणाऱ्या पुरुषेंद्राचा वध हाणे दुष्कर ! अरे, त्याच्या व दुःशासनाच्या साहाय्यानेच महामूर्ख दुष्ट दुर्योधनाने वामुदेवाचा अह्वर केला ! आतां मात्र दुर्योधनाची दशा मोठी कठीण आहे; कर्ण व दुःशासन हे धारातीर्थी पतन पावलेले पाहून आतां त्यास मोठा खेद होत असेल ! विकर्तनपुत्राचा द्वैरथयुद्धांत अर्जुनांने वध केला असे ऐकून व पांडवांची सरशी होत चालली असे अवलोकन करून दुर्योधनाने काय उद्गार काढिले बरे ! वृषसेन व दुर्मर्षण हे युद्धांत पडले, कौरवसैन्य महारथांकडून मृत्यु पावू लागले व त्याची दाणादाण उडाली, साहाय्यार्थ आलेले राजेलोक पराङ्मुख होऊन पळून जाऊ लागले, आणि रथी वीर धूप पळत सुटले, असे जेव्हां दुर्योधनाने पाहिले असेल, तेव्हां मात्र तो दुराग्रही, अशिमानि, मूर्ख व अविचारी दुर्योधन खचित पश्चात्ताप पावला असेल !

संजया, अशा ह्या दुर्घट समयी दुर्योधना-

च्या मनाची काय बरें स्थिति झाली असेल ? अरे, आपल्या सैन्याची नाउमेद झालेली पाहून त्यानें काय बरें म्हटलें असेल ! ह्या सर्व घोर अनर्थास कारण त्याचा तोच आहे ! त्यानें स्वतःच हा महान् कलहाशि चेतविला ! त्याच्या आसमुह्मदांनी त्यास पुष्कळ मोडा घातला पण तो सर्व व्यर्थ झाला ! आणि आतां तर समरांगणांत प्रधान वीरांचा नाश घडून आला आहे, तेव्हां आतां दुर्योधनानें काय उद्धार काढिले असतील बरें ! अरे, भीमसेन दुःशासनास रणभूमीवर ठार मारून त्याचें रक्त प्राशन करीत असतां दुर्योधनाच्या मुखावाटे कोणते शब्द बाहेर पडले असतील बरें ! संजया, गांधाराज शकुनि ह्यासहवर्तमान दुर्योधन सभेमध्यें काय म्हणाला होता की, 'कर्ण हा अर्जुनाला मारील !' पण आतां तर त्याच्या उलट होऊन अर्जुनानेंच कर्णाला मारिलें आहे; तेव्हां आतां दुर्योधन काय म्हणत असेल बरें ! संजया, पूर्वी द्यूत करून पांडवांना वंचिल्यावर ज्याला मोठा आनंद वाटला, तो सौवल शकुनि कर्णाच्या मृत्यूनंतर काय बोलला बरें ! सात्वतांतला महारथ महाधनुर्धर हार्दिक्यपुत्र कृतवर्मा हा कर्णवध श्रवण करून काय बोलला बरें ! धनुर्वेद शिकण्याची इच्छा करणारे ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य हे ज्या बुद्धिमान् द्रोणपुत्राची सेवा करितात आणि जो तरुण, रूपसंपन्न, सुंदर व महाकीर्तिमान् आहे, तो अश्वत्थामा कर्णाचा वध झाल्यावर काय म्हणाला बरें ! त्याप्रमाणेंच, धनुर्वेदाचा आचार्य असा तो महारथ शारद्वत कृप कर्ण पडल्यावर काय बोलला बरें ! तसाच तो महाधनुर्धर, महाबलवान् मद्राधिपति, —युद्धांत शोभणारा महारथ सारथ्यकर्म करीत असलेला सौवीर शल्य कर्णाचा वध झाल्याचें पाहून काय बोलला बरें ! आणि त्याप्रमाणेंच, हे संजया, ते सर्व दुर्जय राजे—जे कोणी युद्धार्थ आले होते—

ते वैकर्तन हा हत झालेला पाहून काय काय म्हणाले बरें !

बरें असो; संजया, तो पुरुषश्रेष्ठ रथव्याघ्र द्रोण वीर मुत्सु पावल्यानंतर सैन्याच्या कोणत्या भागांवर कोण कोण मुख्य होते, महारथ मद्रराज शल्याची कर्णाच्या सारथ्यकर्मावर कधी योजना झाली, सुतपुत्र कर्ण युद्ध करीत असतां त्याच्या रथाचें उजवेकडील चक्र कोणी राखिलें, तसेंच डावे चक्राचें कोणी रक्षण केलें, त्याच्या पृष्ठभागी कोणकोणते वीर शत्रूसैन्याचें निवारण करीत होते, कर्णाची विपन्न अवस्था अवलोकन करून कोणकोण क्षुद्र पुरुष पळून गेले व कोणकोण शूर पुरुष त्याच्या मदतीकरितां शेवटपर्यंत टेंक देऊन लढत राहिले, तुम्ही (कोरवांकडील) सर्व वीर एकत्र व एकजुटीनें लढत असतां कर्ण हा अर्जुनाच्या हस्ते मृत्युमुखीं कसा पडला, शूर महारथ पांडव मेधांप्रमाणें बाणांचा वर्षाव करीत कर्णावर कसे चालून गेले, आणि तो सर्पमुख दिव्य बाण कर्णाजवळ असतांना तो फुकट कसा गेला, हें मला कथन कर. संजया, आतां पाझें जें सैन्य अवशिष्ट आहे, त्यांत मला फारसा जोम दिसत नाही. माझ्या सैन्यांतलें जें कांही स्वत्व तें सर्व नष्ट झालें, ह्यास्तव उर्वरित राहिलेलें सैन्य मला मृतवतच भासत आहे ! पहा, ते महाधनुर्धर वीर भीष्म व द्रोण माझ्याकरितां जीव देण्यास तयार झालेले जर रणभूमीवर पतन पावले, तर माझ्या ह्या जीविताचा उपयोग तो कोणता ? अरे, ज्या कर्णाच्या अंगी सहस्र कुंजरांचें बळ होते, त्या कर्णाला पांडवांनीं वधिलें ही गोष्ट माझ्या हृदयाला अगदीं लागून राहिली आहे ! मी कितीही विवेक केला तरी हें दुःख माझ्यानें सहन करवत नाही ! बा संजया, द्रोणाचार्य पडल्यानंतर शूर कोरवांचा व पांडवांचा जो रणसंग्राम झाला, तो मला सांग. संजया, कर्णां

पांडवांशी कशा प्रकारें युद्ध केलें, आणि त्या-
प्रमाणेंच तो शत्रुसंहारक महान् वीर रणांत कसा
पतन पावला, तें सांग !

अध्याय दहावा.

कर्णाला अभिषेक.

संजय सांगतो:—हे भारता धृतराष्ट्रा, त्या
दिवशीं महाधनुर्धर द्रोणाचार्य पतन पावले, व
द्रोणपुत्र महारथ अश्वत्थामा ह्याचा संकल्प
व्यर्थ झाला, तेव्हां कौरवांचा मेनासागर एक-
सारखा जिकडे वाट सांपडेल तिकडे धूम वाहूं
लागला असतां, अर्जुन हा आपल्या सैन्याची
सुव्यवस्थित रचना करून भ्रातृवर्गामवेत युद्ध-
भूमीवर युद्धार्थ उभा राहिला. हे भरतर्षभा, त्या
समयीं अर्जुन हा युद्धाला तोंड देऊन उभा
आहे असें जाणून व कौरवसेना पळत आहे
असें अवलोकन करून तुझा पुत्र दुर्योधन ह्यानें
मोठ्या शौर्यानें त्या सेनेची स्थिरस्थावर केली,
आणि तिची जेथच्या तेथें योजना करून तो
स्वतः मोठ्या पराक्रमानें बराच काळपर्यंत पांड-
वांशी लढला; परंतु पांडवांना जय मिळून
त्यांची सरशी होत गेल्यामुळें त्यांनी मोठ्या
उमेदीनें पुष्कळ वेळपावेतों अधिक वीरश्री धरून
युद्ध चालविलें. इतक्यांत सैन्याकाळ झाला,
तेव्हां दुर्योधनानें आपल्या सैन्याला परत माघारें
बोलाविलें आणि नंतर कौरवांकडील प्रधान योद्धे
दुर्योधनाच्या ठाण्यांत एकत्र जमून त्यांनीं पुढील
कर्तव्याविषयीं आपसांत मसलत ठरविली. दुर्यो-
धनाच्या शिबिरांत ते सर्व वीर उत्कृष्ट आस्त-
रणांनीं शोभायमान दिसणाऱ्या अशा श्रेष्ठ
पर्यंकावर बसले असतां जणू काय देवमंडल
सुखासनावर अधिष्ठित झालें आहे असा भास
झाला ! नंतर तेथें जमलेल्या त्या महाधनुर्धर
योद्ध्यांना अनुलसून दुर्योधन राजानें प्रसंगा-

नुरूप व सर्वांस प्रिय वाटेल असें अत्यंत मधुर
भाषण केलें. तो म्हणाला, “ अत्यंत बुद्धिमान्
वीरहो, तुम्ही सर्वजण आपआपला विचार त्वरित
कळवा; अगदी उशीर करूं नका. सध्याची
स्थिति तुम्ही जाणतच आहां; तर अशा ह्या समयीं
राजेहो, आपण काय करावें व त्यांतही विशेष-
षतः कोणती गोष्ट करावी हें सांगा. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, युद्ध
करण्याची इच्छा करीत असलेल्या त्या पुरुष-
श्रेष्ठांनीं दुर्योधनाचें भाषण श्रवण करून, आपा-
पल्या सिंहासनांवरून दंड थोपटणें वगैरे वीरश्री-
द्योतक नानाविध कृत्यांनीं आपला अभिप्राय
व्यक्त केला. नंतर युद्धांत प्राण देण्यास सिद्ध
झालेल्या त्या वीरांचा हेतु मनांत आणून आणि
दुर्योधन राजाची मुखश्री प्रातःकालीन सूर्योपमां
तेजःपुंज अवलोकन करून समय जाणणारा
चतुर आचार्यपुत्र अश्वत्थामा म्हणाला, “ नृपहो,
स्वामिभक्ति, देशकालादिकांची अनुकूलता, बल
व राजनीति हीं अर्धसिद्धीची मुख्य साधनें होत,
अमें तज्ज्ञ लोकांचें मत आहे. आतां हीं साधनें
अनुकूल असलीं तरी देवाचें आणखी साहाय्य जर
नसेल तर कार्यसिद्धि होणार नाही. स्वामिभक्ति
वगैरे सर्व साधनें आपणांस अनुकूल असूनही
आपल्या पक्षाचे देवतुल्य पराक्रमी, स्वामिभक्त,
रणधुरंधर व प्रबळ असे महान् महान् महारथ
युद्धांत पडले; एवढ्यावरून, देवाची अनुकूलता
आपणांस नाही असें मनांत आणून तुम्ही कदा-
चित् निराश होऊन जयाशा सोडून घाल,
पण असें करूं नका. साधनांची अनुकूलता
असून देवाची प्रतिकूलता असल्यास जसा कार्याचा
नाश होतो, तशीच देवाची अनुकूलता असून
साधनांची प्रतिकूलता असल्यास कार्याचा नाश
होत नाही. देवाची अनुकूलता एकदां प्राप्त
झाली म्हणजे सर्व गोष्टी स्वभावतःच अनुकूल
होतात आणि मग इष्ट कार्य सिद्धीस जातें. तेव्हां

दैव अनुकूल करून देणारी गोष्ट कोणती, ह्याचा विचार केला पाहिजे. राजकारणी पुरुष राजनीतीतील तत्त्वांचा जर नीट विचार करतील व तदनुरूप वागतील, तर सर्वतोपरी दैव अनुकूल करून घेतां येईल. प्रस्तुत प्रसंगी आपण सर्वांनी मुख्य उद्देशावर लक्ष ठेवून सर्व गुणांनी युक्त असा सेनापति नेमिला पाहिजे. सर्व वीरांमध्ये कर्ण हा श्रेष्ठ असा असून त्याच्या अंगी सर्व गुण वास्तव्य करित आहेत; ह्यास्तव, हे दुर्योधना, आपण वर्णावरच सेनापत्याचा अभिषेक करूं या. कर्णाला सेनापति केल्यावर आपण शत्रूंचें निर्दलन करण्यास समर्थ होऊं. कर्ण हा अतिशय बलिष्ठ व शूर आहे. तो सर्व शस्त्रास्त्रांत प्रवीण असून युद्धांत अजिंक्य आहे. तो यमधर्माप्रमाणें असह्य असून युद्धांत शत्रूंना जिंकण्यास समर्थ आहे. ह्याकरितां आपण त्यासच सेनापत्य द्यावें. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, आचार्य-पुत्राचें हें भाषण श्रवण करून तुझ्या पुत्रानें (दुर्योधनानें) कर्णाविषयी मोठी प्रबळ आशा धारण केली. ‘भीष्म व द्रोण पडले तरी कर्ण हा पांडवांना जिंकील’ अशी दुर्योधनास आधीच आशा वाटत होती, म्हणून त्या आशेला अश्वत्थाम्याकडून पुष्टीकरण मिळतांच त्याचें तें मंगलप्रद, हितावह, सत्य, प्रियकर आणि प्रेम व सत्कार ह्यांनीं भरलेलें भाषण श्रवण करून दुर्योधनाच्या मनाची अस्वस्थता दूर झाली; आणि स्वतःच्या पराक्रमाविषयी पुनः विश्वास उत्पन्न होऊन त्यास मोठें धैर्य आलें व तो कर्णाला म्हणाला, “कर्णा, तुझ्या अंगचा पराक्रम व तुझें माझ्याविषयी अतिशय प्रेम हीं मला विदित आहेत; तथापि मी तुला हिताचें वचन सांगतों, तें ऐक आणि नंतर जें तुला रुचेल तें कर. हे महाबाहो, तूं अत्यंत ज्ञाता असून तुझ्यावर माझी नेहमीं सर्व भिस्त आहे. भीष्म व

द्रोण हे माझे सेनापति पतन पावले. ते जरी अतिरथ होते, तरी त्या उभयतांच्याहीपेक्षां तुझ्या ठिकाणीं अधिक सामर्थ्य आहे. ह्यासाठीं तूं माझ्या सेनापत्याचा अधिकार स्वीकार. कर्णा, मी तुला त्या दोघां वीरांपेक्षां अधिक महत्त्व देतों. पहा, ते दोघेही महाधनुर्धर वृद्ध व अर्जुना-विषयीं पक्षपाती होते. राधेया, त्यांस मीं जो एवढा मोठा मान दिला, तो केवळ तुझ्या सांगण्यावरून. वा कर्णा, भीष्माच्या हातून ह्या महारणांत दहा दिवसांत पांडुपुत्रांचा नाश होऊं नये हें खचीत आश्चर्य होय. ह्यास कारण ‘आपण पांडवांचे पितामह आहों’ हा विचार भीष्मानें मनांत वागवून त्यांचा वध करण्याचें ठाळलें, हेंच होय. इकडे पांडव मात्र भीष्माविषयीं पिता-महत्त्व विसरले. तूं शस्त्रास्त्रांचा त्याग केला असतां अर्जुनानें शिखंडीला पुढें करून मोठ्या निकराचें युद्ध सुरू करून भीष्मास पाडिलें! ह्याप्रमाणें तो महाधनुर्धर भीष्म शरतल्पी पडल्या-वर तुझ्या सांगण्यावरून मीं पुरुषश्रेष्ठ द्रोणा-चार्य ह्यांस सेनापत्याधिकार दिला; परंतु त्यांनीही शिष्यत्वबुद्धि मनांत आणूनच पांडवांस राखिलें असें मला वाटतें. पण त्या वृद्ध द्रोणाचार्यांनाही धृष्टद्युम्नानें लवकरच मारून टाकिलें! कर्णा, तुझ्या ठिकाणीं असा कांहीं असाधारण पराक्रम आहे कीं, धारातीर्थीं पतन पावलेल्या त्या प्रधान वीरांनीं सुद्धां तुझ्या पराक्रमाची प्रशंसा केली आहे. विचार करून पाहिलें असतां तुझ्यासारखा समरभूमीवर प्रताप गाजविणारा दुसरा वीर मला दिसून येत नाही. खचीत आह्मांला जय मिळवून देण्यास तूंच तेवढा समर्थ आहेस. पूर्वीं, मध्यंतरीं व तदनंतर तूं तसेंच आमचें हित केलें आहेस. ह्याकरितां त्या त्वां ह्या युद्धांत आमच्या सैन्याचा धुरीण व्हावें, हें योग्य होय. म्हणून सेनापत्याधिकाराचा अभिषेक स्वतःच आपणावर

करून घे. देवांचा सेनानी जसा महाबलिष्ठ स्कंद हा झाला, तसा तू ह्या माझ्या सैन्याचा महाबलिष्ठ सेनानी हो. महेंद्राप्रमाणें तू शत्रु-रूप सर्व दानवगणांचा संहार कर. कर्णा, तू रणशिरोभागी उभा आहेस, असे पाहून महारथ पांडवांची व पंचालांची लेधा उडून, दानव जसे विष्णूला पाहतांच पळून जातात तसे ते तुला पाहतांच पळून जातील ! ह्यास्तव, हे पुरुष-व्याघ्रा, तू महासेनेचें नियमन कर. एकदां तू सेनापत्याधिकारी आरूढ झालास म्हणजे तावड-तोब मंदबुद्धि पांडव अमात्यांसह, पंचालांमह व संजयांसह पळून जातील ! ज्याप्रमाणें सूर्य हा उदयपर्वतावर आरूढ झाला म्हणजे आपल्या प्रतापानें प्रखर अंधकार नष्ट करितो, त्या-प्रमाणें तू सेनानीपदावर आरूढ होऊन आपल्या प्रतापानें शत्रूंना नष्ट करून टाक ! ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, भीष्म व द्रोण हे पडले तरी कर्ण हा पांडवांना जिंकील अशी तुझ्या पुत्राला जी मोठी आशा होती, ती आशा अंतर्त्यामी वागवून दुर्योधनानें कर्णाला असें म्हटलें कीं, “ हे सूतपुत्रा, तुझ्या समोर उभा राहून युद्ध करण्याला पार्थ हा कधीही उत्सुक होणार नाही ! ”

कर्ण म्हणाला:—हे दुर्योधना, मी तुला पूर्वीच सांगितलें आहे की, ‘ मी पुत्रांसहित व कृष्णासहित सर्व पांडवांना जिंकीन. मी तुझा सेनापति होईन ह्याबद्दल संशयच नाही. ह्या-करितां, हे महाराज दुर्योधना, स्वस्थ अस; व पांडव जिंकिलेच असें मान. ’

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कर्णाचें हें भाषण ऐकून, देवेंद्र जसा देवांसहवर्तमान उठतो तसा दुर्योधन सर्व राजांसह कर्णावर सेना-पत्याचा अभिषेक करण्याकरितां उठला; आणि देवांनीं जसा स्कंदाला सेनापत्याभिषेक केला, तसा त्या दुर्योधनप्रभृति विजयेच्छु सर्व राजांनीं

कर्णावर यथाविधि सेनापत्याभिषेक केला. त्यांनीं प्रथम रेशमी वस्त्रांनीं शृंगारलेल्या उंबरराच्या आसनावर कर्णाला बसविलें; आणि तो तेथें सुखानें अधिष्ठित असतां उदकानें भरलेल्या सुवर्णाच्या व मुक्तिकेच्या अभिमंलित कल-शांनीं, त्याप्रमाणेंच, ज्यांवर रत्नांचा व मौक्तिकांचा जडाव केलेला आहे अशा हस्तिदंताच्या पात्रांत आणि गव्यांच्या व गेंड्यांच्या शिंगांत पाणी भरून त्यांनीं, त्याप्रमाणेंच दुसऱ्या मंगलदायक सुगंधि पदार्थांनीं व लतापुष्पा-दिक वनस्पतींनी, आणि त्या विधीकरितां शास्त्रा-नुसार मिळवून आणिलेल्या इतर नानावध वस्तूंनीं त्या राजांनीं कर्णावर अभिषेक केला. नंतर श्रेष्ठ पदावर आरूढ झालेल्या त्या महात्म्या कर्णाची ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व सन्मान्य शूद्र ह्यांनीं स्तुति करून त्याचा गौरव केला. मग त्या शत्रुसंहारक कर्णानें सत्पात्र ब्राह्मणांस दक्षिणा, गाई व संपत्ति दिली व नंतर त्यांनी त्यास मंगलकारक आशीर्वाद दिले. त्या समर्थी ब्राह्मण व बंदिजन ह्यांनीं कर्णाला म्हटलें की, “ हे पुरुषर्षभा, तू ह्या घोर संग्रामांत गोविंदा-सहित व अनुयायांसहित पांडवांस जिंक. राधेया, पांचालांसहवर्तमान सर्व पार्थांना ठार मार. ज्याप्रमाणें सूर्याचा उदय होतांच तो आपल्या उग्र किरणांनीं अंधकाराचा नाश करितो, त्याप्रमाणें तू सेनापत्याधिकारावर येतांच शत्रूंचा नाश करून आपणांस जय संपादन कर. सूर्याचे प्रखर किरण अवलोकन करण्यास जशीं शुबडें समर्थ होत नाहीत, तसे कृष्णासहवर्त-मान पांडव हे तू सोडलेले बाण अवलोकन कर-ण्यास समर्थ होणार नाहीत. कर्णा, ज्याप्रमाणें वज्रधारी इंद्रासमोर उभे राहण्यास दानव भितात, त्याप्रमाणेंच तू हातांत शस्त्र घेऊन उभा राहि-लास म्हणजे तुझ्यापुढें उभे राहण्यास पांचाल व पांडव हे भीतील ! ”

राजा धृतराष्ट्र, कर्णावर सेनापत्याभिषेक होतांच त्याची कांति अपरिमित वाढली, व तो तेजानें जणू काय दुसऱ्या सूर्याप्रमाणें झळाळू लागला ! राजा, दुर्योधनानें कर्णावर सेनापत्याभिषेक केल्यावर त्याला आपण कृतार्थ झालों असें वाटलें. इकडे, मृत्यूने प्रेरित केलेला तो कर्ण सेनापति होतांच सैन्याची व्यवस्था पाहू लागला व त्यानें सूर्योदयाच्या समयी सैन्याची रचना जेथच्या तेथें करण्याची आज्ञा दिली. राजा धृतराष्ट्र, नंतर, ज्याप्रमाणें तारकासुराशी युद्ध करितांना देवांनीं परिवेष्टित असलेला स्कंद शोभत होता, त्याप्रमाणें तुझ्या पुत्रांनीं परिवेष्टित असलेला तो कर्ण त्या महासमरभूमीवर शोभू लागला.

अध्याय अकरावा.

—:—

व्यूहरचना.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, विकर्तनपुत्र कर्ण ह्याजला कौरवांच्या सेनेचें आधिपत्य प्राप्त होऊन त्याचें स्वतः दुर्योधनानें भावाप्रमाणें प्रेमळ भाषण करून अभिनंदन केल्यावर, कर्णानें सूर्योदयाच्या समयी सैन्याची रचना वगैरे यथायोग्य प्रकारें करण्याविषयीं आज्ञा दिल्यानंतर त्या महानुद्धिमान् कर्णानें पुढें काय केलें तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, कर्णाचा अधिप्राय समजतांच तुझ्या पुत्रांनीं आनंदकारक रणवाद्यें वाजवून सैन्याची रचना करण्यास आज्ञा दिली. पुष्कळ रात्र शिष्टक आहे तोंच तुझ्या सैन्यांत निकडे तिकडे 'सैन्य सिद्ध करा !' 'सैन्य सिद्ध करा !' असा एकदम महाध्वनि उत्पन्न झाला ! युद्धाकरितां मोठ-मोठे हत्ती सज्ज होऊं लागले, ज्यांवर वरूथें (रथांचें संरक्षण करणारीं व योद्ध्यांची जागा दृष्टीस पडूं न देणारीं अशीं एका प्रकारचीं

रथकवचें) चढविली आहेत, अशा रथांची सिद्धता होऊं लागली, लढाईकरितां कमरबस्ता बांधून वीर तयार होऊं लागले, लोक अश्वांवर सामानसुमान चढवू लागले, आणि युद्धाला आतुर झालेले वीर परस्परांना त्वरा करण्यासाठीं आक्रोश करू लागले, तेव्हां त्या हत्तींच्या, अश्वांच्या व वीरांच्या वगैरे ओरडण्यानें इतका मोठा कलकलाट झाला कीं, तो अगदीं स्वर्गमंडळास जाऊन भिडला !

नंतर, आदित्याप्रमाणें देदीप्यमान अशा रथांत आरूढ होऊन सेनापति सूतपुत्र कर्ण आपल्या सुवर्णपृष्ठ धनुष्यानिशी रणभूमीवर दृग्गोचर झाला. त्याच्या रथावर श्वेत पताका फडकत होत्या, त्या रथाचे अश्व बगळ्यासारखे गुभ्र होतें, त्याच्या ध्वजावर नागकसेचें (हत्तींच्या साखळ-दंडाचें) चिन्ह होतें, त्यावर लहान लहान घंटा लाविलेल्या होत्या, त्यावर शंभर बाणभोते ठेविलेले असून गदा व वरूथ हींही होती, आणि ह्याशिवाय त्या रथावर शतघ्नी नांवाच्या व दुसऱ्या शक्ति असून शूल, तोमर आणि पुष्कळ बाण होते. कर्णानें समरभूमीवर अवतीर्ण होतांच, सुवर्णाचें जाळीदार काम ज्यावर केलें होतें असा आपला शंख वाजविला, आणि आपल्या सुवर्णमंडित मोठ्या धनुष्याचा टणत्कार केला. तो महाधनुर्धर महारथ कर्ण रथाारूढ झालेला पाहून जणू काय सूर्य हा उदयपर्वतावर आरूढ झाला असून तो आपल्या किरणांनीं अंधकाराचा नाश करीत आहे, असें भासलें. तेव्हां त्या विजयशाली कर्णाची ती वीरश्री अवलोकन करून कौरवांना भीष्माच्या, द्रोणाचार्यांच्या किंवा अन्य वीरांच्या मृत्यूचें कांही-एक वाटलें नाही. नंतर कर्णानें शंखध्वनि करून योद्ध्यांना त्वरा करण्याविषयीं इशारा केला आणि तदनुसार कौरवांचें अवाढव्य सैन्य रणांगणांत धावत येऊन सिद्ध झालें.

नंतर, कर्णानें त्या सैन्याचा मकराकार व्यूह रचिला, आणि तो स्वतः पांडवांना जिंकण्याच्या हेतूने पुढें सरला. राजा, त्या मकराच्या मुखप्रदेशीं कर्ण स्वतः उभा राहिला. त्याच्या नेत्रांच्या जागीं शूर शकुनि व महारथ उलूक हे उभे राहिले. मस्तकप्रांतीं द्रोणपुत्र अश्वत्थामा उभा राहिला. मानेच्या ठिकाणीं सर्व सखे भाऊ उभे राहिले. मध्यभागीं मोठ्या सैन्यासह दुर्योधन राजा उभा राहिला. पुढील डाव्या पायाच्या जागीं कृतवर्मा उभा राहिला, आणि त्याच्या सभोवतीं महापराक्रमी नारायण व गोपाल वीर उभे राहिले. पुढील उजव्या पायाच्या जागीं अमोघवीर्य गौतम उभा राहिला व त्याच्या सभोवतीं महाधनुर्धर त्रिगर्त व दाक्षिणात्य हे उभे राहिले. पाठीमागच्या डाव्या पायाच्या ठिकाणीं मद्रदेशांतून आणिलेल्या मोठ्या सेनेसहवर्तमान शल्य उभा राहिला. पाठीमागच्या उजव्या पायाच्या ठिकाणीं सत्यसंध सुषेण हा सहस्र रथ व तीनशें हत्ती ह्यांनिशीं उभा राहिला; आणि पुच्छाच्या जागीं महावीर्यवान् भ्राते चित्र व चित्रसेन राजे हे मोठ्या सैन्यासह उभे राहिले.

राजा धृतराष्ट्र, ह्याप्रमाणें नरवरश्रेष्ठ कर्णानें समरांगणांत सैन्याची सिद्धता केल्यानंतर अर्जुनाकडे पाहून धर्मराज म्हणाला, “ अर्जुना, हें कौरवांचें सैन्य समरभूमीवर कर्णानें कसें उभे केलें आहे, तें पहा. ह्यामध्ये महारथ व इतर वीर सैन्यसंरक्षणाकरितां मिळ आहेत. अर्जुना, कौरवांकडील श्रेष्ठ योद्धे पतन पावल्यामुळे, हें सैन्य जरी मोठें अवाढव्य विसत आहे, तरी ते मला तृणतुल्य भासतें. कारण ह्यांत शिष्टक असलेले वीर अगदीं कमकुवत व हीनवीर्य आहेत! अर्जुना, ह्या सर्व सैन्यांत एक महाधनुर्धर कर्ण मात्र खरा पराक्रमी आहे. त्याच्या लटण्यास देव, असुर, गंधर्व, किन्नर

व महोरग ह्यांसहवर्तमान चराचर तिन्ही लोक जरी सिद्ध झाले, तरी त्यांनाही तो महारथ जिकितां येणार नाही. हे महाबाहो अर्जुना, आज तूं त्यांचें हनन कर म्हणजे तुला जय मिळालाच असें मान. अर्जुना, आज तूं जर कर्णाचा वध करशील, तर द्वादश वर्षपर्यंत तुझ्या हृदयांत सुषुप्त असलेलें शल्यच उपटून टाकल्याप्रमाणें होईल! ह्यास्तव, हे अर्जुना, हा उद्देश मनांत आणून तूं आपल्या इच्छेनुरूप सैन्याची रचना कर.”

राजा, नंतर अर्जुनानें भ्रातृवचनाचा विचार करून स्वसैन्याचा अर्धचंद्राकार व्यूह सिद्ध केला. त्या व्यूहाच्या डाव्या बाजूस भीमसेन उभा राहिला. उजव्या बाजूस महाधनुर्धर धृष्टद्युम्न उभा राहिला. मध्यभागीं धर्मराज व अर्जुन हे उभे राहिले. नकुल व सहदेव हे धर्मराजाच्या पृष्ठभागीं उभे राहिले. युधामन्यु व उत्तमौजा हे दोन पांचाल्य वीर अर्जुनाच्या रथाचीं चक्रे राखीत राहिले. अर्जुन हा त्यांस राखीत होता त्यामुळे त्यांनीं अर्जुनास क्षणभर सुद्धां सोडिलें नाहीं. आणि कवचें धारण करून युद्धार्थ सिद्ध असलेले बाकीचे राजे आपआपल्या सामर्थ्याप्रमाणें, पराक्रमाप्रमाणें व साहसाप्रमाणें योग्य अशा स्थानीं उभे राहिले. ह्याप्रमाणें पांडवांनीं मोठा व्यूह तयार केला.

धृतराष्ट्र, अशा प्रकारें दोन्ही दळे सिद्ध झाल्यावर तुझ्याकडील महान् धनुर्बाण्यांनीं युद्धाविषयीं विचार मनांत आणिला. राजा, रणभूमीवर सूतपुत्र कर्णानें तुझ्या सेनेचा व्यूह सिद्ध केलेला पाहून बभ्रुसहवर्तमान दुर्योधनाच्या मनांत लागलेच आले कीं, आतां पांडवांचा वध झालाच! त्याप्रमाणेंच तिकडे पांडवांच्या सैन्याचा व्यूह अवलोकन करून युधिष्ठिरालाई वाटलें कीं, आतां कर्णासहित सर्व कौरव मृत्युमुखी पडलेच! ह्याप्रमाणें दोन्ही पक्षांना आप

आपल्यापरी जयप्राप्तीचा भरंवसा उत्पन्न झाला असतां रणवाद्यांचा गजर सुरू झाला. शंख, भेरी, पणव, आनक, तुंदुभि, डिडिम व झंझर हीं वाद्ये चोहोंकडे वाजू लागली. दोन्ही सैन्यांत महान् महान् वाद्यांचा एकच घोष सुरू झाला. विजयेच्छु शूर योद्धे सिंहाप्रमाणें गर्जू लागले. घोड्यांचें खिकाळणें, हत्तीचें ओरडणें आणि रथचक्रांचें खडखडणें, ह्यांचा एकच महान् शब्द होऊं लागला. त्या समयी, व्यूहाच्या पुरोभागी चिलखत घातलेला महाघनुर्धर कर्ण उभा आहे, असें पाहून द्रोणाचार्याच्या मृत्यूचें स्मरण मुद्दां कोणाम झालें नाही. राजा, दोन्ही दळांत वीर-श्रीनें सळसळणाऱ्या नरवीरांची गर्दी असून, ते मोठ्या शौर्यानें परस्परांना ठार मारण्याची वाट पहात होते. ह्याप्रमाणें उभय सैन्यांची सिद्धता अवलोकन करून व एकमेकांना पाहून कर्ण व अर्जुन हे अगदीं प्रक्षुब्ध झाले आणि ते सैन्यांमध्ये संचार करूं लागले. नंतर दोन्ही सेना थैमान करीत एकमेकांवर धावून गेल्या; नंतर युद्धाविषयी आतुर झालेले ते वीर आपापल्या मुख्य मुख्य स्थानांपासून पुढें सरसावले; आणि मग त्या चतुरंग सैन्यांचें तिकराचें युद्ध सुरू होऊन उभय दळांत मोठा संहार होऊं लागला.

अध्याय बारावा.

—०—

क्षेमधृतीचा वध.

संजय मांगता :— राजा धृतराष्ट्रा, ती दोन्ही प्रचंड दळे एकमेकांना भिडली तेव्हां त्यांना युद्धाविषयी अतिशय हुरूप चढला; त्यांतिल योद्ध्यांना मोठी वीरश्री आली; घोड्यांना व हत्तींना स्फुरण चढून ते थैमान करूं लागले; आणि त्या सैन्यांवर देवदानवांच्या सैन्यांप्रमाणें दिव्य तेज झळकूं लागलें. ह्याप्रमाणें मोठ्या आवेशानें त्या सेनांची लगट होतांच

रथ, अश्व, गज व पत्ति ह्यांचा उग्र पराक्रम दिसूं लागला. त्यांनी एकमेकांवर एकसारखे असे प्रहार केले कीं, त्यांच्या योगानें मोठमोठे वीर आपले देह व पातकें धारातीर्थी टाकून देऊन स्वर्गलोकी चालते झाले! महान् महान् योद्ध्यांनी महान् महान् योद्ध्यांच्या मस्तकांनी भूतल आच्छादून टाकिलें. व त्यामुळें जिकडे तिकडे पूर्णचंद्राविवे किंवा सूर्यमंडलें पतन पावलीं असून चोहोंकडे पक्षांचा सुगंध चालला आहे असे वाटूं लागलें! त्या समयी वीरांनीं आपल्या अर्धचंद्राकार बाणांनी, भल्ल बाणांनी, क्षुप्र बाणांनी, तरवारींनी, कुन्हाडींनी व शूलांनी प्रतिपक्षांची मस्तकें उडविली. ज्यांचे बाहु पुष्ट व दीर्घ होते, अशा योद्ध्यांनी आपल्या-प्रमाणेंच पुष्ट व दीर्घ अशा बाहुंच्या वीरांचे बाहु तोडून टाकिले व ते धरणीवर पडून हातां-तील शस्त्रांच्या व भूषणांच्या योगें भूपृष्ठावर शोभूं लागले. त्या समयी त्यांचे ते आरक्तवर्ण हात व बाँटे इतकी कांही झळकत होती कीं, जणू काय गरुडानें मारून टाकलेले भयंकर पंचमुखी सर्पच तेथें पडले आहेत असें भासत होतें! त्याप्रमाणेंच, पुण्याचा क्षय झाला असतां स्वर्ग-वासी पुरुष जसे विमानांतून खाली मृत्युलोकीं पडतात तसे शत्रूंच्या प्रहारांमुळें रथ, गज व अश्व ह्यांवरून वीर खाली भूतलावर पडूं लागले! तसेच दुमरे शतावधि वीर हे बलिष्ठ वीरांच्या मोठमोठाल्या गदा, परिघ, मुसळें इत्या-दिकांच्या योगें रणभूमीवर पतन पावले; आणि त्याप्रमाणेंच त्या घोर संघर्षांत रथांनी रथांचा चुराडा केला. मदोन्मत्त हत्तींनी मदोन्मत्त हत्तींचा फत्ता उडविला; आणि स्वारांनी स्वारांना धुळीत मिळविलें! तसाच रथांच्या तडा-क्यांत सांपडून माणसांचा नश झाला; हत्तींच्या तडाक्यांत सांपडून रथांचा विध्वंस झाला आणि घोडेस्वारांचा पायदळानें व पायदळाचा

घोडेस्वारांनीं फत्ता उडविला ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या घनघोर युद्धांत अशी कांहीं एकच गर्दी उडाली कीं, रथ, अश्व व पायदळ ह्यांचा हत्तींनीं नाश केला; रथ, अश्व व हत्ती ह्यांचा पायदळानें संहार उडविला; रथ, पायदळ व हत्ती ह्यांचा अध्वानीं विध्वंस केला; आणि मनुष्ये व हत्ती ह्यांचा रथांनीं फत्ता उडविला ! सारांश, त्या समयीं दोन्ही पक्षांच्या चतुरंग दळांचें तुंबळ युद्ध सुरू होऊन हात, पाय, शस्त्रे व रथ ह्यांच्या योगें मोठा संहार होऊं लागला.

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें त्या दोन्ही सैन्यांत निकराचें युद्ध चाललें असतां भीमसेनास पुढें करून पांडव हे कौरवांवर चाल करून आले. त्या वेळीं पांडवांकडे धृष्टद्युम्न, शिखंडी, द्रौपदीचे पुत्र, प्रभद्रक, सात्यकि व द्रुपिड, सैन्यासह चेकितान, हे प्रमुख वीर असून, पांडव, चोल व केरल हे मोठ्या सैन्यानिशीं वृह-रचना करून युद्धास सिद्ध होते. ह्या सर्व योद्ध्यांची छाती भरदार असून बाहु दीर्घ होते; ते उंच धिप्पाड असून त्यांचे नेत्र विशाल होते; त्यांचे दंत आरक्त असून त्यांच्या शरीरावर आभारणें होती. त्यांच्या अंगीं मदनमत्त गजांप्रमाणें शौर्य असून त्यांनीं नानाप्रकारच्या रंगांचीं वस्त्रे परिधान केलीं होती व अनेक सुगंधि द्रव्यें अंगाला लाविलीं होती; त्यांच्या कपरेस तरवारी असून हातांत पाश होते, त्यांच्या ठिकाणीं हत्तींचें निग्रहण करण्याचें सामर्थ्य असून ते मृत्यूला जुमानीत नव्हते. त्यांच्या-मध्ये द्वेषीभाव मुळीच नसून ते एकमेकांना केव्हांही सोडीत नसत; त्यांच्यापार्शीं बाणभाते असून हातांत धनुष्ये सज्ज होती; त्यांचे केश दीर्घ असून वाणी रसाल होती; आणि त्यांची मुद्रा उग्र असून ते मोठे पराक्रमी होते. राजा, पांडवांकडील पायदळ, घोडेस्वार व दुसरे सर्व योद्धे ह्यांची स्थिति अशा प्रकारची होती. ह्या-

प्रमाणें पांडवांकडील सैन्यानें आपल्या सैन्यावर (कौरवांवर) चाल केल्यानंतर त्यांच्या पक्षाच्या आणखी शूर योद्ध्यांनीं कौरवांवर स्वारी केली. चेदि, पंचाल, केकय, कारुष, कोसल, कांच्य, मागध वगैरे सर्व पांडवपक्षीय वीरांनींही कौरवांवर हल्ला केला. त्यांचे रथ, अश्व, हत्ती व उग्र पायदळ हीं श्रेष्ठ प्रतीचीं असून त्यांच्याबरोबर नानाप्रकारचीं रणवाद्ये वाजत होती; आणि त्या वाद्यरवानें त्यांस इतका हर्ष झाला होता की, ते सर्व सैन्य आनंदांत केवळ नाचत होतें !

धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारच्या त्या अवाढव्य व प्रचळ सैन्यासह भीमसेन कौरवांवर चालून आला. त्या सैन्याच्या मध्यभागी भीमसेन गज-स्कंधावर आरूढ झालेला असून त्याच्या समो-वती श्रेष्ठ महात त्याच्या संरक्षणार्थ मिद्ध होते. भीमसेन ज्या श्रेष्ठ हत्तीवर बसला होता त्यावर आवश्यक असलेले सर्व संस्कार यथाविधि केले असल्यामुळें तो दिव्य तेजांनं शोभत होता. उदयपर्वताच्या अग्रभागी विराजमान झालेला दिनकर जसा आपल्या अद्वितीय कांतीनें झळकत असतो, तसा तो वीरपुंगव भीमसेन त्या गजश्रेष्ठाच्या स्कंधदेशी दिव्य कांतीनें झळाळत होता. त्याच्या अंगांत उत्कृष्ट प्रतीचें पोलादी चिलखत असून त्याच्यावर उत्तम उत्तम रत्नांचा जडाव केलेला होता; ह्यामुळें शरत्कालांत तारकांनीं व्याप्त असलेलें आकाश ज्याप्रमाणें दिमनें त्याप्रमाणें भीमसेनाचा तो कवचयुक्त देह दिमत होता. त्या वीराच्या हातांत एक तोमर असून त्याच्या मस्तका-वर सुंदर किरीट होता. त्यानें नाना-विध अलंकार धारण केले असून तो आपल्या देदीप्यमान तेजांनं शरत्कालीन मध्याह्नीच्या सूर्याप्रमाणें शश्रूम भाजून काढीत होता. अशा प्रकारें द्विपस्कंधवर दिव्य कांतीनें झळाळत

असलेल्या त्या पांडुपुत्रास दुरून अवलोकन करून, हत्तीवर आरूढ झालेल्या क्षेमधूर्तीने त्यास युद्धार्थ आह्वान केलें; आणि मोठ्या उल्लासास, आपल्याहूनही अधिक उल्लासित झालेल्या त्या पांडववीरांवर तो क्षेमधूर्ति चाल करून गेला.

नंतर त्या दोन्ही योद्ध्यांच्या भयंकर हत्तीचें युद्ध जुंपलें. त्या समयीं, वृक्षादिकांनीं युक्त असलेले ते दोन महान् पर्वत एकमेकांशीं स्वेर वृत्तीनें झगडत आहेत असा भास होऊं लागला. ह्याप्रमाणें ते दोन हत्ती परस्परांशीं लढत असतां त्यांजवरील वीर सूर्यकिरणांप्रमाणें दीप्तिमान् अशा आपल्या तोमरांनीं एकमेकांवर प्रहार करून मोठमोठ्यानें गर्जना करूं लागले. नंतर त्या दोन्ही वीरांची झुज सुटली व ते एकमेकांपासून दूर दूर होऊन आपल्या हत्ती-सहवर्तमान मंडलाकार भ्रमण करूं लागले; आणि मग त्यांनीं धनुष्यें हातांत घेऊन परस्परांवर बाणवृष्टि करण्यास प्रारंभ केला. ह्याप्रमाणें ते दोन्ही योद्धे एकमेकांवर बाण टाकीत असतां प्रत्येकाचा एकसारखा शब्द होत असून चोहोंकडे दोन्ही पक्षांतील सैनिकांत मोठा हुरूप व आनंद वाढत चालला होता. त्या वेळीं ते दोन्ही वीर सिंहांप्रमाणें गर्जू लागले, आणि त्यांनीं आपापले हत्ती पुनः एकमेकांवर घातले. नंतर ते दोन्ही हत्ती आपापल्या शूडां वर करून एकमेकांशीं झगडूं लागले आणि त्यांवरील पताका वायुवेगानें एकसारख्या फडकत असतां मोठी विलक्षण शोभा दृग्गोचर झाली. नंतर त्या गर्दीत त्या वीरश्रेष्ठांनीं एकमेकांचीं धनुष्यें तोडून टाकिली व ते पुनः आरोळ्या देत एकमेकांवर धावून गेले. मग त्यांनीं एकमेकांवर प्रावृद्धारेप्रमाणें शक्ति व तोमर ह्यांची वृष्टि केली. इतक्यांत क्षेमधूर्तीनें भीमसेनाच्या वक्षःस्थली मोठ्या वेगानें तोमराचा

प्रहार केला व नंतर पुनः पुनः आणखी सहा वेळां त्याच ठिकाणीं तोमरांची वृष्टि केली व मोठ्यानें गर्जना चालविली. राजा, त्या समयीं भीमसेनास फार क्रोध आला व तोमरांनीं विद्ध झालेला तो पांडुपुत्र, प्रखर किरणांनीं प्रदीप्त असून मेघमंडळानें विद्ध झालेल्या भास्कराप्रमाणे शोभूं लागला ! नंतर त्यानें सूर्याप्रमाणें देदीप्यमान असें तें आपल्या हातांतलें पोलादी तोमर नीट नेम धरून समोर शत्रूवर फेंकिलें; तेव्हां तत्काळ त्या कुलूताविपतीनें आपल्या धनुष्याची प्रत्यंचा ओढून दहा बाण मारिले व त्या तोमराचा चुराडा करून टाकिला आणि आणखी साठ बाण मारून भीमसेनाला विंधिलें. तेव्हां भीमसेनानेंही हातांत धनुष्य घेतलें व मेघाप्रमाणें गर्जना करून क्षेमधूर्तीच्या हत्तीवर बाणांचा प्रहार केला. त्या समयीं त्या बाणवृष्टीनें क्षेमधूर्तीचा तो बलिष्ठ हत्ती भयभीत होऊन कावरावावरा झाला व त्यास आवरून धरण्याविषयी क्षेमधूर्तीनें केलेला सर्व प्रयत्न फुकट जाऊन. वाऱ्यानें अस्ताव्यस्त उधळून दिलेल्या मेघाप्रमाणें तो स्वेरवृत्तीनें पळत सुटला ! ते पाहून भीमसेनाचा प्रचळ हत्ती त्याच्या पाठीस लागला; परंतु इतक्यांत क्षेमधूर्तीनें आपला हत्ती आपल्या ताळ्यांत आणिला व त्याच्यावर चाल करून येणाऱ्या भीमाच्या हत्तीवर त्यानें बाणवृष्टि केली. नंतर क्षेमधूर्तीनें नेम धरून आपले बांकदार पेण्याचे बाणानें भीमसेनाचें धनुष्य तोडून टाकिलें आणि त्याच्या हत्तीस ममस्थळी बाणांनीं विद्ध करून जर्जर केलें. तेव्हां तो भीमसेनाचा महान् हत्ती खाली पडला. परंतु इतकें होण्याच्या पूर्वीच भीमसेनानें आपल्या हत्तीवरून खाली उडी मारिली व त्यानें शत्रूच्या हत्तीवर बाणप्रहार करून त्यास ठार केलें ! ह्याप्रमाणें क्षेमधूर्तीचा हत्ती मृत झाला असतां तो हातांत शस्त्र घेऊन

हत्तीवरून खाली उडी मारून भीमसेनावर धावून येत असतां भीमसेनानें त्याजवर गदेचा प्रहार केला व त्या प्रहारासरसा तो क्षेमधूर्ति गतप्राण होऊन आपल्या हत्तीच्या समीप शखांसहवर्तमान ग्वालीं पडला ! राजा धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारें, वज्रानें विदर्णि झालेल्या पर्वताप्रमाणें किंवा वज्रानें हत झालेल्या मिहाप्रमाणें त्या पराक्रमी कुलत्ताधिपतीची अवस्था झालेली पाहून तुझ्या सैन्याची तारांबळ उडाली व त्यास निकडे वाट मिळाली तिकडे तें पळून गेलें !

अध्याय तेरावा.

—:—

विद्वानुविदांचा वध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर महाधनुर्धर शूर कर्णानें समरांगणांत पांडवांच्या सेनेवर सन्नतपर्व बाणांचा वर्षाव करण्यास प्रारंभ केला. त्याप्रमाणेंच कर्णाच्या समक्ष महारथ पांडवांनीं मोठ्या क्रोधानें बाणवृष्टि सुरू करून कौरवसैन्याचा वध आरंभिला; आणि कर्णानेही लोहारांकरवी पणी देऊन धार दिलेले सूर्यकिरणांसारखे तेजस्वी बाण पांडवसैन्यावर टाकून त्याचा संहार करण्यास सुरुवात केली. राजा, कर्णाच्या बाणप्रहारांनी विद्ध झालेले पांडवसैन्यांतील हत्ती एकसारखे ओरडूं लागले, त्यांची शक्ति अगदी गालित झाली, त्यांचे देह अगदी मल्ल झाले, आणि ते मेरावेरा दाही दिशांस भटकूं लागले ! राजा, ह्याप्रमाणें सृतपुत्र कर्णानें पांडवसेनेचा निःपात चालविला असतां त्या घनघोर युद्धांत मोठ्या त्वरेनें नकुल हा कर्णावर धावून गेला; अश्वत्थामा भयंकर कर्म करीत असतां त्याजवर भीमसेनानें हल्ला केल; आणि केकय देशचे राजे विद्वानुविद्ध ह्यांस सात्यकीनें निवारिलें. त्याप्रमाणेंच चित्रसेन राजानें आपणावर चाल करून येणाऱ्या श्रुतकर्माशी युद्ध

आरंभिलें. प्रतिविध्य हा सुंदर ध्वज व धनुष्य धारण करणाऱ्या चित्र राजावर चालून गेला, दुर्योधनानें धर्मराज युधिष्ठिर ह्याजवर हल्ला केला, आणि संशप्तकांच्या टोळ्यांवर अर्जुनानें मोठ्या आवेशानें चाल केली. राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें मोठ्या निकराचें युद्ध चालू होऊन मोठमोठे थोडे मरून पडूं लागले असतां, धृष्टद्युम्नाचें कृपाचार्यांशी व शिबंदीचें कृतवर्माशी युद्ध नुपलें; श्रुतकीर्तीनें शल्याला गांठलें; आणि माद्रीचा पुत्र महापराक्रमी सहदेव ह्यानें तुम्हा पुत्र दुःशामन यावर चाल केली.

इकडे, दोन्ही कैकेय राजांनी प्रवर बाणांची वृष्टि करून सात्यकीला झांकून काढिलें; उलट सात्यकीनेही कैकेय राजांची तीच अवस्था करून टाकिली. राजा, त्या दोघां कैकेय विद्वानुविद्ध भ्रात्यांनी सात्यकीच्या वक्षःस्थली फारच बाणप्रहार केले. त्या समर्पी जण काय ते दोन हत्ती आपल्या शेंड्यांनी महान् अरण्यामध्ये आपल्या प्रतिपक्षी हत्तीशी झुजत आहेत असाच भाम होत होता. धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें त्या वीरांचें युद्ध चालू असतां सात्यकीनें त्या विद्वानुविदांवर शरांचा भडिमार एकसारखा चालविला होताच; ह्यामुलें त्या शरांनी त्या कैकेय राजांची चिलखते अगदीं फाटून व तुटून गेली होती; तरीही त्यांनी न भितां नेटानें प्रयत्न करून मत्यकर्म सात्यकीला बाणांनी विद्ध करून टाकिलें ! राजा, ह्या प्रकारें त्या विद्वानुविदांनीं आपल्यापरी मोठा पराक्रम केला खरा; परंतु तो पाहून सात्यकीला नवल न वाटतां त्यानें उलट त्यांजकडे उपहासबुद्धीनें हंमन पाहिलें व त्याजवर चोहों अंगांनीं बाणांचा वर्षाव करून त्यांस झांकून टाकिलें. अशा प्रकारें त्या सैन्यानें विद्वानुविदांचें निवारण केलें असतां त्यांनी तत्काल पुनः सात्यकीचा रथ बाणांनी झांकून काढिला. नंतर त्या महाप्रतापशाली शौरीनें विद्वानु-

विदांचीं तीं चित्तविचित्र धनुष्यें तोडून टाकिलीं व त्यांना समरांगणांत तीव्र बाण मारून कुंठित केले. तेव्हां विद्वानुविदांनी दुसरी तसलीच धनुष्यें हातांत घेतलीं आणि फिरून जलाल बाणांच्या वृष्टीनें सात्यकीचा निरोध करून, तो जिकडे जिकडे गेल्या तिकडे तिकडे त्याच्या मागून त्याजवर बाणांची वृष्टि करीत ते चालले. त्यांनीं त्या बाणांचा गर्द वर्षाव असा कांही त्वरेनें केला की, कंक व मयूर ह्यांच्या पिसांचे पुंख असलेले ते सुवर्णमंडित मोठमोठे बाण दश-दिशा प्रकाशित करून खाली पडूं लागले ! परंतु त्या महान् युद्धांत बाणांची गर्दी अतिशय आल्यामुळे अंतरिक्ष आच्छादून जाऊन त्या बाणांचा अंधकार पडला ! नंतर त्या महाराथांनीं एकमेकांची धनुष्यें तोडून टाकिली. मग त्या युद्धधुरंधर सात्वतानें संतप्त होऊन दुसरें धनुष्य हातीं घेतलें; व त्यास प्रत्यंचा जोडून अनुविदांवर एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण अशा प्रकारें टाकला की, त्यानें अनुविदांचें तें मोठें शिर लागलेंच तुटून शंकरासुराच्या शिराप्रमाणें कुडलांसहवर्तमान रणभूमीवर शोभत पडलें ! राजा, त्या समयी कैकेय वीरांना फारच भीति वाटली व दुःख झालें !

शूर अनुविदांची ही अशी अवस्था पाहून, त्याचा भ्राता महारथ विंद ह्यानें दुसरें धनुष्य सिद्ध केलें व बाणवृष्टि करून सात्यकीचा प्रतिकार केला. नंतर त्यानें सहाणेवर धार लावलेल्या साठ स्वर्णपुंख बाणांनी सात्यकीला धिडिलें व 'थांब थांब' म्हणून मोठ्यानें आरोळी दिली. मग त्या महारथ कैकेय राजानें तावड-तोव सात्यकीच्या बाहुप्रदेशी व उरःप्रदेशी सहावधि बाण मारिले. त्या बाणांनी रक्तचंचाळ झाल्यामुळे शरविद्ध झालेल्या सत्यविक्रम सात्यकीचा देह त्या प्रसंगी फुललेल्या पल्लप्रमाणें दिसू लागला ! ह्याप्रमाणें महात्मा विंद राजानें

सात्यकीच्या सर्व शरीरावर बाणांचे प्रहार केले असतां, सात्यकीनें किंचित् हास्य करून पंच-वीस बाण त्या विंदराजावर टाकिले. नंतर दोघांचें घोर युद्ध होऊं लागलें. त्यांत त्यांनी परस्परांची उत्तम धनुष्यें छेदून टाकिली; एकमेकांचे साराथि क्षणांत मारिले; व अश्वानां यमलोकी पाठवून दिले ! नंतर विरथ झालेले ते दोघे वीर हातांत तरवारी व शतावधि चंद्र ज्यांवर काढिले आहेत अशा ढाली घेऊन रणभूमीवर युद्ध करण्यास प्रवृत्त झाले. त्या समयी पूर्वा देव व अमर ह्यांच्या युद्धांत महाबलिष्ठ जंभ व इंद्र हे जमे शोभले, तसे ते श्रेष्ठ खड्ग धारण करणारे विंद व सात्यकि हे वीर शोभू लागले ! ते मंडलाकार फिरून त्या महान् संघ्रा-मांत एकमेकांवर चाल करून जात आणि एकमेकांना ठार करण्याकरितां अत्यंत प्रयत्न करीत. ह्याप्रमाणें कम चालू असतां सात्यकीनें कैकेय राजाची ढाल छेदून तिचे दोन तुकडे केले; लगेच विद्वानेही सात्यकीच्या ढालेची तीच व्यवस्था लाविली ! ह्या प्रकारें त्या दोघां वीरांनीं एकमेकांच्या ढाली तोडून टाकल्यावर कैकेय राजा मंडलाकार फिरत सात्यकीवर धावून गेला. तो कांहीसा पुढें जाई व पुनः मागे येई; अशा रीतीनें त्यानें सात्यकीवर चाल केली असतां सात्यकीनें त्या शस्त्रधारी विंद राजाच्या कुशीत मोठ्या त्वरेनें तरवारीचा असा वार केला की, त्यामरसा तो विंद राजा कवचासह द्विधा भंग होऊन वज्रानें भंग झालेल्या पर्वताप्रमाणें एकदम खाली पडला !

ह्या प्रकारें विंदाचा वध केल्यावर शूर महारथ शैनेय सात्यकि युधामन्युच्या रथावर चढला आणि नंतर दुसरा रथ आणवून व त्याची यथाशास्त्र व यथाविधि सिद्धता करून त्यावर तो आरूढ झाला; आणि बाणवृष्टि करून कैकेयांच्या अवाढव्य सेनेचा त्यानें निःपात चाल-

विला. तेव्हां ती सेना समरांगणांत शत्रूसोडून देऊन दाही दिशास वाट मिळाली तिकडे उधळून गेली !

अध्याय चौदावा.

—:०:—

चित्रसेनाचा वध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, विंद व अनुविंद ह्यांस सात्यकीनें ठार मारिल्यावर समरांगणांत श्रुतकर्मानें मोठ्या संतापांनें चित्रसेनेन राजाला पन्नास बाण मारिले; तेव्हां त्या अभिसाराधिपति चित्रसेनानें श्रुतकर्मावर बांकदार पेण्यांचे नऊ बाण टाकिले आणि पांच बाणांनी त्याच्या सारथ्यास विद्ध केले. तें पाहून श्रुतकर्मा क्षुब्ध झाला आणि त्यानें सैन्याच्या अग्रमार्गी असलेल्या चित्रसेन राजाच्या मर्मस्थली नाराच नांवाचा तीक्ष्ण बाण टाकिला ! राजा धृतराष्ट्रा, महात्म्याश्रुतकर्मानें ह्याप्रमाणें चित्रसेनास बाणप्रहार करितांच तो अत्यंत विद्ध होऊन मूर्च्छित पडला व त्याचे देहभान मुटलें ! नंतर महाविजयशाली श्रुतकर्मानें नव्वद बाणांनी चित्रसेनास आच्छादित केले. नंतर कांही वेळानें महारथ चित्रसेने सावध झाला व त्यानें भल्ल बाणांनें श्रुतकर्माचे धनुष्य तोडून टाकून नऊ बाणांनी त्यास विद्ध केले. मग श्रुतकर्मानें दुसरे धनुष्य घेतलें. तें धनुष्य सुवर्णमंडित अमुन श्रुतकर्मानें त्या धनुष्याचें आकर्षण करून मोठ्या वेगानें बाणांचे ओघ चालू केले आणि चित्रसेन राजास शरविद्ध करून त्याचें रूप चित्रविचित्र बनविलें ! तेव्हां तो चित्रविचित्र पुष्पमाला धारण करणारा तरुण चित्रसेन राजा सभेत अलंकार घातलेला तरुण पुरुष जसा शोभतो तसा त्या समरांगणांत शोभू लागला ! नंतर त्या शूर चित्रसेनानें ' थांव, यांव,' असें म्हणून

मोठ्या आवेशानें श्रुतकर्माच्या वक्षःस्थलावर नाराच बाण टाकिला आणि त्यासारसा श्रुतकर्माच्या वक्षःस्थलांतून रुधिराचा प्रवाह सुरू होऊन, पर्वतांतून जसा कावेचा रस वाहात असतो, तसा तो प्रवाह वाहू लागला ! तेव्हां श्रुतकर्माला रक्ताचे स्नान झालें व त्याचा देह रक्तासारखा लालभडक दिसू लागला. त्या समर्थी त्याची ती अवस्था अवलोकन करून जणू काय रणभूमीवर किंशुक वृक्षच फुटलेला आहे, असें वाटू लागले ! नंतर शत्रूचा निरोध करण्यासाठी प्रक्षुब्ध होऊन श्रुतकर्मानें चित्रसेनाच्या धनुष्याचे दोन तुकडे करून टाकिले आणि तीनशें नाराच बाण मारून त्यास आच्छादिले. मग त्यानें दुसऱ्या एका तीक्ष्ण व धार लावलेल्या भल्ल बाणांनें त्या महात्म्या चित्रसेनाचें शिरस्त्राण व मस्तक ही उडविली ! त्या समर्थी चित्रसेनाचें तें दीप्तिमान शिर, जणू काय स्वर्गांतून पृथ्वीवर गडच्छेनें चंद्रविचित्र पडलें तसें पडलें ! अभिसाराधिप चित्रसेन राजा ह्याप्रमाणें रणभूमीवर पतन पावतांच त्याचे मैनिक श्रुतकर्मावर मोठ्या आवेशानें धावून आले. तेव्हां धनुर्धर श्रुतकर्मा अतिशय क्षुब्ध झाला व मोठ्या क्रोधानें त्या सैन्यावर बाणांची वृष्टि करून, प्रलयकालीं प्रेताधिपति यम सर्व भूतांची जशी अवस्था करून सोडितो तशी त्यानें त्या चित्रसेनाच्या सैन्याची अवस्था करून सोडिली ! राजा, तुझ्या नातवानें (श्रुतकर्मानें) बाणप्रहरांनीं जेव्हां रणभूमीवर त्या मैनिकांचा संहार चालू विव्या तेव्हां वणव्यांत दग्ध होणाऱ्या हत्तींप्रमाणें ते सर्व वीर तेथून तत्काळ पळून गेले ! आणि ह्याप्रमाणें शत्रुजयाविषयी निरुत्साह झालेलें तें चित्रसेनाचें सैन्य पळत आहे असें अवलोकन करून श्रुतकर्मानें त्याजवर आणखी बाणवृष्टि करून तें पूर्णपणें उधळून दिलें !

चित्राचा वध.

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर प्रतिविंध्याने चित्रा-
वर पांच बाण मारिले; तीन बाणांनी सार-
थ्यास विद्ध केले; आणि एक बाण ठाकून
ध्वज मोडिला. तेव्हां चित्राने, ज्या स्वर्णपुंखा-
च्या ठिकाणी कंक व मयूर ह्यांची पिमें बस-
विली होती, अमे नऊ अणकुचीदार भल्ल बाण
प्रतिविंध्याच्या बाहुप्रदेशी व उरःप्रांती मारिले;
परंतु इतक्यांत प्रतिविंध्याने चित्राचे धनुष्य
तोडूनसहाणेवर लावून धार दिलेले पांच बाण
त्याजवर सोडिले. नंतर चित्राने तुझ्या नातवा-
वर (प्रतिविंध्यावर) अग्निज्वालेप्रमाणे भयं-
कर अशी शक्ति मोडिली. ती शक्ति
अत्यंत तीक्ष्ण व जलाल असून तिला सुव-
र्णाच्या घंटा लाविलेल्या होत्या. आपल्यावर
उल्कापाताप्रमाणे एकाएकी ती प्रचंड शक्ति
येत आहे असे पाहून त्या प्रतिविंध्याने हंसत
हंसत त्या शक्तीचे दोन तुकडे करून टाकिले.
राजा, ज्याप्रमाणे प्रलयकाली वज्रपाताने सर्व
भूने त्रस्त होऊन जातात. त्याप्रमाणे प्रति-
विंध्याच्या तीक्ष्ण शरपाताने ती शक्ति त्रस्त
होऊन व फुटून तिची दोन शकले झाली !
ह्याप्रमाणे त्या शक्तीची वाट लागल्यावर
चित्राने मोठी थोरली गदा घेतली व ती सुवर्ण-
मंडित गदा त्याने प्रतिविंध्यावर फेंकिली. त्या
गदेच्या प्रहाराने प्रतिविंध्याचे अग्र व सारथि
गतप्राण होऊन पडले आणि रथाचा चुराडा
होऊन तोही त्या महान् संग्रामांत धरणीतला-
वर धाडकन् पतन पावला ! इतक्यांत प्रति-
विंध्याने रथांतून खाली उडी टाकिली आणि
स्वर्णदंडांनी विभूषित केलेली शक्ति चित्रावर
मोडली ! परंतु ती शक्ति आपणावर येत आहे
असे पाहून चित्राचा धीर सुटला नाही व ती
आपल्या अंगावर येतांशणीच तिचा निग्रह
करून त्या महाधीर चित्राने ती उलट प्रति-

विंध्यावर टाकिली. तेव्हां त्या महातेजस्वी
शक्तीने रणांगणांत त्या शर प्रतिविंध्यासगांठले
व त्याचा उजवा बाहु छेदून ठाकून ती स्वतः
महीतळी पतन पावली आणि तिच्या योगे तें
महीतळ विद्युल्लनेद्रमाणे प्रकाशित झालें. नंतर
प्रतिविंध्याने क्रोधाग्रमान होऊन चित्राचा वध
करण्याकरितां सुवर्णभूषित तोमर चित्रावर फेंकिले,
तेव्हां तें तत्काळ चित्राच्या शरीरावरील आवर-
णांचें भेदन करून त्याच्या वक्षःस्थलीं घुसलें;
आणि महान् सर्प जसा एखाद्यास दंश करून
हां हां म्हणतां विळां शिरतो. तसें तें हां हां
ह्मणतां त्या चित्राचा प्राण घेऊन भूमीत
शिरलें ! आणि तत्काळ तो चित्र राजा परिघ-
तुल्य अमे ते दीर्घ व पुष्ट बाहु अस्ताव्यस्त पस-
रून समरांगणांत मरून पडला ! राजा, ह्या-
प्रमाणे चित्राची अवस्था अवलोकन करून तुझ्या
मेनेतील पराक्रमी वीर मोठ्या आवेशाने चोहों-
कडून प्रतिविंध्यावर धावून गेले; आणि त्यांनीं
प्रतिविंध्यावर नानाप्रकारचे बाण व घंटा लावि-
लेल्या शतघ्नी नामक शक्ति ठाकून. मेघ जसे
सूर्यास आच्छादितात. तसें प्रतिविंध्यास आच्छा-
दिले. परंतु त्या महाबाहु प्रतिविंध्याने बाणांचें
जालें पसरून. वज्रधारी इंद्राने ज्याप्रमाणे आसुरी
सेन्याची दाणादाण करून टाकिली त्याप्रमाणे
तुझ्या त्या सर्व सेन्याची दाणादाण करून
टाकिली ! त्या समयीं समरभूमीवर पांडवांनीं
तुझ्या सेनिकांस ठार मारण्याचा असा क्रम सुरू
केला कीं, वाय्यानें उधळून दिलेल्या मेघांप्रमाणे
तुझे सैनिक एकदम दशादिशांस पळून गेले !
ह्याप्रमाणे तुझ्या सेन्याची दुर्दशा होऊन तें
सेरावेरा चोहोंकडे पळू लागलें असतां एकटा
अश्वत्थामा मात्र पुढें होऊन एकदम महा-
दलिष्ठ भीमसेनावर चाल करून गेला. तेव्हां
त्याची निकराची लगट होऊन, पूर्वी देवदैत्यां-

च्या युद्धांत वृत्रासुर व इंद्र ह्यांचें जमें भयंकर युद्ध झालें, तसें त्यांचें भयंकर युद्ध जुंपलें !

अध्याय पंधरावा.

—:०:—

अश्वत्थामा व भीमसेन ह्यांचें युद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, चित्र राजाचा वध होऊन कौरवसैन्याची दाणादाण झाली तेव्हां अश्वत्थामा पुढें होऊन त्यानें भीमसेनावर मोठ्या त्वरेनें बाण टाकिल्या व आपल्या अंगी असलेलें अपूर्व अस्त्रलाघव दाखविलें, नंतर त्यानें सर्व मर्मस्थळे ध्यानांत आणून सहाणेवर धार दिलेले नव्वद् बाण नेमके भीमसेनाच्या मर्मस्थळां सोडिले. ह्या प्रमाणें तीक्ष्ण बाणांनी अश्वत्थाम्यानें भीमसेनास आच्छादित केलें असतां, किरणशलाकांनीं अनुविद्ध अमल्लेया रविबिंबाप्रमाणें रणभूमीवर तो भीमसेन दिग्मू लागला ! नंतर भीमसेनानें नीट नेम धरून महत्त्वावधि बाण अश्वत्थाम्यावर मारिले व मोठा मिहनाद केला; पण अश्वत्थाम्यानें उलट बाण मारून त्या सर्वांचा प्रतिकार केला व हंमत हंमत भीमसेनाच्या ललाटावर एक नाराच नामक बाण टाकून त्यास विधिलें ! राजा, वनांत मद्रोन्मत्त गेंड्याच्या मस्तकावर आदळणारें शृंग तो गेंडा जसें सहज धारण करितो, तसा तो भालपटली रुतलेला बाण त्या भीमसेनानें सहज धारण केला ! राजा, ह्या प्रकारें अश्वत्थामा भीमसेनाच्या नाशाकरितां प्रयत्न करित असतां त्या पराक्रमी भीमसेनानें हंमत हंमत तीन नाराच बाण अश्वत्थाम्याचे भालप्रदेशी टाकिले; तेव्हां तीन शृंगें धारण करणारा पर्वतराज पावसाळ्यांत जलाचे ओघ वाहात असतां जसा दिसतो तसा तो त्रिशृंगरूप तीन बाण धारण करणारा ब्राह्मण रक्ताचे ओघ वाहात असतां दिसू

लागला ! नंतर द्रोणपुत्रानें शंभर बाण टाकून आपल्याकडून भीमसेनाला पीडा दिली; पण बाण्यानें जसा पर्वत कंपायमान होत नाही, तसा तो पांडुपुत्र त्या बाणांनी कंपायमान झाला नाही ! त्याप्रमाणेंच भीमसेनानेंही मोठ्या वीरश्रीनें द्रोणपुत्रावर शतावधि तीक्ष्ण बाण टाकिले; पण जलप्रवाहाच्या योगानें जसा पर्वत हालत नाही, तसा तो अश्वत्थामा त्या बाणवृष्टीनें हालला नाही ! ह्या प्रकारें ते दोघे बलिष्ठ महारथ आपआपल्या श्रेष्ठ रथांत आरूढ होऊन एकमेकांना भयंकर शरवृष्टीनें आच्छादून टाकीत असता आपल्या दिव्य तेजांनें फारच शोभूं लागले ! जणू काय ते दोन आदित्य जगाचा क्षय करण्याकरितां मंदीप्त झाले असून आपल्या बाणरूप किरणांनी एकमेकांस दग्ध करीत आहेत, असें भासलें ! त्या भयंकर संग्रामामध्ये ते दोघे वीर एकमेकांवर चढ करण्याचा प्रयत्न करित असतां मोठ्या धैर्यानें शरांचा वर्षाव करित युद्धभूमीवर वाघांप्रमाणें एकमेकांवर धावून जात होते. त्या वेळी त्यांची जी अवस्था दृग्गोचर होत होती, ती पाहून जणू काय त्या उग्र व अजिंक्य वीरांच्या हातांतली धनुष्यें ही त्यांचीं वक्रें व त्या धनुष्यांपासून सुटणारे शर ह्या त्यांच्या दाढा असा भास होत होता ! शिवाय त्या उभयतांच्या समोवार बाणांचें छत झाल्यामुळें ते अदृश्य झाले असून जणू काय मेघमंडलानें अदृश्य झालेले ते सूर्यचंद्रच असावेत असें दिसत होतें ! राजा, ह्याप्रमाणे कांही वेळ स्थिति राहून नंतर ते दोघेही पराक्रमी योद्धे दृग्गोचर झाले, तेव्हां मेघमंडलानें आच्छादित केलेले मंगळ व बुध मेघपटलांतून मुक्त झाले असतां जसे दिसतात, तसे ते भीम व अश्वत्थामा हे दोघे वीर दिसले. नंतर त्या दोघांचा आणखी त्याच ठिकाणी

निकराचा संग्राम सुरू झाला असतां अश्वत्थाम्यानें भीमसेनास उजवीकडे घातलें; आणि मेघपर्वतावर जशी पर्जन्याची वृष्टि करितात, तशी त्यानें भीमसेनावर बाणांची भयंकर वृष्टि केली. राजा, अशा प्रकारें अश्वत्थाम्याची सरशी झालेली पाहून ते भीमसेनास मुळीच स्वपले नाहीं. ताबडतोब भीम त्याच ठिकाणावरून अश्वत्थाम्याच्या शरवृष्टीचा प्रतिकार करूं लागला. नंतर ते दोघे वीर मंडळकार फिरत एकमेकांवर चालून जाऊन कधी पुढें कधी मागे असे प्रसंगानुरूप संचार करित असतां त्यांचें मोठें तुंबळ युद्ध जुपलें. त्यांनीं नाना-प्रकारच्या मार्गांनीं व मंडळांनीं एकमेकांवर हल्ले केले; आणि मोठ्या आवेशानें बाणांचा ओतप्रोत मारा करून एकमेकांच्या वधासाठीं पराकाष्ठेचा यत्न केला. त्या प्रसंगी प्रत्येकाची इच्छा रणांगणांत दुसऱ्यास विरध्द करानें ही होती. तेव्हां महारथ अश्वत्थाम्यानें मोठमोठ्या अस्त्रांची योजना केली; परंतु अस्त्रांची योजना करूनच भीमसेनानें अश्वत्थाम्याचा प्रतिकार केला ! राजा, त्या वेळी अस्त्रांचें मोठें घोर युद्ध चालू झालें ! जणू काय जगताच्या प्रलय-काली ग्रहांचेंच भयंकर युद्ध सुरू आहे असा भास होऊं लागला ! त्या योद्ध्यांनीं परस्परांवर सोडलेले बाण एकमेकांशीं असे लगटले की, त्यांच्या आपातांनीं उत्पन्न झालेल्या प्रकाश दशदिशांच्या ठिकाणी व्याप्त होऊन तुझ्या सेनेच्या सभोंवार सर्वत्र उजेड पडला ! राजा, त्या समयी आकाशांत जिकडे तिकडे बाणांची गर्दी होऊन जाऊन, प्रलयकाळी उल्कांनीं अंतरिक्ष व्याप्त झालें असतां जशी भीति उत्पन्न होते, तशी अत्यंत भीति उत्पन्न झाली ! बाणाभिघातापासून ज्या ठिणग्या चालू झाल्या त्यांनीं आगी लावल्या व त्यांत दोन्ही सैन्ये दग्ध होऊं लागली ! तेव्हां तेथें सिद्ध

मंडळी प्राप्त झाली आणि म्हणाली, “ अहो, सर्व युद्धांमध्ये हें युद्ध मोठें श्रेष्ठ होय. आज-पर्यंत जी युद्धे झाली तीं सर्व ह्या युद्धाच्या सोळाव्या कलेचीही बरोबरी करणार नाहीत. ह्यापुढें असलें भयंकर युद्ध कधीही होणार नाहीं. अहो, हे ब्राह्मणक्षत्रिय (अश्वत्थामा व भीमसेन हे दोघेजण) युद्धकलेमध्ये किती निष्णात आहेत बरें ? अहो, ह्या महापराक्रमी वीरांचें केवढें हें शौर्य ? कायहो ह्या भीमाची शक्ति ! ह्या अश्वत्थाम्याचें अस्त्रैःपुण्य तरी किती मांगोंवें ! अहो, ह्याचें केवढें लोकोत्तर वीर्य ? अहो, ह्यांच्या ठिकाणी केवढें युद्धकौशल्य ? अहो, जणू काय जगताचा संहार करणारे हे प्रतियमच ह्या रणभूमीवर झगडत आहेत ! अथवा जणू काय हे दोघे भयंकर पुरुषव्याघ्र प्रत्यक्ष रुद्र, रवि किंवा यमच असावेत ! ” राजा धृतराष्ट्रा, सिद्धांच्या मुखांतून हे असे उद्गार पुनःपुनः निघूं लागले; त्या स्थळी प्राप्त झालेल्या देवांनीं सिंहनाद केला; आणि त्या दोघां वीरांचा तो अद्भुत व अचिंत्य पराक्रम अवलोकन करून सिद्ध व चारण ह्यांचे समुदाय मोठ्या विस्मयांत पडले ! तेव्हां देव, सिद्ध व मोठमोठे ऋषित्या योद्ध्यांची वाहवा करूं लागले; आणि “ हे महाबाहो द्रोणपुत्रा, शाबाम ! हे पांडुपुत्रा भीमसेना, शाबाम ! ” असे त्यांनीं उद्गार काढले.

राजा धृतराष्ट्रा, ते दोघे शूर वीर समरांगणांत एकमेकांशीं लढत असतां त्यांचा जो क्रम चालू होता, तो तसाच पुढें चालला. त्यांनीं एकमेकांना अपकार केले. मंतापानें डोळे वटारून ते एकमेकांकडे पाहूं लागले. क्रोधानें त्यांचे नेत्र आरक्त झाले, क्रोधानें त्यांचे ओंठ थडथड हालूं लागले. व त्यांनीं मंतापानें दांतओठ खाण्यास आरंभ केला. त्या महारथांनीं बाणांच्या वृष्टीनें परस्परांस आच्छादून टाकिले. जणू काय त्या लोकोत्तर वीरांच्या धनुष्यांपासून

शररूप जलाच्या धारा सुरू असून मध्यंतरी शस्त्राघातापासून विद्युल्लतेचा लखलखाट चालला होता! अशा प्रकारे निकराचे युद्ध चालू असता त्यांनी एकमेकांचे ध्वजांवर, सारख्यांवर व अश्वंवर बाणवृष्टि करून त्या सर्वांस विद्ध करून टाकिले. नंतर त्यांनी अत्यंतक्षुब्ध होऊन परस्परांच्या वधार्थ बाणवृष्टि करण्यास तत्काळ आरंभ केला. त्या दुर्धर्ष वीरांनी सैन्याच्या अग्रभागीं उभे राहून वज्रासारखे कठोर बाण एकमेकांवर टाकले; आणि त्या बाणांच्या अतिशय वेगामुळे त्या दोघांही वीरांस अतिशय पीडा होऊन ते रथाच्या वीरस्थानी मूर्च्छित पडले! तेव्हां अश्वत्याम्याच्या सारख्याने अश्वत्यामा निश्चेष्ट पडला असे पाहून त्यास रणभूमीतून सर्व सैन्याच्या देखत एकीकडे नेले; व त्याचप्रमाणे भीमसेनाच्या सारख्यानेही, भीमसेन पुनः पुनः बाणवेदनेने विव्दलत आहे असे अवलोकन करून त्यासही रणांतून एकीकडे नेले!

अध्याय सोळावा,

—:—

अर्जुन व संशप्तक ह्यांचे युद्ध.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, अर्जुनाचे संशप्तकांबरोबर जें युद्ध झालें, व त्याप्रमाणेंच दुसऱ्या राजांचें पांडवांशी जें युद्ध झालें, त्याचें वर्णन करून मला सांग. तसेंच, हे संजया, अश्वत्याम्याचें अर्जुनाशी जें युद्ध झालें, व त्याप्रमाणेंच दुसऱ्या राजांचें पांडवांशी जें युद्ध झालें त्याचेंही वर्णन कर.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, महान् महान् वीरांचा शत्रूंबरोबर जो संग्राम झाला, व ज्यामध्ये पुष्कळ वीरांचा नाश होऊन त्यांचें देह व पातकें धारातीर्थी पतन पावली, त्या संग्रामाचें मी सविस्तर वर्णन करितों तें श्रवण कर.

राजा, संशप्तकांचें सैन्य म्हणजे केवळ सागराप्रमाणें अवाढव्य होतें; पण त्यांत अर्जुनानें प्रवेश केला व त्या शत्रुसंहारक वीरानें महान् वाऱ्याप्रमाणें त्या मेनासमुद्राम क्षुब्ध करून टाकिले! नंतर त्याने संशप्तक वीरांवर धार लावलेले भल्ल बाण टाकले व त्यांच्या योगें त्या वीरांचीं मस्तकें तत्काळ तोडून टाकून त्यांनी तें भूमंडळ आच्छादिलें! राजा, त्या समयी पूर्णचंद्रबिंबाप्रमाणें सुंदर, व ज्यांवर उत्कृष्ट नेत्र, भ्रूकुटि व दंतपंक्ति विराजित आहेत, अशीं ती मुखकमलें जणू काय आपल्या नालबंधापासून विमुक्त होवत्पत्ती त्या भूप्रदेशीं विखरून पडलीं आहेत असा भास होऊं लागला! राजा, त्या युद्धांत अर्जुनानें वस्त्यासारख्या तोक्ष्ण बाणांनीं शत्रूंचे पुष्कळ बाहु तोडून टाकिले. ते बाहु उत्कृष्ट वळवर, लांब, बळकट, चंदन व अमरु ह्यांच्या उठ्या दिलेले, आयुधें धारण केलेले, तलव्र (एक प्रकारचें चर्मावरण) घातलेले, व पंचमुखी सर्पांप्रमाणें करतलानें युक्त असे होते; आणि त्याप्रमाणेंच अर्जुनानें त्या युद्धांत अश्व, अश्वेतर प्राणी, सारथि, ध्वज, चाप, बाण व रत्नादिकांनीं अलंकृत असे हस्त पुनःपुनः भल्ल बाणांच्या प्रहारानें तोडून टाकिले. राजा, त्या भयंकर रणकंदनांत अर्जुनानें पुष्कळ रथ व रथी, द्विप व द्विपी आणि घोडे व घोडेस्वार हे सहस्रावधि बाणांच्या योगें यमसदनी पाठविले. राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें संशप्तकांचा संहार चालविला असतां त्याजवर संशप्तकांपैकीं महान् महान् वीर अत्यंत क्षुब्ध होऊन वृषभांसारखे दुरकण्या फोडीत धावून आले. त्या समयी जणू काय ते मदोन्मत्त बैल मोठ्या आवेशानें माज केलेल्या गाईवर धावून येत आहेत असा भास झाला! आणि त्या वेळीं त्यांनीं आपणांवर प्रहार करणाऱ्या त्या पृथापुत्रावर

बाणांचा असा कांही वर्षाव चालविला कीं, जसे काय ते आपल्या शिंगांनीं त्या नगाधिपतीला ठोंसे मारीत आहेत असे भासलें ! राजा, त्या प्रसंगीं अर्जुनाचें व संशप्तकांचें जें युद्ध झालें, तें पाहून अंगावर अगदीं कांटाच उभा राहात होता ! जणू काय त्रैलोक्य जिकण्याच्या हेतूनें दैत्यांचें देवद्वाराशींच युद्ध चाललें आहे, असें तेव्हां वाटलें ! राजा, त्या युद्धांत अर्जुनानें संशप्तकांच्या अस्त्रांचें आपल्या अस्त्रांनींच निवारण केलें; आणि त्यांचीं अस्त्रें ह्या प्रकारें क्षीण केल्यावर पुष्कळ बाणप्रहारांनीं त्यांस विद्ध करून त्यानें त्यांचा तत्काळ प्राण घेतला ! राजा, संशप्तकांशीं युद्ध करितांना अर्जुनानें जो कांहीं पराक्रम केला, त्याचें कायवर्णन करावें ? त्यानें शत्रूकडील रथांची चक्रे, आंस, धुऱ्या, जोखळ इत्यादिकांचा चुराडा केला; आयुधें व बाणभाते ही लयास नेली; ध्वज मोडून टाकिले; बंधनरज्जु व अश्वान्याच्या लगामा तोडिल्या; रथधुरीचा अग्रभाग व वरूथ (रथसंरक्षणाकरितां केलेलें एक प्रकारचें पटल) ही नष्ट केली; रथांतील बैठक पाडिली; धुऱ्यांच्या पुढील लांकूड मोडिलें; आणि रथांत बसण्याची जागा व आंस ह्यांना जोडणारे सांधे तोडिले. सारांश, ज्याप्रमाणें वारा सुटला असतां तो प्रचंड मेघांची छकलें छकलें करून त्यांची दाणादाण करून देतो, त्याप्रमाणें अर्जुनानें त्या संशप्तकांच्या सैन्यांची छकलें छकलें करून त्यांची दाणादाण करून दिली ! अर्जुनाचें तें घोर कृत्य पाहून सर्वांस मोठा विस्मय वाटला; व शत्रूस महाभीति उत्पन्न झाली ! त्या प्रसंगीं ज्यानें (अर्जुनानें) सहस्र महारथांची बरोबरी करणारा असा जो पराक्रम केला, तो अवलोकन करून सिद्ध, देवर्षि व चारण ह्यांचे समुदाय त्याची वाहवा करूं लागले; देवांनीं दुंदुभि वाजविल्या आणि कृष्ण व अर्जुन ह्यांच्या मस्तकांवर

पुष्पांची वृष्टि केली ! राजा, त्या समयीं आकाशवाणी झाली कीं, “ अहो, चंद्र, सूर्य, अग्नि व वायु ह्यांची कांति, द्युति, दीप्ति व बल हीं नित्य धारण करणारे जे वीर ते हे कृष्ण व अर्जुन होत ! अहो, हे एका रथांत बसलेले वीर ब्रह्मा व ईशान ह्यांप्रमाणें अजिंक्य आहेत ! अहो, हे नरनारायण सर्व प्राण्यांमध्ये श्रेष्ठ होत ! ” राजा, धृतराष्ट्रा, अंतरिक्षांत उत्पन्न झालेले हे शब्द श्रवण करून अश्वत्थाम्याला मोठें आश्चर्य वाटलें; आणि तो रणांगणांत मोठ्या तयारीनें कृष्णार्जुनांवर धावून गेला. त्या समयीं अर्जुन मोठे भयंकर बाण मारीत आहे, असें अवलोकन करून अश्वत्थामा आपला बाणयुक्त हात वर करून हसत हसत हाक मारीत अर्जुनास म्हणाला, “ हे वीरा, ह्या ठिकाणीं हा मी पूज्य अतिथि प्राप्त झालों आहे, वाटत असेल तर तूं आज मला अगदीं मनापासून युद्धरूप आतिथ्य अर्पण कर.”

राजा, अशा प्रकारचें प्रास्ताविक शब्द बोलून द्रोणपुत्रानें अर्जुनाला युद्धार्थ आह्वान केले. तेव्हां अर्जुनाला मोठी धन्यता वाटली व तो जनार्दनास म्हणाला, “ हे जनार्दना, मला सध्या संशप्तकांचा वध कर्तव्य आहे; आणि अश्वत्थामा तर मला आह्वान करीत आहे; तेव्हां आतां प्रथम काय करावें तें सांग. जर तुझ्या विचारास येत असेल, तर मोठ्या आदरानें प्रथम अतिथिसत्कार करीन व मग संशप्तकांना मारीन ! ” राजा, अर्जुनाचें हें भाषण श्रवण करून कृष्णानें अर्जुनास द्रोणपुत्रासमीप नेलें. कारण अश्वत्थाम्यानें वीरविधीनें अर्जुनास युद्धार्थ आह्वान केल्यामुळे, वायु जसा यज्ञाकरितां इंद्रास क्षणांत घेऊन जातो, तसा तो माधव अर्जुनास अश्वत्थाम्यासमीप क्षणांत घेऊन गेला !

अश्वत्थामा व अर्जुन ह्यांचें युद्ध.

नंतर कृष्ण अश्वत्थाम्याला अभिवंदन करून व अश्वत्थाम्याच्या चित्ताची एकाग्रता पाहून म्हणाला, “अश्वत्थाम्या, अगदी विलंब न करितां तूं सुस्थिर चित्तानें बाण सोड व तुझ्यावर जे येतील ते सहन कर. मेवकांना आपल्या स्वामीच्या ऋणांतून मुक्त होण्याला ही योग्य संधि आहे. पहा—ब्राह्मणांचा विवाद सुरू झाला असतां त्याचा निर्णय जसा सूक्ष्म असतो, तसा क्षत्रियांच्या विवादाचा नसतो. क्षत्रियांचा लढा पडला म्हणजे जय किंवा अपजय ह्यांच्या योगें त्याचा निर्णय होतो व तो निर्णय सर्व जगास कळण्याजोगा स्पष्ट असतो. ह्यासाठी तूं केवळ मूर्खपणामुळें अर्जुनापासून ज्या आतिश्याची अपेक्षा करीत आहेस, तें आतिश्य प्राप्त करून घेण्याकरितां तूं आज मोठ्या मावधानचित्तानें अर्जुनाशी युद्ध कर.”

राजा धृतराष्ट्रा, कृष्णाचें हें भाषण श्रवण करून अश्वत्थाम्यानें ‘बरे आहे’ म्हणून त्यास उत्तर दिलें आणि कृष्णावर माठ बाण व अर्जुनावर तीन बाण सोडिले. तेव्हां अर्जुन अगदी क्षुब्ध झाला व त्यानें तीन बाण टाकून अश्वत्थाम्याचें धनुष्य भंगिलें. नंतर अश्वत्थाम्यानें पहिल्यापेक्षां अधिक भयंकर धनुष्य धारण केलें आणि तें तत्काळ मज्ज करून त्यानें कृष्णार्जुनांवर बाणांचा भडिमार चालविला. त्यानें प्रथम वामदेवावर तीनशें बाण व अर्जुनावर एक हजार बाण सोडिले. नंतर त्यानें सुस्थिर उभें राहून अर्जुनावर नेम धरून सहस्रावधि, लक्षावधि व कोट्यवधि बाणांचा वर्षाव केला. राजा, त्या समयी अश्वत्थाम्याच्या भात्यांतून, धनुष्यापासून, प्रत्यंत्रेपासून, बाहुंपासून, हस्तांपासून, उरापासून, मुखापासून, नाभिकेपासून, नेत्रांतून, कर्णांतून, मस्तकांतून, गात्रांतून, लोमांतून, कवचांतून, रथांतून व ध्वजांतून एकमारखे

बाण सुटूं लागले; आणि अशा प्रकारें कृष्णार्जुनांना मोठ्या बाणजलकांनें विद्ध करून त्यानें प्रहृष्ट मनानें महामेघाप्रमाणें गर्जना केली. तेव्हां ती गर्जना ऐकून अर्जुन कृष्णास म्हणाला, “हे कृष्णा, माझ्याविषयी ह्या द्रोणपुत्राची किती दुष्ट बुद्धि आहे, ती पाहिलीमना? अरे, आपणांवर ह्यानें काय तें बाणांचें जाळें पसरिलें, परंतु एवढ्यावरून आपणांस मृत्यु प्राप्त झाला असें हा मानीत आहे. पण त्याची ही समजूत मी आपल्या सामर्थ्यानें व युद्धनैपुण्यानें आतां हाणून पाडितों!” धृतराष्ट्रा, अर्जुनानें असे उद्गार काढून, अश्वत्थाम्यानें टाकलेल्या प्रत्येक बाणाचे तीन तीन तुकडे केले; व सूर्य जसा क्षणांत धुक्याचें निवारण करितो, तसें त्यानें त्या सर्व बाणांचें क्षणांत निवारण केलें.

अर्जुन व संशप्तक ह्यांचें पुनः युद्ध.

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर पुनः अर्जुन संशप्तकांकोडे वळला. घोडे, सारथि, रथ, हत्ती, पायदळ व ध्वज ह्यांच्या समुदायांवर अर्जुनानें जलाल बाण टाकून त्या सर्वांना विद्ध केलें. तेव्हां त्या स्थळी जे कोणी पुरुष आदळले, ते मग कोणत्याही रूपांनें असले तरी त्यांचें त्यांस आपण अर्जुनाच्या शारांनीं आच्छादित झालें आहां असें दिसून आलें. राजा, अर्जुनाच्या गांडीवापासून सुटलेल्या त्या बाणांचें सामर्थ्य काय वर्णावें? नाना-प्रकारचीं रूपें धारण केलेले ते बाण सर्वांस अस्सणाच्या किंवा कोसभर लांब गेलेल्या हत्तींना, वीरांना वगैरे ठार करित. ज्याप्रमाणें वनामध्ये कुऱ्हाडींनी तोडलेले मोठमोठे वृक्ष पटापट खालीं कोसळतात, त्याप्रमाणें भड्ड बाणांनी तोडून टाकलेल्या मदोन्मत्त हत्तींच्या त्या शूंडा पटापट खालीं कोसळल्या. ह्याप्रमाणें त्या हत्तींची मस्त्के तुटतांच त्यांचीं ती पर्वतप्राय धोंडें त्यांवर आरूढ झालेल्या

स्वारांसहित खाली पडली. जणू काय त्या समर्थी इंद्राच्या वज्राने चूर्ण केलेले पर्वतांचे समुदायच खाली पडत आहेत असा भास झाला. राजा, नंतर अर्जुनाने बाणांचा वर्षाव करून, जे गंधर्वनगरांसारखे (मेघमंडळांसारखे) प्रचंड व ज्यांस शिकवून तरबेज केलेले वेगवान् अश्व जोडिले आहेत, आणि ज्यांत धुरंधर योद्धे आरूढ झाले आहेत अशा रथांचा चुराडा उडवून त्यांतील वीरांचा भूतलावर सडा घातला ! मग अर्जुनाने आपली दृष्टि मोठमोठे घोडेस्वार व पायदळ ह्यांजवर वळवली आणि त्या प्रलय-कालीन सूर्याने संशप्तक महर्णवांचे अगाध व दुःशोष्य असे ते उदक प्रखर शरकिरणांनी शोषून टाकिले !

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनाने लागलाच मोठ्या आवेशाने द्रोणपुत्ररूप महागिरि नाराच-रूप वज्राने पुनः विंधिला. तेव्हां आचार्य-पुत्र पुनः क्षुब्ध होऊन त्याने आपले बाण अर्जुनाच्या अश्रांवर, सारथ्यावर व अर्जुनावर सोडिले, आणि त्या वीरांचे पुनः युद्ध सुरू झाले. अर्जुनाने अश्वत्थाम्यावर पुनः नाराच बाण टाकिले व ते पाहून अश्वत्थाम्याने कोपाग्र-मान होऊन अर्जुनावर अम्बांचा भडिमार चालविला. तेव्हां अर्जुनाने अश्वत्थामरूप सत्पात्र अतिथीचा योग्य सत्कार करण्याकरितां संशप्तकांना अजीबात सोडून दिले, आणि मग अश्वत्थाम्याचे व अर्जुनाचे पुनः तुंबळ युद्ध चालू झाले !

अध्याय सतरावा.

—०:—

अश्वत्थाम्याशी युद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर शुक्र व अंगिरस ह्यांप्रमाणे सामर्थ्य असलेल्या त्या अश्वत्थामार्जुनांचे मोठ्या निकराचे युद्ध

सुरू झाले. जणू काय ते शुक्र व अंगिरसच नक्षत्रास उद्देशून मोठ्या आवेशाने आकाशांत झडगत आहेत असे भासले. ते आपल्या देदीप्य-मान शरकिरणांनी परस्परांस असे संतप्त करू लागले की, त्यामुळे, वक्त्री झालेल्या व फाजील चालणाऱ्या ग्रहांच्या योगे जशी पीडा होते, तशी त्यांजपासून सर्व लोकांस पीडा होऊ लागली. नंतर अर्जुनाने मोठ्या जोराने अश्वत्थाम्याच्या दोन्ही भुक्तृटीच्या मध्यभागी नाराच बाण मारिला. तेव्हां तो द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ऊर्ध्वरश्मि रवीप्रमाणे शोभायमान दिसू लागला. मग अश्वत्थाम्याने शतावधि बाणांनी कृष्णार्जुनांस विद्ध केले. तेव्हां बाणरूप रश्मिजालांनी संगत झालेले ते दोघे वीर प्रलयकालच्या प्रचंड सूर्यासारखे झळाळू लागले. पुढे कांहीं वेळाने कृष्णाची उमेद कमी झालीसे पाहून अर्जुनाने चोहोंकडून अन्नधारांचा वर्षाव करणारी एक शक्ति अश्वत्थाम्यावर सोडिली; आणि वज्र, अग्नि किंवा यमदंड ह्यांप्रमाणे प्राणसंहारक बाणांची एकसारखी वृष्टि चालविली. तेव्हां अश्वत्थाम्याने कृष्ण व अर्जुन ह्यांच्या मर्मस्थळी अमे तीक्ष्ण बाण मारिले की, त्या बाणांनी प्रत्यक्ष मृत्यूला-ही व्यथा झाली अमती ! राजा त्या अतुल-प्रतापी रौद्रकर्मा अश्वत्थाम्याने नेम धरून मोठ्या वेगाने अर्जुनावर शरौघ सोडिला असतां अर्जुनाने त्याचा प्रतिकार केला; आणि त्या महापराक्रमी वीराच्या अश्रांवर, सारथ्यावर व ध्वजावर उत्कृष्ट पुंग्यांचे व महार्वीर्यावान् असे दृष्ट बाण टाकून तो पुनः संशप्तकांच्या सैन्यावर चाल करून गेला.

पुनः संशप्तकांशी युद्ध.

नंतर अर्जुनाचे व संशप्तकांचे युद्ध फिरून सुरू झाले. त्यांत अर्जुनाने आपणासमोर नेटाने

उभे राहिलेल्या संशप्तकांचीं धनुष्ये, बाण, प्रत्येका बाणभाते, बाहु, हस्त, हस्तांतील शस्त्रे, छत्रे, ध्वज, अश्व, रथांतील आयुधे, वस्त्रे, पुष्प-माला, अलंकार, सुंदर दाली, आवडतीं चिल-खते व सर्व मस्तकें नेमानें बाण मारून तोडून टाकिलीं. राजा, त्या समयीं संशप्तकांपैकीं जे वीर मोठ्या वेगानें अर्जुनावर धावून आले, त्यांचे शस्त्रास्त्रांनीं सुमिद्ध असलेले रथ, अश्व, नाग ह्यांजवर अर्जुनांन बाणांचा असा भडि-मार केला कीं, त्या बाणांनीं त्या रथादिकांचा नाश होऊन त्या रथादिकांवर आरूढ झालेल्या वीरांसहित ते बाण रणभूमीवर पतन पावले. तेव्हां रणांगणांत भूमितल नरशिरांनीं व्याप्त झालें. पूर्णंदु, सूर्य व कमलें ह्यांप्रमाणें तेजः-पुंज किरीट, माला व अलंकार ह्यांनीं विराज-मान, व भल्ल बाण, अर्धचंद्र बाण व क्षुर बाण ह्यांनीं व्रुटित झालेल्या अशा मस्तकांची भू-प्रदेशीं अगदीं गर्दी होऊन गेली ! नंतर कलिंग, वंग, अंग व निपाद ह्या देशांतील वीर अर्जुनास ठार मारण्याच्या हेतूनें गजामुरा-सारख्या प्रचंड शक्तीनें युक्त असलेल्या हत्तीवर आरूढ होऊन, दैत्यांचा दर्प दूर करणारा अर्जुन अग्रभागीं उभा होता त्याजवर तुटून पडले ! तेव्हां अर्जुनांन त्या हत्तीच्या शूंडा तोडल्या; त्यांजवर आरूढ झालेल्या वीरांची कवचें व दाली भंगिल्या; त्यांचे प्राण घेतले; त्यांच्या ध्वजपताका मोडिल्या; आणि मग ते वीर वज्रानें हत केलेल्या पर्वताच्या शृंगांप्रमाणें धडाधड खाली पडले !

अश्वत्थाम्याशीं पुनः युद्ध.

ह्याप्रमाणें संशप्तकांची वाट लाविल्यावर अर्जुनांन प्रातःकालीन सूर्याप्रमाणें तेजस्वी बाण पुनः अश्वत्थाम्यावर सोडिले. त्या वेळीं, उदय पावणाऱ्या सूर्याला ज्याप्रमाणें वायूनें महामेघ-मंडळानें आच्छादित करावें, त्याप्रमाणें अर्जु-

नानें बाणजालकांन त्या अश्वत्थाम्याला आच्छा-दित केलें. तेव्हां अर्जुनाच्या त्या बाणांचें अश्व-त्थाम्यानें तीक्ष्ण बाणांनीं निवारण करून पुनः कृष्णार्जुनांस बाणांनीं आच्छादिलें व मोठी प्रचंड गर्जना केली ! त्या वेळीं जणू काय ग्रीष्म ऋतूच्या अंती मेघानें आकाशांत चंद्रसूर्यास आच्छादून मोठी गर्जना केल्याचा भास झाला. तेव्हां अर्जुनांन पुढें होऊन अश्वत्थाम्याला व त्याच्या समवेत असलेल्या तुड्या दुसऱ्या सर्व वीरांना सुपुंख बाणांनीं विद्ध केलें व अश्वत्था-म्यानें सोडलेल्या सर्व बाणांचा प्रतिकार करून बाणकृत अंधकार एकदम पळवून लाविला ! राजा, त्या समयीं सव्यसाची अर्जुन भात्यांतून बाण केव्हां काढीत असे, तो धनुष्याला केव्हां जोडीत असे व शत्रूवर केव्हां सोडीत असे, हें काहींच कळत नसे; परंतु रथी, नाग, अश्व, पायदळ ह्यांच्या देहांत खचून बाण घुसले असून ते पटापटा मरून पडत आहेत, असें मात्र दृष्टीस पडे ! तेव्हां अगदीं विलंब न करितां अश्वत्था-म्यानें दहा उत्तम नाराच बाण धनुष्याला जोडिले व त्यानें जणू काय एकच बाणाप्रमाणें ते सर्व सुपुंख बाण सोडिले. त्यांपैकीं पांच बाणांनीं अर्जुन विद्ध झाला व राहिलेले पांच बाण कृष्णाला जाऊन लागले. ह्याप्रमाणें इंद्र-कुबेरसदृश ते सर्वनरवर बाणहत हेतांच त्यांच्या देहांतून रुधिराचे प्रवाह बाहू लागले. तेव्हां तें पाहून संपूर्णास्त्रविद्याविशारद अश्वत्थाम्या-च्या हस्ते ते पराभव पावून धारातीर्थी पडले असा सर्वांचा समज झाला !

राजा, नंतर कृष्णानें अर्जुनास म्हटलें, “ बा अर्जुना, अद्याप तुझ्या हातून ह्या वीरांचा निकाल लागत नाही हें कसें ? अरे, अशी ही चुकी तुझ्या हातून कां व्हावी बरें ? अरे, ह्या वीरांचा वध कर. एखाद्या व्याधीवर औषधोपाय न केल्यास ती जशी अनावर होऊन पीडा

करिते, तशी ह्या अश्वत्थाम्याचा वेळींच निग्रह न केल्यास ह्यापासूनही पीडा झाल्याशिवाय राहाणार नाही, हें लक्षांत अमू दे. ” राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनानें कृष्णास ‘ बरें आहे ’ म्हणून उत्तर दिलें आणि सावधान चित्तानें नेम धरून अश्वत्थाम्यावर कोथानें बाण टाकिले. त्या बाणांची अग्नें बोकडाच्या कानाच्या अग्राप्रमाणें अमून अर्जुनानें गाडीव धनुष्यापासून फेंकलेल्या त्या बाणांनी, चंदनाची उटी दिलेले अश्वत्थाम्याचे ते श्रेष्ठ बाहु, तसेंच वक्षस्थळ, मस्तक व अप्रतिम मांड्या हीं विद्ध केली, आणि घोड्यांच्या लगामा छेदून टाकून घोड्यांवर प्रहार केला ! तेव्हां त्या समयी अश्वत्थाम्याच्या घोड्यांनी त्याचा रथ रणांगणांतून एकीकडे पुष्कळ दूर नेला !

अश्वत्थाम्याचा पराजय.

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थाम्याच्या घोड्यांनी वायुवेगानें अश्वत्थाम्याला रणभूमीतून एकीकडे नेल्यावर, पार्थशरणांनी अतिशय विद्ध झालेल्या त्या अश्वत्थाम्यानें नीट विचार करून, पार्थाशीं पुनः युद्ध करावयाचें नाही असें ठरविलें; कारण त्या अंगिरसकुलवतंस अश्वत्थाम्याचा निश्चय झाला कीं, जिकडे कृष्णार्जुन आहेत तिकडेच जय अमावयाचा ! ह्याप्रमाणें मनाचें समाधान करून अश्वत्थाम्यानें घोडे आवरून धरिले; आणि रथ, अश्व व नर ह्यांनी गजबजून गेलेल्या कर्णाच्या सैन्यांत प्रवेश केली. राजा, अशा प्रकारें अश्वत्थाम्यासारखा अत्यंत विरोधी वीर त्याच्या अश्वानी रणांगणांतून काढून एकीकडे नेला असतां जणू काय मंत्रौषधिक्रियांनीं देहांतून व्याधिच काढून नेला असें वाटलें ! राजा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थाम्याची वाट लागल्यानंतर मग कृष्ण व अर्जुन हे पुनः संशप्तकांवर चालून गेले. त्या समयी त्या रथा-

वरील पताका वाऱ्यानें फडकत असून चक्रांच्या खडखडण्यानें मेघगर्जनेप्रमाणें शब्द होत होता.

अध्याय अठरावा.

—:०:—

दंडधाराचा वध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर उत्तरेकडे पांडवांच्या सैन्यामध्ये मोठा कोलाहल उत्पन्न झाला; व तो दंडधारानें पांडवांकडील रथी, नाग, अश्व व पत्ति ह्यांचा वध चालविल्यामुळें उद्भवला आहे, असें त्यांच्या लक्षांत आलें. तेव्हां कृष्णानें ताबडतोब रथ मागे वळविला व गरुडाप्रमाणें किंवा वायूप्रमाणें वेगवान् अशा त्या आपल्या अश्वाना हांकीत असतांनाच तो अर्जुनास म्हणाला, “ अर्जुना, मगध देशाचा राजा आपल्या वीर्यशाली द्विरदाच्या योगें मोठा पराक्रमी झालेला आहे. युद्धविद्या व सामर्थ्य ह्यांमध्ये तो भगदत्तापेक्षां मुळींच कमी नाही. ह्यास्तव तूं ह्यास आधीं मार व मग पुनः संशप्तकांचा वध कर. ” राजा, हें असें भाषण समाप्त होत आहे तोंच कृष्णानें अर्जुनाचा तो रथ दंडधारासमीप आणून भिडविला.

राजा, मगधाधिपति दंडधार हा हस्ति-युद्धांत मोठा पराक्रमी होता. आदित्यादिक नवग्रहांमध्ये केळूच्या ठिकाणीं जसा अमह्य प्रताप आहे, तसाच त्याच्या ठिकाणीं होता. ज्याप्रमाणें धूमकेतूच्या योगें सर्व अफाट पृथ्वीला पीडा होते, त्याप्रमाणें त्या सर्व अफाट पांडवसैन्याला त्यापासून पीडा होत होती. त्यानें पांडवांच्या सैन्यांत मोठा दारुण संहार चालविला होता. तो इतका पराक्रमी होता की, गजामुराप्रमाणें समर्थ, महान् मेघाप्रमाणें गर्जणाऱ्या, व शत्रूंचा संहार उडविणाऱ्या अशा आपल्या हत्तीवर बसून तो बाण-

वृष्टीच्या योगें रथ, नाग, अश्व व मनुष्ये ह्यांचे हजारों समुदाय ठार मारीत असे. त्या-प्रमाणेच दंडधाराचा तो अद्वितीय हत्ती वाजी व सारथि ह्यांसहवर्तमान रथांना व मनुष्यांना पायांखालीं तुडवीत असे; आणि कालचक्राप्रमाणें फिरून आपल्या पुढल्या पायांनी व सोडेंतें दुमऱ्या हत्तींना तो मृत्युमुखी लोटीत असे. त्याप्रमाणेंच पोलादी चिलखतें व सुंदर अलंकार घातलेल्या वीरांना अश्वांसहित व पाय-दळामहित ठार मारून त्यांना तो दंडधार आपल्या त्या श्रेष्ठ व बलिष्ठ हत्तीकडून देव-नळाप्रमाणें कडकडां तुडवीत असे !

धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारच्या त्या हत्तीवर बसून दंडधारानें पांडवमैत्र्यांत मोठा संहार चालविला असतां, ज्यामध्ये प्रत्येकच्या टण-त्काराचे व रथचक्रांच्या नेमीचे घणघणाट होत आहेत; ज्यामध्ये मृदंग, दुंदुभि व पुष्कळ शंख वाजत आहेत; आणि ज्यामध्ये हजारों रथ, अश्व व हत्ती ह्यांची गर्दी आहे. अशा त्या सैन्यामध्ये दंडधाराच्या त्या अपूर्व हत्तीवर अर्जुनानें आपला रथ घातला. तेव्हां दंड-धार अर्जुनावर बारा, कृष्णावर सोळा, व प्रत्येक अश्वावर तीन तीन बाण टाकून मोठ्याने गर्जला आणि पुनःपुनः मोठमोठ्याने हंभूं लागला. तेव्हां अर्जुनानें भल्ल बाण सोडून दंडधाराच्या धनुष्याची दोगी छेदिली, बाण तोडिले, धनुष्य मोडून टाकिलें आणि सुंदर ध्वज भंगिला व त्याने दंडधाराच्या हत्तीच्या महानांना व पादरक्षकांना वधिलें. तेव्हां तें पाहून त्या मगधाधिपतीला फारच क्रोध आला व त्याने आपला तो घातुक मदनमत्त हत्ती वायुवेगानें अर्जुनावर सोडून कृष्णार्जुनांना अत्यंत क्रोध आणण्याकरितां त्यांजवर तोमरांची वृष्टि केली. त्या वेळी अर्जुनानें गजशुडे-सारखे शोभणारे ते दंडधाराचे बाहु व पूर्ण-

चंद्राप्रमाणें तेजस्वी असें त्याचें तें मुख हीं वस्तूयाप्रमाणें जलाल बाणांनीं एकदम तोडिली, आणि त्याच्या हत्तीवर शतावधि बाण टाकिले. तेव्हां अंगावर सुवर्णकवच घातलेला तो हत्ती कांचनालंकारांनी चमक-णाऱ्या पार्श्वबाणांनी व्याप्त झाला असतां, रात्री दावानलानें ज्याच्यावरील वृक्षलता प्रज्वलित झाल्या आहेत अशा पर्वताप्रमाणें शोभूं लागला. ह्याप्रमाणे अर्जुनाच्या बाणांनी दंडधाराचा हत्ती ओतप्रोत व्याप्त झाला असतां त्याला दुःसह वेदना होऊं लागल्या; तो मेघ-गर्जनेप्रमाणें गर्जूं लागला; चालतां चालतां तो मार्गांत चकर खायून पडूं लागला; व अत्यंत व्याकूल होऊन वज्रविदारित पर्वताप्रमाणें धाडकन महातामह खाली मरून पडला व त्याच्याबरोबर दंडधाराचेंही प्राणोत्क्रमण झालें !

दंडाचा वध.

ह्याप्रमाणें समरांगणांत दंडधार पडतां व त्याचा भाऊ दंड हा कृष्णार्जुनांस मारण्याच्या इच्छेनें चाल करून आला. दंडाच्या हत्तीचा वर्ण बर्फासारखा शुभ्र होता, त्यावर सुवर्णाचे हार झळकत होते व त्याचा देह हिमालया-च्या शिखराप्रमाणें प्रचंड होता. नंतर दंडाचें व अर्जुनाचें युद्ध जुंपलें. दंडानें सूर्य-किरणांप्रमाणें तेजस्वी अशी तीन जलाल तोमरें कृष्णावर व पांच अर्जुनावर टाकिली आणि मोठ्याने आक्रोश केला; परंतु अर्जुनानें तसाच आक्रोश करून क्षुरप्र बाणांनी त्याचे दोन्ही बाहु तोडले; व चंदनाची उगी दिलेले, उत्तम अंगदे धारण केलेले, व हातांत तोमरें घेतलेले असे ते भुज हत्तीवरून एकदम खाली पडत असतां जणू काय पर्वताच्या शिखरावरून दोन सुंदर महान् सर्पच खाली पडत आहेत असा भास झाला ! त्याप्रमाणेंच अर्जुनानें अर्धचंद्र बाण मारून दंडाचें शिर तोडून पाडलें !

आणि त्याबरोबर ल.गलेंच त्याचें धड रक्त-
बंबाळ होऊन, तेंही, सूर्य ज्याप्रमाणें अस्ता-
चलावरून पश्चिमेस पतन पावतो त्याप्रमाणें,
भूमीवर पतन पावलें! नंतर अर्जुनानें सूर्य-
किरणांसारखे लखलखीत असे श्रेष्ठ बाण
टाकून दंडाचा तो शुभ्रमेघतुल्य महान्
हत्ती विद्ध केला; तेव्हां वज्रानें हत केलेल्या
हिमालय पर्वताच्या शिखराप्रमाणें तो हत्ती
महान् शब्द करीत धरणीवर पडला! तदनंतर
दंडधार व दंड ह्यांच्या सैन्यात त्यांच्यासारखेच
जे दुसरे प्रबळ वीर हत्तीच्या योगानें
लढणारे होते, त्यांनी अर्जुनावर हल्ला केला.
परंतु त्यांचीही वाट दंडधार व दंड ह्यांच्या-
प्रमाणें होऊन ते वीर व त्यांचे ते हत्ती मृत्युमुखी
पतन पावले व त्यामुलें शत्रूच्या त्या अफाट
सैन्याची फळी फुटली! आणि युद्धाची अशी
गर्दी उडाली की, हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ
यांच्या टोळ्या एकमेकांवर तुटून पडून मोठा
आक्रोश करीत एकमेकांस मारीत असतां
रणांगणांत मरून पडल्या!

राजा धृतराष्ट्र, नंतर देवगण इंद्रास म्हण-
तात त्याप्रमाणें अर्जुनाला त्याच्या सैनिकांनी
आवरून म्हटलें, "हे वीरा, ज्याला मृत्यू-
प्रमाणें लोक भीत होते, त्या शत्रूला तूं मु-
देवांन मारिलें आहेस! जर तूं आज हें मह-
त्कार्य केलें नसतेंस, तर आज आपणांस जो
आनंद झाला आहे तो आपल्या शत्रूस झाला
असता व आपला समूळ उच्छेद झाल्याशिवाय
राहिला नसता!" राजा, ह्या प्रकारचें पुष्कळ
भाषण सुहृदांनी केलें तें श्रवण करून अर्जुनाचें
मन मोठे प्रसन्न झालें; आणि तो त्या सुहृद्मंड-
ळीचा यथाशक्ति सत्कार करून पुनः संश-
कांच्या नाशकरितां तिकडे चालता झाला.

अध्याय एकोणिसावा.

—०— संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो: राजा धृतराष्ट्रा, दंडधार
व दंड ह्यांचा वध करून अर्जुन पुनः संशसकां-
कडे वळल्यानंतर, अंगारक (मंगळ) ज्याप्रमाणें
वक्रगामी व अतिवक्रगामी झाला असतां फार
नाश करितो, त्याप्रमाणें त्यानें पुष्कळ संशसकां-
वर बाण टाकून त्यांचा फार नाश केला. पार्थाच्या
बाणांनी हत झालेले वीर, अश्व, रथ व कुंजर
पळ लागले, व्याकूल झाले, मैगवेरा धावू
लागले, पतन पावले व मेले! त्या समयी युद्ध-
भूमीवर शत्रूकडील जे योद्धे अर्जुनाशी लढत
होते, त्यांवर अर्जुनानें भल्लाबाण, क्षुरबाण,
अर्धचंद्रबाण व वासराच्या दांतांसारखे बाण
मोडून त्यांचे घोडे, घोडेस्वार, सारथि, ध्वज,
धनुष्ये, बाण, हात, हातांतील आयुधें, बाहु व
मस्तकें ही तोडून टाकिली. तेव्हां, माज केलेल्या
धेनूच्या प्राप्तीकरितां एका वृषभावर जसे
दुसरे अनेक वृषभ तुटून पडतात, तसे त्या
अर्जुनावर दुसरे शतावधि व सहस्रावधि शूर
वीर धावून येऊन तुटून पडले. तेव्हां अर्जुना-
चें व त्यांचें जें युद्ध झालें तें पाहून अंगार
कांठाच उभा राहिला! त्रेलोक्य जिकून घेण्या-
करितां ज्याप्रमाणें दैत्यांचें इंद्राशी युद्ध झालें,
त्याप्रमाणेंच तें युद्ध झालें. त्या युद्धांत उग्रा-
युधाच्या पुत्रानें भयंकर सर्पाप्रमाणें तीन बाण
अर्जुनावर टाकिले. पण अर्जुनानें तत्काळ
त्याचें शिर तोडून टाकून धड पृथ्वीवर पाडिलें!
तेव्हां त्या संशसकांस फारच त्वेष चढला; व
त्यांनी चोहोंकडून चवताळून येऊन, वाऱ्यानें
उसळून दिलेले मेघ जसे हिमालय पर्वतावर
वर्षाकालांत जलवृष्टि करितात, तशी त्या संश-
सक वीरांनी अर्जुनावर नानाप्रकारच्या शस्त्रांची
वृष्टि केली. त्या वेळी अर्जुनानें आपणावर

आलेल्या सर्व अस्त्रांचें अस्त्रांनींच निवारण केलें व त्या प्रतिस्पर्धा योद्ध्यांवर बाणांचा वर्षाव करून त्या सर्वांस विद्ध करून टाकिलें. त्या समयी अर्जुनानें बाणप्रहार करून शत्रूंच्या रथांचे खिंचेण तोडले. घोडे मारले. मारथि पाडिले. हातांतली तूणीरें भंगिली. रथ, रथचक्रें व ध्वज ह्यांचा चुराडा केला, रथबंधनें. अश्वरश्मि व रथांचे आंस ही कापून टाकिली, रथांचे तळ व अश्वबंधनकाष्ठें ही तोडिली. आणि रथांवरील सर्व सामुग्रीचा नाश केला. राजा, अर्जुनानें त्या वेळी रणांगणांत रथादि-कांचा जो भयंकर विध्वंस केला, तो पाहून जणू काय अग्नि, वायु व जलवृष्टि ह्यांनी श्री-मंतांच्या घरांचा विध्वंस केला अमतां जो प्रकार दिसतो, तसा प्रकार दिसला ! त्या समयी अर्जुनानें वज्राप्रमाणें किंवा विद्युल्लतेप्रमाणें प्रखर बाण टाकून हत्तीची मर्मस्थलें फोडिली, तेव्हां वज्रपात झाला अमतां किंवा वीज पडली अमतां पर्वताच्या शिखरावरील घरे जशीं धाडकन् ग्वाली पडतात तसे ते हत्ती धाडकन् ग्वाली पडले ! त्याप्रमाणेंच, अर्जुनाच्या बाणांचा नडाखा सुरू झाला, तेव्हां अनेक घोडे व त्यांवरील स्वार जिभा बाहेर काढून, आंतडीं तुटून रक्तबंबाळ होऊन, डोळे पांढरे करून व व्याकूळ होऊन पटापट मरून पडले ! राजा, सव्यसाचीनें नर, अश्व व नाग ह्यांजवर इतकी बाणवृष्टि केली की, त्यांचीं शरीरें ओतप्रोत बाणांनीं व्यास होऊन ते अक्रोश करीत धांव लागले, आणि व्याकूळ होऊन अडखळून पतन पावले. राजा, त्या युद्धांत शिलेवर धार लावून तयार केलेले, आणि वज्र. विद्युल्लता किंवा विष ह्यांप्रमाणें घातुक असे अनेक बाण मारून, इंद्रानें जमा दानवांचा संहार केला, तसा अर्जुनानें शत्रुसैन्याचा संहार केला. तेव्हां, राजा, बहुमूल्य कवचें व अलंकार अंगावार घातलेले,

नानाप्रकारची वस्त्रें परिधान केलेले, व अनेक-विध आयुधें घेतलेले असे वीर आपल्या रथां-मुद्धां व ध्वजांमुद्धां रणांगणांत पार्थबाणांनी हत होऊन पडले. राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें शत्रुसैन्यांतील वीरांना जिंकून भारातीर्थी पाडिले अमतां, ते पुण्यकर्मी, कुलवान व ज्ञानवान वीर आपले देह भूमीवर ठेवून मत्कर्माच्या योगें स्वर्गलोकाम चालते झाले !

कृष्णाचें भाषण.

धृतराष्ट्र. नंतर तावडतोव त्या श्रेष्ठ महा-रथ अर्जुनावर तुझ्या पक्षाकडील नानादेशांचे अधिपति कौधायमान होऊन आपआपल्या सैन्यानिशीं धावून गेले. त्यांच्या त्या चतुरंग सैन्यांतील वीरांनी अर्जुनास ठार मारण्याच्या उद्देशानें त्याजवर विविध अस्त्रांचा भडिमार चालविला; परंतु त्या योधरूप महामेघांनीं बाणरूप जी जलवृष्टि केली, तिचा तीक्ष्ण बाण मारून अर्जुनरूप वातानें तत्काळ नाश करून टाकिला ! नंतर अश्व, गज, रथ व पत्ति ह्यांनी व्यास असलेला व शस्त्रास्त्रांनी दुर्भेद्य बनलेला असा तो मेनामागर शस्त्रास्त्रमेतून एक-दम ओलांडून जाण्याचा निश्चय करून अर्जुन शत्रुसैन्यावर बाणवर्षाव करीत असतां त्यास कृष्णानें म्हटलें, " हे अनघा अर्जुना, हा असा खेळत कां बसला आहेस ? अरे, संशसकांचें निर्दलन करून तूं लवकर कर्णवधाचा उद्योग आरंभ. " राजा, तेव्हां अर्जुनानें कृष्णाचें तें म्हणणें मान्य केलें. आणि उर्वरित असलेल्या संशसकांवर शत्रुवृष्टि करून, इंद्रानें जमा दैत्यांचा संहार केला तसा त्यांनीं मोठ्या आवेशानें त्या संशसकांचा संहार केला. राजा, त्या वेळी अर्जुना-चें विलक्षण अस्त्रनैपुण्य दृष्टीस पडलें. तो भात्यांतून बाण केव्हां काढितो, धनुष्याला तो केव्हां जोडितो किंवा शत्रूवर तो लागलान केव्हां मोडितो, हें सावधानचिंतन पाहणाऱ्या

लोकांना मुद्दां समजत नसे. राजा, तें पाहून कृष्णास मुद्दां आश्चर्य वाटलें. धृतराष्ट्रा, हंसांनी ज्याप्रमाणें मरोवरांत मज्जन करावें, त्याप्रमाणें अर्जुनाचे ते हंसांशुगौर (सूर्यकिरणांप्रमाणें कांतिमान्) बाण शत्रूच्या मेंढ्यांत प्रवेश करीत; आणि शत्रूंचा प्राण घेऊन मग रणभूमीवर पतन पावत ! त्या समर्थी तो मर्त्य प्रकार अवलोकन करून कृष्ण अर्जुनास बोलूं लागला.

कृष्ण म्हणाला:—अर्जुना, ह्या भरतकुलोत्पन्न वीरांचा व ह्या पृथ्वीवरील इतर राजांचा हा महाभयंकर संहार होण्याचें कारण दुर्योधनच होय. हे भारता. मोठमोठ्या धनुर्धरांची रणभूमीवर पतन पावलेली ही सुवर्णपृष्ठ धनुष्यें. त्याप्रमाणेंच त्यांचे हे अलंकार व बाणभाते अवलोकन कर. तसेच हिरण्मय पुंखांचे. बांकदार पेऱ्यांचे, तेलपाणी करून चकचकीत बनविलेले, व जणू काय सर्पासारखे दुमऱ्यांचा प्राण घेण्याकरितां सोडिलेले हे नाराच बाण आणि चित्रविचित्र व भुवर्णालंकृत तोमरें इतस्ततः पसरली आहेत तीं पहा. तशाच पृष्ठभागीं सोन्याचें कांदणकाम केलेल्या ह्या ग्वालीं पडलेल्या ढाली. हे सुवर्णांनं मदविलेले भाले. ह्या कांचनभूषित शक्ति. जांबूनद सोन्याचे पट्टे वमविलेल्या ह्या अवजड गदा. ह्या हिरण्मय ऋष्टि (दुष्टारी तरवारी), हे सुवर्णमंडित पट्टे, सुवर्णवर्चित दांड्यांच्या ह्या गळून पडलेल्या कुऱ्हाडी, हे परिघ, ह्या गोफणी, ह्या ध्रुशुंडी, हे कुणप (एक प्रकारचे भाले.) हे पोळादीं कुंत (भाले). हीं मोठमोठालीं मुसलें व नानाप्रकारचीं दुमरी आयुधें हातांत धारण करून जय मिळविण्याकरितां युद्ध करीत असतां मरून पडलेले हे जोरदार वीर जणू काय जिवंतच दिसत आहेत हें अवलोकन कर. गदाप्रहारांनीं ज्यांच्या गात्रांचा चुराडा झाला आहे, मुसळांनीं ज्यांची मस्तकें फुटली आहेत, आणि हत्ती, घोडे,

रथ इत्यादिकांनीं ज्यांना तुडविलें आहे, असे हे सहस्रावधि वीर पहा. शर, शक्ति, ऋष्टि, तोमर, खड्ग, पट्टे, प्राम, बडगे इत्यादिकांनीं मनुष्यें, गज, अश्व इत्यादिकांची शरीरें विदीर्ण होऊन त्यांतून रक्ताचे ओघ चालत असलेल्या ह्या शत्रूंच्या प्रेतांनीं ही रणभूमी कशी आच्छादून गेली आहे. ती पाहिलीसना ? त्याप्रमाणेंच चंदनाची उठी दिलेल्या, अंगदें धारण केलेल्या. उत्कृष्ट अलंकार घातलेल्या, तलव्र परिधान केलेल्या व केसूरें चढविलेल्या बाहूंनीं अंगुलित्राणें घातलेल्या व अलंकार धारण केलेल्या हातांनीं, हत्तीच्या सोंडेप्रमाणें भरदार अशा मांड्यांनीं, आणि मौलीमध्ये श्रेष्ठ रत्नें खोंविलीं आहेत व कर्णांत कुंडलें घातली आहेत अशा मस्तकांनीं हें भूमितल कमें शोभत आहे तें अवलोकन केलेस काय ? हे पहा, सुवर्णाच्या लहान लहान घंटा टांगलेले उत्कृष्ट रथ कसे पार भंगून गेले आहेत ! हे पहा, अश्व्यांच्या अंगांतून रक्ताचे कमे पाट वाहात आहेत ! ही पहा. रथांच्या तळभागांची काय वाट झाली आहे ती ! त्याप्रमाणेंच हे बाणभाते पहा. विविध ध्वजपताका पहा. योद्ध्यांचे महान् महान् शंख पहा, हीं शुभ्र चामरें पहा, हे बाहेर लांब जिभा काढून पर्वतासारखे रणांगणांत पडलेले हत्ती पहा, हीं चित्रविचित्र निशाणें पहा, हे मरून पडलेले गजयोद्धे पहा, हे झूल घातलेले एकत्र जमलेले हत्तीचे समुदाय पहा, आणि हीं हत्तीवर घालण्याचीं चित्रविचित्र आसनें फाटून तुटून गेली आहेत तीं पहा ! त्याप्रमाणेंच. जवमी झालेले हत्ती पडले तेव्हां त्यांच्या अंगावरील घंटा कशा पार फुटून गेल्या आहेत त्या पहा ! त्याप्रमाणेंच, ज्यांच्या दांड्यांना वैद्युरें रत्नें जडविली आहेत, असे हे अंकुश ग्वाली पडले आहेत ते पहा, अश्व जोडण्याचे हे सुंदर दंड व

अथांच्या छातीवर बांधण्याचे रत्नसखीत पट्टे असे त्यास आढळून आले व त्या योगें त्यास पहा. घोडेस्वारांच्या हातांतील ध्वजांचे शेव- विस्मय वाटला. राजा आयुष्य समाप्त झालेल्या दांभ भरजरी वस्त्रे लावलेली आहेत ती पहा. प्राण्यांना यम जसा ठार मारितो, तसे त्या चित्रविचित्र. रत्नजडीत व भरजरी खेगिरे आणि अस्त्रविद्यविशारद पांड्याने युद्धामध्ये नानाविध रंकूचर्म रणांगणांत पडली आहेत ती अवलोकन कर. राजे लोकांचे चूडामणी. सुंदर मुवर्ण- बाणांनी शत्रूकडील ठळक ठळक वीर मारिले हार, छत्रे, चामरें व व्यजनें पडली आहेत बाणप्रहारानीं विद्ध करून त्यास मृत्युमुखांत हीं अवलोकन कर. त्याप्रमाणेंच, मरेवरांत जसे लोटिलें होतें. राजा, शत्रूकडील महान् महान् वीरांनी जी अस्त्रे पांड्यावर सोडिलीं. व ज्या त्या मरेवराचा पृष्ठभाग आच्छादित झालेला नानाविध शस्त्रांचे प्रहार त्याजवर केले. त्या दिमतो. तमा हा भूप्रदेश-कुंडलांमहित अस- सर्वांचा प्रतिकार पांड्याने बाणांनी केला; व णाच्या, ज्यांवरील श्मश्रु व्यवस्थितपणें राखिली इंद्रानें ज्याप्रमाणें दैत्यांना वधिलें. त्याप्रमाणें आहे अशा. व चंद्राप्रमाणें किंवा नक्षत्रांप्रमाणें पांड्याने शत्रूला वधिलें.

शोभणाच्या वीरशिंरांनी आच्छादित झालेला दिमत आहे हें अवलोकन कर. हीं पहा. ह्या रणांगणांत राजे लोकांची शिरःकमले कशी विखरून पडली आहेत ती! जणू काय शरत्कालांत तारुमगणांनी विचित्र दिमणाच्या व चंद्राचा शुभ्र प्रकाश पडलेल्या आकाशामध्ये दीप्तिमान् अम- पारी ही नक्षत्रमालाच आहे असे वाटतें! अर्जुना, हें सर्व कृत्य ह्या रणांगणांत तूं केलें आहेस व तें तुला अनुरूप आहे! अर्जुना, फार कशाला. हा इतका प्रताप स्वर्गांत त्या इंद्रानें केल्यास त्याचीही धन्यता होईल. मग तुझी होईल ह्यांत वानवा ती कोणती!

धृतराष्ट्र. ह्याप्रमाणें त्या रणभूमीवरील प्रकार कृष्णानें अर्जुनास दाखविला; आणि तो पुढें जात अमतां त्यास दुर्योधनाच्या मैत्र्यांत मोठी गडबड ऐकू आली. त्यानें शंख. दुंदुभि, मेरी. पणव इत्यादिकांचे शब्द श्रवण केले; आणि रथ. गज. अश्व व शस्त्रे यांचे भयंकर ध्वनि त्याच्या कानांनी पडले. नंतर कृष्णानें अश्रवांना इपारा देऊन वायुवेगानें अर्जुनाचा रथ त्या मैत्र्यांत नेला. आणि पाहिलें तों. पांड्यानें तुझ्या मैत्र्याला फार पीडा दिली आहे

अध्याय विसावा.

— ०. —

पांड्याचा वध.

धृतराष्ट्र म्हणाला: मंजया. तूं मला ह्या लोकप्रसिद्ध वीरांचें (पांड्य राजांचें) नांव पूर्वीच सांगितलें आहेस, परंतु समरांगणांत त्यानें कोणकोणती कर्मे केली, ती काहीं सांगितली नाहीस; ह्यास्तव त्या महान् योद्ध्याचा पराक्रम तूं आज मविस्तर निवेदन कर; आणि त्याचें युद्धकौशल्य, प्रभाव, प्रमाण, शौर्य व अभिमान हीं सर्व यथास्थितपणें सांग.

मंजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्र. भीष्म. द्रोण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, अर्जुन व वामुदेव हे सर्व धनुर्विद्येत मोठे निपुण आहेत, ही गोष्ट तुलाही मान्य आहे; परंतु ह्या सर्व महारथ्यांना पांड्य राजा यःकश्चित् मानीत असे. कोणत्याही राजास आपल्या बरोबरीचा मानण्यास तो राजी नसे. भीष्मद्रोणांशीं आपलें साम्य करणें हें त्यास मुळीच खपत नव्हतें; आणि वामुदेव व अर्जुन ह्यांच्यापेक्षां आपल्या अंगीं न्यूनपणा आहे असें मानण्यास तो बिल-

कूल कबूल नव्हता ! असो. सर्व राजांमध्ये श्रेष्ठ अशा त्या महान् शस्त्रधारी पांडव राजाने यमा-प्रमाणे संतप्त होऊन मोठ्या आवेशाने कर्णाच्या सैन्यावर स्वारी केली. तेव्हां कर्णाच्या सैन्यातील रथ, अश्व व पायदळांतील मोठ-मोठे वीर ह्यांची त्रेधा उडून ते सर्व सैन्य कुंभाराच्या चक्राप्रमाणे गरगरां फिरू लागले ! वायु ज्याप्रमाणे मेघांना उधळून लावितो. त्याप्रमाणे त्या पांडव राजाने नेमाने बाण मारून कर्णाच्या सैन्यातील गज, अश्व, सारथि, ध्वज, रथ व आयुधे ह्यांचा नाश करून ते सैन्य उधळून लाविले ! इंद्र जसा वज्राने पर्व-तांचा चुराडा करितो, तसा पांडवाने गज, गजयोद्धे, पादरक्षक, घोडेस्वार, घोडे, शक्ति, प्रास, तूणीर, आयुधे, ध्वज व पताका ह्यांचा चुराडा करून टाकिला. त्याप्रमाणेच त्याने पुलिंद, खम, बालहीक, निषाद, आंध्रक, कुंतल, दाक्षिणात्य व भोज ह्या शूर व रणधुरंधर वीरां-वर बाणवृष्टि करून ह्यांच्या कवचांचा व शस्त्रांचा नाश केला व त्यांम धारातीर्थी पाडिले; आणि याप्रमाणे पांडवाने कर्णाच्या चतुरंग सैन्याचा रणभूमीवर बाणप्रहाराने संहार चालविला असता त्या विजयशाली वीरावर युद्धदुर्मद अश्व-त्थामा मोठ्या आवेशाने चाल करून गेला.

नंतर त्याने मोठ्या गौरवाने हसत हसत पांडव राजांमहाक मारून म्हटले: हे कमल-नयना भूमिपाला, तूं मोठा कुलीन व ज्ञाता आहेस. तुझे बल व शौर्य अगाध अमल्यामुळे तुझी कीर्ति इंद्राप्रमाणे पसरली आहे. तूं आपल्या दीर्घ हस्तांत धनुष्य धारण करून प्रत्येक टण्टकार व बाणांचा वर्षाव सुरू केलास म्हणजे जणू काय तूं महामेघ शत्रूंवर अत्यंत वेगाने जळाची वृष्टिच करित आहेस असा भास होतो. राजा, तुझ्याशी युद्ध करण्याला माझ्याशिवाय अन्य वीर योग्य दिसत नाही; कारण तूं एकटा

अनेक रथ, गज, अश्व व पत्ति ह्यांचा चुराडा करून टाकितोस. राजा, तुझा हा प्रताप अव-लोकन केला असतां जणू काय अरण्यामध्ये निर्भयपणे संचार करणारा भीमपराक्रमी पंचा-ननच श्वापदांचे कळपच्या कळपच मारून टाकीत आहे, असे वाटते ! राजा, तुझ्या ह्या महान् रथाचा असा कांहीं घोष होत आहे की, सर्व पृथ्वी व अंतरिक्ष ही त्याच्या योगाने दुम-दुमून जाऊन जसा कांहीं वर्षाकृतूच्या अंती मेघच गर्जत आहे असे भासते ! ह्यास्तव, हे पांडवराजा, तुझ्या ह्या अगाध सामर्थ्यामुळे दुसरा कोणी वीर तग धरील असें मला वाटत नाही. म्हणून अशा समयीं त्वां माझ्याशी युद्ध करावे हेंच विहित होय. ह्याकरितां, भात्यांतून विषारी मर्षाप्रमाणे भयंकर असे बाण बाहेर काढून तूं एकट्या मनवर भडिमार कर; आणि अधिकांमुराचे व व्येवकाचे जसें युद्ध झाले, तसें तुजें व माझें युद्ध होऊं दे.

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे द्रोणपुत्राचे भाषण श्रवण करून पांडवराजा मलयध्वज ह्याने त्याम अनुमोदन दिले; व नंतर ' आतां तूं माझ्यावर शरवृष्टि सुरू कर ' असें म्हणून अश्वत्थाम्याने त्या पांडवराजावर बाण टाकिला असतां तत्काळ त्याने उलट बाणवृष्टि करून द्रोणपुत्रास विद्ध केले ! तेव्हां अश्वत्थाम्याने हसत हसत अशींच्या ज्वालांप्रमाणे अतिशय प्रखर असे बाण मलयध्वजाच्या मर्मस्थळां मारिले. नंतर अश्वत्थामा क्रुष्टा नामक दहाव्या गतीने मलय-

१ बाणांच्या गति दहा आहेत. त्यांचे स्पष्टाकरण असें---(१) उन्मुखी---मस्तकावर बाण मारण्यांत येतो ती. (२) अभिमुखी ज्या गतीने हृदयावर बाण मारण्यांत येतो ती. (३) त्र्येक-कुक्षिविदारण करणारी. (४) मंदा-ज्या गतीने थोडीशी त्वचा मात्र भेदिली जाते ती. (५) गोमूत्रिका---कवच भेदणारी व सव्यापसव्य बाण फेकले जाणारी. (६) धुवा --निश्चयाने नेम साधणारी. (७) स्थूलता-हल दाखविण्याकरितां नेम चुकविणारी. (८) यमकांता--- (पुढे चालू.)

ध्वजावर बाणांचा वर्षाव करूं लागला. त्यांना ती गति देऊन मोठमोठे सुतीक्षण, धार दिलेले व मर्मभेदक असे नाराच बाण शत्रूवर सोडिले, तेव्हां ते सर्व बाण पांड्यराजाने नऊ निशित (सहाणेवर लावलेले) बाण टाकून छेदिले; आणि आणखी चार बाण सोडून तत्काळ त्याने अश्वत्याम्याच्या अश्यांचा वध केला व त्याच्या धनुष्याची ती अवाढव्य प्रत्यंचाही तोडून टाकिली. राजा धृतराष्ट्रा, नंतर शत्रुसंहारक द्रोणपुत्राने त्या धनुष्यास दुसरी प्रत्यंचा चढविली, तो इकडे त्याच्या सेवकांनी ताबडतोब त्याच्या रथामा दुसरे उत्कृष्ट अश्व जोडून पुनः त्याचा रथ युद्धार्थ सिद्ध केला. मग अश्वत्याम्याने पांड्यराजावर सहस्रावधि बाण टाकून दशदिशा व अंतरिक्ष ही बाणांनी व्याप्त करून सोडिली ! त्या समयी तो महात्मा द्रोणपुत्र बाणांचा एकसारखा भडिमार करित असता, त्याचे ते बाण कधीही संपणार नाहीत हें पांड्यराजाला माहीत असतांही त्या वीरशिरोमणीने मोठ्या प्रयत्नाने अश्वत्याम्याच्या त्या बाणांचा विखंडन केला आणि समरांगणांत रथचक्राच्या दोन रक्षकांवर निशित बाण टाकून त्यांस ठार मारिले ! राजा, तेव्हां शत्रूंचे ते युद्धलाभ अवलोकन करून अश्वत्याम्याने मंडलाकार बाण फेंकण्यास प्रारंभ केला; आणि पर्जन्याप्रमाणे बाणांची वृष्टि करून पांड्यराजाला आंकून काढिले ! त्या वेळी अर्ध्या प्रहराइतक्या अवधीत अश्वत्याम्याने, आठ बैल लाविलेले आठ गाडे वाहून नेतील इतके बाण पांड्यराजावर सोडिले ! राजा, त्या समयी अश्वत्याम्याला

(मार्गल पानावरून पुढे चालू)

ज्या गर्ताने लक्ष्याचा भेद करून पुनःपुनः बाण फेंकता येतात ती. (९) कुष्टा--लक्ष्याच्या एखाद्या भागावर प्रहार करितां येता अशी. (१०) कुष्टा--ज्या गर्ताने शत्रूचे मस्तक तोडून त्यास दूर फेकून देतां येते ती

इतका क्रोध चढला होता कीं, जणू काय तो काळाचाही काळ असावा असें भासूं लागले ! व ज्यांनीं ज्यांनीं त्याच्याकडे दृष्टि फेंकिली, ते सर्व बहुतकरून देहभान विसरून मूर्च्छित पडले ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या घनघोर संग्रामांत अश्वत्याम्याने शत्रुसैन्यावर अशी बाणवृष्टि केली कीं, जणू काय पर्वत व वृक्ष ह्यांनीं आच्छन्न असलेल्या भूप्रदेशावर ग्रीष्म ऋतूच्या अंती पर्जन्याचीच वृष्टि होत आहे. असे वाटूं लागले ! परंतु असे झाले असतांही पांड्यराजाने वायव्या-स्त्राची योजना करून द्रोणपुत्राची ती बाणवृष्टि संपुष्टांत आणिली व मोठ्या आनंदाने गर्जना करण्यास प्रारंभ केला. ह्याप्रमाणे तो पांड्यराजा गर्जत असतां, चंदनागुरूची पुटें दिलेली व मलयपर्वताच्या चिन्हांने युक्त असा तो पांड्यराजाचा ध्वज अश्वत्याम्याने मोठ्या वीरश्रीने भक्ष केला; त्याच्या रथाचे चारही अश्व मारून एका बाणाने सारथि पाडिला; व मेघाप्रमाणे गर्जना करणारे असे त्याचे ते धनुष्य अर्धचंद्र बाणाने तोडून टाकून रथाचे निलतुल्य तुकडे उडविले; आणि पांड्यराजाच्या सर्व अस्त्रांचे आपल्या अस्त्रांनी निवारण करून व त्याची सर्व आयुधे भक्ष करून त्यास अगदी पेंचाटीत घातले ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या समयी अश्वत्याम्याने पांड्यराजाला ठारच मारिले असते, परंतु केवळ आणखी युद्ध करण्याची इच्छा मनांत धरून त्याने ती गोष्ट केली नाही !

अमो; ह्याप्रमाणे पांड्यराजाचे व अश्वत्याम्याचे युद्ध चालू असतां इकडे कर्णाने पांडवांच्या गजमेनेवर हल्ला करून पांडवांचे ते अवाढव्य सैन्य पळवून लाविले. त्याने पांडवांकडील रथ्यांचे रथ भक्ष करून त्यांस विरथ केले; आणि हत्ती, घोडे व पायदल ह्यांजवर बांकदार पेच्यांचे पुष्कळ बाण टाकून त्यांस अगदीं जर्जर करून सोडिले !

राजा धृतराष्ट्रा, महाधनुर्धर अश्वत्थाम्यानें शत्रुसंहारक व रथिश्रेष्ठ अशा पांड्यराजाला विरथ करून केवळ युद्धलालसेनें जिवंत ठेविल्या-
नंतर, ज्याच्यावरील वीर युद्धांत पतन पावला होता असा एक महाबलिष्ठ व शस्त्रा-
स्त्रांनीं सुसज्ज असा हत्ती द्रोणपुत्राच्या शरांनीं विद्ध होऊन तत्काळ मोठ्या आवेशानें गर्जना करीत पांड्यराजावर धावून आला. धृतराष्ट्रा, पांड्यराजा मलयध्वज हा हत्तीबरोबर युद्ध करण्यांत मोठा तरबेज अमल्यामुळे, सिंह जसा गर्जना करीत पर्वतशृंगावर एकदम आरूढ होतो. तसा तो पांड्यराजा त्या पर्वतशृंगतुल्य द्विपश्रेष्ठावर एकदम आरूढ झाला आणि त्यानें मोठ्या आवेशानें, बळानें व क्रोधानें अंकुशप्रहार करून त्यास क्षीणवीर्य करून सोडिलें. नंतर तत्काळ त्या पांड्यराजानें सूर्यकिरणप्रमाणें उज्ज्वल असें तोमर अश्वत्थाम्यावर टाकून मोठी गर्जना केली आणि पडलामरे पडलाम !' असें मोठ्या उलहामानें बारंवार ओरडत त्यानें उत्कृष्ट हिरे, उत्तम रत्ने व सुवर्ण यांच्या जड्यानें अलंकारिलेल्या व वस्त्रे, पुष्पे व मौक्तिकें ह्यांनीं शृंगारिलेल्या अशा त्या अश्वत्थाम्याच्या किरीटावर मोठ्या वेगानें दुसरें तोमर टाकिलें. तेव्हां त्या तोमरप्रहाराबरोबर सूर्य, चंद्र, ग्रह व अग्नि ह्यांप्रमाणें देदीप्यमान असा तो किरीट, वज्राच्या प्रहारानें पर्वताचा कडा जसा धाडकन धरणीतलावर पडतो. तसा ग्वाली पडला व फुटून त्याचे तुकडे तुकडे झाले ! राजा धृतराष्ट्रा, पांड्यराजाच्या ह्या कृत्यानें अश्वत्थाम्यास अतिशय कोप चढला; नागराजाला पादप्रहार झाला असतां तो जसा क्षुब्ध होतो, तसा तो क्षुब्ध झाला; आणि त्यानें कालदंडाप्रमाणें अत्यंत भयंकर असे चौदा बाण बाहेर काढिले. त्यांपैकी त्यानें त्या हत्तीच्या चार पायांवर चार व शूडेवर एक असे पांच बाण टाकिले; त्याप्रमाणेंच

पांड्यराजाच्या दोन बाहूवर दोन व मस्तकावर एक असे तीन बाण मारिले; आणि राहिलेले महा बाण त्यानें पांड्यराजाच्या समीप संचार करणाऱ्या महा महारथांवर सोडिले. राजा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थाम्याच्या बाणांचा प्रहार होताना पांड्यराजाचे ते दीर्घ, बळकट, उत्कृष्ट चंदनाची उठी दिलेले व सुवर्ण, रत्ने व हिरे ह्यांचे अलंकार धारण केलेले बाहु भूतलावर पतन पावले व गरुडानें टाकून दिलेल्या सर्पांप्रमाणें वळवळ करू लागले ! त्याप्रमाणेंच पांड्यराजाचें पूर्णशशिबिम्बाप्रमाणें शोभणारे आणि क्रोधानें लाल झालेले नेत्र व तरनरीत नासिका धारण करणारें असें तें उभयभीत कुंडलांच्या तेजानें शोभणारें मुख, विशाखांच्या अंतर्भागी चंद्रबिंबच झळकावें, तसें झळकू लागलें ! राजा, त्या हत्तीवर अश्वत्थाम्यानें जे पांच जलाल बाण मारिले होत, त्यांच्या योगानें त्या हत्तीचे महा भाग झाले; व खुद्द पांड्यराजावर जे तीन बाण टाकले होते त्यांनी त्याचे चार भाग झाले; व जणू काय त्या दहा भागांनी युद्धकुशल अश्वत्थाम्यानें दशदेवतांस उद्देशून दहा आहुतींच अर्पण केल्या ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्या युद्धांत पांड्यराजानें अश्व, कुंजर व मनुष्ये ह्यांचा संहार उडवून राक्षसांच्या यथेष्ट भोजनाची व्यवस्था केल्यानंतर, स्मशानांतील अग्नि ज्याप्रमाणें प्रेतबलीनें तृप्त झाल्यावर मल्लिमेचनानें शांत होतो, तसा तो पांड्यराजा शांत झाला ! ह्याप्रमाणें त्या पांड्यराजाचा वध होताना, कृतकृत्य झालेल्या त्या अस्त्रनिपुण द्रोणपुत्रासमीप तुझा पुत्र दुर्योधन आप्तमुहूर्तासह प्राप्त झाला; व बलीला जिंकल्यानंतर अमरेश्वरानें विष्णूचा जसा गौरव केला, तसा त्यानें मोठ्या आनंदानें त्या अश्वत्थाम्याचा अत्यंत गौरव केला !

अध्याय एकविसावा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

धृतराष्ट्र म्हणाला: - संजया, अश्वत्थाम्याने पांड्यराजाचा वध केला व त्या महापराक्रमी कर्णाने पांडवांचे सर्व सैन्य उधळून लाविले. तेव्हां मग समरांगणांत अर्जुनाने काय केले बरे ? बा संजया, अर्जुन हा मोठा बलवान असून सर्व शस्त्रास्त्रांत पारंगत आहे; व कोणत्या समयास काय केले पाहिजे हे त्यास उत्कृष्ट कळत असून, भगवान् शंकराने त्यास वर दिला आहे की, कोणत्याही प्राण्यापासून तुझा पराभव होणार नाही. म्हणून ! संजया, मला त्या शत्रुसंहारक धनंजयाचे फार भय वाटत आहे. ह्याकरिता त्याने रणभूमीवर काय काय केले ते मला निवेदन कर.

संजय म्हणाला: - राजा धृतराष्ट्रा, पांड्यराजा पतन पावतांच कृष्णाने मोठ्या त्वरेने अर्जुनाला हिताची गोष्ट सांगितली. तो म्हणाला, " बा अर्जुना, मला आज युधिष्ठिर राजा व इतर पांडुपुत्र कोठे दिसत नाहीत. ते सर्व युद्धपराङ्मुख होऊन पळून गेले असे वाटते; परंतु ते जर परत आले असते, तर शत्रूंचे हे अवाढव्य सैन्य स्वर्चीत भन्न झाले असते. पहा, अश्वत्थाम्याच्या संकल्पानुरूप कर्णाने सृजयांचा वध केला; आणि त्याप्रमाणेच अश्व. रथी व नाग ह्यांचा मोठा संहार उडविला ! " राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे युद्धभूमीवरील सर्व प्रकार वीर वामुदेवाने अर्जुनास निवेदन केला असता, अर्जुनाने त्या सर्वांचा विचार केला; व धर्मराजाला घोर भीती उत्पन्न झाली आहे, असे पाहून " हे हृषीकेशा, आतां अगदी विलंब करू नको; रथ चालव. " असे त्याने कृष्णास सांगितले. तेव्हां कृष्णाने अश्वांस इशारा करितांच तो अजिंक्य रथ लागलाच चालू होऊन

शत्रूंशी येऊन भिडला व पुनः मोठे दारुण युद्ध मातले ! त्या ठिकाणी फिरून कौरवपांडवांकडील धीरवीर एकत्र मिळाले. त्यांत भीमसेन-प्रभृति पांडव व कर्णप्रभृति कौरव असून त्या सर्वांचा अमा कांही निकराचा संग्राम सुरू झाला की, त्याच्या योगे यमाच्या राष्ट्रांतील लोकांची संख्या भराभर वाढू लागली ! त्या समयी ते सर्व वीर परस्पराना ठार मारण्याच्या हेतूने धनुष्ये, बाण. परिश्र, सङ्ग, पट्टे, तोमर, मुसळ, भ्रुशुंडि, शक्ति, ऋष्टि, कुऱ्हाडी, गदा, ग्राम, धार दिलेले भाले, भिदिपाल (गोफणगुंडे) व मोठमोठे अंकुश घेऊन एकमेकांवर धावून गेले. त्या वेळी रथचक्रांचा, बाणांचा व प्रत्ये-चेचा अमा कांही महान् शब्द होऊ लागला की, त्याच्या योगाने दिशा, उपदिशा, अंतरिक्ष, स्वर्ग व पृथ्वी ही सर्व दुमदुमून गेली. तेव्हां त्या महान् शब्दाने, युद्धभूमीवर प्राप्त झालेल्या वीरांस अतिशय वीरश्री उत्पन्न झाली; आणि शत्रूस मारून घोर कलहाची समाप्ति करावी असे मनांत आणून ते मोठ्या आवेशाने परस्परानांशी लढू लागले. त्या वेळी ज्या, तलत्रे, धनुष्ये, गर्जनारे कुंजर, पदाति व पतन पावणारी मनुष्ये ह्यांचा महान् शब्द सर्वत्र भरून गेला. ते शूर वीर गर्जना करीत एकमेकांशी लढत असतां नानाविध शस्त्रास्त्रांचा अमा कांही भयंकर ध्वनि उठत होता की, तो ऐकून सैनिकांना अत्यंत भीती उत्पन्न झाली, त्यांच्या तोंडचे पाणी पळाले, व ते पतन पावू लागले ! राजा. ह्याप्रमाणे समरांगणांत त्या योद्ध्यांचा महान् घोष चालू असतां व ते योद्धे शस्त्रास्त्रांचा वर्षाव करीत असतां अधिरथाचा पुत्र वीर कर्ण ह्याने बाणांची वृष्टि करून पांडवांकडील पुष्कळ वीरांना धारातीर्थी पाडिले. त्या समयी त्याने बाणांचा भडिमार करून अश्व, मारथि व ध्वज ह्यांमवेत वीम पांचालवीरांना

यमपुरीचा मार्ग दाखविला. तेव्हां तत्काळ पांडवांकडील महान् महान् वीर्यशाली योद्धे मोठ्या झपाट्याने अस्त्रांची वृष्टि करीत कर्णावर भावत येऊन त्यांनी त्याम चोहोंकडून वेढिलें. नंतर तेथें मोठे घोर युद्ध चालू झालें. त्यांत कर्णानें सभोवतालीं वेढा दिलेल्या पांडवमैत्र्यावर बाणांचा वर्षाव करून त्याची अशी दाणादाण उडविली कीं, जणू काय हा महान् गजसारसादिक पक्षिगणांनीं व कमलांनीं व्याप्त असलेल्या सरोवरांत प्रविष्ट होऊन तेथें मोठा अनर्थ उडवीत आहे असें भासूं लागलें ! पांडवसैन्याच्या मध्यभागी प्रविष्ट झालेल्या राधेयानें भोंवतालच्या पांडववीरांवर उत्तम धनुष्याच्या प्रत्येकापासून निशित बाणांची वृष्टि करून त्यांचीं मस्तकें दूर उडवून देण्यास आरंभ केला, तेव्हां वीरांच्या ढाली व चिलखतें छिन्नभिन्न होऊन पृथ्वीवर गळून पडूं लागली. राजा, कर्णाचे बाण इतके कांहीं उग्र व जलाल होते कीं, एका बाणासरसाच शत्रूचा निःपात उडे. त्याची बाण टाकण्याची पद्धतिही विचित्र होती. सारथि ज्याप्रमाणें अश्वानंवर चाबुकांचे प्रहार करितो, त्याप्रमाणें कवच, देह व प्राण ह्यांचा संहार उडविणारे ते आपले बाण धनुष्याच्या प्रत्येकापासून तो असे कांहीं युक्तीनें सोडी कीं, त्यांच्या योगें शत्रूंकडील वीरांचें तलत्र विद्ध होऊन त्यांचे हात एकदम उतरावे ! राजा, कर्णाचें व पांडवसेनेचें ह्याप्रमाणें भयंकर युद्ध चाललें असतां, तावडीत सांपडलेल्या मृगगणांना सिंह ज्याप्रमाणें मोठ्या वेगानें मारून टाकितो, त्याप्रमाणें कर्णानें आपल्या बाणांच्या तावडीत सांपडलेल्या पांडवयोद्ध्यांना, संजयांना व पांचालांना मोठ्या वेगानें मारून टाकिलें ! तेव्हां पांचालांचा राजा, द्रौपदीचे पुत्र, नकुलसहदेव व युयुधान हे सर्व एकत्र होऊन कर्णावर चाल करून आले;

आणि मोठा घोर संग्राम सुरू झाला. त्या समयी कौरव, पांडव व पांचाल हे पुनः आपल्या प्रिय प्राणांची पर्वा न धरितां एकमेकांवर प्रहार करूं लागले. त्या वीरांच्या अंगांत कवचें असून त्यांच्याबरोबर शस्त्रास्त्रांची सिद्धता उत्तम होती; आणि त्यांच्या मस्तकांवर शिरस्त्राणें असून अंगावर भूषणें होती. त्या महाबालष्ठ वीरांपैकी कित्येकांच्या हातांत गदा, कित्येकांच्या हातांत मुसळें व कित्येकांच्या हातांत परिघ होते. जणू काय कालदंडच अशी ती आयुधें हातांत उंच धरून ते वीर मोठ्या आवेशानें ओरडत, शत्रूंना आह्वान करीत व स्वतःची बटाई मारीत मोठ्या वेगानें एकमेकांवर तुटून पडले ! नंतर त्यांचें घनघोर युद्ध जुंपलें. तेव्हां ते परस्परांवर असे धाव घालूं लागले की, कित्येकांच्या शरीरांतून रक्ताचे पाट चालू झाले; त्यांची आयुधें गळाली; डोळे फुटले; मस्तकें भग्न झाली, मज्जा बाहेर आली; दांतांच्या कवळ्यां उघड्या पडल्या; आणि त्यांची मुखें रक्तबंबाळ झाल्यामुळें डाळिंबासारखी लाल दिसूं लागली; आणि ते वीर शस्त्रास्त्रांनीं परिवेष्टित होतसात, कंठांत प्राण आणून केवळ जिवंत राहिले आहेत, असें दिसलें ! त्या वेळीं त्या महान् युद्धांत कित्येकांनीं संकुद्ध होऊन दुसऱ्या वीरांस कुन्हाडींनीं तोडिलें, पट्ट्यांचे व तरवारीचे दुसऱ्यांवर वार केले; शक्ति व गोफणमुंडे दुसऱ्यांवर फेंकिले; आणि नगर, प्राप्त, तोमर इत्यादिकांनीं दुसऱ्यांस विद्ध करून रणांगणांत पाडिलें. राजा. त्या समयी एकमेकांच्या हस्ते मरून पडलेल्या योद्ध्यांच्या रक्तबंबाळ शरीरांतून रक्ताचा अमा कांहीं लोट वाहूं लागला कीं, जणू काय तोडून टाकलेल्या रक्तचंदनाच्या खोडांतून सुस्निग्ध व आरक्त रसच बाहेर पडत आहे. असा भास झाला ! राजा. तेव्हां ममरभूमीवर असा संमर्द

मातल कीं, हजारों रथानीं हजारों रथांचा चुराडा केला; हत्तींनीं हत्ती मारून टाकिले; मनुष्यांनीं मनुष्यांस वधिलें; व अश्वानीं अश्वींचा विध्वंस उडविला. त्याप्रमाणेंच योद्ध्यांनीं क्षुर, भल व अर्धचंद्र वाणांचा भडिमार करून ध्वज, मस्तकें, छत्रें, गजशुंडा, मनुष्यांचे भुज वगैरे तोडून टाकिले; आणि मनुष्यें, कुंजर, अश्व व रथ ह्यांचा संहार केला. राजा, त्या युद्धांत घोडेस्वारांनीं मारिलेले शूरवीर, व शुंडा तुटलेले हत्ती हे पताका व ध्वज ह्यांसह वर्तमान पर्वताच्या कड्याप्रमाणें रणभूमीवर पतन पावले. राजा, त्या युद्धांत पायदळांनीं मोठें विलक्षण युद्ध केलें. त्यांनीं हत्ती, घोडेस्वार व रथ ह्यांवर चाल करून पुष्कळांचा संहार उडविला व पुष्कळांस घायाळ करून मरणोन्मुख केलें. ह्याप्रमाणें पायदळांनीं हत्ती व घोडेस्वार ह्यांची चोहोंकडे दुर्दशा करून टाकिली अमतां उलट घोडेस्वारांनींही पायदळांवर हल्ले केले व त्यांस रणांगणांत ठार करून टाकिले. राजा, त्या वेळीं रणभूमीवरील जो कांही हृदयद्रावक देखावा दृष्टीस पडला त्याचें काय वर्णन करावें ! रणांगणांत पतन पावलेल्या वीरांचीं मुगें व गात्रें कोमेजलेल्या कमळांमारखी व पुष्पमालांमारखी दिसें लागली. हत्ती, घोडे व मनुष्यें ह्यांचे ते सुंदर व अतिशय कांतिमान् देह मळकट वस्त्रांप्रमाणें दिसें लागून पहाणाऱ्यास त्यांपासून अत्यंत चिळस वाटूं लागला !

अध्याय बाविसावा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर तुझ्या पुत्रांने आज्ञा केल्यावरून मोठमोठे महात आपआपल्या हत्तीनिशी मोठ्या क्रोधानें धृष्ट-

द्युम्नाचा वध करण्याच्या इच्छेनें पार्शतावर (धृष्टद्युम्नावर) चाल करून गेले. त्या समयीं पूर्वेकडील व दक्षिणेकडील देशांतील महान् महान् गजयोद्धे आणि त्याप्रमाणेंच अंग, वंग, पुंड्र, मागध, ताम्रलिप्तक, मेकल, कोशल, मद्र, दशार्ण, निषध व कलिंग ह्या देशांतले गजयुद्धांत कुशल असे वीर ह्या सर्वांनीं पांचालांच्या सेनेवर शर, तोमर व नाराच वाण यांची पर्जन्यधारेप्रमाणें वृष्टि केली. तेव्हां त्या योद्ध्यांनीं शत्रूंचा विध्वंस करण्याकरितां पायांच्या टांचा, अंगठे व अंकुश ह्यांनीं प्रेरणा देऊन जे हत्ती पांचालसेन्यावर घातले त्यांजवर धृष्टद्युम्नानें नाराच वाण टाकून त्यांस आच्छादून काढिले. त्यांने त्या पर्वतप्राय अशा हत्तींना कोणाला दहा, कोणाला सहा व कोणाला आठ असे निशित वाण मारून त्या सर्वांस अगदीं विद्ध केलें, तरी अस्ताव्यस्त न होतां, त्यांनीं धृष्टद्युम्नाच्या भोंवतालीं जो वेढा दिला होता, तो तसाच राखिला. तेव्हां, ज्याप्रमाणें मूर्यास मेवांनीं झांकून काढावें, त्याप्रमाणें धृष्टद्युम्नास त्या हत्तींनीं झांकून काढिलें होतें. ह्यास्तव, धार दिलेलीं जलाल शस्त्रें हातांत घेऊन पांडववीर व पंचालवीर धृष्टद्युम्नास साह्य करण्याच्या हेतूनें गर्जेना करित त्या हत्तींच्या समुदायावर चाल करून गेले. नंतर त्यांनीं त्या हत्तींवर शस्त्रा-स्त्रांचा एकसारखा भडिमार सुरू केला आणि रणवाद्यें व प्रत्येचेचे टणत्कार ह्यांच्या तालावर ते वीर नृत्य करूं लागले ! ह्याप्रमाणें उभयपक्षांची अगदीं लगट उडाली असतां नकुल, सहदेव, द्रौपदीपुत्र, प्रभद्रक, सात्यकि, शिखंडी व वीर्यवान् चकितान ह्यांनीं. मन जम पर्वतावर जलवृष्टि करितात, तशीं भोंवतालून त्या कौरवसेन्यावर शरवृष्टि केली. इकडे स्लेच्छांनीं धृष्टद्युम्नावर सोडिलेले हत्ती चवताळून गेले व त्यांनीं आपल्या मांडांनीं मनुष्यें, रथ व हत्ती

ह्यांस ओढून घेऊन पायांखालीं तुडवून ठार मारिलें; त्याप्रमाणेच त्यांनीं कित्येकांना दांत भोंसकून वधिलें आणि कित्येकांना सोंडांनी वर उचलून आपटून मारिलें; त्यांनीं कित्येकांना दांत भोंसकले तेव्हां ते त्या दातांबरोबर वर उचलले गेले; व मग वरून खाली पडले तेव्हां प्रेक्षकांचीं हृदये फाटली !

ह्याप्रमाणें त्या हत्तींनीं अनर्थ चालविला असतां सात्यकीनें अग्रभागी वंगराजाचा हत्ती अवलोकन करून त्यावर उग्रवेगांनं नाराच बाण टाकिला; आणि त्याचीं मर्मस्थळें भेदन करून त्यास खाली पाडिलें. राजा, सात्यकीनें जो हा बाण त्या हत्तीवर टाकिला, तो त्या वंगराजावरच बसला असता, पण त्यानें तो चुकविला; परंतु त्याचा हत्ती रणांगणांत पडतां पडतां वंगराजा त्या हत्तीवरून उडी टाकूं लागला, तेव्हां सात्यकीनें त्याच्या वक्षस्थळीं नाराच बाण मारिला व त्यासरसा तो वंगराजाही भूमीवर पतन पावला ! इकडे पुंड्राजा धृष्टद्युम्नावर चाल करून येत असतां त्याचा तो महान् हत्ती पाहून तो जणू काय चालणारा पर्वतच आहे, असा भास झाला. सहदेवानें त्या हत्तीवर तीन नाराच बाण नेम धरून मारिले आणि त्याच्यावरील पताका, ध्वज, महात व कवच ह्या सर्वांचा विध्वंस करून त्यानें त्या हत्तीस वधिलें, आणि नंतर तो अंगाधिपतीवर धावून आला. ह्या समयी नकुलानें सहदेवाला थांबवून धरिलें व आपण स्वतः यमदंडाप्रमाणें प्रखर असे तीन नाराच बाण अंगाधिपतीवर व शंभर बाण त्याच्या हत्तीवर टाकिले. नंतर तेथें अंगाधिपति व नकुल ह्यांचा भयंकर संग्राम सुरू झाला. अंगाधिपतीनें सूर्यकिरणंप्रमाणें प्रज्वलित अशीं आठशें तोमरें नकुलावर टाकिलीं; परंतु नकुलानें प्रत्येकाचीं तीन तीन खंडे करून त्या

सर्वांचा विध्वंस उडविला ! नंतर पंडुपुत्रानें त्या स्लेंचछ अंगाधिपतीचे शिर अर्धचंद्र बाणानें उडविलें आणि तो आपल्या हत्तीसहवर्तमान रणांगणांत मरून पडला ! ह्याप्रमाणें गजयुद्धांत निपुण असा तो तरुण अंगाधिपति रणभूमीवर पतन पावला. तेव्हां ताबडतोब सर्व अंगदेशीय गजयोद्धे आपआपल्या हत्तींवर बसून नकुलावर चाल करून आले. त्या समयी त्यांच्या त्या हत्तींवर पताका फडकत असून त्या हत्तींच्या गुंडा मुंदर दिसत होत्या; आणि तशाच त्यांच्या त्या हत्तीवर भरजरी झुली व झालरी असून ते हत्ती प्रदीप्त पर्वताप्रमाणें देदीप्यमान् दिसत होते. राजा, अंगदेशीय योद्ध्यांनीं नकुलावर चाल करितांच मेकल, उत्कल, कालिंगा, निषध व ताम्रलिप्तक ह्या देशच्या वीरांनींही तेंच केलें. त्या सर्व वीरांनीं नकुलाचा प्राण घेण्याच्या उद्देशानें त्याजवर शर व तोमर ह्यांची वृष्टि चालविली; आणि दिवाकरास ज्याप्रमाणें भेषसमुदाय झांकून टाकितो, त्याप्रमाणें त्यांनीं नकुलास झांकून टाकिलें. तेव्हां पांडव सैन्याची फारच लगबग उडाली; आणि पांडव, पांचाल व सोमक हे तत्काळ नकुलाच्या साहाय्याकरितां त्याच्या समीप प्राप्त झाले. मग तेथें रथी व गजयोद्धे ह्यांचें घोर युद्ध प्रवर्तलें. रथ्यांनीं सहस्रावधि बाण व तोमरें हत्तींवर सोडून हत्तीची गंडस्थळें, विविध मर्मस्थानें, दंत व अलंकार हे छिन्नभिन्न करून टाकिले. त्यांपैकीं आठ महान् हत्तींवर सहदेवानें चौसष्ट अत्यंत प्रखर बाण टाकिले; आणि त्यांस तत्काळ त्यांवरील योद्ध्यांसुद्धां रणभूमीवर पाडिलें ! त्याप्रमाणेंच दुसऱ्या पुष्कळ हत्तींवर कुलदीपक नकुलानें उत्कृष्ट धनुष्याच्या साहाय्यानें सरळ गतीनें चालणारे नाराच बाण नेम धरून मारिले व त्यांचा संहार उडविला. नंतर पांचाल, शैनेय, द्रौपदेय, प्रभद्रक व शिखंडी

ह्यांनीं शत्रूकडील महान् महान् हत्तींवर अशी शरवृष्टि केली कीं, ते द्विरदरूप पर्वत पांडुवीररूप अंबुधरांच्या बाणरूप जलधारांनीं विदीर्ण होऊन जणू काय वज्रप्रहारांनींच फुटून जात आहेत, असें भाभूं लागले ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें तुझ्या पक्षाकडील महान् महान् हत्तींचा पांडवांकडील महान् महान् रथ्यांनीं नाश केला, तेव्हां नदीचें तीर विदीर्ण झालें असतां ज्याप्रमाणें तींतील उदक सैरावैरा धावूं लागतें. त्याप्रमाणें तुझें सैन्य सैरावैरा धावूं लागलें. राजा, ह्याप्रमाणें तुझें सैन्य बेहोष होऊन पळूं लागलें तेव्हां पांडवांच्या सैन्यानें त्याची अगदींच दाणादाण करून सोडिली व पुनः ते वीर कर्णावर चाल करून गेले.

अध्याय तेविसावा.

—:—

सहदेव व दुःशासन ह्यांचें युद्ध.

मंजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, सहदेव हा पूर्वी सांगितल्याप्रमाणें अत्यंत क्रीडायमान होऊन शरवृष्टीनें तुझें सैन्य जाळूं लागला असतां त्यावर दुःशासन धावून गेला व मग त्या दोघां भ्रात्यांचें घोर युद्ध चालू झालें; तेव्हां तें पाहून महारथ्यांनीं सिंहनाद केला व ते आपली वस्त्रे फडकावूं लागले. राजा, त्या समयीं तुझ्या पुत्रानें क्रीधानें धनुष्य धारण करून त्या महाबलवान् सहदेवाच्या वक्षस्थळावर तीन बाण मारिले. नंतर सहदेवानें तुझ्या पुत्रावर नाराच बाण टाकून त्यास विद्ध केलें व लागलेच आणखी सत्तर बाण त्याजवर व तीन बाण त्याच्या सारख्यावर सोडिले. तेव्हां दुःशामनानें त्या घोर रणांत सहदेवाचें धनुष्य छेदिलें आणि सहदेवाच्या बाहूवर व उरावर व्याहात्तर बाण मारिले. नंतर सहदेव चवताळला व त्यानें त्या भयंकर युद्धांत खड्ग धारण करून तें जोरांनें वेग देऊन ताबडतोब

तुझ्या पुत्राच्या रथावर फेंकिलें. तेव्हां त्या खड्गानें दुःशामनानें चाप, प्रस्थंका व बाण हीं तुटली; व मग आकाशांतून सर्प जसा खाली पडला तसें तें खाली भूमीवर पडलें. ह्याप्रमाणें दुःशामनाच्या धनुष्याची वाट लाविल्यानंतर सहदेवानें पुनः दुसरें धनुष्य धारण केलें; आणि त्या प्रतापशील वीरानें प्राणान्त करणारा बाण दुःशामनावर सोडिला. तेव्हां तो यमदंडतुल्य जलाल बाण आपणावर येत आहे असें अवलोकन करून तुझ्या पुत्रानें त्याजवर पाजविलेलें खड्ग हाणून त्याचे दोन तुकडे केले, व तें खड्ग मोठ्या त्वरेनें सहदेवावर फेंकून त्या बलिष्ठ वीरानें दुसरें धनुष्य व बाण हातीं घेतला. इकडे दुःशामनानें तें खड्ग आपणावर येत आहे असें पाहून सहदेवानें त्याजवर एकदम निशित बाण टाकिले व सहज हंसत हंसत त्याचा विध्वंस उडविला ! नंतर, राजा, त्या घोर संभ्रामांत तुझ्या पुत्रानें चौसष्ट बाण ताबडतोब सहदेवाच्या रथावर फेंकिले; परंतु ते वेगानें येत असतां त्यांतील प्रत्येकावर पांच पांच बाण टाकून सहदेवानें त्या सर्वांचा निकाल उडविला. ह्याप्रमाणें तुझ्या पुत्राच्या त्या भयंकर बाणांचें निवारण केल्या-नंतर सहदेवानें तुझ्या पुत्रावर पुष्कळ बाण सोडिले; परंतु त्यांतील प्रत्येकावर तीन तीन बाण सोडून तुझ्या पुत्रानें त्या सर्वांचा विध्वंस केला व पृथ्वीलाही भेदन करून जाईल अशी मोठी प्रचंड गर्जना ठोकली ! नंतर दुःशामनानें त्या रणांत पांडुसुताला विद्ध करून त्याच्या सारख्यावर नऊ बाण सोडिले. तेव्हां, हे राजा, तो प्रतापशाली सहदेव पुनः संतापला व त्यानें मृत्युकालांतकाप्रमाणें घोर असा शर महान् धनुष्याला लावून तें धनुष्य ओढिलें आणि तुझ्या पुत्रावर तो सोडिला ! राजा, त्या समयीं तो शर तुझ्या पुत्राच्या बळकट कवचाचें विदारण करून त्याच्या शरीरांत घुसला; व तो

त्यांतून बाहेर पडून, पन्नग जसा वारळांत प्रविष्ट होतो, तसा भूगर्भांत प्रविष्ट झाला ! राजा, त्या वेळीं तुझा तो महारथ पुत्र मूर्छित पडला ! आणि त्याची ती अवस्था अवलोकन करून त्याचा सारथि घाबरून गेला व त्याने आपणावर शत्रूकडील जलाल बाणांची वृष्टि होत असतांही दुःशासनाचा तो रथ एकीकडे नेला ! राजा, ह्याप्रमाणें पांडुनेदन सहदेवानें तुझ्या पुत्राचा पराजय केला, व नंतर त्याची व दुर्योधनाच्या सैन्याची गांठ पडून मग त्यानें दुर्योधनाच्या सैन्याची अगदीं दाणादाण उडविली ! सारांश, राजा, ज्याप्रमाणें मनुष्यानें क्रोधायमान होऊन मुंग्यांच्या समुदायाचें निर्दलन करावें, त्याप्रमाणें त्या सहदेवानें कौरवीसेनेचें निर्दलन केलें !

अध्याय चोविसावा.

—:०:—

कर्णयुद्ध.

नकुलाचा पराभव.

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, दोन्ही दळांचें समरांगणांत निकराचें युद्ध होऊन पांडुपुत्र नकुल हा मोठ्या आवेशानें कौरवांच्या सैन्याची दाणादाण करित असतां कर्णानें क्रोधायमान होऊन त्याला प्रतिबंध केला. तेव्हां नकुल हंसत हंसत कर्णास म्हणाला, “ कर्णा, बहुत काळानंतर देवतांच्या कृपेनें मी तुझ्या दृष्टीस पडलों, ही मोठी उत्तम गोष्ट होय; हा मी तुझ्यासमोर युद्धार्थ सिद्ध आहे. पहा, अधमा, ह्या सर्व अनर्थांचें आणि मूळ वैराचें व कलहाचें कारण तूंच होय. बाबा, तुझ्या अपराधामुळेच आपसांत युद्ध लागून कौरवपांडवांचा हा आज भयंकर संहार चालला आहे. ह्याकरितां आज

मी तुला रणभूमीवर वधून कृतकृत्य होतो आणि कलहाचें बीज नाहीसें करितो ! ”

राजा धृतराष्ट्रा, नकुलाचें हें भाषण श्रवण करून सूतपुत्र कर्णानें नकुलास उत्तर दिलें, “ नकुला, राजपुत्रास उचित असेंच तुझे हें भाषण आहे; आणि शिवाय तुझ्यासारख्या धनुर्धराला हें अधिकच शोभत आहे ! बा वीरा, तूं आतां मजवर प्रहार कर. तुझा पराक्रम पहावा, अशीच माझी इच्छा आहे. शूरा, रणभूमीवर आधीं पराक्रम गाजव आणि मग त्याची बढाई मार ! बाळा, बडबड करून न दाखवितां शूर पुरुष युद्धांत पराक्रम करितात; ह्यास्तव तुझ्या अंगीं जें कांहीं सामर्थ्य असेल, त्या सर्व सामर्थ्यानें तूं माझ्याशीं युद्ध कर; मी आज तुझा दर्प उतरून टाकितो ! ”

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें भाषण करून कर्णानें तत्काळ नकुलावर बाणांचा भडिमार आरंभिला आणि त्यास व्याहात्तर बाणांनीं विद्ध केलें. तेव्हां तत्काळ नकुळानें सर्पाच्या विषाप्रमाणें जलाल असे ऐशीं बाण कर्णावर सोडिले; तें पाहून महाधनुर्धर कर्णानें नकुलाचें धनुष्य छेदून टाकिलें; आणि सहाणेवर धार लावून तयार केलेले तीस स्वर्णपुख बाण सोडून त्यास जर्जर केलें. तेव्हां ते बाण नकुलाचें कवच भेदून आंत घुसले; व सर्प ज्याप्रमाणें भूमीचें भेदन करून भूगर्भातील उदक पितात, त्याप्रमाणें नकुलाच्या देहाचें भेदन करून त्यांतील रुधिर प्याले ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कर्णानें नकुलाची अवस्था करून टाकिली असतां नकुलानें दुसरें महाप्रचंड हेमघृष्ट धनुष्य धारण केलें आणि कर्णावर सत्तर व त्याच्या सारख्यावर तीन असे एकंदर व्याहात्तर बाण टाकिले; आणि क्रोधायमान होऊन प्रखर अशा क्षुरप्र बाणांनीं कर्णाचें धनुष्य तोडून त्या छिन्नधन्या कर्णावर तीनशें बाण टाकिले व सर्व

जगांत विख्यात अशा त्या महारथाला (कर्णाला) त्या वीर नकुलानें हंसत हंमत जर्जर करून सोडिलें ! आणि, राजा, अशा प्रकारें पांडु-पुत्रानें कर्णाची दुर्दशा केलेली पाहून समरांगणांतील सर्व रथ्यांना व अंतरिक्षांतील सर्व देवतांना मोठा विस्मय वाटला !

नंतर कर्णानें दुसरें धनुष्य धारण करून नकुलच्या खवाट्यांत पांच बाण मारिले; व ते त्या स्थळीं रतून राहिले असतां स्वकिरणांनीं भुवनांत प्रभा पसरणाऱ्या सूर्याप्रमाणें तो शोभूं लागला. तेव्हां नकुलानें कर्णावर सात बाण टाकिले आणि पुनः त्याच्या धनुष्याची टोंकें छेदिली. त्या वेळीं कर्णानें दुसरें अधिक वेगवान् असें धनुष्य घेतलें आणि नकुलच्या भोंवतालीं सर्व दिशांस बाणांनीं आच्छादित केले. ह्याप्रमाणें कर्णानें बाणांचा भडिमार चालवून नकुलाला एकदम झांकून काढिलें असतां, त्या महारथ पांडुपुत्रानें तत्काळ आपल्या बाणांनींच ते सर्व बाण तोडून टाकिले. राजा, नंतर आकाशांत सर्वत्र बाणांचें जाळें पसरून जणू काय काजव्याचें समुदाय चोहोंकडे पसरत आहेत असें भासलें. ह्याप्रमाणें जिकडे तिकडे बाणच बाण होऊन अंतरिक्ष आच्छादून गेलें असतां, टोळधाड आली असतां जसा अंधार पडतो, तसा सर्वत्र अंधार पडला. राजा, मुवर्णानें मदविलेले ते बाण एकसारखे सुटूं लागले तेव्हां जणू काय आकाशांत कौचपक्ष्यांच्या रांगा उडत आहेत, असें वाटूं लागलें. अशा प्रकारें सर्व अंतरिक्ष बाणजालानें व्याप्त होऊन सूर्यविंब अदृश्य झालें असतां प्रकाश, किरण किंवा कोणताही स्थूल-सूक्ष्म जीव वगैरे कांहीएक आकाशांतून भूमीवर उतरत नाहीसे झालें. ह्याप्रमाणें उभय वीरांच्या शरसंघांनीं आकाश व्याप्त होऊन मार्ग निरुद्ध झाला असतां ते महात्मे कर्ण व नकुल हे प्रलयकालीन सूर्याप्रमाणें दिसूं लागले !

राजा, त्या समयीं कर्णाच्या बाणांनीं सोमकांचा फार नाश होऊं लागला व ते अत्यंत आर्त होऊन पटापट धरणीवर मरून पडूं लागले; आणि नकुलच्या बाणांनीं तुझ्या सैन्याची तीच अवस्था होऊं लागून, वाच्यानें उधळून दिलेल्या मेघांप्रमाणें त्याचा विध्वंस उडाला ! राजा धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारें त्या दिव्य शरवृष्टीनें उभय दळांत भयंकर संहार होऊं लागला ! राजा, तेव्हां त्यांतील सैनिक आपल्या प्राणांच्या बाणाकरितां शरवृष्टि चुकवून युद्धचमत्कार पहात एकीकडे उभे राहिले. ह्या प्रकारें कर्णनकुलांनीं आपल्या बाणांनीं समरभूमीतील वीर पळवून लाविल्यानंतर ते महात्मे एकमेकांवर बाणवर्षाव करूं लागले. त्या वेळीं त्यांनीं समरांगणांत नानाविध दिव्य अस्त्रांचा प्रभाव प्रदर्शित केला; व परस्परांना ठार मारण्याच्या इच्छेनें त्यांनीं परस्परांस बाणवृष्टीनें आच्छादिलें. तेव्हां नकुलानें कंकपुंख व बर्हिपुंख बाणांनीं सूतपुत्राला विद्ध करून अंतरिक्ष व्याप्त केले आणि कर्णानेही आपल्या जलाल बाणांनीं नकुलास आच्छादून अंतरिक्ष भरून काढिलें. राजा, त्या समयीं ते दोघे वीर जणू काय शरगृहांत प्रविष्ट होत्साते मेघाच्छादित सूर्यचंद्रांप्रमाणें कोणालाही दिसत नाहीतसे झाले !

राजा धृतराष्ट्रा, अशी स्थिति प्राप्त झाली असतां कर्णाला अतिशय संताप आला व त्यानें मोठ्या त्वेषानें नकुलावर बाणांचा भडिमार करून त्यास चोहोंकडून आच्छादून टाकिलें; परंतु, राजा, मेघांनीं सूर्यास आच्छादित केले तरी त्यांपासून जशी सूर्यास व्यथा होत नाही, तशी नकुलाला कर्णानें बाणवृष्टीनें आच्छादित केले तरी त्या बाणांपासून त्याला मुळींच व्यथा झाली नाही. तेव्हां तें पाहून अधिरथपुत्र कर्ण ह्यास मोठें कौतुक वाटलें आणि त्यानें समरांगणांत चोहोंकडून शतावधि व सहस्रावधि शरसमुदाय नकुलावर फेंकून आपल्या त्या दिव्य बाणांनीं

मेघमंडळाप्रमाणें सर्व आकाश व्याप्त करून टाकिलें. नंतर कर्णानें महात्म्या नकुलाचें धनुष्य छेदिलें आणि हंसत हंसत त्याच्या मारण्या-ला स्थानभ्रष्ट करून खाली पाडिलें. मग कर्णानें धार लाविलेले चार बाण टाकून नकुलाच्या रथाचे चारही अश्व मारिले आणि बाणांचा खूप सपाटा चालवून त्याच्या त्या दिव्य रथाचे, पताकेचे, चक्ररक्षकांचे, गदेचे, खड्गाचे, शतचंद्र कवचाचे व इतर सर्व उपकरणांचे तिलप्रायखंड केले ! राजा, अशा प्रकारें नकुल हा हताश्व, विरथ व विगतकवच झाला तेव्हां तो ताबडतोब परिघ धारण करून युद्धार्थ रणभूमीवर उभा राहिला. नंतर कर्णानें नकुलावर सुतीक्ष्ण व बळकट बाणांची वृष्टि सुरू केली, पण नकुल हा आयुधहीन (धनुष्यहीन) ओह, हें मनांत आणून कर्णानें आपले पुष्कळ बांकदार बाण नकुलावर टाकले तरी त्यांपासून नकुलाम फारशी व्यथा होणार नाही, अशी दक्षता ठेविली. राजा, ह्याप्रमाणें शस्त्रास्त्रनिपुण व महाबलवान् कर्ण नकुलास मारण्यास उद्युक्त झाला असतां, नकुल हा व्याकूळ होऊन एका-एकी मागे सरला; परंतु इतक्यांत राधापुत्र कर्ण हंसत हंसत त्याचा पाठलाग करीत गेला व त्यानें हातांत सज्ज असलेलें आपलें धनुष्य नकुलाच्या कंठावर जोरानें फेंकिलें. राजा, त्या समयी अंतरिक्षांत खळें पडलेला चंद्र किंवा इंद्रधनुष्यानें परिवेष्टित असलेला शुभ्र मेघ जसा शोभतो, तसा महाधनुष्यानें कंठदेशी आसक्त असलेला तो नकुल शोभूं लागला ! तेव्हां कर्ण नकुलास म्हणाला, “ नकुल, व्यर्थ की रे बडबड केलीस ! आतां माझ्या हातून पुनःपुनः प्रहार सोशीत मृत्युमुखांत पडत असतां फिरून पहिल्याप्रमाणें खुर्षांत येऊन तसल्या वलगना कर पाहूं ! बा पांडवा, कौरव मोठे बलिष्ठ आहेत ! ह्यास्तव त्यांच्याबरोबर युद्ध करण्याचें सोडून दे !

बाळा, आपल्या बरोबरीचे योद्धे पाहून त्यांच्या-शींच त्वां युद्ध करावें हें चांगलें ! जा, आतां खेद करूं नको ! तूं आपल्या घराची वाट धर किंवा जेथें कृष्णार्जुन असतील तेथें जाऊन त्यांचा आश्रय कर ! ” राजा धृतराष्ट्रा, असे उद्गार काढून कर्णानें नकुलास तेथेंच सोडिलें. त्यानें त्या समयी नकुलास ठारच मारिलें असतें; पण त्या शूरास धर्मेतत्त्व पूर्ण विदित असून शिवाय कुंतीचें वचनही आठवत होतें; ह्यास्तव नकुलाचा प्राण न घेतां त्यानें त्यास जाऊं दिलें !

असो; ह्याप्रमाणें कर्णापासून सुटका झाल्या-नंतर नकुल हा अत्यंत लज्जित होऊन युधिष्ठिराच्या रथाकडे चालता झाला. युधिष्ठिराच्या समीप प्राप्त झाल्यावर तो त्याच्या रथावर चढला, व कुंभांत अडकलेल्या सर्पाप्रमाणें दुःखसंतप्त होऊन मुस्कारे टाकीत तडफडूं लागला !

राजा धृतराष्ट्रा, ह्या प्रकारें नकुलाचा पराभव केल्यानंतर कर्ण हा लागलाच पांचालावर चाल करून गेला. त्या समयी त्याच्या रथावर अनेक पताका फडकत असून रथाला जोडिलेले अश्व चंद्राप्रमाणें शुभ्र होते. राजा, कौरवसेनेचा अधिपति आपणावर चाल करून येत आहे असें जेव्हां पांचालांच्या रथसमुदायांनीं अवलोकन केलें, तेव्हां पांडवांच्या सैन्यांत एकच कलहोळ उडाला ! नंतर त्या बलिष्ठ सूतनंदानें मध्याह्नाच्या समयास चक्राप्रमाणें संचार करीत करीत पांडवांच्या सैन्यांत फारच संहार उडविला. त्या युद्धांत पांचालांच्या रथसमुदायांचा फारच नाश झाला; कित्येकांच्या रथांची चक्रे छिन्नभिन्न होऊन त्यांवरील ध्वजपताकांचा चुराडा उडाला, कित्येकांचे सारथि मेले, कित्येकांचे रथ अश्वहीन झाले व कित्येक रथांचे अक्ष तुटले. ह्याप्रमाणें दुर्दशा झाली असतां ते पंचालवीर आपल्या त्या मोडक्या-तोडक्या रथांतून रणभूमीवरून पलायन करीत

आहेत असें आढळलें. त्या वेळीं जिकडे तिकडे एकच लगबग उडाली. महान् वणव्यांत सांपडलेल्या हत्तींचीं गात्रें दग्ध झालीं अमतां ते जसे सैरावैरा धावूं लागतात, तसे ते पांचालांचे हत्ती कर्णाच्या बाणाशीनें दग्ध होत्साते सैरावैरा धावूं लागले ! त्या युद्धांत कित्येक हत्तींचीं गंडस्थळें फुटलीं, गुंडा तुटल्या, गात्रें छिन्नभिन्न झालीं, पुच्छ लयास गेलीं, चिलखतें फाटलीं. आणि ते सर्व रुधिरानें न्हाणिलेले हत्ती महात्म्या कर्णाच्या बाणप्रहारानें मेघांप्रमाणें विस्कळीत होऊन धारातीर्थी पतन पावले ! राजा, त्या भयंकर युद्धांत कित्येक हत्ती नाराच बाण व तोमर ह्यांच्या योगें भयभीत होऊन कर्णावरच धावून गेले; पण शलभ अशींवर धावून गेले असतां त्यांची जी वाट लागते तीच वाट त्यांची लागली ! त्या समयीं कित्येक महान् हत्ती एकमेकांवर प्रहार करून आपसांत झगडूं लागले व त्यांचीं शरीरें छिन्नभिन्न होऊन त्यांतून रुधिराचे प्रवाह वाहूं लागले. तेव्हां जणू काय पर्वताच्या उदरांतून उदकाचेच प्रवाह वहात आहेत असा भास झाला !

राजा धृतराष्ट्र, त्या भयंकर संग्रामांत मोठ-मोठ्या अश्वंचीही अशीच दुर्दशा उडाली. कित्येक अश्वंची उरश्छेदें (उरावरील आवरणें) नाहींतशीं झालीं, शोपट्या तुटल्या, अंगावरचीं सोन्याचीं, रुप्याचीं व कांस्याचीं भूषणें आणि दुसरे अलंकार गळून पडले, लगामा तुटल्या, चामरें व खोगिरें नाहींतशीं झालीं, बाणभाते पतन पावले, आणि शूर व युद्धांत शोभणारे स्वार मृत्युमुखी पडून ते सर्वे अश्व व्याकूळ होऊन इतस्ततः धावूं लागले ! राजा, तशीच कित्येक घोडेस्वारांची जी दाणादाण झाली ती विचारूं नको ! त्यांच्या हातांतले प्रास, खड्ग व ऋष्टि नाहींतशा झाल्या; त्यांच्या अंगांत काय तीं चिलखतें अमून मस्तकांवर शिरन्वाणें

मात्र होती; आणि त्यांचे हस्तपादादिक अवयव छिन्नभिन्न झाले असून त्याच विपन्न स्थितीत ते इकडे तिकडे धावत-पळत होते ! धृतराष्ट्रा, पुष्कळ रथांचीही तशीच अवस्था झाली ! त्यांवर आरूढ असलेले रथी पतन पावल्यामुळें त्यांचे ते सुवर्णमंडित रथ त्यांस जोडलेले अश्व भडकल्यामुळें मोठ्या त्वरेनें धावत आहेत असें दिसलें. त्यांपैकी कित्येकांचे अश्व व तुंब तुटले असून चक्रे मोडलीं होती; आणि त्याप्रमाणेंच कित्येकांचे ध्वज व पताका नष्ट झाल्या असून ईषादंड (जोखड बांधण्याचा वासा) व कळस भंगले होते.

राजा धृतराष्ट्र, त्या घनघोर संग्रामांत मृतपुत्र कर्णाच्या भयंकर शरवृष्टीनें पुष्कळ रथी पतन पावले व पुष्कळ इतस्ततः पळत सुटले ! अनेक रथी विशस्त्र होऊन व अनेक सशस्त्रच असून रणांगणांत मरून पडले ! याप्रमाणेंच पुष्कळ हत्ती त्या रणभूमीवर सैरावैरा भ्रमण करितांना आढळले; त्यांच्या शरीरांवर तारकांची जाळी असून जागोजाग उत्कृष्ट घंटा बांधिल्या होत्या; तशाच त्यांजवर चित्रविचित्र वर्णांच्या पताका फडकत असून ते सर्व हत्ती चोहोंकडे पळत होते ! राजा, त्या युद्धांत कर्णाच्या चापापासून सुटलेल्या बाणांनीं तुटून पडलेले बाहु, मांड्या, मस्तकें व इतर अवयव हे जिकडे तिकडे दगोचर होत होते. राजा, त्या समयीं पांडवांकडील जे योद्धे कर्णाशी लढत होते, त्यांचा कर्णाच्या तीव्र बाणांनी घोर संहार झाला. तेव्हां रणांगणांत कर्णानें संजयांवर बाणांचा भडिमार करून त्यांस अगदी जर्जर केलें, तरी जिवावर उदार झालेले ते संजय कर्णावरच चालून गेले; व अखेरीस, टोळ जसे अश्वीत पडून भस्म होतात तशी त्यांची गति झाली ! राजा, त्या भयंकर रणांत कर्णानें चोहोंकडे पांडवांचें सैन्य जाळण्याचा असा

काहीं सपाटा चालविला की, जणू काय तो महाभयानक प्रलयकालीन अग्निच ओहे असे वाटून पांचालपैकी अवशिष्ट राहिलेल्या महारथ वीरांस त्या प्रबल योद्ध्यापासून पराङ्मुख होऊन पळून जावे लागले! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे पांडवसेनेनें पळ काढिला असतां कर्णाने पाठलाग करून त्या सेनेवर बाणांची दुर्धर वृष्टि केली आणि त्यांची कवचे व ध्वज विदीर्ण करून टाकून त्यांस अगदी 'ब्राहि भगवन्' करून सोडिले!

अध्याय पंचविंशत्वा.

—:०:—

युयुत्सूचा पराभव.

संजय सांगतो: राजा धृतराष्ट्रा, तुझ्या पुत्रांचे मोठे सैन्य युयुत्सू हा पळवून लावीत असतां त्याजवर तत्काळ उलूकाने हल्ला करून त्यास "थांब, थांब" असे म्हटले. तेव्हां युयुत्सूने धार दिलेल्या तीक्ष्ण बाणाने महाबल उलूकावर वज्रतुल्य प्रहार केला. त्या वेळी उलूक स्ववळला आणि त्याचे व युयुत्सू ह्यांचे तुंबळ युद्ध सुरू झाले. त्यांत उलूकाने तुझा पुत्र युयुत्सू ह्याचे धनुष्य अर्णाद्वार क्षुरप्र बाणाने तोडून त्याजवर बाणप्रहार केला. तेव्हां युयुत्सूने संतप्त होऊन क्रोधाने नेत्र लाल केले आणि ते छिन्न धनुष्य फेंकून देऊन अधिक वेगवान् असे दुमरे धनुष्य हातांत घेतले. नंतर त्याने उलूकावर साठ व सारथ्यावर तीन बाण टाकून पुनः उलूकावर आणखी बाणांचा भाडिमार चालविला. त्या समयी उलूकाने सुवर्णमंडित असे वीस बाण युयुत्सूवर सोडिले आणि क्रोधाग्रमान होऊन समरांगणांत त्याने युयुत्सूचा महान् कांचनध्वज युयुत्सूच्या समोर तोडून ग्वाली पाडिला!

१ धृतराष्ट्राचा दार्शपुत्र. हा पांडवांच्या पक्षास मिळाला होता

कण ५—

नंतर युयुत्सूचा क्रोध अनावर होऊन त्याने उलूकाच्या वक्षस्थळी पांच बाण अत्यंत त्वेपाने मारिले. तेव्हां रणांगणात उलूकाने तेल लावून पाजविलेला भट्ट बाण टाकून युयुत्सूच्या सारथ्याचे शिर उडविले; व ते आकाशांतून जशी उलूका खाली पडावी, तसे भूतलावर एकदम पडले! नंतर उलूकाने युयुत्सूच्या चारही अश्वंवर बाणप्रहार करून ते ठार केले आणि पुनः युयुत्सूवर पाच बाण टाकिले. तेव्हां युयुत्सू अतिशयितच विद्ध झाला व तो अखेरीस निरुपाय होऊन दुसऱ्या रथावर चढून एकीकडे सरला! ह्याप्रमाणे युयुत्सूचा पराभव करून उलूक हा पांचाल व मंजय ह्यांजवर चालून गेला व त्याने त्यांजवर निशित बाणांची वृष्टि केली.

राजा धृतराष्ट्रा, तुझा पुत्र श्रुतकर्मा ह्याने मोठ्या शौर्याने शतानीकार हल्ला करून अर्ध्या निमेषांत त्याचे अश्व व सारथि ह्यांस ठार मारिले. तेव्हां त्या महारथ शतानीकाने अश्वहीन रथावर उभे राहून मोठ्या क्रोधाने तुझ्या पुत्रावर अशी गदा झुगारिली की, ती त्याच्या रथाचे, अश्वांचे व सारथ्याचे नूर्ण करून तांबड-तोब खाली पडली व धरणीतले हादरून जाऊन जणू काय विदीर्णच आले! नंतर, कुरुकुलाची कीर्ति वाढविणारे असे ते दोघेही विरथ झालेले वीर एकमेकांकडे टोकारून पहात पहात युद्धापासून परावृत्त झाले. राजा, तुझ्या पुत्राची गाळण उडून तो विविशूच्या रथावर चढला आणि शतानीकानेही त्वरा करून प्रतिविंश्याच्या रथावर आरोहण केले.

सुतसोम व सौबल ह्यांचे युद्ध.

राजा, नंतर सुतसोम व शकुनि ह्यांचे युद्ध सुरू झाले. शकुनीने क्रोधाने निशित बाण टाकून सुतसोमास विद्ध केले; परंतु पर्जन्य-वाष्टि कितीही आग्नी अमतां पर्वत जमा कंप

पावत नाही, तमा तो पराक्रमी सुतसोम सौबलाच्या बाणवृष्टीने मुळांच कंप पावला नाही. राजा, नंतर सुतसोमाने आपल्या पित्याचा अत्यंत वैरी जो शकुनि त्याजवर अनेक सहस्र बाण टाकून त्यास झांकून काढिले; परंतु शकुनीने आपल्या बाणांचा उलट भडिमार चालवून ते सर्व बाण तत्काळ छेदिले. ह्याप्रमाणे विचित्र युद्ध करून शत्रूच्या सर्व बाणांचा समरांगणांत निःपात उडविल्यानंतर अस्त्रविशारद सौबलाने क्रोधाग्रमान होऊन सुतसोमाम तीन बाणांनीं विंधिले; आणि त्याचे अश्व, ध्वज व सारथि ह्यांजवर बाणांचा वर्षाव करून त्याचे तिलतुल्य तुकडे उडविले. राजा, त्या समयी सुतसोमाची ती विपत्तावस्थ्या अवलोकन करून प्रेक्षकजनांत मोठा हाहाकार झाला व सर्वजण आक्रोश करू लागले !

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर हताश्व, विरथ व छिन्नध्वज असा तो धनुर्धर सुतसोम श्रेष्ठ धनुष्य धारण करून रथांतून खाली उतरला, व भूमीवर उभा राहून स्पर्णपुंख निशित बाणांचा भडिमार करून त्यानें तुड्या इयालकाना रथ आच्छादून टाकिला. राजा, त्या वेळी सौबलाच्या रथावर टोळधाडीप्रमाणे जरी बाणांचे ओष येत होते, तरी त्यांच्या योगे त्या महारथाच्या चित्ताला अनुमात्र व्यथा उत्पन्न झाली नाही. त्यानें तत्काळ उलट शरवृष्टि सुरू केली आणि सुतसोमाच्या सर्व बाणांचे वृर्ण करून टाकिले. राजा, त्या समयी त्या दोन्ही शर वारांचे ते अनुपम युद्धसामर्थ्य अवलोकन करून तेथे असलेले योद्धे व अंतरिक्षांत जमलेले सिद्ध ह्यांस अतिशयित आनंद वाटला, आणि रथांत अधिष्ठित असलेल्या शकुनीशी पादचारी सुतसोम इतक्या उत्कृष्टरीतीने लढत असून अश्रद्धेय व अद्भुत पराक्रम दाखवीत आहे असे पाहून त्यांनी त्याचे धन्यवाद मागले !

नंतर शकुनीने बांकदारपेयांचे, महावेगवान् व तीक्ष्ण असे अनेक बाण सोडून सुतसोमाचे धनुष्य छेदिले व त्याच्या सर्व बाणभात्यांचा विध्वंस उडविला. ह्याप्रमाणे धनुष्यहीन झाल्यावर सुतसोम हातांत खड्ग घेऊन युद्ध करू लागला. राजा, वेदूर्यरत्नाप्रमाणे देदीप्यमान. हस्तिदंताची मूठ असलेले, व निर्मल आकाशाप्रमाणे नील कांति धारण करणारे असे ते खड्ग युद्धपटु सुतसोम हा गर्जना करीत फिरवू लागला तेव्हां जणू काय तो काल्दंडच आहे, असे सौबलास वाटले ! राजा, ते दिव्य खड्ग फिरवीत सुतसोमाने मोठ्या आवेशाने चौदाही मंडले हजारे वेळां केली. राजा, ह्या युद्धधुरंधर बलवान् वीराने भ्रांत, उद्ध्रांत, आविद्ध, आप्लुत, विप्लुत, सूत, संपात, समुदीर्ण इत्यादि सर्व मंडले रणांगणांत अनेक वेळां करून दाखविली. नंतर पराक्रमी सौबलाने सुतसोमावर पुनः बाणांचा भडिमार सुरू केला. पण ते सर्व बाण आपणावर पडले नाहीत तोंच सुतसोमाने आपल्या खड्गाने त्यांचे तत्काळ तुकडे उडविले !

धृतराष्ट्रा, नंतर शत्रुसंहारक सौबल अतिशयच क्रुद्ध झाला; आणि त्यानें सर्पाच्या विषाप्रमाणे जलाल शर सुतसोमावर टाकिले. परंतु त्या युद्धविद्याविशारद महाबलिष्ठ सुतसोमाने आपल्या खड्गाने त्यांचाही फडशा उडविला. तेव्हा त्याचे ते गरुडतुल्य युद्धलाघव अवलोकन करून सर्वांस विस्मय वाटला ! राजा, पुढे तो सुतसोम अनुलोम-विलोम मंडलाकार परिभ्रमण करीत असतां, सौबलाने त्याचे ते देदीप्यमान खड्ग सुतीक्ष्ण क्षुरप्र बाणाने तोडिले. तेव्हां त्या महान् खड्गाना तुटलेला भाग एकदम खाली पडला व मुठीकडील अर्धा भाग

१ ह्याचे स्पष्टीकरण द्रोणपर्व अध्याय १९१ यातील भ्रांत या शब्दावरील टीपेत केले आहे ते पहा.

मात्र सुतसोमाच्या हातांत उरला. परंतु आपलें खड्ग तुटलें असें तत्काल सुतसोमाच्या ध्यानांत आले व त्यानें सहा पावले मागे सरून हातांत उरोलेलें खंड सौबलावर मोठ्या जोरांनें झुगारिलें. तेव्हां तें स्वर्णवज्रविभूषित खड्ग, सौबलाचें धनुष्य व प्रत्यंचा ह्यांस तोडून तत्काळ भूतलावर पतन पावले !

राजा, नंतर सुतसोम हा धृतकीर्तीच्या महान् रथावर चढला; आणि सौबलही दुसरे घोर धनुष्य धारण करून पांडवसैन्यावर धावून जाऊन भयंकर संहार उडवू लागला. तेव्हां पांडवांच्या सैन्यांत एकच गहजब झाला आणि त्या प्रबळ, सशस्त्र व दृढ (गर्वाने चढून गेलेल्या) सैन्याचा महात्म्या सौबलापुढे टिकाव न लागतां अवेरीस तें प्रावरून पळत सुटले आणि देवराज इंद्रांनें जसें दैत्य सैन्य मर्दून टाकिलें, तसें त्या सौबलानें पांडवीय सैन्य मर्दून टाकिलें !

अध्याय साव्विसावा.

—:०:—

धृष्टद्युम्नाचा पराजय !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, वनांत सिंहाला अवलोकन करितांच शरभ जसें त्याचें निवारण करितो; तसें कृपाचार्यानें युद्धांत धृष्टद्युम्नाचें निवारण केलें. त्या बलिष्ठ गौतमानें पार्षतास (धृष्टद्युम्नास) असें खिळून टाकिलें कीं, त्यास एक पाऊलभरही सरतां येईना. कृपाचार्याचा रथ धृष्टद्युम्नाच्या रथावर तुटून पडलेला अवलोकन करून अखिल प्राण्यांस भीति उत्पन्न झाली; आणि त्या सर्वांनीं, आतां धृष्टद्युम्नाचा खचित नाश होतो, असें मानिलें. त्या वेळीं रथी व घोडेस्वार हे अगदीं निराश होऊन म्हणाले, “ अहो, धृष्टद्युम्नानें द्रोणाचार्याचा वध केला, त्यामुळेच निःसंशय हा

नरश्रेष्ठ कृपाचार्य खबळला आहे ! आतां ह्या रणधुरंधर महादेदीप्यमान, दिव्यास्त्रविद महात्म्या शारद्वतापुढे ह्या धृष्टद्युम्नाचा काय निभाव लागणार ! अहो, अशा ह्या दुर्धर प्रसंगीं गौतमापामून धृष्टद्युम्न बचावेल काय ? अहो, ही सर्व सेना ह्या घोर संकटांतून पार पडेल काय ? ह्या ब्राह्मणाच्या तडाक्यांतून येथें प्राप्त झालेले आम्ही सर्व योद्धे जिवंत सुटूं काय ? अहो, ह्या ब्राह्मणांनें हें जें अंतकाप्रमाणें उग्र स्वरूप धारण केलें आहे, त्यावरून पहातां आज हा द्रोणाचार्याप्रमाणें शौर्य गाजविणार ह्यांत संदेह नाही ! पहा, कृपाचार्य हा युद्धकलेंत मोठा निपुण व नेमकेच बाण टाकून शत्रूस हां हां म्हणतां रणांत पाडणारा आहे; ह्या शस्त्रास्त्रविद महापराक्रमी योद्ध्याला सदा-सर्वकाळ विजय प्राप्त होतो; आणि असा हा वीर्यशाली वीर अत्यंत क्रोधाग्रमान होऊन धृष्टद्युम्नाशीं युद्ध करीत असून धृष्टद्युम्न तर आज ह्या भयंकर समरांत युद्धपराङ्मुख झालेला दिसत आहे, तेव्हां आतां होणार तरी कसें ! ”

राजा धृतराष्ट्रा, कृपाचार्य व धृष्टद्युम्न हे एकमेकांशीं झुंजत असतां उभय दळांतील वीरांच्या मुखांतून असे नानाप्रकारचे उद्गार निघालेले ऐकूं आले. इकडे शारद्वत कृपाचार्यानें क्रोधाचा मुस्कारा टाकून पार्षताच्या सर्व मर्मस्थळां इतके बाण मारिले कीं, तो अगदीं निश्श्रेष्ठ होऊन बेशुद्ध पडला व त्यास पुढे काय करावें हें कांहींएक मुचेनासें झालें. तेव्हां त्याचा सारथी त्यास म्हणाला, “ महाराज, आपण क्षेम आहांना ? युद्धामध्ये असा घोर प्रसंग आपणांवर आलेला मीं कधी पाहिला नाही ! महाराज, द्विजश्रेष्ठानें आपल्या सर्व मर्मस्थळांवर नेम धरून जे बाण मारिले त्यांनीं आपल्या मर्माचें विदारण झालें नाहीं, हा केवळ दैवयोग असें मला वाटतें. समुद्राच्या ओषांनां

विरुद्ध झालेली नदी जसा आपल्या प्रवाह मागे फिरविते, तसा मी हा आपल्या रथ आतां ताबडतोब मागे फिरवितो. महाराज, ज्याने तुम्हाला सर्वतोपरी कुठित करून सोडिले, तो ब्राह्मण तुमच्या हस्ते रणभूमीवर पडेल. असा संभव दिसत नाही ह्यास्तव अशा प्रसंगी युद्ध-पराङ्मुख होणे हेच श्रेयस्कर होय.

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर धृष्टद्युम्न आर्तस्वराने म्हणाला, " वा मारथे, माझे चित्त अगदी गांगरून गेले आहे; माझ्या सर्व अंगाम धामसुटल्या असून शरीर अगदी कंपायमान व पुलकित झाले आहे. ह्यास्तव अशा ह्या समयी कृपाचार्याला चुकवून निकडे अर्जुन अमेल तिकडे हळूहळू जावे हेच विहित दिसते. मारथे, प्रस्तुत प्रसंगी मी अर्जुन किंवा भीम ह्यांम जाऊन मिळालों, तरच आज माझा तरणोपाय आहे अशी मला पूर्ण खात्री वाटते. " राजा, नंतर सारथ्याने अश्वानां इशारा करून वेगाने रथ चालविला; व जेथे महाधनुर्धर भीम तुझ्या सैन्याशी लढत होता, तेथे तो रथ आणून सोडिला. धृतराष्ट्रा, धृष्टद्युम्नाचा रथ पळ काढून धावू लागला असे पहातांच गोतमाने शतावधि बाणांचा भडिमार करीत त्याचा पाठलाग केला आणि वारंवार शिबनाद करून दशदिशा दुमदुमून टाकिल्या ! राजा, ह्याप्रमाणे धृष्टद्युम्न व कृपाचार्य ह्यांचे धोर युद्ध होऊन, जसे महेंद्राने नमुचीला अगदी जर्जर केले तसेच कृपाचार्याने धृष्टद्युम्नाला जर्जर केले !

शिखंडीचा पराभव !

धृतराष्ट्रा, भीष्माच्या मृत्यूचे कारण जो बलाढ्य शिखंडी, त्याला समरांगणांत हार्दिक्याने (कृतवर्म्याने) गांठले व पुनःपुनः हंसत हंसत त्यास त्याने अडविले. तेव्हां दोघांचे युद्ध सुरू झाले. त्यांत शिखंडीने हृदी-कांच्या महारथावर (हार्दिक्यावर) पांच

निशित भल्ल बाण टाकून त्याचा खवाडा विद्ध केला. नंतर कृतवर्मा खवळला आणि त्याने साठ बाण शिखंडीवर सोडून एका बाणाने त्याचे धनुष्य सहज तोडून टाकिले. तेव्हां दुपदाचा पुल बलिष्ठ शिखंडी हा दुसरे धनुष्य धारण करून मोठ्या क्रोधाने ' थांब थांब ' असे म्हणत हार्दिक्यावर धावून गेला आणि त्याने मुक्कणपुंख व अतिशयित प्रस्वर असे नव्वद् बाण त्यानवर सोडिले; पण ते सर्व बाण हार्दिक्याच्या चिलखतापासूनच मागे परतून भूतळावर पतन पावले ! ह्याप्रमाणे आपले बाण व्यर्थ झालेले अवलोकन करून शिखंडीने सुतीक्ष्ण क्षुरप्र बाणाने कृतवर्म्याचे धनुष्य तत्काळ छेदिले व भरशृंग वृषभाप्रमाणे भाममान होणाऱ्या त्या छिन्नचाप कृतवर्म्याच्या बाहुंवर व वक्षस्थळी त्याने मोठ्या आवेशाने ऐशी बाण टाकिले. राजा, ह्याप्रमाणे कृतवर्मा हा शिखंडीच्या बाणांनी अतिशय विक्षत झाला तेव्हां कुंभाच्या मुखांतून जसे पाण्याचे लोट चालवे तसे त्याच्या गात्रांतून रुधिराचे पाट चालू लागले. आणि त्याचे सर्व शरीर रक्ताने स्नात होऊन गैरिक (गेरूचे) ओष वहात अमलेल्या) पर्वताप्रमाणे आरक्त दिभू लागले. नंतर त्या प्रतापशाली हार्दिक्याला अतिशयित त्वेप आला व त्याने दुसरे धनुष्य धारण करून शिखंडीच्या स्कंधदेशी बाणांचा भडिमार चालू केला. तेव्हां शागवाप्रशाखांनी भरून गेलेला मोठा धोरला वृक्ष जसा शोभतो, तसा स्कंधप्रदेशी बाण-समुदायाने विद्ध झालेला तो शिखंडी शोभू लागला ! नंतर दोघांचे मोठ्या निकराचे युद्ध सुरू झाले; आणि परस्परांनी परस्परांवर अतिशय बाणवृष्टि करून एकमेकांस रक्ताने न्हाणिले. तेव्हां एकमेकांना ठार मारण्यासाठी झगडणाऱ्या त्या महारथ वीरांस पाहून जणू काय मदनोन्मत्त वृषभ तुफान होऊन एकमेकांवर शृंग-

प्रहार करीत आहेत, अमा भाम होऊं लागला !

राजा धृतराष्ट्रा, नेतर दोघे वीर आपल्या रथांनी हजारों मंडले करूं लागले; व तशांत कृतवर्म्यानें सहाणेवर पार लावून सुतीक्ष्ण केलेले सत्तर सुवर्णपुंख बाण टाकून पारि- तास (शिखंडीम) विद्ध केले; आणि मोठ्या चालावीनें एक प्राणांतक भयंकर बाण त्याज- वर टाकिला. राजा, भोजाधिपति कृतवर्म्याचा तो जलाल बाण शिखंडीम सहन झाला नाही. त्याच्या योगें शिखंडीचें देहभान सुटलें व तो एकदम खाली पडला; पण ध्वजयष्टीचा आधार मिळाल्यामुळे तो कमावसा मावरला. राजा धृतराष्ट्रा, ती दुर्धर अवस्था अवलोकन करून, हांदाक्याच्या बाणानें अतिशयित पीडित झाले- ल्या व पुनःपुनः संतापानें मुस्कारे टाकणाऱ्या त्या शिखंडीचा रथ त्याच्या सारथ्यानें तत्काळ रणभूमीतून मागे वळवून एकीकडे नेला; आणि ह्याप्रमाणें शूर शिखंडीचा पराभव होतांच पांडवसेनेवर चोहोंकडून शत्रुसैन्य तुटून पडलें व त्यांनं तिची दाणादाण करून तिला उधळून लाविलें !

अध्याय सत्ताविसावा.

— ० : —

संशप्तकांचा पराजय.

संजयसांगतो:-- राजा धृतराष्ट्रा, वाऱ्याची व कापसाच्या ढिगाची गांठ पडली असतां वारा जसा त्या कापसाला चोहोंकडे उधळून लावितो, तशी अर्जुनाची व तुझ्या सैन्याची गांठ पड- तांच अर्जुनानें तुझ्या सैन्याला चोहोंकडे उध- ळून लाविलें. राजा, त्रिगर्त, शिबि, कौरव, शाल्व, संशप्तक, नारायण नामक सैन्य, त्या- प्रमाणेंच सत्यसेन, चंद्रदेव, मित्रदेव, सुतंजय, सौश्रुति, चित्रसेन, मित्रवर्मा आणि भ्रात्यांसह महेंद्रास व नानाशस्त्रविशारद पुत्रांसह

त्रिगर्ताधिपति हे सर्व अर्जुनावर चाल करून आले आणि त्यांनी त्याजवर बाणांची अति- शय वृष्टि केली. राजा, त्या समयी ती बाण- वृष्टि अवलोकन करून जणू काय समुद्रावर जलाचे ओष कोसळत आहेत असें वाटलें ! धृतराष्ट्रा, ते सर्व लक्षावधि कौरववीर अर्जुना- वर उसळून आले खरे; परंतु गरुडास पाहून पत्तगांची जी अवस्था होते, तीच अवस्था त्या सर्वांची होऊन त्यांचा पूर्ण विश्वंस उडाला ! राजा, अर्जुनापुढें आपला टिकाव लागत नाही असें पाहून त्या सर्व योद्ध्यांनीं युद्धापासून पराड्मुख होऊन आपला जीव जगवावयास पाहिजे होता; पण त्यांनीं तसें केलें नाही व अग्निज्वालेवर उडी टाकणाऱ्या शलभांप्रमाणें अर्जुनावर चाल करून येणाऱ्या त्या सर्व कौरवीय वीरांना मृत्युपंथ अनुसरावा लागला !

राजा, त्या युद्धांत सत्यसेनानें तीन, मित्र- देवानें त्रेमष्ट, चंद्रसेनानें सात, मित्रवर्मानें व्याहात्तर, सौश्रुतीनें मात, शत्रुंजयांनं वीम, सुशर्मानें नऊ, अशा बहुत वीरांनी अर्जुनावर बाणवृष्टि केली; पण त्या सर्वांना उलट बाण मारून अर्जुनानें विद्ध केलें. पंडुपुत्रानें सौश्रुती- वर मात, सत्यसेनावर तीन, शत्रुंजयावर वीम, चंद्रदेवावर आठ, मित्रदेवावर शंभर, श्रुत- सेनावर तीन, मित्रवर्मावर नऊ व सुशर्मावर आठ बाण टाकिले. त्यानें शत्रुंजय राजाला निशित बाण मारून ठार केलें, सौश्रुतीचें मस्तक शिरस्त्राणामह उडविलें व चंद्रदेवावर बाणांचा भडिमार करून त्याम तत्काळ मृत्युमुखांत लोटिलें ! त्याप्रमाणेंच त्यानें महारथ वीर त्या- च्याशीच अगडत होते त्यापैकी प्रत्येकावर पांच पांच बाण टाकून त्यांचें निवारण केलें; पण इतक्यांत सत्यसेनानें संकुद्ध होऊन रणांगणांत कृष्णावर नेम धरून मोठें धोरलें तोमर फेंकिलें व बहुत आवेशानें सिंहनाद केला ! राजा,

सत्यसेनाचें तें स्पर्धामूषित पोलादी तोमर कृष्णा-
च्या उजव्या भुजाचें भेदन करून धरणांत
प्रविष्ट झाले आणि तोमरविद्ध झालेल्या त्या
महात्म्या माधवाच्या हस्तांतून प्रतोद व हय-
राश्मि सुटून खाली पडले ! तेव्हां वामुदेवाची ती
अवस्था अवलोकन करून धनंजयाला अत्यंत
क्रोध आला व तो कृष्णाम म्हणाला, “ हे
महाबाहो, सत्यसेनाच्या समीप रथ घेऊन
चल, म्हणजे मी त्याजवर तीक्ष्ण शर टाकून
त्यास यममदनी पाठवितों ! ” नंतर कृष्णानें
दुसरा प्रतोद घेतला व हयाचे राश्मि
धारण करून पुनः पूर्ववत् रथ चाल-
वून तो सत्यसेनाजवळ आणिला. राजा
धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनानें सत्यसेनावर
तीक्ष्ण शरांचा भडिमार करून त्यास मोठ्या
पेचांत आणिलें, आणि धार लावून तयार
केलेले भल्ल बाण टाकून त्याचें महत् शिर
कुंडलांसमवेत तोडून रणांगणांत पाडिलें !
ह्याप्रमाणें सत्यसेनाची वाट लाविल्यावर अर्जुना-
नें मित्रवर्मावर निशित बाणांची वृष्टि आरंभिली
आणि त्याच्या सारख्यावर तीक्ष्ण वत्मदंत
(वासराच्या दांतासारखा अणीदार) बाण
टाकिला; व त्या दोघांना धारातीर्थी पाडिलें !
नंतर पुनः अर्जुनानें संशप्तकांवर शतावधि
बाण सोडिले आणि क्रोधानें शतावधि व सहस्रा-
वधि संशप्तगणांचा संहार उडविला !
राजा. नंतर महारथ अर्जुनानें रौप्यपुंख क्षुरप्र
बाणानें महात्म्या मित्रसेनाचें मस्तक तोडिलें
आणि क्रोधायमान होऊन सुशर्म्याच्या जत्रु-
देशी (खवाट्यामध्ये) बाणप्रहार केले, तेव्हां
होते नव्हते तेवढे मर्वे संशप्तक एकत्र होऊन
त्यांनी अर्जुनाला गराडा घातला; व चौहों-
कडून बाणांची वृष्टि सुरू करून त्यांनी दश-
दिशा दणाणून सोडिल्या. ह्याप्रमाणें संशप्त-
कांनी धनंजयाला कोंडून टाकिलें असतां

इंद्रतुल्य पराक्रम करून दाखविणाऱ्या त्या
अतुलप्रताप पांडववीरांनं ऐंद्र अस्त्राची योजना
केली व तत्काळ सहस्रावधि बाणांचे ओघ
संशप्तकांवर कोसळूं लागले. राजा, नंतर ध्वज
व धनुष्ये ही तुटून पडण्यास प्रारंभ झाला;
रथ, जोखवें, बाणभाते व पताका हीं तुटून
मोडून खाली पडूं लागली; रथांचे कणे, चाक्रे,
दोरखंडे, अश्वांच्या लगामा, कृवर, वरूथ व
बाण हीं कोसळूं लागलीं; घोडे, प्रास, ऋष्टि,
गदा, परिध, शक्ति, तोमर, पट्टे, शतश्री, चक्रे,
बाहु, मांड्या, कंठमूत्रें, अंगदे, केयूरे, हार, अलं-
कार, कवचें, छत्रे, व्यजनें, मुकुट व मस्तकें
ही पटापट भूतलावर आपटूं लागली; व त्या
योगें जिकडे तिकडे महान् शब्द उद्भवला !
राजा, त्या समयी कुंडलांनी युक्त असलेली,
सुंदर नयनांनी शोभणारी व पूर्णचंद्राप्रमाणे
कांतिमान् दिसणारीं अशीं शिरे अंतरिक्षांत
उगवलेल्या तारकांच्या समुद्रायाप्रमाणें रणां-
गणांत सर्वत्र दृष्टीस पडूं लागली. त्याप्रमाणेंच
ज्यांवर उत्तम माला व उंची वस्त्रे झळकत
आहेत आणि ज्यांना चंदनाची उडी दिलेली
आहे, अशीं धडें रणभूमीवर सर्वत्र दिसूं लागली !
राजा, तेव्हां तें समरांगण गंधर्वनगराप्रमाणें
भयंकर भासूं लागले ! ज्याप्रमाणें पर्वत कोसळून
त्यांचीं शिखरें विदीर्ण होऊन इतस्ततः
पडलीं असतां तो भूभाग दुर्गम होतो; त्याप्रमाणें
राजपुत्र व इतर क्षत्रिय आणि त्यांची मोठमोठीं
चतुरंग सेन्ये व हत्ती हे इतस्ततः मरून पडल्या-
मुळें तें महीतल दुर्गम झालें ! त्या समयी तो
महात्मा पंडुपुत्र आपल्या भल्ल बाणांनीं शत्रूंचें
चतुरंगवळ मर्दांत असतां, त्याच्या रथाला
मार्गेच मिलेनासा झाला ! जिकडे तिकडे रथ
मोडून पडल्यामुळें त्यांची चाक्रे मार्गांत पडून
मार्गाचा रोध झाला होता ! त्या प्रसंगी समरां-
गणांत रुधिराचा इतका कर्दम पडला कीं, त्यांत

अर्जुनाच्या रथार्ची चक्रे रुतून गेलीं आणि मनोमारुतवेगाने चालणाऱ्या त्या अध्वाना तो रथ ओढून नेण्यास महाप्रयास पडले ! राजा, ह्याप्रमाणे अर्जुनाच्या हातून भयंकर संहार झाला तेव्हां शत्रूंकडील राहिले-साहिले बहुतेक सैन्य युद्धविन्मुख झाले व त्याने पळ काढिला. असो; हे धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारे अर्जुनाने बहुत संशसकगणांना जिंकिले असतां तो विभूम अशीप्रमाणे देदीप्यमान भासू लागला !

अध्याय अष्टाविंशत्वा.

—०:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, युधिष्ठिर हा कौरवसैन्यावर बाणांचा भडिमार करीत असतां स्वतः दुर्योधन राजा मोठ्या धैर्याने त्याच्याशी लढू लागला. तुझा पुत्र महारथ दुर्योधन ह्याने धर्मराजावर मोठ्या त्वेषाने उलट हल्ला केला, तेव्हां धर्मराजाने त्याजवर मोठ्या वेगाने बाण टाकून त्यास ' थांब, थांब ' असे म्हटले. परंतु इतक्यांत दुर्योधनाने अत्यंत क्रोधाग्रस्त होऊन धर्मराजावर नऊ व सार-थ्यावर एक असे दहा भल्ल बाण सोडिले आणि मग मोठ्या निकराचे युद्ध सुरू झाले. त्या समयी युधिष्ठिराने महाणेवर धार लावून तयार केलेले तेरा स्वर्णपुंख बाण दुर्योधनावर टाकिले; चार बाणांनी त्याच्या रथाचे चारी घोडे मारिले; पांचवा बाण मारून सारथ्याचे मस्तक अंतरिक्षांत उडवून दिले; सहावा बाण टाकून ध्वज मोडिला; सातव्या बाणाने धनुष्य तोडिले; आठवा बाण सोडून भूतलावर खडग पाडिले व पुनः पांच बाण टाकून दुर्योधनास अगदी संकटांत घातले. नंतर हताश असा तुझा पुत्र रथातून खाली उडी टाकून भूतलावर उभा राहिला व त्याची ती दीन अवस्था अव-

लोकन करून कर्ण, द्रौणि, कृपाचार्य वगैरे योद्धे त्याच्या मदतीकरितां तेथे एकदम धावून आले. पण इतक्यांत तेथे युधिष्ठिराच्या समीप सर्व पांडुपुत्र प्राप्त झाले; आणि मग मोठे घोर युद्ध प्रवर्तले ! राजा, त्या समयी त्या घोर संग्रामांत सहस्रावधि रणवाद्ये वाजू लागली व सर्वत्र रणसंमर्द माजून एकच कलकलाट सुरू झाला. पांचालांचे व कौरवांचे युद्ध जुंपले होते; तेथे पायदळ पायदळावर तुटून पडले; मोठ-मोठे हत्ती एकमेकांशी झगडू लागले; रथ्यांनी रथ्यांवर हल्ले केले; व घोडेस्वारांनी घोडेस्वारांना गांठले ! राजा, त्या घोर संग्रामांत शस्त्रास्त्रांनी युक्त अशा श्रेष्ठ योद्ध्यांची नानाविध व अचित्य द्वंद्वे अशी विलक्षण रीतीने युद्ध करू लागली की, ते पाहून मोठे आश्चर्य वाटले ! ते सर्व शूर वीर, परस्परांच्या वधाची इच्छा करून मोठ्या आवेशाने एकमेकांशी लढले, आणि युद्धसंबंधी जे नियम पाळणे अवश्य होते, ते सर्व नियम योग्य प्रकारे पाळून त्यांनी मोठ्या खूबीने व चपलतेने आपले विचित्र युद्धकौशल्य दाखविले. त्यांनी एकमेकांना समोरासमोर लढून समरांगणात ठार केले,—पाठीमागे लढून कोणाचाही नाश केला नाही. ते युद्ध थोडा वेळपर्यंत मात्र प्रेक्षणीय वाटले; परंतु पुढे त्याची मर्यादा मुटली व ते वीर उन्मत्तपणाने बेहोप होऊन लढू लागले. त्या युद्धांत रथ्यांनी हत्तीना गांठून त्यांजवर बांकदार पेऱ्यांच्या निशित बाणांची वृष्टि केली व त्यांस यममदनी पाठविले. त्याचप्रमाणे हत्तीही जागोजाग घोड्यां-वर तुटून पडले आणि त्यांनी पुष्कळ घोड्यांना सोडांनी ओढून व आपटून क्रूरपणाने ठार मारिले. तसेच पुष्कळ घोडेस्वारांनी मोठमोठ्या घोड्यांना गराडा घातला व त्यांजवर हल्ला करून आवेशाने टाळ्या वाजविल्या; तेव्हा ते घोडे बिचकून चोहोंकडे मिरवैरा धावू लागले आणि मग

त्या घोड्यांना व पळणाऱ्या मोठमोठ्या हत्तींना घोडेस्वारांनी पाठीमागून व वाजूंकडून हल्ले करून ठार मारिले. राजा, त्याप्रमाणेच कित्येक मदोन्मत्त कुंजरांनी बहुत अश्यांचा पाठलाग करून त्यांस दांत भोंसकून वधिले किंवा अतिशय तुडवून मर्दिले ! कित्येकांनी चवताळून जाऊन घोड्यांना व त्यांच्यावरील स्वारांना दांतांनी जखमी केले आणि कित्येकांनी त्यांना मोठ्या जोरांनी आपटून फेंकून दिले ! इकडे संधि साधून पायदळांनी हत्तींवर हल्ले केले व त्यांस अगदी जर्जर करून उधळून लाविले; तेव्हां ते भयभीत होऊन अर्तस्वर करीत दशदिशांस पळून गेले ! राजा, कित्येक ठिकाणी पायदळाचीही अशीच दुर्दशा झाली. पायदळांतील शिपाई आपल्या अंगावरील दागदागिन्यांचा भार टाकून देऊन मोठ्या त्वरेने पळून जात असतां रणांगणांत गजयोद्ध्यांनी ' जय मिळविण्याम हा योग्य प्रसंग आहे, ' असे मनांत आणून त्यांचा पाठलाग केला; युद्धभूमीवर पतन पावलेली त्यांची चित्र-विचित्र आभरणे आपल्या हत्तींकडून उचलून घेतली; आणि त्या मैत्रिकांवर चाल करून त्यांस गजदंतांनी विद्ध केले. तेव्हां पायदळांचे व गजयोद्ध्यांचे युद्ध जुंपले. आपल्यावर हत्तींनी हल्ला केला असे पाहून पायदळांनी त्यांस उलट गराडा घातला; आणि त्यांनी मोठ्या आवेशाने गजयोद्ध्यांना ठार मारण्यास प्रारंभ केला. त्या युद्धांत गजयोद्ध्यांनी कित्येक सैनिकांस हत्तीच्या सोंडांनी अंतरिक्षांत फेंकून दिले व ते भूतल्यावर पडतांना त्यांना सुशिक्षित हत्तींकडून नेमकेच जोरांनी भोंसकले ! कित्येकांस हत्तींनी एकदम आपल्या दांतांनी नेमकेच विद्ध करून ठार मारिले ! कित्येक सैनिक आपली टोळी सोडून दुसऱ्या टोळीत जाऊन मिळाले; पण ते हत्तीच्या पायांमाली सांपडून त्यांचा चुराडा

झाला ! कित्येक सैनिकांस हत्तींनी आपल्या सोंडांनी पंचव्यासारेखे गरगर फिरवून रणभूमीवर आपटून यमलोकी पाठविले आणि कित्येक सैनिक दुसऱ्या हत्तीवर चाल करून गेले असतां ते हत्तीच्या तडाक्यांत सांपडून जिकडे तिकडे त्यांची शरीरे अतिविद्ध होऊन छिन्नभिन्न झाली. तेव्हां वाजूस अमलेल्या महापराक्रमी रथ्यांनी व घोडेस्वारांनी त्या हत्तीवर हल्ला केला आणि त्यांच्या गंडम्यळांवर, गालांवर व दोन्ही दांतांच्या मधील सोंडेच्या भागावर घास, तोमर व शक्ति ह्यांचा भडिमार चालवून त्यांस अगदी जेरीस आणिले असतां त्यांपैकी कित्येक हत्ती भूतलावर पडापडा मरून पडले ! ह्याप्रमाणे दोन्ही दळे एकवटून निकराचे युद्ध चालू असतां, घोडेस्वारांनी पायदळांतील शिपायांवर मोठ्या आवेशाने तोमरे टाकून त्यांस दाली-सुद्धां भूमीशी विळिले व ठार मारिले. त्याप्रमाणेच कित्येक हत्ती कवचधारी रथ्यांवर धावून गेले व त्यांनी त्या रथ्यांस रथांतून ओढून अंतरिक्षांत मोठ्या वेगाने फेंकून जमिनीवर आपटिले. इकडे कित्येक रथ्यांनी त्या हत्तीवर नाराच बाणांचा वर्षाव केला; तेव्हां त्यांची दुर्दशा होऊन वज्राने विदीर्ण झालेल्या पर्वताच्या शिखरांप्रमाणे ते धडाधड जमिनीवर कोमळले ! राजा, त्या महान् रणांत योद्ध्यांनी योद्ध्यांना गांठून त्यांजवर मुष्टि-प्रहार केले; एकमेकांनी एकमेकांना शेंडी धरून ओढून आणि भूमीवर आपटून व फेंकून ठार मारिले; कित्येकांनी प्रतिस्पर्ध्यांना हात लांब करून ओढून ग्वाली पाडिले व त्यांच्या छातीवर पाय देऊन ते धडपड करीत असतां त्यांची मस्तकें उडविली; कित्येकांनी शत्रूच्या उरांत शस्त्रे भोंसकली; कित्येकांनी भयंकर मुष्टियुद्ध आरंभले; कित्येकांनी एकमेकांच्या केंसाला हात घालून लढाई सुरू केली; कित्येक एकमेकांना

दंडांनीं हाणूं लागले; आणि कित्येकांनीं एक-मेकांवर नानाविध शस्त्रे चालविली. राजा, त्या वेळीं असा कांही रणसंमर्द मातला की, कोण-कोणाला मारीत आहे, हे कांहींच कळेनासे झाले व वीर पुरुष भाराभर समरांगणांत पडून त्यांचीं शतावधि व सहस्रावधि कवचे रणभूमीवर उभी राहिली आणि त्यांची ती रुधिरस्नात कवचे व वस्त्रे लालभडक रंगविलेल्या वस्त्रांप्रमाणे शोभू लागली !

राजा धृतराष्ट्रा, शस्त्रादिकांनीं परिपूर्ण व दारुण असें हे युद्ध चालू असतां, अपाट्यानें वाहणाऱ्या गंगेच्या प्रवाहाप्रमाणे त्याचा गंभीर शब्द उद्भवला व त्यानें सर्व ब्रह्मांड दुमदुमून गेले. बाणप्रहारांनीं व्याकूल झालेल्या त्या योद्ध्यांना आपला कोण व परका कोण ही ओळख राहिली नाही; आणि युद्ध करणे हे आपले कर्तव्य समजून जयाच्या अपेक्षेनें ते लढत राहिले. राजा, त्या समयी उभय पक्षांकडील वीरांनीं परकीयांना व स्वकीयांनाही ठार मारिले आणि सर्वत्र एकच अनर्थ झाला ! रणभूमीवर जिकडे तिकडे मोडलेले रथ आणि मरून पडलेले गज, अश्व व नर ह्यांची एकच गर्दी झाल्यामुळे क्षणांत सर्व भूतल अगम्य होऊन सर्वत्र रक्ताचे पाट वाहू लागले ! त्या युद्धांत कर्णाने पंचालांस व धनंजयाने त्रिगर्तास मारिले; आणि भीमसेनाने कौरवांचा संहार उडवून हस्तिसेनेचा फडशा उडविला ! राजा धृतराष्ट्रा, कौरवांकडील व पांडवांकडील सेना ह्यांप्रमाणे यशःप्राप्तीची हाव धरून एकमेकींशी लढत असतां अपराह्णकाळीं दोन्ही पक्षांमध्ये हा असा भयंकर नाश झाला !

अध्याय एकोणतिसावा.

—::—

युधिष्ठिर व दुर्योधन यांचे युद्ध.

धृतराष्ट्र विचारिताः—संजया, अतिशय तीव्र व दुःमह असे अनेक दुःखकारक प्रसंग वर्णन करून आणि माझ्या पुत्रांची जी भयंकर हानि झाली ती सांगून तूं जें युद्धाचें यथार्थ स्वरूप माझ्या निदर्शनास आणिलेस, त्यावरून पाहतां 'कौरव नष्ट झालेच' असें मी निश्चयाने मानितों ! सूता, युधिष्ठिराने महारथ दुर्योधनास विरथ करून मोठ्या संक्रांतांत घातले ह्मणून तूं सांगितलेस; तर पुढे युधिष्ठिर व दुर्योधन ह्यांनीं एकमेकांशीं कसे युद्ध केले आणि अपराह्णकाळीं एकंदर युद्ध कशा प्रकारे झाले, ते सविस्तर सांग. संजया, तुझी वर्णन करण्याची शैली फारच चांगली आहे.

संजय सांगतोः—राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधन राजा विरथ होऊन भूतलावर उभा असतां, इकडे दोन्ही दळे एकमेकांशीं लगट करून मोठ्या निकराने लढत होती. उभय पक्षांचे चतुरंग सैन्य परस्परांशीं झगडत असून त्यापैकी बहुत वीर एकमेकांच्या हस्ते धारातीर्थी पतन पावत होते. अशा स्थितीत तुझा पुत्र दुर्योधन दुसऱ्या रथावर आरूढ झाला व सविध सर्पांप्रमाणे महाक्रोधाने क्षुब्ध होऊन त्यानें धर्मराज युधिष्ठिरावर दृष्टि फेंकिली आणि मोठ्या त्वरेनें सारथ्यास म्हटले, " हे सारथे, चल, चल. ज्या ठिकाणीं कवचधारी युधिष्ठिर राजा मस्तकावर धरलेल्या छत्राने शोभत आहे, त्या ठिकाणीं मला लवकर ने. " राजा धृतराष्ट्रा, महारथ दुर्योधनाची अशी आज्ञा होताच सारथ्याने तो श्रेष्ठ रथ रणांगणात धर्मराजाच्या अग्रभागी चालविला. तेव्हां ते पाहून धर्मराजा मदोन्मत्त कुंजराप्रमाणे क्षुब्ध झाला; व त्यानेंही आपल्या सारथ्यास 'दुर्योधनाकडे रथ

चालव ' ह्मणून आज्ञा केली. नंतर ते दोघेही महाबलिष्ठ वीर भ्राते एकमेकांवर तुटून पडले; व त्या युद्धदुर्मद महाधनुर्धरांनी अत्यंत क्षुब्ध होऊन समरांगणांत परस्परांवर बाणवृष्टि सुरू केली. त्या वेळी दुर्योधनानें सहाणेंवर धार लावून तीक्ष्ण केलेल्या भल्ल बाणानें धर्मराजाचें धनुष्य तोडिलें; परंतु युधिष्ठिरास तो अपमान सहन न होतां त्यानें क्रोधायमान होऊन नेत्र आरक्त केले; आणि ह्मतांतील तें छिन्न धनुष्य फेंकून देऊन दुसरें धनुष्य उचलिलें व सैन्याच्या अग्रभागी उभें राहून दुर्योधनाचा ध्वज व धनुष्य ही दोन्ही तोडून टाकिली ! मग दुर्योधनानें आणखी दुसरें धनुष्य धारण केलें व युधिष्ठिरावर बाणवृष्टि आरंभिली. तेव्हां दोघांचा घोर संग्राम सुरू झाला. दोघेही अतिशयत खवळले व एकमेकांवर एकसारखे बाण टाकू लागले. तेव्हां जणू काय ते दोघे सिंह परस्परांना जिंकण्याच्या इच्छेनें एकमेकांवर तुटून पडले आहेत, असें भासलें. माजलेले बेल जसे दुरकण्या फोडीत एकमेकांवर धावून जाऊन एकमेकांस विद्ध करितात, तसा क्रम त्यांनी आरंभिला. ते दोघेही महारथ परस्परांचें व्यंग कोठें मांपडतें ह्याजवर दृष्टि ठेवून मोठ्या अवेशानें लवूं लागले; आणि त्यांनी एकमेकांवर निकराचा भडमार करून एकमेकांचे देह रुधिरपरिप्लुत करून टाकिले, तेव्हां जणू काय ते पलाशवृक्षच पुष्पित झाले आहेत, असा भाम होऊं लागला ! राजा धृतराष्ट्रा, नंतर ते दोन्ही योद्धे वारंवार सिंहगर्जना करू लागले; त्याप्रमाणेच त्यांनी धनुष्यांचे टणत्कार केले व हातांनी मोठमोठ्यानें टाळ्या वाजविल्या; आणि महान् शंखनाद करून एकमेकांस अतिशय पीडा दिली ! नंतर युधिष्ठिरानें अत्यंत क्रोधायमान होऊन वज्राप्रमाणें दुःमह असे तीन बाण तुड्या पुत्राच्या

वक्षःस्थलावर टाकिले; परंतु तुड्या पुत्रानें तत्काळ उलट पांच स्वर्णपुंख निशित बाण धर्मराजावर सोडून त्यास विद्ध केलें. तदनंतर दुर्योधनानें धर्मराजावर भयंकर शक्ति फेंकिली. ती शक्ति अशीप्रमाणें देदीप्यमान असून कोणाचाही संहार करण्यास समर्थ अशी होती. ती जलाल शक्ति मोठ्या वेगानें आपणावर येत आहे, असें पाहून धर्मराजांनें एकदम तीक्ष्ण बाण तिजवर टाकून तिचे तुकडे केले व दुर्योधनावरही पांच बाण सोडिले ! तेव्हां घोघावत जाणारी ती स्वर्णदंड शक्ति अग्निज्वालेप्रमाणें दशदिशा प्रकाशमान करीत महान् उल्लेसारखी भूतलावर एकदम पतन पावली ! ह्याप्रमाणें आपली शक्ति विच्छिन्न झालेली अवलोकन करून तुड्या महाबलिष्ठ पुत्रानें नऊ निशित भल्ल बाण टाकून धर्मराजाला अतिशय विद्ध केलें; तेव्हां शत्रुसंहारक धर्मराजांनें दुर्योधनाला मारण्याच्या उद्देशानें तत्काळ बाण काढिला व तो धनुष्याला जोडून अशा त्वेपानें तुड्या पुत्रावर सोडिला की, तो त्याला मूर्च्छित करून जमिनीत घुसला ! नंतर दुर्योधन अत्यंत कोपला व ताबडतोब गदा उचलून कलहाचा अंत करण्याकरितां धर्मराजावर धावून गेला. तेव्हां तो गदापाणी दुर्योधन दंडधारी अंतकाप्रमाणें आपणावर चालून येत आहे, असें पाहून धर्मराजांनें त्याजवर महान् उल्लेखप्रमाणें प्रज्वलित अशी देदीप्यमान व प्रचंड वेगानें चालणारी भयंकर शक्ति सोडिली ! राजा, तुझा पुत्र रथारूढ असतां त्या शक्तीनें तुड्या पुत्राचे चिलखत विदारण करून वक्षःस्थल भेदिलें व त्या सरसा तो अत्यंत व्याकूल होऊन मूर्च्छित पडला ! राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाची ती अवस्था अवलोकन करून भीमसेनाला आपल्या प्रतिज्ञेची आठवण झाली व तो “ राजा, तूं ह्याला मारूं नको. ” असें युधिष्ठिराला ह्मणाला. तेव्हां

धर्मराज युधिष्ठिर थांबला; परंतु इतक्यांत, व्यसनार्णवांत निमग्न झालेल्या त्या दुर्योधनाच्या साहाय्याकरितां तत्काळ कृतवर्मा त्या स्थळी प्राप्त झाला; आणि नंतर हेमपट्टांकित गदा धारण करून भीमसेन रणांगणांत त्या कृतवर्म्यावर मोठ्या वेगानें धावून गेला व मग त्यांचें युद्ध जुंपलें; पण अश्वेरीस त्यांत कौरवांची दाणा-दाण झाली! राजा धृतराष्ट्रा, तुझे पुत्र व पांडव ह्यांचें जयाच्या अपेक्षेनें अपराह्णकाळी अशा प्रकारें युद्ध झालें!

अध्याय तिसावा.

प्रथमदिनसमाप्ति.

संजय क्षणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर तुझ्या पक्षाचे पराक्रमी वीर कर्णाला पुढें करून मागें वळले आणि मग त्यांचा व पांडवांचा देवदानवांच्या संग्रामाप्रमाणें घोर संग्राम झाला. त्या समयीं गज, अश्व, रथ, पदाति, शंख व नानाविध शस्त्रपात ह्यांचा शब्द होऊं लागला. तेव्हां योद्ध्यांस फारच त्वेष आला आणि त्यांनीं मोठ्या क्रोधानें आपआपल्या प्रतिस्पर्धीवर हल्ले करून त्यांजवर शस्त्रास्त्र-प्रहार करण्यास आरंभ केला. त्या वेळीं त्या घोर युद्धांत पाजविलेल्या कुऱ्हाडी, तरवारी, पटे, विविध बाण व गजश्वदिक वाहनें ह्यांच्या योगें चतुरंग सैन्य धारातीर्थी पतन पावलें. वीराशिरांनीं सर्व भूतल आच्छन्न होऊन सूर्यचंद्रांप्रमाणें देदीप्यमान, शुभ्र दंतांनीं विराजित, सुंदर नेत्रनासिकांनीं चित्ताकर्षक आणि रुचिर मुकुटकुंडलांनीं सुभूषित अशी अगणित मुखकमलें त्या स्थळीं झोमूं लागली. त्या ठिकाणीं शतावधि परिघ, मुसळें, शक्ति, तोमरें, नखर, भुशुंडि व गदा ह्यांच्या प्रहारांनीं सहस्रावधि कुंजर, अश्व व मनुष्यें ह्यांचा संहार

उडून रुधिराच्या नद्या वाहूं लागल्या; आणि समरांगणांत हत झालेल्या व घायाळ पडलेल्या चतुरंग सैन्याचा तो हृदयविदारक भयंकर देखावा पाहून जणू काय पितृपति यमाचें तें प्रलयकालीन राष्ट्रच आहे असें सर्वांस वाटलें!

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर तुझ्या सैन्यांतील महान् महान् योद्धे तुझ्या देवतुल्य पुत्रांसह असंख्य सेनेसहवर्तमान शिनिपुत्र सात्यकि ह्याजवर चाल करून गेले. त्या समयीं मोठमोठे वीर, अश्व, रथ व द्विप ह्यांनीं गजवज्रून गेलेली ती कौरवसेना देवामुरांच्या सेनेप्रमाणें अत्यंत भयंकर दिसली व तिच्यामध्ये सागरासारखा गंभीर ध्वनि उद्भवला. नंतर समरांगणांत देवेंद्राप्रमाणें पराक्रम गाजविणाऱ्या त्या विष्णुतुल्य कर्णानें दिनकरकिरणांसारखे प्रखर बाण मारून शिनिप्रवीर सात्यकीला समरभूमीवर विद्ध केले. तेव्हां तत्काळ सात्यकीनें विविध बाणांचा भडिमार चालू केला व त्यानें भुजंगाच्या विषाप्रमाणें जलाल अशा अनेक बाणांनीं त्या वीरश्रेष्ठ कर्णाला, त्याच्या सारथ्याला, रथाला व अश्वानां झांकून काढिलें. राजा, ह्याप्रमाणें सात्यकीनें कर्णाला मोठ्या पेंचांत घातलें. तेव्हां तुझ्या पक्षाचे अतिरथ योद्धे चतुरंग सैन्यासमवेत त्या महारथ कर्णाच्या मदतीकरितां एकदम धावून आले; परंतु समुद्रासारख्या त्या अफाट सैन्यावर दुषदसुत-प्रमुख पांडववीरांनीं तत्काळ हल्ला केला आणि मग गज, अश्व, रथ व नर ह्यांचा भयंकर क्षय झाला!

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर पुरुषश्रेष्ठ कृष्णार्जुन शत्रुसेनेचा वध करण्याचा निर्धार करून पुढें झाले. त्यांनीं प्रथम आह्निक (ब्रह्मचितन वंगरे) आटपलें, मग भगवान् शंकराची यथाविधि पूजा केली आणि नंतर तांबडतोब तुझ्या सैन्यावर हल्ला केला. त्या वेळीं मेघगर्जेनेप्रमाणें गडगड

शब्द करणारा, वाय्यानें ध्वजपताका फडफडत असलेला, व शुभ्र अश्व जोडलेला असा तो अर्जुनाचा रथ समीप आलेला पाहून तुझ्या सैन्यांतील वीरांनी भावी अनर्थाबद्दल अनुमान केलें. नंतर अर्जुन गांडीवाचा टण-त्कार करीत बाणांचा भडिमार करूं लागला; आणि जणू काय रथावर नाचावयासच लागून त्यानें अंतरिक्ष व दिशोपदिशा शरवृष्टीनें गच्च भरून काढिल्या ! त्या समयी, राजा, वारा ज्याप्रमाणें मेघांचा नाश करून टाकितो, त्या-प्रमाणें पंडुपुत्रानें शत्रूंच्या विमानतुल्य रथांचा आयुध, ध्वज व सारथि ह्यांसहवर्तमान बाण-वृष्टीनें नाश करून टाकिला; पुष्कळ हत्ती व त्यांजवरील महात ह्यांस ध्वजपताका व आयुधें ह्यांसह भूतली पाडिलें; आणि तीच अवस्था घोडे, घोडेस्वार व पायदळ ह्यांची करून तुझ्या सैन्यास “त्राहि भगवन्” करून सोडिलें ! तेव्हां अंतकाप्रमाणें क्षुब्ध झालेला तो महारथ अर्जुन आपल्या सैन्यास आवरत नाहीं असें पाहून, दुर्योधन एकटा त्याजवर सरळ वुस-णाऱ्या बाणांची वृष्टि करीत धावून गेला. त्यावरो-बर तत्काळ अर्जुनानें सात बाण सोडिले आणि दुर्योधनाचें धनुष्य, सारथि, अश्व व ध्वज ह्या सर्वांचा नाश करून एका बाणानें त्याच्या मस्तकावरील छत्र छेदिलें; आणि नववा प्राणघातक जलाल बाण दुर्योधनावर टाकिला. परंतु द्रोणपुत्रानें तो मध्यंतरीच तोडून त्याचे सात तुकडे केले ! तेव्हां अर्जुनानें द्रोणपुत्राचें धनुष्य छेदिलें व त्याच्या रथाचे अश्व ठार केले; त्याप्रमाणेंच त्यानें कृपाचार्याच्या त्या भयंकर धनुष्याची वाट लाविली, आणि मग तो हार्दिक्याचें धनुष्य छेदून आणि त्याचे अश्व व ध्वज ह्यांचा विध्वंस उडवून दुःशासनावर चालून गेला व त्याचेंही धनुष्य भग्न करून नंतर त्यानें कर्णाला गांठिलें !

इकडे कर्ण सात्यकीशीं युद्ध करीत होता तो आपणावर अर्जुन आला असें पाहून एकदम सात्यकीला सोडून अर्जुनावर धावून गेला व त्यानें अर्जुनावर तीन व कृष्णावर वीस असे बाण मारून पुनःपुनः तोच क्रम चालविला. राजा, त्या समयी युद्धांत शत्रूंचें निर्दलन कर-णाऱ्या क्रोधायमान शतक्रतूप्रमाणें कर्णानें कृष्णार्जुनांवर एकसारखी अस्त्रलिप्त बाणवृष्टि केली, तरी त्यांस किंचित् सुद्धां ग्लानि आली नाही. राजा, ह्याप्रमाणें कर्ण हा कृष्णार्जुनांवर शरवर्षाव करूं लागला, तेव्हां सात्यकि पुढें आला व त्यानें कर्णावर प्रथम नव्याणव व मग पुनः शंभर असे उग्र बाण टाकिले; आणि नंतर पांडवांच्या सैन्यांतील मोठमोठ्या सर्व वीरांनी कर्णावर बाणांचा भडिमार चालू केला. त्या समयी युधामन्यु, शिखंडी, द्रौपदीचे पुत्र, प्रभद्रक, उत्तमोजा, युयुत्सु, नकुलसहदेव, धृष्टद्युम्न, बलिष्ठ चेकितान व महाधार्मिक युधि-ष्ठिर हे सर्व रथी-महारथी योद्धे आणि त्या-प्रमाणेंच चेदि, कारूप, मत्स्य व केकय ह्या देशाची सैन्ये हीं भयंकर हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ ह्यांसहवर्तमान कर्णावर चालून आलीं, व त्यांनीं कर्णाला ठार मारण्याचा निश्चय करून समरांगणांत त्याला गराडा घातला आणि कठोर भाषणें करीत नानाविध शस्त्रास्त्रांचा त्याजवर भडिमार सुरू केला !

राजा, ह्याप्रमाणें चोहोंकडून शस्त्रवृष्टि होऊं लागली तरी कर्णाला यत्किंचित् भीतीचा स्पर्श झाला नाही. त्यानें उलट जलाल बाण सोड-ण्यास आरंभ केला, व आपणावर येणारीं शस्त्रास्त्रे छेदून टाकून, मारुत जसा वृक्षांचा विध्वंस उडवितो, तसा त्यानें शत्रुसैन्याचा विध्वंस उडविला. राजा, त्या वेळीं कर्ण हा क्रोधायमान होऊन रथी, महातासुद्धां हत्ती, स्वारांसहित घोडे व पायदळ यांच्या मोठमोठ्या

ठोळ्या ह्यांचा एकसारखा संहार करीत आहे असें दिसूं लागलें आणि ह्याप्रमाणें पांडवांच्या सैन्याची आयुधें, वाहनें, देह व प्राण ही नष्ट होऊं लागलीं, तेव्हां उर्वरित सैन्य युद्धविमुख होऊन पळ काढण्याच्या बेतांत आलें; परंतु इतक्यांत अर्जुनानें स्मित करून कर्णाच्या अस्त्रांवर आपलीं अस्त्रे टाकण्यास प्रारंभ केला व हां हां क्षणतां भूतल, अंतरिक्ष व सभोवतालच्या सर्व दिशा शरवृष्टीनें व्यापून काढिल्या. त्या समयीं कौरवांच्या सैन्यावर अर्जुनाच्या बाणांचा जो वर्षाव होत होता, तो पाहून जणू काय मुसळांची किंवा परिषांची धारच कोसळत आहे असें भासलें; आणि त्या बाणांपैकीं कित्येकांनीं शतधनीप्रमाणें व कित्येकांनीं उग्र वज्राप्रमाणें शत्रुसैन्याचा भयंकर संहार होऊं लागला ! राजा, त्या समयीं अर्जुनाच्या बाणप्रहारांनीं कौरवांकडील हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ हीं सर्व बेहोष झालीं आणि डोळे मिटून भयंकर आक्रोश करीत केवळ धारातीर्थीं देह ठेवण्याच्या इच्छेनें तें चतुरंग सैन्य शत्रूशीं लढूं लागलें; पण अखेरीस अर्जुनाच्या दुःसह बाणप्रहारांनीं अत्यंत आर्त झाल्यामुळें तें रणांगणांतून पळत सुटलें !

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें तुझे सैन्य जयाची आशा धरून शत्रुसैन्याशीं झगडत असतां सूर्य अस्ताचलाप्रत प्राप्त होऊन अदृश्य झाला. आणि मग लवकरच चोहोंकडे अंधकार पडल्यामुळें व त्यांतूनही विशेषतः दशदिशा धुळीनें व्यापून गेल्यामुळें, पुढें बरें किंवा वाईट काय झालें, तें कांहीच दिसलें नाही; परंतु इतकें खरें कीं, तुझ्या पक्षाचे महाधनुर्धर वीर रात्रीस युद्ध करण्यास भ्याले व ते सर्व योद्ध्यांसहित समरांगणांतून निघून गेले ! राजा, ह्याप्रमाणें कौरवांनीं पळ काढिला असतां पांडव हे विजयी होत्साते मोठ्या आनंदानें आपल्या

शिबिरांत जाण्यास निघाले. त्या समयीं पांडवांच्या सैन्यांत नानाविध वाद्यांचा घोष सुरू झाला; आणि पांडववीर सिंहनाद करून शत्रूंचा उपहास व कृष्णार्जुनांची प्रशंसा करूं लागले. राजा, अशा प्रकारें कौरवसेनेचा पराभव करून पांडवांनीं आपलीं सर्व सेना एकत्र जमविली, तेव्हां तत्पक्षीय राजांनीं व सैनिकांनीं पांडवांना आशीर्वाद दिले. त्या वेळीं ती सर्व विजयी सेना अवलोकन करून पांडवांनाही मोठा हर्ष झाला; आणि नंतर ते पांडव, सर्व राजे व सैनिक रात्री आपआपल्या मुक्कामास जाऊन तेथें त्यांनीं रात्र घालविली ! राजा धृतराष्ट्रा, नंतर त्या शून्य व भयाण समरभूमीवर राक्षस, पिशाच व श्वापदे ह्यांच्या झुंडीच्या झुंडी प्राप्त होऊन तें रुद्राचें क्रीडास्थानच होय असें सर्वत्र भासूं लागलें !

अध्याय एकतिसावा.

—:—

कर्ण व दुर्योधन ह्यांचा संवाद.

धृतराष्ट्र क्षणालः—संजया, आपल्याकडील सर्व योद्ध्यांना अर्जुनानें केवळ आपल्या स्वतःच्या इच्छेनेंच वधिलें हें उघड आहे. बाबा, अर्जुनाचा पराक्रम कांही सामान्य नव्हे. त्या शस्त्रधारी योद्ध्याची समरांगणांत गांठ पडली असतां प्रत्यक्ष अंतकाचीही सुटका होणें कठीण ! पहा, एकट्या पार्थानें सुभद्रेचें हरण केलें, त्यानें एकट्यानेंच अश्विनी तृप्ति केली, आणि त्यानें एकट्यानेंच अखिल भूमंडल जिंकून सर्व राजांना मांडलिक बनविलें ! अरे, त्या दिव्य धनुर्धराची महती किती वर्णावी ! त्यानें एकट्यानें निवातकवचांचा संहार उडविला, किरातरूपानें स्थित असलेल्या भगवान् शंकराशीं त्यानें एकट्यानेंच युद्ध केलें, घोषयात्रेच्या प्रसंगीं त्यानें एकट्यानेंच दुर्योधना-

दिक भारतवीरांचा बचाव केला, त्यानें एकट्यानेच शंकराचा प्रसाद जोडिला, आणि त्या प्रतापशाली वीरानें एकट्यानेच सर्व भूपाल जिंकून टाकिले ! संजया, अशा त्या महान् वीरार्शीं झुजणारे मत्पक्षीय वीर (कौरव) हे निंद्य नव्हत, ते सर्वथा प्रशंसनीयच मानिले पाहिजेत; ह्यास्तव कौरवांनीं जें काय केलें असेल तें निवेदन कर. तसेंच त्या समयी पुढें दुर्योधनानें काय केलें तेंही सांग.

संजय ह्मणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, पांडव-सैन्यानें कौरवसैन्याची दाणादाण उडविली तेव्हां कौरवांकडील बहुत वीर रणभूमीवर पडले, पुष्कळांचे हस्तपादादिक अवयव छिन्न-विछिन्न झाले, अनेकांच्या हातांतलीं आयुधें पतन पावलीं व चिखलें फाटून गेलीं, आणि बहुतांची वाहनें नष्ट होऊन चौहोंकडे एकच हाहा:कार उडाला ! तेव्हां तुझ्या पक्षाचे राहिले-साहिले थोडे कोधानें जळफळत शिविराप्रत प्राप्त झाले. राजा, त्या समयीं तत्पक्षीय वीर जणू काय पायांवाली तुडविलेल्या व दांत पाडून निर्विष केलेल्या सर्पाप्रमाणें भासत होते ! असो. सर्वजण गोदांत जमल्यानंतर त्यांनीं फिरून मसलत करण्यास प्रारंभ केला. त्या वेळीं कर्ण हा सर्पाप्रमाणें कोधाचे सुस्कारे देत व हात-बोटें मोडीत तुझ्या पुत्राकडे पाहून सर्वांस ह्मणाला, “अहो, आज अर्जुनानें एका-एकीं बाणवृष्टि करून आपणांस पराभूत केलें ह्याचें कारण त्याची दक्षता, दूरदृष्टि, दृढबुद्धि व समयज्ञता हें अमून शिवाय त्याम प्रसंगानुरूप वेळोवेळीं अधोक्षजाकडून स्वकर्तव्याबद्दल उत्तम सूचना मिळत अमत्त हेंही आहे; परंतु, राजा, मी तुला असें खातरिनि सांगतो की, उद्यां मी अर्जुनाचे सर्व मनोरथ नष्ट करीन. ”

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कर्णाचें भाषण श्रवण करून दुर्योधनानें ‘ बरें आहे, ’ ह्मणून हाटलें व

कौरवपक्षाच्या महान् महान् राजांना विश्रांति घेण्याविषयीं अनुज्ञा दिली; आणि नंतर ते सर्व राजे आपआपल्या तंबूत गेले व रात्रभर स्वस्थ झोप घेऊन पुनः मोठ्या उल्हासानें युद्धाकरितां बाहेर पडले. पुढें ते सर्व थोडे समरांगणांत प्राप्त होऊन पाहातात तों कुरुश्रेष्ठ धर्मराजानें बृहस्पति व शक्राचार्य ह्या उभयतांनाही संमत असा एक दुर्जय व्यूह मोठ्या श्रमानें रचिला आहे, असें त्यांस आढळून आलें. तेव्हां अशा ह्या व्यूहाचें भेदन करण्यास वृषभतुल्य स्कंध धारण करणारा, युद्धांत पुरंदराप्रमाणें प्रताप गाजविणारा, मरु-द्रुणांप्रमाणें बलिष्ठ, कार्तवीर्याप्रमाणें वीर्यवान् असा हा महापराक्रमी वीर कर्णच समर्थ आहे असें मनांत आणून शत्रुसंहारक दुर्योधनानें कर्णाचें स्मरण केलें; व सर्व सैन्याच्या मनांत तेंच येऊन, प्राणसंकटांत बंभुच जसें रक्षण करितो, तसें ह्या समयी महाधनुर्धर कर्णच आपलें रक्षण करील, असे उद्गार सर्वजण काढूं लागले व सर्वांचें मन कर्णाकडे लागलें.

धृतराष्ट्र ह्मणाला:—बा संजया, तुझां सर्वांचें मन कर्णावर लागलें अमतां मग दुर्योधनानें काय केलें बरें ? थंडीनें कुडकुडलेल्या प्राणी जशी सूर्यदर्शनाची अपेक्षा करितो, तशी व्यूहाला भ्यालेल्या सैन्यानें कर्णाच्या भेटीची अपेक्षा केली काय ? रात्रीस सर्व सैन्य आपआपल्या शिविरास जाऊन प्रातःकाळी पुनः युद्धास आरंभ झाला, तेव्हां विकर्तनपुत्र कर्णानें कशा प्रकारें युद्ध केलें ? त्याप्रमाणेंच कर्णार्शीं सर्व पांडव कसे लढले ? संजया, कर्णाचें सामर्थ्य काय म्हणून सांगावें ? तो प्रतापशाली वीर एकटा संजयांसहित पांडवांना ठार करण्यासारखा ! त्याच्या बाहूंच्या ठिकाणीं इंद्र किंवा विष्णु ह्यांच्याप्रमाणें युद्धसामर्थ्य ! त्या महा-तम्याचीं शस्त्राखें व पराक्रम हीं केवळ भयंकर !

बरें, अर्जुनानें दुर्योधनाला अत्यंत जर्जर केलेले पाहून व त्याप्रमाणेच इतर पांडवांचा अतिशयित पराक्रम अवलोकन करून त्या महारथ कर्णानें काय केले? संजया, कर्णाच्या आश्रयावरच दुर्योधन इतका उन्मत्त झाला व त्याची भावी नाशावर दृष्टि गेली नाही. अरेरे! मूर्ख दुर्योधनानें पुनः युद्धांत कर्णाच्या बळावर पुत्रांसमवेत व कृष्णासमवेत पांडुपुत्रांना जिंकण्याची उमेद धरिली काय? अरे, कर्णासारखा महान् योद्धा समरांगणांत पांडवांना जिंकण्यास समर्थ झाला नाही ही मोठ्या दुःखाची गोष्ट होय. स्वचित् दैवाची प्रतिकूलता हेंच ह्याचें कारण होय. अरेरे! द्यूताचें हें भयंकर फळ प्रस्तुत प्राप्त होत आहे! संजया, दुर्योधनाच्या दुष्ट कृत्यांपासून उत्पन्न झालेले दुःखरूप जलाल व घोर असे अनेक शर मला सहन केले पाहिजेतना! वा संजया, त्या द्यूतप्रसंगी कर्णाला सौबल हा मोठा मुत्सद्दी वाटला, नाही बरें? अरेरे! कर्णासारख्या प्रतापशाली वीराच्या इच्छे-नुरूप दुर्योधन हा नेहमी वागत असतां त्या महान् युद्धामध्ये माझ्या पुतांचा नित्य पराभव व नाश झालेला मी ऐकितों, समरांगणांत पांडवांचें निवारण करण्यास कोणीही समर्थ होत नाही, व ते खुशाल माझ्या सेनेचा संहार उडवीत आहेत, तेव्हां देव हें बलवत्तर खरें, असेंच म्हटलें पाहिजे!

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, द्यूत वगैरे जीं कारणें तुम्ही पूर्वीं उपस्थित केलीं तीं सर्व न्याय्यच होतीना? अरे, जी गोष्ट होऊन गेली, तिचा मागून विचार करून तळमळत बसावयाचें हा मानवी स्वभावच दिसतो! परंतु त्यापासून कांहींएक लाभ होत नाही; उलट हानि मात्र होते. कारण ज्या कार्याला आपण अंतरलों, तें तर पुनः साध्य होत नाहीच, पण त्याच्या चिंतनें आपला नाश

मात्र होतो! राजा, आतां राज्यलाभ आदिकरून मनीषासिद्धीस जाणें अशक्यच होय; कारण, तुला योग्यायोग्य कृत्य कोणतें हें कळत असतां—ही तूं त्याचा पूर्वीं विचार केला नाहीस. राजा, पांडवांशी युद्ध करूं नको म्हणून तुला नानाप्रकारें सांगितलें असतां त्याचा तूं अविचारानें अव्हेर केलास आणि तूं पांडवांना उद्देशून बहुविध घोर पापकर्म केलीस; ह्यास्तव, राजा, क्षत्रियांचा हा जो महान् संहार घडत आहे, ह्याचें कारण तूं होय! असो; राजा, आतां त्या गत गोष्टीचा विचार करण्यांत अर्थ नाही; व्यर्थ शोक करून काय उपयोग! पुढें जो कांही घोर नाश झाला, तो सर्व श्रवण कर.

प्रभाती दुर्योधनाकडे जाऊन त्याला कर्ण म्हणाला:—राजा, आज मी प्रतापशाली अर्जुनाशी युद्ध करून त्याला वधीन किंवा तो मला वधील. मला व त्याप्रमाणेंच त्यालाही बहुत कार्ये असल्यामुळें हा वेळपर्यंत त्याचा व माझा युद्धप्रसंग घडला नाही. पण आतां मी यथावृद्धि जें कांहीं सांगत आहे तें हें कीं, रणांत अर्जुनाला मारल्याशिवाय मी माधारा येणार नाही! राजा, आपल्या ह्या सैन्यांतले मोठमोठे योद्धे समरांगणांत पतन पावले असून मी मात्र काय तो इंद्रानें दिलेल्या शक्तीनें रहित होतसाता रणभूमीवर उभा आहे. ह्यासाठीं अशा ह्या समयीं अर्जुन मजवर चालून आल्या-शिवाय रहाणार नाही; म्हणून ह्या प्रसंगीं जें श्रेयस्कर होईल असें मला वाटत आहे, तें ऐक. राजा, माझ्या व अर्जुनाच्या दिव्य आयुधांचें सामर्थ्य अगदीं समान आहे. शत्रूंनीं अस्त्रवृष्टि केली असतां तिचा भेद करण्यांत, लांबवर बाण फेंकण्यांत, नेमकाच शिताफीनें बाण मारण्यांत व अस्त्रांचा वर्षाव करण्यांत सव्यसाची अर्जुनाची व माझी बरोबरी होणार नाही. शारीरबल, मानसिक धैर्य, अस्त्रनैपुण्य, युद्ध-

विक्रम व अचूक शरसंधान ह्यांमध्येही अर्जुनापेक्षां माझ्या ठिकाणी अधिक सामर्थ्य आहे. आणि त्याप्रमाणेच अखिल आयुष्यामध्ये वरिष्ठ असें जें विजय नामक धनुष्य तेंही मजपाशीं सिद्ध आहे. राजा, माझ्या ह्या विजय चापाची महती काय वर्णावी! पूर्वी विश्वकर्मानें इंद्राचें प्रिय करण्याच्या हेतूनें हें तयार करून इंद्राला दिलें; तेव्हां त्याच्या साहाय्यानें इंद्रानें अनेक दैत्यसमुदायांस जिंकिले. राजा ह्या धनुष्याचा केवळ टणत्कार कानी पडतांच दशदिशांच्या ठिकाणी दैत्यांची मोठी त्रेधा उडून जाई! असें हें अपूर्व धनुष्य इंद्रानें परशुरामाला दिलें; आणि नंतर परशुरामानें मला अर्पण केले. राजा, मी आज अर्जुनाशी त्या धनुष्यानें युद्ध करणार; आणि समरांगणांत इंद्रानें अखिल दैत्यांचा जसा संहार उडविता तसा मी त्या महापराक्रमी व महाशक्तिमान् अर्जुनाचा संहार उडविणार! राजा, माझ्या ह्या विजय चापापुढें गांडीव चापाची मुळीच प्रतिष्ठा नाही. अरे, भार्गवानें ह्या चापानेंच एकवीस वेळां निःश्वसित पृथ्वी केली! ह्या धनुष्याचें दिव्य व अनुपम सामर्थ्य खुद्द भार्गवानें मला वर्णन करून सांगितलें आहे. ह्यास्तव आज मी हें धनुष्य घेऊन अर्जुनाशीं लढेन आणि त्याला मारून तुला व तुझ्या सर्व बांधवांना प्रमुदित करीन. राजा, एकदां मी अर्जुनाला वधिलें कीं सर्व उर्वीतल निर्वीर झाले म्हणून समज. मग पर्वत, वनें, द्वीपें ह्यांसह वर्तमान समुद्रवल्यांकित पृथ्वी तुझ्या हस्तगत होईल; आणि पुत्रपौत्रांसमवेत तूं तिचा अखंड उपभोग घेशील. राजा, आज मला कोणतीही गोष्ट अशक्य नाही. व त्यांतून तुझें प्रिय करावें हाच माझा मुख्य उद्देश असल्यामुळे, जें जें म्हणून अवश्य तें तें करण्यास मी अगदी तयार आहे आणि धर्मास अनुसरून आचरण

करणाच्या ब्रह्मनिष्ठ पुरुषास सिद्धि जशी निश्चयानें प्राप्त होते, तशी मी अंगीकारलेल्या या विहित कृत्यास ती निश्चयानें प्राप्त होईल. राजा, अशीशीं भुंजण्यास जसा वृक्ष समर्थ होत नाही, तसा रणांगणांत माझ्याशीं भुंजण्यास अर्जुन हा समर्थ होणार नाही; तथापि अर्जुनापेक्षां मजपाशी काय न्यून आहे, हेही म्यां तुला विदित करावें हा माझा धर्म होय. राजा दुर्योधना, अर्जुनाच्या त्या धनुष्याची ज्या दिव्य असून त्याचे ते महान् बाणभातेही मोठे दिव्य आहेत. त्याप्रमाणेच अर्जुनाचा सारथि गोविंद हा जसा आहे, तसा माझा सारथि नाही. अर्जुनाचें तें श्रेष्ठ गांडीव धनुष्य युद्धांत मोठें अजिंक्य व दिव्य असें आहे खरें, परंतु माझें विजय नामक महाधनुष्यही तसेंच प्रतापशाली व श्रेष्ठ आहे. राजा, धनुष्याचा विचार केल्यास मी अर्जुनापेक्षां अधिक बलवान् आहे ह्यांत संदेह नाही; पण अर्जुन हा माझ्यापेक्षां कोणकोणत्या बाबतींत अधिक बलवान् आहे तें श्रवण कर. राजा, अर्जुनाचें सारथ्य करण्यास दाशार्ह हा सिद्ध असून सर्व जगत् त्यास नमस्कार करीत आहे; त्याप्रमाणेच अर्जुनाचा तो दिव्य व कांचनमंडित रथ अग्निदत्त असल्यामुळे तो सर्वतोपरी दुर्भेद्य असा आहे; तसेंच अर्जुनाच्या रथाचे ते बलिष्ठ अश्व मनोवेगानें पळणारे असून त्याच्या त्या दिव्य ध्वजाच्या ठिकाणी द्युतिमान् व विस्मयकारक असा वानर अधिष्ठित आहे; आणि सर्व ब्रह्मांडाला उत्पन्न करणारा भगवान् कृष्ण हा त्याच्या त्या रथाचें संरक्षण करीत आहे. राजा, यद्यपि ह्या इतक्या गोष्टी मजपाशीं कमती आहेत, तथापि त्या अर्जुनाशी युद्ध करण्याची मी इच्छा करीत आहे. राजा, आपल्या पक्षाकडे असलेला हा रणधुरंधर शल्य कृष्णाप्रमाणें सारथ्यकर्मीत फार कुशल आहे. ह्यास्तव तो जर माझें सारथ्य करील, तर तुला

स्वचित विजय प्राप्त होईल; ह्यामाठी, तो महा-
पराक्रमी शल्य माझे सारथ्य करील व माझ्या
रथावर गार्ध्रपत्र बाणांचा विपुल पुरवठा होईल
आणि उत्तमोत्तम अश्वानी युक्त असे बलिष्ठ
बलिष्ठ रथ नित्य माझ्या मागे चालत अस-
तील, अशी सर्व द्यनभ्या लाव, क्षणजे
माझ्या ठिकाणी अर्जुनापेक्षा अधिक सामर्थ्य
येईल. राजा, कृष्णापेक्षा शल्य हा सार-
थ्यांत अधिक कुशल आहे व अर्जुनापेक्षा
मी युद्धकर्मांत अधिक प्रवीण आहे. राजा,
परवीरघ्न दशार्ह कृष्ण अश्वविद्येंत जितका निपुण
आहे, तितकाच निपुण महारथ शल्यही त्या विद्येंत
आहे. शिवाय बाहुवीर्यांत मद्राज शल्याची
बरोबरी करील असा कोणीही नाही, आणि
त्याप्रमाणेच अश्वविद्येंत कोणताही धनुर्धर
माझ्यापुढे ठिकाव काळणार नाही. त्यातून,
माझ्या इच्छेप्रमाणे मला शल्य सारथी मिळेल
व इतर सर्व गोष्टी अनुकूल होतील, तर मी
अर्जुनाला युद्धांत निःसंदेह जिंकून. राजा,
ह्याप्रमाणे सर्व सिद्धता झाल्यावर, इंद्रप्रभुस्य
देवही माझ्यावर चाल करून येण्यास समर्थ
होणार नाहीत. एकदां तूं माझे मनोरथाप्रमाणे
सर्व गोष्टी घडवून आण. क्षणजे मी संग्रामांत
काय काय करून दाखवितों तें तुझ्या दृष्टीस
पडेल. राजा फार काय मागूं ? असें झाल्या-
वर माझ्याशी भिडण्यास मुरामुरही समर्थ
होणार नाहीत. मग मानुष्योर्वात जन्म पाव-
लेल्या पांडुमुतांची ती कथा काय ? माझ्या
इच्छेनुसार सर्व द्रव्यरथा जमल्यावर आपणाशी
युद्धास प्रवृत्त झालेल्या पांडवांना मी पूर्णपणे
जिंकलेंच म्हणून समज !

भंजय सांगतो :— राजा धृतराष्ट्रा, परम-
प्रतापी कर्णाने ह्याप्रमाणे भाषण केलें तेव्हां
दुर्योधनाला मोठे समाधान वाटलें व तो मोठ्या
गौरवाने बोलूं लागला.

दुर्योधन क्षणाला :—कर्णा, तुझ्या क्षणभ्या-
प्रमाणे मी सर्व कांही करितों. ज्यांवर बाणभोते
ठेविले असून ज्यांस अश्व जोडिले आहेत असे
रथ रणांगणांत तुझ्या मागे नित्य चालत
राहातील, व त्याचप्रमाणेच गार्ध्रपत्र शरांचा तुझ्या
रथावर भरूर पुरवठा होईल; आणि आधीं सर्व
भपाल तुझ्या पाठीवर त्वत्साहाय्यार्थ सिद्ध राहूं.
संजय सांगतो :— राजा, ह्याप्रमाणे प्रोत्साहन-
पर भाषण करून तुझा प्रतापशाली पुत्र मद्रा-
धिपति शल्याकडे जाऊन त्याशी बोलूं लागला.

अध्याय वत्तिसावा.

— ० —

शल्य्याची सारथ्यार्थ प्रार्थना.

भंजय सांगतो : राजा धृतराष्ट्रा, नंतर
तुझा पुत्र दुर्योधन हा मद्राधिपति महारथ शल्य
ह्याजकडे मोठ्या वित्याने गेला व त्यास प्रेम-
पूर्वक म्हणाला. " हे महाभाग मदेश्वरा, तूं
मत्स्यव्रत असून शत्रूंचा तोष वाईटिणाग आहेस
व तुझ्या अंगी रणशौर्य असल्यामुळे तुला
पाहून शत्रूंची अगदी त्रधा उडून जात; त्या-
प्रमाणेच, हे परात्त्वयुशाल्य, सर्व महान् महान्
राजांमध्ये कर्णाच्या साहाय्याकरिता मी स्वतः
तुलाच अतिशय पसंते करितों, हेही तूं ऐकिलें
आहेसच; ह्यातून, हे शत्रुपक्षमंहरका अद्रि-
तीय वीरा मदेशा, मी तुला हात जोडून
प्रांजलपणे अशी प्रार्थना करितों की, हे महारथा,
अर्जुनाचा नाश करण्यामाठी व माझे हित कर-
ण्यामाठी तूं सारथ्य करण्याची कृपा कर. जर
तूं सारथ्य करशील तर राक्षस कर्ण हा स्वचित
माझ्या शत्रूंना जिंकून टाकील. हे शल्या, रण-
भूमीवर वामुद्रताप्रमाणे वर्णाने सारथ्य करण्यास
योग्य असा तुझ्यावांचून दुसरा कोणी दिसत
नाही. तेव्हा ब्रह्मेदेवाने शंकराचे सारथ्य पत-
करून जसे त्याचे रक्षण केलें, तसे तूं कर्णाने

सारथ्य पतकरून त्याचें सर्व प्रकारें रक्षण कर. हे मद्राधिपा, सर्व आपत्तीमध्ये कृष्ण ज्याप्रमाणें अर्जुनाचें प्रतिपालन करितो, त्याप्रमाणें तूं आज राधेयाचें प्रतिपालन कर. अरे, आपल्या पक्षाचे मुख्य वीर काय ते भीष्म, द्रोण, कृप, कर्ण, वीर्यवान् भोज, मौबल शकुनि, अश्व-त्यामा, तूं व मी असे नऊ, आणि आपण तदनुसार आपलें सैन्य विभागून त्याचे नऊ भाग केले; परंतु महात्मे भीष्म व द्रोण ह्यांचे भाग आतां राहिले नाहीत. त्या महान् वीरांनी आपआपल्या भागांकडून वास्तविकपणें जो कांही शत्रुसंहार करावयाचा त्याहूनही अधिक केला, परंतु त्या दोघांही महाधनुष्यांचा रणांगणांत शत्रूंनी कपटांनं वध केला ! असो. हे मद्राजा, ते दोघेही योद्धे अचाट पराक्रम गाजवून इहलोक सोडून स्वर्गलोकाले चालले झाले व त्याप्रमाणेंच आपल्याकडील दुसऱ्याही पुष्कळ वीरपुंगवांनी आपआपल्या शक्त्यनुसार प्रताप दाखवून व शत्रुहस्ते वध पावून स्वर्गलोकचा मार्ग आक्रमिला ! अशा प्रकारें, हे मद्रेश्वरा, माझ्या सैन्याची दुर्दशा झाली असून आतां त्यांत फारसे वीर राहिले नाहीत. आरंभी पांडवांचें सैन्य आपल्यापेक्षां कमी असतां आपल्या सैन्याची ही अशी दुर्दशा झाली, तेव्हां आतां काय करावें बरें ? प्रस्तुत पांडव आपल्यापेक्षां बलिष्ठ झाले असून त्यांच्या ठिकाणी खरोखरीच विलक्षण पराक्रम विद्यमान आहे; ह्यास्तव त्यांच्या हातून आपल्या मेनेचा नाश होणार नाही असा कांही तरी उपाय योज. आज कौरवसेनेतील मोठमोठे योद्धे समरांगणांत पांडुतनयांनी वधिले असून एक महाबाहु कर्ण व एक सर्वलोकमहाग्न्य तूं असे दोघे मात्र माझ्या हिताकरितां तत्पर आहा. आज कर्णाच्या मनांत अर्जुनाशी युद्ध करावें असें आहे, व कर्णाच्या हस्ते कौरवपक्षास

खचित विजय प्राप्त होईल अशी मला पूर्ण स्वातरी वाटते. पण त्याचें सारथ्य करण्यास योग्य असा कोणीही श्रेष्ठ पुरुष ह्या भूतलावर दिसत नाही. म्हणून, अर्जुनाच्या रथावर कृष्ण जसा उत्तम सारथि आहे, तसा तूं कर्णाच्या रथावर सारथि हो. राजा शल्या, कृष्ण हा सारथ्य करून अर्जुनाचें संरक्षण करित असल्यामुळे अर्जुन कसकसे पराक्रम करू शकला, हे सर्व तुला दिसत आहेच. पूर्वी अर्जुनाच्या अंगी असलेले अद्वितीय शौर्य दृगोच्चर झालें नाही. त्यानें पूर्वी असा शत्रुनाश कधीही केला नव्हता. हल्ली त्याचा जो हा प्रताप व्यक्त होत आहे, तो त्या कृष्णार्जुनांच्या संघशक्तीचा परिणाम होय. ते दोघे आतां एकत्र आल्यामुळे कौरवांची ही महाचमू प्रत्यही रणांगणांतून विदीर्ण होऊन उन्वस्त होत चाललेली दिसत आहे. हे महाद्युते, प्रस्तुत कर्णाच्या व तुझ्या अशा दोघांच्या मात्र सैन्यांचे कांही भाग अवशिष्ट आहेत, ह्यास्तव तुम्ही दोघांनी आपली सैन्ये एकत्र करून एकदम शत्रूंचा नाश करा. ह्या महान् युद्धामध्ये, अरुणाच्या मदतीनें सूर्य जसा अंधःकाराचा उच्छेद करितो, तसा तूं कर्णाच्या मदतीनें शत्रूंचा उच्छेद कर. राजा शल्या. प्रातःकालीन सूर्याप्रमाणें द्युतिमान् असे तुम्ही कर्णशल्य रणांगणांत शत्रुनाशार्थ उद्युक्त झाल्यां म्हणजे पांडवाकडील मोठमोठे महारथ तत्काळ पलायन करतील. सूर्यारुणाना पाहून अंधःकार जसा नष्ट होतो, तद्वत् तुम्हांला पाहून पांचाल व मंजय ह्यांसमवेत सर्व पांडव नष्ट होतील. अरे, ही तुमची जोडी मोठी अपूर्व होय कर्ण हा रथ्यांमध्ये श्रेष्ठ व मद्राधिपति तूं मारथ्यांमध्ये श्रेष्ठ ! आजपर्यंत असा हा अपूर्व योग पूर्वी कधी जमला नाही व पुढें कधी जमणारही नाही. ज्याप्रमाणें सर्व

संकटांमध्ये अर्जुनाला कृष्ण संभाळतो, त्या-
प्रमाणे रणांगणांत कर्णाला त्यां संभाळावे हें
उचित होय. हे मद्रेश्वरा, कर्णाचे सारथ्य कर-
ण्यास तूं सिद्ध झालास तर समरांगणांत कर्णा-
वर चालून येण्यास प्रत्यक्ष इंद्रप्रमुख देवांचीही
छाती होणार नाही, मग यःकश्चित् पांडवांची
ती कथा काय ? ह्या माझ्या भाषणावर तूं
पूर्ण भरवमा ठेव. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, दुर्यो-
धनाचे भाषण शल्याला मुळीच मानवले नाही.
त्याच्या योगें तो अतिशय संतापला, कपाळाला
आठ्या घालून व भुंवया चढवून पुनः पुनः हातबोटें
मोडूं लागला, आणि कोपानें त्याचे नेत्र
आरक्त होऊन गरगर फिरूं लागले ! राजा,
कुल, शील, ज्ञान, विभव व बल ह्यांविषयी
शल्यास मोठा अभिमान होता. ह्यास्तव, तो
दुर्योधनास असें ह्मणाला.

शल्य म्हणतो:—राजा गांधारीपुत्रा, तूं
माझा उघड उघड अवमान करितोस, ह्यावरून
खचित तुला माझ्या सामर्थ्याविषयी शंका
आहे, ह्यांत संदेह नाही; अरे, नाही तर तूं मला
सारथ्य कर म्हणून कधीही विनदिक्तपणें
बोलला नसतास ! अरे, तूं माझ्यासारख्या वीरा-
पक्षां कर्णाला अधिक मानितोस व त्याची प्रौढी
गातोस, परंतु मी त्याला माझ्याशी तुल्य असा
वीर गणीत नाही हें पक्कें ध्यानांत ठेव. राजा,
ज्या महाबलिष्ठ वीराला म्यां जिंकावे असें तुला
वाटत असेल, त्या वीराचें नांव मला सांग,
ह्मणजे त्यास जिंकून मी आपला आल्या
मार्गानें परत जाईन; अथवा, हे कुरुनंदना, आज
मी एकटाच शत्रूंशी युद्ध करितों, ह्मणजे
युद्धांत शत्रूंना भस्म करून टाकण्याचें
सामर्थ्य माझ्या अंगी किती आहे हें
तुझ्या दृष्टीपत्तीस येईल ! राजा दुर्योधना, आह्मां-
सारखे पुरुष अंतर्दुर्मां योग्य असा अभिमान

वाळगून आपआपल्या अंगीकृत कार्यास
प्रवृत्त होत असतात; ह्याकरितां तूं आह्मां-
विषयी शंका घ्यावीस हें सर्वथैव अनुचित
होय. राजा, युद्धसामर्थ्यासंबंधानें तूं माझी
मानखंडना अगदी करूं नको. हे माझे वज्र-
तुल्य बळकट व मुदृढ बाहू अवलोकन कर;
तसेंच हें माझे देदीप्यमान धनुष्य व सर्पतुल्य
शर पहा; त्याप्रमाणेंच वायुवेगानें चालणाऱ्या
उत्कृष्ट अर्थांनी युक्त अशा ह्या माझ्या युद्धार्थ
सिद्ध असलेल्या रथाकडे दृष्टि टाक; आणि
तद्वत्तच हेमपट्टविभूषित अशी ही माझी गदा
अवलोकन कर. राजा, मी आपल्या पराक्रमानें
ही सर्व पृथ्वी फोडून टाकीन, सर्व पर्वत इत-
स्ततः फेंकून देईन, व सर्व समुद्र कोरडे पाडीन !
तेव्हां अशा प्रकारें शत्रुनिग्रह करण्यास समर्थ
अशा प्रबळ योद्ध्याला नीच पुरुषाचें सारथ्य कर-
ण्यास तूं सांगत आहेस तें काय म्हणून ? ह्यास्तव,
राजा, नीचकुलोत्पन्न अधिरथपुत्र जो कर्ण
त्याचें सारथ्य करण्याच्या कामावर तूं माझी
नेमणूक करूं नयेस, हें चांगलें. पापकुलांतील
पुरुषाचें दास्य करण्यास श्रेष्ठ कुलांत जन्मलेला
मी योग्य नाही. आतां कदाचित् तूं ह्मणशील
कीं, ‘ हा शल्य प्रस्तुत माझ्या अधीन आहे,
ह्यास्तव मी सांगेन ते ह्यानें ऐकिले पाहिजे ’ पण हें
तुझें ह्मणणें ठीक नाही. सध्या मी तुझ्या
अधीन झालेला आहे खरा, पण तो तुझ्या
सत्तेनें अधीन झालों आहे असें नाही, मी आपण
होऊन प्रेमानें तुझ्या अधीन झालेला आहे.
ह्याकरितां, वरिष्ठ कुलांत जन्मलेल्या मला जर
तूं नीच-कुलोत्पन्न कर्णाच्या दास्यांत टाक-
शील, तर ह्या नीचोच्चधर्मीत उत्पन्न होणाऱ्या
वैपरीत्याचें पातक तुझ्या माथी बसेल हें पक्कें
ध्यानांत ठेव. राजा दुर्योधना, ब्रह्मदेवानें
आपल्या मुखापासून ब्राह्मणांची उत्पत्ति केली,
त्यानें क्षत्रियांस आपल्या बाहूंपासून निर्माण

केले, वैश्य हे ब्रह्मदेवाच्या मांड्यांपासून उत्पन्न झाले, आणि शूद्र हे पायांपासून निर्माण झाले. अशी स्पष्ट श्रुति आहे. ह्या चार वर्णांपासून अनुलोमज व प्रतिलोमज अशी वर्णविशेष द्विधा मृष्टि झाली आहे. इतर वर्णांचे संरक्षण करणे, संपत्ति मिळविणे व तिचे दान वगैरे करणे हे काम क्षत्रियांनी करावे; यज्ञयाग करविणे, वैद्विद्या शिकविणे व निर्मल दानांचा प्रतिग्रह करणे ह्या गोष्टी कर्णज लोकावर अनुग्रह करण्याकरितां ह्या भूतलावर ब्राह्मणांची स्थापना करण्यांत आली आहे; त्या प्रमाणेच वैश्यांचा आचार झटला ह्मणजे त्यांनी कृषिकर्म करावे. पशु पाळवे व दानधर्म करावे. हा होय; आणि शूद्रांचे स्वकर्तव्य कोणते ह्मणशील तर त्यांनी वरिष्ठ अशा निम्ही वर्णांनी परिचर्या (नोकरी) करावी हे आहे. राजा, मृतांचे विहित कर्म झाले ह्मणजे ब्राह्मण व दासिय ह्यांची सेवा करावी. मृताची आज्ञा क्षत्रियांनी मानावी हा मुळीच सदाचार नव्हे. मी मूर्खानिषिक्त राजाधि असून मोठा कुलीन आहे. मी प्रख्यात महारथ असून माझे दास्य व भूतन बंदिजनांना (मृतांना) करणे हा धर्म होय. ह्यांतच अशी मोठी योग्यता धारण करणाऱ्या शत्रुबलसंहारक महावीराने मृतां रणांगणांत मृतपत्र कर्णांचे सारथ्य करणे हे सर्वथा अनुचित होय. अशा करण्याने माझा माननेम होईल. ह्यांतच, हे गांधारीपुत्रा, आतां युद्ध करण्याची माझी इच्छा नाही, तूं आज मला स्वमूर्खी जाण्यास अनुमोदन दे.

संजय सांगतो:- राजा भूतगप्ता, ह्याप्रमाणे भाषण करून युद्धभुरगें शल्य हा संतप्त होतनाता तत्काळ उठला व राजसमूहांतून चालला गेला. तेव्हां मोठ्या गौरवाने व प्रेमाने तुझा पुत्राने त्वासु थांबून धरिले व सर्वार्थसिद्धि करून देणारे सामपूर्वक मधुर भाषण

केले. त्या समयी दुर्योधन त्यास ह्मणाला, "हे मद्राज शल्य, तूं जें म्हणाल्यस तें निःसंशयपणे मत्स्य होय; पण माझा जो कांही हेतु आहे, तो ध्यानांत आण. राजा, कर्ण हा तुझ्यापेक्षा अधिक पराक्रमी आहे असें मी म्हणत नाही, अथवा तुझ्या युद्धनेपुण्याबद्दलही माझ्या मनांत शंका येत नाही. मद्राधिपति शल्य हा असत्य असें भाषण करण्यास मिद्ध होणार नाही अशीच माझी खात्री आहे. आजपर्यंत तुझ्या घराण्यांनील श्रेष्ठ पुरुष कुत (मत्स्य) भाषणच करीत आले व ह्यामुळेच तुला आर्तार्येनि (मत्स्यवक्त्यांच्या कुळात जन्मलेला) असे नांव प्राप्त झाले असें मी मानितों. त्याप्रमाणेच, हे मानदा, युद्धामध्ये तूं शत्रूंच्या हृदयांत शल्यवत् पीडा करितोस, म्हणूनच तुला शल्य हें नांव ह्या भूतलावर मिळाले असें मांगतात. हे उदारा धमेझा शल्य, तूं जें कांही पूर्वी म्हटलें आहेस, तदनुसृतच मी तुझी प्रार्थना करीत आहे, तर तूं तें सर्व कर. मद्राधरा, तुझ्यापेक्षा वीरवात् राधिय हा नाही व मीही नाही. प्रस्तुतच्या युद्धांत माझी तुला अशी विनंति आहे की, तूं कर्णाच्या बलिष्ठ अर्थांचे नियंत्रण कर. राजा, कर्ण हा धनंजयापेक्षा अधिक गुणी आहे असा माझा समज आहे व तूं वामदेवापेक्षा अधिक गुणी आहेस असें सर्व लोक मानितात. राजा, कर्ण हा अश्वविद्यंत अर्जुनपेक्षा अधिक निपुण आहे आणि तूं अश्वज्ञानांत व बलांत वामदेवापेक्षा अधिक समर्थ आहेस. हे मद्राधिपा, कृष्णाला अश्वविद्या उपलब्ध आहे खरी; पण त्याच्या दुष्पट ती तुला उपलब्ध आहे. ह्यास्तव मी तुझी योग्यता कृष्णापेक्षाही अधिक मानितों !"

शल्य म्हणाला:- राजा दुर्योधना, भर-

१ कृतं एव अयं आश्रयः येषां ते कृतार्यनाः ।
तेषां गोत्रापत्यं आर्तार्यनि ।

सेन्यामध्ये ज्या अर्थां तूं मला कुण्यापेक्षा अधिक वर्चस्व देत आहेस, त्या अर्था मी तुजवर प्रभुदित झालों आहे ! हा पहा. अर्जुनाशी युद्ध करण्यास मित्र झालेल्या त्या पराक्रमी व विजयशाली राधेयांचे सारथ्य करण्यास मी तयार आहे ! तथापि, राजा, माझी एक अट मात्र आहे. ती ही की, मला जे उचित दिसेल ते मी कर्णाला बोललों असतां तें त्यानें सहन केले पाहिजे.

संजय सांगतो :— राजा धृतराष्ट्र, शल्यानें हे मापण एकून कर्णामहिले दुर्योधनानें ' बरे आहे ' असें म्हणून त्यास अनुमोदन दिलें.

अध्याय तेहतिसावा.

— ० —

त्रिपुराख्यान.

दुर्योधन म्हणाला :— हे मद्राधिषा शल्या, मी पुनः जे कांही सांगतां तें श्रवण कर. पूर्वी देव व दैत्य ह्यांनं युद्ध चालू असतांना जे कांही घडले, व जे मी पित्याच्या मर्माप महर्षि मार्कंडेयांपासून ऐकिलें, तें मी तुला सविस्तर निवेदन करितों, तर तूं तें चित्त देऊन ऐक; त्याविषयी कोणत्याही प्रकारची शंका मनांत आणू नको. राजा, पूर्वी देव व दैत्य हे परस्पराना जिंकण्याच्या उद्देशानें भयंकर युद्ध करीत असतां तारकामुराची देवांना फार भीति पडली तेव्हां तारकामुराचा नाश केल्याशिवाय आपला हट्टोग जाणार नाही, असें मानून देवांनीं दैत्यांशी मोठ्या निकरानें युद्ध आरंभिलें व त्यांत देवांना यश येऊन दैत्यांच्या अगदी मोडही झाल्या, असें सांगतात. ह्याप्रमाणें दैत्यांची वाताहत झाली असता तारकामुराचे तीन पुत्र ताराक्ष, कमलाक्ष व विद्युन्माली हे थोर तपश्चर्या करण्यास प्रवृत्त झाले व त्यांनी ती उत्तम प्रकारें चालवून आपली पुष्ट शरीरें अगदी कुश करून टाकिली. राजा, त्या तपो-

नुष्ठानांत त्यांनीं बाह्येंद्रियांचा जय, चित्तची एकाग्रता, अंतर्बाह्य शुद्धि व समाधियोग हीं इतकीं मिश्र केली की, पितामह ब्रह्मदेव त्यांजवर प्रसन्न होऊन वर देण्यास उद्युक्त झाला. त्या वेळी ताराक्षादि तीनही अमुरपुत्रांनी ब्रह्मदेवापाशीं ' आम्हांस कोणत्याही प्राण्यापामून केव्हांही मरण येऊं नये. ' म्हणून वर मागितला; पण तेव्हां लोकनायक प्रभु ब्रह्मदेवानें त्यांलेंच सांगितलें की, ' अमुरपुत्रांही, कोणत्याही प्राण्यापामून मृत्यु येऊं नये हें तुमचें मागणें अनुचित होय; जगांत सर्वांमत्त्व कोणालाही नाही, ह्यास्तव तुम्ही येथून चालो व्हा. ह्याशिवाय दुसरा एखादा जो तुम्हांला आवडत असेल तो वर मागा. ' राजा शल्या, नंतर त्या तीनही दैत्यपुत्रांनी पुनः पुनः ग्लबितें केली व आपल्या मनाचा निश्चय करून ते फिरून सर्वलोकाधिपति ब्रह्मदेवाप्रत जाऊन मोठ्या यिनयानें त्यास म्हणाले की, " हे पितामहा, तीन पुरांचा आश्रय करून तुझ्या कृपेनें ह्या लोकीं सर्व भूमंडलांचें आम्हांस आक्रमण करितां येईल, एक सहस्र वर्षपर्यंत आम्ही ह्या प्रमाणें भूमंडलांचें आक्रमण केल्यावर मग आमची ही तीनही पुरें एकत्र होतील व आम्ही सर्वजण एखाद्या ठिकाणी जमूं, आणि त्यानंतर ह्या एकरूप झालेल्या तीनही पुरांना एका वाणांनं जो देवाधिदेव भक्ष करील, त्यापामून आम्हांस मृत्यु येईल, असा वर तूं आम्हांला दे. "

राजा, अमुरपुत्रांची ही प्रार्थना ब्रह्मदेवानें त्यागलीच मान्य केली व ' तुमची इच्छा पूर्ण होईल. ' असा वर अर्पण करून तो स्वर्गास चालता झाला. इकडे ताराक्षादि दैत्यमुतांना मोठा आनंद झाला; त्यांनी परस्परामध्ये पुढील कार्याची चर्चा केली व महासुर मयाला तीन पुरें निर्माण करण्याच्या कामावर नेमिलें. राजा, तो महाबुद्धिमान मया-

सुर म्हणजे केवळ विश्वकर्मा, दैत्यदानवांना अत्यंत वंदनीय, व आरंभिलेल्या कार्यात सदा अविश्रांत असा असल्यामुळे, उद्दिष्ट हेतूच्या सिद्धीकरितां घोर तपश्चर्या करून त्याने तिच्या बळावर तीन पुरें रचिली. त्या तिहीं पैकी एक पुर सुवर्णाचें, एक पुर रजताचें, व एक पुर कृष्णलोहाचें होतें. सुवर्णपुर स्वर्गांत होतें, रजतपुर अंतरिक्षांत होतें, व लोहपुर पृथ्वीवर होतें. ह्या तिन्ही पुरांची रचना अशां कांहीं अपूर्व होती की, जणू काय त्यांनींल प्रत्येक पुर चक्रावरच बसविलेले होतं व त्यामुळे ते थेंथेष्ट संचार करीत असे ! मद्राजा, त्या तीनही पुरांपैकी प्रत्येकाची लांबी व रुंदी शंभर शंभर योजनें अमून त्यांत घरे, वाडे, प्राकार, तोरणे वगैरे पुष्कळ होती, त्यांमध्ये मोठमोठ्या वाड्यांची जरी अगदी दाटी झालेली होती, तरी विस्तृत मार्गांमुळे मोकळी जागाही विपुल होती. त्यांमध्ये बहुविध प्रासाद व वेशीही पुष्कळ होत्या आणि त्यामुळे मोठी रम्य शोभा दिसत होती. राजा, त्या मोठ्या पुरांमध्ये निरनिगळे राजे होते. देदीप्यमान सुवर्णपुराचा अधिपति महात्मा ताराक्ष होता. रजतपुराचा स्वामी कमलक्ष हा होता, व लोहपुर हें विद्युन्मालीचें होतें. राजा मद्रेश्वरा, ह्याप्रमाणें ते तिघे दैत्यराजे पुरप्राप्तीनें प्रबळ झाले, तेव्हां अन्धवीर्यानें सर्व त्रेलोक्य आक्रमून वरचढ बनले व मदांध होतसाते ' प्रजापति ब्रह्मदेव तो कोणता ' असें झणूं लागले ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या दुर्धर दैत्यराजांचा चोहोंकडे प्रताप गाजूं लागतांच, ज्यांचा देवांनी पराभव करून टाकिला होता असे कोट्यवधि दैत्य-दानव पुनश्च मदोन्मत्त होऊन चोहोंकडून त्यांस येऊन मिळाले आणि महत् ऐश्वर्याची मनीषा धरून दुर्गम अशा त्रिपुरांत त्यांनी वास्तव्य केलें. राजा शल्या, ह्या प्रकारें मय-

निर्मित त्रिपुरांमध्ये सर्वत्र दैत्यदानवांची गर्दी जमली असतां त्या सर्वांची यथास्थित व्यवस्था व दिनचर्या मयामुराकडून चालत असे. ते सर्व अमुर मयाच्या आश्रयाने व सल्लामसलतीनें निर्धास्तपणें आपल्या व्यवसाय करीत असत; आणि त्रिपुरांत राहाणारा कोणताही अमुर ज्या ज्या गोष्टीची इच्छा करी, ती ती गोष्ट मयामुर आपल्या मायेनें त्यास संपादन करून देत असे.

मद्रेश्वरा, ताराक्षाला हरि नामक महा-बलिष्ठ पुत्र होता. त्यानें घोर तप करून पिता-मह ब्रह्मदेवाला तृप्त केले; आणि माझ्या पुरीत अशा प्रकारची एक वापी निर्माण व्हावी की, जिच्यामध्ये शस्त्रांनी हत झालेले दैत्य-दानव टाकिले असतां त्यांचें संजीवन होऊन ते पूर्ववत् बलिष्ठ व्हावे. 'असा त्यापाशी वर मागितला. ब्रह्मदेवानें तो वर ताराक्षपुत्राला दिल्या-बरोबर त्यानें मृतसंजीविनी वापी (विहीर) सुवर्णपुरीत निर्माण केली. नंतर, तिच्यांत जो मृत वीर टाकावा तो मृत्युसमयी ज्या वेपानें व ज्या रूपांनें असेल, त्या वेपानें व त्या रूपांनें तत्काळ पुनः युद्धार्थ प्रकट होऊं लागला. राजा, ह्याप्रमाणें ती वापी प्राप्त होतांच, दैत्यांपैकी जे कोणी धारातीर्थी पडत ते पुनः उठत. यामुळे त्यांचा जोर विलक्षण वाढून ते दैत्यदानव सर्व लोकांना गांजूं लागले. राजा, ह्याप्रमाणें अमुर महातपःसिद्धीनें संपन्न झाले, तेव्हां त्यांचा अगदीं क्षय होईनासा झाला व त्यामुळे देवांची भीति वाढूं लागली. अशा रीतीनें दैत्य प्रबळ होतांच त्यांची विवेकबुद्धि अस्तंगत झाली व त्यांस लोभमोहांनी प्रस्त करून टाकलें. पुढें ते अगदी निर्लज्ज होऊन त्यांनीं सर्व जगभर धुमाकूळ माजविला; व वरप्राप्तीनें अंध झालेल्या त्या दैत्यांना जेथें जेथें व जेव्हां जेव्हां गणांसह देव आढळले, तेथून तेथून व तेव्हां तेव्हां त्यांनी त्यांना पळवून लावून

स्वच्छंदानें मन मानेल तें करण्याचा क्रम आरंभिला. त्यांनीं देवांची आवडतीं उद्यानें, ऋषींचे पुण्यकारक आश्रम व जगतीतलावरील सुंदर सुंदर देश ह्यांचा विध्वंस उडविला आणि ते उच्छृंखल होऊन दुष्ट आचरण करूं लागले. ह्याप्रमाणें देत्यांनीं सर्व त्रैलोक्यास 'त्राहि भगवन्' अमें करून सोडिलें, तेव्हां सर्व देवांसमवेत इंद्र हा त्या त्रिपुरांशीं लढण्यास सिद्ध झाला व त्यानें चोहों बाजूंनी त्या पुरांवर वज्रप्रहार करून ती पुरे भरा करण्याचा प्रयत्न चालविला; परंतु पुनरु इंद्राला त्यांत यश आलें नाही. ब्रह्मदत्त वरानें अभेद्य झालेल्या त्या तीनही पुरांवर इंद्राचें वीर्यवान् आयुध जेव्हां व्यर्थ झालें, तेव्हां इंद्रानें भयभीत होऊन आरंभिलेल्या यत्न तसाच सोडून दिला. व तो आपल्या समागमें असलेल्या अग्निल देवांसहर्तमान पितामह ब्रह्मदेवाकडे गेला; आणि त्यानें असुरांपामून होत असलेल्या सर्व दुर्धर यातना त्यास निवेदन केल्या. इंद्रप्रभृति सर्व देव ब्रह्मदेवापाशीं प्राप्त झाल्यावर त्या सर्वांनी प्रथम त्याम साष्टांग प्रणिपात केले व इत्यंभूत वर्तमान मांगून त्रिपुरनाशार्थ उपाय विचारला.

तेव्हां ब्रह्मदेवानें देवांस म्हटलें: - देवहो, जो कोणी तुमचा अपराध करितो तो माझाही अपराध करितो, अमें मी मानितों. दुष्ट दुरात्मे असुर हे नित्य तुमचा द्वेष करीत असल्यामुळें ते माझे नित्य वैरी होत. माझी सर्व भूतां-विषयी निःमंशय समबुद्धि आहे, हें खरें; तथापि, धर्ममर्यादेचें उल्लंघन करणारांस वधावे हा मी नियम ठेविलेला आहे. अहो, ती तीनही दुर्गम पुरें एका वाणानें भरा झाली पाहिजेत. - ह्याशिवाय अन्य उपायांनी ती भरा व्हावयाची नाहीत; आणि तीं एका वाणानें भेदन करण्यास शंकरावांचून इतर देव समर्थ

होणार नाहीत. ह्यास्तव, तुम्ही सर्व देवहो, त्या महासमर्थ, विजयशाली, अंगीकृत कार्यांत अविश्रांत श्रम करणाऱ्या युद्धपुरंधर शंकराची प्रार्थना करून त्याजकडून त्रिपुरनाशाचें काम करून घ्या; त्याच्याच हातून त्या देत्यांचा वध निश्चयानें होईल.

राजा मद्रेशा, ह्या प्रकारें ब्रह्मदेवाचें भाषण ऐकून, तपश्चर्या व व्रतवैकल्यें करून शाश्वत ब्रह्माचें चिंतन करणारे ते धर्मशील देव ब्रह्मदेवाला अग्रभागीं वालून ऋषीसहवर्तमान पूर्ण मनोभावानें भगवान् शंकराला शरण गेले; आणि त्यांनी भयप्रसंगीं अभय देणाऱ्या, सर्वांच्या अंतर्दामी अधिष्ठान करणाऱ्या, सर्व त्रैलोक्य-भर व्याप्त असलेल्या, निर्गुण निर्वाकार महात्म्या शंकराची उग्र मूक्तांनी स्तुति केली. राजा, ज्या भगवान् शंकरानें नानाविध विशिष्ट तपश्चर्या करून आपल्या मनोवृत्तीचें दमन केलें, ज्याला आत्मानात्मविचाराचें पूर्ण ज्ञान आहे, व जो आत्म्याला सदांमर्वकाळ पूर्ण कळांत ठेवितो, त्या तेजोगाशि उमापति महेशास जेव्हां त्यांनी पाहिलें, तेव्हां भगवतांचें तें मंगलकारक लोकोत्तर रूप अवलोकन करून त्यांच्या मनोवृत्ति स्तब्ध झाल्या व त्यांनी सर्व विश्व हें एकाच परमात्म्याचें नानाविध भासणारें स्वरूप होय अशी कल्पना केली; आणि त्यांनी प्रत्येकी आपल्या मनांत जें भगवत्स्वरूप चिंतिलें होतें, तेंच त्या महात्म्याच्या ठायी दृग्गोचर झालेलें पाहून सर्वास मोठा चमत्कार वाटला; व जगत्पति शंकर हा सर्वभूतमय आहे अशी पूर्ण स्वातरी होऊन देव व ब्रह्मपि ह्यांनी धरणीतलावर लोटांगण घातलें. नंतर भगवान् शंकरानें प्रोत्साहन-पर भाषणानें त्यांचें स्वागत करून त्यांस उठविलें आणि बोला बोला अमें तो स्मितपूर्वक झगाला. ह्याप्रमाणें व्यंजकाची आज्ञा झाली तेव्हां त्यांच्या मनाला मोठा धीर आला व

त्यांनी श्रीशंकराची स्तुति करण्यास आरंभ केला.

त्या समयी ते ब्रह्मपि व देव ह्याणाले:—हे प्रभो देवाधिदेवा शंभो, तूं धनुष्य व वनमाला ही धारण केली आहेस, प्रजापति दक्ष ह्याच्या मखाचा तूंच विश्वंम केलास. सर्व प्रजापति तुझा स्तव करितात, तूं स्तुतीस योग्य असून आजपर्यंत पुष्कळांनी तुझी स्तुति केली आहे व पुष्कळांकडून प्रस्तुत तुझी स्तुति होत आहे. तुझा वर्ण पिंगट व आरक्त असून तूं मोठा उग्र आहेस. तुझी ग्रीवा नीलवर्ण असून तूं शूळ धारण केला आहेस, तुझ्या ठिकाणी अमात्र पराक्रम वसत आहे, तुझे नेत्र मृगनेत्रांप्रमाणे पाणीदार आहेत, तूं महान् महान् आयुष्यांनी युद्ध करितोस, तूं मोठा पवित्र व शुद्ध आहेस, तूं विश्वंम व क्षय करणारा आहेस, तुझे निग्रहेण करण्यास कोणीही समर्थ नाही, तू जगाचा संहारकर्ता आहेस. तूं बलानिष्ठ असून ब्रह्मस्वरूप आहेस, तुझी सत्ता सर्वत्र चालते, तूं अपरिच्छिन्न असल्यामुळे तुझे नामरूपादिकांनी वर्णन करणे अशक्य होय, तूं सर्व विश्वांचे नियंत्रण करितोस, चर्म हें तुझे वसन होय. तूं नित्य तपश्चर्येत रत असतोस. तूं सदा व्रतादिकांचे अनुष्ठान करितोस. काविकेय हा तुझा पुत्र होय, तुला तीन नयन आहेत, तूं मोठमोठी आयुधे धारण करितोस, तूं शरणागतांचे संकट निवारितोस, तूं ब्रह्मद्वेष्यांचे समुदाय मृत्युमुखी लोटितोस, तुझ्यापासूनच वनस्पतींचे संरक्षण होतं, नरांचा पालनकर्ता तूच होस. इंद्रियाचा व यज्ञांचा स्वामी तूच आणि तुझ्यापाशी मोठी मैत्रा व अमित विक्रम वस करीत आहे; हे देवाधिदेवा व्यंक्ता, मन, वाणी व कर्म ही सर्व आह्मी त्वत्पर करीत आहों, तर आम्हां दीन जनांना अमय देऊन आमचे मनोरथ सिद्धीस ने.

मंद्रेश्वरा, ह्याप्रमाणे स्तव श्रवण करून भग-

वान् शंकर प्रसन्न झाला व त्याने त्या देव-ब्राह्मणांचे भवागतपूर्वक अभिनंदन करून 'तुमची भीति नष्ट होईल.' असा वर दिला आणि 'आण्मी काय करू.' बोला.' असे ह्मटले.

अध्याय चौतिसावा.

—:०:—

त्रिपुरवधोपाख्यान.

दुर्योधन म्हणाला:— हे मद्राधिपा शल्या, ह्याप्रमाणे महात्म्या शंकराकडून पितर, देव व ऋषि ह्यांच्या समुदायांना अमय मिळाले, तेव्हां ब्रह्मदेवाने शंकराचा मोठा सत्कार करून लोकहितकारक भाषण केले.

ब्रह्मदेव ह्याणाला:— हे देवेश्वरा शंकरा, तुझ्या अंगुग्रहामुळेच मी हा प्राजापत्याधिकार चालवीत आहे; आणि ह्या अधिकाराच्या बळावरच मी दानवांना मोठा वर दिला आहे; पण प्रस्तुत दानवांनी अमर्याद वतन चालविल्यामुळे, पूर्वा षडलेल्या व पुढे षडून येणाऱ्या गोष्टीवर सत्ता चालविणाऱ्या शंकरा, त्यांच्या वधाकरितां तुझ्यावांचून दुसरा कोणी समर्थ होईल असे मला वाटत नाही; म्हणून हे देवाधिदेवा, शरण आलेल्या ह्या देवब्राह्मणांवर कृपा करून तूं ह्या दानवांचा संहार कर. हे मानदा, तुझ्या प्रसादामुळेच ह्या सर्व जगाला सुख मिळाले आहे; हे लोकेशा, तूच सर्वांचे आश्रयस्थान आहेस; आणि ह्यामुळेच आम्हां हे सर्व तुला शरण आलों आहों.

स्थानु ह्याणाला:— ब्रह्मप्रभूति देव-ऋषीनो, तुमच्या मी शत्रूंचा वध करावा असे माझ्या मनात येतें; परंतु तमं करण्याला मला एक-ठ्याला उमेड नाही; कारण. मृगद्वेषे दैत्यदानव हे मोठे बलिष्ठ आहेत. ह्यास्तव तुम्ही सर्व एक होऊन माझ्या अर्घ्या बळाचे साहाय्य घेऊन शत्रूंशी युद्ध कर व त्यांचा विश्वंम उडवा. अहो,

तुम्हीं एकत्र झाल्यावर तुमचें सामर्थ्य अचाट वाढेल, कारण संघशक्ति ही मोठी अनिवार्य होते.

देव ह्मणाले:—भगवन् शंकरा, आमच्या ठिकाणी जितकें बल व तेज आहे, त्याच्या दुप्पट बल व तेज त्या असुरांच्या ठिकाणी आहे, असें आह्मांस वाटतें; कारण, त्यांचें बल व तेज आह्मी पाहिलें आहे.

श्रीभगवान् ह्मणाला:—देवादिकहो, तुह्मांस पीडा करणारे ते पातकी दैत्यदानव सर्वतोपरी वध्य होत; ह्यास्तव माझ्या अर्ध्या बलानें व तेजानें त्या सर्व शत्रूंचा नाश करा.

देव ह्मणाले:—हे महेश्वरा, तुझें अर्धें बल व तेज धारण करण्यास आह्मी समर्थ नाही; ह्यास्तव आमच्या सर्वांच्या अर्ध्या बलतेजानें तूं शत्रूंना वधून टाक.

श्रीभगवान् ह्मणाला:—देवादिकहो, जर तुह्वांला माझें बल धारण करण्याला मुळीच सामर्थ्य नसेल, तर तुमच्या बलसाहाय्यानें आपलें बल वृद्धिंगत करून मीच ह्यांचा वध करण्यास सिद्ध आहे.

राजा शल्या, ह्याप्रमाणें भाषण ऐकून देवादिकांनी ' बरें आहे ' असें ह्मटलें; आणि नंतर त्या भगवान् शंकरानें त्या देवादिकांच्या अर्ध्या शक्तीनें आपल्या शक्तीस वृद्धिंगत केलें. राजा, तदनंतर शंकराचें बल सर्वांपेक्षा अधिक वाढलें व त्यामुळें तेव्हांपासून त्यास महादेव हें नांव प्राप्त झालें.

पुढें महादेव ह्मणाला:—देवहो, मी धनुष्य व बाण धारण करून रथांत अतिष्ठित होईन व तुमच्या त्या दैत्यदानव शत्रूंस समरांगणांत ठार करीन. ह्मणून तुम्ही मजकरीतां रथ व त्याप्रमाणेंच धनुष्यबाण ही सिद्ध करा, ह्मणजे मी शत्रूंना आजच्या आज भूतलावर पाडून टाकितों.

देव ह्मणाले:—हे देवेश्वरा शंकरा, सर्व त्रैलोक्यामध्ये जितक्या म्हणून मूर्ति आहेत,

तितक्या सर्वांचें तेज एकत्र करून त्या योनें महाबलिष्ठ असा एक उत्कृष्ट रथ विश्वकर्मा-कडून अत्यंत चातुर्यानें आह्मी सिद्ध करितों.

राजा शल्या, नंतर महान् महान् देवांनी रथ सिद्ध केला. त्यांनी विष्णु, सोम व अग्नि ह्यांची शंकराच्या बाणाच्या ठिकाणी योजना केली, अशीला त्या बाणाच्या शृंगाकार काड्याच्या ठिकाणी, सोमाला पात्याच्या ठिकाणी व विष्णूला पात्याच्या अग्रभागाच्या ठिकाणी योजिलें. त्या सुरोत्तमांनी मोठमोठी नगरें, पर्वत, वने व द्वीपें ह्यांनी युद्ध व सर्व प्राण्यांस आश्रयस्थान अशा वसुंधरा देवीची रथाच्या ठिकाणी योजना केली. त्यांनी मंदर पर्वताला त्या रथाचा अक्ष (आंस), गंगेला जंघा, दिशा व उपदिशा ह्यांना त्या रथावरील अलंकार, नक्षत्रमंडल हें ईषा (आंस व जूं यांना बांधावयाचें आडवें लांकूड), कृतयुग हें जूं, भुजगोत्तम वामुकि हा त्या रथाचा कुबेर (जूं बांधावयाची दांडी), हिमालय व विंध्य ह्या पर्वतांना अनुक्रमें अपस्कर (मागे बांधावयाची दांडी) व चक्रांचे आधार, आणि उदयास्त-पर्वतांना रथाची चक्रे बनविलें. त्यांनी दानवांचा आश्रय जो श्रेष्ठ समुद्र त्याला दुसरा अक्ष व मत्तर्षिमंडलाला परिष्कर (रथाच्या चाकांवरील धांवा वगैरे) बनविलें. त्यांनी गंगा, यमुना, मरुस्वती व आकाश ह्यांना धुरा बनविलें, इतर सर्व नद्या व जलाशय ह्यांची बंधादि सामग्रीच्या स्थानी योजना केली, व अहोरात्र, कला, काष्ठा. ऋतु ह्यांना अनुकर्प (रथाच्या अधोभागी असणारी दांडी), आणि देदीप्यमान ग्रहनक्षत्रांना वरूथ (रथावरील चिलखत) बनविलें. त्यांनी त्रिवेणुतुल्य धर्म, अर्थ, काम ह्या तिहींना रथातील तल्प (आरोह-स्थानें), फलपुष्पांनी भरलेल्या ओषधीलतांना घंटा, सूर्यचंद्रांना दुसरी चक्रे, आणि दिवस

व रात्र ह्यांना डावीकडील व उजवीकडील सुंदर बाजू बनविले. त्यांनी धृतराष्ट्रप्रमुख दहा नागपतींना दुसरी ईषा, भयंकर व फुसकारणाच्या सर्पांना बंधनरज्जू, आकाशाला जूं, संवर्तक व बलाहक मेघांना जुंवावरील चर्म, त्याप्रमाणेच कालवृष्ट, नहुष, कर्कोटक, धनंजय व इतर दुसरे जे नाग त्यांना अश्वाने मानेवरील केसर, दिशा व उपदिशा ह्यांना रथाला जोडलेल्या अश्वाने लगाम, संध्या, धृति, मेघा, स्थिति, सन्नति आणि ग्रह-नक्षत्रादिकांनी व्याप्त असे अंतरिक्ष ह्यांना रथाचे चमकदार बाह्यावरण, मुर, अनु, प्रेत व वित्त ह्यांचे अधिपति अनुक्रमे इंद्र, वरुण, यम व कुबेर ह्यांना रथाचे अश्व, सिनीवाली (सचंद्र अमावास्या), अनुमति (कलाहीन पौर्णिमा), कुहू (चंद्रहित अमावास्या), श्रेष्ठ राका (कलापूर्ण पौर्णिमा) ह्यांना अश्वबंधने, व सिनीवाली आदिकरून तिथीच्या अधिष्ठात्या पितरांना अश्वाने टांचा, नाल, कंटक वगैरे, आणि धर्म सत्य, तप व अर्थ ह्यांना दोरखंडे बनविली. त्यांनीं मन हे त्या रथाचा मुख्य आधार, वाग्देवी सरस्वती ही चालण्याचा मार्गच, व नानाप्रकारचे वर्ण ह्या वायुप्रेरित चित्रविचित्र पताका बनविल्या; आणि विद्युत् व इंद्रधनुष्य ही झळाळत असल्यामुळे त्या रथाला अद्वितीय कांति प्राप्त झाली. वषट्कार हा त्या रथावर प्रतोद झाला, गायत्री ही शीर्षबंधन झाली, पूर्वी महात्म्या शंकराच्या यज्ञाला संवत्सरात्मक जो काल मुनिश्चित करून ठेविलेला होता, तो त्याचे धनुष्य झाला. सावित्री ही रौद्रस्वन करणारी मोठी ज्या बनली, कालचक्र हे सुदुर्भेद, निर्मल, देदीप्यमान व रत्नखचित दिव्य कवच झाले, श्रीमान् कनकपर्वत जो मेरु तो ध्वजयष्टि बनला, विद्युल्लेनेने अलंकृत असे मेघ पताका बनले, आणि ऋत्विजांच्या मध्यंतरी जणू काय प्रज्वलित अमलेले पावकच त्या रथावर आरूढ

होऊन त्यांचे दिव्य तेज फांकू लागले ! राजा मद्रेशा, ह्या प्रकारे सिद्ध केलेला तो रथ पाहून देव अगदी विस्मित झाले, आणि सर्व त्रिभुवनांतील लोकोत्तर विभूति एकत्र झालेल्या अवलोकन करून देवांना मोठा चमत्कार वाटला व त्यांनीं महात्म्या शंकराला तो दिव्य रथ सिद्ध अमल्याबद्दल निवेदन केले.

मद्रराज शल्या, ह्याप्रमाणे शत्रूंचा संहार करणारा दिव्य रथ देवांनीं सिद्ध केला आहे, असे पाहिल्यावर त्यांत शंकराने आपली महान् महान् आयुधे ठेविली. आकाश हे ध्वजयष्टीच्या जागी योजिले व तिच्या अग्रभागी नंदिकेश्वराला बसविले. नंतर ब्रह्मदंड, कालदंड, रुद्रदंड व ज्वर हे रथावर आरूढ झाले व चारही दिशा रोखून रथाच्या सर्व बाजू राखू लागले. त्या महात्म्या देवश्रेष्ठाचे रथाचीं चक्रे अथर्वण व अंगिरस ह्यांनीं संभाळली. ऋग्वेद, सामवेद व पुराणे ही रथाच्या पुढे चालू लागली. इतिहास व यजुर्वेद ह्यांनी वृष्टभाग संभाळला. सर्व दिव्य विद्या व वाणी ह्या समोवताली उभ्या राहिल्या. आणि त्याप्रमाणे वषट्कार, उक्कार व मंत्रादिक हे सर्व रथाच्या अग्रभागी अधिष्ठित होऊन मोठी अपूर्व शोभा दिशू लागली. नंतर कालरूप रुद्राने युद्धार्थ षट्क्रतूंच्या योगे चित्रविचित्र भासणारे संवत्सररूप धनुष्य घेऊन आपली स्वतःची छाया हीच त्या धनुष्याला अखंड ज्या लाविली. ह्याप्रमाणे काल हा भगवान् रुद्र, संवत्सर हे त्याचे धनुष्य व कालरात्रि ही त्या रुद्रधनुष्याची अंगग ज्या झाली; आणि विष्णु, अग्नि व सोम हे त्या रुद्राचा बाण बनले. राजा, हे सर्व जगत् अग्नि, सोम व विष्णु ह्यांचेच विशिष्टरूप आहे, व भगवान् अमित-तेजस्वी रुद्राचा आत्मा म्हटला म्हणजे विष्णु हाच होय; ह्यास्तव रुद्राच्या त्या अपूर्व धनुष्याच्या प्रत्येकाचा केवळ टणत्कारही अमुरांना

सहन झाला नाही. शिवाय शंकरानें सोमवि-
ष्ण्वसिंमय अशा त्या बाणावर भृगू व अंगिरस
ह्यांच्या संतापामुळें स्वतःला उत्पन्न झालेला
असह्य क्रोध स्थापन केला होता. असो; राजा
मद्वेश्वरा, भगवान् शंकराचें सामर्थ्य काय
वर्णावें ? त्या नीललोहित, धूम्रवर्ण व कृत्तिवास
जगत्पालकाच्या ठिकाणीं सहस्रावधि आदित्या-
ची कांति झळळत असून जणू काय तो तेजा-
च्या ज्वालांनीं चोहोंकडून आवृत झाला होता.
तो मोठमोठ्या दुर्धर व अढळ वीरांनाही च्युत
करण्यास समर्थ असून ब्रह्मदेष्ट्यांचा विध्वंसक
व संहारक होता. धर्मशील जनांचें परित्राण
करणें व अधर्मशील जनांचा उच्छेद उडविणें
हेंच त्याचें ब्रीद असून, त्याच्या भोंवतालीं
अत्यंत पराक्रमी, भयंकर, मनोवेगानें चाल
करून जाणारे व दुर्धर्ष्य असे गण म्हणजे जणू
काय त्याच्या मनाच्या चतुर्दश वृत्तिच आप-
आपली कार्ये करण्यास सिद्ध होत्या. राजा,
ह्या प्रकारें भगवान् शंकर शत्रुमर्दनार्थ रथारूढ
होण्यास तयार झाला, तेव्हां त्याच्या ठिकाणीं
व त्याप्रमाणेंच त्याच्या गात्रांच्या ठायीं अधि-
ष्ठित असलेल्या ह्या रथावरजंगम सर्व विश्वा-
च्या ठिकाणीं मोठी अद्भुत कांति दृग्गोचर
होऊं लागली. राजा, अशा रीतीनें त्या लोको-
त्तर रथांत कवचधारी भगवान् शंकर धनुष्य
धारण करून व त्या धनुष्यावर सोमविष्ण्वग्नि-
संभव दिव्य बाण चढवून अधिष्ठित होण्यास
सिद्ध आहे असें अवलोकन करितांच देवांनीं
देवश्रेष्ठ वायूकडून मुगंधाची स्मृद्धि करविली
व त्यायोगें आतां अनुकूल वारा वाहात आहे,
अशी खातरी होऊन सर्वांस मोठा आनंद झाला !
नंतर महादेव शंकर त्या दिव्य रथावर आरूढ
झाला तेव्हां देवांना मुद्धां भय उत्पन्न झालें व
सर्व धरणी जणू काय कंपायमान होऊन
हादरून गेली ! राजा, तो भगवान् देवाधिदेव

शंकर रथावर चढण्यास सिद्ध झाला असता
महान् महान् ऋषि, देवांधर्वसमुदाय व अप्स-
रांचे समूह ह्यांनी त्याची स्तुति आरंभिली.
मोठमोठे ब्रह्मर्षि व देवगंधर्व त्याचें सामर्थ्य
वर्णन करूं लागले, स्तुतिपाठकांनीं स्तव चाल-
विला आणि नृत्यगायनांत कुशल अशा अनेक
अप्सरा नृत्यगायन करूं लागल्या. तेव्हां
वर देणाऱ्या खड्गपावणाधर श्रीभगवान्
शंकरानें मोठ्या प्रसन्न मुद्रें इतस्ततः
नेत्रकटाक्ष टाकून हंसत हंसत देवांना म्हटलें,
'देवहो, माझे सारथ्य कोण करणार ?' तेव्हां
देवसमुदायांनीं उत्तर दिलें, 'हे महादेवा, ज्यास
तूं आज्ञा करशील, तो तुझें सारथ्य करण्यास
सिद्ध आहे, ह्यांत अणुमात्र संदेह नाही.' तेव्हां
फिरून भगवान् शंकर देवांस म्हणाला, 'देवहो,
ज्याचें बळ माझ्याहून अधिक आहे असें
तुम्हांस वाटत असेल, तो कोण हें प्रथम आप-
सांत ठरवून त्याला माझे सारथ्य सांगा. आतां
अगदीं वेळ लावूं नका, त्वरा करा.' राजा
शल्या, ह्याप्रमाणे भगवान् शंकराचें भाषण
श्रवण करून देवांचे समुदाय ब्रह्मदेवाकडे गेले
व त्यांनीं त्यास सुप्रसन्न करून घेऊन म्हटलें
की, "हे ब्रह्मदेवा, दैत्यदानवांचा निग्रह करणा-
संबंधानें तूं आम्हांस जसें करावयास सांगि-
तलेंस तसें आह्मी केलें आहे. भगवान् शंकर
आम्हांवर प्रसन्न झाला असून त्याच्या इच्छे-
प्रमाणें विचित्र आयुधांनीं सुसज्ज असा रथही
आह्मी सिद्ध केला आहे. फक्त त्या रथावर
सारथ्य करण्यास योग्य असा कोणी आह्मांस
आढळत नाही. म्हणून हे देवाधिदेवा, कोणी
तरी सारथी सिद्ध कर. हे विभो, तूं पूर्वीं
आह्मांशीं म्हटलें आहेस कीं, मी तुमचें हित
करीन. तर प्रस्तुत समयी आतां आमची ही
अडचण दूर करून तूं आपली ती वाणी यथार्थ
करून दाखव. हे पितामहा, भगवान् शंकरा-

करितां जो रथ आह्मीं तयार केला आहे त्याचें वर्णन काय करावें ! तो लोकोत्तर रथ देवांच्या विभूतिमत्तत्वांचा बनविला असून मोठा बलाढ्य व शत्रुविश्वसक आहे. दानवांचे धावें दणाणून देणारा पिनाकपाणि शंकर हा त्या रथावर युद्धार्थ मिद्ध आहे. त्या रथाला चार वेद हे उत्कृष्ट अश्व जोडिले आहेत. पर्वतांमह पृथ्वी हें त्या रथाचें शरीर होय, आणि नक्षत्रमंडल हे त्या रथाचे अलंकार होत. हे देवाधिदेवा. अशा त्या दिव्य रथावर भगवान् शंकर हा आरूढ झाला आहे, पण त्याला सारथि कोण मिळतो ह्या चिंतेत आह्मी आहो. हे पितामहा, अशा प्रकारच्या दिव्य रथाच्या ठिकाणी जे गुण आहेत. त्यांहून अधिक गुणशाली पुरुष सारथि असल्याशिवाय आपलें उद्दिष्ट कार्य सिद्ध होणार नाही, हें व्यक्त होय. पहा, आह्मी मांगिल्याप्रमाणें अपूर्व असा तो रथ, त्यास लाविलेले ते लोकोत्तर अश्व, त्यावर युद्धार्थ मिद्ध असलेला तो महाबलिष्ठ योद्धा, ती अश्रुतपूर्व कवचें व आयुधें, आणि तें विलक्षण धनुष्य ह्या सर्वांचा विचार केला म्हणजे तुझ्याशिवाय दुसरा कोणी सारथि आम्हांस सांप्रत योग्य दिसत नाही. हे देवश्रेष्ठा, सर्व गुणांनी संपन्न असा तूच एक असून तुझ्या ठिकाणी मात्र सर्व देवांपैशां अधिक सामर्थ्य आहे. ह्यास्तव तूं आतां अगदी विलंब न करितां रथावर आरूढ हो आणि त्या बलिष्ठ हयांचें नियंत्रण कर; म्हणजे देवांना जय मिळेल व दैत्यदानवांचा संहार होईल. ” राजा शल्या, ह्याप्रमाणें प्रार्थना करून देवांनीं पितामह ब्रह्मदेवाच्या चरणी लोटांगण घातले व त्याला प्रसन्न करून घेऊन त्याजकडून शंकराचें सारथ्य करविले. असें आह्मी ऐकितो.

पितामह ब्रह्मदेव म्हणाला:—हे देवहो, तुम्ही म्हणालां ह्यांत असत्य असें कांहीं एक नाही.

भगवान् कपर्दी शंकर हा युद्ध करीत असतां त्याचें सारथ्य करण्यास हा मी सिद्ध आहे, पहा.

राजा शल्या, नंतर जगताची उत्पत्ति करणाऱ्या पितामह ब्रह्मदेवाला देवांनी महात्म्या शंकराचें सारथ्य करण्यास सांगितलें. व लगलाच तो पितामह लोकनायक ब्रह्मदेव त्या श्रेष्ठ रथावर आरूढ होण्यास रथासमीप प्राप्त झाला. तेव्हां वायुवेगानें चाल करणाऱ्या त्या रथाच्या अध्यानी एकदम भूमीवर लोटांगण घालून ब्रह्मदेवाविषयी अत्यंत आदर व्यक्त केला ! नंतर, आपल्या दिव्य कांतीनें झळकणारा तो भगवान् ब्रह्मदेव रथावर आरूढ होऊन त्याने घोड्यांचे लगाम व चाबूक आपल्या हातांत धारण केला आणि त्यानें त्या वेगवान् घोड्यांस उठवून शंकरास बसविले कीं, आतां रथावर आरूढ हो. तेव्हां तत्काळ भगवान् स्थाणु हा विष्णुसोमाग्निसेभव असा बाण धारण करून रथावर चढला व त्यानें आपल्या धनुष्यानें शत्रूंची हट्टें विदीर्ण करून सोडिली. राजा, भगवान् शंकर रथावर आरूढ होतांच पुनः महान् महान् ऋषि, देव, गंधर्व व अप्सरा ह्यांचे समुदाय त्याचा स्तव करूं लागले. त्या समयीं आपल्या तेजानें तीनही लोकांना प्रदीप्त करून टाकणारा भगवान् शंकर रथावर अधिष्ठित होतसाता फिरून इंद्रप्रमुख देवांना म्हणाला, ‘हे देवहो, हा शंकर दैत्यांना मारणार नाही, अशी चिंता अगदीं करूं नका. ह्या माझ्या बाणांनें असुर मेलेच अशी खात्री बाळगा. ’ राजा शल्या, तेव्हां देवांनी “ खचित खचीत ” असे उद्गार काढून “दैत्य मेलेच ” म्हणून मानिलें आणि भगवताचें वचन कधीही मिथ्या होणार नाही असा पूर्ण भरंवसा बाळगून त्यांना मोठे समाधान वाटलें. नंतर भगवान् शंकर त्या महान् व अनुपम रथांतून सर्वदेवगणांसहवर्तमान युद्धार्थ चालू झाले. त्या

समयीं त्याच्या समीप नित्य हजर असणारे पार्षद त्या प्रतापशाली वीराची स्तुति करू लागले, दुसरे मांसाद अजिंक्य सेवक आनंदाने नाचू लागले, व कित्येक गण सभोवतालीं धावत मृदून एकमेकांवर ओरडू लागले; आणि त्याप्रमाणेच महान् भाग्यशाली व गुणसंपन्न तपस्वी, देव व इतर पुरुष सर्वतोपरी महा-देवाच्या जयव्हावा म्हणून चिंतन करू लागले. ह्याप्रमाणे त्रैलोक्याचे हित करणारा भगवान् देवाधिदेव शंकर युद्धार्थ बाहेर पडला, तेव्हां देवांनाच नव्हे, तर सर्व जगताला आनंद झाला. राजा शल्या, त्या वेळी ऋषिजन बहुविध स्तवांनी महादेवास प्रोत्साहन देऊन त्याची वीरश्री पुनःपुनः अधिकाधिक करीत तेथेच राहिले, व सहस्रावधि गंधर्व नानाप्रकारची वाद्ये वाजवून जयजयकार करू लागले. असे; राजा मद्रेश्वरा, वर देणारा भगवान् ब्रह्मदेव महादेवाचे सारथ्य करण्यासाठी मिद्ध होऊन रथावर चढला व त्यानें अमुरांवर जाण्याकरितां रथ चालू केला, तेव्हां भगवान् विश्वाधिपति महादेव "उत्तम ! उत्तम !" असे उद्गार काढून हसत हसत हसताला की, 'हे ब्रह्मदेवा, निकडे दैत्य आहेत, तिकडे रथ चालव. घोडे मोठ्या सावधगिरीनें हाक. व आज मी रणांगणांत शत्रूंचा नाश करित असतां माझे बाहुबल अवलोकन कर. ' राजा शल्या, ह्याप्रमाणे शंकराचे भाषण श्रवण करितांच, मनोवेगाने व वायुवेगाने चाल करून जाणाऱ्या त्या अर्धांना दैत्य-दानवांनी रक्षण केलेल्या तीन पुरांकडे जाण्याकरितां ब्रह्मदेवाने इशारा केला व त्या-बरोबर ते अश्व बेफाम होऊन असे पळत मृदले की, जणू काय ते अंतरिक्ष पिऊनच टाकीत आहेत असा भास झाला ! असे; त्रैलोक्याम वंदनीय अशा त्या अर्धांना दैत्यदानवांच्या त्या तीन पुरांसन्निध पोंचण्याला फारसा वेळ

लागला नाही. त्यांनी हा हां म्हणतां भगवान् शंकराचा तो दिव्य रथ त्रिपुराच्या अभिमुख नेला व तो तेथे जाऊन थडकतांच नंदिकेश्वराने असा मोठा शब्द केला की, त्याच्या योगाने दशदिशा दुमदुमित होऊन तारकाचे बहुत वंशज व दुसरे दैत्यदानव पटापट मरून पडले ! नंतर त्या त्रिपुरांतील दुसरे दैत्यदानव युद्धार्थ पुढे सरसावले तेव्हां त्रिशूलधारी भगवान् स्थाणु इतका संतप्त झाला की, त्याचा तो क्रोध पाहून सर्व भूते भिऊन गेली व सर्व त्रैलोक्य थरथरू लागले. राजा शल्या, नंतर भगवान् महादेवाने धनुष्याला बाण चढविला तेव्हां जी अवस्था झाली ती काय वर्णवी ! त्या समयीं घोर चिन्हें दृग्गोचर झाली. भगवान् शंकराच्या त्या अद्वितीय रथावर सोम, अग्नि व विष्णु हे बाणस्थित असून शिवाय शंकर व ब्रह्मदेव हे योद्धा व सारथि ह्या रूपांनी स्थित होते. दैत्य-दानवांना अवलोकन करून ह्या पांचहीजणांचा अत्यंत शोभ झाला व ह्यामुळे शंकराने धनुष्याचे आस्फालन केले तेव्हां तो रथ अंतरिक्षांतून एकदम खाली आला ! राजा, ह्याप्रमाणे तो रथ अधोभागी आलेला पाहून, भगवान् शंकराच्या बाणाग्नी विष्णूचे वास्तव्य होतेच, म्हणून तो तेथून एकदम निघाला व त्याने वृषरूप धारण करून तो महारथ वर उचलिला. परंतु तितक्यांत मध्यंतरी तो रथ खाली येत असतां व अमुरसमुदाय मोठी गर्जना करित असतां अर्धांच्या पाठीवर व नंदिकेश्वराच्या मस्तकावर उभे राहून मोठ्या आवेशाने भगवान् शंकराने मोठी आरोळी दिली आणि दानवांचे पुर नीट निरखून पहात असतां त्याने वृषभाचे खुर द्विधा केले व अर्धांचे स्तन छाटून टाकिले. राजा, ह्याप्रमाणे अद्भुत कर्म करणाऱ्या बलवान् शंकराने पीडिल्यामुळे ह्या वेळेपासून बैलांच्या खुरांना गेलीं झालीं व अर्धांचे स्तन

अजीव गेले. असो; नंतर महादेवानें आपलें धनुष्य सज्ज करून त्यास तो बाण लाविला व त्यास पाण्डुपताखाची जोड देऊन त्रिपुराचें चिंतन करीत तो स्वस्थ राहिला. अशा रीतीने धनुष्यबाण सिद्ध करून तो त्रिपुराचें अनुसंधान करीत असतां कांहीं कालानें तिन्ही पुरें एकत्र झाली व ती तशी एक झालेली पाहून महात्म्या देवांना अत्यंत आनंद झाला आणि सर्व देव, सिद्ध व महान् महान् ऋषि शंकराचा जयजयकार करून त्याची अतिशय स्तुति करू लागले. इतक्यांत अमुराचें हनन करण्यास उद्युक्त झालेल्या, अवर्णनीय व भयंकर असें शरीर धारण करणाऱ्या दुर्धरप्रतापी महादेवाच्या अग्रभागी तें त्रिपुर द्रुगोचर होताच भगवान् लोकेश्वरानें आपल्या दिव्य धनुष्याची प्रत्येका ओढून त्रिभुवनांतील सर्व बळ ज्यांत भरलें होतें असा तो दुःसह बाण त्यावजर टाकिला व त्यासरसा भयंकर हाहाकार होऊन ती तिन्ही पुरें भूमीवर पडली ! आणि त्यांना व त्यांतील सर्व दैत्यदानवांना जाळून टाकून भगवान् महादेवानें त्यांस पश्चिमसमुद्रांत फेंकून दिलें ! राजा मद्रेशा, सर्व त्रिभुवनाचें कल्याण करावें ह्या हेतूने भगवान् महेश्वरानें संतप्त होऊन ह्याप्रमाणें त्रिपुराला व त्यांतील सर्व दैत्यदानवांना दग्ध केलें. राजा, त्या वेळी भगवान् शंकराच्या ठिकाणीं जो क्रोधाग्नि प्रदीप्त झाला होता, त्यानें सर्व त्रैलोक्य भस्म करून टाकिलें असतें, परंतु शंकरानें आपण होऊनच तो आवरिला व सर्व त्रैलोक्याला वांचविलें. ह्याप्रमाणें त्रिपुराचा व दैत्यदानवांचा विनाश झालेला पाहून देव, ऋषि व इतर सर्व जन ह्यांना स्वास्थ्य प्राप्त झालें, आणि त्यांनी त्या अद्वितीय वीर्य धारण करणाऱ्या देवाधिदेवाची उत्कृष्ट प्रकारें स्तुति केली. तेव्हां भगवान् शंकरानें त्या देवादिकांना स्वस्थानीं जाण्याची आज्ञा दिली

आणि ते ब्रह्मदेवप्रभृति सर्व देव व ऋषि वगैरे अंगीकृत कार्यांत कृतार्थ होतसाते आपआपल्या स्थलीं मोठ्या आनंदानें परत गेले. राजा शल्या, सुरासुरांवर अधिकार चालविणाऱ्या भगवान् लोकवृष्ट्या महेश्वरानें सर्व त्रिभुवनाचें ह्या प्रकारें कल्याण केलें. आतां माझी तुला इतकीच प्रार्थना आहे कीं, त्या अमोघवीर्यशाली लोकवृष्ट्या भगवान् पितामहानें जसे त्या महादेवाचें सारथ्य केलें, तसें तूं या महात्म्या राधेयाचें सारथ्य कर. तुझ्या ठिकाणी कृष्णापेक्षां, कर्णापेक्षां व अर्जुनापेक्षां अधिक पराक्रम वसत आहे, ह्याची शंकाच नाही. राजा, युद्धकलेमध्ये कर्ण हा शंकराप्रमाणें आहे व राजनीतीमध्ये तर तूं ब्रह्मदेवाप्रमाणें आहेस; ह्यास्तव ब्रह्मदेव व शंकर हे ज्याप्रमाणें अमुरांचा समूळ नाश करण्यास समर्थ झाले, त्याप्रमाणें तुझी दोग्धे माझ्या शत्रूंचा नाश करण्यास समर्थ व्हाल. म्हणून, हे शल्या, जेणेंकरून आज त्या कर्णाच्या हातून श्वेताश्व अर्जुनाचा वध होऊन पांडवांच्या सेनेचा विध्वंस उडेल असें लवकर कर. हे मद्रेश्वरा, आज तूं जर कर्णाचें साचिव्य (सारथ्य) करशील, तरच आमची राज्याशा, जीविताशा व विजयेच्छा परिपूर्ण होईल. आमचें स्वतःचें, कर्णाचें, राज्याचें व जयाचें भवितव्य आतां तुझ्यावर अवलंबून आहे. ह्यास्तव कर्णाच्या रथाच्या उत्कृष्ट अश्वांचें नियंत्रण करण्यास तूं सिद्ध हो. आतां मी तुला दुसरा एक इतिहास सांगतो. तो श्रवण कर. हा इतिहास माझ्या पित्याला एका धर्मनिष्ठ ब्राह्मणानें सांगितला तेव्हां मीं तो ऐकिला आहे. कार्यकारणभावानें युक्त असा हा मनोहर इतिहास श्रवण करून तूं आपल्या मनाचा पूर्ण निश्चय ठरव व जें उचित दिसेल तें कर; उगीच शंका काढीत बसूं नको.

राजा शल्या, जमदग्नि नांवाचा एक महा-

विख्यात पुरुष भृगुकुलांत होऊन गेला. प्रताप-शाली व गुणसंपन्न असा जो प्रख्यात परशुराम तो त्याचा पुत्र. त्यानें अस्त्रप्राप्तीस्तव तीव्र तपश्चर्या करून भगवान् शंकरास मुप्रसन्न करून घेतलें. परशुरामाची समाधानवृत्ति, इंद्रियनिग्रह, एकनिष्ठता, दृढभक्ति व पूर्ण शांति अवलोकन करून भगवान् महादेव संतुष्ट झाला व परशुरामाचें हृदय जाणून तो त्याजपुढें प्रकट होऊन म्हणाला:—परशुरामा, मी तुझ्यावर संतुष्ट झालों आहे, तुझे कल्याण होवो, तुला काय पाहिजे हें मी जाणतो. तूं आपलें मन निर्मल कर म्हणजे तुझ्या इच्छा परिपूर्ण होतील. जेव्हां तूं पवित्र होशील, तेव्हां तुला जीं अस्त्रें हवी आहेत ती मी देईन. भार्गवा, अपात व असमर्थ अशा पुरुषाला जर अस्त्रांची प्राप्ति झाली, तर त्यांपासून त्याचें हित न होतां उलट तीं अस्त्रें त्यास जाळून टाकितात. राजा शल्या, देवाधिदेव शंकराचें भाषण श्रवण करून जामदग्न्यानें (परशुरामानें) त्या महात्म्यास साष्टांग प्रणिपात केला आणि मोठ्या विनयानें म्हटलें, 'भगवन्, जेव्हां हा दास अस्त्रधारणास योग्य आहे असें आपणांला वाटे, तेव्हांच आपण मजवर अनुग्रह करून माझे मनोरथ सिद्धीस न्यावे.'

राजा शल्या, नंतर परशुरामानें अंतरिंद्रियांचा व बाह्येन्द्रियांचा पूर्ण निग्रह करून घोर तप आरंभिलें आणि पूजाअर्चा, होमहवन, जपजाप्य इत्यादिकांच्या योगें बहुत वर्षेपर्यंत शंकराची आराधना करून त्यास प्रसन्न केलें. तेव्हां भगवान् शंकर आपल्या पत्नीसमक्ष परशुरामाचे अनेक गुण वर्णन करून म्हणाला:—हा दृढव्रत परशुराम नित्य माझ्या ठिकाणी एकनिष्ठ भक्ति करीत आहे. राजा शल्या, ह्या प्रमाणेंच भगवान् शंकरानें परशुरामाचे अनेक गुण देवांच्या व पितरांच्या समक्ष अनेकवार

कथन केले. अशा प्रकारें परशुराम शिवाराधनेत व्यग्र अमतां, इकडे देत्याचें प्राबल्य फार झालें. ते दर्पमोहादिकांनी फार उन्मत्त होऊन देवांना अतिशय पीडा करू लागले. तेव्हां देवांनीं एकत्र होऊन त्यांचा नाश करण्याचा निश्चय ठरविला व त्याप्रमाणें त्यांनीं प्रयत्न चालविले, पण त्यांत त्यांना यश आलें नाहीं. तेव्हां मग ते उमापति भगवान् शंकराकडे गेले व त्यांनी "देवा, आमच्या शत्रूंचा वध कर." अशी भक्तिपूर्वक प्रार्थना केली. त्या समयी भगवान् शंकरानें देत्यांच्या क्षयाची प्रतिज्ञा करून परशुरामाला बोलावून आणून म्हटलें, 'हे भार्गवा, देवांचे शत्रु दैत्य हे एकत्र मिळून देवांना पीडा करीत आहेत, ह्यास्तव तूं त्यांना ठार मार म्हणजे त्या योगें सर्व लोकांचें कल्याण होऊन मलाही मोठा संतोष वाटे.' राजा शल्या, हें भाषण ऐकून परशुराम वर देणाऱ्या भगवान् त्र्यंबकाम ह्मणाला, 'हे देवाधिदेवा, समरांगणांत दानवांचा वध करण्याइतकी माझ्या अंगी शक्ति कोठें आहे? कारण, दानव हे युद्धधुरंधर असून अस्त्रविद्येंत निपुण आहेत व मजला तर अस्त्रविद्या मुळीच उपलब्ध नाहीं' तेव्हां महादेव ह्मणाला, 'परशुरामा, तूं जा, माझी तुला आज्ञा असल्यामुळे तूं दानवांचा संहार करशील, सर्व शत्रूंना जिंकशील व तुला सर्व गुण यथास्थितपणें प्राप्त होतील.' राजा, ह्याप्रमाणें भगवद्वाक्य श्रवण करून परशुरामानें ती आज्ञा शिरसा मान्य केली आणि जयप्राप्त्यर्थ पुण्याहवाचनादि करवून तो दानवांशी युद्ध करण्यास बाहेर पडला. नंतर महाबलवान् व मदोन्मत्त दानवांची गांठ पडतांच परशुराम त्यांस म्हणाला, 'मदोत्कट दानवहो, मजशी युद्ध करण्यास सिद्ध व्हा. महामुरांनो, तुम्हांला जिंकण्यासाठी देवाधिदेव शंकरानें मला पाठविलें आहे.' राजा शल्या, परशुरामाचें हें भाषण ऐकून दानवांनी त्याच्याशी

युद्ध करण्यास प्रारंभ केला व त्यांत परशुरामानें वज्रासारखे भयंकर प्रहार करून दानवांचा निःपात उडविला. ह्याप्रमाणें दानवांचा संहार करून परशुराम परत भगवान् शंकराममीप आला. तेव्हां शंकरानें परशुरामाच्या देहावरून हात फिरवून, त्याच्या देहावर जे शस्त्रांचे वार वगैरे झाले होते ते सर्व नाहीतमे केले आणि त्याच्या पराक्रमानें संतुष्ट होऊन त्यास अनेक वर दिले. त्या समर्थी भगवान् शंकर परशुरामास मोठ्या प्रेमानें म्हणाला, 'हे भृगुनंदना, तुझ्या शरीरावर शस्त्रप्रहरांचे जे हे व्रण झाले आहेत त्यांवरून तुझ्या ठिकाणी अमानुष पराक्रम वसत आहे हे व्यक्त होतें. ह्यास्तव आतां तुला जी दिव्य अस्त्रें पाहिजे असतील ती तूं मजपासून ग्रहण कर.'

दुर्योधन सांगतो:— राजा मद्रेश्वरा, नंतर परशुरामाला जीं जीं नानाविध अस्त्रें व वर पाहिजे होते, ते ते भगवान् शंकरानें त्याला दिले; व त्यांचा स्वीकार करून तो महातपस्वी परशुराम कृतार्थ होत्साता शंकराची अनुज्ञा घेऊन परत गेला. असो; हा इतिहास मी त्या वेळीं त्या ब्राह्मणापासून ऐकिला. पुढें परशुरामानें शंकरापासून प्राप्त झालेली ती धनुर्विद्या मोठ्या आनंदानें महात्म्या कर्णाला सांगितली. राजा शल्या, जर कर्णाच्या ठिकाणी कांही वेगुण्य असतें, तर त्याला परशुरामानें तीं दिव्य अस्त्रें कधीही दिली नसती, हें निःसंशय होय. शिवाय, मद्रेश्वरा, कर्ण हा सूतकुळांत जन्मलेला आहे असें मला मुळीच वाटत नाही. हा क्षत्रियांच्या कुळांत देवांशानें जन्मला असून त्याच्या कुलाचें ज्ञान ह्याच्या देहघटनेवरून व पराक्रमावरून व्हावें ह्याच उद्देशानें ह्यास टाकून दिलें असावें असा माझा समज आहे. खचित कर्ण हा सूतकुळांत जन्म पावला नाही; कारण, हा मकुंडल, सकवच, दीर्घ-

बाहु व महारथ असून सूर्यतुल्य पराक्रमी आहे; तेव्हां हा सूतकुळांत उत्पन्न होणें संभवतच नाही. अरे, मृगीपासून कोठें व्याघ्राची उत्पत्ति होईल काय? राजा, ह्या वीराचे हे गज-शुंडेप्रमाणें पीनबाहु व त्याप्रमाणेंच ह्याचें हे शत्रूंशीं झुंजणारें विशाल वक्षस्थळ पहा. राजेंद्रा, खचित हा वैकर्तन कर्ण सामान्य वीर नव्हे. हा महात्मा असून परशुरामाचा शिष्य अमल्यामुळें मोठा पराक्रमी आहे!

अध्याय पसतिसावा.

—:०:—

शल्यसारथ्यस्वीकार.

दुर्योधन ह्मणाला:— राजा शल्या, ह्या प्रकारें त्रिपुरनाशार्थ सृष्टिकर्त्या भगवान् ब्रह्मदेवांन शंकराचें सारथ्य केलें. प्रस्तुत प्रसंगी रथ्यापेक्षा अधिक पराक्रमी अशा सारथ्याची अपेक्षा आहे; म्हणून, हे नरशार्दूल, तूं समरांगणांत कर्णाचें सारथ्य कर. ज्याप्रमाणें देवांनी त्या प्रसंगी मोठ्या प्रयत्नानें शंकराहून बलिष्ठ अशा ब्रह्मदेवाला सारथ्य करण्यास उद्युक्त केलें, त्याप्रमाणें आम्ही मोठ्या प्रयत्नानें कर्णाहून बलिष्ठ अशा तुला सारथ्य करण्यास उद्युक्त करित आहों, तर तूं अगदीं विलंब न करितां कर्णाचें सारथ्य करण्यास सिद्ध हो.

शल्य म्हणाला:— राजा दुर्योधना, मीही त्या ब्रह्मरुद्रांचें हें लोकोत्तर व अतिमानुष आख्यान पुष्कळांच्या तोंडून ऐकिलें आहे. प्रपितामह ब्रह्मदेवांन शंकराचें सारथ्य पतकिल्ले व शंकरानें एका बाणानें त्रिपुरांचा नाश करून अमुरांचा विध्वंस उडविला, ही गोष्ट मला विदित आहे व त्याप्रमाणेंच कृष्णालाही विदित आहे. कारण, मागे झालेल्या व पुढें होणाऱ्या सर्व गोष्टींचें यथार्थ ज्ञान कृष्णास नाही असें कसें घडेल ' हे भारता, कृष्णांन

अर्जुनाचें सारथ्य स्वीकारलें ह्यांतलें मर्म तरी हेंच होय. 'स्वयंभू ब्रह्मदेवानें जर रुद्राचें सारथ्य करण्यास मागें घेतलें नाही, तर मग अर्जुनाचें सारथ्य करण्यास आपण काय म्हणून मागें घ्यावें !' हाच विचार करून कृष्णानें अर्जुनाचें सारथ्य पतकरिलें हें निर्विवाद होय. राजा, यदाकदाचित् सृतपुत्र कर्णानें कुंतीपुत्र अर्जुनाला वधिलें, तथापि पांडवसैन्याची वाताहत होईल अशी शंका घेऊं नको; कारण, समरांगणांत अर्जुन पडल्यास कृष्ण स्वतः युद्ध करूं लागेल आणि मग क्रोधाग्रस्त झालेल्या त्या शंखचक्रगदाधारी महात्म्या वार्ष्णेयाच्या हस्तेन तुझी सेना भस्म होईल. राजा, मग तुझ्या सैन्यापैकी एकही भूपाल त्याजपुढें उभा राहाण्यास समर्थ होणार नाही !

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें मद्राधिपति शल्याचें भाषण श्रवण करूनही तुझ्या पुत्राची उमेद खचली नाही. त्यानें मोठ्या हिमतीनें उत्तर दिलें, "हे महाबाहो शल्या, कर्णाचें सामर्थ्य सामान्य नाही, हें लक्षांत ठेव. रणांगणांत हा प्रतिसूर्यच आहे. हा सर्व शस्त्राध्यायामध्ये श्रेष्ठ अमून सर्व शास्त्रांत पारंगत आहे. त्याच्या प्रत्येकाचा महान् व हृदयभेदक शब्द कानी पडतांच पांडवसेनेची तारबळ उडून ती दशदिशांस पळून जाते. हे महाबाहो शल्या, रात्रीच्या समयी घटोत्कच हा शतावधि माया उत्पन्न करून त्यांच्या आड गुप्त असता कर्णानें त्यास कसे वधिलें हें तूं स्वतःच पाहिलें आहेस. त्याप्रमाणेंच कर्ण हा अशा प्रकारची भयंकर कृत्ये करीत असतां अर्जुनाला किती भय पडलें होतें व तो कौरवसैन्याच्या समोर येण्यास कसा धजेनामा झाला होता हेंही तुला विदित आहेच तमेंच कर्णानें बलवान् भीमसेनाला धनुष्याच्या अग्रानें घोंचून 'हे मूर्खा, खादाडा, ' असें म्हटलें हेंही

तुला आठवत असेलच. मद्रेश्वरा, कर्णाच्या अग्नी मोठा विलक्षण पराक्रम वास करीत आहे. त्यानें शूर माद्रीपुत्रांना महान् युद्धांत जिंकून ठारच मारिलें असतें; परंतु कांहीं विशेष हेतूनें त्यानें त्यांस न वधितां नुसतें जिकिलें मात्र. वृष्णिकुलप्रवीर सात्यकि हा मोठा रणभुरंधर योद्धा, पण कर्णानें त्या शूराला युद्धांत जिंकून बलात्कारानें विरथ केलें. त्याप्रमाणेंच धृष्टद्युम्नप्रमुख सर्व संजय वीर व इतर योद्धे ह्यांची रणांगणांत किती तरी वेळां कर्णानें हंसत हंसत दुर्दशा उडवून दिली आहे. तसेंच या लोकोत्तर महारथाचें सामर्थ्य असें अद्वितीय आहे की, हा एकदां संतापला असतां वज्रधर इंद्राला युद्धांत ठार केल्याशिवाय रहाणार नाही ! तेव्हां अशा ह्या अतुलप्रतापी कर्णाला युद्धांत पांडव कसे जिकितील ! तशांत, तुझ्यासारखा सारथी मिळाला म्हणजे कांहीच चिंता करण्याचें कारण रहाणार नाही ! पहा—तूं सर्व शास्त्रें जाणणारा अमून सर्व विद्यांत प्रवीण आहेस. बाहुवीर्यांत तुझी बरोबरी करील असा एकही वीर ह्या भूतलावर नाही. तुझ्या ठिकाणी दुःसह प्रताप वसत असल्यामुळे तूं शत्रूच्या हृदयांत शल्यवत् पीडा करीत असतोस आणि ह्यामुळेच तुला शल्य हें नांव पडलें आहे. तुझ्याशी गांठ पडली तेव्हां सर्व मात्वंतांना तुझ्यापुढें हार खावी लागली. तेव्हां तुझ्यापेक्षां कृष्णाच्या ठिकाणी अधिक बल आहे असें कसें म्हणावें 'असो; आतां, अर्जुन रणांगणांत पडल्यास कृष्ण हा पांडवसैन्याचा पुढाकार घेऊन कौरवसैन्यावर चालून येईल म्हणून जमें तूं म्हणतोस. तमें मीही म्हणतो की, कर्ण जर धारार्तायां पतन पावला तर तूंही कौरवांचें प्रचंड सैन्य घेऊन पाडवांवर चालून जाशील ! राजा शल्या, वामुदेव मात्र रणभूमीवर कौरवसैन्याचें

निवारण करील व तू कांहीं पांडवमैत्र्याचें निर्दलन करण्यास समर्थ होणार नाहीस, असें कसें म्हणावें ! राजा, तुजकरितां युद्धामध्ये मी आपल्या भावांप्रमाणे व इतर सर्व भूषालांप्रमाणे धारातीर्थी देह देवण्यास सिद्ध आहे ! ”

शल्य म्हणाला:—हे मानदा दुर्योधना, ज्या अर्थी तू सर्व सैन्यासमक्ष माझी प्रशंसा करून मला कृष्णाहून अधिक पराक्रमी असें म्हणत आहेस, त्या अर्थी मी तुझ्यावर मोठा प्रसन्न झालो आहे. अर्जुनाशी युद्ध करणाऱ्या यशस्वी राधेयाचें सारथ्य करण्यास तुझ्या इच्छेनुरूप हा मी सिद्ध आहे पहा. पण माझी इतकीच अट आहे की, माझ्या मनाला वाटेल तें मी कर्णाला बोलेल !

संजय सांगतो:—भृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे शल्याचें भाषण श्रवण करून कर्णसमवेत दुर्योधनाने सर्व क्षत्रियांसमक्ष ' ठीक आहे. ' असें म्हटलें आणि लगेच शल्याने ' कर्णाचें सारथ्य मी स्वीकारिलें. ' असें आश्वासन दिलें. तेव्हां दुर्योधनास मोठा संतोष झाला व त्यानें कर्णास आलिंगिलें. त्या समयी बंदीजनांनी स्तुति चालविली असतां तो पुनः कर्णास म्हणाला की, ' कर्णा, रणांगणांत महेन्द्रानें जसा दानवांचा नाश केला, तसा तू पांडवांचा नाश करून टाक. ' राजा, अशा प्रकारें शल्यानें सारथ्यकाम पतकारिल्लें पाहून कर्णाला मोठा आनंद झाला व तो पुनः दुर्योधनाला ह्मणाला, ' राजा. मद्राजानें सारथ्याधिकार स्वीकारिला खरा. पण तो जें कांही बोलत आहे त्यावरून त्याचें अंतःकरण प्रमत्त आहे असें दिसत नाही; ह्यास्तव, तूं फिरून गोड शब्दांनी त्याला आपलासा करून घे. ' भृतराष्ट्रा, नंतर महाबुद्धिमान् अस्त्रविद्याप्रवीण व बलिष्ठ असा दुर्योधन मद्राधिपति शल्याला गंभीर वाणीनें म्हणाला. " हे मद्रपते, आज अर्जुनाशी युद्ध करावें अशी कर्णाची इच्छा

आहे, ह्यास्तव आज त्याचें सारथ्य करून त्वां त्यास विजय मिळवून द्यावा. आज कर्णाच्या मनांत शत्रूंकडील इतर सर्व वीरांस मारून अर्जुनालाही मारावें असें आहे; म्हणून पुनः पुनः माझी तुला अशी प्रार्थना आहे की, तू कर्णाचें सारथ्य कर. राजा, ज्याप्रमाणे लोकोत्तर सारथि कृष्ण हा योग्य सल्लामसलत सांगून अर्जुनाचें पालन करीत आहे, त्याचप्रमाणे तूंही कर्णाचें सर्व प्रकारें पालन कर. "

संजय सांगतो:—नंतर शल्यानें शत्रुसंहारक दुर्योधनाला आलिंगन दिलें व मोठ्या आनंदानें असें भाषण केलें.

शल्य म्हणाला:—राजा दुर्योधना, जर तुझे असें म्हणणें असेल, तर तुला जें कांहीं प्रिय वाटत असेल तें सर्व करण्यास मी सिद्ध आहे. राजा, जी जी गोष्ट माझ्या हातून होण्यासारखी आहे. ती ती गोष्ट मी अगदी मनापासून कमुर न करितां करीन व तुझे कार्य पल्ल्यास नेईन. माझी म्हणून तुजपाशी इतकीच अट आहे की, मी हितबुद्धीनें जें कांहीं प्रिय किंवा अप्रिय कर्णाला बोलेल, त्या सर्वांची कर्णानें व त्वां मला क्षमा करावी.

कर्ण म्हणाला:—हे मद्रपते, ठीक आहे. ज्याप्रमाणे शंकराच्या हितासाठी ब्रह्मदेव उद्युक्त होता, किंवा अर्जुनाच्या हिताकरितां कृष्ण उद्युक्त आहे, त्याचप्रमाणे नेहमी आमच्या हितासाठी तू उद्युक्त अस ह्मणजे झालें.

शल्य ह्मणाला:—कर्णा, स्वतःची निंदा किंवा स्तुति अथवा दुसऱ्याची निंदा किंवा स्तुति ह्या चार गोष्टी भल्या मनुष्यास वर्ज्य आहेत. परंतु तुला माझा भरंवसा यावा म्हणून मी तुला स्वतःच्या स्तुतीनें युक्त असें जें कांही सांगत आहे, तें नीट ऐकून घे. हे श्रेष्ठा, मी मातलीप्रमाणे इंद्राचें सारथ्य करण्यास योग्य आहे. प्रसंगानुरूप अवधान रावणें, योग्य

रीतीनें अश्व चालविणें, पुढील संकटाचा आगाऊ अंदाज करणें, त्याचा उपसर्ग न होण्या-विषयी जपणें व तशांतून संकट ओढवल्यास त्यांतून पार पडणें, ह्या सर्व गोष्टी मला उत्तम येत आहेत. ह्यास्तव तूं अर्जुनाशी युद्ध करीत असतां तुझ्या अश्वाना मी उत्तम प्रकारें प्रेरणा देऊन तुझे कार्य पार पाडीन. कर्णा, तूं अगदी कालजी करूं नको.

अध्याय छतिसावा.

—०.—

कर्णाशीं शल्याचें भाषण.

दुर्योधन ह्याणाला:—कर्णा, हा मद्राज शल्य तुझे सारथ्य करील; हा सारथ्यकर्मीत मोठा निपुण आहे. कृष्णाहूनही हा अधिक युक्तीनें रथ चालवितो. देवराज इंद्राचा सारथि जसा मातलि, तसा हा रथ चालविण्यांत कुशल आहे. तो मातलि ज्याप्रमाणें इंद्राच्या रथाला जोडिलेल्या अश्वानें नियंत्रण करितो, त्याप्रमाणें आज हा शल्य तुझ्या रथाच्या अश्वानें नियंत्रण करील. तुझ्यासारखा परम-प्रतापी वीर रथावर अधिष्ठित असतां व मद्राज शल्यासारखा अद्वितीय पुरुष त्याचें सारथ्य करीत असतां समरांगणांत तुझा दिव्य रथ खचित पांडवांचा पराभव करील, ह्यांत वानवा नाही !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर प्रातःकाल झाल्यावर दुर्योधन फिरून त्या पराक्रमी मद्राज शल्याला रणभूमीवर म्हणाला, 'हे मद्रेशा, कर्णाच्या रथाच्या ह्या दिव्य अश्वाना समरांगणांत चालव, तुझे पाठबळ असले म्हणजे कर्ण हा धनंजयाला जिंकून टाकील.' राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाच्या तोंडचे हे शब्द ऐकून 'बरें आहे' असें म्हणून शल्य रथावर चढला. अशा प्रकारें शल्य सारथ्य

करण्यास सिद्ध होऊन समीप येतांच कर्णानें आनंदित होऊन त्यास आप्रहानें म्हटलें, 'सूता शल्या, माझ्याकरितां तूं सत्वर श्रेष्ठ रथ सिद्ध करून घेऊन ये.' राजा, नंतर शल्यानें कर्णाकरितां विजयशाली व मेघसमुदायाप्रमाणें महान् असा मंगलदायक उत्कृष्ट रथ यथाविधि सिद्ध करून कर्णापाशीं आणिला; व 'कर्णा, विजयी हो' असें म्हणून तो रथ आणिल्याचें त्यानें कर्णामें निवेदन केलें. तो रथ अवलोकन करून महारथ कर्णानें त्या रथाची यथाविधि पूजा केली. धृतराष्ट्रा, तो रथ सामान्य नव्हता. पूर्वीच ब्रह्मवेत्त्या पुरोहितानें त्या रथावर मंत्रादिकांच्या योगें संस्कार करून तो पवित्र व श्रेष्ठ बनविला होता.

असो; कर्णानें त्या रथाची पूजा करून त्यास प्रदक्षिणा केली व नंतर एकाग्र चित्तानें सूर्याची प्रार्थना केल्यावर समीपभागी प्राप्त झालेल्या मद्राज शल्याला 'आतां तूं रथावर चढ' असें म्हटलें. तेव्हां कर्णाच्या त्या महान् व बलाढ्य रथावर, पर्वतावर ज्याप्रमाणें सिंह चढतो, त्याप्रमाणें तो महाप्रतापी शल्य चढला. ह्याप्रमाणें आपल्या दिव्य रथावर शल्य अधिष्ठित झालेला पहातांच, विद्युद्धान् मेघमंडलावर सूर्य जसा आरूढ होतो, तसा त्या लोकोत्तर रथावर कर्ण आरूढ झाला. अशा रीतीनें, अग्नि किंवा आदित्य ह्यांच्याप्रमाणें प्रखर तेज धारण करणारे ते दोघे बलाढ्य योद्धे रथावर अधिष्ठित झाले, तेव्हां जणू काय अंतरिक्षांत मेघसमुदायावर अग्नि व सूर्यच अधिष्ठित झाले आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, ह्याप्रमाणें ते द्युतिमान् वीर एके रथांत विराजित असतां बंदीजन त्यांची स्तुति करूं लागले. तेव्हां जणू काय यज्ञांत सदस्य व ऋत्विक् हे इंद्र व अग्नि ह्यांचीच स्तुति करीत आहेत, असें वाटूं लागलें. धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारें महारथ कर्ण युद्धा-

ला मिद्ध होऊन आपल्या त्या घोर धनुष्याच्या प्रत्येचेचा टणत्कार करीत असतां जणू काय खेळें पडलेल्या सूर्याप्रमाणें भासूं लागला; व तो त्या दिव्य रथावर असतां त्याच्या हातांतील शर हे जमे काय किरणच वाटून, मंदारपर्वतावर सूर्यच आरूढ झालेला आहे असें वाटलें. असो; नंतर त्या महाबाहु व महापराक्रमी कर्णाला दुर्योधन म्हणाला. “कर्णा, भीष्म व द्रोण ह्यांच्या हातून जे दुष्कर कर्म समरागणांत घडलें नाही, व जे घडावें म्हणून सर्व धनुर्धरांची व माझी इच्छा, तें कर्म तूं आज कर. हे अधिरथा, भीष्म व द्रोण हे अर्जुन व भीमसेन ह्यांस खचित वधिलील असें आम्हांम वाटत होतें, पण त्यांजकडून तें घडलें नाही; ह्यास्तव आज तें कर्म तूं कर आणि जणू काय तूं दुसरा देवेंद्रच आहेस असा पराक्रम गाजव. वा कर्णा, आज तूं धर्मराजाला धर किंवा अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव ह्यांना ठार मार. कर्णा, आज तुला जय मिळो; तुझें कल्याण होवो. हे नरश्रेष्ठा, आतां जा; पांडवांचें सैन्य जाळून टाक. ” राजा, नंतर हजारों तुर्ये व लाखां नौवदी वाजूं लागल्या, तेव्हां अंतरिक्षांत मेघगर्जनाच होत आहे असें भासलें. नंतर दुर्योधनाच्या प्रोत्साहपनर भाषणास मान देऊन महारथ कर्णानें युद्धविशारद शल्यास म्हटलें, “हे महाबाहो, आतां रथ चालू कर. हा पहा मी आता धनंजयाला, भीमसेनाला, उभयतां माद्रीपुत्रांना किंवा युधिष्ठिराला ठार करितों ! शल्या, मी आज शेंकडें व हजारों कंकपत्र बाण मारीत असतां माझ्या अंगी बाहुबल कसें काय आहे, तें आज धनंजयानें पहावें. शल्या, मी आज अतिशय जलाल बाण पांडवांवर सोडीन; आणि त्या योगें पांडवांचा विध्वंस उडून दुर्योधनाला जय मिळेल.”

शल्य म्हणाला,—हे सुतपुत्रा, तूं पांडवांना

असे यःकश्चित् मानितोस काय ! अरे त्यांचा पराक्रम सामान्य मानूं नको. ते सर्वशास्त्रपारंगत अमून महाधनुर्धर आहेत. ते सर्वजण एकसारखे महाबलिष्ठ असून रणांतून कधीही माघार घेणारे नाहीत. त्या महाभाग्यवान् पांडवांच्या ठिकाणी खरें क्षात्रतेज विद्यमान असून ते सर्वतोपरी अजिंक्य आहेत. अरे, त्याच्या अंगी इतकें शौर्य आहे की, ते प्रत्यक्ष शतक्रतु इंद्राला सुद्धां भय उत्पन्न करितील. राधेया, हें तुझें भाषण लवकरच बंद पडेल. वज्राच्या भयंकर शब्दाप्रमाणें गांडीवाचा भयंकर निर्घोष युद्धभूमीवर तुझ्या कानी पडेल, तेव्हां मग तूं हे असले उद्गार काढणार नाहीस. त्याप्रमाणेंच, कर्णा, समरागणांत हत्तीची सेना भीमसेनाच्या हातून निर्दत्त होऊन मरून पडलेली जेव्हां तूं पहाशील, तेव्हां मग तुझें हें बोलणें आपोआपच नाहीसें होईल. तसेंच धर्मराज व नकुलसहदेव हे आपल्या तीक्ष्ण बाणांनीं अंतरिक्ष व्याप्त करून मेघांप्रमाणें चोहोंकडे जाया पाडतील, आणि दुसरेही बलाढ्य राजे व वीर सर्वत्र मोठ्या शिताफीनें शत्रूंचा वध करीत आहेत असें तुला आढळेल, तेव्हा मग तुझी ही बडबड अनायासें च नष्ट होईल.

संजय सांगतो—राजा धृतराष्ट्रा, मद्राधिपति शल्याचें हें भाषण कर्णाला रुचलें नाही व तो त्या महाशूर शल्याला ‘रथ पुढें चालव’ असेंच म्हणाला.

अध्याय सदतिसावा.

—०:—

कर्ण व शल्य ह्यांचा संवाद.

संजय सांगतो—राजा धृतराष्ट्रा, महाधनुर्धर कर्ण युद्धार्थ सिद्ध आहे असें पाहून कौरवांकडील सर्व योद्ध्यांना मोठा आनंद झाला; व त्यांनीं चोहोंकडे वरिश्त्रानि आरोळ्या देण्यास

प्रारंभ केला. त्या समयी नगारेनौबदी वाजू लागल्या, बाणांचा शब्द होऊं लागला व अश्वगजादिकांची गर्जना सुरू झाली. राजा, अशा प्रकारें मोठ्या उल्लासांनं तुझ्याकडील वीर पांडवांशी लढण्यास निघाले, त्या समयी त्यांनी असा निर्धार केला की, समरांगणांत मरणच प्राप्त झाल्याम गोष्ट निराळी, परंतु दुसऱ्या कोणत्याही कारणानें समरभूमीवरून माघारें म्हणून यावयाचें नाही. राजा, ह्या प्रमाणें मोठ्या आवेशानें कर्ण व इतर योद्धे युद्धास निघाले तेव्हां अनेक उत्पात दृग्गोचर झाले; पृथ्वी कंपायमान होऊन हादरली व त्यामुळें मोठा भयंकर दणदणाट झाला ! सूर्यप्रभृति मत्स्यग्रह एकमेकांवर चाल करून जात आहेत असें भासलें ! जिकडे तिकडे उल्कापात होऊं लागले व दशदिशा दग्ध होण्यास प्रारंभ झाला. अंतरिक्षांत मेष नसतांही घडाघड विजा पडूं लागल्या व भयंकर वारे वाहूं लागले; पुष्कळ मृग व पक्षी तुझ्या सैन्याला वारंवार डावी घालूं लागले; आणि त्या योगें, महान् अरिष्ट क्रोसळणार असें त्यांनीं सुचविलें. त्या प्रमाणेंच कर्णाच्या रथाचे अश्व भूमीवर अडखळून पडले. आकाशांतून हाडांची भयंकर वृष्टि सुरू झाली. आयुधें पेटली. ध्वज कंपित झाले आणि अश्व्यादिक वाहनांच्या नेत्रांतून अश्रु गळूं लागले ! राजा धृतराष्ट्र, हे व असेच दुसरे पुष्कळ घोर उत्पात होऊं लागून कौरवांचा भयंकर संहार उडणार अशी दारुण दुश्चिन्हें दृष्टिगोचर झाली. परंतु कौरवांकडील योद्ध्यांना दुर्दैवानें घेऊन टाकिल्यामुळे त्यांनीं त्या दुश्चिन्हांस मुळीच जुमानिलें नाही; आणि सूतपुताच्या प्रयाणकाली मोठमोठ्या क्षत्रियांनी 'तूं विजयी हो' अशा मंगलदायक शब्दांनी त्यास प्रोत्साहन दिलें. राजा, त्या समयी कौरवांकडील वीरांची विवेकबुद्धि इतकी

अस्तंगत झाली होती की, त्या सर्वांना पांडव हे आतां जिकलेच असें वाटलें !

इकडे रथारूढ झालेल्या शत्रुसंहारक कर्णाचें तेज फारच वाढलें,—तो अगदी सूर्याप्रमाणें किंवा अग्नीप्रमाणें देदीप्यमान भासूं लागला. व त्याम असा कांहीं गर्व वाटला की, आपण भीष्म व द्रोण ह्यांच्यापेक्षांही अधिक बलवान् व शूर आहों ! नंतर तो अर्जुनाच्या कृत्यांचा विचार करून इतका संतापला की, जणू क्रोधाचे सुस्कारे टाकूं लागला आणि अहंपणानें व दर्पानें क्षुब्ध होऊन मद्राधिपति शल्यास म्हणाला, “ शल्या, मी हातांत आयुध घेऊन रथांत अधिष्ठित असतां प्रत्यक्ष वज्रपाणि इंद्रही क्रुद्ध होऊन माझ्या समोर आल्यास मी त्यास भिणार नाही ! ज्या अर्थी पांडवांशी लढत असतां भीष्मादिक महान् महान् वीरांना रणभूमीवर देह ठेवावे लागले, त्या अर्थी पांडवांशी युद्ध करण्यास प्रवृत्त होताना माझ्या मनास चंचलता उत्पन्न व्हावी हें उचित होय; पण माझी कांहीं तशी स्थिति झालेली नाही ! सर्वथैव वंदनीय अशा त्या भीष्मद्रोणांच्या ठिकाणी जरी महेंद्राप्रमाणें किंवा विष्णूप्रमाणें सामर्थ्य होतें, जरी ते महान् महान् रथ, अश्व व गज ह्यांचा संहार करण्यास समर्थ होते, आणि जरी ते जणू काय अमरच होते असें ह्मणण्यास प्रत्ययाय नाही, तरी त्यांचाही पांडवांकडून नाश झालेला आपण पहात आहों; तेव्हां प्रस्तुत समयी ह्या रणांगणांत मला भीति उत्पन्न व्हावी हें अगदी साहजिक आहे पण मला कांही आज भीति वाटत नाही ! मला हेंच मोठें गूढ पडलें आहे की, युद्धांत मोठमोठाले बलाढ्य राजे, त्यांचे सारथि, रथ, अश्व वगैरे शत्रूंकडून मरण पावत असतां महान् अखवेता ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोण गुरु सर्व पांडवांना मारून टाकल्याशिवाय राहिला कसा ?

कौरवहो, द्रोणाच्या ह्या कृत्याचा विचार करून ह्या महान् युद्धप्रसंगी मी तुझांम जें कांहीं सांगत आहे, तें नीट ऐका. असें पहा—अर्जुन हा प्रत्यक्ष उग्रस्वरूप कालच होय. तो समोर आला असतां त्याच्याशी टक्कर देईल असा काय तो एकटा मीच. माझ्याशिवाय दुसरा कोणीही त्याच्यापुढें तग काढणार नाही! अहो, द्रोणाच्या ठिकाणी युद्धकला, बल, विवेक, दूरदर्शित्व व महास्त्रविद्या हीं सर्व सिद्ध असतां त्या महात्म्याला मुद्दां मृत्युमुखी पडावें लागलें, तेव्हां इतरांची ती कथा काय? मला तर आज असें वाटतें की, ते सर्व मरणोन्मुख झालेले आहेत. अहो, ह्या लोकी कर्म व देव ह्यांची सांगड असल्यामुळें मोठा विचार करूनही मला कोणतीही वस्तु शाश्वत दिसत नाही. पहा, प्रत्यक्ष द्रोणाचार्याची जर ही गति झालेली आपण पहातो, तर सूर्योदय होईपर्यंत तरी आपण निःसंशयपणें जिवंत राहूं असें कोण हणूं शकेल? खचित मला तर असें वाटतें की, अखें, आयुषें, बल, पराक्रम, नाना-विध कृत्यें किंवा राजनीतिनैपुण्य ह्यांपैकी एकही गोष्ट मनुष्यास सुख देण्यास समर्थ नाही. पहा, द्रोणाचार्याची योग्यता काय लहानसान होती? त्याचें तेज तर प्रत्यक्ष अग्नि किंवा आदित्य ह्यांप्रमाणें होतें, त्यांचा पराक्रम तर प्रत्यक्ष विष्णु किंवा इंद्र ह्यांप्रमाणें होता, व त्यांचें राजनीतिनैपुण्य तर प्रत्यक्ष शुक्राचार्य किंवा बृहस्पति ह्यांप्रमाणें होतें, तथापि ह्यांपैकी एकाच्यानेही त्या बलाढ्य वीरांचें रक्षण करवेंलें नाही!

“असो; शल्या, प्रस्तुत आपल्या ह्या सैन्याची कशी दुर्दशा झाली आहे ती पहातोसना? धार्तराष्ट्रांचा पराभव झाल्यामुळें जिकडे तिकडे स्त्रिया व कुमार दीनपणांनें आक्रोश करीत आहेत, तेव्हां अशा ह्या संकटामध्ये जर कोणी कांही

पराक्रम करून दाखविणारा असेल तर तो मीच होय! ह्यास्तव आतां अगदी विलंब न करितां शत्रुसैन्याकडे रथ चालव आणि तो सत्यसंध युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, वासुदेव, सात्यकि, सृजय, नकुल व सहदेव ह्यांची व माझी रणांगणांत गांठ पडेल असें कर. राजा शल्या, माझ्यावांचून दुसऱ्या कोणत्याही वीराला त्यांच्याशी लढण्याला छाती व्हावयाची नाही; म्हणून तूं तावडतोव हा रथ पांचाल, पांडव व सृजय जेथे असतील त्या बाजूला चालू कर. त्यांना मी आज युद्धांत वधीन किंवा मी स्वतः तरी यमसदनाचा मार्ग धरीन. शल्या, त्या शूर वीरांच्या समुदायांत प्रवेश करण्यास मी अगदी समर्थ आहे, अशी तूं खातरी बाळग. आतां आपल्या प्राणांकडे लक्ष देणें हें मला सर्वथा अनुचित होय. अशा प्रकारें वर्तन करणें म्हणजे दुर्योधनाशीं द्रोह करणेंच होय. ह्यास्तव, द्रोणाप्रमाणें समरांगणांत मरून जावें हेंच मी इष्ट मानितों. कोणाही मनुष्याला, मग तो शहाणा असो किंवा वेडा असो, आयुष्याचा क्षय झाला म्हणजे मृत्यूच्या पैचांतून सुटतां यावयाचें नाही. म्हणून मी आज पांडवांवर चाल करून जाणारच, मग माझें कांहीही होवो; देवाचा प्रतिकार करणें सर्वथा अशक्य आहे. हे मंदेशा, दुर्योधन माझें कल्याण करण्यास सदासर्वकाल उद्युक्त आहे. म्हणून त्याचे मनोरथ पूर्ण करणें हें माझें कर्तव्य आहे असें मी मानितों; आणि त्यासाठी मी आपल्या सर्व सुखांना, फार तर काय, मी आपल्या ह्या प्रिय प्राणांनाही मुकण्यास सिद्ध आहे. शल्या, माझा हा दिव्य रथ मोठा बलाढ्य आहे. ह्याला व्याघ्रचर्माचें आवरण असून ह्याचा आंस मुळीच वाजत नाही; ह्यातील आत्मनं सुवर्णमय असून ह्याचे त्रिवेणु रुष्याचे आहेत; आणि ह्यास सर्वोत्कृष्ट अश्व जोडलेले असून हा मला परशुरामाकडून

मिळाला आहे. त्याप्रमाणेच ह्या रथावर असलेली ही माझी चित्रविचित्र धनुष्ये, ध्वज, गदा, भयंकर बाण, खड्ग, दुसरी श्रेष्ठ आयुधे व उग्र ध्वनि करणारा हा शुभ्र शंख अवलोकन कर. ध्वजपताकांनी शोभणाऱ्या, वज्रपाताप्रमाणे शब्द करणाऱ्या. श्वेत ह्यांनी युक्त व दिव्य भात्यांनी विराजमान असणाऱ्या ह्या सर्वोत्तम रथांत बसून मी आज युद्ध करणार व अर्जुनाला मोठ्या निग्रहाने ठार मारणार ! सर्वभक्षक मृत्युही जरी त्यास मोठ्या दक्षतेने रागवण्यास तयार झाला, तरी मी त्याचे आज कांही चालू देणार नाही. एक तर मी त्यास आज ठार करीन किंवा मी स्वतः भीष्मांप्रमाणे यमसदनाचा मार्ग धरीन ! शल्या, फार बोलण्यांत काय अर्थ ! जरी यम, वरुण, कुबेर, इंद्र हे सर्व महान् महान् देव आपआपल्या गणांसह अर्जुनाचे संरक्षण करण्यास सिद्ध झाले, तरी मी त्या अर्जुनाचा त्या सर्व देवांसह पराभव करीन हें खचित समज ! ”

संजय सांगतो:—ह्याप्रमाणे त्या युद्धातुर झालेल्या कर्णाच्या क्लग्न श्रवण करून मद्राधिपति शल्य मोठ्याने हंसला व धिक्कारपूर्वक उत्तर देऊन त्याने त्याचा निषेध केला.

शल्य म्हणाला:—कर्णा, थांब थांब, असे बढाईचे भाषण करू नको. तुला युद्ध करण्याविषयी कितीही आवेश उत्पन्न झालेला असला, तरी असे अमर्याद भाषण करणे युक्त नव्हे. अरे, तो नरश्रेष्ठ धनंजय कोठे ? आणि तूं नराधम कर्ण कोठे ? त्या अर्जुनाच्या पराक्रमाचा विचार तरी तू केला आहेस का ? अरे, उपेद्राने रक्षण केलेली द्वारका म्हणजे देवेंद्राने रक्षण केलेला स्मरूच होय; आणि असे असता बलात्काराने तीतून अर्जुनाने सुभद्रेचे हरण केले. तेव्हा हा काय अर्जुनाचा मामान्य पराक्रम ! अर्जुनावाचून दुसरा कोणता

पुरुष हें कृत्य करण्यास समर्थ झाला असता बरे ? बा कर्णा, मृगवधामबंधाने कलह उत्पन्न होऊन युद्ध सुरू झाले तेव्हा त्रिभुवनाधीश देवाधिदेव शंकराशी लढण्यास देवेंद्राप्रमाणे पराक्रम गाजविणाऱ्या अर्जुनावाचून दुसरा कोणता योद्धा तयार झाला असता ? कर्णा, अर्जुनाचा प्रताप खरोखरीच दुर्धर आहे. मुर, असुर, महोरग, नर, गरुड, पिशाच, यक्ष, राक्षस ह्या सर्वांचा बाणवृष्टीने पराभव करून अर्जुनाने अशीला त्याचा हविर्भाग अर्पण करून (खांडवन देऊन) तृप्त केले, तेव्हा हा त्याचा प्रताप किती अगाध आहे बरे ? असो; कर्णा, जेव्हा धृतराष्ट्राच्या पुताला शत्रूंनी हरण केले, तेव्हा सूर्यसदृश बाणांचा वर्षाव करून अर्जुनाने शत्रूंना रणांगणांत ठार केले व त्या धृतराष्ट्रपुत्रास सोडवून आणून पुनः कौरवांच्या हवाली केले, ती वेळ तुला आठवतेना ? बरे तेही असो; कर्णा, कलहप्रिय धृतराष्ट्रपुत्राचे गंधर्वांशी युद्ध सुरू झाले तेव्हा प्रथम तूं तर पळून गेलस ! व मग चित्ररथादिक गंधर्वांनी कौरवांना जेव्हा बांधून नेले; तेव्हा त्या गंधर्वांना जिंकून पांडवांनी कौरवांना सोडविले, त्या वेळची तरी तुला आठवण आहे का ! अरे, अर्जुनाचा तो दिव्य पराक्रम किती वर्णावा ? तुला गोघ्नहणप्रसंग स्मरतच असेल. त्या वेळचे कौरवांचे ते सैन्य केवढे अवाढव्य ! त्या समयी त्या सैन्यांत भीष्म, द्रोण, अश्वत्थामा आदिकरून कौरवपक्षाचे महान् महान् योद्धे युद्ध करण्यास तत्पर असतां तुम्ही कौरवांनी त्या अर्जुनाला कोरे जिंकले नाही ? आणि उलट त्यानेच तुमची देना उडविली ती कां ? असो; कर्णा, मला तर असे वाटते की, पुनः आज हें दुसरें महान् युद्ध तुझ्या मृत्युकरिताच घडून येत आहे ! जर का तूं आज शत्रूंना भिऊन पळून गेला नाहीस, तर तूं रणांगणांत

जातांच खचित मृत्युमुग्धी पडलास ह्मणून समज !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें मद्राधिपति शल्य हा मोठ्या कळवळ्यानें कर्णाला अर्जुनाचें अद्वितीय मामर्श्य वर्णन करून सांगत असतां, त्या योगें अतिशय संताप उत्पन्न होऊन तो सेनापति शत्रुसंहारक कर्ण शल्याला म्हणाला, “ हे शल्या, पुरे पुरे. फार बडबड करूं नको. खचित माझे व त्याचें युद्ध सुरू झालेंच म्हणून समज. जर आता ह्या युद्धांत त्यानें मला जिंकिलें, तर मग तुझें हें भाषण वाजवी होईल. ”

संजय सांगतो:—कर्णाचें हें भाषण ऐकून शल्यानें त्यावर अधिक कांही उत्तर न देतां ‘ बरें, तसेंच होईल ! ’ इतकेंच म्हटलें. नंतर कर्णानें शल्याला ‘ रथ चालव ’ असें युद्धावेशानें सांगितलें; तेव्हां पांढरें शुभ्र घोडे जोडलेला तो रथ सारथि शल्यानें चालू केला. मग, सूर्य ज्याप्रमाणें तिमिराचा विध्वंस करीत पुढें जातो, त्याप्रमाणें तो बलाढ्य रथ शत्रुसैन्याचा विध्वंस करीत पुढें गेला. अशा प्रकारें चाललेल्या त्या आपल्या व्याघ्रचर्मपरिवेष्टित आणि श्वेताश्वयुक्त रथाकडे पाहून कर्ण संतुष्ट झाला; आणि पांडवांच्या सेनेकडे अवलोकन करून घाईघाईनें अर्जुनाची चौकशी करूं लागला.

अध्याय अडतिसावा.

—०—

कर्णाची बढाई !

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें कर्ण जेव्हां पांडवांशी लढण्यास निघाला, तेव्हां तुझ्या सैन्याला मोठा आनंद वाटला. पुढें तो समरभूमीवर पांडवांच्या सन्निध प्राप्त झाला, तेव्हां त्यास पांडवांकडील जो जो वीर भेटला त्याला त्याला त्यानें ‘ अर्जुन कोठें आहे ’ ह्मणून विचारिलें; आणि शिवाय असेही मांगि-

तलें की, जो कोणी पुरुष आज मला महात्मा श्वेतवाहन अर्जुन दाखवील, त्याला मी हवें असेल तितकें धन देईन; जर तेवढ्यानें त्याचें समाधान झालें नाही, तर त्यास मी गाडीभर रत्नें अर्पण करीन; आणि इतक्यानेंही जर त्यास तृप्ति वाटली नाही, तर मी शंभर गाई व तितकीच कांम्याची दोहनपात्रें देईन. अथवा अर्जुन दाखविणाऱ्या पुरुषाला मी शंभर उत्तम गांव व कृष्णकेशांनी युक्त अशी खेंचरें लावलेला शुभ्र रथ अर्पण करीन; जर इतक्यावर तो संतुष्ट झाला नाही, तर त्याला मी हत्तीसारखे बलाढ्य असे सहा बैल लावलेला सुवर्णरथ आणि रत्नाभरणांनीं अलंकृत व निष्कांचे हार धारण करणाऱ्या व गायननर्तनांत कुशल अशा शंभर सुंदर स्त्रिया अर्पण करीन; जर इतक्यानेंही त्याचा संतोष झाला नाही, तर त्याला मी शंभर हत्ती, शंभर सुवर्णरथ आणि बळकट, गुणवान, विनयशील, कार्यक्षम व उत्तम शिकविलेले असे दहा सहज उत्तम अश्व देईन; अथवा, ज्यांची शिंगें सुवर्णांनीं मढविली आहेत अशा चारशें सवत्स धेनु अर्जुन दाखविणाऱ्या पुरुषाला अर्पण करीन, इतक्यानें जर त्याचें समाधान झालें नाही; तर त्याला मी ह्याहून अधिक मोठी देणगी म्हणजे रत्न-खचित सौवर्ण अलंकारांनी युक्त असे पांचशें अश्व व शिवाय उत्तम प्रकारें शिकवून तयार केलेले अठरा दुसरे अश्व देईन; अथवा अर्जुन दाखविणाऱ्या पुरुषाला कांबोज देशांतील उत्तम अश्व जोडलेला सुवर्णमंडित शुभ्र रथ अर्पण करीन; जर इतक्यावर त्याचें समाधान झालें नाही, तर, ज्यांच्या गळ्यांत सुवर्णाचे हार शोभत आहेत, ज्यांच्या शरीरावर नानाविध हेमभूषणें विराजित आहेत, ज्यांचें जन्म समुद्राच्या परतीरी झालें आहे, व ज्यांस उत्तम महाताकडून शिकवून तयार केले आहे, असे

सहाशें हत्ती मी त्याला देईन; आणि इतक्यानेही जर त्याची तृप्ति झाली नाही, तर मी त्याला अधिक महत्त्वाची देणगी म्हणजे भरवस्तीचे, धनदौलतीने युक्त, वने व जलाशय ह्यांच्या समीप असलेले, जेथे कसलीही भीति नाही असे सर्व समृद्धीने ओतप्रोत भरलेले व राजेलेकांनीही उपभोग घेण्यास योग्य असे चोदा गांव अर्पण करीन, अथवा अर्जुन दाखविणाऱ्या पुरुषाला गळ्यांत पुतळ्यांचे वगैरे हार शोभणाऱ्या मागध देशांतल्या तरुण शंभर दासी मी देईन; जर एवढ्याने त्याची मनीषा पूर्ण झाली नाही, तर तो पुरुष जे जे कांही मागेले ते ते देण्यास मी सिद्ध आहे. फार काय, पुत्र, दारा, उपभोग्य वस्तु वगैरे जे कांही दुसरे मजपाशी आहे, तेही मी त्याची इच्छा असल्यास देण्यास तयार आहे; आणि जो कोणी मला कृष्णार्जुन दाखवील, त्याला कृष्णार्जुनांस मारून त्यांचे सर्व वित्त मी देईन !

राजा धृतराष्ट्रा, समरांगणांत कर्णाने अनेकांपाशी असे भाषण केले; आणि मग समुद्रापासून उत्पन्न झालेला आपला दिव्य व सुस्वर शंख वाजविला. राजा, कर्णाचे ते भाषण श्रवण करून दुर्योधनाला व त्याच्या अनुयायांना मोठा आनंद झाला. तेव्हां कौरवांच्या सैन्यांत दुंदुभि, मृदंग, त्रिशूल, वगैरे वाजू लागले. वीर मोठ्या ह्यांमध्यें लढाई लागले. हत्तींनी गर्जना चालविल्या, आणि आनंदित झालेले योद्धे आनंदाने आरोळ्या देऊ लागले. ह्याप्रमाणे जिकडे जिकडे आनंदाचे भरते येऊन मोठ्या बदाईने भाषण करणारा तो महारथ वीर कर्ण आतां शत्रुसैन्यावर उडी घालणार, इतक्यांत मद्राधिपति शल्य मोठ्याने हंसून त्यास असे भाषण बोलला.

अध्याय एकुणचाळिसावा.

—:०:—

कर्णाचा धिक्कार !

शल्य म्हणाला:—कर्णा, पुत्र किंवा हत्तीसारखे बलाढ्य असे सहा बेल लाविलेला सुवर्णरथ कोणालाही देऊ नको. आज तुला अर्जुन भेटेल. अरे, कुबेराप्रमाणे धन देण्यास तूं प्रस्तुत प्रसंगी सिद्ध झाला आहेस, हा तुझा केवळ मूर्खपणा होय. आज तूं अनायासेच धनंजयाला पाहाशील. तूं महामूर्खाप्रमाणे धनाचा व्यर्थ व्यय करीत आहेस, पण अपात्र पुरुषाला द्रव्यदान केले असतां कोणते दोष घडतात, हे तुझ्या लक्षांत कसे येत नाही ? अरे, तूं धनाची जी ही उधळपट्टी मांडिली आहेस तिच्या योगें तुला अनेक यज्ञ करितां येतील ! ह्यास्तव अशी ही उधळपट्टी न करितां नानाप्रकारचे यज्ञ कर. कृष्ण व अर्जुन ह्यांना मारण्याची जी तुझी मूर्खपणाची इच्छा, ती तर व्यर्थच आहे; कारण, युद्धांत कोल्ह्याने मिहाच्या जोडीला मारिल्याचे आखीं अद्याप कधीच ऐकिले नाही. ज्या अर्थी तूं भलतीच गोष्ट करावी म्हणून इच्छीत आहेस, आणि तुझा कोणीही निषेध करीत नाही, त्या अर्थी तुला कोणी मित्र आहेत असें मला वाटत नाही. बाबारे, जे कोणी तूं आगीत पडत असतां तुझे तत्काळ निवारण करतील, तेच तुझे खरे मित्र होत. तुझा कार्याकार्यविचार सुटला, ह्यावरून तुझी मृत्यूची घटी नजीक आली ह्यांत संदेह नाही. जगावयाची इच्छा असलेला असा कोणता पुरुष असले हे असेबद्ध व अश्राव्य भाषण मुखावाटे काढील ! गळ्यांत घोंडा बांधून केवळ बाहुबलाने समुद्र तरणे किंवा पर्वताच्या शिखरावरून खाली उडी टाकणे हे जसे अशक्य, तशीच तुझी ही इच्छा घडून येणे अशक्य होय. वा कर्णा, जर आपले बरे होण्याची तूं

इच्छा करीत असशील, तर तू एकटा धनंजयाशीं लढूं नको. तुम्हीं स्वपक्षोच सर्व वरि एकत्र होऊन मैत्र्याची व्यहरचना करून सुरक्षित व्हा आणि मग धनंजयाशीं गांठ घाला. कर्णा, दुर्योधनाचें हित व्हावें म्हणूनच मी हें तुला सांगत आहे. त्याचा नाश व्हावा अशी माझी मुळीच इच्छा नाही. जर तुला जिवंत रहाण्याची इच्छा असेल, तर माझ्या ह्या भाषणावर श्रद्धा ठेव.

कर्ण ह्मणाला:—शल्या, मी आपल्या स्वतःच्याच बाहुबलाच्या जोरावर रणांत अर्जुनाशीं गांठ घालण्याची इच्छा करीत आहे; तू मात्र वरून मित्रासारखें दाखवून पोटांत मला शत्रुसारखें भय घालीत आहेस! पण कोणीही नव्हे, प्रत्यक्ष इंद्र जरी वज्र उगारून आला, तरी तोही मला माझ्या ह्या निश्चयापामून दळविण्यास समर्थ होणार नाही. मग इतर य-कश्चित् मर्त्याची कथा काय ?

मंजय सांगतो:—कर्णाचें हें भाषण ऐकून त्याम अनिशय क्रोध आणण्याच्या हेतुनें मद्राधिपति शल्य पुनः म्हणाला, “ कर्णा, जेव्हां अर्जुनानें मोठ्या वेगानें व शिताफीनें गांडीवाच्या प्रत्येकपामून सोडिलेले कंकपत्र तीक्ष्ण शर तुला चोहोंकडून ग्रामून टाकतील. तेव्हां मग अर्जुनाशी युद्ध करण्यास उद्युक्त झाल्याबद्दल तुला पश्चात्ताप होईल ! त्याप्रमाणेच जेव्हां मर्यामाची पार्थ दिव्य धनुष्य धारण करून तीक्ष्ण बाणांच्या वृष्टीनें तुझ्या सैन्याला व तुला जर्जर करील, तेव्हां मग तू मागून हळहळू लागशील. वा कर्णा, आईच्या मांडीवर लोळणारे अज्ञान बाळ जमों आकाशातील चंद्र हरण करूं पहाते, तसा तू स्थामध्ये विराजित असलेल्या अर्जुनाला आज जिंकू पहात आहेस कर्णा, अर्जुनाचा पराक्रम किती भयंकर आहे ह्याचा विचार न करितां तू

आज अर्जुनाशीं लढण्याचा बेत केला आहेस, तेव्हां अत्यंत जलाल अशा त्रिशूलावरच तू आपली गात्रे प्रांशीत आहेस, अमे मला वाटते. एखाद्या मूखे अलड हरिणानें चवताळलेल्या धिप्पाड सिंहाला युद्ध करण्यास आव्हान करावें तद्वत् तू आज अर्जुनाला युद्धार्थ आव्हान करीत आहेस. हे मृतपुत्रा, तू त्या महापराक्रमी राजपुत्राला युद्धार्थ बोलावूं नको. ज्याप्रमाणें अरण्यांत मांस खाऊन तृप्त झालेल्या कोलहानें सिंहाला युद्धार्थ बोलवावें, त्याप्रमाणें तुझे हें करणें आहे. बाबा, पार्थाशीं तुझी गांठ पडली ह्मणजे तुझा व्यर्थनाश होईल रे ! कर्णा, तू केवळ ससा, जणू काय नांगराच्या फाळाप्रमाणें दांत असलेल्या त्या मदोन्मत्त महान् हत्तीशीं झगडूं पहात आहेस ! तू पार्थाशीं युद्ध करण्याची इच्छा करीत आहेस, पण तुझे हें कृत्य एखाद्या मृदानें विळांत असलेल्या महाविषारी कृष्णसर्पाला काष्ठानें टोंचून प्रक्षुब्ध करावें तमें आहे कर्णा. सिंहाची खोडी काढून त्याजपुढें जशी कोलहानें कुई करावी, तशी तू त्या अर्जुनाची खोडी काढून त्याजपुढें वढाई मिरवूं पहात आहेस ! अथवा महाविषगवान् पक्षिराज गरुडाला सर्पानें युद्धार्थ बोलवावें, त्याप्रमाणें तू अर्जुनाला युद्धार्थ बोलावित आहेस ! किंवा चंद्राच्या उदयकाळी भरती येऊन वाढत झालेला व उत्तम प्रवृत्ति जलचर प्राणी इतस्ततः भ्रमण करीत आहेत असा भयंकर महासागर तू केवळ बाहुबलानेंच तरून जाण्याची इच्छा करीत आहेस ! अथवा, वा कर्णा, तीक्ष्ण शृंगे असलेल्या व दुंदुभीप्रमाणें दुरकाण्या मदांध बेलालाच स्वतःशीं झगडण्यास बोलावित आहेस, तेव्हां ह्यास काय ह्मणावें ? कर्णा, महान् शब्द करणाऱ्या महाभेवापुढें ज्याप्रमाणें बेडकानें ओरडवें, त्याप्रमाणें तुझे हें कृत्य आहे ! अर्जुनाची योग्यता

वास्तविकपणें मेघाप्रमाणेंच होय; कारण तो ह्या लोकीं मेघाप्रमाणें सर्वांच्या इच्छा परिपूर्ण करून लोकांस मुख देणारा आहे. अरे, कुठ्यानें आपल्या घरीं राहून वनांतील वाघावर भुंकावें, तद्वत् तूं येथून अजुनावर भुंकात आहेस. कर्णा, कोल्हा मुद्धां शशकांनीं परिवेष्टित होतमाता स्वतःला सिंहच मानीत असतो, पण हा त्याचा भ्रम मिहाची गांठ पडतांच क्षणांत नष्ट होतो; तद्वत्, जेथपावेतो तुझी व अर्जुनाची गांठ पडली नाही, तेथपावेतो तूंही आपणास महा-पराक्रमी म्हणून खुशाल मान; पण ते कृष्ण-अर्जुन एकाच रथावर सूर्यचंद्रांप्रमाणें स्थित असलेले तुझ्या दृष्टीस पडले म्हणजे हा तुझा भ्रम तेव्हांच नाहीसा होईल! कर्णा, जोंपर्यंत घोर रणामध्यें गांडीवाचा ध्वनि तुझ्या कानांनीं पडला नाही, तोपर्यंतच तुला हें मनास वाटेल तें बरळतां येईल. पण रथांचा घणघणाट व प्रत्य-चांचा दणदणटा ह्यांनीं दशदिशा व्याप्त झाल्या म्हणजे व्याघ्रास पाहाणाऱ्या कोल्ह्या-प्रमाणें तुझी अवस्था क्षणांत होईल! कर्णा, तूं नेहमींचा कोल्हा व अर्जुन हा नेहमींचा सिंह होय. हे मूढा, तूं खऱ्या वीराचा द्वेष करितोस ह्यामनव मला तूं कोल्हाच वाटतोस. बा कर्णा, ज्याप्रमाणें मूषक व मार्जार, कुत्रे व वाघ, कोल्हा व सिंह, समा व हत्ती. खोंटे व खरे, किंवा विष व अमृत ह्यांमध्ये बलाबलांच्या संबंधांनें महदंतर आहे, त्याप्रमाणें तूं व अर्जुन ह्यांमध्ये विहिताविहित कर्मासंबंधांनें महदंतर आहे. तुम्ही दोघेही आपआपल्या कर्मांनीं प्रसिद्धच आहां!

अध्याय चाळिसावा.

—:०:—

कर्णाचें शल्यास प्रत्युत्तर.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें

अमितप्रतापी शल्यानें कर्णाचा धिक्कार केला, तेव्हां कर्णाला शल्याचा अतिशय मताप आला, आणि त्याला शल्य हें नांव पडण्याचें कारण त्याची कठोर वाणी हेंच असलें पाहिजे असें मनाशी ठरवून, कर्णानें शल्यास असें म्हटलें.

कर्ण ह्याणाला.— शल्या, गुणवानांचे गुण जाणण्यास गुणवानच मनुष्य पाहिजे. इतरांस ते जाणतां यावयाचे नाहीत. तूं तर गुणरहित, तेव्हां तुला गुणावगुणांचें ज्ञान कसें असणार? शल्या, महात्म्या अर्जुनाची महान् महान् अश्लेष, क्रोध, पराक्रम, धनुष्य, शर व प्रताप ही सर्व मला माहीत आहेत; त्याप्रमाणेंच, भूपतीचा नायक जो कृष्ण त्याची महती ही मला जितकी विदित आहे. तितकी ती तुला विदित नाही. आज समरांगणांत गांडीवधारी अर्जुनाला जें मी युद्धार्थ आह्वान करीत आहे, तें तरी मी आपल्या स्वतःच्या व अर्जुनाच्या वीर्याचा विचार करूनच करीत आहे. शल्या, मजपाशी असलेला हा लोकोत्तर बाण पाहिल्यास का? ह्याचे पुंनव उत्तम असून हा रक्तप्राशन करणारा आहे; हा मी एकदाच एका भात्यांत ठेविला आहे; ह्यास तीक्ष्ण धार दिलेली असून उत्तम तेल-पाणी केलें आहे; त्याप्रमाणेंच हा उत्कृष्ट शृंगा-रला असून ह्यास मी चंदनाच्या चूर्णांत ठेवून दिलें आहे; मी ह्याची बहुत वर्षे पूजा करीत असून हा सर्परूप आहे; ह्याच्या ठिकाणी भयंकर विष वसत असून ह्याला मनुष्यें, घोडे व हत्ती ह्यांचे जमावच्या जमाव ठार कर-ण्याचें सामर्थ्य आहे; ह्याचें रूप मोठें उग्र व घोर असून हा चिखलेंत व अस्थि ह्यांचें विद्वार-ण करणारा आहे; ह्या बाणाचें बळ इतकें अश्रुतपूर्व आहे की, मी क्रुद्ध झाल्यास ह्याच्या योगें महागिरि मेरू मुद्धां भेदून टाकीन; व हा बाण मी अर्जुनावांचून किंवा देवकीपुत्रावांचून अन्यावर कधीही सोडणार नाही, हें तूं खचित

ममज. शल्या, ह्या बाणानें मी आज वासुदेव-
धनंजयांशी युद्ध करीन आणि अतिशय क्षुब्ध
आलेल्या माझे हें कर्म पाहून मला लोक बरेच
झणतील. शल्या, सर्व यादववीरांचें वैभव
कृष्णाच्या ठिकाणीं वास करितें व सर्व पांडवांची
विजयश्री अर्जुनाच्या ठिकाणीं प्रतिष्ठित आहे;
ह्यास्तव ह्या दोघांशी एकदां गांठ पडली म्हणजे
क्व्हेण बरें मागें वळेल? ते दोघेही पुरुषव्याघ्र
रयामध्ये एके ठिकाणीं अधिष्ठित होऊन मजशी
युद्ध करण्यास जर प्राप्त झाले, तर, शल्या,
माझ्या जन्माचें मार्थक्य घडलें ह्यांत संदेह
नाहीं. शल्या, कृष्णार्जुन हे आत्तमाभेभाऊ
होत. कृष्ण हा अर्जुनाचा मामेभाऊ व अर्जुन
हा कृष्णाचा आत्तमाभाऊ. हे दोघेही आते नित्य
विजयी आहेत, पण आज मी ह्यांची एका
बाणानें, मूळांत ओंविलेल्या रत्नांप्रमाणें माळ
करून ह्यांस ठार मारितों पहा! शल्या, वानर-
ध्वज अर्जुनाच्या हातांतलें गांडीव व गरुडध्वज
कृष्णाच्या हातांतलें चक्र हे भिऱ्यांचे बागुल-
बोवा होत. पण मला तर त्यांच्या योगें उलट
आनंदच होत आहे. शल्या, तूं मूर्ख असून
शिवाय दुष्टही आहेस; घोर रणांत अवश्य अस-
णारें जें युद्धनैपुण्य तें तुझ्या ठिकाणीं वसत
नसल्यामुळे प्रस्तुत समर्थी तुझी छाती फाटून
जाऊन भीतीनें तूं पुष्कळ बडबड चाल-
विली आहेस; अथवा तूं जी कृष्णार्जुनांची
एवढी महती गात आहेस, त्यांतलें कारण तुझें
तुलाच माहीत! हे नीचदेशजा शल्या, सम-
रांगणांत आज मी कृष्णार्जुनांना मारिल्यावर
तुलाही बंधूसहवर्तमान ठार करणार! हे क्षत्रिय-
कुलकलंका दुष्टा पापदेशजा शल्या, मित्राचा
बलाणा करून शत्रूप्रमाणें तूं त्या उभय कृष्णां-
विषयीं माझ्या मनांत भय उत्पन्न करित आहेस
काय? एक ते आज मला ठार मारतील किंवा मी
त्यांना ठार मारीन. मला माझ्या बळाची पूर्ण

खातरी आहे, मला कृष्णार्जुनांचें बिलकूल भय
वाटत नाही. फार काय. आज हजारों कृष्ण
किंवा शेंकडों अर्जुन जरी माझ्याशी लढण्यास
सिद्ध झाले, तरी तितक्या सर्वांना मी एकटा
वधीन. तूं आतां निमूट बस आणि माझा परा-
क्रम पहा. हे कुदेशजा, स्त्रिया, मुलें, वृद्ध-
जन व तशांत विशेषकरून मौजेनें प्रवास कर-
णारे लोक हे, नीच मद्रदेशीय लोकांविषयी
जणू काय विद्येचा पाठच असें मानून, ज्या
गोष्टी वारंवार सांगत असतात, त्या गोष्टी तूं
मजपासून ऐक. ब्राह्मणांनीं ह्या गोष्टी अशाच
पूर्वीं राजांपुढें सांगितलेल्या आहेत. आतां त्या
मी तुला सांगतों. मूर्खा, त्या तूं ऐकून घेऊन
शांतपणें सहन कर किंवा तुला जर त्यांविषयीं
उत्तर देणें अमेल तर दे.

शल्या, मद्रदेशांतला मनुष्य म्हटला म्हणजे
तो नेहमी मित्राचा द्रोह करावयाचा; तूं आमचा
द्रोह करित आहेस, ह्याचें कारण तरी तूं मद्र-
देशांतला आहेस हेंच होय. मद्रदेशांतलें लोक
अधम व कुत्सित भाषण करणारे असल्यामुळें
मेत्री ही तेथें माहीतच नाही; मद्रदेशस्थ पुरुष
हा नेहमी दुष्टपणा करावयाचा; त्यास कधीही
सत्याची किंवा सरळपणाची ओळखही असा-
वयाची नाही. व मद्रक पुरुषाच्या ठायीं आ-
मरण दौरात्म्य रहावयाचें, असें आहीं ऐकिलें
आहे. शल्या, मद्रदेशांत पिता, पुत्र, माता,
सामू, सासरा, मामा, जांवई, मुलगी, भाऊ,
नातू व दुसरे बांधव, त्याचप्रमाणें सोबती,
पाहुणे आणि दासदासी वगैरे इतर मंडळी, ही
सर्व एके ठिकाणीं मिसळतात. शिवाय त्या
देशांत स्त्रिया कोणत्याही पुरुषांशी स्वे-
च्छेनें सहवास करितात; मग ते पुरुष
त्यांच्या ओळखीचे असोत किंवा नसोत! त्या
दुराचरणी व मांसाशमी पुरुषांच्या घरी त्यांस
मद्य व गोमांस खावयास सांपडून हंसण्या-

विदळण्याला मिळाले म्हणजे झाले ! शल्या, ज्या देशांतील लोक भलतींसलतीं गाणीं गातात, स्वच्छंदानें वर्तन करितात, व मनास वाटेल तसें एकमेकांना बोलतात, त्या देशांत धर्मबुद्धि कशी वास करील ? मद्रदेशांतील लोक मदांध असून अमंगल कृत्यांविषयी त्यांची ख्याति आहे. ह्यास्तव त्यांच्याशी कोणी वरही करूं नये व मैत्रीही करूं नये. मद्रदेशांत मित्रत्व हें नाहीच. मद्रदेशीय मनुष्य म्हणजे दुष्कृत्यांचा केवळ पुतळाच. मद्रदेशांत जसा आचरणाचा विधिनियेध नाही, तसा त्या देशांतील लोकांच्या सहवासानें गांधारदेशांतीलही आचारविचार नष्ट होईल. ज्याप्रमाणें, यज्ञांत राजा हाच जर याजकाचें कर्म करणारा असला तर त्या यज्ञाचें फळ व्यर्थ होतें, किंवा ज्याप्रमाणें शूद्राचा संस्कार करणारा विप्र मानहानीस प्राप्त होतो, किंवा ज्याप्रमाणें ब्रह्मद्वेष्टे पुरुष नेहमी अपयश जोडितात, त्याप्रमाणेंच मद्रकांशी संगति ठेवणाऱ्या पुरुषाची अवस्था होते. म्हणून, हे मद्रदेशीया शल्या, तुझ्याशी मैत्री करण्यास मी सिद्ध नाही. हे वृश्चिका, आतां तुझ्या विषाची मी मुळीच पर्वा करीत नाही. आथर्वण मंत्रानें मी त्याचा प्रतिकार करून वसलों आहे. विंचू चावून त्याच्या विषवेगानें मनुष्य तडफड करून नाचू लागला म्हणजे शहाणे लोक त्याजवर औपधि-उपचार किंवा मंत्रप्रयोग वगैरे करून त्याची बाधा दूर करितात हें खरें, पण त्या विंचवाची गांठच पडूं दिली नाही म्हणजे सर्वच कारभार आटोपला ! ह्यास्तव, आतां मी तुझा संबंधच तोडतो म्हणजे झाले. शल्या, मी सांगितलेल्या ह्या सर्व गोष्टींचा विचार करून तूं मुकाट्याने रहा व आणखी जें कांही सांगतों तें ऐक.

शल्या, मद्रदेशांत स्त्रिया दारू पिऊन धुंद होतात व वसनादिकांचा त्याग करून नाचत

सुटतात ! तेथें वैवाहिक विधींनीं स्त्रीपुरुषांचे संबंध नियत होत नाहीत व तेथील स्त्रिया मन मानेल त्या पुरुषाला वरितात. तेव्हां तशा प्रकारच्या स्त्रियांच्या उदरी जन्म पावल्यामुळे तुला धर्म सांगण्याचा अधिकार कसा येतो ? अरे, ज्या स्त्रियांना आपण कोण ही भावना मुद्धा नाही, उंट किंवा गाढवें ह्यांप्रमाणें ज्या उभ्यानेच नैसर्गिक क्रिया करितात, त्या तसल्या निर्लज्ज व भ्रष्ट स्त्रियांचा तूं पुत्र; तेव्हां तूं येथें धर्मोपदेश करण्याचा व्यर्थ अट्टाहास कां करितोस ? शल्या, मद्रदेशांतल्या स्त्रीपाशीं कोणी जर मद्य मागितलें, तर ती त्या मागणाऱ्याला कुले खाजवीत खाजवीत असें भयंकर उत्तर देते की, मजपाशीं कोणीही माझे प्रियकर मद्य मागूं नये; मी त्याला पाहिजे तर पुत्र देईन किंवा पतिही देईन, पण मद्य म्हणून देणार नाही ! त्याचप्रमाणें, शल्या, मद्रदेशांतील मुलीही मोठ्या निर्लज्ज, केसाळ व खादाड असून बहुधा अनाचारी असतात, असें आम्ही ऐकिलें आहे. शल्या, अशा प्रकारच्या एक का अनेक, किती तरी गोष्टी मी किंवा दुसरा कोणी तुला सांगू शकेल ! अरे, मद्रदेशांतली किंवा सिंधसौवीर देशांतली माणसें म्हणजे केशाग्रापामून नवाग्रापर्यंत दुराचरणाचे पुतळेच होत; पातकी देशांत जन्मल्यामुळे त्यांस म्लेच्छच म्हटलें तरी चालेल; ह्यास्तव त्यांना धर्माधर्मविचार कसा कळणार ? आम्ही असें ऐकिलें आहे कीं, क्षत्रियांचा मुख्य धर्म म्हणजे रणांगणांत मरावें व सज्जनांच्या आदरास पात्र व्हावें. ह्यासाठीं मी हा देह धारातीर्थी ठेवणार ! युद्धांत मरून स्वर्ग मिळवावा हा तर माझा मूळचाच संकल्प आहे; व ह्याच हेतूनें माझा प्रिय मित्र दुर्योधन ह्याची मी मैत्री जोडिली. प्रस्तुत माझे हे प्राण व माझ्याजवळ असलेली सवे कांहीं धनदौलत ही

त्या दुर्योधनाकरितां आहे असें मी समजतो. हे पापदेशाज, तूं तर पांडवांना कितूर झालेल्या आहेस, ह्यांत संदेहच नाही; कारण, शत्रूप्रमाणें तूं सर्व विपरीत सल्ला देत आहेस. पण, शल्या, तूं ही पक्की खातरी ठेव कीं, तुझ्यासारख्या शकडों जणांनीं जरी माझे मन फिरविण्याचा प्रयत्न केला, तरी मी खचित युद्धविमुख होणार नाहीं. पहा, धर्मवेत्त्या मनुष्याला नास्तिकांनीं कितीही अन्यथाबुद्धि सांगितली, तरी त्याचें मन स्वधर्मापासून अष्ट होईल काय? शल्या, ग्रामाधूम झालेल्या हरिणाप्रमाणें तूं आतां खुशाल तळमळत बस; मी तुझी पर्वा करीत नाहीं. क्षात्रधर्माला अनुसरून वर्तन करणाऱ्या ह्या कर्णाला आतां भीति म्हणून शिवणारच नाही. क्षत्रियांचें मुख्य व्रत रणांत पडावें. पण माघारें वळूं नये, असें आहे. शल्या, माझा गुरु परशुराम ह्यानें मला जे पूर्वीं अंतिम माध्य म्हणून सांगितलें आहे. त्याचें मला विस्मरण झालें नाही. कांरवांचें परित्राण करण्याम व पांडवांना वधण्याम मी सिद्ध झाल्यामुळे, पुरूरव्याच्या अप्रतिम गुणांचें मी अनुकरण करीत आहे अशी तुझी पक्की खातरी असूं दे. शल्या, तिन्ही लोकांत असा एकही प्राणी नाही की, जो मला ह्या माझ्या बेतापासून परावृत्त करील. शल्या, ह्या माझ्या प्रतिज्ञेचा नीट विचार कर व गप रहा. व्यर्थ भिऊन जाऊन अशी बडबड करूं नको. हे अधमा मद्रका, तुला मारून मी आतां हिंसक प्राण्यांची धन करणार नाहीं. मित्राच्या कार्याकडे लक्ष देऊन व तुला मारिल्यानें धृतराष्ट्र व दुर्योधन ह्या दोघांनाही बरे वाटणार नाहीं असें मनांत आणून तुला मी जीवदान देतो; पण, मद्रेश्वरा, जर का तूं असलें भाषण फिरून बोलशील, तर मात्र वज्रतुल्य गदेनें तुजें मस्तकच फोडून टाकीन हें पक्कें ध्यानांत

ठेव ! हे पापदेशाज शल्या, आज कृष्णार्जुनांनी कर्णाला किंवा कर्णानें कृष्णार्जुनांना रणांगणांत ठार मारिलें असें लोक पाहातील किंवा ऐकतील ! असो. राजा धृतराष्ट्रा. ह्याप्रमाणें बोलून कर्णानें पुनः मद्राधिपति शल्याला 'रथ चालव, रथ चालव' असें मोठ्या त्वरेनें सांगितलें.

अध्याय एकेचाळिसावा.

—:०:—

हंसकाकीयोपारुखान.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, युद्धास आतुर झालेल्या कर्णाचें हें असें भाषण श्रवण करून शल्यानें पुनः कर्णाला उत्तर दिलें व एक कथा सांगितली. शल्य म्हणाला:—कर्णा, यज्ञयाग करणाऱ्या व संग्रामांतून पळून न जाणाऱ्या मूर्धाभिषिक्त राजांच्या कुलांत मी जन्मलों असून मी नित्य धर्माप्रमाणें वर्तणारा आहे. अरे, दारू पिऊन बेफाम झालेल्या मनुष्यासारखा तूं वाटेल तें बोलत आहेस. परंतु इतका जरी तूं बहकला आहेस, तरी तुला स्नेहधर्मांमुळे ताळ्यावर आणावें असा माझा विचार आहे. मी तुला आतां हा एक कावळ्याचा दाखला सांगतो तो आधी ऐक; आणि मग "हे कुलकलंका मतिमंदा, तुला वाटेल तें तूं कर. कर्णा, माझ्या मनांत तुझ्याविषयीं कोही एक पापबुद्धि नाही, कीं जिच्याबद्दल मी निरपराधी असतांही तूं मला वधावेंस. तशांतून, तुजें हिताहित कशांमध्यें आहे हें जर मला कळत आहे, आणि मी तुझ्या रथावर सारथि असून दुर्योधनाच्या कल्याणाची जर अपेक्षा करीत आहे, तर विहिताविहित विचार तुला कळवावा हा माझा अवश्य धर्म होय. कर्णा, कोणता भूभाग सपाट आहे व कोणता उंचसखल आहे, रथ्याच्या हातून होण्यासारखें कोणतें कृत्य आहे व कोणतें नाही,

त्याप्रमाणेच रथ्याला व ह्यांना नित्य श्रम व त्रास कशापासून होतो; रथ्यानें जें आयुध उचलिलें असेल त्याच्या योगें उद्दिष्ट कार्य सिद्धीस जाईल की नाही, मृगपक्ष्यादिकांच्या स्वरांवरून वगैरे भावी परिणामाविषयी काय अंदाज होतो, अशांना रथाचा भार वाहून नेतां येईल की नाही, शरीरांत घुसलेले बाण उपटून काढून त्यांच्या जखमा कशा बऱ्या कराव्या, कोणत्या अस्त्रावर कोणत्या अस्त्राचा प्रयोग करावा, कोणत्या समयी कोणत्या प्रकारें लढावें, आणि आधिभौतिक व आधिदैविक कारणें अनुकूल कशी करून घ्यावी, वगैरे सर्व गोष्टींचा विचार करणें हें मी तुझा मारथि असल्यामुळें माझें कर्तव्य होय; आणि ह्यासाठी मी तुला फिरून हा एक दागवला सांगितों, तो ऐक.

कर्णा, समुद्राच्या परतीरास एक वैश्य रहात असे. त्याजपाशीं धनधान्यांची समृद्धि होती. तो यज्ञयागादिक करीत असे. तो मोठा दाता व क्षमाशील होता. तो वर्णाश्रमधर्म उत्तम रीतीनें पाळीत असे. त्याचें आचरण शुद्ध होतें. त्याला पुष्कळ पुत्र होते. तो त्यांवर फार प्रेम करीत असे. तो सर्वच प्राण्यांवर ममता करीत असे. तो ज्या राजाच्या राज्यांत रहात असे. तो राजाही मोठा धार्मिक होता, व त्यामुळें तो वैश्य निर्भयपणें त्या स्थळी रहात असे. कर्णा, त्या वैश्याला पुष्कळ पुत्र होते म्हणून मी तुला आतांच सांगितलें. त्या भाग्यवान् वैश्यकुमारांचें उष्टें खाऊन वाढलेला असा एक कावळा तेथें होता. त्या कावळ्यास ते वैश्यपुत्र मुद्रोद्रीत मांस, भात, दही, दूध, खीर, मध, वृत वगैरे पदार्थ देत आणि त्या उच्छिष्ट अन्नावर पुष्ट होऊन उन्मत्त झालेला तो कावळा आपल्या बरोबरीच्या व आपल्याहून वरिष्ठ अशा पक्ष्यांचा उपमर्द करी.

एके समयी, कर्णा, समुद्राच्या परतीरी, जेथें

तो वैश्य रहात होता तेथें बरेच हंस प्राप्त झाले. ते अतिशय वेगानें उडत असत व त्यांच्या ठिकाणी गरुडाप्रमाणें दूर अंतर चालून जाण्याचें बळ होतें, त्यांचें नेहमीचें वास्तव्य मानसरोवरी असून त्यांची चित्तवृत्ति सदा-सर्वकाळ प्रसन्न असे. ते हंस त्या स्थळी आलेले जेव्हां वैश्यकुमारांनी पाहिले, तेव्हां त्यांनी त्या कावळ्याला हटलें की, 'हे विहंगमा, आमच्या मते सर्व पक्ष्यांमध्ये तूच अत्यंत प्रबळ आहेस.' कर्णा, त्या वैश्यकुमारांना तरी तितपतच अकल होती. हणून त्यांनी त्या कावळ्याला अशा प्रकारें चढविलें. वैश्यकुमारांचें हें हणणें ऐकून, आधीच अंध झालेल्या त्या बेड्या मूर्ख कावळ्यानें तें खरेंच मानिलें; आणि नंतर, तो उष्टें खाऊन पुष्ट झालेला कावळा सुदूरपाती हंसांच्या समीप गेला आणि त्या हंसात मुख्य हंस कोणता हणून विचारूं लागला. पुढें त्या मतिमंद कावळ्याला त्या हंसांत जो श्रेष्ठ हंस वाटला त्याला तो हणाला की, 'आपण उड्डाण करूं या.' तेव्हां कावळ्याचें तें भाषण श्रवण करून त्या ठिकाणी प्राप्त झालेले ते सर्वच हंस मोठ्यानें हंसले आणि त्यांनी त्याचा धिक्कार केला.

ते हंस कावळ्याला हणाले:—कावळ्या, आह्मी मानसवासी हंस ही पृथ्वी फिरत असतो. आमच्याइतके दूरवर उडून जाणारे दुसरे कोणीही पक्षी नाहीत; हणून सर्व पक्षी आह्मांस अतिशय मान देतात. हे मूर्खा, तूं तर यःकश्चित् कावळा, आणि असें असतां मानसवासी, सुदूरपाती व बलिष्ठ अशा हंसांशीं उडूं या हणून गोष्ट काढितोस हें कमें! अरे, मी तुझांबरोबर उडण्यास सिद्ध आहे हणून आह्वाशी बोलण्यास तुला कांहीच वाटत नाही काय? कर्णा, हंसांचें हें भाषण ऐकून तो चढून गेलेला कावळा उलटा त्यां-

चा पुनःपुनः उपहास करूं लागला, आणि आपल्या जातीस अनुरूपच असे त्यानें भाषण केलें.

कावळा क्षणाला:—हंसहो, मला खचित एकशें एक प्रकारची उड्डाणें करितां येतात. प्रत्येक उड्डाण शंभर शंभर योजनांचें असून मोठें मौजेचें व इतरांपासून भिन्न भिन्न असें मी करितों, त्यांतील कित्येकांचीं नांवें—उड्डिन (वर जाणें), अवडीन (खाली येणें), प्रडीन (सर्वत्र जाणें), डीन (कोणत्याही प्रकारें जाणें), निडीन (सावकाश जाणें), संडीन (गमत गमत जाणें), तिर्यगडीन (वांकडेंतिकडे चालणें), विडीन (वेडावीत चालणें), परिडीन (वाटेत तिकडे जाणें), पराडीन (मागें वळणें), सुडीन (स्वर्गांत जाणें), अभिडीन (समोर जाणें), महाडीन (सरळ चालणें), निर्डीन (निश्चल चालणें), अतिडीन (झपाट्यानें जाणें), डीनडीनक, संडीनोड्डिन, पुनर्डीनविडीनक, संपात (एकाद्या जागी उडी घालणें), पक्षसंपात (एकाद्या जागी उडी घालून लागलेंच तेथून निघून जाणें), समुदीष (खाली वरती जाणें), व्यतिरिक्तक (निघतांना पक्षसंपाताचा वेत दाखविणें व प्रत्यक्ष निराळ्याच प्रकारें जाणें), गतागत व प्रतिगत वगैरे आहेत. आज हीं सवें उड्डाणें मी तुह्यांला करून दाखवीन, तेव्हां तुह्यांला माझा पराक्रम दिसून येईल. मी आतां ह्या उड्डाणांपैकी कोणत्या तरी एका उड्डाणानें अंतरिक्षांत उडून जाणार आहे; तर हंसहो, मी आतां कोणतें उड्डाण करून दाखविणें तुह्यांस उचित वाटतें तें सांगा आणि तुह्मी कोणतें उड्डाण करणार तें आपसांत ठरवून माझ्याबरोबर या. पक्ष्यां-

नो, ह्या इतक्या प्रकारच्या निरनिराळ्या गतींनी तुह्यांला माझ्याबरोबर अंतराळांत उडावयाचें आहे ! कर्णा, ह्याप्रमाणें कावळ्याचें भाषण श्रवण करून एक हंस खदखदां हंसून कावळ्याला जें काय क्षणाला तें मी तुला सांगतों ऐक.

हंस क्षणाला:—कावळ्या, तूं खरोखरीच एकशें एक उड्डाणें करून दाखविशील; पण आह्मांला इतर सर्व पक्ष्यांप्रमाणें काय तें एकच उड्डाण साधतें व तेंच उड्डाण आह्मी करूं. आह्मांस दुसरें उड्डाण येत नाहीं, तुला वाटेत तें उड्डाण तूं कर, आमची कांहीं हरकत नाहीं. कर्णा, हंसाचें हें भाषण ऐकून, त्या उच्छिष्टपुष्ट कावळ्याच्या सभोवतीं जें दुसरे कावळे जमा झाले होते ते मोठ्यानें हंसले व म्हणाले, “ कायहो, एकाच उड्डाणानें शंभर उड्डाणांना हा हंस कसा मागें टाकील ! शंभरांपैकी एका उड्डाणानेंच हा कावळा एक उड्डाण जाणणाऱ्या हंसांला जिंकील; कारण कावळा हा मोठा बलिष्ठ असून त्वरेनें पळणारा आहे ! ”

कर्णा, नंतर तो हंस व कावळा स्पर्धेनें अंतरिक्षांत उडावयास लागून धावू लागले. हंस हा एका गतीनें चालत होता व कावळा मात्र शंभर गति दाखवीत होता. ते दोघेही आप-आपला पराक्रम व्यक्त करून एकमेकांस थक् करण्याचा प्रयत्न करीत होते ! कावळ्यानें पुनः पुनः जी चित्रविचित्र उड्डाणें करून दाखविली, ती पाहून इतर कावळ्यांना अनावर आनंद झाला व ते मोठमोठ्यानें गर्जू लागले. इतर हंस कावळ्याच्या त्या गति पाहून खदखदां हंसले व त्यांनीं बाकीच्या कावळ्यांचा उपहास केला. तो उच्छिष्टपुष्ट कावळा जसजमा पुढें जाऊं लागला, तसतसा इतर कावळ्यांस अधिकाधिकच हर्ष झाला आणि ते वारंवार इकडे तिकडे नाचूं नागडूं लागले. वृक्षांवर जावें आणि

१ येथपासून पुढील उड्डाणें हीं एक किंवा अनेक उड्डाणांची मिश्रणे आहेत.

खाली यावें, असा त्यांनीं कम आरंभिला; आणि नानाप्रकारें कावकाव करून, आपल्या पक्षाला आतां जय खास मिळणार असें दर्शविलें. इकडे अंतरिक्षांत कावळ्याबरोबर उडणाऱ्या हंसांनें आपली ती मंद गति एकसारखी ठेविली होती आणि त्यामुळें कांही वेळपर्यंत तो मार्ग रहात चालला होता. तेव्हां तें पाहून कावळे हंसांना धिक्कारपूर्वक म्हणाले, हंसहो, तुझापैकी अंतरिक्षांत उडत असलेला हा हंस कसा मार्ग पडला हें पाहिलेंतना? कर्णा, कावळ्यांचें तें भाषण ऐकून आकाशगामी हंसांनें मोठ्या वेगानें पश्चिमेकडील मार्ग धरिला; व जें मकरांचें मुख्य स्थान अशा समुद्रावर तो प्राप्त झाला. तेव्हां कावळाही त्याबरोबर तिकडे गेला. पण दमल्याभागल्यास विभ्रान्ति घेण्याकरितां वृक्ष किंवा द्वीप वगैरे कांही नाही, असें पाहून त्याचें धावें दणाणलें व तो कासावीस झाला. कर्णा, समुद्र म्हणजे तो किती अगाध; नानाविध जलचरांचें तें वसतिस्थान; त्यांत शेंकडों मोठमोठाले प्राणी रहात असल्यामुळें आकाशापेक्षांही तो फार भयंकर; समुद्राइतकें खोल असें दुसरें कांहीही नाही; त्यांत चारही दिशांस जिकडे तिकडे पाणीच; व त्याच्या लाटा किती तरी प्रचंड; तेव्हां त्यापुढें यःकाश्चित् कावळ्याचा तो पाड काय? असो. अशा त्या भयंकर सागराचें हंसांनें कांही वेळ आक्रमण केलें तेव्हां कावळ्याला आपल्याबरोबर चालवत नाही असें हंसाच्या लक्षांत आलें आणि त्यानें मार्ग वळून कावळ्याची स्थिति नीट निरखून पाहिली व तो कावळ्याची वाट पहात उभा राहिला. नंतर कावळा अगदीं थकून जाऊन हंसाच्या समीप प्राप्त झाला, तेव्हां आतां हा खचित पाण्यांत पडून बुडून मरणार असें पाहून हंसांनें सज्जनांचें व्रत मनांत आणिलें व त्याला म्हटलें की, ' का-

वळ्या, तूं आम्हांला पुष्कळ प्रकारचीं उड्डाणें सांगितलीस, पण आतां तूं जें हें उड्डाण करीत आहेस तें कांही सांगितलें नाहीस; आणि ह्यामुळें मी मोठ्या गूढांत पडलों आहे. कावळ्या, प्रस्तुत तूं जें उड्डाण करीत आहेस, ह्याचें नांव काय बरें? सध्या तूं पंखांनी व चोंचीनें पाणी पुनःपुनः फडफडवीत आहेस! तेव्हां ही तुझी कोणती गति ती सांग पाहूं. कावळ्या, मिऊं नको, ये ये, लवकर ये, हा पहा मी तुझी वाट पहात आहे ! '

शल्य म्हणाला:—हे दुष्ट कर्णा, हंसाचे ते शब्द श्रवण करून, हताश होऊन पाण्यावर धडपड करीत असलेला तो कावळा हंसाला म्हणाला, " हंसा, आम्हां कावळ्यांची शक्ति ती किती ! आम्ही कावकाव करीत फिरावें ! मी तुला शरण आलों आहे, तर तूं मला जीवदान देऊन कांठावर घेऊन चलो ! " कर्णा, थकून गेलेल्या तो कावळा धडपड करीत हंसाला ह्याप्रमाणें म्हणत असतां अखेरीस एकाएकी समुद्रांत पडला, व तो आतां मरणार, इतक्यांत हंस त्याला म्हणाला, " कावळ्या, मला एकशें एक उड्डाणें करितां येतात, असें जें तूं म्हणाला होतास, त्याचें आतां स्मरण कर. तूं तर पूर्वी फार बढाईचें भाषण केलें होतंस, तुझी शक्ति तर माझ्यापेक्षां अधिक, आणि असें असून तूं इतका दमून समुद्रांत पडलास हें काय ? " कर्णा, असें हें भाषण ऐकून कावळा अगदीं दीन वदनांनें वर पाहून हंमाला म्हणाला:— हंसा, मी उष्टे खाऊन उन्मत्त झाल्यामुळें स्वतःला गरुडासारखें मानिलें व पुष्कळ इतर कावळे आणि दुसरे पक्षी ह्यांचा उपमर्द केला. पण आतां माझी धडगत नाही. मी तुजपाशीं जीवदान मागतों, तर तूं मला द्वीपाच्या किनाऱ्यावर पोचतें कर. जर मी सुखरूपणें स्वदेशास गेलों तर मी कोणाचाही अवमान करणार नाही ! कमेंही

करून तू मला संकटांतून वांचव ! कर्णा, ह्या-
प्रमाणे कावळ्याने मोठ्या दीनपणाने हंसाची
पुनःपुनः विनवणी केली, तेव्हा हा आतां काव-
काव करीन ममुद्रांत खचित बुडून मरणार असें
हंसांने पाहून मोठ्या त्वरेने त्यास पावलांनी वर
काढिले व हळूच आपल्या पृष्ठभागी धारण
करून पुनः पूर्वस्थळी हां हां म्हणतां नेले आणि
नंतर तो हंस मनोवेगाने यथोद्दिष्ट देशाम
निघून गेला. कर्णा, उच्छिष्टपुष्ट कावळ्याची
ह्याप्रमाणे त्या हंसांने पुरती रग जिरविली,
तेव्हां तो बल, वीर्य इत्यादिकांचा गर्व टाकून
देऊन शांत व विवेकशील बनला.

कर्णा, त्या कावळ्याप्रमाणेच तुला धार्ता-
राष्ट्रांनी उच्छिष्टावर वाढविल्यामुळे तू धुंद
होऊन आपल्या बरोबरीच्या व आपल्याहून
वरिष्ठ अशा जनांचा अवमान करीत आहेस.
कर्णा, विराटनगरीमध्ये द्रोण, अश्वत्थामा, कृप
व त्याप्रमाणेच भीष्म आदिकरून कौरव तुझे
रक्षण करण्यास सिद्ध अमता तुझ्या हातून त्या
एकट्या अर्जुनाचा वध कां बरे झाला नाहीं !
अरे, मिहांने ज्याप्रमाणे कोल्ह्यांची दुर्दशा
करावी, त्याप्रमाणे एकट्या अर्जुनांने जेव्हां
तुमची दुर्दशा उडवून तुझ्यास ' दे माय धरणी
ठाय ' करून सोडिले, तेव्हां तुझे सामर्थ्य कोठे
होतें ? अरे, सव्यसाची अर्जुनांने तुझ्या भ्रात्यांस
वधिलेले पाहून सर्व कौरवांसमक्ष प्रथम तर तूच
पळून गेलास ! त्याप्रमाणेच द्वैतवनात गंधर्वांनी
जेव्हां तुझ्यावर हल्ला केला, तेव्हां सर्व कौर-
वांना सोडून देऊन प्रथम पळाला तो कोण !
कर्णा, चित्रसेनप्रभृति गंधर्वांना समरांगणांत
जिकून व ठार मारून दुर्योधनाला भायेंसहवर्त-
मान सोडविले तें अर्जुनांनेच. परशुरामाने राज-
दरबारांत सर्व सभामद अविष्टित अमतां कृष्ण
व अर्जुन ह्यांचा पूर्वीचा पराक्रम वर्णन केलेला

१ विराटपर्व अध्याय ५४ पहा.

आहे; आणि त्याचप्रमाणे भीष्मद्रोण ह्यांच्या
मुखांवाटे राजांसमक्ष कृष्णार्जुन अवध्य आहेत
असे जे नित्य उद्गार निघत अमत् ते तू ऐकिले
आहेसच. कर्णा, एक की दोन गोष्टीत अर्जुन
तुझ्यापेक्षां बलवत्तर आहे म्हणून सांगू ? ज्या-
प्रमाणे सर्व प्राण्यांत ब्राह्मण हा श्रेष्ठ होय,
त्याप्रमाणे सर्व वावर्तीत अर्जुन हा तुझ्यापेक्षां
श्रेष्ठ आहे. आतां लवकरच उत्कृष्ट रथांत
आरूढ झालेले ते कृष्णार्जुन तुझ्या दृष्टीस
पडतील. कर्णा विवेकसंपन्न कावळ्याने हंसाचा
आश्रय केला, तद्वत् तू विवेकसंपन्न होऊन
कृष्णार्जुनांचा आश्रय कर. कर्णा, जेव्हां एकाच
रथांत अधिष्ठित झालेले ते रणधुरंधर कृष्णा-
र्जुन तू पाहाशील, तेव्हां मग तू ही बढाई
टाकून निमूट बसशील; आणि जेव्हां शतावधि
शरांनी अर्जुन तुझा दर्प नाहीसा करील, तेव्हां
मग तुला तुझ्यामधले व अर्जुनामधले अंतर
समजून येईल ! कर्णा, कृष्णार्जुन हे देव, दैत्य
व मनुष्ये ह्यांमध्ये प्रख्यात आहेत. त्या तेजस्वी
वीरांपुढे तू केवळ गव्योताप्रमाणे आहेस.
ह्यास्तव तू त्यांचा मूर्खपणाने अवमान करून को.
कर्णा, कृष्णार्जुन हे सूर्यचंद्रांप्रमाणे महादे-
दांप्यमान् अमून तू केवळ काजव्याप्रमाणे अल्प
तेजस्वी आहेस हा विचार मनांत आणून कृष्णा-
र्जुनांची मानखंडना करण्याचें सोडून दे; आणि
ते नरसिंह मोठे महात्मे आहेत असे मनांत
वागवून स्वतःची प्रौढी भिरवीत न बसतां
मुकाट्याने रहा.

अध्याय बेचाळिसावा.

— ०. —

कर्णाचें शल्याशीं आवेशाचें भाषण.

मंजय सांगतो :—मद्राधिपति शल्याचें ते
अप्रिय भाषण श्रवण करून महात्म्या कर्णाचा
त्यावर विश्वास बसला नाही आणि तो शल्याला

ह्मणाला, “ शल्या, कृष्णार्जुन कशा प्रकारचे आहेत, तें मला माहीत आहे. अर्जुन व त्याचा सारथि कृष्ण ह्यांची शक्ति व महास्त्रें ह्यांची मला आजमितीस जशी सविस्तर माहिती आहे, तशी तुला नाही. ते कृष्णार्जुन शस्त्रधारण करणारांमध्ये जरी श्रेष्ठ असले, तरी त्यांच्याशी मी निर्भयपणें युद्ध करीन; पण ब्राह्मणश्रेष्ठ जो परशुराम त्याने मला जो शाप दिला आहे, त्याची मला आज आठवण होऊन त्यामुळे मात्र माझे मन अस्वस्थ होत आहे ! शल्या, परशुरामानें मला शाप कां दिला तें ऐक. पूर्वी दिव्य अस्त्राची प्राप्ति व्हावी ह्मणून मी परशुरामाकडे ब्राह्मण आहे असें सांगून राहिलों होतां, तेव्हां देवराज इंद्रानें केवळ अर्जुनाचें हित करण्याच्या उद्देशानें मला विघ्न केलें. त्या समयी इंद्र एका भयंकर कीटकाचें रूप घेऊन माझ्या मांडीच्या समीप आला व त्यानें माझ्या मांडीवर मस्तक ठेवून परशुराम गुरु निद्रित असतां माझी मांडी फोडिली. तेव्हां माझ्या शरीरांतून रक्ताचा मोठा प्रवाह वाहूं लागला, परंतु परशुराम गुरु रागावेल ह्या भयानें मी आपली मांडी अगदीं ढळूं दिली नाही. नंतर परशुराम जागा झाल्यावर तो रक्तोद्य त्याच्या दृष्टीस पडला, तेव्हां माझे तें धैर्य अवलोकन करून तो मला ह्मणाला की, ‘ तूं कांही ब्राह्मण नव्हेस; कोण आहेस तें सांग. ’ तेव्हां शल्या, मी खरोखरी सूत आहे, असें त्यास सांगितलें. तें ऐकून परशुरामास माझा फार राग आला व त्यानें मला शाप दिला की, कर्णा, ज्या अर्थी तूं आपली सूतजाति मला न सांगतां हें अस्त्र तूं मजपासून संपादन केलें आहेस, त्या अर्थी हें तुला वेळी आठवणार नाही. ह्याचा उपयोग तुला तूझा मृत्युकाल आला नाही तोंपर्यंतच होईल; कारण ब्राह्मणाशिवाय अन्याच्या ठिकाणीं ब्रह्म

हें स्थिर रहात नाही ! शल्या, तें दिव्य अस्त्र आज ह्या घोर संग्रामांत मला मुळीच आठवत नाही; ह्यास्तव, भारतीय वीरांत प्रमुख असा हा महाभयंकर सर्वसंहारक व अत्यंत प्रबळ योद्धा अर्जुन आज पुष्कळ मोठमोठ्या क्षत्रियांस वधील व मोठा हाहाकार उडेल, असें मला वाटतें. शल्या, यद्यापि असें घडण्याचा संभव असला, तथापि मी त्या उग्रधनुर्धर, महाप्रतापी, असह्यबल, सत्यसंध व महाभीतिप्रद धनंजयाला मृत्युमुखी लोटीन ह्याविषयीं संदेह नाही. मजपाशी दुसरे एक अस्त्र सिद्ध आहे, त्याच्या योगें मी रणांगणांत महान् महान् शत्रूंना व त्याचप्रमाणें त्या लोकोत्तर अर्जुनाला वधीन. पहा, समुद्र हा मोठा वेगवान् व अगाध आहे, तो किती तरी प्राण्यांना आपल्यामध्ये बुडवून टाकितो; तथापि त्या अगाध व अवाढव्य समुद्राला त्याची मर्यादा दाबून टाकिते; तद्वत्, अर्जुन हा कितीही प्रबळ योद्धा असला व तो समुद्राच्या लाटांप्रमाणें बाणांची वृष्टि करून क्षत्रियांचा संहार करण्यास कितीही उद्युक्त झाला, तरी समुद्राच्या मर्यादेप्रमाणें, त्याजवर बाणांचा वर्षाव करून, मी त्यास आळा घालीन. शल्या, ज्याच्या तोडीचा कोणीही धनुर्धर नर नाही व जो सुर किंवा अमर ह्यांना युद्धांत जिंकील, अशा त्या महाप्रताप धनंजयाशी आज मी घोर संग्राम करीन तो पहा. शल्या, आज अत्यंत अभिमानी व युद्धाभिलाषी अर्जुन आपल्या दिव्य अस्त्रांचा भडिमार करित मजवर चालून आला म्हणजे त्याच्या अस्त्रांचा मी आपल्या श्रेष्ठ अस्त्रांनी नाश करून त्यास धारातीर्थी पाडीन. आज बाणवृष्टीनें सूर्याप्रमाणें दशदिशा उज्ज्वलित व प्रदीप्त करून टाकणाऱ्या त्या लोकोत्तर अर्जुनाला मेघाप्रमाणें मी बाणांनी पार झांकून टाकीन. ऊर्ध्वभागी धूम्राचे लोट उसळत

असून जो पेटत चालला आहे अशा अशीला ज्याप्रमाणे पर्जन्यवृष्टीने शांत करावे, त्याच-प्रमाणे मी ह्या सर्व लोकांस जाळून टाकणाऱ्या अर्जुनाला बाणवृष्टीने शांत करीन. शल्या, अर्जुन ह्मणजे केवळ क्षुब्ध झालेला भयंकर विषारी सर्पच होय; त्याच्या ठिकाणी अशी-सारखा महाप्रताप वास करीत आहे; पण त्याजवर मी आज भल्ल शर टाकून त्याला जर्जर करीन. अर्जुनाचा पराक्रम मोठा अपूर्व आहे, त्याला जिंकणे मोठे अशक्य आहे, तो एकदां बाणांचा वर्षाव करू लागला म्हणजे शत्रूवर बाणरूप झंझावातच सुरू होतो असे म्हटले तरी चालेल; पण असे असले तरी, हिमवान् पर्वता-प्रमाणे संकुद्ध झालेल्या अर्जुनाची ती बाणवृष्टि मी सहन करीन. शल्या, अर्जुन हा रथाचे मार्ग जाणण्यांत मोठा पंडित असून तो अत्यंत प्रबळ वीर आहे, तथापि मी त्याचे आज समरांगणांत कांहीएक चालू देणार नाही. शल्या, ज्या लोकोत्तर रणभुरंधरांनी सर्व पृथ्वी जिंकिली व ज्याने खांडवप्रस्थांत देवतांसहवर्तमान सर्व भूतांना जिंकून टाकिले, त्याच्याशी मी युद्ध करीन. शल्या, जो मोठा अभिमानी, अस्त्रविद्या-पारंगत, शिताफीने आयुधांचा प्रयोग करणारा व दिव्य अस्त्रांचा वेत्ता, त्या श्वेतहय प्रबळ अर्जुनाबरोबर युद्ध करून वांचेल असा माझ्या-व्यतिरिक्त दुसरा कोणता पुरुष आहे बरे ? मी आज त्या अतिरथ अर्जुनावर निशित बाणांची वृष्टि करून त्याचे शिर धडापासून वेगळे करीन ! शल्या, आज समरांगणांत अर्जुनाशी युद्ध करून एक तर मी त्यास जिंकून किंवा मी स्वतः युद्धांत देह ठेवीन. शल्या, त्या वासवोपम अर्जुनाशी एका रथाने युद्ध करील असा माझ्याशिवाय दुसरा कोणीही योद्धा नाही. आज त्या महावीराचा पराक्रम मी क्षत्रियमंडळांत मोठ्या आनंदाने रणभूमीवर

वर्णन करीन. त्वां महामूर्खाने अर्जुनाचा पराक्रम मला सांगण्याचे कांहीएक कारण नव्हते. तूं अप्रिय गोष्टी करणारा असून अतिशय निष्ठुर व नीच आहेस; शिवाय क्षमाशील मनुष्याची तूं निंदा करितोस व स्वतः तुझ्या ठिकाणी तर क्षमेचा लेशही नाही. तुझ्या सारख्या शेंकडों मनुष्यांचा मी वधच केला असता, पण माझ्या ठिकाणी सहनशीलता असल्यामुळे आणि देशकालपरिस्थितीचा मी विचार करणारा असल्यामुळे मी ती गोष्ट करण्यास राजी नाही. हे पापिष्ठा, तूं जे मला अप्रिय बोललास त्यांत तुझा हेतु पांडवांचे बरे करावे हाच होता. शल्या, तूं फार कुटिल आहेस व ह्यामुळेच मी तुझ्याशी सरळपणाने वागत असतां तूं माझा द्रोह करण्यास उद्युक्त झालास. तूं आज माझ्याशी कपट करून केवळ मितद्रोहच केलास असे मी ह्मणतो. कारण मेघ्री ही सप्त-पदांत घडते. असो; शल्या, हा मोठा दारुण प्रसंग प्राप्त झाला आहे; कारण दुर्योधन स्वतः युद्धार्थ सिद्ध होऊन आला आहे. अरे, दुर्योधनाची इच्छा सिद्धीस जावी ह्यासाठी माझा जीव तिळतिळ तुटत आहे, आणि तूं तर त्याचे अहित चिंतीत आहेस ! अरे, जो मनुष्य दुसऱ्यावर प्रेम करितो, त्याला आनंद-वितो, त्याला प्रसन्न करितो, त्याला राखितो, त्याला मोठेपणा देतो, आणि त्याचे सुख पाहून संतोष पावतो, त्यास मित्र ह्मणतात. शल्या, मी तुला सांगतो की, हे सर्व गुण माझ्या ठिकाणी वसत आहेत आणि हे सर्व खुद्द दुर्योधन जाणत आहे. शल्या, जो मनुष्य दुसऱ्याचा नाश किंवा शासन करितो, त्याला मारण्यासाठी शस्त्रादिक पाजळतो, त्याला इंजा करितो, त्याला रडायला लावितो, त्याला दुःख देतो, आणि पुष्कळ प्रकारांनी पीडा करितो,

त्याला शत्रु ह्मणतात. शल्या, मी तुला सांगतो की, हे सर्व दुर्गुण तुझ्या ठिकाणी वसत आहेत आणि ते तू माझ्या प्रत्ययास आणून दिले आहेस ! शल्या, दुर्योधनाची इच्छा सफल होण्याकरिता, तुला आनंदविण्याकरिता, जयप्राप्तीकरिता, माझे स्वतःचें कर्तव्य सिद्धीस नेण्याकरिता आणि ईश्वराचे हेतु परिपूर्ण करण्याकरिता आज मी मोठ्या दक्षतेने कृष्णार्जुनांशी युद्ध करीन, तें पहा. ब्रह्माशिर आदिकरून ब्रह्मास्त्रे, ऐंद्रवारुण, आदिकरून दिव्यास्त्रे, व दिव्यधनु आदिकरून भौमास्त्रे तू अवलोकन कर. ज्याप्रमाणें एक मदनमत्त हत्ती दुसऱ्या मदनमत्त हत्तीला ठार मारून टाकितो, त्याप्रमाणें मी आज त्या महाप्रतापी अर्जुनाला ठार करून टाकीन. आज मी बलाढ्य व अजिंक्य असें ब्रह्मास्त्र मला जय प्राप्त व्हावा म्हणून अर्जुनावर सोडीन व जर का ऐननिकराच्या प्रसंगी माझ्या रथाचें चाक पडलें (जमिनीत रुतलें वगैरे) नाही तर त्या माझ्या अस्त्रापामून खचित अर्जुनाची सुटका होणार नाही. शल्या, हें तू पकें ध्यानांत ठेव की, मी आज दंडधारी यमाला, पाशधारी वरुणाला, गदाधारी कुबेराला, वज्रधारी इंद्राला किंवा दुसऱ्या कोणत्याही आततायी शत्रूला भिणार म्हणून नाही. आज मला त्या अर्जुनाचें किंवा जनार्दनाचेंही भय वाटत नाही. आजच्या घोर रणांत मी त्या दोघांशीही युद्ध करीन.

शल्या, एके प्रसंगी मी आपल्या विजय चापाच्या योगें अस्त्रक्षेपणाचा अभ्यास करीत फिरत असतां अज्ञानानें जे घोर व भयंकर बाण सोडिले. त्यांतील एक बाण एका ब्राह्मणाच्या होमधेनूचें वासरूं वनांत निर्जनप्रदेशीं चरत होतें त्याला चुकून लागला व तें मरण पावलें. तेव्हां तो ब्राह्मण मला म्हणाला की, ज्या अर्थी तू उन्मत्तपणानें माझ्या होमधेनूचें वासरूं मारिले आहेस त्या अर्थी युद्धांत

अगदी ऐनआणीनाणीच्या प्रसंगी तुझ्या रथाचें चाक खाचेंत रुतेल ! शल्या, ह्यासाठी ब्राह्मणाच्या ह्या शापवचनाला मी फार भीत आहे. हे मद्राधिपा. हे सोमवंशीय राजे सुख प्राप्त करून घेण्याला व दुःखाचें निवारण करण्याला समर्थ आहेत. ह्यास्तव, मी त्या ब्राह्मणाला एक सहस्र गाई व सहस्र बैल देण्यास तयार झालों, पण तो ब्राह्मण संतुष्ट झाला नाही. नंतर मी त्या ब्राह्मणाला सातशें उत्तम हत्ती आणि शेंकडों दास व दासी देऊं लागलों, पण त्यानें सुद्धां त्या द्विजश्रेष्ठाची तृप्ति झाली नाही. मग मी चौदा हजार काळ्या कपिला गाई श्वेतवत्सानीं युक्त अशा त्याजयुद्धे उभ्या केल्या, पण त्यानें सुद्धां ब्राह्मणाचें मन प्रसन्न झालें नाही. नंतर मी यच्चयावत् अपेक्षित वस्तूंनी भरलेलें माझे घर व माझ्या जवळ होतें नव्हतें तेवढें सगळें धन त्यास मोठ्या आदरांनें दिलें, पण त्यानें त्याची इच्छा केली नाही. त्या समयी मी फारच हताश होऊन मोठ्या दीनपणानें त्याची प्रार्थना केली; तेव्हां तो ब्राह्मण मला म्हणाला की, हे सूता, माझे भाषण कधीही अन्यथा होणार नाही. असत्य भाषणानें प्राण्यांचा नाश होईल व त्यामुळें मला पाप लागेल. ह्यासाठी धर्मरक्षणावर दृष्टि देऊन मी असत्य भाषण करण्यास कधीही राजी नसतों. सूता, ब्राह्मणाच्या योगक्षेमाचें साधन तू कधीही नष्ट करूं नको. आतां तू जो माझा अपराध केलास, त्याचें तुला प्रायश्चित्त मिळालेंच आहे. माझे वचन अन्यथा करण्यास ह्या लोकी कोणीही समर्थ नाही; ह्यास्तव आतां ह्या माझ्या शापानें फल भोगण्याची तयारी ठेव !

शल्या, जरी तू माझा अधिक्षेप करीत आहेस, तरी तुला मी हें वृत्त मित्रबुद्धीनें निवेदन केलें आहे. तू माझा निंदक आहेस

ही गोष्ट मी जाणून आहे ह्यास्तव मी जें आतां सांगेन तें तूं मुकाट्याने ऐक.

अध्याय त्रैचाळिसावा.

—:०—

शल्याभिक्षेप !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें शल्यास निरुत्तर करून शत्रुसंहारक कर्ण पुनः त्यास म्हणाला:—शल्या, जरी तूं मला दाखला देऊन कितीही सांगितलेंस, तरी इतकें पक्कें लक्षांत ठेव की, तुझ्या भाषणानें युद्धामध्ये माझ्या हृदयाला भीतीचा स्पर्श म्हणून व्हावयाचा नाही. अरे, इंद्रासहवर्तमान सर्व देव जरी माझ्याशीं युद्ध करण्यास प्राप्त झाले तरीही मला भय वाटणार नाही. मग कृष्णार्जुनांचें भय वाटण्याची गोष्ट कशाला पाहिजे? अरे, केवळ भाषणानें मी म्हणून कधीही भिणार नाहीं. ज्याला तुझ्या शब्दांनी समरभूमीवर भीति उत्पन्न होईल तो कोणी दुसरा असेल, तो मी नव्हे. शल्या, तूं जे मला वाक्प्रहार केलेस, त्यांवरून तुझा नीचपणा मात्र व्यक्त झाला, दुसरें कांही नाही. नीचाचें सामर्थ्य म्हटलें म्हणजे तें इतक्यापुरतेंच. हे दुर्भते, माझ्या गुणांची प्रशंसा करण्यास तूं असमर्थ आहेस आणि उलट खूब बडबड मात्र चालविली आहेस, पण कर्ण हा युद्धप्रसंगी भिण्याकरितां जन्मला नाही, पराक्रम करून दाखवावा व विजय मिळवावा एवढ्यासाठीच माझा जन्म आहे. शल्या, तुझ्या ह्या दुर्भाषणास्तव मी तुला ठारच मारिलें असतें, परंतु तूं माझा सारथि आहेस. तुझ्या ठिकाणी माझे प्रेम आहे, व दुर्योधनाचें कल्याण करावें हा माझा हेतु आहे, ह्या तीन कारणांनीं सांप्रत तूं जिवंत आहेस. कर्णा, दुर्योधनाचें महत्कार्य सिद्धीस नेण्याचा हा समय आहे, आणि दुर्योधनानें तें कार्य माझ्या-

वर सोंपविलें आहे ह्यामुळे प्रस्तुत समर्थी तुजें जीवित सुरक्षित आहे. शल्या, मी तुझ्यापार्शी करार करून चुकलों आहे कीं, तूं मला कितीही अप्रिय बोललास तरी मी तें सहन करीन. शल्या, मला तुझ्या साहाय्याची जरूरी नाही. तुझ्यासारखे सहस्र शल्य जरी मला मदत करूं लागले, तरी त्यांची पर्वा न करितां मी एकटाच शत्रूंना जिंकून. मित्रद्रोहापासून पातकाची प्राप्ति होते आणि ह्यामुळेच तूं प्रस्तुतकालीं जिवंत आहेस !

अध्याय चवेचाळिसावा.

—:०—

कर्णकृत वाहीकनिंदा.

शल्य म्हणाला:—कर्णा, मी एकटाच शत्रूंना जिंकून म्हणून जें कांही तूं बोललास, ती स्वरोखरी तुझी बडबड होय. मी मात्र एकटा तुझ्यासारखे सहस्र कर्ण जरी माझ्या मदतीस आले तरी त्यांस न जुमानितां समरांगणांत शत्रूंना जिंकून !

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कुद्ध होऊन शल्यानें कठोर भाषण केलें, तेव्हां कर्णानें पुनः त्याच्या दुपटीनें कठोर असें भाषण केलें.

कर्ण म्हणाला:—हे मद्राधिपा शल्या, आतां मी तुला जें सांगणार आहे, तें एकाग्रचित्तानें श्रवण कर. हें मी धृतराष्ट्राच्या समीप ब्राह्मणाच्या तोंडून ऐकिलें आहे. मद्रेश्वरा, धृतराष्ट्राच्या गृही ब्राह्मणांकडून नानाविध देशांचे व बहुत राजांचे मनोहर इतिहास सांगण्यांत येत असत. तेथें कोणी एका वृद्ध द्विजवर्यानें पूर्वीच्या कथा सांगितल्या, तेव्हां तो वाहीक व मद्रह्या देशांतील लोकांची निंदा करून झगला, अहो, हिमवान्, गंगा, सरस्वती, यमुना व कुक्षेत्र ह्या पांचांपासून जे लोक दूर राहातात

आणि सिंधु, शतद्रु, विपाशा, इरावती, चंद्रभागा व वितस्था ह्या नद्यांच्या मधील प्रदेशांत जें लोक राहातात, ते वाहीक लोक अपवित्र व धर्मबाह्य असल्यामुळे त्यांच्याशी संपर्क करूं नये. मला लहानपणापासून स्मरण आहे की, ह्या प्रदेशांतील राजवाड्यांच्या द्वारांसमीप मद्य-पानगृह व गोवधशाला म्हणून असावयाचीच ! मी फार गुप्त अशा एका कार्यासाठी वाहीक देशांत राहिलों होतो. तेव्हां वाहीकांशी माझा जो सहवास झाला त्यावरून त्यांचा आचार-विचार मला माहीत झाला आहे. शाकल नामक नगर, आपगा नामक नदी व जातिक नामक वाहीकांचा प्रांत ही सर्व अतिनिंद्य आहेत. येथील लोक फार दुराचरणी आहेत. ते भडबुजा-कडील भाजके दाणे व गौड्या नांवाचे मद्य सेवन करितात. त्याचप्रमाणें ते गोमांस, लसूण, मांसयुक्त वडे व विकत आणलेला भात वगैरे खातात. त्यांच्या ठिकाणी सौजन्य म्हणून मुळीच नाही. तेथील स्त्रिया मद्यप्राशन करून नगरामध्ये गृहभितीच्या बाहेर उठी किंवा माळा वगैरे कांहींएक धारण न करितां खुशाल गातात व नाचतात. मग त्यांस वस्त्रांचें सुद्धां भान राहात नाही. त्या धुंद झालेल्या स्त्रिया एकदां गाऊं लागल्या म्हणजे अश्लील पद्यें म्हणतात. त्यांचें तें गायन म्हणजे जणू काय गर्दभाचें किंवा उंटाचें ओरडणेंच होय. त्या स्त्रिया मैथुनकाली स्वपरपुरुषविचार सुद्धां करीत नाहीत. त्यांचें वर्तन सर्वतोपरी स्वच्छंद व निर्मर्याद असतें. त्या बेहोष झालेल्या स्त्रिया एकमेकींची थडामस्कारी अतिशय करितात. त्या एकमेकांना (नवऱ्याचा मारखाऊ इ.) अभद्र शब्दांनी हाका मारितात. आणि कोणत्या दिवशी कसें वागावें ह्याचा लवमात्र विधिनिषेध न बाळगितां त्या हलकट स्त्रिया आरडतात, खिदळतात व नाचतही सुटतात ! शल्या, त्या धुंद स्त्रियांत

राहाणारा कोणी एक अतिशय हलकट वाहीक पुरुष कुरुजांगल देशांत असतां मोठ्या दिल-गिरीनें त्या धुंद स्त्रियांपैकी एकीची आठवण करून जें काय म्हणाला तें ऐक. तो वाहीक म्हणालाः—अरेरे ! ती यौवनभरानें मुसमुसलेली युवती झिरझिरीत वस्त्र परिधान करून खचित माझें स्मरण करीत अंथरुणावर तळमळत असेल ! म्हणून मी ह्या कुरुजांगल देशांतून तिच्या भेटीकरितां तिकडे जावें हें उचित होय. आतां मी प्रथम शतद्रु ओलांडीन व नंतर रमणीय अशा इरावतीतून पलीकडे स्वदेशी जाईन आणि आपल्या प्रियेला भेटेन ! अरेरे ! ज्यांच्या भालप्रदेशांतील हाडें मोठी स्थूल आहेत, अशा त्या सुंदर स्त्रियांची व माझी कधी गांठ पडेल बरें ! त्या रम्य स्त्रियांचे विलास कायहो वर्णावे ! त्यांचे नेत्रप्रांत मनशीळा-प्रमाणें लकाकत असून त्यांच्या नेत्रांत उत्कृष्ट अंजनें शोभत असतात. त्या मनोहर स्त्रिया शाली व चर्में परिधान करून सुखोपभोगार्थ उत्सुक होत्सात्या मृदंग, आनक, शंख, मर्दल, इत्यादि वाद्यांच्या स्वरांत व तालांत दंग होऊन मोठमोठ्यानें गातात आणि शिवाय त्यांच्या त्या गायनाला गर्दभ, उंट व खेंचरे ह्यांच्या शब्दांनी पुष्टीकरण मिळत असतें ! अशा त्या विलासी स्त्रिया शमी, पीलु व कण्हेर ह्यांच्या बागांत आरामस्थानी मला केव्हां भेटतील बरें ? अहो, त्या देशांतील पुरुषांचें तरी काय वर्णन करावें ! वडे, घारगे, ताकांत कालविलेले सातूचे पिंड हे खाऊन पुष्ट झालेले तेथील लोक मार्गांत दुसऱ्या प्रवाशांना भेटले असतां त्यांची वखें ओढून त्यांना कितीही मारीत सुटतात ! सारांश, मद्राधिपा, वाहीक देशांतील स्त्रिया व पुरुष ही दोन्ही धर्मबाह्य व अत्याचार करणारी आहेत. तेव्हां कोणता विचारी पुरुष क्षणभर तरी त्या देशांत राहाण्यास राजी होईल बरें ! मद्राजा

शल्या, ब्राह्मणानें दुराचरणी वाहीक लोकांचें हें असें वर्णन केलें. त्या लोकांच्या पापपुण्यांचा सहावा भाग ग्रहण करणारा तू आहेस; ह्यास्तव तुझ्या ठिकाणीं तदनुरूपच पापपुण्यांचा संचय असला पाहिजे हें उघड आहे.

शल्या, तो ब्राह्मण अशा प्रकारचें भाषण करून त्या अनीतिमान् वाहीकांविषयी आणखी काय म्हणाला तें ऐक. तेथें त्या भरवस्तीच्या शाकल नगरांत नेहमीं कृष्णचतुर्दशीला रात्रीस दुंदुभि वाजवून एक राक्षसी मोठमोठ्यांनं ओरडून असें म्हणत असे कीं, अहो, गाईचें मांस व गोड दारू मनमुराद सेवन करून ह्या शाकल नगरांत मी पुनः वाहीक लोकांचीं गाणीं केव्हां गाईन बरें? अहो, येथील धिप्पाड तरुण स्त्रियांसमवेत मोठ्या थाटानें मला कांदे, मद्य व पुष्कळ मेढे ह्यांजवर कधीं हात मारायला सांपडेल? अहो, डुकरांचें, कांबड्यांचें, गाईचें, गाढवाचें, उंट्याचें व मेंढ्याचें वगैरे मांस ज्यांस खावयास मिळत नाहीं, त्यांचें जन्म निरर्थक होय! शल्या, ज्या नगरांतील लहानमोठे सर्व रहिवाशी दारू पिऊन अशा प्रकारचीं गाणीं गातात, त्या नगरांत धर्माचें नांव तरी असेल काय? शल्या, ह्याशिवाय कौरवसभेंत ब्राह्मण जें कांहीं आणखी म्हणाला तें मी तुला आतां सांगितों. शल्या, ज्या प्रदेशांत पीलु वनं आहेत तेथें पंचनद्या वाहातात. त्या पांच नद्यांचीं नांवें शतद्रु, विपाशा, इरावती, चंद्रभागा व वितस्ता हीं आहेत. ह्याशिवाय तेथें हिमालयापासून दूर वाहात जाणारी सिंधु नदी ही सहावी आहे. ह्यांच्यामधील भूप्रदेशास आरट्ट देश असें म्हणतात. त्या देशांतील लोक धर्महीन असल्यामुळे तेथें कोणीही जाऊं सुद्धां नये. शल्या, ज्या लोकांचे उपनयनादि संस्कार होत नाहींत, जे शूद्रादिकांपासून अन्यजातीय स्त्रियांच्या ठिकाणीं जन्म पावतात व जे यज्ञा-

दिक क्रिया करीत नाहींत, अशा त्या वाहीक व इतर धर्महीन लोकांनीं देव, पितर व ब्राह्मण ह्यांना उद्देशून कांहीं दानधर्म, श्राद्धतर्पण इत्यादिक केलें असतां ते देवपितर वगैरे त्या दानधर्मादिकांचा स्वीकार करीत नाहींत. तो विद्वान् ब्राह्मण कुरुसभेंत आणखी असेंही म्हणाला कीं, वाहीक लोक काष्ठाच्या कुंड्यांतून व मातीच्या भांड्यांतून अन्न सेवन करितात. त्या भांड्यांना मग जरां सातूचें पीठ किंवा मद्य लागलेलें असलें, अथवा जरी तीं कुड्यानें चाटलेलीं असलीं तरी त्यांना कांहीच वाईट वाटत नाहीं. वाहीक लोक मेंढीचें, उंट्याचें व गाढवीचें दूध प्राशन करितात व त्याप्रमाणेंच त्या दुधापासून होणारे वृतादिक पदार्थही सेवन करतात. त्या अधर्मांना अभक्ष्य पदार्थ म्हणून कोणताही नाहीं. त्यांच्यामध्ये जारज संततीचें अतिशय प्रमाण असतें. शल्या, ह्यास्तव आरट्ट देशांतील वाहीकांचा विचारी मनुष्यानें सर्वतोपरी त्याग करणें अवश्य आहे, ही गोष्ट लक्षांत ठेव; व तो ब्राह्मण आणखी जें कांहीं कुरुसभेंत म्हणाला तें ऐक. तो ब्राह्मण म्हणाला कीं, युगंधर नगरांत दूध पिऊन, अच्युतस्थलांत राहून आणि भूतिलयांत स्नान करून कोणता मनुष्य स्वर्गास जाईल बरें? ज्या प्रदेशांत हिमालयांतून निघालेल्या पांच नद्या वाहातात, त्या प्रदेशास आरट्ट नामक वाहीक देश असें म्हणतात. त्या देशांत सुनानां दोन दिवस सुद्धां राहूं नये. विपाशेमध्ये वहि व हीक अशीं दोन

१ युगंधर नगरांत उंट्याचे वगैरे दूध विकण्यांत येते. ह्यास्तव तेथें अपेय दुग्ध प्राशन करण्यांत येण्याचा संभव आहे. अच्युतस्थलांत स्त्रियांचे आचारविचार फारच गर्हणीय असल्यामुळे मनुष्याचे पाऊल वांकड्या वाटेत पडण्याचा अतिशय संभव आहे. आणि भूतिलयांत चांडालांचा व ब्राह्मणादिकांचा एकच पाणवडा असल्यामुळे तेथे स्पर्शास्पर्शावचार नष्ट होऊन जाईल.

पिशाचें वास करितात. वाहीक ही त्या दोन पिशाचांची संतति होय. वाहीक ही प्रजापति ब्रह्मदेव ह्याची संतति नव्हे. त्या हीनकुलांत जन्मलेल्या लोकांना विविध धर्मांचें ज्ञान कसें असेल बरें ? व त्याचप्रमाणें कारस्कर, माहिपक, कालिंग, केरल, कर्कोटक, वीरक, इत्यादिक दुर्धर्मी लोकांशीही संपर्क करूं नये. ह्या प्रकारचें हे असें भाषण एका मोठ्या अवाढव्य राक्षसीनें तीर्थयात्रा करणारा एक ब्राह्मण एक रात्रभर वसतीस राहिला असतां त्यापाशीं केलें. आरट्ट देशांत वाहीक तीर्थाच्या ठिकाणीं अथम ब्राह्मणांची फार पुरातन कालापामून वसति आहे. ते वेदाध्ययन व यज्ञयागादिक क्रिया करीत नाहीत. ते धर्मब्राह्म असून शूद्रांपासून अन्य स्त्रियांच्या ठिकाणीं जन्म पावल्यामुळे त्यांनीं दिलेलें अन्न वेगरे देवता ग्रहण करीत नाहीत. प्रस्थल, मद्र, गांधार, आरट्ट, खम, वसाति, मिथुसोवीर, ह्या देशांतील सर्व लोक बहुधा अतिशय निंद्य आचरणाचे असतात.

अध्याय पंचेचाळिसावा.

—०—

कर्ण व शल्य यांचा संवाद.

कर्ण म्हणाला:—शल्य, माझ्या बोलण्याकडे नीट लक्ष दे. मी तुला फिरून जें कांही सांगत आहे, तें एकाग्र चित्तानें ऐक. पूर्वीं आमच्या घरी एक ब्राह्मण पाहुण आला होता. तो आमच्या देशांतील आचारविचार पाहून मोठा संतुष्ट झाला व म्हणाला, “ मी हिमालय पर्वताच्या शिखरावर एकटाच पुष्कळ दिवस राहिलों; आणि नंतर, ज्यांत नानाविध धर्म प्रचलित आहेत असें बहुत देश पाहिले. पण माझा समज असा आहे कीं, ह्या ठिकाणच्या प्रजा कोणत्याही प्रकारचें धर्मविरुद्ध कृत्य करीत नाहीत. सर्वांचें मत असें आहे कीं, वेद-

पारंग ब्राह्मण जे नियम घालून देतात तेच धर्म होय. नानाविध देशांतून प्रवास करितां मी वाहीक देशांत प्राप्त झालों आणि तेथें ऐकिलें कीं, वाहीक देशांत मनुष्य प्रथम ब्राह्मण बनतो, नंतर तो क्षत्रिय होतो, त्यानंतर तो वैश्य होतो. मग तो शूद्र बनतो आणि मग तो नापित होतो; ह्याप्रमाणें तो नापित झाला तरी पुनः ब्राह्मण होतो आणि ब्राह्मण झाल्यावर त्याचाच पुढें गुलाम होतो ! एकाच कुलांत एक ब्राह्मण व त्याचे इतर बंधु मनास वाटेल तें कर्म करणारे हीनजातीचे बनतात ! गांधार, मद्रक आणि वाहीक हे लोक अगदीं अल्पबुद्धीचे आहेत. सर्व पृथ्वी हिंडल्यानंतर मी वाहीक देशांत गेलों, तेव्हां मला सर्व पृथ्वीवर जी गोष्ट आढळली नाही ती तेथें आढळली. त्या देशांत मला सर्वत्र धर्मसंकर आढळून आला ! ”

वा शल्य, मी तुला आणखी कांही जें सांगतां तें नीट श्रवण कर. वाहीकांच्या निंदेनें भरलेला असा हा इतिहास मला एका दुमच्या ब्राह्मणापासून कळला आहे. पूर्वीं आरट्ट देशांत एक साध्वी रहात असे, एके समयीं चोरट्यांनीं तिचें हरण करून तिच्याशीं अनाचार केला. तेव्हां तिनें त्या चोरट्यांना शाप दिला कीं, “ समर्तक स्त्रीचें पातिव्रत्य ज्या अर्थी तुम्ही नष्ट केलें, त्या अर्थी तुमच्या कुलांतील स्त्रिया वैश्या होतील ! नराधमहो, ह्या भोग पातकापासून तुमची सुटका होणार नाही ! ” ह्याप्रमाणें तें शापवृत्त निवेदन केल्यावर तो ब्राह्मण पुढें लपणाला, “ ह्यामुळेच आरट्ट देशांत बहिर्जाच्या मुलांना वारसाचा हक्क प्राप्त होतो व पुत्रांना तो प्राप्त होत नाही. कुरु, पंचाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, कोसल, काश, पौंड्र, कालिंग, मागध, चेदि ह्या देशांतील लोक महाभाग्यवान् असून ह्यांस मनातून धर्माचें यथार्थ ज्ञान आहे. चोहोंकडे अनीतिमान् लोक आढळतात, पण ते

बहुतकरून वाहीकांच्या इतके दुराचरणी नसतात. मत्स्य, कुरु, पंचाल, नैमिष, चेदि वगैरे प्रमुख देशांतील लोक शाश्वत धर्मांचे परिपालन करितात, परंतु मद्रदेशांतील व पांचनदांतील लोक कुटिल अमून धर्माचा लोप मात्र करितात.

शल्या, धर्म व आचरण ह्यांतलें रहस्य जाणणारा तो ब्राह्मण ह्याप्रमाणें बोलल्यानंतर अगदीं स्तब्ध बसला ! शल्या, मद्र, आरट्ट व वाहीक ह्या देशांचा तूं राजा असल्यामुळें त्या देशांतील प्रजांच्या शुभाशुभकर्मांचा पडभाग तुझ्या पदरीं पडत असतो, ह्यास्तव त्या प्रजांच्या नीतिमत्तेकडे त्वां लक्ष पुगविलें पाहिजे. प्रस्तुतकालीं तुझ्याकडून त्यांचें योग्य परिपालन घडत नमल्यामुळें सर्वत्र देशभर जो अनाचार प्रवृत्त झाला आहे, त्यांचें पातक तुझ्याच मार्यां वसत आहे. जो राजा प्रजांचें रक्षण करितो त्यास प्रजांच्या पुण्याचा अंश प्राप्त होतो; व जो प्रजांचें रक्षण करित नाही त्यास त्यांचें पातक मात्र मिळतें ! शल्या, पूर्वीं सर्व देशांत सनातन धर्माचा निकडे तिकडे उत्कर्ष व प्रशंसा चालली असतां पांचनद देशांतील धर्मलोप अवलोकन करून पितामह ब्रह्मदेवानें त्या देशाचा अगदीं धिक्कार केला. शल्या, पांचनद देशांतील लोक म्हणजे म्हणजे कृतयुगांत मुद्गां अश्वर्माचरण करणारे; त्या वेळीं मुद्गां त्यांचे वर्तन धर्मवाह्य असून त्यांच्यांत शूद्रांपासून अन्य स्त्रियांच्या ठिकाणीं संतति जन्मास येत असे. तेव्हां ब्रह्मदेवानेंही ज्या धर्माची गर्हा केली, त्या धर्माचा अवलंब करणारा तूं लोकांना धर्मोपदेश करण्यास कसा पात्र होशील ? शल्या, ह्याप्रमाणें पांचनदीय लोकांच्या धर्माची हेलना प्रत्यक्ष ब्रह्मदेवानेंही केली. सर्व भूतलावर वर्णाश्रमधर्म यथास्थित चालले असतां ब्रह्मदेवानें ह्या पांचनदांचा असा उपहास केला.

शल्या, मी तुला आणखी इतिहास निवेदन करितों तो श्रवण कर.

कल्माषपाद नामक राक्षस सरोवरांत बुडत असतां म्हणाला, “ भिक्षा मागणें हें क्षत्रियांना लांछन आहे, व्रतादिकांचा त्याग करणें हें ब्राह्मणांना लांछन आहे. वाहीक लोक हें भूतलाला लांछन आहे व मद्रस्त्रिया हें सर्व स्त्रीजातीला लांछन आहे ! ” शल्या, तो राक्षस बुडत होता तेव्हां त्याला हात देऊन कोणीं एका राजानें वर काढून विचारलें, तेव्हां तो म्हणाला की, “ स्लेच्छजाति ही सर्व मनुष्यांना लांछन आहे, औष्ट्रिक (तेल काढणारे लोक) हे स्लेच्छांना लांछन आहेत, पंड हे औष्ट्रिकांना लांछन आहेत, राजपुरोहित हे पंडांना लांछन आहेत, आणि ज्या अर्थी तूं मला सोडीत नाहीस त्या अर्थी राजयाजक व याज्य आणि मद्रक ह्यांचें जें लांछन तेंच तुझें लांछन होईन ! ” शल्या, इतकें बोलून त्या राक्षसानें पुढें असेंही झटलें कीं, राक्षस किंवा विषवीर्य ह्यांच्या योगें हत झालेल्या मनुष्यांना हें सिद्ध वचन केवळ उत्कृष्ट औषधच होय. शल्या, पंचाल देशांतील लोक वेदांस फार मान देतात, कौरवेय हे धर्मानुष्ठानास फार मान देतात, मत्स्य देशांतील लोक सत्यास फार मान देतात, शूरसेन देशांतले लोक यज्ञ-यागांस फार मान देतात, प्राच्य देशांतील लोक शूरवृत्तीस फार मान देतात, दक्षिणात्य लोक धर्मसंग्रहास फार मान देतात, वाहीक हे चौरकर्मास फार मान देतात, आणि सुराष्ट्रांतले लोक संकरवृत्ति चाहातात. कृतघ्नता, परवितापहार, मद्यपान, गुरुपत्नीगमन, कठोर भाषण, गोधन, रात्रिभ्रमण, बहिर्गेंह व परवस्त्रोपभोग हाच ज्यांचा धर्म त्यांना अधर्म तो कोणता ? अरेरे, अशा त्या आरट्ट व पांचनदीय लोकांना धिक्कार असे ! शल्या, पांचाल,

कुरु, नैमिष व मत्स्य ह्या देशांतील लोक धर्म जाणतात, आणि उदीच्य, आंगक व मागध हे लोक फार प्राचीन काळापासून सनातन धर्माचे परिपालन करणाऱ्या लोकांचे अनुकरण करितात. अग्निप्रमुख देवांनी पूर्व दिशेचा आश्रय केला आहे, शुभ कर्म करणाऱ्या यमाने रक्षिलेल्या दक्षिण दिशेचा आश्रय पितरांनी केला आहे, सुरांचा प्रतिपालक बलिष्ठ असा जो वरुण त्याने पश्चिम दिशेचा आश्रय केला आहे. आणि भगवान् सोम ब्राह्मणांसह उत्तर दिशेचे रक्षण करित आहे. त्याप्रमाणेच राक्षस व पिशाच हे नगाधिराज हिमवानाचे आणि गुह्यक गंधमादन पर्वताचे रक्षण करित आहेत. शल्या, वाहीकादि देशांचे रक्षण करण्यास कोणीही विशिष्ट देवता तत्पर आहे, असे नाही. भगवान् विष्णु हा सर्वत्र प्राण्यांचे रक्षण करितो, ह्यास्तव वाहीक वंगरे देशांचेही तो निश्चय करून रक्षण करित आहेच; पण ह्या कार्यासाठी विशिष्ट देवता उद्युक्त नसल्यामुळे वाहीकादिक लोकांचा अधिकार फारच गौण होऊन ते अगदी मूर्ख बनले आहेत. शल्या, मागध लोकांना केवळ चिन्हांवरून एखादी गोष्ट समजते; कोसल लोकांना एखादी गोष्ट नीट समजण्यास ती प्रत्यक्ष पहावी लागते; कुरु व पंचाल ह्या देशांतील लोकांना एखादी गोष्ट अर्धवट सांगतांच समजते; शाल्वांनी मविस्तर सांगितल्याशिवाय कांहीच समजत नाही; आणि पर्वतावर राहणारे लोक शिवि लोकांप्रमाणे सर्वतोपरी मतिमंदच होत ! शल्या, यवन हे सर्वज्ञ आहेत; शूर तर त्यांहूनही अधिक ज्ञाते आहेत; स्लेच्छ हे स्वतःच्या मताने जे उचित दिसले ते करितात; आणि इतर लोक, उचित अशी जी गोष्ट त्यांना सांगावी तितकी मात्र करितात. वाहीक लोकांना हिताची गोष्ट सांगितली असता ती मुळीच मान्य होत नाही

आणि मद्रक तर ह्या सर्वांच्या पलीकडे गेलेले आहेत ! शल्या, तुझी स्थितिही अशाच प्रकारची आहे; सर्व पृथ्वीवर मद्रक हे अतिशय नीच होत. मद्यपान, गुरुस्त्रीगमन, भ्रूणहत्या व परधनापहार हा ज्यांना विहिताचार वाटतो, त्यांना अनाचार तो कोणता ? असे; अशा त्या आरट व पांचनद देशांतील लोकांना धिक्कार असे ! शल्या. ह्या माझ्या सर्व म्हणण्याचा विचार करून निमूट बैस. ह्यावर आतां उलट भाषण करू नको. आधी तुला वधून मग कृष्णाजैनांना वधण्याची पाळी मला येऊ नये !

शल्य क्षणाला:—कर्णा, ज्या देशाचा तू अधिपति आहेस, त्या अंग देशांत दुःखितांचा त्याग करणे व बायकामुलांचा विक्रय करणे ह्या गोष्टी प्रचलित आहेत. रथ व अतिरथ ह्यांचा वृत्तांत मांगत असतां भीष्माने जे कांही तुला सांगितले त्याचा विचार करून तू आपले दोष मनांत आण आणि क्रोध सोडून दे. कर्णा, सदाचरणी ब्राह्मण. सदाचरणी क्षत्रिय, सदाचरणी वैश्य, सदाचरणी शूर आणि सदाचरणी त्रिया सर्वत्र असतात. दुसऱ्याची निंदा करण्यांत सुख मानणारे, दुसऱ्याला पीडा करणारे, आणि विषयांत दंग असणारे लोकही सर्वत्र असतात. दुसऱ्याचे दोष वर्णन करून सांगण्यांत प्रत्येकजण सदासर्वकाळ कुशल असतो. कोणालाही स्वतःचा दोष कळत नाही, आणि जरी तो कळला तरी त्यापासून त्याला वाईट वाटत नाही. आपल्या धर्माला अनुसरून वर्तन करणारे राजे सर्वत्र असतात व ते दुःशील मनुष्यांचा सर्वत्र निग्रहही करितात, आणि धर्मेशील लोकही सर्वत्र असतात. कर्णा, देशांत सामान्यतः सर्वत्र लोक अनाचार करितात असे कोठेही घडत नाही. ज्यांचे आचरण देवांपेक्षांही श्रेष्ठ असे सत्पुरुषही सर्वत्र असतात !

संजय सांगतो:—राजा, नंतर दुर्योधनां

कर्णाला मित्रभावानें दोन गोष्टी सांगितल्या. शल्याचीही हात जोडून प्रार्थना केली, आणि त्यांचा जो वाकलह चालला होता त्याचें निवारण केलें. ह्याप्रमाणें दुर्योधनानें निवारित केल्यावर कर्ण पुढें कांहीएक बोलला नाही व शल्यही शत्रूच्या अभिमुख झाला. मग कर्णानें मोठ्या आनंदानें शल्या. रथ चालं दे ' अशी पुनः शल्याला सूचना केली.

अध्याय शेचाळिसावा.

—:—

व्यूहरचना.

संजय सांगतो:—नंतर, हे भरतश्रेष्ठा, शत्रूच्या सैन्याला दाद देणार नाही असा मोठा बळकट व लोकोत्तर व्यूह पांडवांनी रचिला असून धृष्टद्युम्न हा त्याचें संरक्षण करित आहे. असे कर्णाच्या दृष्टीस पडले. तें पाहून, शत्रूला ताप देणारा तो महायोद्धा कर्ण क्रोधाविष्ट होऊन जण काय थरथर कांपत कांपत सिंहा-माग्वी गर्जना करित पांडवांवर चालून गेला. राजा. त्या वेळी त्या सिंहानादांनं, रथांच्या दणदणाटानें व रणवाद्यांच्या घोषानें पृथ्वी जण काय हादरून जाऊन कांपूं लागली ! धृतराष्ट्रा, मग कर्णानेंही पांडवांच्या व्यूहाचा भेद करण्यास योग्य असा दुसरा व्यूह सिद्ध केला. आणि इंद्रानें जमा देत्यांचा मोड करून टाकिला, तसा त्यानें पांडवसैन्याचा मोड करून युधिष्ठिरावर बाणवृष्टि चालविली व त्यास डाव्या बाजूला सारिले !

धृतराष्ट्रानें विचारलें:—संजया. पांडवां-कडील व्यूहांत धृष्टद्युम्नादिक प्रबळ योद्धे व भीमसेनादिक पांडव रक्षणार्थ सिद्ध असतां त्यांच्याशीं टक्कर देण्यास कर्णानें दुसरा व्यूह केला तो कसा बरें ? पांडवांकडील सर्व योद्धे महाधनुर्धर असून ते प्रत्यक्ष देवांनाही अजिंक्य

असे होते; मग त्यांच्यावर वरचढ असा व्यूह कर्णाला कसा करितां आला ? संजया, आपल्या सैन्याचे पक्ष व * प्रपक्ष कसे बनविले होते ? ते पक्षप्रपक्ष बनविल्यावर त्या सैन्याची यथायोग्य योजना कसकशी केली होती ? त्या-प्रमाणेंच पांडवांनीही माझ्या सैन्याशीं युद्ध करण्याकरितां आपल्या सैन्याची रचना कशी केली होती ? पुढें अत्यंत भयंकर युद्ध सुरू झालें तें कसे ? आणि कर्ण हा युधिष्ठिरावर बाणवृष्टि करित चालून गेला, त्या वेळी अर्जुन कोठे होता ? संजया, अर्जुन समीप असतां युधिष्ठिरावर चालून जाण्यास कोण समर्थ होईल ? ज्या महावीरानें पूर्वी एकद्वयानें खांडव-वनांत सर्व प्राण्यांना जिकिलें. त्याच्याशीं युद्ध करून जिवंत राहाण्याची इच्छा करणारा कर्णा-शिवाय दुसरा कोणता वीर आहे बरें ?

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, तुला व्यूहरचना कशी केली होती, अर्जुन कशा प्रकारें युद्धास प्राप्त झाला, आणि उभय सैन्यांतील सैनिकांनी आपआपल्या सेनानायक भूपतीच्या आसमंतात उभे राहून युद्ध कसे केलें, ते मी आतां सांगितों. शारद्वत कृप, वेगवान् मागध व मातवतकुलोत्पन्न कृतवर्मा ह्यांनी उजवे बाजूचा आश्रय केला होता. त्यांच्यापलीकडे महारथ शकुनि व उलूक हे हातांत देदीप्यमान प्राम असलेल्या गांधार देशांतील बलवान् घोडे-स्वारांनिशीं कौरवसेनेचें संरक्षण करित होते. शिवाय त्यांच्यासमवेत अजिंक्य अशा पार्वतीय (पर्वतावर राहाणाऱ्या) सैनिकांचा जणू काय टोळधाडीप्रमाणें असंख्य जमाव असून तो पिशाच्चांप्रमाणें भयंकर दिसत होता. डाव्या बाजूम, संग्रामांतून माघार न घेणाऱ्या चौतिस हजार संशप्तकांचे रथ होते आणि त्या युद्ध-कुशल महायोद्ध्यांसह तुझे पुत्र कृष्णाजुनांचा वध करण्याच्या इच्छेनं पांडवांशीं लढण्यास

तयार होते. संशप्तकांच्यापलीकडे कांबोज, शक व यवन होते. ते सर्व योद्धे कर्णाच्या आज्ञेप्रमाणे आपापल्या रथांत अधिष्ठित होऊन घोडेस्वार व पायदळ ह्यांसह युद्धार्थ सिद्ध होत्या ते महाबल कृष्ण व अर्जुन ह्यांम संग्रामार्थ आह्वान करीत होते. राजा धृतराष्ट्रा, सैन्याच्या मध्यभागी सेनापति कर्ण हा चित्र-विचित्र रंगांचे चिलखत घालून व बाहुभूषणे आणि माळा धारण करून सैन्याच्या अग्र-भागाचे रक्षण करीत असतां पुनःपुनः प्रत्ये-चेचे आकर्षण करितांना शोभत होता; आणि त्याच्या सभोवती त्याचे पुत्र सशुभ्र होऊन कौरवसैन्याचे रक्षण करण्यांत निमग्न होते. सैन्यसमुदायांनीं परिवृत असलेला व एका मोठ्या बलाढ्य हत्तीवर आरूढ झालेला महा-बाहु दुःशामन व्यूहाच्या पृष्ठभागी होता. त्याची कांति सूर्याप्रमाणे किंवा अशीप्रमाणे झळाळत होती. त्याचे नेत्र पिंगट वर्णाचे अमून त्याचे रूप मोठे आल्हादकारक होते. धृतराष्ट्रा, दुःशासनाच्या मार्गे स्वतः राजा दुर्योधन होता. त्याच्या सभोवती चित्रविचित्र अश्वे व चिल-खते धारण करून त्याचे भ्राते आणि अत्यंत वीर्यशाली मदक व केतू त्याच्या संरक्षणार्थ सिद्ध होते. त्यामुळे त्यांनीं परिवेष्टित अस-लेल्या शतक्रतु इंद्राप्रमाणे तो शोभत होता ! त्या रथसैन्याच्या पाठीमागे अश्वत्थामा व कौरवांकडील दुमरे प्रबळ महारथ असून त्यांच्यामागे शूर स्लेच्छ व नेहमी मदोन्मत्त असलेले व तोयवृष्टि करणाऱ्या मेघांप्रमाणे मद-वृष्टि करणारे असे मोठमोठे हत्ती होते. त्या हत्तींवर ध्वजपताका झळकत असून त्यांवर आरूढ झालेल्या योद्ध्यांच्या हातांत दिव्य आयुधे असल्यामुळे जणू काय द्रुमवंत पर्वता-प्रमाणेच ते हत्ती शोभत होते. आणि ते हत्ती समरांगणांत भ्रमण करीत असतां त्यांचे पाद-

रक्षण करण्यासाठीं सहस्रावधि शूर व जिवावर उदार झालेले पदाति वीर हातांत कुऱ्हाडी व तरवारी घेऊन तत्पर होते. सारांश, राजा, त्या व्यूहांत गज, अश्व व रथ ही जीं सेनेचीं तीन मुख्य अंगें तीं सर्व बलिष्ठ असल्यामुळे देव किंवा दानव ह्यांच्या व्यूहाप्रमाणे तो कौरव-सेनेचा व्यूह अत्यंत शोभत होता ! राजा, बृह-स्पतीच्या मताप्रमाणे रणधुरंधर कर्णाने रचि-लेला तो महाव्यूह जणू काय नाचतच असून त्याच्या योगे शत्रूसैन्याला मोठी भीति उत्पन्न झाली. त्या सैन्याच्या पक्षप्रक्षांतून युद्धास आतुर झालेले महान् महान् हत्ती, घोडे व रथ हे वर्षाकालारंभीच्या वगळ्यांच्या समूहाप्रमाणे जेव्हां एकसारखे बाहेर उसळू लागले, तेव्हां त्या सैन्याच्या विनीवर कर्ण आहे असे पाहून शत्रु-संहारक महावीर अर्जुनाला युधिष्ठिर राजा म्हणाला, “ हे अर्जुना, समरभूमीवर कर्णाने सैन्याचा हा महाव्यूह सिद्ध केला आहे तो पहा. पक्षप्रक्षांनीं युक्त असलेली ही सेना फारच पराक्रमी दिसत आहे. ह्यास्त्व, हें अवा-दव्य रिपुसैन्य आपला पराभव करणार नाही अशी तोड काढ. ” धृतराष्ट्रा, धर्मराजाचे भाषण श्रवण करून अर्जुन त्याला ह्यात जोडून म्हणाला, “ महाराज, आपण म्हणतां तसा सर्व प्रकार आहे खरा; आतां ह्या व्यूहाचा घात कर-ण्यासाठीं जें उचित तें मी करितों. ह्या व्यूहाचा नाश करण्यास प्रधान वीरांचा वध करणे अवश्य होय. म्हणून आतां मी त्यांचा वध करितों. ”

युधिष्ठिर म्हणाला:—अर्जुना, तर मग स्वतः तूं कर्णावर चालून जा; भीमसेन दुर्योधनावर चालून जाईल. नकुल वृषमेनावर चालून जाईल; सहदेव शकुनीवर चालून जाईल; शता-नीक दुःशासनावर चालून जाईल; शिनिपुंगव सात्यकि हार्दिक्यावर चालून जाईल; धृष्टद्युम्न अश्वत्थाम्यावर चालून जाईल; मी स्वतः कृपा-

वर चालून जातो; द्रौपदीचे पुत्र बाकीच्या धार्तराष्ट्रांवर चालून जातील; आणि माझ्या पक्षाचे उरलेले वीर आपआपल्या प्रतिस्पर्धी वीरांवर चालून जातील !

संजय सांगतो:—धर्मराजाचें भाषण ऐकून धनंजयानें ' बरें आहे ' असे म्हणलें आणि आपल्या सैन्यममुदायांस धर्मराजाच्या इच्छे-
नुरूप शत्रुसैन्यावर चाल करून जाण्यास आज्ञा दिली व तो आपण स्वतः सैन्याच्या बिनींवर झाला. राजा, त्या समर्थी ते कृष्णा-
र्जुन अगदीं आद्य अशा रथांत अधिष्ठित होऊन शत्रूंवर चाल करून गेले. धृतराष्ट्रा, तो रथ म्हणजे प्रत्यक्ष मूर्तिमंत आद्य अशितत्त्वच होय. कारण, सर्व विश्वाचें योगक्षेम चालविणारा जो पुरातन अग्नि, तो ब्रह्मदेवाच्या मुखापामून उत्पन्न झाला असून तोच जलाधीश सोमरस होय. देव आणि ब्राह्मण ह्यांच्या मते हा जलाधीश सोमच पुढें अश्वरूप झाला आणि त्यानें आपली शक्ति चार ठिकाणीं विभागून चार अश्वांचीं रूपें घेतली व ह्याप्रमाणें स्वरूप बनून त्यानें कमानीं ब्रह्मदेव, ईशान, इंद्र व वरुण ह्यांस पूर्वीं वाहून नेले. असो: ह्याप्रमाणें त्या आद्य रथांतून -कृष्णार्जुन कर्णावर चालून गेले तेव्हां त्यांचा तो लोकोत्तर रथ आपणा-
वर येत आहे असे पाहून शल्य पुनः त्या युद्धदुर्मद कर्णाला म्हणाला, " कर्णा, हा तो अर्जुनाचा रथ आला पहा ! ह्या रथाचे अश्व शुभ्र असून ह्यावर कृष्ण हा मारथी आहे ! कर्णा, ज्याचा तूं शोध करित आहेस तो हा अर्जुन शत्रुसैन्याचा संहार उडवीत येत आहे. कर्मफलाप्रमाणें ह्याचें निवारण करण्याला सर्व सैन्यही समर्थ होणार नाही. हा पहा मेघ-
गर्जनप्रमाणें गंभीर ध्वनि कानीं पडत आहे ! निःसंशयपणें हे वासुदेव व धनंजयच असले पाहिजेत ! हा पहा धुरळा कसा उडून त्यानें

अगदीं अंतरिक्ष व्यापून टाकिले. जणू काय चक्रांच्या धावांनीं चिरली गेल्यामुळे ही धरणी थरथरां कांपत आहे ! हा पहा तुझ्या सैन्याच्या आममंतात् सोसाट्याचा वारा सुटला ! हे पहा हिसक पशु मोठ्यानें आरडूं लागले ! मृग भयं-
कर आक्रोश करूं लागले ! कर्णा, पहा हा कसा घोर व भीतिप्रद केतु मेघपटलाप्रमाणें सूर्य-
बिंबाला झांकून उभा आहे ! हें दुश्चिन्ह अव-
लोकन करून तर माझ्या अंगावर कांटाच उभा रहात आहे ! त्याप्रमाणेंच हे मोठमोठे
उन्मत्त वाघ व दुसरे नानाविध पशूंचे कळप-
च्या कळप सूर्याकडे टीकारून पहात आहेत ! तसेंच हे हजारों घोर कंकपक्षी व गिधाडे जमलीं आहेत पहा ! हे सर्व पक्षी एकमेकांकडे पहात असून जणू काय एकमेकांशीं बोलतच आहेत ! त्याप्रमाणेंच, हे कर्णा, तुझ्या रथावरील हीं मोठमोठी रंगीत चामरें जळूं लागली आणि ध्वज कांपूं लागला ! तसेंच तुझ्या ह्या महान् रथाला जोडलेले मोठमोठे व महावेगवान् मुंदर अश्व जणू काय अंतरिक्षांत गरुडाप्रमाणें उड्डाण करण्यास समर्थ आहेत, तरी त्यांना कांपरें भरलें ! अस्तु. कर्णा, खचित ह्या दु-
चिन्हावरून मला म्हणवें कीं, आज रणांगणांत महाम्हाविधि राजे ^{पुढील} वीं पडतील ! कर्णा, हा पहा शंखांचा घोर ध्वनि उठून अंगावर कांटा उभा राहिला ! व त्याप्रमाणेंच आनकां-
च्या, मृदंगांच्या, बहुविध बाणांच्या, मनुष्ये-
अश्व व गज ह्यांच्या आणि तलव्रावर बसणा-
ऱ्या प्रत्येकच्या फटकाऱ्यांच्या शब्दांनीं सर्व दिशा दुमदुमून गेल्या ! कर्णा, ह्या पहा मोठ-
मोठ्या वीरांच्या रथांवर सोन्यारुप्यांच्या भर-
जरी वस्त्रांच्या पताका झळकत आहेत, त्यां-
वर कारागिरांनीं सोन्याचे चंद्र, सूर्य व तारे काढिले असून त्यांस प्रागण्या लाविलेल्या आहे-
त, आणि वाऱ्यानें हालत असल्यामुळे त्या

चित्रविचित्र रंगांच्या पताका जणू काय मेघ-
मंडळावर चमकणाऱ्या विद्युलतेप्रमाणें शोभत
आहेत ! कर्णा, त्याचप्रमाणें वाऱ्यानें फड-
फडणाऱ्या ध्वजांकडे पहा; आकाशांत देवांची
विमानें तरंगतांना दिसतात, त्याप्रमाणें ते
रथांवर दिसत आहेत ! कर्णा, महात्म्या पांचा-
लांचे हे सपताक रथ अवलोकन कर; त्या-
प्रमाणेंच हा विजयशाली वीर कुंतीपुत्र अर्जुन
तुझ्यावर चाल करून येत आहे तो पहा; हा
पहा ह्या अर्जुनाच्या ध्वजावर शत्रूंना भीति
उत्पन्न करणारा भयंकर मारुति मोठ्या
थाटानें बसला असून तो आपल्याकडे सर्वांचें
चित्त आकर्षित आहे ! हें पहा बुद्धिवान्
कृष्णाचें चक्र; त्याप्रमाणेंच गदा, शार्ङ्गधनुष्य,
शंख आणि वक्षस्थळीं अत्यंत शोभणारा कौ-
स्तुभ मणि ! हा पहा शार्ङ्गगदावर अतिवीर्य-
वान् वामुदेव वायुवेगानें चालणाऱ्या शुभ्र
अश्वानां चालवीत इकडे येत आहे ! हा पहा
सव्यसाची अर्जुनाच्या गांडीव धनुष्याच्या
प्रस्थेचेचा टणत्कार ऐकू येऊं लागला ! हे पहा
अर्जुनानें शिताफीनें मारलेले तीक्ष्ण बाण शत्रू-
चें कंदन करू लागले ! हीं पहा आरक्त, विशाल
व विस्तृत अशा नेत्रांनीं युक्त व मुख पूर्ण-
चंद्राप्रमाणें शोभणारीं अशी पलायन न कर-
णाऱ्या रांजांचीं मस्तकें सर्वत्र पडलीं असून,
त्यांनीं समरभूमि गच्च भरून गेली आहे !
आणि त्याप्रमाणेंच हे हातांत आयुधें घेऊन
शत्रूवर चालून जाणाऱ्या प्रबळ वीरांचे सुवा-
सिक अनुलेपनें फांसलेले द्वारांच्या अडसरां-
प्रमाणें प्रचंड बाहु आयुधांसह तुटून पडत
आहेत पहा ! त्याचप्रमाणें, ज्यांचे नेत्र व
जिव्हा नष्ट झाल्या आहेत असे घोडे व त्यां-
वरील स्वार समरांगणांत पडत आहेत व
पडले आहेत ते अवलोकन कर ! तसेंच हे
पर्वताच्या शिखरांप्रमाणें महान् महान् हत्ती

अर्जुनाच्या अस्त्रप्रहारांनीं छिन्नभिन्न होऊन
भूमीवर कोमळतांना जणू काय पर्वतांचीं शि-
खरेच कोमळून पडत आहेत असा भास
होतो ! आणि ज्यांनील राजे हत झाले आहेत
असे गंधर्वनगरांप्रमाणें मोठमोठाले रथ धडा-
धड खाली पडतांना पाहिले म्हणजे जणू काय
ही क्षीणपुण्य झालेल्या देवांचीं विमानेंच कोम-
ळत आहेत असें दिसत ! कर्णा, नानाविध
पशूंच्या सहस्रावधि कळपांना ज्याप्रमाणें मिह
व्याकूल करून सोडितो, त्याप्रमाणें तुझें हें
सैन्य अर्जुनानें अतिशय व्याकूल करून टाकिलें
आहे पहा ! हें पहा तुझें चतुरंग सैन्य पांडवां-
वर तुटून पडलें आहे, पण त्यावर उलट चाल
करून पांडव त्याचा नाश करीत आहेत ! हा
पहा मेघांनीं आच्छादिलेल्या सूर्याप्रमाणें अर्जुन
आतां दिसेनासा झाला ! फक्त त्याच्या ध्वजा-
चें अग्र दिसत आहे व प्रत्येचेचा शब्द ऐकू
येत आहे ! कर्णा, ज्याची तूं चौकशी करीत
आहेस तो श्वेताश्व कृष्णमारुति अर्जुन शत्रूचा
विश्वस उडवितांना तुझ्या आज दृष्टीम पडेल !
आज तुला ते दोघे शत्रुसंहारक पुरुषव्याघ्र
आरक्त नेत्र केलेले व एका रथांत आरूढ
झालेले दिसतील ! राधेया, ज्याचा मारुति
कृष्ण व ज्याचें धनुष्य गांडीव अशा त्या
अर्जुनाला जर आज तूं वधिलेंस, तर तूं
आमचा राजा होशील ! हा पहा अर्जुन संश-
प्तकांनीं आह्वान केल्यामुळें त्यांच्यावर चाल
करून निघाला ! आतां हा त्याचें युद्धांत
खचित कंदन करील ! ” राजा धृतराष्ट्र, ह्या
प्रमाणें शल्याचें भाषण ऐकून कर्णाला फार
सेताप आला व तो शल्याला म्हणाला, “ शल्या,
हा पहा अर्जुन कसा क्रुद्ध झालेल्या संशप्त-
कांनीं चोहोंकडून घेरून टाकिला ! मेघाच्छा-
दित सूर्याप्रमाणें तो अगदीं अदृश्य झाला !

शल्या, आतां अर्जुन ह्या योधमागारांत बुडालाच म्हणून ममज ! ”

शल्य म्हणाला:- कर्णा, वरुणाला उदकांत किंवा अशीला इंधनांत कोणी ठार मारील काय ? अथवा वाऱ्याचें निग्रहण किंवा महामागराचें प्राशन कोणी करील काय ? कर्णा, मला अर्जुनाचें सामर्थ्य अशा प्रकारचें वाटतें ! फार कशाला, युद्धांत अर्जुनाला जिकणें झाल्याम तें इंद्रासहवर्तमान देवांच्यांत किंवा दानवांच्यांतही होणार नाही ! तुला जर अशी प्रौढी दाखविल्यानें समाधान किंवा सुख वाटत असेल, तर तूं खुशाल तमें कर; पण मी तुला साफ सांगतां की, तुझ्या अंगी युद्धांत अर्जुनाला जिकण्याचें सामर्थ्य नाही. दुसरी एखादी गोष्ट करण्याविषयी तूं इच्छा धर. कर्णा, जो कोणी अर्जुनाला समरांत जिंकिल, तो बाहुबलानें पृथ्वीला उचलील किंवा स्वतःच्या कौश्याशीनें सर्व प्रजा जाळील अथवा स्वर्गांतून देवांना खाली पाडील असें मी मानितों ! पहा, हा महापराक्रमी महाबाहु भीम आपल्या दिव्य कांतीनें झळाळत जणू काय दुमऱ्या मेरु पर्वताप्रमाणेंच उभा आहे ! हा मोठा रागीट व नित्य क्षुब्ध असून रात्रंदिवस वैराचें स्मरण करीत असतो ! हाही कौरवांच्या नाशाची इच्छा करून युद्धांत लढण्याम मिद्ध आहे ! हा पहा महाधर्मनिष्ठ धर्मराज युधिष्ठिर; रणांगणांत ह्याचा पराभव करणें मोठें दुर्घट असून हा शत्रूंचीं स्थानें जिंकून घेण्यांत मोठा पटाईत आहे ! हे पहा नकुलसहदेव जणू अश्विनीकुमारच ! ह्यांना युद्धांत जिकणें सर्पतोषरी अशक्य होय ! हे पहा द्रौपदीचे पांच पुत्र, जणू पांच पर्वतच होत ! हे सर्व अर्जुनाप्रमाणें वीर्यवान् असून युद्धामाठी तयार आहेत ! हे पहा धृष्टद्युम्नादिक द्रुपदपुत्र; हे महातेजस्वी, वीर्यवान्, अभिमानी व स्वातरीनें शत्रूंना

जिकणारे आहेत ! हा पहा सात्वद्वर सात्यकि, ह्याच्या अंगी इंद्राप्रमाणें दुःसह बल असून हा आपल्यावर कौश्यामान यमाप्रमाणें युद्ध करण्याच्या इच्छेनें धावून येत आहे ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कर्ण व शल्य ह्यांचे भाषण होत आहे इतक्यांत त्या दोन्ही मेना एकाएकी गंगायमुनांप्रमाणें एकत्र मिळाल्या !

अध्याय सत्तेचाळिसावा.

—:—

संकुलयुद्ध.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, व्यूह करून युद्धार्थ सिद्ध झालेलीं तीं दोन्ही दळें एकमेकांत मिसळल्यानंतर पार्थानें संशसकांवर व कर्णानें पांडवांवर कमा हल्ला केला तो प्रकार सविस्तर सांग. तूं ह्या कामांत मोठा कुशल आहेस. संजया, रणभूमीवर वीर पुरुष जे पराक्रम करून दाखवितात, ते ऐकूं लागलों म्हणजे माझी तृप्तिच कधी होत नाही.

संजय सांगतो:—राजा, तुझ्या पुत्राचें दुष्ट आचरण हें ह्या सर्व युद्धाच्या बुडाशी आहे, हें लक्षांत ठेविलें पाहिजे. असा; त्या वेळीं शत्रूंचें मोठें अवाढव्य सैन्य युद्धार्थ तयार आहे असे पाहून अर्जुनानें आपल्या सैन्याचा व्यूह मिद्ध केला. त्यांत हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ ही अगदी ओतप्रोत असून त्या महान् सैन्याच्या विनीवर धृष्टद्युम्नाची योजना केली होती. ज्याच्या रथाच्या अधांचा वर्ण पारावताप्रमाणें होता व ज्याची कांति चंद्रमूर्त्याप्रमाणें होती, असा तो पार्थवीवर धृष्टद्युम्न हातांत धनुष्य धारण करून उभा असतां प्रत्यक्ष देहधारी यमाप्रमाणें शोभत होता. युद्धाम आतुर झालेले सर्व दौपदीपुत्र त्या पार्थताचें संरक्षण करण्यांत तत्पर होते. त्यांच्या अंगांत दिव्य चिलखतें व हातांत दिव्य आयुधें

असून त्यांचा पराक्रम अगदी शार्दूलप्रमाणें पांचाल, चेदि व मंजय ह्यांचा तुड्या सैन्याशी होता. त्यामुळे, चंद्राभोवती देदीप्यमान तारागणांचा वेढा अमतां जशी शोभा दिसेत, तशी शोभा दिसेत होती. पुढे संशप्तकांनी रणांगणात आपली सेना व्यूह करून उभी केलेली आहे असे जेव्हा अर्जुनाने पाहिले, तेव्हा तो क्रोधाग्रस्त होऊन गांडीव धनुष्याने बाणांची वृष्टि करीत त्या सेनेवर चालून गेला आणि अर्जुनास ठार मारण्याच्या इच्छेने संशप्तकही अर्जुनावर धावून आले. धृतराष्ट्रा, संशप्तक हे विजय मिळविण्याच्या दृढनिश्चयाने युद्धार्थ मिद्ध झाले होते; मेलीं तरी बेहत्तर, पण रणांतून म्हणून माघोरं फिगावयाचें नाही, अशी त्यांची शपथच होती; आणि त्यांच्या सैन्यात नर, अश्व, मत्त गज व रथ ह्यांचा अतिशयच भरणा होता. शर वीरांच्या समुद्रायांनी व सेनापतीने युक्त अशा त्या संशप्तकांच्या सैन्याने तत्काळ अर्जुनावर बाणवर्षाव करण्यास प्रारंभ केला. नंतर त्यांचे व अर्जुनाचे तुमुल युद्ध झाले. तशा प्रकारचे घोर युद्ध अर्जुन व निवातकवच ह्यामध्ये मात्र झालेले आमच्या ऐकितान्त आहे. त्या ममयी शत्रूंचे रथ, अश्व, ध्वज, गज, पदाति, बाण, धनुष्ये खडे, चक्रे, कुन्हाडी, आयुधांसहित उभारलेले भुज, नानाप्रकारची शस्त्रास्त्रे आणि महत्वावधि मस्तके अर्जुनाने तोडून समरांगणांत पाडिली; आणि त्या वेळीं अर्जुनाचा रथमन्यरूप महावतीमध्ये मांपडून जणू काय पातळाच्या तळीच गेला असे वाटून संशप्तकांनी मोठमोठ्याने वीरश्रीच्या आरोंढ्या देण्यास प्रारंभ केला. इतक्यांत शत्रूंचा जो वेढा पडला होता त्याचा पुनः भेद करून शत्रूसैन्याचा संहार करीत अर्जुन पुढे झाला आणि त्याने कुद्ध झालेल्या रुद्राप्रमाणे उजवीकडे व वृष्टभागी शत्रूसैन्यरूप पशूंना ठार मारण्याचा तडाखा मुरू केला ! राजा, नंतर

पांचाल, चेदि व मंजय ह्यांचा तुड्या सैन्याशी मोठा दारुण सम्रास झाला. कृप, कृतवर्मा व शकुनि हे आपल्याबरोबर युद्धार्थ उतावीळ झालेली प्रक्षुब्ध सैन्ये घेऊन पांडवांच्या रथसैन्यावर प्रहार करण्याच्या उद्देशाने कोमल, काश्य, मत्स्य, कारूप, केकय आणि महाशूर शूरमेन ह्यांच्यावर मोठ्या आवेशाने तुटून पडले; आणि मग त्या दोन्ही दळांचे अत्यंत अनर्थकारक असे घोर युद्ध होऊन त्यात बहुत क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र योद्धे धागतीर्था पतन पावून त्यांचे प्राण, देह व पातके ह्यांचा नाश झाला आणि त्यास पुण्य व यश ह्यांची प्राप्ति होऊन ते स्वर्गास गेले ! हे भरतर्षभा, इकडे पांडव, पांचाल, चेदि व मात्यक ह्याजबरोबर कर्ण निकरांचे युद्ध करीत अमता आपले धात व कौरवाकडील दुसरे महान् महान् योद्धे व महारथ मदकयामह दुर्मोघन राजा कर्णाच्या साहाय्यार्थ आला व त्याने कर्णाचे उत्तम प्रकारे रक्षण केले त्या ममयी कर्णाने तीक्ष्ण बाणांच्या वर्षावाने पांडवपक्षाच्या त्या प्रचंड सैन्याला वखहीन, आयुधहीन व प्राणहीन केले आणि मोठमोठ्या रथांना ठार मारून युधिष्ठिरावर चाल केली व स्वर्गलोक आणि दिव्य यश ह्यांची जोड करून घेऊन त्याने कौरवसैन्यात तिकडे तिकडे आनंदीआनंद करून सोडिला ! धृतराष्ट्रा, मनुष्ये, अश्व व गज ह्यांचा संहार करणारा कौरव व मंजय ह्यामध्ये झालेला हा सम्रास केवळ देवदानवांच्या सम्रामाप्रमाणे अत्यंत भयंकर झाला !

अध्याय अष्टेचाळिसावा.

— ० —

संकुलयुद्ध.

धृतराष्ट्र विचारतो : — मज्या, कर्ण हा पांडवांच्या सैन्यात प्रवेश करून त्याचा नाश करीत

असतां दुर्योधनाची व त्याची गांठ पडल्यावर मग त्याने काय केलें तें मला सविस्तर सांग. संजया, पांडवांकडील कोणकोणत्या योद्ध्यांनी कर्णाचें निवारण केलें व कर्णानें कोणकोणत्या वीरांचें मर्दन करून युधिष्ठिरावर बाण सोडिले, तें मला निवेदन कर.

संजय सांगतो:- राजा धृतराष्ट्रा, धृष्टद्युम्न-प्रमुख पांडवांकडील वीर युद्धार्थ सिद्ध आहेत असे पाहून कर्णानें तत्काळ त्या शत्रुकर्षक पांचाल वीरांवर हल्ला केला. तेव्हां आपल्यावर कर्ण अप्राप्त्याने चाल करून येत आहे असें अवलोकन करून. हंम जमे महासागरावर ज्ञानात तमे ते महद्युतिमान् पांचाल वीर त्या महात्म्या कर्णावर गेले. नंतर महेस्वावधि शंखांचा हृदयभेदक ध्वनि दोन्ही दळांतून बाहेर पडूं लागला; त्याप्रमाणेंच दुंदुभीचा दारुण शब्द, नानाविध बाणांचे प्रहार. गज व अश्व ह्यांची गर्जना, रथाचा घणघणट व वीरांचा मिहनाद सुरू होऊन मोठी भीति उत्पन्न झाली ! त्या समयी पर्वत, वृक्ष व समुद्र ह्यांमुद्धां सर्व धरणी, वायु व मेघ ह्यांमह सर्व आकाश आणि सूर्य, चंद्र, ग्रह व नक्षत्रे ह्यांमहवर्तमान सर्व अंतरिक्ष भीतीनें अगदी कंपायमान झाले आहे असें सर्व प्राण्यांस वाटले व त्यांची धात्री अगदी दणणून गेली ! आणि ज्या प्राण्यांना कमी धैर्य होतें त्यांनीं तर बहुधा पटापटा प्राणच सोडिले ! त्या समयी कर्ण तर अत्यंतच चव-ताळला आणि त्यानें लागलेच शस्त्र उचलून इंद्रानें जमा असुरमेनेचा संहार उडविला तसा पांडवमेनेचा भयंकर संहार उडविला ! त्या वेळी तत्काळ कर्णानें पांडवमेन्यांत धुमून त्याजवर एकसारखी बाणवृष्टि चालविली आणि सत्या-हत्तर महान् महान् प्रभद्रक वीरांना धारातीर्था पाडिले ! नंतर त्या महारथानें आपल्या रथान उडविले पंचवीस निशिन मुपुंग शर

पंचवीस पांचालांवर टाकून त्यांना वधिलें आणि त्याप्रमाणेंच शत्रुसैन्यांचें हृदय विदारण करणाऱ्या सुवर्णपुंख बाणांची वृष्टि करून शतावधि व महेश्वावधि चेदि वीर ठार मारिले ! राजा, अशा प्रकारें कर्ण युद्धामध्ये अमानुष पराक्रम गाजवीत असतां पांचालांच्या रथसमुदायांनी त्यास गराडा घातला. तेव्हां कर्णानें पांच दुःसह बाण नेमके मारून रणांगणांत भानुदेव, चित्रमेन, सेनाबिंदु, तपन व शूरसेन ह्या पांच पांचाल वीरांना वधिलें. राजा, ह्याप्रमाणें शर पांचालांचा कर्णानें सायकांची वृष्टि करून घोर संहार आरंभिला, तेव्हां पांचालसैन्यांत महान् हाहाकार झाला ! नंतर त्या घोर संग्रामांत पांचालांच्या दहा रथांनी कर्णाला आपणवी वेढा घातला; त्या समयी कर्णानें बाणांनी त्यांचाही तत्काळ विध्वंस उडविला. तेव्हां कर्णाच्या रथचक्रांचे रक्षक कर्णपुत्र सुषेण व सत्यसेन हे जिवाची आशा न धरितां मोठ्या आवेशानें लढूं लागले. त्याप्रमाणेंच कर्णाचा ज्येष्ठ पुत्र महारथ वृषमेन स्वतः कर्णाच्या रथाच्या पृष्ठभागी उभा राहून कर्णाचें संरक्षण करूं लागला. ह्याप्रमाणें कर्ण हा पांडवांच्या सैन्याचा संहार उडवूं लागला असतां धृष्टद्युम्न, सात्यकि, भीमसेन, द्रौपदीपुत्र, जनमेजय, शिखंडी, मोठमोठे प्रभद्रक वीर, चेदि, कैकय, पांचाल, नकुलसहदेव आणि मत्स्य हे सर्व चिलखतें घातलेले वीर राधेयास ठार मारण्याच्या इच्छेनें त्यावर चाल करून गेले; आणि पाव-साळ्यांत पर्वतावर मेघ जलवृष्टि करितात तद्वत त्यांनीं कर्णावर नानाविध आयुधांचे प्रहार व बाणांची वृष्टि केली. त्या समयी, पित्याचें संरक्षण करण्याकरितां कर्णाचे पुत्र व तुझ्या पक्षाचे दुमरे वीर ह्यांनी पांडवसैन्याचें निवारण केलें. सुषेणानें भीमसेनाचें धनुष्य भल्ल बाणांनें छेदिलें व त्याच्या हृदयाचा मान नाराज

बाणांनीं वेध करून मोठ्यानें आरोळी मारिली. तेव्हां महाप्रतापी भीमानें दुसरे सुट्ट धनुष्य सज्ज केलें व त्याच्या योगें मुषेणाचें धनुष्य तोडून मोठ्या क्रोधानें त्याजवर दहा बाण टाकिले व जणू काय बाणवर्षाव करीत तो नाचूं लागला ! त्या वेळीं भीमानें तत्काळ कर्णाला व्याहात्तर निशित बाणांनीं विंधिलें आणि भानुसेन नामक कर्णपुत्रावर दहा बाण सोडून त्याचें अश्व, सारथि, आयुध व ध्वज ह्यांसह त्याचा शिरच्छेद करून त्यास त्याच्या मित्रांच्या समोर मध्यभागीं भूमितलावर पाडिलें. त्या प्रसंगीं क्षुर बाणानें छिन्न केलेलें व चंद्र-चिन्नाप्रमाणें कानिमान् दिम्णारें तें भानुसेनाचें सुंदर मुखकमल जणू काय नुकतेच नाला-पामून खुडिलें आहे अमें भासूं लागलें ! राजा, ह्याप्रमाणें कर्णपुत्राला वधिल्यानंतर भीम पुनः तुड्या सेन्याला पीडा करूं लागला. त्यानें कृप व हार्दिक्य ह्यांची धनुष्ये छिन्नविछिन्न करून त्यांनाही अगदीं जख्म केले. त्यानें दुःशासनावर तीन व शकुनीवर सहा लोखंडी बाण टाकिले आणि उलूक व पतत्रि ह्यांना विरथ केले. नंतर त्यानें मुषेणावर बाणवृष्टि करून 'तू आतां मेलामच !' अशी मोठ्यानें आरोळी दिली; पण इतक्यांत कर्णानें भीम-सेनाचें धनुष्य छेदून त्याला तीन बाण मारिले. मग भीमानें दुसरे धनुष्य धारण करून त्यास उत्तम पेण्यांचा व अत्यंत जलाल असा बाण लाविला आणि तो त्यानें मुषेणावर सोडिला. परंतु आपल्या पुत्राचें रक्षण करावें, ह्या हेतूनें कर्णानें तो बाण छेदून टाकून उलट भीम-सेनाचा वध करण्याच्या इच्छेनें त्याजवर व्या-हात्तर तीक्ष्ण शर मर्मस्थळी मारिले. इकडे मुषेणानें मोठें बळकट धनुष्य धारण करून नकुलाच्या बाहूवर व वक्षस्थळीं पांच बाण सोडिले; तेव्हां नकुलानें मुषेणावर मोठमोठे व

दुःसह असे वीस बाण टाकिले आणि इतकी मोठ्यानें गर्जना केली कीं, त्या गर्जेनें कर्णही भिऊन गेला ! पण, राजा, त्या महारथ मुषे-णानें नकुलावर दहा तीव्रगामी शर सोडिले व क्षुरप्र बाणानें त्याचें धनुष्य छेदिलें. तेव्हां नकुल क्रोधानें अगदीं बेफाम झाला व समरांगणांत दुसरे धनुष्य घेऊन त्यानें नऊ बाणांनीं मुषे-णाचें निवारण केलें. त्या समयीं त्यानें दशदिशा बाणाच्छादित करून टाकिल्या आणि सारथ्या-ला ठार मारून मुषेपणालाही तीन बाणांनीं विद्ध केले व त्याच्या मुटू धनुष्यावर तीन भल्ल बाण टाकून त्याचेही तीन तुकडे उडविले ! तेव्हां मुषेणाचा क्रोध मनस्वीच वाढला; आणि मग त्यानें लागलेच दुसरे धनुष्य उचलिलें आणि माठ शरांनीं नकुलाला व सात शरांनीं सहदेवाला विद्ध केले. तेव्हां त्याचें जे घोर व महान् युद्ध झालें त्याला देवामुग्धुद्धांशिवाय अन्य उपमा शोभत नाही ! त्या मयरीं मात्यकीनें वृषमेनाच्या सारथ्यावर तीन बाण टाकून त्याला वधिलें; एका भल्ल बाणानें त्याचें धनुष्य तोडिलें; सात बाणांनीं त्याचे अश्व मारिले; एका बाणानें त्याचा ध्वज उडविला; आणि तीन बाणांनीं त्याचें वक्षस्थळ विद्ध केले. राजा, त्या वेळीं वृषसेन हा म्वरथावर अगदीं मूर्च्छित पडला; पण लवकरच तो सावध होऊन सात्यकीचा वध करण्याच्या इच्छेनें त्याजवर ढालतवार घेऊन धावून गेला. तेव्हां तो वृषमेन मोठ्या आवेशानें आपणावर चालून येत आहे अमें अवलोकन करून सात्यकीनें दहा वागाहकर्ण बाणांनीं वृषमेनाची ती ढालतवार छेदून टाकिली ! इतक्यांत दुःशासनानें त्या रथहीन व आयुध-हीन झालेल्या वृषमेनाची ती अवस्था अवलो-कन करून त्यास आपल्या रथांत घेतलें व त्या युद्धातुर झालेल्या वीराला तेथून दूर नेले.

नंतर महारथ वृषमेन हा दुमन्त्या रथावर आरूढ झाला; आणि त्याने द्रौपदीपुत्रांवर व्याहात्तर, सात्यकीवर पांच, भीमसेनावर चौमष्ट, सहदेवावर पांच, नकुलावर तीन, शतानीकावर सात, शिखंडीवर दहा, धर्मराजावर शंभर आणि ह्याप्रमाणेच दुमन्त्या महान् महान् जयेच्छु वीरांवर विपुल शस्त्रवृष्टि करून त्यास अगदी ब्रूत करून सोडिले व त्या दुर्धर योद्ध्याने रणांगणांत कर्णाच्या पृष्ठभागाचे संरक्षण केले. नंतर सात्यकीने नऊ पोलादी बाण टाकून दुःशामनाचा मारथि व घोडे ह्यांस ठार मारिले व त्याच्या रथाचे तुकडे उडवून त्याच्या भाल-प्रदेशी तीन बाण सोडिले. मग पुनः यथाविधि मिद्ध केलेल्या दुमन्त्या रथावर दुःशामन आरूढ झाला व तो कर्णाच्या पथकांतून पांडवांशी युद्ध करूं लागला. नंतर धृष्टद्युम्नाने कर्णावर दहा बाण सोडिले. द्रौपदीच्या पुत्रांनी व्याहात्तर बाण सोडिले; सात्यकीने सात बाण सोडिले. भीमसेनाने चौमष्ट बाण सोडिले, सहदेवाने सात बाण सोडिले, नकुलाने तीन बाण सोडिले; शतानीकाने सात बाण सोडिले; शिखंडीने दहा बाण सोडिले; धर्मराजाने शंभर बाण सोडिले आणि ह्याप्रमाणेच दुमन्त्या महान् महान् विजयेच्छु योद्ध्यांनी त्या महागणात महा धनुर्धर कर्णावर अतिशय बाणवृष्टि केली तेव्हा त्या सर्व योद्ध्यांवर प्रत्येकी कर्णाने दहा दहा जळाल बाण मारून त्याचा त्याने रथांतून पाडलाग केला राजा. त्या समर्थी महात्म्या कर्णाचे अस्त्रवीर्य व बाण टाकण्याची शिताफी पाहून आत्माच्या मोठा चमत्कार वाटला कर्ण हा भाल्यांतून बाण काढितो केव्हां, धनुष्याला तो लावितो केव्हां आणि शस्त्रंवर तो सोडितो केव्हां, हे आत्मांस मुळीच समजेना ! पण पटापट शत्रु मरून पडत आहेत असे मात्र दिसे. आकाश. अंतरिक्ष. पृथ्वी व दिशा ह्यांमध्ये

जिकडे तिकडे बाणच बाण होऊन त्या स्थळीं जण काय आरक्त मेघांनी नभोमंडळ अदृश्य झाल्याप्रमाणे भासे ! ह्याप्रमाणे बाणवर्षाव करण्याचा सपाटा चालवीत असतां तो प्रतापशाली कर्ण जण काय आपल्या रथावर नाचत आहे असे वाटे ! अमो; ज्यांनी ज्यांनी कर्णावर जितके जितके बाण टाकिले होते, त्यांच्या-त्यांच्यावर त्यांच्या त्यांच्या तिप्पट तिप्पट बाण कर्णाने टाकिले आणि पुनः प्रत्येकावर शंभर शंभर व दहा दहा बाण मारून मोठ्याने गर्जना केली. तेव्हां त्यांच्या योगे अश्व, सारथि व रथ ह्यांचा चुराडा होऊन त्या महा-वीरांची फळी फुटली आणि नंतर शस्त्रवृष्टीने प्रचळ शत्रुमैत्र्याची दाणादाण करून तो शत्रु-संहारक कर्ण निर्भयपणे गजमेनेन घुमला ! मग मैत्र्यामांतून पराङ्मुख न होणाऱ्या चेदिवीरांचे तीनशे रथ भर करून कर्णाने युधिष्ठिरावर तीक्ष्ण बाणांची वृष्टि केली. तेव्हा पांडवांकडील महान् महान् वीर सात्यकि, शिखंडी वगैरे धर्मराजाचे रक्षण करण्याकरिता त्याच्या समोवती वेढा देऊन उभे राहिले आणि त्याप्रमाणेच तुड्या पथाचे शूर व मोठमोठे सर्व वीर दुर्धर अशा कर्णाच्या भोवती त्याच्या संरक्षणार्थ दक्षतेने उभे राहिले. राजा, त्या समर्थी नानाविध वाद्यांचा घोष सुरू झाला आणि महान् महान् शूर वीर मिहामारवी गर्जना करूं लागले. नंतर युधिष्ठिरप्रभृति धैर्यशाली पांडववीर आणि कर्णप्रभृति धैर्यशाली कौरववीर एकत्र होऊन त्याचे मोठे तुमुल युद्ध झाले.

अध्याय एकुणपन्नासावा.

कर्णाच्या हस्ते युधिष्ठिराचा पराभव.

मंजय सांगतो:— राजा, नंतर कर्ण हा पांडवांच्या त्या मैनेची दाणादाण करून हजारों

रथ, गज, अश्व व पायदल ह्यांमह युधिष्ठिरावर चालून गेला. त्या प्रसंगी शत्रूंनी सहस्रावधि नानाविध शस्त्रास्त्रे त्याजवर टाकिली, पण त्या सर्वांचा त्याने शतावधि जलाल बाण मारून फडशा उडवून दिला आणि धीटपणाने शत्रूंना बाणविद्ध करून मोडिले. तेव्हां कर्णाने कित्येक पांडववीरांची मस्तकें, बाहु व मांड्या छेदून त्यांम भूतलावर पाडिले आणि त्यामुळे सैन्यांत दाणादाण होऊन बाकीचे योद्धे पळत सुटले. त्या वेळी सात्यकीने द्राविड व निपाद पायदल फिरून कर्णावर प्रेरिले आणि मग ते सर्व नरवीर कर्णाम ठार मारण्याच्या इच्छेने त्यावर धावून आले त्या समयी मोठेंच रणकंदन झाले आणि त्यात कर्णाने पांडववीरांवर बाणांचा भडिमार करून त्यांची शिरस्त्राणे व भुज हे छेदिले. तेव्हा कुन्हाडीने तोडिलेले शालवृक्षाचे बन जसे एकदम धडाधड भूतलावर पडते, तसे ते पायदल छिन्नभिन्न होऊन एकदम धडाधड भूतलावर पडले. ह्याप्रमाणे कर्णाच्या हस्ते शेंकडों, हजारे, लाखां वीर युद्धांत मरण पावून त्यांचे देह समरभूमीवर पडले. पण त्यांच्या दिव्य प्रतापाची कीर्ति दाही दिशाम पसरली. अशा प्रकारे, धृतराष्ट्रा, क्रुद्ध झालेल्या यमधर्माप्रमाणे कर्ण रणांगणी भयंकर मेहार करीत असता. व्याधीचा जमा मंत्रोपार्थीना प्रतिकार करवा. तसा त्याचा प्रतिकार करण्याकरिता पांडुपांचालवीरांनी त्याजवर हल्ला केला; पण अत्यंत भयंकर रोग मंत्रोपार्थीना जुमानीत नाही. तद्वत् कर्णाने त्या पांडुपांचालांना जुमानिले नाही व त्यांचे मर्दन करून पुनः उलट युधिष्ठिरावर चाल केली. परंतु ह्या समयी युधिष्ठिराचे मंदराण करण्यासाठी पांडु, पांचाल व केकय ह्या सर्व वीरांनी एकदम त्याजवर हल्ला केला. तेव्हा मृत्यु जसा ब्रह्मेत्यांपुढे कुठित होतो तसा तो त्यांपुढे कुठित आला! त्या समयी कर्ण

हा पूर्णपणे आपल्या समीप कक्षांत आलेला पाहून युधिष्ठिराने क्रोधाने आरक्त नेत्र करून त्याम म्हटले, “ मूर्खा सूनपुत्रा कर्णा, माझे म्हणणे ऐक. अरे, तूं युद्धांत वेगवान् अर्जुनाशीं स्पर्धा करितोस; व त्याप्रमाणेच दुर्बोधनाच्या इच्छेनुरूप वागून तूं नेहमी आह्मांला रोध करितोस; पण आज तुझ्या अंगी जें बलवीर्य व पांडुपुत्राविषयी द्रोहबुद्धि असेल, ती सर्व मोठा प्रताप गाजवून आह्मांपुढे व्यक्त कर. अरे. ह्या घोर रणांत आज तुझी युद्धाची सर्व हाव मी नष्ट करून टाकितों. ”

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे भाषण करून युधिष्ठिराने दहा सुवर्णपुंव लोहमय बाण कर्णावर मोडिले; तेव्हां उलट शत्रुनाशक महाधनुर्धर कर्णाने युधिष्ठिरावर दहा वत्सदंत बाण हंमत हंमत मोडिले. राजा, ह्याप्रमाणे युधिष्ठिराच्या भाषणाविषयी कर्णाने बाणप्रहाराच्या योगे धिक्कार प्रदर्शित केला. तेव्हां अशीत आहुति टाकल्यावर तो अति जसा अधिकाधिक भडकत जातो तसा तो युधिष्ठिर क्रोधाने अधिकच भडकला आणि जणू काय त्याच्या देहांतून अशीच्या ज्वाळाच निघत आहेत असे भासू लागले! राजा, त्या समयी जणू काय प्रलयकाली ब्रह्मांडाचे दहन करण्याकरिता हा दुसरा संवर्नादित् चेतला आहे, असे सर्वांस वाटू लागले! नंतर युधिष्ठिराने आपल्या सुवर्णमंडित प्रचंड महाधनुष्याचा टणत्कार केला व पर्वतांचेही विदारण करील असा मोठा तीक्ष्ण शर त्याम जोडिला आणि सूनपुत्राला ठार करण्याच्या हेतूने धनुष्याची प्रत्येका आकर्ष ओढून तत्काल तो त्याजवर मोडिला. तेव्हां वज्रपाताप्रमाणे भयंकर शब्द होऊन तो एकाएकी महारथ कर्णाच्या दाल्या कुशीत घुमला आणि त्याच्या योगे त्याचे देहभान नष्ट होऊन गात्रे विगलित झाली व हातांतले धनुष्य खाली पडून तो रथा-

मर्त्ये शल्याचा समोर निश्चेष्ट होऊन मूर्च्छित पडला ! तेव्हां कौरवसैन्यांत मोठा हाहाकार उडाला आणि ह्याप्रमाणें धर्मराजाचा पराक्रम अवलोकन करून पांडवसेनेंत जिकडे तिकडे सिंहनाद व आनंदाच्या आरोक्या सुरू झाल्या. नंतर लवकरच कर्ण सावध झाला व धर्मराजाचा वध केल्याशिवाय रहावयाचें नाहीं, असा त्या क्रूरपराक्रमी महान् वीरानें संकल्प ठरविला. मग त्यानें तत्काळ आपलें सुवर्णमंडित प्रचंड विजय धनुष्य ताणिलें व पाजविलेल्या बाणांचा वर्षाव करून धर्मराजाला झांकून टाकिलें. तेव्हां महात्म्या युधिष्ठिराच्या रथाच्या चक्रांचे रक्षक चंद्रदेव व दंडधर हे दोन पांचाल्य वीर त्या पराक्रमी कर्णानें दोन क्षुर बाणांनीं वधिले. राजा, चंद्राच्या समीप जमे पुनर्वसूचे तारे शोभतात तसे ते दोन धर्मराजाचे देदीप्यमान वीर रथाच्या समीप त्याच्या पार्श्वभागी शोभत होते. ह्याप्रमाणें त्या दोन वीरांचा कर्णानें नाश केला, तेव्हां युधिष्ठिरानें पुनः तीम बाणांनीं कर्णाला विद्ध केलें; आणि सुषेण व सत्यमेन ह्यांजवर तीन तीन बाण सोडिले; आणि शल्यावर नव्वद व कर्णावर पुनः व्याहात्तर आणि त्याच्या रक्षकांवर प्रत्येकी तीन तीन सरलगामी बाण टाकिले. तें पाहून कर्ण हंभूं लागला व त्यानें धर्मराजाला भल्ल बाणानें विद्ध करून त्याजवर आणखी साठ बाण सोडून मोठ्यानें गर्जना केली. तेव्हां पांडवांकडील वीर अगदीं संतापले व ते धर्मराजाचें रक्षण करण्यासाठीं कर्णावर एकसारखी बाणांची वृष्टि करीत धावून गेले. त्या समयी सात्यकि, चेकितान, युयुत्सु, पांड्य, धृष्टद्युम्न, शिखंडी, द्रौपदीचे पुत्र, प्रभद्रक वीर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, शिशुपालाचा पुत्र, कारूप, मत्स्यशेष, केकय व कौशिक ह्या सर्व प्रबल योद्ध्यांनीं त्वरा करून वसुषेणावर बाणप्रहार केले आणि

जनमेजय व पांचाल्य ह्यांनींही बाणांचा भडिमार चालवून कर्णावर हल्ला केला. त्या समयीं त्या सर्वांनीं वाराहकर्ण, वत्सदंत, विपाठ, क्षुरप्र, चट्टकामुख इत्यादि नानाविध अमोघ निशित बाण आणि अनेक प्रकारचीं दुसरीं भयंकर आयुधें कर्णावर सोडिलीं व कर्णाचें हनन करण्याच्या इराद्यानें रथ, अश्व, गज इत्यादिकांसह त्याजवर हल्ला करून त्यास वेढा दिला. तेव्हां कर्णानें ब्रह्मअस्त्राचा प्रयोग केला व दशदिशांना शरवर्षावानें झांकून काढिलें. त्या समयीं कर्णाचें वीर्य हाच कोणी एक भयंकर अग्नि शररूप ज्वालांनीं पांडवसैन्यरूप अरण्य जाळीतच चालला आहे असें भामें लागलें ! नंतर महाधनुर्धर महात्म्या कर्णानें हंसून मोठमोठ्या अस्त्रांचें संधान केलें आणि धर्मराजाचें धनुष्य शरवृष्टीनें छेदून टाकिलें. नंतर कर्णानें क्षणांत बांकदार नव्वद तीक्ष्ण बाण धर्मराजावर सोडून त्याचें त्रिलखत भेदिलें आणि तें रत्नखचित सुवर्णमय कवच खाली पडत असतां, विद्युत्तेनें युक्त अशा वातप्रेरित अत्रांतून सूर्यकिरण पार गेल्यानें चोहोंकडे जशी प्रभा फांकते, तशी दिव्य प्रभा फांकली ! जणू काय धर्मराजाच्या अंगावरून खाली पडलेलें तें चित्रविचित्र चिखलत नक्षत्रादिकांनीं देदीप्यमान भासणारें नभोमंडलच होय असा भाम झाला ! ह्याप्रमाणें धर्मराजा कवचहीन झाला तेव्हां त्याचें शरीर बाणप्रहारांनीं रक्तबंबाळ झालें. मग त्यानें तत्काळ पोलादी शक्ति कर्णावर सोडली. तेव्हां ती प्रज्वलित शक्ति आपणावर अंतरिक्षांतून येत आहे असें पाहून कर्णानें सात बाणांनीं ती तोडून टाकून खाली पाडिली. नंतर युधिष्ठिरानें कर्णाच्या हृदयावर, बाहूवर व ललाटावर चार चार तोमरें टाकिलीं व मोठ्या आनंदानें गर्जना केली. त्या समयी कर्णाच्या देहांतून रक्ताचे

ओष वाहू लागले व तो क्रुद्ध झालेल्या सर्पा-
प्रमाणें सुसकारे टाकू लागला. मग त्यानें भल्ल
बाणांनं धर्मराजाचा ध्वज छेदिला, तीन बाणांनीं
धर्मराजास विद्ध केले, त्याचे बाणभाते तोडिले व
रथाचे तिळाएवढाले तुकडे उडविले. राजा धृत-
राष्ट्रा, नंतर धर्मराजा दुसऱ्या रथांत आरूढ झाला.
त्या रथाला जोडिलेल्या अश्वानांचा वर्ण हस्ति-
दंताप्रमाणें शुभ्र असून त्यांची पुच्छें काळी-
कुळकुळीत होती. धर्मराजा ह्या रथांत बसून
मोठ्या कष्टानें युद्धपराङ्मुख झाला व पळूं
लागला ! कारण, त्याच्या समीप असलेला
त्याचा सारथि हत झाल्यामुळे कर्णाच्या समोर
तग काढवेल असें त्यास वाटलें नाहीं. इकडे
कर्णानें युधिष्ठिरावर चाल करून त्याचा पाठलाग
केला; आणि वज्र, छत्र, अंकुश, ध्वज, कूर्म,
अंबुज, आदिकरून लक्षणांनी युक्त अशा
आपल्या सुंदर हस्तानें आपणा स्वतः पवित्र
करून घेण्यामाठी त्यानें धर्मराजाच्या स्कंधप्रदेशी
स्पर्श केला; व आतां तो त्यास बलात्कारानें
धरणार इतक्यांत त्याला कुंतीच्या भाषणाचें
स्मरण झालें. तशांत त्याला शल्यानेंही हटलें
की, ' बा कर्णा, तूं त्या राजश्रेष्ठाला धरूं नको.
तूं त्याला धरिलेंस तर तो तुला व मला
तत्काळ भस्म करून टाकिल ! ' तेव्हां कर्णानें

युधिष्ठिराचा धिक्कार

करीत त्यास हंसत हंसत हटलें, " अरे, क्षत्रिय-
कुलांत जन्मास येऊन क्षत्रियधर्म पालन करणारा
वीर भयभीत होऊन प्राण रक्षण करण्याकरितां
घोर समरांत रण सोडून कसा बरें पळूं लागेल ! मला
वाटतें कीं, तूं क्षात्रधर्मांत कुशल नाहींस. तुझ्या
ठिकाणी ब्राह्म बल असल्यामुळे तूं स्वाध्याय,
यज्ञानुष्ठान इत्यादिकांत निमग्न असावेंस; ह्यास्तव,
हे कौतेया, तूं युद्ध करूं नको. व वीरपुरुषांच्या
वाटेस जाऊं नको. त्यांना अप्रिय बोलण्याचें
सोडून दे व महामग्न्यापासून निवृत्त हो.

राजा, तुला कोणाला अप्रिय बोलवयाचें अस-
ल्यास ते लोक दुसरे होत; माझ्यासारख्यांना
त्वां अप्रिय भाषण केव्हांही करूं नये. समरां-
गणांत मजसारख्यांशीं अयोग्य भाषण केल्यानें
हें असें फळ मिळतें व याहूनही आणखी वाईट
फळ मिळेल ! ह्यासाठी, हे युधिष्ठिरा, आतां तूं
स्वगृही जा किंवा ज्या ठिकाणी ते केशवार्जुन
असतील त्या ठिकाणचा मार्ग धर. राजा,
रणांगणांत कोणताही प्रसंग प्राप्त झाला तरी हा
कर्ण तुला वधणार नाहीं ! " ह्याप्रमाणें भाषण
करून त्या महाबलवान् कर्णानें धर्मराजाला
मोडून दिलें; व इंद्रानें अमुरमेनेचा नाश केला
तद्वत बाकीच्या पांडवमेनेचा धुव्वा उडविला.

संकुलयुद्ध.

इकडे, कर्णाच्या हातून सुटका झाल्यावर
धर्मराजा मोठा लजित होऊन त्वरेनें मार्गें
वळला व तें पाहून चेदि, पांडव, पांचाल,
सात्यकि, द्रौपदीचे पुत्र व माद्रीपुत्र नकुलसह-
देव हे सर्व त्याच्यामागून माघारे फिरले.
नंतर कौरवमेन्यासह वर्तमान कर्ण हा मोठ्या
वीरश्रीनें त्यांचा पाठलाग करूं लागला. त्या
समयी दुंदुभि, शंख, मृदंग, त्याचप्रमाणें धनु-
ष्यांचे टणत्कार व वीरांच्या मिहगर्जना ह्यांचा
एकच घोष होऊं लागला. इतक्यांत युधिष्ठिर
वार्धवाईनें श्रुतकीर्तीच्या रथावर चढला आणि
कर्णाचा पराक्रम पाहूं लागला. तेव्हां पांडवांचें
सैन्य पटापट मृत्युमुखी पडत आहे असें पाहून
धर्मराजाला अतिशय संताप आला व तो
आपल्या योद्ध्यांना ह्मणाला, ' अरे ! असे
स्वस्थ कां बसलां ? ह्या कौरवमेन्याचा वध
करून टाका. ' ह्याप्रमाणें धर्मराजाची आज्ञा होतां-
च पांडवांकडील भीमसेनादिक सर्व महारथ तुझ्या
पुत्रांवर धावून आले. त्या समयी रथ, अश्व,
गज व पायदळ ह्यांचा व शस्त्रास्त्रांचा मोठा भयं-
क शब्द होऊं लागला. दोन्ही पक्षांतील महान्

महान् वीर उठा, मारा, चला, पाडा. 'अशी गर्जना करूं लागले आणि घोर युद्ध प्रवृत्त होऊन एकमेकांना एकमेकांना ठार मारिले राजा, त्या वेळी वाणांची इतकी वृष्टि झाली की, तिच्या योगे अभ्रपटलाप्रमाणे अंतरिक्ष आच्छादित होऊन चोहोंकडे अंधकार पडला; कोणी कोणाम ओळवेनामं झाले; त्या रण-मंमर्दीत ध्वज, पताका, छत्रे, मारथि, अश्व, आयुधे इत्यादिकांचा विध्वंस उडाला; आणि मोठमोठाले भूपाल हात, पाय, धड, टोकरी वंगरे तुटून जाऊन क्षितितलावर मरून पडले ! त्या समयी, पर्वतांच्या कड्यावरून मोठमोठे अजख हत्ती वर बसलेल्या योद्ध्यांमुद्धां धडाधड खाली पडत आहेत किंवा पर्वताची शिखरे वज्रप्रहारांनी भिन्न होऊन एकदम खाली कोमळत आहेत, असें सर्वांना वाटले ! राजा धृत राष्ट्रा, त्या समयी उभय दळांत जे निकरांचे युद्ध झाले त्यांचे काय वर्णन करावे ! हजारों घोडे व त्यांवरील स्वार अंगांवरील कवचे व अलंकार ह्यांची मोडतोड व विध्वंस उडून रणभूमीवर मरून पडले; त्याचप्रमाणे रथ्यानी रथ्यांवर हल्ले करून वाणप्रहारांनी त्यांस विरथ केले व वधिले; आणि पायदळाच्या हजारों टोळ्या रणांगणांत गतप्राण होऊन पडल्या. तेव्हां विशाल, विस्तृत व आरक्त अशा नेत्रांनी व चंद्र किंवा कमल ह्यांप्रमाणे शोभणाऱ्या मुखांनी युक्त अशा त्या युद्धपट्ट वीरांच्या मस्तकांनी ती समरभूमि सर्वतोपरी आच्छादून गेली व ज्याप्रमाणे पृथ्वावर त्याप्रमाणेच अंतरिक्षांत भयंकर शब्द ऐकू येऊ लागला ! राजा, ह्याप्रमाणे शतावधि व सहस्रावधि वीर रणभूमीवर एकमेकांना ठार मारीत अमतां एक मोठाच चमत्कार दृष्टीस पडला, त्या समयी अंतरिक्षांत अप्सरांचे समूह विमानांत आरूढ होऊन ते युद्ध पहात होते, त्यानी गायनवादन आरंभिले व धारातीर्थी

पतन पावलेल्या योद्ध्यांना आपल्या विमानांत वलून स्वर्गाम नेले ! राजा, हे आश्चर्य अवलोकन करून त्या युद्धयुग्ंधर वीरांना अधि-कच वीरश्री चढली व प्रत्यक्ष स्वर्गप्राप्तीची इच्छा करून जो तो मोठ्या आवेशाने आप-आपल्या प्रतिस्पर्ध्यांवर प्रहार करूं लागला. त्या प्रमंगी रथ्यांनी रथ्यांशी, पायदळांने पायदळाशी, हत्तीनी हत्तीशी व घोड्यांनी घोड्यांशी मोठे विचित्र युद्ध आरंभिले आणि मोठाच गजवाजिनरक्षय सुरू चाला ! निकडे निकडे धुळच धुळ होऊन अंधकार पडला व आपपराची ओळख नाहीशी होऊन स्वकीय-स्वकीयांचे व परकीय-परकीयांचेच युद्ध मातले. कोणी एकमेकांचे केश ओढून मारू लागले. कोणी एकमेकांना दातांनी चावू लागले, कोणी एकमेकांना नखांनी फाडू लागले. कोणी एकमेकांवर मुष्टि हाणिल्या, आणि कोणी कोणी तर बाहुयुद्धाला आरंभ केला. राजा, अशा प्रकारचा घोर संग्राम चालू होऊन देह, पातके व प्राण ह्यांचा संहार वडू लागला, तेव्हां मनुष्ये, हत्ती व घोडे ह्यांच्या देहांतून रक्ताचे पाट सुरू होऊन त्यांची मोठी नदी बनली आणि रणभूमीवर पतन पावलेले बहुत नर, नाग व हय ह्यांची शरीरे तीनून वाहून गेली. राजा, नर, अश्व, गज ह्यांच्या रुधिरप्रवाहाने उत्पन्न झालेल्या त्या महाघोर स्रितेतून मांस-शोणित ह्यांच्या मिश्रणापासून फारच कर्दम मातला आणि तीव्र चतुर्गंमैन्य सांपडून जाऊन मोठीच भीति उद्भवली ! त्या समयी विजयप्राप्तीच्या हावेमुळे कितीएकांनी ती नदी ओलांडिली व कितीएक तिच्या काठावरच कुंठित होऊन बसले. कितीएकांनी त्या नदीत उड्या टाकिल्या व परतीराम जाण्याचा प्रयत्न केला, कितीएक धडपड करितां करितां बुडून तळाशी गेले, कितीएक तीन पोहू लागले,

कितीएकांनीं केवळ स्नान मात्र करून आपलें शरीर, चिलखत, आयुधें व वस्त्रें हीं लाल करून टाकिलीं. कितीएकांनीं त्या रुधिरमरितेंतलें उदक प्राशन केलें, आणि कितीएक अगदीं निर्वीर्य व म्लान होऊन तीं मरण पावले! राजा, त्या समयीं रथ, अश्व, नाग, नर, आयुधें, आभरणें, वस्त्रें, चिलखतें जीं उन्वस्त झालीं होतीं व होत होती, तीं सर्व व त्याप्रमाणेंच भूमि, आकाश अंतरिक्ष व दशदिशा हीं सर्व बहुधा आरक्त व लाल दिसत होती. त्या वेळीं जिकडे तिकडे रक्ताची दुर्गंधि, जिकडे तिकडे रक्ताचाच स्पर्श, जिकडे तिकडे रक्तच रक्त व तें मळमळत वहात असतां होत अमलेला शब्द, ह्या सर्वांच्या योगें सैन्याला बहुधा अतिशय चिलस व विषाद वाटला! अशा त्या भयंकर स्थितींत सात्यकि, भीमसेन आदिकरून पांडवपक्षीय महान् योद्ध्यांनीं फिरून उचल करून तुझ्या सैन्यावर हल्ला केला आणि त्यांचा तो आवेश दुःसह आहे असें पाहून तुझ्या सैन्याचें धावें दणाणलें व त्यानें माघार घेतली! राजा, एकदां तुझें सैन्य युद्धपराङ्मुख झालें असें दिसून येतांच शत्रूंनीं त्याजवर अशी निकराची गर्दी केली की, तत्काळ तुझ्या सैन्यातील रथ, हत्ती, घोडे व मनुष्ये ह्यांची दाणादाण उडाली; त्यांच्या हातांनील आयुधें व अंगावरील कवचें ह्यांचा शत्रूंनीं विज्वंस उडविला; आणि जिकडे तिकडे तुझ्या सैन्यातील वीर मरून पडूं लागले! राजा, अरण्यांत मिहांनीं गजयुथावर झडप घातली म्हणजे त्या गजांची जशी दैना उडते, तशी तुझ्या सैन्याची दैना झालेली त्या वेळीं दिसून आली!

अध्याय पन्नासावा.

—०.— कर्णपयान.

मंजय सांगतो:- ह्याप्रमाणें पांडवांनीं तुझ्या सैन्यावर हल्ला करून त्याची अगदीं दाणादाण करून टाकिली, तेव्हां दुर्योधनानें चौहोंकडून त्यास आवरून धरण्याचा प्रयत्न केला. आममंताद्वागीं जे योद्धे व सैन्य पळत सुटलें होतें, त्यास त्यानें मोठमोठ्यानें ओरडून 'पळ नका' म्हणून सांगितलें, पण ते योद्धे व सैन्य परत आलें नाहीं. तेव्हां मग व्यूहाच्या पक्षप्रपक्षभागीं असलेले सौबल शकुनि व इतर कौरव शस्त्रास्त्रांमहित समरांगणांत भीमसेनावर चाल करून गेले. ह्याप्रमाणें कौरव भूपालांसह वर्तमान भीमसेनावर चालले आहेत असें पाहून कर्णानेही तोच विचार मनांत आणिला; आणि मद्राज शल्याला 'भीमाच्या रथाकडे आपला रथ चालव' म्हणून सांगितलें; तेव्हां तांबडोत्र शल्यानें कर्णाच्या रथाचे ते हंसवर्ण श्रेष्ठ अश्व जिकडे भीम होता तिकडे चालविले. त्याबरोबर ते तत्काळ भीमसेनाच्या रथाजवळ येऊन युद्धार्थ तोंड देऊन उभे राहिले. इकडे, कर्ण आपल्यावर चाल करून येत आहे असें पाहून भीमाला अत्यंत क्रोध उत्पन्न झाला व तो त्याचा वध करण्याचा संकल्प करून सात्यकि व धृष्टद्युम्न ह्यांमध्णाला, "तुम्ही धर्मात्म्या युधिष्ठिराचें संरक्षण करावे; हा आतांच माझ्या डोळ्यांदेखत मोठ्या प्राणसंकटांतून कमावसा सुटला आहे; दुर्योधनाचा संतोष करावा म्हणून धृष्ट कर्णानें माझ्यामोर ह्याचें चिलखत छिन्न-विछिन्न करून ह्याम कवचहीन केलें आहे. मी आज कर्णाला मारून धर्मराजाच्या दुःखाचा अंत करितों. आज मोठ्या निकराचें युद्ध करून एक तर मी कर्णाला वधून किंवा कर्ण मला वधील, हें मी तुम्हांला निश्चयानें मांगतों.

अहो, आज मी धर्मराजाच्या ठेव म्हणून तुमच्या हवाली करितों. तुम्ही सर्व मोठ्या उल्लहामाने त्याचे संरक्षण करण्यास झटा. ”

ह्याप्रमाणे भाषण करून, सिंहासारखी मोठी गर्जना करीत व दशदिशा दुमदुमून टाकीत महाबाहु भीमसेन हा अधिरथ कर्णावर चाल करून गेला. तेव्हां भीम आपल्यावर मोठ्या वेगाने चालून येत आहे असे पाहून त्याच्याबरोबर युद्ध करण्यास उत्सुक झालेल्या कर्णाला महापराक्रमी मद्राज शल्य म्हणाला, “ कर्णा, महाबाहु पांडुपुत्र भीमसेन अत्यंत क्रोधायमान होऊन तुझ्यावर चालून येत आहे पहा. मला वाटते, दीर्घकालपर्यंत सांचविलेल्या क्रोधाचा परिणाम तुझ्यावर घडवून आणण्याचा खचित याचा बेत असावा. अशा प्रकारचे भीमसेनाचे उग्ररूप मी पूर्वी कधीच पाहिले नाही. फार कशाला, कर्णा, अभिमन्यूच्या किंवा घटोत्कचाच्या वधसमयीही त्यास इतका क्रोध चढलेला मला दिसला नाही. प्रस्तुतकाळी हा केवळ प्रलयकालीन अशीप्रमाणे भासत आहे. ह्या समयी ह्याजबरोबर सर्व त्रैलोक्य जरी युद्धार्थ सिद्ध झाले, तरी त्या सर्वांचे हा एकठा निवारण करील ! ”

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणे मद्राक्षी शल्य कर्णाशी बोलत आहे तोंच क्रोधाने प्रदीप्त झालेला भीम कर्णाच्या समीप येऊन धडकला. तेव्हां राधेय कर्ण मोठ्याने हंमून म्हणाला, “ हे मद्रेश्वरा, तू आज भीमासंबंधाने जे कांही मला छटलेम, ते निःसंशय सत्य आहे. हा मोठा शूर. वीर व कोपिष्ठ आहे; ह्याला आपल्या देहाची मुद्धा पर्वी नाही; कोणत्याही प्राण्यापेक्षा ह्याचे बल अधिक आहे; त्या वेळी विराट नगरांत अज्ञातवासांत अमनां द्रौपदीचे मनोरथ पूर्ण करण्याच्या इच्छेने ह्याने केवळ स्वतःच्या बाहुबलाने गुप्तपणाने गणांमहित कीच-

काला ठार मारिले; आणि तोच हा आज ह्या युद्धाच्या विनीवर क्रोधाने संतप्त होतसाता माझ्याबरोबर झुंजण्यास उद्युक्त झालेला आहे. अरे त्याच्याबरोबर लढण्यास हातांत दंड धारण करून प्रत्यक्ष यम जरी आला, तरी ह्यास भय म्हणून वाटावयाचे नाही. ह्यास्तव मला वाटते की, फार दिवसांपासून मी जो मनोरथ योजिला आहे की, युद्धांत अर्जुनाला मी वधीन किंवा अर्जुन मला वधील, तो कदाचित् भीमाच्या समागमाने आजच सिद्धीस जाईल ! कारण, भीमाला जर मी मारिले किंवा विरथ केले, तर मजवर अर्जुन सहजीच चालून येईल आणि मग माझा मनोरथ अनायासेच सिद्धीस जाईल. ह्यास्तव, शल्या, ह्या समयी तुला जे उचित दिसत असेल ते तू त्वरित कर. ” महापराक्रमी कर्णाचे असे भाषण श्रवण करून शल्य त्याला म्हणाला, “ हे महाबाहो कर्णा, तू बलिष्ठ भीमावर चालून जा. भीमाचे निरसन केल्यावर तुझी व अर्जुनाची भेट होईल. कर्णा, फार दिवसांपासून जी तुझी इच्छा आहे, ती आज सिद्धीस जाईल, हे मी खचित सांगतो. ” ह्याप्रमाणे शल्याचे भाषण श्रवण करून कर्ण त्याला पुनः म्हणाला, “ शल्या, युद्धांत अर्जुन मला मारील किंवा मी त्याला मारिन; ह्यासाठी युद्धांत नीट चित्त घालून जेथे वृकोदर असेल तेथे चल ! ”

संजय सांगतो:—हे प्रजानाथा, नंतर शल्याने रथ चालविला; आणि ज्या ठिकाणी भीमसेन कौरवसेन्याला पळवून लावीत होता, त्या ठिकाणी तो हांहां म्हणतां प्राप्त झाला. राजा, तेथे भीम व कर्ण यांची गांठ होताच दुंदुभीचा व इतर तुर्यादिक रणवाद्यांचा महान् शब्द होऊ लागला. तेव्हां भीमसेनास अधिकच क्रोध चढला आणि त्याने तीक्ष्ण व ललकलीत बाणांची वृष्टि करून कर्णाचे दुर्धर सैन्य चोहोंकडे

पळवून लाविले. राजा, त्या समयीं कर्ण व भीम ह्यांचे रणांगणांत फारच घोर व तुंबळ युद्ध सुरू झाले. नंतर क्षणभर भीमाची सरशी होऊन त्यानें कर्णाला मागे हटविले, पण भीम आपल्यावर तुटून पडत आहे असें पाहून कर्णाला अतिशय क्रोध चढला व त्यानें त्याच्या वक्षस्थळीं बाण मारून तत्काळ बाणवर्षावाने पुनः त्याला आच्छादित केले. तेव्हां भीमाने उलट कर्णावर धार दिलेले नऊ बांकदार बाण सोडिले, पण कर्णाने फिरून बाणांचा भडिमार चालवून त्याचे धनुष्य मध्ये छेदून त्याचे दोन तुकडे केले आणि त्या चापहीन झालेल्या भीमाच्या छातींत असा तीक्ष्ण बाण मारिला की, तो कवचाचा भेद करून एकदम शरीरांत घुसला ! धृतराष्ट्रा, असें झाले तरीही भीमसेनाचे अवसान कमी झाले नाही. त्यानें लागलेच दुसरे धनुष्य हातांत घेतले आणि सूतपुत कर्णाच्या मर्मस्थळीं जलाल बाण मारण्यास प्रारंभ केला; आणि तो इतक्या मोठ्यानें गर्जून लागला की, त्याच्या योगें भूमि व आकाश थरथर कांपू लागली ! राजा, नंतर कर्णाने भीमसेनावर पंचवीस तीक्ष्ण बाण मारिले. त्या समयीं, वनांत मदोन्मत्त होऊन धुंद झालेल्या कुंजरावर जणू काय उल्कांचा वर्षावच झाला असें सर्वांना वाटले. त्या वेळीं कर्णाच्या त्या बाणांनीं भीमसेनाचे शरीर अगदीं फाटून गेले. त्यामुळे तो क्रोधाने इतका बेफाम झाला की, त्यानें तत्काळ कर्णाचा वध करण्याकरितां आपल्या धनुष्याला अत्यंत वेगवान्, अत्यंत बळकट व पवे. तांचा सुद्धां भेद करणारा असा मोठा उग्र शर जोडून त्या धनुष्याची प्रत्यंचा जोराने आकर्ण ओढिली व मोठ्या ल्हेषाने तो शर कर्णाचे हनन करण्यास्तव त्याजवर सोडिला ! धृतराष्ट्रा, बलवान् वायुपुत्र भीमसेनाने सोडिलेला तो बाण वज्रासारखा शब्द करीत—ज्याप्रमाणें पर्वतामध्ये

वज्र घुसतें त्याप्रमाणें—त्या रणभूमीवर कर्णाच्या शरीरांत घुसला आणि त्याच्या योगें तो सेनापति कर्ण रथामध्ये बेसुद्ध व निश्चेष्ट होऊन पडला ! तेव्हां तो मुर्च्छित पडला आहे असें पाहून मद्राधिप शल्यानें रणभूमीतून त्याचा रथ काढून एकीकडे नेला ! ह्याप्रमाणें कर्णाचा पराभव झाला तेव्हां, पूर्वी इंद्राने दानवांची जशी दाणादाण करून टाकिली तशी भीमसेनाने त्या कौरवांच्या महान् सेनेची दाणादाण करून सोडिली !

अध्याय एकावन्नावा.

—:०:—

भीमहस्ते सहा धार्तराष्ट्रांचा वध.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, कर्णासारख्या महाबाहु वीराला रथोपस्थी मुर्च्छित पाडोवे, हें भीमाने केवढे दुर्घट कर्म केले ? सूता, रणांत एकटा कर्ण संजयांसह पांडवांना मारून टाकील असें पुनःपुनः दुर्योधन मजपाशीं म्हणाला होता; आणि असें असतां कर्णाचा भीमाने समरांगणांत पराभव केला, तेव्हां मग दुर्योधनाने पुढें काय केले ?

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, त्या घोर समरांत कर्ण युद्धविमुख होऊन मागे परतला असें जेव्हां दुर्योधनाने पाहिले, तेव्हां तो आपल्या भ्रात्यांना म्हणाला, ‘अहो लवकर जा आणि त्या कर्णाचे संरक्षण करा; नाही तर भीमसेनाने उत्पन्न केलेल्या ह्या प्राससंकटांत तो मरून जाईल ! राजा, दुर्योधनाची अशी आज्ञा होताच त्याचे भ्राते भीमसेनास ठार मारण्याच्या इच्छेने क्रोधायमान होऊन पतंग जसे अग्नीवर तुटून पडतात तसे त्या भीमसेनावर तुटून पडले. ध्रुतर्वा, दुर्धर, क्रोध, विवित्सु, विकट, सम, निषंगी, कवची, पाशी, नंद, उपनंद, दुष्प्रधर्ष, सुबाहु, वातवेग, सुवर्चस, धनुग्राह, दुर्मद,

जलसंध, शल, सह, हे सर्व वीर्यशाली महाबल
 बंधु रथांसह मोठ्या वेगाने भीमसेनावर चालून
 गेले व त्यांनी त्यास चोहोंकडून वेढून त्याजवर
 नानाप्रकारच्या बाणांचा भडिमार चालविला.
 तेव्हां तुझ्या पुत्रांनी चालविलेला तो अपाट्याचा
 मारा अवलोकन करून बलिष्ठ भीमसेनाने
 तत्काळ त्यांचे शंभर रथांचा विध्वंस उडविला.
 राजा, त्या समयी भीमसेनाने क्रोधाग्रामान
 होऊन विवित्स्वर एक भल्ल बाण टाकिला व
 त्यामरमें त्याचे ते पूर्णचंद्राप्रमाणे शोभणारे
 मस्तक कुंडले व शिरस्त्राण ह्यांसह भूमीवर पतन
 पावले ! ह्याप्रमाणे तो शूर विवित्स्वर रणांगणांत
 पडला असे पाहून त्याचे भ्राते अधिकच चव-
 ताळले आणि समरभूमीवर चोहों बाजूंनी भीम-
 पराक्रमी भीमसेनावर मोठ्या त्वेषाने धावून गेले.
 तेव्हां भीमाने पुनः मोठ्या आवेशाने बाणवृष्टि
 सुरू केली आणि दोन भल्ल बाण टाकून तुझे
 देवतुल्य पुत्र विकट व सह ह्या उभयतांना ठार
 करून वाऱ्याने उन्मलित केलेल्या वृक्षांप्रमाणे
 त्यांस भूतलावर पाडिले; नंतर भीमाने त्वरा करून
 एक अत्यंत जलाल बाण क्रोधावर सोडिला; त्या-
 सरसा तो गतप्राण होऊन रणांगणांत पतन पावला
 आणि चोहोंकडे महान् हाहाकार झाला !
 ह्याप्रमाणे तुझ्या धनुर्धर पुत्रांचा व योद्ध्यांचा एक-
 सारखा संहार होऊन लगला, तेव्हां तुझ्या
 सैन्याची त्रेधा उडून मोठी दाणादाण झाली.
 इतक्यांत महाबलिष्ठ भीमसेनाने नंदोपनंदांना
 यमसदनी पाठविले ! त्या समयी तुझ्या पुत्रांचा
 धीर अगदीच सुटला व ते भीमाने केलेल्या
 बाणांच्या भडिमारांनी विव्हल होऊन चोहोंकडे
 पळत सुटले ! तेव्हां प्रलयकालीन यमाप्रमाणे
 रणांगणांत संकुद्ध झालेल्या भीमसेनाला पाहून
 आणि तुझे पुत्र तशा प्रकारे धारातीर्थी पडलेले
 अवलोकन करून सुतपुत्र कर्णाला अतिशय
 वाईट वाटले; व त्याने पुनः आपल्या हंसवर्ण

अश्वाना भीमसेनावर चाल करून जाण्यासाठी
 इशारा केला. राजा, कर्णाच्या सूचनेप्रमाणे मद्रा-
 धिप शल्याने तत्काळ कर्णाचा तो रथ भीमसेना-
 च्या रथापाशी आणून युद्धार्थ सज्ज ठेविला व मग

भीम व कर्ण यांचे युद्ध

जुपून मोठा भयंकर व तुमुल संग्राम मातला.
 ह्याप्रमाणे फिरून कौरवपांडवांची दुळे एकत्र
 होऊन ते दोन महारथ कर्ण व भीम हे एक-
 मेकांशी लगट करून युद्ध करू लागले. तेव्हां
 आतां हे युद्ध कशा प्रकारचे होणार ? अशी मला
 मोठी चिंता पडली. नंतर तुझ्या पुत्रांच्या
 समक्ष रणांगणांत युद्धविशारद भीमसेनाने
 कर्णावर बाणांचा भडिमार करून त्यास झांकून
 टाकिले. त्या वेळी कर्णाला अत्यंत क्रोध चढला
 व त्या अस्त्रविद्यानिपुण महावीर कर्णाने नऊ
 लोहमय बांकदार भल्ल बाण सोडून भीमसेनाला
 विद्ध केले. तेव्हां भीमपराक्रमी महाबाहु भीमाने
 कर्णापर्यंत प्रत्यक्षा आकर्षण करून पूर्ण वेगाने
 मात बाण कर्णावर सोडिले; आणि मग तर
 कर्णाचा संताप अनावर होऊन त्याने सर्पा-
 प्रमाणे सुसकारे टाकित भीमसेनाला अतिशय
 बाणवर्षावाने आच्छादित करून टाकिले. उलट
 भीमानेही महारथ कर्णावर एकसारखा बाणांचा
 लोट चालविला व कौरवसेनेच्या समक्ष मोठ्याने
 गर्जना केली. तेव्हां कर्ण फारच क्षोभला व
 त्याने सुदृढ धनुष्य धारण करून सहाणेवर
 धार दिलेल्या दहा कंकपत्र बाणांनी भीम-
 सेनास विद्ध करून एका निशित भल्ल शराने
 भीमसेनाचे धनुष्य तोडून टाकिले. नंतर
 महाबाहु भीमाने सुवर्णाचे पट्टे बसवून मंडित
 केलेली घोर गदा हातांत घेतली, तेव्हां
 जणू काय तो दुसरा यमदंडच आहे असा भास
 झाला. मग भीमसेनाने कर्णाला ठार मारण्याच्या
 हेतूने मोठ्याने आरोळी देऊन कर्णावर ती
 गदा फेंकली, तेव्हां ती वज्रासारखा सों सों

शब्द करीत त्याजवर गेली; पण कर्णानें सर्पा-प्रमाणें भयंकर शरांचा भडिमार करून तिचे तुकडे तुकडे उडवून टाकिले. नंतर भीमानें बळकट धनुष्य धारण करून शत्रुसंहारक कर्णाला बाणांनी आच्छादित केलें. त्या समयी कर्णभीमांचें अत्यंत भयंकर व निकराचें युद्ध सुरू झालें. तेव्हां जणू काय ते परस्परांना वध-ण्याच्या इच्छेनें वालिसुग्रीवच पुनःपुनः अगडत आहेत, असा भास झाला ! त्या प्रसंगी कर्णानें आपल्या बळकट धनुष्याची ज्या आ-कर्ण ओढून भीमसेनाला पूर्ण वेगानें फेंकिलेल्या तीन बाणांनी फार विद्ध केलें; तेव्हां त्या अतिविद्ध झालेल्या महाधनुर्धर भीमसेनानें कर्णाचा देह विदारण करून जाण्यास समर्थ असा एक भयंकर बाण कर्णावर सोडिला आणि तो तत्काळ कर्णाचें चिलवत व शरीर भेदन करून पन्नग वारुळांत शिरतो त्याप्रमाणें भू-गव्हरांत शिरला ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या बाणाची वेदना कर्णाला सहन झाली नाही, व ज्याप्रमाणें क्षितिकप झाला असतां पर्वत थरथरां हालतो, त्याप्रमाणें तो विव्हल होऊन रयामय्यें हालू लागला. नंतर कर्णाचा क्रोध अनावर होऊन तो अगदी नखाशिखांत पेटला; आणि त्यानें भीमसेनावर पंचवीस बाण सोडिले. त्यानें एक-सारखा बाणवर्षाव करून एका बाणानें भीम-सेनाचा ध्वज तोडिला, एक भल्ल बाण फेंकून त्याचा सारथि मारिला, नंतर लागलेंच एका वेगवान् बाणानें त्याचें धनुष्य छेदिलें आणि पुढें एका क्षणांत भयंकर पराक्रम करणाऱ्या त्या भीमसेनाला सहज फारसे आयास न पडतां हंसत हंसत विरथ केलें !

भीमयुद्ध.

धृतराष्ट्रा, नंतर विरथ झालेला तो भीमसेन हातांत गदा धारण करून हंसत हंसत वायु-वेगानें आपल्या श्रेष्ठ रथांतून तत्काळ उडी

मारून खाली उतरला, आणि शरत्कालीन मेघांची वारा दाणादाण करून टाकितो त्या-प्रमाणें त्यानें तुड्या सैन्याची गदाप्रहारांनीं अगदी दाणादाण करून टाकिली. त्या समयीं क्रोधायमान झालेल्या शत्रुसंहारक भीमानें गालांवर, नेत्रांवर, गंडस्थळांवर, मस्तकांवर व इतर मर्मस्थानांवर नेमके गदाप्रहार करून मोठे प्रचंड व नांगरांच्या इसाडांप्रमाणें फार लांबलांब दातांनीं झुजणाऱ्या सातशें मदोन्मत्त हत्तींना एकदम विद्ध केलें. राजा, त्या समयीं गजसैन्याची मोठीच तारंबळ उडाली व ते हत्ती भयभीत होऊन सैरावैरा धावूं लागले. तेव्हां महातांनी पुनः त्यांना आवरून भीमा-वर सोडिलें; व दिवाकराला मेघ जसे झांकून टाकितात, तसें त्यांनीं भीमसेनाला झांकून टाकिलें. त्या वेळी, भीमानें भूमीवर उभें राहून इंद्र ज्याप्रमाणें पर्वतांचा वज्रप्रहारानें विध्वंस उडवितो त्याप्रमाणें सातशें हत्तींचा त्यावरील स्वारांमुद्धां व आयुधध्वजांमुद्धां विध्वंस उडविला ! नंतर सुबलपुत्र शकुनि ह्याचे अतिशय बलाढ्य असे बावळ हत्ती भीमसेनावर धावून आले, पण शत्रुसंहारक भीमानें त्या सर्वांचा संहार करून शंभर रथांचा संपूर्ण चुराडा उड-विला. शिवाय शेंकडों पायदळ त्याजवर चालून आले, त्यास त्यानें यमसदृशीं पोंचवून तुड्या सैन्याला व्रस्त करून टाकिलें. राजा, ह्या समयी महात्म्या भीमानें पराक्रमानें व त्या-प्रमाणेंच सूर्यानें प्रखर उन्हांनें तुड्या सैन्याला अत्यंत पीडिलें, तेव्हां अग्नीवर टाकिलेल्या चर्माप्रमाणें तुझें तें सैन्य संकुचित झालें व भीमाशी लढण्याचा नाद सोडून दशदिशांस पळून गेलें ! नंतर, राजा, चर्माचें कवच ज्यांवर होते असे पांचशें दुसरे रथ मोठा दणदणाट करीत भीमावर चालून गेले व त्यांनीं एकसारखा चोहोंकडून तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार चालविला;

पण विष्णूने अमुरांचा जसा संहार उडविला, तसा भीमाने गदेने त्या सर्व रथांतेले वीरांचा, आयुधांचा व ध्वजपताकांचा संहार उडविला ! मग शकुनीने महापराक्रमी तीन हजार घोडे-स्वार शक्ति, ऋष्टि, प्राम वेगरे आयुधांनी सुमज्ज असे भीमसेनावर पाठविले; परंतु ते आपल्यावर येत अहेत असे पाहून तत्काळ मोठ्या वेगाने भीमसेन उलट त्यांजवर तुटून पडला व ते नानाप्रकारचीं मंडळे करीत येत असतां त्यांस त्याने गदाप्रहारांनीं मृत्युमुखीं लोटिले ! राजा, सौबलाच्या त्या घोडेस्वारांची व भीमसेनाची लगट होऊन त्यांचे जेव्हां घोर युद्ध प्रवृत्त झाले, तेव्हां हत्तींवर पाषाणांची वृष्टि झाली असतां जसा मोठा शब्द होतो, तसा त्या घोडेस्वारांवर भीमाच्या गदेचे प्रहार होत असतां भयंकर शब्द होत होता. राजा, शेवटीं भीमाने शकुनीच्या त्या उत्तम घोडेस्वारांचा नाश केला आणि मग तो दुसऱ्या रथांत आरूढ होऊन मोठ्या क्रोधाने कर्णावर चालून गेला; कारण इकडे मध्यंतरी समरांगणांत कर्णाने युधिष्ठिरावर चाल करून त्यास बाणाच्छादित केले होते; व त्याचा सारथि मारून त्याजवर सरळ जाणाऱ्या कंकपत्र बाणांचा भडिमार करीत त्याचा पाठलाग चालविला होता. ते पाहून भीमसेनाला अतिशय क्रोध चढला व त्याने तत्काळ कर्णाला बाणवृष्टीने झांकून काढिले. राजा, आपल्या पाठीवर भीमसेन आला असे पाहून कर्णाने धर्मराजाचा पाठलाग करण्याचे सोडून दिले व मागे वळून भीमसेनाला चोहो बाजूंनी तीक्ष्ण शरांनी आच्छादित केले. राजा, ह्याप्रमाणे भीमसेनाच्या रथाला कर्णाने शरवृष्टीने अदृश्य करून टाकिलेले पाहून, भीमसेनाच्या मागे महाबल सात्यकि होता त्याने कर्णावर बाणवृष्टि चालविली. तेव्हां कर्ण जरी अगदी बाणवस्त

झाला होता तरी त्याने सात्यकीवर हल्ला केला आणि मग त्या दोघां महाधनुर्धरांचे तुमुल युद्ध जुंपले. ते दोघेही मोठ्या निकराचे युद्ध करू लागले व त्यांनी एकमेकांवर प्रखर शर मारण्याचा तडाखा चालविला. त्या समयी त्यांनी बाणांचा इतका भडिमार केला की, आकाशांत कौंच पक्ष्यांच्या पृष्ठाप्रमाणे आरक्त वर्णाचे एक भयंकर बाणजालच पसरिले आहे असे दिसू लागले. राजा, त्या वेळीं आढाळा अथवा शत्रूंना, जिकडे तिकडे बाणांचे छत पडल्यामुळे, सूर्याची प्रभा किंवा दिशा-उप-दिशा ह्यांचे ज्ञान मूर्च्छित होत नव्हते. त्या समयी कर्णपांडवांनी जे एकसारखे सहस्रावधि शरांचे ओघ एकमेकांवर चालविले होते, त्यांच्या योगे सूर्याचे भरमध्यान्हीचे तेजही नष्ट झाले होते. राजा, ह्याप्रमाणे कर्णाने विलक्षण पराक्रम करून दाखविला तेव्हां त्याच्या मदतीस सौबल, कृतवर्मा, अश्वत्थामा व कृप हे आले, आणि मग त्यांचे व पांडवांचे पुनः घोर युद्ध सुरू झाले. तेव्हां कौरवांना मोठी उमेद आली व त्यांचे जे सैन्य पूर्वी दाणादाण होऊन पांगत चालले होते ते पुनः एकवटून पांडवांशी मोठ्या त्वेषाने लढू लागले. राजा, वर्षाकालांभी समुद्र शुब्ध झाला असतां जसा त्याचा मोठा भयंकर शब्द होतो, तसा ती उभय दळे एकत्र होऊन लढू लागली तेव्हां भयंकर शब्द होऊ लागला ! राजा, ती सैन्ये अगदी लगट करून मोठ्या वीरश्रीने एकमेकांवर भरो-दोनप्रहरी तुटून पडली तेव्हां त्यांचा जो संग्राम झाला, तसा संग्राम पूर्वी झालेला आम्ही कधी ऐकिला नाही व पाहिलाही नाही ! ज्या-प्रमाणे सागराच्या लाटा एकमेकांवर उसळतात, त्याप्रमाणे त्या सैन्याच्या टोळ्या एकमेकांवर उसळल्या आणि समुद्राप्रमाणे मजेना करीत

एकमेकांत मिळून जाऊन नद्यांच्या संगमा-
प्रमाणे त्या अगदीं एकजीव झाल्या. राजा,
त्या समयी त्यांचे फारच तुंबळ युद्ध झाले.
दोन्ही सैन्यांतील योद्धे दिव्य पराक्रम गाज-
वून उत्कृष्ट कीर्ति मिळविण्याच्या इच्छेनें एक-
मेकांशीं सगडूं लागले. ते आपापल्या प्रतिस्पर्धी-
चीं नांवे घेऊन त्यांच्या मातृवंशांत किंवा पितृ-
वंशांत कोणी कांहीं रणांत नीच कृत्य किंवा हीन
आचरण केले असल्यास ते मोठ्यानें ओरडून
सांगूं लागले; आणि अशा प्रकारे ते एक-
मेकांना दरडावीत घोर पराक्रम करीत असतां
माझी तर अशी समजूत झाली की, आतां
हे खचित जिवंत रहात नाहीत ! व त्या दोन्ही
सेनांतील त्या महान् महान् संकुद्ध वीरांचीं
ती शरीरे अवलोकन करून माझ्या मनांत
आतां पुढे कसे काय होणार, ह्याविषयी फारच
मोठी भीति उत्पन्न झाली. असो; राजा, नंतर
त्या कौरवपांडवसैन्यांतील महारथांनीं एकमेकां-
वर तीक्ष्ण सायकांची वृष्टि करून एकमेकांना
धारातीर्थी पाडण्याचा तडाखा सुरू केला.

अध्याय बावन्नावा.

—::—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, समरांग-
णांत ते क्षत्रिय वैरामुळे एकमेकांना ठार मार-
ण्याची इच्छा करून एकमेकांवर शस्त्रास्त्रांचे
प्रहार करूं लागले. त्या समयी रथ, गज,
अश्व व नर ह्यांचे मोठमोठाले समुदाय जिकडे
तिकडे मोठी लगट करून अगदीं निकरानें
लढूं लागले. त्या भयंकर रणांत गदा, परिघ,
कणप, प्रास, भिंदिपाल व भुशुंडी ह्या आयु-
धांचे एकसारखे परस्परान्तर आघात होऊं लागले.
चोहोंकडून बाणांची वृष्टि इतकी झाली कीं,
ती जणू काय टोळधाडच असें भासत होतें !

हत्तीनीं हत्तींवर, घोड्यांनीं घोड्यांवर, रथ्यांनीं
रथ्यांवर व पायदळानें पायदळावर हल्ले करून
एकमेकांना ठार मारिले. त्याप्रमाणेंच पायदळ
घोडेस्वारांवर व रथगजांवर, रथ हत्तींवर व
घोड्यांवर आणि वेगवान् हत्ती बाकीच्या तीन
अंगांवर झडपा घालून मोठा घोर संहार सुरू
झाला ! राजा, ते शूर वीर आरोळ्या देऊन
परस्परान्तर प्राण घेऊं लागले, तेव्हां जणू काय
ती समरभूमी पशुवधाचीच जागा होय असें
सगळ्यांना भासले ! त्यावेळीं पृथ्वीवर जिकडे
तिकडे रुधिरच होऊन गेलें ! पर्जन्यकाळीं
भूमीवर इंद्रगोपांच्या रांगा चालत असतां ती
जशी दिसते, अथवा पक्का तांबडा रंग दिलेली
पांढरी वस्त्रे परिधान केलेली तरुण स्त्री जशी
दिसते, त्याप्रमाणें वसुंधरा आरक्तवर्ण दिसत
होती; आणि तिच्यावर जागोजागी मांसशोणि-
तांचे ढींग पसरले असल्यामुळे जणू काय ती
सुवर्णाचीच बनविलेली आहे, असें भासत होतें.
राजा, त्या रणांगणांत तुटलेलीं मस्तकें, भुज व
मांड्या आणि इतस्ततः विकीर्ण झालेली कर्ण-
भूषणें, अलंकार, हार, शूर महेष्वासांचीं शरीरे,
ढाली, ध्वज, पताका, हीं सर्वत्र पडली
होती ! राजा, त्या युद्धांत हत्तींवर हत्तींनीं
हल्ले करून त्यांस आपल्या दांतांनीं विद्ध केले,
तेव्हां ते विद्ध झालेले हत्ती फारच तेजस्वी
दिसें लागले. ज्याप्रमाणें धातुमंडित पर्वतां-
मधून कावेचे प्रवाह चालू असतां ते पर्वत दिस-
तात, तसे ते हत्ती अंगांतून रुधिराचे प्रवाह वहात
असल्यामुळे दिसें लागले. राजा, त्या हत्तींवर
जी तोमेरे घोडेस्वारांनीं मारिलीं होती किंवा
जी त्यांच्या देहांत घुसावी म्हणून समोर धरून
भोंसकलीं होती, तीं सर्व त्या हत्तींनीं आपल्या
सोंडांनीं उपटून किंवा मोडून टाकिलीं होती.
राजा, नाराच बाणांनीं त्या हत्तींवरील कवचे
छिन्न झाल्यामुळे, हिंवाळ्याच्या प्रारंभी अभ्रहीन

पर्वत जसे दिसावे, तसे ते महान् महान् हत्ती दिसत होते. राजा, कित्येक हत्तीच्या अंगांत सुवर्णपुंख बाण रुतले असल्यामुळे उल्कांनी पेटलेल्या पर्वताप्रमाणे त्यांचे देह प्रज्वलित दिसत होते. राजा, त्या समयी कित्येक हत्ती दुसऱ्या हत्तींनीं प्रहार केल्यामुळे मोठमोठ्या मपक्ष पर्वताप्रमाणे नाश पावले; कित्येक हत्ती शरीरांत शल्ये रुतल्यामुळे जखमी होऊन आपल्या कपोलप्रांतांसह व गंडस्थळांसह रणांगणांत तडफड करीत होते; कित्येक नानाप्रकारे भयंकर गर्जना करीत सिंहासारखे ओरडत होते; व पुष्कळ सैरावैरा धावत होते, व कित्येक दुःखाने आक्रोश करीत होते. तमेंच सुवर्णालंकारांनीं भूषित केलेले कित्येक घोडे बाणप्रहागांनीं विद्ध होऊन समरभूमीवर मरून पडले. कित्येक अगदीं हैराण होऊन जगाच्या जागी वमले, आणि कित्येक तर दशदिशांना पळत सुटले ! कित्येक घोडेस्वारांनीं आपल्या घोड्यांवर शर-तोमरांचा वर्षाव आला असतांही ते तबेच पुढे चालविले होते. पण त्यांचे देहभान सुटल्यामुळे ते नानाविध चेष्टा करीत व बहुविध चालीने दौडत महीतलावर धडाधड पडू लागले ! राजा. त्या समरांगणांत पायदळाचीही तशीच दुर्दशा उडाली. घायाळ होऊन पडलेली मनुष्ये आक्रोश करीत विव्दलत होती. कित्येक आपल्या आसमुह्मदांना, कित्येक आपल्या पितृपितामहांना आणि कित्येक तेथे जीं दुसरी मनुष्ये धावत होती त्यांना पाहून त्यांच्या प्रच्यात गोत्र-नामांचा उच्चार करीत एकमेकांशीं त्यांची स्तुति करीत होती. त्यांचे छिन्नभिन्न झालेले हजारों सुवर्णालंकृत बाहु नानाविध प्रकारे चलनवलन करीत होते. कित्येक बाहु वर्तुळाकार गरगर फिरत होते, कित्येक वेड्यावांकड्या रीतींनीं धडपडत होते. कित्येक खाली पडत होते, कित्येक वर उडत होते, कित्येक एकदां खाली

आपटले म्हणजे वर उठत नसत, कित्येक एकसारखे थरथर स्फुरण करीतच रहात, आणि कित्येक तर पांच फडांच्या भुजंगांप्रमाणे सळाळ्या मारीत होते ! राजा, सर्पांच्या शरीराप्रमाणे मांसल व पुष्ट आणि चंदनाची उटी दिलेले असे ते भुज रुधिरांत माखून गेल्यामुळे केवळ सुवर्णाच्या ध्वजांप्रमाणे अत्यंत देदीप्यमान दिसत होते.

ह्याप्रमाणे घोर रणकंदन चालले असतां चोहोंकडे अगदी एकच गर्दी होऊन आपण कोणाशीं लढत आहों हेंही भान न रहातां ते वीर परस्परांवर प्रहार करू लागले. त्या समयीं जिकडे तिकडे धूळच धूळ आल्यामुळे व सर्व सैनिक हातघाईवर येऊन एकसारखे शस्त्रास्त्रांचा प्रहार करीत सुटल्यामुळे अंतर्बाह्य तम माजले व आपला कोण आणि परका कोण ही ओळख बुजून जाऊन मोठे भयंकर युद्ध मातले ! राजा, त्या समयीं रक्ताच्या मोठ्या नद्या वाहू लागल्या ! वीरमत्स्वरूप पाषाणांनीं त्या अगदीं आच्छादित झाल्या, वीरकेशरूप शैवाल्यानें त्यांचे पृष्ठभाग हिरवे दिसू लागले, वीरांचीं हाडे हे जणू काय त्या नद्यांतील मासेच इतस्ततः दिसू लागले, रत्नखचित हेममय धनुष्ये, शर व गदा ह्या जणू काय अंतरिक्षांतील ज्योतींच्या (ग्रहनक्षत्रादिकांच्या) प्रभाच होत असें भामू लागले, मांस व शोणित ह्यांचा चिखल हा जणू काय त्या नद्यांतील कर्दमच होय असें वाटले, आणि त्या नद्यांच्या रक्तरूप उदकाला एकसारखी भरती येत असल्यामुळे सर्वांना मोठे भय पडून गेले व शरांना मात्र आनंद लोटला ! राजा, यमसदनाला नेऊन पोंचविणाऱ्या त्या भयंकर नद्यांत पुष्कळ पुरुषांनीं बुडद्या मारून क्षत्रियांना भय उत्पन्न केले व ते आपण स्वनः मरून गेले ! राजा, त्या ठिकाणीं हिंसक प्राणी अकाळविकाळ ओरडत चोहोंकडे

भ्रमण करीत असल्यामुळे यमाच्या नगरी-
प्रमाणें ती युद्धभूमि भयंकर दिसत होती. त्या
रणांगणांत चौहोंकडे वीरपुरुषांची असंख्य कबड्ये
उडून उभी राहिली; आणि मांसशोणितांचें
मनभुराद सेवन करून तृप्त झालेले
भूतगण सर्वत्र नाचूं लागले ! राजा,
कावळे, बगळे व गिधाडे ही मेढ, मज्जा, वसा,
मांस व रक्त ही यथेष्ट खाऊन इतस्ततः
खुशाल धावत आहेत, असें दिसूं लागलें.
राजा, मरणाची भीति म्हणून सर्वांना असा-
वयाचीच; तथापि शूर वीरांनी ती भीति
मोडून देऊन योद्ध्यांचें व्रत कोणतें हें मनांत
वागविलें आणि त्यांनी निर्धास्तपणें प्रताप
गाजविण्यास प्रारंभ केला. राजा, त्या भयाण
रणभूमीवर जेथें शर व शक्ति ह्या सर्वत्र पस-
रल्या होत्या व हिंसक प्राण्यांच्या टोळ्यांच्या
टोळ्या जमल्या होत्या, तेथें पराक्रमी वीर
आपलें शौर्य दाखवीत आणि आपलें गोत्र,
नाम, पितृनाम वगैरे एकमेकांना मांगत फिरता
फिरता त्यांनी शक्ति, तोमर व पट्टे ह्यांचे
प्रहार करून परम्पराना वधण्याचा क्रम सुरू
केला, आणि पुनः अत्यंत भयंकर युद्ध होऊं
लागून, सागरांत फुटकी नाव बुडून नाश पावते
तद्गत त्या समरांत कौरवीय मेना नाश पावली !

अध्याय त्रेपन्नावा.

—:—

संशप्तकवध.

मंजय सांगतो:—राजा, अशा प्रकारें घोर
संग्राम सुरू होऊन क्षत्रियांचा संहार चालला
असतां, जेथें अर्जुनांनं मंशसकांचें. कोसलाचें
व नारायण नामक सेनेचें कंदन केलें, तेथून
गांडीवाचा महान् शब्द ऐकूं येऊं लागला.
राजा, त्या रणांत क्षुब्ध झालेल्या जयेच्छु
मंशसकांनी चौहोंकडून अर्जुनाच्या मस्तकावर

जो शरवर्षाव केला, तो सर्व त्यानें मोठ्या
हिमतीनें व शौर्यानें सहन करून, उलट
त्यांच्या श्रेष्ठ रथ्यांवर, धार देऊन जलाल
केलेल्या कंकपत्र बाणांचा भडिमार चालविला;
आणि त्या रथसेनेंत घुसून उत्कृष्ट आयुध
धारण केलेल्या मुशर्म्याला गांठिले. तेव्हां, राजा,
त्या श्रेष्ठ रथ्यानें अर्जुनावर बाणांचा भडिमार
केला व त्याप्रमाणेंच मंशसकांनीही त्यास
बाणांनी आच्छादून टाकिलें. नंतर मुशर्म्यानें
दहा बाण मारून अर्जुनाला विद्ध केले आणि
जनादनाच्या उजवे बाहूवर तीन बाण टाकिले.
नंतर त्यानें एक भल्ल बाण मोडून अर्जुनाचा
वज्र छेदिला; तेव्हां त्यावर अधिष्ठित अमलेला
विश्वकर्म्यानें निर्माण केलेला जो महान् वानर-
राज मारुति. त्यानें मोठ्यानें गर्जना केली
आणि त्या भयंकर गर्जननें तत्काळ तुड्या
मैन्याला धडकी भरून तें निश्चेष्ट पडलें ! त्या
समयी, राजा, तें तुझें सैन्य नानाविध पुष्पांनी
भरून गेलेल्या चैत्रस्थवनाप्रमाणें दिसूं लागलें !
नंतर कांही वेळानें तें सैन्य सावध झालें; आणि
मग, पर्वतावर मेघ जशी जलवृष्टि करितात,
तशी तुड्या पक्षाच्या वीरांनी अर्जुनावर बाण-
वृष्टि केली; आणि सर्वांनी मिळून अर्जुनाच्या
त्या महान् रथाला गराडा घालून त्यास अड
विण्याचा यत्न चालविला त्या समयी अर्जुन
तुड्या वीरांवर तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार करून
त्यांस ठार मारूं लागला. तरी त्यांनी आपला
यत्न न मोडितां उलट चवतालून जाऊन
अर्जुनाचे अश्व. रथचक्रे व धुरी ही सर्व कुठित
व भस करून टाकण्याचा उपक्रम आरंभिला
ह्याप्रमाणें तुड्या मैन्यांतील महस्त्रावि वीरांनी
अर्जुनाच्या रथाचें निग्रहण केल्यावर सर्वांनी
मोठ्यानें मिहगर्जना केली. त्या वेळी किंत्ये
कांनी केशवाच्या महान् भुजांना आणि दुस
च्या किंत्येकांनी रथांन अधिष्ठित अमलेल्या

अर्जुनाला मोठ्या आवेशाने धरिले. परंतु नंतर केशवाने त्या भयंकर युद्धांत आपले बाहु गद-गद हालविले आणि दुष्ट हत्ती ज्याप्रमाणे आपणावर अधिष्ठित असलेल्या लोकांना क्षणांत खाली पाडितो, त्याप्रमाणे त्याने त्या बाहुधारकांना क्षणांत खाली पाडिले ! राजा, महारथांनी आपल्यास गराडा घातला आहे, आणि आपला रथ कुठित केला असून कृष्णालाही शत्रुसैन्याने धरिले आहे, असे जेव्हां अर्जुनाने पाहिले, तेव्हां त्याला अनावर क्रोध चढला आणि त्याने आपल्या रथावर चढलेल्या पायदळास भराभर खाली लोटिले आणि सभोवताली गराडा घालून राहिलेल्या सैन्याला शरवृष्टीने झांकून काढून कृष्णाला म्हटले, “ हे महाबाहो कृष्णा, मी जरी सहस्रावधि मंशप्तकांना मारीत आहे, तरी ह्या मंशप्तकांच्या महान् सैन्याने केवढे दारुण कर्म आरंभिले आहे पहा. हे युद्धंगुवा, रथाला कुठित करण्यासाठी हें असे घोर युद्ध चालले असता त्यास तोंड देईल असा माझ्याशिवाय दुसरा कोणताही वीर ह्या भूतलावर नाही. ”

राजा धृतराष्ट्रा, असे बोलून अर्जुनाने देवदत्त व कृष्णाने पांचजन्य शंख वाजविला आणि त्याचा शब्द तत्काळ पृथ्वीवर व अंतरिक्षांत भरून जाऊन मंशप्तकांचे सैन्य भीतीने गांगरून सरावैरा पळू लागले ! हे महाराजा, नंतर शत्रुसमूहार्क अर्जुनाने पुनःपुनः नागास्त्रांचे आवाहन करून कौरवसैन्याचे पाय सर्परज्जंनी बांधून टाकिले. तेव्हां जणू काय कौरववीरांच्या पायांत लोखंडी बिड्यांच पडल्याप्रमाणे होऊन ते अगदी जागच्या जागी विळल्यासारखे स्तब्ध झाले नंतर, ज्याप्रमाणे तारकामुराच्या वधमयरी इंद्राने दैत्यांना ठार मारिले, त्याप्रमाणे पांडुनेंदनाने त्या निश्छेद वीरगां ठार मारिले. राजा, अशा प्रकारे अर्जुन त्यांचा संहार उडवून ला-

गला तेव्हां त्यांनी अर्जुनाचा तो श्रेष्ठ रथ अडविला होता तो सोडून दिला व हातांतलीं शस्त्रास्त्रे खाली टाकण्यास आरंभ केला ! राजा, त्या वीरांचे पाय अगदी जखडून गेल्यामुळे त्यांचे चलनचलनही बंद झाले आणि मग त्यांचा बांकदार नाणांनी अर्जुनाने जो विध्वंस उडविला त्याचे काय वणन करावे ? ज्या वीरांना उद्देशून अर्जुनाने नागास्त्र सोडिले होते ते सर्व योद्धे रणांगणांत भुजंगांच्या धुडांनी परिवेष्टित झाले व त्यामुळे त्यांची फारच शोचनीय अवस्था झाली ! नंतर तो सर्व प्रकार अवलोकन करून महारथ सुशर्म्याने तत्काळ मौपर्णास्त्रांचे अभिमंत्रण केले. त्याबरोबर जिकडे तिकडे गरुड उत्पन्न होऊन समरांगणांत मातलेल्या सर्पांवर ते भराभर उड्या घालून त्यांस खाऊ लागले ! तेव्हां त्या नागांची फारच तारबळ उडाली आणि ज्यांच्या ज्यांच्या म्हणून ते पक्षी दृष्टीस पडले त्यांनी त्यांनी एकदम पळून जाण्याचा मार्ग आरंभिला ! नंतर, राजा, क्षणांत ते कौरवसैन्य पादबंधापासून मुक्त झाले; व मेघनालकापासून मुक्त झालेल्या भास्कर जमा प्रखर तेजांनी प्रज्वाला तप्त करितो, तसा तो मेनासमूह शत्रूंना तप्त करू लागला ! त्या समयी कौरवांकडील योद्धे अर्जुनाच्या रथावर बाणांचा वर्षाव व शस्त्रांचे प्रहार करू लागले आणि त्यांनी विविध शस्त्रास्त्रांनी चोहोंकडून त्यास विद्ध केले. तेव्हां शत्रुसंहारक अर्जुनाने कौरववीरांनी केलेली ती प्रचंड शस्त्रास्त्रवृष्टि उलट बाणवर्षाव करून भेदून टाकिली आणि फिरून तो आपला प्रताप गाजवू लागला ! इतक्यांत सुशर्म्याने अर्जुनाच्या हृदयांत एक बांकदार बाण मारिला व आणखी तीन बाण शरीराच्या दुसऱ्या भागांवर टाकिले ! तेव्हां अर्जुन अनिशयित विद्ध होऊन आपल्या स्थानी वळवळत पडला असता कौरवांकडील सर्व वीर अर्जुन मला !

अर्जुन मेला !' असें मोठमोठ्यानें ओरडूं लागले ! त्या वेळीं शंख, भेरी व अनेक रणवाद्यें वाजूं लागलीं आणि सर्वत्र सिंहनाद होऊं लागले ! इतक्यांत अर्जुन सावध झाला व त्यानें ताबड-तोब ऐंद्र अस्त्र मोडिलें ! तेव्हां लागलेच चोहों-कडे हजारों बाण उत्पन्न झाले आणि त्यांनी दशदिशांच्या ठिकाणीं तुझ्या सैन्याला ठार करण्याचा सपाटा चालविला ! राजा, मग जेव्हां लक्षावधि हय व रथ समरभूमीवर उच्छिन्न होऊन पडूं लागले, तेव्हां संशप्तकांना व गोपालांना अतिशय भीति उत्पन्न झाली ! त्या समयी कोणालाही अर्जुनाला विद्ध करण्याची छाती होईना; आणि अग्नेरीस तुझ्याकडील योद्धे पहात असतां अर्जुनानें तुझ्या सैन्याचा निःपात उडविला व सहस्रावधि वीरांना धारा-तीर्थी पाडून, धूमरहित झालेल्या अक्षीप्रमाणें तो शोभू लागला ! धृतराष्ट्रा, त्या प्रसंगी अर्जुनानें चौदा हजार योद्धे, दहा हजार रथ व तीन हजार हत्ती ह्यांचा नाश उडविल्यावर फिरून संशप्तकांनी त्याला गराडा घातला आणि मारावें किंवा मरावें असा निश्चय करून ते अर्जुनाशी घोर युद्ध करूं लागले.

अध्याय चौपन्नावा.

— ०:—

शिखंडीचा पराजय.

संजय सांगतो:—याप्रमाणें संशप्तकांचें व अर्जुनाचें घोर युद्ध सुरू होऊन अग्नेरीस संशप्तकांना अर्जुनानें जेव्हां अगदीं जर्जर करून सोडिलें, तेव्हां, समुद्रावर फुटक्या नावेचा जसा विध्वंस होतो तसा कौरवसेनेचा आतां अगदी पूर्ण विध्वंस होणार असें पाहून कृतवर्मा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, सौबल, दुर्योधन राजा व त्याचे भ्राते हे सर्व रणांगणांत कौरवसैन्याच्या मदतीकरितां मोठ्यावेगानें धावून आले;

आणि मग त्यांचा व पांडवसैन्याचा जो मोठा भयंकर संग्राम सुरू झाला, तो पाहून कांही वेळपर्यंत मित्र्यांना मोठें भय वाटलें आणि शूरांना मोठा आनंद झाला ! त्या समयी रणभूमीवर कृपाचार्यानें एकमारखा बाणांचा भडिमार चालवून टोळघाडीप्रमाणें सृज्यांना झांकून काढिलें. तेव्हां शिखंडीला मोठा क्रोध आला व त्यानें तत्काळ त्या गौतमावर चाल केली आणि त्या द्विजपुंगवावर चोहोंकडून बाणांचा पाऊस पाडिला ! त्या समयी महात्मेवैत्या कृपाचार्यानें शिखंडी-प्रेरित त्या सर्व बाणसमूहाचा नाश उडवून उलट मोठ्या क्रोधानें दहा बाणांनी समरांगणांत शिखंडीला विद्ध केलें. तेव्हां शिखंडीला पुनः क्रोध चढला आणि त्यानें क्रोधायमान झालेल्या कृपाचार्याला सरळ घुसणारे मात कंकपत्र बाण टाकून घायाळ केलें. त्या वेळीं महारथ कृपाचार्य अतिशयित विद्ध झाला व त्यानें शिखंडीवर तीक्ष्ण शर सोडून त्याचे अश्व, रथ व सारथि ह्यांचा नाश उडविला. तेव्हां ताबडतोब ढाल-तरवार घेऊन महारथ शिखंडी हा अश्वहीन झालेल्या आपल्या रथांतून उडी मारून खाली उतरला व त्यानें कृपाचार्यावर एकदम हल्ला केला. त्या वेळीं शिखंडी मोठ्या आवेशानें आपणावर चालून येत आहे असें पाहून कृपाचार्यानें बांकदार बाणांच्या भडिमारांने त्यास असें झांकून काढिलें की, जणू काय शिखंडीवर शिलावृष्टि होत आहे असा त्या वेळीं भास झाला व त्यामुळें रणांगणांत शिखंडी निश्चेष्ट उभा राहिला ! राजा, ह्याप्रमाणें कृपाचार्यानें शिखंडीला शराच्छादित करून टाकिलें असें पाहून तत्काळ महारथ धृष्टद्युम्न कृपाचार्यावर उलट चालून गेला; पण धृष्टद्युम्न कृपाचार्याच्या रथावर धावून येत आहे असें पाहतांच महारथ कृतवर्म्यानें मोठ्या आवेशानें त्याजवर चाल करून त्यास अडवून टाकिलें. तेव्हां

कृपाचार्यावर आपल्या सैन्यासह व पुत्रांसह युधिष्ठिरानें चाल केली; परंतु त्यांचा अश्व-
त्याम्यानें प्रतिकार केला. नंतर महारथ नकुल व सहदेव हे मोठ्या त्वरेनें पुढें आले; पण त्यांजवर बाणांची वृष्टि करून तुझ्या पुत्रांनें त्यांचें निवारण केलें. मग भीमसेन, करुष, केकय व सृजय हे युद्धाला प्रवृत्त झाले; पण त्या सर्वांना समरांगणांत कर्णानें मार्गें हटविलें. इकडे पुनः शारद्वत कृपाचार्यानें युद्धामध्ये शिखंडीवर मोठ्या वेगानें बाणांचा भडिमार चालविला. तेव्हां जणू काय तो त्याला जाली-
तच आहे असें सर्वांस वाटलें. तथापि कृपा-
चार्यानें चोहोंकडून सोडिलेले ते स्वर्णभूषित बाण शिखंडीनें पुनःपुनः आपली तरवार गर-
गर फिरवून तोडून टाकिले; पण इतक्यांत शारद्व-
तानें आपली बाण सोडून शिखंडीच्या हातांतील शतचंद्र दालीचा भंग केला ! तेव्हां निकडे निकडे कौरवसैन्यांत आनंदाच्या आरोग्या मुरू झाल्या ! नंतर, धृतराष्ट्रा, चर्महीन झालेला तो शिखंडी नुमते खड्ड वेऊनच कृपाचार्यावर धावला; पण त्या वेळची त्याची स्थिति पाहून, एखाद्या रोम्यानें जमे मृत्यूच्या जवळ्यांत सांपडविं, तसा तो शारद्वताच्या हातांत सांपडला आहे असें दिमत होतें ! राजा, नंतर कृपा-
चार्यानें बाणप्रहार करून शिखंडीला अगदी दीन करून सोडिले, तेव्हां चित्र-
केतूचा पुत्र सुकेतु हा ताबडतोब त्यास माहाग्य करण्याकरितां धावून आला आणि त्यानें मोठ्या शौर्यानें कृपाचार्याच्या रथावर पुष्कळ जलाल बाणांची वृष्टि केली. तेव्हां सुकेतूचें व कृपाचार्याचें युद्ध जुंपले; आणि ह्याप्रमाणें कृपाचार्य सुकेतूशीं झुंजण्यांत व्यग्र झाला असें पाहून शिखंडी लागलाच युद्ध-
पराङ्मुख होऊन पळून गेला !

सुकेतुवध.

राजा, इकडे सुकेतु व कृपाचार्य ह्यांचें युद्ध चालू असतां सुकेतूनें गौतमावर प्रथम नऊ बाण सोडून त्यास विद्ध केलें; नंतर त्यानें त्यावर सत्तर बाण टाकिले; आणि मग फिरून तीन बाण सोडिले; आणि शेवटीं बाणांचा भडिमार करून त्यानें गौतमाचें सशर धनुष्य तोडिलें, एका बाणानें त्याचा सारथि मारिला, आणि सर्व मर्मस्थळी त्यास विद्ध केलें ! तेव्हां कृप फारच खवळला व त्यानें नवें बळकट धनुष्य धारण करून सुकेतूच्या सर्व मर्मस्थळीं तीस बाण टाकिले ! राजा, त्या योगें सुकेतूचीं सर्व गात्रें विव्हेळ झाली; आणि भूमिकंप झाला असता वृक्ष जसा कंपायमान होऊन धाडकन् पडतो, तसा तो सुकेतु कंपायमान होऊन आपल्या रथांत धाडकन् पडला ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें सुकेतु हा विव्हेळ होऊन पडत आहे इतक्यांत गौतमानें त्याजवर क्षुरप्र बाण सोडिला व शिरच्छाण, देदीप्यमान कुंडलें व किरीट ह्यांनी युक्त असें तें त्याचें मस्तक छेदून टाकिलें ! राजा, सुकेतूचें तें मस्तक श्येनाच्या मुखांतिल मांसपिंडाप्रमाणें प्रथम भूमीवर पडलें व मग त्याचा तो देह पडला ! राजा, ह्याप्रमाणें सुकेतूचा नाश झाला तेव्हां त्याचें सैन्य अति-
शय भयभीत झालें व तें गौतमाशी लढाई न करितां त्यास सोडून देऊन दशदिशांस पळून गेलें !

कृतवर्मा व धृष्टद्युम्न यांचें युद्ध.

राजा, इकडे धृष्टद्युम्नाला रणभूमीवर महारथ कृतवर्म्यानें अडवून ठेवून मोठ्या दांडगाईनें ' थांब थांब ' असें म्हटलें, तेव्हां रणांगणांत त्या उभयतांचें घोर युद्ध सुरू झालें. त्या समर्थी जणू काय ते दोन कुद्ध श्येन पक्षी मांसपिंडा-
करितां झगडत आहेत असें भासलें. तेव्हां धृष्टद्युम्न फार क्रोधायमान झाला व त्यानें कृत-

वर्माच्या वक्षस्थळावर नऊ बाण मारिले. त्या समयी त्या बाणांनी अतिशय विद्ध होऊन कृतवर्मांनी पार्षतावर बाणांचा भडिमार चालविला आणि त्याचे अश्व व रथ ह्यांस बाणाच्छादित करून टाकिले. राजा, पाऊस कोसळत असतां मेघांनी आच्छादित झालेला सूर्य जसा दृग्गोचर होत नाही, तसा तो धृष्टद्युम्न बाणवृष्टीने आच्छादित झाल्यामुळे दृग्गोचर झाला नाही. नंतर धृष्टद्युम्नाने उलट बाणांचा भडिमार चालू केला आणि आपल्या मुवर्णालंकृत बाणसमूहाने कृतवर्मांच्या बाणसमूहाचा भेद करून बाणप्रहारांमुळे व्रणयुक्त झालेला तो धृष्टद्युम्न रणभूमीवर आपले दिव्य तेज बाहेर टाकू लागला ! नंतर सेनापति धृष्टद्युम्नाने अतिशय संतप्त होऊन कृतवर्मांवर एकदम भयंकर बाणवृष्टि आरंभिली; परंतु कृतवर्मांनी उलट सहस्रबाधि बाणांचा भडिमार करून रणांगणांत धृष्टद्युम्नाच्या शरवृष्टीचे निवारण केले. ह्याप्रमाणे आपण केलेली बाणवृष्टि व्यर्थ झाली असे पाहून धृष्टद्युम्न कृतवर्मांच्या समीप येऊन त्याच्याशी युद्ध करू लागला आणि मोठ्या त्वेपाने त्याने एक धार दिलेला भल्ल बाण टाकून त्याचा सारथि यमसदनी पाठविला. अशा प्रकारे धृष्टद्युम्नाने कृतवर्मांस सारथिहीन केले. तेव्हां कृतवर्मा मोठा बलिष्ठ होता तरी त्यास बलवान धृष्टद्युम्नाने जिंकले; आणि मग कौरवसैन्यावर आणखी बाणवृष्टि करून धृष्टद्युम्नाने तत्काळ त्याचा निरोध करण्याचा उद्योग आरंभिला; पण तुझ्या सैन्यांतील योद्धे सिंहासारखी गर्जना करीत धृष्टद्युम्नावर चालून आले आणि मग पुनः धोर युद्धास प्रारंभ झाला !

अध्याय पंचावन्नाव.

—०:—

अश्वत्थाम्याचा पराक्रम.

संजय सांगतो:—इकडे सात्याकि व द्रोपदीचे शूर पुत्र हे युधिष्ठिराचे संरक्षण करीत आहेत असे पाहून अश्वत्थाम्याने मोठ्या उल्हासाने युधिष्ठिरावर हल्ला केला. त्याने त्या समयी सहाणेवर धार देऊन जलाल केलेल्या स्वर्णपुंख भयंकर बाणांची मोठ्या शिताफीने वृष्टि चालविली आणि आपल्या रथाने नानाविध मंडळे करीत व बाणक्षेपणाविषयी अपूर्व कौशल्य दाखवीत तो युधिष्ठिरादिकांच्या समीप प्राप्त झाला. राजा, नंतर त्या महाखवेच्या द्रोणपुत्राने दिव्यास्त्रांनी अभिमंत्रित केलेल्या बाणांनी अंतरिक्ष व्यापून टाकिले आणि युद्धभूमीवर धर्मराजाला बाणाच्छादित केले. राजा, त्या वेळी सर्वत्र अश्वत्थाम्याचे बाणच बाण होऊन गेल्यामुळे सर्व समरांगण बाणरूप बनून तेथे दुमरे कांहीएक दृष्टीस पडत नव्हते. अंतरिक्षांत जिकडे तिकडे स्वर्णपुंख बाणांचे जाळे पसरले असल्यामुळे जणू काय तेथे भरजरीचे छतच ताणले आहे, असे भासत होते ! आणि त्यामुळे अंतरिक्षाचा वरील भाग देदीप्यमान बाणांनी आच्छन्न होऊन अन्नाच्या छायेप्रमाणे भूतलावर छाया पडली होती ! राजा, त्या वेळी आह्मांला मोठा चमत्कार वाटला तो हा की, अंतरिक्षांत बाणजालकाच्या वरती जे प्राणी भ्रमण करीत होते, त्यांस त्या बाणपटलाच्या खाली येण्याला मुळीच मार्ग मिळत नव्हता ! राजा, अश्वत्थाम्याने ही जी अपूर्व शरवृष्टि करून दशदिशा व्याप्त करून टाकिल्या त्याचा परिणाम असा झाला की, सात्याकि, धर्मराज, त्याप्रमाणेच इतर योद्धे व सैनिक हे जरी विजयप्राप्त्यर्थ झटत होते, तरी त्यांच्याने कोणताही पराक्रम होईना ! द्रोणपुत्राचे

हस्तलाघव अवलोकन करून युधिष्ठिरादिक महारथांना मोठा विस्मय वाटला व मध्यान्ह-कालच्या प्रखर सूर्याकडे ज्याप्रमाणें कोणा-लाही पहावत नाही, त्याप्रमाणें त्या युधिष्ठिरादिक सर्व क्षत्रियांना अश्वत्थाम्याकडे पहा-वेनासें झालें ! राजा नंतर अश्वत्थाम्यानें पांडवसैन्याचा संहार चालविला, तेव्हां सात्यकि, युधिष्ठिर, पांचाल व द्रौपदीपुत्र हे सर्व महारथ वीर एकत्र झाले आणि त्यांनी मरणाची भीति सोडून देऊन त्या भयंकर अश्वत्थाम्यावर हल्ला केला. त्या वेळीं पहिल्यानें सात्यकीनें सत्तावीस शिलीमुख, व मागून सात स्वर्णभूषित नाराच बाण मारून अश्वत्थाम्याला विद्ध केलें. नंतर युधिष्ठिरां-च्याहात्तर, प्रतिविंश्यानें सात, श्रुतकर्मानें तीन, श्रुतकीर्तीनें सात, सुतसोमांनें नऊ व शतानि-कानें सात असे बाण मारून अश्वत्थाम्याला विद्ध केलें आणि त्याचप्रमाणें दुसऱ्याही पुष्कळ शूर वीरांनीं चोहोंकडून अश्वत्थाम्यावर बाणांचा भडिमार चालविला. राजा, तें पाहून अश्वत्थाम्याला अतिशय संताप आला व त्यानें सर्पासारखे सुसकारे टाकीत सात्यकीवर पंच-वीस, श्रुतकीर्तीवर नऊ, सुतसोमावर पांच, श्रुतकर्मावर आठ, प्रतिविंश्यावर तीन, शतानि-कावर नऊ, युधिष्ठिरावर पांच आणि त्या-प्रमाणेंच इतर पराक्रमी वीरांवर प्रत्येकी दोन दोन बाण टाकून त्यांस विद्ध केलें व श्रुत-कीर्तीचें धनुष्य जलाल बाणांनी छेदिलें ! राजा, नंतर महारथ श्रुतकीर्तीनें दुसरें धनुष्य धारण केलें आणि पहिल्यानें तीन व मागा-हून दुसरें पुष्कळ तीक्ष्ण बाण सोडून अश्व-त्थाम्याला विद्ध केलें. तेव्हां द्रोणपुत्रानें पुनः चोहोंकडे बाणांचा वर्षाव चालविला आणि पांडवांचें सर्व सैन्य बाणाच्छादित करून टाकिलें. मग अश्वत्थाम्यानें धर्मराजाचें धनुष्य छेदिलें व त्यावर हंसत हंसत तीन बाण सोडिले.

तेव्हां धर्मपुत्र युधिष्ठिरांनें दुसरें प्रचंड धनुष्य धारण करून अश्वत्थाम्याच्या भुजांवर व छातीवर सत्तर बाण टाकून त्यास विद्ध केलें. इतक्यांत युधिष्ठिरावर अश्वत्थाम्यानें बाण टा-किल्यामुळे क्षुब्ध झालेल्या सात्यकीनें तीक्ष्ण अर्धचंद्र बाणांनें अश्वत्थाम्याचें धनुष्य भंगून मोठ्यानें गर्जना केली ! तेव्हां आपलें धनुष्य तुटलें असें पाहून त्या महाशक्तिमान् अश्व-त्थाम्यानें तत्काळ शक्ति फेंकून शैनेयाच्या (सात्यकीच्या) रथावरील सारथि धारातीर्थी पाडिला ! नंतर प्रतापशाली द्रोणपुत्रानें दुसरें धनु-ष्य घेऊन शैनेयाला शराच्छादित केलें व त्यामुळे युद्धभूमीवर सारथिहीन झालेल्या त्या सात्यकी-च्या रथाचे घोडे बेफाम होऊन हवेतसे धावत सुटले ! तेव्हां युधिष्ठिराचें सैन्य त्या महाधनुर्धर अश्वत्थाम्यावर मोठ्या त्वेपांनें निशित बाणांचा वर्षाव करीत चाल करून गेलें; परंतु आपणा-वर येणाऱ्या त्या क्रोधायमान वीरांचा त्या द्रोणपुत्र अश्वत्थाम्यानें हंसत हंसत विध्वंस उडविला ; राजा, ज्याप्रमाणें अरण्यांत अग्नि भडकला असतां तो त्या अरण्यांतील तृणा-दिकांना क्षणांत भस्म करितो, त्याप्रमाणें शर-रूप ज्वालांनी चेतलेल्या त्या अश्वत्थामारूप अग्नीनें पांडवसेनारूप तृणादिकांचें भस्म करून टाकिलें ! याप्रमाणें पांडवांचें तें सैन्य अश्वत्थाम्यानें भस्म केलें असतां, ज्याप्रमाणें नदीच्या मुखाशी तिमि नामक मत्स्यानें जलाचा क्षोभ करावा, त्याप्रमाणें त्या अश्वत्थाम्यानें पांडवसैन्याचा क्षोभ करून टाकिला ! राजा, त्या समयीं द्रोण-पुत्राचा तो अद्वितीय पराक्रम अवलोकन करून सर्वांना असें वाटलें की, आतां द्रोणपुत्राच्या हस्ते सगळे पांडव मेलेच ह्यांत संशय नाही ! तेव्हां द्रोणाचा शिष्य महारथ युधिष्ठिर हा संतप्त होतसाता अश्वत्थाम्याला म्हणाला, “ बा अश्वत्थामन्, तुझ्या ठायीं ममता अथवा कृतज्ञता

अगदीच नाहीं हें कसें ? हे पुरुषव्याघ्रा, तूं आज मलाच ठार मारण्याची इच्छा करीत आहेस हें काय ? अरे, ब्राह्मणानें दान, अध्ययन व तपश्चर्या करावी; धनुष्य धारण करून दुसऱ्याचा प्राण घेणें हें क्षत्रियांचें विहित कर्म होय. ह्यासाठी तूं केवळ नांवाचा ब्राह्मण होय. हे महाबाहो, हा पहा तुझ्या समक्ष मी कौरवांना युद्धांत जिकितों, तुझ्या अर्गी जो कांही पराक्रम असेल तो तूं व्यक्त कर. तूं ब्राह्मणाधम आहेस, ह्यांत तिलमात्र संदेह नाही ! ” धृतराष्ट्रा, धर्मराजाचें भाषण श्रवण करून द्रोणपुत्र अश्रुत्थामा हंसला व युधिष्ठिर जें कांही बोलला तें सत्य आहे असा विचार करून त्यानें कांहीच उत्तर दिलें नाही. नंतर, क्रोधायमान झालेला यम ज्याप्रमाणें प्राण्यांचा संहार करण्यास उद्युक्त होतो, त्याप्रमाणें पांडवसेन्याचा संहार करण्यास उद्युक्त होऊन अश्रुत्थाम्यानें धर्मराजाला बाणाच्छादित केलें; आणि त्याबरोबर धर्मराजा तत्काळ त्या प्रचंड सेनेला सोडून देऊन युद्धविमुख होऊन रणातून निवून गेला; आणि धर्मराजा युद्धांतून निवृत्त झाला असे पाहून महात्मा द्रोणपुत्रही तेथून चालता झाला ! राजा, धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें त्या घोर रणांत धर्मराजानें अश्रुत्थाम्यापासून आपली मुटका करून घेतली; पण तो क्रूर कर्म करून तुझ्या सेन्याचा नाश करण्याकरितां पुनः तुझ्या सेन्यावर चालून आला !

अध्याय छपन्नावा.

—०:—

संकुलयुद्ध.

संजय मांगतो:—इकडे पांचाल, चेदि व केकय ह्यांमह भीमानें कर्णावर हल्ला केला असतां भवतः कर्णानें त्या सर्व वीरांवर बाणांचा वर्षाव करून त्यांचें निवारण केलें. नंतर त्यानें

भीमसेनाच्या डोक्यादेखत समरांगणांत चेदि-कारूप व संजय ह्यांच्या महारायांना बघिलें. तेव्हां महारथ कर्णाला सोडून देऊन भीमसेनानें कौरवांच्या सेनेवर हल्ला केला; आणि तृणराशीला जाळून टाकणाऱ्या अग्नीप्रमाणें तो त्या कौरव-सेनेला जाळून टाकूं लागला ! इकडे कर्णानेंही संग्रामांत सहस्त्रावधि महाधनुर्धर पांचाल, केकय व संजय ह्यांना ठार मारिलें. राजा, त्या समयीं महारथ अर्जुनानें संशप्तकांचा संहार उडविला; वृक्रेदरानें कुरुसेनेचा फडशा पाडिला आणि कर्णानें पांचाल वीरांचा विध्वंस उडविला ! त्या वेळीं ते तीन अशितुल्य भयंकर योद्धे क्षत्रियांना दग्ध करूं लागले असतां समरांगणांत अखेरीस ती तिन्ही सेन्यें नष्ट झालीं; आणि ह्या घोरसर्व अनर्थाला मूळ कारण पाहूं लागलें असतां तुझी दुष्ट सल्ला हेंच होय ! असो; नंतर दुर्योधन फारच कुद्ध झाला आणि त्यानें नऊ बाणांनीं नकुलाला व त्याच्या चारही अश्वानां विद्ध करून क्षुरबाणानें सहदेवाचा कांचनध्वज छेदिला. तेव्हां वीरशिरोमणि नकुल व सहदेव हे फारच खवळले आणि समरांगणांत तुझ्या पुत्रावर नकुलानें सात व सहदेवानें पांच बाण टाकिले. त्या समयीं दुर्योधनाला अनावर संताप आला व त्यानें तत्काळ त्या दोन्ही वीरांच्या वक्षस्थळी पांच पांच बाण मारिले आणि दुसरे दोन भल्ल बाण सोडून त्या दोघांचीही धनुष्यें छेदिली व एकाएकी त्यांजवर एकवीस बाण टाकून त्यांस विद्ध केलें ! तेव्हां समरभूमीवर ते दोघे प्रतापशाली योद्धे नकुलसहदेव इंद्र-धनुष्याप्रमाणें सुंदर व श्रेष्ठ धनुष्यें धारण करून दुर्योधनाशी लढण्यास सिद्ध झालेले पाहून जणू काय ते दुसरे देवच आहेत असें भासलें ! नंतर, राजा, पर्वतावर महामेघ जशी वृष्टि करितात, तशी घोर वृष्टि ते शूर भ्राते दुर्योधनावर करूं लागले ! तेव्हां तुझा पुत्र महारथ

दुर्योधन हा फारच क्षोभला आणि त्यानें एक-सारखा बाणवर्षाव चालू करून त्या महेष्वास पांडुपुत्रांना कुठित करून टाकिलें ! त्या समयी तुझ्या पुत्राचें बाणनिलेपणाविषयी असें कांही लोकोत्तर कौशल्य दृष्टीस पडलें की, तेव्हां त्याच्या धनुष्याचें मंडल व त्यापासून एकसारखे चोहोंकडे बाहेर पडत असलेले बाण मात्र दिसत असत ! राजा, दुर्योधनानें अशा प्रकारें बाणांचा भडिमार करून सूर्यकिरणांप्रमाणें दश दिशा व्याप्त केल्या व त्या योगें सर्व आकाश बाणाच्छादित होऊन जिकडे तिकडे अंधकार पडला ! ह्याप्रमाणें दुर्योधनाचा प्रताप अवलोकन करून माद्रीपुत्रांना तो जणू काय प्रलयकालीन यमच आहे असें वाटलें आणि आतां माद्रीपुत्र खचित मृत्यूच्या जवळ्यांत सांपडले असें सर्व महारथ्यांना वाटलें. नंतर, राजा, पांडवांचा सेनापति पार्श्व धृष्टद्युम्न हा जेथें सुयोधन राजा घोर पराक्रम करीत होता तेथें आला व त्यानें शूर नकुलसहदेवांच्या पुढें होऊन दुर्योधनावर सायकांचा भडिमार चालवून त्याला मार्गे हटविलें. राजा, तेव्हां तुझ्या अतुलप्रतापी पुत्राला फारच क्रोध आला व त्यानें सड उगविण्याचे हेतुनें मोठ्यानें हंसून प्रथम धृष्टद्युम्नावर पंचवीस बाण टाकिले आणि मग पुनः पांसष्ट बाणांचा वर्षाव करून व मोठ्यानें गर्जना करून एका जलाल क्षुरप्र शरानें समरांगणांत धृष्टद्युम्नाचें बाणासह धनुष्य व तलव्राण ही छेदिली ! राजा, त्या समयीं त्या परमप्रतापी पांचाल वीरानें तें छिन्न धनुष्य फेंकून दिलें आणि मोठ्या त्वरेनें दुसरें मोठें बळकट धनुष्य धारण केलें. तेव्हां त्याला इतका क्रोध चढला होता की, त्याचे नेत्र रुधिरासारखे आरक्त दिसू लागले व तो अगदी अग्नीसारखा पेटला ! राजा, नंतर दुर्योधनाच्या शरप्रहारांनीं विद्ध झालेल्या महेष्वास धृष्टद्युम्नानें दुर्योधनाला वधण्याच्या

इराद्यानें त्याजवर सहाणेवर धार देऊन तीक्ष्ण केलेले पंधरा नाराच बाण टाकिले, तेव्हां ते कंक-पुख आणि मयूरपुंख जलाल बाण लागलेच मोठ्या वेगानें सपांसारखे फणाणत दुर्योधनाच्या हेममय कवचाचें भेदन करून त्याच्या शरीरांत घुसले व तेथून तत्काळ बाहेर पडून मोठ्या जोरांनें भूगह्वरांत शिरले ! राजा, त्या समयीं तुझा पुत्र अतिविद्ध होऊन, वसंत ऋतूंत प्रफुल्लित झालेला मोठा थोरला पळस जसा आरक्त दिसतो, तसा आरक्त दिसू लागला ! नंतर राजा, धृष्टद्युम्नाच्या बाणप्रहारांनीं जर्जर झालेला तो कवचहीन दुर्योधन राजा अतिशय क्षोभला व त्यानें एका भल्ल बाणानें धृष्टद्युम्नाचें धनुष्य छेदून टाकिलें ! मग तुझ्या पुत्रानें पुनः त्वरा करून धनुष्यहीन झालेल्या त्या धृष्टद्युम्नाच्या भालप्रदेशी दोन्ही भिवयाच्या मध्यें दहा बाण मारिले. लोहारानें पाणी देऊन पाजविलेले ते दहा बाण धृष्टद्युम्नाच्या कपाळांत रुतले असतां जणू काय मधुप्राशनाच्या इच्छेनें प्रफुल्लित कमलावर भ्रमरच अधिष्ठित आहेत असा भास झाला. नंतर महात्म्या धृष्टद्युम्नानें तें मोडकें धनुष्य फेंकून दिलें आणि दुसरें धनुष्य व मोळा भल्ल बाण हातांत घेऊन प्रथम पांच भल्ल बाणांनीं दुर्योधनाचे अश्व व त्याचा सारथि वधिला; नंतर एक भल्ल बाण मोडून त्याचें सुवर्णमंडित धनुष्य तोडिलें आणि उरलेल्या दहा भल्ल बाणांचा वर्षाव करून सोपस्कर रथ, छत्र, शक्ति, खड्ग, गदा व ध्वज ह्यांचा विध्वंस उडविला ! राजा, ह्याप्रमाणें दुर्योधन कवचहीन, आयुधहीन व रथहीन झाला आणि त्याचा सुवर्णालंकृत, चित्रविचित्र, गजचिन्हित व मंगलदायक ध्वज तुटला असें सर्व राजांनीं अवलोकन केलें, तेव्हां कौरवसैन्यांत मोठी धांदल उडाली व तत्काळ त्याचे भ्राते त्याच्या मरंस्पर्शार्थ आले; आणि धृष्टद्युम्नाच्या ममस

मोठ्या धीटपणानें दंडधारानें दुर्योधनाला रथांत घेऊन एकीकडे नेलें.

इकडे कर्णाचें व सांत्यकीचें युद्ध चाललें होतें, त्यांत कर्णानें सात्यकीला जिंकलें व तो महाबल योद्धा तत्काळ दुर्योधन राजाला सोडविण्याकरितां द्रोणहंत्या धृष्टद्युम्नावर बाणांची वृष्टि करीत चालून आला. इतक्यांत सात्यकि पुनः युद्धभूमीकडे माघारा वळला व त्यानें बाणांचा भडिमार करीत लागलाच कर्णाचा पाठलाग केला. राजा, त्या समयी, एक दांताळ हत्ती दुसऱ्या हत्तीचा पाठलाग करीत धावत आहे की काय असें भासलें. तेव्हां, राजा, कर्ण आणि पार्षत ह्यांच्या मध्य-तरी दोन्ही सैन्यांतील महान् महान् वीरांचें भयंकर युद्ध चालू झालें. त्या वेळीं कौरवांकडील किंवा पांडवांकडील एकही योद्धा युद्ध-पराङ्मुख झाला नाही; आणि ते वीर मोठ्या नि-करानें लढू लागले! नंतर कर्णानें तत्काळ पांचालां-वर हल्ला केला; आणि मग मध्यान्हाच्या समयी दोन्ही दळांमध्ये नर, वाजी व गज ह्यांचा भयंकर संहार करणारा घोर संग्राम सुरू झाला ! तेव्हां आपणांवर कर्ण येत आहे असें पाहून, पक्षी जसे झाडावर चालून जातात, तसे सर्व विज-येच्छु पांचाल वीर त्यावर तत्काळ चालून गेले आणि ते सर्व मोठ्या नेटानें कर्णाचा पराभव करण्यास झटत असतां कर्णानें क्रुद्ध होऊन आपणावर चाल करून आलेल्या त्या सर्व पांचालांवर बाणांचा भडिमार केला. राजा, त्या समयी व्याघ्रकेतु, मुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्र, रोचमान व अजिंक्य सिंहसेन हे आठ महान् महान् पांचाल वीर आपल्या रथांतून नरश्रेष्ठ कर्णावर बाणांचा वर्षाव करीत त्याच्या नजीक आले व त्यानी त्यास चोहों-कडून वेढा दिला. तेव्हां रणांगणास शोभ-विणाग तो कर्ण अनिशय मंतापला आणि त्यानें

त्या आठांवर दुरूनच आठ तीक्ष्ण बाण सोडून त्यांस व्रस्त केले. नंतर त्या प्रतापशाली राधे-यानें युद्धकळेंत पटाईत अशा हजारों योद्ध्यांना त्या रणभूमीवर ठार मारिलें. त्या समयी क्रोधायमान झालेल्या कर्णानें जिष्णु, जिष्णुकर्मा, देवापि, भद्र, दंड, चित्र, चित्रायुध, हरि, सिंह-केतु, रोचमान, महारथ शलभ आणि दुसरे पुष्कळ चेदि महारथ ह्यांना वधिलें. राजा, कर्णानें जेव्हां ह्या महारथांचा प्राण घेतला तेव्हां त्याच्या देहावर रक्ताच्या चिळकांड्या उडून रुद्राच्या देहाप्रमाणें त्याचा देह भयंकर व भव्य दिसू लागला. त्या समयी कर्णानें शत्रुसैन्यांतील मातंगांवर बाणांचा असा भडि-मार केला कीं, त्यांच्या योगें ते भयभीत होऊन चोहोंकडे पळत सुटले व त्यामुळे रणा-गणांत जिकडे तिकडे सर्व वीर घाबरून गेले. अग्वरीस त्या मातंगांना रणांगणांत पाठलाग करणाऱ्या कर्णाचे ते बाण सहन होईनातसे झाले आणि ते युद्धभूमीवर आपले देह धाडकन टाकून नानाप्रकारचा आर्त स्वर करीत वज्र-प्रहारानें भिन्न झालेल्या पर्वतांप्रमाणें एकदम पडूं लागले ! तेव्हां कर्णाच्या मार्गांत जिकडे तिकडे रथ, गज, अश्व व नर ह्यांचा खच पडून सर्व भूतल झांकून गेलें ! त्या वेळीं त्या घोर समरांत कर्णानें जें भयंकर कर्म केलें, तशा प्रकारचें भयंकर कर्म समरभूमीवर भीष्म, द्रोण किंवा दुसरे कोणतेही तुझ्या पक्षाचे वीर ह्यांच्या हातून घडलें नाही ! त्या युद्धांत कर्णानें हत्तीचा, घोड्यांचा, रथांचा व नरांचा फारच भयंकर संहार केला ! ज्याप्रमाणें भृगां-मध्ये सिंह निर्भयपणें मंचार करितो. त्या-प्रमाणें पांचालांमध्ये कर्ण हा निर्भयपणें मंचार करीत होता; आणि ज्याप्रमाणें भयभीत झालेल्या भृगांना सिंह हा चोहोंकडे पळवून लावितो, त्याप्रमाणें पांचालांच्या रथमनुश्यांना कर्णानें

चोहोंकडे उधळून लाविलें ! मिहाच्या जव-
ज्यांत सांपडल्यावर मृग जसे कधीही जिवंत
रहात नाहीत, तसा कर्णाच्या तडाक्यांत
सांपडल्यावर कोणताही महारथ जिवंत राहिला
नाहीं ! आणि अशीत पडलेले प्राणी जसे
जळून खाक होतात, तसे कर्णरूप दावाशीत
पडलेले सृजय जळून खाक झाले ! राजा, त्या
युद्धांत कर्णानें जो पराक्रम केला त्याचें काय
वर्णन करावें ! त्यानें चेदि, कैकेय व पांचाल
ह्यांच्या शूरमान्य अशा बहुत वीरांना ' मी
कर्ण आहे ' असें सांगून जेव्हां वधिलें, तेव्हां
त्याचा तो- लोकोत्तर पराक्रम पाहून माझ्या
मनाला तर असें वाटलें की, आतां एकही
पांचाल्याला हा कर्ण युद्धांत जिवंत ठेवीत
नाहीं ! धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें मृतपुत्रांनो पुनः
पुनः युद्धांत पांचालांचा संहार उडविला, तेव्हां
धर्मराज युधिष्ठिरास अतिशय संताप येऊन
त्यानें एकदम कर्णावर हल्ला केला आणि मग
धृष्टद्युम्न, द्रौपदीपुत्र व दुसरे पुष्कळ शतावधि
वीर ह्यांनीं कर्णाच्या रथाला वेढा घालून त्यास
कोंडून टाकिलें ! त्या समयी शिखंडी, महदेव,
नकुल, नाकुलि, जनमेजय, शैनेय, पुष्कळ
प्रभद्रक वीर आणि सेनापति धृष्टद्युम्न ह्या प्रचळ
वीरांनीं रणांगणांत कर्णावर बाणवृष्टि चाल-
विली व तें पाहून उलट कर्णही त्यांजवर
अन्धांचा वर्षाव करू लागला. त्या समयी राजा,
गरुड जसा पन्नागांवर उड्या घालितो तसा तो
एकटा कर्ण त्या बहुत चेदिपांचालपांडववीरां-
वर उड्या घालू लागला आणि मग त्यांचें देव-
दानवांच्या युद्धाप्रमाणें घोर युद्ध जेपलें ! त्या
युद्धांत ते सर्व महान् धनुर्धर एकत्र होऊन कर्णा-
वर बाणांचा प्रचंड भडिमार करीत अमतां,
कर्णानें एकट्यानें त्यांजवर उलट बाणवर्षाव
केला; आणि दिवाकर ज्याप्रमाणें एकटा अंधः-
काराचा विश्वंम उडवितो त्याप्रमाणें त्यानें

एकट्यानें त्या प्रचंड शत्रुसैन्याचा विश्वंम उड-
विला ! राजा, ह्याप्रमाणें कर्ण हा पांडवांशीं
लढत असतां भीमसेनानें कोधायमान होऊन
कुरुसैन्यावर सर्व दिशांस यमाच्या दंडाप्रमाणें
तीक्ष्ण शरांचा वर्षाव चालू केला. त्या समयी
तो महाधनुर्धर भीमसेन एकटा समरांगणांत
वाहीकांवर, केकयांवर, मत्स्यांवर, वासात्यांवर,
मद्रांवर व सैधवांवर शरवृष्टि करू लागला,
तेव्हां तो अत्यंत शोभला. त्या युद्धांत भीमानें
गजांवर त्यांच्या मर्मस्थानीं अशी बाणवृष्टि
केली कीं. तिच्या योगें ते गज अधिकूढ
असेलेल्या वीरांमुद्धां हत होऊन भराभर रणां-
गणांत पडूं लागले आणि त्यामुळें सर्व पृथ्वी
कंपित झाली ! त्या वेळी हत्तीप्रमाणेंच इतर
सैन्याचीही दुर्दशा उडाली. रणांगणांत घोडे
व त्यांवरील स्वार आणि पायदळ ही बाणहत
होऊन रक्त ओकून मरून पडली. त्याप्रमाणेंच
भीमानें हजारों रथ्यांना बाणांच्या भडि-
मारानें आयुधहीन करून समरभूमीवर पाडिलें,
तेव्हां जखमी झालेल्या त्या सर्व योद्ध्यांनीं
भीमाच्या भयानें प्राण सोडिले ! राजा, त्या
समयी रणांगणांत रथी, सारथि, घोडेस्वार,
पदाति, घोडे व हत्ती ह्या सर्वांवर भीम-
सेनाच्या बाणांचा वर्षाव होऊन त्यांचा संहार
झाला, तेव्हां सर्व वसुधा त्यांनीं आच्छादिली
गेली ! त्या घोर रणांत दुर्योधनाचें सर्व सैन्य
भीमाच्या भयानें थिजून गेलें व त्या जखमी
झालेल्या सैन्याच्या ठायी उत्साह किंवा हाल-
चाल कांहींएक न उरतां त्याची अगदीं दीन
अवस्था झाली ! राजा, शरद्वृत्तंम्ये समुद्र
जसा अगदीं निश्चल अमतो, तसें तुजें तें
सैन्य अगदीं निश्चल झालें ! जरी तुझ्या
सैन्याच्या ठिकाणी क्रोध, पराक्रम व शक्ति
ही परिपूर्ण होती, तरी त्याचा दर्प भीमसेना-
च्या हस्तेन नष्ट आल्यामुळें तें सैन्य अगदीं

निस्तेज व फिकें पडलें ! ह्याप्रमाणें संग्राम माजून दोन्ही सैन्ये परस्परास वधीत असतां शरीरावर जिकडे तिकडे रुधिरच रुधिर होऊन त्यांनीं जणू काय रुधिरांत स्नानच केलें आहे असा भास झाला ! अशा प्रकारें दोन्ही दळांत संहार चालू असतां रणांगणांत कुद्ध होऊन कर्णानें पांडवसेनेवर व भीमानें कौरवसेनेवर चाल केली; आणि ते दोघेही योद्धे शत्रुसैन्यास पिटाळून लावीत असतां फारच शोभले.

राजा, इकडे अर्जुनाचा आणि संशप्तकांचा भयंकर व अद्भुत संग्राम चालू असतां वीर-शिरोमणि अर्जुनानें संशप्तकांच्या पुष्कळ टोळ्यांना ठार मारिल्यानंतर वामदेवाला म्हटलें, “हे जनार्दना, मी ज्याच्याशी युद्ध करीत आहे तें हें संशप्तकसैन्य नाश पावलें आहे. हे पहा संशप्तकांचे महारथ आपआपले सैन्यसमुदाय बरोबर घेऊन पळत आहेत; मृगांना जसा सिंहाचा शब्द सहन होत नाही, तसे ह्यांना माझे बाण सहन होत नाहीत ! कृष्णा, ह्या महारथामध्ये संजयांच्या अवाढव्य सेनेची दाणादाण झालेली दिसते; कारण बुद्धिमान कर्णाचा हा गजकक्षांकित ध्वज धर्मराजाच्या सैन्यामध्ये आनंदांन फडकतांना दिसत आहे ! कृष्णा, दुमरे महारथ युद्धांत कर्णाच्या जिकण्यास समर्थ नाहीत; कर्णाच्या अंगीं कसें काय बल व पराक्रम आहे हें तूं जाणतच आहेस; ह्यान्तव ह्या संशप्तकांना सोडून देऊन ज्या स्थलीं कर्णानें आपल्या सैन्याची दाणादाण उडविली आहे तिकडे जावें हें मला उचित दिसतें. ह्यासाठीं जें तुला योग्य दिसेल तें तूं कर.”

धृतराष्ट्रा, अर्जुनाचें तें भाषण श्रवण करून गोविंदांन हंसून म्हटलें, “वा अर्जुना, तूं कौरवांचा लवकर वध कर.” राजा, नंतर गोविंदांन अर्जुनाच्या रथाला लाविलेल्या हंसवर्ण हयांना इशारा करितांच ते कृष्णार्जुनांस घेऊन तुझ्या

महान् सैन्यांत घुसले आणि केशवानें प्रेरिलेले ते सुवर्णालंकृत श्वेत अश्व आंत प्रविष्ट झाल्या-बरोबर तुझ्या सैन्याची दाणादाण होऊन तें चारही दिशांस पळें लागलें ! राजा, ज्या रथाचा मेघवर्जनेप्रमाणें घणघणाट चालला होता आणि ज्याच्या ध्वजावर मारुति अघिष्ठित होता, असा तो अर्जुनाचा रथ, वरील ध्वजपताका फडकत फडकत विमान जसें अंतरिक्षांत शिरतें, तसा त्या कौरवसेनेंत शिरला. राजा, ते केशवार्जुन तुझ्या त्या महान् सैन्याची फळी फोडून आंत घुसले व क्रोधानें अगदी आरक्त नेत्र करून इतस्ततः पाहूं लागले, तेव्हां त्यांच्या ठिकाणीं अत्यंत तेज दृग्गोचर झालें ! राजा, कर्णानें म्हणजे कर्णाच्या ध्वजानें आह्वान केल्यामुळें त्या स्थळी प्राप्त झालेले ते युद्धविशारद कृष्णार्जुन जणू काय रणरूप यज्ञांत ऋत्विजांनीं यथाविधि हवन केल्यामुळें प्रकट झालेले अधिनीकुमारच होत असें वाटलें ! ते नरशार्दूल कौरवसैन्यावर आधींच संतापलेले होते, आणि ते जेव्हां मग प्रत्यक्ष कर्णाच्या सैन्यांत शिरले, तेव्हां तर महान् अरण्यांत पारव्यांनीं आरडाओरड करून चवताळून टाकिलेल्या हत्तीप्रमाणें अधिकच संतापले ! अमो, धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुन हा रथसमुदाय व अश्वसेना ह्यांचें मंथन करून सैन्यामध्ये कालपाश धारण करणाऱ्या यमाप्रमाणें संचार करू लागला ! ह्याप्रमाणें समरागणांत अर्जुनानें तुझ्या सेनेवर दगारा व्रमविला, तेव्हां तुझ्या पुत्रानें पुनः अर्जुनावर हल्ला करण्याविषयी संशप्तकांना आज्ञा केली.

नंतर एक हजार रथ, तीनशें हत्ती, चौदा हजार घोडेस्वार आणि धनुष्य धारण करून नेमकेच बाण मार्णारें युद्धविशारद व शूर असं दोन लक्ष पायदळ ह्यांसहवर्तमान संशप्तकांचे महारथ वीर चौहोकडून अर्जुनावर धावून

आले व त्यांनी एकसारखा बाणांचा भडिमार करून त्यास झांकून टाकिले. तेव्हां अर्जुनाने उलट संशप्तकांवर शरवृष्टि चालवून त्यांचा असा नाश केला की, जण काय तो पाशपाणि यमच घोरा संहार करीत आहे असे दिसले आणि त्यामुळे अर्जुनाचे तेज अधिकच वाढले ! राजा, नंतर अर्जुनाने विद्युल्लतेप्रमाणे देदीप्यमान व सुवर्णाच्या अलंकारांनी मुशोभित अशा बाणांची एकसारखी वृष्टि करून सर्व आकाश अगदी खचून भरून काढिले, तेव्हा सर्वत्र सर्पांचेच आवरण पडले आहे, असे भासले ! राजा, त्या समयी तो महाशक्तिमान् कुंतीपुत्र सुवर्णाच्या पुंगवांचे व जलाल अग्रांचे बांकदार बाण दाही दिशांस सोडून सर्व अंतरिक्ष बाणाच्छन्न करीत अमतां टण्टकारांच्या शब्दांनी पृथ्वी, आकाश, समुद्र, पर्वत व दशदिशा तडातड फुटतच आहेत असा भाम होत होता ! राजा, महारथ अर्जुनाने ह्याप्रमाणे बाणांचा भडिमार करून संशप्तकांच्या सैन्यांतील दहा हजार राजे मारिले व मग तो लागलाच व्यूहाच्या प्रपक्षाप्रत आला. राजा, त्या वेळी त्या प्रपक्षाचे संरक्षण कांबोजराज सुदक्षिण हा करीत होता. तेव्हां अर्जुनाने त्या प्रपक्षावर मोठ्या त्वेषाने भल्लवर्षाव करून आपल्यावर धावून येणाऱ्या शत्रुसैन्याची आयुधे, हात, बाहु, मस्तक वगैरे तोडून टाकिली आणि इंद्राने जसा दानवांचा संहार उडविला, तसा त्यांचा घोर संहार उडविला ! राजा, त्या वेळी हातपाय इत्यादि अवयव छिन्न झालेले व हातांतील आयुधे गळून गेलेले ते संशप्तक वीर, मोसाट्याच्या वाऱ्याने खांच्या तुटून भस्म झालेल्या वृक्षाप्रमाणे रणांगणांत कोसळून पडले ! राजा, ह्या प्रकारे संशप्तकांच्या रथ, गज, वाजी व नर ह्यांच्या समुदायांचा अर्जुनाने भयंकर संहार केला, तेव्हां सुदक्षिणाचा धाकटा भाऊ अर्जुनावर बाणवर्षाव करीत चालून आला; पण अर्जुनाने त्याजवर

दोन अर्धचंद्रबाण सोडून त्याचे परिघतुल्य बाहु कापून काढिले व एक क्षुर बाण सोडून त्याचे पूर्णचंद्राप्रमाणे दीप्तिमान असे शिर छेदिले ! त्या समयी त्या कांबोज वीरांच्या देहांतून रक्ताचे पाट वाहू लागले व मनशिळाचा पर्वत वज्राने भस्म झाला अमतां त्याचे शिखर जसे ग्वाली कोमळते, तसा तो आपल्या अधावरून एकदम खाली कोसळला ! ह्याप्रमाणे तो सुंदर, धिप्पाड, कमलनेत्र व कांचनस्तंभाप्रमाणे देदीप्यमान असा कांबोज योद्धा हत होऊन छिन्नभिन्न झालेल्या हेमगिरीसारखा रणांगणांत पतन पावला असे जेव्हां दिसले, तेव्हां पुनः घोर व अत्यंत आश्चर्यकारक तुंबळ संग्राम सुरू झाला ! राजा, त्या समयी लढणाऱ्या वीरांची बहुविध अवस्था झाली. प्रत्येकाच्या अंगांत बाण घुसून कांबोज, यवन व शक हे योद्धे आपआपल्या अर्धासहवर्तमान हत होऊन रणांत पडले, तेव्हां जिकडे तिकडे सर्व रक्तमय होऊन लाल झाले ! रथांचे अश्व व सारथि हे मेले, घोड्यांवरील स्वार पडले, हत्तीवरचे वीर भस्म झाले आणि हत्ती मेल्यामुळे त्यांवरील वीर हताश झाले. अशा प्रकारे त्या घोर संग्रामांत दोन्ही दळे झुजत असतां फारच भयंकर जनसंहार घडला ! अशा रीतीने कौरवसैन्याच्या पक्षप्रपक्षाचा अर्जुनाने वध केला, तेव्हां त्या बलिष्ठ धनुर्धरावर तत्काळ अश्वत्थाम्याने हल्ला केला.

राजा, त्या समयी अश्वत्थाम्याने आपले ते सुवर्णमंडित प्रचंड धनुष्य व सूर्यकिरणांप्रमाणे देदीप्यमान असे ते भयंकर बाण धारण करून संतापाने व सूड उगविण्याच्या इच्छेने आपसरून डोळे लाल केले, तेव्हां जणू काय प्रलयकालीं किंकर नामक दंड धारण करून क्रुद्ध झालेला मूर्तिमंत यमच पुढे उभा आहे, असे सर्वांस भासले ! नंतर त्या लोकोत्तर योद्ध्याच्या धनुष्यापासून बाणांचे ओघ पांडव सैन्यावर येऊ लागले व

ते त्यास सहन न होऊन त्याची मोठी दाणा-
दाण झाली ! राजा. नंतर अश्वत्थाम्याने
दाशाह कृष्णाला रथांत अवलोकन करितांच
पुनः तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार चालविला आणि
रथामध्ये अधिष्ठित झालेल्या कृष्णार्जुनांस चोहों-
कडून बाणाच्छादित करून टाकिले ! मग
अश्वत्थाम्याने जलाल बाणांचा आणखी वर्षाव
करून त्या उभयतां कृष्णार्जुनांस अगदी
निश्चेष्ट केले आणि ते दोघे स्थावरजंगम
विधाचे प्रतिपालक महापुरुष बाणाच्छन्न झाले
असे पाहून जिकडे तिकडे मोठा हाहाकार
उडाला ! त्या समयी तत्काळ सिद्धचारणांचे
संघ त्या स्थळीं समोवतीं मिळाले आणि
‘लोकांचें कल्याण होवो !’ असे त्यांनीं ध्यान
चालविले ! राजा, अश्वत्थाम्याने कृष्णार्जुनांना
शरवर्षावाने आंकून काढिले तेव्हां त्याचा जसा
पराक्रम मी पाहिला, तसा पराक्रम मी पूर्वी
कधीही पाहिला नव्हता ! राजा, तेव्हां अश्व-
त्थाम्याने पुनः पुनः केवळ टणत्कार केला
म्हणजे शत्रूंची मोठी त्रेधा उडून जाई व त्यांस
तो सिंहवच भासे ! समरांगणांत अश्वत्थामा
मव्यापसव्य बाणवर्षाव करीत असतां त्याच्या
प्रत्यंचेची जी हालचाल होत असे, ती पाहिली
म्हणजे केवळ भेषमंडलावर विद्युलताच नृत्य
करीत आहे असे दिसे. राजा, अर्जुन हा
तशा प्रकारचा त्वरित शरवृष्टि करणारा व
मुददहस्त वीर असतांही त्या समयी द्रोणपुत्राला
अग्रभागीं अवलोकन करून त्याचे भान नष्ट
झाले व त्यास आपण अगदीं निर्बल आहों
असे वाटले. आणि त्या रणांत अश्वत्थाम्याचा
तो उग्र पराक्रम पाहून त्याजकडे कोणालाही
पाहविनासे झाले. ह्याप्रमाणे अश्वत्थामा व
अर्जुन ह्यांचा घोर संग्राम होत असतां क्षणो-
क्षणी द्रोणपुत्राचा प्रताप वाढत चाललेला व पार्थ
प्रतापहीन झालेला पाहून कृष्णाला मोठा क्रोध

आला व तो संतापाचे सुसकारे टाकीत जणू
काय नेत्रांनीं दशदिशा जाळीत युद्धामध्ये
वारंवार अश्वत्थाम्याकडे व अर्जुनाकडे पाहू
लागला ! तेव्हां संतप्त झालेला कृष्ण अर्जुनाला
ममतेने म्हणाला, “पार्था, मला हा आज
मोठा चमत्कार वाटतो की, आजच्या ह्या
संग्रामांत द्रोणपुत्राने तुझ्यावर सरशी केली !
बा अर्जुना, तुझे बाहुबल व युद्धसामर्थ्य पूर्व-
वत् आहेना ? तूं गांडीव धारण करून रथांत
अधिष्ठित आहेसना ? तूं युद्धनिपुण आहेस
खरा, परंतु तुझे भुजक्रिया मुष्टि ही भग्न झाली
नाहीतना ? बा अर्जुना, ह्या युद्धांत अश्वत्था-
म्याचें वीर्य वाढत चाललेलें मी पाहतो; तेव्हां
तूं ‘तो गुरुपुत्र आहे’ असा विचार तर केला
नाहीसना ? अर्जुना, अश्वत्थामा हा गुरुपुत्र
असला तरी तूं त्याची उपेक्षा करूं नको;
हा काल उपेक्षा करण्याचा नाही !” धृतराष्ट्रा,
ह्याप्रमाणे कृष्णाचें भाषण श्रवण करितांच अर्जु-
नाने चौदा भल्ल बाण उचलिले व जलदी करून
त्याने अश्वत्थाम्याचें धनुष्य तोडिले आणि
रथ, ध्वज, छत्र, पताका, शक्ति व गदा ह्या
सर्वांचा विस्वस उडविला ! नंतर त्याने अगदीं
विलंब न करितां अश्वत्थाम्याच्या खवाट्यांत
वत्सदंत बाणांचा भडिमार केला, त्याबरोबर
तो मूर्च्छित पडून ध्वजघटीवर सांवरून राहिला !
राजा, ह्याप्रमाणे अर्जुनाने अश्वत्थाम्याची विपन्न
अवस्था केली, तेव्हां त्याच्या सारथ्याने तो
बेशुद्ध पडला असे पाहून त्याचें अर्जुनापासून
संरक्षण करण्याकरितां त्यास रणांगणांतून एकी-
कडे नेले ! नंतर शत्रुसंहारक अर्जुनाने दुर्यो-
धनाच्या देखत तुझ्या सैन्यातील शतावधि व
सहस्रावधि वीर वधिले ! राजा, अशा प्रकारचा
हा घोर संहार उभय दळांमध्ये झाला व
ह्या सर्व अनर्थांचें कारण तुझी दुष्ट सल्ला हेच
होय ! राजा, कुंतीपुत्राने संशप्तकांना, वृको-

दरानें कुरूंना आणि कर्णानें पांचालांना रणांगणात हां हां झणतां ठार मारून जिकडे तिकडे मोठा हाहाकार उडवून दिला ! अशा प्रकारें महान् महान् वीर रणांत पतन पावल्यानंतर चोहोंकडे अगणित कबड्यें उडून उभी राहिलीं ! राजा, मध्यंतरी संग्रामांत युधिष्ठिरावर भयंकर प्रहार झाल्यामुळें त्यास अतिशय वेदना प्राप्त होऊन तो एक कोसभर रण सोडून एकीकडे गेला व तेथें त्यानें विमावा घेतला !

अध्याय सत्तावन्नावा.

—:०:—

अश्वत्थाम्याची प्रतिज्ञा.

संजय सांगतो:— हे भरतश्रेष्ठा, नंतर दुर्योधन कर्णाजवळ जाऊन त्याला व मद्राधिप शल्याला व त्याप्रमाणेंच दुसऱ्या राजांना झणाला, “ हे वीरहो, हें स्वर्गद्वार आपल्याला आपण होऊन अनायासें मोकळें मिळालें आहे ! कर्णा, जे भाग्यवान् क्षत्रिय असतात त्यांना मात अशा प्रकारचें युद्ध करावयाची संधि प्राप्त होते ! शूर योद्ध्यांना जर त्यांच्या बरोबरीचे दुसरे शूर योद्धे लढण्यास मिळाले, तर तें त्यांना इष्टच असतें; ह्यासाठीं तशा प्रकारची ही संधि आपणांस प्राप्त झाली आहे, हें तुम्ही लक्षांत ठेवा. ह्या समयी समरांगणांत जर तुम्ही पांडवांना ठार माराल, तर सर्वोपभोगांनी समृद्ध अशी ही पृथ्वी तुम्हांस प्राप्त होईल; आणि जर तुम्ही शत्रूंच्या हस्ते धरातीर्थी पतन पावाल, तर तुम्हांस वीरलोक मिळेल ! ” राजा, दुर्योधनाचें हें भाषण श्रवण करून क्षत्रियश्रेष्ठांना मोठा आनंद झाला व त्यांनी वीरश्रीच्या गर्जना करण्यास प्रारंभ केला. इतक्यांत चोहोंकडे रणवायेंही वाजूं लागली आणि दुर्योधनाच्या सैन्याला मोठें स्फुरण चढलें. त्या समयी अश्वत्थाम्यानें तुझ्या वीरांना

अतिशय आनंद होईल असें भाषण केलें. तो झणाला, “ वीरहो, सर्व सैन्याच्या समक्ष आणि तुम्ही सर्व योद्धे पहात असतां धृष्टद्युम्नानें माझ्या पित्यानें शस्त्रन्यास केला असतां त्यास वधिलें ! तेव्हां त्याच्या त्या दुष्ट कृत्याचा सूड घेण्यासाठी व मित्र दुर्योधन ह्याचे मनोरथ सिद्धीस नेण्यासाठी मी जी खरोखरी प्रतिज्ञा करीत आहे, ती श्रवण करा. भूपालहो, धृष्टद्युम्नाला ठार मारिल्याशिवाय मी आपल्या अंगांतलें हें चिखत काढणार नाही ! आणि माझी प्रतिज्ञा खोटी झाल्यास माझा स्वर्गलोक अंतरेल ! अर्जुन, भीमसेन किंवा दुसरा जो कोणी योद्धा रणांत धृष्टद्युम्नाचें रक्षण करील, त्याला मी समरांगणांत बाणांनी वधीन ! ”

धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थामा बोलल्यानंतर सर्व भारती सैन्य युद्धासाठी धावून गेलें ! त्या समयी कौरवांनी पांडवांवर व पांडवांनी कौरवांवर हल्ला केला. तेव्हां महारथांचें फारच भयंकर व मोठ्या निकराचें युद्ध जुंपलें ! पुढें कुरुमंजयांमध्ये घोर संग्राम सुरू होऊन जसा काय प्रलयकालचा जनक्षयच चालू आहे असें दिसें लागलें ! राजा, त्या वेळी समरभूमीवर घोर संग्राम सुरू होऊन परस्पराना संहार होऊं लागला असतां त्या महान् नरवीरांना पाहण्यासाठी देव व अप्सरा यांसह सर्व भूतें एकत्र जमली. राजा, त्या वेळी रणांगणांत त्या शूर वीरांनी आपआपली कर्मे उत्तम प्रकारें पार पाडून जो प्रताप गाजविला, तो अवलोकन करून अप्सरांना फार आनंद झाला. त्यांनी त्या लोकोत्तर वीरांवर दिव्य माला, विविध व दिव्य मुग्ध आणि दिव्य नानाविध रत्नें ह्याची वृष्टि केली आणि मभीरणानें तो मुग्ध एकृण एक वीरश्रेष्ठांना पावता केला; व अशा प्रकारें वायूच्या सेवेनें अधिक उत्तेजित झालेले ते सर्व योद्धे परस्पराना वधीत असतां अखे-

रीस आपण स्वतः धरणीवर पडले! राजा, त्या वनघोर समरांत महान् महान् वीर, दिव्य माला व चित्रविचित्र सुवर्णपुंख बाण ह्यांनी सर्व क्षितितल आच्छादित झाल्यामुळे तें नक्षत्र-समूहानें चित्रविचित्र झालेलें नभोमंडलच होय असें भासूं लागलें! राजा, त्या समयी अंत-रिक्षांत 'शाबास! शाबाम' असे शब्द उठले, जिकडे तिकडे रणवाघें वाजूं लागलीं, त्यांत आणखी प्रत्यंचेचे व रथांच्या धावांचे विविध स्वन मिसळले, आणि शिवाय त्यांत वीरांच्या सिंहानादांची भर पडतच होती; ह्यास्तव रणांगणांतील त्या महान् कोलाहलानें अतिशय भीति उत्पन्न केली!

अध्याय अट्ठावन्नावा.

—:०:—

कृष्णकृत समरभूवर्णन.

संजय सांगतो:— राजा, अर्जुन, भीमसेन व कर्ण हे संतप्त होऊन युद्ध करीत असतां वीरपुरुषांमध्ये हा असा महान् संग्राम झाला! द्रोणपुत्राचा पराजय केल्यावर व दुसऱ्या महारथांना जिक्रिल्यावर अर्जुन कृष्णाला म्हणाला, "हे महाबाहो कृष्णा, पांडवांचें मेन्य कसे पळून जात आहे तें पहा. हा कर्ण समरांगणांत महारथांचा कसा संहार करीत आहे, तें अवलोकन कर. हे दाशार्हा, मला धर्मराज युधिष्ठिर कोठें दिसत नाही व त्याचा वज्रही मला आढळत नाही. जनार्दना, आतां दिवसाचा हा तिसरा भाग मात्र अवशिष्ट राहिला आहे. येथें धार्तराष्ट्रांपैकी कोणीही माझ्याशी समरभूमीवर लढत नाही; म्हणून तूं माझ्या बऱ्याकरितां जेथें युधिष्ठिर असेल तिकडे चल. हे वाष्पेया, युधिष्ठिर व भीमसेन हे खुशाल आहेत असें पाहून नंतर मी शत्रूंशीं रण करीन." राजा धृतराष्ट्रा, मग बीभत्सूच्या इच्छेप्रमाणें कृष्णानें तत्काळ तो

रथ चालू केला; आणि जेथें युधिष्ठिर व महारथ संजय हे तुझ्या सैन्याशीं मारूं किंवा मरूं हा दृढ संकल्प करून लढत होते तेथें ते कृष्णाजुन प्राप्त झाले. तेव्हां त्या ठिकाणीं जनक्षय चालला असतां ती संग्रामभूमां अवलोकन करून कृष्ण अर्जुनाला म्हणाला, "अर्जुना, पृथ्वीवर दुर्योधनाकरितां क्षत्रियांचा जो हा भयंकर क्षय चालला आहे, तो पहा. अर्जुना, धारातीर्थी पतन पावलेल्या योद्ध्यांच्या हातांतून गळून पडलेलीं हीं सुवर्णपृष्ठ धनुष्ये व महामूल्यवान् बाणभाते अवलोकन कर; त्याचप्रमाणें हे बाकदार पेन्यांचे सुवर्णपुंख बाण व धार देऊन तेलपाणी केल्यामुळे कात टाकलेल्या भुजंगमांप्रमाणें दिसणारे हे नाराच शर पहा; तशीच ही हस्तिदंती मुठीची व सोन्याचें कोंदणकाम केलेलीं खड्गे आणि आंतून सुवर्णमय अशीं चर्म वीरांच्या हातांतून गळून पडली आहेत ती अवलोकन कर; तसेच हे सुवर्णाच्या पट्ट्या बसविलेले प्राम, हेमालंकृत शक्ति, जांबूनदाच्या पत्र्यांनीं मदविलेल्या प्रचंड गदा, सुवर्णमय ऋष्टि, हेमभूषित पट्टे, रत्नरचित हिरण्मय दंडांनीं युक्त अशा कुऱ्हाडी, पोलादी भाले, मोठमोठालीं मुसळें, चित्रविचित्र शतघ्नी शक्ति, प्रचंड परिघ, चक्रे, तोमरें आणि दुसरी नानाविध आयुधे वीरांच्या हातांतून समरभूमीवर पडली आहेत ती पहा! अर्जुना, हे सर्व विजयेच्छु पराक्रमी योद्धे ह्या महारणांत जरी मरून पडले आहेत, तरी ह्यांच्यासमवेत ह्यांची शस्त्रास्त्रे विद्यमान असल्यामुळे मला हे जिवंतच भासतात! अर्जुना, त्याप्रमाणेच गदांच्या प्रहारांनीं गात्रें चूर्ण झालेले, मुसळांनीं डोकें फुटलेले आणि हत्ती, घोडे व रथ ह्यांनीं तुडविलेले सहस्रावधि वीर मरून पडले आहेत ते अवलोकन कर. त्याप्रमाणेंच, हे पार्था, शर, शक्ति, ऋष्टि, पट्टे, परिघ, पोला-

दाचे भयंकर भाले व कुऱ्हाडी ह्यांच्या प्रहारांनी छिन्नभिन्न होऊन मृत झालेल्या व रुधिराच्या चिळाकाड्या उडणाऱ्या हय, गज व नर ह्यांच्या शरीरांनी ही रणभूमी कशी झाकून गेली आहे पहा ! तसेच येथे चंदनाची उटी दिलेले, अंगदे धारण केलेले, हेमालंकारांनी भूषविलेले, तलत्राणांनी युक्त व केयूरांनी मंडित असे भुज इतस्ततः पडले असल्यामुळे पृथ्वी कशी दिसत आहे ती अवलोकन कर. त्याप्रमाणेच ह्या रणांगणांत अंगुलित्राणांनी युक्त असे महान् महान् योद्ध्यांचे अलंकारिलेले हात, हत्तीच्या शुंडेप्रमाणे पुष्ट व बळकट अशा मांड्या, कुंडलांनी व उत्तम चूडा-मणींनी शृंगारलेली मस्तके ह्यांचा अगदी खच पडल्यामुळे ह्या वसुंधरेला कांही विलक्षणच शोभा प्राप्त झाली आहे ! त्याप्रमाणेच ह्या समरभूमीवर हात, हाय व माना तुटून जाऊन नुसती जीं वीरांची रक्तांने माखलेली धडे पडली आहेत, त्यावर दृष्टि दिली झणजेही रणभूमी खर्चात ज्वालारहित अशा शांत अग्निनी युक्त असलेले केवळ यज्ञकुंडच होय असा भास होतो ! अर्जुना, ह्या स्थळी सुवर्णा-
घंटा लाविलेले अनेक सुंदर भद्र रथ व बाण-प्रहारांनी आंतडी लोंबून मरून पडलेले घोडे अवलोकन कर. त्याप्रमाणेच, अर्जुना, हे रथांचे कणे, बाणांचे भाते, पताका, नानाविध ध्वज, रथ्यांचे मोठमोठे श्वेत शंख, चामरें, जिभा काढून पडलेले हे पर्वततुल्य हत्ती, त्यांजवरील चित्रविचित्र निशाणें, तसेच हे हत झालेले हयगज, हत्तीचे हांदे व अंबाऱ्या, चर्म व शाली, हत्तीच्या अंगांवरील फाटून तुटून गेलेली भरजरीची मनोहर वस्त्रे व झुली, मोठमोठाले हत्ती खाली पडल्यामुळे फुटून गेलेल्या अनेक घंटा, भूमीवर पडलेले हे वैदर्भदंड, सुंदर अंकुश, घोडेस्वारांच्या हातांत

असलेले सुवर्णमय चाबूक, घोड्यांचीं सुवर्ण-लंकृत व रत्नखचित खोर्गिरें, भूपतींच्या मस्तकांवरील रत्ने, मनोहर कांचनमाला, छत्रे, चामरें व पंखे हे येथे गळून पडले आहेत पहा. त्याप्रमाणेच, अर्जुना, रुधिराचा कर्दम मातलेल्या ह्या धरणीवर जिकडे तिकडे चंद्र व नक्षत्रे ह्यांप्रमाणे कांतिमान, मनोहर कुंडलांनी विराजित व झोंकदार केशकलापांनी सुंदर शोभणारी हीं वीरांचीं मुखकमले विकीर्ण झाली आहेत ती अवलोकन कर. अर्जुना, तसेच हे जखमी होऊन रडत आरडत चोहोंकडे समरांगणांत पडलेले योद्धे पहा. हे अद्यापि कुडीत प्राण धरून आहेत आणि ह्यांचे आसमुह्य हातांतील शस्त्रांवे टाकून देऊन ह्यांच्या समीप एकसारखे विलाप करीत ह्यांची नानाप्रकारे शूश्रूषा करण्यांत निमग्न आहेत. अर्जुना, तसेच हे दुसरे महापराक्रमी वीर दुसऱ्या शूर वीरांना बाणाच्छादित करून विजय मिळविण्याच्या इच्छेने क्षुब्ध होऊन पुनः युद्धाला जात आहेत, त्यांजवर दृष्टि दे. त्याप्रमाणेच, अर्जुना, हीं मनुष्ये कशीं जिकडे तिकडे धावपळ करीत चाललेली आहेत ती पहा. अरे, रणांत पतन पावलेल्या ह्यांच्या नातल्यांनीं ह्यांजपाशीं उदक मागितल्यामुळे ते आणण्यासाठी ती इतक्या लगबगीने चालली आहेत. अर्जुना, ही पहा बहुत मनुष्ये पाणी पाणी करीत हिंडतांना पटापट मरत आहेत ! कितीएक पाणी घेऊन आलेलीं शूर मनुष्ये तृपार्त झालेल्या आप्तांना बेशुद्ध पाहून ते पाणी फेंकून देऊन आक्रोश करीत एकमेकांकडे धावत आहेत ! कितीएक तान्हेलेले योद्धे पाणी पितांपितांच प्राण सोडीत आहेत पहा ! त्याप्रमाणेच कितीएक बंधुवत्सल वीर आपल्या प्रिय बांधवांना सोडून ह्या महान् समरभूमीवर युद्ध करण्याकरितां चोहोंकडे धावत आहेत ! आणि त्याप्रमाणेच

दुसरे कितीएक योद्धे दांतआंठ चावीत आणि भुंवया चढवून क्रोधमुद्रेने सभोंवतालीं पहात चालले आहेत !

राजा, ह्याप्रमाणें भाषण करून, निकडे युधिष्ठिर होता तिकडे कृष्ण रथ घेऊन निघाला व जातांना अर्जुनानेंही नृपतिदर्शनार्थ फार उत्सुक होऊन ' गोविंदा, चल, चल. ' असा त्यास पुनःपुनः तगादा केला. धृतराष्ट्रा, माधवाने ती युद्धभूमि पार्याला दाखवून मग युधिष्ठिराकडे जाण्याची त्वरा केली, व तो हळूच अर्जुनाला ह्मणाला, " बा पांडुपुत्रा, तो पहा तेथें धर्मराजा युधिष्ठिर अमुन त्याजवर दुसरे भूपाल चाल करून गेले आहेत; तसाच तो पहा कर्ण जसा काय रण-रंगावर अग्निच चेतला आहे ! तो पहा महाधनुर्धर भीम युद्धार्थ परत येत आहे; आणि पांचाल, सृजय व पांडव ह्यांचें केवळ मुखच असे जे धृष्ट-द्युम्नादिक प्रबल योद्धे ते त्याच्यामागून येत आहेत. हे पहा कौरवांचें अफाट सैन्य पांड-वांनी परत येऊन एका क्षणांत उधळून दिलें ! अर्जुना, हा पहा कर्ण पळत सुटलेल्या कौरव-चमूला आवरून धरण्याविषयी झटत आहे. तसाच तो यमाप्रमाणें वेगवान् व इंद्राप्रमाणें प्रतापशाली महाधनुर्धर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा तिकडेच चालला आहे ! अर्जुना, रणांगणांत त्वेपानें चाललेल्या त्या अश्वत्थाम्यावर महा-रथ धृष्टद्युम्नानें हा हल्ला केला पहा ! अरे, इकडे सृजयांचा रणभूमीवर नाश होऊ लागला पहा ! " राजा, ह्याप्रमाणें रणांगणांतली सर्व स्थिति त्या महापराक्रमी वामुदेवानें अर्जुनाला निवेदन केली; आणि मग तेथें मोठा घोर संग्राम सुरू झाला. नंतर उभय दळें मारूं किंवा मरूं अशा निर्धारानें एकवटून दोहोंकडील वीर सिंहासारखी गर्जना करूं लागले आणि मग दोन्ही सैन्यांत मोठी भयंकर प्राणहानि झाली;

व ह्या सर्व अनर्थांचें मुख्य कारण म्हटलें क्षणजे तुझी दृष्ट सध्या हेंच होय !

अध्याय एकुणसाठावा.

—:—

अश्वत्थाम्याचा पराभव.

संजय सांगतो:—नंतर पुनः कौरव व सृजय हे मोठी लगट करून निकरानें लढूं लागले. त्या समयी पांडवाकडे युधिष्ठिर व कौरवांकडे कर्ण हे प्रमुख होते. राजा, तेव्हां कर्णानें पांड-वांशी फार भयंकर युद्ध चालविलें आणि त्यांत अतोनात प्राणहानि होऊन यमाच्या राष्ट्राची वृद्धि झाली व प्रेक्षकांच्या अंगावर कांटा उभा राहिला ! राजा, तो तुंबळ व घोर संग्राम प्रवृत्त होऊन रक्ताच्या नद्या वाहूं लागल्या आणि शूर संशप्तकांचा महान् संहार घडून त्यांचें अगदी थोडें सैन्य अवशिष्ट राहिलें. तेव्हां धृष्टद्युम्न, सर्व भूपाल व पांडव हे कर्णावरच चालून गेले; परंतु युद्धाम उतावीळ झालेल्या त्या विजयेच्छु वीरांना, नदीच्या प्रवाहास पर्वत ज्याप्रमाणें अडवून धरितो, त्याप्रमाणें एकट्या कर्णानें समरांगणात अडवून धरिलें. राजा, नंतर कर्णाची व त्या महारथ्यांची लढाई होऊन, पर्वतापुढें जलाचे ओव फुटून जशी त्यांची चोहों-कडे दाणादाण होऊन जाते, तद्वत् त्या महारथ्यांची कर्णापुढें मोठी दाणादाण झाली ! राजा, त्यांचा त्या समयी फार घनघोर संग्राम झाला व तो पाहून अंगावर अगदी कांटाच उभा राहिला ! तेव्हां धृष्टद्युम्नानें बांकदार बाणानें राधेयाला समरांगणांत विद्ध केलें व त्यास ' थांब थांब ' असें म्हटलें. त्या वेळी तत्काळ महारथ कर्णानें मोठ्या क्रोधानें आपल्या श्रेष्ठ विजय चापानें बाणांचा भडिमार करून धृष्ट-द्युम्नाचें धनुष्य तोडून टाकिलें, व त्याजवर नऊ सर्पतुल्य जलाल बाण सोडिले; तेव्हां लागलेच

ते बाण त्या महात्म्या धृष्टद्युम्नाच्या सुवर्णमय कवचांत धुसून रुधिराच्या ओघांत माखून जाऊन इंद्रगोपांच्या रांगांप्रमाणे शोभू लागले ! तेव्हां महारथ धृष्टद्युम्नाने आपल्या हातातले ते तुटके धनुष्य फेकून दिले व दुसरे धनुष्य धारण करून कर्णाला सत्तर बांकदार पेण्यांच्या प्रवर शरांनी विद्ध केले. राजा, नंतर कर्णाने शत्रूंना ताप देणाऱ्या धृष्टद्युम्नाला जलाल बाणांनी झांकून काढिले; तेव्हां द्रोणशत्रु महाधनुर्धर धृष्टद्युम्नाने निशित बाणांची कर्णावर वृष्टि केली. ते पाहून पुनः कर्णाने सुवर्णालंकृत एक बाण अशा त्वेपाने धृष्टद्युम्नावर टाकिला की, जणू काय तो दुसरा यमदंडच होय असे वाटले ! परंतु तो भयंकर बाण मोठ्या वेगाने धृष्टद्युम्नावर जात आहे असे पाहून सात्यकीने मोठ्या शिताफीने बाणवृष्टि करून मध्यंतरीच त्याचे शतावधि तुकडे उडविले ! राजा, मग कर्णाने सात्यकीवर चोहोंकडून बाणांचा भडिमार चालवून त्यास अगदी अडविले व समरांगणांत सात नाराच बाणांनी त्यास विद्ध केले. तेव्हां उलट सात्यकीने कर्णावर सुवर्णमंडित बाण मोडण्याचा सपाटा लाविला आणि मग त्या उभयतांचे असे कांही भयंकर व अश्रुतपूर्व युद्ध जुंपले की, ते पाहण्याला किंवा त्याचे वर्णन ऐकण्यालाही भय वाटू लागले ! राजा, त्या वेळीं समरभूमीवर कर्णसात्यकींनी जो कांही विलक्षण पगक्रम करून दाखविला, तो पाहून, त्या ठिकाणी जे प्राणी जमले होते त्यांच्या अंगावर अगदी कांटाच उभा राहिला !

राजा, इकडे मध्यंतरी अश्वत्थाम्याने महाबलवान् धृष्टद्युम्नावर हल्ला केला व त्या शत्रुसंहारक व विजयशील वीराला शत्रूंच्या नगरांना जिकणाऱ्या अश्वत्थाम्याने कोपयमान होऊन म्हटले की, ' हे ब्रह्मघ्ना, थांब थांब, माझ्या हातून तू आज जिवंत सुटणार नाहीस ! ' राजा,

असे बोलून अश्वत्थाम्याने मोठ्या त्वरेने अत्यंत तीक्ष्ण व धार देऊन जलाल केलेले भयंकर बाण सोडण्याचा सपाटा लाविला व धृष्टद्युम्नास हां हां ह्मणतां बाणाच्छादित करून टाकिले ! राजा, त्या समयी ते दोघेही महारथ एकमेकांना ठार मारण्याविषयी अतिशय प्रयत्न करू लागले आणि त्यांचे फारच निकराचे युद्ध प्रवर्तले. राजा, समरांगणांत धृष्टद्युम्नाला पाहून द्रोणाला जशी भीति पडली व तो केवळ आपला मृत्युच होय असे जसे त्याला वाटले, तशीच ह्या समयी समरभूमीवर आपल्या समोर अश्वत्थाम्याला पाहून धृष्टद्युम्नाला भीति पडली व तो केवळ आपला मृत्युच होय असे त्याला वाटले ! पण, राजा, धृष्टद्युम्नाला माहीत होतें की, आपल्याला रणांगणांत शस्त्रापासून मुळीच भय नाही, म्हणून तो मोठ्या वेगाने अश्वत्थाम्यावर धावून गेला ! त्या वेळीं जणू काय प्रलयकाली कालावर कालच धावून गेला असे भासले ! राजा, त्या समयी धृष्टद्युम्न आपल्यावर चाल करून आला असे पाहून अश्वत्थामा नवाशिखांत संतापाने पेटला व तो कोपाने सुसकारे टाकीत धृष्टद्युम्नावर उलट धावून गेला ! राजा, परस्पराना अवलोकन करितांच त्यांचा विलक्षण क्षोभ झाला आणि मग आपल्या समीप प्राप्त झालेल्या धृष्टद्युम्नाला प्रतापशाली द्रोणपुत्र मोठ्या त्वरेने म्हणाला, ' हे पांचालाधमा ' मी तुला आज यमसदनी पाठवून देतो. तू पूर्वी द्रोणाला वधून जे घोर पातक केलेस, त्याचे अत्यंत दुःखदायक असे फळ आज तुला प्राप्त होईल ! जर ह्या दुर्धर समयी अर्जुन तुला साहाय्य करण्याला प्राप्त झाला नाही, अथवा तू जर प्राणसंरक्षण करण्याकरितां रणांगणांतून पळून गेला नाहीस, तर मी म्हणतो त्याप्रमाणे निश्चयाने घडेल ! ' राजा, अश्वत्थाम्याचे हे भाषण श्रवण करून

प्रतापशाली धृष्टद्युम्नानें त्यास म्हटलें, 'हे अश्व-
त्थामन्, तुझा पिता रणांगणांत निकरानें लढत
असतां ज्या माझ्या खड्गानें त्यास उत्तर दिलें,
तेंच माझें हें खड्ग ह्या प्रसंगीं तुला उत्तर देईल !
जर त्या महाप्रतापी द्विजवर्ष्य द्रोणाचार्यालाही
मी रणांत ठार मारिलें, तर तुझ्यासारख्या
केवळ नामधारी द्विजाला ठार मारण्याइतका
मी पराक्रमी नाहीं असें कसें घडेल ?' राजा
धृतराष्ट्रा, असें म्हणून सेनापति धृष्टद्युम्न अतिशय
चवताळला आणि त्यानें एका निशित बाणानें
अश्वत्थाम्यास विद्ध केलें. तेव्हां अश्वत्थाम्यानें
संकुद्ध होऊन धृष्टद्युम्नावर बांकदार पेण्यांचे बाण
सोडण्यास आरंभ केला व त्यानें दशदिशा
अदृश्य करून टाकिल्या. राजा, त्या समयी
अंतरिक्ष, दिशा व सभोंवतालचे योद्धे हीं सर्व
सहस्रावधि शरांनीं आच्छन्न होऊन दिसत
नाहींतशी झाली. तेव्हां धृष्टद्युम्नानेंही रणास
शोभविणाऱ्या अश्वत्थाम्यावर कर्णाच्या समक्ष
प्रचंड शरवृष्टि केली व त्यास बाणांनीं झांकून
काढिलें ! नंतर कर्णानेंही शत्रुसैन्यावर
हल्ला केला आणि त्यानें एकट्यानें पांचाल,
पांडव, द्रौपदीचे पुत्र, युधामन्यु व महारथ
सात्यकि ह्यांस मोठ्या पराक्रमानें चोहोंकडे
माणें हटविलें आणि त्यामुळे तें पाहून सर्वांस
मोठें आश्चर्य वाटलें ! इकडे धृष्टद्युम्नानें युद्धांत
अश्वत्थाम्याचें धनुष्य छेदिलें, तेव्हां अश्वत्था-
म्यानें तें तुटलेलें धनुष्य फेंकून देऊन दुसरें
धनुष्य धारण केलें आणि मोठ्या त्वेपानें सर्प-
तुल्य भयंकर बाणांचा भडिमार करून धृष्टद्यु-
म्नाचें धनुष्य, शक्ति, गदा, ध्वज, हय, सारथि
व रथ ह्यांचा निमिषांत विध्वंस उडविला !
राजा, नंतर त्या चापहीन, रथहीन, अश्वहीन
व सारथिहीन झालेल्या धृष्टद्युम्नानें सूर्यासारखें
देदीप्यमान प्रचंड खड्ग व शतावधि चंद्र
बसविलेली ढाल हातांत घेतली; पण असा

चमत्कार झाला की, धृष्टद्युम्न हा ती ढालतरवार
घेऊन रथांतून खाली उतरला नाही तोच त्याची
ती ढालतरवार दृढायुध अश्वत्थाम्यानें नेमकेच
शिताफीनें भेद बाण सोडून तत्काळ तोडून टा-
किली ! ह्याप्रमाणें, राजा, धृष्टद्युम्नाचा रथ नष्ट
झाला, अश्व मेले, धनुष्य तुटलें आणि शस्त्रास्त्रांचा
भडिमार होऊन त्याचा देह छिन्नविच्छिन्न
झाला, तथापि इतकें करूनही जेव्हां बाण-
वृष्टीनें अश्वत्थाम्याच्या हातून तो धारातीर्थीं
पडेना, तेव्हां अश्वत्थाम्यानें आपले धनुष्य
टाकून दिलें व तो लागलाच तसाच धृष्टद्युम्ना-
वर धावून गेला; आणि, राजा, ज्याप्रमाणें पन्न-
गोत्तमावर झडप घालण्याकरितां गरुड मोठ्या
आवेशानें उडी टाकितो, त्याप्रमाणेंच महात्म्या
अश्वत्थाम्यानें मोठ्या आवेशानें धृष्टद्युम्ना-
वर झडप घालण्याकरितां उडी टाकिली !

राजा धृतराष्ट्रा, इतक्यांत माधव अर्जुनाला
म्हणाला, 'अर्जुना, धृष्टद्युम्नाला ठार मारण्या-
करितां अश्वत्थाम्यानें केवढा भयंकर यत्न
चालविला आहे तें पहा. आतां तो धृष्ट-
द्युम्नाला वधील ह्यांत संदेह नाही. ह्यासाठीं, हे
महाबाहो अर्जुना, द्रोणपुत्ररूप मृत्यूच्या जब-
ड्यांत सांपडलेल्या धृष्टद्युम्नाला मुक्त कर.' राजा,
ह्याप्रमाणें भाषण करून प्रतापवान् वामुदेवानें
जेथें अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नाशी लढत होता
तिकडे अश्वाना प्रेरिले. राजा, नंतर वामु-
देवाचा इपारा होताच ते चंद्रासारखे दीप्ति-
मान् अश्व जणू काय अंतरिक्ष भराभरा पडून
टाकीत अश्वत्थाम्याच्या रथासन्निध येऊन
पोहोचले. तेव्हां महाबल अश्वत्थाम्यानें ते
महापराक्रमी कृष्णार्जुन उभयतां तेथें प्राप्त
झाले असें पाहून धृष्टद्युम्नाला ठार मारण्या-
साठीं पराकाष्ठा चालविली व आतां हा धृष्ट-
द्युम्नाचे पंचप्राण बाहेर ओढणार, इतक्यांत
महाबलपिंड अर्जुनानें अश्वत्थाम्यावर बाणांचा

भडिमार आरंभिला ! राजा, नंतर ते गांडीव धनुष्यापामून मुटलेले हेममय घोर शर मर्प जमे वारुळांत शिरतात तसे तत्काळ अश्वत्थाम्याचे देहांत शिरले आणि त्यांच्या योगी विव्हल होऊन अश्वत्थामा समारांगणांत धृष्टद्युम्नाला मोडून देऊन लागलाच आपल्या रथावर आरूढ झाला व त्याने बळकट धनुष्य धारण करून अर्जुनावर बाणांची वृष्टि सुरू केली. राजा, धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे अश्वत्थाम्याच्या कचाट्यांतून धृष्टद्युम्नाची मुटका आल्या-बरोबर सहदेवाने त्या प्रबल योद्ध्याला रथामध्ये घातले आणि समारांगणांतून एकीकडे नेले. राजा, नंतर अश्वत्थामा व अर्जुन ह्यांचे युद्ध सुरू झाले. राजा, अश्वत्थाम्याने आपल्यावर बाणांचा भडिमार चालविला असे अवलोकन करून उलट अर्जुनानेही अश्वत्थाम्यावर बाणवर्षाव चालू केला. तेव्हां अश्वत्थाम्याला अनावर क्रोध चढला व त्याने अर्जुनाच्या बाहेर व उगार वारण मारिले. त्या ममयी अर्जुन अतिशय क्षुब्ध झाला व त्याने यमदंडाप्रमाणे भयंकर असा नाराच बाण अश्वत्थाम्याच्या स्कंधप्रदेशावर टाकिला आणि त्यामुळे तो महाद्युनिमान् द्रोणपुत्र शरवेगाने कळवळून जाऊन समारांगणांत आपल्या रथावर वीरस्थानी मूर्छित पडला ! राजा, नंतर कर्णाने रणांगणांत वारंवार अर्जुनाकडे डोळे फाडून पहात पहात त्याच्याशी द्वैरथयुद्ध करण्याच्या इच्छेने आपल्या धनुष्याच्या प्रत्येक टणत्कार केले. इतक्यांत अश्वत्थामा अधिकच विव्हल झाला असे पाहून त्याच्या मारण्याने त्वरा करून त्याचा रथ रणांगणांतून एकीकडे नेला ! राजा, ह्याप्रमाणे धृष्टद्युम्नाची मुक्तता व अश्वत्थाम्याची दुर्दशा झालेली अवलोकन करून पाचालांम जयप्राप्तिविषयी मोठी आशा उत्पन्न झाली व ते मोठमोठ्याने निहनाद करू लागले ! निकडे

तिकडे सहस्रावधि दिव्य बाणे वाजून लागली आणि सर्वत्र आनंदाचा गजर झाला ! राजा धृतराष्ट्रा, तेव्हां अर्जुन कृष्णाला म्हणाला की, 'आतां संशप्तकांकडे रथ घेऊन चल. कारण, त्यांचा वध करणे हे माझे मुख्य कर्तव्य होय !' नंतर, राजा, ज्यावर अनंत पताका लाविल्या होत्या असा तो रथ कृष्णाने वायुवेगाने—किंबहुना मनोवेगाने—संशप्तकांप्रत नेला.

अध्याय साठावा.

—:—

श्रीकृष्णाचे भाषण.

संजय सांगतो:—राजा, संशप्तकांकडे जात असतां मध्यंतरी कृष्णाने धर्मराज युधिष्ठिराकडे बोट दाखवून अर्जुनास म्हटले, “ अर्जुना, तो तुझा भ्राता युधिष्ठिर पहा; त्यास ठार मारण्याकरितां महाधनुर्धर प्रबल कौरव त्याचा पाठलाग करीत आहेत; आणि ते पाहून अतिशय क्षुब्ध झालेले युद्धधुरंधर बलवान् पांचाल वीर त्या महात्म्याचे रक्षण करण्यासाठी त्याच्या साहाय्यार्थ धावत आहेत. तसाच हा सर्व जगताचा राजा दुर्योधन अंगांत चिलखत चढवून रथमैन्यासह वर्तमान धर्मराजाच्या पाठीस लागला आहे. हे पहा धर्मराजाला ठार मारण्याची इच्छा करणाऱ्या ह्या बलवान् दुर्योधनावरोबर त्याचे भ्राते तिकडेच चालले आहेत व ते सर्व युद्धकलेत मोठे निष्णात असून त्यांच्या केवळ स्पर्शाने मुद्धां महाविपारी सर्पांच्या त्रिषाप्रमाणे मृत्यु आल्याशिवाय राहणार नाही ! त्याप्रमाणेच, हे पुरुषव्याघ्रा, दात्याकडे जसे याचक जातात, तसे हे कौरवांकडील द्विप, अश्व, रथ व नर त्या युधिष्ठिराचा प्राण घेण्याकरितां त्याच्याकडे जात आहेत पहा ! सात्यकि व भीम ह्यांनी त्यांस मागे हटविले, तरी इंद्र व अग्नि ह्यांनी वारंवार मागे हटविले असतांही अमृत

हरण करण्यासाठी दैत्य जसे पुनःपुनः पुढे झालेच, तसेच ते युधिष्ठिराच्या वधाकरितां पुनःपुनः पुढे हेतूच आहेत ! अर्जुना, कौरवांकडे अफाट सैन्य असल्यामुळे पुनःपुनः हे महानुधर बलवान् महारथ वीर धनुष्यांच्या प्रत्येकांचे आस्फालन करीत, सिंहांप्रमाणे गर्जत व शंख फुंकीत, पावसाळ्यांत जमे जलाने ओथ समुद्रावर चालून जातात तसे धर्मराजावर चालून जात आहेत ! अर्जुना, प्रस्तुत युधिष्ठिराची स्थिति मोठी अनुकंपनीय होय ! दुर्योधनाच्या कचाट्यात तो इतका सांपडला आहे की, जणू काय तो मृत्यूच्या मुखांतच उभा आहे ! अर्जुना, यज्ञ-कुंडांतील प्रज्वलित अशीत आहुति दिल्या-प्रमाणे त्याचे आतां भस्म होण्यास अगदीं विलंब लागणार नाही ! अर्जुना, धार्तराष्ट्रांचा सेना व्यूह करून यथायोग्य रीतीने उभी असल्यामुळे प्रत्यक्ष इंद्रही त्या दुर्योधनाच्या बाणप्रहारांत सांपडल्यास त्याची मुटका होण्यास कठीण पडेल ! अर्जुना, एकदां दुर्योधन मोठ्या त्वेपाने बाणांचा भडिमार करू लागला म्हणजे त्या क्रोधायमान अंतकाचा तो वेग रणांत सहन करील असा कोणता पुरुष आहे बरे ? अरे, दुर्योधनाने, अध्वत्याम्याने, शारद्वत कृपाने व कर्णाने सोडिलेल्या बाणांचा वेग इतका दुर्धर असतो की, तो पर्वतांचाही भंग करून टाकील ! अर्जुना, युधिष्ठिराचा पराक्रम कांही सामान्य नव्हे, तथापि त्या शत्रूंना पीडा देणाऱ्या पांडु-पुत्राला कर्णाने युद्धांतून परत जाण्यास लाविले ! अर्जुना, कर्ण हा मोठा बलवान् नेमकेच बाण मारणारा, युद्धकलेंत पटाईत व शस्त्रा-स्त्रांत प्रवीण आहे; शिवाय त्याला महाबलवान् कौरवांचे साहाय्य आहे, तेव्हां तो रणांगणांत युधिष्ठिराला पीडा देईल ह्यांत संदेह नाही. अर्जुना, पूर्वी हा तत्त्ववेत्ता युधिष्ठिर समरभूमीवर कर्णादिक वीरांशी लढत असतां कर्णादि-

कांनी घोर पराक्रम करून ह्याला मोठ्या संक्रांतां पाडले होते ! हे भरतमत्तमा, युधिष्ठिराची काया उपवामादिकांनी अगदी क्षीण झाली आहे; अरे, हा ब्रह्मचितनांत मोठा बलिष्ठ आहे, पण क्षात्रविद्येंत तितका प्रवीण नाही; आणि असे असतां ह्या वीराची कर्णाशी गांठ पडल्यामुळे आतां ह्या प्राणमंक्रांतून हा युधिष्ठिर कसा मुक्त होईल ह्याची मला चिंता वाटते ! अर्जुना, जयेच्छु कौरव मोठमोठ्याने गर्जना करून व महान् महान् शंख वाजवून, युधिष्ठिराला मारा ! युधिष्ठिराला मारा ! म्हणून कसे ओरडत आहेत ते पाहिलेसना ? मला तर असे वाटते की, ज्या अर्थी हा कोपिष्ठ व प्रतापशाली भीमसेन शत्रूंकडील हा सिंहनाद निमूटपणे सहन करीत आहे, त्या अर्थी आज युधिष्ठिर स्वचित वांचत नाही ! हा पहा कर्ण महाबलादय कौरवांना युधिष्ठिरावर हल्ला करण्यास सांगत आहे व हे महारथ तदनुरूप स्थूणाकर्ण, इंद्रजाल व पाशुपत ह्या अस्त्रांचे आवाहन करून धर्मराजाला शस्त्रजालांनीं झांकून काढीत आहेत ! ह्यास्तव, प्रस्तुत समयी धर्मराजाची ही विपन्न अवस्था मनांत आणून त्याला मदत करण्याकरितां धनुर्धरश्रेष्ठ पांचाल-पांडव कसे मोठ्या वेगाने तिकडे जात आहेत ते पहा. जर ते ह्या वेळी त्वरा करून त्यास हात द्यावयास गेले नाहीत, तर तो स्वचित ह्या आपत्सागरांत बुडून जाईल आणि मग पांडव-पांचालांचे सर्व बल व्यर्थ होईल ! अर्जुना, हा पहा धर्मराजाचा ध्वज दिसत नाहीसा झाला ! कर्णाने बाणांचा भडिमार करून तो तोडून टाकिला ! अरे नकुल, सहदेव, सात्यकि, शिखंडी, धृष्टद्युम्न, भीम, शतानीक, पांचाल व चेदि हे सर्व पहात असतां कर्णाने हे कृत्य केले ! हा पहा कर्ण रणांत बाणांचा वर्षाव करून कमलिनीचा विश्वंस उडविणाऱ्या हत्तीप्रमाणे

पांडवसेनेचा विव्ंस उडवीत आहे ! हे पांडु-
नंदना, तुझ्या सैन्यांतले हे रथ पळून चालले
पाहिलेस काय ? अरे, ही पहा ह्या महारथाची
कशी त्रेधा उडाली आहे ! तसेच हे पहा आपल्या
सैन्यांतील हत्ती कर्णाने बाणप्रहारांनीं
विद्ध केल्यामुळे आर्तस्वर करीत दशदिशांस
पळत आहेत ! त्याप्रमाणेच शत्रुसंहारक कर्णाने
उधळून दिलेला हा रथसमुदाय चोहोंकडे एक-
सारखा धावत सुटला आहे ! अर्जुना, गजकक्षेचें
चिन्ह असलेला कर्णाचा हा श्रेष्ठ ध्वज निकडे
तिकडे फिरत चालला आहे पहा ! हा पहा
कर्ण तुझ्या सैन्याचा विव्ंस उडवून शतावधि
शरांचा वर्षाव करीत भीमसेनावर धावून गेला !
अर्जुना, ज्याप्रमाणें महान् रणांत इंद्रानें दैत्यां-
वर शस्त्रप्रहार चालविला असतां त्यांची दाणा-
दाण उडून ते पळून गेले, त्याप्रमाणें कर्णाच्या
शस्त्रप्रहारांनीं दाणादाण होऊन हे पांचाल महा-
रथ पळून जात आहेत ! अर्जुना, हा पहा कर्ण
युद्धांत पांचाल व पांडुसृजय यांना जिंकून सभो-
वार सर्व दिशांकडे न्याहाळून पहात आहे.
माझा तर असा समज आहे की, तो तुझीच वाट
पहात आहे ! अर्जुना, हा पहा कर्ण आपलें
श्रेष्ठ धनुष्य आस्फालीत असतां किती शोभत
आहे ! जणू काय दैत्यांना जिकिल्यावर सुर-
सेघांनीं परिवृत असलेला हा देवेंद्रच होय असें
मला भासतें ! हे पहा कौरवांचे वीर कर्णाचा
पराक्रम पाहून मोठमोठ्यानें गर्जत आहेत व
त्यामुळे चोहोंकडे पांडवांची व सृजयांची तारं-
बळ उडाली आहे ! हा पहा कर्ण महारणांत
पांडवांना अगदी भयभीत करून आपल्या सर्व
सैनिकांना चेव आणण्यासाठीं त्यांना म्हणत
आहे की, ' कौरवहो, तुमचे कल्याण होवो.
आतां तुम्ही फार त्वरा करून अशा मोठ्या
निकराने चाल करा की, एकही सृजय तुमच्या
हातांतून जिवंत सुटणार नाही ! तुम्ही

सर्व अगदीं एकत्र होऊन हल्ला करा; आम्ही
तुमच्या मागून येतो.' अर्जुना, हा पहा
असें बोलून कर्णानें मागून बाणांचा भडिमार
चालू केला ! अर्जुना, हा कर्ण पहा; ह्याच्या
मस्तकावर कांतिमान् शंभर ताड्यांचें देदीप्य-
मान श्वेत छत्र शोभत असल्यामुळे जणू उदय-
पर्वतावर चंद्रबिंबच उगवले आहे ! हा पहा
कर्ण तुझ्यावर नेत्रकटाक्ष फेंकीत आहे; आतां
हा मोठ्या वेगानें समरांगणांत तुझ्यावर खचित
धावून येईल ! अर्जुना, हा पहा कर्ण प्रचंड
धनुष्य धारण करून रणांत सर्पविषाप्रमाणें
भयंकर बाण सोडीत आहे ! अर्जुना, हा पहा
कर्ण तुझा वानरध्वज अवलोकन करून मागे
वळला; आतां हा तुझ्याशीं युद्ध करण्यास
खचित येईल ! पण, अर्जुना, प्रज्वलित अग्नी-
च्या मुखांत उडी घालणाऱ्या शलभाची जी
गति होते तीच गति ह्याची होईल ! तुझ्यावर
कर्ण हा एकटाच चालून येत आहे असे पाहून
त्याच्या संरक्षणासाठीं दुर्योधन रथसैन्य बरोबर
घेऊन मागे वळला पहा; ह्या दुष्ट दुरात्म्याला
ह्या सर्वासहचर्तमान मोठ्या प्रयत्नानें ठार
मारून यश, राज्य व उत्तम सुख ह्यांचीं त्वां
जोड करून घ्यावी ! तुम्ही दोघेही योद्धे मोठे
बलिष्ठ व कीर्तिमान् असल्यामुळे तुमचें युद्ध
म्हणजे देवदानवांच्या युद्धाप्रमाणें फार भयंकर
होईल; ह्यासाठीं तुम्हां दोघांचा घोर संग्राम
माजून त्यांत तुम्हा पराक्रम सर्व कौरवांच्या
दृष्टीस पडावा ! अर्जुना, तूं क्षुब्ध झालास व
त्याप्रमाणेंच कर्णही क्षुब्ध झाला, आणि मग
तुम्हां दोघांचें युद्ध लागलें, म्हणजे क्रुद्ध झालेला
दुर्योधन पुढें कांहींएक करणार नाही !
अर्जुना, तूं विहित कर्म करण्यास उद्युक्त
आहेस; आणि कर्ण हा धर्मराज युधिष्ठिराचा
अपराधी आहे, असा विचार करून, जें समयास
उचित असेल तेंच तूं आतां कर. अर्जुना, तूं

युद्ध करितांना नीट दस्तता ठेवून महारथ कर्णावर चालून जा. हे पहा बलाढ्य व वीर्य-शाली पांचशे श्रेष्ठ रथ, पांच हजार हत्ती, दहा हजार घोडेस्वार व लक्षावधि पायदल अगदी जूट करून एकमेकांच्या संरक्षणासाठी अवश्य तितकी काळजी घेत तुझ्यावर चालून येत आहे. हा पहा ह्या सर्व सैन्याच्या अग्रभागीं अश्वत्थामा आहे. म्हणून ह्या सर्व सैन्याचा तू त्वरित नाश करून टाक. अर्जुना, प्रथम ह्या रथसैन्याचा संहार उडव आणि मग महाबलिष्ठ, लोकविख्यात व महाधनुर्धर जो कर्ण त्यावर मोठ्या आवेशाने चालून जाऊन त्याला आपले सामर्थ्य दाखव. अर्जुना, हा पहा कर्ण क्रोधाग्रस्त होऊन पांचालांवर धावत सुटला ! हा पहा धृष्टद्युम्नाच्या रथासमीप त्याचा ध्वज दिसू लागला ! आतां हा फार थोड्या अवधीत पांचालांजवळ येऊन भिडेल असें मला वाटते !

“अर्जुना, आतां मी तुला एक प्रिय वार्ता निवेदन करितों. हा पहा धर्मराज युधिष्ठिर सुरक्षित व खुशाल आहे ! हा पहा महाबाहु भीमसेन मार्गे वळून सैन्याच्या विनीवर अधिष्ठित झाला व त्याच्यासमवेत सृंजयांचें सैन्य व सात्यकि आहे ! हा पहा भीमसेन व महात्मे पांचाल ह्यांनीं निशित शरांचा भडिमार करून कौरवांना वधण्याचा सपाटा सुरू केला ! हें पहा कौरवांचें सैन्य विमुख होऊन पळत सुटलें ! ह्या पहा भीमाच्या शरप्रहारांनीं कौरवसेनेच्या अंगांतून रक्ताच्या धारा वाहू लागल्या ! हा पहा जिकडे तिकडे रक्ताचा कर्दम माजून पिकें जळून गेलेल्या क्षेत्राप्रमाणें समरभूमीवर मोठी विपन्न दशा दिसू लागली ! अर्जुना, हा पहा सर्पाप्रमाणें खवळलेला वीरश्रेष्ठ भीमसेन मार्गे वळून कौरवांच्या सैन्याची दाणादाण उडवीत आहे ! ह्या पहा कौरवसेनेच्या चंद्र, सूर्य व तारे

ह्यांनीं अलंकृत केलेल्या पिंवळ्या, तांबड्या, काळ्या व पांढऱ्या पताका आणि छत्रे सर्वत्र पडत आहेत ! हे पहा सुवर्णाचे, रजताचे, पितळेचे व इतर धातूचे नानाविध ध्वज पटापट खाली पडत आहेत ! तसेंच हे पहा हत्तीघोडे रणांगणांत मरून पडत आहेत ! त्याप्रमाणेंच हे पहा धीट पांचालांनीं नानाप्रकारचे बाण मारून विद्ध केलेले अनेक रथी आपआपल्या रथांतून खाली पडत आहेत ! तसेंच हे वेगवान् पांचाल वीर धार्तराष्ट्रांच्या नरहीन झालेल्या हत्तींवर, घोड्यांवर व रथांवर चालून जात आहेत पहा ! हा पहा ह्या दुर्धर्ष नरव्याघ्रांनीं जिवावर उदार होऊन भीमसेनाच्या आश्रयानें कौरवसेनेचा घोर संहार आरंभिला ! हे पहा पांचाल वीर मोठमोठ्यानें गर्जत व शंग फुंकीत बाणांचा भडिमार करीत रणांगणांत शत्रूंवर धावून जात आहेत ! ह्या पांचालांचा केवढा प्रताप आहे तो अवलोकन कर ! हे पहा पांचाल—जसे कुद्ध झालेले सिंह हत्तींच्या शरीरांचे लचके तोडितात तसे—कौरवांच्या शरीरांचे लचके तोडीत आहेत ! हे पहा पांचाल वीर स्वतः निःशस्त्र असतां सशस्त्र शत्रूंच्या हातांतील शस्त्रें हिसकावून घेऊन त्यांनींच शत्रूंना विनहरकत ठार करीत असून आनंदानें ओरडत आहेत ! ही पहा शत्रूंचीं मस्तकें व भुज भग्न होऊन पडत आहेत. हे पहा पांचालांचें चतुरंग सैन्य सर्वत्र विजयीच होत चाललें आहे ! मानससरोवरांतून आलेले हंस जसे मोठ्या वेगानें गंगेंत प्रवेश करितात, तसे हे पांचाल मोठ्या वेगानें कौरवसैन्यांत प्रवेश करून त्याची अगदीं दुर्दशा उडवीत आहेत ! पांचालांच्या निवारणाकरितां कृपकर्णादिकांनीं अगदीं पराकाष्ठा केली, परंतु अखेरीस भीमाच्या अस्त्रांपुढें त्यांचें कांही न चालतां त्यांचा अगदीं मोड झाला व शेवटीं धृष्टद्युम्नादिकांनीं सहस्त्रावधि शत्रूंचा संहार केला ! हा पहा

शत्रूंनीं पुनः पांचालांस चोहोंकडून गराडा दिला ! पण ही पहा वायुपुत्र भीमानें कौरवांवर उडी घालून बाणांच्या भडिमारांनं त्या अफाट सैन्याची पुनः अधिक देना करून सोडिली ! हे पहा भीमसेनाच्या भयानें कौरवांचे रथ कसे गांगरून गेले ! हे पहा भीमानें नाराच बाण मारून भग्न केलेले हत्ती खाली पडत आहेत ! जणू काय ही वज्रधर इंद्रानें भग्न केलेली पर्वतांचीं शिखरेंच कोसळत आहेत ! हे पहा भीमसेनानें बांकदार पेऱ्यांच्या बाणांनीं विद्ध केलेले महान् महान् हत्ती सेरांवरा पळत असून आपल्याच सैन्याला पायांखाली तुडवीत आहेत ! अर्जुना, आतां आपणांस स्वचित विजय मिळणार असें समजून रणांगणांत भीमसेन मोठमोठ्यानें सिंहासारखी भयंकर गर्जना करीत आहे, हें पाहिलेंमना ? हा पहा निपादांचा राजा नेपादि क्रोधायमान होऊन भीमसेनाला ठार मारण्याच्या इच्छेनं आपल्या श्रेष्ठ हत्तीवर बसून तोमरांचा वर्षाव करीत दंडधारी यमाप्रमाणें भीमसेनावर वावून आला ! हे पहा त्याचे तोमरासहवर्तमान हात भीमसेनानें गर्जना करून अग्नि व सूर्य ह्यांप्रमाणें देदीप्यमान अशा जलाल दहा नाराच बाणांनीं तोडून टाकिले व त्याम शेवटीं मृत्युमुखी लोटिले ! अर्जुना, हा पहा भीम नेपादीला बघून मागे वळला व दुसऱ्या हत्तीवर प्रहार करूं लागला ! हे पहा ह्या घनःशाम हत्तीवर महात आरूढ आहेत, त्यांजवर वृकोदरानें शक्ति व तोमरें ह्यांचा भडिमार चालविला आहे ! हा पहा तुझ्या वडील भ्रात्यानें निशित बाणांचा वर्षाव करून प्रत्येक वेळीं ध्वजपताकांसहित सात सात हत्ती वधण्याचा सपाटा लाविला ! हे पहा बाकीचे हत्ती प्रत्येकावर दहा दहा नाराच बाण सोडून भीमसेनानें वधिले ! अर्जुना, हा क्रोधायमान भीमसेन पुनः इकडे येऊन इंद्राप्रमाणें पराक्रम

गाजवूं लागल्यामुळें आतां धार्तराष्ट्रांच्या गर्जना अगदी ऐकूं येईनातशा झाल्या ! हे पहा तीन अशौहिणी कौरवसैन्य एकत्र होऊन भीमसेनावर चालून आले, परंतु तें सर्व संकुद्ध झालेल्या भीमसेनानें मागे दडविलें. अर्जुना, मध्यान्हीच्या सूर्याकडे दुखऱ्या डोळ्यांच्या मनुष्यांना जसें पाहावत नाही तसें ह्या भीमसेनाकडे ह्या दुर्बल राजांना मुळीच मान वर करून पाहावत नाही ! अर्जुना, ज्याप्रमाणें सिंहाला पाहून मृगांचीं गाळण उडते, त्याप्रमाणें भीमाला पाहून ह्या भूपाळांचीं गाळण उडाली आहे ! व युद्धभूमीवर ह्याप्रमाणें भीमसेनाच्या शरवृष्टीमुळें त्यांस आतां मुखाची—जयाची—आशाच करणें नको !”

संजय सांगतो :—राजा, ह्याप्रमाणें कृष्णानें जें कांही सांगितलें तें श्रवण करून, आणि भीमसेनानें जें दुर्घट कर्म केलें तें पाहून, कौरवांचें जें सैन्य अवशिष्ट राहिलें होतें त्याचा अर्जुनानें संहार केला. राजा, नंतर त्यानें संदासकांचा विंशम उडविण्यास प्रारंभ केला. तेव्हां त्यांपैकी पुष्कळ वीर दाही दिशांस पळून गेले व बाकीचे धारातीर्थी पतन पावून इंद्राच्या आतिथ्यास पात्र होऊन मुखी झाले ! त्या समयी पार्श्वानें बांकदार पेऱ्यांचे बाण सोडून कौरवांचें चतुरंग सैन्य ठार केलें !

अध्याय एकसष्टावा.

—:०:—

संकुलगुद्.

धृतराष्ट्र विचारतो :—संजया, भीमसेन व युधिष्ठिर हे परत येऊन पांडवांनीं वसंतजयांनीं माझ्या सैन्याचा संहार उडविण्यास प्रारंभ केला व माझें सैन्य वारंवार खिन्न होऊन पळून जाऊं लागलें तेव्हां मग कौरवांनीं काय केलें तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, रणांगणांत महाबाहु भीमसेन परत आला असे पाहून प्रतापशाली सूतपुत्र कर्णाला मनस्वी क्रोध चढला व तो आरक्त नेत्र करून भीमसेनावर चालून गेला. तेव्हां त्याने पाहिले तों कौरवांची सेना भीमसेनाला भिऊन युद्धविमुख होतसाती पळत आहे, असे त्यास आढळून आले; म्हणून त्याने प्रथम मोठ्या यत्नाने ती सेना आवरून धरिली आणि तिचा योग्य बंदोबस्त करून मग तो युद्धदुर्मद पांडवांवर चाल करून गेला. त्या समयी कर्ण आपल्यावर आला असे पाहून पांडवांकडील महारथांनी रणांगणांत बाणांचा भडिमार करित त्याजवर हल्ला केला. त्या वेळी भीमसेन, सात्यकि, शिखंडी, जनमेजय, बलवान् धृष्टद्युम्न व सर्व प्रभद्रक वीर कर्णाला ठार मारण्याच्या इच्छेने संक्रुद्ध होऊन जयाची आशा करित तुड्या सैन्यावर चोहोंकडून तुटून पडले. राजा, तेव्हां तुड्या सेनेतील महारथ वीरही तत्काळ पांडवांना ठार करण्याच्या इराद्याने शत्रूवर धावून गेले आणि मग ती ध्वजपताकादिकांनी युक्त अशी दोन्ही चतुरंग दळे एकवटली, तेव्हां ते अवाढव्य सैन्य फारच अद्भुत दिसू लागले! राजा, त्या वेळी शिखंडीने कर्णावर हल्ला केला, धृष्टद्युम्नाने महासेनेने युक्त अशा दुःशासनावर हल्ला केला, नकुलने वृषसेनावर, युधिष्ठिराने चित्रसेनावर व सहदेवाने उल्कावर हल्ला केला, सात्यकीने शकुनीवर हल्ला केला, द्रौपदीपुत्रांनी कौरवांवर हल्ला केला, महारथ द्रोणपुत्रांने मोठ्या दक्षतेने अर्जुनावर हल्ला केला. महेष्वास युधामन्यूवर कृपाने हल्ला केला, बलवान् कृतवर्म्याने उत्तमोजावर हल्ला केला, आणि महाबाहु भीमसेनाने तुड्या पुतांवर व बाकीच्या कौरवसेनेवर हल्ला केला व त्याने एकट्याने त्या सर्व सेनेला मागे हटवून टाकिले! राजा धृतराष्ट्रा, नंतर कर्ण हा धीट-

पणाने समरभूमीवर संचार करित असतां भीष्माचे हनन करणाऱ्या शिखंडीने बाणांचा भडिमार करून त्यास कुंठित केले. तेव्हां कर्ण फार संतप्त होऊन दांतओठ खाऊ लागला आणि मग त्याने शिखंडीच्या भुवयांच्या मध्यंतरी तीन बाण मारून त्यास विद्ध करून टाकिले! राजा धृतराष्ट्रा, कर्णाने शिखंडीला जे हे तीन बाण मारिले, ते त्याच्या भालप्रदेशीं तसेच रतून राहिले व त्यामुळे जणू काय रुप्याच्या पर्वतावर तीन शृंगेच वाढली आहेत अशी मोठी शोभा दिसली! राजा, ह्याप्रमाणे कर्णाने शिखंडीला अतिशयित विद्ध केले तेव्हां शिखंडीने उलट समरांगणांत नव्वद धार दिलेले बाण कर्णावर सोडिले. ते पाहून महारथ कर्णाने तीन बाण मारून शिखंडीचे घोडे व सारथि ह्यांस वधिले व एक क्षुरप्र बाण सोडून त्याचा ध्वज छेदून टाकिला! राजा, नंतर महारथ शिखंडी हा अश्वहीन झालेल्या रथातून उडी मारून खाली उतरला आणि त्या शत्रुसंहारक वीराने क्रोधाग्रमान होऊन कर्णावर शक्ति सोडिली! तेव्हां कर्णाने तीन बाण मारून शिखंडीची ती शक्ति तोडिली आणि पुनः त्याजवर नऊ निशित बाण सोडिले. राजा, त्या समयी ते बाण आपल्यावर येत आहेत असे पाहून शिखंडीने ते बाण चुकविले व आधीच अतिशयित जवमी झालेला तो नरोत्तम शिखंडी रणभूमीतून तत्काळ एकीकडे झाला! नंतर कर्णाने पांडवांच्या सैन्याची दाणादाण केली; व ज्याप्रमाणे सोमाच्या वारा कापसाला दाही दिशांस उधळून टाकितो, त्याप्रमाणे त्याने शत्रुसैन्याला पार उधळून दिले!

राजा, इकडे धृष्टद्युम्नाचे व दुःशासनाचे युद्ध लागले होते, त्यांत धृष्टद्युम्नाने दुःशासनाच्या वक्षस्थळी तीन बाण मारिले असतां दुःशासनाने उलट एक बांकदार पेऱ्यांचा मुर्घा-

पुंख भल बाण सोडून धृष्टद्युम्नाचा डावा बाहु विद्ध केला. तेव्हां धृष्टद्युम्नाला फार क्रोध चढला व त्याने तत्काळ एक भयंकर बाण दुःशासनावर फेकिला ! त्या समर्थी धृष्टद्युम्न-प्रेरित तो महावीरवान् शर आपल्यावर येत आहे असे पाहून त्याजवर तुड्या पुत्रानें तीन बाण सोडिले व त्याचा तत्काळ विध्वंस उडविला ! नंतर दुःशामनाने सुवर्णमंडित सतरा भल बाण धृष्टद्युम्नाच्या वक्षस्थळी व बाहूवर मारिले आणि त्याबरोबर तो पार्श्व धृष्टद्युम्न अतिशय क्षुब्ध झाला व त्याने अत्यंत जलाल असा क्षुरप्र बाण टाकून दुःशामनाचे धनुष्य तोडिले व त्यामुळे मर्त्य सैन्य मोठ्याने ओरडू लागले ! राजा, नंतर तुड्या पुत्रानें दुसरे धनुष्य धारण केले व हंसत हंसत चोहोंकडून बाणांचा भडिमार करून धृष्टद्युम्नाला जागच्या जागी खिळून टाकिले ! राजा, तुड्या शूर पुत्राचा तो पराक्रम पाहून योद्ध्यांना रणांगणांत तो मोठा चमत्कार वाटला आणि सिद्ध व अप्सरांचे समुदाय ह्यांनी तर ते अतिशयच नवल मानिले ! राजा, त्या समर्थी तो महाबल धृष्टद्युम्न त्या प्राणसंकटांतून मुक्त होण्यासाठी प्रयत्न करीत होता; परंतु त्या बाणांच्या वेदघातांतून बाहेर पडलेला तो आम्हांला दिमला नाही; मिहानें ज्याप्रमाणें हत्तीला एका जागी खुंटवून ठेवावे, त्याप्रमाणें दुःशासनाने त्यास एका जागी खुंटवून ठेविले ! राजा, नंतर सेनापति धृष्टद्युम्नाला सौडविण्याकरितां पांचालांनी रथ, गज व अश्व ह्यांसहवर्तमान तुड्या पुत्रावर हल्ला केला आणि मग उभय दळांचा असा कांही घोर संग्राम सुरू झाला की, त्यांत जणू काय प्रलयकालाचा प्राणिमंहार होऊ लागला !

धृतराष्ट्रा, इकडे वृषसेनानें नकुलाला पांच लोहबाणांनी विद्ध केले व पुनः पित्याच्या समीप अमतां त्याने आणवी तीन बाण नकुल-

वर सोडले. मग शूर नकुलानें हंसत हंसत एक अतिशय प्रबल नाराच बाण टाकून वृषसेनाला हृदयप्रदेशी फार विद्ध केले. तेव्हां बलवान् नकुलाच्या त्या शरानें वृषसेन फारच पीडित झाला व त्याने उलट वीस बाण शत्रूवर सोडिले; पण ते पाहून नकुलानेंही लागलेच पांच बाण वृषसेनावर टाकिले ! राजा, त्या समर्थी ते दोघेही वीर फार खचले व एकमेकांवर हजारों बाण सोडून त्यांनी एकमेकांस बाणांनी आकून काढिले ! तेव्हां त्या दोघांही योद्ध्यांची सैन्ये फुटली व सेरांवैरा धावू लागली ! इतक्यांत कौरवांची सेना पळू लागली असे पाहून कर्ण त्या ठिकाणी प्राप्त झाला व त्याने मोठ्या हिंमतीने त्या सैन्यास आळा घातला. इकडे कर्ण परतल्यानंतर नकुल हा कौरवांवर चालून गेला व कर्णाचा पुत्र वृषसेन हा रणांगणांत नकुलाला सोडून तत्काळ कर्णाच्या रथासमीप येऊन त्याच्या रथाचे चक्र संभाळू लागला !

इकडे, क्रुद्ध झालेल्या उलूकाला रणांगणांत प्रतापशाली सहदेवानें मागे हटविले आणि त्याचे चारही घोडे व मारथि ह्यांस यमसदनी पाठवून दिले ! नंतर उलूकानें आपल्या रथांतून खाली उडी टाकिली व आपल्या पित्याला संतोषविणाऱ्या त्या महावीरानें तावड-तोव त्रिगर्ताच्या सैन्यावर हल्ला केला. इकडे, मात्यकीने धार देऊन जलाल केलेल्या वीस नाराच बाणांचा भडिमार करून शकुनीला विद्ध केले व हंसत हंसत भल बाणांनी त्याचा ध्वज तोडिला ! तेव्हां क्रोधायमान झालेल्या प्रतापी शकुनीने रणांगणांत सात्यकीच्या चिल-खताचा भेद केला व उलट त्याचा कांचनध्वज छेदिला ! नंतर मात्यकीने जलाल बाणांचा भडिमार करून शकुनीला विद्ध केले; आणि सारथ्यावर तीन बाण टाकिले व तत्काळ अश्वार बाण मोडून त्यांस यमसदनी पाठविले !

तेव्हां शकुनि एकदम रथांतून उडी मारून खालीं आला व महात्म्या उलूकाच्या रथावर चढला. त्या समयीं तत्काळ उलूकानें त्यास युद्धशाली मात्यकीपासून सुरक्षित राखण्यासाठीं रणांतून एकीकडे नेलें ! तेव्हां मात्यकीनें कौरवसेनेवर मोठ्या आवेशानें हल्ला केला आणि त्यामुळे तें सैन्य फार लवकर फुटलें व मात्यकीच्या बाणप्रहारांनीं जर्जर होऊन दशदिशा धुंडालीत नष्ट झालें ! इकडे तुझ्या पुत्रानें भीमसेनाला रणांत मागे हटविलें; पण भीमानें त्या लोकेश्वर दुर्योधनाला क्षणांत अश्वहीन, रथहीन, मृतहीन व ध्वजहीन करून टाकिलें व त्यामुळे पांडवसैन्याला मोठा आनंद झाला ! तेव्हां दुर्योधन भीमसेनाच्या दृष्टीआड गेला आणि मग सर्व कौरवसैन्यानें भीमसेनावर चाल केली. राजा, त्या समयीं भीमसेनाला ठार मारण्याच्या इच्छेनें तुझें सैन्य मोठमोठ्यानें आरोळ्या देऊं लागलें आणि दोन्ही सैन्यां निकारानें लढूं लागलीं. तेव्हां युधामन्यूनें कृपाला बाणविद्ध करून त्याचें धनुष्य ताबडतोब छेदिलें. त्या वेळीं शस्त्रधरश्रेष्ठ कृपानें दुसरें धनुष्य हातांत घेतलें आणि त्यानें युधामन्यूचा ध्वज, सारथि व छत्र ही तोडून भूमीवर पाडिली. तेव्हां मग महारथ युधामन्यु स्वतः रथ घेऊन रणांगणांतून एकीकडे गेला !

राजा धृतराष्ट्रा, इकडे उत्तमौजांनं घोर पराक्रमी भयंकर हार्दिक्यावर (कृतवर्म्यावर) बाणांचा एकदम भडिमार करून. मेघ ज्याप्रमाणें पर्वताला आच्छादित करितो, त्याप्रमाणें हार्दिक्याला आच्छादित केलें ! त्या समयीं त्या दोघांचें जसें तुंबल व घोर युद्ध झालें, तसें युद्ध मी पूर्वीं कधीही पाहिलें नव्हतें. राजा, तेव्हां हार्दिक्यानें उत्तमौजाच्या हृदयांत असे बाण मारिले की, त्यामुळे तो तत्काळ रथांत वीरस्थानीं खालींच बसला ! मग सारथ्यानें उत्तमौ-

जाची ती दुर्दशा अवलोकन करून तत्काळ त्यास एकीकडे नेलें आणि मग सर्वच कौरवसैन्य भीमसेनावर तुटून पडलें ! तेव्हां दुःशासन व शकुनि ह्यांनीं प्रचंड गजमेनेमहवतमान भीमसेनास वेढा घातला व त्याजवर लहान लहान बाणांची विपुल वृष्टि चालविली. त्या समयीं भीमसेनानें शतावधि बाणांचा क्रुद्ध दुर्योधनावर भडिमार करून त्यास मागे हटविलें व मोठ्या त्वेषानें गजमेनेवर हल्ला केला ! त्या वेळीं कौरवांची ती गजमेना एकाएकीं भीमसेनावर उसळून आली; पण भीमसेनानें तत्काळ संक्रुद्ध होऊन दिव्य अस्त्रांचें आवाहन केलें आणि मग तुंबळ संग्राम सुरू होऊन कौरवांच्या हत्तींना पांडवांच्या हत्तींनीं इतके प्रहार केले कीं, जणू काय त्या समयीं देवेंद्र हा वज्रांनं अमरांचाच विध्वंस करीत आहे, असें भासलें ! राजा, त्या समयीं वृकोरदानें कौरवांच्या गजसेनेम वधीत अमरां बाणांचा भडिमार करून टोळधाड जशी वृक्षाला आच्छादिते तसें सर्व अंतरिक्ष आच्छादिलें. तेव्हां कौरवांकडील हत्तीचे हजारों कळप भीमसेनावर धावून आले; परंतु त्या सर्वांची भीमसेनानें अगदी वाताहत करून टाकिली ! राजा, त्या वेळीं सुवर्णाच्या जालकांनी व रत्नखचित अलंकारांनीं शृंगारलेले ते प्रचंड हत्ती रणांगणांत विद्युल्लतेनें युक्त अशा मेघांप्रमाणें शोभत असतां भीमसेनानें त्यांचा घोर संहार आरंभिला व मग ते सैरावैरा दशदिशांस पळूं लागले ! राजा, त्या समयीं कित्येक हत्तींची वक्षस्थळें विदारित होऊन ते समरभूमीवर पतन पावले आणि पतन पावलेल्या व पडणाऱ्या सुवर्णालंकृत गजांनीं तीं सर्व भूमि आच्छन्न होऊन जणू काय तिजवर विदीर्ण झालेले पर्वतच इतस्वन विस्वरले आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, त्या वेळीं महादेदीप्यमान रत्नांनीं मंडित असलेले ते गजयोद्धे रणांत

पडले असतां जणू काय तेथें क्षीणपुण्य ग्रहच पतन पावले आहेत असें भासलें ! राजा, त्या समयी भीमसेनाच्या शरप्रहारांनीं शतावधि हत्तींचीं गंडम्यळें भग्न होऊन, मस्तकें फुटून व शुंडा तुटून त्यांची मोठी दुर्दशा उडाली ! त्या वेळीं धातूंनीं चित्रविचित्र शोभणाऱ्या पर्वताप्रमाणें ते भीमसेनाच्या बाणांनीं विद्ध झालेले महान् महान् रक्तबंबाळ हत्ती भयार्त होऊन रक्त ओकत धरणीवर पडले ! राजा, तेव्हां बाणांचा भडिमार करणाऱ्या त्या वृकोदराचे चंदनाची उठी दिलेले ते भुज रणभूमीवर केवळ महाभुजंगांप्रमाणें भासले व त्याच्या प्रत्यंचेचा शब्द केवळ वज्रनिर्घोषाप्रमाणें होत असल्यामुळें रणांगणांतील हत्तींची मोठी त्रेधा उडून ते मलमूत्र विसर्जन करीत फार पळत मुटले ! राजा, त्या समयी त्या एकट्या बुद्धिमान् भीमसेनाचें तें घोर कर्म अवलोकन करून जणू काय रुद्र हा सर्व प्राण्यांचा संहार उडवीत आहे असा भास झाला !

अध्याय बासष्टावा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—नंतर, ज्यास शुभ्र अथ जोडिले आहेत व ज्यावर नारायण सारथ्य करीत आहे, अशा श्रेष्ठ रथांतून श्रीमान् अर्जुन रणांगणांत प्राप्त झाला; आणि येतांच, वारा जमा समुद्रास क्षुब्ध करितो, तसें त्यानें तें अश्वदिकांनीं ओतप्रोत भरलेलें तुझें सैन्य क्षुब्ध करून सोडिलें ! राजा, त्या समयी कौरवसैन्यांत फारच धांदल उडाली; व अर्जुनाचें आपल्याकडे अवधान नाही अशी संधि पाहून, क्रोधायमान झालेला दुर्योधन आपणावर मूढ घेण्याच्या इच्छेनें चालून येणाऱ्या युधिष्ठिरावर अर्घ्या सैन्यासह एकदम तुटून पडला आणि त्यास

मागें रेटून त्यानें तेहेतीस क्षुरप्र बाणांच्या भडिमारांनें विद्ध करून टाकिलें ! तेव्हां कुंतीपुत्र युधिष्ठिराला मनस्वी क्रोध चढला आणि त्यानें तीस भल्ल बाण दुर्योधनावर मोठ्या आवेशानें टाकिले ! त्या समयी युधिष्ठिराला ठार मारण्याच्या इच्छेनें कौरवांकडील वीर त्याजवर धावून गेले, पण त्यांचा दुष्ट हेतु तत्काळ ध्यानांत आणून कुंतीपुत्राचें संरक्षण करण्याकरितां पांडवांकडील महारथ एकदम त्याच्यासभोंवती जमले. त्या वेळीं नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न व भीमसेन हे आपल्या बरोबर अक्षोहिणी सैन्य घेऊन धर्मराजाच्या समीप आले व त्यांनीं युधिष्ठिरास वेढून राहिलेल्या कौरवांच्या महारथांवर बाणांचा भडिमार चालविला. तेव्हां त्या सर्व महाधनुर्धरांवर कर्णानें भयंकर शरवृष्टि आरंभिली व त्यांस जागच्या जागी गिळून टाकिले. नंतर त्या धृष्टद्युम्नादिक प्रबल पांडवयोद्ध्यांनीं शरतोमरांचा एकसारखा वर्षाव करून कर्णाला मागें हटविण्याची पराकाष्ठा केली; पण तेव्हां राधेयानें असा अद्वितीय प्रताप गाजविला की, त्याजकडे मानवर उचलून पहाण्याचीही कोणाची छाती झाली नाही ! अखेरीस त्या सर्व पांडवीय महाधनुर्धरांवर सर्वशस्त्राख-विशारद कर्णानें बाणांचा घोर भडिमार करून त्यांस मागें हटविलें ! राजा, नंतर प्रतापवान् सहदेवानें ताबडतोब शीघ्र अस्त्राचें आवाहन केलें आणि दुर्योधनावर वीस बाण मारिले ! राजा, त्या समयी अंगांतून रुधिराचे ओष वहात असलेल्या मातंगाप्रमाणें तो पर्वततुल्य अढळ योद्धा रणांगणांत शोभला ! तेव्हां तुझ्या पुत्राच्या देहांत जलाल व तीक्ष्ण बाण रतलेले अवलोकन करून महारथ कर्णास मोठा क्रोध चढला व त्यानें तत्काळ अस्त्रांचें अभिमंतण करून युधिष्ठिराच्या व धृष्टद्युम्नाच्या सैन्यावर बाणांची वृष्टि चालवून त्याचा घोर संहार

आरंभिला ! तेव्हां महात्म्या सूतपुत्रानें बाण-
प्रहारांनी जर्जर करून सोडिलेले तें धर्मराजाचें
सैन्य भराभर पळून गेलें ! राजा, त्या समयी
सूतपुत्राच्या धनुष्यापासून असा कांही अपूर्व
बाणवर्षाव झाला की, पहिल्यानें सुटलेल्या
बाणांच्या पुंखांवर मागून सुटलेल्या बाणांचे
फाळ सटासट आपटावयास लागून त्या एक-
मेकांच्या संघर्षणांनं मोठा अग्नि भडकला !
राजा, नंतर कर्णानें टोळवाडीप्रमाणें शरांचे
ओघ दशादिशांस शत्रूंवर सोडिले व ते शत्रूंच्या
अंगांत मोठ्या वेगानें घुमले ! राजा, त्या समयी
रक्तचंदनाची उटी दिलेले व रत्नखचित मुवर्णा-
लंकारांनी भूषविलेले कर्णाचे ते बाहु मोठ्या
सपाट्यानें बाणक्षेप करीत असतां इतके एक-
सारखे मागें-पुढें होत होते की, त्याची ती
लोकोत्तर अस्त्रक्रिया अवलोकन करून सर्वांस
मोठें नवल वाटलें ! राजा, ह्याप्रमाणें दाही
दिशा बाणांनी अत्यंत व्याप्त करून टाकिल्या-
नंतर कर्णानें धर्मराज युधिष्ठिरावर बाणांचा
जबर भडिमार करून त्यास अगदी आर्त
करून सोडिलें ! तेव्हां युधिष्ठिर फारच चवता-
ळला आणि त्यानें लागलेच पन्नास निशित
बाण कर्णावर टाकिले ! राजा, त्या समयी त्या
उभयतांनी झपाट्याची शरवृष्टि चालवून घोर
युद्ध आरंभिलें, तेव्हां चोहोंकडे अंधकार पडला
आणि तुझ्या सैन्याचा युधिष्ठिरानें भयंकर
विध्वंस उडविण्यास प्रारंभ केला; तेव्हां तुझ्या
सैन्यांत महान् हाहाकार होऊं लागला ! राजा,
त्या वेळीं धर्मात्म्या युधिष्ठिरानें सहाणेवर धार
देऊन तीक्ष्ण केलेले अनेक प्रकारचे कंकपत्र बाण,
भल्ल बाण, शक्ति, ऋष्टि, मुसळें इत्यादि आयु-
धांची शत्रुसैन्यावर प्रचंड वृष्टि केली व शत्रूंना
अगदी ' त्राहि भगवन् ' करून सोडिलें ! आणि,
राजा, तेव्हां त्या पांडुपुत्रानें जिकडे जिकडे
म्हणून क्रोधमुद्रेनें अवलोकन केलें तिकडे तिकडे

तुझें सैन्य जागच्या जागी नाश पावेलें ! राजा,
ते पाहून कर्णाला जो क्रोध आला तो काय
वर्णावा ? तो अगदी संतापून जाऊन दांतोंढ
चावूं लागला आणि धर्मराजाचा मूड घेण्या-
करितां मोठ्या आवेशानें नाराच, अर्धचंद्र व
वत्सदंत बाणांचा भडिमार करीत समरांगणांत
युधिष्ठिरावर धावून गेला ! तेव्हां युधिष्ठिरानेंही
मुवर्णपुंगव जलाल बाणांचा कर्णावर वर्षाव केला;
पण इतक्यांत हंसत हंसत कर्णानें पुनः धार
दिलेल्या कंकपत्र बाणांनी व तीन भल्ल बाणांनीं
युधिष्ठिराचें वक्षस्थळ भेदिलें व त्यामुळे तो
अतिशयित विव्हल होऊन रथांत मटकन् खालीं
बसला आणि ' सूता, रथ एकीकडे ने ! ' असें
मोठ्यानें म्हणाला ! राजा, तेव्हां दुर्योधनप्रभृति
सर्व कौरव मोठमोठ्यानें गर्जना करून ' धर्म-
राजाला धरा, धर्मराजाला धरा ! ' असें ओरडत
चोहोंकडून त्याजवर धावले; पण इतक्यांत
सतराशें केकय योद्धे पांचालांसमवेत कौरव-
सैन्यावर तुटून पडले आणि मग मोठा घोर संग्राम
चालू होऊन जनक्षय सुरू असतां महाबल भीम
व दुर्योधन ह्यांचें भयंकर युद्ध जुपलें.

अध्याय त्रेसष्टावा.

—:—

धर्माचा पराभव !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, मग कर्णा-
नेंही केकयांच्या महारायांवर शरांचें जळें पस-
रण्यास प्रारंभ केला व जे महाधनुर्धर त्या-
च्याशी तोंड देऊन लढूं लागले त्यांस त्यानें
उधळून लाविलें ! राजा, ते केकय वीर राधे-
याचें निवारण करण्यास झटत असतां कर्णानें
त्यांचे पांचशें रथ यमसदनीं पाठविले ! तेव्हां
युद्धांत राधेयाचा दुर्धर पराक्रम अवलोकन
करून कर्णाच्या बाणांनी जर्जर झालेल्या केक-
यांनी राधेयाशी लढण्याचा नाद सोडून दिला

व ते भीमसेनाला जाऊन मिळाले. तेव्हां कर्णानें बाणांचा भडिमार करून पांडवांच्या रथसेनेची पार दाणादाण उडविली व नंतर तो एकटा आपल्या रथांतून युधिष्ठिरावर चालून गेला. राजा, त्या समयी युधिष्ठिर हा मोठ्या विपन्न अवस्थेंत होता. बाणप्रहारांनी घायाळ झाल्यामुळें दोन्ही अंगांस नकुल व सहदेव हे त्याच्या संरक्षणार्थ यत्न करीत होते व तशा स्थितीत बेशुद्ध असलेला तो धर्मराज युधिष्ठिर हळूहळू सैन्याच्या गोटाचा मार्ग आक्रमीत होता. राजा, अशा प्रकारें युधिष्ठिर हा रणांगणातून युद्धपराङ्मुख होऊन परत जात असतां दुर्योधनाचें हित करावयाचें ह्या इच्छेनें कर्णानें त्या घायाळ पांडुपुत्रास गांठलें व त्याजवर तीन जलाल बाण सोडिले ! तेव्हां धर्मराजा स्वःतचें दुःख विसरला व त्यानें तत्काळ उलट कर्णाच्या वक्षस्थळावर आणि सारथ्यावर मिल्हून तीन व चार हयांवर चार बाण मारिले ! राजा, तें पाहून शत्रुसंहारक माद्रीपुत्र नकुलसहदेव युधिष्ठिराच्या रथाची चक्रे राखीत होते ते, कर्णानें धर्मराजाला वधुं नये ह्मणून कर्णावर धावून गेले आणि त्यांनी मोठ्या निकरानें कर्णावर पृथक् पृथक् बाणांचा भडिमार चालविला. तेव्हां त्या दोघां महात्म्या शत्रुसंहारक पांडुपुत्रांवर कर्णानें धार दिलेले दोन भल्ल बाण सोडिले व त्यांस विद्ध केले; आणि त्यानें समरांगणांत हस्तिदंताप्रमाणें शुभ्र, मनोवेगांनें पळणारे व कृष्णवर्ण पुच्छांचे ते युधिष्ठिराच्या रथाचे घोडे ठार मारिले आणि आणखी एका भल्ल बाणानें हंसत हंसत त्याचें शिरस्त्राण खाली पाडिलें ! राजा, त्याप्रमाणेंच प्रतापशाली कर्णानें धीमान् नकुलचेही घोडे मारिले आणि त्याचें धनुष्य व रथाची धुरी हीं छेदून टाकिली ! तेव्हां ते युधिष्ठिर व नकुल हे दोघे भ्रोते अतिशय विव्दल होऊन रथहीन व अश्वहीन झाले व तेव्हां सहदेवाच्या रथावर

चढले ! त्यांची ती अनुकंपनीय अवस्था अवलोकन करून शत्रुसंहारक मातुल शल्य कर्णास म्हणाला:—बा राधेया, आज तुला पृथापुत्र अर्जुनाशी युद्ध करावयाचें आहे तें सोडून देऊन तूं विनाकारण संतप्त होऊन युधिष्ठिराशी लढत आहेस तो काय म्हणून ? बा, अशा रीतीनें शस्त्रास्त्रांचा पुरवठा कमी पडला, तुझें चिलखत फाटून तुटून गेलें, बाण संपले, भाते नाहीतसे झाले, सारथि व घोडे थकले व तूं शत्रूंकडून बाणच्छत्र झालास, आणि मग का जर तुझी अर्जुनाशी गांठ पडली. तर मग स्वचित तुझी उपहासास्पद स्थिति होईल ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें शल्य मामानें कर्णाला सांगितलें तरी कर्णानें क्षुब्ध होऊन युधिष्ठिरावर बाणवृष्टि करण्याचा सपाटा चालू ठेविलाच आणि त्या माद्रीपुत्रांना शरविद्ध करून अवेरीस त्यानें मोठ्यानें हंसून बाणांच्या भडिमारांनें धर्मराजाला युद्धविमुख होण्यास भाग पाडिलें ! तेव्हां शल्य मोठ्यानें हंसून पुनः कर्णाला म्हणाला:—कर्णा, तुझा युधिष्ठिराला ठार मारण्याचा निश्चय दिसतो; पण हें तुझें अनुचित कृत्य होय ! अरे, ज्याचा वध तुझ्या हातून घडेल अशा भिस्तीनें दुर्योधन तुला सतत एवढा मान देत आला, त्या अर्जुनाला तूं मार; तुला युधिष्ठिराला मारून लाभ तो कोणता आहे ? अरे, हा पहा कृष्णार्जुनांच्या शंखांचा व त्याप्रमाणेंच अर्जुनाच्या धनुष्याचा घोर ध्वनि पर्जन्यकाळांतील घनगर्जनेप्रमाणें कानीं पडूं लागला ! हा पहा अर्जुनानें शरवर्षाव करून कौरवांच्या महान् महान् रथांचा नाश आरंभिला ! ही पहा त्यानें आपली सर्व सेना समरांगणांत बाणांनी व्याप्त केली ! हे पहा युधामन्यु व उत्तमोजा ह्या शूराच्या घृष्टांचें रक्षण करीत आहेत. हा पहा शूर सात्यकि ह्याच्या रथाचें डावें चाक व धृष्टद्युम्न उजवें चाक संभाळीत

आहे ! भीमानें तर दुर्योधन राजाशी युद्ध आरंभिलें आहे; ह्यासाठी आज आपणां सर्वांच्या देखत तो त्यास वधणार नाही, अशी व्यवस्था आपण केली पाहिजे. कर्णा, पहा—रणांगणाला शोभविणाऱ्या दुर्योधनास भीमसेनानें कसें घालिलें आहे ! ह्यास्तव असें कर की, आतां त्याची भीमसेनापासून सुटका होईल ! जर त्याची व तुझी गांठ पडली आणि त्याची मुक्तता झाली, तर तूं मोठें आश्चर्यकारक कृत्य केलेस असें होईल; म्हणून तूं त्याला मदत कर आणि त्यास प्राणसंक्रांतून सोडव ! माद्रीपुत्र नकुलसहदेव व युधिष्ठिर ह्यांस मारण्यांत अर्थ तो कोणता बरे !

राजा धृतराष्ट्रा, शल्याचें हें भाषण राधेयाला मानवलें; व तो प्रतापशाली कर्ण, भीमसेनाच्या अगदीं कचाट्यांत दुर्योधन सांपडला आहे असें पाहून त्याला सोडविण्यासाठीं शल्याच्या म्हणण्याप्रमाणें अजातशत्रु धर्मराज युधिष्ठिर व नकुलसहदेव ह्यांस सोडून दुर्योधनाकडे निघाला; तेव्हां मद्राजानें प्रेरिलेले ते अश्व जणू काय अंतरिक्षांतून चौखुर दौडत तत्काळ दुर्योधनाच्या सन्निध कर्णरथाला घेऊन प्राप्त झाले ! राजा, ह्याप्रमाणें कर्ण हा तिकडे गेला तेव्हां इकडे धर्मराज युधिष्ठिर, नकुल व सहदेव हे तावडतोव महावेगवान् रथांतून आपल्या शिबिराप्रत निवून गेले ! तेथें गेल्यावर तो घायाळ व लज्जायमान झालेला युधिष्ठिर राजा रथांतून खालीं उतरला व सुंदर शय्येवर निजला. मग देहांत रुतलेले बाण वगैरे काढल्यावर अंतर्धर्मा अतिशयित तळमळणाऱ्या त्या पृथापुत्रानें महारथ माद्रीपुत्रांस म्हटलें:—पांडवहो, तुम्ही अगदीं विलंब न करितां भीमसेनाच्या सैन्याला जाऊन मदत करा. वृकोदरानें केवळ मेघाप्रमाणें गर्जना करीत युद्ध आरंभिलें आहे ! राजा धृतराष्ट्रा, नंतर तो महारथ नकुल दुसऱ्या रथांत आरूढ

झाला व मग ते दोघे पराक्रमी व शत्रुसंहारक भ्राते नकुलसहदेव अत्यंत वेगानें चालणाऱ्या रथांतून सैन्यासहवर्तमान भीमसेनाप्रत आले !

अध्याय चौसष्टावा.

—००—

धर्मराजाचा शोध.

संजय सांगतो:—राजा, इकडे अश्वत्थामा हा बरोबर पुष्कळ रथांचा समुदाय घेऊन अर्जुन जेथे होता तेथें एकाएकी चालून गेला; पण तो आपल्यावर चालून येत आहे असें पाहून कृष्णसख शूर अर्जुनानें—समुद्राला जशी त्याची मर्यादा अडवून धरिते तसें त्याला मोठ्या आवेशानें अडवून धरिलें. तेव्हां प्रतापशाली द्रोणपुत्र फारच शोभला व त्यानें कृष्णार्जुनावर बाणांचा भडिमार करून त्यांस झांकून टाकिलें. ते पाहून पांडवांकडील महारथांस व एकंदर सर्व कौरवसैन्यास मोठें आश्चर्य वाटलें ! नंतर अर्जुनानें हंसत हंसत दिव्य अस्त्राचें आवाहन केलें; पण अश्वत्थाम्यानें तत्काळ त्याचा समरांगणांत प्रतिकार केला. राजा, त्या समर्थी अश्वत्थाम्याला ठार मारण्याकरितां अर्जुनानें जी जी अस्त्रें त्याजवर सोडिलीं त्या त्या सर्वांचा महाधनुर्धर अश्वत्थाम्यानें विध्वंस उडविला ! राजा, तेव्हां अश्वत्थामा व कुंतीपुत्र ह्यांचा घोर अस्त्रसंग्राम चालू असतां आम्हांला अश्वत्थामा म्हणजे आ पसरून उभा असलेला साक्षात् यमच होय असें भासलें ! त्या वेळीं अश्वत्थाम्यानें सरळ चाल करून जाणाऱ्या बाणांचा वर्षाव करून दशदिशा व्यापून टाकिल्या व वामुदेवाच्या उजव्या भुजाला तीन बाणांनीं विद्ध केलें ! तेव्हां अर्जुनानें त्या महात्म्या अश्वत्थाम्याचे सर्व अश्व ठार मारिले व रणभूमीवर जणू काय सर्व पृथ्वीचा समावेश करील अशी मोठी प्रचंड रुधिरनदी प्रवृत्त

केली! राजा, ती नदी फारच भयंकर असून वीराला परलोकास पोचविण्याचें उत्तम साधन होते आणि तिच्यामध्ये रणांत अर्जुनाच्या शरप्रहारांनीं हत झालेले अश्वत्थाम्याचे सर्व रथी रथांसह वहात चालले होते! राजा, त्या समयी द्रोण-पुत्र व अर्जुन ह्यांचें दारुण व निकराचें युद्ध चाललें असतां भयंकर संहार उडाला! किती-एक रथांचे अश्व व सारथि हत होऊन रथ उघडे पडले; कितीएक अश्व वीरहीन उघळूं लागले; कितीएक गज वीर रणांगणांत मेल्यामुळें सराविरा धावत सुटले; आणि कितीएक वीर हत्ती पडल्यामुळें हाताश झाले! राजा, त्या घोर युद्धांत दोघांही वीरांनी मोठा उग्र प्रताप गाजविला! अर्जुनांनं बाणांचा वर्षाव करून कौरवांचे बहुत रथी व घोडेस्वार ठार मारिल्यामुळें घोडे उघळूं लागले; तेव्हां त्या विजयशाली पांडुपुत्रावर वीर्यवान् अश्वत्थामा तत्काळ चालून आला व त्यानें आपल्या सुवर्णमंडित प्रचंड धनुष्याच्या योगें त्याच्या-समोवतीं तीक्ष्ण शरांची वृष्टि करून त्यास अगदीं बाणाच्छादित करून सोडिलें आणि मोठ्या निघुरपणानें त्याच्या वक्षस्थळीं बाण-प्रहार केले! राजा, द्रोणपुत्राच्या त्या शरांनीं अर्जुन फारच विद्ध झाला व त्यानें तत्काळ गांडीव धनुष्यानें बाणांचा भडिमार करून अश्व-त्थाम्याचें धनुष्य छेदून टाकिलें! तेव्हां अश्व-त्थाम्यानें समरांगणांत वज्रतुल्य परिघ धारण केला व तो अर्जुनावर सोडिला; पण तो सुवर्ण-भूषित परिघ आपणावर येत आहे असें पाहून अर्जुनानें बाणांचा वर्षाव करून हंसत हंसत तत्काळ तो तोडून टाकिला. तेव्हां वज्र-प्रहारांनीं फोडून टाकिलेल्या पर्वत जमा धाडकन् पडतो तसा तो धाडकन् रणांगणांत पडला. राजा, तें पाहून महारथ द्रोणपुत्राला मनस्वी क्रोध चढला व त्यानें ऐंद्र अस्त्राचें

अभिमंत्रण करून मोठ्या त्वेषानें अर्जुनावर बाणांचा भडिमार चालविला! तेव्हां अर्जुनानें तें अवलोकन करून आपलें गांडीव धनुष्य उचलिलें आणि महेन्द्रानें उत्पन्न केलेल्या श्रेष्ठ अस्त्राचें आवाहन करून अश्वत्थाम्याच्या ऐंद्र अस्त्राचा त्यानें विध्वंस उडविला आणि क्षणांत अश्व-त्थाम्याचा रथ बाणांनीं झांकून टाकिला! त्या समयी अश्वत्थाम्यानें पांडवप्रेरित बाणौघाचा भेद करून उलट मोठ्या शौर्यानें एकदम कृष्णावर शंभर व अर्जुनावर तीनशें क्षुद्र बाण जोरानें फेंकिले! तेव्हां अर्जुनानें गुरुपुत्राच्या मर्मस्थळीं शंभर बाण मारिले आणि तुड्या सैन्याच्या डोळ्यांदेश्वत त्याचे अश्व, सारथि व धनुर्ज्या ह्यांजवर जबर बाणवृष्टि केली! नंतर अर्जुनानें पुनः अश्वत्थाम्याच्या जिव्हाळी बाणांचा वर्षाव केला व त्याच्या सारथ्यावर भल्ल बाण सोडून त्यास रथांतून खाली पाडिलें! तेव्हां अश्वत्थाम्यानें स्वतः अश्वानें नियंत्रण केलें व लागलाच बाणांचा भडिमार चालवून कृष्णार्जुनांस बाणांनीं झांकून टाकिलें! राजा, त्या समयी अश्वत्थामा स्वतः सारथ्यही करीत होता व अर्जुनाशीं लढतही होता! आणि ह्यामुळें त्याचा तो अद्भुत पराक्रम पाहून सर्व योद्ध्यांनीं त्याचे फार फार धन्यवाद गाडले! राजा, नंतर अर्जुनानें मोठ्यानें हंसून रणामध्ये द्रोणपुत्राच्या अश्वानें राशिम तत्काळ क्षुरप्र बाणांनीं छेदिले आणि त्यांजवर बाणांची अतिशय वृष्टि केली; तेव्हां त्या बाणांचा वेग त्या अश्वांस सहन न होऊन ते उघळूं लागले. तें पाहून तुड्या सैन्याला मोठी धास्ती पडली व मोठा हाहाकार उडाला व अशा प्रकारें पांडवांनीं कौरवसैन्याला जरब घालून विजय-प्राप्तीच्या आशेनें जलाल बाणांचा चोहोंकडे त्यावर भडिमार चालविला असतां तें एक-मारवें पळत सुटलें! राजा, नंतर समरांगणांत

कौरवांची अफाट सेना पांडवांनीं जयाच्या आदेशाने, पुनःपुनः नानाविध रीतींनीं युद्ध करणाऱ्या तुझ्या पुत्रांच्या समक्ष, सौबल शकुनीच्या समक्ष व कर्णाच्या समक्ष, उधळून लाविली; आणि तुझ्या पुत्रांनीं जरी तिला आवरून धरण्याचा प्रयत्न केला, तरी चोहों-कडून पांडवांच्या बाणप्रहारांनीं जर्जर झाल्या-मुळे ती म्हणून थांबली नाही! राजा, तेव्हां तुझ्याकडील योद्धे जिकडे तिकडे पळू लागल्यामुळे तुझ्या पुत्रांचे ते मोठे सैन्य घाबरून अगदीं व्याकुल झाले आणि कर्णाने 'थांबा, थांबा' म्हणून कितीही कंठशोष केला तरी महात्म्या पांडवांच्या हातून त्याचा वध होऊ लागल्यामुळे ते रणांगणांत उभे राहिले नाही! व ह्याप्रमाणे कौरवांच्या सैन्याची अगदीं दाणा-दाण झालेली पाहून, 'आतां आपणांस खचित जय मिळणार' अशी पांडवांनीं गर्जना केली!

धृतराष्ट्रा, तेव्हां दुर्योधन मोठ्या प्रेमाने कर्णाला म्हणाला, "बा कर्णा, ही आपली प्रचंड सेना पांचलांनीं कशी आर्त करून सोडिली हे पाहिलेसना? अरे, तू येथे असतांही भीतीनें गांगरून ही धूम पळत आहे! ह्या-साठीं प्रस्तुत सैन्यानें जें उचित तें तू कर. हे वीरा, हे षष्ठा पांडवांनीं उधळून दिलेले महत्त्वा-वधि योद्धे समरांगणांत 'कर्णा, कर्णा' असेंच ओरडत आहेत!" राजा, ह्याप्रमाणे दुर्योधनाचे भाषण श्रवण करून त्या बलिष्ठ कर्णाने हंसत हंसत मद्राधीपाला म्हटले, "शल्या, माझ्या बाहूंची शक्ति व अस्त्रांचे सामर्थ्य पहा. आज मी पांडवांसहवर्तमान सर्व सृजयांना युद्धांत ठार करितों. हे नरशार्दूल, आतां रथ चालू कर, आपल्यास खचित यश मिळेल!" असे बोलून प्रतापशाली सूतपुत्राने पुरातन व श्रेष्ठ असे विजय धनुष्य हातांत घेतले आणि ते सज्ज करून त्याचे पुनःपुनः आस्फालन केले

नंतर त्यानें शपथा घेऊन व खात्री देऊन, जे योद्धे युद्धविमुख होऊन पळून चालले होते त्यांची समजूत घातली; आणि त्यांस आश्वासन देऊन परत फिरविल्यावर, त्या महा-बल व अमेयपराक्रमी वीराने भार्गवास्त्राची योजना केली. राजा, नंतर समरांगणांत कर्णाच्या त्या विजय धनुष्यापासून कोट्या-वधि बाण सुटू लागले आणि त्या घोर व देदीप्यमान अशा कंकपुंख व मयूरपुंख शरांनीं सर्व पांडवसेना आच्छादित होऊन सर्वत्र घन अंधःकार पडला! राजा, त्या समयी पांचालांच्या सैन्यांत त्या बलिष्ठ भार्गवास्त्राच्या योगे मोठा घोर अनर्थ होऊ लागला व त्यामुळे भयंकर हाहाः-कार उद्भवला! राजा, तेव्हां सहस्रावधि हत्ती, घोडे, रथ व नर चोहोंकडे धडाधड पृथ्वीवर मरून पडू लागले व त्यामुळे सर्व पृथ्वी हाद-रून जाऊन थरथरां कांपू लागली! राजा, त्या वेळीं पांडवांचे ते सर्व अवाढव्य सैन्य घाबरून गेले आणि एकटा महावीर कर्ण मात्र धुम्र-रहित अग्नीप्रमाणे शत्रूंचे भस्म करित शोभू लागला! राजा, त्या समयी चेदि व पांचाल ह्यांचा कर्णाने विध्वंस आरंभिला; तेव्हां वण-व्यांत सांपडलेल्या हत्तीप्रमाणे ते चेदिपांचाल वीर चोहोंकडे बेहोष होऊन देहभान विम-रले आणि ते वाघांप्रमाणे मोठमोठ्यानें गर्जू लागले! राजा, त्या घोर संग्रामांत अम्बे-रीस त्यांची भगाने फारच त्रेधा उडाली; आणि ते इतका आक्रोश करू लागले की, जणू काय प्रलयकाली मर्त्य प्राणी आत्मस्वर काढीत आहेत असा भास झाला! राजा, कर्णाने जेव्हां त्यांचा संहार आरंभिला तेव्हां पशुपक्ष्यादिकांना सुद्धां फार भय वाटले! त्या मृतपुत्राने जेव्हां सृजयांची घोर हत्या चालू केली, तेव्हां तेवारं-वार कृष्णार्जुनांना मोठमोठ्यानें हाका मारू लागले! जणू काय तेव्हां प्रेतगजाच्या नगरी-

तील तीं प्रेते भयभीत होत्यातीं प्रेतराजालाच आवाहन करीत आहेत असा भास झाला ! राजा, ह्याप्रमाणे पांडुपुत्रांच्या सेनेत घोर हाहाकार झालेला श्रवण करून व कर्ण हा त्यांत भार्गवास्त्राने घोर अनर्थ करीत आहे, असे पाहून अर्जुन वामदेवाला म्हणाला, 'हे महाबाहो कृष्णा, ह्या भार्गवास्त्राचा उग्र प्रताप अवलोकन केलास काय ? ह्या अस्त्राचा रणांत प्रतिकार अगदी अशक्य होय ! तमाच ह्या महारणांत हा कर्ण, किती खचला आहे तो पहा. ह्याने केवळ यमाप्रमाणे दारुण कर्म आरंभिले आहे ! हा पहा हा एकसारखा घोड्यांना इशारा करीत माझ्याकडे टोकारून पहात आहे ! आतां मला कर्णापुढून पळूनही जाणे शक्य नाही ! युद्धांत मनुष्य जिवंत राहिला तर त्यास जय किंवा अपजय प्राप्त होईल; परंतु तो जर मेलाच, तर मग त्याचा नाशच झाला; मग त्याला जय मिळण्याची आशा तरी आहे का ?' राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे अर्जुनाचे भाषण श्रवण करून कृष्णाने त्या महाबुद्धिवाधर्मजयाशीं समयोचित भाषण केले. त्या समयी कृष्ण म्हणाला, 'पार्था, कर्णाने युधिष्ठिराला अतिशय वायाळ केले आहे, ह्यामाठी प्रथम तूं त्याची भेट घेऊन त्याला आश्वासन दे आणि मग कर्णाला वधण्याच्या उद्योगास लाग.' राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे भाषण करून कृष्णाने युधिष्ठिराची भेट घेण्यासाठी अर्जुनाचा रथ तिकडे चालविला; आणि मध्यंतरी कर्ण हा अधिक दमून गेला म्हणजे त्यास अल्प आयामाने मारितां येईल असे त्याने अंतर्दामी योजिले ! राजा, नंतर तत्काळ अर्जुन हा बाणविद्ध झालेल्या धर्मराजास पहाण्याच्या इच्छेने रथांतून जात असतां त्याने सर्व सैन्य नीट निरगून पाहिले. पण त्यांत त्याला धर्मराज युधिष्ठिर कोठेही दिसला नाही !

अध्याय पांसष्टावा.

—:०:—

युधिष्ठिर व कृष्णार्जुन ह्यांची भेट.

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे दिव्य धनुष्य धारण करणाऱ्या धनंजयाने द्रोणपुत्र अश्वत्थाम्याचा पराजय करून मोठा दुर्घट प्रताप गाजविल्यावर शत्रूंनी त्याच्यापुढे अगदी हात टेकले, तेव्हां तो आपले सैन्य अवलोकन करण्याकरितां तेथून निघून पांडवसैन्याच्या समीप येऊन पहातो तों त्यांतील योद्धे आप-आपल्या टोळ्यांनिशी कौरवसैन्यांशी लढत आहेत असे त्याच्या दृष्टीपडले. राजा, तेव्हां तो विजयशाली स्वयमाची अर्जुन आपल्या सन्निध प्राप्त झाला असे पाहून त्या दूरवीरांस मोठा आनंद झाला आणि नंतर त्या महात्म्या पृथापुत्राने त्या स्थळी युद्धाला तोंड देऊन उभ्या असलेल्या त्या अनेक रथ्यांच्या पूर्वे पराक्रमाची प्रशंसा केली. मग त्याने तेथें 'युधिष्ठिर कोठे आहे ?' म्हणून चौकशी केली; पण त्यास सुगावा लागला नाही. तेव्हां तो मग मोठ्या त्वरेने भीमाजवळ गेला आणि त्याने धर्मराज युधिष्ठिर कोठे आहे म्हणून त्यास विचारिले. तेव्हां भीम म्हणाला, 'अर्जुना, कर्णाच्या बाणप्रहरांनी अत्यंत विव्दल होऊन धर्मराज येथून युद्धविमुख होऊन निघून गेला; आतां तो बहुधा कचित्च जिवंत असेल !' राजा धृतराष्ट्रा, तेव्हां अर्जुन भीमाला म्हणाला, 'भीमा, तूं राजाची मुशाली काढण्यासाठी तेथून त्वरित जा. खचित तो कर्णाच्या बाणप्रहरांनी अतिशयित विद्ध झाल्यामुळे निमावा घेण्यासाठी शिबिरांत गेला असेल. भीमा, धर्मराजाच्या कुशलतेविषयी तूं अगदी शंका घेऊं नको. पहा, त्या महाशक्तिमान् वीरावर द्रोणाचार्याने अगदी जळाल शत्रूंचा भयंकर वर्षाव केला अगताही द्रोणाचार्याच्या वधापर्यंत तो जयाची-

आशा बाळगून जिवंत राहिला ! ह्यास्तव तो महापराक्रमी पांडवाग्रणी युधिष्ठिर आज कर्णाच्या बाणांनी युद्धभूमीवर प्राणमंकाटांत पडला अमेळ इतकेंच; ह्यासाठी तूं त्याची कुशलवार्ता काढण्यासाठी त्वरित शिबिरांत जा. मी येथें रहातो व शत्रुसमुदायांना अडवून धरितों.' राजा धृतराष्ट्रा, तेव्हां भीमसेन म्हणाला, 'हे महाबलवंता, राजाचा समाचार काढण्यास तूं स्वतःच जा. मी जर आतां येथून गेलों, तर शत्रूंकडील महान् महान् योद्धे 'भीम भिन्ना आहे' म्हणून डांगोरा पिटतील !' राजा धृतराष्ट्रा, तेव्हां अर्जुन भीमसेनास म्हणाला, 'हे भीमसेना, माझ्या अग्रभागी संशप्तक लढण्यास सिद्ध असल्यामुळे आज त्यांना वधिल्याशिवाय शत्रुसैन्याच्या पुढून मला निवृत्त जातां येत नाही.' राजा, त्यावर भीमसेन अर्जुनाला म्हणाला, 'अर्जुना, आज समरभूमीवर मी सर्व संशप्तकांशी एकठा युद्ध करितों; तूं आतां खुशाल शिबिरांत जाऊन धर्मराजाचें क्षेमवृत्त काढ. राजा धृतराष्ट्रा, सत्यपराक्रमी भीमसेनाचें तें भाषण श्रवण करून महात्मा धैर्यशाली कपिवृज अर्जुन हा युधिष्ठिराची भेट घेण्यास निघाला व त्यानें वृष्णि-कुलवर्तम अनंतवीर्ये कृष्णाला म्हटलें, 'कृष्णा, हा सैन्यसागर सोडून देऊन आपला रथ शिबिराकडे चालव. केशवा, अजातशत्रु युधिष्ठिराला भेटण्याची मला फारच उत्कंठा झाली आहे.'

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर सर्व दाशाहर्षमध्ये अग्रगण्य असा तो कृष्ण अश्वाना इषारा करण्याच्या वेळी भीमाला म्हणाला:—'भीमा, तूं जें कृत्य करण्याचें पतकरिल्लें आहेस, तें तुला मुळीच अशक्य नाही. मी आतां जातो, तूं आज पार्थाच्या शत्रूंना (संशप्तकसमुदायांना) ठार मार.' राजा धृतराष्ट्रा, मग गरुडाप्रमाणें धावणाऱ्या अशा त्या अश्वाना मोठ्या वेगानें चालवून, जेथें युधिष्ठिर राजा होता

तेथें कृष्णानें अर्जुनाचा रथ नेला. नंतर ते उभयतां पुरषोत्तम कृष्णार्जुन हे रथांतून खाली उतरले व त्यांनी एकठा युधिष्ठिर जेथें शय्येवर पडून राहिला होता तेथें जाऊन त्यास अभिबंदन केलें. राजा, त्या क्षमामूर्ति नरशार्दूल वीरश्रेष्ठ धर्मराजाच्या सन्निध जेव्हां ते कृष्णार्जुन गेले, तेव्हां जणू काय अश्विनीकुमार मोठ्या आनंदानें इंद्राच्या भेटीसच प्राप्त झाले असे वाटलें ! नंतर, सूर्यानें जसे अश्विनीकुमारांचें अभिनंदन केले किंवा बृहस्पतीनें जसे महासुर जंभाच्या वधानंतर शक्रविष्णूंचें अभिनंदन केलें, तसें त्या धर्मराजानें कृष्णार्जुनांचें अभिनंदन केलें; आणि अर्जुनानें कर्ण हा खचित रणांगणांत वधिला असें मानून प्रेमानें व आनंदानें सद्बोधित होऊन धर्मराजानें कृष्णार्जुनांशी मोठ्या गौरवाचें व मनोरम असें भाषण केलें.

अध्याय सहासष्टावा.

—०—

युधिष्ठिराचें भाषण.

युधिष्ठिर म्हणाला:—कृष्णार्जुनहो, मी तुमचें स्वागत करितों. तुमच्या भेटीनें मला फारच आनंद झाला आहे. तुम्हां दोघांस कांहीं एक इजा न होतां तुमच्या हातून कर्णाचा वध झाला हें फार चांगलें झालें ! अहो, कर्णाचें वर्णन काय करावें ? सर्व शस्त्रास्त्रांत विशारद असा तो कर्ण युद्धांत अगदीं सर्वाप्रमाणें क्षुब्ध होत असे. सर्व कौरवांचा तोच पुढारी असून त्यांचें सर्व सुख व बल तोच होता. धनुर्धर वृषमेन व सुषण हे त्याच्या संरक्षणार्थ सतत तत्पर अमंत. प्रत्यक्ष भार्गवानें त्याच्यावर अनुग्रह करून अस्त्र दिल्यामुळे त्यास विलक्षण सामर्थ्य प्राप्त झालें होतें; आणि त्यामुळेच तो सर्व लोकांत अजिंक्य व श्रेष्ठ असा बनला होता. तो लोकमान्य महारथ धार्तराष्ट्रांचा

त्राता असून कौरवसैन्यांचा नायक होता. तो शत्रुसैन्यांचा संहारक असून अहितचित्ताकांच्या समुदायांचा विध्वंसक होता. तो नित्य दुःखी-धनाच्या कल्याणाकरिता व आमच्या दुःखाकरिता तत्पर असे. घोर रणांत प्रत्यक्ष इंद्र-प्रमुख देवांचीही त्याच्या वाटेम जाण्याची छाती नव्हती. त्याचा प्रताप अगदी अग्नी-मारुता व बल अगदी वायुमारुत होतें. पाताल-लोकाप्रमाणें तो गंभीर (खोल), सुहृदांचा तो आनंदवर्धक आणि माझ्या मित्रांचा तो अंतक होता; ह्यास्तव घोर युद्धांत त्याम ठार मारून मुद्वानें तुम्ही सुखरूपपणें मजप्रत आलां हें पाहून, जणू काय माझ्यापुढें दैत्यास मारून दोन देवच प्राप्त झाले आहेत असें मला भासतें. कृष्णार्जुनहो, आज त्या प्रतापी वीरानें माझ्याशीं फार भयंकर युद्ध केलें. युद्धांत त्याचें तें घोर कर्म पाहून, जणू काय सर्व प्राण्यांचा संहार-कर्ता प्रत्यक्ष यमच माझ्याशीं झगडत आहे असें मला वाटलें. त्यानें माझा ध्वज छेदिला आणि पार्ष्णि (पाठ राखणारा) व सारथि ह्यांस वधिलें; आणि युयुधान, धृष्टद्युम्न, नकुल-सहदेव, शिखंडी, द्रौपदीचे पुत्र व पांचाल ह्या सर्वांसमक्ष त्यानें माझे घोडे मारिले. आज वीर्यशाली कर्णानें प्रथम युयुधानादिक पांडव-वीरांना व दुसऱ्या पुष्कळ सैन्यसमूहांना जिकिलें आणि मग माझ्याशीं घोर संग्राम आरंभिला; पण मी जरी त्याच्याशीं लढण्याची अगदीं पराकाष्ठा केली, तरी त्यानें मला अखेरीस जिकिलें. नंतर त्यानें माझा पाठलाग केला व माझ्या मरसकांचा पराभव करून तो मला पुष्कळ दुरुत्तरें बोलला व निःसंशयपणें त्यानें माझा अवमान केला. आज मी जो जिवंत राहिलों, त्याचें श्रेय त्या पराक्रमी भीमसेनाला आहे. अहो, फार बोलण्यांत हांशील तें कोणतें ? आज कर्णानें माझ्याशीं जें वर्तन केलें तें मला

सहन होत नाही ! अर्जुना, ज्याच्या भयानें तेरा वर्षपर्यंत मला रात्रीची झोप आली नाही व दिवसासही कशापासून सुख वाटलें नाहीं, त्याच्या द्वेषानें मी अगदीं नखशिखांत पेटलों आणि त्याच्या हातून मी आतां मरणार अशी जेव्हां वेळ आली, तेव्हां वाघ्रीणस पक्ष्याप्रमाणें मी पलायन करून हा येथें येऊन पडलों ! माझा सर्व वेळ त्याच्याविषयी चिंतन करण्यांत गेला. मी युद्धांत कर्णाचा नाश कसा करूं शकेन, हाच मला एकसारखा घोर लागला होता. जगेपणीं व झोंपेंत मला जिकडे तिकडे कर्णच सदा दिसत होता. मला हें सर्व जगत् कर्णरूपच भासत होतें. अर्जुना, कर्णाच्या भीतीनें मी जेथें जेथें गेलों, तेथें तेथें मला कर्णच माझ्यापुढें उभा आहे असें दिसलें. आणि शेवटीं त्या महाशूर कर्णानेंच मला हय व रथ यांसह जिकलें व ह्या ठिकाणीं जिवंत येऊ दिलें ! परंतु आज रणास शोभ-विणाऱ्या कर्णानें जर मला ह्याप्रमाणें अगदीं जखमी करून टाकिलें आहे, तर मग ह्या माझ्या जीविताचा तो उपयोग काय ? आणि राज्य मिळवून तरी मला काय करावयाचें आहे ? अर्जुना, भीष्म, द्रोण किंवा कृप ह्यांच्याशींही लढत असतां जे दुःख मला प्राप्त झालें नाहीं, तें दुःख ह्या महारथ सूतपुत्राशीं लढत असतां आज माझ्या वांट्यास यावें काय ? अर्जुना, आज मी तुला तुझे क्षेम विचारीत आहे ह्याचें तरी कारण हेंच. असो; आतां तूं कर्णाला कशा प्रकारें वधिलेंस तें सर्व वृत्त सविस्तर सांग. अर्जुना, इंद्राप्रमाणें बलवान्, यमाप्रमाणें पराक्रमी व परशुरामाप्रमाणें अस्त्रविद्याप्रवीण अशा त्या कर्णाचा तूं कसा बरें नाश केलास ? अरे, तो सर्व प्रकारच्या युद्धांत निष्णात व जगत्प्र-ख्यात महारथ धनुर्धरांमध्ये श्रेष्ठ व जगांत एक अद्वितीय पुरुष होता; धृतराष्ट्र व त्याचे पुत्र

हे जे त्यास इतका मान देत आले ह्याचें कारण त्याच्या हातून तुझा वध घडेल अशी त्यांची पूर्ण श्रद्धा होती हेंच होय; आणि असें असतां तूं त्याचा वध केलास तो कसा बरें ? अर्जुना, दुर्योधनाचें तर मत असें होतें कीं, सर्व कौरव-वीरांत जर कोणी तुला मारण्यास समर्थ असला तर तो एकदा कर्णच; तेव्हां त्याला तूं ज्या युक्तीनें मारिलेंस ती युक्ति कोणती ती सांग पाहूं. अर्जुना, अशा त्या योद्ध्याचें त्याच्या सुहृदांच्या डोळ्यादेखत तूं मस्तक उडविलेंस म्हणजे खरोखरी सिंहानें रुखेंचें मस्तक उडवावें तसेंच हें तूं कर्म केलेंस ह्यांत संदेह नाही. अर्जुना, तुला शोधण्याकरितां त्या सूतपुत्रांनें समरभूमीवर दशदिशा धुंडाळिल्या, व रणांगणांत जो तुझा पत्ता लावून देईल त्याला हर्तांप्रमाणें बळकट असे सहा बेल देण्यास जो तयार झाला, तो दुष्ट कर्ण प्रस्तुतकालीं तुझ्या कंकपत्र बाणांनीं विद्ध होतसाता रणभूमीवर मरून पडला आहे काय ? अर्जुना, तूं रणांगणांत कर्णास मारिलें ही गोष्ट मला फारच आवडली; कारण तो चढून जाऊन गर्वांनें व शौर्याच्या अहंपणानें एकसारखा तुझा शोध करीत फिरत होता; आणि तुझा सुगावा लागावा म्हणून दुसऱ्यांस सुवर्णाचा उत्तम रथ, हत्ती, घोडे व बेल देण्यास तयार झाला होता; आणि शिवाय तो नीच तुझी नेहमी स्पर्धा करीत असे. अर्जुना, जो नेहमी शौर्याच्या घमेडीनें कौरवसभेंत वाटेल तशी बदाई मारीत असे आणि ज्यावर दुर्योधनाचें अतिशय प्रेम होतें, त्या पातकी कर्णाला तूं आज रणांत मारिलेंसना ? अर्जुना, तुझ्या धनुष्यापासून सुटलेल्या आरक्त बाणांच्या प्रहारांनीं सर्व गात्रें छिन्नविच्छिन्न होऊन तो पापी कर्ण आज धारातीर्थी पतन पावून त्या दुर्योधनाचे जणू काय देवही बाहु तुट-

१ एक जातीचा हरिण.

लेना ? अर्जुना, राजसभेंत दुर्योधनाला प्रसन्न करून घेण्याकरितां कर्ण हा मोठ्या घमेडीनें “ अर्जुनाला मी मारीन ! ” म्हणून जे मूर्खपणाचे उद्गार काढीत असे ते अखेरीस खोटे ठरलेना ? अरे, जोंपर्यंत अर्जुन जिवंत आहे, तोंपर्यंत मी मुळीच पाय धुणार नाहीं म्हणून ज्यानें नित्य नियम पाळला होता, तो कर्ण आज मृत झाला ना ? अरे, ज्या दुष्ट दुरात्म्यानें कौरवसभेंत मोठमोठे वीर अधिष्ठित असतां द्रौपदीला म्हटलें की, “ द्रौपदि, ह्या दुबळ्या, नीच व हीनवीर्य पांडवांना तूं कां बरें सोडीत नाहीस ? ” आणि तशीच ज्यानें प्रतिज्ञा केली की, “ कृष्णार्जुनांचा वध जर मी केला नाहीं तर मी युद्धांतून परत येणार नाहीं ! ” तो पापबुद्धि कर्ण तुझ्या बाणांनीं भग्न होऊन भूतलावर पडला ना ? अर्जुना, संजयकौरवांचा जो हा घोर संग्राम झाला आणि ज्यामध्ये मला शेवटीं ही विपन्न अवस्था भोगावी लागली त्याची तुला माहिती लागल्यामुळें तर तूं आज कर्णाला मारिलेंस नाहीना ? अर्जुना, त्या महाभूखावर मांडीव धनुष्याच्या योगें जलाल बाणांची वृष्टि करून त्याचें तें कांतिमान् मस्तक युद्धामध्ये तोडून तें तूं धडापासून निराळें केलेंस काय ? अर्जुना, मला तर असे वाटतें कीं, माझ्यावर कर्णानें बाणांचा भडिमार केला तेव्हां मीं तुझे स्मरण करून ‘ अर्जुना, तूं ह्या कर्णाला मार ’ म्हणून जें ध्यान केलें, तें माझे ध्यानच तूं कर्णाच्या वधानें सफल करून दाखविलेंस ! अर्जुना, ज्याच्या आश्रयामुळें चढून जाऊन दुर्योधन आमचा धिक्कार करीत असे, त्या कर्णाला, आज ठार करून तूं त्या दुर्योधनाला लंगडा पाडिलासना ? अर्जुना, ज्यानें पूर्वीं सर्व कौरवांसमक्ष समेमध्ये आम्हांला बंद असें म्हटलें, त्या दुष्ट व खुनशी कर्णाला तूं आज युद्धांत गांठून वधिलेंस काय ? पूर्वीं जो नीच सूत-

पुत्र सौबलानें निकलेल्या द्रौपदीला देखील फरफरां ओढीत आण म्हणून बोलावयास चुकला नाही, त्याला तूं आज ठार केलेंमना ? अरे, पितामह भीष्मानें अर्धरथ म्हटल्याबद्दल ज्या मूर्खे धनुर्धराला राग आला व ज्यानें सर्व भूमंडळावर श्रेष्ठतम अशा त्या भीष्माची हेलना केली, त्या कर्णाला तूं वधिलेंमना ? बरे, माझ्या हृदयांत संतापापासून उत्पन्न झालेला व मानखंडनारूप वायूनें अधिक चेतविलेला प्रखर अग्नि भडकलेला आहे, तर “ आज मी युद्धांत कर्णाला मारिलें ” अमें मजपाशीं बोल व तो अग्नि विझव. अर्जुना, कर्णवधाची वार्ता मला मोठी दुर्लभ वाटते; ह्यासाठी तूं कर्णाला कशा प्रकारें मारिलेंस तें सांग. हे प्रवीरा, वृत्रामुराचें इंद्राकडून वधवृत्त कळण्याकरितां भगवान् विष्णु हा जशी चिंता करीत होता, तशीच चिंता मी कर्णवधाचें वृत्त तुजपासून कळण्याकरितां नित्य करीत आहे !

अध्याय सदुसष्टावा.

—०:—

अर्जुनाचें भाषण.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा. ह्याप्रमाणें धर्मशील, विजयशाली व धैर्यवान् युधिष्ठिर राजानें कर्णाविषयी जे कांही संतापाचे उद्गार काढिले, ते श्रवण करून त्याला महात्मा अनंतवीर्य अतिरथ अर्जुन अमें बोलला.

अर्जुन म्हणाला:—हे धर्मराजा, मी आज संशयसाक्षांशी युद्ध करीत असतां कौरवांकडील प्रमुख वीर अश्वत्थामा हा सर्पतुल्य भयंकर शरांचा भडिमार करीत एकाएकी माझ्या अग्रभागी प्राप्त झाला आणि त्यानें मेघघर्जनेप्रमाणें घणघणाट करणाऱ्या माझ्या रथाभोंवती आपल्या सैन्याचा वेढा दिला. तेव्हां मीं पांचशें कौरव-

वीरांना ठार मारिलें व मग खुद्द अश्वत्थाम्यावर चाल केली. राजा, त्या वेळीं मला पाहतांच, द्विपेन्द्र ज्याप्रमाणें मिंहावर उडी घालितो, त्याप्रमाणें त्यानें मोठ्या निकरानें मजवर उडी घातली; आणि मीं जो कौरवसैन्याचा संहार चालविला होता, तो बंद पाडण्याचा यत्न केला. तेव्हां कौरवांकडील त्या प्रबळ व अदळ अशा द्रोणपुत्र अश्वत्थाम्यानें सहाणेवर धार देऊन विपाप्रमाणें किंवा अग्नीप्रमाणें जलाल केलेले बाण माझ्यावर व जनार्दनावर मारून आम्हांस अगदी आतें करून सोडिलें. राजा तो योद्धा माझ्याशीं झुंजत असतां त्याच्याबरोबर आठ-आठ बैलांच्या आठ गाड्या बाणांनीं भरलेल्या होत्या ! तितके सर्व बाण त्यानें माझ्यावर सोडिले, पण मी उलट बाणवृष्टि करून, वारा जमा मेघसमुदायाचा विध्वंस उडवितो, तसा त्या सर्वांचा विध्वंस उडविला ! धर्मराजा, नंतर अश्वत्थाम्यानें आणखी अनेक बाणांचे समूह मोठ्या त्वेपानें कर्णापर्यंत प्रत्यंचा ओढून मजवर सोडिले आणि आपल्या अंगी जितकें अखनैपुण्य व बळ होतें तितक्या सर्वांचा मोठ्या निकरानें उपयोग करून त्यानें पावसाळ्यांतील सजल मेघांप्रमाणें मजवर बाणांचा पाऊस पाडिला ! राजा, त्या समयी तो भात्यांतून बाण केव्हां काढी, धनुष्याला ते केव्हां जोडी, शत्रूवर सोडी ते उजव्या हातानें की डाव्या हातानें, कोरे कांहींच समजत नसे; आणि तो समरांगणांत एकसारखा बाणांचा भडिमार करी तेव्हां त्याचें तें ताणलेलें धनुष्य मंडलाकार गरगर फिरत आहे, इतकें मात्र दिसे ! राजा, त्या वेळीं अश्वत्थाम्यानें माझ्यावर व वासुदेवावर पांच पांच निशित बाण टाकून आह्मां दोघांना विद्ध केलें ? परंतु मी लागलेच एका निमिषांत तीस वज्रतुल्य तीक्ष्ण बाण त्याजवर सोडिले आणि ते

त्याच्या देहांत घुसून तो क्षणांत साळपक्ष्यासारखा दिसू लागला ! राजा, ह्या प्रकारें मी अश्वत्थाम्यास शरविद्ध केलें असतां त्याच्या देहांतून रक्ताचे पाट वाहू लागले आणि मग मी त्याप्रमाणेंच बाकीच्या योद्ध्यांवर बाणांचा भडिमार केल्या-
नंतर त्यांचीही वाट तीच होऊन ते देखील रक्तांत अगदीं न्हाले, तेव्हां नाइलाज होऊन अश्व-
त्थामा कर्णाच्या रथसेनेंत शिरला. राजा, अशा प्रकारें अश्वत्थाम्याची शक्ति कुंठीत होऊन तो कर्णाश्रयास गेला, तेव्हां कर्णानें त्याच्या त्या पराजय पावलेल्या सैन्याची स्थिति अवलोकन केली असतां त्यांतले वीर अगदीं भयभीत झाले असून हत्ती व घोडे अगदीं पळत सुटले आहेत असे त्याच्या दृष्टीस पडलें. राजा, नंतर त्या निग्रही कर्णानें पन्नाम श्रेष्ठ रथांसह एकदम मजवर चाल केली, परंतु मी त्या सर्व रथांचा तत्काळ विध्वंस उडवून आणवी पुढें युद्ध न करितां तुला भेटण्यासाठी जलदीनें येथें निवून आलों. धर्मराजा, तेव्हां पांडवसेनेची फारच भयप्रद स्थिति झाली. ज्याप्रमाणें सिंहाला पाहून गाई अगदीं गतप्राण होतात, त्याप्रमाणें सर्व पांचाल कर्णाला पाहून अगदीं गतप्राण झाले. प्रभद्रक तर अगदीं कर्णाच्या कचाट्यांतच सांपडले. जणू काय ते मृत्यूच्या विवृत तोंडांतच उभे राहिले ! कर्णानें तत्काळ त्यांच्या सतराशें रथांचा नाश करून त्यांस यम-
सदनीं पाठविलें आणि एकमारखा घोर संहार आरंभिला. राजा, हा त्याचा क्रम आह्मी तेथें जाईपर्यंत चालू होता. आह्वांला त्यानें पाहिल्या-
नंतर मात्र मग ती स्थिति बदलली, परंतु तेव्हां आह्मी असें ऐकिलें की. अश्वत्थाम्यानें तुला गांठून वायाळ केलें व मग कर्णानेंही तुझ्यावर क्रूर दृष्टि फेंकिली. ह्यामुळें तू रणांतून निवृत्त झालास. अमोः धर्मराजा, दुष्ट कर्णा-
पासून पगडमुग्न होऊन येथें आल्यामाग्या

तुला विसावा तरी मिळाला काय ? राजा, नंतर कर्णानें अपूर्व भार्गवाख सोडून जो कांहीं अनर्थ केला तो मग माझ्या दृष्टीस पडला. प्रस्तुत संज-
यांमध्ये दुसरा एकही योद्धा असा नाही की, जो आज त्या महारथ कर्णापुढें टिकाव धरील. ह्यासाठी त्याच्या नाशकारितां मलाच उद्युक्त झालें पाहिजे. आतां शैनेय सात्याकि व धृष्टद्युम्न ह्यांनीं माझ्या रथाचीं चक्रे राखावीं, शूर युधा-
मन्यु व उत्तमौजा ह्यांनीं माझ्या पृष्ठभागाचें संरक्षण करावें, आणि मी बलाढ्य रथांत अधि-
रूढ होऊन शत्रुसैन्यांत प्रवेश करावा, हेंच इष्ट होय. इंद्रानें जसें वज्राला गांठिलें तसें आज मी रणांगणांत कर्णाला गांठीन व त्या-
च्याशी लढेन; पण तो आज माझ्या दृष्टीस कसा पडतो हीच काळजी आहे. राजा, चल, आणि मी विजयप्राप्तीकरितां कर्णाशीं किती निकराचें युद्ध करितां तें पहा. राजा, प्रस्तुत रणांगणांत प्रभद्रक कर्णाशी लढत आहेत, पण ते जणू काय मदोन्मत्त बैलांच्या शिंगांच्या कचाट्यांतच सांपडले आहेत ! राजा, रणभूमी-
वर मऱ्या आठ हजार राजपुत्र स्वर्गलोकाच्या प्राप्तीकरितां युद्ध करीत आहेत. ह्यासाठीं आज जर मी घोर युद्ध करून मोठ्या आवेशानें कर्णाला त्याच्या बांधवांसुद्धां वधिलें नाही, तर प्रतिज्ञाभंगाचें घोर पातक मला लागेल ! म्हणून, धर्मराजा, मी आतां तुझा निरोप घेतों; तूं मला विजयप्राप्त्यर्थ आशीर्वाद दे. हे पहा कांय भीमसेनाला ग्रामीत आहेत ! मी आतां त्वरित रणांगणांत जाऊन कौरवांच्या सर्व सैन्याला व कर्णाला टांग मारितों.

अध्याय अडसष्टावा.

युधिष्ठिराचा क्रोध !

मंजय मांगतो. — राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें

महावीर्यशाली कर्ण अद्याप जिवंत असून प्रताप गाजवीत आहे, असे जेव्हां युधिष्ठिराला कळलें, तेव्हां त्या अमितबल धर्मराजाला अर्जुनाविषयी फारच क्रोध आला व कर्णाच्या शरानीं संतप्त झालेला तो ज्येष्ठ पांडुपुत्र अर्जुनाला म्हणाला कीं, “अर्जुना, तुझे सैन्य सध्या चोहोंकडे पळत असून त्याची अगदी गर्हणीय स्थिति झाली आहे, आणि अशा स्थितीत तू भीमाला सोडून देऊन कर्णाचा वध न करितां आपला जीव राखण्याकरितां येथें आलास; तेव्हां मला असे वाटतें कीं, पृथेच्या उदरीं तू जन्मास न येतास तर फार चांगलें झालें असतें! अर्जुना, तू द्वैतवनांत काय बोललास तें तुला आठवतेंना? ‘खरोखरी मी एकटा रथावर आरूढ होऊन कर्णाला ठार मारीन;’ असें तू तेव्हां म्हणालास आणि आज कर्णाच्या भीतीनें गांगरून जाऊन भीमसेनाला रणांत टाकून येथें पळून आलास ह्याला काय म्हणावें? जर त्या वेळीं ‘मी कर्णाशी युद्ध करूं शकणार नाही’ असें मला तू द्वैतवनांत साफ सांगितलें अमर्तेस, तर आह्मी सर्व प्रसंगास अनुरूप अशी सगळी व्यवस्था करून मगच ह्या कृत्यास तयार झालें असतों! अर्जुना, ह्याप्रमाणें तू त्या समर्थी विहित गोष्ट करण्याची सोडून दिलीस आणि उलट माझ्याशी कर्णवधाची प्रतिज्ञा केलीस व आज ती प्रतिज्ञा पूर्ण न करितां तसाच मजकडे निवून आलास; तेव्हां आम्हांला भरशत्रूच्या मध्ये अणून खडकावर आपटून आमचे तुकडे तुकडे उडवून टाकिलेस ते कां वरं? अर्जुना, तुझ्यापासून आमचें बहुत कल्याण होईल व आमचे मनोरथ सिद्धीस जातील, ह्या आशेनें आह्मी तुला पुष्कळ आशीर्वाद दिले; पण ते सर्व विफल होऊन, फलार्थी जनांना ज्याप्रमाणें फलांनीं भरलेला वृक्ष न मिळतां केवळ पुष्पांनीं भरलेला वृक्ष मिळावा, त्याप्रमाणें आमची अवस्था

झाली! अर्जुना, ज्याप्रमाणें आमिषाच्या रूपांनें गळ हाणीं यावा किंवा अन्नाच्या रूपांनें विषाची प्राप्ति व्हावी, त्याप्रमाणें राजाच्या रूपांनें आम्हांस हा विनाश मात्र भोगणें आला! अर्जुना, आज तेरा वर्षेपर्यंत सतत आशेनें आह्मी तुझ्यावर अवलंबून राहिलों आणि शेतांत बीं पेरल्यावर देव वेळच्या वेळीं पाऊस पाडील असा भरंवसा ठेवून जसें स्वस्थ बसावयाचें तसे आम्ही तू पराक्रम करशील असा भरंवसा ठेवून स्वस्थ बसलों; पण अखेरीस तू आम्हां सर्वांस नरकांत लोटलेंस! मूर्खी अर्जुना, तू जन्मास येऊन सात दिवस झाल्यावर आकाशवाणीनें कुंतीला सांगितलें कीं, “हे कुंति, हा तुझा पुत्र इंद्राप्रमाणें प्रताप गाजवील व सर्व शूर शत्रूंना वधील! ह्याच्या ठिकाणी दिव्य तेज असल्यामुळे हा खांडववनांत देवांच्या समुदायांना व इतर सर्व प्राण्यांना जिंकिल. हा मद्र, कलिंग व केकय ह्या देशांना हस्तगत करील आणि सर्व राजांमध्ये कौरवांना वधील. ह्याच्यापेक्षां श्रेष्ठ असा धनुर्धर पुढें व्हावयाचा नाही. ह्याला कोणताही प्राणी केव्हांही जिंकणार नाही. हा मोठा इंद्रियनिग्रही होऊन सर्व विद्यांत नैपुण्य मिळवील आणि केवळ आपल्या इच्छेनें सर्व भूतांना स्वाधीन करून घेईल. कुंति, हा तुझा महात्मा पुत्र कांतीनें चंद्राप्रमाणें, वेगांनें वायू-प्रमाणें, स्थैर्यानें मेरूप्रमाणें, शांतीनें पृथ्वी-प्रमाणें, तेजांनें सूर्याप्रमाणें, लक्ष्मीनें कुबेरा-प्रमाणें, शौर्यानें इंद्राप्रमाणें व शक्तीनें विष्णू-प्रमाणें होऊन अदिती पुत्र जो विष्णु त्याच्या-प्रमाणें शत्रूंचा नाश करील. हा तुझा वीर्यशाली पुत्र आपल्या आसमुहदांच्या जयाकरितां व शत्रूंच्या नाशाकरितां प्रख्यात होऊन ह्याच्यापासून पुढें एक शूर वराणें स्थापन होईल!” अर्जुना, ह्याप्रमाणें शतशृंग पर्वताच्या माथ्यावर अंतरिक्षांत महान् महान् तपस्यांना

ऐकू जाईल अशा प्रकारें आकाशवाणी झाली आणि त्याप्रमाणें कांही घडून तर आलें नाहीं; तेव्हां देवही अमृत्य भाषण करितात असें निःसंशय ठरलें; नाहीं बरें ! अर्जुना, त्या-प्रमाणेंच दुसरे मोठमोठे ऋषिवर्य नेहमी तुझा असाच गौरव करीत आले; आणि ह्यामुळे, दुर्योधनाचा उत्कर्ष होईल व कर्णाला तूं इतका वावरून जाशील असें मला केव्हांही वाटलें नाहीं. अरे, दुर्योधन पूर्वीच म्हणून गेला होता की, युद्धांत महाबलिष्ठ कर्णाच्या समोर उभें राहण्याची अर्जुनाची क्षमता होणार नाहीं; आणि ते दुर्योधनाचे शब्द मी आपल्या मूर्खपणामुळे खोटे मानिले व त्यामुळेच मी आपल्याला ह्या भयंकर दुःखांत घालून घेऊन ह्या शत्रूंच्या समुदायामध्ये ही अगाध नरकाची जोड मिळविली ! अर्जुना, मी कर्णाशी मुळांत युद्ध करणार नाहीं म्हणून तूं मला तेव्हांच सांगितलें असें तर बरे झाले असें. कारण मग संजय, केकय व इतर आप्तमुहूद ह्यांना मी युद्धाकरितां व्यर्थ बोलाविलें नसें. मत्स्याच्या ह्या स्थितिंत कर्णाशी, दुर्योधनाशी अथवा जे दुसरे योद्धे आम्हांशी लढण्यास आले आहेत त्यांच्याशी युद्ध करितांना आज आतां मला कांहीच करितां यावयाचें नाहीं. कृष्णा, आतां मी सर्वतोपरी मृतपुत्र कर्णाच्या कव्हांत मापडलों, तेव्हां माझे जिणें आज व्यर्थ होय ! अरे, कांय. माझे इष्टमित्र किंवा जे दुसरे वीर येथें युद्धार्थ मिद्ध आहेत. त्यांपुढे ही माझी केवढी दुःसह विटंबना ! अर्जुना, आज जर तुझा तो पुत्र महारथ अभिमन्यु जिवंत अमता, तर त्यानें खचित शत्रूंचा निःपात उडविला अमता आणि मग माझा आज युद्धांत खचित पराभव झाला नमता ! किंवा बघोत्कच जर समरांत सुरक्षित राहिला अमता, तर मला जयाची आशा होती !

मला तर असें वाटतें की. मी जीं दुष्ट पातकें पूर्वी केली त्यांच्या प्राबल्यामुळेच तूं इतका तुणप्राय निर्बल झालास व त्या दुरात्म्या कर्णानें माझी अशी मानखंडना केली आणि ज्यास कोणी बांधव नाहीत अशा एखाद्या दीन मनुष्याप्रमाणें मला शोचनीय अवस्था प्राप्त झाली ! अरे, जो एखाद्याला आपत्तीत मोडून देईल, त्याला काय बांधव किंवा प्रिय मुहूद असें म्हणावें ? आपत्ति प्राप्त झाली अमतां ती दूर करण्यास झटणें हेंच आपत्तीचें व मुहूदांचें कर्तव्य होय, असें फार प्राचीन काळापासून ज्ञाने पुरुष मांगत आले आहेत व त्यांनी त्याप्रमाणें नित्य वर्तनही केलें आहे. अर्जुना, तूं कर्णाला भ्यालाम हें स्वरोत्तरी मोठे आश्चर्य होय; कारण तुझा स्व प्रत्यक्ष त्वष्टाचें निर्माण केल्यामुळे त्याच्या ठिकाणी दिव्य सामर्थ्य वाम करित आहे; त्याचा आंम वांमन अमतां मुळांत वाजत नाहीं; आणि शिवाय त्याच्या ध्वजावर मारुति अधिष्ठित आहे; त्याचप्रमाणें तुझ्या हातांतली तरवार सुवर्णाच्या पत्र्यांनी अलंकृत अभुन तुझे हें गांडीव धनुष्य महा हात लावचें आहे; आणि शिवाय तुझ्या रथावर केशव हा तुझे मार्गश्रय करीत आहे; तेव्हा तूं कर्णाला भिऊन पळून आलास. हें खचित मोठे नवल नव्हे काय ! अर्जुना, तूं आपले गांडीव धनुष्य जर केशवाला दिले असें तर आणि त्याचें सारश्रय जर तूं केले असें तर, तर वज्रधर इंद्रांनें वृत्राला जसें वधिलें तसें केशवानें त्या उग्र कर्णाला रणांत केव्हाच वधिलें असें ! अर्जुना, अजूनही जर तुला त्या भयंकर कर्णाला युद्धांत जरूर करण्याची शक्ति नसेल, तर जो कोणी भूपाळ अश्वविद्येंत तुझ्यापेक्षा अधिक प्रवीण असेल, त्याला तूं आपल्या हातानें हें गांडीव धनुष्य आज देऊन टाक. म्हणजे तो तरी कर्णाला

रणांत मारून टाकील; व आधींच स्त्रीपुत्रांनी विहीन झालेल्या आणि राज्य व सुख ह्यांम पार अंतरलेल्या आम्हांला—पातकी पुरुष हेच ज्याचे अधिकारी अशा—त्या अगाध नरकांतून मोडवील ! हे दुरात्म्या, तूं संग्रामांतून पळून आलास ह्याच्यपेक्षां तूं कुंतीच्या उदरीं जन्मासच आला नमतास किंवा पांचवे महिन्यांत गर्भपात होऊन नष्ट झाला असतास तर फार चांगलें झालें असतें ! अर्जुना, तुझ्या गांडीव धनुष्याला, बाहुवीयाला, अमंग्यात बाणसमुदायांना, ध्वजस्थित मारुतीला आणि अशिक्षित रथाला धिक्कार असो.

अध्याय एकुणसत्तरावा

— ० —

कृष्णकृत सत्यासत्यनिर्णय.

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें युधिष्ठिराचें भाषण श्रवण करून श्रेतवाहन कुंतीपुत्र अर्जुनानें क्रोधाग्रमान होऊन युधिष्ठिराला ठार मारण्याच्या उद्देशानें हातांत खड्ग घेतलें, तेव्हां त्याची ती क्रोधमुद्रा अवलोकन करून त्याचा विचार काय आहे हें चित्तज्ञ केशवानें तत्काळ ताडिलें; आणि ‘ अर्जुना, हातांत खड्ग कशाला घेतलेंस ’ असा त्यास प्रश्न केला. नंतर कृष्ण त्याला आणखी ह्मणाला, ‘ धनंजया, ज्याचा तुला वध करावयाचा आहे असें ह्या स्थली तर कांहींच दिसत नाहीं. तिकडे त्या कौरवांना तर भीमान् भीमसेनानें ग्रामून टाकिलें आहे; आणि तुजें तर येथें परत येण्याचें कारण धर्मराजाचें कशाला वक्तव्य आहे हें होतें व आतां तूं आणि धर्मराजाची भेट होऊन तो कुशल आहे असें तुला दिसून आलें; तेव्हां खरोखरी तुला आनंद व्हावयाचा तो एकीकडे राहून हें तूं वेड्यासारखें मल्लेंच काय मनांत आणिलें आहेस ’ अर्जुना.

वेळीं कोणीही मला दिसत नाहीं; तेव्हां हें खड्ग बाहेर काढण्याचें प्रयोजन कोणतें ! तुझ्या चित्ताला कांहीं अंशतर झाला नाहींना ’ तूं मनांत तरी काय आणिलें आहेस ’ ” याप्रमाणें कृष्णानें विचारलें, तेव्हां युधिष्ठिराकडे पहात व क्रोधानें मापामागने सुमकारे टाकीत अर्जुन कृष्णाला म्हणाला. ‘ ‘ कृष्णा, दुसऱ्याला गांडीव धनुष्य दे म्हणून जो मला आज्ञा करील, त्याचें मस्तक मी उडवीन ! ’ असा मी गुप्तपणें नियम केलेला आहे. प्रस्तुत प्रसंगी धर्मराजाचें ‘ गांडीव धनुष्य दुसऱ्यास दे ’ म्हणून तुझ्या समक्ष मला आज्ञा केली आहे; ह्यास्तव ही दुःसह आज्ञा सहन न करिता मी ह्या धर्मशील युधिष्ठिर राजाला ठार करणार ! आपली प्रतिज्ञा पूर्ण करण्यासाठी मी हें खड्ग हातांत घेतलें आहे. ह्यानें युधिष्ठिराला वधून मी सत्याचा उतराई होईन आणि शोक व चिंता नष्ट करीन ! कृष्णा, माझा हा असा मानस आहे; ह्या वेळीं म्यां काय करावें ह्या विषयी तुजें काय मत आहे तें सांग. तुला ह्या जगताचें सर्व भूतभविष्य विदित आहे; ह्या करितां तूं जमें सांगशील तमें मी करीन ! ’

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, अर्जुनाचें हें म्हणणें ऐकून कृष्णानें त्याचा धिक्कार केला व पुढें ह्मटलें, ‘ हे पुरुषव्याघ्रा अर्जुना, तुला हा भलत्याच समर्थी क्रोध चढलेला पाहून मला तर असें वाटतें की, तूं वृद्धांची सेवा कधी केली नाहींस. ज्याला धर्माची मृदम तत्त्वे समजतात. तो पुरुष. तुझ्यासारखा सर्व धर्मोपाध्यायींनींन प्रपन्न प्रसंगी जें कर्णव्यस उच्युक्त झाला आहे, तमेलें कृत्य कधीही करणार नाहीं ! जो मनुष्य (१) अगदीं निषिद्ध व (२) वडय असली तरी विहित, अशा दोन प्रकारच्या कर्मातील भेद जाणीत नाहीं व त्यांचीं सळ- भिन्न करिता त्याच्या अधम ह्मणलें पाहिजे.

शिष्यांनीं धर्मतत्त्वे प्रतिपादन करण्याविषयी गुह्यी प्रार्थना केली अमतां त्या गुह्यी मेल्यापेने व विस्तारानें जे सिद्धांत त्या शिष्यांना मांगितले, ते तुला माहीत नाहीत. कार्याकार्य-निर्णयामेवधानें पंडितांचे जे सिद्धांत आहेत, त्यांचें ज्याला ज्ञान नाही, तो पुरुष अमात्र तुझ्याप्रमाणें भांबावून जाऊन वेड्यासारखी भलतीच गोष्ट करण्यास तयार होतो ! अर्जुना, कार्याकार्य विचार करितां येणें मुळीच मुलम नाही, त्याला श्रुतीचें यथार्थ ज्ञान अवश्य आहे; पण तें तर तुला अगदीच नाही. कारण, तूं धर्मज्ञ ह्मणून जें कृत्य करण्यास सिद्ध झाला आहेस, तें केवळ तुझ्या अज्ञानाचेंच निदर्शक होय ! अर्जुना, तूं मोठा धार्मिक ना ? मग प्राण्याचा वध करणें हा धर्म किंवा अधर्म सांग पाहूं ? मला तर अहिंसा हा परम धर्म वाटतो ! एक वेळ असत्य भाषण केलें तरी चालेल पण प्राणिहिंसा ही सर्वथा निषिद्ध होय ! आणि असें जर आहे, तर दुसऱ्या एखाद्या सामान्य पुरुषाप्रमाणें ज्येष्ठ भ्रात्याला व तशांत धर्मज्ञ राजाला वधण्यास उद्युक्त होणें हें सर्वथा अनुचित नव्हे काय ? हे नरश्रेष्ठा मानवा अर्जुना, जो आपल्याशी युद्ध करीत नाही, जो युद्धापासून पराङ्मुख आहे, जो पळत मुट्या आहे, जो शरण आलेला आहे, जो आपल्यापुढें हान जोडून उभा आहे, व ज्याची विचारशक्ति मुटली आहे, त्याचा वध करणें हें मज्जनाना मान्य नाही; आणि ह्या सर्व गोष्टी तुझ्या ज्येष्ठ भ्रात्याच्या ठिकाणी विद्यमान आहेत: ह्यास्तव तूं जी गोष्ट करावयास तयार झाला आहेस ती गोष्ट करण्याचें सोडून दे. अर्जुना, आधी तूं जो हा पूर्वी नियम केल्यास, तोच मुळी चुकीचा आहे. ह्यासाठीं तूं मूर्खपणानें अधर्ममूलक कर्म करीत आहेस, ह्यांत संदेह नाही. अर्जुना, धर्माचीं तत्त्वे फार सूक्ष्म व अगाध आहेत;

ह्यास्तव त्यांचें नीट मनन न करितां एकदम तूं वंदनीय अशा पुरुषाला ठार मारण्याच्या हेतूने त्यावर धावून जात आहेस ह्याला काय म्हणावें ? अर्जुना, आतां मी तुला धर्माचें हें गूढ तत्त्व निरूपण करून मांगतां. हें तुला पूर्वी भीष्मानें, युधिष्ठिरानें, विदुरानें अथवा भाग्यवान् कुंतीनें कदाचित् मांगितलें असेलच. ह्यासाठीं, धन-जया, मी आतां जें कांही मागेन तें मावधान चित्तानें ऐक. बाबारे, जो सत्य सांगेल तो साधु, सत्यापेक्षां अधिक श्रेष्ठ असें कांहीएक नाही; परंतु सत्यास अनुसरून वर्तन करितांना सत्याच्या तत्त्वावर अनुमंथान ठेवून त्याचा यथा-योग्य निर्णय ठरविणें हें फार अवघड आहे. एखादी गोष्ट सत्य जरी असली, तरी ती बोलतां येणार नाही व एखादी गोष्ट असत्य जरी असली तरी ती बोलतां येईल; आणि अशा स्थितीत असत्य हें सत्य व सत्य हें असत्य असा त्यांचा व्युत्क्रम होईल. पहा—विवाह-काली, संभोगसमयीं, प्राणसंक्रांत, सर्व माल-मिलकत, घरदार वगैरे जाण्याचा प्रसंग आला अमतां, व ब्राह्मणांचें हित माघत असेल तर मनुष्यानें असत्य भाषण केलें तरी चालेल ह्या पांच प्रसंगी असत्य भाषणाच्या योगें पातक लागत नाही. अज्ञ पुरुष सत्यासत्यविवेकांतील हें मर्म न जाणतां केवळ सत्यालाच तेवढे धरून बसतात आणि तदनुसार वागतात. ह्यास्तव, सत्यासत्यांचें रहस्य ज्याला कळेल तोच धर्मज्ञ होय. म्हणून बलाकासारख्या मुज्ञ पुरुषानें अश्वघासारखें दारुण कर्म करून मोठें पुण्य जोडिलें; व कौशिकासारख्या अज्ञ पुरुषानें सरित्मंगमी चौरख्यांना खरा पत्ता सांगण्यासारखें धार्मिक कर्म करूनही महापाप संपादिलें. तर त्यांत आश्चर्य तें कसेल ?

अर्जुनांनो विचारिलेः—भगवंता कृष्णा, बला-कानें व कौशिकानें जें काय केलें तें मला नीट सांग.

वासुदेव म्हणाला:—अर्जुना, पूर्वी बलाक नांवाचा कोणी एक व्याध होता. तो स्त्रीपुत्रांच्या उपजीविकेकरितां मृगांचा वध करीत असे, — मृगांची हत्या करावी असा त्याचा वास्तविक हेतु मुळीच नव्हता. तो नेहमी स्वधर्माप्रमाणें वर्तन करून वृद्ध मातापितरांचा व आश्रित जनांचा चरितार्थ चालवी. तो मदोदीत खरें बोले आणि कोणाचेही अनिष्ट चिंतीत नसे. तो एकदां मृगया करण्यास निघाला असतां त्याला एकही मृग मिळाला नाही. तेव्हां त्याला अश्वेरीस एक हिंसक प्राणी पाणी पिताना दृष्टीस पडला. तो अंधळा असल्या मुळें केवळ वामावरून इतर प्राण्यांची हत्या करीत असे. तमळें मावज जरी बलाकानें पूर्वी करी पाहिलें नव्हतें. तरी त्यानें तें मारिलें. आणि त्याच्या हातून त्या अंध श्वापदाचा वध होनांच आकाशातून त्याजवर पुष्पवृष्टि सुरू झाली. अप्सरांच्या गायनवादांच्या मनोहर स्वरांनी अंतर्गृहीत दुमदुमन गेलें आणि त्या बलाक व्याधाला नेण्याकरितां स्वर्गातून विमान उतरलें! अर्जुना, त्या हिंसक प्राण्यानें तपश्चर्या करून सर्व प्राण्यांचा वध करण्याविषयी वर मिळविला होता; आणि ह्यामुळेच ब्रह्मदेवानें त्यास अंध केले होते. अशा प्रकारें सर्व प्राण्यांचा वध करण्याविषयी निश्चय करणाऱ्या त्या क्रूर श्वापदाला बलाकानें तेव्हां वधिलें, तेव्हां बलाक प्राणिहत्येच्या पातकांत न पडतां उलट स्वर्गस गेला! तेव्हां धर्माचें तत्त्व किती गुढ आहे तें मनांत आण. असो; आतां तुला कौशिकाची कथा सांगतो. कौशिक नांवाचा कोणी एक तपस्वी होता. त्याला श्रुतीचें फारसें ज्ञान नव्हतें. नद्यांच्या संगमावर गांवाच्या जवळच तो रहात असे. नेहमी खरें बोलावयाचें असे त्याचें व्रत असे. ह्यामुळें सत्यवक्ता अशी त्याची प्रख्याति झाली होती. एका प्रसंगी

चोरट्यांच्या भीतीनें कांही लोक त्या वनांत आले. इकडे चोरट्यांनी संतापून जाऊन त्या लोकांचा एकसारखा शोध सुरू केला. फिरतां फिरतां ते चोरटे मत्स्यवादी कौशिकाजवळ आले व त्यांनी 'महाराज, पुष्कळसे लोक इकडून कोणत्या मार्गानें गेले ते सांगा बरें' असा त्यास प्रश्न केला. आणि त्यास आणखी असें म्हणलें की, 'आम्ही तुम्हाला खरें विचारीत आहों; जर तुम्हाला माहीत असेल तर तुम्ही आम्हांला खरें सांगा.' अर्जुना, तेव्हां कौशिकानें त्या चोरट्यांना खरें सांगितलें. तो म्हणाला, 'अहो, ह्याच वनांत लतावृक्षांची गर्द झाडी आहे, तीत ते आहेत!' अर्जुना, ह्याप्रमाणें त्या चोरगां कौशिकानें त्या लोकांचा खरा मार्ग दाखविला; आणि नंतर त्या चोरट्यांनी त्यांना गांठून निर्दयपणानें त्यांचा वध केला असें म्हणतात. अर्जुना, कौशिकानें हे जें मत्स्य भाषण केलें. तें मत्स्य असलें तरी दुरुत्तच होय. त्या महान् अधर्माचरणांमुळें, कौशिकाला भयंकर नरकांत पडवें लागलें! कारण, त्यास धर्माची सूक्ष्म तत्त्वे माहीत नसल्यामुळें, अर्ध वट शिकलेला मूर्ख मनुष्य जसा धर्माचें रहस्य स्वतः जाणीत नाही व त्यांत संशय उत्पन्न झाला असतां वृद्धांकडून त्याचें निराकरण करून घेत नाही आणि शेवटीं नरकवासाला पात्र होतो, तशीच त्याची अवस्था झाली! असो; अर्जुना, आतां मत्स्यामत्यविवेकाचें किंवा

धर्माधर्मविचाराचें धर्म

कोणतें तें सांगतो तें ऐक. कित्येक प्रसंगी धर्माचें तत्त्व मनांत येणें मोठें कठीण पडतें; ह्यामाठी त्याचें बरोबर ज्ञान होण्यास तर्काची मदत घ्यावी लागते. पुष्कळ लोक असें म्हणतात की, धर्माचें तत्त्व श्रुतीतच आहे. ह्यावर मी असें म्हणतो की, धर्माचें तत्त्व श्रुतीतच आहे हें खरें; पण सर्वच गोष्टी श्रुतीत सांगून त्यांचा

तेथें उद्घापोह केलेला नाही. धर्माचें मूल तत्त्व प्राण्यांचा उत्कर्ष व्हावा हेंच होय; आणि ह्याच तत्त्वाच्या अनुरोधाने श्रुतीत धर्माची व्याख्या केली आहे. प्राण्यांच्या उत्कर्षाचें विज्ञ अहिंसेत म्हणजे परपीडा न करण्यांत आहे. म्हणून, ज्यांत अहिंसा घडेल म्हणजे दुःसंस्थाम पीडा होणार नाही, तोच धर्म होय असा सिद्धांत समज. हिंसा करणाऱ्या पुरुषांच्या हातून दुःसंस्थाला पीडा होऊं नये हाच धर्माचा हेतु होय. धर्म शब्दाचा अर्थच बंधन असा होतो; व हें बंधन एक किंवा दोन अशा मर्यादित व्यक्तींना नसून सर्व प्रजांना आहे. ह्यासाठी धर्माचें यथार्थ लक्षण मनांत आणिताना त्याची धारकता म्हणजे समाजाच्या बांधून टाकण्याची शक्ति विचारांत घेतली पाहिजे. तेव्हां एखाद्या नियमाच्या ठिकाणी अशा प्रकारची धारकता आहे, हे कसे जाणावें? तर त्यावर उत्तर हेंच की, एक तर तो नियम श्रुतीत मांगितलेला असावा किंवा तो अहिंसा-तत्त्वाशी विरुद्ध नसल्यामुळे तो श्रुतीतून निघतो असें तर्कांनीं घेतां यावें. जर ह्या दोहोंपैकी एकही गुण विवक्षित नियमवाक्याच्या ठायीं विद्यमान नसेल, तर तो नियम वेद्वाक्य होय. कित्येक लोक केवळ जनरीतीवर हवाला देऊन श्रुतिवाक्य नियमांचा स्वीकार किंवा श्रुतिप्रणीत नियमांचा अव्हेर करितात, पण हें त्यांचें कारणें सर्वथैव अनुचित आहे; ह्यासाठी त्यांच्याशीं बोलूं मुद्धां नये. कोणत्याही धार्मिक नियमाच्या वेदवचनाचा अशा प्रकारें प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्ष रीतीनें आधार असला पाहिजे. जर त्याला तसा आधार नसेल तर तो नियमच नव्हे. अशा प्रसंगीं त्या नियमाचें उलंघन करण्यास कोणतीही हरकत नाही; किंबहुना अशा समयीं त्या नियमाचें बेलाशक उलंघन करणें हेंच श्रेयस्कर होय. कित्येक लोकांचा मूल व्रत

(नियम) करण्यांत हेतु एक असतो व मग ते दुःसंस्थाच हेतूनें त्या व्रताचें समर्थन करूं लागतात; परंतु त्या योगें त्यांच्या पदरीं दाम्भिकपणा येऊन ते त्या व्रतफलाला अंतरतात, असें ज्ञात्यांचें मत आहे. प्राणसंक्रांतां, विवाहकालीं, मर्ग जातीचा नाश होण्याचा प्रसंग आला अमतां किंवा थडामस्करी करितांना असत्य भाषण केले. तरी त्यापामून पाप लागत नाही. धर्माचें तत्त्व यथार्थपणें जाणणाऱ्या लोकांना त्यांत कांही अयमेव वाटत नाही. एखाद्याला चोरांनीं गांठले, तर त्या समयीं खुशाल खोटाच शपथ घेऊन त्यांच्यापामून सुटका करून घेतली पाहिजे. होतां होईल तों चोरांना धन मिळूं देणें वाजवी नाही; कारण पापी (नीच, दुष्ट वगैरे) लोकांना धन दिलें असतां ते दात्याला नरकांत पाडेल ! आणि ह्यासाठीच धर्मपालनाकरितां असत्य भाषण केल्यानें तो मनुष्य अमत्यवादी ठरणार नाही ! अर्जुना, हें धर्माधर्मविवेकांतलें मर्म मी आज तुला तुझें हित व्हांवें म्हणून विशद करून सांगितलें आहे. आतां मला माग वरें युधिष्ठिराचा वध करणें प्रशस्त की अप्रशस्त ?

अर्जुन म्हणाला:—कृष्णा, एखादा महा-बुद्धिमान् व दूरदर्शी पुरुष जशी केवळ हिताची मला देईल, तशीच तूं ही मला मला दिली आहेस. तूं माझ्या मातापितरांच्या जागीं आहेस. तुझा मला मोठा आधार आहे. तुझ्यावर मी सर्वस्वी अवलंबून आहे. तुला ज्याचें ज्ञान नाही असें तिन्ही लोकांत कांही एक नाही. ह्यासाठी मला तूं प्रत्यक्ष धर्ममूर्तिच वाटतोस. तुला धर्माचें यथार्थ तत्त्व विदित आहे; म्हणून धर्म-राज युधिष्ठिरास मारावें हें मला उचित दिसत नाही. तथापि मीं केलेल्या ह्या प्रतिज्ञेच्या संबधानें आणखी एक गोष्ट माझ्या मनांत घोळत आहे ती तुला सांगतो. हे दाशार्हा, ' तूं अधाशी

आहेस ' असें जर कोणी भीमसेनाला म्हणाला, तर त्याला ठार मारण्याची जशी भीमाची प्रतिज्ञा आहे, तशीच ही माझी प्रतिज्ञा होय. 'तुझ्या-हून बळानें किंवा अस्त्रांनी जो कोणी वरिष्ठ असेल त्यास तूं हें गांडीव धनुष्य दे.' म्हणून तुझ्या समक्ष धर्मराजा मला पुनःपुनः म्हणाला. ह्यामाठी माझ्या प्रतिज्ञेप्रमाणें मी त्यास ठार मारिलें पाहिजे; परंतु जर का मी त्यास ठार मारिलें, तर मी क्षणमात्र सुद्धां जिवंत रहाणार नाही; तेव्हां ह्या पातकाची जोड न होतां आत्मघात टळावा म्हणून मला धर्मराजाचा वध करितां येत नाही. हें उघडच आहे; तथापि मी धर्मराजाला वधण्याचें मनांत आणिलें ह्यापामूनही माझें सर्व वीर्य ब्रष्ट होऊन माझी विवेकबुद्धि नाश पावेल ह्याला उपाय काय? तेव्हां लोकांत माझी प्रतिज्ञा तर खरी व्हावी आणि धर्मराज व मी ह्या दोघांपैकी कोणाचाही अंत होऊं नये, अशी कांही तरी तोड काढ!

वामदेव म्हणाला:—अर्जुना, धर्मराजाजें तुला 'गांडीव दुःस्वप्नाम दे' म्हणून कां म्हटलें, ह्याचा तूं नीट विचार कर. तो अगदीं थकून गेला असून घायाळ व विव्हाळ झालेला आहे. मृतपुत्राजें तीक्ष्ण बाणांच्या भडिमाराजें रणांगणांत त्यास अगदीं जर्जर केल्यामुळें अनिश्चित संतापून जाऊन त्याजें तुला असें अनुचित भाषण केलें. "प्रस्तुत समर्थी जर अर्जुनाला क्षुब्ध केलें नाहीं, तर अर्जुन हा कर्णाला रणांत वधणार नाही!" हाच विचार युधिष्ठिराच्या मनांत प्रवळ झाला. आणि तुझ्या शिवाय दुःस्वप्ना कोणा वीराला कर्णाला वधण्याची शक्ति नाही, हेंही तो जाणून आहे; म्हणून धर्मराजा माझ्या समक्ष ते कठोर शब्द बोलला ह्यांत संदेह नाही. अर्जुना, धर्मराजाची अशी समजूत आहे की, पांडवांचा नाश करण्यास सतत उद्युक्त असलेल्या नित्यदुर्धर-

पराक्रमी कर्णाशी आज रणांत युद्धरूप द्युतच केलें पाहिजे. ह्या द्यूतांत एकदां कर्ण पडला की कौरवांचें क्षणांत निर्दलन झालेंच म्हणून समजावें. म्हणून ह्या सर्व अंतस्थ हेतूंचें मनन करून तूं धर्मराजाला वधण्याचा विचार सोडून दे आणि आपली प्रतिज्ञाही खरी कर. आतां, धर्मराजा जिवंत असूनही मृत कसा होईल ह्याविषयी तुला उत्कृष्ट युक्ति मांगतां ती एक. अर्जुना, सन्मान्य पुरुष जोपर्यंत मान मिळविता. तोपर्यंतच ह्या जीवलकांत तो जिवंत असतो. एकदां त्याचा अवमान झाला की तो जिवंत असूनही मेल्याप्रमाणेंच झाला! अर्जुना, धर्मराजाला भीम, नकूल, सहदेव व तूं—तुम्ही चौघेही बंधु आणि सर्व शूर व वृद्ध पुरुष नित्य मान देतां; ह्यामाठी, जर त्याचा यत्किंचित् अवमान झाला, तर तो मेल्याच म्हणून समजण्यास हरकत ती कोणती? अर्जुना, तूं युधिष्ठिराला अहो न म्हणतां अरे म्हण (युधिष्ठिराची तूं निंदा कर) म्हणजे त्या सन्मान्य पुरुषाला तूं मारिल्याप्रमाणेंच झालें! अर्जुना, ही जी मी तोड काढिली आहे, हिला आधार अथर्वागिरिमी नामक श्रेष्ठ श्रुतीचा आहे. हितेच्छु पुरुषांनी नेहमी बेलाशक ह्या श्रुतीला प्रमाण मानून वर्तन करावें. गुरूला अहो न म्हणतां अरे म्हणणें म्हणजे वध न करितां वध करणें होय ह्यामाठी तूं धर्मराजाला मी मांगत आहे असें म्हण. म्हणजे त्याला हे तुझे अनुचित शब्द ऐकून मृतप्राय दुःख होईल; नंतर तूं त्याच्या पायांवर मस्तक ठेव आणि त्याचें मांत्वन करून त्याची क्षमा माग. अर्जुना, तुझा भ्राता धर्मराजा मोठा बुद्धिमान् असल्यामुळें, धर्माचें मर्म तेव्हांच त्याच्या लक्षांत येईल आणि तो तुझ्यावर बिलकूल राग करणार नाही. असो; अर्जुना, ह्याप्रमाणें तूं कर, म्हणजे तुझी असत्यापासून

सुटका होईल व भ्रातृवधापासूनही सुटका होईल; आणि मग उभेदीनें तूं कणाला ठार मार.

अध्याय सत्तरावा.

— ७१ —

युधिष्ठिराचें सांत्वन.

मंजथ मांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें प्रिय मखा जनार्दन ह्यानें जी युक्ति मांगितली ती अर्जुनाला फार आवडली; आणि नंतर. जे तो पूर्वी कधीही बोलला नव्हता, ते फार कठोर शब्द धर्मराजाला बोलला.

अर्जुन म्हणाला:—राजा, रणांगणापासून कोमावर दूर रहावयाचें व असें भाषण करावयाचें, हें तुला मुळींच शोभत नाहीं! भीमानें जर मला दोष दिला. तर तो शोभेल; कारण तो रणांगणांत मोठमोठ्या योद्ध्यांशीं लढत तरी आहे! हा वेळपर्यंत त्यानें युद्धभूमीवर शत्रूंना वेळच्या वेळीं जरीर केलें अमुन पुष्कळ शूर राजांना, मोठमोठ्या स्थानांना, उत्तम उत्तम हत्तींना, पराक्रमी घोडेस्वारांना व अगणित दुसऱ्या वीरांना वधिलें आहे. ह्याशिवाय तो युद्धांत महत्त्व हत्तींना व दशमहत्त्व कांबोज व पार्वतीय योद्ध्यांना ठार मारून, सिंह जमा मृगांना ठार मारून गर्जना करितो. तशी मोठमोठ्यानें गर्जना करित आहे! राजा, भीमानें जो अचाट पराक्रम चालविला आहे, तो तुझ्या हातून कदापि होणार नाहीं. त्यानें रथांतून खाली उडी टाकून हातांत गदा घेऊन निनें समरांगणांत अश्व. रथ व द्विप ह्यांचा संहार उडविला आहे. श्रेष्ठ खड्गानें हत्ती, घोडे, रथ व पायदल ह्यांना वधिलें आहे. आणि रथाच्या अवयवांनीं व धनुष्यानें जणू काय सैन्याचें भस्मच उडविलें आहे! राजा, तो इंद्रतुल्य पराक्रमी वीर स्वका बलाद्वय आहे की. तो केवळ पायांखाली तुडवून व दंडांनीं

उडवून शत्रूंना समसदनी पाठवितो! त्याच्या ठिकाणीं यमाप्रमाणें किंवा कुबेराप्रमाणें अगाध सामर्थ्य वसत असल्यामुळें तो मोठ्या शौर्यानें शत्रूंच्या सेनेला ठार करितो! तेव्हां त्या बलशाली भीमसेनानें माझी निंदा केली तर चालेल. पण ज्या तुला स्वतःचें संरक्षण करण्यासही नित्य मुहूर्ताची जरूर लागते. त्या तुला माझी निंदा कशी करितां येईल बरें! पहा, तो भीम महारथांना, मोठमोठ्या गजांना, ह्यांना व पायदळांतील शूर वीरांना वधून कोरव-मन्यांत एकटा नुसला आहे; त्याप्रमाणेंच त्यानें कालिंग, वंग, अंग, निपाद व मागध देशांतील सैन्यांचा संहार उडवून, शिवाय सदासर्वकाळ मदोन्मत्त असलेल्या व नीलमेघांप्रमाणें भव्य दिमणाऱ्या शत्रूंकडील अनेक हत्तींचा विध्वंस उडविला आहे; तसाच तो रथांत अधिकूड होऊन जरूर त्या समर्थी समरांगणांत पावसाच्या मरीप्रमाणें वाणांचा भडिमार करित असतो; आणि आजच त्यानें वाणांच्या प्रहारांनीं समरभूमीवर आठशे हत्तींच्या गंडस्थळांचे व शुंडाग्रांचे तुकडे उडविले; तेव्हां त्यानें जर मला नांचें ठेविली तर हरकत नाहीं. राजा, महान् महान् द्विजांचें बल वाणीत असतें व क्षत्रियांचें बल बाहुंत असतें, असें म्हणतात. राजा, तूं बोलण्यांत पटाईत असून अत्यंत निष्ठुर आहेस आणि ह्यामुळें तुला आपल्या-प्रमाणेंच मीही दुर्बल आहे असें वाटतें! राजा, मी आपल्या स्त्रिया, पुत्र, जीवित व देह ह्यांची पर्वा न करितां नित्य तुझ्या बऱ्यासाठीं झटत आहे आणि असें अमतां तूं ह्याप्रमाणें वाक्प्रहार करित आहेस. तेव्हां तुझ्यापासून मला सुख मिळेल असें वाटत नाहीं. तुझ्यासाठीं महारथांचा मी वध करित असतां तूं द्रौपदीच्या शयनावर पडून माझी निर्भस्मना करावी हें मला उचित दिसत नाहीं; यावरून मला

तुं अतिशय निर्दय वाटतोस. युद्धामत्ये सत्यप्रतिज्ञ भीष्मानें आपल्याला मृत्यु कोणापासून आहे हें स्वतः सांगितलें, तेव्हां तुझ्या हितासाठीच मी त्या महात्म्या शिखंडीचें संरक्षण करण्याचें पतकरिलें व त्याच्या हस्ते भीष्माला रणांगणांत पाडिलें. राजा, असें जरी आहे, तरी आतां तुला राज्य मिळवें हें मला उचित दिसत नाही; कारण तूं मोठा भयंकर द्यूतकार आहेस. नीच लोक जें दुराचरण करितात तें स्वतः करून तूं आतां आम्हांकडून शत्रूंना जिंकण्याची हात धरिली आहेस. राजा, द्यूतामध्ये बहुत दोष आहेत व त्यापासून पातकें लागतात असें सहदेवानें सांगितलें. ते सर्व ऐकूनही तूं नीच लोकांप्रमाणें द्यूतास प्रवृत्त झालास व त्यामुळे आपल्याबरोबर आम्हां सर्वांनाही नरकांत पाडिलेंस! राजा, तुझ्या द्यूतामुळे आमचे सर्व मुल नष्ट झाले. तूं स्वतःच हें सर्व महत्संकट उत्पन्न केलेस आणि आतां आम्हांस दुःशब्द बोलत आहेस! राजा, आमच्या हस्ते हत होऊन हें शत्रुमेव हातपाय वगैरे तुटून विलाप करीत रणांगणांत कमें पडले आहे पहा! ह्या सर्व वातुक कर्माच्या कारण तूं आहेस, तुझ्यामुळेच कांय दोषी झाले आणि त्यांचा आज वध होत आहे! हे पहा दोन्ही मैत्र्यांतील चारही दिशांकडले महान् महान् योद्धे समरंगणांत लोकोत्तर प्रताप गाजवून मरून पडले आहेत! राजा, तूं जुगारी. तुझ्यामुळेच राज्याचा नाश व तुझ्यामुळेच हा मोठा भयंकर अनर्थ उद्भवला! ह्यासाठी हे मंदभाग्या, आतां क्रूर वाक्प्रतोदांनीं तूं आम्हांस आणखी फटके देऊन त्वर्थ क्षुब्ध करून नको!

मंजय मांगतो: -- राजा धृतराष्ट्रा, सव्यमाची अर्जुन बुद्धीचें स्मरण करून हे असे कठोर व हृदयभेदक शब्द धर्मराजाला बोलला खरा; पण त्या धीमान् धर्मभीरू पांडुपुत्राला

आपण केलेल्या त्या दुष्कर्माबद्दल लागलाच फार खेद झाला आणि त्यानें पश्चात्तापानें तळमळून जाऊन दुःखाचे सुमकारे टाकीत एकदम पुनः म्यानांतून खड्ग बाहेर काढिलें! तेव्हां तें पाहून तत्काळ कृष्ण त्यास म्हणाला:— अर्जुना, फिरून आकाशासारखी लकलकणारी ही तरवार म्यानांतून कां बरें बाहेर काढिलीस? माझ्या ह्या प्रश्नाचे पुनः उत्तर दे म्हणजे तुझे मनोरथ सिद्धीस जाण्यासाठी जरूर तो उपाय मी तुला सांगेन. राजा, ह्याप्रमाणें कृष्णाचें बापण ऐकून, अनुतापानें विव्हल झालेल्या अर्जुन फिरून म्हणाला:—कृष्णा, आज मी बलात्कारांनें आपला हा देह ह्या तरवारीनें कापून टाकणार! कारण, ह्याच्या योगें मी मोठें दुष्ट कर्म केले!

धृतराष्ट्रा, अर्जुनाचे ते उद्गार श्रवण करून तो महाधर्मनिष्ठ कृष्ण त्याला म्हणाला, "हे अर्जुना, तूं जें कांहीं धर्मराजाला बोललास, त्याच्या योगानें तुझ्या मनाला हा इतका विषाद वाटला तो कां? हे अरिझा, तूं अगदी आत्महत्या करण्यास मिद्ध झाला आहेस; पण, अर्जुना, मत्पुरुषांनीं ह्या मार्गाचें अवलंबन कधीही केलेले नाही. अरे, तूं जर आज अधर्म वडूं नथे खणून खरोखरीच तरवारीनें ज्येष्ठ भ्रात्याचा वध केल्या असतास, तर मग तुझी काय अवस्था झाली असती व मग तूं आज काय बरें केले असतेंस? अर्जुना, धर्म हा मोठा सूक्ष्म व दुर्बोध आहे. अज्ञ जनांस त्याचें नीट स्वरूप कळणें फारच अशक्य! ह्यासाठी, मी जें कांहीं सांगतां, तें चांगले लक्षपूर्वक ऐक. अरे, प्रस्तुत प्रसंगां तूं आत्महत्या करण्यास तयार झाला आहेस, पण ह्यापासून तुला भ्रातृवशापेक्षांही योग पातक लागून अधिक भयंकर अशा नरकांत पडवें लागेल! म्हणून आतां तूं आपल्या स्वतःच्या गुणांची

प्रौढी मिरव, हणजे आत्महत्या केल्याप्रमाणें होईल !” राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनांनं कृष्णाचें हणणें मान्य केलें व धनुष्य वांकवून आत्मशस्त्राचा करण्याच्या उद्देशानें महाधर्मनिष्ठ युधिष्ठिराला ह्मटलें:—धर्मराजा, माझ्यासारखा धनुष्येग एका पिनाकी शंकरावांचून दुसरा कोणीही नाही. तोही माझ्या सामर्थ्याची वाहवा करितो. मी एका क्षणात सर्व चराचर विश्वाचा मंहार उडवीन. राजा. मीच दिशा-दिशांच्या ठिकाणी राज्य करणाऱ्या राजां-मुद्धां सर्व दिशा जिंकून तुझें अधिपत्य सर्वत्र स्थापिलें. माझ्या पराक्रमामुळेच दक्षिणायुक्त राजसूय शेवटास गेला व ती दिव्य सभा तुला प्राप्त झाली. माझ्या हातामध्ये धार दिलेले बाण आणि बाण जोडलेले धनुष्य नेहमी सज्ज व ताणलेले असतें. माझ्या पायांवर रथांची व ध्वजांची चिन्हे आहेत. माझ्यासारखा वीर युद्धार्थ प्रवृत्त झाला असतां त्याला जिकण्यास कोणीही समर्थ नाही. उत्तरेकडील, पश्चिमेकडील, पूर्वेकडील व दक्षिणेकडील सर्व येद्धांचाच मी अगदी उच्छेद करून टाकिला आहे. आतां संशप्तकांचें मात्र मैन्य अवशिष्ट आहे. मी एकट्यानें अर्धे मैन्य ठार मारिलें. राजा, देवांच्या सेनेप्रमाणें प्रतापशाली अशी ही भारती सेना माझ्या हस्ते रणांत मरून पडली आहे. अस्त्रज्ञ वीराना मी अस्त्रांनीच मारितों, आणि त्यामुळेच माझ्या हातून हें त्रैलोक्य भस्म झालें नाही. ज्यांच्याशी युद्ध करावयाचें त्यांच्या पात्रापात्रतेचा जर मी विचार केला नसता, तर आज हें सर्व विश्व कधीच नष्ट झालें असतें ! कृष्णा. आतां ह्या विजयशाली रथात बसून तावडतोव मृतपुत्राला वधण्यास जाऊं चला. राजाच्या मनाला आज पूर्ण विश्रांति मिळेल; कारण मी बाणप्रहरांनी रणांत आज कर्णाला वधीन. राजा धृतराष्ट्रा.

असें बोलल्यावर फिरून अर्जुन युधिष्ठिराला ह्मणाला:—धर्मराजा, आज मी कर्णाला मारीन किवा कर्ण मला मारील; ह्यास्तव आज एक तर कर्णमाना पुत्रहीन होईल किवा कुंती पुत्रहीन होईल ! युधिष्ठिरा, मी तुला खचित मांगतो की, आज मी कर्णाला ठार केलें नाही तर अंगांतील कवच काढणार नाही !

संजय मांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें भाषण करून अर्जुनांनं पुनः महाधर्मनिष्ठ युधिष्ठिरा-पुढें आपली शस्त्रास्त्रे व धनुष्य टाकून दिलें आणि तत्काळ तो म्यानांत तरवार घालून लज्जायमान होत्माता खाली मान करून हात जोडून उभा राहिला व ह्मणाला:—धर्मराजा, रागावूं नको, प्रसन्न हो, क्षमा कर; मी असें का बोललों ह्याचें कारण पुढें तुला विदित होईल, मी तुला नमस्कार करितों ! राजा धृतराष्ट्रा, प्रतापी अर्जुनांनं ह्याप्रमाणें भाषण करून, शत्रूंच्या पराक्रमाला सहन करणाऱ्या धर्मराजाच्या समोर उभें राहून पुनः ह्मटलें, “ धर्मराजा, माझ्या ह्या बोलण्याचें कारण लांबणीवर न पडतां लवकरच व्यक्त होईल. हा पहा मी रणांगणांत भीमाला विश्रांति देण्याकरितां व कर्णाला ठार मारण्याकरितां येथून निघालों. राजा, तुझें बरें करण्यासाठीच माझें हें जीवित आहे, अशी तूं खरोखरी पक्की खातरी बाळग. ” राजा धृतराष्ट्रा, असें बोलून अर्जुनांनं युधिष्ठिराचे पाय धरिले आणि नंतर तो पराक्रमी वीर युद्धाला जाण्यासाठी निघाला. तेव्हां अर्जुनाच्या त्या कठोर भाषणाच्या योगें संतप्त होत्माता धर्मराज युधिष्ठिर शय्येवरून उठला आणि मोठ्या म्गिन्न मनानें ह्मणाला, “ अर्जुना. मी मोठें अनुचित कर्म करून तुझ्या सर्वांना घोर संकटांत पाडिलें ! ह्यासाठी ह्या अधम कुलगाराचें मस्तक आज तूं तोडून टाक ! अर्जुना, मी मोठा नीच असून नीच कृत्यांत

अगदीं निमग्न झालेला आहे; माझी अकल नष्ट झाली अमून मी अगदीं भ्याड व आलशी आहे; आणि मी मोठा निर्दय व वृद्धांचा अपमानकर्ता आहे; तेव्हा मत्त ह्या दुष्टाची आज्ञा पाळून तुला लाभ तो कोणता ? ह्यासाठी हा पहा मी नीच आजच वनांत जातो ! तूं माझ्या-व्यतिरिक्त खुशाल रहा ! महात्मा भीमसेन राज्यपदाला योग्य आहे ! मी पडलों पंड. तेव्हां मला राज्याची उठावेच कां अमावी ? अर्जुना, तूं रागानें जें हें बोललास तें आणखी महन करण्यास मी समर्थ नाही. आतां भीमच राजा होवो ! माझी जर आज इतकी मानग्वटना झाली, तर मला आतां जगून तरी काय कर्तव्य ? ” राजा धृतराष्ट्र, असें बोलून युधिष्ठिर एकदम ती शय्या सोडून लगवणीनें वनांत जाण्यासाठी निघाला; पण तितक्यांत कृष्णानें त्याच्या पायांवर मस्तक ठेवून हात जोडून झटलें:—धर्मराजा, सत्यमेव अर्जुनाची गांडीव धनुष्यासंबंधानें काय प्रतिज्ञा आहे, हें प्रसिद्ध असल्यामुळें तुला विदित असेलच ! जो कोणी त्यास ‘तूं हें गांडीव दुसऱ्यास दे’ असें झणेल, त्याला वधण्याचा त्याचा संकल्प आहे; आणि तूच हें असें त्याला झणालास, तेव्हां अर्जुनानें आपली ती प्रतिज्ञा खरी करण्यासाठी माझ्या सल्ल्यानें हा तुझा अवमान केला आहे. गुरु-जनांचा अवमान करणें झणजे त्यांचा वधच करणें होय. ह्याकरितां, हे महाबाहो युधिष्ठिरा, अर्जुनाची प्रतिज्ञा मत्स्य व्हावी झणून मी व अर्जुन अशा आह्मी दोघांनी जो तुझा अवमान केला आहे, त्याजवहल आह्मी तुला शरण येऊन तुझी क्षमा मागत आहों; तर तूं आह्मांस आमच्या अपराधाची क्षमा कर. आज त्या पातकी राधेयाच्या रक्ताचें भूमि प्राशन करील हें तूं पक्कें समज; आतां राधेय मेलाल झणून खुशाल मान; ज्याच्या वधाची तूं डच्छा करीत आहेस.

त्याचें जीवित आतां उरलेंच नाही ! राजा धृतराष्ट्र, धर्मराज युधिष्ठिरानें आपल्या पदीं लीन झालेल्या कृष्णाचें हें बापण श्रवण करून मोठ्या लगवणीनें त्यास उठविलें आणि नंतर हात जोडून झटलें:—कृष्णा, तूं झटलेंस त्या-प्रमाणें माझ्या हातून मर्यादेचें उल्लंघन झालें खरें; गोविंदा, तूं आज मला ताळ्यावर आणून महान् प्रसंगांतून सोडविलेंस ! अच्युता, आज तुझ्यामुळेच आह्मी उभयतां भावी घोर अनर्थांतून मुक्त झालों. कृष्णा, समुद्रांत पडलेल्या मनुष्याला जमा नावेचा आश्रय मिळावा. तसा आज आह्मां दोघांना तुझा आश्रय मिळाला ! नाहीपेक्षां बुद्धिभ्रष्ट झालेले आह्मी दोघेही ह्या दुःखशोकाणवीत बुडून जाऊन सर्वस्वी नष्ट झालों अमर्तो ! अच्युता, आज तूं योग्य मार्ग दाखविल्यामुळे अमात्यांसमवेत व गुरुजनांसमवेत आह्मांला तूं भयंकर संकटांतून पार पाडिलेंस !

अध्याय एकाहत्तरावा.

—०—

अर्जुनाची प्रतिज्ञा.

संजय सांगतो:—राजा, युधिष्ठिराच्या पायांवर मस्तक ठेवून अर्जुन रुई लागला असतां युधिष्ठिरानें त्यास उठविलें व प्रेमानें त्यास आलिंगन देऊन तोही त्याच्याबरोबर रुई लागला ! राजा, नंतर ते दोघेही पराक्रमी भ्राते पुष्कळ वेळ रडले आणि अशा प्रकारें दुःखमुक्त होऊन एकमेकांवर पूर्ववत् प्रसन्न झाले. मग धर्मराजानें अर्जुनाला पुनः आलिंगिलें आणि मोठ्या प्रीतीनें त्याच्या मस्तकाचें अवघ्राण करून वारंवार आश्चर्यानें चकित होऊन महाधनुर्धर अर्जुनाला झटलें:—हे महाबाहो अर्जुना, कर्णानें सर्व मैत्र्याच्या समक्ष, मी त्याच्याशीं लढण्याची पराकाष्ठा करीत असतां माझे कवच, ध्वज, धनुष्य, शर, शक्ति व हय

ह्यांजवर बाणांचा भडिमार करून त्या सर्वांचा विध्वंस उडविला, ह्यामुळे मी अगदी दुःखाने आर्त झालो आहे, मला आतां जगण्यात अर्थ वाटत नाही. अर्जुना, जर तू त्यास आज युद्धांत ठार मारिले नाहीस, तर मी खचित प्राण देणार ! मला जगून तरी काय करावयाचें आहे ? राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे धर्मराजाचें भाषण श्रवण करून अर्जुनानें त्याला उत्तर दिलें:—राजा, मी आज सत्याची, तुझी, भीमाची, नकुलाची व सहदेवाची शपथ घेऊन सांगतो की, मी आज समरांगणांत कर्णाला वधीन किंवा स्वतः हत होऊन भूतलावर पडेन ! आज मी खरोखरी अशीच प्रतिज्ञा करून शस्त्रास हात घालीत आहे ! राजा धृतराष्ट्रा, अर्जुनानें ह्याप्रमाणे युधिष्ठिराला सांगितलें व मग कृष्णाला ह्मटलें:—कृष्णा, आज रणांत मी कर्णाला वधीन ह्यांत संदेह नाही; पण मला त्या दुरात्म्याच्या वधाकरितां तुझ्याकडून समयोचित सहा मिळावी. तुझें कल्याण असो.

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे अर्जुनाचें भाषण श्रवण करून कृष्ण अर्जुनाला ह्मणाला, “ हे भरतश्रेष्ठा, त्या महाबल कर्णाला मारण्यास तूं समर्थ आहेस. हे महारथा, मीही नेहमी हाच विचार करीत आहे की, तूं रणांत त्या कर्णाचा कसा वध करशील ? ” राजा धृतराष्ट्रा, नंतर मतिमान् कृष्ण पुनः धर्मराजाला म्हणाला, “ युधिष्ठिरा, अर्जुनाच्या मनाला अधिक उमेद येईल असें कर व त्या दुरात्म्याच्या वधाकरितां ह्यास आज अनुज्ञा दे. हे पांडुपुत्रा, तुला कर्णानें बाणांचा भडिमार करून अगदी आर्त करून टाकल्याचें मी व ह्या अर्जुनानें ऐकिलें ह्मणून आत्मीय उभयतां तुझें कुशलवृत्त जाणण्याकरिता येथें आलों. राजा, सुदैवाने तूं सुरक्षित आहेस व शत्रूंच्याही हस्तगत झाला

नाहीस. हे अनघा, आतां तूं अर्जुनाला प्रोत्साहन देऊन जयप्राप्त्यर्थ आशीर्वाद दे. ”

युधिष्ठिर ह्मणाला:—अर्जुना, ये ये, मला आलिंगन दे; तूं जें मला बोललास तें अगदी उचित व हितकरच होतें; व ह्यास्तव त्या सर्वांची मी तुला क्षमा केली आहे. धनंजया, माझी तुला अनुज्ञा आहे, तूं कर्णाला ठार मार, अर्जुना, मी तुला जें कांही निष्ठुरपणें बोललों, त्याबद्दल रागावूं नको !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनानें युधिष्ठिराचे पाय धरिले व पायांवर मस्तक ठेविलें; तेव्हां युधिष्ठिरानें अर्जुनाला उठविलें आणि तो दुःखांत झाला आहे असें पाहून त्यास आलिंगन दिलें व मस्तकाचें अवघ्राण करून पुनः म्हटलें:—हे महाबाहो धनंजया, तूं मला अतिशयच मान दिलास; तुला विजयश्री व विपुल वैभव प्राप्त होवो !

अर्जुन म्हणाला:—धर्मराजा, बलानें गर्विष्ठ झालेल्या त्या पातकी राधेयाला आज मी रणांत गांठून शरांचा भडिमार करून त्याला व त्याच्या अनुयायांना वधीन. त्या दुष्ट कर्णानें आकर्षण पुनः ओढून बाणप्रहारांनी तुला जर्जर केले, त्याचें हें दारुण फळ त्याला आज प्राप्त होईल ! राजा, आज मी कर्णाला ठार मारीन व मग तुला समरांगणांतून भेटण्यास येईन, हें खचित सांगतों. आज जर माझ्या हातून समरभूमीवर कर्ण पडला नाही, तर मी खचित परत येणार नाही, हें मी तुझ्या पायांची शपथ घेऊन सांगतों.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, अर्जुनाची ही प्रतिज्ञा श्रवण करून युधिष्ठिराचें मन मोठे प्रमत्त झाले आणि त्यानं अभिर्नंदनपर भाषण केलें. त्या वेळीं युधिष्ठिर म्हणाला:—अर्जुना, तुला अक्षय्य कीर्ति, यथेष्ट आयुष्य, पूर्ण जय व विपुल वीर्य हीं मिळून तुझ्या हातून शत्रूंचा संहार घडो ! देवता तुझें भाग्य वाढवोत !

आणि माझ्या इच्छेनुरूप तुला मर्ष कांही प्राप्त होवो ! आतां तूं युद्धाला जा व कर्णाच्या त्वरित मार; आणि वृत्रासुराला मारून इंद्रानें जमा विजय मिळविला, तमा तूं कर्णाच्या मारून विजय मिळव !

अध्याय बहात्तरावा.

— ०:—

कृष्णाचें प्रोत्साहनपर भाषण.

भंजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें धर्मराज युधिष्ठिर प्रमत्त झालेला पाहून अर्जुनाला मोठा आनंद झाला व तो मृतपुत्राच्या वधार्थ तयार होऊन कृष्णाला म्हणाला:—कृष्णा, फिरून माझा तो बलाढ्य रथ मिद्ध कर. त्याला उत्तम अश्व जोड व त्याजवर मर्ष शस्त्रा-स्त्रांची सामग्री तयार ठेव. आतां विलंब करून उपयोग नाही; म्हणून त्वरा करून, अश्व-शिक्षकांनीं शिकवून तयार केलेले ते अश्व फिरून आणण्यास सांग आणि त्यांजवर रथोपकरणें घालून ते रथाला लाव व कर्णाला ठार मार-ण्याच्या उद्देशानें आतां त्वरित शत्रूंवर चल.

राजा धृतराष्ट्रा. महात्म्या फाल्गुनाचें असें भाषण श्रवण करून कृष्णानें दारुकाला अर्जुनाच्या इच्छेप्रमाणें सर्व व्यवस्था करण्यास सांगितलें; आणि नंतर दारुकानें व्याघ्रचर्मचें कवच अमलेला तो अर्जुनाचा शत्रुसंहारक रथ सज्ज करून तेथें आणिला व रथ तयार आहे म्हणून अर्जुनास कळविलें. तेव्हां महात्म्या दारुकानें अश्व जोडून तयार करून आणिलेला तो रथ पाहून अर्जुनानें धर्मराजाचा निरोप घेतला, ब्राह्मणांकडून पुण्याहवाचन करविलें. आणि मग तो त्या श्रेष्ठ रथावर आरूढ झाला नंतर महाबुद्धिमान् धर्मराजानें अर्जुनाला मंगल-दायक आशीर्वाद दिले आणि मग अर्जुन कर्णावर चालून गेला. राजा धृतराष्ट्रा, अर्जुन

कर्णावर चालून येत आहे असें जेव्हां प्राण्यांनी अवलोकन केलें, तेव्हां त्यांना असे वाटलें कीं, महात्म्या अर्जुनाच्या हातून आतां कर्ण मेल्याच, ह्यांत संदेह नाही ! राजा, त्या समयी जिकडे तिकडे मर्ष दिशा स्वच्छ दिशूं लागल्या; चाप, शतपल व कौंच हे अर्जुनाला उजवी घालूं लागले; आणि पुं नामक पुष्कळ पक्षी मोठ्या आनंदानें शुभ व मंगल ध्वनि करून अर्जुनाला युद्ध करण्याविषयी त्वरा कर म्हणून मुच्यू लागले ! राजा, त्याप्रमाणेंच कंक, गृध्र, वक्र, श्येन व कावले अर्जुनाच्या रथाच्या अग्रभागी मांससेवन करण्याच्या हेतूनें जलद धावूं लागले; आणि ते भयानक विहंगम आपल्या पुढें पळत चालले आहेत असें पाहून अर्जुनाला त्या शुभ शकुनांच्या योगें कर्णाच्या वधाविषयी व कौरवांच्या संहाराविषयी फारच भरंवसा उत्पन्न झाला; तथापि अर्जुन हा कर्णावर चालून जात अमतां त्याला अतिशय ग्राम सुटला आणि हें महत्कृत्य कसें पार पडेल अशी मोठी चिंताही पडली ! त्या समयी अर्जुनाची ती मंचित स्थिति अवलोकन करून कृष्ण अर्जुनास म्हणाला, “ अर्जुना, संभ्रामांत बाणांचा भडिमार करून तूं आजपर्यंत ज्यांना जिकलें, त्यांना जिकण्याला तुझ्यावाचून दुमरा कोणीही मनुष्य ह्या लोकी समर्थ झाला नसता, मी आजवर पुष्कळ शूर पुरुष पराक्रमानें जणू काय प्रतिइंद्रच असे पाहिले, पण ते समरांत तुझी गांठ पडली अमतां धारातीर्थी देह ठेवून श्रेष्ठ गतीस पावले ! अर्जुना, भीष्म, द्रोण, भगदत्त, अंबेतीचे विद्वानुविद, कांबोजाधिपति सुदक्षिण, महाबलशाली श्रुतायुष व अच्युतायुष अमल्या लोकोत्तर वीरांवर चाल करून मुरसित राहील असा तुझ्यावाचून कोण आहे बरें ! तुझ्यापाशी दिव्य अस्त्रें, विलक्षण सामर्थ्य, बाण सोडण्याची हातोटी, युद्धांत लागणारे बुद्धिस्थैर्य,

ज्ञानोत्पन्न विनय, बरोबर नेम धरणें, अचूक वाण सोडणें आणि दूरवर लक्ष पुरविणें, इत्यादिक गोष्टी यथास्थित असल्यामुळे तूं ह्या स्थावरजंगम विश्वामुद्धां देवांना व गंधर्वांना ठार करशील! अर्जुना, ह्या पृथ्वीवर तर तुझ्याप्रमाणें धुरंधर योद्धा एकही नाही! जे कित्येक पराक्रमी धनुर्धर क्षत्रिय आहेत त्यांमध्ये व देवांमध्ये मुद्धां तुझ्या बरोबरीचा कोणीही वीर मी पाहिला नाही व ऐकिलाही नाही! अर्जुना, तुझ्यासारखा एकही योद्धा ह्या जगांत नसण्याचें कारण हें की, ज्या ब्रह्मदेवांनं हे प्राणी उत्पन्न केले, त्यानंच हें तुजें प्रचंड गांडीव धनुष्य उत्पन्न केलें हें होय. अर्जुना, यद्यपि अमा सर्व प्रकार आहे, तथापि तुला पथ्यकारक अशी गोष्ट सांगणें हें माझे कर्तव्य होय. हे महाबाहो, कर्णाची योग्यता मात्र लहानसहान आहे असें समजूं नको. खरोखरी तो रणाचें भूषणच होय! कर्ण हा मोठा बलवान्, अभिमानी, अस्त्रविद्याप्रवीण, भाग्यवान्, विचित्र युद्ध करणारा व देशकालज्ञ महारथ आहे. अर्जुना, फार कशाला, तो तुझ्या बरोबरीचा अथवा तुझ्याहून अधिक आहे, असेंही म्हणण्यास हरकत नाही! ह्यास्तव, तुला मोठ्या दक्षतेनें घोर संग्रामांत त्याच्याशी युद्ध करून त्यास वधिलें पाहिजे. अर्जुना, कर्णाच्या अंगी अशीप्रमाणें तेज, वायूप्रमाणें वेग, यमाप्रमाणें क्रोध व सिंहाप्रमाणें बळ आहे. तो आजानुबाहु असून त्याची छाती भरदार आहे. त्याची उंची आठ हात आहे. तो मोठा अजिक्य, शूर व मुंदर आहे. त्याच्या ठिकाणी योद्ध्याचे सर्व गुण आहेत. मित्रांना तो मुख देणारा आहे. तो नित्य पांडवांचा द्वेष करितो; आणि कौरवांच्या हितार्थ उद्युक्त असतो; तुझ्याशिवाय कोणीही त्यास वधण्यास समर्थ नाही. फार कशाला, इंद्रप्रमुख देवांच्या हातूनही तो अव-

ध्यच आहे. ह्यासाठी, अर्जुना, तूं त्या बलाद्वय वीराला आज ठार मार. अर्जुना, कर्ण हा इतका शक्तिमान् आहे की, मांसशोणितांनी युक्त अशा प्राण्यांकडून, फार काय, प्रत्यक्ष देवांकडूनही-त्यांनी सर्वांनी एकत्र होऊन कितीही दक्षतेनें युद्ध केलें तरी-रथासहवर्तमान कर्णाचा पराभव होणें अशक्य आहे! ह्यासाठी, अर्जुना, तूच हें आज महत्कार्य कर. अर्जुना, त्या दुष्ट दुरात्म्याला पांडवांशीं विरोध करण्यापासून कांहीएक हित नाही; तथापि तो पातकी सदामवकाल पांडवांचा घात करण्याची इच्छा करितो; ह्याकरितां आज त्याला तूं जिवंत ठेवूं नको. अर्जुना, तो महारथ वीर दुर्जय्य आहे खरा, तथापि तूं त्याला यमाच्या स्वाधीन करण्यास योग्य आहेस; ह्याकरितां त्याचें आज हनन कर आणि धर्मराजाविषयी आपलें प्रेम दाखव. अर्जुना, मला माहीत आहे की, तुझ्या ठिकाणी अगाध सामर्थ्य असल्यामुळे मुरांना व अमुरांनाही तूं अजिक्य आहेस. ह्यास्तव, जो मदांध दुरात्मा नित्य पांडवांना धिक्कारितो, व ज्यामुळे दुर्योधनाला मी प्रबळ आहे असें वाटतें, त्या पापमूलक सूत्रपुत्र कर्णाला तूं आज ठार मार. अर्जुना, कर्ण हा केवळ वाय आहे. त्याच्या हातांतील खड्ग ही त्या व्याघ्राची जिह्वा होय; धनुष्य हें त्याचें तोंड होय; बाण ह्या त्याच्या दंष्ट्रा होत व वेग हा त्याचा दर्प होय! अर्जुना, मी तुला आज्ञा करितों की, आपल्या बळांनं व पराक्रमानें सिंह जसा हत्तीला वधितो, तसा तूं त्याला रणांत वध. अर्जुना, ज्याच्या पराक्रमामुळे दुर्योधन तुझ्या पराक्रमाला धिक्कारितो, त्या वैकर्तेन कर्णाला तूं आज संग्रामांत ठार कर.

~~~~~

## अध्याय त्र्याहात्तरावा.

—:०:—

## कृष्णकृत अर्जुनपराक्रमवर्णन.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुन हा कर्णाळा ठार मारण्याच्या निश्चयाने शत्रुसैन्यावर चाल करून जात अमतां अमितवीर्यावान् कृष्ण फिरून त्याला म्हणाला, “अर्जुना, अश्व, नर व गज ह्यांचा भयंकर संहार सुरू होऊन आज सतरा दिवस झाले, आरंभी तुझे सैन्य पुष्कळ होतें, परंतु शत्रूंशी लढतां लढतां तें अगदी थोडें उरलें आहे, त्याप्रमाणेंच कौरवांचें सैन्यही अफाट होतें, परंतु तुझी व त्याची गांठ पडून त्याचाही रणकंदनांत फडशा झाला आहे. हे पहा तुझ्या सैन्यांतले भूपाळ, संजय व पांडव वीर तुझ्यासारखा प्रतापशाली सेनापति असल्यामुलें एकत्र मिळून कसे व्यवस्थितपणानें कौरवांशी लढत आहेत! हा पहा पांचाल, पांडव, मत्स्य, कारुष व चेदि ह्या शत्रुसंहारक योद्ध्यांनी तुझ्या पाठबळावर भिन्न ठेवून शत्रूंचा कमाघार नाश केला आहे! ही दोन्ही सैन्ये मोठीं प्रबळ व पराक्रमी आहेत. रणांगणांत निकराचें युद्ध चालू असतां कौरवांना जिंकील असा कोण आहे बरें? तमेंच पांडवांकडील महारथांचें संरक्षण तूं करित आहेस, ह्यास्तव त्यांनाही जिंकण्याची कोणाला शक्ति नाही; कारण अर्जुना, तुझे सामर्थ्य मोठें अगाध आहे ह्यांत अगदीं संदेह नाही. सुर, अमुर व नर ह्या सर्वांसहवर्तमान तिन्ही लोक एकत्र होऊन तुझ्याशी लढण्यास सिद्ध झाले तरी तूं एकटा त्यांना जिंकशील; मग कौरवांच्या सैन्याची पर्वा ती काय? हे पुरुषशार्दूल, तुझ्यावांचून दुसऱ्या कोणत्या इंद्रतुल्य पराक्रमी वीरानें भगदत्त राजाला जिंकिलें असतें बरें? त्याप्रमाणेंच तुझ्या ह्या अफाट सेनेचा तूं संरक्षणकर्ता असल्या-

मुलें कोणीही भूपाळ वर डोळा करून हिजकडे पहाण्यास समर्थ नाही. त्याप्रमाणेंच नित्य तुजें पाठबळ असल्यामुलें रणांगणांत शिखंडी व धृष्टद्युम्न ह्यांनी भीष्म व द्रोण ह्यांस वधिलें! अर्जुना, जर असें नसतें तर इंद्राप्रमाणें अत्यंत प्रतापशाली अशा त्या महारथ भीष्मद्रोणांस युद्धांत जिंकण्यास कोण समर्थ झाला असता बरें? भीष्म, द्रोण, कर्ण, कृप, अश्वत्थामा, मौमदत्ति, कृतवर्मा, जयद्रथ, शल्य व दुर्योधन राजा हे सर्व योद्धे शस्त्रास्त्रांत पारंगत, युद्धांतून पराङ्मुख न होणारे, अक्षौहिणीचे अधिपति व समरांगणांत अतिशय पराक्रम गाजविणारे असे असल्यामुलें तुझ्यावांचून दुसरा कोणता पुरुष त्यांना जिंकिता बरें? अर्जुना, तूं शत्रुसैन्याच्या अनेक टोळ्यांचा विध्वंस करून त्यांचे अश्व, रथ व गज ह्यांची वाताहत उडविलीस आणि बहुविध देशांतून युद्धार्थ आलेल्या भयंकर वीरांना भारतातीर्थी पाडिलेस; त्याप्रमाणेंच गोवास, दामभीय, वमाति, प्राच्य, वाटधान व अभिमानी भोज ह्या सर्व प्रक्षुब्ध क्षत्रियांची आणि तुझी व भीमाची समरांगणांत गांठ होऊन त्यांचें तें अश्वगजांनी गजबजून गेलेलें सर्व सैन्य नाश पावले! अर्जुना, भयंकर पराक्रम करणारे उग्र तुषार, यवन, खश, दावीभीसार, द्रुद, शक, माठर, तंगण, आंध्रक, पुलिंद, उग्रपराक्रमी किरात, म्लेच्छ, पर्वतीय व सागरतीरी वसति करून राहिलेले योद्धे हे सर्व युद्धक्रियेमध्ये निपुण, महाबलिष्ठ व मोठ्या त्वेपानें युद्ध करणारे असल्यामुलें ह्यांनी दुर्योधनाला विजय मिळवून देण्याच्या इच्छेनें तुझ्या सैन्याशीं गदाप्रहारांनीं तुंबळ युद्ध चालविलें, तेव्हां तुझ्यावांचून दुसरा कोणीही त्यांस जिंकण्यास समर्थ झाला नमता! अर्जुना, कौरवांचें प्रचंड व बलिष्ठ सैन्य व्यूह करून उभें राहिलें आहे असें पाहून, जर तूं संरक्षण करण्यास

पाठीवर नमतास तर कोणता पुरुष त्याजवर चालून गेला असता बरे! सागराप्रमाणे अफाट व धुळीने व्याप्त झालेल्या त्या कौरवसैन्याचा क्रोधाग्रमान झालेल्या पांडवांनी जो संहार उडविला, त्याचें कारण तरी तुझा त्यांना आश्रय आहे हेंच होय. मागधांचा अधिपति महाबल जयत्सेन ह्यास अभिमन्यूने युद्धांत मारल्याला आज सात दिवस झाले. नंतर त्या मागधराजाच्या पाठीमागून त्याच्या संरक्षणासाठी चालत असलेल्या दहा हजार भयंकर हत्तींचा भीमानें गदाप्रहार करून संहार केला; आणि त्यानें दुसरे शतावधि हत्ती व रथ ह्यांचा मोठ्या आवेशानें नाश करून टाकिला. त्या समयी कौरवदळांत महान् भीति उत्पन्न झाली आणि अखेरीस हत्ती, घोडे व रथ ह्यांसह वर्तमान त्या सर्व सैन्याचा भीमसेनाच्या हस्ते नाश होऊन त्या सर्वांनी यमपुरीचा रस्ता आक्रमिला !

“अर्जुना, त्या समयी सैन्याच्या विनीचा पांडवांनी निःपात उडविला तेव्हां भीष्मानें पांडवांवर भयंकर बाणांचा वर्षाव चालू केला आणि मग त्या महान् अखवेत्यानें चेदि, काशि, पांचाल, कुरु, मत्स्य व केकय यांना शरांनी आच्छादित करून मृत्युमुखांत लोटून दिलें ! त्या वेळीं भीष्माच्या धनुष्यापासून सुटलेल्या त्या सरळ चालणाऱ्या रुक्मपुंख व शत्रुदेहविदारक बाणांनी अंतरिक्ष अगदी ओतप्रोत व्याप्त झालें. त्या समयी त्यानें बाणांचा असा कांही भडिमार आरंभिला की, तो एकेका तडाक्यास सहजावधि रथांचा सप्पा उडवूं लागला. तेव्हां त्यानें एक लक्ष महाबलिष्ठ नर व गज हे एकत्र होऊन लढत असतां त्यांस ठार मारिलें. त्या समयी भीष्माचें व त्या तुझ्या सैन्याचें मोठें विचित्र युद्ध झालें. तेव्हां तुझ्या वीरांनी नऊ प्रकारच्या गतींनी युद्ध केले; परंतु अखेरीस त्या सर्व गतींचा कांही उपयोग होत नाही

असें पाहून त्यांनीं त्या सोडून दिल्या व दहाव्या गतीचा अंगीकार करून कौरवांच्या गजावर, अश्वंवर व नरांवर हल्ला करून त्यांस बाणविद्ध केलें. त्या समयीं भीष्मानें समरांगणांत पुनः पांडवसेनेवर बाणांचा भडिमार केला आणि ह्याप्रमाणें दहा दिवसपर्यंत तुझ्या सैन्याशी अगडत असतां भीष्मानें तुझ्या पक्षाचे अनेक रथ वीरहीन केले आणि पुष्कळ हत्ती व घोडे वधून समरांगणांत रुद्राप्रमाणें किंवा उपेंद्राप्रमाणें आपलें उग्र रूप दाखविलें ! त्या समयी भीष्मानें पांडवांचें सैन्य अगदी पेंचाटीत घातलें व त्याचे अगदी तुकडे तुकडे उडविले. तेव्हां त्यानें चेदि, पांचाल व केकय भूषाळांस ठार मारिलें आणि रथ, अश्व व गज ह्यांनी गजबजून गेलेल्या पांडवसेनेला जाळून टाकण्याचा क्रम आरंभिला. अर्जुना, आपण जर नावेप्रमाणें साहाय्य केलें नाही, तर हें संदमति दुर्योधन स्वचित आपत्सागरांत बुडून जाईल असा विचार करून भीष्मानें जेव्हां भयंकर पराक्रम करण्यास सुरुवात केली, तेव्हां सूर्याच्या प्रदीप्त किरणांप्रमाणें दुःसह असें तें त्याचें तेज पाहून महान् महान् आयुधें धारण करणाऱ्या अगणित सृजयपदातीना व दुसऱ्या राजांना त्याकडे वर मान करून पाहवनास झालें; तथापि तो विजयशाली महावीर रणांगणांत परिभ्रमण करीत असतां ते सृजय व पांडव मोठी पराकाष्ठा करून त्याजवर चालून गेले, पण अखेरीस भीष्मानें त्या सर्वांची दाणादाण करून टाकून आपलें एकवीरत्व सर्वांच्या निदर्शनास आणिलें ! अशा त्या अद्वितीय योद्ध्याला अखेरीस शिखंडीनें तुझ्या साहाय्यामुळें गांठलें, आणि त्या महाव्रत पुरुषश्रेष्ठावर बांकदार पेण्यांच्या बाणांचा भडिमार केला; व शेवटीं वृत्रासुराची इंद्रापुढें जी अवस्था झाली, तीच अवस्था त्या महावीराची तुझ्यापुढें झाली !

अर्जुना, तो हा पितामह भीष्म शरशय्येवर पडला आहे पहा !

“ नंतर महारथ द्रोणानें पांच दिवसपर्यंत प्रताप गाजवून शत्रुसैन्याचा विध्वंस उडविला. त्या समयी त्यानें अभेद्य व्यूह सिद्ध करून पांडवांकडील अनेक महारथांना वधिलें व जयद्रथाचें कांही काळपर्यंत संरक्षण केलें. त्या भयंकर योद्ध्यानें यमाप्रमाणें उग्र रूप धारण करून रात्रियुद्धांत शत्रूंवर असा कांही बाणांचा भडिमार केला की. त्यांच्या योगें तें शत्रुसैन्य जळून खाक झालें ! परंतु, अर्जुना, अखेरीस त्या प्रतापशाली भारद्वाजाची धृष्ट-द्युम्नाशीं गांठ पडून त्याला समारांगणांत देह ठेवावा लागला ! अर्जुना, जर त्या समयी तूं कौरवांकडील कर्णप्रभृति महारथांचें निवारण केलें नसतें, तर खचित द्रोणाचा नाश झाला नमता. तेव्हां तूं एकट्यानें कौरवांचें सर्व सैन्य थांबवून धरिलेंस आणि ह्यामुळेंच धृष्ट-द्युम्नाला द्रोणाचा वध करितां आला ! अर्जुना, जयद्रथ राजाच्या वधप्रसंगीं तूं जो काही पराक्रम केलास, तसा पराक्रम समारांगणांत तुझ्यावांचून दुसरा कोणता क्षत्रिय करील बरें ! त्या वेळीं देखील तूं प्रचंड कौरवसेनेचें स्तंभन केलेंस व शूर वीरांचें हनन करून आपल्या अस्त्रबलानें व वीर्यबलानें जयद्रथाला मारिलेंस. अर्जुना, जयद्रथाला तूं जे वधिलेंस. तें केवळ सर्व भूपतींना मोठें नवलवाटत आहे ! पण मला मात्र त्यांत कांही विशेष वाटत नाही. माझी तर अशी समज आहे की, ज्यांचा तुझ्या हातून क्षणांत नाश व्हावयाचा त्यांनीं तुझ्याबरोबर एक दिवसभर जर ठिकाव धरिला, तर ते खचित बलिष्ठच अमलेपाहिंजत.

“ असो; भीष्म व द्रोण हे पतन पावले तेव्हां कौरवांच्या सैन्याचें सर्वस्वच नष्ट झालें असें मी मानितों. आज ही कौरवसेना भयं-

कर दिसत आहे खरी, परंतु तिच्यामध्ये महान् महान् योद्धे व अश्व, गज आणि रथ नष्ट झालेले आहेत. सूर्य, चंद्र किंवा नक्षत्रें ही अमूर्तगत झाली असतां आकाश जसें उदास दिसेत तसें हें कौरवसैन्य आज उदास दिसेत आहे. पूर्वी इंद्रानें प्रताप गाजवून जशी अमुरसेना उध्वस्त करून टाकिली, तशीच तूं आपल्या प्रतापानें ही कौरवसेना उध्वस्त करून टाकिली आहेस. अर्जुना, कौरवांच्या सैन्यांत अश्व-त्थामा, कृतवर्मा, कर्ण, कृप व शल्य असे पांच महारथ काय ते अवशिष्ट आहेत. आज तूं त्यांचा वध कर आणि द्वीपें, नगरें, आकाश, जल, पाताल, पर्वत व महावनें ह्यांमहवर्तमान सर्व पृथ्वी धर्मराजाला मिळवून दे. पूर्वी विष्णुनें दैत्यदानवांचा वध करून ज्याप्रमाणें इंद्राला तिन्ही लोकांचें आधिपत्य मिळवून दिलें, त्याप्रमाणें तूं कौरववीरांचा वध करून अमितवीर्यवान् युधिष्ठिराला ह्या वंशुधरेचें आधिपत्य मिळवून दे. अर्जुना, विष्णुनें दैत्यदानवांचा संहार केला तेव्हां देवांना जसा आनंद झाला, तसा तुझ्या हातून शत्रूंचा संहार होऊन आज पांचालांना आनंद होवो. अर्जुना, द्रोणाचार्यांच्या ठिकाणी तुझी भक्ति असल्यामुळे जर तूं अश्वत्थाम्यावर कृपा करीत असशील, कृपाचार्यांच्या ठिकाणी पूज्यबुद्धि ठेवून त्याला मारण्याला जर तूं तयार नसशील, आपल्या मातेचे बंधुवर्गाविषयी सन्मानबुद्धि धारण करून तूं कृतवर्मांला वधण्यास जर राजी नसशील. अथवा मद्राधीश शल्य राजा आपला मातुल आहे असे मनांत आणून त्याला वधाचें असें जर तुझ्या मनांत येत नसेल, तर निदान पांडवांविषयी दुष्ट बुद्धि धारण करणाऱ्या त्या दुरात्म्या कर्णाला तरी आज तूं तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार करून ठार मार. अर्जुना, हें तुझें कृत्य विहित आहे; ह्यांत कांही एक दोष नाही. ह्याम

आह्वां सर्वांची अनुज्ञा आहे; ह्यांत कांहींएक पाप नाही. हे अनघा अर्जुना, दुर्योधनाने रात्रीच्या समयी तुझ्या मातेला पुत्रांसहवर्तमान जाळण्याचा जो प्रयत्न केला व तुझाला धृतार्थ जें प्रवृत्त केलें, त्या सर्वाला मूळ कारण हा दुष्ट कर्णच होय. दुर्योधनाला नेहमी असें वाटतें की, 'कर्ण आहे ह्मणूनच आपला बचाव आहे!' अर्जुना, मूर्ख दुर्योधन संतप्त होऊन तेव्हां मला मुद्धां बांधण्यास उद्युक्त झाला! दुर्योधनाची अशी खातरी आहे की, कर्ण हा स्वचित्त सर्व पांडवांना जिंकील. अर्जुना, दुर्योधनाला तुजें सामर्थ्य किती आहे हें माहीत आहे, तथापि कर्णाच्या बलावर विश्वास ठेवून त्यानें तुझ्याशी हें युद्ध आरंभिलें; कारण कर्ण नेहमी दुष्ट दुर्योधनास उभेद येण्यासाठी 'मी सर्व पांडवांना व दाशाहं कृष्णाला मारीन' असें त्याजपाशी ह्मणत असतो. अर्जुना, आज समरांगणांत कर्ण गर्जत आहे, ह्यासाठी त्याचा तूं वध कर. दुर्योधनानें तुझांम उद्देशून जी जी पापें केली, त्या सर्वांचें आदिकारण हा दुष्टबुद्धि कर्ण होय. अर्जुना, दुर्योधनाच्या महा क्रूर महारथांनी अभिमन्यूला जेव्हां वधिलें, त्या वेळेचें स्मरण झालें ह्मणजे माझा जो संताप होतो, तो काय सांगूं? अर्जुना, त्या समयी अभिमन्यूनें लहान-सहान पराक्रम केला नाही. त्यानें द्रोण, अश्व-त्थामा, कृप व इतर वीर ह्यांची दुर्दशा उडविली, हत्तीवरील योद्धे वधिले, महारथांना रथहीन केलें, घोड्यांवरील स्वार ठार मारिले, आणि पायदलाला आयुधहीन करून धारातीर्थी पाडिलें! अर्जुना, तो बेलाच्या खांद्याप्रमाणें भरदार खांद्याचा बलाढ्य योद्धा कौरवांशी लढत असतां महारथांना जर्जर करून आणि अश्व, नर व गज ह्यांचा संहार उडवून बाण-प्रहारांनीं शत्रुसैन्य जाळूं लागला, तेव्हां त्याच्या त्या लोकोत्तर शौर्यामुळें कुरुकुलाची व यदु-

कुलाची कीर्ति वृद्धिंगत झाली! अर्जुना, अभिमन्यूचा तो अलौकिक पराक्रम अवलोकन करून कर्णानें वास्तविक स्तब्ध रहावयास पाहिजे होतें. परंतु तशांतही तो त्याच्या नाशकरितां अटतच होता, ही गोष्ट मनांत येऊन नखशिखांत माझा देह पेटतो, हें मी तुला शपथपूर्वक सांगतो! अर्जुना, तशा समयीही कर्ण हा अभिमन्यूवर चालून गेला, पण रणांत अभिमन्यूनें त्याच्यावर बाणांचा अमा कांहीं भडिमार चालविला की, त्यामुळें त्याच्यानें अभिमन्यूच्या समोर उभें राहावेना. त्याच्या देहांतून रक्ताचे ओघ वाहूं लागले व तो वायाळ होऊन मूर्च्छित पडला! नंतर सावध झाल्यावर कर्णानें आपली ती स्थिति अवलोकन केली, तेव्हां त्याला मोठा क्रोध येऊन तो संतापाचे मुसकोरे टाकूं लागला आणि जीविनाविषयी निराश होऊन आतां रणांगणांतून निवून जावें हेंच त्यास श्रेयस्कर वाटलें; व तो बाणप्रहारांनी विव्हल होऊन अगदीं थकून गेल्यामुळें तसाच तेथें राहिला. इतक्यांत द्रोणानें अभिमन्यूचें धनुष्य तोडून टाकण्याविषयी सम-योचित सूचना केली ती ऐकून कर्णानें तत्काळ अभिमन्यूचें धनुष्य छेदिलें आणि मग त्या निःशस्त्र वीरावर बाकीचे पांच कुटिल महारथ बाणांचा भडिमार करीत धावून आले व त्यांनीं अभिमन्यूला ठार मारिलें तें पाहून सर्वांना अतिशय दुःख झालें! पण त्या समयी देखील दुष्ट कर्ण व दुर्योधन ह्यांना मोठा आनंद झाला व ते मोठ्यानें हंमले! अर्जुना, कौरव-सभेंत कौरवांच्या व पांडवांच्या समक्ष कर्णानें द्रौपदीला जें कठोर भाषण केलें, तें तुला आठ-वन असेलच. त्या वेळीं कर्ण द्रौपदीला ह्मणाला, "द्रौपदी, पांडवांचा पूर्ण नाश होऊन ते आतां कायमचें नरकांत पडले! ह्यास्तव, सुंदरी, तूं आतां अन्य पति कर! हे मंजुभाषिणी कमलनयने, तूं आतां दुर्योधनाची दाम्नी होऊन



त्याच्या मंदिरांत प्रविष्ट हो ! कृष्णे, आतां पांडव मेलेच ! आतां त्यांची तुझ्यावर कांहीं-एक सत्ता उरली नाही ! हे पांचालि, खचित तूं दासभार्या असून स्वतः दासी झाली आहेस ! आज पृथ्वीवर दुर्योधन काय तो एकटा राजा ! इतर सर्व राजे त्याची सेवा करून त्याचें योगक्षेम चालवितात ! ही पहा सर्व पांडवांची एकसारखी गति झाली ! हे सर्व दुर्योधनाच्या वीर्यपुढें फिके पडून एकमेकांकडे टकमकां पहात आहेत ! हे सर्व षंड खचित नरकांतच लोळत आहेत ! आतां ह्यांना दासांप्रमाणें दुर्योधनाची सेवा करावी लागेल ! ”

### अर्जुनाला उत्तेजन.

“ अर्जुना, तो अत्यंत दुष्ट बुद्धीचा कर्ण धर्माधर्म-विचार न करितां त्या समयी ह्या प्रमाणें द्रौपदीला जें कांहीं बोलला, तें सर्व दुर्भाषण तूं ऐकिलें आहेसच. ह्यामत्व तूं आज आपले सुवर्णमंडित व सहाणेवर धार देऊन जलाल केलेले प्राणघातक शर त्याजवर सोड व त्याला वधून त्याची बडबड कायमची नष्ट कर. आज तुझ्या गांडीव धनुष्यापासून सुटलेले सुवर्णपुंख भयंकर नाराच बाण विद्युलतेसारखे झळाळत कर्णाच्या देहांत शिरोत आणि त्याला भीष्माच्या व द्रोणाच्या भाषणाचें स्मरण होवो ! आज तुझे बाण कर्णाचें कवच भेदून त्याचें रक्त प्राशन करोत आणि त्याला मर्मस्थळीं विद्ध करून यमसदनी मोठ्या वेगानें पाठवोत ! अर्जुना, आज कर्णाला रथांतून खाली पडतांना पाहून बाणप्रहारांनीं जर्जर करून सोडलेल्या राजांमध्ये मोठा हाहाकार उडून त्यांना अगदीं दैन्य येवो; आणि सर्व बंधुवर्ग हे कर्ण निरायुध होत्सता रणांगणांत रक्तबंबाळ होऊन लोळत पडला आहे असें पाहून हळहळत पडोत ! अर्जुना, तुझ्या भल्ल बाणानें भग्न झालेला कर्णाचा हस्तिकक्ष ध्वज

कपायमान होऊन भूमीवर पडो व तुझ्या शतावधि शरांनीं छिन्न झालेला अश्वहीन व वीरहीन असा कर्णाचा सुवर्णमंडित रथ अवलोकन करून भयभीत होत्सता शल्य पळून जावो ! आणि अर्जुना, ह्याप्रमाणें तुझ्या हातून कर्णाचा वध झाला असें पाहून आज दुर्योधन हा राज्याविषयी व स्वतःच्या जीविताविषयी निराश होवो !

“ अर्जुना, हे पांचाल वीर कर्णावर कसे धावून चालले आहेत ते पाहिलेस काय ? कर्णानें तर तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार करून ह्यांचा अगदीं संहार चालविला आहे, तरी ते पांडवांना विजय मिळावा ह्मणून एकसारखे झटत आहेत ! हे पहा पांचाल, द्रौपदेय, धृष्टद्युम्न, शिखंडी, धृष्टद्युम्नाचे पुत्र, शतानीक, नकुलाचा पुत्र, गृध्र नकुल, सहदेव, दुर्मग्व, जनमेजय, सुधर्मा व सात्यकि हे अगदीं कर्णाच्या तडाक्यांत सांपडले आहेत. अर्जुना, रणांगणांत कर्णानें पांचालांचा जो संहार आरंभिला आहे, त्यामुळें तुझे बंधुवर्ग कसा भयंकर आक्रोश करीत आहेत तो ऐकिल्यास का ? पांचाल हे कांहीं झालें तरी भिऊन रणांगणांतून पळून जाणारे नाहीत; कारण ते महाधनुर्धर तुंबळ युद्ध करीत असतां मरणाची मुळीच पर्वा करीत नाहीत. अरे, ज्या एकट्यानें सर्व पांडव-सैन्याला ओतप्रोत बाणांनीं व्यापिलें, त्या भीष्माची गांठ पडल्यावर सुद्धां जे युद्धपराङ्मुख झाले नाही, ते महारथ पांचाल कर्णाची गांठ पडून त्याशी युद्ध करीत असतां पळून जातांल असें कसें होईल ? अर्जुना, पांचाल हे मोठे शूर आहेत. द्रोणाचार्यानें त्यांचा प्रत्येक दिवशीं संहार उडविला आणि त्यांच्या रथसेनेंत घुसून तो यमाप्रमाणें आपला प्रताप गाजवूं लागला; तथापि पांडवांना विजयश्री प्राप्त व्हावी ह्या उद्देशानें जे पांचाल त्या सर्व धनुर्धरांमध्ये

श्रेष्ठ अशा द्रोणाचार्यावर तुटून पडले, व ज्यांनीं द्रोणाच्या प्रज्वलित अस्त्राशीस न जुमानितां युद्धांत कौरवांना जिंकण्याचा नित्य मोठ्या नेटानें उद्योग चालविला, ते पांचाल कर्णाला भिडून पळून जातील असें कधीं तरी संभवेले काय ? अर्जुना, शूर कर्णानें आपल्यावर धावून आलेल्या वेगवान् पांचालांना शरप्रहारांनीं विद्ध करून, प्रज्वलित अग्नि जसा पतंगांचा प्राण घेतो तसा यानें ह्या पांचालांचा प्राण घेतला पहा ! अर्जुना, हे पहा आणखी पांचाल कर्णावर चाल करून गेले, पण त्यांचाही कर्णाकडील योद्धे स्वचित मोड करतील ! पांडवांसाठी प्राण देण्यास सिद्ध झालेल्या त्या पांचाल वीरांची कर्णानें पुनः दुर्दर्श करून टाकिली पहा ! हा पहा, शतावधि पांचालांना हा कर्ण मृत्युमुग्धांत लोटून लागला; आतां जर तूं त्यांच्या संरक्षणाकरितां पुढें झाला नाहीस, तर कर्णप्रतापरूप अगाध महासागरांत त्या भारतीय महाधनुर्धरांना नौकादिकांचा आश्रय न मिळाल्यामुळें ते स्वाम बुडून जातील ! अर्जुना, ऋषिश्रेष्ठ भार्गव परशुरामापासून कर्णानें जे महाभयंकर अस्त्र मिळविलें, त्याचें हें उग्र रूप दृग्गोचर होऊं लागलें ! हे पहा तें दारुण अस्त्र पांडवांच्या महासैन्यास वेढा देऊन त्यास जालून टाकून स्वतःच्या तेजानें प्रज्वलित झालें ! हे पहा कर्णाच्या धनुष्यापासून सुटलेले शर भ्रमरांच्या समुद्रांप्रमाणें तुझ्या सैन्यावर येत असून तुझ्या सैन्याची देना उडवीत आहेत ! अर्जुना, हे पहा भार्गवाच्यापुढें पांचाल वीरांनी हात टेकेले व ते दशदिशांस पळून जाऊं लागले ! अर्जुना, कौरवांविषयीं नित्य कोपाविष्ट असलेला भीमसेन चोहोंकडून संजयांनीं परिवेष्टित होतसाता कर्णाशी लढत आहे व कर्ण त्याजवर जलाल बाणांचा भडिमार करीत आहे

पहा. अर्जुना, ह्या वेळीं तूं जर कर्णाची उपेक्षा केलीस, तर देहांत प्रविष्ट झालेला रोग जसा उपेक्षा केली असतां अखेरीस प्राण घेतल्याशिवाय रहात नाही, तसा तो कर्ण पांडव, संजय व पांचाल ह्यांचा प्राण घेतल्याशिवाय रहाणार नाही ! जो कर्णाशीं युद्ध करून मुरक्षित आपल्या गृहीं परत येईल असा युधिष्ठिराच्या सैन्यांत तुझ्यावाचून दुसरा कोणताही वीर मला दिसत नाही; ह्यासाठीं तूंच आज जलाल बाणांची वृष्टि करून कर्णाला ठार मार आणि आपली प्रतिज्ञा सिद्धीस नेऊन यश मिळव. अर्जुना, कर्णासहवर्तमान सर्व कौरवांना युद्धांत जिंकण्यास तूं समर्थ आहेस. तुझ्याशिवाय अन्याच्या हातून हें कृत्य स्वचीत होणार नाही हें मी तुला शपथपूर्वक सांगतों; ह्यासाठी, अर्जुना, महारथ कर्णाला ममरांगणांत वधून तूं कृतार्थ व सुखी हो. ”

## अध्याय चौऱ्याहत्तरावा.

—::—

### अर्जुनाचें भाषण.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कृष्णानें ह्याप्रमाणें प्रोत्साहनपर भाषण केले तें श्रवण करून अर्जुनाला मोठी उमेद आली; व आपल्या हातून कर्णवधाचें महत्कृत्य कसें पार पडेल अशी जी त्याला चिंता पडली होती, ती नाहीशी होऊन तत्काळ त्याला स्फुरण चढलें; आणि तो प्रत्यंचेवरून हात फिरवून व कर्णावर धनुष्य रोंखून लागलेंच त्याचें आस्फालन करूं लागला. राजा, त्या समयीं

अर्जुन ह्याणाला:—केशवा, मला सर्व आधार तुझा आहे. घडलेल्या व घडणाऱ्या सर्व कृत्यांचा वास्तविक कर्ता तूंच होस. ह्यासाठीं तुझ्या प्रसादानें आज मला विजयश्री वरील ह्यांत मुळीच संदेह नाही. गोविंदा, सर्व त्रैलोक्य एकवटून

माझ्याशी युद्धार्थ मिद्ध झाले, तरी त्या सर्वांला घोर संग्रामांत मी तुझ्या माहाव्याने ठार करीन; मग यःकश्चित् कर्णाची ती पर्वा काय ' जनार्दना, पांचालांचें सैन्य पळत आहे. रणांगणांत कर्ण मोठ्या शौर्याने लढत आहे. व त्याप्रमाणेच इंद्राच्या अशनीसारखे कर्णाने सोडिलेले हे भार्गवास्त्र दशदिशा जाळून फस्त करीत आहे, तरी आतां ह्या संग्रामांत मी कर्णाला मारून अमा कांही लोकोत्तर प्रताप गाजवीन की, ही पृथ्वी आहे तोंपर्यंत हिजवरील सर्व प्राणी आजच्या ह्या घोर युद्धाची कथा नित्य सांगत राहातील ! कृष्णा, आज मी ह्या गांडीवाच्या योगें कर्णावर बाणांचा अतिशय भडिमार करीन व त्यास मृत्युमदर्नी पाठवीन ! खचित आज धृतराष्ट्र राजा ' अरेरे, मूर्ख दुर्योधनाला राज्याभिषेक करून मी मोठी चुकी केली ! ' असा आपल्या स्वतःला दोष देऊन हलहलें लागेल ! खचित आज राज्य, मुक्क, लक्ष्मी, राष्ट्र, नगर व पुत्र ह्या सर्वांना धृतराष्ट्र अंतरेल आणि मोठाच अनर्थ उद्भवेल ! कृष्णा, जो राजा गुणवंताचा द्वेष करितो व निर्गुणी पुरुषाला अधिकार देतो, तो सर्वांचा त्वरित क्षय घडवून आणवून मग रडत बसतो ! कृष्णा, आंब्यांची मोठी थोरली राई आहे, ती जर एखाद्यानें तोडून टाकिली, तर त्यास अतिशय दुःख झाल्याशिवाय राहिल काय; खचित आज सूतपुत्राचा मी वध केला ह्मणजे दुर्योधनाची सर्वेच आशा नाहीशी होईल; मग त्याला राज्याची आशा राहाणार नाही व जीविताचीही आशा राहाणार नाही. कृष्णा, आज मी बाणप्रहरांनी कर्णाचे तुकडे उडविले ह्मणजे दुर्योधनाला तुझ्या सामवचनांचें स्मरण होईल ! आतां मी शकुनीला शररूप फांसे, गांडीवरूप फांसे ठेवण्याची पिशवी व रथरूप सोंगट्यांचा पट ही सर्व दाखवितों ! आज मी

जलाल बाणांच्या भडिमारांनी कर्णाला वधून, धर्मराजा फार दिवस जी घोर चिंता करीत आहे ती एकदांची नाहीशी करून टाकितों ! कृष्णा, आज मी सूतपुत्राला ठार मारिलें ह्मणजे युधिष्ठिराला मोठा आनंद होईल व तो मुप्रसन्न चित्ताने मद्देदीत सुख भोगील ! केशवा, आज मी कर्णावर असा दुर्धर व अप्रतिम बाण सोडीन की, तो तत्काळ कर्णाचा प्राण घेईल ! कृष्णा, ज्या दुष्टानें माझा वध करण्याकरितां अमा पण केला आहे की, ' मी जेंपर्यंत अर्जुनाला मारिलें नाही तेंपर्यंत पायच धुणार नाही, ' त्या कर्णाचा देह मी आज बांकदार बाणांच्या वृष्टीनें रथांतून खाली पाडीन आणि त्याचा तो पण मिथ्या करीन. कृष्णा, ज्याला सर्व पृथ्वीवर मीच काय तो वीर असे वाटतें व ह्या धर्मदंडीनें जो इतर वीरांचा उपमर्द करितो, त्या अवघ कर्णाचें रक्त आज ही भूमि प्राशील ! कृष्णा, धृतराष्ट्राच्या मान्यतेनें कर्ण हा आपल्या गुणांची वढाई मारीत ' कृष्णे, तुझे पति आतां मरे ! ' ह्मणून जें कांही बोलला, तें सर्व आज माझे हे तीक्ष्ण बाण मिथ्या ठरवितील आणि सर्पाप्रमाणें क्षुब्ध होऊन त्याचें रक्त पितील ! कृष्णा, आज मी मोठ्या चलाखीनें विजेंसारखे देदीप्यमान नाराच बाण गांडीवापामून सोडीन ते कर्णाला खचित परम गतीला पोचवितील ! कृष्णा, त्या समग्री कौरवसभेंत पांडवांची हेलना करून कर्ण द्वेषदीला जें कांही क्रूर भाषण बोलला, त्याचा त्याला आज पश्चात्ताप होईल ! कृष्णा, पांडव हे पंड आहेत की मर्द आहेत ह्याचा निर्णय आज दुरात्म्या कर्णाच्या वधानें घडेल ! कृष्णा, ' धृतराष्ट्रपुत्रहो, तुझाला पांडुपुत्रांपामून मी बचावीन ' अशी कर्णाची ती आत्मरक्षाचा माझे धार दिलेले हे बाण मिथ्या करून दाखवितील ! कृष्णा, कौरवहो, पांडवांना पुत्रादिकांसह वर्तमान ठार मारून

त्यांचा सर्व उद्योग मी समाप्त करितों !' अशी ज्यानें फुशारकी मिरविली, त्या कर्णाला मी आज सर्व धनुर्धरांच्या समक्ष ठार मारिन ! कृष्णा, ज्याच्या बाहुबलावर विसंवन मूर्ख दुर्योधनानें आमचा नित्य अपमान केला, त्या कर्णाचा आज युद्धांत वध करून मी धर्मराजाला संतोषवीन ? माधवा, मी आज प्रथम नानाविध शरांचा मोठ्या आवेशानें शत्रूंवर असा कांही भडिमार करीन की, ते अगदीं त्रस्त होऊन बाणप्रहरांनीं पटापट धारातीर्थीं पडूं लागले ह्मणजे रथकुंजरादिकांनीं मही अगदीं चित्तविचित्र होईल आणि मग तेथें त्या घोर संग्रामांत प्रतापशाली कर्ण हा प्राप्त झाला असतां बाणवृष्टीनें मी त्याचा प्राण घेईन ! कृष्णा, आज मी कर्णाला वधिलें ह्मणजे धृतराष्ट्राचे पुत्र व तत्पक्षीय भूपाळ घाबरून जाऊन मिहाला भिऊन पळत मुटणाच्या मृगांप्रमाणें दशदिशांस पळून जातील ! गोविंदा, आज मी मुह्यदांसह व पुत्रांसह कर्णाला युद्धांत वधिलें ह्मणजे दुर्योधन राजा स्वतःला दोष लावून हळहळूं लागेल ! कृष्णा, आज कर्णाला हत झालेला पाहून सूड घेण्यासाठीं धडपडणारा दुर्योधन राजा 'सर्व धनुर्धरांमध्ये अर्जुनच श्रेष्ठ' असें जाणील ! कृष्णा, आज मी कर्णाचा वध करून पुत्र, पौत्र, अमात्य व सेवक ह्यांसहवर्तमान धृतराष्ट्र राजाला सर्व राज्यांत निराश्रित करून सोडीन ! केशवा, आज चक्रांग (बगळे) व दुसरे नानाविध मांसाद पक्षी माझ्या बाणांनीं छिन्नभिन्न करून टाकिलेल्या कर्णाच्या गात्रांवर खुशाल मंचार करतील ! कृष्णा, मी आज समरभूमीवर सर्व वीरांच्या देवत जलाल अशा विपाठ व क्षुर बाणांनीं कर्णाचें मस्तक छेदून त्याच्या देहाचे तुकडे तुकडे उडविले ह्मणजे युधिष्ठिराची महान् चिंता दूर होईल व त्याच्या चित्ताला स्वास्थ्य

मिलेल ! कृष्णा, आज मी बंधुवर्गासमवेन राधेयाला ठार मारिलें ह्मणजे धर्मपुत्र युधिष्ठिराचें मन प्रसन्नता पावेल ! कृष्णा, आज मी कर्णाबरोबर त्याचे जे नीच अनुयायी आहेत त्यांजवर देखील अग्नीप्रमाणें प्रखर व सर्पाप्रमाणें भयंकर असे शर टाकीन व सुवर्णाची चिलखतें चढविलेल्या आणि जडावाचीं कुंडलें धारण केलेल्या योद्ध्यांनीं हें महीतल झांकून काढीन ! हे मधुसूदना, आज अभिमन्यूच्या सर्व शत्रूंची शिरें व गात्रें जलाल बाणांनीं छेदून त्यांचीं मी छकलें उडवीन आणि कौरवहीन पृथ्वी करून ती धर्मराजाला देईन किंना अर्जुनरहित मेदिनी होऊन तिजवर तुला भ्रमण करावें लागेल ! कृष्णा, आज कर्णाचा वध करून सर्व धनुर्धरांच्या कौरवांविषयी जो माझा संताप होत आहे त्याच्या, व गांडीवापासून सोडिलेल्या शरांच्या ऋणांतून मी मुक्त होईन ! कृष्णा, माझ्या मनाला तेरा वर्षे जी तळमळ लागलेली आहे, ती आज एकदांची संपेल ! कृष्णा, इंद्रानें शंवरामुराला जसें वधिलें तसें मी आज कर्णाला वधिलें ह्मणजे मित्रकार्यासाठीं उद्युक्त झालेल्या सोमकांच्या महारथांना कृतार्थता वाटे; आणि मी कर्णाला वधून जय मिळविला ह्मणजे मातृकीला माझ्याविषयी किती कौतुक उत्पन्न होईल हें सांगतांच येत नाही ! कृष्णा, आज मी कर्णाला व त्याच्या महारथ पुत्राला रणांत ठार मारिलें अमनां भीमाला, नकुलाला, सहदेवालाला व सात्यकीला अतिशय आनंद वाटे ! कृष्णा, आज घोर रणांत मी कर्णाला मारून पांचाल, धृष्टद्युम्न व शिखंडी ह्यांच्या ऋणांतून उत्तीर्ण होईन ! आज क्रोधायमान झालेला अर्जुन समरांत कौरवांचा व कर्णाचा संहार उडवील तो सर्व वीरांच्या दृष्टीस पडेल ! आणि मग मी पुनः तुझ्याजवळ स्वतःची थोरवी सांगेन !

कृष्णा, ह्या लोकीं धनुर्विद्येत किंवा पराक्रमांत माझी बरोबरी करणारा कोणी तरी आहे काय? तसाच माझ्यासारखा शांत व कोपिष्ठ असा तरी दुसरा कोणी आहे काय? मज महाधनु-धराशीं मुर, अमुर व इतर सर्व प्राणी एकत्र होऊन लढण्यास प्राप्त झाले असतांही मी आपल्या बाहुबलानें त्या सर्वांना जिंकून ! खचित मी मोठ्या बलाढ्य योद्ध्यांपेक्षांही बलाढ्य आहे ! गांडीव धनुष्यापासून बाणांचा भडिमार करून, हिमकाच्या शेवटीं तृण-राशीवर पतन पावलेल्या अश्वप्रमाणे सर्व कौरवांना व बालिहकांना सैन्यासह मी एकदा मोठ्या आवेशानें जाळून टाकीन ! हीं पहा माझ्या हातांवर बाणचिन्हें लिहिलेली अमून हें बाण लावून आकर्षण ओढिलेलें दिव्य धनुष्यही दृग्गोचर होत आहे ! ह्याप्रमाणेंच माझ्या पायांवर ध्वजांची व रथांची चिन्हें आहेत, तेव्हां माझ्यासारख्या लोकोत्तर वीराला युद्धांत जिंकण्यास कोण समर्थ होईल ?

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, तो अद्वितीय अर्जुन ह्याप्रमाणें कृष्णाला ह्मणाला व क्रोधानें रक्तवत् आरक्त नेत्र करून तत्काळ भीमाला सोडविण्याकरितां आणि कर्णाचें मस्तक उडविण्याकरितां रणामध्ये घुसला.

## अध्याय पंचाहत्तराव.

—:०:—

### संकुलद्वंद्वयुद्ध.

धृतराष्ट्र विचारतो:—बा संजया, पांडव-संजय व कौरव ह्यांनीं अगदीं लगट करून अतिशय दारुण व अगाध संग्राम चालविला असतां तेथें रणांगणांत अर्जुन प्राप्त झाल्यावर मग त्याचें व कर्णाचें जें युद्ध जुंपलें त्याचें सविस्तर वर्णन कर.

संजय सांगतो:—मोठमोठ्या ध्वजांनीं

शोभायमान असलेलीं तीं दोन्ही प्रचंड सैन्ये जेव्हां अगदीं एकवटून लढूं लागलीं, तेव्हां उष्णकाळच्या अवेरीम मेघांचे समुदाय जशा भयंकर गर्जना करितात, तशी तुंटुभीच्या ध्वनीच्या योगें भयंकर गर्जना करूं लागली. त्या समयी त्या दोन्ही दळांतील प्रचंड गज ह्मणजे जणू काय मेघच; शस्त्राखें ह्या जलधारा; वायें, रथांच्या धावा व टाळ्या हे मेघध्वनि; सुवर्णमंडित आयुधें ही वीज; आणि शर, खड्ग व नाराच बाण ह्या जणू काय पर्जन्याच्या सरीच असें भासत होते ! राजा, त्यांनीं समरभूमीवर खड्गादिकांच्या योगें एकसारखा क्षत्रियसंहार चालविला होता व त्यामुळे रणांगणांत रुपिराचे ओघ मोठ्या वेगानें वहात होते ! राजा, अकाळीं भयंकर पर्जन्यवृष्टि झाल्यानें जसा प्राण्यांचा संहार होतो, तसा त्या वेळीं उभय सैन्यांत प्राण्यांचा मोठा संहार झाला ! त्या समयी तीं दोन्ही दळे मोठ्या विचित्र रीतीनी युद्ध करीत होती. कोठें कोठें अनेक रथी एकत्र होऊन एका रथ्याला चोहों-कडून घेरीत व त्यास यमसदनीं पाठवून देत; कोठें कोठें एकच रथी एकाच रथ्याला जर्जर करून ठार मारी; कोठें कोठें एक रथी अनेक बलाढ्य रथ्यांनाही मृत्युमुखांत लोटी; कोठें कोठें एकदा रथी दुसऱ्या रथ्यावर हल्ला करून त्यास त्याच्या सारख्यामुद्धां व अध्यामुद्धां ठार करी; आणि कोठें कोठें एकदा गजयोद्धा बहुत रथ्यांवर व घोडेस्वारांवर चाल करून त्यांस वधी ! अशा प्रकारें कौरवपांडवांचें तुंबळ युद्ध चाललें असतां अर्जुन तेथें आला; आणि कौरवांवर एकसारखा बाणांचा पाऊस पाडीत, सारथी व अश्व ह्यांसह रथ्यांना, घोड्यांसह वर्तमान स्वारांना व पायदळांच्या अनेक टोळ्यांना ठार मारण्याचा सपाटा लावून त्यानें सर्व कौरव-सैन्याची मोठी त्रेधा उडवून दिली ! त्या घोर संग्रा-

मांत कृप व शिखंडी हे एकमेकांशी लढू लागले; दुर्योधनाला सात्यकीने गांठिले; श्रुत-श्रव्याचे अश्वत्थाम्याशी युद्ध जुंपले; युधामन्यु चित्रसेनावर चालून गेला; महान् संजय वीर उत्तमौजा हा कर्णपुत्र सुपेणाशी लगट करून झगडू लागला; क्षुधार्त सिंह ज्याप्रमाणे मोठ्या वृषभावर धावून जातो, त्याप्रमाणे सहदेव शकुनीवर चालून गेला; नकुलपुत्र तरुण शतानीक व कर्णपुत्र तरुण वृषसेन हे एकमेकांवर बाणांचा भडिमार करू लागले; विचित्र युद्ध करणारा बलाढ्य माद्रीपुत्र नकुल ह्याने कृत-वर्म्यावर चाल केली; पांचालांचा अधिपति सेनानायक धृष्टद्युम्न ह्याने कर्ण व त्याचे सैन्य ह्यांशी युद्ध आरंभिले; दुःशासनाने संशप्तकांच्या प्रचंड भारतीय सेनेसहवर्तमान युद्धांत असह्य-प्रतापवान् दुर्धर भीमसेनावर हल्ला केला; आणि मग अतिशय निकराचे धोर रणकंदन चालू झाले. त्यांत उत्तमौजाने मोठ्या वीरश्रीने कर्णाच्या पुत्रांचे मस्तक उडविले आणि ते भूतलावर पतन पावले, तेव्हां पृथ्वी व अंतरिक्षांत महान् ध्वनि उद्भवला ! राजा, तेव्हां सुपेणाचे मस्तक रणांगणांत पतन पावलेले पाहून कर्णाला मनस्वी दुःख झाले व त्याने तत्काळ मोठ्या क्रोधाने धार दिलेल्या जलाल बाणांचा वर्षाव करून उत्तमौजाचा, ध्वज व हत्य ह्यांचा विध्वंस उडविला ! इतक्यांत उत्तमौजा तीक्ष्ण बाणांची वृष्टि करित कृपाचार्याच्या समीप गेला आणि लखलखीत खड्गाने पृष्ठरक्षकांचा प्राण घेऊन व कृपाचार्याचे घोडे मारून शिखंडीच्या रथावर चढला. तेव्हां कृप हा रथहीन झाला आहे असे पाहून शिखंडीने त्याजवर बाण सोडण्याचे मनांत आणिले नाही. पण तितक्यांत अश्वत्थामा कृपानार्याच्या रथाजवळ आला; व चिखलांत रुतलेल्या बैलाला जसे वर काढावे, तसे त्याने कृपाचार्याला त्या प्राणसंकटांतून वर

काढिले ! इकडे, राजा, हेमकवच धारण केलेल्या वायुपुत्र भीमाने जलाल बाणांचा भडिमार करून मध्यान्हीच्या ग्रीष्मकालीन सूर्याप्रमाणे तुड्या सैन्याला अगदी त्रस्त करून सोडिले !

## अध्याय शहात्तरावा.

—:—

### भीमसेन व विशोक ह्यांचा संवाद.

संजय सांगतो:—नंतर त्या तुंबल युद्धांत कौरवांकडील बहुत योद्ध्यांनी भीमसेनाला गराडा घालून त्याजवर बाणांचा वर्षाव आरंभिला; तेव्हां भीमसेन सारख्याला म्हणाला, 'सूता, जिकडे धृतराष्ट्राचे पुत्र असतील तिकडे मझा रथ मोठ्या वेगाने घेऊन चल. मी आतां त्या धृतराष्ट्रपुत्रांना यमसदनी पाठवून देतो ! भीमसेनाची अशी आज्ञा होताच सारख्याने लागलाच मोठ्या वेगाने तो रथ तुड्या पुत्रांच्या सैन्यासमीप नेला. ते पहाताच तुड्या सैन्यांतले इतर हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ ह्यांनी चोहोंकडून तेथे धावून येऊन भीमसेनाच्या त्या महावेगवान् श्रेष्ठ रथावर सर्व बाजूंनी सुवर्ण-पुंख बाणांचा एकसारखा भडिमार सुरू केला. पण महात्म्या भीमसेनाने उलट सुवर्णपुंख बाणांचा वर्षाव करून, आपणांवर घेत असलेले ते सर्व बाण छेदिले आणि त्यामुळे भीमसेनाच्या बाणांनी दोनदोन तीनतीन तुकडे झालेले ते शत्रूंकडील सर्व बाण भूतलावर पतन पावले. ह्याप्रमाणे कौरवांकडील सर्व बाणांचा विध्वंस उडवून रथ, गज, अश्व व नर ह्यांना भीमसेनाने एकसारखा ठार मारण्याचा सपाटा चालविला; तेव्हां वज्रप्रहाराने हत झालेले पर्वतच खाली कोसळत आहेत असे वाटले व त्या महान् क्षत्रियांत जिकडे तिकडे एकच कव्हळ उडाला ! मग, पक्षी जसे चोहोंकडून वृक्षावर चालून जातात, तसे ते सर्व कौरववीर त्या

भीमसेनावर चालून गेले आणि मग पुनः भयंकर रणकंदन मातले ! राजा, ह्या वेळीं तुझे सैन्य जेव्हां भीमावर तुटून पडलें, तेव्हां त्या अनंत-वीर्यावान् भीमसेनानें पराक्रमाची अगदी पराकाष्ठा केली. जणू काय प्रलयकालीं सर्व प्राण्यांचा अंत करणारा काळच त्रैलोक्य जाळण्यास उद्युक्त झाला आहे असें त्या समयी भासलें; आणि आपसूरून धावून आलेल्या यमाच्या तोंडांत ज्याप्रमाणें भूतगण प्रविष्ट व्हावे, त्याप्रमाणें भीमसेनापुढें तुझ्या मैत्रिकांची अवस्था होऊन त्यांच्यानें तग काढवेनामा झाला; व सोसाट्याच्या वाऱ्यानें उधळून दिलेल्या मेघसमुदायाची जशी दाणादाण उडते, तशी भीमसेनानें उधळून दिलेल्या तुझ्या सैन्याची दाणादाण उडून तें सर्व भयभीत होतसातें दशादिशांस पळून गेलें ! तेव्हां बुद्धिमान् बलिष्ठ भीमसेन मोठ्या आनंदानें पुनः सारख्याला म्हणाला, “सूता, ते एकवटून आपणावर येत असलेले रथ व ध्वज आपले आहेत किंवा शत्रूंचे आहेत हें नीट पहा बरें. मी युद्धांत गर्क असल्यामुळें मला त्याचा निश्चय होत नाही. कदाचित् माझ्या हातून आपल्याच सैन्यावर बाणांची वृष्टि होईल, ह्यासाठीं नीट न्याहाळून पहा. विशोका, मी जिकडे तिकडे पाहतां, तिकडे तिकडे मला शत्रूंचेंच सैन्य दिसत आहे. सर्वत्र शत्रूंचेच रथ व ध्वजां ये अवलोकन करून मला फार भय वाटतें ! पहा धर्मराजा दुःखार्त अमून अर्जुन अद्यापि आला नाही; ह्यासाठीं माझ्या जिवाला फारच तळमळ लागली आहे. सारथे विशोका, मला अतिशय दुःख होतें तें हें कीं, धर्मराजा मला शत्रूमध्ये सोडून आपण निघून गेला ! ह्यावरून तो जिवंत आहे कीं मृत झाला हेंही मला समजत नाही ! अर्जुन जर परत येता, तर कांहीं तरी समाचार कळला अमता; पण तोही अद्याप आला

नाहीं, तेव्हां तो तरी खुशाल आहेना, अशी मला अधिकच चिंता वाटत आहे ! अमो; विशोका, असें जरी आहे, तरी शत्रूंचें हें बलाढ्य सैन्य आज रणांगणांत म्यां मोठ्या आवेशानें बाधिलें असतां आज तुला व मला दोघांनाही मोठा आनंद होईल. ह्याकरितां तूं माझ्या रथावरील सर्व बाणभाते तपासून पहा आणि प्रत्येकांत कोणकोणत्या जातीचे व कोणकोणत्या प्रमाणाचे किती किती बाण शिल्लक आहेत तें मला नीट माग.”

विशोक म्हणाला:—वीरा भीमसेना, आपल्या रथावर साठ हजार मार्गण बाण आहेत. त्याप्रमाणेंच क्षुर व भल्ल हे प्रत्येकी दहा दहा हजार आहेत; नाराच बाण दोन हजार आहेत, व प्रदर बाण तीन हजार आहेत. भीमा, आपल्या रथावर जो शस्त्रास्त्रांचा सांठा अवशिष्ट आहे, तो वाहून नेण्याला सहा बेलोंचा रणगाडा कांहीं समर्थ होणार नाही ! ह्यासाठी, हे प्राज्ञा, गदा, खड्गें, प्राम, मुद्गर, शक्ति, तोमर, वगैरे जी तुझी आयुधें, त्यांपैकी सहस्रावधि जरी तूं शत्रूवर टाकिलीस, तरी कांहीं हरकत नाही. आयुधें संपतील अशी तूं मुळीच भीति बाळगूं नको.

भीमसेन म्हणाला:—सूता विशोका, आजच्या ह्या भयंकर संग्रामांत तूं माझा पराक्रम अवलोकन कर. मी आज शत्रूवर अत्यंत वेगवान् बाणांचा भडिमार करून हीं सर्व समरभूमि आच्छादून टाकीन आणि अंतरिक्षभर बाणांचें छत पसरून सर्वत्र अंधकार पाडीन व जणू काय ही यमपुरीच होय असें सर्वांच्या प्रत्ययास आणून देईन ! सूता, आज लहानथोर सर्व पार्थिवाना एक तर हा भीमसेन युद्धांत पडला असें दिसेल, किंवा ह्या एकट्यानें रणांगणांत सर्व कौरवांना जिकिलें असें त्यांच्या निदर्शनास येईल ! बाबारे, आज एक तर सर्व कौरव रणांगणांत पडतील, किंवा सर्व लोक

माझ्या बालपणापासून ह्या वेळपर्यंतच्या सर्व पराक्रमांचें स्मरण करून नित्य माझे वर्णन करीत रहातील! एक तर एकदा मी त्या सर्वांना वधीन किंवा ते सर्व मला वधिलील! सूता, ज्यांच्या कृपेने उत्तम कर्म करण्याचें सामर्थ्य येते त्या देवांनी मात्र आज मजवर प्रसन्न होऊन मला पराक्रम करण्याची शक्ति द्यावी. सूता, यज्ञांत आह्वान केलें असतां इंद्र जसा तेथें त्वरित प्राप्त होतो. तसा ह्या समयी येथें शत्रुसंहारक अर्जुन प्राप्त झाला तर चांगलें होईल. विशोका, ह्या भारती सेनेची कशी दाणादाण उडाली पहा. अरे, हे भूपाळ पळून कां बरें जाऊं लागले? खचित महाबुद्धिमान् नरश्रेष्ठ सव्यसाची अर्जुनानें ह्या सैन्यावर मोठ्या वेगानें बाणांचा भडिमार करून त्यास बाणांनी झांकून काढण्याचा क्रम आरंभिल्यामुळे ही सर्व धावपळ उडाली आहे ह्यांत मदेह नाही! विशोका, हे पहा रणांगणांत ध्वज, गज, हय व नर हे एकसारखे पळत आहेत! तमेच हे पहा रथ व त्यांवरील वीर हे शर व शक्ति ह्यांनी हत होत्साते धूम ठोकून पळत आहेत! सूता, ही पहा कौरवसेना धनंजयाच्या कांचनमंडित मयूरपुंख वज्रतुल्य बाणांनी कशी ग्रस्त होऊन मृत्युमुखी पडत आहे व वारंवार तिच्या मदतीला बाहेरून अधिक अधिक भरती होत आहे! सूता, ते पहा रथ, अश्व व गज उधळत चालले असून त्यांखाली पायदळाच्या टोळ्यांचा अतिशय चुराडा उडत आहे! वणव्यांत सांपडलेल्या हत्तीप्रमाणें वेफाम होऊन हे सर्वेच कौरवसैन्य हाहाकार करीत पळत मुटलें पहा! विशोका, रणांगणांत हे प्रचंड हत्ती कशी महान् गर्जना करीत आहेत ती अवलोकन कर!

विशोक म्हणाला:-- भीमसेना, अर्जुन इकडे आला, ह्यांत संशय तो कमला? अरे, क्षुब्ध झालेल्या अर्जुनानें गांडीवाचा जो टणत्कार

चालविला आहे, त्याचा थोर शब्द तुला ऐकून येत नाही काय? अरे, तुझे कान शांत आहेतना? भीमा, तुझे आज सर्व मनोरथ सिद्धीस गेले! तो पहा गजसैन्यांत मारुति दिमू लागला! ती पहा गांडीवाची प्रत्यंचा नीलवर्ण मेघापासून उमळणाऱ्या विद्युल्लतेप्रमाणें स्फुरण पावत आहे! तो पहा अर्जुनाच्या ध्वजाप्रावर आरूढ झालेला वानर आसमंतात् पहात आहे! ती पहा त्या मारुतीला पाहून रणांगणांत शत्रुसैन्याची कशी त्रेधा उडाली! अरे, मला स्वतःला मुद्धां त्याजकडे पाहून भय उत्पन्न झालें! तो पहा अर्जुनाचा चित्रविचित्र किरीट किती झळकत आहे! तो पहा त्या किरीटावरील दिव्य मणि दिवाकराप्रमाणें तळपत आहे व अर्जुनाच्या बगलेंतला भयंकर शब्द करणाऱा देवदत्त शंख शुभ्र मेघांप्रमाणें दिसत आहे! ता पहा प्रतोदधारी जनादेन शत्रूंच्या सेनेतून रथ घेऊन इकडे येत आहे! त्याच्या बगलेंत मुर्या प्रमाणें कांतिमान्, वज्राप्रमाणें बळकट नाभि असलेलें, वस्तन्याप्रमाणें जलाल धार दिल्लें. यदकुलाची कीर्ति वाढविणारं व त्यामुळे सदासर्वकाळ यादव ज्याची पूजा करितात असें ते चक्र शोभत आहे! भीमसेना, त्या पहा अर्जुनानें क्षुर बाणांचा भडिमार करून महान् महान् हत्तीच्या सरळ वृक्षांमारुत्या प्रचंड शुंडाछेदन टाकिलेल्या ग्वाली पडत आहेत! ते पहा आणखी अर्जुनाच्या बाणांनी हत झालेले मोठे मोठे हत्ती व त्यांवरील योद्धे वज्रांनं तोडून टाकिलेल्या पर्वताप्रमाणें धडाधडा ग्वाली आदळत आहेत! तसाच, हे कौतेया, चंद्राप्रमाणें अत्यंत तेजस्वी असा तो कृष्णाचा श्रेष्ठ पांचजन्यशंख अवलोकन कर; त्याप्रमाणेंच त्याच्या वक्षःस्थलावरील तो देदीप्यमान कौस्तुभ मणि व कंठी विराजणारी ती वनमाला पहा! भीमा, ह्यावरून खचित तो महारथ अर्जुनच शत्रूंच्या सैन्याची



दाणादाण उडवीत उत्कृष्टशुभ्र अश्व जोडलेल्या अश्व ज्याम जोडिले होते असा तो अर्जुनाचा व कृष्ण सारथि असलेल्या रथांत आरूढ होऊन रथ जलद चालविला. ते पाहून, अत्यंत क्रोधाय- इकडे येत आहे. भीमसेना. गरुडाच्या पंखां- मान झालेला देवेंद्र वज्र हातांत घेऊन पासून उत्पन्न झालेल्या प्रचंड वाऱ्याने मोठ- जंभामुराला वधून विजय मिळविण्याकरितांच मोठालीं अरण्ये उध्वस्थ होऊन कोसळतात, तसे निघाला आहे असा भाम झाला ! राजा धृत- हें इंद्रतुल्य महापराक्रमी अर्जुनाच्या शरप्रहारां- राष्ट्रा, नंतर अर्जुनाचा तो रथ तत्काळ कौरव- नी विदीर्ण झालेले कौरवांचे चतुरंग सैन्य सेनेसमीप प्राप्त झाला तेव्हां त्याजवर शत्रू- कोसळत आहे पहा ! अर्जुनानें महान् बाणांचा कडील रथ, अश्व, गज व पदाति ह्यांचे समुदाय वर्षाव करून रणाम-ये हे चारशें रथी, अश्व व चवताळून एकदम धावून आले; आणि त्यांनी सारथि ह्यांमह ठार मारिले पहा ! त्याप्रमाणेंच बाणांच्या शब्दांनी, रथांच्या घणघणाटांनी व त्यानें सातशें हत्ती आणि अनेक रथ. अश्व व घोड्यांच्या टापांनी सर्व भूमंडल व दाही दिशा पदाति ह्यांचा हा नाश उडविला तो अवलोकन दुमदुमून मोडिल्या ! राजा. त्या समयी अर्जु- कर ! भीमा, हा पहा बलिष्ठ अर्जुन कौरवांचा नाचे व त्या कौरवसैन्याचे मोठे घनघोर युद्ध संहार करीत ' चित्रा ' नक्षत्राप्रमाणें तुझ्या झाले व त्यांत बहुत वीरांच्या देहांचा, प्राणांचा मंनिध येत आहे; आतां तुझे हेतु मिळीम गेले व पातकांचा संहार उडाला ! जणू काय त्या ह्यांत संदेह नाही. आतां तुझे शत्रु मेलच ! तुं वेळी त्रैलोक्य मिळविण्यासाठी विजयश्रेष्ठ देवा- आतां चिंता करूं नको. तूं दीर्घायु हो व तुझे धिदेव विष्णु व अमुर हेच लढत आहेत असें बासलें ! राजा, त्या भयंकर संग्रामांत शत्रूंनीं बल वृद्धिगत होवो.

भीमसेन म्हणाला: - मृता विशोका, अर्जुन जीं लहान मोठी शस्त्रांभे अर्जुनावर टाकिलीं प्राप्त झाला अशी जी प्रिय वार्ता तूं मला सांगि- ती सर्व त्या किरीटमाली पांडुपुत्रानें तोडिली; तलीस, त्यामुळें मी प्रसन्न झालों आहें. मी आणि उलट शत्रूंवर धार दिलेल्या क्षुर, अर्ध- तुला चौदा उत्तम गांव. शंभर दामी व चंद्र व भल्ल बाणांचा भडिमार करून पटापटा वीस रथ देईन.

## अध्याय सत्याहत्तरावा.

### शकुनीचा पराभव.

संजय सांगतो: - इकडे, रथांचा घणघणाट व रणांगणांत लढणाऱ्या योद्ध्यांची सिंहगर्जना व रणांगणांत लढणाऱ्या योद्ध्यांची सिंहगर्जना श्रवण करून अर्जुन कृष्णाला म्हणाला, 'कृष्णा, आतां अश्वाना जलद चालव.' तेव्हां कृष्ण अर्जुनाला म्हणाला, 'हा पहा मी हां हां म्हणतां जेथे भीमसेन आहे तेथें रथ घेऊन जातो.' राजा, असें म्हणून कृष्णानें सुवर्ण, मौक्तिकें व रत्नें ह्यांच्या अलंकारांनीं शृंगांगलेले असे शुभ्र भडिमार करून अश्व, गज व रथ ह्यांचा नाश

उडविल्यावर, पूर्वा बलाचा वध करण्याकरितां इंद्र जसा त्याजवर चालून गेला, तसा अर्जुन हा कर्णाचा वध करण्यासाठी तत्काळ त्याजवर चालून गेला. तेव्हां, राजा, मगर जसा समुद्रात प्रवेश करितो, तसा त्या महाबाहु शत्रुसंहारक पुरुषव्याघ्र अर्जुनानें तुझ्या सैन्यात प्रवेश केला. त्या समयी तुझ्या सैन्याला मोठी वीरश्री चढली आणि तुझ्या सैन्यांतले रथ, गज, अश्व व नर हे चोहोकडून धावून येऊन अर्जुनावर तुटून पडले! आणि ते सर्व कौरवदळ अर्जुनावर चालून आले तेव्हां मोठा भयंकर ध्वनि उत्पन्न झाला; जणू काय खवळलेला समुद्रच गर्जत आहे असें तेव्हां वाटले! त्या समयी रणांगणांत तुझ्या सैन्यांतले ते प्रतापशाली महारथ योद्धे आपल्या प्राणांची मुळीच पर्वा न करितां मोठ्या त्वेषानें अर्जुनावर धावून आले व त्यांनी अर्जुनावर एकसारखा बाणांचा वर्षाव मुरू केला. तेव्हां, सोसाट्याचा वारा जसा मेघांची दाणादाण उडवितो तशी अर्जुनानें उलट शत्रूंवर बाणवृष्टि करून त्यांची दाणादाण उडविली! परंतु इतक्यांत ते सर्व महाधनुर्धर वीर एकत्र होऊन पुनः आपल्या रथांतून अर्जुनावर बाणांचा वर्षाव करित चालून आले आणि त्यांनी त्यास जलाल बाणांनी विद्ध केले. ते पाहून अर्जुनाला अतिशय संताप चढला आणि त्यानें हजारों रथ, वाजी व हत्ती ह्यांस बाणप्रहारांनी हत करून यमसदनी पाठविले! राजा, अर्जुनाचा असा भयंकर पराक्रम अवलोकन करून तुझ्या सैन्यांतल्या महारथांना अतिशय भीति पडली व ते आपआपल्या रथांतून एका-मागून एक चालते झाले! कौरवांकडील ते महारथ मोठ्या निकारानें अर्जुनाशी लढत असतां अर्जुनानें त्यांपैकी चारशे महारथांना जलाल बाणांच्या भडिमारांनें यमलोकी पाठविले! ह्या-प्रमाणें नानाविध निशित शरांचा वर्षाव करून

अर्जुनानें समरांगणांत कौरवांकडील महारथांचा संहार आरंभिला, तेव्हां त्यांची उमेद अगदीं नष्ट झाली व ते अर्जुनाला सोडून देऊन दश-दिशांस पळून गेले! सैन्याच्या त्रिनीवर आरंभीच जेव्हां ही धावपळ मुरू झाली, तेव्हां पर्वताच्या कड्यावर समुद्राचा प्रचंड ओघ आदळून फुटला असतां जसा महान् शब्द होतो तसा महान् शब्द त्या पळणाऱ्या सैन्यांत होऊं लागला! असे; अशा प्रकारें कौरवसैन्याला तीक्ष्ण बाणांनी अत्यंत विद्ध करून त्यांची दाणादाण उडविल्यावर अर्जुन कर्णाच्या सैन्याच्या अग्रभागी प्राप्त झाला. त्या समयी, राजा, पूर्वी गरुड सर्पावर चालून गेला तेव्हां जशी त्यानें गर्जना केली, तशी शत्रूंवर चाल करितांना अर्जुनानें प्रचंड गर्जना केली; आणि तो महान् शब्द श्रवण करून महाबल भीमसेन अतिशय आनंदित झाला व त्यास अर्जुनाला भेटण्याची उत्कट इच्छा उत्पन्न झाली. राजा, अर्जुन रणांगणांत आला असें कानीं पडतांच प्रतापशाली भीमसेनाची वीरश्री अत्यंत वाढली व त्यानें आपल्या जिवाकडे न पहातां शत्रूचा संहार उडविण्यास प्रारंभ केला. त्या समयी तो प्रतापवान् वायुपुत्र वायुवेगानें वायूसारखी झडप घालीत शत्रूमध्ये संचरूं लागला आणि त्यामुळे तुझें सैन्य जर्जर होऊन, फुटलेली नाव जशी समुद्रांत बुडून नष्ट होते, तसें विदीर्ण होऊन नष्ट झाले! तेव्हां भीमानें मोठ्या चला-खीनें शत्रूंवर उग्र बाणांचा भडिमार करून त्यांचे हस्तपादादिक अवयव छेदिले व त्यांस यमसदनी पाठविले! त्या वेळीं भीमाचें तें अमानुष बल अवलोकन करून सर्वांना तो प्रलयकालीन यमच वाटला व त्याच्यापुढे सर्व योद्धे भयमित होऊन व्याकूळ पडले! राजा, ह्याप्रमाणें त्या बलिष्ठ कौरवसैन्याची भीमसेनानें दुर्दशा उडविली तेव्हां दुर्योधन राजा महा-

धनुर्धर योद्ध्यांना व सर्व सैनिकांना म्हणाला, वीरहो, तुम्ही सर्व मिळून भीमाचा वध करा. एकदां भीमाचा वध झाला म्हणजे सर्व पांडव-सैन्य वधिलेच असें मी समजतो ! ' दुर्योधनाची ती आज्ञा कौरवांकडील सर्व योद्ध्यांना मान-वली आणि त्यांनी चोहोंकडून बाणांचा वर्षाव करून भीमसेनाला आंकून काढिले ! त्या वेळी अनेक हत्ती आणि जयेच्छु नर व रथी हे वृकोदरावर धावून गेले व त्यांनी त्यास चोहों-कडून घेरून टाकिले. ह्याप्रमाणे जेव्हां त्या शूर कौरवांनी भीमसेनाला सर्व बाजूंनी वेढा घातला, तेव्हां जणू काय चंद्राला नक्षत्रांनीच वेढिले आहे किंवा पूर्णचंद्राच्या सभोवती खेळेंच पडले आहे असे वाटू लागले ! त्या समयी भीमसेनाचा तो पराक्रम पाहून रणांगणांत प्रत्यक्ष नष्ट्रेष्ट अर्जुनच तळपत आहे असे सर्वांस भासले ! त्या वेळी कौरवांकडील वीरांचे व भीम-सेनाचे मोठे तूंगळ युद्ध सुरू झाले. तेव्हां कौरवांकडील सर्व शूर भूपाळांनी वृकोदराला ठार मार-ण्याच्या हेतूने मत्तापांने डोळे लाळ करून त्याजवर भयंकर शरवृष्टि केली; पण भीमसेनाने त्या महासैन्यावर बांकदार पेऱ्यांच्या बाणांचा भडिमार चालवून तिची फळी फोडली; व तिचे विदारण करून, मामा जसा उदकांत लाविलेल्या जाळ्यांतून निसटून जातो तसा तो पांडु-पुत्र शत्रूच्या त्या वेढ्यांतून निसटून गेला ! त्या समयी भीमाने समरांगणांतून पराङ्मुख न होणारे दहाहजार हत्ती, दोन लक्ष दोनशे मनुष्ये, पांच हजार घोडे व शंभर रथी वधिले आणि शोणिताची नदीच उत्पन्न केली ! राजा, त्या भयंकर रुधिर-नदीचे काय वर्णन करावे ? रुधिर हे त्या नदीतले उदक होय; रथ हे भोंवरे होत; हत्ती ह्या सुसरी होत; मनुष्ये हे मासे होत; अश्व हे नक होत; केश हे शेवाळ व हिरवे गवत होय; व छिन्न भुज हे महान् महान्

सर्प होत ! राजा, त्या नदीतून पुष्कळ रत्नांचे समुदाय वहात चालले होते ! तिच्यामध्ये वीरांच्या मांड्या ह्या जणू काय सुसरीच होत्या; मज्जा हाच चिखल झाला होता; मस्तकें हे दगड होते; धनुष्ये हीं काश तूणाप्रमाणे दिसत होती; बाण हे लव्हाळ्याप्रमाणे दिसत होते; गदा व परिघ हीं पश्यादिकांची बम-ण्याची स्थळे होती; छत्रे व ध्वज हे हंस होते; उत्तम शिखरां हा फेंम होता; हाग ही कमळे होती; धूलिकण हे त्या कमळांतले रजःकण होते; पुष्पमाळा ह्या लाटा होत्या; आर्यजन हे तिच्यातील जलचर होते; भीरुजनांना ती नदी अत्यंत दुस्तर होती; योद्धे हे तिच्यातील मगर होते; आणि अशा प्रकारची ती लोकोत्तर नदी पितृलोकाप्रत वहात चालली होती ! राजा, भीमसेनाने ती भयंकर नदी एका क्षणांत निर्माण केली ! ज्याप्रमाणे उग्र वेत्रणी नदी अज्ञ जनांना उतरून जातां येत नाही, त्या-प्रमाणेच ती घोर व दुस्तर रुधिरसरित् भिड्या जनांना अधिक भीति उत्पन्न करणारी असल्या-मुळे त्यांना उतरून जातां येण्यासारखी नव्हती ! राजा, तो महारथ पांडुपुत्र भीमसेन कौरवसैन्यांत जिकडे जिकडे घुसला, तिकडे तिकडे त्याने शतावधि व सहस्रावधि योद्ध्यांना ठार मारिले ! राजा, ह्याप्रमाणे समरभूमीवर भीमसेनाचा विलक्षण पराक्रम अवलोकन करून दुर्योधन राजा शकुनीला म्हणाला, " मामा, युद्धांत महाबल भीमसेनाला कसे तरी करून जिक; भीमसेन एकदा जिकला गेला म्हणजे पांडवांचे प्रचंड सैन्य जिकलेच म्हणून समज." धृतराष्ट्रा, नंतर प्रतापवान् शकुनि आल्या-सह भीमसेनाशी घोर संग्राम करण्यासाठी निघाला; आणि समुद्राची सीमा जशी समुद्राला अडवून धरिते, तसे त्याने त्या महापराक्रमी भीमसेनाला अडवून धरिले ! राजा, त्या समयी

शकुनीनें एकसारखा जलाल बाणांचा भडिमार भीमसेनावर चालविला, पण भीमसेनानें त्यास न जुमानितां उलट बाणांचा वर्षाव करून शकुनीला मागे हटविलें ! तेव्हां शकुनीनें भीमाच्या डाव्या कुशीवर व वक्षस्थळी धार दिलेल्या मुवर्णपुंख बाणांची वृष्टि केली आणि त्यामुळे ते कंकपिच्छ व मयूरपिच्छ बाण महात्म्या भीमसेनाचें कवच भेदून त्याच्या शरीरांत घुमले व त्यांच्या योगें तो पांडुपुत्र अतिशय विद्ध झाला ! नंतर भीमसेनानें एक मुवर्णमंडित बाण मोठ्या क्रोधानें शकुनीवर सोडिला, परंतु महाबल शकुनीनें तो बाण आपल्यावर येत आहे असें पाहून उलट नेमकाच बाण मारून त्याचे मात तुकडे केले ! ह्याप्रमाणें भीमसेनाचा बाण फुकट जाऊन भूमीवर पडला तेव्हां त्यास अत्यंत क्रोध चढला व त्यानें हंसत हंसत एका भल्ल बाणानें सौबलाचें धनुष्यच छेदून टाकिलें ! तेव्हां पराक्रमी सौबलानें तें छिन्न धनुष्य फेंकून दिलें आणि तत्काळ दुसरे धनुष्य धारण करून त्या पासून बांकदार पेण्यांचे सोळा भल्ल बाण भीमसेनावर टाकिले ! त्यांपैकी दोन बाण त्यानें मारण्यावर सोडिले; सात बाण गुरू भीमसेनावर टाकिले ! एक बाण सोडून ध्वज तोडिला; दोन बाणांनी छत्र विदारिलें आणि चार बाणांनी चारी घोडे विद्ध केले ! तेव्हां, प्रतापशाली भीमसेन फारच चवताळला आणि त्यानें मुवर्णाचा दंड असलेली पोलादी शक्ति समरांगणांत शकुनीवर तत्काळ सोडिली ! भीमानें मोठ्या वेगानें सोडिलेली ती शक्ति नागिणीच्या जिव्हेप्रमाणें चपळाई करून ताबडतोब महात्म्या शकुनीवर आली, परंतु शकुनीनें तीच मुवर्णमंडित पोलादी शक्ति झेलून धरून उलट मोठ्या क्रोधानें भीमसेनावर भिरकावून दिली ! तेव्हां ती शक्ति वीर्यशाली भीमसेनाच्या उजव्या बाहूचें विदारण करून अंतरिक्षांतून च्युत झालेल्या विद्युत्ते-

प्रमाणें भूगह्वरांत प्रविष्ट झाली ! त्या समयीं चोहोंकडे धार्तराष्ट्रांनीं एकच गर्जना आरंभिली; त्यानें स्वतःच्या प्राणांची पर्वा न धरितां तत्काळ दुसरे सज्ज धनुष्य धारण करून मोठ्या जलदानीं सौबलाच्या सैन्यावर बाणांचा भडिमार चालविला आणि क्षणांत समरांगणीं सर्व शत्रुसैन्य बाणाच्छादित करून टाकिलें ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या वेळीं भीमसेनानें सौबलाचे चारही अश्व, सारथि व ध्वज ह्यांचा भल्ल बाणांनीं विध्वंस उडविला, तेव्हां सौबलानें त्वरा करून त्या अश्वहीन झालेल्या रथांतून खाली उडी टाकिली व तो क्रोधानें आरक्त नेत्र करून सुमकारे टाकीत भीमसेनावर एकसारखा चोहोंकडून बाणांचा भडिमार करूं लागला. तें पाहून प्रतापवान् भीमसेनानें तत्काळ त्या बाणांचा प्रतिकार केला आणि पुनः सौबलाचें धनुष्य छेदून त्याजवर तीक्ष्ण शरांची वृष्टि आरंभिली ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या शत्रुसंहारक शकुनीला बलवान् भीमसेनानें अनिशयित विद्ध केले; तेव्हां ते दुःसह शरप्रहार त्याम महन झाले नाहीत व तो तत्काळ धायाळ होऊन भुतलावर मरणोन्मुख पडला ! तेव्हां तुझ्या पुत्रानें सौबलाची ती भयंकर अवस्था मनांत आणून रणांगणांत भीमसेनाच्या देवत त्याम रथांत घालून एकीकडे नेलें ! राजा, शकुनीची ह्याप्रमाणें अवस्था झालेली पाहून धार्तराष्ट्र अतिशयित घाबरले व ते युद्धविमुख होत्साते भीमसेनापासून आपला बचाव होण्याकरितां चोहोंकडे पळून गेले ! अशा प्रकारें दुर्योधन राजा शकुनि मामाच्या प्राणरक्षणाकरितां वेगवान् अश्व जोडिलेल्या अशा रथांतून भयभीत होत्साता रणांगणांतून पळून गेला, तेव्हां तें पाहून तुझ्या सैन्यांतले इतर वीर आपल्या प्रतिपक्ष्यांशी युद्ध करावयाचें सोडून देऊन चोहोंकडे पळत सुटले ! ह्याप्रमाणें सर्व

कौरवसेन्य युद्धांतून मोठ्या वेगाने माघारें धावू लागले, तेव्हां भीमाने त्याजवर एकसारखा बाणांचा भडिमार चालवून त्यास वधण्याचा क्रम आरंभिला; पण इतक्यांत कर्णाची व त्या सैन्याची गांठ पडली आणि ते कर्णाच्या छात्राखाली पुनः पांडवांशी युद्ध करू लागले. राजा, फुटक्या तारवांतले लोक द्वीपाप्रत पांचले असतां जशी त्यांस शांतता वाटते; तशी त्या कौरवसेन्यास महाबल कर्णाची भेट झाल्यामुळे मोठी शांतता वाटली; आणि त्यास पुनः मोठा धीर येऊन ते सुप्रसन्न मनाने ' मारूं किंवा मरूं ' असा निश्चय ठरवून पांडवांशीं लढण्यास सिद्ध झाले !

## अध्याय अठ्ठ्याहत्तरावा.

—:०:—

### कर्णाचा पराक्रम.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, रणांगणांत भीमसेनाने कौरवसेन्याचा मोड केला, तेव्हां मग दुर्योधन, शकुनि, विजयशाली कर्ण, कृप, कृतवर्मा, अद्यत्यामा, दुःशासन किंवा दुसरे माझ्या पक्षाचे वीर काय म्हणाले? संजया, भीमसेन हा एकटा माझ्या सर्व योद्ध्यांशी लढला हे मला मोठे आश्चर्य वाटत आहे ! संजया, राधेयाने शत्रूंशी युद्ध करितांना आपली प्रतिज्ञा पाळिलीना ? संजया, शत्रुसंहारक कर्ण हा सर्व कौरवांचे सुख, आश्रय, प्रतिष्ठा व जीविताची आशा होय ! ह्यासाठी अमितवीर्यावान् पांडुपुत्र भीमसेनाने कौरवांचे दळ भग्न केलेले पाहून मग युद्धांत अधिरथपुत्र राधेयाने काय केले वरें ? तसेंच, कौरव सेनेची ह्याप्रमाणे दाणादाण व विध्वंस उडाला असतां माझे पराक्रमी पुत्र व त्याप्रमाणेच इतर सर्व महारथ भूपाळ ह्यांनी तरी जे काय केले

ते सर्व मला निवेदन कर, संजया, तूं ह्या कामी मोठा कुशल आहेस.

संजय सांगतो:—तिमरे प्रहरी प्रतापशाली मृतपुत्राने भीमसेनाच्या देग्वत सर्व सोमकांना ठार मारिले व ते पाहून भीमसेनानेही कौरवाच्या अत्यंत बलिष्ठ सैन्याला वधण्याचा सपाटा सुरू केला ! तेव्हां कर्ण शल्याला म्हणाला, ' मला पांचालांजवळ घेऊन चल. ' राजा, नंतर मद्राधिपाने कर्णाच्या रथाचे महावेगवान् श्वेत अश्व मोठ्या जलदीने चालविले आणि चेदि, पांचाल व कुरू ह्यांच्या सैन्यांसमीप पास होऊन तो रथ त्या प्रचंड सैन्यांत घातला; आणि कर्णाने जेथे जेथे तो रथ नेण्यास सांगितले, तेथे तेथे त्याने मोठ्या आनंदाने तो रथ नेला. राजा, त्या समयी तो व्याघ्रचर्मावगुठित मेघतुल्य कर्णरथ आपल्या सेनेत परिभ्रमण करीत आहे असे पाहून पांडुपांचालांना मोठे भय पडले. त्या वेळी, पर्वताचा कडा कोसळत असतां जसा भयंकर ध्वनि उत्पन्न होतो, तसा त्या महान् रणांत कर्णाच्या रथाचा घणघणाट सुरू झाला. नंतर कर्णाने प्रत्येकें आकर्ण आकर्षण करून शतावधि व सहस्रावधि जलाल बाणांची पांडवसेनेवर वृष्टि चालविली, तेव्हां कर्णाचे ते विलक्षण शौर्य अवलोकन करून पांडवांकडील महाधनुर्धर महारथ योद्धे त्याजवर एकदम चाल करून आले व त्यांनी त्यास चोहोंकडून वेढा घातला ! त्या समयी कर्णाला ठार मारण्याच्या हेतूने शिखंडी, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, सात्यकि व द्रौपदीचे पुत्र ह्यांनी त्यास चोहों बाजूंनी गराडा घालून त्याजवर बाणांचा वर्षाव आरंभिला. त्या वेळीं शूर सात्यकीने शर दिलेले वीस बाण कर्णाच्या खवाट्यांत मारिले; तसेच शिखंडीने पंचवीस, धृष्टद्युम्नाने सात, द्रौपदीच्या पुत्रांनी चौसष्ट, सहदेवाने सात आणि नकुलाने शंभर बाण

मारून कर्णाला भमरांगणांत विद्ध केलें; आणि त्याप्रमाणेंच बलिष्ठ भीमसेनानें क्रोधायमान होऊन बांकदार पेऱ्यांचे नव्वद् बाण कर्णाच्या जत्रुप्रदेशी मारिले. राजा, तेव्हां महाबल राधेयानें हंसत हंसत आपल्या धनुष्याचा टण-त्कार करून शत्रूंवर जलाल बाणांचा भडिमार चालविला व त्यास अगदी जेरीस आणून प्रत्येकावर पांच पांच बाण मोडिले. नंतर कर्णानें सात्यकीचें धनुष्य व ध्वज ही छेदिनी आणि त्याला वक्षस्थळी नऊ बाणांनीं विद्ध केलें. मग त्यानें क्रोधायमान होऊन भीमसेनावर तीम बाण टाकिले आणि एका भड्ड बाणानें सहदेवाचा ध्वज तोडिला व तीन बाणांनीं त्याचा सारथि ठार केला ! नंतर डोळ्यांचें पातें लवतें न लवतें इतक्या वेळांत त्या प्रतापशाली कर्णानें द्रौपदीपुत्रांना रथहीन करून सोडिलें व तें पाहून सर्वांना मोठा चमत्कार वाटला ! मग बांकदार पेऱ्यांच्या शरांचा भडिमार करून कर्णानें शिखंडी, भीमसेन, सात्यकि, सहदेव वगैरे सर्व वीरांना मागे हटविलें आणि मग त्यानें शूर पांचालांना व चेदीच्या महारथांना बाणप्रहारांनीं जर्जर करून सोडिलें ! राजा, नंतर कर्णानें चेदिपांचालांना ठार मारण्याचा सपाटा चालविला, तेव्हां चेदि व मत्स्य हे तशा प्राणसंकटांतूनही कर्णावर तुटून पडले आणि त्यांनीं त्या लोकोत्तर वीरावर बाणांचा भडिमार आरंभिला. त्या समयी महारथ सूतपुत्रानें उलट त्या चेदिमत्स्यांवर जलाल बाण टाकून त्यांस वधण्याचा सपाटा चालविला. तेव्हां त्यांच्यानें तग काढवेनासा होऊन, सिंहाला भिऊन धांपदें जशीं पळून जातात तसे ते चोर्होंकडे पळून गेले ! समरांगणांत प्रतापशाली सूतपुत्रानें एकट्यानें विजयप्राप्त्यर्थ पराकाष्ठा करीत असणाऱ्या पांडवांकडील धनुर्धर योद्ध्यांचें विलक्षण सामर्थ्यानें शरवर्षाव करून निवारण केलें, हा मला केवळ

अद्भुत चमत्कार वाटला ! महात्म्या कर्णाचें तें ह्मत्लाघव अवलोकन करून सर्व देव, सिद्ध व चारण ह्यांना मोठा संतोष झाला व महाधनुर्धर धार्तराष्ट्रांनीं त्या अतुलवीर्यावान् महारथाग्रणीला फारच बहुमानानें पूजिलें ! नंतर, उन्हाळ्यांत तृणामध्ये चेतलेला महान् अग्नि जसा त्या तृणाला दग्ध करितो, तसें त्या कर्णानें शत्रुसैन्य दग्ध केलें ! तेव्हां पांडवांच्या सैन्याला टिकाव काढवेनासा झाला व ते पांडवीय योद्धे रणांत महारथ कर्णाला पाहून युद्धविमुख होत्माते पळत सुटले ! पण तशांतही पांचाल हे कर्णाशी महाघोर संग्राम करूं लागले, परंतु कर्णाच्या त्या लोकोत्तर धनुष्यापासून त्यांच्यावर तीक्ष्ण बाणांची वृष्टि सुरू झाली तेव्हां त्यांचाही धीर सुटून जाऊन ते मोठमोठ्यानें ओरडूं लागले व त्यामुळे पांडवांचें तें प्रचंड सैन्य घाबरून गेलें ! राजा, त्या समयीं पांडवांची अशी खातरी झाली कीं, रणांगणांत कर्ण तेवढा एक वीर खरा ! नंतर पुनः शत्रुसंहारक कर्णानें लोकोत्तर पराक्रम गाजविला आणि त्यामुळे पांडवांपैकीं कोणालाही त्याच्याकडे वर मान करून पहाण्याची छाती होईनाशी झाली ! तो प्रकार असा कीं, पांडवांनीं कर्णावर मोठ्या त्वेषानें हल्ला केला, प्रचंड पर्वताशीं पाण्याच्या लोटाची गांठ पडली असतां जसा तो लोट फुटून त्याची वाताहत होते, तशी कर्णापुढें त्या पांडवसैन्याची वाताहत झाली ! त्यासमयी कर्ण हा धूमरहित अग्नीप्रमाणें रणांगणांत पांडवांच्या आवाहव्य सेनेला जालूं लागला ! त्यावेळीं त्यानें बाणांचा नेमकाच भडिमार करून शत्रुसैन्यांतील वीरांचीं मस्तकें, संकुंडल कर्ण, बाहु, हस्तिदंताच्या मुठी असलेलीं खड्गें, ध्वज, शक्ति, हय, गज, विविध रथ, पताका, पंखे, आंस, धुऱ्या व लहानमोठी चाकें ह्या सर्वांचा मोठ्या शौर्यानें विध्वंस

उडविला ! त्यावेळीं कर्णानें जे हत्ती व घोडे वधिले त्यांच्या मांसशोणितांचा कर्दम मातून पृथ्वीचा पृष्ठभाग दिसेनासा झाला आणि गज, अश्व, पदाति व रथ उन्वस्त होऊन जिकडे तिकडे पसरल्यामुळें, सर्व भूप्रदेश उंचसगवळ दिसूं लागला आणि सर्वच विपरीत देखावा दृग्गोचर झाला ! त्या रणसंमर्दीत कर्णानें अस्त्र-प्रभाव प्रकट करून कांचनमंडित बाणांचें असें छत पसरिलें कीं, त्या घोर अंधकारांत आपल्या-कडील योद्धे कोणते व शत्रूंकडील योद्धे कोणते हेही समजेना ! कर्णानें अशा प्रकारें दिव्य पराक्रम गाजवून पांडवांच्या महारायांना बाणांनी अगदीं झांकून काढिलें; आणि त्यांनीं जरी पुनःपुनः वर डोकें काढण्याचा मोठ्या शौर्यानें प्रयत्न केला, तरी क्षुब्ध झालेला सिंह जसा मृगसंघांना ठार मारूं लागला म्हणजे ते चोहों-कडे पळून जातात तसें ते पांडववीर कर्णाच्या शरप्रहरांनीं रणांगणांत पडूं लागले तेव्हां चोहोंकडे पळून गेले ! ह्याप्रमाणें कर्णानें समरांगणांत रथश्रेष्ठ पांचालांची देना उडवून त्यांना अगदीं ' ब्राहि भगवन् ' करून सोडिल्यानंतर, लांडगा जसा पशूंना ठार मारितो तसें त्यानें तें सैन्य ठार मारिलें ! ह्याप्रमाणें कर्णानें पांडव-मेनेची दुर्दशा उडविल्यावर महाधनुर्धर धार्तराष्ट्र मोठी भयंकर गर्जना करित त्या स्थळीं प्राप्त झाले. दुर्योधन राजालाही कर्णाचा तो दिव्य पराक्रम पाहून मोठा आनंद झाला व त्याच्या आज्ञेनें सर्वत्र नानाविध वायें वाजूं लागली ! राजा, इतक्याउप्परही पराजित झालेले ते महाधनुर्धर पांचाल वीर ' मारूं किंवा मरूं ' असा निश्चय करून कर्णाशी लढण्यास पुनः मिद्ध झाले, पण तत्काळ कर्णानें त्यांशीं घोर समर आरंभून त्यांचा पुनःपुनः मोड करून टाकिला ! त्या वेळीं कर्णानें पांचालांचे वीर व चेदीचे शंभर रथी क्रोधानें बाण सोडून ठार

केले आणि रथांतील वीरस्थानें, अश्वांचे पृष्ठ-भाग व गजांचे स्कंधप्रदेश शून्य करून पाय-दळाला उधळून दिले; तेव्हां त्या शत्रूंपीडक महावीराकडे मर्यान्हीच्या सूर्याप्रमाणें कोणा-मही पहावेनासें झालें आणि तो शूर धनुर्धर कालासारखा झळकूं लागला ! प्राणिगणांचा वध करून महाबलवान् यम जसा शोभतो तसा तो महाबलवान् कर्ण पांडवांच्या चतुरंग बलाचा वध करून लोकोत्तर वीर्यानें शोभूं लागला ! त्या अद्वितीय कर्णानें सोमकांचा अशा प्रकारें वध केल्यावर पांचालांनी मोठा विलक्षण पराक्रम करून दाखविला; कर्णानें त्यांना वधण्याचा मपाठा चालविला असतांही ते घोर संग्रामांत कर्णापासून र्यात्कचित् मार्गे न सरतां एकमारगे त्याच्याशीं झुंजत राहिले ! तेव्हां दुर्योधन, दुःशामन, कृप, अश्वत्थामा, कृतवर्मा व महाबल शकुनि ह्यांनी त्या पांडवसैन्यावर हल्ला केला आणि त्यांपैकी शतावधि व सहावधि वीरांना ठार मारिलें ! तेव्हां कर्णाचे दोन पुत्रही समरांगणांत पांडवांशी लढत होते. त्या सत्यप्रतापी उभय बंधूंनी मोठ्या क्रोधानें पांडवांचें सैन्य इतस्ततः पुष्कळ वधिलें. राजा, त्या समयी मोठा घोर संग्राम झाला ! त्यांत शूर पांडव, धृष्टद्युम्न, शिवंदी व द्रौपदीचे पुत्र ह्यांनी अगदीं क्षुब्ध होऊन तुडुया सैन्याचाही मोठा संहार उडविला ! असा; ह्याप्रमाणें भीमाच्या हस्ते तुडुया सैन्याचा व कर्णाच्या हस्ते पांडवांच्या सैन्याचा मोठा नाश झाला !

## अध्याय एकुणऐशीवा.

—:—:—

### शल्यकृत कर्णप्राप्ताह्न.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, इकडे अर्जुनानेही कौरवांचे चतुरंग दळ वधिलें व महान् रणामध्ये सप्तपुत्र कर्ण क्रोधायमान

झालेल्या अवलोकन करून शत्रुसैन्याशी मोठे दारुण युद्ध आरंभिले आणि महीतलावर शोणित श्री केवळ नदीच उत्पन्न केली ! हत सैन्याचे मांस, मज्जा व अस्थि ह्यांचा त्या नदी-मध्ये चिखल मातला होता; मनुष्यांचीं मस्तकें हे त्या नदीतले पाषाण होते; आणि हत्ती व घोडे हे त्या नदीचे तीर होते ! शूर योद्ध्यांच्या अस्थिसंचयांना ती रुधिरनदी अगदी व्याप्त झालेली होती; तेथें कावळे व गिधाडें ही ओरडत असल्यामुळे जणू त्या नदीचा आक्रोश चालला होता; तिच्यामध्ये जी छत्रे वहात होती ती पाहून हंस व नावाच तिजवर चालत आहेत असे दिसत होतें; त्या नदीतून प्रचळ योद्धे जणू महान् महान् वृक्षांप्रमाणे वहात चालले होते; योद्ध्यांचे हार ही त्या नदीतली कमळें होती; उंची शिरोभूषणें हा त्या उदकावरील फेन होता; आणि धनुष्ये व शर ह्या ध्वजपताकाच होत्या ! त्या नदीतून मनुष्यांची फुटकी तुटकीं मस्तकें इतस्ततः वाहात होती; तिच्यामध्ये ढाली व चिलवतें ही गरगर फिरत होती; आणि रथ हे तराफेच तरंगत होते ! राजा, अशी ती भयंकर नदी विजयशील पुरुषांना अनायासे उतरून जाण्यास योग्य होती व भीरुजनांना अगदीच मुदुस्तर होती ! अमो; शत्रुसंहारक नरवीर अर्जुनाने अशा प्रकारची शोणितमरित् चालू केल्यानंतर तो कृष्णाला असे भाषण बोलला.

अर्जुन म्हणाला:—कृष्णा, हा पहा रणागणांत सूतपुत्राचा ध्वज दिसत आहे. हे पहा भीमसेनादिक पांडववीर त्याच्याशी लढत आहेत. हे पहा कर्णाला भिऊन पांचाल पळत सुटले ! हा पहा दुर्योधन राजा कर्णाने पराभूत केलेल्या पांचालसैन्याला उधळून लावीत असतां श्वेतछत्रामुळे कसा शोभत आहे तो ! आणि नेमच हे पहा कृप, कृतवर्मा व महारथ अश्व-

त्वामा कर्णाच्या पाठवळावर त्या दुर्योधनाचें संरक्षण करीत आहेत. कृष्णा, जर आपण ह्या कौरववीरांचें हनन केलें नाहीं, तर हे स्वचित सोमकांना वधितल ! हा पहा तो मोठ्या कुशलतेने घोड्यांचे लगाम चालविणारा शल्य कर्णाच्या रथावर कसा शोभत आहे ! कृष्णा, मला असे वाटतें की, त्या आतां त्या महारथ सूतपुत्राच्या समीप माझा हा रथ घेऊन चलावे; आज मी सूतपुत्राला समरांगणांत ठार मारिल्या-शिवाय कधीही परत येणार नाहीं ! जनार्दना, जर आज माझ्या हातून कर्णाचा वध घडला नाहीं, तर तो आपल्या डोळ्यांदेखत सर्व पांडवांना व महाश्व मृज्यांना ठार करील ह्यांत संदेह नाहीं !

संजय मांगतो:—नंतर महाबाहु कृष्णाने तत्काळ अर्जुनाचा रथ कौरवसैन्यावर चालविला आणि अर्जुनाने कर्णाशी द्वैरथयुद्ध करावें ह्या उद्देशाने तो रथ महाधनुर्धर कर्णाच्या रथाशी अगदी भिडविला; तेव्हां समारांगणांत अर्जुन प्राप्त झाला असे पहातांच चौहोंकडे पांडवसैन्याला मोठा धीर आला. राजा, त्या समर्थी समरभूमीवर अर्जुनाच्या रथाचा जो वणवणाट चालला होता, तो ऐकून जणू काय इंद्राच्या वज्राचा किंवा मेघांच्या समुद्राचाच शब्द होत आहे असे वाटत होतें. राजा, ह्याप्रमाणे अतुलवीर्ये सत्यविक्रम पांडुपुत्र अर्जुन आपल्या रथातून दणाणत तुझ्या सैन्याला जिंकित कर्णाच्या सन्निध जात असतां त्याच्या रथाचे ते श्वेत अश्व, कृष्ण मारुथि व ध्वज अवलोकन करून मद्राज शल्य कर्णाला म्हणाला, “कर्णा, ज्याची तू चौकशी चालविली आहेस, तो ह्या श्वेताश्व कृष्णमारुथि अर्जुनाचा रथ शत्रूचा संहार करीत आपल्या समीप प्राप्त झाला पहा ! हा पहा कुंतीपुत्र अर्जुन गांडीव धनुष्याचा टणत्कार करीत उभा आहे ! बाबारे, जर आज



तू त्याला वधिलेस, तर खचित आपलें कल्याण झालेंच म्हणून समज. कर्णा, जिच्यावर चंद्र व नक्षत्रें चमकत असून जिला किंकिणी व पताका लाविलेल्या आहेत, अशी ती अर्जुनाच्या धनुष्याची प्रत्यंचा अंतरिक्षांतल्या विबुलतेप्रमाणें कशी झळकत आहे ती पाहिलीसना ! हा पहा अर्जुनाच्या ध्वजाप्रावर मारुति असून तो चोहांकडे पहात आहे व त्याला अवलोकन करून वीरांची त्रेधा उडाली आहे ! त्याच-प्रमाणें अर्जुनाच्या रथावर त्याचा सारथि जो कृष्ण अधिष्ठित आहे, त्याची शंख, चक्र, गदा व शार्ङ्ग धनुष्य हीं आयुधें पहा ! हा पहा गांडीव धनुष्याचा टणत्कार ऐकू येत आहे ! हे पहा त्या कुशल धनुर्धराचे जलाल बाण शत्रूंचा संहार उडवूं लागले ! हीं पहा रणांतून पळून न जाणाऱ्या योद्ध्यांची मस्तकें विशाल, विस्तृत व आरक्त अशा नेत्रांनी व पूर्णचंद्रतुल्य मुखांनी महीतलाला आच्छादित करून कशी शोभत आहेत ती ! हे पहा सुगंधि पदार्थांची उडी दिलेले शूर वीरांचे परिवतुल्य बाहु आयुधां-सहवर्तमान वर उडून खाली पडत आहेत ! हे पहा स्वारांसहित घोडे जिह्वा तुटून व नेत्र फुटून भूतलावर मरून पडले आहेत व पडत आहेत ! हे पहा सुवर्णाच्या अलंकारांनी शोभणारे पर्वताच्या शिखरांसारखे प्रचंड हत्ती अर्जुनाच्या शरप्रहारांनी गंडस्थळांचें विदारण होऊन पर्वताप्रमाणें धडाधड भूतलावर कोमळत आहेत ! तसेच हे महान् महान् भूपाळ क्षीणपुण्य देव जसे विमानांतून खाली पडतात तसे हत्तींवरून खाली पडत आहेत ! कर्णा, सिंहानें ज्याप्रमाणें हजारों नानाविध पशूंना व्याकूल करून सोडावें, त्याप्रमाणें अर्जुनानें कोरवांचें हें सैन्य अगदी व्याकूल करून सोडिलें आहे तें पाहिलेंस काय ! दुर्धर अर्जुन भेटोभेट्या वीरांचा वध करून आतां तुला

वधण्याकरितां इकडे चालून येत आहे ! ह्या-साठीं तूं आतां एकदम त्याजवर चालून जा ! अर्जुनानें शत्रूंना मारण्याचा सारखा तडाखा लाविल्यामुळें कोरवांची अगदी त्रेधा उडाली असून अर्जुनाच्या भयानें जिकडे तिकडे पळ काढीत आहेत ! ह्यास्तव अर्जुन आतां बाकी-च्या सैन्याकडे दुर्लक्ष करून तुला ठार मार-ण्यासाठीं इकडे त्वरेन धावून येत आहे, असें मी त्याच्या शरीराच्या उठावावरून मानितों ! कर्णा वृकोदराला तूं जी पीडा केलीस, तिच्या योगानें संतप्त झालेला अर्जुन आतां तुझ्या-शिवाय दुसऱ्या कोणत्याही वीराशीं लढण्याची इच्छा करणार नाही ! तूं धर्मराजाला विरथ करून अति घायाळ केलेंस, व त्याप्रमाणेंच शिखंडी सात्यकि, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीचे पुत्र, युधामन्यु, उत्तमोजा, नकुल, सहदेव ह्यांनाही जख्म करून सोडिलेंस, हें कळल्यामुळें आतां बलाढ्य व शत्रुसंहारक अर्जुन एका रथानें तुझ्यावर तुटून पडेल ! आतां तूं जर उशीर करशील तर क्रोधानें आरक्त केलेला हा अर्जुन सर्व भूपाळांना ठार मारण्याकरितां आपल्या सैन्यावर चालून येईल; ह्यासाठीं तो दूर आहे तोच तूं त्याचें निवारण कर ! बाबारे, तुझ्याशिवाय दुसरा वीर त्याजवर चालून जाण्यास समर्थ होणार नाही ! कर्णा, समुद्राची सीमा त्याचा निरोध करिते, तसा क्रोधा-यमान अर्जुनाचा निरोध करण्यास समर्थ असा तुझ्यावांचून एकही वीर ह्या लोकांत मला आढळत नाही. ह्या समर्थी अर्जुनाच्या पृष्ठ-भागीं किंवा पार्श्वभागीं कोणीही वीर त्याचें संरक्षण करीत नाहीत,—तो एकटाच तुझ्यावर येत आहे; म्हणून तूं ही संधि साधून त्याचा वध कर व कार्यभाग सिद्धीस ने ! रणांत कृष्णा-र्जुनांशी युद्ध करण्याला तूं एकटा समर्थ आहेस. हे राधेया, अर्जुनाचा वध करणें हें

कार्य तुझ्याव्यतिरिक्त दुसऱ्या कोणाकडूनही होणार नाही; ह्याकरितां तूं आतां पुढें हो ! भीष्म, द्रोण व द्रोणि ह्यांच्याप्रमाणें तूं प्रतापशाली आहेस; म्हणून घोर संग्रामांत आपल्यावर चालून येणाऱ्या धनंजयाचें तूं निवारण कर. अर्जुन हा केवळ जीभ काढून खावयास आलेल्या सापाप्रमाणें, डुरकण्या फोडणाऱ्या बेलाप्रमाणें किंवा अरण्यांतील वाघाप्रमाणें भयंकर आहे; ह्यासाठीं तूं त्याला ठार मार. हे पहा महारथ धातेंराष्ट्र व भूपाळ अर्जुनाच्या भीतीनें निराश होतसाते धूम पळत आहेत; युद्धांत त्यांचें भय दूर करील असा तुझ्याशिवाय दुसरा कोणीही योद्धा नाही ! हे सर्व कौरव रणांगणांत तुझ्या आधारावर विसंबून लढत आहेत; 'प्रसंगीं आपलें संरक्षण कर्ण हा करील !' अशी त्यांची तुझ्यावर मोठी भिस्त आहे; म्हणून वेदेह, अंबष्ठ, कांबोज, नगजित् व गांधार ह्या अजिंक्य योद्ध्यांना जिकितांना तूं जें कांहीं धैर्य दाखविलेंस, तें धैर्य तूं आतां दाखव; आणि अर्जुनावर चालून जा. हे महाबाहो कर्णा, तूं मोठ्या वीरश्रीनें कृष्णार्जुनांवर चाल करून त्यांचें निवारण कर. "

कर्ण म्हणाला:—शल्या, तुझा नेहमीचा स्वभाव कायम आहे; तथापि ह्या वेळीं तुझे भाषण मला प्रिय वाटतें. तुला धनंजयाची फार भीति पडली आहे; पण तशी भीति पडण्याचें मुळीच कारण नाही. शल्या, युद्धकलेंत निपुण अशा ह्या वीराचें (माझे) बाहुसामर्थ्य तूं आज अवलोकन कर. मी आज एकटा पांडवांचें हें प्रचंड सैन्य व कृष्णार्जुन ह्यांना समरांगणांत निजवीन. शल्या, आज जर मी युद्धांत त्या दोन वीरांना वधिलें नाहीं, तर रणांगणांतून परत जाणार नाही, हें पक्कें लक्षांत ठेव. शल्या, युद्धांत जय अमक्यालाच मिळेल हें निश्चयानें सांगणें अवघड आहे; ह्यासाठीं मी इतकेंच

म्हणतों कीं, एक तर त्या दोघांच्या हस्ते मी रणांत मरून पडेन, किंवा मी त्या दोघांना ठार करून विजयी होईन !

शल्य म्हणाला:—कर्णा, महारथांचें म्हणणें असें आहे की, रथश्रेष्ठ अर्जुन हा एकटा असतां देखील युद्धांत अजिंक्य आहे; मग त्याच्या संरक्षणार्थ कृष्ण हा त्याच्या समीप असल्यास त्याला जिकण्यास येथें कोण समर्थ होईल बरें !

कर्ण म्हणाला:—शल्या, मला जें विदित आहे, त्यावरून मी असें सांगतों की, ह्या भूतलावर अर्जुनामारखा उत्कृष्ट रथी कधीही झाला नाहीं ! तेव्हां अशा ह्या लोकोत्तर योद्ध्याशी महान् संग्राम करून मी तुला आज आपला पराक्रम दाखवितों तो अवलोकन कर. शल्या, हा पांडुपुत्र अर्जुन रणांगणांत श्वेतहय जेडिलेल्या रथांतून परिभ्रमण करित आहे; कदाचित् तो आज मला मारील किंवा मी त्याला मारीन. जर का त्यानें मला मारिलें, तर माझ्या मृत्यूबरोबर ह्या सर्व कौरवांचा अंत झाला म्हणून समज. शल्या, ह्या राजपुत्र अर्जुनाच्या हातांना घाम किंवा कंप म्हणून कधीही माहीत नाहीं. ते मोठे पुष्ट असून त्यांजवर घट्टे पडलेले आहेत. ह्याची आयुधें मोठी बळकट असून तो मोठा कुशल व जलद बाण सोडणारा आहे. ह्याची बरोबरी करील असा कोणीही वीर नाहीं. जसा एक बाण ध्यावा, तसे हा एकदम अनेक कंकपत्र बाण घेऊन तत्काळ त्यांची योजना करितो आणि ते अमोघ बाण कोसावर जाऊन शत्रूवर पडतात; तेव्हां असल्या ह्या अपूर्व योद्ध्यासारखा दुसरा योद्धा ह्या पृथ्वीवर कोण आहे ? खांडववनांत त्या वेगवान् अतिरथ योद्ध्यानें एकट्या कृष्णाच्या साहाय्यानें अग्नीला तृप्त केलें आणि तेथें अग्नीपासून गांडीव धनुष्य, श्वेत अश्व

जोडिलेला व महान् घोष करणारा उग्र रथ, मोठमोठे दोन अक्षय्य व दिव्य बाणभाते आणि उत्कृष्ट आयुधे ही मिळविली व कृष्णानें आपले चक्र मिळविलें ! त्याप्रमाणेंच अर्जुनानें इंद्र-लोकीं त्या सर्व अमंग्यात कालकेय दैत्यांना वधिलें व तेथें देवदत्त शंख मिळविला ! तेव्हां अशा त्या लोकोत्तर योद्ध्यापेशां अधिक पराक्रमी अमा ह्या पृथ्वीवर कोणता वीर सांपडेल ? शल्या, ज्या शूर धनुर्धरांनं प्रत्यक्ष महादेवाशी घोर युद्ध करून अन्नप्रताप दाखविला आणि त्यास संतुष्ट करून त्याजपासून त्रैलोक्याचा संहार करण्यास समर्थ असें महाभयंकर पाशुपत अन्न संपादन केलें. त्याचा महिमा काय वर्णावा ? शल्या, पृथक् पृथक् लोकपालांनी एकत्र होऊन युद्धामध्ये अमेय शक्तीची प्रचंड अन्ने अर्जुनास दिली व त्यांच्या योगे त्यानें कालकेयादिक सर्व अमुरांना रणांत तेव्हांच ठार मारिलें ! त्याप्रमाणेंच विराटपुरीमध्ये आढी सर्व एकत्र होऊन गोधनें आणण्यास गेलें असतां त्यानें एका रथानें रणांत आढ्यां सर्वांचा पराभव करून गोधनें परत नेली व महारथांची वस्त्रे हिरावून घेतली ! ह्याकरितां, शल्या, अशा प्रकारें वीर्य व गुण ह्यांनी युक्त, कृष्णसह रणांगणांत युद्धार्थ उभा असलेल्या व भूपाळांमध्ये श्रेष्ठ अशा त्या लोकोत्तर योद्ध्याला जर मी युद्धासाठी आह्वान केलें, तर माझ्या ठिकाणी सर्व लोकांत इतरत्र न आढळणारें विलक्षण सामर्थ्य वमत आहे असें मानण्यास हरकत कोणती ? शल्या, तो अतुल्य व अनंतवीर्यशाली भगवान् केशव ज्याचें संरक्षण करण्यास सतत सिद्ध आहे. त्या अर्जुनाच्या सामर्थ्याचें वर्णन काय करावें ? शिवाय तिन्ही लोक एकत्र होऊन प्रयत्न करूं लागले असतां देखील ज्याचे सर्व गुण सहजावधि वर्षांत

वर्णिले जाणें अशक्य होय, तो महात्मा शंख, चक्र व खड्ग धारण करणारा विजयशाली वामदेव त्याच्या रथावर मारथ्य करीत आहे; ह्यासाठीं त्या दोघांना एका रथावर अवलोकन करून मला फार भय पडलें आहे ! शल्या, रणांगणांत जितके धनुर्धर आहेत त्यापेक्षां अर्जुन हा प्रबल आहे व नागयण तर चक्रयुद्धांत अजिंक्यच आहे; तेव्हां अशा ह्या जोडीपुढें प्रत्यक्ष हिमालय पर्वतही स्वस्थानापासून चलित होईल, पण हे दोन वीर अपुरेगुदळणार नाहीत ! शल्या, कृष्णार्जुन हे दोघेही महारथ शूर व बलिष्ठ असून दृढायुध व वज्रामारखे कठीण आहेत; तेव्हां त्यांजवर माझ्याशिवाय दुसरा कोणता योद्धा चाल करून जाईल बरें ? शल्या, अर्जुनाशी युद्ध करावें म्हणून माझा जो संकल्प, तो आतां फार थोड्या अवकाशांत सिद्धीस जाईल; आतां मी तत्काळ मोठें अद्भुत व विचित्र युद्ध त्यांच्याशीं करीन ! आज कदाचित् त्या युद्धांत मी त्यांना मारीन किंवा ते मला मारतील, हें खाम समज !

मंजय मांगतो:—शत्रुसंहारक कर्णानें शल्याला ह्याप्रमाणें बोलून रणामध्ये मेघाप्रमाणें मोठ्यानें गर्जना केली ! नंतर तुझा पुत्र दुर्योधन तेथें आला व त्यानें त्याचें अभिनेदन करून त्यास प्रोत्साहन दिलें. तेव्हां कर्ण हा दुर्योधन, कृप, कृतवर्मा, सहानुज गांधारपति, गुरुमुन अश्वत्थामा, आपला धाकटा भाऊ, त्याप्रमाणेंच गजवीर, अश्ववीर व पदाति ह्या सर्वांस म्हणाला, “वीरहो, तुझी सर्व कृष्णार्जुनांवर चाल करा; त्यांना जोहोंकडून कोंडा; आणि सर्व बाजूंनी त्यांजवर ताबडतोब मोठ्या वेगानें बाणवृष्टि चालवा; म्हणजे तुमच्या बाणप्रहारांनीं ते अतिशय घायाळ झाल्यावर मी त्यांस आज सहज वधीन !” तेव्हां ‘बरें आहे’

असें म्हणून ते सर्व भूपाळ मोठ्या त्वरेनें अर्जुनावर त्याच्या वयाथे चाल करून गेले आणि त्या सर्व महाराजांनी कर्णाच्या आज्ञेप्रमाणें समरांगणांत अर्जुनावर अगणित बाणांचा भडिमार चालविला ! राजा, त्या समयी, महामागर जसा नद व नद्या ह्यांना ग्रस्त करून टाकितो, तसें समरांगणांत अर्जुनानें त्या सर्व वीरांना ग्रस्त केलें ! त्या वेळीं अर्जुन हा आपले दिव्य शर धनुष्याला केव्हां जोडी व केव्हां सोडी हें शत्रूंना मुळींच दिसत नसे. परंतु त्यांच्या शस्त्रप्रहारांनी शकलें उडून कौरवांकडील नर, अश्व व कुंजर हे रणांगणांत पटापट पडत असत ! राजा, त्या वेळीं अर्जुनाचें जें दिव्य तेज झळाळत होतें, त्याचें काय वर्णन करावें ! त्या समयी अर्जुनास पाहून जणू काय प्रलय-कालीन सूर्यच तळपत आहे असा भास होत होता. अर्जुनानें बाणांचा जो भडिमार चालविला होता ते जणू काय त्या सूर्याचे किरणच अमुन गांडीव धनुष्य हें त्या देदीप्यमान सूर्याचें मंडलच होतें ! ह्यास्तव, राजा, दुखऱ्या डोळ्यांच्या मनुष्यांना जसें सूर्याकडे पाहावत नाही, तसें त्या कौरवसैन्याला अर्जुनाकडे पाहावलें नाही ! कौरवांकडील महारथ जे जलाल बाण अर्जुनावर सोडीत, ते सर्व तो पृथापुत्र हंमत हंमत उलट बाणांचा मोठ्या वेगानें भडिमार करून छेदीत असे ! राजा, ज्याप्रमाणें सूर्य हा ग्रीष्म ऋतूंत सर्व जल-शयाचें उदक सहज आकर्षण करून घेतो, त्याप्रमाणें अर्जुनानें कौरवांकडील वीरांचे सर्व बाण सहज आकर्षण करून घेऊन ते सैन्य जालून टाकण्यास प्रारंभ केला ! तेव्हां कृप, कृतवर्मा, स्वतः तुझा पुत्र दुर्योधन व महारथ अश्वत्थामा, हे पर्जन्य पर्वतावर उदकाची वृष्टि करितो त्याप्रमाणें अर्जुनावर बाणांची वृष्टि करीत धावून आले, परंतु अर्जुनास ठार मारण्या-

करितां उद्युक्त झालेल्या त्या सर्व धनुर्धरांनीं मोठ्या प्रयत्नानें घोर संग्रामांत जे तीक्ष्ण शर अर्जुनावर सोडिले, त्या सर्वांचा त्या पांडुतनयानें तत्काळ शरवर्षाव करून विध्वंस उडविला व उलट प्रत्येकावर तीन तीन बाण टाकून त्यानें त्यांस वक्ष्म्यळी विद्ध करून सोडिले ! तेव्हां अश्वत्थाम्यानें पुनः धनंजयावर दहा, अच्युतावर तीन व चार शोड्यांवर चार अमे प्रखर बाण सोडिले आणि ध्वजस्थित मारुतीला तर नाराच शरांनीं झांकून काढिले ! अश्वत्थाम्याचें तें कृत्य अवलोकन करून अर्जुनाचें धैर्य रतिमात्र कमी झालें नाही. त्यानें ताबडतोब तीन बाण सोडून अश्वत्थाम्याचें प्रस्फुरण पाव-णारें तें धनुष्य तोडून टाकिलें, त्याप्रमाणेंच एका क्षुर बाणानें सारथ्याचें मस्तक छेदिलें, चार बाण टाकून चारही शोड्यांना मारिले आणि पुनः तीन बाण सोडून अश्वत्थाम्याचा ध्वज खाली पाडिला ! त्या समयी अश्वत्थामा अति-शय चवताळला आणि त्यानें हातांतलें तें छिन्न आयुध भूतलावर फेंकून देऊन मणि, वज्र व मुवर्ण ह्यांनी शृंगारलें व तक्षकाच्या देहाप्रमाणें कांतिमान् असें दुसरें बहुमोल धनुष्य—पर्वताच्या तटावरून एखादा महान् भुजंग उचलून ध्यावा तसें—उचलून घेतलें व त्यास प्रत्यंचा जोडून तें सज्ज केलें; आणि त्या गुणशाली द्रोणपुत्रानें कृष्णार्जुनाशी अगदी लगट करून त्यांजवर प्रचंड शरांचा भडिमार आरंभिला ! तें पाहून कृप, कृतवर्मा, दुर्योधन व इतर महारथ ह्यांनी बाणांचा वर्षाव करून अर्जुनाशी मोठा घोर संग्राम सुरू केला आणि सूर्याला ज्याप्रमाणें मेघांनीं झांकून काढावें, त्याप्रमाणें त्यांनीं कृष्णार्जुनांस बाणांनीं झांकून काढिले ! त्या वेळीं कार्त्तवीर्याप्रमाणें उग्र प्रताप गाजवि-णाऱ्या अर्जुनानें कृपाचें धनुष्य व बाण आणि त्याप्रमाणेंच त्याचे अश्व, सारथि व ध्वज ह्यांज-

वर बाणांचा भडिमार केला; आणि पूर्वी इंद्रानें जसे बलीला जेरीस आणिलें तसे त्यानें त्या कृपाला जेरीला आणिलें ! तेव्हां कृपास आयुधहीन करून घोर रणकंदनांत त्याचा ध्वज पाडिल्यावर त्यावर अर्जुनानें अशी कांही बाणवृष्टि केली की, पूर्वी त्यानें भीष्माला जसें सहस्रावधि शरांनीं विद्ध करून सोडिलें तसेंच ह्या प्रसंगीं कृपालाही सहस्रावधि शरांनीं विद्ध करून सोडिलें ! राजा, मग प्रतावान् अर्जुनानें तुझा पुत्र मोठमोठ्यानें गर्जना करीत लढत होता त्याजवर शरवर्षाव आरंभिला व त्याचें धनुष्य आणि ध्वज हीं तोडून कृतवर्म्यांचे अश्व वधिले व त्याचा रथ भुळीस मिळविला ! नंतर त्यानें मोठ्या त्वरेनें कौरवसैन्यांतले हत्ती, घोडे व रथ आणि त्याप्रमाणेंच त्यांजवरील वीर, सारथि व ध्वज ह्यांचा संहार उडविला; आणि मग कौरवांच्या सैन्यांत एकच हाहाःकार होऊन, पाण्याचा बंधारा फुटला असतां तें पाणी जसें इतस्ततः मोठ्या वेगानें धावूं लागतें तसें तें कौरवांचें प्रचंड सैन्य विस्कळित होऊन मोठ्या वेगानें चोहोंकडे धावूं लागलें ! मग केशवानें तत्काळ अर्जुनाचा रथ एका बाजूस वळवून त्या भयभीत झालेल्या शत्रूंना आपल्या उजवीकडे घेतलें; परंतु इतक्यांत त्वरेनें एकीकडे वळलेल्या त्या अर्जुनावर—वृत्तहंत्यादेवेंद्रावर जसे असुर धावून आले तसे—पुनः युद्धार्थ उत्सुक झालेले दुसरे कौरववीर ध्वज फडकत असलेल्या उत्कृष्ट रथांतून धावून आले ! पण त्या समयी शिबंदी, शैनेय, नकुल व सहदेव हे अर्जुनावर धावून येणाऱ्या त्या कौरववीरांवर चालून गेले आणि निशित शरांचा भडिमार करून त्यांनीं त्यांना मागे हटविलें व मोठ्यानें गर्जना करीत त्यांची दाणादाण उडवून दिली ! राजा, नंतर रणांगणांत कौरव व सृजय ह्यांचें निकराचें युद्ध

सुरू झालें ! त्या समयीं दोन्ही दळांतील क्रोधायमान वीरांनीं सरळ चालणारे प्रखर शर एकमेकांवर सोडण्याचा सपाटा लाविला, तेव्हां जणू काय देवदानवांचें तुंबळ युद्ध मातलें आहे असा भास होऊ लागला ! त्या वेळी जय मिळविण्यासाठी व स्वर्गास जाण्यासाठी उतावीळ झालेली तीं दोहों पक्षांकडील चतुरंग सैन्ये एकमेकांवर तुटून पडून मोठमोठ्यानें गर्जू लागली आणि बाणांचा भडिमार चालवून परस्परांना जखमी करूं लागली, तेव्हां त्या महात्म्या शूर सैनिकांनीं परस्परांवर इतकी बाणवृष्टि केली की, त्या घोर संग्रामामध्यें अंतरिक्षांत बाणांचें छत लागून चोहोंकडे अंधःकार पडला आणि दिशा, उपदिशा व सूर्याची प्रभा ह्या सर्व अंधःकारांत गडप झाल्या !

## अध्याय ऐशीवा.

—:०:—

### संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, इकडे कौरवांकडील प्रबळ वीरांनीं भीमावर हल्ला करून त्यास अगदी प्राणसंकटांत घातलें असतां त्याला त्यांतून सोडविण्यासाठी अर्जुन हा कर्णाचें सैन्य सोडून तिकडे गेला; व कौरवांचे जे योद्धे भीमावर तुटून पडले होते, त्यांजवर बाणांचा भडिमार करून त्यानें त्यांस यमलोकी पाठविलें ! राजा, त्या वेळी अर्जुनानें चोहोंकडे इतके बाण सोडिले कीं, त्यांनीं सर्व नभोमंडल व्याप्त होऊन अदृश्य झाले व खाली महीतलावर तुझ्या सैन्याचा फडशा पाडिला ! राजा, त्या समयी अंतरिक्षांत चोहोंकडे जे बाणसमूह भ्रमण करीत होते, ते पाहून जणू काय पक्ष्यांचे थवे आकाशांत फिरत आहेत असें वाटूं लागलें; आणि अशा प्रकारें सर्व अंतरिक्ष बाणांनीं भरून काढून अर्जुन हा शत्रु-

सैन्याचा वध करीत असतां जसा काय तो कौरवसैन्याचा काळच होय असे सर्वास भासले ! राजा, त्या वेळीं अर्जुनानें कौरवांवर भल्ल, क्षुरप्र व पाजविलेले नाराच बाण सोडून त्यांची गात्रें व मस्तकें छेदिलीं आणि हातपाय तोडून, कवचें फाडून व मस्तकें उडवून ज्या वेळीं त्यानें चोहोंकडे वीरांचीं कलेवरें रणांगणांत पाडण्याचा क्रम आरंभिला त्या वेळीं पडलेल्या व पडत असलेल्या धडांनीं सर्व रणभूमि आच्छादित झाली ! राजा, तेव्हां धनंजयाच्या शरांनीं कितीएक शकट, रथ, अश्व व गज हे छिन्न-भिन्न होऊन त्यांचा अगदी चुराडा उडाला आणि कितीएक गात्रहीन व व्यंग झाले; आणि त्यामुळे महावैतरणीप्रमाणें समरभूमि दुर्गम, उंचसखल व भयंकर दिसूं लागली ! राजा, त्या समयी इपा, चक्रें, अक्ष, भल्ल, तसेच अश्वहीन व साश्व योद्धे, आणि त्याप्रमाणेंच ससारथि व असारथि रथ ह्यांनीं सर्व महीतल झांकून गेलें ! त्या वेळी, राजा, ज्यांच्यावर चिलखतें घातलीं होती, जे नित्य युद्धासाठीं मदोन्मत्त असत, ज्यांवर सुवर्णाचे अलंकार विराजित होते, ज्यावर अंगांत हेममय कवचें घातलेले वीर शोभत होते, आणि ज्यांना क्रूर महातांनीं मांड्या व आंगठे ह्यांनीं ताडण करून क्षुब्ध व क्रोधायमान केले होते, असे चौदाशें सुंदर हत्ती अर्जुनानें जलाल बाणांच्या भडिमारांनीं रणांगणांत वधिले ! राजा, त्या वेळीं धनंजयाच्या बाणांनीं विद्ध झालेल्या त्या महान् महान् कुंजरांनीं ती भूमि आस्तृत झाली तेव्हां जणू काय तिजवर प्रचंड पर्वताचीं मोठमोठालीं शिखरेंच पतन पावलीं आहेत असे वाटलें ! राजा, त्या समयी अर्जुनाचा रथ त्या रणभूमीतून परिभ्रमण करीत असतां जिकडे जिकडे जाई, तिकडे तिकडे त्याच्या सूर्याचे किरण असे मेवांतून मार्ग

काढतात तसा,—रणभूमीवर पतन पावलेल्या त्या मदस्त्राव करणाऱ्या भेषतुल्य हत्तीतून मार्ग काढावा लागे ! राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें मनुष्यें, गज, अश्व व रथ ह्यांचा अनेक प्रकारांनीं विध्वंस उडवून व युद्धनिपुण वीरांचे देह, शस्त्रें, कवचें व यंत्रें ह्यांनीं रणांतला मार्ग बंद करून मग गांडीव धनुष्याचा महाभयंकर टणत्कार आरंभिला, तेव्हां जणू काय अंतरिक्षांत घोर घनगर्जना सुरू झाली असे वाटूं लागलें ! त्या समयी धनंजयाच्या शरप्रहारांनीं जर्जर झालेली ती कौरवसेना भयभीत होतासाती समुद्रावर वादळांत सांपडलेल्या मोठ्या नौकेप्रमाणें फुटून गेली आणि मग तिची फारच दुर्दशा उडाली ! राजा, त्या वेळीं अर्जुनानें गांडीव धनुष्याच्या योगें नानाविध प्राणघातक बाणांचा शत्रुसैन्यावर भडिमार चालविला, तेव्हां ते अग्नि, उल्का व विद्युत्पात ह्यांप्रमाणें तुड्या सैन्याला जाळूं लागले आणि महान् पर्वतावर रात्रीच्या समयी कळकांच्या बेटाला आग लागली असतां तेथें जसा ज्वाळांचा भडका होतो तसा तुड्या सैन्यांत अर्जुनाच्या शरा-शीनें एकच भडका झाला ! राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें तुड्या सैन्याचा बाणप्रहारांनीं चुराडा उडवून, जाळूनपोळून व विध्वंस उडवून नाश केला तेव्हां तें मोठ्या अरण्यांत वणव्यांत सांपडलेल्या श्रापदांप्रमाणें दशदिशांस पळून गेलें ! राजा, ह्या प्रकारें सव्यसाची अर्जुनानें कौरवांना जाळून टाकिलें तेव्हां रणांगणांत उद्विग्न झालेल्या कौरवसैन्यानें भीमसेनाला सोडून देऊन पळ काढिला आणि मग विजयी अर्जुन भीमसेनाच्या सन्निध जाऊन क्षणभर तेथें स्वस्थ राहिला. तेव्हां तेथें अर्जुनानें धर्मराजाचें स्वास्थ्य व कुशलवृत्त भीमसेनास निवेदन केल्यावर त्या उभय भ्रात्यांची पुढील कार्याबद्दल मसलत झाली; आणि मग भीमसेनाची आज्ञा घेऊन

अर्जुन हा रथाच्या घणघणाटानें अंतरिक्ष व महींतल दुमदुमून टाकीत पुनः युद्धार्थ निघाला. राजा, त्या समयी लागलच दुःशासनापेक्षां लहान अशा तुझ्या दहा महाबलादच शूर पुत्रांनीं त्याला वेढा दिला. उल्का जशा हत्तीला जर्जर करून मोडितात, तद्वत् त्या धार्तराष्ट्रांनी बाणांच्या भडिमारांनें अर्जुनाला जर्जर करून मोडिलें आणि हातांतली धनुष्यें आकर्ण ओडीत ते शूर कौरववीर जणू काय नाचूच लागले ! राजा, तेव्हां कृष्णानें अर्जुनाचा रथ एकीकडे वळवून त्या धार्तराष्ट्रांना आपल्या उजवीकडे घातलें आणि आतां हे अर्जुनाच्या हस्ते तत्काळ मृत्युमुखी पडलेच ' असा आपल्या मनाशी निर्धार करून ठेविला ! राजा, त्या समयी त्या शूर धार्तराष्ट्रांना अर्जुन हा माघारा वळलासें वाटलें व ते लागलेच त्याच्यावर चाल करून आले ! परंतु अर्जुनानें त्यांजवर नाराच व अर्धचंद्र बाणांचा वर्षाव करून त्यांचे ध्वज, चाप व बाण तत्काळ तोडून टाकिले आणि आणखी दहा भल्ल बाणांनी क्रोधानें आरक्तनेत्र झालेली व दांतओठ चावीत असलेली त्यांची ती मस्तेक भूतलावर तोडून पाडिली व त्यामुळें जणू काय पृथ्वीवर कमलेंच प्रफुल्लित झालेली आहेत असें सर्वास वाटलें ! असो; राजा, ह्याप्रमाणें सुवर्णमंडित बाहुभूषणें धारण केलेल्या त्या दहा कौरवांना दहा सुवर्णपुंख भल्ल बाणांनी मोठ्या वेगानें ठार मारून शत्रुसंहारक अर्जुन हा पुढें चालता झाला !

## अध्याय एकयायशीवा.

—०:—

### संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ज्याच्या ध्वजावर कपिश्रेष्ठ मारुति अधिष्ठित होता असा

तो अर्जुन भीमसेनास भेटून महावेगवान् रथा-  
तून पुढें चालला अमतां त्याजवर कौरवांकडील  
नव्वद रथ्यांनी हल्ला केला; आणि “ आम्ही  
जर रणांतून पळून जाऊं तर शाश्वत नरकांत  
पडूं ! ” अशी घोर शपथ घेऊन त्या नरव्याघ्र  
संशप्तकांनी समरभूमीवर त्या नरव्याघ्र अर्जुना-  
ला चोहोंकडून गराडा घातला ! राजा, इकडे  
कृष्णानें अर्जुनाच्या रथाचे महावेगवान्, सुवर्ण-  
लंकृत व मोत्तिकांच्या जालकांनी आच्छादित  
असे ते श्वेत अश्व संशप्तकांकडे लक्ष न देतां थेट  
कर्णांच्या रथावर चालविले, तेव्हां त्या रथाच्या  
भोंवताली वेढा देऊन त्याजबरोबर धावणाऱ्या  
संशप्तकांनी एकसारखा अर्जुनावर बाणांचा  
भयंकर वर्षाव चालविला ! राजा, त्या समयी  
अर्जुनानें त्वरेनें तत्काळ त्या नव्वद संशप्तकांवर  
भार दिलेल्या बाणांचा भडिमार करून त्यांची  
धनुष्यें छेदिली व त्यांस त्यांच्या मारण्यांमुद्धां  
ठार मारून त्यांचे ध्वज खाली पाडिले !  
राजा, त्या समयी ते संशप्तक वीर अर्जुनाच्या  
नानाविध बाणांनी हत होतसे ते भूतलावर पडले.  
तेव्हां जणू काय स्वर्गातून क्षीणपुण्य झालेले  
सिद्धच विमानांसहित भूतलावर पडले असें सर्वास  
वाटलें ! राजा, नंतर त्या भरतश्रेष्ठ अर्जुना-  
च्या सभोंवती कौरवांकडील धीट अशा रथ,  
गज, अश्व व नर ह्यांनी पुनः वेढा घातला  
आणि त्याजवर शक्ति, ऋषि, तोमर, प्रास,  
गदा, खड्ग व बाण ह्यांची वृष्टि करून त्यास  
अडवून धरिलें ! राजा, त्या वेळी कौरव-  
योद्ध्यांनी सभोंवार अंतरिक्षांत बाणांचें जें  
छत उभारलें होतें त्याचा उलट बाणांचा भडि-  
मार चालवून—सूर्य जसा अंधकाराचा नाश  
कारितो तसा—अर्जुनानें नाश केला ! तेव्हां  
दुर्योधनाच्या आज्ञेवरून म्लेच्छांनी आपले  
तेरा हजार उन्मत्त हत्ती अर्जुनावर दोन्ही  
बाजूंनीं घातले आणि त्याजवर कर्णी, नाराच

व नालीक बाण, तोमर, प्रास, शक्ति, मुसलें, भिदिपाल इत्यादि शस्त्रास्त्रांचा भयंकर भडिमार करून त्यास जेरीस आणिलें ! पण त्या म्लेच्छ सैनिकांनी स्वतः व हत्तीच्या शुंडांनी जो अनुपमेय शस्त्रास्त्रवृष्टि अर्जुनावर चालविली होती, तिचा त्या पांडुपुत्रानें धार दिलेल्या अर्धचंद्र व भल्ल बाणांनी लागलाच विध्वंस उडविला; आणि वज्रप्रहारांनी जसा पर्वतांचा नाश करावा, तसा त्या लोकोत्तर वीरांनें नाना-प्रकारचे उत्कृष्ट बाण टाकून त्या सर्व हत्तीचा त्यांवरील वीरांमुद्धां व ध्वजपताकांमुद्धां एक-दम नाश केला ! त्या समयी, राजा, सुवर्णाचे हार ज्यांच्या गळ्यांत शोभत होतें असे ते अर्जुनाच्या हेमपुंख शरांनी विद्ध झालेले प्रचंड हत्ती अग्निज्वाळांनी भडकलेल्या पर्वतांप्रमाणें रणभूमीवर दिमू लागले ! राजा, त्या समयी मनुष्यें, गज व अश्व ह्यांनी एकच गर्जना केली, पण ती सर्व गांडीवाच्या घोषांत नष्ट झाली ! असो. अखेरीस बाणप्रहारांनी जर्जर झालेले हत्ती व वीरहीन झालेले घोडे बेफाम होऊन दशदिशांस पळून गेले आणि हजारों रथ वीरहीन व अश्वहीन होतसाते जणू काय मेघसमुदायांप्रमाणें जागोजाग दगोचर झाले ! राजा त्या वेळी रणागणांत अश्वहीन झालेल्या योद्ध्यांची फारच दुर्दशा उडाली ! ते अर्जुनाला भिऊन इतमंततः पळू लागले, पण ते निकडे निकडे गेले निकडे निकडे अर्जुनाच्या बाणांनी त्यांचा पिच्छा पुरविला आणि अखेरीस त्यांना इहलोकची यात्रा सोडून देऊन धारातीर्थी देह ठेवावे लागले ! राजा, ह्या-प्रमाणें त्या समयी अर्जुनानें असें कांही अपूर्व बाहुबल व्यक्त केलें कीं, त्यांनें एकट्यानें रणांत गज, अश्व व रथ ह्यांना जिंकून टाकिलें ! राजा, नंतर पुनः कौरवांकडील महान् गजसैन्यानें, अश्वसैन्यानें व रथसैन्यानें अर्जुनाला गराडा

घातला असें भीमसेनानें पाहिलें, तेव्हां तो पांडु-तनय जे कितीएक उर्वरित रथी त्याजपाशी लढत होते त्यांस सोडून देऊन मोठ्या वेगानें अर्जुनाच्या रथासमीप प्राप्त झाला; आणि ज्यांतील महान् वीर आधीच अर्जुनानें वधिले होते असें ते अवशिष्ट सैन्य उधळून लावून तो फिरून अर्जुनाला जाऊन भेटला. राजा, त्या समयी अर्जुनाच्या हातून जें प्रबळ अश्वसैन्य शिळक राहिलें होतें त्याच्याशी भीमसेनानें घोर संग्राम करून त्या सर्वांचा त्यानें गदा-प्रहारांनी अंत केला ! राजा, त्या लोकोत्तर वीर्यशाली भीमसेनानें तत्काळ मनुष्यें, हत्ती व घोडे ह्यांवर गदा फेंकून त्यांचा संहार आरं-भिला तेव्हां जणू काय नर, गज व अश्व ह्यांना भक्षण करणारी व कोट, नगर, वाडे व वेशी ह्यांना भेगणारी अतिशय भयंकर व दारुण अशी ती कालरात्रिच आहे असें भासूं लागलें ! राजा भीमसेनानें त्या घोर गदेनें पोलादी चिलखतें घातलेले बहुत घोडे व घोडे-स्वार ह्यांजवर प्रहार केले, तेव्हां ते मोठमोठ्यानें ओरडत व दांतओठ म्वात रक्तबंबाळ होऊन भूतलावर पडले आणि त्यामुळें हाडें, मस्तकें व हातपाय छिन्नविच्छिन्न झालेल्या त्या सैन्यावर मांसभक्षक अनेक हिंस्र पशु चरूं लागले आणि ते रक्त, मांस व चरबी ही यथेच्छ सेवून तृप्त झाले ! राजा, अशा प्रकारें गदाधर भीमसेन दहा हजार घोडे व अगणित पायदळ ह्यांचा संहार उडवून इतमंततः परिभ्रमण करूं लागला तेव्हां जणू काय काल्दंड धारण करून यमच आपणां-वर चालून आला आहे असें तुझ्या सैनिकांस वाटलें ! नंतर, राजा, माजलेल्या कुंजराप्रमाणें क्षुब्ध झालेला तो पांडुतनय भीमसेन—मगर जसा सागरांत घुमता तसा—कौरवांच्या गजसैन्यांत घुमला आणि ते आलोडन करून त्यानें आपल्या प्रचंड गदेनें तें सर्व सैन्य क्षणांत यमसद्वी



पाठविलें! राजा, त्या वेळीं ते मदोन्मत्त हत्ती बाणविद्ध होत्साते आपणांवर अधिष्ठित असलेल्या वीरांमुद्धां व ध्वजपताकांमुद्धां निकडे तिकडे रणांगणांत पडूं लागले तेव्हां जणू काय सपक्ष पर्वतच भूतलावर घडाघड कोसळत आहेत असें आम्हांस भासलें! राजा, ह्याप्रमाणें महाबल भीमसेन गजमेनेचा वध करून पुनः स्वर्थावर चढला आणि अर्जुनाच्या पृष्ठभागी प्राप्त झाला. राजा, त्या समयी कौरवांचें तें प्रचंड सैन्य अगदीं दीन होऊन माघारें वळण्याच्या वेतांत आलें; परंतु त्याजवर बहुधा चोहोंकडून शस्त्रास्त्रांचा भडिमार चालू असल्यामुळें तें तेथेंच थांबलें. तेव्हां कौरवसैन्याची ती दुर्दशा अवलोकन करून अर्जुनानें प्राणघातकी बाणांचा त्याजवर वर्षाव आरंभिला आणि तें सर्व चतुर्गंग सैन्य बाणाच्छादित झालें, तेव्हां केमरांनीं युक्त असलेलीं कंदंबपुष्पें जशी शोभतात, तसें तें शोभूं लागलें! राजा, त्या समयी अर्जुनाच्या शरप्रहाणांनीं पटापट कौरवसैन्य समरांगणांत पडूं लागलें असतां सर्वत्र एकच हाहाकार उडाला आणि गरगर फिरणाऱ्या प्रज्वलित कोलिताप्रमाणें तें सैन्य इतस्ततः भ्रमण करूं लागलें! राजा, तेव्हां कौरवांच्या अवाढव्य सेनेशी अर्जुनानें जें तुंबळ युद्ध केले त्यांत कौरवांकडील एकून एक सर्व रथी, गज, अश्व व नर बाणविद्ध होत्साते जणू काय प्रज्वलित झाले आहेत असें वाटलें; आणि त्यांचीं चिलखतें बाणांनीं फाटून जाऊन त्यांच्या देहांतून रुधिराच्या धारा उमळूं लागल्या तेव्हां जणू काय तें फुललेल्या अशोकांचेंच वन होय असा सर्वांस भास झाला! असो. राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें सव्यमाची अर्जुनाचा दिव्य प्रताप अवलोकन करून कौरवांकडील सर्व वीर कर्णाच्या जीविताविषयी निराश झाले आणि रणांगणांत अर्जुनाचे बाणप्रहार आपणांस दुःसह

होत असा पूर्ण निर्धार ठरवून व आपणांस आतां अर्जुनानें जिकिलेंच असें मानून ते मागे वळले; आणि अर्जुनाच्या बाणांच्या भडिमारांत आपले देह धारातीर्थी ठेवीत भयभीत होत्साते कर्णाच्या समग्रभूमीवर मोडून देऊन आरडत ओरडत दशदिशांस पळून गेले! राजा, मग त्यांजवर शतावधि बाण सोडीत अर्जुनानें त्यांचा पाठलाग केला आणि तें पाहून भीमसेनप्रमुख सर्व पांडवीय योद्ध्यांना मोठा आनंद झाला! राजा, नंतर तुझे पुत्र कर्णाच्या रथासमीप त्याच्या आश्रयार्थ गेले व ते सर्व प्राणसंकटरूप अगाध मागारांत बुडत आहेत असें पाहून कर्ण हा त्यांना जणू काय द्वीपच झाला! राजा, गांडीवाला भिऊन पळून गेलेले कौरवयोद्धे कर्णाच्या आश्रयार्थ गेले असतां जणू काय दांत पाडून निर्विष केलेले ते संपंच होत असें सर्वांस भासलें! राजा, कर्ण करणारे जीव मृत्यूला भ्याल्यावर पुण्याचाच आश्रय करितात, तद्वत् महात्म्या अर्जुनाला भ्यालेल्या त्या सर्व कौरववीरांनीं कर्णाचाच आश्रय केला; तेव्हां कर्ण हा त्यांची ती विपन्न अवस्था पाहून “वीरहो, भिऊ नका; निर्भयपणें मजजवळ या!” असें त्यांस म्हणाला. राजा, ह्याप्रमाणें तुझ्या सैन्याची अर्जुनानें वाताहत केली असें पाहून शत्रुसंहार करण्याच्या इच्छेनें कर्णानें आपल्या धनुष्याचें आस्फालन आरंभिलें आणि संतापानें मुसकारे टाकीत त्या महाधनुर्धर कर्णानें अर्जुनाच्या वधाचा निश्चय ठरविला. नंतर अधिरथपुत्र कर्ण हा अर्जुनाच्या देग्वत प्रचंड धनुष्याचा टणत्कार करीत पुनः पांचालांवर धावून गेला; परंतु तें पाहून तत्काळ रक्तासारखे लाल डोळे करून पांचाल वीरांनीं क्षणांत कर्णाला बाणांच्या प्रचंड वृष्टीनें झांकून काढिलें; तेव्हां राजा, कर्णानें उलट हजारों बाण पांचालांवर सोडिले व त्यांना ठार मारून रणांगणांत पाडिलें! राजा, त्या समयी दुर्गो-

व 'कृतवर्मा ह्यांस म्हणाला, समस्त वीरहो, आज ह्या दुष्ट दुःशासनाला मी ठार मारितों; तुम्हांत सामर्थ्य असेल तर ह्याचें संरक्षण करा !

राजा धृतराष्ट्रा, मग अत्यंत बलिष्ठ असा तो भीमसेन मोठ्या वेगानें एकदम दुःशासनावर धावला; आणि सिंह जसा महान् गजाला पकडून धरितो, तसें त्यानें ठार मारण्याच्या उद्देशानें दुःशासनाला कर्ण व दुर्योधन ह्यांच्या समक्ष पकडून धरिलें; व त्याजकडे क्रूर मुद्देनें अवलोकन करून त्यानें मोठ्या दक्षतेनें त्याच्या नरड्यावर पाय दिला आणि त्याचे प्राण घेण्याकरितां लखलखीत व जलाल खड्ड हातांत घेऊन नवशिखांत कोधानें थरथरणारा तो पांडुपुत्र भीमसेन दुःशासनाला म्हणाला, 'हे दुरात्म्या, कर्णदुर्योधनांसहवर्तमान मोठ्या आनंदानें तूच ना आम्हांस 'गायरे गाय' असें म्हणालास ! वरें तर, राजसूय यज्ञांत अवभृथन्नानानें द्रौपदीचे जे केश पवित्र झाले, ते तू कोणत्या हातानें ओढलेस, हे ह्या भीमसेनास सांग पाहूं !' राजा धृतराष्ट्रा, भीमसेनाचे ते अत्यंत दारुण शब्द श्रवण करून दुःशासनानें भीमसेनाकडे निरखून पाहिलें आणि संतापानें जळकळ लागून कौरवसोमकांसमक्ष डोळे गरगरां फिरवीत तो भीमसेनास म्हणाला:—हे भीमा, हा पहा हत्तीच्या गुंडेप्रमाणें पुष्ट, सहस्रावधि गाईंचें दान करणारा आणि क्षत्रियांचा विध्वंस उडविणारा असा हा माझा हात—ह्यानेच मी याज्ञसेनीचे केश मुख्य मुख्य कौरव व तुमचे सभासद ह्यांच्या समक्ष ओढिले ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें राजपुत्र दुःशासन ह्याचें तें बाषण श्रवण करून भीमसेनानें दुःशासनाचें वक्षस्थळ पीडित केलें व त्याचे दोन्ही हात जोरानें धरून मोठ्यानें गर्जना केली आणि सर्व योद्ध्यांचा म्हुटलें:—

'वीरहो, ज्याला सामर्थ्य असेल त्यानें ह्या वेळीं दुःशासनाचें रक्षण करावें ! मी आतां ह्याचा

हा हात उपटून काढितों !' राजा, असें म्हणून, प्राणोत्क्रमण करण्याच्या वेतांत आलेल्या त्या दुःशासनाला भीमसेनानें मोठ्या आवेशानें आपटिलें आणि त्याचा तो हात उपटून आपल्या वज्रतुल्य हातानें त्यास त्या वीरामध्ये वधिलें ! राजा, त्या समयीं रणांत पतन पावलेल्या त्या वीराचें वक्षस्थळ विदारून भीमसेन त्यांतलें कोंबट कोंबट रुधिर प्याला आणि मग त्यानें खड्डाचा वार करून त्याचे मस्तक धडापासून निराळें केलें ! राजा, आपली प्रतिज्ञा खरी करून दाखविण्यास सिद्ध झालेला तो बुद्धिमान् भीमसेन पुनःपुनः दुःशासनाच्या रक्ताची रुचि घेऊन क्रोधमुद्देनें आसमंताद्वागीं अवलोकन करीत करीत म्हणाला:—अहो, ह्या शत्रुशोणिताची रुचि किती अपूर्व म्हणून सांगावी ! मातेचें दुग्ध मधु, वृत, मधुपासून उत्कृष्ट रीतीनें सिद्ध केलेलें मद्य, उत्तम उदक, दद्यापासून किंवा दुधापासून काढलेलें लोणी किंवा मुरा, अमृत वगैरे जे दुमरे गोड रस आहेत ते सर्व ह्या रुधिररसापुढें अगदीं तुच्छ आहेत ! असो; राजा, नंतर घोर कर्म करणारा तो संतप्त भीमसेन मृदुस्मित करून पुनः म्हणाला:—बा दुःशासना, काय करूं ! मृत्यूनेच तुझे रक्षण केल ! नाहीपेक्षां आणखी तुझा समाचार घेतला असता ! राजा, असें बोलून पुनःपुनः दुःशासनाचें रक्त पिण्यास धावून जाणाऱ्या आनंदित भीमसेनाला त्या वेळीं ज्यांनीं ज्यांनीं पाहिलें ते सर्व भयभीत होत्साते धडाधड भूतलावर पतन पावले ! तसेच जे कोणी व्यथित होऊन रणांगणांत पडले नाहींत त्यांच्या हातांतून शस्त्रे गळाली आणि ते धावतून जाऊन मोठमोठ्यानें ओरडूं लागले व त्यांनीं डोळे मिटून समोवतालचा कांनोसा घेतला ! राजा, त्या वेळीं ज्यांनीं ज्यांनीं भीमसेनाला दुःशासनाचें रक्त पितांना पाहिलें ते सर्व भयभीत होत्साते "खचित हा मनुष्य नव्हे !" असे उद्गार काढीत

पळून गेले ! राजा, भीमसेनाचें तें उग्र रूप व रुधिरप्राशन अवलोकन करून लोक “ खचित हा राक्षस आहे ! ” असें म्हणत चित्रसेनासह धूम ठोकून निघून गेले ! राजा, ह्याप्रमाणें चित्रसेन राजपुत्र युद्धविमुख होऊन रणांगणांतून पळून जाऊं लागला तेव्हां युधामन्यून सैन्यासह त्याजवर हल्ला केला आणि त्यानें मोठ्या धैर्यानें तत्काळ मात जलाल बाण त्याजवर टाकिले ! राजा, त्या समयी तो राजपुत्र चित्रसेन पायांखाली तुडविलेल्या सर्पाप्रमाणें उसळून माथारा वळला व त्यानें त्या पांचालवीरावर तीन व त्याच्या सारथ्यावर महा बाण सोडून त्यास विद्ध केले ! तेव्हां तो शूर युधामन्यु फारच चवताळला आणि त्यानें उत्तम नेम धरून एक सुपुंख, अणीदार व धार दिलेला जलाल बाण आकर्षण ओढून चित्रसेनावर टाकिला व त्याचें मस्तक उडविलें ! राजा, ह्याप्रमाणें चित्रसेन हा धारातीर्थी पडतांच त्याचा भ्राता कर्ण हा क्रोधाग्रस्त होऊन मोठ्या शौर्यानें पांडवीय सेनेवर हल्ला करून तिला उधळून लावूं लागला; पण इतक्यांत त्या अमितवीर्यावान् वीराला तत्काळ नकुलानें अडवून धरिलें !

राजा धृतराष्ट्रा, इकडे खुनशी दुःशासनाला भीमसेनानें तेंथेंच मारिलें आणि पुनः त्याच्या रुधिरानें ओंजळ भरून सर्व वीरांच्या समक्ष तो मोठ्यानें म्हणाला:—हे पुरुषार्थमा (दुःशासना) ! हें पहा तुझ्या नरड्याचें रक्त मी पीत आहे ! पुनः मोठ्या आनंदानें ‘ गायरे गाय ’ असें म्हण पाह ! अरे, त्या समयी ‘ गायरे गाय ’ असें म्हणून जे आम्हांपुढें नाचले, त्यांच्यापुढें आतां आम्ही तेच शब्द उच्चारून नाचत आहो ! नीचा दुःशासना, प्रमाणकोटीस माझे शयन, मला कालकूटाचें भोजन, कृष्णसर्पाकडून मला दंश, लाक्षाग्रहांत आमचा दाह, द्यूत करून आमचें राज्यहरण, आमचा वनवास,

द्रौपदीचें केशग्रहण, रणांत शस्त्रास्त्रांचे आम्हांवर प्रहार, स्वगृही आमचे हाल व विराटनगरींतल्या आमच्या नानाविध यातना, ह्या सर्वांना कारण वास्तविक तूंच आहो ! तुझ्याच सल्ल्यावरून शकुनि, दुर्योधन व कर्ण ह्यांनी ही सर्व मसलत उभारिली ! दुःशासना, तुझ्यासारख्या दुष्ट पुत्रांच्या मसलतीस अनुमोदन देऊन मूर्ख धृतराष्ट्रानें जें तुम्हांस उत्तेजन दिलें, त्यामुळेच आम्हांला बहुविध दुःखें भोगावी लागली व मुखाचा कधी लेशही प्राप्त झाला नाही ! राजा धृतराष्ट्रा, भीमसेन ह्याप्रमाणें उद्गार काढून नंतर अर्जुनासमिप आला व तेथें त्यानें फिरून तेच उद्गार मोठ्या आनंदानें कृष्णार्जुनांजवळ काढिले. राजा, त्या वेळी त्याचें सर्व शरीर रुधिरानें माखलें असून त्याच्या तोंडांतून रक्त थब-थबां भूमीवर गळत होतें ! तेव्हां तो शूर भीमसेन पुनः क्रोधाग्रस्त होऊन झणाला:—कृष्णार्जुनहो, दुःशासनाला उद्देशून रणांत मी जी प्रतिज्ञा केली होती, ती मी आज सिद्धीस नेली ! आतां मी ह्या रणभूमीवर दुसरा यज्ञपशु जो दुर्योधन त्यास वधीन आणि त्याचें मस्तक पायांखाली तुडवून सर्व कौरवांसमक्ष समाधान पावेन ! असो; राजा धृतराष्ट्रा, इतकें बोलून रुधिरानें माखलेला तो पांडुपुत्र भीमसेन मोठ्या आनंदानें गर्जूं लागला, तेव्हां जणू काय वृत्रासुराला वधून महात्मा इंद्राच गर्जत आहे असें सर्वांस भासलें !

## अध्याय चौऱ्यायशीवा.

—:—:—

### नकुलाचा पराजय.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, भीमसेनाच्या हस्ते दुःशासन मरण पावला, तेव्हां दुःखानें अगदी तळमळून जाऊन त्याचे महापराक्रमी व रणांतून पराङ्मुख न होणारे दहा

महारथ आते निपंगी, कवची, पाशी, दंडधार, धनुर्धर, अलोलुप, सह. पंड, वातेवग व मुवर्चम. हे घोर क्रोधरूप विषाणें मळाळत भीममेनावर भयंकर बाणवृष्टि करीत धावून आले. आणि त्यांनी त्यास बाणांनी झांकून मागे हटविले. तेव्हां तो भीम अतिशयित संतापला आणि क्रोधाने इंगळामारखे आरक्त नेत्र करून अंतकाप्रमाणे शोभू लागला ! नंतर, राजा, मुवर्णाची वाहुभूषणे धारण केलेल्या त्या दहा धात-राष्ट्रांवर भीममेनाने दहा मुवर्णपुंख महावेगवान् भल्ल बाण सोडिले आणि त्या सर्वांस यममदनी पाठविले; तेव्हा कर्णाच्या समक्ष तुझे सैन्य भयभीत होऊन पळून गेले ! अशा प्रकारे, राजा, अंतक ज्याप्रमाणे प्राण्याचा संहार करितो, त्याप्रमाणे भीमाने दैवतसैन्याचा संहार केला तेव्हा कर्ण देखील घाबरून गेला; व त्याची ती शूर मुद्रा भयाने काळवंडलेली अवलोकन करून रणशाली मद्रावीश शल्याने कालाम-अनुरूप असे भाषण केले.

शल्य म्हणाला:- कर्णा, भिऊ नको; असे भिणे तुझ्यामार्ग्याला उचित नाही. हे पहा भीममेनाच्या भयाने आले झालेले भूपाळ पळत मुटले आहेत; दुर्योधन तर आपल्या भ्रात्याच्या प्रणाने विव्दह होऊन मूर्च्छित पडला आहे, आणि महात्मा भीमसेन दुर्योधनाचे रक्त पिऊ लागलाच दुःखाने गागरून गेलेले इतर उर्वरित धार्तराष्ट्र व कृपप्रभृति वीर दुर्योधनाच्या भोव-नाथी जमून त्यांचे सात्वत करीत आहेत ! कर्णा, प्रस्तुत समर्थ पांडवांचे तेज फारच वाढले आहे; जणू काय आपली सात्य वस्तु आपल्याला प्राप्त झाली, असे ते मानीत आहेत. हे पहा अर्जुन आदिकरून शूर पांडुपुत्र युद्धा-करीतां तुझ्यावरच चालून येत आहेत. ह्यामाठी, कर्णा, ह्या समर्थी तू असा निर्वर्षी न होना आपले शस्त्राग्ने प्रकट करून मोठ्या शौर्याने

अर्जुनाला सामोरा जा. कर्णा. दुर्योधनाने सर्व भार तुझ्यावर टाकिला आहे; म्हणून. हे महा-बाहो, तू यथाशक्ति व यथाबल आपला कार्य-भाग मिद्धीस ने. बाबो, तू विजयी झालास तर तुझी दिगंत कीर्ति होईल; व पराजय पाव-लास तर तुला निश्चयाने स्वर्ग मिळेल ! हा पहा तुझा पुत्र वृषमेन तू मोहापन्न झालास असे पाहून मोठ्या क्रोधाने पांडवांवर चालून गेला ! राजा धृतराष्ट्रा. अमितवीरवान् शल्याचे हे भाषण श्रवण करून कर्णाने पुनः आपले मन सुस्थिर केले आणि पांडवांशी युद्ध करण्याचा दृढनिश्चय ठरविला ! राजा, इकडे क्रोधायमान झालेला वृषमेन शत्रुमेनेवर धावून गेला आणि अग्रभार्गी भीमसेन हा यमदंडाप्रमाणे गदा धारण करून तुझ्या सैन्याशी लढत होता त्याजवर त्याने हल्ला केला; पण इतक्यात संतप्त झालेल्या महाप्रतापी नकुलाने त्यास मार्गात अडवून पूर्वी जंभामुखला ठार मारण्यामाठी इंद्राने त्याशी योग युद्ध केले. तद्वत् त्या नकुलाने रणांग-णांत वीरश्रीने लढणाऱ्या वृषमेनावर बाणांचा भडिमार चालवून त्याशी योग युद्ध केले ! राजा, त्या समर्थी नकुलाने शूर बाण सोडून वृषमेनाचा रत्नमंचित ध्वज छेदिला आणि भल्ल बाण सोडून त्याने मुवर्णमंडित धनुष्य तोडिले ! तेव्हां अश्व-विद्यानिपुण वृषमेनाने तत्काळ दुसरे धनुष्य घेतले आणि नकुलवर दिव्य बाणांचा भडिमार चालविला ! राजा, त्या वेळी दान्यामार्गची बाण-वृष्टि करणारा तो कर्णपुत्र वृषमेन क्रोधाने इतका लाल झाला की, जणू काय घृताच्या आहुतीनी अग्नि घटाघट मडकत चालला आहे असे भामू लागले ! राजा, नंतर वृषमेनाने नकुलचे मुवर्णजालालकृत चारही वनायुज वेगवान् श्वेत अश्व ठार मारिले. आणि त्यामुळे तो पांडुपुत्र लगल्याच स्थानून खाली उतरला; व ज्यावर उत्तम रम्याच्या चांदिण्या बसविल्या आहेत

अशी ढाल व आकाशाप्रमाणें झळकणारें खड्ग धारण करून तो पक्ष्यामागवा अंतरिक्षांतून इकोडे तिकोडे झडपा घालें लागला ! राजा, त्या समर्थी विचित्र रीतींनी युद्ध करणाऱ्या त्या नकुलानें हां हां म्हणतां कौरवमेन्यांतले ग्थ, अश्व व गज हे खड्गप्रहारानी अश्वमेधांतल्या पशुंप्रमाणें ठार मारिले आणि महान् मंहार उडविला ! राजा, तेव्हा त्या एकट्या जयेच्छु पांडुतनयानें अनेक देशांहून आणिलेल्या दोन हजार युद्धप्रवीण व उत्तम चंदनाचीं उटी धारण केलेल्या सत्यप्रतिज्ञ वीरांना बघिले ! राजा, ते पाहून वृषसेनानें त्या नकुलावर चौहोंकडून एकसारखा बाणांचा भडिमार केला आणि त्यांच्या योगें तो पांडुपुत्र विद्ध होत्माता अतिशय चवताळला व आपल्याला भीमसेनाचें पाठ-बळ आहे हें मनांत आणून त्या घोर रणकंदनांत अतिशय प्रताप गाजवें लागला ! राजा, तेव्हां कर्णपुत्रानें नकुल हा कौरवांचे अनेक नग, अश्व, गज व रथ ह्यांचा विस्वम उडवीत अमतां त्याजवर मोठ्या क्रोधानें अठग बाण टाकून त्यास अत्यंत विद्ध केलें ! राजा, त्या समर्थी नकुल हा पुनः अतिशय शोभला; व आमिषाच्या लोभानें श्येन पक्षी पंख पसरून जशी मोठ्या आवेशानें उडी घालितो, तशी त्यानें कर्णात्मजावर धावून जाऊन एकदम उडी घातली ! राजा, त्या वेळी वृषमेनानें उलट त्या महापराक्रमी नकुलावर जलाल बाणांचा वर्षाव गेला; परंतु नकुलानें वृषमेनाचे ते सर्व बाणममुदाय फुटत घालविले व तो खड्गचर्ममहित नित्रविचित्र रीतींनी रणांगणांत मंचार करूं लागला ! राजा, नंतर त्या योग मग्नमात प्रथम कर्णपुत्रानें नकुलावर भयकर शरवृष्टि करून त्याच्या हातांतलें महत्वात्कारांनी युक्त अंमं चर्म तत्काळ छेदिलें आणि मग आणखी महा निशित बाण जोरानें टाकून त्याच्या हातांतलें तें

तीक्ष्ण धारेचें, प्रचंड भार सोसणारें शत्रूंचा अंत करणारें, मर्षामागवें प्राणघातकी व अत्यंत घोर अंमं विकोश व पोलादी खड्ग, तो आवेशानें परजीत अमतां, तोडून त्याचें वक्षस्थळ वेदीप्यमान तीक्ष्ण बाणांनी अतिशय विद्ध केलें ! राजा, ह्याप्रमाणें वृषमेनानें इतर योद्ध्यांच्या हातून न घडणारें व थोरांम अत्यंत मान्य अंमं दारुण कर्म रणांत करून दाखविलें, तेव्हां बाणप्रहारांनी विद्ध झालेला तो महात्मा अश्वहीन नकुल त्वरा करून भीमसेनाच्या रथांत अर्जुनाच्या समक्ष—सिंह जमा पर्वताच्या शिखरावर उडी मारून चढतो तमा चढला; आणि मग तें पाहून क्षुब्ध झालेल्या वृषमेनानें एकाच रथांत अधिष्ठित असलेल्या त्या भीमसेन-नकुलावर त्याचें विदारण करण्याच्या उद्देशानें जोराची शरवृष्टि आरंभिली ! राजा, ह्याप्रमाणें नकुलाचा रथ भस्म करून वृषमेनानें बाणवर्षावानें त्याचें गड्ड छेदून टाकिलें; तेव्हां बाकीचे प्रधान कौरववीर एकत्र होऊन नकुलावर धावून आले व तो भीमसेनाच्या रथावर चढला असें पाहून त्यांनी त्या दोघांही पांडववीरावर अतिशय निकरानें बाणांचा भडिमार केला ! राजा, मग त्या कौरव-वीरांचें व भीमार्जुनांचें तुंबळ युद्ध सुरू झालें ! अशीच आह्वान करून त्यास वृतादिकांच्या अभिधारणें प्रज्वलित करानें, त्याप्रमाणेंच जणू काय त्या कौरवयोद्ध्यांनी भीमार्जुनांचें आह्वान करून शरवृष्टीनें त्यांस प्रज्वलित केलें होतें; ह्यास्तव मर्षावताली कौरवमेनेचा गगडा पाहून त्या मेनेवर व वृषमेनावर त्या क्षुब्ध झालेल्या भीमार्जुनांनी बाणांचा अतिशय भडिमार चालविला ! इतक्यांत अर्जुनाच्या रथावर ध्वजप्रदेशी मारुति अधिष्ठित होता, तो अर्जुनाला म्हणाला, 'अर्जुना, नकुलाची काय अवस्था झाली आहे ती पाहिलीसना' हा कर्णपुत्र वृषमेन आपल्याला अतिशय पीडा करीत आहे; ह्यामाठी तूं

त्याजवर चालून जा !' राजा, नंतर मारुतीचें तें भाषण श्रवण करून अर्जुनानें तत्काळ आपला रथ भीमसेनाच्या रथाजवळ नेला; व ह्याप्रमाणें अर्जुन हा आपल्या सन्निध प्राप्त झाला असे पाहून नकुलानें त्याम म्हटलें:—' अर्जुना, ह्या कर्णपुत्र वृषसेनाचा त्वरित नाश कर !' राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें एकाएकी रणांगणांत नकुलानें अर्जुनाला असें ममक्ष म्हटलें तेव्हां अर्जुनानें कृष्णाला आपला रथ एकदम वपाट्यानें वृषसेनाकडे चालव म्हणून सांगितलें !

### अध्याय पंचायशीवा.

—:—

#### संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर थोड्याच वेळांत नकुलाच्या पराजयाचें वर्तमान पांडवमेन्यांत पसरलें. नकुल हा रथहीन झाला, त्याचें धनुष्य व खड्ग ही भंडा झाली, शत्रूंनी बाणांचा भडिमार करून त्याम जर्जर केलें. व अखेरीस वृषसेनाच्या अस्त्रप्रभावापुढें त्याला हातच टेंकावे लागले, असें जेव्हां पांडवांकडील प्रचळ योद्ध्यांस समजलें, तेव्हां त्यांची फारच ल्हावग उडाली; व तत्काळ द्रुपदराजाचे पांच पुत्र, मात्यकि व द्रौपदीचे पांच पुत्र असे एकंदर अकरा महान् महान् योद्धे शत्रूंना टक्कर देऊन त्यांचा नाश करण्याकरितां, ज्यांच्यावरील उत्तम सागथि भरभाव चाललेल्या अश्वानें नियंत्रण करीत आहेत. ज्यांच्यावरील ध्वजपताका वाऱ्यानें फडाडत आहेत, आणि ज्यांच्या दणदणाटाचा प्रचंड ध्वनि होत आहे, अशा रथांतून शस्त्रास्त्रांमह फार त्वरेनें वृषसेनावर धावून गेले; आणि त्यांनीं भयंकर सर्पाप्रमाणें प्राणघातकी बाणांचा एकसारखा भडिमार करून तुड्या सैन्यांतील चतुर्ग वीरांचा संहार आरंभिला ! राजा, तेव्हां कौरवांकडील

प्रमुख रथी कृप, हार्दिक्य, अश्वत्थामा, दुर्योधन, शकुनिमुत्त, वृक, काथ व देवावृध हे हत्ती किंवा मेघ ह्यांच्याप्रमाणें दणदणाट करणाऱ्या रथांतून बाणांची वीर वृष्टि करीत त्यांजवर एकदम चालून गेले आणि त्यांनीं पांडवांच्या त्या एकादश वीरांवर अत्यंत जलाल बाण सोडून त्यांस जागच्या जागीं गिळिलें ! राजा, तें पाहून पांडवांकडील कुलिंद योद्ध्यांनी नवीन मेघांप्रमाणें श्यामवर्ण व गिरिशिखरांप्रमाणें प्रचंड असें आपले महावेगवान् गज कौरवयोद्ध्यांवर घातले; आणि मग, जे हिमालय पर्वतावर वाढलेले, ज्यांवरील शस्त्रास्त्रांची व इतर सर्व व्यवस्था उत्तम होती, ज्यांवर युद्धार्थ आतुर झालेले रणकुशल योद्धे अधिष्ठित होते व ज्यांवर सुवर्णाची जाळी पसरली होती असे ते मदोन्मत्त हत्ती मविद्युत् मेघांप्रमाणें शोभूं लागले ! राजा, त्या समयीं कुलिंदराजाच्या पुत्रानें प्रथम दहा पोलादी बाण सोडून कृप, त्याचा सारथि व त्याचे अश्व ह्यांना विंधिले; परंतु नंतर त्याजवर कृपानें भयंकर बाणांचा भडिमार करून त्याम हत केलें व तो लागलाच हत्तीमहवर्तमान रणभूमीवर पडला ! राजा, मग कुलिंदपुत्राचा धाकटा भाऊ सूर्यकिरणांप्रमाणें देदीप्यमान् अशा पोलादी तोमरांचा भडिमार करीत कृपाच्या रथावर चालून गेला आणि तो मोठ्यानें गर्जना करून कृपाशी लढत असतां गांधारपतीनें त्याचें शिर उडविलें ! राजा, नंतर मोठें तुंचळ युद्ध जुपलें व त्यांत कुलिंदांचा नाश झाला. तेव्हां तुड्या मेन्यांतील महारथ मोठ्या आनंदानें मोठमोठ्यानें शंख वाजवूं लागले व ते मधनुष्य वीर बाणांचा वर्षाव करीत शत्रूंवर चालून गेले ! राजा, तेव्हां पुनः कौरव व पांडुसैन्य ह्यांचें अत्यंत निकराचें युद्ध सुरू झाले व त्यांत शर, खड्ग, शक्ति, ऋष्टि, गदा व कुन्हाडी ह्यांचे दोन्ही दळांतील वीरांनीं एकमे-

कांवर प्रहार चालविल्यामुळे अश्व, गज व नर ह्यांचा भयंकर प्राणनाश प्रवर्तला. आणि दोन्ही चतुरंग दळे परस्परांच्या हस्ते भूतळावर मरून पडू लागली आणि गहिले माहिले मैत्रिक दशदिशांम पळून गेले. तेव्हां जण काय प्रचंड वाऱ्याने विद्युल्लतेने युक्त अममघममुदायच भश करून दशदिशांम उधळून लाविले. अमं सर्वांम वाटले ! राजा, नंतर भोजाधिप कृतवर्म्याने शतानिकाच्या अनेक महागजांवर, रथांवर, अथांवर व पायदळावर हल्ला केल्या आणि त्याने त्यांवर बाणांचा भयंकर वर्षाव आरंभिला; तेव्हां ते गतप्राण होऊन पडापट धरणीतलावर, पतन पावले ! राजा, इतक्यांत अश्वत्थाम्याने सर्व आयुधे व ध्वजपताका ह्यांनी युक्त अशा तीन सव्हीर हत्तींवर प्रचंड शस्त्रवृष्टि केली; आणि त्यांम ठार करून, इंद्र जमा अग्निपातांने प्रचंड गिरी भूतलावर पाडितो तसे त्याने त्या तीनही महागजांना धारातीर्थी पाडिले ! राजा, तेव्हां कुलिंदपुत्राचा दुसरा भाऊ फारच क्षोभला व त्याने तुड्या पुत्राच्या वक्षस्थळी जलाल बाणांचा भडिमार केला; पण तुड्या पुत्रांने लागलाच उलट तीक्ष्ण शरांचा वर्षाव करून त्याचे शरीर व द्विप ह्यांम वधिले ! राजा, तेव्हां तो प्रचंड द्विप व त्यावरील तो राजपुत्र ह्यांच्या देहांतून चोहोंकडे—उयाप्रमाणे पर्जन्यकाळच्या आरंभी वज्रांने भश झालेल्या गैरिक ( कावेच्या ) पर्वतांतून आरक्त उदकाचे प्रवाह चालतात तसे—रक्ताचे प्रवाह चालू झाले ! राजा, इतक्यांत कुलिंदपुत्र दुसऱ्या हत्तीवर चढला आणि मग तो हत्ती काथ, त्याचा मारथि, त्याचे अश्व व रथ ह्यांजवर तुटून पडला ! परंतु नितक्यांत काथाने त्याजवर भयंकर बाणवर्षाव केला व त्यामुळे वज्रहत पर्वताप्रमाणे तो महान् गज आपल्या अधिपतीसह रणांगणांत पतन पावला ! पण राजा, इतक्यांत पर्वतावर वाढलेल्या दुसऱ्या

एका गजारूढ वीराने रथांत अभिष्ठित असलेल्या दुर्जय काथाधिपतीवर शरवर्षाव आरंभिला आणि मग त्यामुळे तो काथराज अश्व, मारथि, शगमन व ध्वज ह्यांमहित विद्ध होऊन सोमाट्याच्या वाऱ्याने भश केलेल्या प्रचंड वृक्षाप्रमाणे धाडकन् म्वाली पडला ! राजा, त्या ममयी त्या गजारूढ पार्वतीय वीरावर वक्राने बारा बाण टाकून त्यास अतिशयित विधिले; परंतु त्या पार्वतीय वीराने आपला महान् गज उलट त्याजवर घालून त्याच्या चार पायांमाली त्याला, त्याच्या अश्वाना व रथाला तुडवून त्या सर्वांचा चुराडा उडविला ! राजा, तेव्हां त्या प्रचंड हत्तीवर व त्याजवरील म्हागर व भुसुताने भयंकर बाणांचा भडिमार केला व त्याम भूतलावर पाडिले; पण इतक्यांत त्या देवावृध-पुत्राला ( बभ्रुसुताला ) म्हादेवाच्या पुत्रांने बाणवृष्टीने आनं करून म्वाली पाडिले; तेव्हां पुनः त्या पार्वतीय कुलिंदज वीराने दंत, शुडा, पाद इत्यादिकांनी प्रचळ येद्ध्यांचा नाश करण्याम योग्य अशा त्या आपल्या हत्तीला मोठ्या वेगाने शकुनींवर घालून त्याम पीडित केले; परंतु शकुनीने नितक्यांत त्याचे मस्तक छेदिले ! राजा, नंतर शतानिकांने तुड्या सैन्यांतील मोठमोठाले गज, हय, रथ व पदाति ह्यांवर मोठ्या वेगाने हल्ला केला; आणि मग गरुडाच्या पंखांनी वादळ उत्पन्न केल्यावर सर्पांचा जमा भयंकर मंहार उडतो, तसा तुड्या सैन्यांत भयंकर संहार वडून तुड्या सैन्याचे तुकडे तुकडे होऊन ते सर्व रणांगणांत पडले ! राजा, तेव्हां तुड्या पक्षाच्या कलिंगपुत्रांने हंमत हंसत नकुलाच्या पुत्रावर बहुत तीक्ष्ण शरांचा मारा करून त्याम विद्ध केले, परंतु नितक्यांत नाकुलीने मोठ्या क्रोधाने क्षुर बाण सोडून त्या कलिंगपुत्रांचे मुख-कमल छेदिले !

### वृषमेनाचा वध.

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर कर्णाच्या पुत्रांने तीन पोळादी बाण शतानिकावर, तीन अर्जुनावर, तीन भीमावर, सात नकुलवर व बाण जनार्दनावर सोडिले; आणि त्या समयी त्याचें तें अमानुष कर्म अवलोकन करून कोरवाम मोठा आनंद झाला व ते त्याचे धन्यवाद गाऊं लागले ! परंतु, राजा, तेंथंही धनंजयाच्या पराक्रम जाणणारे जे कित्येक दूर-दृष्टि योद्धे होते त्यांचा समज निराळाच झाला व त्यांनी 'अरेरे, आतां हा स्वचिन होमकुंडांत पडला' असेंच मानिलें ! राजा, नंतर शत्रुसंहारक पुरुषश्रेष्ठ अर्जुन ह्यानें सर्व सैन्या-मध्ये माद्रीभुत नकुल हा अवलोकन झालेला अवलोकन करून आणि कृष्ण हा बाणप्रहारांनीं अतिशय वायाळ झाला आहे असे पाहून कर्णाच्या अग्रभागी वृषमेन उभा होता त्याज-वर सहस्रावधि बाणांचा भडिमार करित एकदम चाल केली; पण त्या वेळी तो महारथ वीर-शिरोमणि मोठ्या त्वेषानें आपल्यावर पावून येत आहे असें ध्यानांत आणून कर्णपुत्र वृषमेन-पूर्वीं नमुचि जमा महेंद्रावर तुटून पडला तसा-त्या पांडुपुत्रावर तुटून पडला; आणि त्यानें रणांगणांत अर्जुनावर एक निशित बाण टाकून त्यास विधिलें व नमुचीनें इंद्रास विद्ध केल्यावर जशी भयंकर गर्जना केली, तशी त्यानें त्या समयी भयंकर गर्जना केली ! राजा, नंतर पुनः वृषमेनानें अर्जुनाच्या डाव्या खांद्यावर उग्र बाणांचा भडिमार करून कृष्णावर नऊ बाण सोडिले आणि फिरून दहा बाणांनीं अर्जुनाला विधिलें ! राजा, तेव्हां अर्जुनाला कांहीसा क्रोध आला आणि त्यानें वृषमेनाला ठार मारण्याचा निश्चय ठरविला ! मग त्यानें धनधोर रणकंदनांत संतापानें कपाळाला तीन आंठ्या पडतील इतक्या भुंवया चढविल्या आणि

कर्णमुताला वधण्याच्या हेतूनें समरांगणांत त्या-वर जळाल बाणांचा वर्षाव आरंभिला ! राजा, त्या वेळीं प्रत्यक्ष यमाचाही संहार करण्यास समर्थ अशा त्या अर्जुनानें आरक्त नेत्र करून मोठ्यानें हंसत हंसत दुर्ध्याधन आणि अश्वत्थामा आदि-करून इतर सर्व योद्धे ह्यांच्या समक्ष कर्णाला निघून मांगितलें—कर्णा, आज तुझ्या डोळ्यां-देखत मी रणांगणांत ह्या पराकामी वृषमेनाला निशित बाणांच्या प्रहारांनीं यमसदृशी पाठविलों ! हे मृतपुत्रा, तुझीं सर्वांनीं माझ्या पुत्राला विधिलेंही तुझीं फार निघ गोष्ट केली असें लोक बोल-तात; कारण तो वीर त्या समयी एकटा अमून त्याच्या समीप मी किंवा दुसरा कोणी वीर त्याच्या आश्रयासाठीं तेंथें नव्हता ! कर्णा, अशा प्रकारचें दुर्गचरण करण्यास मी सिद्ध नाही. मी तुम्हा सर्वांच्या देखत ह्या वृषमेनाला वधीत आहे ! ह्याकरितां, रथ्यांना, आतां तुझीं त्याचा बचाव करा. मूर्खी कर्णा, प्रस्तुत समयी प्रथम मी ह्या वृषमेनाला ठार मारितां आणि मग तुला ठार मारीन ! कर्णा, सर्व कळहानें आदिकारण तूच अमून तुला दुर्ध्याधनानें आश्रय दिल्यामुळे तूं फार मदोन्मत्त झाला आहेस; ह्यासाठीं आज रणांत मोठ्या आवेशानें मी तुला ठार मारीन; व ज्या अधमाच्या अविचारानें हा मोठा भयंकर प्राणिक्षय घडला त्या दुर्ध्याधनाला भीममेन ठार मारील ! राजा धृतराष्ट्रा, असें म्हणून अर्जुनानें आपल्या धनुष्याच्या प्रत्यंचे-वरून हात फिरविला आणि रणांगणांत वृष-मेनावर नेम धरून त्यास वधण्याकरितां एक-सारखी शरवृष्टि चालू केली ! राजा, त्या समयी अर्जुनानें प्रथम निःशंकपणें दहा बाण वृषमेनाच्या मर्मस्थळीं टाकिले आणि मग आणखी चार जळाल शर बाण सोडून त्याचें धनुष्य, बाहु व मस्तक हीं छेदिली ! राजा, त्या-समयी, पर्वताच्या शिखरावरून वाऱ्यानें भस



झालेला प्रचंड सुपुष्पित शालवृक्ष जसा खाली  
धाडकन् कोसळता, तसा तो अर्जुनाच्या शरांनी  
छिन्न झालेला बाहुहीन व शीर्षहीन वृषमेत  
रथांतून धरणीतलावर धाडकन् कोसळला !  
राजा. ह्याप्रमाणे गणांत आपल्या ममक्ष आपल्या  
पुत्राचा अर्जुनाच्या हस्ते वध झाला असे पाहून  
कर्णाला अनावर क्रोध चढला आणि त्याने एक-  
दम आपल्या रथांतून कृष्णार्जुनांवर हल्ला केल्या !

### अध्याय शायशीवा.

—:०:—

#### श्रीकृष्णाचें उत्तेजनपर भाषण.

संजय सांगतो:—धृतराष्ट्रा, खवळलेल्या समु-  
द्राने तीरावर चालून जावे तद्वत् तो देवांना मुद्धां  
दुर्निवार्य असा योद्धा कर्ण गर्जना करीत आप-  
णावर चालून येत आहे असे पाहून पुरुषोत्तम  
दाशार्हा कृष्ण मोठ्याने हंसून अर्जुनाला म्हणाला,  
“ अर्जुना, ज्यावर शल्य मार्या आहे व ज्याला  
श्वेत अश्व जोडिले आहेत, असा हा कर्णाचा रथ  
समीप आला पहा. धनंजया, आतां तुला  
कोणाशी युद्ध करावयाचें आहे ह्याचें नीट मनन  
कर आणि चित्त मुग्धिर ठेव. अर्जुना. कर्णा-  
च्या रथावर सर्व प्रकारची सामग्री कशी सज्ज  
आहे ती अवलोकन कर. हा पहा श्वेत अश्व  
जोडिलेल्या ह्या रथावर कर्ण उभा आहे. ह्या  
रथावर नानाविध ध्वजपताका कशा फडकत  
आहेत पहा. ह्यावर वागण्याच्या किती तरी  
माळा लोंबत आहेत ! ह्यास जोडिलेले हे श्वेत  
अश्व इतक्या वेगाने हा रथ वाहून आणीत  
आहेत की, जणू काय आकाशांतून विमानच  
चालत आहे ! तमाच हा महात्म्या, कर्णाचा  
नागकशांकित ध्वज पहा. जणू काय हा आका-  
शांत पडलेल्या इंद्रधनुष्याप्रमाणे गोमंत आहे !  
हा पहा दुर्योधनाचें प्रिय करण्याची इच्छा कर-  
णारा कर्ण आपल्या समीप येऊन ठेपला ! हा

पहा पर्जन्यवारांप्रमाणे शरधारा आपल्यावर  
सोडीत आहे ! हा पहा मद्राधीश शल्य रथा-  
च्या अग्रभागीं अधिष्ठित आहे ! हे पहा ह्याने  
अतुलप्रतापी राधेयाच्या अध्यांचे नियमन चाल-  
विलें आहे ! हा पहा दुंदुभीचा व शंखाचा भयं-  
कर ध्वनि ऐकू येऊ लागला ! अर्जुना. चोहोंकडे  
बहुविध मिहर्गजना होत आहेत. त्या ऐकि-  
ल्यास काय ? हा पहा सर्व ध्वनीहूनही अधिक  
असा कर्णाच्या विजय धनुष्याच्या प्रत्यंचेचा  
ध्वनि स्पष्ट ऐकू येत आहे. हे पहा पांचाल  
महाराथ आपआपल्या सैन्यांसह फाटाफूट होऊन  
पळ लागले ! महान् अरण्यांत चवताळलेल्या  
मिहाला पाहून मृग जमे धावत सुटतात, तसे  
हे धावत सुटले पहा. ह्यास्तव, अर्जुना, आतां  
किंचित् लावून उपयोग नाही. तुझ्या अंगां जें  
कांही सामर्थ्य अमेळतें प्रकट करून तूं ह्याला  
मारच ! तुझ्याशिवाय दुसऱ्या कोणाला कर्णा-  
ची शरवृष्टि मोमवणार नाही. त्याच्याशी  
लढण्यास एकदा तूंच मात्र समर्थ आहेस.  
अर्जुना. सुर, असुर व गंधर्व ह्यांसहित स्थावर-  
जंगम निव्ही लोक जरी तुझ्याशी लढण्यास सिद्ध  
झाले तरी त्या मनीस तूं जिकल्याशिवाय  
राहाणार नाहीस. हे मला माहीत आहे. अर्जुना,  
ज्या भयंकर, उग्र व महात्म्या व्यंक्क कपर्दी  
शंकराकडे लोकाना नुसती मान वर करूनही  
पाहावत नाही—मग त्याशी युद्ध करण्याची  
गोष्ट तर एकीकडेच राहिली ! त्या सर्व प्राण्यांचें  
कल्याण करणाऱ्या प्रत्यक्ष महादेवाशी युद्ध  
करून तूं त्याचें आराधन केलेंस, आणि त्यामुळे  
सर्व देवांनी तुला वर दिले, तेव्हां तुझी योग्यता  
किती वर्णावी ? अर्जुना. इंद्रानें जसे नमुचीला  
वधिलें, तसे तूं आज त्या देवाधिदेव त्रिशूल-  
धारी शंकराच्या प्रमादने कर्णाला वध पाया,  
सदा तुझे कल्याण होवो आणि युद्धांत तुला  
जय मिळो ! ”

अर्जुनानें म्हटलें:-कृष्णा. मला जय खास मिळेल; जयविषयी मला यत्किंचित् वानवा नाही; कारण, सर्व लोकांमध्ये श्रेष्ठ असा जो तू त्या युद्धी प्रसन्नता मी जोटिली आहे. हे महाराथा कृष्णा, आतां घोडे चालव. आज हा अर्जुन समरांत कर्णाला वधिल्याशिवाय खचित माघारा येणार नाही. गोविंदा, आज माझ्या शरांनी कर्णाच्या देहाचे तुकडे तुकडे झालेले तुला दिसतील किंवा कर्णानें मला वधिलें असें तुला आढळेल ! कृष्णा, सर्व त्रैलोक्याम घात करून मोडणारें असें हें वार युद्ध मुरू झालें म्हणून समज. आतां ह्या युद्धाच वधन पृथ्वी आहे तों लोक सांगत राहातील !

संजय सांगतो:-राजा, ज्याला हे श म्हणून कवीही माहीत नाहीत अशा त्या कृष्णाला अर्जुन ह्याप्रमाणें म्हणाला; आणि मग, एका हत्तीनें दुसऱ्या हत्तीवर जमें चालून जावें तसा तो अर्जुन रथातून कर्णावर चालून गेला ! त्या वेळीं अर्जुनानें कृष्णाला ' लवकर घोडे चालव, उशीर होऊं लागला ' असा फार नेट लाविला; आणि मग कृष्णानें विजयप्राप्त्यर्थ आशीर्वाद देऊन त्याच्या इच्छेनुसार मनोवेगानें घोडे चालविले व क्षणांत तो रथ कर्णाच्या अग्रभागीं येऊन उभा राहिला !

## अध्याय सत्यायशीर्वा.

—:०:—

### कर्णार्जुनसमागम.

संजय सांगतो:-इकडे, राजा, आपला पुत्र वृषमेन अर्जुनाच्या हस्ते मरण पावला असे पाहून कर्णाला मनस्वी धाव आला व त्या बदल अर्जुनाचा गूढ ध्यावा म्हणून तो अत्यंत तळमळूं लागला ! नंतर, पुत्रशोकामुळें त्याच्या नेत्रांतून अश्रुप्रवाह वहात होते ते त्यानें पुमिले; आणि लागलाच तो शूर वीर रथांतून अर्जुना-

बरोबर युद्ध करण्याकरितां त्याच्या अभिमुख प्राप्त आला व त्यानें क्रोधानें आरक्त नेत्र करून त्याम युद्धार्थ आव्हान केलें ! राजा, मग त्या दोन्ही योद्ध्यांचे ते मूर्धन्य व व्याघ्रचर्मा-वगुंडित महान् रथ त्या स्थळीं एकमेकांशीं भिडले, तेव्हां जणू काय ते दोन आदित्यच एकत्र झाले आहेत असें सर्वांस वाटलें ! त्या वेळीं राजा, ते दोघेही महात्मे श्वेताश्च शत्रुसंहारक दिव्य वीर अंतरिक्षांत एकत्र झालेल्या सूर्यचंद्रांप्रमाणें शोभूं लागले व त्यांना पाहून सर्वे मान्य अगदीं विस्मित झाली ! तेव्हां त्रैलोक्य जिकिण्यासाठीं इंद्र व विरोचनपुत्र बलि हे एकमेकांशीं मोठ्या दक्षतेनें झगडत आहेत असें भासूं लागलें ! ते दोन्ही रथ एकमेकांवर उड्या घालीत असून त्यांच्या वधवघणाटांन, प्रत्यंचांच्या टणत्कारानें व तलत्राणावरील आघातध्वनीनें आणि त्याप्रमाणेच वाणांच्या सणसणाटांन व वीरांच्या सिंहगर्जनांनीं अंतरिक्ष व्याप्त झालेले पाहून व तसेच त्यांचे ध्वज परम्परांशीं अगदीं भिडले असें अवलोकन करून भूपाळांना मोठा चमत्कार वाटला ! राजा, कर्णाच्या ध्वजावरील हत्तीचा सागळदंड व अर्जुनाच्या ध्वजावरील मारुति ही जेव्हां एकमेकांवर जणू झडपा घालीत आहेत असें पुनःपुनः आढळूं लागलें. तेव्हां त्या दोन्ही रथांची ती विलक्षण लगट झालेली अवलोकन करून सर्वे पार्थिव सिंहनाद करून दोन्ही धनुर्धरांचे एकमारवे धन्यवाद गाऊं लागले ! राजा, त्या समयी त्या दोन्ही वीरांचें द्वैरथयुद्ध पाहून महत्वावधि योद्ध्यांनीं दंड ठोकले व वस्त्रे फडकाविली ! त्यावेळीं कर्णाला उत्तेजन देण्याकरितां कौरवांनीं नोहोकरडे वाद्य-घोष मुरू केले व शंग फुंकिले; आणि इकडे धनंजयाला वीरश्री चट्पयाकरितां पांडवांनीं रणवाद्ये व शंग ह्यांच्या शब्दांनीं दशदिशा दुमटमून मोडिल्या ! सारांश, राजा, ते कर्णार्जुन

एकमेकांशी भुंजत अमतां शूरांचे बाहुध्वनि. मिहगर्जना. वाद्यांचे घोष, इत्यादिकांनी जिकडे निकडे मनस्वीच दणदणाट होऊन गेला ! राजा. कर्णाजिनांचे काय वर्णन करवें ? ग्यांत अधिष्ठित असलेल्या त्या दोंवाही नरवर महारथांच्या हातांत प्रचंड धनुष्ये अमून त्यांच्या ग्यांत शरशक्ति, इतर आयुधे व श्वज ही होती; त्यांच्या अंगांत चिलखते अमून कमरेम खड्डे होती; त्यांजपाशी दिव्य शंख अमून उत्कृष्ट बाणभाने होते; त्यांच्या रथांना श्वेत हय अमून ते दोघेही वीर अत्यंत देववर्ण होते; त्यांच्या शरीरांवर रक्तचंदनाची उठी अमून ते दोघेही माजलेल्या वृषभांप्रमाणे धृंद दिप्त होते; त्यांच्या हातांतली धनुष्ये विद्युल्लतेनें महिन अशा इद्र-धनुष्यांप्रमाणे झळळत अमून नानाविध शस्त्र-संपत्तीनें ते लढत होते; त्यांच्या मस्तकावर चामरें झळकत अमून पार्श्वभागी त्यजनवायु चालला होता; त्यांच्यावर श्वेत छत्रे गोमन अमून त्यांच्या ग्यांवर शल्य व कृष्ण हे त्यांचे मास्थ्य करीत होते; त्या दोंवांही वीरांची स्वरूपे समान अमून त्यांचे खांद्ये मिहामारगे भरदार होते; त्यांचे बाहु दीर्घ अमून त्या दोंवांनीही आरक्त नेत्र केले होते; त्यांच्या गळ्यांत मुवर्णांचे हार विलमत अमून त्यांची छाती भरदार होती; ते दोघेही अत्यंत बलवान् अमून एकमेकांना वधण्यासाठी अटत होते; ते परस्पराना जिकण्याम उद्युक्त झाले अमून गोठघांतल्या मद्रोन्मत्त बैलांप्रमाणे एकमेकांवर उसळ्या घेत होते; ते दोघेही पर्वताप्रमाणे भव्य अमून मद गाळणाऱ्या हत्तीप्रमाणे क्षुब्ध झाले होते; ते सर्पांच्या पोरांप्रमाणे चपळ अमून यमाप्रमाणे भयंकर होते; त्यांच्या ठिकाणी सूर्यचंद्राप्रमाणे कांति अमून रद्रवृत्रांप्रमाणे ते खवळून जाऊन भुंजत होते; महा-ग्रहांप्रमाणे ते चवताळलेले अमून जणू त्राय

जगाच्या नाशार्थ उद्युक्त झाले होते; ते दोघेही वीर देवांश अमून त्यांचे बल वरून देवांप्रमाणेच होते; ते दोघेही योद्धे महाप्रतापी अमून समरांगणांत नानाविध शस्त्रे धागण करून मोठ्या वीरश्रानें लढत होते व जणू काय ते सूर्यचंद्रच यदच्छेनें युद्धाम प्रवृत्त झाले होते ! राजा, ते दोघेही व्याघ्रतुल्य याद्धे एकमेकांशी लगट करून झगडत आहेत असे जेव्हां तुझ्या मैनिकांनी पाहिले. तेव्हां त्यांना अतिशय आनंद झाला; परंतु जणू कोणाला मिळेल हे कोणाला देखील सांगता येईना व सर्वच संशयांत पडले ! ते दोघेही वीर उत्कृष्ट आयुधे धारण करून रणांत अगदी पराकाष्ठेचा पराक्रम करीत आहेत. दोघेही बाहुशब्दानें सर्व अनराल व्यापीत आहेत, दोंवांचाही प्रताप व सामर्थ्य सर्वाम विध्रुत आहे, दोघेही समरभूमीवर शस्त्र व इंद्र ह्यांप्रमाणे विलक्षण युद्धकौशल्य व्यक्त करीत आहेत. दोघेही महत्त्वाजुनांप्रमाणे किंवा दाश-रथि रामांप्रमाणे अपूर्व बल दाखवीत आहेत, आणि दोघेही शंकरांप्रमाणे किंवा अमोववीर्य विष्णूंप्रमाणे मोठ्या आवेशानें भुंजत आहेत, असे जेव्हां भिद्धचारणाच्या समुदायांनी पाहिले. तेव्हां त्यांना अतिशय विस्मय वाटला ! नंतर, राजा, तुझे पुत्र आपआपल्या मन्यांसह वर्तमान तत्काळ रणाम शोभविणाऱ्या महात्म्या कर्णाच्या सभोवती जमले; आणि त्यांप्रमाणेच धृष्ट-द्युम्नादिक पांडवीय वीर त्या लोकोत्तर अर्जुनाच्या आममंताद्वागी गराडा घालून उभे राहिले ! त्या समर्थ कौरवपांडव हे आपआपल्या तर्फे कर्णाजिनांस डरईस घालून जुगारच खेळत होते ! कौरवांनी रणांत कर्णाला पणाम लाविले होते ! व पांडवांनी अर्जुनाला लाविले होते; आणि ती दोघेही दळे त्या द्यूतपरिपदेचे सभा-सद बनून त्या द्यूतांत कोण हरेत हे पाहाण्यास भिद्ध झाल्ये होती ! राजा. त्या दोंवां वीरां

पैकी कोणी तरी हरणार व कोणी तरी जिंकणार, हें अगदी निश्चित होतें; तरी त्यांनी जो द्यूतसंग्राम चालविला होता, त्यावरून अमुक-च विजयी होईल हें कांही सांगतां येण्यासारखें नव्हतें ! अशा प्रकारें ते कर्णार्जुन मोठ्या त्वेषानें लढून आपला दिव्य प्रताप गाजवीत होते, एकमेकांना ठार मारण्याकरितां एकमेकांवर चव-ताळून उड्या घालीत होते, आणि जणू काय इंद्रवृत्तांप्रमाणें परस्परांचे प्राण घेण्यास उद्युक्त झाले असून. भयंकर रूप धारण करणाऱ्या प्रचंड धूमकेतूसारखे एकमेकांशी झगडत होते. राजा, त्या समर्थी अंतरिक्षामध्ये जे प्राणी युद्धप्रेक्षणार्थ जमले होते, त्यांच्यांत कर्णार्जुनां-संबंधानें मोठा वादविवाद चालला होता; त्यांत कोणी कर्णाला नांवें ठेवीत होते व कोणी अर्जुनाला नांवें ठेवीत होते; आणि कोणी कर्णाची प्रशंसा करीत होते व कोणी अर्जुनाची प्रशंसा करीत होते. सर्वांनी आपापसांत जी कांहीं चर्चा चालविली होती, तीवरून त्यांचें सर्वांचें ऐक-मत्य असें मुळीच दिसलें नाही. देव, दानव, गंधर्व, पिशाच, उरग व राक्षस ह्यांनी कर्णार्जुनांच्या युद्धाविषयी आपसांत एकमेकांशी विरुद्ध असे पक्ष अंगिकारले होते. अंतरिक्ष हें कर्णाविषयी आणि पृथ्वी ही धनंजयाच्या जया-विषयी मातेप्रमाणें चिंता करीत होती. त्या-प्रमाणेंच गिरि, सागर, नद्या, इतर जलशय, वृक्ष, ओषधि ही सर्व एक होऊन पृथ्वीप्रमाणें अर्जुनाच्या अभीष्टचितनांत निमग्न होती; आणि असुर, यानुधान व गुह्यक हे कर्णाकडले व मुनि, चारण, सिद्ध, वैनतेय, पक्षी, रत्नं, निधि, सर्व वेद, इतिहास, उपवेद, उपनिषदें, त्यांची रहस्यें, त्याचे संग्रह, वासुकि, चित्रसेन, तक्षक, मणिक, सर्प, काद्रवेय, काद्रवेयसंतति आणि विपारी नाग ही सर्व अर्जुनाकडील झाली होती. हे महाराजा, ऐरावत व त्याची

प्रजा, कामधेनु व त्यांची प्रजा आणि वैशालीचे पुत्रपोत्र भोगी (सर्प) ह्यांनी अर्जुनाचा व क्षुद्र सर्पांनी कर्णाचा पक्ष घेतला होता. लांडगे, हिंसक पशु, शुभ मृग व पक्षी हे सर्व पाथांच्या जयाविषयी ओषक्षा करीत होते; आणि त्याप्रमाणेंच वसु, मरुत्, माध्य, रुद्र, विश्वेदेव, अश्विनीकुमार, अग्नि, इंद्र, सोम, पवन व दशदिशा ही धनंजयाकडली असून सर्व आदित्यांनी कर्णाचा पक्ष स्वीकारिला होता. वैश्य, शूद्र, सूत आणि इतर सर्व संकरजाति ह्या सर्वांचा कल कर्णाकडे असून, आपल्या गणांमुद्धां व सेवकांमुद्धां देव व पितर आणि त्याप्रमाणेंच यम, कुबेर व वरुण, तमेच ब्राह्मण, क्षत्रिय, यज्ञ व दक्षिणा ह्यांनी अर्जुनाचा आश्रय केला होता. प्रेत, पिशाच, क्रव्याद ( हिंसक ) प्राणी, कस्तूरीमृग, राक्षस, जलजंतु, कुत्री व कोल्ही ह्यांनी कर्णाचा पक्ष घेतला होता. देवर्षि, ब्रह्मर्षि व राजर्षि ह्यांचे समुदाय अर्जुनाकडले झाले होते; आणि तंबुरुप्रभृति गंधर्व देवाील अर्जुनाचेंच हित चिंतीत होते !

राजा, त्या दिव्यप्रतापी कर्णार्जुनांचा संग्राम पाहाण्यासाठी मंडळी फारच जमली होती. प्रायेचे पुत्र, मोतीचे पुत्र, गंधर्वांचे समुदाय व अप्सरांचे समूह हे लांडगे, पक्षी, हत्ती, घोडे, रथ व पायदळांतील मनुष्ये ह्यांजवर आणि मोठमोठे ब्रह्मनिष्ठ ऋषि हे वायु व मेघ ह्यांजवर आरूढ होऊन युद्धचमत्कार अवलोकन करण्या-करितां त्या स्थळी प्राप्त झाले होते. देव, दानव, गंधर्व, नाग, यक्ष, विहग, वेदवेत्ते महर्षि, स्वधामुक पितर, तप, विद्या आणि अनेक प्रकारच्या गुणांनी व शक्तींनी युक्त अशा ओषधि आकाशांत गोळा होऊन त्यांनी मोठी गजबज चालविली होती; आणि त्याप्रमाणेंच तेथें अंतरिक्षांत ब्रह्मर्षि व प्रजापति ह्यांमहवर्त-मान ब्रह्मदेव आला असून शंकरही आपल्या

वाहनावर आरूढ होऊन आला होता. राजा, ते कर्णधनंजय एकमेकांशी भिडून युद्ध करू लागले तेव्हां 'अर्जुन हा कर्णाला जिंको' असे इंद्र म्हणाला; व 'कर्ण हा अर्जुनाला जिंको' असे सूर्याने म्हटले. राजा, तेव्हां 'माझा पुत्र कर्ण हा समरांगणांत अर्जुनाला मारून विजयी होवो' असा आशीर्वाद सूर्याने दिला; आणि 'माझा पुत्र अर्जुन हा युद्धभूमीवर आज कर्णाला वधून जय मिळवो' असे उद्गार इंद्राने काढिले. राजा, अशा प्रकारे भिन्न पक्ष घेतलेल्या त्या दोघांही देवश्रेष्ठामध्ये मोठा विवाद चालू झाला. राजा, त्या कर्णार्जुनांच्या विजया-संबंधाने देवदानवांनी निरनिराळे पक्ष अंगिकारिले होते. ते महात्मे कर्णार्जुन परस्परांशी लढण्यास सिद्ध झाले तेव्हां देवर्षि, चारण, सर्व देवगण व सर्व भूते ह्यांसहवर्तमान सर्व त्रैलोक्य थरथर कांपू लागले! सर्व देवांनी अर्जुनाचा पक्ष घेतला आणि सर्व अमरांनी कर्णाचा पक्ष घेतला. ह्याप्रमाणे कोरवपांडवांकडील श्रेष्ठ महारथ कर्ण व अर्जुन ह्यांपैकी कोण विजयी होणार, ह्याजबद्दल जेव्हां विलक्षण विवाद उत्पन्न झाला, तेव्हां देवांनी स्वयंभू प्रजापति ब्रह्मदेव ह्याची प्रार्थना करून त्यास विचारिले, 'ह्या कुरुपांडवयोद्ध्यांपैकी कोण विजयी होईल बरे' देवा, ह्या दोघांही नरसिंहांची बरोवरी होवो! हे स्वयंभो, कर्णार्जुनांच्या विवादाने सर्व जग संशयांत पडले आहे; ह्यास्तव ह्यांपैकी गवरोवरी कोण विजयी होईल, हे तू आह्मांला सांग. देवा, हे दोघे समसमान पराक्रम करतील, असे म्हटलेस तरी चालेल.'

राजा धृतराष्ट्रा, देवांच्या मुखावाटे निघालेले हे भाषण श्रवण करून महाबुद्धिमान् देवेंद्राने ब्रह्मदेवाला प्रणिपातपूर्वक ते सर्व निवेदन केले आणि म्हटले, " भगवन्, आपण पूर्वीच

सांगितले आहे की, कृष्णार्जुनांना सदासर्वदा विजय मिळावयाचाच; तर आतां आपल्या प्रसादाने तसेच घडून यावे आणि ह्या दासाचे मनोरथ मिद्धीस जावे." राजा, नंतर ब्रह्मदेव व शंकर हे देवेद्राला म्हणाले, " हे त्रिदशेश्वरा, ह्या महात्म्या अर्जुनाला जय मिळेल ह्यांत संदेह नाही. अरे, ज्याने खांडववनांत अग्नीला संतोषविले आणि स्वर्गास येऊन तुला मदत केली, त्याला जर जय मिळाला नाही, तर तो कोणाला मिळेल? इंद्रा, कर्ण हा दानवांच्या पक्षाचा आहे, तेव्हां त्याचा पराभव करणे अवश्य होय. असे केल्याने देवांचे कार्य घडेल ह्यांत संशय नाही. हे त्रिदशाधिपा, सर्वांना स्वकार्य साधणे हे अत्यंत महत्वाचे आहे. शिवाय महात्मा धनंजय नेहमी सत्याविषयी व धर्मविषयी तत्पर आहे, ह्यास्तव त्यालाच निश्चयाने जय मिळेल. हे शतलोचना, ज्याने भगवान् वृषभन्वजाला संतुष्ट केले, व ज्याचे सारथ्य लंकनायक विष्णु स्वतः करित आहे, त्याला कसा बरे विजय प्राप्त होणार नाही? इंद्रा, अर्जुनाचे सामर्थ्य अगदी अद्वितीय आहे; तो मोठा बलिष्ठ व शूर असून त्याच्या ठिकाणी इंद्रियनिग्रहशक्ति पूर्णपणे वसत आहे; त्याने उत्कृष्ट तपश्चर्या केली असून अस्त्रविद्येत पूर्ण प्राविण्य संपादिले आहे; त्या देदीप्यमान् पुरुषाच्या अंगी सर्व गुण विद्यमान् असून संपूर्ण धनुर्वेद त्यास उत्तम अवगत आहे; शिवाय तो ज्या कार्यास उद्युक्त झाला आहे, ते देवांचे कार्य होय. पांडवांनी वनवासादिक भोगून अतिशय क्लेश मोशिले, परंतु स्वकर्तव्यापासून ते विमुख झाले नाहीत. अर्जुनाच्या ठिकाणी उत्तम तपस्सिद्धि वसत असल्यामुळे तो कोणतेही कार्य निश्चयाने सिद्धीस नेईल. त्याचे महात्म्य इतके आहे की, अनुकूल किंवा प्रति-कूल अशा देवांचेही तो काहीएक चालू देणार

नाहीं, आणि असें झालें म्हणजे सर्व लोकांचा भयंकर नाश निश्चयानें घडून येईल ! देवेंद्रा, एकदां हे कृष्णार्जुन खवळले म्हणजे जगांतील सर्व स्वास्थ्य संपलेंच म्हणून समज ! ह्या दोन पुरुषश्रेष्ठांपासून नेहमीं जगताची उत्पत्ति होते. नरनारायण नामक जे पुराण ऋषिश्रेष्ठ ते हेच होत. ह्याकरितां ह्या दोन प्रतापशाली नियंत्या पुरुषांचें कोणाकडूनही नियमन होणें अशक्य. ह्यांची बरोबरी करणारा प्राणी स्वर्गांत किंवा मृत्युलोकी कोणीही सांपडावयाचा नाही. देवर्षि व चारण ह्यांमहवर्तमान सर्व लोक आणि तसेच देवगण व सर्व भूतें ही ह्या देवांच्या मार्गे असतात; आणि ह्यांच्याच प्रभावानें सर्व जगाचें योगक्षेम चाललें आहे. आतां कर्णाविपरीत म्हण-शील तर त्या विकर्तकपुत्र नरश्रेष्ठ शूर वीरांच्या विजय न मिळतां तो कृष्णार्जुनांस मिळणें द्रष्ट. कर्णानें वसुलोकी किंवा मरुलोकी अथवा द्रोणभीष्मांबरोबर नाकलोकी रहावें ! ”

ब्रह्मदेव व शंकर ह्यांचें हें असें भाषण श्रवण करून सहस्त्राक्ष इंद्रानें त्यांच्या त्या अनुशासना-बद्दल मोठी आदरबुद्धि व्यक्त केली आणि सर्व देव व इतर प्राणी ह्यांस म्हटलें, “ देवादिकहो, भगवान् ब्रह्मदेव व शंकर ह्यांनी काय सांगितलें तें तुम्हीं ऐकिलेंच आहे. सर्व कांही त्यांनी सांगितल्याप्रमाणेंच घडून येईल. तुम्ही अगदी निश्चित असा. ” राजा, इंद्राचें भाषण श्रवण करून सर्व देवांना व प्राण्यांना मोठा विस्मय वाटला व त्यांनी इंद्राचा मोठा गौरव केला. नंतर देवांनी पुष्पवृष्टि आरंभिली व मोठ्या आनंदानें नानाविध मंगलवाद्यें मुरू केलीं. आणि ते देव, दानव व गंधर्व हे सर्व त्या नरशार्दूलाचें तें द्वैतयुद्ध अवलोकन करण्यासाठीं तैथेंच थांबले. राजा, त्या वेळी त्या दोघांही महात्म्या योद्ध्यांच्या रथांना श्वेत दिव्य अश्व असून त्यांवर ते वीरश्रीच्या योगें अतिशय झळाळत

होते. तैथें रणांगणांत जे वीर कृष्णार्जुनांभोंवतीं जमले होते आणि तसेच जे कर्णशल्यांभोंवतीं जमले होते त्या सर्वांनीं पृथक् पृथक् शंख वाजविण्यास प्रारंभ केला; आणि मग पर-स्परांची स्पर्धा करणाऱ्या त्या कर्णार्जुनांचें शक्र-शंकराप्रमाणें घोर युद्ध चालू झालें व त्या योगें भीरुजनांची पांचावर धारण बसली ! राजा, प्रलयकालीं अंतरिक्षांत राहुकेतु जसे निर्मल दिसतात, तसे त्या दोन्ही वीरांच्या रथांवरचे ध्वज निर्मल दिसूं लागले ! कर्णाच्या ध्वजावरील हत्तीचा रत्नवचित्र बळकट साखळदंड इंद्रधनुष्याप्रमाणें विशाल व सर्पाप्रमाणें भयंकर दिसत होता; आणि अर्जुनाच्या ध्वजावरील मारुति यमाप्रमाणें आ करून बसला असून आपल्या भयंकर दाढांनी व दिव्य कांतीनें सूर्याप्रमाणें लोकांचे डोळे दिपवीत असून त्यांस घाबरवून सोडीत होता ! राजा, गांडीव धारण करणाऱ्या अर्जुनाच्या ध्वजावर अधिष्ठित असलेल्या मारुतीच्या मनांत युद्ध करण्याची इच्छा उत्पन्न झाली व तो आपलें स्थान सोडून मोठ्या वेगानें कर्णाच्या ध्वजावर येऊन बसला व गरुड जसा सर्पाला फाडितो तसें त्यानें आपल्या दांतांनी व नखांनीं मोठ्या आवेशानें कर्णाच्या ध्वजावरील हस्तिकक्षेला फाडून टाकिलें ! त्या वेळी, राजा, घागऱ्या लाविलेली ती हस्तिकक्षा यमपाशाप्रमाणें कुबध होऊन जणू त्या कपिश्रेष्ठावर चालून गेली; आणि मग द्युतप्रसंगीं ठरल्याप्रमाणें त्या दोन्ही वीरांचें घोर द्वैतयुद्ध चालू झालें तेव्हां प्रथम त्या ध्वजांचेंच युद्ध जुंपलें ! नंतर, राजा, त्या दोन्ही वीरांच्या रथांचे हय एकमेकांच्या स्पर्धेनें एकमेकांवर हिंसूं लागले. मग सारथिही परस्परांकडे डोळे फाडून पाहूं लागले; परंतु त्यांत अखेरीस कृष्णानें दृष्टिपातरूप शरांनीं शल्यास जिंकून टाकिलें ! इतक्यांत कर्णार्जुनांनीं एकमेकां-

कडे कुद्ध दृष्टीने पाहून जणू काय युद्ध आरंभिले, पण त्यांनाही कुंतीपुत्राचाच विजय झाला. तेव्हा कर्ण स्मित करून शल्याला म्हणाला, “शल्या, यदाकदाचित् आज अर्जुनाने मला जर युद्धांत वधिले, तर तू रणांत पुढे खरोखर काय करशील तें मला सांग!” तेव्हा शल्याने उत्तर केले, “कर्णा, जर तुला आज अर्जुनाने रणात वधिले तर मी एका रथाने त्या उभयतां कृष्णार्जुनांना ठार मारीन!”

संजय सांगतो:—इकडे अर्जुनानेही तोच प्रश्न कृष्णाम विचारिला, तेव्हा कृष्ण मोठ्याने हंमून त्यास म्हणाला. “अर्जुना, मी जे हे तुला सांगत आहे, ते अगदी खरे आहे. वाचारे, कर्णाने जर तुला वधिले तर सूर्य हा स्वस्थानापामन ऋष्ट होईल. किंवा महासागर वाळून जाईल, अथवा अग्नि उष्णतेचा त्याग करील हे खचित समज. अर्जुना, कर्णाच्या हस्ते तुझा वध घडणे हे संशया असंभवनीय होय. ह्याउपरही जर का हे घडले तर सर्व त्रैलोक्याचा प्रलयच होईल! पण तशांतही मी केवळ बाहुबलाने कर्ण व शल्य ह्यांना ठार मारीन ह्यांत संदेह नको!” राजा, ह्या प्रमाणे कृष्णाचे भाषण श्रवण करून कपिवंज अर्जुन मोठ्याने हंमला आणि कधीही क्लेश न पावणाऱ्या कृष्णाला म्हणाला, “कृष्णा, कर्ण व शल्य ह्यांचा नाश करण्याइतके माझ्या एकट्याच्या अंगी सामर्थ्य आहे. हा पहा मी आज ध्वजपताकांसह, रथ, वाजी व शल्य ह्यांसह, छत्र व कवच ह्यांसह आणि शक्ति, शर व धनुष्य ह्यांसह कर्णाला बाणांच्या भडिमारांने छिन्नभिन्न करून त्याचे तुकडे उडवितो! कृष्णा, आतां ह्या गोष्टीस फार वेळ नको. अगण्यांत हत्ती जमा वृक्षाचा चुगडा करितो, तसा मी आतांच्या आतांच रथ, अश्व, शक्ति, कवच व आयुधे ह्यांसहवर्तमान कर्णाचा चुराडा

करितो! कृष्णा, आज कर्णाच्या भार्यांना वेधव्य प्राप्त झाले! आज खचित त्यांना अनिष्ट स्वप्नेही पडली असतील! खचित कर्णाच्या स्त्रिया गतभर्तृका झालेल्या आज तू पाहाशील! कृष्णा, माझा संताप अजून कमी होत नाही! ह्याने पूर्वी जे कांही केले ते माझ्या डोळ्यांपुढे उभे आहे! अरे, ह्या मूर्खाने द्रौपदीला सभेत ओढून आणवे काय? ह्याने कांही तरी दूरवर दृष्टे दिली पाहिजे होती की नाही! आम्हांला हा किती तरी हंसला! आणि ह्याने आमची किती तरी पुनःपुनः मानवंदना केली! असो; कृष्णा, मदोन्मत्त वारण जसा फुललेल्या वृक्षाचा समूळ नश करितो, तसा मी आज ह्याचा समूळ नाश करितो! हे मधुसूदना, आज कर्णाला मी ठार मारिले म्हणजे ‘सुदैवाने तू विजयी झालास’ असे मधुर शब्द आज तुझ्या कानी पडतील! कृष्णा, आज तू मोठ्या आनंदाने अभिमन्यूच्या मातेचे व आपल्या आतेचे म्हणजे कुंतीचे मांत्वन करण्यास समर्थ होशील! आणि, कृष्णा, आज तू अमृततुल्य शब्दांनी दुःखाकुल धर्मराज व द्रौपदी ह्यांचे समाधान करशील!”

### अध्याय अठ्ठावशीवा.

— ० —

अश्वत्थाम्याचा दुर्योधनास उपदेश.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कर्णार्जुनांचे युद्ध पहावयास आकाशांत देव, दैत्य, नाग, सिद्ध, यक्ष, गंधर्व, राक्षस, अप्सरा, ब्रह्मर्षि, राजर्षि व गरुड आदिकरून श्रेष्ठ पक्षी ह्यांचे समुदाय जमल्यामुळे त्यास मोठी विस्मयकारक शोभा प्राप्त झाली होती. त्या समयी गायन, वादन, स्तुति, नृत्य, हसणेंविडळणें, इत्यादिकांच्या मधुर शब्दांनी सर्व अंतरिक्ष दुमदुमून गेल्यामुळे ते पाहून मनुष्ये अगदी स्तब्ध झाली आणि त्यांस

विलक्षण चमत्कार वाटला ! तेव्हां दोन्ही सैन्यांना मोठा आनंद व हुरूप उत्पन्न झाला आणि त्यांनी शंख फुंकून व रणवाद्यें मुरू करून सिंहाप्रमाणे गर्जण्यास प्रारंभ केला. त्या शब्दांने सर्व भूतल दणाणून सोडून दशदिशा व्याप्त केल्या आणि मग दोन्ही दळें एकमेकांवर तुटून पडून भयंकर संग्राम चालू झाला ! राजा, त्या समर्थी सम-रांगणांत रथ, गज, अश्व व नर ह्यांची एकच गर्दी उडाली; जिकडे तिकडे शर, म्वडग, शक्ति व ऋषि ह्यांचे दारुण प्रहार होऊ लागले; भीरुजांनी धावें दणाणलें; घोर संहार घडूं लागून सर्वत्र हत देहांचे ढीग पडले; जिकडे तिकडे रुधिराचा कर्दम मातला; आणि युद्ध पाहून जणू काय देवदानवांचेंच युद्ध चालू आहे असे भासलें ! अशा प्रकारें तुंबळ व दारुण संग्राम चालू असतां कवचें धारण केलेले धनंजय व कर्ण ह्यांनी परस्परांवर सरळ जाणाऱ्या निशित बाणांचा इतका भयंकर वर्षाव केला की, त्यांनी दाही दिशा व प्रतिपक्षांची सैन्ये बाणांनी झांकून काढिली आणि मग त्या शरच्छायेत कोणासच कांही एक दिसेनासे झालें ! तेव्हां दोन्ही सैन्यांतले वीर भ्याले आणि त्यांपैकी कांहीनी कर्णाचा व कांहीनी अर्जुनाचा आश्रय केला. पण इतक्यांत असा चमत्कार घडला की, पूर्वपश्चिम वायूप्रमाणें त्या दोघांही वीरांनी परस्परांची अखे नष्ट केली; आणि त्यामुळे, घनांधकारांत सूर्यचंद्रांचा उदय झाला असतां ज्याप्रमाणें त्यांची अद्वितीय प्रभा फांकते, त्याप्रमाणें त्या उभयतां कुरुपांडवयोद्ध्यांची अद्वितीय प्रभा भासली ! मग त्या दोन्ही सैन्यांतील वीरांना त्यांच्या सेना-नायकांनी 'पळू नका पळू नका' म्हणून मांगितलें; आणि मग ते सर्व वीर जेथच्या तेथे—पूर्वी मूर व असुर हे जसे वासव व शंबर ह्यांच्या भोंवताली उभे राहिले होते तसे—कर्णार्जुनांच्या

भोंवताली लढत उभे राहिले ! राजा, त्या समर्थी दोन्ही सैन्यांत मृदंग, भेरी, पणव व आनक ह्यांचा प्रचंड घोर ध्वनि चालला असून शिवाय योद्ध्यांचा सिंहनाद एकसारखा होत होता; त्यामुळे अंतरिक्षांत मेघगर्जना चालू असतां सूर्यचंद्र जसे शोभतात, तसे ते कर्णार्जुन रणांगणांत शोभत होते ! त्या वेळी त्या उभय वीरांचें तेज पाहून प्रेक्षकांच्या चित्तावर कांही लोकोत्तरच परिणाम घडे. ते दोघेही बलाढ्य वीर आपआपल्या महाधनुर्मंडलांच्या केंद्रांत उभे असून, सहस्रावधि जलल बाण त्या मंडलांपासून बाहेर पडत असत; ह्यामुळे जणू काय ते दोन सूर्य आपल्या दुःसह किरणांनी स्थावरजंगम जगताला प्रलयकाळी जाळूनच टाकीत आहेत असे भासत होतें ! राजा, कर्णार्जुन हे दोघेही अजिंक्य, दोघेही यमाप्रमाणे शत्रूंचा संहार करणारे, दोघेही एकमेकांस ठार मारण्याला तत्पर, दोघेही घोर संग्रामांत न भिणारे आणि दोघेही रण-कुशल असे होते. ते दोघे एकमेकांशी लढत असतां जसे काय महेन्द्र आणि जंबध पर-स्परांशी झुंजत आहेत, असे वाटलें ! त्या दोन्ही महाधनुर्धरांनी एकमेकांवर मोठमोठीं अखे सोडिली आणि त्यांनी भयानक शरांचा भडिमार करून असंख्य नर, अश्व व गज ह्यांचा संहार उडविला ! ह्याप्रमाणें त्या बलाढ्य पुरुषश्रेष्ठांनी दोन्ही सैन्यांतील चतुरंग दळांचा विध्वंस आरंभिला, तेव्हां—सिंहानें अनर्थ उडविला असतां वन्य पशु जसे सैरावैरा पळू लागतात तशी—ती चतुरंग दळे भयभीत होतसाती दशदिशांस पळू लागली आणि मग चौहोंकडे एकच हाहाकार उडाला ! नंतर दुर्गंधन, कृतवर्मा, शकुनि, कृप व अश्वत्थामा हे पांच महारथ बाणांचा वर्षाव करीत कृष्णा-र्जुनांवर धावून गेले व त्यांनी त्यांस विद्ध



केलें. तेव्हां धनंजयानेही त्यांजवर बागांचा भडिमार आरंभिला आणि त्याची धनुष्ये, बाणभाले, ध्वज, हय, रथ व मारथि ह्यांचा एकदम नाश करून कर्णावर अत्यंत तीक्ष्ण असे बारा बाण टाकिले! इतक्यांत, राजा, अर्जुनाचा प्राण घेण्याकरितां मोठ्या त्वरेनें कौरवांकडील शंभर रथ त्याजवर धावून आले, आणि त्याप्रमाणेंच शक, तुषार व यवन ह्यांच्या घोडेस्वारांनीं कांबोज देशांतील बलाढ्य योद्ध्यांसह अर्जुनाला वधण्याच्या उद्देशाने त्याजवर मोठ्या त्वेपानें हल्ला केला! पण अर्जुनाने त्यांवर उलट क्षुर बाणांची वृष्टि आरंभिली आणि त्यांची मस्तकें छेदून, श्रेष्ठ आयुधें धारण केलेल्या त्या वीरांना त्याच्या हातांतील बाणांमुद्धां धरणीवर पाडिलें! त्या समयी जे हय, कुंजर, रथ व नर अर्जुनाशी लढत होते, त्या सर्वांचा घोर संहार करून त्यांना अर्जुनानें मृत्युमुखी लोटिलें, तेव्हां कौरवसेनेंत मोठा आकांत उडाला; व आकाशातील प्रेक्षकसमूह अतिशय आनंदित होऊन देवार्नामंगलवाद्यें वाजविली आणि जिकडे तिकडे 'शाबास! शाबास!' अशा शब्दांनीं सर्व नभोमंडल व्याप्त झालें; व अंतरिक्षातून शुभ पुष्पांची व सौगंधिक पदार्थांची वृष्टि चालू होऊन ती भूतलावर वायूच्या योगें अर्जुनाच्या मस्तकावर येऊन पोंचली, तेव्हां देव व मनुष्ये ह्यांच्या दृष्टीसमोर घडलेल्या तो अद्भुत चमत्कार अवलोकन करून सर्व प्राण्यांस मोठा विस्मय उत्पन्न झाला! राजा, तें पाहून तुझा पुत्र दुर्योधन व मृतपुत्र कर्ण ह्यांस मात्र व्यथा किंवा आश्चर्य वाटलें नाही आणि त्यांनीं मात्र आपला पहिला निश्चय ठाम ठेविला! त्या समयी अश्वत्थाम्यानें दुर्योधनाचें सांत्वन करण्यासाठीं त्याचा हातधरून म्हळें, 'दुर्योधना, कृपा करून माझ्या भाषणाकडे लक्ष दे. आतां

शांतता धारण कर व पांडवांशी जें हें वैर आरंभिलें आहेस, तें संपव. धिक्कार असो या कलहाला! अरे, ज्या वैरांत ब्रह्मदेवासारखा महाज्ञानी व अस्त्रवेत्ता जो माझा पिता तो हत झाला आणि तमेंच भष्मप्रभृति महारथ यमसदनी गेले, तें वैर आतां पुढें चालविण्यांत कोणता लाभ होणार? अरे, मी आणि माझा मातुल कृप हे तर अवध्य आहों; ह्याकरितां तूं आतां पांडवांशी सख्य करून ते आणि तुझी मिळून हें राज्य करा. अरे, धनंजय हा माझ्या सांगण्यावरून युद्ध बंद करण्यास राजी होईल व जनार्दन तर केव्हांही विरोधाची इच्छा करीत नाही; कदाचित् तूं म्हणशील की, बाकीचे पांडुपुत्र युद्ध संपविण्यास खुषी होणार नाहीत, तर तोही प्रकार तमा नाही; कारण, प्राणिमात्रांचें हित व्हावें व रक्तापात घडूं नये, हेंच युधिष्ठिराला सदासर्वकाळ प्रिय अमून, भीम व नकुलसहदेव हे त्याच्या अगदीं आज्ञेत आहेत. ह्यासाठीं, दुर्योधना, प्रस्तुत समयी तूं जर पांडुपुत्रांशीं गोडी करशील तर तुझ्या इच्छेनेंच सर्व प्रजाचें कल्याण घडेल! राजा, आता जे कोणी बंधुवर्ग अवशिष्ट राहिले आहेत, त्यांस स्वस्थानी जाण्यास अनुज्ञा दे व सैनिकांना युद्ध बंद करण्यास सांग. दुर्योधना, ह्या प्रसंगी माझे हें म्हणणें जर तूं मान्य केलें नाहीस, तर तूं रणांत शत्रूंच्या हस्ते खचित पतन पावशील व मग हलहलशील! राजा, अर्जुनानें एकत्र्यानें कसा काय प्रताप गाजविला हें तूं व सर्व जगानें पाहिलेंच आहे; असला हा अद्वितीय पराक्रम इंद्राला, यमाला, कुबेराला किंवा फार कशाला—प्रत्यक्ष भगवान् ब्रह्मदेवाला सुद्धां—करितां येणार नाही! दुर्योधना, इंद्रादिक देवांच्यापेक्षांही अर्जुनाच्या ठिकाणीं सद्गुणांचें अधिक वास्तव्य आहे; मीं जर त्याला कांहीं सांगितलें, तर तो खचित त्याचा अना-

दर करणार नाही. राजा, निःसंशयपणे तो तुझ्या आज्ञेत वागेले; ह्यासाठी तू आतां पांडवांचे वेर सोड. दुर्योधना, माझीही तुझ्याविषयी सदोदीत अत्यंत बहुमानबुद्धि आहे; म्हणून मी हें फार प्रेमानें तुला सांगत आहे. राजा, तुझ्या मनांत पांडवांशी साम करण्याचें आलें म्हणजे मग मी कर्णाचेंही मन वळवून त्यास युद्धापासून निवृत्त करण्यास सिद्ध आहे. राजा, ज्ञाते लोकांच्या मते चार प्रकारांनी मित्र बनवितां येतात. त्यांतील पहिला प्रकार म्हणजे कित्येक पुरुष स्वभावतःच मित्र अमतात; दुसरा प्रकार असा की, कित्येक पुरुष गोड बोलण्यानें व मन वळविण्यानें मित्र होतात; तिसरा प्रकार, घनादिकांच्या देणग्यांनीं मित्र बनविणें; आणि चौथा प्रकार, शौर्यानें जरवेस आणून मैत्री जोडणें. राजा, पांडवांना मित्र बनविणें झाल्यास तुला ही चारी साधनें अनुकूल आहेत. वीरा, जन्मतः पांडव व तुम्ही हे बांधव आहां; ह्यासाठी त्यांशी गोडीनें वाग आणि आपला कार्यभाग साध. राजा, तू एकदां प्रसन्न होऊन पांडवांचा मित्र झालास म्हणजे सर्व जगाचें तू निरुप-  
मेय कल्याण करशील ! ”

अश्वत्थाम्यानें मोठ्या काकुळतीनें दुर्योधनाला ह्याप्रमाणें हितबुद्धि सांगितली; पण नंतर कांहीं वेळ विचार करून दुर्योधनानें दुःखाचा सुसकारा टाकिला व मोठ्या खिन्नतेनें म्हटलें, “द्रोणपुत्रा, तूं म्हणतोस तें खरें; परंतु मी जें कांही तुला सांगत आहे तें ऐकून वे. हे अश्व-  
त्थामन्, दुष्टवृकोदरानें बाबासारखी दुःशासनावर झडप घालून त्यास ठार मारिल्यावर जे कांही उद्गार काढिले, ते माझ्या मनांत एकसारखे घोळत आहेत; तूंही ते ऐकिले आहेसच. तेव्हां आतां गोडीनें तंय कसा मिटेल बरें? शिवाय, आपल्याला साम करण्याचें कांही प्रयोजनही दिसत नाही; कारण, वारा कितीही प्रचंड

असला तरी तो जसा महागिरी मेरूपुढें निर्वीर्य होतो, तशीच स्थिति प्रस्तुत प्रसंगी अर्जुनाची होईल. अर्जुनानें कितीही पराक्रम गाजविला, तरी त्याचें कर्णापुढें कांहीएक चालणार नाही, हें तू पक्कें ध्यानांत ठेव. शिवाय पांडवांचा आतां मजवर भरंवसाही बमणार नाही; कारण त्यांच्या तरी मनांत वेराची कारणे नित्य घोळत असतीलच. ह्याशिवाय, हे गुरुपुत्रा, आतां युद्ध करूं नको म्हणून तू कर्णाला सांगावेंस हें देखील मला उचित दिसत नाही; कारण आज अर्जुन अतिशय थकून गेला असल्यामुळे कर्ण त्यास तेव्हांच वधील.” राजा, तुझ्या पुत्रानें अश्वत्थाम्याला पुनःपुनः ह्याप्रमाणें सांगितलें; आणि त्याचें मन वळविल्यावर आपल्या सैनिकांना आज्ञा दिली व म्हटलें, “वीरहो, स्थिर-  
चित्तानें शत्रूंवर चाल करून बाणांचा भडिमार चालवा; असे स्वस्थ कां आहां ! ”

## अध्याय एकुननव्वदावा.

— ० : —

### कर्णाजुनांचें द्वैरथयुद्ध.

संजय सांगतो :—राजा धृतराष्ट्रा, तुझा पुत्र दुर्योधन ह्यानें ह्या वेळेभ तरा दरवर विचार करावयास पाहिजे होता; पण त्यानें तसें न करितां आपल्या सैनिकांस शत्रूंवर चालून जाण्यास आज्ञा दिली आणि मग शंख व भेरी ह्यांचा प्रचंड घोष सुरू होऊन ते नरवीर श्वेत-  
हय कर्णाजुन एकमेकांशी मोठ्या निकरानें भिडले ! त्या समयी त्या प्रबळ योद्ध्यांचा जो संग्राम सुरू झाला, तो पाहून जणू हिमालय पर्वतावरचे दोन मदोन्मत्त हत्ती, माजास आलेल्या हत्तिणीकारिता, लांब वादलेल्या मुळ्यांनी एकमेकांवर प्रहार करीत ऋगडत आहेत, असें मासूं लागलें ! राजा, त्या महारथांच्या युद्धाचें काय वर्णन करावें ! ज्याप्रमाणें एका

मेघानें दुसऱ्या मोठ्या मेघावर सहज चाल करावी, किंवा एका पर्वतानें दुसऱ्या पर्वतावर उडी टाकावी, त्याप्रमाणें ते दोघे वीर धनुष्यांच्या टणत्कारांनी व रथांच्या घणघणाटांनी दशदिशा व्याप्त करून बाणांचा भयंकर वर्षाव करीत एकमेकांवर उड्या टाकूं लागले ! त्या बलाढ्य वीरांनी परस्परांवर जी लोकोत्तर शरवृष्टि चालविली होती, ती अवलोकन करून जणू काय—उषांच्यावर मोठमोठी शिखरें, वृक्ष, वनस्पति, औषधि आणि नानाविध झरे ह्यांचें वास्तव्य आहे, असें—मोठे प्रचंड पर्वतच एकमेकांवर आदळून परस्परांवरील शिखरादिकांचा चुराडा करीत आहेत, असें भासत होतें ! राजा, त्या वेळीं त्या उभयतां कुरुपांडववीरांचें जें भयंकर युद्ध झालें, तें पाहून इंद्र व बलि हेच एकमेकांशी झुजत आहेत, असें वाटलें ! तेव्हां त्यांनीं परस्परांवर जो बाणांचा भडिमार केला तो स्वप्नित त्यांनीं म्हणूनच सोशिला, इतरांना तो मुळींच सहन झाला नसता ! त्या समयी स्वतः त्यांच्या व त्याप्रमाणेंच त्यांच्या सारथ्यांच्या आणि अश्वांच्या शरभिव्र देहांतून इतके रुधिराचे पाट वाहूं लागले की, त्यांचे ते रथ तत्काळ शोणिताचे केवळ हृदय बनले; आणि त्यांनील सर्व उपकरणें हीं त्या हृदांतील त्रिपुल कमले, दगड, गोटे, मत्स्य, कूर्म व पक्षिगण ह्यांजप्रमाणें शोभूं लागून त्या रुधिराशयांवर वाऱ्याच्या योगें लाटा उमळण्यास प्रारंभ झाला ! राजा, अशा प्रकारें ध्वजपताकांनी शोभणारे ते दोन्ही रथ अगदीं लगट करून एकमेकांवर उड्या टाकीत असतां, त्यांतील योद्ध्यांनीं शौर्याची अशी कांहीं पराकाष्ठा केली की, जणू काय ते दोन इंद्रतुल्य महारथ परस्परांवर वज्रतुल्य शरांचा वर्षाव करीत महेंद्रवृत्रांप्रमाणें एकमेकांशीं झगडत आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, त्या समयी त्या कुरुपांडवयोधांचें तें

लोकोत्तर युद्ध पाहून विचित्र कवचें, आभरणें, वस्त्रें व आयुधें ह्यांनीं युक्त अशीं तीं उभय पक्षांकडील प्रबळ चतुरंग सैन्ये आश्चर्यानें अगदीं चकित झाली व त्यांना अतिशय कंप सुटला ! राजा, हीच अवस्था अंतरिक्षांत जमलेल्या प्रेक्षकगणांची झाली; पण इतक्यांत, एक मदोन्मत्त हत्ती जसा दुसऱ्या मदोन्मत्त हत्तीवर उडी घालितो, तशी अर्जुनानें कर्णाला ठार मारण्याच्या हेतूनें जेव्हां त्यावर उडी घातली, तेव्हां तें पाहून आकाशगत कित्येक प्रेक्षकांस युद्ध पाहाण्याची अधिक लालसा उत्पन्न झाली व त्यांनीं मोठ्या आनंदांनें सिंहनादपूर्वक वस्त्रे फडकावून व हात हालवून अर्जुनास प्रोत्साहन दिलें ! राजा, त्या वेळीं सोमक पुढें सरले; आणि त्यांनीं “ अर्जुना, कर्णाला ठार मार; आतां त्याचें मस्तक उडव; विलंब लावूं नको एकदां दुर्योधनाची राज्यतृष्णा लयास ने. ” असें मोठ्यानें अर्जुनाला सांगितलें ! राजा, तें ऐकून आपलेही बहुत वीर पुढें सरले आणि कर्णाला म्हणाले, “ कर्णा, जा जा, अर्जुनावर उडी घाल, आणि त्याजवर मुतीक्ष्ण शरांची वृष्टि करून त्यास यमसदृशी पाठव व पांडवांना पुनः कायमचे वनवासांत धाडून दे ! ”

राजा, नंतर कर्णानें प्रथम अर्जुनाला दहा प्रवर बाणांनीं विंधिलें, तेव्हां तें पाहून अर्जुनाला हंसूं आलें व त्यानें तत्काळ दहा उग्र जलाल बाणांनीं कर्णाचें वक्षस्थल विद्ध केलें ! तेव्हां त्यांची फारच झटापट सुरू झाली आणि त्यांनीं परस्परांवर सुपुंख बाणांचा भडिमार आरंभिला ! त्या समयी त्यांचा फारच रणसंमर्द मातला आणि मोठ्या वीरश्रीनें परस्परांचे देह विदारण करीत ते एकमेकांवर अतिशय तूटून पडले ! तेव्हां अर्जुनानें एकदां दोन्ही भुजांवर व गांडीवावर हात फिरविला ! आणि आपल्या त्या भयंकर धनुष्याच्या योगें कर्णावर

नाराच, नालीक, वराहकर्ण, क्षुर, आंजलिक, अर्धचंद्र, वगैरे बाणांची अशी घोर वृष्टि केली की, ते सर्व पार्थेश्वर इतस्ततः आकाशांत सर्वत्र पसरले, आणि सायंकाळीं पक्ष्यांचे समुदाय जसे खालीं मान वांकवून वृक्षावर आपल्या घराट्यांत प्रवेश करितात, तसे कर्णाच्या रथावर व कर्णाच्या देहांत प्रवेश करूं लागले ! परंतु राजा, पुढें असा चमत्कार झाला की, विजयशाली अर्जुनांने जे हे बाण मोठ्या क्रोधानें भुंवया चढवून कर्णावर टाकिले होते, ते सर्व कर्णानें उलट बाण सोडून तेव्हांच भग्न केले आणि अर्जुनाचा तो सर्व प्रयत्न व्यर्थ दवडिला ! तें पाहून अर्जुनांने कर्णाचा वध करण्याकरितां त्याजवर शत्रुसंहारक आग्नेय अस्त्राची योजना केली आणि त्याच्या योगें पृथ्वी, नभोमंडल, दिशा व सूर्याचा मार्ग ही सर्व अग्निज्वालांनीं प्रदीप्त होऊन कर्णाचा देह पेटला ! तेव्हां रणांगणांत कौरववीरांची फारच दुर्दशा उडाली. त्यांच्या शरीरावरील वस्त्रे भडकलीं आणि त्यामुळे, अरण्यांत वेळेंचें बनपेटलें म्हणजे जसा भयंकर शब्द होतो, तसा अतिभयंकर शब्द होऊं लागला व ते सर्व वीर घाबरून मोठ्या जलदीनें जिकडे वाट सांपडली तिकडे पळून गेले ! राजा, त्या समयी अर्जुनाच्या त्या आग्नेय अस्त्राचा नाश करण्यासाठीं रणांगणांत कर्णानें वारुणाख सोडिलें आणि तत्काळ त्याच्या योगें त्या अग्न्यास्त्राचा विध्वंस उडविला ! तेव्हां प्रथम मोठ्या वेगानें चोहोंकडे अंतरिक्षांत मेघसमुदाय धावून आले आणि त्यांनी सर्व दिशा झांकून काढून सर्वत्र अंधकार पाडिला व मग पर्वताप्रमाणें प्रचंड अशा त्या मेघांतून चोहोंकडे उदकाची अशी मुसळधार सुरू झाली की, तसलाही तो प्रचंड अग्नि त्या वृष्टीनें क्षणांत विझून गेला ! राजा, त्या वेळीं सर्व अंतरिक्ष व दशदिशा मेघाच्छन्न झाल्या;

आणि जिकडे तिकडे निविड काळोख पडून कांहीएक दिमेनासें झालें ! नंतर कर्णाच्या त्या मेघास्त्राचा अर्जुनांने वायव्यास्त्रानें प्रतिकार केला आणि सर्व मेघ उधळून लाविले ! पुढें त्या शत्रुसंहारक अर्जुनांने गांडीव धनुष्य, त्याची प्रत्यंचा व बाण ह्यांजवर अतिप्रभाव वज्रास्त्राचें अतिमंत्रण केलें आणि म्हेंद्राला अत्यंत प्रिय असें तें वज्रास्त्र कर्णावर सोडिलें ! राजा, तेव्हां गांडीव धनुष्यापासून वज्रतुल्य वेगवान् असे सहस्रावधि क्षुर, आंजलिक, अर्धचंद्र, नालीक, नाराच व वराहकर्ण बाण उसळून बाहेर पडूं लागले; व त्या महाप्रभाव, अतिशय प्रखर व गृध्रपुंगव अशा वेगवान् बाणांनी कर्णाला गांठून त्याची सर्व गात्रें, हय, धनुष्य, रथचक्रे, जूं व ध्वज ह्यांचा विध्वंस उडविला; आणि गरुडानें व्रस्त केलेल्या मर्माप्रमाणें ते सर्व जलाल बाण सळसळत मोठ्या त्वरेनें भूमीत घुसले ! राजा, त्या समयी कर्णाचा सर्व देह बाणविद्ध झाला आणि त्याच्या गात्रांतून रुधिराचे लोट बाहेर पडूं लागले व तो क्रोधानें अगदी नखशिखांत पेटला ! राजा, तें पाहून त्या म्हेंद्रास्त्राचा ( वज्रास्त्राचा ) संहार करण्यासाठीं महात्म्या कर्णानें अत्यंत बळकट ज्या असलेलें आपलें धनुष्यवांकवून, समुद्रासारखें गंभीर घोष करणारें भागीवास्त्र सज्ज केलें आणि अर्जुनांने सोडिलेले ते वज्रतुल्य बाणांचे समुदाय छेदून टाकून अर्जुनाचा तो भयंकर प्रयत्न वाया दवडिला; व मोठ्या क्रोधानें जलाल बाणांचा भडिमार चालवून म्हेंद्राप्रमाणें प्रताप गाजविणाऱ्या त्या कौरववीरांने भागीवास्त्राच्या योगें घोर रणकंदनांत पांडवांचे रथ, नाग व पदाति ह्यांचा अत्यंत नाश केला; आणि सहाणवर धार देऊन जलाल केलेल्या रुक्मपुंगव बाणांचा एकसारखा वर्षाव करून त्यानें पांचालांपैकी

प्रमुख योद्ध्यांना रणांगणांत शरविद्ध करून सोडिले ! तेव्हां त्या पांचालांनी व सोमकांनी क्रोधायमान होऊन सर्व बाजूंनी कर्णावर तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार आरंभिला; पण सूतपुत्राने उलट मोठ्या वीरश्रीने त्यांजवर एकसारखे बाणांचे लोट सोडून त्यांस अगदी जर्जर केले व त्यांचे अनेक रथ, कुंजर व अश्व ह्यांम जलाल बाणांनी विधिले, तेव्हां ते छिन्नाभिन्न होतसाते रडत आरडत रणांगणांत मरून पडले ! राजा, त्या वेळी तो भयंकर संहार अवलोकन करून जणू काय क्षुब्ध झालेल्या महाशक्तिमान् मिहाने घोर अरण्यांत प्रचंड हत्तीचे कळपच मारून टाकिले, असा भाम झाला ! ह्याप्रमाणे त्या शूर कर्णाने पांचालांकडील प्रमुख वीरांचा मोठ्या त्वेषाने वध केला तेव्हां त्यांचे तेज फारच वाढले; व तो अंतरिक्षांतील चंडकिरण भास्कराप्रमाणे आपल्या दिव्य कांतीने झळालू लागला ! त्या समयीं तुड्या सैन्यांतील वीरांना कर्णाचा जय झाला असे वाटले, आणि ते मोठ्या आनंदाने मिहामारखे गर्जून लागले; व त्या सर्वांनी मानिले की, कृष्णार्जुनांना कर्णाने अगदी दीन करून सोडिल्यामुळे त्यांची आतां धडगत दिसत नाही !

ह्याप्रमाणे शत्रूंना सहन न होणारं असे ते महारथ कर्णाचे लोकोत्तर शौर्य पाहून आणि अर्जुनाचे ते महेंद्रास्त्र समरांगणांत कर्णाने उच्छिन्न केले असे अवलोकून भीमाचा अगदी संताप झाला ! त्याचे नेत्र क्रोधाने इंगळासारखे लाल दिप्त लागले; आणि तो हातबोट मोडीत व संतापाने मुमकारे टाकित मत्स्यप्रतिज्ञ अर्जुनाला म्हणाला, “ हे विजयशीला पार्था, हा पातकी अश्व सूतात्मज कर्ण, आज मोठ्या शौर्याने तुड्यासमक्ष रणभूमीवर अनेक प्रमुख पांचाल्यांचा वध करू शकला, हे झाले तरी कसे ! अरे, ज्या तुड्यापुढे पूर्वी देवांचे किंवा काल-

केयांचे कांहीएक चालले नाही, ज्या त्वांसाक्षात् शंकराशी बाहुयुद्ध केले, त्या तुला यःकश्चित् सूतपुत्राने दहा बाणांनी प्रथमच विद्ध करावे आणि तूं सोडिलेल्या त्या निशित बाणांचा विध्वंस उडवावा, हे मला खचित आज मोठे नवल वाटते ! अर्जुना, असा निर्वार्य होऊ नको ! द्रौपदीला ह्या अधमाने जे क्लेश दिले, त्यांचे स्मरण कर ! अरे, ‘पांडव हे पंड आहेत’ म्हणून जे ह्याने कठोर व हृदयभेदक उद्गार काढिले, ते तू कसा विसरलास ! ह्या दुष्टबुद्धि नराधम सूतपुत्र कर्णाला कसलीच भीति राहिली नव्हती काय ! अमो; आज तें सर्व तूं आठवून ह्या नीचाला समरांगणांत ठार मारून टाक ! आतां उपेक्षा करण्यांत अर्थ नाही ! हे मय्यसाचिन्, आतां तूं काय म्हणून कर्णाला तत्काल वधीत नाहीस ! बाबारे, आतां अगदी विलंब करू नको; विलंब करण्याचा आज समय नाही ! ज्या धैर्याने तूं सर्व प्राण्यांना जिकलेस आणि अशीला खांडववन अर्पण केलेस, त्या धैर्याने तूं आज कर्णाला ठार मार; हा पहा मीही ह्या आपल्या गदेने त्या अधमाचे चूर्ण करून टाकितो ! ” राजा, इतक्यांत कृष्णही अर्जुनाला म्हणाला, “ अर्जुना, तुड्या बाणांची कर्णाने कशी वाताहत उडविली हे पाहिलेसना ! अरे, या रणकंदनांत कर्णाने आपल्या अस्त्रांनी तुड्या ह्या अस्त्राचा भंग करून टाकावा, हे झाले तरी कसे ? तुड्यासारखा अमोघ वीर आज असा कसा अगदी भ्रांत होऊन गेला ! हे कौरव आनंदाने गर्जत आहेत, इकडे तुझे लक्ष नाही काय ! त्या सर्वांना असे वाटत आहे की, आतां कर्णापुढे अर्जुनाचा पराक्रम कुंठित झाला; आतां तूं कोण-तेही अस्त्र सोडीसना, तें कर्णाने तोडिलेच म्हणून हे समजतात ! ह्यासाठी, बा अर्जुना, असे औदासीन्य धरू नको ! ज्या धैर्याने प्रत्येक युगामध्ये तूं तामस अस्त्रांचा संहार करून मदो-

नमत्त राक्षस, क्षत्रिय किंवा दैत्य यांचा रणांगणांत विध्वंस उडविल्याम त्याच धैर्यानें तूं आज कर्णाशी युद्ध करून त्याम ठार मार ! अर्जुना, हें घे माझे सुदर्शन चक्र आणि ह्याच्या ह्या वस्त्यामारुत्या धोरेंनें—इंद्रांनें जसें वज्रांनें नमुचीचें मस्तक तोडिलें तसें—तूं आज मोठ्या वेगानें ह्या कर्णाचें मस्तक तोड ! अर्जुना, हें कृत्य तुला मुळीच अवघड नाही. तुझ्या ठिकाणी इतकें शौर्य आहे की, किरातरूपी भगवान् शंकराला तूं आपल्या अलौकिक प्रतापानें संतुष्ट केलेंस; म्हणून प्रस्तुत प्रसंगी तूं आपल्या तो तसला प्रभाव पुनः प्रगट करून कर्ण व त्याचे अनुयायी ह्यांस ठार मार; आणि ही समुद्रवल्यांकित समृद्ध पृथ्वी गांवे व शहरें ह्यांमह शत्रु-रहित करून धर्मराजाला अर्पण कर व दिव्य यश जोड ! ”

कृष्णाचें हें भाषण श्रवण करून त्या अति-बलिष्ठ महात्म्या अर्जुनांनें सूतपुत्राच्या वधाचा निश्चय ठरविला. राजा, त्या समयी भीममेन व कृष्ण ह्यांनीं जे जे उद्गार काढिले होते, त्या सर्वांचें अर्जुनांनें नीट मनन केलें; आणि आपली सर्व यथास्थित तयारी आहे की नाही व आपण येथें काय म्हणून आलों आहों, ह्या सर्वांचें उत्तम चिंतन केलें आणि मग केशवास म्हटलें, “केशवा, आतां मी अतिशय घोर महात्त्व प्रकट करित आहे; ह्याच्या योगें भूत-पुत्राचा वध व सर्व जनतेचें कल्याण होईल ! तर मला ब्रह्मदेव, शंकर, इतर देव, वेदवेत्ते मुनि व तूं ह्या सर्वांनीं अनुज्ञा द्यावी. ” राजा, कृष्णाला असें म्हणून सव्यसाची अनंतवीर्ये अर्जुनांनें भगवान् ब्रह्मदेवाला नमस्कार केला; आणि अंतर्ध्यामी ध्यान करून श्रेष्ठ व दुर्धर असें ब्रह्मात्त्व कर्णावर सोडिलें. पण, राजा, असा चमत्कार झाला की, कर्णानें त्याचा तत्काळ अंत केला व मोठ्या शौर्यानें अर्जुनावर

वर्षाकालीन जलधारेप्रमाणें घोर शरवृष्टि केली ! ह्याप्रमाणें अर्जुनाचें तें ब्रह्मात्त्वही रणांत कर्णाच्या हस्ते व्यर्थ झालें असें जेव्हां प्रबळ भीमसेनांनें पाहिलें, तेव्हां त्यास अनावर क्रोध चढला व तो नवशिक्षांत संतप्त होतसाता सत्यसंघ अर्जुनाला म्हणाला, “अर्जुना, सर्व लोक तुला महान् ब्रह्मात्त्व जाणणारा असें म्हणतात ना ! ह्याकरितां तूं दुसरें अस्त्र योज. ” राजा, भीमसेनाचें हें भाषण श्रवण करून अर्जुनांनें दुसरें अस्त्र योजिलें आणि गांडीव धनुष्याच्या योगें सूर्यकिरणांप्रमाणें देदीप्यमान व सर्पांप्रमाणें प्राणघातकी अशा बाणांचा एकसारखा भयंकर मारा चालविला आणि दाही दिशा बाणाच्छन्न करून सोडिल्या ! त्या समयी प्रलयकालच्या अग्नीप्रमाणें किंवा सूर्याप्रमाणें प्रज्वलित असे ते अर्जुनांनें सोडिलेले हजारों सुवर्णपुंव बाण क्षणांत चौहोंकडून कर्णाच्या रथावर आले व त्यांत तो आच्छादित होऊन अदृश्य झाला ! नंतर अर्जुनांनें भयंकर शूल, कुऱ्हाडी, चक्रे व शतावधि नाराच बाण ह्यांचा शत्रूंवर भडिमार आरंभिला आणि त्यांच्या योगें समरभूमीवर जिकडे तिकडे कौरवांचे वीर पटापट मरून पडूं लागले ! राजा, त्या समयी रणांगणांत शत्रू-कडील कोणा एका वीराचें मस्तक छिन्न होऊन खाली पडलें तें दुसऱ्या एका वीरानें पाहिलें, तेव्हां तो वावरून जाऊन तत्काळ भूतलावर गतप्राण होऊन पडला ! त्याप्रमाणेंच अर्जुनाच्या बाणांनें दुसऱ्या एक कुरूवीराचा हत्तीच्या सोडे-सारखा पुष्ट बाहु तुटला व तो खड्गासहवर्तमान खाली पडला ! दुसऱ्या एका वीराच्या अंगांतलें चिलखत व डावा बाहु क्षुर बाणांच्या प्रहारानें छिन्न झाला व तो धरणीवर कोसळला ! ह्या-प्रमाणें कौरवसेन्यांतील सर्व प्रमुख योद्ध्यांची अर्जुनांनें प्राणघातक भयंकर बाणांच्या भडि-मारानें वाट लाविली आणि दुर्योधनाचें सर्व सैन्य

नामशेष करून सोडिले! राजा, इकडे विक-  
र्तनपुत्र कर्णानेही रणांगणांत हजारों बाण  
पांडवांवर सोडिले व ते पावसाच्या सर्रांप्रमाणे  
सळाळत त्यांजवर आले! त्या समयीं त्या  
अतुलप्रतापी महाबलवान् कुरुवीराने कृष्ण,  
अर्जुन व वृकोदर ह्यांजवर प्रत्येकी तीन तीन  
बाण सोडिले! व तो प्रचंड स्वरांने रणांगणांत  
गर्जून लागला! राजा, तेव्हां कर्णाच्या बाणांनी  
विद्ध झालेल्या अर्जुनांने भीमाकडे व कृष्णाकडे  
पाहिले तों तेही आपल्याप्रमाणेच शरविद्ध  
झालले त्याला दिसले आणि त्यामुळे त्यास  
अनावर क्रोध चढून त्याने तत्काळ पुनः अठरा  
बाण शत्रूवर सोडिले! त्यापेकी एका बाणाने त्याने  
कर्णाचा ध्वज तोडिला, चार बाणांनी शल्याला व  
तीन बाणांनी कर्णाला विंधिले आणि दहा बाणांनी  
सुवर्णकवच धारण केलेल्या सभापतीचे मस्तक  
उडवून टाकिले. तेव्हां तो राजपुत्र मस्तकहीन,  
बाहुहीन, वाजिहीन, सारथिहीन, धनुर्हीन व  
ध्वजहीन होत्साता जखमी व मृत होऊन, कुऱ्हा-  
डीने तोडलेल्या शालतरूपप्रमाणे रथांतून धाडकून  
समरभूमीवर पडला! नंतर राजा, अर्जुनांने पुनः  
कर्णावर बाणांची वृष्टि केली! त्याने तीन, आठ,  
दोन, चार व दहा असे बाण कर्णावर टाकून  
त्यास विद्ध केले आणि मग कौरवांकडील  
आयुधांसहित चारशेंगज, आठशें रथ, हजारों  
अश्व व त्यांजवरचे वीर आणि आठ हजार  
पायदल ठार मारिले व सरळ चालून जाणाऱ्या  
बाणांचा भडिमार चालवून रथ, सूत व ध्वज  
ह्यांसमवेत कर्णाला अदृश्य करून टाकिले!  
राजा, त्या समयी कर्णाच्या सभोवतीं जे  
कौरवसैन्य होते, त्याचा अर्जुनाच्या शरांनीं  
संहार होऊ लागला, तेव्हां त्यांतील वीर  
मोठमोठ्यांने ओरडून म्हणू लागले कीं, 'कर्णा,  
अर्जुनावर बाणांचा घोर वर्षाव करून त्यास  
त्वरित विद्ध कर; नाही तर आतां हा सर्व

कौरवांचा अंत करील!' राजा धृतराष्ट्रा, ह्या-  
प्रमाणे कौरववीरांचा आक्रोश श्रवण करून  
कर्णाने मोठ्या दक्षतेने अर्जुनावर एकसारखा  
अचूक बाणवर्षाव आरंभिला; तेव्हां ते बाण  
पांडुपांचालवीरांची मर्मस्थले भेदून त्यांच्या  
देहांत घुसले व त्यांस त्यांनीं रणांगणांत गत-  
प्राण करून पाडिले! राजा, सर्व धनुर्धरांमध्ये  
श्रेष्ठ अशा त्या महाबलिष्ठ व शत्रूंचा संहार  
करणाऱ्या महाब्रवेच्या कर्णाजुनांनी परस्परांवर  
व आपल्या प्रतिस्पर्धी सैन्यांवर घोर शरवृष्टि  
करून भयंकर अनर्थ चालविला असतां त्यांचे  
ते युद्ध अवलोकन करण्याकरितां—सुहृदांकडून  
व महान् महान् वैद्यांकडून मंत्रौषधीच्या योगाने  
शल्यहीन व व्यथाहीन झालेला—धर्मराज युधि-  
ष्ठिर सुवर्णाचे कवच धारण करून त्या स्थळीं  
त्वरित आला आणि तेथे समरांगणांत धर्म-  
राजाला पाहून सर्व प्राण्यांना मोठा आनंद  
झाला! त्या वेळीं, राजा, जणू राहूपासून मुक्त  
झालेला समग्र चंद्रच विमल होत्साता आका-  
शांत उदित झाला असे सर्वांस भासले!  
राजा, ते दोन महाशूर शत्रुसंहारक प्रमुख  
वीर कर्णाजुन हे परस्परांशी लढत असतां  
त्यांचे ते युद्ध पाहण्यासाठीं अंतरिक्षांत व भूप्र-  
देशीं जे लोक जमले होते, ते अगदीं स्वस्थ-  
पणाने त्यांचे ते युद्ध पहात होते! राजा, त्या  
समयी धनंजय व कर्ण हे एकमेकांवर बाणांचा  
प्रचंड वर्षाव करित असतां त्यांच्या धनुष्यांचा  
टणत्कार फारच भयंकर चालू झाला व तित-  
क्यांत अर्जुनाची प्रत्यंचा आकर्षण ओढतां  
ओढतां एकाएकीं तुटली आणि त्याबरोबर  
प्रचंड कडकडाट झाला! तेव्हां ती संधि साधून  
कर्णाने प्रथम तत्काळ शंभर क्षुद्र बाण अर्जुना-  
वर सोडिले; व मग त्याने एकसारखा तडाखा  
चालविला; आणि धार देऊन तेलपाणी केलेले  
व कात टाकलेल्या सपीप्रमाणे भयंकर असे

साठ बाण वासुदेवावर टाकिले. नंतर त्याने पुनः आठ बाण अर्जुनावर सोडिले; आणि मग आणखी सहस्रावधि जलालबाणांचा भीमसेनावर भडिमार चालवून त्याला सर्व मर्मस्थलीं विद्ध केले ! राजा, ह्याप्रमाणे कर्णाने कृष्ण व अर्जुन व त्याप्रमाणेच अर्जुनाचा ध्वज ह्यांजवर बाणांचा वर्षाव करून मग पार्थाचे अनुयायी व सोमक ह्यांजवर बाणांचा भडिमार चालविला; पण त्यांनी तत्काळ उलट जलाल बाणांची कर्णावर वृष्टि करून, आकाशांत सूर्याला ज्याप्रमाणे मेत्र झांकून टाकतात त्याप्रमाणे रणांगणांत कर्णाला झांकून टाकिले व ते त्याजवर बाणांचा भडिमार करीत धावून आले ! परंतु इतक्यांत, अस्त्रविद्यापारंगत सूतपुत्राने, आपणावर धावून येणाऱ्या त्या पांडवी वीरांवर अगणित बाण सोडिले; व त्यांस जागच्या जागी खिळून टाकून, त्यांनी सोडिलेल्या सर्व शरांचा विध्वंस उडविला आणि त्यांचे रथी, वाजी व हत्ती ह्यांचा संहार केला ! राजा, नंतर कर्णावर आणखीही दुमरी बलाढ्य पांडवसैन्ये धावून आली, पण त्यांवर त्या सूतपुत्राने असा कांही घोर शरवर्षाव केला की, त्याच्या योगे त्यांची शरीरे विदीर्ण होऊन मोठमोठ्याने रडत ओरडत त्यांनी धारातीर्थी देह ठेविले ! राजा, ज्याप्रमाणे महाबलवान् क्षुब्ध सिंहाने घोड्यांच्या प्रचंड टोळ्यांचा वध करावा, त्याप्रमाणे त्या समयी त्या कुरुवीराने त्या पांडवसैन्याचा वध केला ! राजा, नंतर पुनः दोन्ही दळांत घोर रणकंदन माजले. कर्णाने पुनः प्रमुख पांचालयोद्ध्यांचा भयंकर शरवर्षावाने नाश केला आणि अर्जुनानेही बहुत कौरवांना समरभूमीवर निजविले ! राजा, ते पाहून तुझ्या सैनिकांस वाटले की, आतां कर्णच विजयी झाला व ते आनंदाने टाळ्या वाजवून मोठमोठ्याने सिंहनाद करू लागले;

आणि ह्याप्रमाणे तुझ्या सैन्याने कर्णाविषयी जयघोष चालविला तेव्हां त्या घनघोर संग्रामांत कृष्णार्जुन हे सर्वस्वी कर्णाच्या कचाट्यांत सांपडले असे सर्वांनी मानिले ! राजा, त्या वेळी कर्णाच्या शरांनी जखमी झालेला अर्जुन अतिशय खवळला आणि त्याने आपल्या धनुष्याची प्रत्यंचा वांकवून तत्काळ बाणांचा भडिमार सुरू केला; व कर्णाने जे बाण त्याजवर सोडिले होते, त्या सर्वांचा विध्वंस उडवून तो आणखी शरवर्षाव करीत कौरवांवर चालून गेला ! राजा, त्या समयी अर्जुनाने धनुष्याच्या प्रत्यंचेवरून एकदां हात फिरविला; आणि दोन्ही हातांनी दण्टकार करीत असा कांही बाणवर्षाव आरंभिला की, त्याच्या योगे एका-एकी अंतरिक्षांत बाणांचे छत उभारले जाऊन भूतलावर कांही एक दिसेनासे झाले. राजा, त्यावेळी अर्जुनाने कर्ण, शल्य व इतर सर्व कौरव ह्यांजवर अतोनात बाण सोडिले; आणि त्यांचे देह अगदीं शरविद्ध केले ! राजा, तेव्हां अंतरिक्षांत बाणांची इतकी गर्दी झाली होती की, त्यांत पक्षी सुद्धां फिरत नव्हते; त्या समयी तेथे फक्त वारा तेवढा वाहात होता आणि तो अंतरिक्षांत जमलेल्या भूतगणांच्या अंगावरून खाली येत असल्यामुळे त्याचा दिव्य सुगंध मुट्या होता ! असे; राजा, नंतर अर्जुनाने हंमत हंमत दहा बाण शल्यावर टाकिले आणि त्यांचे चिलखत अतिशय विदारिले; मग त्याने नेमकेच प्रथम बारा व मागाहून सात उग्र बाण कर्णावर सोडून त्यास विपिले; आणि मग त्या अतिशयित वेगवान् बाणांनी कर्णाचीं सर्व गात्रे भिन्न होऊन त्यांतून रक्ताचे पाट वाहू लागले, तेव्हां जणू काय श्मशानांत रुधिराने न्हालेला शंकर रौद्रमुहूर्तावर ( मंथ्याकाळी राक्षस वेळेवर ) क्रीडाच करीत आहे असें भासू लागले ! राजा, नंतर त्या वासवतुल्य अर्जुनावर कर्णाने



तीन बाण मोडून त्यास विद्ध केले; आणि अच्युतास ठार मारण्याच्या इराद्याने त्याच्याही देहांत सर्पासारखे मळमळत जाणारे पांच प्रज्वलित बाण नुमविले! तेव्हां कर्णाने मोठ्या वेगाने सोडिलेले ते सुवर्णालंकृत बाण पुरुषोत्तमानें कवच विदारून त्याच्या देहांत शिरले व तेथून तत्काळ बाहेर पडून भूगह्वारांत जाऊन पाताळांतल्या भोगावतीचें स्नान करून पुनः माघारे आले; पण अर्जुनानें त्यातील प्रत्येकावर दहा दहा भल्ल बाण नेमकेच सोडून त्या एकेकाचे तीन तीन तुकडे केले आणि मग ते तक्षकाच्या पुत्राच्या (अश्वमेनाच्या) पक्षाचे पांच प्रचंड मर्प ( ते पांच बाण ) अर्जुनाच्या अस्त्रांनी छिन्नभिन्न होतसावे भूतलावर पतन पावले! राजा, नंतर अर्जुनाची दृष्टि कृष्णाच्या शरीराकडे गेली; आणि कर्णाच्या सर्पशरांनी कृष्णाचा देह विद्रीण झाल्या असे जेव्हां त्याने पाहिले, तेव्हां अशीने जशी तृणाची रामपेटे ते तसा त्याचा देह क्रोधानें अगदी पेटला आणि त्याने निश्चयानें प्राणांचा घात करितील असे प्रज्वलित बाण आकर्षण ओढून कर्णाच्या गर्भस्थळी टाकिले व त्यासरमा त्या वेदनांनी तो कौरव-वीर कांपू लागला; परंतु त्या समयी त्याच्या ठिकाणी प्रसंगानुरूप धैर्यबल असल्यामुळे तो रथांतून खाली मात्र पडला नाही! राजा, त्या वेळी अर्जुनाचा कोप अनावर वाढला व त्याने इतकी शस्त्रवृष्टि केली की, तिच्यामुळे जिकडे तिकडे बाणच बाण होऊन त्यांत दिशा, उपदिशा, सूर्याची प्रभा व कर्णाचा रथ हीं सर्व अगदी अदृश्य झाली व सर्वत्र दाट धुकेंच पसरले आहे असे दिसें लागले! तेव्हां त्या शत्रुमंहारक पृथापुत्रानें कर्णाच्या रथाची चक्रे व बाजू राखणारे, त्याप्रमाणेंच त्या रथाच्या पुढें थावणारे व पाठ राखणारे वगैरे जे शेलके वीर दुर्योधनानें नेमिले होते, या सर्व बलिष्ठ

वीरांना रणांगणांत ठार मारिले! त्या समयी सव्यसाची अर्जुनानें कौरवांकडील एकंदर दोन हजार महान् महान् वीर रथ, अश्व व सारथि ह्यांसहवर्तमान क्षणांत थमसदनीं पाठविले! ते पाहून, राजा, तुझे पुत्र व उरलेले कौरव-योद्धे कर्णाला, आणि रणांत पडलेल्या व जखमी झालेल्या मुलांना व पितरांना समरभूमीवर मोडून रडत आरडत पळून गेले! तेव्हां कर्णानें समोवार पाहिले तों भयभीत झालेले कौरव पळून गेल्यामुळे त्यास सर्व दिशा शून्य दिसल्या! तथापि त्या वीराच्या मनाला यत्किंचित् धास्ती वाटली नाही व तो तमाच मोठ्या वीरश्रीनें अर्जुनावर चालून गेला!

## अध्याय नव्वदावा.

—:—

### कर्णार्जुनयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा, नंतर अर्जुनाच्या शस्त्रवर्षावामुळे वाताहत होऊन पळून गेलेले कौरव अर्जुनाच्या बाणांच्या माऱ्याच्या पलीकडे जातांच तेथें थांबले, तों अर्जुनानें सोडिलेले विद्युल्लतेसारखे देदीप्यमान् अस्त्र मोठ्या वेगानें समोवतालीं अधिकाधिक भडकत चालले आहे, असें त्यांस दिसून आले! राजा, अर्जुनानें अत्यंत क्षुब्ध होऊन कर्णाला ठार मारण्याकरितां मोठ्या त्वेषानें तें अस्त्र त्याजवर टाकिले, तेव्हां तें त्या घनघोर मंत्राभांत अतिशय भडकून कौरवांना जाळीत आकाशभर व्याप्त झाले. तेव्हां कर्णानें त्याच्यावर सुवर्ण-पुंग्व घोर शरांचा एकमारगा भडिमार आरंभिला आणि त्याचा तत्काळ नाश करून टाकिला! त्या समयी महात्म्या कर्णानें आपल्या अमोघ धनुष्याच्या सुदृढ प्रत्यंचेचें आस्फालन करून शरांचे लोटच्या लोट शत्रूवर चालू केले आणि परशुरामापामन मिळविलेल्या

शत्रुसंहारक महाप्रताप भूतार्थवर्षण अस्त्रांचें अभि-  
मंत्रण करून महाणेवर पाजविलेल्या घोर  
बाणांचा भडिमार सुरू केला व तें अर्जुनाचें  
अस्त्र भंगून टाकिलें ! नंतर अर्जुन व कर्ण  
ह्यांचा तुंबळ संग्राम सुरू झाला; आणि मदोन्मत्त  
हत्ती आपल्या दंतांच्या प्रहारांनीं जसे एक-  
मेकांशी झुजू लागतात, तसे ते दोघेही वीर्य-  
शाली वीर एकमेकांवर घोर शरवृष्टि करून  
अतिशयित लढू लागले ! तेव्हां जिकडे तिकडे  
अगदी बाणच बाण होऊन गेले आणि त्या  
कुरुपांडववीरांनीं सर्व अंतरिक्ष बाणांनीं अगदी  
खचून काढिलें ! त्यामयीं आकाशांत बाणांचें  
मोठें छतच लागलें आहे असें कौरवसोमकांस  
दिमलें आणि सर्वत्र बाणांनीं निविड अंध-  
कार पडल्यामुळें त्यांस कोणीही प्राणी दृग्गो-  
चर झाला नाही ! त्या वेळीं, राजा, नानाविध  
अस्त्रांत प्रवीण असे ते दोघेही महाधनुर्धर एक-  
सारखे अगणित बाण सोडून समरभूमीवर  
चित्रविचित्र युद्धमार्ग दाखवीत असतां पराक्रम,  
अस्त्रज्ञता, युक्ति, शक्ति व शौर्य ह्यांत केव्हां  
केव्हां कर्णाची व केव्हां केव्हां अर्जुनाची  
सरशी दिसे ! ह्याप्रमाणें समरांगणांत ते  
दोघेही वीर दारुण युद्ध करीत असतां, योद्ध्यांची  
दृष्टि कोण कोठें चुकते हें पाहाण्यांत  
गर्क झाली; आणि अन्य वीरांना दुःसह असा  
तो त्या उभयतांचा प्रताप जेव्हां त्यांनीं अव-  
लोकन केला, तेव्हां ते सर्व अगदी चकित होऊन  
गेले ! त्या समयीं राजा, अंतरिक्षांत जमलेल्या  
प्रेक्षकजनानाही तें युद्ध पाहून मोठें कौतुक  
वाटलें आणि त्यांनीं ' शाबास कर्णा ! शाबास  
अर्जुना ! ' असे धन्यवाद गाऊन सर्वत्र आकाश-  
भर त्यांची स्तुति आरंभिली ! राजा, ह्याप्रमाणें  
कौरवपांडववीरांचें निकराचें युद्ध चालून रथ,  
वाजी व कुंजर ह्यांच्या आघातांनीं महीतल  
अगदी हादरून गेलें असतां, तिकडे अर्जुनाचा

शत्रु अश्वसेन नामक नाग झांडववनांतून सुटून  
पृथ्वीच्या तळीं पाताळांत मोठ्या क्रोधाने जाऊन  
राहिला होता तो, त्या दुष्ट अर्जुनाचा मूड उग-  
विण्यास ही संधि योग्य आहे, असें मनांत  
आणून एकदम मोठ्या वेगाने उसळी मारून  
भूतलावर आला आणि कर्णाजुनांच्या घोर  
रणांत शररूप धारण करून एकाएकी कर्णाच्या  
बाणभात्यांत प्रविष्ट झाला ! राजा, त्या वेळीं  
समरांगणांत सर्वत्र बाणांचे लोट चालू होते व  
त्यांनीं सर्व नभोमंडल व्याप्त झालें अमून तशांत  
आणखी ते दोघेही प्रचळ रोद्धे बाणांचा भडि-  
मार करीतच अमल्यामुळें त्यांत कोठेही वाव  
म्हणून उरला नव्हता ! ह्यामनच जिकडे तिकडे  
बाणपटलांनं सर्वत्र अतिशय अंधकार होऊन  
दुमरे कांहीएक दिसेनातं झालें, तेव्हां कौरव व  
सोमक अत्यंत भ्याले ! अश्वेरीस ते दोघेही  
लोकोत्तर धनुर्धर जिवावर उदार होऊन अतुल  
प्रताप गाजवीत रणांगणांत अगदी थकून जाऊन  
एकमेकांकडे डोळे वटारून पाहू लागले, तेव्हां  
आकाशांत जमलेल्या अप्सरांच्या समुदायांनीं  
चंदनोदकाचें त्यांवर मिचन केलें आणि त्यांना  
चामरांनीं व पंख्यांनीं वारा घातला; व सूर्य  
आणि इंद्र ह्यांनीं आपली हस्तकमलें त्यांच्या  
मुखांवरून फिरवून त्यांचा परिश्रम दूर केला !

### पार्थकिरीटपात !

राजा, नंतर फिरून त्या दोघांचें तुंबळ  
युद्ध सुरू झालें आणि त्यांत कर्णावर अर्जुनांनं  
शरांचा मनस्वी मारा करून त्यास अगदीं  
गांगरून सोडिलें, तेव्हां त्याची अशी खातरी  
झाली की, आतां आपल्याच्यानं अर्जुनावर  
सरशी होत नाही; आणि अश्वेरीस, शरप्रहारांनीं  
घायाळ होऊन रक्तबंबाळ झालेल्या त्या  
कर्णानं अर्जुनाला वधण्याकरितां निर्वाणीचा  
म्हणून जो एक भयंकर, जलाल व बांकदार  
बाण फार दिवमांपासून मुवर्णाच्या भात्यामध्ये

चंदनाच्या चूर्णात नित्य पूजा करून राखून ठेविला होता; तो ऐरावताच्या वंशांत जन्मलेला, शत्रुघातक, सर्पमुख, उग्र, प्रज्वलित व निशित असा बाण धनुष्याला जोडिला आणि त्या वीर्यशाली कर्णाने रणांगणांत अर्जुनाचे मस्तक उडविण्यासाठी तो नेम धरून ओढिला ! राजा, तेव्हां दिशा, उपदिशा व आकाश ही पेटली; शतावधि भयंकर उल्का पतन पावल्या; आणि तो सर्प धनुष्याला लाविला आहे असे पाहून इंद्रादिक लोकपालांमध्ये मोठा हाहाकार प्रवर्तला ! राजा, कर्णाने धनुष्याला तो बाण लाविला तेव्हां त्यांत अश्वसेन नाग योगबलाने प्रविष्ट झाला आहे हे कर्णाला कांही माहीत नव्हते; परंतु सहस्रनेत्र महेंद्राने ती गोष्ट जाणून, आपला पुत्र आतां खास मेला म्हणून मानिले व त्याचे सर्व धैर्य नष्ट होऊन त्याची सर्व गात्रे अगदी गळून गेली ! पण इतक्यांत कमलोद्भव ब्रह्मदेवाने इंद्राला म्हटले, 'बा इंद्रा, असा घावरून नको; विजयश्री अर्जुनालाच वरील !'

इकडे कर्णाने तो भयंकर बाण धनुष्याला जोडून नेम धरून ओढिला आहे असे पाहून महात्मा मद्राधीश शल्य त्याला म्हणाला, "कर्णा, हा बाण अर्जुनाच्या मानेचे भेदन करणार नाही. ह्यास्तव नीट विचार करून अर्जुनाचे मस्तक छेदून टाकील अशा प्रकारे बाणाचे संधान कर !" राजा, तेव्हां कोधाने आरक्त नेत्र करून तो महावेगवान् सूतपुत्र कर्ण शल्याला म्हणाला, "शल्य, कर्ण हा दोन वेळां बाणसंधान करीत नाही; असे केल्याने माझ्यासारख्यांना कुटिल योद्धे हे नांव प्राप्त होईल !" राजा, असे म्हणून कर्णाने बहुत वर्षपर्यंत मोठ्या काळजीने पूजा करून ठेविलेला तो बाण अर्जुनावर सोडिला; आणि त्याने 'अर्जुना, आतां तू खचित मेलाम'

अशी धिक्कारपूर्वक मोठ्याने गर्जना केली ! राजा, कर्णाच्या हातांतून सुटलेला तो बाण अग्नीप्रमाणे किंवा सूर्यप्रमाणे झळाळत सारखा अंतरिक्षांतून अर्जुनावर येत आहे असे पाहून तत्काळ मोठ्या लगबगीने कृष्णाने तो अर्जुनाचा श्रेष्ठ रथ सहज आपल्या पायांने खाली दाबून थोडासा भूमीत रोंविला ! त्या समयी अर्जुनाच्या रथाचे ते चंद्रकिरणासारखे शुभ्रवर्ण व सुवर्णालंकृत अथ गडधे टेंकून उभे राहिले आणि ते पाहून अंतरिक्षांत एकदम जिकडे तिकडे मोठमोठ्याने मधुसूदनाचे धन्यवाद सुरू झाले ! कृष्णाने मोठ्या शिताफीने अर्जुनाचा तो रथ भूमीत दडपला असे पाहून सर्वत्र सिंहनाद होऊ लागून चोहोंकडून कृष्णावर पुष्पवृष्टि झाली ! इकडे कर्णाने टाकिलेला तो बाण बुद्धिमान् अर्जुनाच्या मानेवर न लागतां इंद्राने दिलेल्या त्या बळकट किरीटाला मात्र लागला; आणि त्यायोगे, स्वर्ग, पृथ्वी, अंतरिक्ष व जल ह्या सर्वांमध्ये महाप्रख्यात असे ते अर्जुनाचे शिरोभूषण खाली पडले ! राजा, अशा प्रकारे व्यालाख, उत्कृष्ट अस्त्रशिक्षा व क्रोध ह्या सर्वांचे एकीकरण होऊन कर्णाच्या हस्ते अर्जुनाच्या मस्तकावरील जो मुकुट पतन पावला, त्याची महती केवढी होती हे काय मांगावे ! त्याचे तेज केवळ सूर्य, चंद्र किंवा अग्नि ह्यांप्रमाणे दुर्धर होते; त्यास सुवर्ण, मौक्तिके, हिरे आदिकरून रत्ने ह्यांचा जडाव केलेला होता; तो मुकुट खुद्द इंद्राकरितां मोठ्या तपश्चर्येने व प्रयत्नाने प्रत्यक्ष महाशक्तिमान् ब्रह्मदेवाने तयार केला होता; त्याचा घाट अतिशय सुंदर असून तो शत्रूंना भीति उत्पन्न करणारा व धारण करणाऱ्याला अत्यंत सुख देणारा असा होता; त्याचा दिव्य सुगंध फैलावत असून तो देवांच्या शत्रूंना वधण्याची इच्छा करणाऱ्या अर्जुनाला इंद्राने मोठ्या प्रेमाने अर्पण

केला होता; आणि शंकर, वरुण, इंद्र व कुबेर ह्यांजकडून पिनाक, पाश, वज्र व उत्तम बाण ह्यांच्या योगें किंवा महान् महान् देव ह्यांजकडून तो भरा होण्यास अशक्य होता ! राजा, असे असतांही कर्णानें तो किरिट त्या नागशराच्या योगानें पाडून टाकिला ! त्या दुष्ट हेतु धारण करणाऱ्या अमत्यप्रतिज्ञ त्वेषवान् नागानें तो अत्यंत अद्भुत, महा-मूल्यवान् व भुवर्णालंकृत किरिट पार्थाच्या उत्त-मांगापासून हरण केला ! अर्जुनाच्या किरिटावर कर्णशराचा जेव्हां प्रहार झाला, तेव्हां, भुवर्णा-च्या तारामंडळानें व्याप्त असलेला व ज्याच्या-वर नागविपानें ज्वाळांचे लोट चालले आहेत असा तो देदीप्यमान किरिट—आरक्तमंडल सूर्य जसा अस्ताचलावरून गाली पडतो तसा—अर्जुनाच्या मस्तकावरून गाली क्षितितलावर पडला ! ज्याप्रमाणें महेंद्र हा आपल्या वज्रानें—ज्यांवर अंकुर व पुष्पें अतिशय आहेत अशा वृक्षांनी व्याप्त असलेल्या—श्रेष्ठ गिरिशिखराला गाली पाडितो, त्याप्रमाणें त्या अश्वसेन नागानें त्या शरसंधानानें—बहुत रत्नानीं व्याप्त अशा—त्या श्रेष्ठ पार्थमुकुटाला मोठ्या त्वेषानें पार्थाच्या मस्तकावरून गाली रणांगणांत पाडिलें ! राजा, किरिट खाली भूतलावर पडला तेव्हां, वादळाच्या योगें पृथ्वी, स्वर्ग, अंतरिक्ष व उदक ही जशी भुव्य होऊन भयंकर शब्द होतो तसा अतिशय भयंकर शब्द सर्व ब्रह्मांडभर झाला आणि सर्व-लोक घाबरून जाऊन व्यथित होत्साते थडा-थड ठेंचळून पडूं लागले ! त्या समयी, उंच पर्वताचें नीलशृंग ज्याप्रमाणें शोभतें, त्याप्रमाणें तो तरुण व नीलवर्ण अर्जुन किरिटावां वूनही शोभला ! नंतर त्यानें आपलें श्वेत वज्र मस्तका-वर गुंडाळून त्यांत आपले केस झांकून टाकिले; आणि मग, उदयपर्वतावर सूर्यकिरणांचा प्रकाश पडला असतां जशी उत्कृष्ट शोभा दिसते, तशी

त्याच्या मस्तकावर त्या श्वेत शिरोभूषणाची कांति पडून उत्कृष्ट शोभा दिसली ! सारांश, राजा अर्जुनानें खाटववनांत ज्या उग्रमुखी सर्पिणीला वधिलें, त्या सर्पिणीचा पुत्र अश्व-सेन नांवाचा सर्प होता, त्यानें अर्जुनाचा वध करण्यासाठीं सूर्यपुत्र कर्णाच्या बाणाचा आश्रय केल्यावर कर्णानें तो शररूप सर्प रथावर अधि-ष्ठित असलेल्या अर्जुनावर सोडिला; परंतु त्या शरानें अर्जुनाच्या ग्रीवेचा भंग न होतां, प्रत्यक्ष ब्रह्मदेवानें इंद्राकरितां तयार केलेला अत्यंत दिव्य व दिवाकरकिरणांप्रमाणें अतिशय कांति-मान् असा मुकुट अर्जुनाच्या मस्तकावर विरा-जमान होता, तो मात्र खाली पडला ! आणि अश्वसेन सर्पाचा तो सूड घेण्याचा प्रयत्न पाहून मग अर्जुनानें त्याला टार मारून यमसदनी पाठविलें ! अमो.

कर्णानें सोडिलेला तो देदीप्यमान नागशर अर्जुनाच्या भुवर्णालंकृत किरिटाखाली पाडून नाऊन टाकिल्यावर मागे वळला; व त्यानें पुनः कर्णाच्या बाणभात्यात प्रवेश करण्याची इच्छा केली. पण, राजा, कर्णानें जेव्हां आपल्याला ओळखिलें अंमं त्या अश्वसेन नागानें पाहिलें, तेव्हां तो अश्वसेन नाग कर्णाला म्हणाला, “कर्णा, तूं मला अर्जुनावर सोडिलेंस खरें, पण सोडितांना तूं मला नीट ओळखिलें नव्हतंस; त्यामुळे मला अर्जुनाचें मस्तक हरण करितां आलें नाही. कर्णा, आतां तूं मला ओळखिलें आहेस; ह्यास्तव आतां रणांत तत्काळ तूं मला अर्जुनावर सोड; म्हणजे मी त्या तुझ्या व माझ्या रिपूचा क्षणांत नाश करीन !” राजा, अश्वसेनाचे ते शब्द श्रवण करून सूनपुत्रानें त्यास विचारिलें, “अरे उग्ररूप धारण करणारा तूं कोण आहेस ?” तेव्हां त्या सर्पानें कर्णा-ला उत्तर दिलें, “कर्णा, मी अर्जुनाचा शत्रु अश्वसेन नाग आहे. माझ्या मातेचा अर्जुनानें

वध केल्यामुळे त्या अपराधाचा मूड घेण्यासाठी मी टपून बसलों आहे. अरे, प्रत्यक्ष वज्रधर इंद्रही जरी अर्जुनाचे संरक्षण करण्यास उद्युक्त झाला, तरी त्यास मी यमसदनी पाठविल्या-शिवाय राहाणार नाही, ह्याकरिता माझी तुला इतकीच प्रार्थना आहे की, तू मला पुनः अर्जुनावर टाक ! ”

कर्ण म्हणाला:—हे नागा, आज रणांगणांत कर्ण हा दुमऱ्याच्या बलावर भिस्त ठेवून जयाची आशा करण्यास सिद्ध नाही. अरे, एकचसा काय, पण शंभर अर्जुन जरी मला वधावयाचे असले, तरी मी एका बाणाचे दोन वेळां संधान करणारा नाही. बा नागा, अर्जुनाचा वध व्हावा हीच तुझी इच्छा ना? ठीक आहे. मजजवळ दुसरे व्यालशर आहेत, त्यांचे मी उत्तम दक्ष-तेने व मोठ्या त्वेपाने संधान करून आज अर्जुनाला ठार मारीन; तू त्याची काळजी करू नको, खुशाल जा! राजा, ह्याप्रमाणे कर्णाचे भाषण ऐकून रणांगणांत नागराज अश्वमेध ह्याला फार क्रोध आला व तो ते भाषण सहन न करितां स्वतःच उग्र स्वरूप धारण करून पार्थाच्या वधाकरितां त्याजवर चालून गेला ! तेव्हां कृष्ण रणभूमीवर अर्जुनाला म्हणाला, ‘ अर्जुना, तू ह्या आपल्या दावेदार सर्पाला ठार मार ! ’ राजा, त्या समर्थी महाप्रताप गांडीव-धारी अर्जुनाने कृष्णाला विचारिले, ‘ कृष्णा, आज माझ्यावर स्वतः चालून येऊन जणू काय गरुडाच्या मुखांत उडी टाकणारा हा सर्प कोण बरे ! ’ तेव्हा कृष्ण म्हणाला, ‘ अर्जुना, तू धनुष्य धारण करून खांडववनांत अशीला संतुष्ट केलेस, त्या वेळी हा सर्प अंतरिक्षांत असून ह्याचा देह ह्याच्या मातेने गुप्त राखिला होता; हा व ह्याची माता ही एकच समजून तू ह्याच्या मातेला वधिलेस, ह्यासाठी तें वैर आठवून तो आज स्वतःच्या वधाकरितां तुझी खचित् प्रार्थना करित

आहे ! हा पहा आकाशांतून पतन पावणाऱ्या प्रज्वलित उल्केप्रमाणे तुझ्यावर आला ! ह्यास्तव तू आतां त्याचा वध कर !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनाने सर्पाकडे वळून मोठ्या क्रोधाने सहा पाजविलेले जलाल बाण त्या सर्पावर टाकिले. तेव्हां आकाशांतून तिरप्या रेषेने अर्जुनावर चालून येणारा तो सर्प छिन्नभिन्न होऊन भू-तलावर मरून पडला ! राजा, ह्याप्रमाणे अर्जुनाच्या हातून नागराजाचा वध झाल्यावर त्या महाशक्तिमान् लोकनायक कृष्णाने आपल्या बाहुबलाने भूतलांतून अर्जुनाचा तो रथ लागलाच पुनः उचलून वर काढिला; परंतु नरवीर कर्णाने तितकीच संधि साधून तिरप्या नजरेने दहा मयूरापेच्छ जलालबाण अर्जुनावर सोडिले; तेव्हां अर्जुनाने अगदी नेम धरून बारा तीक्ष्ण वराह-कर्ण बाण व सर्पाच्या विषाप्रमाणे, वेगवान् व महाभयंकर असा एक नाराच बाण आकर्ण धनुष्य ओढून कर्णावर टाकिला ! राजा, त्या समयी तो श्रेष्ठ बाण कर्णाचे चित्तविचित्र कवच विदारून त्याच्या शरीरांत घुसला; आणि त्याचे रक्त प्राशन करून रुधिरांत माखलेल्या पुंवासहित बाहेर पडून भूगह्वरांत प्रविष्ट झाला. तेव्हां त्या बाणप्रहाराने कर्णाला अतिशय क्रोध उत्पन्न झाला—जणू काय काठीने सर्पासच बडविले असे तेव्हां वाटले ! नंतर त्याने घोर विषाप्रमाणे भयंकर बाण तत्काळ अर्जुनावर सोडण्यास प्रारंभ केला ! त्याने त्या समयी बारा बाण जनार्दनावर आणि नव्याण्णाव बाण अर्जुनावर सोडिले; आणि पुनः एका घोर बाणाने अर्जुनाचे विदारण करून मोठ्याने हंसून गर्जना केली ! राजा, कर्णाचे ते हंसणे अर्जुनाला सहन झाले नाही आणि त्याने तत्काळ त्याच्या मर्मस्थळावर नेम धरून शंभर जलाल बाण मारिले; आणि इंद्राने जसे बल

देत्याला विदारिलें, तसें त्यानें कर्णाला विदारिलें ! राजा, नंतर आणखी अर्जुनानें यमाच्या दंडा-पमाणें प्राण घेणारे नव्वद उग्र बाण कर्णावर सोडले आणि त्यांच्या योगानें विद्ध झालेला तो कुरूवीर वज्रविदारित पर्वताप्रमाणें कंप पावला; व उत्कृष्ट रत्नें, उत्तम हिरे आणि सुवर्ण ह्यांनीं अलंकारिलेलें त्याचें तें शिरोभूषण आणि अर्जुनानें शरपातानें छेदून टाकिलेली त्याचीं तीं उत्तम कुंडलें भूमीवर गळून पडली व मग अर्जुनानें त्याजवर बाणांचा आणखी भडिमार करून त्याचें महामूल्यवान् व उत्तम कारागिरांनीं मोठ्या प्रयत्नानें बहुत दिवस खपून बनविलें तें देदीप्यमान चिखलत क्षणांत छेदून त्याचे तुकडे तुकडे उडविले !

राजा, ह्याप्रमाणें कर्ण हा कवचहीन झाला तेव्हां अर्जुनानें त्याजवर मोठ्या क्रोधानें चार उत्कृष्ट प्रतीचे जलाल बाण सोडिले; आणि मग वात, पित्त, कफ व ज्वर ह्यांनीं अत्यंत पीडित झालेल्या रोग्याप्रमाणें तो कर्ण अतिशय तडफडूं लागला; नंतर अर्जुनानें आपल्या त्या महाधनुष्याच्या मंडलांतून अवघानपूर्वक मोठ्या वेगानें जलाल बाणांचा असा अवूक मारा चालविला की, त्याच्या योगें कर्णाची मर्मस्थळें भिन्न होऊन तो अगदीं घायाळ झाला ! अशा प्रकारें नानाविध घोर शर मोठ्या त्वेपानें सोडून अर्जुनानें कर्णाला अगदीं नव्वाशिखांत बाणविद्ध केलें, तेव्हां त्याच्या देहांतून एकसारखे रुधिराचे प्रवाह वाहूं लागले; आणि तें पाहून, विदीर्ण झालेल्या कावेच्या पर्वतांतून आरक्त उदकच एकसारखें बाहेर पडत आहे असा भास झाला ! नंतर अर्जुनानें आणखी नवीन, बळकट, सरळ चाल करून जाणारे व यमदंडाप्रमाणें प्राणघातक असे पोलादी बाण कर्णाच्या वक्षस्थळावर टाकिले, आणि कार्तिके-यानें जसें क्रौंच पर्वताचें विदारण केलें, तसें

त्यानें त्यालोकोत्तर वीराच्या हृदयाचें विदा-रण केलें ! त्या समयी कर्णाची फार भयंकर अवस्था झाली; त्याची मूठ सुटली, त्याच्या हातांतलें तें इंद्रचापतुल्य दिव्य धनुष्य व श्रेष्ठ बाण खाली पडले, आणि तो आपल्या वीरा-सनावरून घसरून रथांत मूर्छित पडला ! राजा, त्या समयी अर्जुनानें कर्णाला ठारच मारिलें असतें; परंतु कर्ण हा अशा प्रकारें विपन्न स्थितींत असतां त्यास ठार मारणें हें त्याशूर आर्याला प्रशस्त वाटलें नाहीं ! राजा धृतराष्ट्र, त्या वेळीं कृष्णानें अर्जुनाला मोठ्या लग्नगीनें विचारिलें, “ अर्जुना, तूं वेडा तर नाहींसना ? ओर, शत्रु दुर्बल झाले म्हणजे ज्ञानी लोक केव्हांही त्यांचा नाश करण्याला क्षणभर देग्वील विलंब लावीत नाहींत ! बाबांरे, शत्रूंचा वध करणें तो विशेषकरून ते संकटांत असतांच केला पाहिजे ! शहाण्यानें अशा स्थितींत शत्रूंचा नाश केल्यास त्याजकडून धर्माचरण होऊन शिवाय त्यास कीर्तीही मिळते ! ह्यास्तव, अर्जुना, तुझा बलाढ्य शत्रु जो कर्ण त्याला एकदम वधण्याची त्वरा कर ! बाबांरे, तो ताजातवाना झाला म्हणजे पुनः पूर्ववत् तुझ्यावर उडी घालील; म्हणून, इंद्रानें जसें नमुचीला वधिलें, तसें तूं ह्या कुरूवीराला वध ! ” राजा, नंतर अर्जुनानें कृष्णाला “ बरें आहे ” म्हणून म्हटलें; आणि तत्काळ जनार्दनाची पूजा करून पूर्वी शंकरासुराला मारणाऱ्या इंद्रानें जसा बलीवर बाणांचा भडिमार केला, तसा त्या कर्णावर जलाल बाणांचा भडिमार केला ! त्या समयी अर्जुनानें कर्णावर, त्याच्या अत्रांवर व त्याच्या सारथ्यावर वत्सदंत बाणांची अतिशय वृष्टि करून त्यांना अगदीं बाणांनीं खचून काढिलें व मोठ्या अवेशानें सुवर्ण-पुंगव बाण जिकडे तिकडे सोडून दशदिशा बाणांनीं आच्छादिल्या ! राजा, त्या वेळीं वत्सदंत

शरानां नखशिखांत ओतप्रोत व्यास झालेला तो भरदार छातीचा कर्ण अतिशयित फुललेल्या अशोक, पलाश किंवा शाल्मलि वृक्षाप्रमाणे अथवा चंदनकाननांने युक्त अशा पर्वताप्रमाणे दिसें लागला ! समरभूमीवर कर्णाच्या देहांत त्या समयीं इतके बाण रुतले होते की, ज्या-वरील शिबरे व दन्या वृक्षांनी अगदी व्यास झाल्या आहेत किंवा ज्याच्यावर कर्णिकारवृक्षांची राई अत्यंत पुष्पित झालेली आहे, अशा मोठ्या प्रचंड पर्वताप्रमाणे तो दिसत होता ! तथापि इतके झाले तरी कर्णाने फिरून नानाविध बाणांचे लोट अर्जुनावर सोडण्याचा सपाटा चालविलाच होता; आणि त्यामुळे, सायंकाळी सूर्य हा अस्ताचलावर मावळण्यामाठी जात असतां त्याचे बिंब जसें दिसते, तसा तो रक्त-बंबाळ कर्ण शररूप किरणांचा सभोंवार भडिमार करीत अमतां दिमला ! तेव्हां पुनः कर्णा-र्जुनांचे भयंकर युद्ध सुरू झाले; त्यांत प्रथम कर्णाने कृष्णार्जुनावर घोर सर्पाप्रमाणे जलाल बाण सोडिले; पण अर्जुनाने नंतर चोहोंकडे इतके जलाल बाण सोडिले की, अर्जुनाच्या त्या बाणांनी कर्णाच्या बाणांचे तुकडे उडवून त्यांचा पर्ण विव्धंस उडविला !

### कर्णाच्या रथाच्या चक्रांचे प्रसन.

राजा, नंतर कर्णाने मोठी छाती करून, खवळलेल्या सर्पाप्रमाणे भयंकर बाण शत्रूंवर सोडिले. त्या समयीं त्यानें दहा बाण अर्जुनावर व सहा बाण कृष्णावर टाकिले. तेव्हां महामति अर्जुनाने त्या महान् युद्धांत इंद्राच्या वज्रा-प्रमाणे अत्यंत दारुण शब्द करणारा व सर्प-विष किंवा अग्नि ह्यांप्रमाणे प्रखर असा एक पोलादी बाण एका भयंकर प्रचंड अस्त्राचे अभि-मंत्रण करून कर्णावर सोडण्याचे मनांत आणिले; तो कर्णाचा वधसमय प्राप्त झाला असे पाहून प्रत्यक्ष काल अदृश्यरूपाने कर्णाच्या समीप

आला; व त्यानें विप्रकोपामुळे आतां कर्णाचा वध होणार हें दर्शविण्याकरितां कर्णाला म्हटलें, 'कर्णा, पृथ्वीनें तुझ्या रथाचें चाक गिळिलें !' नंतर, राजा, महात्म्या भार्गवाने जे अस्त्र कर्णाला दिले हेतें, ते त्यास आठवेनासें झाले; व तित-क्यांत त्याच्या त्या मृत्युमययी त्याचा रथ घण-घणाट करीत जात असतां त्याचे डावें चाकही भूमिनें गिळिलें; व मग समरांगणांत तो सूतपुत्र फारच विह्वल झाला ! राजा, ब्राह्मणशापाने कर्णाच्या रथाचे चक्र भूमीत रुतले तेव्हां तो रथ पार बांधिलेल्या सुपुष्पित वडाच्या किंवा पिंपळा-च्या वृक्षाप्रमाणे कांही भूमीत व कांही वर असा दिसें लागला; आणि त्याची गति कुठित होऊन त्याजवर अधिरूढ अमलेल्या वीराला परशु-रामाच्या शापाने त्याजपासून संपादिलेल्या अस्त्रा-चे विस्मरण झाल्यामुळे तोही फार धावरून गेला ! राजा, इकडे आपण अर्जुनावर जे सर्प-तुल्य भयंकर बाण सोडिले होते, ते सर्व अर्जु-नाने तोडून टाकिले असे जेव्हां कर्णाने पाहिले, तेव्हां त्याच्या मनाम फारच विषाद उत्पन्न झाला; आणि त्याच्या मनांत ती सर्व दुःसह आपत्परंपरा उभी राहून भयाने त्याचे चित्त गांगरून गेले ! राजा, नंतर त्याने हातबोटें मोडून निदापूर्वक असे उद्गार काढिले, "अहा, धर्मवत्ते पुरुष नेहमी असे सागत आले की, धार्मिक पुरुषाला धर्म हा निश्चयाने राखितो. बरे, आम्हांविषयी म्हणाल तर आम्ही नित्य आमच्या बुद्धचनुरूप व शक्त्यनुरूप धर्माचरण करण्यास झटत आहों, आणि असे असतांही आम्हां धर्मशील जनांचे धर्म हा रक्षण न करितां आमचे उलट हननच करीत आहे; तेव्हां धर्मापासून सदांमर्वकाळ कल्याण होतें असें मला वाटत नाही !" राजा, कर्ण हा असे उद्गार काढीत असतां त्याजवर अर्जुनाने बाणांचा भडिमार चालविला होताच; त्यामुळे तो

स्वस्थानापामून चलित झाला आणि इकडे रथाचे अश्व व सारथि ह्यांनाही अडखळल्यामुळे हिसके बसले ! तेव्हां कर्णाचीं सर्व ममेस्थळे बाणविद्ध झालीं होती, ह्यास्तव त्याच्या अंगी पहिल्या-सारखी शक्ति राहिली नव्हती आणि त्यामुळे तो आपला पुनःपुनः धर्माचाच दूषणें देत बसला होता ! असो; नंतर कर्णानें हाताच्या ठिकाणीं अतिशय घोर असे तीन शर कृष्णाला व सात शर अर्जुनाला मारिले; आणि तें पाहून तत्काळ अर्जुनानें सरळ चालून जाणारे, इंद्राच्या वज्राप्रमाणें अनर्थ करणारे व अशीप्रमाणें जालून टाकणारे असे सतरा अतिशय तीक्ष्ण बाण कर्णावर सोडिले. ते बाण कर्णाच्या देहांत घुमून मोठ्या वेगानें बाहेर आले व भूतलावर पडले. तेव्हां कर्ण अगदीं कपित झाला व त्यानें आपल्या अंगी जितकी शक्ति होती तितकी सर्व प्रकट करून मोठ्या स्थिरपणानें ब्रह्मास्त्राचें निमंत्रण केलें ! तेव्हां, राजा, कर्णाच्या त्या ब्रह्मास्त्रावर अर्जुनानें ऐंद्रास्त्र योजिलें. त्या समयीं त्या शत्रुसंहारक वीरानें गांडीव, त्याची प्रत्यंचा व बाण ह्यांजवर ऐंद्रास्त्राचें अभिमंत्रण केलें; आणि इंद्राप्रमाणें बाणांचा असा भडिमार आरंभिला कीं, ते महातेजस्वी उग्र बाण एकसारखे कर्णाच्या रथावर आदळूं लागले ! परंतु त्या सर्व बाणांचा महारथ कर्णानें उलट बाण सोडून संहार उडविला. तेव्हां कृष्ण अर्जुनाला म्हणाला, 'अर्जुना, राधेयानें ह्या सर्व बाणांचा चुराडा उडविला; ह्यास्तव दुसरे प्रचंड अस्त्र सोड.' नंतर, राजा, अर्जुनानें ब्रह्मास्त्राचें सम्यक् अभिमंत्रण करून कर्णावर शरांचा भयंकर वर्षाव चालवून त्यास झांकून काढिलें, पण उलट कर्णानें अतिशय जलाल बाण सोडून अर्जुनाची प्रत्यंचाच छेदिली ! मग अर्जुनानें आपल्या गांडीवाला दुसरी, तिसरी, चौथी, पांचवी, सहावी, सातवी, आठवी, नववी, दहावी,

अकरावी अशा एकामागून एक—कर्णाने शतावधि बाण मारून जशजशा त्या प्रत्यंचा तोडिल्या; तसतशा नवीन शंबर प्रत्यंचा लाविल्या. परंतु इतक्या शंबर प्रत्यंचा अर्जुनापाशी असतील असे काहीं कर्णाला माहीत नव्हतें ! राजा, नंतर अर्जुनानें नवी प्रत्यंचा लावून पुनः अस्त्राचें निमंत्रण केलें आणि सर्प-तुल्य भयंकर शरांचा कर्णावर भडिमार चालवून त्यास अगदीं आच्छादून टाकिलें ! राजा, तेव्हां देखील कर्णानें अर्जुनाच्या धनुष्याच्या प्रत्यंचा छेदण्याचें काम चालविलेंच होतें; परंतु अखेरीस अर्जुनानें इतक्या जलदीनें बाणवृष्टि आरंभिली कीं, त्याच्या प्रत्यंचेवर कर्णाची दृष्टि ठरत नाहीशी झाली व त्यामुळे मग प्रत्यंचेचें छेदन बंद पडलें ! नंतर कर्णानें मोठा चमत्कार करून दाखविला. तो असा कीं, त्यानें अर्जुनाच्या अस्त्रांचा प्रतिकार करण्याकरितां दुसरीच अस्त्रे योजण्याचा क्रम सुरू केला; आणि त्यांत त्यानें अर्जुनावर सरशी केली ! त्या समयीं अर्जुन हा कर्णास्त्रानें अतिशय पीडित झाला असे पाहून कृष्ण त्याला म्हणाला, 'अर्जुना, पुनःपुनः तीं तीं अस्त्रे सोड आणि कर्णाला मागें हटव.' राजा, नंतर शत्रुसंहारक अर्जुनानें अशीसारखा प्रखर व सर्पविषासारखा भयंकर असा एक पोलादी बाण घेऊन त्याजवर एका प्रचंड अस्त्राचें अभिमंत्रण करून तो बाण त्यानें कर्णावर सोडण्याचा विचार केला. तों मी मघां सांगितल्याप्रमाणें कर्णाच्या रथाचें चाक पृथ्वीनें गिळिलें !

राजा धृतराष्ट्रा, त्या वेळीं तो सूतपुत्र ताबड-तोब रथांतून खाली उतरला आणि दोन्ही हातांनीं तें चक्र उचलून मोठ्या नेटानें वर काढूं लागला ! राजा, त्या समयीं कर्णानें चक्र गिळून टाकणारी ती पृथ्वी सप्तद्वीपें, पर्वत, जल व अरण्ये ह्यांसह वर्तमान चार अंगुलें वर



उचलिली, तरी त्याच्या रथाचे ते चक्र वर निघाले नाही ! तेव्हां कर्णाला अतिशय क्रोध चढला व त्याच्या नेत्रांतून अश्रुधारा वाहू लागल्या आणि अर्जुन आर्दी स्वळला आहे असे पाहून तो त्याप म्हाणाला, “ हे महाधनुर्धरा पार्था, क्षणभर थाव ! हे भूमीत रुतलेले चक्र मला वर काढ दे ! अर्जुना, दुर्दैवाने माझ्या रथाचे हे डावें चाक पृथ्वीत शिरले आहे हे अवलोकन कर आणि कांही वेळ तू आपले हेतु सिद्धीस नेऊ नको ! या वीरा, ह्या वेळी मी अगदी विपन्न अवस्थेत आहे, तेव्हां जर तू मजवर बाणक्षेपण करशील, तर तुझं ते वर्तन निंद्य होईल ! क्षत्र जनांप्रमाणे दुरावरण करणें तुला योग्य नाही ! कौतेया, युद्धकळामध्ये तुझी गणना विशिष्ट पुरुषांत आहे, म्हणून तुझ्या हातून अधिक प्रशस्त अमेच कर्म घडले पाहिजे ! अर्जुना, धर्मयुद्ध करणारे शूर साधु पुरुष केंस पिंजारलेल्या, युद्धाम विमान झालेल्या, शरण आलेल्या, शस्त्र टाकून दिलेल्या, याच-नेस उद्युक्त झालेल्या, ज्याला बाप नाही अशा, कवचहीन झालेल्या, व आयुधे गळून किंवा भंगून पडलेल्या वीरावर अथवा त्याप्रमाणेच ब्राह्मणावर कधीही शस्त्रप्रहार करीत नाहीत ! हे पांडवा, सर्व जगांत तू अत्यंत शूर व धार्मिक आहेस; युद्धाचे धर्म गुऱ्या पूर्ण विदित आहेत; श्रुतीचे रहस्य तू उत्कृष्ट जाणिले आहेस; तुला दिव्य अस्त्रांचे उत्तम ज्ञान आहे; आणि कार्तवीर्यासारखा तू अनुत्तवीर्यावान् आहेस ! ह्यासाठी, हे महाभुजा, मी हे चक्र भूमीतून वर उचलून काढीपर्यंत तू माझ्यावर शरवृष्ट करू नको ! तू रथावर अधिष्ठित आहेस व मी भूमीवर मोठ्या संकटांत आहे, इकडे तू लक्ष दे ! अर्जुना, मी तुला किंवा वामदेवाला भीत नाही. तू क्षत्रिय असून महान् कुळाचें विवर्धन करणारा आहेस;

ह्यास्तव मी तुला इतकीच विनंति करितो कीं, क्षणभर तू मला क्षमा कर ! ”

## अध्याय एक्याणवावा.

- ० :-

### कर्णाचा वध !

संजय सांगतो:-तेव्हां रथावर अधिष्ठित असलेला कृष्ण त्याला म्हाणाला, “ कर्णा, आतां ह्या स्थळीं तुला धर्माचें स्मरण होत आहे, हें तरी मोठें भाग्यच होय ! पण, बहुधा नीच पुरुष संकटांत बुडाले म्हणजे देवाला दोष लावितात. ते आपल्या दुष्कर्मांना दोष लावीत नाहीत. वा राधेया, दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि व तू ह्या तुझीं सर्वांनीं एक होऊन एकवस्त्रा द्रौपदीला जेव्हां सभेंत आणिले; तेव्हां मात्र तुझ्या हृदयांत धर्माचा उजेड पडला नाही ! त्याच-प्रमाणें, कर्णा, कौरवसभेंत शकुनीनें जाणूनबुजून असविद्येंत अज्ञान अशा धर्मराजाला कपटानें जिकलें, त्या वेळीं तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच, कर्णा, वनवासाचीं बारा वर्षे व अज्ञातवासाचें तेरावें वर्ष ही संपल्यावरही पांडवांचें राज्य पांडवाना तुझी परत दिलें नाही, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? बरे, दुर्योधनानें तुझ्या सल्ल्यानें भीमसेनाला विषाक्ष चारिलें व सर्प डसविले; तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच, राधेया, वारणावतांत लाक्षागृहामध्ये पांडव निद्रित असतां त्या लाक्षागृहाला तू बत्ती लाविलीस, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच, कर्णा, रजस्वला द्रौपदी सभेमध्ये दुःशासनाच्या तावडींत सांपडली असतां तू दांत काढून हंसलास, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच, कर्णा, पूर्वीं नीचांनीं द्रौपदीला विनाकारण क्लेश दिले आणि तेतुं जवळ असूनही निमृट्पणें पाहिलेस, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच



हे महाधनुर्धरा पार्था, क्षणभर थांब ! हे भूमंति स्तलेले चक्र  
मला वर काढ दे ! ( पृष्ठ २५४. ) कर्णपर्व.



कर्णा, कृष्णे, पांडवांचा आतां नाश झाला व ते शाश्वत नरकांत पडले, ह्यासाठीं तूं आतां दुसरा पति कर ! असें जेव्हां तूं गजगामिनीला म्हटलेस आणि तिचा धिक्कार केलास, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेच, कर्णा, तूं फिरून शकुनीचा आश्रय करून राज्य-लोभानें पांडवांना घृतासाठीं बोलाविलेस, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेच, कर्णा, तुझी पुष्कळ महारथांनीं एक होऊन रणांगणांत अभिमन्यु बाळाला कोंडून ठार मारिलें, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? बाबाऱे, जर ह्या धर्माकडे तुझीं त्या वेळीं लक्ष दिलें नाहीं, तर आतां व्यर्थ कंठशोष करण्यांत काय हंशील ? बा कर्णा, आज तूं कितीही धर्माचरण केलेस, तरी तुझी आज जिवंतपणें सुटका व्हावयाची नाहीं ! पहा—नल राजाला पुष्करानें घृतांत जिकिलें, परंतु त्यानें पुनः स्वपराक्रमानें राज्य व यश मिळविलें; तसेंच हे सर्व पांडव बाहु-बलानें व सोमकांच्या साहाय्यानें आपलें राज्य परत मिळविण्यासाठीं लोभ धरून मोठमोठ्या शत्रूंना संग्रामांत ठार मारतील; व नित्य धर्मावर पूर्ण भिस्त ठेऊन धार्तराष्ट्रांचा विध्वंस करतील आणि आपले मनोरथ सिद्धीस नेतील !”

संजय सांगतो, हे भारता, ह्याप्रमाणें कृष्णाचें भाषण श्रवण करून कर्णानें लाजून मान खाली घातली; आणि तो क्रोधानें दांतओठ चावीत धनुष्य उचलून मोठ्या अवेशानें व शौर्यानें अर्जुनाशीं लढूं लागला ! राजा, त्या समयीं वासुदेव हा नरवीर अर्जुनाला म्हणाला, ‘हे महाबला, दिव्यास्त्रानेंच कर्णाला ठार मारून टाक !’ राजा, कृष्णाचे हे शब्द अर्जुनाला मानवले व त्याला अतिशय क्रोध चढला; आणि कृष्ण हा कर्णाला जे कांहीं बोलला होता त्याचें त्यास स्मरण होऊन त्याचा देह संतापानें नख-शिखांत घेतला व त्याच्या सर्व रोमरंग्रांतून

क्रोधाच्या अगदीं ज्वाळा निघूं लागल्या ! राजा, त्या समयीं अर्जुनाची ती तशी अद्भुत स्थिति अवलोकन करून कर्णानें अर्जुनावर ब्रह्मास्त्र सोडिलें व त्यानवर वाणांचा भडिमार करून पुनः रथाचें चाक वर उचलण्याचा यत्न केला ! तेव्हां अर्जुनानेंही ब्रह्मास्त्रच सोडून कर्णावर उग्र शरवृष्टि केली आणि कर्णाचें ब्रह्मास्त्र व्यर्थ दवडिलें ! नंतर अर्जुनानें आपणाला प्रिय असें दुसरें आदोय अस्त्र कर्णावर सोडिलें तेव्हां तें अग्नीसारखें भडकलें ! तेव्हां कर्णानें त्यावर वारुणास्त्र टाकिलें व त्याचा उपशम केला ! कर्णानें वारुणास्त्राचें अभिमंत्रण केलें असतां जिकडे तिकडे मेघच मेघ उत्पन्न झाले व त्यांनीं सर्वत्र अंधार पडून कांहींएक दिसे-नासें झालें; तेव्हां वीर्यशाली अर्जुनानें लागलेच न गडबडतां वायव्यास सोडिलें व राधेय हा पहात असतां त्यानें उत्पन्न केलेल्या त्या सर्व मेघांची दाणादाण करून त्यांस उधळून लाविलें ! नंतर पांडुपुत्राला वधण्याकरितां कर्णानें प्रज्व-लित अशा अग्नीसारखा एक भयंकर शर हातांत घेतला व धनुष्याची पूजा करून तो शर त्या धनुष्याला लाविला; तो, राजा, पर्वत, जल व अरण्य ह्यांसहवर्तमान सर्व पृथ्वी हालूं लागली आणि प्रचंड वारा सुटून जिकडे तिकडे दगडगोटे उडूं लागले व दशदिशा घुळीनें भरून गेल्या ! हे भारता, तेव्हां अंतरिक्षांत देवांमध्ये मोठा हाहाकार उडाला आणि सूतपुत्रानें तो वाण धनुष्याला जोडिला असें पाहातांच पांडवांचा धीर सुटून ते अगदीं घाब-रून गेले ! राजा, नंतर कर्णानें इंद्राच्या वज्रा-प्रमाणें झळाळणारा असा तो जलाल वाण अर्जुनावर सोडिला, तेव्हां तो अर्जुनाचें हृदय विदारून-प्रचंड नाग जसा सळाळत वास्ळांत घुसतो तसा—आंत घुसला आणि त्याच्या योगें महात्मा अर्जुन अतिशयित विद्ध होऊन धर-

थर कांपला व त्याच्या हातांतून गांडीव धनुष्य गळून खाली पडलें ! राजा, त्या समयीं जणू काय धरणीकंप होऊन महान् पर्वतच थरथर हालला असें वाटलें ! ह्याप्रमाणें अर्जुनाची विपन्न अवस्था केल्यावर ती संधि साधून कर्णानें पुनः रथांतून खाली उडी टाकिली व फिरून भूमीत रुतलेलें चाक वर काढण्याचा यत्न आरंभिला ! राजा, त्या वेळीं महाबलवान् कर्णानें मोठ्या जोरानें दोन्ही हातांनीं तें चाक वर उचलण्याचा प्रयत्न केला, पण त्याचें देव प्रतिकूल झाल्यामुळे त्याचा तो प्रयत्न सिद्धीस गेला नाही ! इतक्यांत इकडे महात्मा अर्जुन पुनः सावध झाला व त्यानें दुसरा कालदंडच असा एक भयंकर प्रांजलिक बाण हातांत घेतला ! राजा, तेव्हां वामदेव पुनः अर्जुनाला ह्मणाला, “अर्जुना, हा शत्रु पुनः रथावर आरूढ झाला नाही तो त्याचें बाणानें मस्तक उडव ! ” तेव्हां ‘ बरें आहे ’ असें ह्मणून अर्जुनानें कृष्णाच्या सूचनस मान दिला; व एक प्रज्वलित बाण धारण करून, कर्णाच्या रथाचें चाक भूमीत रुतलेलें आहे तोंच त्याच्या महान् रथाची सूर्याप्रमाणें शुभ्र व देदीप्यमान हस्तिकक्षा व ध्वज हीं तोडून टाकिली ! राजा, कर्णाच्या त्या ध्वजाचें काय वर्णन करावें ? ज्याच्यावर हत्तीचें प्रचंड दोरखंड लोंबत होतें, अशा त्या कर्णध्वजावर सुवर्ण, मौक्तिकें, रत्नें व हिरे ह्यांचें शिल्पकलेंत अत्यंत निपुण अशा कारागिरांनीं चित्रविचित्र कोंद्रणकाम केलें होतें; त्या सुवर्णालंकृत ध्वजाचा घाट मोठा सुंदर असून, तो जेथे जेथे असेल तेथे तेथे तुझे सैन्य नित्य विजयी व्हावयाचेंच असा अबाधित नियम चाललेला होता; तो वंदनीय ध्वज सन्निध प्राप्त झाला म्हणजे शत्रूंना महान् भीति उत्पन्न होई; आदित्याप्रमाणें देदीप्यमान असा तो ध्वज सर्व जगांत प्रसिद्ध होता;

आणि त्याची कांति भानु किंवा चंद्र ह्यांप्रमाणें रमणीय होती ! राजा, अशा प्रकारचा तो कर्णाचा अद्वितीय ध्वज अर्जुनानें अतिशय धार दिलेल्या सुवर्णपुंगव अग्निमुल्य प्रज्वलित क्षुरप्र-बाणानें भंग करून पाडिला, तेव्हां त्याजबरोबर कौरवांचें यश, दुर्ग, त्यांचे प्रियतम उद्दिष्ट हेतु व त्यांची कार्ये हीं सर्व भंग होऊन समाप्त झालीं व महाभीतीनें त्यांचीं अंतःकरणे विदीर्ण होऊन जिकडे तिकडे महान् हाहाकार उडाला ! राजा, ह्याप्रमाणें कुरुकुलावतंस अर्जुनानें हां हां ह्मणतां रणांत कर्णाचा ध्वज तोडून पाडिला तेव्हां तुझ्या सैनिकांपैकी कोणालाही आतां कर्णाला जय मिलेल अशी आशा उरली नाही, आणि ते सर्व हताश होत्साते हळहळू लागले ! नंतर मोठ्या त्वरेनें अर्जुनानें महेंद्राच्या वज्रासारखा किंवा अग्नीच्या दंडासारखा भयंकर व रवीच्या किरणांसारखा तेजस्वी असा एक आंजलिक शर बाणमात्यांतून काढिला; आणि तो मर्मस्थलांचा भेद करणारा, रुधिर व मांस ह्यांनीं माखलेला, वैश्वानर किंवा सूर्य ह्यांसारखा प्रवर, महामूल्यवान्, नर, अश्व व गज ह्यांचे प्राण घेणारा, तीन हात लांब असलेला, ज्याला सहा पिसें पुंग्वस्थानी लाविलीं होतीं असा, सहस्रनेत्र इंद्राच्या वज्राप्रमाणें वळकट, प्रलयकालच्या अग्नीप्रमाणें आ करून खाऊन टाकण्यास तयार, पिनाक धनुष्य व सुदर्शन चक्र ह्यांप्रमाणें दारुण व प्राण्यांचा समूळ घात करणारा असा बाण-- देवसंघांनाही जो दुर्निवार्य, सर्वांना जो नित्य वंदनीय व सुरासुरांनाही जो जिंकणारा अशा त्या महाधनुर्धर महात्म्या अर्जुनानें रणांगणांत मोठ्या आवेशानें उचलिला, असें पाहून सर्व स्थावरजंगम जग थरथर हाळू लागलें आणि ‘ सर्व जगत सुखी असो ! ’ असे ऋषींनीं मोठ्यानें उद्गार काढिले ! राजा, नंतर त्या गांडीवध्वन्या अर्जुनानें तो अतुलवीर्यवान् शर धनुष्याला

जोडिला आणि त्याच्यावर महान् अस्त्राचें अभि-  
मंत्रण करून तो आकर्ण ओढिला व आतां  
शत्रूवर सोडावयाचा, तों मोठ्या त्वरेनें त्यानें  
गांडीव धनुष्याला ह्मटलें, ' बा गांडीवा, महान्  
अस्त्राच्या शक्तीनें अभिमंत्रित केलेला हा प्रचंड  
बाण शत्रूच्या देहाचें व प्राणांचें हरण करो !  
जर मीं तपश्चर्या केली असेल, गुरुजनांना  
संतोषविलें असेल आणि आप्तेष्टांचा हितबोध  
ऐकिला असेल, तर त्या सर्व पुण्याच्या योगानें  
सदासर्वकाळ जपून ठेवलेला हा माझा जलाल  
शर माझा प्रचंड शत्रु जो कर्ण त्याचा वध करो ! '

राजा धृतराष्ट्रा, असें बोलून धनंजयानें तो  
घोर बाण कर्णाच्या वधाकरितां त्याजवर  
सोडिला आणि अथर्वांगिरसी कृत्येप्रमाणें  
( प्राणघातक देवतेप्रमाणें ) भयंकर व युद्धांत  
प्रत्यक्ष मृत्यूलाही दुःसह असा तो बाण अग्नी-  
च्या ज्याळेप्रमाणें कर्णावर जात असतां अर्जुन  
मोठ्या आनंदानें ह्मणाला की, ' ह्या बाणानें  
मला विजयी करावें आणि कर्णाला यमसदनीं  
पाठवावें ! ' राजा, नंतर तो बाण कर्णाचे प्राण  
घेण्याकरितां मोठ्या वेगानें त्याजवर धावून  
जात असतां त्याच्या योगें दशदिशा व अंत-  
रिक्ष हीं पेटलीं; आणि अखेरीस, महेंद्राच्या  
वज्रानें जसें वृत्रासुराचें मस्तक उडविलें, तसें  
अर्जुनाच्या त्या बाणानें कर्णाचें मस्तक उड-  
विलें ! राजा, ह्याप्रमाणें महेंद्रपुत्र अर्जुनानें श्रेष्ठ  
प्रतीच्या आजलिक बाणावर महास्त्राचें अभि-  
मंत्रण करून त्याच्या योगें तिसरे प्रहरी विकर्तन-  
पुत्र कर्णाचें मस्तक छेदून टाकिलें ! तेव्हां तें  
प्रथम भूतलावर पडलें आणि मग त्याचें तें धड  
खालीं कोसळलें ! राजा, प्रातःकालच्या सूर्य-  
निंबाप्रमाणें तेजस्वी आणि शरद्वृत्तील मध्या-  
ह्नीच्या सूर्याप्रमाणें देदीप्यमान असें तें कर्णाचें  
मस्तक रणभूमीवर कौरवसैन्याच्या अग्रभागीं  
पतन पावले, तेव्हां जणू काय आरक्तवर्ण सूर्यच

अस्ताचलावरून खालीं पडला असें वाटलें !  
राजा, त्या समयीं अत्यंत उदार अशा कर्णा-  
च्या त्या उत्तमांगानें कर्णाचा तो नित्य सुख  
भोगणारा व अतिशय सुंदर असा देह मोठ्या  
कष्टानें सोडिला ! ज्याप्रमाणें एखाद्या धनिक  
पुरुषाला सर्व प्रकारच्या संपत्तीनें सुसमृद्ध  
असें आपलें प्रिय गृह सोडून देण्यास अवघड  
वाटतें, तसें कर्णाच्या मस्तकाला, आपण ज्याच्या  
योगें विलास भोगिले असें तें कर्णाचें शरीर  
सोडून देतांना फार अवघड वाटलें ! असो.  
राजा, प्रतापशाली कर्णाचें मस्तक भूतलावर  
पडल्यानंतर, बाणप्रहारानीं आधीच छिन्नभिन्न  
होऊन गेलेलें त्याचें धिप्पाड शरीरही प्राण-  
हीन होताना रणांगणांत पडलें; आणि ज्या-  
प्रमाणें कावेच्या पर्वताचें शिखर वज्रानें हत झालें  
असतां खालीं कोसळून त्यांतून आरक्तवर्ण  
उदकाचे प्रवाह चालतात, त्याप्रमाणें कर्णाच्या  
त्या देहव्रणांतून रुधिराचे प्रवाह एकसारखे चालू  
झाले ! राजा, इकडे कर्ण हा धारातीर्थी पडतांच  
त्याच्या शरीरांतून एक ज्योति निवाली व ती  
अंतरिक्षांत सूर्यामध्ये जाऊन मिळाली, आणि  
हा चमत्कार सर्व मानव वीरांनी रणांगणांत  
अवलोकन केला !

ह्याप्रमाणें अर्जुनानें कर्णाचा वध केला असें  
पाहातांच पांडवांनीं मोठमोठ्यानें शंख वाज-  
विण्यास आरंभ केला ! त्याप्रमाणेंच कृष्णार्जुन  
हे मोठ्या प्रसन्न अंतःकरणांनें शंखनाद करूं  
लागले ! आणि सोमकांनींही कर्णाला समर-  
भूमीवर मरून पडलेला पाहून सिंहासारख्या  
गर्जना चालविल्या ! राजा, त्या वेळीं पांडव-  
सैन्यांत जिकडे तिकडे आनंदानें वाद्यघोष होऊं  
लागला; योद्ध्यांनीं हात वर करून वखें फड-  
काविलीं; आणि आनंदानें त्यांचे देह स्फुरण  
पावून ते सर्व तत्काळ आपापल्या सैन्यासह  
अर्जुनाच्या समीप आले ! राजा, त्या समयीं

अर्जुनाच्या बाणप्रहारांनी कर्णाचा वध होऊन तो भूतलावर मातीत पडला आहे असे जेव्हां कित्येक वीरांनी पाहिले, तेव्हां ते आनंदाने ' बरे झाले! बरे झाले! ' असे ओरडत व एकमेकांना मिठ्या मारीत अगदी नाचूच लागले! असो; राजा, प्रचंड वाऱ्याने जसे पर्वताचे शिखर कोसळून पडोवें, किंवा यज्ञाची समाप्ति झाली ह्मणजे जसा अग्नि शांत व्हावा, तसे कर्णाचे ते छिन्न झालेले मस्तक अस्तंगत सूर्यबिंबाप्रमाणे रणांगणांत शोभत होतें! त्याणि त्याचा नव-शिखांत बाणविद्ध आणि रुधिराधानें परिप्लुत असा तो देह प्रकाशकिरणांनी परिवृत अशा सूर्यबिंबाप्रमाणे झळकत होता! असा. राजा, ज्या कर्णरूप रवीने शररूप किरणांनी पांडवीय सेनेला दग्ध केलें, त्याच कर्णरूप भास्करास अखेरीस अर्जुनरूप बलिष्ठ कालानें अस्तंगत करून टाकिले! राजा, अस्तास जाणारा सूर्य ज्याप्रमाणे प्रभा घेऊन नाहीसा होतो, त्याप्रमाणे अर्जुनानें कर्णावर टाकलेला बाण कर्णाच्या त्या मरणदिवशीं तिमरे प्रहरीं खुशाल कर्णाचे जीवित घेऊन कौरवांकडील सर्व सैन्यासमक्ष नाहीसा झाला! आणि ह्याप्रमाणे शूर कर्ण रणांत पतन पावल्यावर मद्राधीश शल्य त्याचा भयध्वज रथ घेऊन रणांगणांतून निघून गेला; व बाणप्रहारांनी अत्यंत विद्ध झालेले कौरव भयभीत होत्साले अर्जुनाचा देदीप्यमान ध्वज अवलोकन करीत दूर पळून गेले!

### अध्याय व्याण्णवावा.

—:०:—

शल्यार्चे परत येणे.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे कर्णार्जुनाचा घनघोर संग्राम होऊन त्यांत कर्णाच्या रथाचे चाक भूमिने गिळिल्यावर तो पादचारी कर्ण निकरानें युद्ध करीत अस्तंतां

अर्जुनाच्या हस्ते मरण पावला असे अवलोकन करून, आणि त्याप्रमाणेच बाणप्रहारांनी कौरवांची सैन्ये नष्ट झालीं असे पाहून, शल्य हा कर्णाचा तो मोडकातोडका व ध्वजरहित रथ घेऊन रणांगणांतून मार्गें वळला; आणि दुर्योधनाच्या समीप प्राप्त झाला, व त्याने त्यास सर्व वृत्त निवेदन केले! तेव्हां, राजा, युद्धांत कर्ण पडला आणि हत्ती, घोडे, रथ व नर ह्यांचा भयंकर संहार उडाला असे श्रवण करून दुर्योधनाचे नेत्र अश्रूंनी भरून आले; आणि तो अत्यंत खिन्न होत्साला मोठ्या दैन्याने पुनःपुनः दुःखाचे सुसकारे टाकू लागला! राजा, अर्जुनाच्या हस्ते कर्ण मरण पावला असे म्हणण्यापेक्षां तो केवळ देवघटनानुसार रणांत पडला असेच मला वाटते! कर्णाचा देह रणभूमीवर पतन पावला तेव्हां जणू काय अंतरिक्षांतून सूर्यच यद्दच्छेनें भूतलावर पतन पावला असे सर्वांना भासले! असो; राजा, तो शूर कर्ण नखशिखांत बाणविद्ध होऊन धरणीवर पडला असतां व त्याच्या सर्व गात्रांतून रुधिराचे पाट वाहात असतां बहुत वीरपुरुष त्यास पाहाण्यासाठीं तेथें येऊन त्याजभोंवतालीं उभे राहिले! राजा, त्या समयी जे पुरुष तेथें होते, त्यांची मनोवृत्ति भिन्नभिन्न प्रकारची झाली. अर्जुनादिक पांडवीय योद्ध्यांना मोठा आनंद वाटला; भीरुजन अतिशय घाबरले; कौरवांकडील वीर अत्यंत खिन्न झाले; आणि जे केवळ प्रेक्षक होते, त्यांना फार विस्मय वाटला! सारांश, त्या वेळीं शत्रूंकडील, तुझ्याकडील किंवा उदासीन असे जे पुरुष त्या स्थळीं प्राप्त झाले होते, ते आपापल्या प्रकृत्यनुसार सुखदुःखादिक विकार पावले! राजा, महावीर्यशाली कर्णाचे कवच, अलंकार, वस्त्रे व आयुधें ह्यांचा विध्वंस उडवून त्यास अर्जुनानें रणांगणांत ठार मारिले, असे जेव्हां कौरवसैन्यांनी ऐकिले, तेव्हां भयाच्च

अरण्यांत म्होरक्या बैल ठार झाला असतां गाईचे कळप जसे हताश होऊन सैरावैरा धावत सुटतात तशीं तीं कौरवसैन्ये सैरावैरा धावत सुटलीं ! राजा, त्या समयीं भीमानें तर प्रचंड गर्जना करून अंतरिक्ष व पृथ्वी अगदी दणाणून सोडिली, तो मोठ्या आवेशानें बढाई मारीत नाचूं लागला, आणि त्यामुळें आतां भूमंडळ विदीर्ण होणार असें भासून सर्व धार्तराष्ट्र अतिशयित भयभीत झाले ! राजा, त्याप्रमाणेंच त्यावेळीं सोमकांनी व सृंजयांनीं शंख वाजविले आणि इतर क्षत्रियांनीं मोठ्या आनंदानें एकमेकांस आलिंगन दिलें ! राजा, सिंहांने जसा हत्तीचा वध करावा, तसा अर्जुनानें रणांगणांत कर्णाशीं घोर संग्राम करून त्याचा वध केला आणि त्या नरश्रेष्ठानें आपली प्रतिज्ञा सिद्धीस नेऊन कर्णाचें वर कायमचें संपविलें ! राजा, नंतर मद्राधिप शल्य भयभीत होत्समाता भग्नध्वज रथ घेऊन दुर्योधनाच्या समीप आला आणि नेत्रांतून अश्रु दाळीत त्यानें मोठ्या कष्टानें दुर्योधनाला निवेदन केलें कीं, “ दुर्योधन राजा, तुझ्या सैन्यानील रथ, गज, अश्व व नर ह्यांचा संहार उडाला ! रणांगणांत तुझ्या सैन्याची जी अवस्था झाली ती पाहून मला केवळ तें यमाचेंच राष्ट्र होय असें वाटलें ! राजा, तुझ्या सैन्यांत पर्वताच्या शिखरांप्रमाणें प्रचंड असे गज, अश्व व नर ह्यांनीं एकमेकांना तुडविल्यामुळें फारच नाश झाला ! राजा, कर्ण व अर्जुन ह्यांचें जसे युद्ध झालें तसे युद्ध आजपर्यंत कधीच झालें नाही ? कर्णानें कृष्णार्जुनांना व त्याचप्रमाणें तुझ्या सर्व शत्रूंना अगदी ग्रामून टाकिले; परंतु खचित देव हें पांडवांना अनुकूल झाल्यामुळें त्यानें पांडवांचें संरक्षण केले व आमचा संहार उडविला ! राजा, तुझा कार्यभाग सिद्धीस नेण्यासाठीं जे वीर तुझ्या बाजूनें लढत होते, त्यांचाही शत्रूंनीं मोठ्या त्वेषानें

वध केला ! राजा, तुझ्या पक्षाचे योद्धे बल, वीर्य, शौर्य, तेज व इतर गुण ह्यांमध्ये यम, कुबेर व इंद्र ह्यांप्रमाणें संपन्न असल्यामुळें अगदीं अवध्य असे होते, तथापि त्या सर्वांना पांडवांनीं रणांगणांत ठार मारिलें ! हा सर्व देवाचा खेळ आहे ! ह्याविषयी शोक करण्यांत अर्थ नाही ! मनाचा धीर खचूं देऊं नको ! नेहमी जयच मिळेल असा काय भरवसा आहे ? ” राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें मद्राधीशाचें भाषण श्रवण करून आणि आपल्या हातून जीं जीं दुष्ट कृत्यें घडलीं होती तीं तीं मनांत आणून दुर्योधनाला अतिशय खेद वाटला व तो पुनःपुनः दुःखाचे सुसकारे टाकीत मूर्छित पडला !

## अध्याय त्रयाण्णवावा.

—:०:—

### कौरवसैन्याचें पलायन.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, कर्णार्जुनांचा घोर संग्राम होऊन त्यांत दारुण समय प्राप्त झाला, शरवर्षावरूप भयंकर अग्नीनें कुरुसृंजयाचें सैन्य दग्ध होऊन पळून जाऊं लागलें. आणि अखेरीस बाणप्रहरांनी त्याचा पूर्ण विध्वंस उडाला, तेव्हां मग त्या सैन्याची अवस्था काय झाली बरे ?

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, त्या वेळीं गज, अश्व व नर ह्यांचा रणभूमीवर जो महान् क्षय झाला, तो सावधान चित्तानें श्रवण कर. कर्णाला ठार मारून अर्जुनानें जेव्हां सिंहासारखी गर्जना आरंभिली, तेव्हां तुझे पुत्र फारच घाबरले आणि तुझ्या सैन्यानीं एकदम पळ काढिला ! राजा, त्या समयीं तुझ्याकडील कोणताही वीर त्या सैन्यांना आवरून धरण्यास किंवा शौर्यानें पांडवांवर चालून जाण्यास धजला नाही ! त्या वेळीं कौरवसैन्याचा महान् आधार जो कर्ण तो अर्जुनाच्या हस्ते रणांत पडतांच,



कौरवांकडील योद्ध्यांची, अगाध समुद्रांत तारूं फुटलें असतां त्यामध्ये बसलेल्या वणिगजनांची जशी अवस्था होते तशी अवस्था झाली; आणि ते जीव घेऊन सरावरा पळत सुटले ! राजा, सेनानायक कर्ण हा पतन पावल्यावर, शस्त्रप्रहारांनी घायाळ झालेले कौरववीर फारच भयभीत झाले आणि अगदीं दीन होतसाते 'आतां आम्हांस कोण तारील ! आतां आम्हांस कोण तारील !' असा आक्रोश करीत, सिंहव्रस्त मृगांप्रमाणें, भयशृंग वृषभांप्रमाणें किंवा दांत पाडिलेल्या सर्पांप्रमाणें वाट मिळाली तिकडे धूम ठोकून धावू लागले ! राजा, स्वयसाची अर्जुनानें पराजित केल्यावर, ज्यांतील महान् महान् वीर रणांत पडले होते व निशित बाणांनी ज्यांची अगदी कत्तल होऊन पूर्ण वाताहत झाली होती, ती तूमी मैन्यें सायंकाळीं परत गोटांत गेली ! राजा, सूतपुत्राच्या वधानंतर तुझ्या पुत्रांची तर फारच दुर्दशा उडाली ! त्यांच्या अंगांतील कवचें फाटून तुटून गेली; हातांतील आयुधें गळून पडली; भयानें त्यांची धारण पांचावर बसल्यामुळें आपण कोणत्या दिशेस पळत आहों हेंही भान त्यांस उरलें नाहीं; आणि गडबडीन आपापल्याच सैन्यांचा नाश करीत व परस्परांकडे दीनमुद्रेनें पहात, अहो, खचित अर्जुन माझाच पाठलाग करीत आहे ! अहो, खचित वृकोदर माझ्याच पाठीवर आला ! असें मानून धाबरेल व बेशुद्ध होऊन धडाधड पडले ! राजा, मग त्या तुझ्या पुत्रांची व त्यांच्या सैन्यांची जी अवस्था झाली ती काय वर्णावी ! त्यांपैकी कित्येक महारथ गजांवर, कित्येक हयांवर, कित्येक रथांवर आणि कित्येक तर पायदळांतील सैनिकांच्या खांद्यांवर वगैरे बसले आणि मोठ्या वेगानें पळून गेले ! राजा, ते योद्धे पळत असतां त्यांची अशी त्रेधा उडाली की, त्यांतील

गजानीं रथांचा, महारथांनीं घोडेस्वारांचा व घोड्यांच्या समुदायांनी पायदळटोड्यांचा पायांनीं तुडवून चेंदामेंदा केला ! राजा, हिंसक पशु व चोरटे ह्यांनीं गजबजून गेलेल्या अरण्यांत व्यापारी लोकांच्या वगैरे तांड्याचा आश्रय नाहीसा झाला म्हणजे प्रवासी जनांची जी दुर्धर अवस्था होते, तीच अवस्था कर्णाच्या वधानंतर तुझ्या योद्ध्यांची झाली ! त्या समयी, राजा, वीररहित झालेले गज किंवा हस्त-रहित झालेले नर जसे अगदीं दीन होतात, तसे तुझे वीर झाले; आणि त्या सर्वांना भीतीनें प्रत्येक वस्तूंत अर्जुन दिसें लागला ! पुढें भीमसेनाच्या भयानें कौरवांकडील वीर पळत असलेले पाहून दुर्योधनानें मोठ्या दुःखानें 'हाय ! हाय !' असे उद्गार काढिले व आपल्या सारख्याला ह्मटलें, " बा सूता, माझ्या हातांत धनुष्य सज्ज असल्यामुळें भीमसेन माझ्या वाटेस जाणार नाही; ह्याकरितां सर्व सैन्यांच्या पिडाडीस माझा रथ सावकाश चालव. बा सारथे, आज भीमसेन जर माझ्याशी युद्ध करण्यास प्राप्त झाला, तर त्यास मी खचित वधीन. समुद्र कितीही अफाट असला तरी तो जसा सीमेचे अतिक्रमण करूं शकत नाहीं, तसा तो महाधनुर्धर भीमसेन माझें अतिक्रमण करूं शकणार नाहीं ! सूता, आज मी त्या मानी भीमाम, त्या कृष्णार्जुनांस व त्याचप्रमाणें दुसऱ्या महान् महान् पांडववीरांस ठार मारीन आणि कर्णाच्या ऋणांतून उतराई होईन ! "

राजा धृतराष्ट्रा, आर्य वीराला साजेले असें त्या कुरुराज दुर्योधनाचे तें भाषण श्रवण करून सूतानें दुर्योधनाच्या रथाचे ते सुवर्णाचे शृंगार चढविलेले अश्व हळूहळू चालविले; आणि तें पाहून, ज्यामध्ये रथ, अश्व व गज मुळीच नव्हते असें कोरवांचे पंचवीस हजार पायदळ एकदम युद्धाला तोंड देऊन उभे

राहिलें ! राजा, त्या समयीं भीमसेन व धृष्ट-  
द्युम्न हे फारच संतापले व त्यांनीं चतुरंग  
सैन्यानिशीं बाणांचा भडिमार करीत एकदम  
त्याला वेढा दिला ! राजा, मग दोन्ही दळांचें  
भयंकर रणकंदन सुरू झालें ! त्या समयीं  
कौरवांकडील कित्येक वीर भीमसेन व धृष्टद्युम्न  
ह्यांचीं नांवें घेऊन त्यांच्यांशीं लढूं लागले;  
आणि त्यामुळें भीमसेनास फारच क्रोध चढून  
तो रथांतून लागलाच खालीं उतरला व हातांत  
गदा धारण करून त्यानें त्या कौरवसैन्याशीं युद्ध  
आरंभिलें ! राजा, तेव्हां भीमसेन हा रथांतून  
खालीं उतरला ह्याचें कारण असें कीं, त्या  
समयीं कौरवांचें पायदळ मात्र त्या भीमसेन-  
धृष्टद्युम्नांशीं लढत होतें, ह्यास्तव पादचारी  
होऊन केवळ बाहुबलांनं शत्रूंचीं युद्ध करावें  
हेंच त्या युद्धधर्मज्ञ कुंतीपुत्राला प्रशस्त वाटलें !  
त्या वेळीं भीमसेनानें सुवर्णलंकृत प्रचंड गदेनें  
दंडपाणि यमाप्रमाणें तुझ्या सर्व योद्ध्यांवर प्रहार  
चालविले; परंतु तुझेंही तें सर्व सैन्य पराक्रमी  
असल्यामुळें जिवाची आशा न धरितां समरां-  
गणांत—टोळ जसे अग्नीवर तुटून पडतात तसे—  
भीमसेनावर तुटून पडलें; आणि मग मोठा घन-  
घोर संग्राम माजून बेहोष होऊन झुंजत अस-  
लेले ते सर्व कौरववीर—प्राणिसमुदाय जसे  
यमदंडानें मरण पावतात तसे—एकाएकीं भीम-  
सेनाच्या गदेनें मरण पावले ! राजा, तेव्हां  
महाबलवान् भीमसेन श्येय पक्ष्यासारखा अंत-  
रिक्षांत गरगर घिरट्या घालूं लागला आणि  
त्यानें गदेचे प्रहार करून तुझें पंचवीस हजार  
सैन्य मृत्युमुखी लोटिलें ! ह्याप्रमाणें तुझ्या  
नरसैन्याचा संहार उडविल्यावर सत्यपराक्रमी  
भीमसेन धृष्टद्युम्नाला पुढें करून तेथेंच उभा  
राहिला; इतक्यांत कौरवांच्या उर्वरित रथ-  
सेनेवर वीर्यशाली अर्जुनानें हल्ला केला आणि  
नकुल, सहदेव व महारथ सात्यकि हे तत्काळ

मोठ्या वीरश्रीनें व वेगानें शकुनीवर चालून  
गेले ! नंतर नकुल, सहदेव व सात्यकि ह्यांनीं  
जलाल बाणांचा भडिमार करून सोबलाचे बहुत  
घोडेस्वार ठार मारिले आणि मग ते मोठ्या  
त्वरेंनें खुद सोबलावर धावून जाऊन तेथें मोठा  
भयंकर रणसंग्राम मातला ! राजा, इकडे तुझ्या  
उर्वरित रथसेनेवर अर्जुनानें तिन्ही लोकांत  
प्रख्यात अशा गांडीव धनुष्याचा टणत्कार  
करीत हल्ला केला; तेव्हां त्याचा तो श्वेत अश्व  
जोडिलेला रथ, त्यावरील कृष्ण सारथि आणि  
त्यांत आरूढ असलेला अर्जुन ह्यांस पाहातांच  
तुझ्या सैनिकांचें धाबें दणाणलें व त्यांनीं  
तत्काळ पळ काढिला !

याप्रमाणें कर्णाच्या वधानंतर कौरवपांडवांचें  
पुनः युद्ध चालू झालें, त्यांत पांचालांचा महा-  
रथ महात्मा धृष्टद्युम्न ह्यानें बाणांचा भडिमार  
करून पंचवीस हजार वीरांना रथहीन केलें;  
व त्या सर्व पादचारी सैन्याला यमसदनीं पाठ-  
वून व भीमसेनाला पुढें करून तो रणांगणांत  
तत्काळ प्रकट झाला ! राजा, तेव्हां तो शत्रु-  
संहारक महाधनुर्धर भाग्यशाली धृष्टद्युम्न, ज्याला  
पारव्यांच्या वर्णाप्रमाणें वर्ण असलेले अश्व  
जोडिले होते व ज्यावर कांचनाचा ध्वज झळ-  
कत होता अशा रथांत आरूढ होऊन समरांग-  
णांत प्राप्त झाला असें पाहातांच तुझें सैन्य पुनः  
भ्यालें व पळत सुटलें ! राजा, इकडे दोघे  
माद्रीपुत्र सात्यकीसह सोबल शकुनीशी लढत  
होते, त्यांस आणखी चेकितान, शिखंडी व  
द्रोपदीचे पुत्र हे जाऊन मिळाले; आणि मग त्या  
सर्वांनीं तुझ्या प्रचंड सैन्याचें हनन करून  
आपले शंख वाजविले; व उरलेंमुरलें जें तुझें  
सैन्य युद्धविमुख होऊन पळून जाऊं लागलें,  
त्यांचा, चवताळलेल्या बैलांचा पाठलाग जसे  
दुसरे बैल करितात तसा, त्यांनीं पाठलाग  
केला ! राजा, ह्याहीउपर जें तुझें रथसैन्य

अवशिष्ट राहिले होते, त्यावर महाबलिष्ठ सव्यसाची अर्जुनाने मोठ्या क्रोधाने चाल केली आणि त्यावर गांडीव धनुष्याने शरांचा एकदम भडिमार चालविला ! त्या समयी जिकडे तिकडे अंधकार पडला; आणि त्यामुळे, आधीच धुळीने व्याप्त झालेल्या त्या महीतलावर कांही-एक दिसेनासे झाले ! राजा, तेव्हा तुझ्या पक्षाचे सर्व योद्धे घाबरले व ज्यांना जिकडला मार्ग सापडला तिकडे ते पळून गेले ! ह्याप्रमाणे कौरवसैन्याचा अगदी मोड झाला तेव्हा तुझा पुत्र दुर्योधन याने जे शत्रु आपल्यावर चालून आले होते त्यांवर एकदम हल्ला केला आणि त्याने इतर पांडवांस-बलीने जसे देवांना तसे-युद्धार्थ आह्वान केले ! नंतर ते सर्व पांडववीर एकत्र जमून मोठ्याने गर्जना करीत दुर्योधनावर धावून आले आणि मग तेथे दोन्ही सैन्यांचा तुंबळ संप्राम माजला ! राजा, त्या समयी पांडवांकडील वीरांनी वारंवार कारवांची निंदा करीत त्यांजवर नानाविध शस्त्राखांचा मारा चालविला होता; आणि दुर्योधनही मोठ्या धैर्याने रणांगणांत त्यांजवर जलाल शारांचा भडिमार करीत होता ! त्या वेळी दुर्योधनाने पांडवांच्या सैन्याशी सर्वथा घोर युद्ध करून त्यांस अगदी जर्जर केले व मोठ्या क्रोधाने त्यांपैकी शतावधि व सहस्रावधि वीर ठार मारिले ! राजा, त्या वेळी मला मोठा अद्भुत चमत्कार दिसला तो हा की, तुझा पुत्र एकदा असून, त्या सर्व एकत्र जमून आलेल्या पांडुसैन्याशी लढत होता ! त्या समयी राजा, दुर्योधनाने आपल्या सैन्याची फारच शोचनीय अवस्था अवलोकन करून व ते अगदी पळ काढण्याच्या बेतांत आहे असे पाहून त्याम थांबवून धरिले; व तो महासमयज्ञ कुरुवीर त्याम वीरश्री येण्यासाठी म्हणाला, “ वीरहो, मला असे एकही स्थळ दिसत नाही की, जेथे तुम्ही भयभीत होतसे ते पळून गेल्याने

पांडवांपासून तुमची सुटका होईल ! ह्यासाठी तुम्ही पळून जावे ह्यांत कोणता लाभ ? बाबांनो, अशा ह्या प्रसंगी तुम्ही दूरवर दृष्टि घ्या ! पहा-- पांडवांचे सैन्य अगदी थोडे आहे व कृष्णार्जुन तर शरप्रहारानी अगदी घायाळ झाले आहेत ! ह्यासाठी मी आज सर्व पांडवांना वधून निश्चयाने जय मिळवीन ! बाबांनो, जर का आतां तुम्ही भग्न होऊन पळ काढाल, तर पांडवांचा तुम्ही अपराध केला असल्यामुळे पांडव तुमचा पाठलाग करून तुम्हांस कधीही वधिल्याशिवाय राहाणार नाहीत ! वीरहो, आपल्यासारख्या क्षत्रियांना रणांत मरणे हे श्रेयस्करच होय ! बाबांनो, क्षात्रधर्माने युद्ध करणाऱ्या वीरांना संग्रामांत मृत्यु येणे हे सुखावहच आहे ! कारण, जो रणात देह ठेवितो त्याला दुःखाचा अनुभव प्राप्त होत नाही; इतकेंच नव्हे, तर तो मेल्यानंतर शाश्वत सुख भोगितो ! ह्या स्थळी विद्यमान असलेल्या सर्व योद्ध्यांनो, माझे भाषण सावधान श्रवण करा ! अहो, जर यम हा सर्वासच मारितो, त्यास शूराची पर्वा नाही व भिऱ्याचीही नाही, तर मग माझ्यासारख्या क्षात्रधर्मी पुरुषांनी युद्ध करून मरावे हाच मार्ग हिताचा नव्हे काय ? अहो, असा कोण मूर्ख असेल की, त्याला अशा वेळी जीव घेऊन पळून जाणे हेच श्रेयस्कर वाटे ! अहो, पळून जाऊन त्या क्रुद्ध भीमसेनाच्या कचाटीत सापडण्यापेक्षा वाडवाडिलांनी जो धर्म घालून दिला आहे त्याचे परिपालन करणे हेच उत्तम ! बाबांनो, क्षत्रियाला पलायन करण्यापासून फार घोर पातक लागते; इतकें भयंकर पातक त्याला दुसऱ्या कोणत्याही दुराचरणापासून लागत नाही ! कौरवहो, फार कशाला, युद्धधर्मपेशां अधिक श्रेयस्कर असा स्वर्गप्राप्तीचा दुसरा मार्गच नाही, हे तुम्ही पक्के लक्षांत ठेवा ! ह्यासाठी, वीरांनो, आतां विलंब न

करितां भारतीर्थीं देह ठेवा व तत्काळ स्वर्ग-  
सुख भोगा ! ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, तुझा  
पुत्र ह्या प्रकारें उत्तेजनपर भाषण करीत  
असतांही, शरप्रहारांनीं अतिशयित घायाळ  
झालेले ते सर्व सैनिक तिकडे लक्ष न देतां  
चारी दिशांस पळून गेले !

### अध्याय चौऱ्याणवावा.

—:—

#### रणभूमीचें वर्णन.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कर्णा-  
च्या वधानंतर कौरवांचे अवशिष्ट सैन्य रणां-  
गणांतून पळून जाऊं लागलें, तेव्हां पुनः  
युद्धाकरितां त्याचें मन वळविण्यासाठी तुझा  
पुत्र दुर्योधन ह्यानें जो प्रयत्न केला तो पाहून  
मद्राधिप शल्य भीतीनें अगदी गांगरून गेला !  
आणि तो दुर्योधनाशीं असें बोलला.

शल्य म्हणाला:—दुर्योधना, ही रणभूमि  
कशी भयंकर दिसत आहे ती पहा ! हा पहा  
येथें गज, अश्व व नर ह्यांचा कसा अगदी  
खच पडला आहे ! गंडस्थळांतून सदोदीत मद  
गाळणारे पर्वतप्राय हत्ती येथें समरभूमीवर  
जिकडे तिकडे बाणप्रहारांनीं छिन्नभिन्न होत्साते  
किती पडले आहेत ते पहा ! त्यांपैकी कित्येक  
दुःसह शस्त्रवेदनांनीं तडफडत आहेत व कित्ये-  
कांनीं प्राण सोडिले आहेत ! त्यांच्या शरीरां-  
वरील चिलखतें, आयुधें, दाली व खड्डें हीं  
इतस्ततः विकीर्ण झाल्यामुळें जणू काय प्रचंड  
पर्वत वज्रप्रहारांनीं भिन्न होऊन त्यांजवरील  
पाषाण, महाद्रुम व वनस्पति हीं चोहोंकडे  
विखरली आहेत ! आणि त्याप्रमाणेंच ह्या पहा  
त्या हत्तींच्या देहांवरील घंटा, अंकुश, तोमरें,  
ध्वज व सुवर्णाच्या जाळ्या इकडे तिकडे पस-  
रल्या असून, त्यांच्या देहांवर शारांनीं ज्या

जखमा झाल्या आहेत, त्यांतून एकसारखे  
रुधिराचे पाट वाहान आहेत ! राजा दुर्योधना,  
तशीच ह्या अशवांची स्थिति अवलोकन कर !  
हे पहा कित्येक अश्व किती आर्त होऊन धापा  
टाकित आहेत व रक्त ओकत आहेत ! कित्येक  
गरगरां डोळे फिरवीत किती दीन स्वरांनीं ओरडत  
आहेत ! कित्येक क्षुब्ध होऊन जमिनीचा चावा  
घेत आहेत ! आणि कित्येक फारच आर्त  
शब्द करित आहेत ! त्याप्रमाणेंच, राजा,  
गज व वाजी ह्यांजवरून बलात्कारानें खालीं  
पाडिलेल्या ह्या वीरसमुदायांकडे दृष्टि टाक !  
हे पहा त्यांपैकी कित्येक मृत झाले आहेत व  
कित्येकांच्या कंठांत प्राण आले आहेत ! राजा,  
ह्या समरभूमीवर रथ, गज, अश्व व नर ह्यांचा  
जो नुराडा झाला आहे, व त्यांत कित्येकांच्या  
देहांत जी धुगधुगी उरली आहे, त्या सर्वांचा  
विचार केला असतां ही भयंकर रणभूमि ह्मणजे  
केवळ वेत्रणीच होय असा भास होतो ! त्या-  
प्रमाणेंच, राजा, रणभूमीच्या ह्या द्रुमच्या भागीं  
हत्तींची कत्तल उडून त्यांच्या प्रचंड शृंङा व पुष्ट  
अशी दुसरी गात्रें विखरली आहेत ती पहा !  
तसेच येथें कित्येक हत्ती थरथरत पडले आहेत  
तेही पहा ! त्यांचे दांत मोडले असून त्यांच्या  
तोडांतून रक्ताचे पाट वाहान आहेत व ते अत्यंत  
आर्त स्वरांनीं गर्जना करित आहेत ! तसेच येथें  
महारथांचे समूह किती तरी नष्ट झाले आहेत,  
ते अवलोकन कर ! त्यांच्या रथांची चक्रे,  
धुरा व जोखडें बाणांनीं भग्न झाली असून  
त्यांचे सारथि मरून पडले आहेत ! त्या रथां-  
वरील ध्वजपताका व बाणभाते हीं समरभूमीवर  
पसरली असून हे सर्व महारथ सुवर्णाच्या जालां-  
नीं परिवेष्टित होत्साते अतिशय विद्ध होऊन  
सर्वत्र पडल्यामुळें सर्व महीतल जणू काय मेघ-  
मंडळानेंच आच्छादित झालें आहे असें दिसतें !  
रामा, ह्या ठिकाणीं पतन पावलेल्या विजय-

शील गजयोद्ध्यांच्या, रथयोद्ध्यांच्या, अश्व-  
योद्ध्यांच्या व पदातीच्या देहांवरील चिलखतें,  
आभरणें, वस्त्रें व आयुधें हीं नष्ट झाल्यामुळे  
रणांगणांत अग्रभागी पडलेले हे वीर जणू काय  
विझविलेले निखारेच होत असें भासतें ! तसेंच,  
राजा, येथें हे शरप्रहारांनीं विद्ध झालेले सह-  
स्त्राविध महान् महान् योद्धे रणांगणांत पडले  
असून इतस्ततः अवलोकन करीत आहेत त्यां-  
जकडे नजर टाक ! जणू काय हे रणभूमीवर  
रात्रीच्या समयी अंतरिक्षांतून ग्रहनक्षत्रादिक  
देदीप्यमान तेजोगोल पतन पावले असून त्यांच्या  
योगें हें महीतल तळपतच आहे असा भास होतो !

राजा, कर्णार्जुनांनीं बाणांचा भडिमार करून  
कोरव व संजय ह्यांचे जे महान् महान् वीर हस्त-  
पादादिक अवयव तोडून समरांगणांत मूर्छित  
पाडिले, त्यांपैकीं कित्येकजण पुनः सावध  
होत आहेत ते पहा ! जणू काय विझविलेल्या  
इंगळांनीं पुनः पेटच घेतल्याप्रमाणें ते दिसत  
आहेत ! ह्या स्थळीं राजा, ज्याप्रमाणें प्रचंड  
सर्प खालीं मान करून वारळांत प्रवेश करितात,  
त्याप्रमाणें कर्णार्जुनांच्या हस्तांतून सुटलेले बाण  
हत्ती, घोडे व मनुष्ये ह्यांचे देह विदारण करून  
व त्यांचे तत्काळ प्राण घेऊन भूगह्वरांत प्रविष्ट  
झाले ! राजा, येथें समरांगणांत कर्णार्जुनांच्या  
बाणप्रहारांनीं पतन पावलेलीं मनुष्ये, अश्व,  
गज, आणि मोडून व चूर्ण होऊन पडलेले रथ  
ह्यांच्या योगें ह्या भूतलाचा पृष्ठभाग स्पष्ट दिसत  
सुद्धां नाही ! राजा, हे पहा येथें किती तरी सु-  
व्यवस्थित रथ मोडून पडले आहेत ! कर्णार्जुनांनीं  
त्यांजवर भयंकर बाण सोडून—त्यांवर उत्कृष्ट  
आयुधें, ध्वजपताका व इतर सर्व सामग्री उत्तम  
असतांही त्यांजवरील योद्ध्यांना बघिलें व  
त्यांचे तुकडे उडविले ! हे पहा त्यांवरील सारथि  
मरून पडले आहेत, ही पहा त्यांचीं बंधनें  
तुकळीं आहेत, हीं पहा त्यांचीं चाकें, कणे,

जोखडें व त्रिवेणु हीं भंगलीं आहेत, हीं पहा  
त्यांवरील आयुधें गळलीं आहेत, ह्या पहा  
त्यांवरील उपयुक्त जिनसा नाहीतशा झाल्या  
आहेत, हे पहा त्यांचे तुंबे मोडून गेले आहेत,  
हे पहा बाणभाते व रज्जु तुटले आहेत, आणि  
हीं पहा त्या रथांतील रत्नखचित आसनें भग्न  
झाली आहेत ! राजा, अशा ह्या रथांनीं आच्छा-  
दित असलेली ही रणभूमी पाहून जणू काय  
शरत्कालीन मेघसमुदायांनीं अंतरिक्षच अदृश्य  
केलें आहे असें भासतें ! त्याप्रमाणेंच, राजा,  
ज्यांवर शस्त्रास्त्रादिकांची सामग्री यथास्थित सिद्ध  
आहे, अशा ह्या सुव्यवस्थित राजरथांकडे पहा !  
ह्यांस महावेगवान् अश्व लाविलेले असून त्यां-  
तील राजे धारातीर्थी पतन पावल्यामुळे त्यांचे  
अश्व बेफाम होऊन रथांना घेऊन उघळत  
चालले आहेत ! त्याप्रमाणेंच हे पहा नर, रथ,  
अश्व व गज ह्यांचे समुदाय एकसारखे जलदीन  
पळत आहेत आणि त्यामुळे एकंदर सैन्याची  
मोठी दुर्दशा उडाली आहे ! राजा, तसेच रणां-  
गणांत पडलेले हे सुवर्णलंकृत पडे, तशाच धार  
दिलेल्या कुऱ्हाडी, जलाल शूल, मूमळें, मुद्गर,  
झगझगीत नग्न खड्गें, उत्तम सुवर्णाचे पत्रे बसवि-  
लेल्या गदा, धनुष्ये, सुवर्णाची बाहुभूषणे,  
सुवर्णपुंख बाण, देदीप्यमान ऋष्टि, विमल व  
विकोश प्रास, सुवर्णासारखे लखलखणारे दंड,  
छत्रे, पखे, फुटलेले व गळलेले शंख, नानाविध  
हार, झुली, ध्वज, पताका, वस्त्रे, आभरणें,  
किरीट, शुभ्र मुकुट, माला, इतस्ततः पडलेलीं  
चामरें, मोती व पांढळीं ह्यांची तेजस्वी पेंडी,  
शिरपेच, दंडांतलीं कडी, श्रेष्ठ बाहुभूषणे,  
गेळ्यांतल्या पुतळ्यांच्या माळा, सोन्याचा सर,  
उत्तम रत्नें, हिऱ्यामोत्यांच्या जडावाचे नग  
आणि लहानमोठीं रत्नें किती पडलीं आहेत  
पहा ! सारांश, राजा, ह्याप्रमाणेंच नानाविध  
वस्तु, सुखाला अत्यंत उचित अशीं गात्रे, चंद्र-

तुल्य मुखांनीं युक्त अशीं मस्तकें, देह, भोग, दास, दासी व मनोहर विलास हीं सर्व सोडून. आपली धर्मनिष्ठा गाजवून आणि शुद्ध यश जोडून बहुत योद्धे हां म्हणतां स्वर्गलोकीं चालते झाले ! ह्यास्तव, राजा दुर्योधना, आतां जे कोणी उर्वरित वीर युद्धविमुख होतसे ते रणांगणांतून निघून जात आहेत, त्यांना जाऊं दे आणि तुही माघारा फिरून शिबिरास चल ! बाबा, हा पहा सूर्य अगदी अस्तास गेला ! ह्या सर्व अनर्थांचें कारण तूंच रे !

राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाला इतकें बोलून शोकानें व्याप्त झालेला शल्य स्तब्ध राहिला, तों दुर्योधनाचें दुःख अनावर वाढून त्यानें 'हे कर्णा ! हे कर्णा !' असा एकच आक्रोश आरंभिला; आणि अखेरीस तो नेत्रांवाटे अतिशय अश्रु ढाळीत बेशुद्ध पडला ! राजा, तेव्हां अध्वत्यामा आदिकरून सर्व योद्धे दुर्योधनासमीप गेले आणि त्यांनी त्याला पुनःपुनः आश्वासन दिलें ! राजा, ह्या समयी पांडुपुत्र अर्जुन हा समरभूमीवर होताच; ह्यास्तव त्याचा तो अतितेजःपुंज महान् ध्वज आपल्याचकडे येत आहे कीं काय, हें पाहाण्यासाठी त्यांचें लक्ष पुनःपुनः त्याचकडे लागलेंच होतें; आणि शिवाय त्यांनी रणभूमीवर नर, गज व अश्व ह्यांच्या रुधिराचा कंदम माजलेला जेव्हां पाहिला, तेव्हां ती जणू काय सर्वदेहभर भरजरीचीं लाल वस्त्रें व आरक्त पुष्पमाळा धारण करून आपल्या दिव्य कांतीनें झळकणारी कोणी स्त्रीच होय असें त्यांस भासलें ! राजा, ह्याप्रमाणें रुधिराच्या ओघामुळें त्या रणभूमीचें स्वरूप आच्छन्न झालेलें जेव्हां त्या कौरववीरांनीं पाहिलें, तेव्हां त्या अतिशय रौद्रसमयी, ते सर्व वीर जरी रणांगणांत देह ठेवण्याचा निश्चय करून स्वर्गलोकीं जाण्यास सिद्ध झाले होते तरी त्यांचीं तेथें उभें राहा-

ण्याची छाती होईना आणि कर्णाच्या वधानें शोकग्रस्त होतात " हे कर्णा ! हे कर्णा ! " असा आक्रोश करीत व सायंकाळी आरक्त सूर्यबिंबाचें अवलोकन करीत मोठ्या त्वरेनें ते आपल्या शिबिरांत निघून गेले ! असो; राजा, इकडे गांडीव धनुष्यापासून सुटलेले कितीएक सुवर्ण-पुंख निशित बाण कर्णाच्या देहांत घुसून त्याच्या देहाचें विदारण करून बाहेर पडून निघून गेले; तेव्हां त्यांचे पुंख रुधिरांत माखलें होते आणि कितीएक देदीप्यमान बाण त्याच्या त्या कांतिमान् देहांत तसेच रुतून राहिल्यामुळें जणू काय तो सहस्वरश्मि सूर्यच होय असें भासत होतें ! राजा, कर्ण हा सूर्याचा पुत्र असून शिवाय तो महान् सूर्योपासक होता; ह्यासाठी रणनदीमध्ये वीरशोणितोदकांत स्नान केलेल्या त्या कर्णाच्या शाला भक्तानुकेपी भगवान् आरक्तवर्ण सूर्य करस्पर्श करून पुत्रमरणावहल स्वतः स्नान करण्यासाठी महान् समुद्राप्रत जात आहे असें जाणून आपणही आतां येथें राहाणें हें उचित नव्हे असें देव व ऋषि ह्यांच्या समुदायांनीं ठरविलें आणि ते आपआपल्या स्थानीं निघून गेले ! आणि मग इतर जनही आपल्या इच्छेनुरूप अंतरिक्षांत किंवा भूप्रदेशी चालते झाले ! राजा, ह्याप्रमाणें कुरुपांडवांकडील प्रधान वीर जे कर्णाजून त्याचें तें अद्भुत व घोर युद्ध पाहून सर्व जनांना मोठा विस्मय वाटला व ते त्याची प्रशंसा करीत निघून गेले !

इकडे रणांगणांत शहरप्रहारांनीं कर्णाच्या चिलखताचें विदारण होऊन त्याच्या देहांतून जे रुधिराचे लोट चालले होते त्यांनीं त्याचीं वस्त्रें आरक्त होऊन तो अगदी नखशिखांत लाल दिसत होता ! जरी त्या समयी त्याच्या कुडीत प्राण उरला नव्हता, तरी त्याच्या देदीप्यमान कांतीनें त्याम अजून सोडिलें

नव्हें ! अद्यापि तो शूर वीर सुतसुवर्णाप्रमाणें तेजस्वी आणि सूर्यकिंवा अग्नि ह्यांप्रमाणें दीप्तिमान् दिसत असल्यामुळे जिवंतच आहे, असें सर्व प्राण्यांस वाटत होतें ! राजा, सिंहाला पाहून जशी मृगांची त्रेधा उडते, तशी त्या हतवीराच्या प्रेतालाही पाहून सर्व योद्ध्यांची त्रेधा उडत होती ! राजा, तो पुरुषशार्दूलगत-प्राण होऊन पडला असतांही तो जीवमान आहे असेंच सर्वांना भासलें; कारण, त्या महारणपुरंदराच्या देहाला कोणतीच विकृति अद्यापि प्राप्त झाली नव्हती ! राजा, रणभूमीवर शयन केलेल्या त्या विकर्तनपुत्राचा वेष मोठा सुंदर असून त्याच्या मानेवर मनोहर केश-कलपांनी युक्त असें रम्य मस्तक विराजत होतें आणि त्यामुळे त्याच्या मुखाची प्रभा पूर्ण-चंद्राप्रमाणें इतस्ततः फांकली होती ! राजा, त्याप्रमाणेंच त्याच्या देहावर नानाविध अलंकार शोभत असून तप्तसुवर्णाप्रमाणें तळपणारी अंगदे बाहुप्रदेशी झळकत होती ! अशा प्रकारचा तो रणांत पडलेला कर्णदेह अवलोकन करून, जणू काय शाखाप्रशाखांसह महान् वृक्षच भूतलावर पतन पावला आहे असें वाटलें ! आणि, राजा, कर्णाच्या त्या दिव्य देहावर उत्कृष्ट सुवर्णाची कांति झळाळत असल्यामुळे जणू काय अग्नीच्या ज्वाळाच चालल्या आहेत असें भासत होतें ! असे; राजा, अखेरीस अर्जुनानें त्या कर्णरूप प्रवर अग्नीवर शररूप जलवृष्टि करून त्याचा उपशम केला आणि त्यास परम गति प्राप्त करून दिली ! राजा, कर्णाचा प्रताप काय वर्णावा ! त्यानें रणांगणांत शत्रूंशी घोर युद्ध केलें आणि मोठें उज्वल यश मिळविलें ! त्यानें बाणांचा भडिमार चालवून दशदिशा अगदी प्रतप्त केल्या, पण अखेरीस अर्जुनाच्या दिव्य शौर्यापुढें त्याचें कांहीएक न चालून त्यास पुत्रा-महवतेमान धारातीर्थी पडावें लागलें ! राजा, त्या

लोकोत्तर कुरूवीरांनें पांडवांना व सर्व पांचा-लांना अख्खतजांनें अगदी ' ब्राहि भगवन् ! ' करून सोडिलें, शत्रूंवर जलाल बाणांचा पाऊस पाडून त्यांचा घोर संहार उडविला, आणि श्रीमान् सूर्याप्रमाणें सर्व जगत् तापविलें; परंतु शेवटी आपल्या वाहनामुद्धां व पुत्रासुद्धां तो रणशय्येवर निद्रित झाला ! राजा, कर्णाच्या दातृत्वाचें किती तरी वर्णन करावें ! ज्याप्रमाणें कल्पवृक्षाचा नाश झाला असतां पक्षिसमुदायांचा महान् आश्रय नाहीसा होतो, त्याप्रमाणें कर्णाच्या नाशानें याचकांचा महान् आश्रय नाहीसा झाला ! राजा, कर्णाकडे कोणीही याचना करो, त्याला तो कधी ' नाही ' असें न म्हणतां ' देतों ' असेंच म्हणे ! थोर लोक त्याला नेहमी भला म्हणूनच म्हणत ! त्या महात्म्यानें आपली सर्व संपत्ति ब्राह्मणांच्या हवाली केली होती ! फार कशाला, तो ब्राह्मणांना आपलें जीवित सुद्धां देण्यास तयार असे ! तो महान् योद्धा सदासर्वकाळ स्त्रियांना प्रिय असून महान् दाता होता ! असा तो लोकोत्तर पुरुष अर्जुनाच्या अस्त्राग्नीनें दग्ध होत्सता परलोकाम गेला ! राजा धृतराष्ट्रा, तुझा पुत्र दुर्योधन ह्यानें कर्णाच्या आश्रयावर सर्व भिस्त ठेऊन पांडवांशीं हा सर्व कलह केला, पण अखेरीस तो प्रतापशाली वीर स्वर्गास गेल्यामुळे त्याच्याबरोबर तुझ्या पुत्रांची सुखाशा, जयाशा व आधार हीं सर्व अस्तंगत झाली ! राजा, कर्ण रणांगणांत पडतांच नद्या स्तब्ध होऊन वाहतनाशा झाल्या, सूर्य मावळला, सोमपुत्र बुध ग्रह ह्याचें अग्नीप्रमाणें किंवा सूर्याप्रमाणें प्रवर तेज होऊन तो तिर्य-गतीनें गमन करूं लागला, अंतरिक्ष अगदी फाटलें, पृथ्वी मोठ्यानें गर्जू लागली, सोसाट्याचे तुफानवारे चालू झाले, सर्व दिशा धुरानें व्याप्त होऊन पेटल्या, महासागर खळून भयंकर

घोष करून् लागले, काननांसहित पर्वत कंपाय-  
मान झाले, सर्व प्राण्यांना विलक्षण भीति  
उत्पन्न झाली, बृहस्पति हा रोहिणी नक्षत्राच्या  
समीप येऊन अर्क किंवा चंद्र ह्याप्रमाणे तेज  
टाकू लागला, अंतरिक्ष अंधःकाराने भरलें, पृथ्वी  
थरथरून् लागली, अग्नीप्रमाणे पेटलेल्या उल्का  
खाली कोसळू लागल्या, आणि राक्षस व इतर  
रात्रिचर ह्यांस मोठा आनंद झाला ! राजा, ज्या  
वेळी चंद्रप्रकाशाप्रमाणे उज्वलित असे कर्ण-  
शिर अर्जुनाने क्षुर बाणाने तोडून पाडिलें,  
त्या वेळी अंतरिक्षांत एकाएकी देवांमध्ये देखील  
हाहाकार उडाला ! राजा, रणांगणांत देव,  
गंधर्व व मनुष्ये ह्या सर्वांना जो अत्यंत प्रशंस-  
नीय, अशा त्या कर्णाला जेव्हां अर्जुनाने  
वधिलें, तेव्हां वज्रासुराला वधिल्यावर ! इद्राला  
जसे लोकोत्तर तेज चढलें, तसे त्या पांडु-  
वीराला तेज चढलें ! नंतर, राजा, मेघ-  
समुदायाप्रमाणे गंभीर ध्वनि करणाऱ्या,  
शरद्वृत्तल्या मध्यान्हीच्या दिवाकराप्रमाणे  
देदीप्यमान पताकांनी शोभणाऱ्या, भयंकर  
शब्द करणाऱ्या ध्वजानें युक्त, हिम, चंद्र, शंख  
किंवा स्फटिक ह्याप्रमाणे शुभ्र आणि महेंद्राच्या  
अर्धांप्रमाणे अश्व जोडिलेल्या रथांत अधिष्ठित  
असलेले ते महेंद्रासारखे प्रतापवान्, आणि सुवर्ण,  
मोक्तिकें, रत्ने, हिरे व प्रवाल ह्यांच्या अलं-  
कारांनी विराजमान असे अग्नि-दिवाकरांसारखे  
तेजःपुंज नरवीर पुरुषश्रेष्ठ कृष्णार्जुन मोठ्या  
वेगाने रणांगणांतून जाऊ लागले, तेव्हां जणू  
काय ते महाशूर विष्णुवासवच एका रथांत  
आरूढ असून झळाळत आहेत असे सर्वांस  
वाटले ! राजा, त्या समयी अर्जुनाने मोठ्या  
तेषाने गांडीवाच्या प्रत्यंचेचा टणत्कार, टाळ्यां-  
चा गजर व बाणांचा सणसणाट ह्यांनी शत्रूंना  
अगदी कलाहीन केलें; आणि मग ते गरुडध्वज  
व कापिध्वज अमितप्रभाव कृष्णार्जुन सुवर्णाच्या

जाळ्यांनी परिवृत होत्सोते मोठमोठ्याने गर्जत व  
शत्रूंच्या स्त्रियांचे काळीज दुभंग करीत पुढें चालले  
व त्यांनी हिमाप्रमाणे शुभ्र असे शंख एकदम  
मोठमोठ्याने वाजविण्यास प्रारंभ केला ! राजा,  
या वेळी पांचजन्य व देवदत्त ह्या दोन्ही  
शंखांचा असा कांही प्रचंड घोष होऊ लागला  
की, त्याने आकाश, पृथ्वी व दशदिशा ही सर्व  
दुमदुमून गेली ! राजा, तेव्हां त्या कृष्णार्जु-  
नांचा शंखनाद श्रवण करून सर्व कौरव घाब-  
रले, तुझी सेना अगदी भयभीत झाली;  
आणि युधिष्ठिराला मोठा आनंद वाटला ! या  
शंखस्वनाने नद्या, पर्वत, गुहा व वने ही  
सर्व दणाणून गेली आणि सर्वत्र अगदी मूर्ति-  
मंत भीति भासू लागली ! तेव्हां कौरवसेन्यास  
मुळीच तग निघेना व ते सर्व मद्राधिप शल्य  
व कौरवाधिप दुर्योधन ह्यांस रणभूमीवर सोडून  
देऊन पळून गेले ! इकडे त्या महान् रणांत  
अतिशय शोभणाऱ्या धनंजयापाशीं सर्व भूत-  
समुदाय जमा झाले आणि त्या दिवाकरसदृश  
कृष्णार्जुनांचे त्यांनी मोठ्या प्रेमाने अभिनंदन  
केले ! राजा, त्या समयी त्या दोन्ही शत्रुसंहा-  
रक पुरुषश्रेष्ठांची शरीरे कर्णाच्या शरांनी अगदीं  
विद्ध झाली असून त्यांत ते बाण तसेच रुतून  
राहिले होते; त्यामुळे, समरभूमीवर त्या कृष्णार्जु-  
नांना पाहून जणू काय अंधःकाराचा विध्वंस  
उडविल्यावर अंतरिक्षांत स्वच्छ सूर्यचंद्रच  
आपल्या किरणशलाकांनी विराजत आहेत,  
असे वाटत होते ! राजा, नंतर त्या उभयतांनी  
आपल्या देहांतील बाण काढून टाकिले; आणि  
मग ते दिव्यपराक्रमी कृष्णार्जुन आसमुह्मंती  
परिवेष्टित होत्सोते आपल्या शिविरास पुनः  
गेले ! राजा, तेव्हां त्यांना पाहून जणू काय  
सदस्यांनी आह्वान केलेले भगवान् विष्णु व  
वासव हेच तेथे प्राप्त झाले असे सर्वांस वाटले !  
मग कर्णाचा वध करून परत आलेल्या त्या



कृष्णार्जुनांचा देव, गंधर्व, मनुष्य, चारण, महर्षि, यक्ष व महोरग ह्यांनी अतिशय जय-जयकार केला आणि त्यांनी त्यांस मोठ्या आदराने पुजून त्यांच्या गुणांचे अतिशय वर्णन केले ! तेव्हां कृष्णार्जुनांनाही मोठी धन्यता वाटली; आणि बल दैत्याचा वध केल्यानंतर विष्णु व वासव ह्यांना जमा आनंद झाला, तसा सुहृद्गणांसहवर्तमान त्या कृष्णार्जुनांना अतिशय आनंद झाला !

### अध्याय पंचाणवावा.

—०—

#### शिबिरप्रयाण.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, विकर्तन-पुत्र कर्ण रणांत पतन पावल्यावर कौरवांची फारच त्रेधा उडाली व ते सहस्रावधि वीर भयभीत होतसाहे इतस्ततः अवलोकन करीत चारी दिशांस पळून गेले ! राजा, त्या समयी जे वीर त्या घनघोर संग्रामांत बाणप्रहरांनी अतिशय घायाळ झाले होते, त्यांची तर फारच दुर्दशा उडाली ! हे महाराजा, ह्याप्रमाणे तुझ्या सैन्याचा जेव्हां अगदीच धीर सुटला, तेव्हां चोहोंकडे तुझ्या योद्ध्यांनी रणांगणांतून आपापली सैन्ये मागे परतविण्याचा विचार ठरविला ! आणि ज्या सैन्यांना दुर्योधन युद्धामाठी प्रवृत्त करीत होता ती सर्व अत्यंत दुःखित व उद्ध्विग्न सैन्ये अवेरीस मागे परतली ! इकडे दुर्योधनानेही त्या कुर्योद्ध्यांचा व कुरुसैन्यांचा हेतु मनांत आणून तदनुरूप आपला विचार बदलला व शल्याचा अभिप्राय घेऊन त्याने सर्व सैन्ये मागे वळविली ! राजा, तेव्हां लगलाच कृतवर्मा तुझ्या नारायण नामक सैन्याच्या अवशिष्ट रथांसह शिबिराम गेला; तसेच शकुनीने मह्य गांधार योद्धे बरोबर घेतले व शिबिराचा रस्ता धरला; त्याप्रमाणेच शारद्वत कृप हा महामेघ-

तुल्य कुंजरसेना घेऊन त्वरेने शिबिराम गेला; नंतर शूर अश्वत्थामा पांडवांचा जय झाला असे पाहून पुनःपुनः दुःखाचे सुस्कारे टाकीत शिबिराम चालता झाला; इकडे सुशर्माही संशय-पक्ष सेनेचा जो प्रचंड भाग अवशिष्ट राहिला होता तो बरोबर घेऊन भयभीत मुद्देने इतस्ततः पहात शिबिराकडे वळला; तसाच दुर्योधन राजा-देखील अत्यंत खिन्न होतसाता आपल्या प्रताप-शाली बांधवांच्या मृत्यूमुळे हळहळत शिबिराम गेला; आणि तो महारथ शल्यही छिन्नध्वज रथांतून दशदिशांकडे दृष्टि टाकीत शिबिराम प्राप्त झाला ! नंतर, राजा, भयाने कासावीस झालेले दुसरे अनेक महारथ लजेने खाली माना घालून व देहभान विसरून शिबिराम गेले आणि तसेच रुधिर ओकत व भयाने थरथरा कांपत सर्वच कौरववीर घायाळ होऊन शिबिराम चालते झाले ! राजा, त्या समयी कौरवांकडील महारथांपैकी कित्येकजण अर्जुनाची व कित्येकजण कर्णाची वाहवा करू लागले ! तेव्हां सर्वच कौरव भयले व त्यांनी वाट मिळाली तिकडे पळ काढिला ! राजा, त्या वेळी त्या घोर रणांगणांत जे तुझे सहस्रावधि वीर होते, त्या पैकी एकाच्याही मनांत युद्धाची इच्छा शिल्लक राहिली नाही ! कर्णाचा जेव्हां वध झाला तेव्हां सर्वच कौरव निराश झाले ! मग त्यांना जीवित, राज्य, स्त्रीपुत्र किंवा संपत्ति ह्यांपैकी कसलीच आशा उरली नाही ! अवेरीस, राजा, शोकाकुल झालेल्या तुझ्या पुत्राने मोठ्या श्रमाने सर्व महारथांस एकत्र जमविले; आणि त्यांस ‘ आतां छावणीत जा ’ म्हणून सांगितले. तेव्हां त्यांनी दुर्योधनाची ती आज्ञा शिरसा-मान्य केली; आणि मोठ्या विषण्ण मनाने ते आपापल्या शिबिराम निघून गेले !

## अध्याय शहाण्णवावा.

—:०:—

## युधिष्ठिराचा हर्ष.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कर्णाचा वध होऊन कौरवसैन्य पळून गेलें तेव्हां कृष्णानें अर्जुनाला आलिंगन दिलें व मोठ्या आनंदानें म्हटलें:—बा धनंजया, वज्रधारी इंद्रानें वृत्राला वधिलें, तद्वत् तूं कर्णाला वधिलेंस ! बाबा, आतां वृत्रवधाप्रमाणें हें कर्ण-वधाचें घोर वृत्तही मनुष्यें एकमेकांस कथन करतील ! अर्जुना, युद्धांत महाप्रतापी इंद्रानें वज्राच्या योगें वृत्राला मारिलें आणि तूं ह्या गांडीव धनुष्याच्या योगें जलाल शरांची वृष्टि करून रणांत कर्णाला मारिलेंस ! चल, आतां तुझा तो जगद्विख्यात दिव्य पराक्रम बुद्धिमान् धर्मराजाला निवेदन करण्यास जाऊ ! अर्जुना, बहुत दिवसांपासून कर्णाला संग्रामांत उार मारण्याची तूं इच्छा करीत होतास; ह्यासाठीं कर्णाचें वधवृत्त तूं आज धर्मराजाला सांगितलेंस म्हणजे तूं अगुणी होशील ! अर्जुना, तूं व कर्ण एकमेकांशीं घोर संग्राम करीत असतां तो तुंवळ संग्राम पाहाण्यासाठी पूर्वी धर्मराज तेथें प्राप्त झाला होता; परंतु त्याच्या देहांत अतिशय खोल शर रुतले होते म्हणून तो रणभूमीवर उभा राहाण्यास समर्थ झाला नाही आणि ह्यास्तव तो शिविरांत जाऊन तेथें पडून राहिला !

राजा धृतराष्ट्रा, कृष्णाचें हें भाषण श्रवण करून अर्जुनानें त्यास 'बरे आहे' असें म्हटलें आणि मग यदुपुंगवानें अर्जुनाचा तो रथ तत्काळ मार्गे वळविला आणि तो निघतांना सैनिकांस म्हणाला, 'वीरहो, मोठ्या सावधान चित्तानें शत्रूंना तोंड देऊन उभे अस ! तुमचें कल्याण होवो !' राजा धृतराष्ट्रा, नंतर केशवानें धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, नकुल, सहदेव, वृकोदर व युयुधान ह्यांस म्हटलें, 'योधहो, आम्ही कर्ण-

वधाचें वृत्त धर्मराजाला निवेदन करण्यास जात आहों; ह्यासाठी आम्ही परत येईपर्यंत तुम्ही सर्व नीट लक्ष ठेवून शत्रूंची युद्ध करा !' राजा धृतराष्ट्रा, कृष्णाचें तें भाषण ऐकून धृष्ट-द्युम्नादिक सर्व शूर योद्ध्यांनीं कृष्णार्जुनांना धर्मराजाकडे जाण्यासाठी अनुमोदन दिलें व मग गोविंद अर्जुनाला घेऊन धर्मराजास जाऊन भेटला; आणि तो राजशार्दूल धर्मराज युधिष्ठिर भरजरीच्या श्रेष्ठ शक्येवर पडला असतां त्या कृष्णार्जुनांनीं मोठ्या आनंदानें त्याचे पाय धरिले ! राजा, त्या समयीं कृष्णार्जुनांची ती प्रमुदित मुद्रा अवलोकन करून धर्मराजाच्या नेत्रांतून आनंदाश्रु वाहू लागले व कर्णाचा खचित वध झाला असें मानून तो तत्काळ उठला आणि त्यानें प्रेमपुरस्सर त्या कृष्णार्जुनांस पुनःपुनः आलिंगन देऊन त्यांस सकल वृत्त विचारिलें ! तेव्हां कृष्णार्जुनांनीं कर्णाच्या वधाचें यथास्थित सर्व वर्तमान त्यास निवेदन केलें आणि मग किंचित् हास्य करीत हात जोडून कृष्णानें हतरिपु धर्मराजाला म्हटलें:—धर्मराजा, सुदैवानें अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव व तूं स्वतः हे तुम्ही सर्व कुशल आहां ! हा अंगावर कांटा उभा करणारा जो महान् वीरक्षयकारी भयंकर संग्राम घडला त्यांतून तुम्ही मोकळे झालां हें चांगलें झालें ! ह्याकरितां आतां ह्यापुढें जीं कृत्यें केलीं पाहिजेत तीं करण्यास उद्युक्त व्हा ! राजा, सुदैवानें महारथ सूतपुत्र कर्ण रणांत पडला आणि तुला विजयश्रीनें वरिलें ! धर्मराजा, तुझें भाग्य खचित थोर होय; कारण, ज्या पुरुषाधमानें द्यूतांत जिंकलेल्या द्रौपदीची विटंबना केली, त्याचें शोणित आज भूमीनें प्राशिलें ! राजा, तो तुझा शत्रु प्रस्तुत मातीत लोळत पडला असून त्याच्या सर्व देहांत नख-शिखांत बाण रुतले आहेत व अगणित बाण-

प्रहारांनीं त्याचीं सर्व गात्रें छिन्नभिन्न झाली आहेत ! हे महाभुजा युधिष्ठिरा, आतां तुला कोणीही शत्रु राहिला नाही; ह्यास्तव तूं आद्यांसहवर्तमान विपुल भोग भोगण्यास सिद्ध हो !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें महात्म्या केशवाचें भाषण श्रवण करून धर्मराजाला मोठा आनंद झाला व ‘ महान् भाग्य ! महान् भाग्य ! ’ असे प्रथम उद्गार काढून मग तो दशार्हा कृष्णाला म्हणाला, “ हे महाबाहो देवकीनेदना, तुझ्या ठिकाणीं अशक्य असें काय आहे बरें ? तुझ्यासारखा सारथी व अर्जुनासारखा यत्नवान् असे पुरुष एकत्र झाले असतां त्यांच्या हातून कर्णवधासारखीं लोकोत्तर कार्यें घडणें हें स्वाभाविकच आहे ! कृष्णा, हें सर्व तुमची बुद्धि व कृपा ह्यांचें फळ होय ! ” राजा धृतराष्ट्रा, नंतर धर्मराजानें यदुपुंगवांचा अंगदालंकृत उजवा भुज धरिला व केशवार्जुनांस म्हटलें, “ कृष्णार्जुनांनो, नारदानें मला तुमची सर्व कथा सांगितली आहे ! तुम्ही महात्मे प्राचीन ऋषिश्रेष्ठ धर्मात्मे नरनारायण देव आहां. महाबुद्धिवान् तत्त्ववेत्ते कृष्णद्वैपायन व्यासही मला असेंच वेळोवेळीं सांगत आले आहेत. कृष्णा, हा धनेजय नित्य शत्रूंवर चालून जातो व केव्हांही मात्वार घेत नाही, ह्याचें इंगित तुझा प्रसाद हेंच होय ! कृष्णा, जेव्हां तूं अर्जुनाचें सारथ्य पतकरिल्लेंस, तेव्हांच आमचा पराजय न होतां आम्हांला जय मिळणार ! असा आखीं सिद्धांत ठरविला ! गोविंदा, भीष्म, द्रोण, महात्मा कर्ण, गौतम कृप, दुसरे शूर वीर व त्यांचे अनुयायी ह्यांचा वध किंवा पराजय होणें हें लहानसहान कृत्य नव्हे; माझ्या मते तुझ्या बुद्धीमुळेच हें सर्व घडून आलें ! ”

राजा, धर्मराज युधिष्ठिर इतकें बोलून सुवर्णालंकृत रथावर आरूढ झाला. त्या रथास श्वेतवर्ण अश्व जोडले असून त्या अश्व्यांचीं

पुच्छें काळीं होती व ते मनोवेगानें पळणारे होते. त्या रथावर धर्मराज चढतांच त्याचे भोंवतालीं त्याची सेना जमा झाली; आणि मग तो महाबाहु युधिष्ठिर कृष्णार्जुनांशीं प्रेमपूर्वक भाषण करीत रणभूमि अवलोकन करण्यासाठीं निघाला आणि पुढें कृष्णार्जुनांशीं बोलत बोलत जात असतां रणांगणांत नरवीर कर्ण भूमीवर पडला आहे असें त्यानें पाहिलें ! ज्याप्रमाणें कंदवाच्या पुष्पाभोंवतीं सर्वत्र केसर व्याप्त असतात, त्याप्रमाणें त्या समयीं कर्णाच्या देहाला सभोंवतीं शतावधि शर व्याप्त होते; आणि जणू काय अत्तरांत भिजविलेल्या सहस्त्रावधि सुवर्णदेड मशाली त्याच्या देहाच्या सभोंवतीं प्रज्वलित आहेत, असें भासत होतें ! राजा, त्या वेळीं कर्णाचें कवच बाणप्रहारांनीं अगदीं फाटून तुटून गेलें होतें व कर्णाच्या समीप त्याचा पुत्रही मरून पडला होता ! तेव्हां धर्मराजानें त्या पितापुत्रांस अवलोकन केलें, तरी ते कर्णवृषसेन हेच होत अशी त्याची खातरी पटेना ! म्हणून त्यानें त्यांस पुनःपुनः निरखून पाहिलें आणि मग मात्र त्याची ते कर्णवृषसेनच होत अशी पूर्ण खातरी झाली ! राजा, मग तो धर्मराज पुनः कृष्णार्जुनांची प्रशंसा करूं लागला आणि म्हणाला, “ गोविंदा, तुझ्यासारख्या महाप्राज्ञ शूर वीरानें संरक्षण करण्याचा पतकर घेतल्यामुळे मी आज भ्रात्यांसह पृथ्वीचा राजा झालों ! अतिमानी नरवीर जो राधेय, त्याच्या वधाचें वर्तमान श्रवण करून तो दृष्ट दुर्योधन आतां अगदीं निराश होईल ! रणांगणांत कर्ण पडला असें कानीं पडतांच दुर्योधनाला आतां जीविताची त्याप्रमाणेंच राज्याचीही आशा राहाणार नाही ! हे पुरुषर्षभा, केवळ तुझ्या प्रसादामुळेच आखी कृतार्थ झालों ! गोविंदा, खचित थोर भाग्यामुळेच आज तुला विजयश्रीनें वरिलें !

थोर भाग्यामुळेच आज आपला शत्रु कर्ण हत झाला ! आणि आज थोर भाग्यामुळेच अर्जुनाला विजय मिळाला ! हे महाभुजा, तेरा वर्षेपर्यंत आम्हांस झोंप कशी ती माहीत नाही व रात्रंदिवस आझी तळमळत होतों; पण तुझ्या कृपेमुळे आज आम्हांला स्वस्थ झोंप येईल !

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें धर्मराजानें कृष्ण व अर्जुन ह्यांची पुनःपुनः फारच प्रशंसा केली ! धृतराष्ट्रा, कर्ण व त्याचा पुत्र हे दोघेही अर्जुनाच्या बाणांनीं रणांगणांत मरून पडलेले जेव्हां धर्मराजानें पाहिले, तेव्हां त्यास आपण पुनः जन्मलों असें वाटलें ! तेव्हां महान् महान् महारथ मोठ्या आनंदानें त्याच्या समीप प्राप्त झाले आणि त्यांनीं त्याचा मोठा गौरव केला ! राजा, तेव्हां भीम, नकुल, सहदेव, वृष्णींचा महारथ सात्यकि, धृष्टद्युम्न, शिखंडी व पांडुपांचालसंजय हे सर्व धर्मराजाच्या सन्निध आले व त्यांनीं त्यास बहुमानपुरस्सर वंदिलें ! त्या सर्वांनीं धर्मात्म्या धर्मराज युधिष्ठिराचा जय-जयकार केला आणि ते सर्व विजयी व कृतार्थ असे महान् महान् योद्धे कृष्णार्जुनांची अनुरूप शब्दांनीं स्तुति करून मोठ्या हर्षानें आपआपल्या शिबिरास गेले ! ह्याप्रमाणें अंगावर कांटा आणणारा असा हा भयंकर क्षात्रक्षय घडून आला; आणि ह्या सर्वांचें कारण तुझी अनुचित सल्ला हेंच आहे; ह्यासाठीं आतां हळहळण्यांत अर्थ नाही !

### कथामाहात्म्य.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, जनमेजया, ह्याप्रमाणें संजयापासून अप्रिय वृत्त श्रवण करून अंबिकासुत धृतराष्ट्र हा मुळें तुटलेला वृक्ष जसा धाडकन् पडतो तसा भूमीवर निश्चेष्ट पडला; आणि त्याजबरोबर त्याची स्त्री राज्ञी

गांधारी ही देखील भावी अनर्थ मनांत येऊन खाली पडली व कर्णाच्या मृत्यूबद्दल अत्यंत शोक करूं लागली ! राजा, तेव्हां विदुरानें गांधारीला व संजयानें धृतराष्ट्र राजाला सावरून धरिलें आणि मग त्या उभयतांनीं धृतराष्ट्राचें सांत्वन केलें. मग विदुरसंजयांनीं धृतराष्ट्राला व कुरुस्त्रियांनीं गांधारीला उठविले आणि देव हें प्रबळ आहे व भवितव्याला मार्गें टाकणें अशक्य होय, असें मनांत आणून धृतराष्ट्राला अत्यंत खेद झाला व तो पुनः शोकाकुल होत्साता मूर्च्छित पडला. राजा जनमेजया, नंतर विदुरसंजयांनीं पुनः त्याचें सांत्वन केलें तेव्हां तो शून्यहृदय होत्साता स्तब्ध बसला ! राजा, महात्मे धनंजय व कर्ण ह्यांचें हें भयंकर युद्ध म्हणजे महान् यज्ञच होय ! जो पुरुष ह्या युद्धाचें वर्णन, पठन किंवा श्रवण करील, त्यास उत्तम रीतीनें सिद्धास नेलेल्या यज्ञाचें फल प्राप्त होईल ! राजा, विद्वान् पुरुष असें सांगतात की, भगवान् सनातन विष्णु हाच यज्ञ होय; आणि अग्नि, वायु व चंद्रसूर्य हेही यज्ञच होत; ह्यास्तव जो पुरुष मत्सर न करितां हा इतिहास श्रवण किंवा पठन करील, तो सुखी होऊन श्रेष्ठ लोकास जाईल ! राजा, जे पुरुष ह्या दिव्य व पुण्यकारक ग्रंथाचें सदोदीत भक्तिपूर्वक परिशीलन करितील, त्यांस धन, धान्य व यश ह्यांची निःसंशयपणें प्राप्ति होईल ! ह्याकरितां जो मनुष्य नेहमीं प्रेमपूर्वक हा ग्रंथ ऐकेल त्याला सर्व सुखें मिळतील ! आणि त्या नरश्रेष्ठावर भगवान् विष्णु, ब्रह्मदेव व शंकर हे प्रसन्न होतील ! राजा, ह्या ग्रंथाचें निदिध्यसन केल्यास ब्राह्मणाला वेदपठनाचें फल मिळेल, क्षत्रियाचें बल वाढून तो युद्धांत विजयी होईल. वैश्यांना अतिशय धन मिळेल

आणि शूद्रांचें आरोग्य वाढेल ! राजा, ह्या सर्व मनोरथ पूर्ण होतात ! आणि, जनमेजया,  
 ग्रंथांत भगवान् सनातन परमात्मा विष्णु ह्याचे ह्या कर्णपर्वाचे श्रवण केलें असतां सवत्स  
 गुण वर्णिले असल्यामुळें, ह्याच्या परिशीलनांत अशा कपिला धेनूचें वर्षभर नित्यदान केल्या-  
 भगवान् व्यासांनीं कथन केल्याप्रमाणें मनुष्याचे प्रमाणें पुण्य जोडिलें जातें !

॥ कर्णपर्व समाप्त. ॥





# श्रीमन्महाभारत.

## शल्यपर्व.

अध्याय पहिला.

मंगलाचरण.



नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।  
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

ह्या अखिल ब्रह्मांडातील यच्चयावत् स्थावर-जंगम पदार्थांच्या ठिकाणीं चिदाभासरूपानें प्रत्ययास येणारा जो नरसंज्ञक जीवात्मा, नर-संज्ञक जीवात्म्यास मदामर्वकाल आश्रय देणारा जो नारायण नामक कारणात्मा, आणि नर-नारायणात्मक कार्यकारण सृष्टीहून पृथक् व श्रेष्ठ असा जो नरोत्तमसंज्ञक सच्चिदानंदरूप परमात्मा, त्या सर्वांस मी अभिवंदन करितों; तसेंच, नर, नारायण व नरोत्तम ह्या तीन तत्त्वांचें यथार्थ ज्ञान करून देणारी देवी जी सरस्वती, तिलाही मी अभिवंदन करितों; आणि त्या परमकारुणिक जगन्मातेनें लोकाहित करण्याविषयी माझ्या अंतःकरणांत जी स्फूर्ति उत्पन्न केली आहे, तिच्या साहाय्यानें ह्या भव-

बंधविमोचक जय म्हणजे महाभारत ग्रंथाच्या शल्यपर्वाम आरंभ करितों. प्रत्येक धर्मशील पुरुषानें सर्वपुरुषार्थप्रतिपादक अशा शास्त्राचें विवेचन करितांना प्रथम नर, नारायण आणि नरोत्तम ह्या भगवन्मूर्तींचें ध्यान करून नंतर प्रतिपाद्य विषयाचें निरूपण करण्यास प्रवृत्त व्हावें हें सर्वयैव इष्ट होय.

**धृतराष्ट्राचा प्रमोह.**

जनमेजय विचारतो:—वैशंपायन मुने, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें समरांत कर्णाचा वध केल्या-नंतर मग जे थोडेबहुत कौरव अवशिष्ट राहिले, त्यांनी पुढें काय केलें? द्विजवर्या, कौरवांचा महान् योद्धा कर्ण हा समरभूमीवर पाहून पांडवांचें धैर्य, वीर्य, उत्साह, बल वगैरे सर्वे

वृद्धिगत झाली असतां, समयावर दृष्टि देऊन दुर्योधन राजानें रणापासून निवृत्त होण्याचा विचार योजिला, किंवा त्यानें पांडवांशी जो संग्राम आरंभिला होता तो तसाच पुढें चालविला, हें ऐकण्याची माझी मनीषा आहे, तर तें सांगा. माझ्या पूर्वजांचें श्रेष्ठ चरित्र ऐकत असतां माझी तृप्तिच होत नाही !

वैशंपायन सांगतातः—राजा जनमेजया, कर्णाच्या वधानें धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधन हा अगदीं शोकसागरांत बुडून गेला आणि त्याची सर्व आशा नष्ट झाली ! त्या समयीं त्यानें ‘हे कर्णा, हे कर्णा !’ असा फिरून फिरून एकसारखा आक्रोश आरंभिला. तेव्हां त्याची ती दुःखाकुल अवस्था पाहून, जे कोणी राजे रणांगणांत अवशिष्ट होते ते मोठ्या कष्टांनं त्यास स्वशिबिरांत घेऊन गेले ! नंतर तेथें त्या भूपाळांनीं शास्त्रनिश्चित अनेक सिद्धांत सांगून त्याची समजूत घातली, तथापि त्याच्या मनांत कर्णाचें वधवृत्त एकसारखें घोळत असल्यामुळे त्याच्या चित्ताला मुळीच स्वस्थता वाटेना ! अखेरीस त्यानें “देव खचीत बलवान् आहे, काय होणें असेल तें होईल !” असा आपल्या मनाशीं निर्धार ठरविला; आणि युद्ध करण्याचा निश्चय करून तो पुनः बाहेर पडला ! नंतर राजाधिराज दुर्योधनानें मद्राधिप शल्यावर सेनापत्याचा यथाविधि अभिषेक केला; आणि शल्य सेनापति व उर्वरित भूपाळ ह्यांमहवर्तमान तो पांडवांशी युद्ध करण्यास निघाला ! नंतर, हे भरतश्रेष्ठा, कौरव व पांडव ह्यांचें देवासुरांप्रमाणें अतिशय दारुण व तुंबळ युद्ध झालें ! त्यांत शल्यानें मध्याह्न-कालापर्यंत भयंकर कंदन केलें, परंतु अखेरीस धर्मराजानें त्यास सैन्यासुद्धां ठार मारिलें ! तेव्हां तें पाहून बंधुहीन झालेला दुर्योधन राजा रणांगणांतून पळाला आणि शत्रूंच्या भयानें घोर वृद्धांत बुडून बसला ! मग

त्याच दिवशीं तिसरे प्रहरी भीमसेन व पांडवां-कडील महान् महान् वीर ह्यांनी त्या वृद्धाला गराडा घातला व युद्धार्थ आव्हान देऊन भीमसेनानें दुर्योधनाला वृद्धाच्या बाहेर बोलाविलें आणि त्याच्याशीं घोर युद्ध करून त्यांत त्यास ठार मारिलें ! राजा जनमेजया, ह्याप्रमाणें कौरवाधीश महाधनुर्धर दुर्योधन हा भीमाच्या हस्ते रणभूमीवर पतन पावतांच कृप, कृतवर्मा व अश्वत्थामा हे तिघे कौरवांकडील अवशिष्ट योद्धे रात्रीच्या समयीं मोठ्या त्वेपानें निघाले व त्यांनीं पांचालसोमकांचा संहार उडविला ! नंतर दुसऱ्या दिवशी सकाळीं संजय शिबिरांतून निघाला आणि दुःखशोकांनीं ग्रस्त होतासाता मोठ्या दीनमुद्रें कौरवपुरीत प्रविष्ट झाला ! राजा जनमेजया, मग तो शोकावेगानें थरथर कांपणारा मृत संजय दुखानें हात वर करीत रडत आरडत राजवाड्यांत शिरला; आणि “अहो, महात्म्या दुर्योधनाच्या वधानें आपण सर्व ठार बुडालों हो बुडालों ! खचीत दैव मोठें बलिष्ठ, पराक्रम हाव्यर्थ होय ! अहो, कौरव हे इंद्रासारखे पराक्रमी, पण पांडवांनी त्या सर्वांना ठार मारिलें !” असा आक्रोश करूं लागला ! तेव्हां कौरवपुरीतील जनांनीं संजयाची ती विपन्न स्थिति अवलोकन करून आणि त्याच्या तोंडून युद्धाचें घोर वर्तमान ऐकून फारच आकांत केला ! राजा, त्या समयीं सर्व लोक अतिशय रडूं लागले ! चोहोंकडे आत्राल-वृद्धांत मोठा कलहोल उडाला ! सर्वांचीं मुखें स्लान झालीं ! आणि दुर्योधन मेला असें श्रवण करून जो तो धाय मोकळून रडूं लागला ! राजा, त्या समयीं त्या दुःखकारक बातें सामान्य जनांचीच मनं विदीर्ण झालीं असें नव्हे, तर मोठमोठे विचारी व धैर्यशाली पुरुषही गांगरून जाऊन अनावर दुःखानें अत्यंत पीडित होतासे नष्टचित्त होऊन वेड्यासारखे

इतस्ततः धावू लागले ! असे; नंतर तो दुःखा-  
कुल झालेला संजय धृतराष्ट्र राजाच्या महा-  
लांत शिरला, तो तेथें नृपतिश्रेष्ठ प्रज्ञाचक्षु  
अनाथ धृतराष्ट्र राजा आसनावर स्थित असून  
त्याच्या सभावतीं त्याच्या सुना, गांधारी व  
विदुर आणि त्याप्रमाणेंच इतर आसमुहूत व दुसरी  
हितचिंतक मंडळी अधिष्ठित आहे, आणि त्याचें  
मन कर्णाच्या वधामुळे आतां पुढें काय होईल  
ह्या विचारांत अगदी निमग्न आहे, असे त्यानें  
पाहिलें ! राजा, त्या वेळी संजयाची मनोवृत्ति  
दुःखभरानें व्याप्त असल्यामुळे त्याच्या मुखांतून  
स्पष्ट शब्दही निघतना ! तथापि अखेरीस  
रडत रडत मोठ्या कष्टानें ' हे नरशार्दूल भरत-  
श्रेष्ठा, हा मी संजय तुला प्रणिपात करीत आहे,  
असें तो कसें वसें धृतराष्ट्र राजाला म्हणाला !  
राजा, नंतर त्यानें युद्धाचें वृत्त निवेदन केलें.  
तो म्हणाला:—राजा, मद्राधिप शल्य, सौबल  
शकुनि, त्या कपटी द्यूतकाराचा ( शकुनीचा )  
महापराक्रमी पुत्र उलूक, सर्वसंशप्तक, कांबोज,  
शक, स्केच्छ, पार्वतीय, यवन, प्राच्य, दाक्षि-  
णात्य, उदीच्य, प्रतीच्य वगैरे सर्व महान् महान्  
योद्धे, राजे व राजपुत्र हे सगळे समरांगणांत  
पडले आणि त्याप्रमाणेंच भीमसेनानें आपल्या  
प्रतिज्ञेप्रमाणें दुर्योधनाला ठार मारिलें असून  
आतां तो भग्नोदुर्योधन राजा रक्तांनें माखून  
धुळीत पडला आहे ! त्याप्रमाणेंच, राजा, धृष्ट-  
द्युम्न, अपराजित शिखंडी, उत्तमौजा, युधामन्यु,  
प्रभद्रक, पांचाल व चेदि ह्या सर्वांचा अंत झाला !  
तुझे सर्व पुत्र पडले ! द्रौपदीचेही सर्व पुत्र नष्ट  
झाले ! आणि कर्णाचा प्रतापशाली शूर पुत्र  
वृषसेन वधिला गेला ! त्याप्रमाणेंच, राजा, सर्व  
मनुष्यें, हत्ती, घोडे व रथी हे युद्धांत पडले,  
आणि अखेरीस शिबिरांत फारच अल्प सैन्य  
शिल्लक राहिलें ! राजा, समरांगणांत कौरव-  
पांडवांचा घोर संग्राम होऊन परस्परांच्या हस्ते

परस्परांचा अंत झाला आणि कालानें ग्रस्त करून  
टाकिलेल्या ह्या विस्तीर्ण जगांत बहुधा स्त्रिया  
मात्र अवशिष्ट राहिल्या ! राजा, पांडवांकडील  
सात वीर व कौरवांकडील तीन वीर काय ते  
ह्या भयंकर रणकंदनांतून जगले; आणि ते  
कोणते म्हणशील तर पांच पांडव भ्राते हे पांच  
व कृष्ण आणि सात्यकि असे एकंदर सात  
पांडवांकडील, आणि कृप, कृतवर्मा व विजय-  
शाली अश्वत्थामा हे एकंदर तीन कौरवांकडील,  
असे दहाजण मात्र जिवंत उरले ! राजा, ह्या  
भयंकर युद्धाकरितां दोन्ही पक्षांकडे ज्या  
प्रचंड अक्षोहिणी सेना जमल्या होत्या, त्यां-  
पैकी हे इतके दहा रथी मात्र अवशिष्ट राहिले  
असून बाकीचें सर्व सैन्य मृत्युमुखी पडलें !  
राजा, हा कालाचा खेळ होय ! त्यानेंच दुर्यो-  
धनाला व ह्या कलहाला पुढें करून सर्व जग-  
ताचा हा असा संहार उडविला !

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया,  
संजयाच्या मुखांतून निघालेले हे दारुण शब्द  
श्रवण करून धृतराष्ट्र राजाचें काळीज फाटलें  
व तो भूतलावर मूर्च्छित पडला ! त्याच्या  
मागोमाग महाभाग्यवान् विदुरही शोकाकुल  
होऊन खाली पडला आणि तदनंतर धृत-  
राष्ट्राची पत्नी गांधारी व बाकीच्या सर्व कुरु-  
स्त्रिया एकदम पटापट धरणीवर पतन पावल्या !  
त्याप्रमाणेंच सर्व राजमंडल देखील बेशुद्ध  
होऊन भूतलावर पडलें व देहभान विसरून  
जाऊन दुःखभरानें निश्चेष्ट होत्सातें बडबड  
करू लागले ! तेव्हां जणू काय महान् पडद्या-  
वरील ती चित्रेच होत असे दिसूं लागलें ! राजा,  
नंतर कांही वेळानें, पुत्रदुःखानें मूर्च्छित पड-  
लेल्या धृतराष्ट्र राजाच्या देहांत थोडथोडें  
चलनचलन उत्पन्न झालें आणि मग लवकरच  
तो शुद्धीवर येऊन दुःखानें लळलट कांपत कांपत  
चोहोंकडे मान वळवून विदुरास म्हणाला:—



बा महाप्रज्ञा पंडिता विदुरा, प्रस्तुत समयी  
तूंच मला मोठा आधार आहेस ! बाबा, माझे  
एकूणएक सर्व पुत्र मृत्युमुखी पडून आज  
माझी अशी अगदी अनाथ अवस्था व्हावीना !  
राजा जनमेजया, धृतराष्ट्राच्या मुखांतून हे उद्गार  
बाहेर पडत आहेत तो पुनः त्याची चित्तवृत्ति  
बदलली व शोकाची लाट उमळून तो फिरून  
बेशुद्ध पडला ! तेव्हां ते पाहून, जे कोणी  
आसमुह्य तेथे होते त्यांनी लागलेच गार पाणी  
त्याच्यावर शिंपडिले व ते त्याला पंख्यांनी वारा  
घालू लागले ! राजा, नंतर पुष्कळ वेळाने  
धृतराष्ट्र राजा फिरून देहभानावर आला व पुत्र-  
दुःखाने विव्दल होतसाता कुंभांत टाकलेल्या  
सर्पाप्रमाणे एकसारखे सुस्कारे टाकीत स्तब्ध  
बसला ! जनमेजया, त्या समयी धृतराष्ट्राची  
ती दीन अवस्था पाहून संजय देखील रडू  
लागला आणि मग भाग्यशाली गांधारी व ह्या  
इतर सर्व स्त्रिया अनावर आक्रोश करू लागून  
मोठाच कलहोळ उद्भवला ! राजा, मग धृ-  
तराष्ट्राला पुष्कळ वेळपर्यंत वारंवार मूर्च्छा यावी  
व कांहीं वेळाने तो फिरून सावध व्हावा, असे  
चालले होते ! अखेरिच त्याने विदुराला सांगि-  
तले की, ' विदुरा, भाग्यशाली गांधारी व ह्या  
सर्व स्त्रिया आणि त्याप्रमाणेच हे सर्व आस-  
मुह्य ह्यांनी येथून जावे; ही मंडळी येथे असल्या-  
मुळे माझे मन फारच अस्वस्थ झाले आहे !'  
राजा जनमेजया, धृतराष्ट्राचे भाषण श्रवण  
करून विदुराने पुनःपुनः कांपत कांपत त्या सर्व  
स्त्रियांची व आसमुह्यांची हळूहळू समजूत  
घालून त्यांस तेथून जाण्यास सांगितले व नंतर  
ती सर्व मंडळी धृतराष्ट्र राजाची ती विपन्न  
स्थिति अवलोकन करून तेथून निघून गेली !  
राजा जनमेजया, नंतर संजयाने धृतराष्ट्र  
राजाकडे पाहिले, तो तो अगदी आर्त झाला  
असून स्फुंदत स्फुंदत पुनःपुनः दुःखाचे सुस्कारे

टाकीत आहे, असे त्याच्या दृष्टीस पडले ! मग  
त्याने हात जोडून मधुर भाषण करण्यास आरंभ  
केला; व शोकातुर झालेल्या त्या कुरूपतीला  
त्याच्या योग्य बराच विवेक उत्पन्न झाला !

## अध्याय दुसरा.

—०:—

### धृतराष्ट्राचा विलाप.

वेशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया,  
धृतराष्ट्राच्या समीप ज्या स्त्रिया वगैरे होत्या  
त्या तेथून निघून गेल्यानंतर अंबिकासुत धृ-  
तराष्ट्राचा शोक कमी न होता उलटा अत्यंत  
वादला आणि तो मोठमोठ्याने विलाप करू  
लागला ! राजा, त्या वेळी तो संतापाने अगदी  
पेटला व कोपाने कढत कढत सुस्कारे टाकीत  
आणि वारंवार दुःखाने हात चालवीत चितेमध्ये  
निमः होऊन असे उद्गार काढू लागला !

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, हे किती  
दुःखकारक वर्तमान तुं मला सांगितले ! अरे,  
रणांत पांडवांपैकी एकही न पडतां ते सर्व  
कुशल राहिले आणि माझे सर्वच पुत्र पडले  
हे झाले तरी कसे ? संजया, माझे हृदय  
खर्चीत वज्रसारमयच आहे आणि त्यामुळेच हे  
घोर वृत्त श्रवण करून त्याचे सहस्रावधि तुकडे  
झाले नाहीत ! संजया, माझ्या पुत्रांचे वय,  
त्यांच्या बाललीला व त्या सर्वांचा हा अशा प्रकारे  
झालेला अंत ही सर्व मनांत येऊन माझे चित्त  
अगदी व्याकूल होते ! बरे, मला नेत्र नसल्या-  
मुळे मी त्यांची स्वरूपे पाहिली नाहीत;  
तरी पुत्रवात्सल्यामुळे मी त्यांजवर नित्य प्रेम  
करीत आलों ! बा अनघा, त्यांचे बालपण  
संपून ते ज्वानीत आले व तदनंतर ते प्रौढ  
होऊन आपला मय्यकालांतील ( तारुण्यांतील )  
कार्यभार वाहू लागले, असे जेव्हां मी ऐकिले तेव्हां  
मला फार आनंद झाला ! परंतु, संजया, आज

ते सर्व धारातीर्थां पतन पावले आणि त्यांचें तें वीर्य, शौर्य, ऐश्वर्य वगैरे व्यर्थ झालें असें श्रवण करून आतां माझी सर्व शांति गेली व माझ्या शोकाला पारावार राहिला नाही ! ये ये, बाळा राजेंद्रा दुर्योधना, मला भेट दे ! अरे, आतां मी अगदीच अनाथ झालोंरे ! बाळा महाबाहो, तूं मला सोडून गेलाम, पण आतां माझी वाट काय ! अरे, किती तरी भूपाळ तुझ्या साहाय्यार्थ तुझ्या पक्षाला येऊन मिळाले होते आणि अंबेरीस त्या सर्वांना सोडून यः कश्चित् दुष्ट राजाप्रमाणें रणांगणांत हत होऊन तूं शयन केलेंस, ह्यास काय म्हणावें ? अरे, आजपर्यंत आससुद्धांना तूं आश्रय दिलास आणि आज माझ्यासारख्या वृद्धाला व आंधळ्याला सोडून कोठें चाललास ! बाळा, तुझें ते प्रेम, तुझी ती कृपा व तुझी ती आदरबुद्धि आज कशी अस्तंगत झाली ! अरे, रणांत तुझा आजवर कधीही पराजय झाला नाही, आणि आज तर तुला पांडवांनी वधिलें हें संभावें तरी कमें ! बाळा, मी उठलों असतां आतां मला ' बाबा, बाबा, ' असें कोण बरें म्हणेल ! अरे आतां मला ' महाराज, महाराज, ' अशी सतत कोण बरे हाक मारील ! अरे, आतां मला पुनःपुनः ' लोकनाथा, लोकनाथा ' असे शब्द कोण बरें उच्चारील ! बाळा, आतां मला प्रीतीनें आलिंगन देऊन व माझ्याकडे मद्गदित नेत्रांनी पाहून ' कुरुराज, आज्ञा करा ! कुरुराज, आज्ञा करा ! ' असें मला कोण बरें पुनः म्हणेल तें मला नीट सांग पाहूं ! बाळा, तुझ्या तोंडून मी असेही शब्द ऐकिले आहेत कीं, " ह्या अफाट पृथ्वीवर जितकी माझी सत्ता आहे तितकी धर्मराजाची नाही ! कौरवेश्वरा, भगदत्त, कृप, शल्य, आवंत्य, जयद्रथ, भूरिश्रवा, सोमदत्त, महाराज बाल्हिक, अश्वत्थामा, भोजाधिप, महाबल मागध, बृहद्बल, काशीराज, सौबल

शकुनि, लक्षावधि स्लेच्छ, शक व यवन, कांबोज देशाचा राजा सुदक्षिण, त्रिगतांचा अधिपति. पितामह भीष्म, भारद्वाज, गौतम, श्रुतायु, अयुतायु, वीर्यवान् शतायु, जलसंध, ऋष्यशृंगाचा पुत्र, राक्षस अलायुध, महाबाहु अलंबुष, महारथ सुबाहु, हे व ह्याप्रमाणेंच दुसरे पुष्कळ राजे हे सर्व माझ्याकरितां प्राणांची व धनाची पर्वा न करितां पांडवांशी युद्ध करण्यास तयार आहेत. ह्यामाठी त्यांच्या मध्यभागी अधिष्ठित होऊन भ्रात्यांनी परिवेष्टित होत्सता मी रणभूमीवर पांडव, पांचाल, चेदि, द्रौपदीचे पुत्र, मात्यकि, कुंतिभोज व षटोत्कच राक्षस ह्यांच्याशी युद्ध करीन ! नृपशार्दूल, हे सर्व पांडवीय योद्धे माझ्यावर धावून आले असतां समरांगणांत क्रोधाग्रमान झालेला मी एकटा देखील त्यांचें निवारण करण्यास समर्थ आहे; मग पांडवांशी वैर करणारे हे सर्व वीर माझ्यासमवेत असल्यास पांडवांच्या पराभवाविषयी वानवा ती कसली ? अथवा, राजा, माझ्या पक्षाचे हे सर्व योद्धे पांडवांच्या अनुयायांशी लढून त्यांस युद्धांत वधिलील आणि कर्ण व मी असे आम्ही दोघे एकत्र होऊन पांडवांना ठार मारूं ! राजा, नंतर सर्व पराक्रमी भूपाळ माझ्या आज्ञेत वागतील आणि त्यांचा नायक जो महाबलवान् कृष्ण तो अंगांत चिलखत घालणार नाही ! " मृता संजया, ह्याप्रमाणें दुर्योधन माझ्याशी अनेक वेळां बोलला असतां, त्याच्या सामर्थ्याचा विचार करून मी तर आपल्या मनाशी रणांत पांडव मेले असेंच ठरविलें होतें; परंतु आज स्थिति अशी झाली कीं, त्या पांडवांच्या मध्यभागी उभें राहून मोठा पराक्रम गाजवीत असतां समरांगणांत माझेच पुत्र भृत्यमुखी पडले ! तेव्हां हा सर्व देवाचा खेळ आहे, दुमरें काय ? संजया, प्रतापशाली लोकनायक भीष्म जेव्हां

शिखंडीशीं लडत असतां पडतो म्हणजे जणू काय कोल्हाकडून सिंहाचा वध होतो, तेव्हां हे सर्व देवच नव्हे का ? अरे, द्रोणाचार्याची केवढी शक्ति ! तो ब्राह्मण सर्व शस्त्रास्त्रविद्येत निष्णात ! आणि असें असतां युद्धांत पांडवांनीं त्याला वधावें, तेव्हां ही देवघटना म्हणूं नये तर दुसरे काय म्हणावें ? अरे, दिव्यास्त्रवेत्ता महाबलिष्ठ कर्ण युद्धांत पडला; आणि त्या-प्रमाणेच भूरिश्रवा, सोमदत्त व बालिहक ह्यांची गति झाली, तेव्हां हे सर्व देवदुर्विलसितच होय ह्यांत संदेह नाही ! अरे, गजयुद्धांत प्रवीण असा भगदत्त व त्याप्रमाणेच महाशूर जो जय-द्रथ तोही जर युद्धांत मारला गेला तर हे दुर्दैव नव्हे तर दुसरे काय ? अरे, सुदक्षिण, पुरुकुलोत्पन्न जलसंध, श्रुतायु व अयुतायु ह्यां-सारखे महान् महान् योद्धे जर रणांत पडले, तर हे खचीत दुर्दैवच होय ! संजया, महा-बल पांडव म्हणजे सर्व शस्त्रधरांमध्ये अग्रगण्य, आणि असें असतां पांडवांनीं त्यांस संग्रामांत ठार मारिले, तेव्हां हे घडवून आणणारे दुर्दैवच नव्हे का ? अरे, शूर बृहद्बल, महाबलवान् मागध, तसाच धनुर्धरांचा केवळ ध्वजच असा तो पराक्रमी उग्रायुद्ध, आवंत्य, त्रिगर्ताधिप व संशप्तक ह्या सर्वांनाही जेथें मृत्युमुखीं पडावे लागले, तेथें देव बलवान् म्हणावे किंवा दुसरे कांहीं बलवान् म्हणावे ? संजया, अलंबुष, अलायुष राक्षस व ऋष्यशृंगाचा पुत्र आपर्य-शृंगि ह्यांचाही जर वध झाला, तर हे देवच नव्हे का ? अरे, नारायण व गोपाळ नामक महान् महान् युद्धधुरंधर सैन्ये व त्याप्रमाणेच सहस्रावधि म्लेच्छ वीर जर रणांत पडले, तर ह्याला देवा-चाच खेळ असें म्हणूं नये काय ? संजया, सोबल शकुनि व त्याप्रमाणेच त्याचा महाबल-वान् पुत्र केतव्य ( उलूक ) हे वीर आपल्या सेनांसहवर्तमान रणांगणांत हत झाले, तर ह्याला

देव म्हणूं नये, तर दुसरे काय ह्याणावें ? सूता, हे सर्व योद्धे व तसेच दुसरेही पुष्कळ युद्ध-विशारद, अस्त्रविद्यापारंगत व परिश्रुतुल्य बाहु धारण करणारे राजपुत्र व राजे जर रणांगणांत पतन पावले, तर तो खचीत देवाचाच परिणाम होय ! संजया, माझ्या पक्षाला जे बहुत क्षत्रिय येऊन मिळाले होते, त्यांचें सामर्थ्य काय वर्णावें ? ते सर्व अतिशय शूर व महाधनुर्धर असून ते अस्त्रविद्याप्रवीण व रणांत शत्रूंवर मोठ्या त्वेषानें चाल करून जाणारे असे होते. नानाविध देशां-हून प्राप्त झालेल्या त्या सर्व रणशूरांच्या ठिकाणीं केवळ महेंद्रतुल्य प्रताप वसत होता; आणि असें असतांही ते सर्व युद्धांत पतन पावले, तेव्हां हे खचीत देवच, दुसरे काय ? संजया, माझे प्रतापशाली पुत्र, पौत्र, भ्राते, मित्र वगैरे सर्व धारातीर्थी पडले, तेव्हां ही सर्व देवाचीच लीला होय ह्यांत संदेह नाही; निः-संशयपणें, मनुष्य जेव्हां जन्मास येतो तेव्हांच तो आपल्याबरोबर बरे किंवा वाईट देव घेऊन येतो ! ज्या मनुष्याचें देव बरे असतें, तो भाग्य-वान् पुरुष सुख भोगितो; व ज्याचें देव वाईट असतें तो अभागी पुरुष दुःखाचा वाटेकरी होतो ! संजया, माझे देव विपरीत असल्यामुळें आज माझे सर्व पुत्रादिक नष्ट होऊन मी सर्वतोपरी हा असा अनाथ झालों ! अरे, आतां मी हा असा वृद्ध शत्रूंच्या हस्तगत झालों म्हणजे माझी वाट काय होईल ? बाबा, ह्यापुढें आतां वनवासशिवाय दुसरे कांहींही मला बरें दिसत नाही ! अरे, संग्रामांत सर्व स्वकीयांचा संहार घडल्यामुळें आतां मला आसमुहदांचा वगैरे कांहीच पाश उरला नाही; ह्याकरितां पंख तोडून टाकिलेल्या पक्ष्याप्रमाणें दीन अवस्था प्राप्त झालेल्या मला आतां वनवासच प्रशस्त होय ! संजया, आतां दुर्योधन मेलाला, शल्य युद्धांत पडला, दुःशासन, विविश, विकर्ण

वगैरे महाबल पुत्रांचीही तीच गति झाली. तेव्हां भीमसेन हा मला अतिशय कठोर शब्द बोलेल ते माझ्यानें कसे सहन होतील बरें ! संजया, ज्या एकट्यानें माझे शंभर पुत्र वधिले, तो भीमसेन आतां पुनःपुनः दुर्योधनाचें वधवृत्त मजपुढें बोलू लागला म्हणजे दुःखशोकांनीं व्याप्त झालेल्या मला त्याचे ते क्रूर शब्द मुळींच ऐकवणार नाहीत !

### कथाप्रस्ताव.

वैशंपायन सांगतातः— राजा जनमेजया, ह्याप्रमाणें बंधुहीन झालेला तो वयोवृद्ध धृतराष्ट्र राजा अगदीं क्षुब्ध झाला आणि पुनःपुनः दुःसह पुत्रशोकांनं मूर्च्छित पडूं लागला ! राजा, अशा रीतीनें पुष्कळ वेळपर्यंत त्यानें विलाप केले आणि अखेरीस दुःस्वानें दीर्घ व कष्ट कष्ट असे मुस्कारे टाकीत व आपणावर गुदरलेल्या भयंकर अनर्थीचें मनन करीत अंतर्बाह्य दुःस्वानें व्याप्त होऊन त्यानें संजयाला युद्धाचें सविस्तर वर्णन करण्यास सांगितलें.

धृतराष्ट्र विचारतोः— संजया, भीष्म व द्रोण हे समरांगणांत पडले व त्याप्रमाणेंच कर्णाचाही अखेरीस वध झाला, तेव्हां माझ्या पक्षाच्या योद्ध्यांनी आपला सेनापति कोण केला बरें ? संजया, माझ्या सैनिकांनीं समरभूमीवर ज्याला ज्याला म्हणून सेनापति नेमिलें, त्याचा त्याचा पांडवांनीं फार थोड्या काळांत नाश केला हें पाहून मला मोठें आश्चर्य वाटतें ! संजया, तुझी सर्व पाहात अमतां अर्जुनानें भीष्माला भयंकर रणांत शरपंजरी पाडिले ! पुढें तीच गति द्रोणाची झाली आणि तुझ्या सर्वांच्या समक्ष पांडवांनीं त्याचा वध केला ! संजया, पुढें प्रतापवान् कर्णाचा सुद्धां ह्याच प्रकारें अंत झाला ! तेव्हां तरी सर्व राजांसमवेत तुझी रणांगणांत कर्णाच्या समीप असतां अर्जुनानें कर्णाला ठार मारिलें ! संजया, महात्म्या विदुरानें मला पूर्वीच सांगितलें होतें

की, दुर्योधनाच्या अपराधामुळें सर्व प्रजा नष्ट होईल ! संजया, आणखी तो असेंही म्हणाला होता कीं, कित्येक मूर्ख पुरुष ह्या जगांत कित्येक गोष्टी डोळ्यांनीं धडधडीत पहात अमतांही त्यांस त्यांचा उमज पडत नाहीं, ह्यास काय म्हणावें ? संजया, तेव्हां विदुर मला जें कांहीं म्हणाला, त्याचा त्या समयी म्यां मूर्खानें विचार केला नाहीं; आणि अखेरीस त्या सत्यवादी, दूरदृष्टि व महाधर्मशील विदुराचें तथ्य वचन आज माझ्या अनुभवास येत आहे ! संजया, बुडत्याचें पाऊल खोलांतच पडावयाचें; ह्यास्तव माझ्यापुढें हा सर्व दुःखभार ओढवला अमल्यामुळें मीं त्या वेळीं विदुराच्या सांगण्याचा अनादर केला आणि त्याच अपराधाचें हें आतां घोर फल मला प्राप्त झालें आहे ! अहो ! बाबा, जें कांहीं रणभूमीवर घडून आलें असेल, तें सर्व पुनः विस्तृतपणें निवेदन कर !

संजया, रणांगणांत कर्ण पतन पावल्यावर कौरवांच्या सैन्यांच्या बिनीवर कोण होता ? नंतर कृष्णार्जुन हे कौरवांवर चालून आले तेव्हां त्यांच्यावर उलट चाल कोणी केली ? संजया, मद्राज शल्य ज्या वेळीं पांडवांशीं लढण्यास उद्युक्त झाला, त्या वेळीं रणांगणांत त्याच्या रथाचीं उजवें व डावें हीं चक्रे व त्याप्रमाणेंच त्याचा पृष्ठभाग कोणकोण राखीत होते ? वा संजया, तुम्ही सर्व समरभूमीवर एकत्र होऊन निकरानें लढत अमतां संग्रामांत पांडवांनीं महारथ मद्राधिप शल्याला व माझा पुत्र दुर्योधन ह्याला कसें बरें वधिलें ? संजया, रणभूमीवर भारतीय वीरांचा जो महान् संहार घडला आणि तसाच त्यांत माझा पुत्र दुर्योधन हाही ज्या प्रकारें मारिला गेला, तें सर्व वर्तमान जसें घडलें असेल तसें सविस्तर निवेदन कर; व त्याप्रमाणेंच सर्व पांचाल व त्यांचे अनुयायी,

तसेच धृष्टद्युम्न, शिखंडी व द्रौपदीचे पांच पुत्र ह्यांच्या वधाचें वृत्त मांग ! आणि त्याप्रमाणेंच पांडव, कृष्ण, मात्याकि, कृप, कृतवर्मा व अश्व-  
त्थामा हे सर्व युद्धातून कसे जिवंत राहिले ह्या सर्वेचें यथाम्थित निरूपण कर; व रणांगणांत कोणकोणाचा संग्राम कसकसा झाला हें सर्व प्रस्तुत समयी ऐकण्याची मी इच्छा करीत आहे, तर तूं ही माझी इच्छा सिद्धीस ने ! संजया, तूं ह्या कामांत मोठा निष्णात आहेस !

## अध्याय तिसरा.

—:—

### कौरवांच्या सैन्यांची पळापळ.

संजय मांगतो :—राजा धृतराष्ट्रा, कौरवांच्या व पांडवांच्या सैन्यांनी एकमेकांशी घोर युद्ध करून जो भयंकर क्षय उडविला. त्याचें आतां मी सविस्तर वर्णन करितों; तर तूं तें सावधान चित्तानें ऐक. राजा, महापराक्रमी अर्जुनानें कर्णाचा वध केल्यानंतर तुझी सैन्ये एकसारखी पळत सुटली, तेव्हां दुर्योधनानें त्यांस युद्धार्थ फिरून रणांगणांत जमविलें; तरी ती भयभीत होऊन पळून गेलीच ! राजा, ह्याप्रमाणें कौरवसैन्यांनी पळून जावें व कौरवाधिपतीनें त्यांस प्रोत्साहन देऊन पुनः युद्धार्थ उद्युक्त करावें, असा कितीएक वेळां क्रम चालला; पण त्यांत यश न येतां शेवटी कौरवसैन्ये पळूनच गेली ! राजा, इकडे रणभूमीवर कर्ण पडला आणि घोर संग्रामांत महान् महान् वीरांचा संहार घडला, तेव्हां अर्जुन एकसारखा सिंहनाद करूं लागला ! राजा, त्या समयी तुझ्या पुत्रांची अगदी पांचांवर धारण बसली आणि सैन्यांची एकच पळापळ उडाली. तेव्हां त्यांस आवरून धरण्याला किंवा रणांगणांत शौर्याने पांडवांवर चालून जाण्याला कोणत्याही वीरास धीर झाला नाही ! राजा, सूतपुत्र कर्ण

हा कौरवांचा द्रौपतुल्य महान् आधार होता ! ह्यास्तव अर्जुनानें जेव्हां त्यास वधिलें, तेव्हां तुझ्या योद्ध्यांची अशी कांही विपन्न दशा झाली की, त्या वेळां जणू काय ते नौका फुटल्यामुळें निराश्रित झालेले वाणिगजनच अगाध महासागराच्या परतीरास जाण्याचा प्रयत्न करीत आहेत, असें भासूं लागलें ! राजा, कर्णाच्या वधानंतर कौरवदलें अतिशयच भयाली व अर्जुनाच्या शरप्रहारांनी अत्यंत पायाळ झाली ! त्या समयी, मिहानें व्रस्त केलेल्या मृगाप्रमाणें त्यांची अगदी दीन अवस्था झाली; व ती अनाथ होऊन, आतां ह्या घोर प्रसंगांत आपलें कोण बरें संरक्षण करील अशा विवंचनेत पडली ! राजा, सव्यसाची अर्जुनानें तुझ्या सैन्यांना जिकलें तेव्हां शिंगें तोडिलेल्या बैलाप्रमाणें किंवा दांत पाडिलेल्या मर्पाप्रमाणें ती अगदी दीन होऊन मायकाळी परत आपआपल्या शिबिरांत गेली ! राजा, सूतपुत्र कर्णाचा वध झाल्यावर तुझ्या सैन्यांची जी दुर्दशा उडाली तिचें काय वर्णन करावें ! त्या समयी तुझ्या सैन्यांतले महान् महान् योद्धे मरण पावले असून, राहिल्यामाहिल्या योद्ध्यांची शरीरें जलाल बाणांनी छिन्नभिन्न होऊन त्यांचा अगदी विध्वंस उडाला होता ! राजा, कर्ण पडला तेव्हां तुझे पुत्र भयभीत होतमाते पळत सुटले ! शरप्रहारांनी त्यांची चिलखतें फाटून गेली व भयानें त्यांचें देहभान नष्ट झालें ! पळत असतां आपण अमुक दिशेस जात आहों हेंही त्यांस अवधान राहिलें नाहीं ! बेहोष होऊन पळत असतां त्यांनीं स्वपक्षांय वीरांना सुद्धां ठार मारिलें ! अर्जुनाच्या भयानें त्यांस इतकें व्रस्त केलें की, त्यांस जिकडे तिकडे पांडवच दिगूं लागले ! " अहो, खरोखर माझ्याच मागे अर्जुन आला ! माझ्याच मागे भीमसेन आला ! " असें ते मानूं लागले ! आणि

त्यांच्या मनाचें धैर्य अगदीं सुटून ते धडाधड खाली पडले व मूर्च्छित झाले ! राजा, त्या वेळीं कित्येक महारथ घोड्यांवर, कित्येक हत्तीवर रथांत, आणि कित्येक पायदळाच्या स्फंधावर वंगरे बसून मोठ्या वेगानें धावत सुटले ! तेव्हां त्यांची अशी धांदल उडाली की, हत्तीनी रथ मोडिले, महाराथांनी घोडेस्वार मारिले व अश्वसमुदायांनी पायदळांस तुडविले ! आणि वन्य पशु व चोरेदे ह्यांनी गजबजलेल्या अरण्यांत ज्याप्रमाणें व्यापाऱ्यांच्या तांड्यापामून दूर राहिलेल्या मनुष्यांची वाताहत होते, त्याप्रमाणें कौरवांच्या त्या सेनेची अतिशयित वाताहत झाली ! राजा, त्या समयीं कित्येक हत्तींवरील वीर मेले, कित्येक हत्तींच्या शूंडा तुडल्या, आणि तिकडे तिकडे भयानें सर्वत्र पार्थ व भीमसेन हे दिगूं लागले ! राजा, नंतर भीमसेनाच्या भीतीनें ही सर्व सैन्ये पळत आहेत असें मनांत आणून दुर्योधन राजा आपल्या सारथ्याला हाहाकारपूर्वक म्हणाला, “ बा सुता, त्वरा कर, त्वरा कर, रथाचे घोडे लवकर चालव ! माझा रथ ह्या सैन्यांच्या अगदीं मागें असल्यामुळें ही सर्व सैन्ये भयभीत होऊन पळत आहेत ! ह्यासाठीं मला लवकर पुढें जाऊं दे ! ह्या सैन्यांच्या पृष्ठभागी हातांत धनुष्यबाण धारण करून मी युद्धार्थ मिद्ध आहे, असें भीमसेनाच्या दृष्टीस पडलें म्हणजे माझ्यावर चालून येण्याची त्याची छाती होणार नाही; आणि तोच प्रकार अर्जुनाचा होऊन, प्रचंड सागराचें जसें त्याच्या मर्यादेपुढें कांहीणूक न चालतां त्यास माघार घ्यावी लागते, तशी त्या भीमार्जुनांस माझ्यापुढें माघार घेऊन मागें वळावें लागेल ! सारथे, आतां मी कृष्णार्जुन व अभिमानी भीमसेन आणि त्याप्रमाणेंच प्रमुख प्रमुख शत्रु ह्यांना वधून कर्णाच्या कृष्णांतून उतराई होईन. ”

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें दुर्योधनानें

शौर्याला व आपल्या श्रेष्ठ कुलाला साजेसें जें भाषण केले. तें श्रवण करून त्याच्या सारथ्यानें सुवर्णाच्या अलंकारांनीं शृंगारिलेल्या अशा त्या घोड्यांना हळूच इशारा करितांच तो रथ वेगानें चालू लागला आणि मग गज, अश्व व रथ ह्यांनीं हीन झालेले पुष्कळ शूर वीर आणि पंचवीस हजार पायदळ हळूहळू पांडवांशीं लढण्यास पुढें सरलें ! राजा, नंतर कौरवांच्या व पांडवांच्या सैन्यांचें भयंकर युद्ध सुरू झालें ! त्या समयीं भीमसेन व धृष्टद्युम्न हे क्रोधायमान होऊन चतुरंग सैन्यानिशी त्या शत्रूसैन्यांवर तुटून पडले आणि त्यांनीं शरांची घोर वृष्टि आरंभिली ! तेव्हां कौरवांकडील योद्ध्यांनींही त्या भीमसेन-धृष्टद्युम्नाशीं मोठ्या निकराचें युद्ध चालविलें आणि त्यांचीं मोठमोठ्यांनां नांवें घेऊन त्यांस त्यांनीं चोहोंकडून वेढून टाकिलें ! राजा, त्या वेळीं भीमसेनाला फारच संताप आला व तो त्या कौरववीरांशीं मोठ्या आवेशानें लढू लागला ! राजा, तेव्हां त्या महाधर्मशील भीमसेनाला रथांतून कौरवांशीं लढणें उचित वाटलें नाही; व ते जसें भूतलावर उभे राहून लढत होते, तसेंच आपणही लढावें असें मनांत आणून तो गदेमहवर्तमान रथांतून खाली उतरला आणि केवळ बाहुबलाचा आश्रय करून तो शत्रूंशीं घोर युद्ध करू लागला ! राजा, त्या समयीं भीमसेनानें आपल्या मुवर्णमंडित प्रचंड गदेचे कौरवांवर इतके भयंकर प्रहार चालविले की, जणू काय तो दंडपाणि यमधर्मच प्राण्यांचा एकसारखा संहार करीत आहे असें सर्वांस भासलें ! राजा, ह्याप्रमाणें भीमसेनाच्या हस्ते कौरवांकडील महान् महान् वीर रणांगणांत पतन पावले तेव्हां कौरवांकडील पायदळाला मनस्वी क्रोध आला; आणि दोळ्यांनीं जशी अग्नीवर उडी व.लावी, तशी त्यानें रणांत भीमसेनावर उडी घालून त्याशीं घोर युद्ध चालविलें ! राजा,

तेव्हां ते कौरवांकडील शूर पदाति वीर मोठ-  
मोठ्याने आक्रोश करू लागले, परंतु भीमसेन  
त्यांजवर खड्गानें व गदेनें प्रहार करीत श्येन-  
पक्ष्याप्रमाणें झडपा घालू लागला, तेव्हां एकाएकी  
अग्रभागी काळ प्राप्त झाला असतां जशी प्राणि-  
समुदायांची भयंकर अवस्था होऊन ते सर्व  
मृत्युमुखी पडतात, तशीच कौरवांकडील त्या  
सर्व पायदळाची अवस्था होऊन ते सर्व मृत्यु-  
मुखी पडले! राजा, ह्याप्रमाणें सत्यपराक्रमी  
भीमसेन तुझें पंचवीस हजार पायदळ ठार  
मारून नंतर धृष्टद्युम्नाला पुढें करून उभा राहिला.  
राजा, इकडे वीर्यशाली धनंजयानें, कौरवांचें  
जें रथसैन्य पळून जात होतें त्याचा पाठलाग  
केला; आणि त्याप्रमाणेंच नकुल, सहदेव व  
महाबल सात्यकी ह्यांनीं मोठ्या वीरश्रीनें शकुनी-  
वर हल्ला करून त्याच्या सैन्यास प्राणसंक-  
टांत घातले! राजा, त्या समयी त्यांनीं शकु-  
नीचे अनेक घोडेस्वार जलाल शरांनीं ठार  
मारिले आणि नंतर तत्काळ लुब्ध शकुनीवर  
चाल केली व मग मोठें तुंबळ युद्ध जंपलें!  
राजा, इकडे अर्जुन सर्व तैलोक्यांत प्रस्थित  
अशा गांडीव धनुष्याचा टणत्कार करीत कौर-  
वांच्या रथसैन्यांत प्रवेश करितो आहे, तो  
आपल्यावर श्वेतहय व कृष्णमारुथि अर्जुन  
चालून आला इतकें पाहतांक्षणींच तुझ्या  
सैन्यांनीं घाबरून जाऊन पळ काढिला! परंतु  
इतक्यांत रथहीन व अश्वहीन झालेले पंचवीस  
हजार पायदळ योद्धे बाणांचा भडिमार करीत  
अर्जुनावर धावून आले व त्यांनीं त्यास वेढा  
दिला. पण तितक्यांत ताबडतोब भीमसेनासह-  
वर्तमान पांचालांचा महारथ धृष्टद्युम्न ह्यानें  
त्यांजवर हल्ला केला व त्या सर्वांचा विध्वंस  
उडविला! राजा, ह्याप्रमाणें तो महाधनुर्धर,  
शत्रुसंहारक व विजयशाली पांचालराजपुत्र धृष्ट-  
द्युम्न हा, ज्यास पारावतवर्णाचे अश्व जोडिले

हेते व ज्यावर कोविदाराचा उत्तम ध्वज झळ-  
कत होता अशा रथांतून समरभूमीवर परि-  
भ्रमण करीत आहे, असें जेव्हां तुझ्या योद्ध्यांनीं  
पाहिलें तेव्हां ते भयभीत होतात पळून गेले!  
राजा, इकडे यशस्वी नकुलसहदेवांनीं सात्यकी-  
सह त्वरेनें अस्त्रवृष्टि करणाऱ्या शकुनीवर हल्ला  
करून त्यास व त्याच्या सैन्यास अगदीं जख्म  
करून सोडिलें, तो चैकितान, शिखंडी व द्रौप-  
दीचे पुत्र ह्यांनीं तुझ्या प्रचंड सेनेचा वध करून  
आपआपले शंख वाजविले! राजा, त्या वेळीं  
तुझें बाकीचें सैन्य धूम ठोकून पळून जाऊं  
लागलें, पण बैलांची झुंज होऊन पळ काढ-  
णाऱ्या बैलांचा जसे जय मिळविलेले बैल  
मोठ्या त्वेघानें पाठलाग करितात, तसा तुझ्या  
त्या सैन्याचा त्या चैकितानादिक पांडवीय  
वीरांनीं पाठलाग केला! इतक्यांत, राजा, तुझ्या  
पुत्राचें कांहीं अवशिष्ट सैन्य अद्यापि पांडवांशीं  
लढण्यास सिद्ध आहे असें पाहून अर्जुनास  
मनस्वी क्रोध आला आणि त्यानें तत्काळ  
बाणांचा भडिमार करून ते सर्व झांकून टाकिले!  
राजा, त्या वेळीं अंतरिक्षांत धूल उधळून चोहों-  
कडे अंधकार पडला आणि सर्व महीतल बाणांनीं  
व्याप्त होऊन कांहीच दिमेनामें झालें आणि  
कौरवसैन्य फारच भिऊन सर्व दिशांस पळून  
गेले! राजा, ह्याप्रमाणें तुझ्या सर्व सैन्याचा  
मोड झाला तेव्हां कुरुराज दुर्योधन हा फारच  
चवताळला व अगदीं बेहोष होऊन आपल्या  
व शत्रूंच्या अशा दोन्ही सैन्यांवर मोठ्या  
आवेशानें चाल करून गेला! राजा, बलीनें  
ज्याप्रमाणें पूर्वीं देवांना युद्धार्थ आह्वान केलें  
होतें, त्याप्रमाणें त्या समयी दुर्योधनानें सर्व  
पांडवांना युद्धार्थ आह्वान केलें; आणि मग  
तो मोठमोठ्यानें गर्जत असतां त्याजवर सर्व  
पांडव नानाविध शस्त्रास्त्रांची वृष्टि करीत व  
पुनःपुनः त्याला निंदात एकदम धावून आले!

राजा, तेव्हां दुर्योधनानेही मोठ्या शौर्याने त्यांजवर शरवर्षाव आरंभिला आणि त्यांचा असा मोड करून टाकिला की, तो त्याचा पराक्रम पाहून आह्मांस मोठे आश्चर्य वाटले ! कारण, सर्व पांडवांनाही त्या एकट्या दुर्योधनाला त्या समयीं मागे हटवितां आले नाही ! असो; नंतर राजा, जवळच आपले सैन्य पळून जाण्याच्या वेतांत होतें, तें दुर्योधनानें नीट न्याहाळून पाहिलें. तेव्हां तें अतिशय घायाळ झालें आहे असे त्याच्या नजरेस आले ! राजा, नंतर तुझ्या त्या पुत्रांनें समयावर लक्ष देऊन त्या सर्व सैन्याला थांबवून धरिलें आणि त्यांतील योद्ध्यांना वीरश्री आणण्याकरितां तो म्हणाला:-वीरहो, पर्वतांवर किंवा भूमीवर असा एकही प्रदेश मला आढळत नाही की, जेथे तुम्ही गेल्यानें तुमची पांडवांपासून सुटका होईल ! तर मग तुम्ही रणांगणांतून पळून गेल्यानें लाभ तो कोणता ! अहो, प्रस्तुत समयीं पांडवांचें सैन्य अगदीं थोडें असून कृष्णार्जुन अतिशयित घायाळ झालेले आहेत; ह्यासाठी जर आपण येथे युद्धास तोंड देऊन उभे राहिलों, तर खर्चात आपण विजयी होऊ ! जर तुम्ही येथून भग्न होऊन पळून जाल, तर तुम्ही पांडवांचे अपराधी असल्यामुळे ते तुम्हांस पाठलाग करून ठार मारतील हें पक्कें समजा ! म्हणून, वीरहो, पळून जाऊन मृत्युमुखी पडण्यापेक्षां आपण लढाई करून धारातीर्थी पतन पावलों तर तें श्रेयस्कर नाही का ? अहो, क्षात्रधर्मानें युद्ध करून संग्रामांत मरण आलेलें फार उत्तम ! कारण, अशा प्रकारें मृत झालेल्या प्राण्याला दुःख मुळींच होत नाही व शिवाय मेल्यावर त्यास सद्गति प्राप्त होते ! ह्या स्थळीं प्राप्त झालेल्या सर्व क्षत्रियांनो, जर तुम्ही येथून पळून गेल्यां तर तुमचा शत्रु जो भीमसेन त्याच्या कचाटीत सांपडलांच म्हणून समजा ! ह्यासाठी,

वाडवडिलांनीं आचरिलेल्या मार्गाचें तुम्हीं उल्लंघन करूं नये हें सर्वथैव इष्ट होय ! अहो, रणांगणांतून पळून जाण्यापेक्षां अधिक भयंकर असें क्षत्रियाला पातक नाही ! कौरवहो, क्षत्रियाला युद्धधर्मोपेक्षां अधिक श्रेयस्कर असा दुसरा कोणताही स्वर्गास जाण्याचा मार्ग नाही ! अहो, जो लोक मिलण्यास अत्यंत काळ लागतो, तो लोक युद्धधर्मानें वागणाऱ्या पुरुषाला युद्धापासून तत्काळ प्राप्त होतो !

राजा धृतराष्ट्रा, कौरवांकडील महारथांनीं दुर्योधनाचें तें भाषण शिरसा मान्य केले; आणि हार घेऊन पळून जाणें नापसंत ठरवून ते सर्व क्षत्रिय तत्काळ पांडवांशीं तोंड देऊन लढण्यास सिद्ध झाले ! राजा, नंतर पुनः दोन्ही दळांत देवदानवांप्रमाणें मोठें दारुण युद्ध सुरू झालें ! राजा, त्या समयीं दुर्योधनानें सर्व कौरवसेनेसहवर्तमान युधिष्ठिरप्रमुख सर्व पांडवांवर हल्ला केला; व मग मोठा भयंकर संग्राम प्रवर्तला !

## अध्याय चौथा.

—:०:—

### कृपाचार्याचें भाषण.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, मग रणांगणांत महान् महान् योद्ध्यांचे रथ व त्याप्रमाणेंच कित्येक रथांवरील सारथि बसण्याची आसनें मोडून पडलीं, तसाच जिकडे तिकडे हत्तीचा व पायदळांतील सैनिकांचा संहार उडाला, आणि ती समरभूमी रुद्राच्या क्रीडास्थानाप्रमाणें अतिशय भयंकर दिसू लागली ! राजा, तेव्हां लक्षावधि भूपाळ समरांगणांत पडून नामशेष झाले आणि त्यामुळे दुर्योधनाच्या हृदयाला दुःखाची धडकी बसून तो युद्धापासून पराङ्मुख झाला, व अर्जुनाचा तो लोकोत्तर पराक्रम अवलोकन करून तुझ्या सर्व सैन्याचा धीर अजीबात सुटला ! राजा, त्या समयीं



तुझ्या सैन्यांत मोठा हाहाकार उडाला व आतां पुढें काय करावें ह्या विवंचनेंत प्रत्येक वीर पडला ! इतक्यांत पांडवांनीं तुझ्या सैन्याचा घोर नाश आरंभिला व त्यामुळें सर्व वीर मोठ-मोठ्यानें आक्रोश करूं लागले ! राजा, त्या वेळीं समरभूमीवर रणसमर्द चालू असतां महान् महान् राजांचीं आभरणें भूतलावर पडली ! आणि तो सर्व हृदयविदारक देखावा पाहून वयोवृद्ध व उत्तमशील संपन्न अशा कृपाचार्याला मनस्वी करुणा उत्पन्न झाली व तो दिव्यतेजस्वी आणि उत्कृष्ट वक्ता ब्राह्मण दुर्योधन राजाच्या समीप येऊन त्यास मोठ्या दीनतेनें म्हणालाः—दुर्योधना, मी जें तुला सांगत आहे, तें नीट ऐकून घे; आणि जर तें तुला रुचलें, तर तूं त्या-प्रमाणें वाग. राजेंद्रा, युद्धधर्म हाच क्षत्रियांला श्रेयस्कर मार्ग आहे, त्याहून अधिक श्रेयस्कर असा दुसरा कोणताही मार्ग नाही. क्षत्रियश्रेष्ठा, क्षत्रिय हे नित्य युद्धधर्माचाच आश्रय करून युद्ध करितात. बाबांर, क्षात्रधर्माचें आचरण करणाऱ्या पुरुषांला पुत्र, भ्राता, पिता, माचा, मामा, आप्त इत्यादिकांशीं देखील युद्ध केलें पाहिजे ! रणांगणांत देह ठेवणें हा क्षत्रियांचा महान् धर्म होय व रणांतून पळून जाणें हा त्यांचा महान् अधर्म होय ! बाबा, जे कोणी जीव जगविण्याकरितां युद्धविमुख होत्साते पळून जातात त्यांस घोर नरकांत दिवस कंठावे लागतात ! ह्यास्तव, राजा, मी तुला कांहीं हिताची गोष्ट सांगतों, ती श्रवण कर. राजा, ह्या घोर युद्धांत भीष्म व द्रोण पडले, महारथ कर्णाचाही अंत झाला, जयद्रथ व तुमो भ्राते मारले गेले, आणि तुझा पुत्र लक्ष्मण ह्याचीही तीच वाट लागली; तेव्हां आतां असे कोण अवशिष्ट आहेत कीं, ज्यांसाठीं तुला कांही तरी कर्तव्य अवश्य आहे ? राजा, ज्यांवर सर्व भार टाकून त्वां निष्कंठक राज्याची इच्छा धरिली, ते सर्व शूर वीर रणांत देह

ठेवून ब्रह्मनिष्ठांच्या गतीला गेले ! आणि आपण तर येथें गुणसंपन्न महारथांनीं वियुक्त होत्साते पुष्कळ राजे लोकांना मृत्युमुखांत लोटून अनुचित कर्म करीत आहों; ह्यास्तव आपल्याला पुढें दुःखांत दिवस कंठावे लागतील ! राजा, आज सर्व महारथ जिवंत असते तरी देखील अर्जुनाचा पराभव घडला नमता ! कारण, त्या महाबाहूचा शास्ता कृष्ण हा असल्यामुळें देव देखील त्याचा पराजय करण्यास अममर्थ आहेत ! राजा, कौरवसेना केवढी अफाट; पण ती जेव्हां इंद्रधनुष्याप्रमाणें कांतिमान् व इंद्रध्वजाप्रमाणें अतिशय उंच अशा वानराधिष्ठित अर्जुनध्वजाच्या समीप प्राप्त झाली, तेव्हां तिची कशी त्रेधा उडाली ती तूं पाहिलीसना ! दुर्योधना, भीमाचा सिंहनाद, कृष्णाचा पांचजन्यध्वनि व अर्जुनाचा गांडीवनिर्घोष हे कानी पडतांच अंतःकरणें विदीर्ण होऊन किती बरें मूर्च्छा येते ! दुर्योधना, गांडीव धनुष्याची प्रत्यंचा दृष्टीस पडली म्हणजे जणू काय महान् वीज लवत आहे किंवा अलातचक्र (कोलिताचें वर्तुल) गरगरां फिरत आहे असें वाटून आपले डोळेच दिपून जातात ! राजा, सुभर्णालेकृत असें तें अर्जुनाचें प्रचंड धनुष्य एकदां संचलित झालें म्हणजे जणू काय दशदिशांच्या ठायीं मेघसमुदायांवर विद्युल्लताच नृत्य करीत आहे असा भास होतो ! राजा, अर्जुनाच्या रथाला जोडिलेले ते वेगशाली श्वेत अश्व चंद्राप्रमाणें किंवा काशतृणाप्रमाणें आपली प्रभा इतस्ततः प्रसृत करीत एकदां चालू लागले म्हणजे जणू काय अंतरिक्षातच आहेत असें भासतें ! आणि वायूनें ज्या-प्रमाणें मेघमंडळाला प्रेरणा द्यावी, त्याप्रमाणें कृष्णानें त्या अश्वानां प्रेरणा दिली म्हणजे सुवर्णालंकारांनीं शृंगारलेले ते अश्व हां हां म्हणतां अर्जुनाचा रथ समरांगणांत घेऊन येतात ! राजा, शिशिर ऋतूंत भयंकर अग्नीनें जसें गवताला

जाळून टाकावें, तसें त्या अस्त्रविशारद अर्जुनानें तुझें तें सर्व सैन्य जाळून टाकिलें! राजा, महेंद्रासारखा दिव्यपराक्रमी असा तो धनंजय जेव्हां आपल्या सैन्यांत घुसला, तेव्हां जणू काय तो चार दांतांचा हत्तीच होय असें आपणांस वाटलें! राजा, नंतर त्यानें आपल्या सर्व सेनेची जी दाणादाण व नासाडी उडविली आणि तिच्या योगें आपल्याकडील भूपाळांना जी भीति उत्पन्न झाली, ती पाहून जणू काय हत्तीच कमलिनीचा विध्वंस करित आहे असें सर्वांस भासलें! तो धनुष्याच्या टणत्कारानें जेव्हां कौरववीरांची धांदल उडवू लागला, तेव्हां जणू काय सिंहच गर्जना करून हरणांच्या कळपांची पळापळ उडवीत आहे असें दिमूं लागले! आणि सर्व लोकांत अत्यंत श्रेष्ठ असे ते दोन कवचधारी महाधनुर्धर वीरशिरोमणि कृष्णार्जुन सर्व लोकांत अत्यंत शोभले! राजा, हा अतिथोर संग्राम सुरू होऊन आज सतरा दिवस झाले व ह्यांत दोन्ही पक्षांकडील अगणित योद्धे समरांगणी पडले! राजा, शरदूतूतल्या मेघसमुदायांना वारा उधळून लावितो, तद्वत् शत्रूंनीं तुझी सैन्ये उधळून लाविली आणि त्यांचा जिकडे तिकडे भयंकर संहार झाला! राजा, महासागरांत वाऱ्यानें पालथी पाडिलेली नौका जशी हालते, तशी तुझी सेना मव्यसाची अर्जुनानें हालवून सोडिली! दुर्योधना, जयद्रथाच्या वधसमयी तुझा तो सूतपुत्र कर्ण कोठे होता? तसाच तो अनुयायांसह द्रोण कोठे होता? तसाच मी कोठे होतो? तू कोठे होतास? हार्दिक्य ( कृतवर्मा ) कोठे होता? दुःशासन कोठे होता? व त्याप्रमाणेंच तुझे ते इतर भ्राते कोठे होते? राजा, आपल्या बाणांच्या आटोक्यांत जयद्रथ आला असें पाहून अर्जुनानें तुझे ते भ्राते, मामा, साहाय्यकर्ते व संबंधिजन ह्या सर्वांचा पराभव करून व त्यांच्या मस्तकां-

वर पाय देऊन त्यांच्या देवत जयद्रथाला ठार मारिलें, तेव्हां ह्यावरून आपल्या शौर्याची व कर्तृत्वाची परीक्षा झाली नाहीं का? ह्यास्तव, राजा, आपण आतां करणार तें काय? अरे, ह्या भूतलावर असा कोण पुरुष आहे की, तो अर्जुनाचा पराभव करील? अरे त्या महाधनुर्धराचीं दिव्य व विविध अस्त्रे आणि त्याप्रमाणेंच त्याच्या गांडीवाचा तो निर्घोष ह्यांच्या योगें आमचें सर्व धैर्य अस्तंगत होतें! राजा, तुझ्या ह्या सेनेचा नायक हत झाल्यामुळें ही सेना चंद्रहीन रात्रीप्रमाणें अगदीं निस्तेज झाली आहे! सूकून गेलेल्या नदीचे कांठावरील वृक्ष हत्तीनें मोडून टाकिले अमतां ती जशी अतिशय उदास दिसते, तशी ही सेना उदास दिसत आहे! राजा, प्रस्तुत समयीं ह्या सेनेचा अधिपति अस्तंगत झाल्यामुळें ही जणू काय नेत्रहीनच झाली आहे; ह्यास्तव जर आपण ह्यापुढें युद्ध चालविलें तर महाबाहु अर्जुन हा खुशाल हिंजमध्ये यथेष्ट संचार करील; व अशे जसा गवताच्या गंजी जालितो तसा तो ही सेना जाळून टाकील! दुर्योधना, सात्यकीचा व भीमसेनाचा वेग इतका दुर्धर आहे कीं, तो पर्वत विदारील किंवा समुद्र कोरडे पाडील! राजा, भीमसेनानें सभेमध्ये जें म्हटलें होतें, तें बहुतेक खरें करून दाखविलें व जें राहिलेंसाहिलें असेल तें तो लवकरच खरें करील! दुर्योधना, कर्ण हा सेनापति असतांना अर्जुनानें पांडवांच्या सेनेचें कसे संरक्षण केलें व त्यामुळें तें व्यूह करून उभें राहिलेंलें सैन्य किती प्रबळ झाले, हें तूं पाहिलेंच आहेस! राजा, तुम्ही पांडवांकडे कांही एक दोष नमतां विनाकारण जी अनुचित कर्मे करून त्यांस पीडा दिली, त्यांचेंच हें फल तुम्हांस प्राप्त झालें! राजा, तूं केवळ स्वार्थाकरितां मोठ्या खटाटोपानें ही सर्व मंडळी जमविलीस आणि त्यांना व स्वतःला

प्राणसंकटांत घालून घेतलेंस ! राजा, झालें तें झालें; आतां तूं आपला स्वतःचा तरी जीव जगव ! बाबारे, जर हा जीव जगेल, तर सर्व कांहीं अनुकूल होईल ! पहा, भांडेंच जर फुटलें, तर त्यांतील पदार्थ वाहून गेल्याशिवाय राहील काय ? ह्यामाठी, दुर्योधना, आतां दूरवर दृष्टि दे ! बाबा, पडत्या पक्षानें किंवा बरोबरीच्या पक्षानें संधिच करणें प्रशस्त ! जो पक्ष वृद्धिंगत होत असेल, त्यानें मात्र युद्धास प्रवृत्त व्हावें, असें बृहस्पतीचें मत आहे ! ह्यामाठी तूं प्रभुत काळीं संधी करावा हेंच श्रेयस्कर नव्हे काय ? कारण, जे पूर्वी आपण बलानें व शक्तीनें पांडवां-पक्षां प्रबल होतो, ते आपण आतां पांडवां-पक्षां न्यून झालों आहों; म्हणून आतां आपण पांडवांशीं संधि करावा हेंच योग्य आहे ! राजा, ज्याला आपलें हित कशांत आहे हें समजत नाही, किंवा जो तें जाणत असूनही त्याचा अवमान करितो, त्याची मोठी हानि होते व तो राज्यादिकांला तत्काळ अंतरतो ! दुर्योधना, आपण जर युधिष्ठिराची प्रार्थना करून राज्य संपादिलें, तर त्यापासून आपलें जें कल्याण होईल, तमें कल्याण आपण पांडवांशीं युद्ध करून त्यांत पराभव झाल्यावर होणार नाही ! राजा, धर्मराज युधिष्ठिर मोठा दयाळू आहे. तो विचित्रवीर्यपुत्राच्या ( धृतराष्ट्राच्या ) व कृष्णाच्या सांगण्यावरून तुला राज्याधिकार देईल ! राजा, विजयशाली युधिष्ठिर, अर्जुन व भीमसेन ह्यांस हृषीकेश कृष्ण जें सांगेल तें ते निःसंशयपणें करतील ! राजा, कौरवेश्वर धृतराष्ट्राच्या वचनाचा अनादर कृष्ण केव्हांही करणार नाही ! आणि कृष्ण जें सांगेल, तें पांडुपुत्र निश्चयानें करीलच ! राजा, ह्यास्तव पांडवांशीं युद्ध न करितां त्यांच्याशीं गोडी करावी हेंच सर्वथा प्रशस्त ! राजा, माझ्या मनांत तुझ्याविषयीं कांहीं दुष्ट

बुद्धि वसत आहे, किंवा मी प्राणरक्षणार्थ झटत आहे, म्हणून मी तुला असें सांगतो, असें मानूं नको :—जो मार्ग मला खरोखरी हितावह वाटतो, तोच मी तुला सांगत आहे. ह्याचा जर तूं अनादर करशील, तर तुला मरण प्राप्त झाल्यावर मग तूं मला म्मरशील ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें वृद्ध शारद्वत कृपाचार्य दुर्योधनाला म्हणाला व पुष्कळ रडला; आणि अखेरीस दीर्घ व उष्ण मुस्कारे टाकीत हुंदके देत असतां त्याचें देहभान नष्ट झालें !

### अध्याय पांचवा.

—:०:—

#### दुर्योधनाचें भाषण.

मंजय सांगतो :—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कृपाचार्यानें मोठ्या काकुळतीनें भाषण केलें तें श्रवण करून दुर्योधनानें दुःखाचा मोठा उष्ण मुस्कारा टाकिला आणि तो भ्नब्ध राहिला ! राजा, नंतर महात्म्या शत्रुसंहारक दुर्योधनानें क्षणभर मनन केलें आणि मग तो कृपाचार्याला म्हणाला :—शारद्वता कृपाचार्य, सुहृदांनें जें कांहीं मांगावयास पाहिजे तें सर्व तूं मला सांगितलें आहेस; त्याप्रमाणेंच, तूं जिवाची आशा न ठेवितां भयंकर युद्ध करून माझ्याकरितां जें करणें विहित होतें, तें सर्व केलें आहेस; आणि अतिशय पराक्रमी अशा महारथ पांडवांशीं युद्ध करितांना तूं त्यांच्या सैन्यांची दुर्दशा उडविलीस. तीही सर्व लोकांनी पाहिली आहे ! शारद्वता, मित्रांनें जें जें कांहीं सांगणें अवश्य, तें सर्व तूं मला विदित केलेंस; तरी आसन्नमृत्यु प्राण्याला जसें औषध रुचत नाही, तसें तुझें हें भाषण मला मुळीच रुचत नाही ! हे विप्रवर्या, तुझें भाषण हेतु व कारणें ह्यांनीं युक्त असल्यामुळें मोठें न्याय्य व हितकर असें आहे; परंतु, हे महाबाहो, मला मात्र

तें पसंत पडत नाही ! कृपाचार्या, तुझे म्हणणें आतां आपण पांडवांशीं सल्लय करावें हेंच ना ? पण ती मोष्ट कशी घडेल ? पहा, ज्या युधिष्ठिराला आम्ही राज्यभ्रष्ट केले, तो आतां पुनः आमच्यावर कसा विश्वास ठेवील बरें ? अरे, ज्या महाघनाढ्य भूपतीला आम्ही अक्षय्यतांत जिंकिले, तो आतां पुनः माझे भाषण कसे खरें मानील बरें ? त्याप्रमाणेंच, हे द्विजश्रेष्ठा, निरंतर पार्याच्या हितासाठीं तत्पर असा कृष्ण आमच्याकडे शिष्टाई करण्याकरितां आला असतां आम्ही त्यास फसविलें हा आमचा केवढा अविवचार बरें ? तेव्हां आतां फिरून कृष्ण माझ्या शब्दावर कसा बरें भरंवसा ठेवील ? ब्रह्मवर्या, सभेमध्ये प्राप्त झाल्यावर द्रौपदीनें जे विलाप केले ते कृष्ण विसरला असेल असें तुला वाटतें काय ? मला तर असें वाटतें कीं, द्रौपदीचे ते विलाप व पांडवांचें तें राज्यहरण ह्या दोन्ही गोष्टी कृष्णाच्या मनांत नित्य घोळत असतील ! ब्राह्मणा, कृष्णार्जुन हे दिसायला मात्र पृथक् पृथक्, पण वास्तविकपणें ते एकजीव असून सदासर्वकाळ एकमेकांच्या आश्रयानें राहतात, असें जें मी पूर्वी ऐकिलें होतें, तें मी आज प्रत्यक्ष पाहात आहे ! कृपाचार्या, रणांगणांत अभिमन्यु पडला हें वर्तमान समजल्यापामून कृष्णाला थड झोंप येत नाही.—तो एकसारखा दुःखानें तळमळत आहे; तेव्हां तो आपल्या अपराध्यांना म्हणजे आम्हांला कशीक्षमा करील बरें ! शारद्वता, अभिमन्यूच्या वधामुळे अर्जुनाची शांति अगदीच नष्ट झाली आहे; तेव्हां मी जरी त्याची प्रार्थना केली, तरी तो माझ्या हितासाठी कसा झटेल बरें ? कृपाचार्या, मध्यम पांडव भीमसेन हा मोठा भयंकर व प्रबळ आहे, त्यानें तर घोर प्रतिज्ञा केली आहे, तेव्हां तो तुटेल तरी वांकावयाचा नाही ! ब्राह्मणा, आतां राहिले ते दोघे जुळे पांडुपुत्र नकुलसह-

देव ! ते दोघेही शूर वीर कवचें घालून व खड्डें घेऊन यमाप्रमाणें मला वधण्याची वाट पहात आहेत ! त्याप्रमाणेंच धृष्टद्युम्न व शिखंडी हेही मला पाण्यांत पाहात आहेत, तेव्हां त्यांच्याकडून माझ्या हिताविषयी कसा प्रयत्न होईल बरें ? द्विजश्रेष्ठा, दुःशासनानें द्रौपदी ही रजस्वला व एकवस्त्रा अशी असतांना तिला सभेमध्ये फरफरां ओढीत आणून सर्वांच्या समक्ष तिची विटंबना केली ही गोष्ट ते प्रतापी पांडव कशी विसरतील बरें ? ब्रह्मवर्या, वस्त्रहीन अशा द्रौपदीची ती दीन मुद्रा अद्यापि पांडवांच्या दृष्टीपुढें आहे; ह्यास्तव त्यांना युद्धापासून कोणीही परावृत्त करू शकणार नाही ! कृपाचार्या, ज्या वेळी आम्ही द्रौपदीला कैश दिले, त्या वेळेपासून त्या दुःग्वित द्रौपदीनें भूमीवर शयन करून माझ्या नाशाकरितां आणि आपल्या मर्त्याच्या अर्थसिद्धीकरितां घोर तपश्चर्या चालविली आहे व ही तिची घोर तपश्चर्या वैराच्या समाप्तीपर्यंत अशीच चालणार आहे. कृपाचार्या, काय त्या द्रौपदीची थोरवी सांगावी ! वासुदेवाची सख्खी बहीण सुभद्रा ही आपला मान व गर्व टाकून द्रौपदीची दासी बनून तिची नित्य शुश्रूषा करीत आहे ! द्विजवरा, ह्याप्रमाणें कलहाशीची ज्वाला जी इतकी भडकली ती आतां शांत होणें अशक्य होय ! आतां पांडवांशी संधि होईल हें मनांत मुद्दां आणूं नको ! आपल्या हातून अभिमन्यूचा वध घडल्यामुळे धर्मराजा आपणांशी तह करण्यास कसा तयार होईल ? बरें, मी तरी आजवर ह्या समुद्र-वल्यांकित पृथ्वीचा उपभोग घेऊन ह्याच्यापुढें केवळ पांडवांच्या कृपेनें राज्याचा कसा उपभोग घ्यावा ! अरे, निरंतर ज्यानें सूर्याप्रमाणें सर्व राजांवर आपला प्रताप गाजविला, त्या म्यां युधिष्ठिराच्या मागून किकराप्रमाणें कसे अनुवर्तन करावें ? अरे, ज्यानें स्वतः पुष्कळ भोग

भोगिले व इतरांनाही बहुत संपत्ति अर्पण केली, त्या म्यां आतां नीच लोकांसहवर्तमान नीच वृत्तीनें कमे दिवस कंठावे बरें ! कृपाचार्या, तूं जी कांहीं मोठ्या काकुळतीनें मला हिताची गोष्ट सांगितलीस, तिचा मी द्वेष करीत नाही; परंतु इतकेंच मांगितो कीं, हा समय मात्र संधि करण्यास योग्य असा नव्हे ! हे शत्रुतापना, ह्या वेळीं अतिशय उचित अशी गोष्ट म्हणशील तर उत्तम प्रकारें युद्ध करणें हीच होय ! ब्राह्मणा, ह्या समयी पंडत्व पतकरणें हें सर्वथा अनुचित; ह्यामाठीं आम्ही निकरांनें युद्ध करावें हेंच विहित ! शारद्वता, मीं पुष्कळ यज्ञयाग केले, ब्राह्मणांना विपुल दक्षिणा दिल्या. सर्व मनोरथ सिद्धीस नेले, वेद ऐकिले, आणि शत्रूंच्या मस्तकांवर उभाही राहिलों ! मी आपल्या चाक्रांना समृद्ध केलें, दीनजनांना संकटांतून उद्धरिलें, परराष्ट्र जिंकिली, स्वराष्ट्रांचें परिपालन केलें, विविध भोग भोगिले, धर्म, अर्थ व काम हे जोडिले. पितरांच्या ऋणांतून उत्तीर्ण झालों, आणि शास्त्रधर्मही उत्तम प्रकारें पाळिला ! तथापि मला सुख म्हणून कोठें प्राप्त झालें नाही ! तेव्हां राष्ट्र व यश ह्यांची मला पर्वा मी कोणती ! ह्या लोकी कीर्ति संपादन करणें हेंच कर्तव्य; आणि ती तरी युद्धानेंच मिळवावी. दुसऱ्या मार्गांनीं मिळविणें अयोग्य ! ह्यास्तव, ब्राह्मणश्रेष्ठा, पांडवांपाशी मी हे असले हीन उद्गार काढण्यास तयार नाही ! हे रणशूरा, क्षत्रियांनें घरांत मरावें हें सर्वथा निघ; घरांत अंधरुणावर पडून मरणें हा क्षत्रियाला मोठा अधर्म आहे ! अरे, जो मनुष्य महान् महान् यज्ञ करून अरण्यांत किंवा संग्रामांत आपला देह ठेवितो, तो प्रतिष्ठा जोडितो ! आणि जो मनुष्य जरेनें व दुःखण्याबाहण्यानें आर्त होऊन दीनासारखा रडत आरडत आपल्या आक्रोश करणाऱ्या आत्मांमध्ये मरण पावतो, तो खचीत

पुरुषच नव्हे ! कृपाचार्या, मी आतां पांडवांशीं घोर युद्ध करून, जे पुरुष विविध भोगांना सोडून देऊन श्रेष्ठ गतीला पोचले आहेत त्यांमध्ये जाऊन बसेन ! अरे जे महाबुद्धिमान् शूर पुरुष सदाचरण ठेवितात, संग्रामांतून निवृत्त होत नाहीत, आपली प्रतिज्ञा खरी करून दाखवितात, यज्ञयागादि करितात, व शस्त्रयज्ञांत स्वतःची आहुति देऊन पवित्र होतात, त्या सर्वांना निःसंशयपणें स्वर्गांत स्थान मिळतें ! असे पुरुष समरांगणांत लढत असतां अप्सरांचे समुदाय खचीत त्यांजकडे अभिलाष-बुद्धीनें पहात असतात, आणि हे वीर धारातीर्थी देह ठेवून स्वर्गास गेले ह्याजने त्याच्या मेवेमाठी त्याजभोंवती अप्सरा जमल्या असून त्यांम मोठा आनंद झाला आहे व मुरसभेंतही त्यांचा मोठा जयजयकार चालला आहे असें निश्चयानें त्यांच्या पितरांच्या दृष्टीस पडतें ! कृपाचार्या, ज्या मार्गांनें देव व संग्रामांतून विमुख न होणारे शूर पुरुष गेले, त्याच थोर मार्गांचें आपण अवलंबन केलें पाहिजे ! पहा, वृद्ध पितामह भीष्म, महाबुद्धिमान् गुरु द्रोण, त्याप्रमाणेंच जयद्रथ, कर्ण, दुःशामन इत्यादि सर्वे थोर योद्ध्यांनी ह्याच मार्गांचें अवलंबन केलें नाही काय ! अरे, माझा कार्यभाग घडवून आणण्याकरितां अनेक शूर राजे रणांत हन झाले व अनेकांचे देह बाणप्रहारांनीं भग्न होतसांने रक्तांत मागून भूमीवर पडले ! द्विजश्रेष्ठा, ते शस्त्रास्त्रवेत्ते शूर पुरुष व त्याप्रमाणेंच जे कोणी यथाशास्त्र यज्ञाराधन करितात ते पुरुष मेल्यानंतर हक्कांनें इंद्राच्या सदनांत स्थान मिळवितात ! ब्रह्मन्, त्या महापुरुषांनीं जो मार्ग स्वतः घालून दिला आहे, तो जरी अवघड असला, तरी त्यापासून सुख होईल ह्यांत संदेह नाही; कारण जे पुरुष ह्या मार्गांचें मोठ्या शौर्यानें अवलंबन करितात ते अखेरीस सद्ग-

तीस जातील ! कृपाचार्या, हा देह जगवावा व राजवैभव भोगावें ही गोष्ट कबूल न करण्यास ह्याशिवाय आणखीही कारणे आहेत. तीं कोणतीं ह्मणशील तर, ज्या शूरांनी माझ्यासाठी धारातीर्थीं आपले देह ठेविले, त्यांच्या उपकारांचा विचार केला ह्मणजे त्यांच्या ऋणाची फेड केल्यावाचून मीं राज्यवैभव भोगावें हें उचित नव्हे ! आजे, आते व मित्र ह्यांचा घात करून जर मीं आपले हे प्राण राखण्याच्या भरीम पडलों, तर खचीत लोक मला हंमतील ! अरे, आसमुद्दुदांचा व भावांबंधूंचा वियोग सोसून राज्य मिळविणें—व तेंही विजय प्राप्त झाला ह्मणून नव्हे, तर विशेषकरून शत्रूंना पदर पसरून मिळविणें ह्यापेक्षा अधिक हीन असें कृत्य तरी कोणतें ? मला तर हें कृत्य अगदीं लाजिरवाणें वाटतें ! ह्यासाठीं, ज्यानें या सर्व जगताला जिंकून त्यावर आपलें आधिपत्य स्थापिलें, तो मी उत्तम प्रकारेंकरून शत्रूंशी लढेन व नंतर स्वर्ग मिळवीन ! ह्यावाचून अन्य उपायाची मला गरज नाही !

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें दुर्योधनाचें भाषण श्रवण करून सर्व क्षत्रियांनी त्याची मोठी वाहवा केली व त्याचे धन्यवाद गाडले ! तेव्हां पराभव झाल्याबद्दल जें त्यांम दुःख झालें होतें, तें ते तत्काळ विमरले; आणि प्रताप गाजविण्याची ईर्ष्या धरून मोठ्या वीरश्रीनें त्या सर्वांनी लढण्याचा निश्चय ठरविला ! राजा, नंतर त्या कौरववीरांनी आपल्या घोड्यांना थोडा विसावा दिला; आणि मग युद्धाच्या उत्कट इच्छेनें रणभूमीपामून दोन योजनांहून थोडें कमी इतक्या अंतरावर दूर जाऊन, तेथें हिमालयाच्या पायथ्याशीं सुंदर, पवित्र व रमणीय अशा पठारावर मोकळ्या जागी तळ दिला व सरस्वतीच्या कांठीं लाल उदकांत स्नानें करून ते तिचें पाणी प्याले ! राजा, ते सर्व वीर युद्धार्थ पुनः सिद्ध

झाले; ह्याचें कारण त्यांना तुझ्या पुत्रानें चेंब आणिला हेंच होय ! असो; नंतर त्यांनीं आपल्या मनाची भीति घालविली व त्याप्रमाणेंच इतरांनाही त्वेष उत्पन्न केला; आणि कालानें प्रेरित केलेले ते सर्व कौरवयोद्धे पुनः युद्धाची वाट पाहात बसले !

## अध्याय सहावा.

—:—

### शल्यभिषेकविचार.

संजय मांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें हिमालयाच्या पायथ्याशी पठारावर युद्धासाठीं आतुर झालेल्या त्या सर्व कौरवसेनेचा तळ पडला अमतां त्या स्थळीं सर्व महान् महान् योद्धे मिळाले. तेथें शल्य, चित्रसेन, महारथ शकुनि, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, सात्वत कृतवर्मा, सुषेण, अरिष्टमेन, वीर्यवान् धृतसेन, जयत्सेन वगैरे सर्व भूपाळ जमले व त्यांनीं रात्र तेथें घालविली. राजा, रणांगणांत कर्ण पडल्यावर विजयशाली पांडवांचा इतका दरारा बसला कीं, तुझ्या पुत्रांच्या मनाला स्वास्थ्य ह्मणून मिळालेंच नाही; पण ते ह्या स्थळीं हिमालयाच्या पठारावर आले तेव्हां मात्र त्यांस पुनः वीरश्री उत्पन्न झाली. राजा धृतराष्ट्रा, नंतर युद्ध करण्याचा निर्धार करून ते सर्व कौरव दुर्योधन राजाकडे गेले व त्याची यथाविधि पूजा करून शल्याच्या समक्ष त्याम ह्मणाले:—राजा दुर्योधना, तूं कोणी तरी सेनापति करून शत्रूंशी लढण्यास सिद्ध व्हावें हें उचित होय. राजा, तूं सेनापतीची नेमणूक केलीस ह्मणजे तो आमचें संरक्षण करील व आम्ही शत्रूंना समरांगणांत जिंकूं !

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर दुर्योधन रथांत अघिष्ठित होता तो तसाच अश्वत्थाम्याच्या समीप प्राप्त झाला. राजा, त्या द्रोणपुत्र अश्वत्थाम्याचें

काय वर्णन करावें ? तो रथवराग्रणी युद्ध-कल्लेत मोठा निपुण होता; युद्धांतले नानाविध हेतु त्यास उत्तम अवगत होते; रणांगणांत जणू काय तो प्रतियमच होता; त्याचे सर्वे अवयव सुंदर असून त्याचे मस्तक शिरोभूषणानें आच्छादित होतें; त्याची मान शंखाप्रमाणें त्रिवलीनें युक्त होती; तो मोठें गोड भाषण करीत असे; त्याचे नेत्र प्रफुल्लित कमलपत्रांप्रमाणें दीर्घ व सतेज होते; त्याचे मुख वाघाच्या मुखाप्रमाणें उग्र होतें; मेरु पर्वताप्रमाणें तो भव्य होता; त्याचा खांदा, नेत्र, गति व स्वर ही शंकराच्या नंदीप्रमाणें होती; त्याचे बाहु पुष्ट व दीर्घ असून त्याचे सांधे मोठे बळकट होते; त्याची छाती फार रुंद व भरदार होती; त्याचे बल व वेग हीं गरुड व वायु ह्यांप्रमाणें होती; त्याची कांति सूर्याप्रमाणें व बुद्धि शुक्राप्रमाणें होती; त्याचे तेज, रूप व मुख हीं चंद्राप्रमाणें मोहक होती; त्याचे शरीर जणू काय सुवर्णकमलें एकत्र सांभून बनविलें होतें; त्याची कमर, मांड्या व पोटाच्या अगदीं वाढोढ्या गरगरीत होत्या; त्याची पावले, बोटे व नखें सुंदर होती; जणू काय ब्रह्मदेवांनं कोठें काय गुण आहेत ह्याचे पुनःपुनः स्मरण करून तो देह मोठ्या प्रयत्नानें घडविला होता; त्याच्या ठिकाणीं सर्वे लक्षणें विद्यमान असून त्यास सर्वे श्रुति उत्तम येत होत्या; तो शत्रूंना मोठ्या आवेशानें जिंकित असे; शत्रु कितीही बलवान असले तरी त्यांची त्याच्या पुढें मात्रा चालत नसे; त्याला धनुर्वेदाचे चारही पाद व दहाही अंगें उपलब्ध होती; त्यास चारही वेद व इतिहास सांग विदित होते; अयोनिर्संभव महातपस्वी द्रोणाचार्यानें ज्येष्ठाची उग्र व्रतांनीं एकाग्र आराधना केली, तेव्हां त्यांपासून अयोनिर्संभव स्त्रीच्या ठिकाणीं त्याचे जन्म झालें; त्याचे कर्म लोकोत्तर होतें; त्याचे सौंदर्यही ह्या भूतलावर अलौकिक होतें; तो सर्व

विद्यांत पारंगत होता; तो सदगुणांचा केवळ सागरच होता; आणि त्याच्या ठायीं अवगुणांचा तर लेशही नव्हता ! राजा धृतराष्ट्र, अशा त्या सर्वतोपरी महासमर्थ अश्वत्थाम्याच्या समीप तुझा पुत्र आला व त्यास म्हणालाः— हे गुरुपुत्रा, तूं आज आम्हां सर्वांना महान् आधार आहेस ! ह्यास्तव, कोणाला सेनापति केल्यानें आपणाला रणांत पांडव जिंकितां येतील तें सांग म्हणजे तुझ्या आज्ञेनुसार मी सेनापति नेमितां.

अश्वत्थामा म्हणालाः— राजा दुर्योधना, या शल्याला तूं सेनापति कर. ह्याचे कुल, रूप, तेज, यश, वैभव व इतर सर्वे गुण मोठे थोर असल्यामुळे सेनापत्याला हा सर्वतोपरी पात्र आहे. अरे, ह्याचे आपल्याविषयीं किती प्रेम आहे म्हणून सांगू ! ह्यानें तुझ्याविषयीं कृतज्ञता बाळगून आपल्या भगिनीच्या पुत्रांना सोडून दिलें आणि आपण ह्या पक्षाला येऊन मिळाला ! ह्याची सेना अफाट असून हा कार्तिकेयाप्रमाणें पराक्रमी आहे ! राजा, ह्याला जर तूं सेनापति करशील, तर देवांनीं अजिंक्य कार्तिकेयाला सेनापति करून जसें दानवांना जिंकिलें, तसें आपण पांडवांना जिंकू !

राजा धृतराष्ट्र, अश्वत्थाम्याच्या सुखांतून हे शब्द बाहेर पडतांच सगळे भूपाळ शल्याच्या-भोंवतीं गराडा घालून उभे राहिले व त्यांनीं मोठमोठ्यानें शल्याचा जयजयकार चालविला ! राजा, त्या समयीं त्यांनीं युद्ध करण्याचा जो निश्चय केला होता, तो त्यांचा निश्चय अगदीं सुट्ट झाला व त्यांचा आवेश मनस्वी वाढला ! राजा, नंतर दुर्योधन रथांतून भूमीवर उतरला; आणि भीष्म व द्रोण ह्यांजप्रमाणें रणांत शौर्य गाजविणारा तो मद्राधिप शल्य रथांत अधिष्ठित होता त्यास हात जोडून म्हणाला, “ बा मित्रवत्सल शल्या, आतां तुझ्या मित्रांना ही

मोठी उत्कृष्ट संधि प्राप्त झाली आहे; अशा ह्या समर्थीच मुक्त पुरुष मित्र किंवा अमित्र ह्यांची परीक्षा करितात! शल्या, तूं मोठा शूर आहेस; ह्यास्तव तूं ह्या सैन्याचा अधिपति हो! तूं सम-रांगणांत प्रविष्ट झालास म्हणजे पांडवांचे धैर्य नष्ट होईल आणि त्यांचे अमात्य व पांचाल हे गतवीर्य होत्साते स्तब्ध बसतील! राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाचे भाषण श्रवण करून वाक्पटु मद्राज शल्य दुर्योधनाला म्हणाला:—राजा दुर्योधना, मी जें करावें म्हणून तूं इच्छितोस, तें मी करण्यास सिद्ध आहे. हे कुरुराजा, माझे प्राण, राज्य व धनदौलत हीं सर्व तुझ्या बऱ्याकरितां खर्ची घालण्यास मी राजी आहे.

दुर्योधन म्हणाला:—हे अतुलप्रतापी मातुला, मी तुला सेनापति नेमीत आहे. म्हणून, हे वीरश्रेष्ठा, स्कंदानें ज्याप्रमाणें समरांगणांत देवांचा प्रतिपाल केला, त्याप्रमाणें तूं आमचा प्रतिपाल कर! आतां, स्कंदावर जसा देवांच्या सैन्यापत्याधिकाराचा अभिषेक झाला, तसा तुजवर कौरवांच्या सैन्यापत्याधिकाराचा अभिषेक होवो; आणि महेंद्राकडून जसा दानवांचा संहार पडला, तसा तुझ्याकडून रणांत पांडवांचा संहार पडो !

### अध्याय सातवा.

—:—

#### शल्यसैन्यापत्याभिषेक.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनां ह्याप्रमाणें जें भाषण केलें, तें श्रवण करून मद्राधीश शल्यानें त्यास उत्तर दिलें कीं, “ हे महाबाहो वाक्यविशारदा दुर्योधना, कृष्णार्जुन हे रथावर अधिष्ठित असतां तुला फार पराक्रमी असे वाटतात, पण त्या उभयतांना बाहुबलमध्ये माझी कधीही बरोबरी करितां येणार नाही. राजा, मी एकदां क्षुब्ध झालों

म्हणजे सुर, असुर व मानव ह्यांसहवर्तमान सर्व पृथ्वी जरी माझ्याशीं लढण्यास उठली तरी तिच्याशीं घोर युद्ध करीन; मग पांडवांची ती पर्वा काय? अरे, मी पांडवांना व त्या-प्रमाणेंच त्यांच्या साहाय्यार्थ प्राप्त झालेल्या सोमकांनाही जिंकून! मी तुझ्या सैन्याचें धुरीणत्व पतकरण्यास तयार आहे,—त्याची तुला शंका नको! राजा, आतां मी असा व्यूह रचितों कीं, त्याचें शत्रूंना बिलकूल भेदन करितां येणार नाही! दुर्योधना, ह्या माझ्या भाषणावर तूं पूर्ण भरंवसा ठेव! हें सर्वतोपरी सत्य आहे!” राजा धृतराष्ट्रा, शल्य ह्याप्रमाणें दुर्योधनास म्हणाला, तेव्हां दुर्योधनानें तत्काळ सेनेच्या मध्यभागी शल्यावर सैन्यापत्याचा मोठ्या आनंदानें यथाशास्त्र व यथाविधि अभिषेक केला; आणि लागलाच तुझ्या सेनेत जिकडे तिकडे महान् सिंहनाद सुरू होऊन मोठमोठ्यानें वाघें वाजूं लागली! राजा, नंतर महारथ मद्रक व कौरव हे मोठमोठ्यानें ओरडूं लागले व त्यांनीं रणांगणास शोभविणाऱ्या शल्याची स्तुति आरंभिली! ते म्हणाले:—राजा शल्या, दीर्घायुधी व विजयी हो; आणि आपल्याबरोबर युद्ध करण्याकरितां जे शत्रु जमून आले आहेत त्यांचा संहार उडीव! मद्रेश्वरा, तुझ्या बाहुबलाच्या आश्रयानें सर्व महाबलवान् धार्तराष्ट्रांना अखिल पृथ्वीचें निष्कंटक राज्य प्राप्त होवो! राजा, रणभूमीवर सुर, असुर व मानव हे सर्व जमून तुझ्याशी युद्धास प्रवृत्त झाले असतां त्यांस सुद्धां जिंकण्यास तूं समर्थ आहेस! मग मृत्युवश असे जे संजयमोमक, त्यांना तेव्हांच जिंकिलील ह्यांत संदेह तो कोणता? राजा धृतराष्ट्रा, बलशाली मद्राज शल्याचा त्या कौरवमद्रकांनी ह्याप्रमाणें गौरव केला, तेव्हां धीरोदात्त पुरुषा-प्रमाणें त्यास मोठी धन्यता वाटली. त्या समयीं



शल्य म्हणाला:—राजा दुर्योधना, आज मी रणांगणांत सर्व पांडाल व पांडव ह्यांना ठार मारीन, किंवा धारातीर्थी देह ठेवून स्वर्गास जाईन! आज मोठ्या धैर्याने संचार करितांना लोक मला पाहातील. आज सर्व पांडव, कृष्ण, सात्यकि, पांचाल, चेदि, द्रौपदीचे पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखंडी व सगळे प्रभद्रक ह्या सर्वांच्या दृष्टीस माझा पराक्रम, माझे महाधनुर्बल, अचूक बाणसंधान, अस्त्रवीर्य व बाहु ही पडतील! आज पांडव, सिद्ध व चारण ह्यांनी माझ्या बाहुंमध्ये किती पराक्रम आहे व माझ्या ठिकाणी किती अस्त्रसंपत्ति वास करीत आहे हे पहावे! आज पांडवीय महारथांनी माझा अतुल प्रताप अवलोकन करून त्याच्या प्रतिकारार्थ त्यांना ज्या कांही गोष्टी कर्तव्य असतील त्या कराव्या! मी आज पांडवांची सैन्ये दशदिशांस उधळून लावीन; आणि भीष्म, द्रोण व कर्ण ह्यांच्याहीपेक्षा अधिक पराक्रम गाजवून तुझ्या कल्याणामाठी रणभूमीवर परिश्रमण करीन!

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे कौरवांच्या सैन्यांच्या अधिपतीच्या जागी शल्याची जेव्हां नेमणूक होऊन त्याजवर सेनापत्याधिकाराचा अभिषेक झाला, तेव्हां कौरवांच्या योद्ध्यांना कर्णवधामुळे जी चिंता पडली होती ती सर्व नष्ट झाली व त्यांची मने प्रसन्न होऊन त्यांस विलक्षण वीरश्री चढली; आणि आतां पांडव हे मद्राधिपतीच्या हातांत सांपडून मृत्युमुखांत पडलेच असे त्यांनी मानिले! राजा, ह्याप्रमाणे कौरवसेनेला पुनः रणीत्साह उत्पन्न झाला व मग तिने रात्रीस स्वस्थपणाने झोप घेतली!

### युधिष्ठिरोत्तेजन.

राजा धृतराष्ट्रा, इकडे पांडवांनी तुझ्या सैन्यांची सिंहगर्जना श्रवण केली, तेव्हां राजा

युधिष्ठिराने सर्व क्षत्रियांसमक्ष कृष्णाला म्हटले:—माधवा, धर्ताराष्ट्राने मद्राधिप शल्याला सेनापति केले असून सर्व सैन्यांमध्ये त्या महाधनुर्धरावर सेनापत्याधिकाराचा अभिषेकही करण्यांत आला; ह्यास्तव. ह्या सर्वांचा विचार करून जे उचित दिसेल ते करण्याची व्यवस्था कर! कृष्णा, आमचा शास्ता व संरक्षक तूच आहेस! ह्यासाठी आतां पुढे काय करावयाचे ते सांग. राजा धृतराष्ट्रा, नंतर वासुदेव धर्मराजाला म्हणाला:—युधिष्ठिरा, मी आर्तायनीला ( शल्याला ) यथास्थितपणे जाणत आहे! तो मोठा वीर्यवान् व तेजस्वी असून मोठा पुण्यशील व महात्मा आहे! तो मोठा विचित्र योद्धा असून अचूक बाण मारण्यांत मोठा कुशल आहे! राजा, भीष्म, द्रोण किंवा कर्ण ह्यांच्या सारखाच केवळ तो आहे असे नाही, तर त्यांच्याहून तो विशेष सामर्थ्यवान् आहे असे मला वाटते! मी पुष्कळ विचार करून पाहिला परंतु तो युद्ध करू लागला म्हणजे जो त्याची बरोबरी करील असा मला कोणीही वीर आढळत नाही! धर्मराजा, शल्य हा शिखंडी, अर्जुन, भीष्म, सात्यकि व तसाच धृष्टद्युम्न, ह्यांच्यापेक्षाही रणांगणांत अधिक बलवान् आहे! मद्राधिपतीच्या अंगी सिंह किंवा हत्ती ह्यांप्रमाणे महान् शक्ति असून, प्रलयकाली क्रोधाग्रमान झालेला अंतक जसा प्राण्यांमध्ये संचार करितो, तसा तो शत्रूंमध्ये निर्धास्तपणे संचार करील! हे पुरुषव्याघ्र युधिष्ठिरा, आज तुझ्याशिवाय दुसरा कोणताही वीर त्याच्याशी युद्ध करण्यास समर्थ नाही! धर्मराजा, शुब्ध झालेल्या मद्रेश्वर शल्याला जो रणांगणांत वधील असा एकटा तूच होस! तुझ्याशिवाय दुसरा कोणताही योद्धा ह्या लोकीं अथवा देवलोकीं त्याच्याशी लढण्यास योग्य नाही! राजा, प्रत्येक दिवशी तुझ्या सैन्याशी युद्ध

करून त्याला तो क्षुब्ध करितो; म्हणून शंकरा-  
सुराला जसे इंद्राने वधिले तसे त्याला तू  
रणांत वध ! राजा, शल्य हा अजिंक्य आहे,  
व ह्यामुळेच धार्तराष्ट्राने त्याला सेनापति नेमिले  
आहे; पण जर का तो युद्धांत पडेल, तर  
तुला खर्चीत विजय मिळाला म्हणून समज ! राजा,  
तो एकदां रणांत पतन पावला म्हणजे मग हें  
सर्व प्रचंड कौरवसैन्य नष्टच झाले म्हणून  
मान ! धर्मराजा, प्रस्तुत समयी माझे हें भाषण  
ऐकून तू महारथ मद्रराजावर चाल करून जा;  
आणि वासवाने जसे नमुचीला मारिले तसे तू  
त्याला मार ! युधिष्ठिरा, शल्य हा मामा  
आहे, असे मनांत आणून आतां त्याच्यावर  
दया करणे प्रशस्त नव्हे ! क्षात्रधर्मावर लक्ष  
ठेवून त्या मद्राधिपतीचा नाश कर ! धर्मराजा,  
भीष्मद्रोणरूप सागराच्या परतीरास पोचून, इत-  
केंच नव्हे, तर कर्णरूप पाताळाचा तळ काढून  
तू शल्यरूप गोप्पदांत सपरिवार बुडू नको !  
तुझ्या ठिकाणी जें तपोबल व क्षात्रबल असेल,  
तें सर्व आज रणांगणांत दाखव व त्या महारथ  
शल्याला यमसदनी पाठीव !

राजा धृतराष्ट्रा, शत्रुसंहारक कृष्णाने इतकें  
भाषण केल्यावर त्याची पांडवांनी पूजा केली  
व मग तो संध्याकाळीं शिविरास गेला ! तद-  
नंतर धर्मपुत्र युधिष्ठिराने सर्व भ्रात्यांना व  
पांचालसोमकांना आपआपल्या डेऱ्यांस जाण्यास  
अनुज्ञा दिली, आणि मग विशल्य हत्तीप्रमाणें  
त्याने स्वस्थ झोंप घेऊन ती रात्र घालविली !  
इकडे पांडव, पांचाल व इतर सर्व महारथ  
कर्णाच्या वधामुळे हर्षित होऊन त्या रात्रीस  
स्वस्थ निजले व सूतपुत्राला ठार मारून विजय  
मिळविल्यामुळे पांडवांचे तें अफाट व प्रबळ  
मेन्य जणू काय अगाध सागराच्या परतीरास  
पांचल्याप्रमाणें प्रमुदित होऊन अगदीं निश्चित  
व प्रसन्न झाले !

## अध्याय आठवा.

—:—

### व्यूहरचना.

मंजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, रात्र  
संपल्यावर इकडे दुर्योधनाने सर्व कौरवांना  
म्हटले—महारथहो, आतां सज्ज व्हा ! राजा  
धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाची ती आज्ञा श्रवण करून  
कौरवसेना लागलीच तयार झाली. ताबडतोब  
सैनिकांनी रथ जोडिले, कित्येकजण इकडे  
तिकडे धावू लागले, हत्तीवर ब्रह्माभरणें  
युद्धासामग्री घालून त्यांचीं सर्वे सिद्धता कर-  
ण्यांत आली, पायदळाने आपलीं सर्वे तयारी  
केली, सहस्रावधि वीरांनीं रथांत आस्तरणें  
घातलीं आणि रणवाद्यांचा महान् शब्द  
चालू होऊन रणार्थ आतुर झालेल्या योद्ध्यांना,  
सैनिकांना व गजाश्वानां मनस्वी वीरश्री चढली !  
राजा, नंतर कौरवांचीं सर्व सैन्ये रणभूमीवर  
जाण्यास सिद्ध होऊन आपापल्या स्थानीं  
उभी राहिलीं आणि मग मारूं किंवा मरूं  
असा संकल्प ठरवून त्यांनीं समरभूमीचा मार्ग  
धरिला. राजा, मग महारथांनीं सेनापति मद्र-  
राज शल्य याच्या आज्ञेप्रमाणें सर्व सैन्यांचे  
विभाग केले आणि ते त्या त्या विभागांसह शल्याने  
निर्दिष्ट केलेल्या जागीं जाऊन युद्धार्थ उभे  
राहिले. राजा, ह्याप्रमाणें सर्व व्यवस्था ठरवून  
टाकिल्यावर तुझे सर्व सैनिक, कृप, कृतवर्मा,  
अश्वत्थामा, शल्य, शकुनि व बाकीचे अवशिष्ट  
भूपाळ हे सर्व तुझ्या पुत्रापाशीं आले व त्यांनीं  
आपसांत ठराव केला की, कोणीही एकेक-  
ट्याने पांडवांशीं बिलकूल युद्ध करूं नये; जो  
कोणी एकटा पांडवांशीं लढेल किंवा जो कोणी  
लढणाऱ्याला एकटा सोडील त्यास पांचही  
महापातकें व उपपातकें लागतील ! सर्वांनीं  
मिळून एकमेकांचा बचाव करित पांडवांशीं

युद्ध करावें व ह्यांत कोणीही हयगय करूं नये ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें करार करून ते सर्व महारथ मद्राज्याच्या आज्ञेने आप-आपल्या स्थानी जाऊन नंतर त्यांनी तत्काळ शत्रूवर हल्ला केला !

राजा धृतराष्ट्रा, त्याप्रमाणेंच इकडे पांडवांनीही त्या महान् युद्धाकरितां आपल्या सैन्याचा व्यूह सिद्ध केला व चोहोंकडून कौरवांशी युद्ध करितां यावें अशी योजना करून ते कौरवांवर मोठ्या वेगानें चालून गेले. हे भरत-श्रेष्ठा, खवळलेल्या समुद्राप्रमाणें तें प्रचंड सैन्य गर्जत असून त्याचा विस्तारही समुद्राप्रमाणें अबाधित होता ! आणि त्यांत रथगजादिक इतस्ततः भ्रमण करीत असल्यामुळें त्या सेना-समारावर जणू काय महान् महान् लाटाच उसळत होत्या !

धृतराष्ट्रविचारितोः—संजया, द्रोण, भीष्म व कर्ण हे युद्धांत कसे पतन पावले, हें मी ऐकिलें. आतां मला आणखी शल्य व दुर्योधन हे रणांगणांत कसे पडले तें निवेदन कर. संजया, धर्मराजानें शल्याला व भीमसेनानें महाबाहु दुर्योधनाला रणांत कसें वधिलें तें सांग.

संजय सांगतोः—राजा धृतराष्ट्रा, समरांगणांत नर, गज व अश्व ह्यांचा जो भयंकर संहार उडाला, तो मी आतां तुला निरूपण करितों, तर तूं सावधान चित्तानें ऐक. राजा, द्रोण व भीष्म हे हत झाले, आणि सूतपुत्र कर्ण हा वधिला गेला, तेव्हां तुझ्या पुत्रांनी शल्याला सेनापति केलें; आणि मग त्यांना पुनः उभेद चढून, आतां शल्य हा खचीत सर्व पांडवांना रणांगणांत ठार मारील अशी त्यांना मोठी आशा उत्पन्न झाली ! राजा, त्यांच्या मनांत ही आशा उद्भवल्यामुळें त्यांना फिरून मोठा धीर आला आणि त्यांनीं रणांगणांत मद्राज शल्याचा आश्रय करून पुनः आपण

सनाथ झालें असें मानिलें ! राजा, कर्ण हा रणांत ठार झाला असतां इकडे पांडवांनीं महान् सिंहनाद आरंभिला. तेव्हां कौरववीरांचें घाबें दणाणलें होतें; परंतु पुढे शल्याकडे सेनापत्य येऊन सर्व व्यवस्था यथास्थित झाली, तेव्हां कौरवसेनेला पुनः वीरश्री उत्पन्न झाली; आणि मग प्रतापी शल्यानें तुझ्या सैनिकांची अजीबात भीति उडवून टाकिली व कौरवसेनेचा सर्वतोपरी उत्कृष्ट व बळकट असा व्यूह निर्माण करून त्यानें समरभूमीवर पांडवांवर चाल केली ! राजा, त्या वेळीं महारथ मद्राधिपति शल्य हा श्रेष्ठ रथांत आरूढ असून त्याच्या रथास सिंधु देशांतले अश्व जोडिले होते; त्याच्या हस्तांत, ज्याच्यापासून सुटलेला बाण कितीही बळकट पदार्थांचें मोठ्या आवेशानें क्षणांत भेदन करील, असें मोठें विचित्र धनुष्य नाचत होतें; त्याच्या रथावर कुशल सारथि अधिष्ठित असून त्याच्या योगें तो रथ अधिकच शोभत होता; आणि अशा त्या दिव्य रथावर शत्रुसंहारक शूर शल्य युद्ध करण्यास सिद्ध आहे असें पाहून तुझ्या पुत्रांची सर्व भीति नाहीशी होऊन त्यांस मोठी जयाशा उत्पन्न झाली ! राजा, ती कौरवसेना शत्रूवर चाल करून निघाली तेव्हां अंगांत चिलखत घातलेला शल्य हा त्या सेनेच्या अग्रभागीं विनीवर उभा राहिला; आणि त्याच्या सभोवतीं बलाढ्य मद्रक वीर व अजिंक्य कर्णपुत्र हे गराडा घालून उभे राहिले ! त्यांच्या डाव्या बाजूस त्रिगर्तसहवर्तमान कृतवर्मा उभा राहिला आणि उजव्या बाजूस शक व यवन ह्यांसहवर्तमान कृपाचार्य उभा राहिला ! पाठीमागे कांबोजांनीं परिवेष्टित असा अश्वत्थामा उभा राहिला; आणि महान् महान् कुरुवीरांनीं रक्षित असलेला दुर्योधन राजा मध्यभागीं अधिष्ठित झाला ! आणि तेथें रणांगणांत सौबल शकुनि

व त्याचा पुत्र महारथ कैतन्य ( उलूक ) हेही महान् अश्वसैन्य व इतर सैन्य घेऊन युद्ध करण्याकरितां सिद्ध राहिले !

राजा धृतराष्ट्र, इकडे शत्रुसंहारक महाधनुर्धर पांडवांनीही आपल्या सेनेचे तीन विभाग केले व त्यांची व्यवहरचना करून ते कौरव-सैन्यांवर चालून गेले ! धृष्टद्युम्न, शिखंडी व महारथ सात्यकि हे शल्याच्या सैन्याचा वध करण्याच्या इच्छेने रणांगणांत त्याजवर धावले आणि स्वतः युधिष्ठिर राजा आपल्या सैन्यासह शल्यास ठार मारण्याच्या हेतूने खुद्द त्याजवर चालू करून गेला ! शत्रुसंहारक महेषवास अर्जुनानें कृतवर्मा व संशप्तकगण ह्यांजवर मोठ्या आवेशानें हला केला ! आणि भीमसेन व महारथ सोमक हे युद्धांत शत्रूंचा संहार उडविण्याच्या इच्छेने कृतवर्मावर चालून गेले ! नकुल व सहदेव ह्यांनी आपआपल्या सैन्यांमह शत्रुनि व उलूक ह्यांजवर व त्यांच्या सैन्यांवर हला केला आणि त्याप्रमाणेंच तुड्याकडले सहस्रावधिवीर नानाप्रकारचीं आयुधें धारण करून समरभूमीवर मोठ्या त्वेषानें पांडवांवर तुटून पडले !

धृतराष्ट्र विचारितो:—संजया, महाधनुर्धर भीष्म, द्रोण व त्याप्रमाणेंच महारथ कर्ण हे समरभूमीवर पडल्यानंतर कौरवांचीं दळे थोड-थोडी शिलक राहिली होती. तशांत पुढें पांडवांची सरशी झाली व त्यांस युद्धाविषयी अतिशय क्षोभ उत्पन्न झाला; तेव्हां मग रणभूमीवर कौरवपांडवांपैकीं कोणकोणाचें किती सैन्य अवशिष्ट होतें तें सांग पाहूं !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, नंतर युद्धार्थ सिद्ध झालेल्या आपली व पांडवांची कसकशी स्थिति होती आणि प्रत्येक पक्षाचें किती किती सैन्य शिलक होतें, तें श्रवण कर. राजा, त्या समयीं कौरवांकडे अकरा हजार रथ, दहा हजार सातशें हत्ती, दोन लक्ष घोडे,

आणि तीन कोटी पायदळ होतें; व पांडवांकडे सहा हजार रथ, सहा हजार हत्ती, दहा हजार घोडे आणि दोन कोटी पायदळ होतें. राजा, इतकेंच काय तें दोन्ही पक्षांमिळून सैन्य अवशिष्ट असून तें सर्व युद्धास सिद्ध झालेलें होतें. राजा, कौरवांकडील सैन्य मी आतांच तुला सांगितलें त्याप्रमाणें निरनिराळे विभाग करून शल्य सेनापतीच्या आज्ञानुसार जय मिळविण्याच्या इच्छेनें क्षुब्ध होऊन पांडवांवर चालून गेलें, व शूर पांडवही विनयशाली नरन्यात्र पांचालांसह जयप्राप्त्यर्थ रणांगणांत कौरवांवर तुटून पडले ! राजा, अशा प्रकारें तीं दोन्ही सैन्ये एकमेकांना ठार मारण्याच्या उद्देशानें अगदीं प्रातःकालीं एकमेकांशीं भिडलीं; आणि मग त्यांमध्ये अत्यंत भयंकर व दारुण असें युद्ध जुंपून परस्परांनी परस्परांना ठार मारण्याचा क्रम आरंभिला !

## अध्याय नववा.

—:—

### संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, नंतर कौरव व संजय ह्यांचें फारच घोर व दारुण युद्ध सुरू झालें ! त्या समयीं जणू काय तें देव व दानव ह्यांचेंच युद्ध चालू आहे असें भासलें ! तेव्हां मनुष्ये, रथ, हत्तीचे व घोड्यांचे समुदाय आणि सहस्रावधि गजवीर व अश्ववीर मोठ्या शौर्यानें परस्परांशीं लढूं लागले ! भयंकर हत्ती एकमेकांवर चालून जात असतां जी महान् गर्जना करीत ती ऐकून जणू काय अंतरिक्षांत प्रावृट्कालाच्या आरंभी मेघांचेच गडगडाट होत आहेत असा भास होई ! त्या वेळी हत्तीच्या प्रहारांनीं कित्येक रथी रथांसुद्धां भग्न होऊन भूतलावर पडले ! मदनमत्त हत्तींनीं उधळून लाविल्यामुळें कित्येक योद्धे

रणांगणांत सैरावैर! धावत सुटले ! कितीएक युद्धनिपुण रथ्यांनीं घोड्यांच्या समुदायांना व पादरक्षक योद्ध्यांना बाणांच्या भडिमारांनं परलोकीं पाठविलें ! युद्धामध्ये कसलेले असे कितीएक घोडेस्वार महाराथांच्या सभोवती गराडा घालून त्यांजवर प्राप्त, शक्ति व ऋष्टि ह्यांचा घोर वर्षाव करून रणांगणांत त्यांस मारीत धावूं लागले ! कित्येक धनुर्धारी योद्धे महाराथांना वेढा देऊन पुष्कळजण एकेकट्याला गांठून त्यांस यमसदनी पाठवूं लागले ! कित्येक महाराथ हत्तींना व दुसऱ्या महाराथांना चोहो-कडून अडवून धरून त्यांजवर शस्त्रास्त्रवृष्टि करूं लागले व ते दुरून एकेकटे लडत असतां त्यांस त्यांनीं ठार मारिलें ! त्याप्रमाणेंच रथी कोपाय-मान होऊन हत्तींवर बाणांचा भयंकर भडि-मार करीत असतां ते हत्ती त्या रथ्यांस गराडा घालून त्यांचा संहार उडवूं लागले ! त्या समर्थी हत्तींनीं हत्तींवर व रथ्यांनीं रथ्यांवर उड्या घालून त्यांचा शक्ति, तोमरें व बाण ह्यांनीं चुराडा केला ! रणांगणांत रथ, अश्व व गज ह्यांनीं पायांखालीं तुडवून पायदळाचा घोर संहार उडविला आणि त्यामुळ जिकडे तिकडे मोठा हाहाकार झाला ! तेव्हां चामरांनीं सुशोभित असलेले घोडे इतस्ततः अत्यंत वेगानें धावूं लागले, तेव्हां जणू काय हिमालयाच्या पठार-ावर मेदिनीचें प्राशन करीत हंसच धावत आहेत असें सर्वांस भामलें ! राजा, त्या वेळीं घोड्यांच्या रथा टापांनीं चित्रविचित्र झालेली ती रणभूमि जणू काय नखाप्रांनीं विक्षत झालेल्या सुंदर स्त्रीप्रमाणें शोभायमान दिमूं लागली ! घोड्यांच्या टापांच्या आवाजांनं, रथांच्या चाकांच्या घर्जनघणाटानें, पायदळाच्या आक्रोशानें, हत्तींच्या गर्जनेनं, रणवाद्यांच्या घोषानें आणि शंखांच्या नादांनीं भूमि इतकी दणाणून गेली की, जणू काय वज्रपातांनीं ती

हादरून जाऊन भयंकर शब्द करीत आहे असें वाटलें ! राजा, नंतर एकसारखा धनु-प्यांच्या प्रत्यंचांचा महान् ध्वनि चालू झाला ! जिकडे तिकडे देदीप्यामान् शस्त्रास्त्रांचे प्रचंड लोट उमळूं लागले; आणि योद्ध्यांच्या अंगां-तील चिलखतांची विलक्षण दीप्ति सर्वत्र पसरून कसलेंच ज्ञान होईनामं झालें ! त्या सममी मोठमोठ्या हत्तीच्या शुंडांप्रमाणें प्रचंड असे बहुत वीरबाहु छिन्न होऊन तडफड करीत भयं-कर वेगानें वाटोळे फिरून नानाविध चेष्टा करूं लागले ! तेव्हां धरणीतलावर वीरांचीं मस्तकें धडाधड कोमळूं लागली असतां जणू काय ताडांवरून ताडफळेंच खालीं आदळत आहेत असें ऐकूं येऊं लागलें ! त्या वेळीं रक्तबंबाळ झालेली वीरशिरे पृथ्वीवर इतस्ततः पसरल्यामुळें जणू काय कांचनपद्मेच यथाकाली भूतलावर प्रफुल्लित झालीं आहेत असें दिसत होते. तेव्हां रणांगणांत शस्त्रास्त्रांनीं विद्ध होऊन गतप्राण झालेल्या मस्तकांच्या मुखांतील नेत्र अगदी टकटकीत दिसत असल्यामुळें जणू काय ती रणभूमि पंडरीकांनीच आच्छादित आहे, असें भासत होते ! तेथें चंद्रनाची उठी दिलेले व बाहुभूषणें धारण केलेले मोठेमोठे भुज सर्वत्र पडले असल्यामुळें जणू काय इंद्राचे महान् महान् ध्वजच विराजत होते ! त्या म्यळीं घोर संग्रामांत मोठमोठ्या भूपाळांच्या तुटलेल्या मांड्या जिकडे तिकडे पसरल्यामुळें जणू काय त्या हत्तींच्या दुसऱ्या शुंडाच हात असें भासत होतें; आणि तेथें सर्वत्र शेंकडों धडें, छत्रे, चामरें वगैरे पतन पावल्यामुळें जणू काय तें सेनावन फुललेंच आहे अशी शोभा दिसत होती ! राजा, त्या ठिकाणीं रुधिरानें न्हालेले योद्धे मोठ्या शौर्याने परिभ्रमण करीत असतां जणू काय फुललेले पलसाचे वृक्षच इतस्ततः धावत आहेत असें भासत होते ! राजा, तेथें

शरतोमरांनी छिन्नविच्छिन्न होत्साते जे हत्ती रणांगणांत जिकडे तिकडे पडत होणे, ते पाहून जणू काय महान् महान् मेघच छिन्नभिन्न होऊन पडत आहेत असे वाटे ! राजा, तेथें शूर योद्ध्यांकडून गजसैन्याचा संहार होत असतां ते पळू लागले म्हणजे जणू काय वाऱ्यानें उधळून दिलेले मेघच दशदिशांस धावत आहेत असे भासे ! आणि ते मेघाकार हत्ती अखेरीस चोहोंकडे भूतलावर पडत तेव्हां जणू काय प्रलय-कालीं वज्रानें विदीर्ण झालेले पर्वतच खाली पडत आहेत असें दिसे ! राजा, तेव्हां घोडे व घोडेस्वार हे रणांगणांत इतके मरून पडले की. त्यांच्या जिकडे तिकडे पर्वतप्राय राशी दिसू लागल्या ! त्या समयी रणभूमीवर वीरांना परलोकाप्रत पोचविणारी केवळ नदीच वाहू लागली ! त्या नदीमध्ये रुधिर हेंच उदक वहात असून रथ हे तिच्यामधले भोंबे होते ! ध्वज हे तिच्यांतले वृक्ष असून हाडें हे तिच्यांतले दगड होते ! हत्ती हे तिच्यांतले गवडक असून घोडे हे तिच्यांतले पाषाण होते ! मेद व मज्जा हा तिच्यांतला कर्दम असून छत्रे व गदा अनुक्रमे हंस व नावा होत्या ? कवचे व मंदिल ह्यांनी ती नदी आच्छादित असून पताका हे तिच्यांतले सुंदर द्रुम होते ! आणि चक्रे हे तिच्या पृष्ठभागावर संचार करणारे चक्रवाक पक्षी असून, त्रिवेणु व दंड ह्यांनी ती आच्छन्न होती ! राजा, अशी ती नदी पाहून शूरांना मोठी वीरश्री उत्पन्न होऊन भिज्यांची मोठी गाळण उडे ! राजा, कुरुमंजयाचें घोर युद्ध सुरू होऊन रणांगणांत अशी जी मोठी भयंकर नदी वाहू लागली, तो परलोकाप्रत जाण्याचा मार्ग असल्यामुळे, परिघृतुल्य बाहु धारण करणारे ते शूर वीर वाहननौकांच्या योगें ती नदी उतरून परलोकाप्रत गेले ! राजा, त्या समयी रणांगणांत कुरुमंजयाचें अमर्याद

युद्ध चालू होऊन चतुरंग दळांचा घोर संहार होऊं लागला. तेव्हां जणू काय तें देवदानवांचेंच युद्ध सुरू आहे असें भासलें ! राजा, तेव्हां समरभूमीवर असा कांही रणसंमर्द मातला की, जिकडे तिकडे बांधवांना मोठमोठ्याने हाका मारण्यांत येऊं लागल्या; परंतु तेथें सर्वत्र मूर्तिमंत भीति दिसू लागल्यामुळे आपल्या प्रिय बंधूंचा आक्रोश श्रवण करूनही त्यांच्या साहाय्यार्थ कोणीही धाव घेईनात ! राजा, अशा प्रकारें समरांगणांत घनघोर संग्राम चालू असतां अर्जुन व भीमसेन ह्यांनी असा कांही विलक्षण प्रताप गाजविला की, त्याच्यापुढें शत्रूंची मति अगदीं गुंग झाली ! राजा, त्या समयी तुझ्या त्या प्रचंड सेनेंतले वीर शत्रूंच्या हस्ते हत होऊन रणांगणांत पडू लागले, तेव्हां जणू काय वारूणीच्या मदानें धुंद झालेल्या प्रमदाच भूतलावर इतस्ततः कोसळत आहेत असें दिसू लागलें ! आणि अशा रीतीनें भीमसेन-धनंजयांनी तुझ्या सेनेची दुर्दशा उदविल्या. नंतर ते दोघेही वीर पुनःपुनः शंग वाजवून सिंहनाद करू लागले ! राजा, मग तो भीमार्जुनांश्चा महान् शब्द श्रवण करून धृष्टद्युम्न-शिखंडी ह्यांनी धर्मराजाला पुढें करून शल्यावर हल्ला केला ! तेव्हां मोठा भयंकर चमत्कार आमच्या दृष्टीस पडला तो हा की, ते सवें पांडववीर एकत्रपणें व निरनिराळे शल्याशी युद्ध करू लागले ! राजा, तशांत त्या वेळी अस्त्रविद्या-प्रवीण, रणधुरंधर व शूर असे माद्रीपुत्र नकुल-सहदेव मोठ्या त्वरेनें विजयाची हाव धरून शल्यावर तुटून पडले ! आणि मग विजयशाली पांडवांनी शरप्रहारांनीं जर्जर करून सोडिलेल्या त्या तुझ्या सैन्याचा अगदी नाइलाज होऊन अखेरीस तें सैन्य युद्धापासून पराङ्मुख झालें व मार्गे वळलें; परंतु इतक्यांत तुझ्या पुत्रांच्या समक्ष पांडवांनी त्याचा घोर संहार

उडविला तेव्हां त्यांतील राहिलेमाहिले वीर दशदिशांस पळून गेले ! राजा, त्या वेळी तुझ्या योद्ध्यांमध्ये महान् हाहाकार प्रवर्तला ! तशांतही पळत मुटलेल्या त्या तुझ्या सैन्यांतले महात्मे जय मिळविण्याच्या इच्छेने 'थांबा, थांबा' म्हणून ओरडत होते; परंतु पांडवांनी त्या सैन्याची फारच दाणादाण उडविल्यामुळे ते एकदां पळत मुटले ते पुनः युद्धार्थ मागे परतले नाही ! राजा, त्या समयी तुझ्या सैन्यांतले योद्धे आपल्या प्रिय पुत्रांना, भ्रात्यांना, पितामहांना, मातुलांना, भाच्यांना, मित्रांना, अध्यांना व गजाना रणांगणांत सोडून देऊन मोठ्या लगबगीने केवळ आपले प्राण जगविण्यासाठी दशदिशांस पळून गेले !

### अध्याय दहावा.

— ० : —

#### संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो :—राजा धृतराष्ट्र, ह्या प्रमाणे कौरवसैन्याची दाणादाण झालेली पाहून प्रतापशाली मद्राधिपति शल्य तावडतोच आपल्या सारथ्याला म्हणाला, " हे मृता, महावेगवान् घोड्यांना लवकर चालव; तो पहा पांडुपुत्र धर्मराज युधिष्ठिर मस्तकावर शुभ्र छत्राने विराजित असलेला आपल्या अग्रभागी दृग्गोचर होत आहे ! सारेथे, मला त्या म्यळी लवकर घेऊन चल आणि माझ्या अंगी किती पराक्रम आहे तो पहा ! मृता, आज रणांगणांत युधिष्ठिर हा माझ्यापुढे उभा राहाण्यास मुळीच समर्थ होणार नाही ! " राजा धृतराष्ट्र, ह्याप्रमाणे भाषण श्रवण करितांच मद्राधिपति शल्यच्या सारथ्याने तत्काळ तो रथ जेथे सत्यप्रतिज्ञ धर्मराज होता तेथे नेऊन पांडवांच्या प्रचंड मेनेशी एकदम भिडविला; आणि समुद्राची सीमा जशी त्या उपलगाच्या सम-

द्राला मागे लोटिते, तसे त्या कौरवसेनापतीने एकट्याने पांडवांचे ते क्षुब्ध सैन्य मागे हटविले ! त्या समयी, राजा, ज्याप्रमाणे पर्बत ताशी गांठ पडली असता वेगवान् समुद्र एकदम स्तब्ध होतो, त्याप्रमाणे शल्याशी गांठ पडतांच पांडवांचे ते प्रचंड सैन्य एकदम स्तब्ध झाले ! अशा प्रकारे मद्रराज शल्य रणांगणांत पांडवसैन्याशी तोंड देऊन युद्ध करू लागला, तेव्हां पुनः सर्व कौरव मारूं किंवा मरूं असा निर्धार ठरवून रणांगणांत परत आले; आणि मग आपआपल्या विभागी व्यूह करून उभी राहिलेली ती सैन्ये पांडवांशी अत्यंत भयंकर संग्राम करू लागली व रणभूमीवर रक्ताचे पाट चालू झाले ! राजा, त्या वेळी युद्धधुरंधर नकुलाने कर्णाचा पुत्र चित्रसेन ह्याजवर हल्ला केला आणि नंतर ते विचित्र धनुष्ये धारण केलेले दोघेही योद्धे एकमेकांना गांठून समरांगणांत एकमेकांवर असा घोर शरवर्षाव करू लागले की, जणू काय अंतरिक्षांत एक मेघ उत्तरेकडून येऊन व एक मेघ दक्षिणेकडून येऊन ते परस्परंवर जलवृष्टि करीत आहेत असें भासू लागले ! राजा, त्या समयी त्या दोघेही वीरांनी एकमेकांशी इतकी लगट केली की, त्यांच्या मध्ये मूळीच अंतर दिसत नव्हते ! ते दोघेही प्रबळ योद्धे शस्त्राभ्यांत प्रवीण असून एकमेकांवर रथ चालण्याच्या कामी मोठे पटाईत होते ! आणि ते दोघेही परस्परांना ठार मारण्यास उद्युक्त झाले असून परस्परांची छिद्रे शोधण्यांत तत्पर होते ! राजा, अशा प्रकारे ते दोघे महान् वीर परस्परांशी झुंजत असता चित्रसेनाने सहाणेवर धार दिलेला एक जलाल बाण नकुलाच्या धनुष्याच्या मुठीवर टाकिला व त्याचे तुकडे केले ! नंतर त्याने तावडतोच मोठ्या धैर्याने तीन सुवर्णपुंव जलाल बाण नकुलाच्या भालप्रदेशी सोडिले व नकुलाच्या

रोड्यांवर तीक्ष्ण बाण मारून त्यांना यमसदनी प्राठविलें आणि त्याप्रमाणेंच ध्वज व सारथि ह्यांजवर तीन तीन बाण सोडून त्यांचाही विध्वंस उडविला. तेव्हां तो नकुल भालप्रदेशी चित्रसेनानें टाकिलेल्या तीन शरांच्या योगें त्रिशूंग पर्वताप्रमाणेंच शोभूं लागला ! राजा, ह्याप्रमाणें रथहीन व धनुर्हीन झाल्यावर नकुलानें हातांत ढालतलवार घेतली. आणि सिंह जमा पर्वतावरून ग्वाली उतरतो तसा तो रथांतून ग्वाली उतरला व चित्रसेनावर धावून गेला; पण इतक्यांत, पायी चालून जाणाऱ्या त्या पांडुपुत्रावर चित्रसेनानें घोर शरवृष्टि चालविली; परंतु नकुलानें मोठ्या शिताफीनें त्या सर्व शरवृष्टीचा ढालीच्या योगें निरोध केला आणि तो महाबाहु वीर तसाच विचित्र युद्ध करीत मोठ्या त्वेपानें चित्रसेनाच्या रथाममीप जाऊन सर्व सैन्याच्या समक्ष त्याच्या रथावर चढला आणि त्यानें खट्टानें त्याचें मस्तक छेदिलें ! तेव्हां सुंदर नामिका, विशाल नेत्र, तेजस्वी कुंडलें व दीप्तिमान् मुकुट ह्यांच्या योगें अतिशय शोभाणारें तें चित्रसेनाचें मस्तक त्याच्या देहापामून वियुक्त होऊन भूतलावर पडलें व दिवाकराप्रमाणें तेजःपुंज असा तो त्याचा देह रथांत वीरासनीं पतन पावला !

ह्याप्रमाणें नकुलानें चित्रसेनाचा वध केलेला अवलोकन करून महारथांनी त्याचे मोठे धन्यवाद गाडले व एकमारखी सिंहगर्जना आरंभिली ! इतक्यांत चित्रसेनाचे आते महारथ सुषेण व सत्यसेन ह्यांनी नकुलावर विविध शरांचा भडिमार चालू केला; आणि महान् अरण्यांत दोन वाघ हत्तींचा प्राण घेण्याकरितां त्यावर तुटून पडवे तद्वत् ते दोघे वीर तत्काळ त्या रथश्रेष्ठ पांडुपुत्रावर मोठ्या त्वेपानें तुटून पडले ! राजा, त्या वेळीं त्या दोघांनीं त्या एकट्या महारथ नकुलावर अशी कांहीं भयंकर

शरवृष्टि केली कीं. जणू काय ते दोन प्रचंड मेघ जलवृष्टिच करीत आहेत असें दिसूं लागलें ! अशा रीतीनें नकुलाचा देह चोहोंकडून अतिशय बाणविद्ध झाला, तरी तो डगमगला नाहीं; त्यानें मोठ्या वीरश्रीनें दुसरें धनुष्य धारण केलें व तो तावडतोव दुसऱ्या रथावर चढला आणि क्रोधायमान होऊन रणांगणांत यमाप्रमाणें उग्र प्रताप गाजवूं लागला ! नंतर चित्रसेनाच्या त्या आत्यांनी बांकदार पेऱ्यांच्या बाणांची घोर वृष्टि चालविली आणि नकुलाच्या रथाचा चुराडा उडविण्याचा प्रयत्न आरंभिला ! तेव्हां नकुलानें मोठ्यानें हंसून चार जलाल बाण सोडून सत्यसेनाचे चारी घोडे मारिले आणि एक सुवर्णपुंख निशित बाण टाकून त्याचें धनुष्यही छेदून टाकिलें ! राजा, नंतर ते सत्यसेन व सुषेण हे दुसऱ्या रथावर आरूढ झाले व पुनः नकुलावर धावून गेले ! तेव्हां प्रतापी नकुलानें मोठ्या धैर्यानें त्या घोर रणांत त्या दोघांही कर्णपत्रांवर दोन दोन बाण सोडिले, त्यामुळें सुषेण हा अत्यंत संतापला आणि त्यानें हंसत हंसत रणांगणांत एका क्षुरप्र बाणानें नकुलाचें तें प्रचंड धनुष्य तोडिलें ! राजा, त्या समयी नकुल हा संतापानें नख-शिखांत पेटला व त्यानें सुषेणास पांच बाणांनीं विद्ध करून एका बाणानें त्याचा ध्वज उडविला आणि लागलेंच मोठ्या वेगानें सत्यसेनाचें धनुष्य व तलव्राण हीं तोडून टाकिलीं; तें पाहून सैन्यांत सर्वत्र महान् आक्रोश झाला ! नंतर सत्यसेनानें दुसरें वेगानें मारा करणारें व प्रचंड भार सहन करणारें असें धनुष्य घेतलें आणि बाणांचा भडिमार करून त्या पांडुपुत्राला चोहोंबाजूंनीं बाणांनीं झांकून काढिलें ! तेव्हां शत्रूसंहारक नकुलानें त्या सर्व बाणांचें निवारण केलें; आणि त्या सुषेण-सत्यसेनांवर प्रत्येकीं दोन दोन बाण सोडून त्यांस विधिलें !



त्या वेळीं त्या दोघांही कर्णपुत्रांनीं उलट नकुलावर पृथक् पृथक् सरळ चाल करणाऱ्या बाणांची वृष्टि आरंभिली आणि तीक्ष्ण बाणांनीं त्याचा सारथि अतिशय विद्ध केला ! त्या समयी प्रतापशाली सत्यमेनाने नकुलाच्या रथाची ईषा छेदिली आणि दोन निराले बाण टाकून त्याने मोठ्या शिताफीने नकुलाचे धनुष्यही तोडून टाकिले ! तेव्हां रथांत अधिष्ठित असलेल्या त्या अतिरथ नकुलाने आतां आपल्या रथावरील क्रोधाती शक्ति सोडावी ह्याचा विचार केला; आणि तत्काळ सुवर्णाच्या दांड्याची, तीक्ष्ण अग्राची, तेलपाणी देऊन लखलखीत केलेली, अतिशय चकाकणारी व जणू काय वारंवार जीभ चाळवणारी महाविपारी नागीणच अशी एक महान् शक्ति उचलली आणि ती रणांत सत्यसेनावर फेंकिली ! राजा, त्या शक्तीने सत्यसेनाच्या हृदयाचे शेकडो तुकडे झाले व तो गतप्राण होऊन किंचित् वळवळ मात्र करीत रथावरून एकदम खाली कोसळला ! राजा, ह्याप्रमाणे सत्यसेनाचा वध झालेला पाहून सुषेणाला अत्यंत क्रोध चढला आणि त्याने तत्काळ पांडुनंदनाचा रथ भग्न करून त्यास पादचारी केले ! त्या समयी त्याने चार बाणांनी चार घोडे मारिले, एका बाणाने ध्वज तोडिला व तीन बाणांनी सारथि मारिला ! राजा, अशा प्रकारे सुषेणाने नकुलाला विरथ केलेले पाहून त्याच्या मदतीसाठीं द्रौपदीचा पुत्र सुतसोम हा रणांगणांत त्याजकडे रथ घेऊन गेला, तेव्हां तत्काळ नकुल हा सुतसोमाच्या रथावर चढला आणि सिंह जसा पर्वतावर आरूढ झाला असतां शोभतो, तसा तो भरतश्रेष्ठ तेथे शोभला ! राजा, नंतर नकुलाने दुसरे धनुष्य धारण करून सुषेणाशी युद्ध आरंभिले ! त्या समयी ते दोघेही प्रबळ महारथ एकमेकांच्या वधाकरितां एकमेकांवर प्रचंड शरवर्षाव करू लागले ! तेव्हां

सुषेणाला फारच संताप चढला व त्याने पांडुपुत्रावर तीन व सुतसोमावर वीम बाण बाहु व वक्षस्थळ ह्यांच्या ठिकाणीं मारिले ! त्या समयी महाप्रतापी शत्रुसंहारक नकुलाने सुषेणावर घोर शरवृष्टि चालविली व सर्व दिशा बाणाच्छादित करून टाकल्या ! राजा, नंतर नकुलाने तीक्ष्ण अग्राचा, धार देऊन अतिशय नलाल केलेला व महावेगाने शत्रूवर चालून जाणारा असा एक अर्धचंद्र बाण घेऊन तो रणांत कर्णपुत्रावर सोडिला आणि त्या बाणाने सुषेणाचे धड व मस्तक ही पृथक् होऊन सर्व सैन्यासमक्ष तो वीर रणांगणांत पतन पावला व महात्म्या नकुलाचे ते अद्भुत कृत्य पाहून सर्वास मोठे आश्चर्य वाटले ! राजा, तो वीथेशाली सुषेण जेव्हां भूतलावर पडला, तेव्हां जणू काय नदीच्या वेगाने कांठावरचा प्रचंड व बळकट वृक्षच कोसळून खाली पडला असे भासले ! ह्याप्रमाणे नकुलाचा घोर पराक्रम अवलोकन करून आणि कर्णपुत्राचा वध झालेला पाहून तुझ्या सेनेचा धीर सुटला व ती भयभीत होत्साती पळत सुटली ! परंतु तितक्यांत रणांगणामध्ये शत्रुसंहारक शूर सेनापति प्रतापशाली मद्राज शल्य हा तिचे रक्षण करण्यास पुढे सरसावला. मग त्याने तिला पुनः व्यवस्थितपणाने जागच्या जागी अधिष्ठित करून निर्धास्तपणाने शत्रूशी लढण्यास तोंड दिले व सिंहनाद करून धनुष्याचा दारुण ध्वनि आरंभिला ! ह्याप्रमाणे शल्याने पांडवांशी घोर समर आरंभिले, तेव्हां त्या दृढधन्याच्या सेनापत्याखाली युद्ध करीत असलेले सर्व कौरववीर भयरहित होत्साते चोहोंकडून पुनः त्याजपाशी प्राप्त झाले व ते मोठ्या निकरांने पांडवांशी युद्ध करण्यास पुढे सरले. असो; ह्याप्रमाणे त्या वेळीं महाधनुर्धर मद्राधिपतीच्या भोवतालीं पांडवांशी लढण्याकरितां प्रचंड कौरवसेना

जमली! राजा, तिकडे पांडवसेनेत सात्यकि, भीमसेन, नकुल व सहदेव हे शत्रुसंहारक व विनयशाली धर्मराजास पुढें करून युद्ध करीत होते, ते रणांगणांत धर्मराजाच्या भोंवतळीं उभे राहिले, आणि त्यांनीं सिंहनाद करून शंखांचा व बाणांचा प्रचंड ध्वनि सुरू केला व ते नाना-प्रकारें मोठमोठ्यानें ओरडू लागले! राजा, तेव्हां इकडे तुझ्या सेनेलाही पुनः युद्धासाठीं मोठा चेव आला व सर्व सैनिक मद्राधिपतीच्या भोंवतळीं गराडा घालून उभे राहिले! राजा, मग दोन्ही सैन्यांचें फारच भयंकर युद्ध सुरू झालें! त्या वेळीं तीं दोन्ही दळे मारूं किंवा मरूं असा संकल्प करून जेव्हां लढूं लागलीं. तेव्हां त्यांचें तें समर पाहून भिड्या लोकांना फारच भय वाटलें! पूर्वीं देवदानवांमध्ये जसा घोर संग्राम झाला, तसाच तो त्या शूर वीरांचा संग्राम झाला, व त्यांत यमराष्ट्राला फारच भर पडली! राजा, ह्याप्रमाणें भयंकर युद्ध चालू असतां कपिश्वज अर्जुन हा रणांगणांत संशप्तकांचा नाश करून परत आला व त्यानें त्या कौरवसेनेवर चाल केली! त्याप्रमाणेंच धृष्ट-द्युम्नादिक पांडववीरही त्या सेनेवर जलाल बाणांची वृष्टि करीत धावून गेले! आणि अशा प्रकारें चौहोकडून एकच मारा सुरू झाला, तेव्हां कौरवसेना घाबरी व तिचें भान नष्ट झालें! राजा, त्या वेळीं पांडवांनीं कौरवांवर इतका भयंकर बाणवर्षाव केला कीं, त्याच्या योगें सर्व अंतरिक्ष व्याप्त होऊन दिशा, उपदिशा वगैरे कांहीं एक कळेनासें झाले! तेव्हां तुझ्या सेनेतले महान् महान् वीर पडल्यामुळे पांडवांनीं तुझ्या सेनेची फारच दुर्दशा उडविली व तिला पार उधळून लाविलें! राजा, मग फारच घनघोर संग्राम चालू झाला. त्या वेळीं महारथ पांडवांनीं तुझी सेना ठार केली व त्याप्रमाणेंच तुझ्या पुत्रांनीं रणांत पांडवांवर

चौहोकडून हल्ला करून त्यांचेही मोठे सैन्य मृत्यूच्या मुखांत लोटिलें! ह्याप्रमाणें भयंकर शरवृष्टि करून उभयतां सैन्यांनीं उभयतांचे शतावधि व सहस्रावधि योद्धे रणांगणांत पाडिले, तेव्हां दोन्ही सैन्ये प्रावृट्कालांत नद्या क्षुब्ध होतात तद्वत् अतिशय क्षोभली; आणि त्या भयंकर संग्रामांत दोन्ही सैन्यांना तीव्र भय उत्पन्न झालें.

### अध्याय अकरावा.

—:o:—

#### भीमसेन व शल्य ह्यांचें युद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें त्या दोन्ही दळांनीं परस्परांना अगदीं जर्जर करून परस्परांना ठार मारण्याचा क्रम आरंभिला, तेव्हां योद्धे पळावयास लागले, हत्ती उधळत सुटले, त्या घोर रणकंदनांत पाय-दळांनीं आक्रोश करून ओरडण्यास प्रारंभ केला, घोड्यांचा भयंकर संहार उडाला, महान् प्राणहानि सुरू झाली, सर्व जीवांचा घोर क्षय उद्भवला, नानाविध आयुधांचे समुदाय रणांगणांत पडले, रथ व गज ह्यांचा एकच संमर्द झाला, युद्धप्रवीण वीरांना महान् वीरश्री चढली, भीरुजनांची पांचावर धारण बसली, परस्परांना ठार मारण्याच्या इच्छेनें वीरपुरुषांनीं एकमेकांवर उड्या घातल्या, सर्वत्र घनघोर प्राणघूत चालू होऊन त्यांत यमराष्ट्राची भरती होऊ लागली, आणि पांडवांनीं कौरवांना व कौरवांनीं पांडवांना जलाल बाणांच्या भडिमारांनें ठार मारिलें! अशा प्रकारें भिड्या लोकांना भय उत्पन्न करणारा तो दारुण संग्राम चालू असतां प्रातःकालीं सूर्योदयाच्या सुमारासच हा असा भयंकर संहार घडला! राजा, त्या समयी महात्म्या धर्मराजांनें रक्षिलेले व अचूक बाण मारणारे पांडवांकडील

योद्धे मारुं किंवा मरुं अशा निर्धारानें कौरव-सेनेशीं मोठ्या निकरानें लढूं लागले; आणि मग त्या बलिष्ठ ईर्ष्यम चढलेल्या व नेमका वर्षाव करणाऱ्या पांडववीरांच्या हस्ते वणव्यांत सांपडलेल्या हरिणांप्रमाणें कौरवमेना नष्ट होऊं लागली! ह्याप्रमाणें चिखलांत रुतलेल्या गाईसारखी कौरवमेनेची अगदीं विपन्न अवस्था झालेली अवलेकन करून त्या प्राणमंकाटांतून तिला मोडविण्यासाठीं त्या समर्थी कौरव-मेनापति शल्य ह्यानें पांडवांच्या सेनेवर एक-दम हल्ला केला! आणि अत्यंत क्षुब्ध होऊन कौरवचमूवर पांडव उमलून येत होते त्यांजवर त्यानें श्रेष्ठ धनुष्याच्या योगें महान् शरवृष्टि चालविली! राजा, त्या वेळीं पांडवही विजय-प्राप्तीच्या इच्छेनें रणांगणांत मद्राधिपतीवर तुटून पडले; आणि त्यांनीं त्याजवर घोर शरांचा वर्षाव केला!

राजा, नंतर महारथ मद्राधिप शल्यानें शतावधि जलाल बाण मारून धर्मराजाच्या ममक्ष पांडवांच्यामेन्याला जर्जर करून सोडिलें; तेव्हां नानाप्रकारची अनेक दुश्चिन्हें होऊं लागली! पर्वतांसहवर्तमान सर्व पृथ्वी भयंकर शब्द करून कंपायमान झाली! चोहोंकडे सदेष्ट शूलांच्या अग्रांप्रमाणें प्रज्वलित दिसणाऱ्या उल्का फुटून जाऊन अंतरिक्षांतून रदि-मंडळास स्पर्श करून भूतलावर कोसळूं लागल्या! मृग, महिष आणि पक्षी हे तुड्या मेनेला उजवीं घालून जाऊं लागले! शूक, मंगळ व बुध हे धर्मराजाला मातवे म्हणजे बलिष्ठ झाले, व त्यामुळे सर्व पांडव लवकरच अग्निल पृथ्वीचे साम्राज्य भोगणार हें त्यांनीं सूचित केलें! शस्त्रांच्या अग्रांपामून ज्वाला निवृं लागल्या व त्यामुळे डोळे दिवूं लागले! आणि पुष्कळ कावळे व घुबडे वीरांच्या मस्तकांवर व ध्वजांच्या शेंड्यांवर वसूं लागली! नंतर रणांगणांत

जमलेल्या त्या सर्व सैनिकांमध्ये अत्यंत घोर युद्ध झालें! कौरवांकडील महान् महान् योद्धे आपआपल्या सर्व सैन्यासहवर्तमान पांडवांच्या सैन्यावर तुटून पडले; आणि सहस्रनेत्र इंद्र जसा पर्वतावर पर्जन्यवृष्टि करितो, तशी त्या शूर शल्यानें कुंतीपुत्र युधिष्ठिरावर बाणांची घोर वृष्टि केली! राजा, त्या वेळीं महाबलवान् मद्राधिपानें भीमसेन, नकुल, सहदेव, द्रौपदीचे सर्व पुत्र, धृष्टद्युम्न, सात्यकि व शिखंडी ह्या सर्वांवर प्रत्येकी दहा दहा मुवर्णपुंगव जलाल बाण टाकून त्या सर्वांस बाणविद्ध करून सोडिलें; आणि मग, प्रावृत्कालाम प्रारंभ होण्याच्या वेळीं इंद्र ज्याप्रमाणें भयंकर जलवर्षाव करितो, त्या-प्रमाणें त्यानें एकंदर सर्व पांडवमेनेवर घोर शरवर्षाव केला! राजा, त्या समर्थी शल्याच्या बाणांनीं सहस्रावधि प्रभद्रक व मोमक रणांत पटापटां मरून पडले व पडत आहेत असें सर्वत्र दिवूं लागलें! राजा, तेव्हां पांडवांच्या सैन्या-वर शल्यानें जी शरवृष्टि चालविली होती, ती पाहून जणू काय भ्रमरांचे थवे किंवा टोळांच्या धाडीच अथवा पर्जन्याच्या सरीच कोसळत आहेत, असें भासत होतें! त्या वेळीं शल्याच्या बाणांनीं हत्ती, घोडे, रथी व पायदळ हीं सर्व अगदीं आर्त होऊन भ्रांत झाली व मोठ-मोठ्यानें आक्रोश करूं लागली! जणू काय शल्याच्या सर्व देहांत संताप व वीरश्री ही भरली असून, प्रलयकाली यम हा जसा सर्वांना प्रमत्त करितो, तसें त्यानें रणभूमीवर सर्व शत्रूंना प्रमत्त करून टाकिलें होतें! राजा, त्या समर्थी महा-बल मद्राधिपति शल्यानें मेघाप्रमाणें महान् गर्जना करित पांडवसैन्यांचा असा दारुण संहार आरंभिला की, त्यांना अवेरीस आश्रया-साठीं अजातशत्रु धर्मराज युधिष्ठिर ह्याजपाशी त्वरा करून जावें लागलें! तेव्हां शल्यानें मोठ्या शिताफीनें रणांगणांत पांडवसैन्यांवर जलाल

बाणांचा भडिमार करीत त्यांचा पाठलाग केला आणि शेवटी घोर शरवृष्टि करीत तो युधिष्ठिरावरही चालून गेला ! परंतु पायदळ व अश्व ह्यांसहवर्तमान शल्य हा क्रोधाग्रस्त होऊन आपणावर धावून आला असे पाहतांच, अंकुशांनी ज्याप्रमाणे मदनमत्त हत्तीचा निरोध करावा, तसा तीक्ष्ण शरांचा मारा करून युधिष्ठिराने त्याचा एकदम निरोध केला ! राजा, त्या समयी शल्याने धर्मराजावर सर्पाप्रमाणे प्राणघातकी अमा एक घोर बाण सोडिला व तो त्या महात्माच्या देहाचे विदारण करून वेगाने भूगह्वरांत शिरला ! ते पाहून वृकोदराला अतिशय संताप आला व त्याने तत्काळ सात बाणांनी शल्यास विधिले ! राजा, शल्याने युधिष्ठिराला विदीर्ण केलेले पाहून भीमसेनाप्रमाणे इतर पांडवीय वीरही अतिशय क्षुब्ध झाले व त्यांनी मोठ्या आवेशाने शल्यावर बाण सोडिले ! तेव्हां शत्रुसंहारक शूर शल्यावर सहदेवाने पांच बाण मारिले; नकुलाने दहा बाण मारिले; आणि मेघ जमे पर्वतावर जलवृष्टि करिताना, तशी द्रौपदीच्या पुत्रांनी त्याजवर घोर शरवृष्टि केली ! ह्याप्रमाणे चोहोंकडून पांडवांनी शल्याचे निवारण केले, तेव्हां कृप व कृतवर्मा हे अगदी क्षुब्ध होतमाते त्याचे संरक्षण करण्याकरितां त्या स्थळी धावून गेले; नंतर महाबलवान् उलूक व सोबल शकुनि हेही त्यांस मिळाले; मग कांही वेळाने प्रबळ अश्वत्थामाही हंसत हंसत तेथे गेला; आणि इतक्यांत तुझे सर्व पुत्र तेथे जमून त्या सर्वांनी त्या घोर समरांत शल्याचे संगोपन केले ! राजा, त्या वेळी कृतवर्म्याने तीन बाण भीमसेनावर सोडून त्यास विधिले आणि मग त्याजवर बाणांचा पाऊस पाडून त्या क्षुब्ध झालेल्या भीमसेनाला गुंडवून टाकिले; कृपाचार्याने संतप्त होऊन धृष्टद्युम्नावर बाणांचा भडिमार चालविला;

शकुनीने द्रौपदीच्या पुत्रांवर व अश्वत्थाम्याने नकुलसहदेवांवर हल्ले केले; व समरांगणांत महाधनुर्धर प्रतापशाली प्रबळ दुर्योधनाने कृष्णार्जुनांवर चाल करून भयंकर शरांचा घोर वर्षाव आरंभिला ! ह्याप्रमाणे रणभूमीवर जिकडे तिकडे कौरव व पांडव ह्यांच्या शतावधि द्वंद्वांचे मोठे भयंकर व विचित्र युद्ध चालू झाले ! तेव्हां भोजराज कृतवर्म्याने युद्धांत भीमसेनाचे ऋक्षवर्ण अश्व ठार मारिले; आणि त्यामुळे अश्वहीन झालेल्या रथांतून तो पांडुपुत्र खाली उतरला व हातांत गदा धारण करून शत्रूंचा संहार करू लागला; तेव्हां जणू काय दंडधर कालत्र प्राण्यांचा संहार करीत आहे, असें सर्वांस भामले ! मद्राधिप शल्याने अग्रभार्गी सहदेवाचे अश्व वधिले व ते पाहून तत्काळ सहदेवाने तरवारीचा प्रहार करून शल्यपुत्राला यमलोकी पाठविले ! इकडे गौतम व धृष्टद्युम्न ह्यांचा पुनः मोठ्या निकराचा संग्राम सुरू झाला; त्या समयी ते दोघेही वीर मोठ्या शौर्याने व धैर्याने लढत असून एकमेकांना वधण्याविषयी एकमेकांवर चढ करीत होते ! त्या वेळी त्या वनघोर संग्रामांत अश्वत्थाम्याने फारसें कुद्ध न होतां केवळ हंसत हंसत द्रौपदीच्या पुत्रांवर प्रत्येकीं दहा दहा बाण सोडून त्यांस विधिले आणि फिरून भीमसेनाच्या अश्वाना ठार मारिले ! तेव्हां फिरून तत्काळ तो बलिष्ठ पांडुतनय रथांतून उतरला आणि क्षुब्ध होऊन दंडपाणि अंतकाप्रमाणे शत्रुनाश करू लागला ! राजा, त्या वेळी भीमसेनाने गदेचे प्रहार करून कृतवर्म्याचा रथ तोडिला व त्याचे अश्व वधिले आणि मग अखेरीस निरुपाय होऊन कृतवर्म्याने त्या रथांतून खाली उडी टाकिली व पलायन केले ! इकडे शल्यही फार चवताळला आणि त्याने सोमकपांडवांचा विध्वंस उडवून जलाळ बाणांच्या भडिमारांने युधिष्ठिरा-

ला पीडिलें ! तेव्हां तें पाहून भीमसेनाला अतिशय क्रोध चढला व दांतओठ खाऊन मोठ्या आवेशानें त्यानें आपली गदा शल्याचे प्राण घेण्याकरितां उचलली ! राजा, भीमसेनाच्या त्या घोर गदेचें काय वर्णन करावें ? ती केवळ यमदंडाप्रमाणें झळकत असून कालरात्रीप्रमाणें शत्रूंचा संहार करण्यास समर्थ होती ! गज, अश्व व नर ह्यांचा प्राण घेणारें तें अत्यंत उग्र शस्त्र होतें ! त्या गदेवर चौहोंकडून सुवर्णाचे पट्टे बसविले असून ती जणू प्रज्वलित उल्काच भासत होती ! ती टोंकदार असून नागिणीप्रमाणें अतिशय उग्र होती ! ती लोहमय असून तिला केवळ वज्राप्रमाणें काठिन्य होतें ! विलासी स्त्रीच्या देहाला चंदन व इतर सुगंधि पदार्थ ह्यांची उडी असते तद्वत् त्या गदेला वसा, मेद व रक्त ह्यांची उडी असून ती यमाच्या जिव्हेप्रमाणें लवलवत होती ! तिला इंद्राच्या वज्राप्रमाणें शतावधि सुंदर घागऱ्या लाविल्या असून त्यांचा मोठा हृदयंगम ध्वनि होत होता ! तिचा आकार कात टाकलेल्या भयंकर सर्पाप्रमाणें असून ती गजमदानें माखलेली होती ! ती सर्व प्राण्यांना भय उत्पन्न करणारी असून स्वकीय सैन्याला अतिशय आनंदविणारी होती ! ती पर्वतांचीं शिखरें विदारणारी असून मृत्युलोकांत प्रख्यात होती ! ती गदा वर्जासारखी प्रचंड असून तिला अनेक रत्ने व हिरे ह्यांचा जडाव केलेला होता. त्या गदेच्या जोरावर महाबल भीमसेनानें कैलामलोकीं शंकराचा सखा प्रतापी कुबेर ह्यास युद्धार्थ बोलाविलें आणि कुद्ध झालेल्या त्या प्रबल भीमसेनानें महान् गर्जना करीत अनेक दांडग्या मायावी गुह्यकांना—त्यांनीं पुष्कळ रोष केला असतांही द्रौपदीचे इष्ट हेतु मिळीस नेण्यासाठीं तिच्या योगें—अलकापुरींत ठार मारिलें ! अमो; राजा, ह्या प्रकारची ती दारुण गदा

उचलून महाबाहु भीमसेन रणांगणांत शल्यावर धावून गेला आणि त्या युद्धविशारद पांडुपुत्रानें दारुण शब्द करणाऱ्या त्या गदेच्या प्रहारांनीं शल्याचे महावेगवान् चारही अश्व बघिले ! तें पाहून शल्याला अतिशय क्रोध चढला व त्यानें मोठ्यानें गर्जना करून भीमसेनाच्या सुदृढ वक्षस्थळीं तोमर फेंकिलें; तेव्हां तें त्याचें कवच विदारून त्याच्या हृदयांत घुसलें ! राजा, त्या समर्थी वृकोदरानें शांतपणानें छातींत शिरलेलें तें तोमर उपटून काढिलें आणि लागलेंच मद्राधिपतीच्या सारथ्याचें हृदय भेदिलें ! राजा, तेव्हां तो शल्यसारथी भिन्नकवच होत्साता रक्त ओकत अग्रभागीं दीन होऊन मूर्च्छित पडला ! ह्याप्रमाणें भीमसेनानें आपल्या कृत्याचा प्रतिकार केलेला पाहून शल्यास मोठें आश्चर्य वाटलें व तो तत्काळ एकीकडे झाला ! आणि नंतर तो धर्मात्मा मद्राधीश हातांत गदा धारण करून भीमसेनाकडे पुनः पुनः पाहूं लागला ! असो; राजा, ह्याप्रमाणें रणांगणांत क्लेश न पावणाऱ्या अशा त्या भीमसेनाचें तें विलक्षण शौर्य पांडवांनीं पाहिलें. तेव्हां त्यांना मोठा आनंद झाला व त्यांनीं त्याची फार वाहवा केली !

### अध्याय बारावा.

—:—

#### संकुलयुद्ध.

मंजय सांगतो:—राजा, आपला सारथि पडला तेव्हां शल्य हा तत्काळ संबंध पोलादाची अशी गदा धारण करून पर्वतासारखा अढळ उभा राहिला ! त्या समर्थी तो जणू प्रलयकालचा अग्निच भडकला आहे अथवा पाशधारी यमच क्षोभला आहे, किंवा शृंगासह कैलाम पर्वतच उभा आहे, अगर वज्रधारी इंद्रच अथवा शूलधारी महादेवच युद्धार्थ सिद्ध

आहे, किंवा अरण्यांत मद्योन्मत्त हत्तीच तुफान झालेला आहे, असें सर्वांस वाटलें ! नंतर त्याज-  
वर भीमानें प्रचंड गदेसहवर्तमान पोठ्या आवे-  
शानें हल्ला केला ! त्या वेळीं महत्त्वावधि शत्रू  
व तुर्ये ह्यांचा महान् ध्वनि सुरू झाला; योद्धे  
मोठमोठ्यानें सिंहनाद करूं लागले; त्या योगें  
शूर वीरांना अतिशय वीरश्री चढली, आणि  
मग जिकडे तिकडे एकच गडबड उडून जाऊन  
दोन्ही दळांतील योद्धे सर्वत्र त्या शल्यभीम-  
रूप प्रचंड गजांचा तो घनघोर संग्राम पाहून  
त्या दोघांचीही वाहवा करूं लागले ! राजा,  
रणांगणांत त्या भीमसेनाचा पराक्रम मद्राधिपति  
शल्य किंवा यदुनंदन बलराम ह्यांशिवाय  
अन्याला खर्चीत सहन झाला नमता; आणि  
तसाच त्या महात्म्या मद्राधीशाचाही गदावेग  
रणांगणांत सहन करण्यास एक वृकोदरच  
तेवढा समर्थ होता ! अमो; नंतर शल्य व  
भीम हे दोघेही प्रबल वृषभाप्रमाणें मोठमोठ्यानें  
दुरकण्या फोडीत मंडलाकार फिरूं लागले, व  
त्यांनी पुनःपुनः एकमेकांवर उड्या घालून  
गदाप्रहार आरंभिले ! त्या समयी त्या दोघां-  
नीही नानाविध मंडलें करून परस्परांवर गदा  
हाणिल्या, तेव्हां ते दोघेही समान पराक्रमी  
आहेत असें दिसून आलें ! राजा, शल्याच्या  
त्या गदेला तावलेल्या मुष्णप्रमाणें झळकणारी  
वस्त्रं गुंडाळलेली अमल्यामुळें जणू काय तिज-  
पासून अशीच्या ज्वाळाच चालल्या होत्या;  
आणि त्यामुळें त्या गदेच्या योगें प्रेक्षकांना  
अतिशय भीति उत्पन्न होत होती ! त्याप्रमाणेंच  
तो महात्मा भीमसेन मंडलाकार परिभ्रमण  
करीत असतां त्याची गदा पाहून जणू काय  
मेघमंडलावर विद्युलताच चमकत आहे असा  
भास होई ! राजा, मद्रराज शल्यानें भीमसेनाच्या  
गदेवर आपली गदा हाणिली म्हणजे जणू  
काय ती पेर घेऊन अंतरिक्षांत निच्यापासून

ठिणभ्यांचा फंवारा चालू होई; आणि त्या-  
प्रमाणेंच भीमसेनानें शल्याच्या गदेवर आपल्या  
गदेचा प्रहार केला म्हणजे केवळ अंगाराचाच  
वर्षाव पडे ! ते दोन प्रचंड वीर झगडत असतां  
जणू काय दोन महान् हत्ती एकमेकांवर दंत-  
प्रहार करून एकमेकांशी लढत आहेत, किंवा  
दोन उन्मत्त बैल एकमेकांना शिंगें भोसकून  
एकमेकांशी झुंजत आहेत, असें भासे ! आणि  
अखेरीस त्या उभयतांनी एकमेकांवर तोत्रें  
( गदाविशेष ) हाणावी तशी त्या गदांची  
अग्नें हाणिली व त्या योगें त्यांची गात्रें क्षणांत  
छिन्नभिन्न होऊन त्यांतून रुधिराचे ओघ चालू  
झाले ! राजा, त्या समयी त्या दोघांही वीरांचे  
ते रक्तचंचाळ झालेले देह पाहून जणू काय ते  
फुललेले पल्लमाचे वृक्षच होत असा भास झाला  
व त्यांची अद्वितीय कांति दिसूं लागली !  
त्यांचें ते घोर गदायुद्ध चालू असतां मद्राधिप  
शल्यानें भीमसेनाच्या डाव्या व उजव्या  
कुशीवर बहुत गदाप्रहार केले, परंतु तो महा-  
बाहु कुंतीपुत्र अणुरेणु न दळतां पर्वतासारखा  
मुस्थिर राहिला ! त्याप्रमाणेंच भीमसेनानें पुनः  
पुनः शल्यावर गदेचे मोठमोठे आघात केले; परंतु  
हत्तीनें महान् पर्वताला कितीही धडका मारिल्या  
तरी त्यावर जसा त्याचा कांहीच परिणाम  
होत नाहीं, तसा तो वीरश्रेष्ठ शल्य मुळींच  
व्यथा पावला नाहीं ! ते पुरुषसिंह परस्परांशीं  
भयंकर युद्ध करीत असतां त्यांच्या गदांचे जे  
आघात चालले होते, त्यांचा घोर शब्द दश-  
दिशांच्या ठिकाणी ऐकूं येई आणि जणू ती  
दोन वज्रेंच आदळत आहेत असें वाटे ! राजा,  
नंतर ते दोघे महाप्रतापी वीर प्रचंड गदांसह  
एकमेकांशी अधिक भिडले आणि पुनः मंडलें  
करीत एकमेकांवर गदा हाणूं लागले ! त्या  
वेळी प्रत्येकजण आठ पावले पुढें सरला;  
आणि लोहदंड उचलून ते दोघेही युद्ध

करूं लागले, तेव्हां त्यांचा अगदी अमानुष पराक्रम दृग्गोचर झाला! एकमेकांना ठार मारण्याच्या इच्छेने त्यांनी एकमेकांवर मंडलाकार परिभ्रमण करीत हल्ले केले आणि त्यांत त्यांनी आपल्या अंगचें अपूर्व युद्धकौशल्य दाखविलें! नंतर त्यांनी आपल्या घोर गदा उंच केल्या. तेव्हां ते सशृंग पर्वतांप्रमाणे दिसूं लागले. मग ते मंडले करीत एकमेकांवर धावून गेले; परंतु चमत्कार असा की. ते रणशूर वीर रणांत एकमेकांना भिडल्यावर अगदी पर्वतप्राय अदळ उभे राहिले! मग ते परस्परांवर मोठ्या क्रोधानें एकसारखे भयंकर गदाप्रहार करूं लागले; आणि अग्नेरीस अत्यंत वायाळ होऊन दोघेही इंद्रध्वजाप्रमाणे एकदम भूतलावर पतन पावले. तेव्हां दोन्ही सैन्यांत एकच हाहाकार झाला! त्या समयी दोघांनाही मर्मस्थळी अतिशय इजा झाली असून ते दोघेही अगदी विव्हेल झाले होते! अमो; मग रणांगणांत मद्राधिपतीला कृपाचार्याने ताबडतोब आपल्या रथांत घातलें व रणभूमीतून एकीकडे नेलें! इकडे रणांगणांत भीमसेन मृच्छित पडला होता तो मद्यप्राशन करणाऱ्या मनुष्याप्रमाणे क्षणांत पुनः सावध झाला; आणि त्याने फिरून गदा धारण करून मद्राधिपतीला युद्धार्थ आव्हान केलें! राजा, तेव्हां तुझ्या सैन्यांतले दुर्योधनप्रभृति सर्व शूर योद्धे नानाविध शस्त्रास्त्रांसह रणवाद्यांचा भयंकर गजर चालू असतां पांडवसेनेवर धावून आले आणि ते मोठमोठ्यांचे ओरडत व हात वर करीत आणि शस्त्रें उगारीत पांडवसेनेवर तुटून पडले! तेव्हां कौरवांचे ते सैन्य आपल्यावर धावून येत आहे असे पाहतांच पांडवांना विलक्षण वीरश्री चढली व ते सिंहासारखी गर्जना करीत दुर्योधनादिक कुरूवीरांवर एकदम चालून गेले! ह्याप्रमाणे, हे भरतश्रेष्ठ, पांडवांचे सैन्य कौरवांवर उलट चालू करून जात असतां तुझ्या

पुत्रांने तितक्यांत अगदी विलंब न करितां प्रामांने चेकितानाचें वक्षस्थळ अतिशय विद्ध केलें; आणि ह्यामुळे तो पांडववीर रुधिरप्रवाहानीं मुन्नात होत्साता रथांत वीरासनी मृच्छित पडला व मेलाल अशा प्रकारे चेकितान मरण पावला तेव्हां पांडवीय महाराथांनी आप- आपल्या पथकांतून कौरवसेनेवर एकसारखा भयंकर शरवर्षाव आरंभिला आणि ते सर्व रण- धुरंधर वीर मोठ्या शौर्याने सर्वत्र तुझ्या सैन्यांतून संचार करीत असतां त्यांजवर अद्वितीय तेज झळाळूं लागले! तेव्हां कृपाचार्य, कृतवर्मा व महारथ शकुनि हे मद्राजाला पुढें करून धर्मराजाशी युद्ध करूं लागले; द्रोणाचार्याचा वध करणाऱा जो महावीर्यशाली पराक्रमी धृष्टद्युम्न त्याशी दुर्योधनांने युद्ध आरंभिलें; आणि, राजा, तुझ्या पुत्राच्या आज्ञेवरून तीन हजार रथी अश्वत्थाम्याला पुढें करून अर्जुनाशी लढूं लागले! ह्या सर्व योद्ध्यांनी विजय मिळविण्याचा पूर्ण संकल्प केला असून समरांगणांत आपले देह देवण्यास ते अगदी सिद्ध होते. त्या वेळी. राजा, महान् सरोवरांत प्रवेश करणाऱ्या हंसंप्रमाणे तुझ्या वीरांनीं पांडव- सैन्यांत प्रवेश केला! मग परस्परांना ठार मार- ण्याच्या इच्छेने मोठे तुंबळ युद्ध प्रवर्तलें! एकमेकांनी एकमेकांवर प्राणघातकी प्रहार चालू केले. तथापि त्यांची उमेद कमी न होतां उलट त्यांची वीरश्री अधिकाधिकच वाढत चालली. राजा, ह्याप्रमाणे घोर संग्राम चालू होऊन त्यांत मोठमोठ्या योद्ध्यांचा वध होऊं लागला; तेव्हां इतका रणसंमर्द मातला की, वायूनें जिकडे तिकडे धूलच धूल उडून कांहीच दिसे- नामें झालें! पण त्या समयी दोन्ही सैन्यांतील वीर एकमेकांची नावे घेऊन लढत असतां त्यांची नावे जी आमच्या कानी पडत, त्यां- वरून मात्र ते मोठ्या वीरश्रीनें एकमेकांशीं

लढत आहेत असें आह्वांला समजे ! असो ; नंतर रणांगणांत जी चौहोंकडे धूळ पसरली होती ती सर्व पुढें रक्ताचा मडा पडल्यानें खाली बसली आणि सर्व अंधकार नष्ट झाल्यामुळे दिशा पुनः उजळल्या ! राजा, इतका अनर्थकारक घोर संग्राम प्रवर्तला असतांही तुझ्या किंवा शत्रूंच्या सेनेपैकी कोणीही वीर युद्धविमुख झाला नाही ! सर्वांनी ब्रह्मलोकप्राप्तीविषयी तत्पर होऊन रणांगणांत विजय श्रीची इच्छा धरिली ! राजा, तेव्हां त्या पराक्रमी योद्ध्यांनी उत्तम युद्ध करून स्वर्गाम जाण्याचा निर्धार केला ! आपण ज्याचें अन्न खाल्लें त्याच्या ऋणांतून मुक्त होण्यासाठीं त्याचें कार्य मिद्धीम नेण्याचा त्यांनी दृढसंकल्प योजिला आणि स्वर्गाम जाण्याविषयी पूर्ण निर्धार ठरवून त्यांनी मोठे घोर युद्ध चालविलें ! तेव्हां दोन्ही सैन्यांतील महारथांनी नानाविध शस्त्रांनं एकमेकांवर टाकिलीं व मोठेमोठ्यानें गर्जना करीत एकमेकांवर प्रचंड मारा आरंभिला ; आणि “ मारा, तोडा, धरा, हाणा, कापा ” असे शब्द उभय सैन्यांतून कानीं पडूं लागले !

नंतर, हे महाराजा, मद्राधिपति शल्यानें महारथ धर्मराज युधिष्ठिराला ठार मारण्याच्या इच्छेनें त्याजवर जलाल बाणांचा भडिमार करून त्यास विद्ध केले ! तेव्हां त्या मर्मज्ञ पृथापुत्रानें सहज हंसत चौदा बाण शल्याच्या मर्मस्थळी नेमके मारिले ; पण महाबल शल्यानें तत्काळ त्या पृथापुत्राला वधण्याचा निश्चय करून मोठ्या क्रोधानें रणांगणांत त्यास अनेक कंकपत्र बाणांनी विंधिलें आणि पुनः एक बांकदार पेन्याचा बाण सर्व सैन्याच्या देखत त्या युधिष्ठिरावर जोरानें सोडिला ! राजा, तें पाहून धर्मराजालाही अतिशय क्रोध आला ; व त्या महारथ महायशस्वी पांडुपुत्रानें तत्काळ

भयंकर कंकपिच्छ व मयूरपिच्छ बाणांचा शल्यावर भडिमार चालवून त्यास विद्ध केले ; आणि चंद्रमेनावर मत्तर, मास्थ्यावर नऊ व द्रुममेनावर चौमष्ट बाण टाकून त्यांस समरांगणांत ठार मारिलें ! राजा, ह्याप्रमाणें महात्म्या धर्मराजानें चक्ररक्षकांचा वध केला तेव्हां शल्यानें पंचवीम चेदि वीरांना रणभूमीवर पाडिलें ; आणि त्यानें मात्यकीवर पंचवीम भीममेनावर पांच व नकुलमहदेवांवर शंभर जलाल बाण सोडून त्यांस विद्ध केले ! अशा प्रकारें, हे राजश्रेष्ठ, शल्य हा घोर पराक्रम गाजवीत रणांगणांत परिभ्रमण करीत असतां युधिष्ठिरानें त्याजवर विषारी मर्षाप्रमाणें प्राण घेणारे उग्र बाण सोडिले आणि एक भल्ल बाण टाकून सैन्याच्या अग्रभागी असणाऱ्या त्या वीरांचें ध्वजाग्र छेदिलें ; तेव्हां तो छिन्न ध्वज पर्वताच्या कड्याप्रमाणें तुटून धाडकन खाली कोसळला ! ह्याप्रमाणें, राजा, आपला ध्वज भडाला व धर्मराज युधिष्ठिर व्यवस्थितपणें उभा आहे असें जेव्हां मद्राधिपतीनें पाहिलें, तेव्हां त्यास अत्यंत क्रोध आला आणि त्यानें पांडवांवर बाणांचा पाऊस पाडण्यास आरंभ केला ! राजा, त्या वेळी वीर्यशाली क्षत्रियावतंस शल्यानें सात्यकि, भीमसेन, नकुल व सहदेव ह्यांजवर प्रत्येकी पांच पांच बाण टाकिले, आणि युधिष्ठिराला शरवृष्टीनें अगदी जजेर करून सोडिले ! राजा, त्या समयी त्यानें धर्मराजाच्या वक्षस्थळावर जणू काय मेघपटलाप्रमाणें बाणांचें जाळेंच पसरलें आहे असें आह्वांस दिसलें ! नंतर महारथ शल्यानें क्रोधायमान होऊन धर्मराजावर नतपर्व बाणांची घोर वृष्टि केली ; आणि सर्व दिशा व उपदिशा बाणाच्छादित करून सोडिल्या ! राजा, अशा प्रकारें बाणांनीं अगदी आंकून जाऊन पीडित झाल्यावर असे-



रीम इंद्रनें तन्त केलेल्या जंभामुराप्रमाणें तो पांडुपुत्र धर्मराज अगदी हतनीय आला !

## अध्याय तेरावा.

—:०:—

### शल्यार्चें युद्ध.

मंत्रय सांगतो: हे मारिषा. ह्याप्रमाणें मद्रराज शल्यानें धर्मराजाला हीननीय करून टाकिलें; तेव्हां मात्यकि. भीमसेन. नकुल व सहदेव हे रणांगणांत आपआपल्या रथांतून शल्यावर धावून गेले व त्यांनी त्यास चोहोंकडून वेढा देऊन अगदी पीडित केले ! अशा प्रकारें त्या एकट्या वीराला बहुत महारथ पांडववीरांनी कांडून धरून तन्त केले. तेव्हां अंतर्गिशांत सिद्धांना मोठा आनंद आला व त्यांनी त्यांची फार फार वाहवा केली ! त्या वेळीं तो शौर संग्राम अवलोकन करण्यासाठी ऋषिर्वर्ग तेथें जमला होता त्यामही ते मयंकर युद्ध पाहून मोठें आश्चर्य वाटले ! राजा, शल्याचा पराक्रम म्हणजे शत्रूच्या हृदयांतलें केवळ शल्यच होतें ! त्या समर्थी रणभूमीवर भीमसेनानें प्रथम त्या शल्यभूत शल्यावर एक बाण टाकिला व नंतर आणखी सात बाण टाकिले; त्याप्रमाणेंच त्या कुरुवीरांपासून धर्मपुत्र युधिष्ठिराचें संरक्षण करवें म्हणून त्याजवर मात्यकीनें शंभर बाण टाकिले आणि त्यास बाणाच्छादित करून तो सिंहाद करून लागला ! तसेच त्या वेळीं नकुल व सहदेव ह्यांनी प्रत्येकी पांच पांच बाण त्याजवर सोडिले आणि मग सहदेवानें फिरून सात बाण टाकून त्यास विद्ध केले ! ह्याप्रमाणें रणांगणांत त्या शूर सेनापतीवर पांडवीय महारथांनी चोहोंकडून घोर वर्षाव चालविला असतां शल्यानें मग आपलें धनुष्य ताणिलें ! राजा, शल्याच्या त्या धनुष्याचें सामर्थ्य इतकें होतें की, त्यापासून

मुटलेले बाण मोठ्या वेगानें शत्रूला प्रहार करित आणि कितीही दुर्भेद्य पदार्थ असला तरी तो त्यांच्या आटेक्यांत आला म्हणजे तेव्हांच मुभेद्य होई ! हे मारिषा, अशा त्या धनुष्याच्या योगें शल्यानें मात्यकीवर पंचवीस. भीमसेनावर सत्तर व नकुलावर सात बाण सोडून त्यांस विधिलें आणि सहदेवाचें धनुष्य व बाण तोडून टाकून त्यानें त्याजवर एकवीस बाण सोडून त्यास विद्ध केले ! राजा, त्या वेळीं सहदेवानें दुसरें धनुष्य सज्ज केलें; आणि रणांगणांत त्या आपल्या पहापरक्रामी मातुलावर विषारी मर्षाप्रमाणें प्राणघातकी व प्रज्वलित अशीप्रमाणें देदीप्यमान असे पांच बाण सोडिले व त्याच्या मारश्यावर एक नतपर्व बाण टाकिला ! राजा, मग पुनः सहदेवानें मोठ्या त्वेषानें आणखी तीन बाण शल्यावर सोडिले; आणि नंतर घनघोर संग्राम सुरू होऊन त्यांत भीमसेनानें सत्तर. मात्यकीनें नऊ आणि धर्मराजानें साठ बाण सोडून शल्याचीं गात्रें छिन्न-भिन्न केली ! राजा, त्या समर्थी शल्याची अवस्था मोठी कठीण आली ! त्या पांडवीय महारथांनी त्याचा सर्व देह नवशिखांत बाणांनी विद्ध करून सोडिला; व कावेच्या पर्वतांतून जसे गेरूचे लोट वाहूं लागतात तसे त्यांतून रुधिराचे लोट वाहूं लागले ! पण इतकी जरी त्याची विपन्न दशा आली, तरी तो डगमगला नाही; त्यानें तत्काळ त्या सर्व महारथांवर प्रत्येकी पांच पांच बाण टाकिले आणि मग रणांगणांत एक भल्ल बाण सोडून धर्मराजाचें धनुष्य छेदिलें व तें सर्वांना मोठें नवल वाटले ! नंतर राजा, धर्मराजानें दुसरें धनुष्य उचलून घोर शरांच्या भडिमारांनें अश्व. मारथि. ध्वज व रथ ह्यांमहवर्तमान त्या शल्याला बाणाच्छादित करून टाकिलें ! राजा, इतक्याउपरही शल्यानें उलट धर्मराजावर दहा जलाल बाण

मोडून त्यास विधिलें आणि त्यास अगदी आर्त तेव्हां शल्याला मनस्वी क्रोध चढला आणि करून टाकिलें. पण धर्मराज शरादित झालेला महान् गजान्वर जसे अंकुशप्रहार करावे, तसे त्याने पाहून मात्स्यकि अतिशय चवनाळला व त्याने रणांगणांत त्या सर्व महाराथांवर दहा दहा त्या शूर मद्राधिपतींवर पांच बाण मोडून त्याचा जलाल बाणांचे प्रहार केले ! ह्याप्रमाणें मद्र-  
 वेष केला ! तेव्हां उलट शल्याने तत्काळ राजानें त्या महाराथांचें निवारण केलें तेव्हां ते मात्स्यकीचें तें प्रचंड धनुष्य क्षुरप्र बाणानें शत्रुसंहारक महान् वीर मद्रराजाच्या समोर तोडिलें आणि भीमसेनादिक प्रबळ पांडववीरांना उभे राहूं शकले नाहीत आणि एकदम मागे नीन तीन बाण मारिले ! तेव्हां, हे महाराजा. हटले ! अशा प्रकारें शल्याचा घोर प्रताप अव-  
 सत्यपराक्रमी मात्स्यकीला अतिशय क्रोध चढला लोकन करून दुर्गोधनाला वाटलें की, आतां आणि त्यानें मुवणांच्या दंडांचें व अत्यंत पांडव, पांचाल व सैन्य हे खचीत मेलेच !  
 मूल्यवान् असें एक तोमर शल्यावर फेंकिलें ! नंतर, राजा, महाबाहु प्रतापवान् भीमसेन हा त्याचप्रमाणें भीमसेनानें पन्नगाप्रमाणें उग्र असा जिवाची आशा मोडून मद्राधिपाशीं लढूं  
 एक देदीप्यमान नागच बाण त्यावर टाकिला. लागला ! तेव्हां नकुल, सहदेव व महाराथ नकुलानें शक्ति मोडली. सहदेवानें तेजस्वी गदा मात्स्यकि ह्यांनीही शल्याला वेढा घातला व  
 फेंकिली व धर्मराजानें त्याला डार मारण्याच्या सर्वांनी चोहोंकडून त्याजवर घोर शरांचा  
 उच्छेनें त्याजवर रणांगणांत एक शतघ्नी मोडिली ! भडिमार आरंभिला ! ह्याप्रमाणें शत्रूकडील चार  
 ह्याप्रमाणें त्या पांच पांडवयोद्ध्यांना मोडिलेली महाराथांनीं अगदी कोंडून टाकिलें असतांही  
 तीं शस्त्रे आपणावर येत आहेत असें पाहतांच त्या प्रतापशाली कुरुमेनापतीला अनुमात्र  
 समरांगणांत मद्राधिपतीनें उलट शस्त्र- भीति वाटली नाही आणि त्यानें एकद्वानें  
 संघांच्या योगें त्या सर्वांचें निवारण केलें ! त्या सर्वांशीं घोर युद्ध चालविलें ! राजा, त्या  
 मात्स्यकीनें मोडिलेलें तोमर शल्यानें भल्ल- समर्प्य धर्मराजानें त्या दारुण संग्रामांत एक  
 बाणांनी छेदिलें, भीमसेनाचा मुवर्णमंडित बाण क्षुरप्र बाण मोडून शल्याच्या चक्ररक्षकाला हां  
 त्या रणकुशल प्रतापशाली कुरुवीरानें मोठ्या हां म्हणतां वधिलें; पण तो शूर चक्ररक्षक  
 चलाखीनें बाणांचा घोर वर्षाव करून द्विधा रणांत पडतांच महाबल मद्रराजांनेही पांडवीय  
 भंगिला. नकुलानें टाकिलेली भयंकर हेमदंड मैतिकांवर इतकी घोर शरवृष्टि करून त्यांस  
 शक्ति आणि सहदेवानें फेंकिलेली गदा ह्यांचाही आंकून काढिलें की, 'आतां कसे करावे' अशी  
 त्यानें बाणवृष्टीनें समूळ उच्छेद केला; व धर्मराजाला एकाएकी चिंता उत्पन्न झाली !  
 दोन बाण सोडून धर्मराजाची शतघ्नी तोडिली आणि तो असा विचार करूं लागला की,  
 आणि सर्व पांडवांच्या समक्ष तो मोठमोठ्यानें 'कृष्णाचें तें महत् वचन समरांगणांत कसे  
 मिहगर्जना करूं लागला ! पण अशा प्रकारें तडीस जाणार ! मला तर असे वाटतें की,  
 शल्यानें पांडवांचा प्रतिकार करून रणांगणांत कुद्ध झालेल्या मद्रराजापुढें माझे सैन्य जिवंत  
 आपलें वर्चस्व स्थापिलें तें सात्यकीला मुळीच स्वपलें रहाणार नाही ! "

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर रथ, गज व अश्व ह्यांसह सर्व पांडव मद्रराज शल्याच्या समीप येऊन भिडले आणि त्यांनीं चोहोंकडून त्याज-

वर नानाशस्त्रौघ व घोर शरवृष्टि आरंभिली ! परंतु बारा जसा मोठमोठ्या मेघसमूहांचा संहार उडवितो, तसा त्या शल्यानें समरांगणात पांडवांनीं केलेल्या त्या शस्त्रास्त्रांच्या ओघांचा संहार उडविला ! नंतर शल्यानें पांडवांवर इतके सुवर्णपुंगव बाण मारिले की, जणू काय अंतरिक्षांत टोळधाडच उसळली आहे असें आत्सांस भामलें ! मद्राधिपतीनें त्या घोर संग्रामांत सोडिलेले बाण पांडवांवर येत अमतां जणू काय शलभांचे समुदायच त्याजवर कोसळत आहेत असें दिसत होतें ! हे जनाधिपा, मद्रेश्वराच्या धनुष्यापासून सुटलेल्या सुवर्णभूषित शरांची अंतरिक्षांत इतकी गर्दी झाली की, त्यांत मुळीच रिती जागा राहिली नाही ! तेव्हां त्या महान युद्धांत सर्वत्र अतिशय बाणांधकार पडल्यामुळे पांडवांपैकी किंवा आमच्यापैकी कांहीएक दिसेनासें झाले ! आणि त्या प्रबळ मद्राधिपाने हस्तकौशल्यानें निकडे तिकडे शरवृष्टि करून पांडवांचा सेनासागर प्रक्षुब्ध केला; तेव्हां देव, दानव व गंधर्व हे सर्व अतिशय विस्मयांत पडले ! ह्याप्रमाणें, राजा, आपआपल्यापरी समरांगणांत पराक्राष्टा करून युद्ध करणाऱ्या त्या सर्व पांडववीरांना शल्यानें बाणांनीं झांकून काढिलें व धर्मराजावरही घोर शरवर्षाव करून तो पुनःपुनः मोठमोठ्यानें मिहांसारखा गर्जून लागला ! ह्याप्रमाणें शल्यानें सर्व पांडवांना बाणाच्छादित करून टाकिलें, तेव्हां पांडवांकडील महारथ शल्यावर चाल करून जाण्यास धजले नाहीत; परंतु धर्मराज व भीमसेनप्रमुख इतर प्रबल रथी हे मात्र रणांगणास शोभविणाऱ्या त्या शूर शल्याशीं युद्ध करित तसेच नेटानें समरांगणांत लढत राहिले !

## अध्याय चौदावा.

—१०:—

### संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:— राजा धृतराष्ट्रा, इकडे अर्जुनाचे व अश्वत्थाम्याचे युद्ध चालले होतें, त्यांत अश्वत्थाम्यानें बहुत पोलादी बाणांचा भडिमार करून अर्जुनास विद्ध केले; आणि त्याचप्रमाणें त्या द्रोणपुत्राचे अनुयायी जे त्रिगर्ताचे शूर महारथ त्यांनीही त्याजवर घोर शरांची वृष्टि आरंभिली, तेव्हां अर्जुनानें समरांगणांत तीनच बाण अश्वत्थाम्यावर सोडिले; आणि इतर महाधनुर्धरांवर प्रत्येकी दोन दोन बाण सोडिले व त्या सर्वांस शरविद्ध करून मग सर्व शत्रुसैन्यांवर बाणांचा पाऊस पाडिला; राजा, त्या समयी ते सगळे कौरववीर नवशिव्हांत बाणकंडकांनी व्याप्त झाले; व आणखी एकमारखा अर्जुनाच्या हस्ते त्यांजवर बाणांचा घोर भडिमार चाललाच होता, तरी ते कौरववीर अर्जुनाला सोडून रणांगणांतून पराङ्मुख झाले नाहीत ! तेव्हां द्रोणपुत्रप्रभृति सर्व कौरव महारथ प्रचंड रथसैन्यासमवेत अर्जुनावर तुटून पडले आणि त्यांनी अर्जुनाला वेढा घालून त्याच्याशीं भयंकर युद्ध चालविलें ! राजा, त्या वेळीं कौरवांनीं सोडिलेल्या त्या सुवर्णभूषित शरांनीं अर्जुनाच्या रथावरील वीरामन अगदी व्याप्त झाले; आणि त्या सर्वधनुर्धराग्रणी कृष्णार्जुनांचे देहही अत्यंत बाणविद्ध झाले ! राजा, ह्याप्रमाणें कृष्णार्जुनांचीं शरीरें विदीर्ण झालेलीं पाहून कौरवांकडील त्या युद्धधुरंधर योद्ध्यांना मोठा आनंद झाला; आणि मग त्यांनी आणखी घोर शरांचा भडिमार करून अर्जुनाच्या रथाची धुरी, चाकें, ईषा, बंधनरज्यु, जूं व तुंबे हीं सर्व बाणमय करून टाकिली ! राजा, त्या समयी तुड्या वीरांनीं अर्जुनाची जी दुर्दशा उडविली, तशी दुर्दशा

कोणाची उडालेली मी पूर्वी पाहिली नव्हती व ऐकिलीही नव्हती ! तेव्हा अर्जुनाचा तो रथ चोहोंकडून चित्तविचित्र पुंगवांच्या जलाल बाणांनी ओतप्रोत भरून गेला; - जणू काय अंतरिक्षांतलें विमान भूतलावर उतरलें अमुन तें शतावधि उल्कांनी अत्यंत पेटलें आहे असें भासूं लागलें ! नंतर, राजा, मेघ जसा पर्वतावर जलवृष्टि करितो, तशी अर्जुनानें त्या कौरव-मेनेवर नतपर्व बाणांची घोर वृष्टि आरंभिली; तेव्हां जिकडे तिकडे पार्थनामांकित बाणांचा पाऊस पडूं लागून त्यानें समरांगणांत कौरव-जमूचा भयंकर संहार घडूं लागला; आणि प्रेक्षकांना मर्व महीतल तशा प्रकारें पार्थमुद्रांकित दिसलें ! राजा, त्या समर्थी पाश्वरूप अग्नि तुझें सैन्य जालीतच आहे असें वाटलें ! तो मोठ्या क्रोधाने जे बाण मोडीत होता, त्या जणू काय अग्नीच्या ज्वाळाच होत्या; त्याच्या धनुष्याचा महान् ध्वनि हा प्रचंड वाग सुटला होता; व कौरवांचें सैन्य ही त्या अग्नीची इंधने होती ! असा; अशा प्रकारें अर्जुनानें तुझें सैन्य क्षणांत दग्ध केलें ! राजा, त्या वेळीं रणांगणांत क्रुद्ध झालेल्या अर्जुनाच्या रथाच्या मार्गामध्यें सर्वत्र रथांची चाक्रे, ओगडे, बाणभाने, ध्वजपताका, रथ, ईषा, तुंवे, त्रिवेणु, आंम, बंधने, चावूक, कुंडले व मंदिल ह्यांसहवर्तमान मस्तकें, भुज, खांदी, छेले, पंखे, मुकुट इत्यादिकांच्या राशीच्या राशीच पडल्या होत्या ! राजा, त्या समर्थी पृथ्वीचें रूप स्पष्ट दिसत नसून तिजवर सर्वत्र मांस व शोणित ह्यांचा कट्टम मातल्यामुलें भिड्यांना फार भय वाटूं लागलें आणि शूरांची वीरश्री अधिकच वाढली ! त्या वेळीं जणू काय तें शंकराचें क्रीडास्थानच होय असा भास झाला ! राजा, शत्रुसंहारक अर्जुनानें त्या समर्थी समरांगणांत दोन हजार कवचधारी रथांचा विज्रंम उड-

विला; आणि भगवान् अग्नि स्थावरजंगम विश्वाला जाळून टाकिल्यावर विधूम होत्साता जसा अतिशय दीप्तिमान् दिसतो, तसा तो पांडुपुत्र आपल्या प्रदीप्त कांतीनें झळाळूं लागला ! राजा, अशा प्रकारें अर्जुनाचा तो दिव्य पराक्रम अवलोकन करून, ज्याच्यावर पुष्कळ पताका फडकत होत्या अशा रथांतून अश्वत्थामा अर्जुनावर चालून गेला व त्यानें त्यास अडवून धरिलें ! तेव्हां त्या महाधनुर्धराचें घोर युद्ध जुंपलें ! ते दोघेही पुरुषव्याघ्र एकमेकांला ठार मारण्याच्या इच्छेनें एकमेकांवर तुटून पडले ! त्या समर्थी त्यांनी परस्परांवर इतकी भयंकर शरवृष्टि केली की, जणू काय ग्रीष्म ऋतूच्या अखेरीस ते दोन महान् मेघ जलवर्षावच करीत आहेत असा भास झाला ! आणि ज्याप्रमाणें मदोन्मत्त वृषभ आपल्या शिंगांनी एकमेकांना प्रहार करितात, त्याप्रमाणें ते दोन्ही योद्धे परस्परांच्या स्पर्धनें परस्परांवर नतपर्व बाणांनी प्रहार करूं लागले ! हे महाराजा, त्या उभय वीरांचें युद्ध बहुत काळपर्यंत अगदी समसमान भामलें; आणि दोघांनाही रणांगणांत समसमान घोर शस्त्राब्जें एकमेकांवर सोडिली ! हे भारता, अशा प्रकारें त्यांचें तुंबळ युद्ध चालू असतां अश्वत्थाम्यानें सुवर्णाच्या पुंगवांचे व अतिशय धारदेऊन जलाल केलेले बारा बाण अर्जुनावर आणि दहा बाण वासुदेवावर सोडून त्यांम विद्ध केलें ! तें पाहून बीभत्सुला विलक्षण वीरश्री चढली; आणि त्यानें क्षणभर अश्वत्थामा हा गुरुपुत्र आहे असें आदरपूर्वक मनांत आणिलें व मग गांडीव धनुष्याच्या योगें त्याजवर बाणांचा भडिमार चालवून त्याला अश्वहीन, सूतहीन व रथहीन करून टाकिलें आणि त्याजवर पुनःपुनः सौम्य बाणांची वृष्टि आरंभिली ! राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें अश्वत्थाम्याचे घोडे मारून त्याचा रथ भग्न केला,

तेव्हां अश्वत्थाम्यानें त्या आपल्या भद्र रथावर उभें राहून एक परिघतुल्य लोहमय मुमळ त्या पांडुपुत्रावर फेंकिले; पण तें हेमपट्टविभूषित मुमळ मोठ्या जोरांनें आपणावर येत आहे असें पाहतांच त्या शत्रुसंहारक अर्जुनांनें त्याजवर बाणांचा भडिमार करून त्याचे मात तुकडे उडविले ! अशा प्रकारें त्या मुमळाची वाट लागलेली पाहून युद्धनिपुण अश्वत्थाम्याला अनावर क्रोध चढला आणि महान् पर्वताच्या शिखराप्रमाणें प्रचंड असा एक घोर परिघ घेऊन त्यानें तो अर्जुनावर झुगारिला ! राजा, तो परिघ खळलेल्या अंतकाप्रमाणें आपल्यावर उसळत येत आहे असें पाहतांच अर्जुनांनें त्वरा करून त्याजवर पांच अत्यंत उग्र बाण टाकिले आणि त्याचा विध्वंस उडविला ! राजा, अश्वत्थाम्याचा तो दारुण परिघ अर्जुनाच्या शरांनी छिन्नभिन्न होऊन भूतलावर पडला. तेव्हां कौरवांकडील भूपाळांची मनें विदारण झाली व आतां अर्जुनापुढें टिकाव लागणें कठीण असें त्यांना वाटलें ! राजा, नंतर वीर्यवान् प्रबळ अर्जुनांनें आणखी तीन भल्ल बाण अश्वत्थाम्यावर सोडून त्याम अगदी विद्ध करून टाकिले; पण तो बिलकूल न डगमगतां पूर्ववत् आपल्या स्वतःच्या हिंमतीवर मोठ्या शौर्यानें समरांगणांत अर्जुनाशी लढत राहिला ! मग अश्वत्थाम्यानें महारथ मुरथावर सर्व क्षत्रियांच्या देवत एकसारखे बाणांचे लोट चालवून त्यास झांकून काढिले; आणि तें पाहून तो पांचालमहारथ मुरथ समरांगणांत मेघगर्जनेप्रमाणें घणघणाट करणाऱ्या रथांतून अश्वत्थाम्यावर चालून गेला व त्यानें आपल्या अतिशय भार सहन करणाऱ्या अत्यंत दृढ धनुष्याच्या योगें अशीप्रमाणें प्रदीप्त व विषारी सर्पाप्रमाणें भयंकर अशा बाणांचा वर्षाव करून त्यास झांकून काढिले ! राजा, ह्याप्रमाणें तो

महारथ मुरथ क्रोधायमान होऊन शरवृष्टि करीत अश्वत्थाम्यावर चालून गेला, तेव्हां दंडांनें बडविलेल्या नागाप्रमाणें अश्वत्थामा चवताळला आणि त्यानें रणांगणांत कपाळाला आठ्या घालून व दांतओठ चावून मुरथाकडे टांकारून पाहिले; आणि धनुष्याच्या प्रत्यंचेवरून हात फिरवून यमदंडाप्रमाणें देदीप्यमान असा एक तीक्ष्ण नाराच बाण त्या मुरथावर सोडिला ! राजा, इंद्राच्या वज्राप्रमाणें घोर असा अश्वत्थाम्याचा तो बाण त्या पांचालवीरांचें हृदय विदारून मोठ्या वेगानें धरणीतलांत घुमला; आणि मग वज्रानें विदीर्ण होणाऱ्या पर्वताच्या शिखराप्रमाणें तो मुरथ धाडकनू भूतलावर पतन पावला ! राजा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थाम्यानें मुरथाचा वध केला आणि मग तो महाधुरंधर महारथ तत्काळ त्याच रथावर आरूढ होऊन संशप्तकांनीं परिवेष्टित होत्सामा अर्जुनाशी पुनः लढूं लागला ! त्या वेळी मध्याह्नाच्या मुमारास अर्जुनाचें शत्रुंशी मोठें दारुण युद्ध झालें आणि त्यांत पुष्कळ वीर पडून यमराष्ट्राची वृद्धि झाली ! तेव्हां एकटा अर्जुन कौंगवांच्या प्रबळ योद्ध्यांशी लढत असतां त्या सर्व महान् महान् वीरांचा पराक्रम पाहून व त्याप्रमाणेच त्या सर्वांचें त्या एकट्या अर्जुनानें जें निवारण केलें तें अवलोकन करून फारच मोठा चमत्कार वाटला ! राजा, पूर्वी इंद्रानें दैत्यांच्या प्रचंड सेनेशी जमा घनघोर संग्राम केला, तसा अगदी घनघोर संग्राम एकट्या अर्जुनानें त्या प्रचंड कौरवसेनेशी केला !

## अध्याय पंधरावा.

—०:—

### संकुलयुद्ध.

मंजय मांगतो:—हे महाराजा. इकडे

दुर्योधन व पार्षत धृष्टद्युम्न ह्यांचें अतिशय दारुण युद्ध झालें, त्यांत त्यांनीं एकमेकांवर शर-शक्तीचा प्रचंड मारा केला ! त्या वेळीं, राजा, ज्याप्रमाणें वर्षाकालारंभीं चोहेंकडे पर्जन्याच्या धारा कोसळतात, त्याप्रमाणें त्या उभयतांच्या धनुष्यांपासून बाणांच्या सहस्रावधि धारा सर्वत्र कोसळू लागल्या ! राजा, त्या समयीं दुर्योधनानें द्रोणहन्त्या धृष्टद्युम्नाचा पाच महावेगवान् बाणांनीं वेध केला आणि तें पाहून धृष्टद्युम्नानें पुनः उग्र शरांची वृष्टि चालू करिताच पुनः त्याला सात बाणांनीं विंधिलें ! राजा, मग बलशाली व दृढविक्रमी धृष्टद्युम्नानें रणभूमीवर सत्तर जलाल बाण टाकून दुर्योधनाला जर्जर केलें. ह्याप्रमाणें धृष्टद्युम्नाच्या हस्ते दुर्योधन अगदीं पीडित झाला तेव्हां त्याचे भ्राते महान् सैन्यासहवर्तमान पार्षतावर धावून आले व त्यांनीं चोहोंकडून त्यास गाराडा धातला ! हे भरतश्रेष्ठा, दुर्योधनाच्या त्या अतिरथ भ्रात्यांनीं जिक-डून तिकडून त्या शूर पांचालाला पार कोंडून टाकिलें तरी त्याचें शौर्य कमी झालें नाहीं; व तो आपलें अस्त्रलाघव व्यक्त करित रणांगणांत मोठ्या त्वेपानें संचरूं लागला ! त्या वेळीं, राजा, शिखंडीनें प्रभद्रकांसहवर्तमान कृपाचार्य व कृतवर्मा ह्यांजवर हल्ला केला आणि त्या दोघां धनुर्धरांशीं तुंबळ युद्ध आरंभिलें ! राजा, त्या समयीं तेंचें जो भयंकर रणसमर्द मातला, त्याचें काय वर्णन करावें ! जण काय रणभूमीवर देह ठेवण्यास सिद्ध झालेले ते वीर आपले प्राण पणास लावून द्यूतच खेळत आहेत, असें तेव्हां भासूं लागलें ! त्या वेळीं शल्यानें सर्व दिशांकडे सायकांचा भयंकर मारा आरंभिला; आणि सात्यकि व वृकोदर यांमुद्धां सर्व पांडवांना अत्यंत पीडिलें ! आणि त्याप्रमाणेंच त्यानें समरांत यमधर्मासारखा घोर पराक्रम करणाऱ्या नकुलसहदेवांवर मोठ्या

शौर्यानें भयंकर अस्त्रांचा वर्षाव करून त्यांशीं दारुण युद्ध आरंभिलें ! राजा, त्या वेळीं त्या घोर संग्रामांत शल्यानें पांडवांवर असा भयंकर बाणवर्षाव केला कीं, त्यांच्याकडील महारथांना कोणीही त्राता राहिला नाहीं ! अशा प्रकारें शल्यानें सर्व पांडवचमूचीं दुर्दशा उडविल्या-वर मग धर्मराज युधिष्ठिराला फारच आर्ति करून टाकिलें ! तेव्हां शूर नकुल मोठ्या त्वेपानें आपल्या मातुलावर धावून गेला आणि रणांगणांत त्याला बाणछन्न करून त्या शत्रुसंहारक नकुलानें त्याच्या वक्षस्थळीं हंसत हंसत दहा बाण मारून त्यास विद्ध केलें ! राजा, ते सर्व बाण तीक्ष्ण पोलादाचे अमून लोहारांनीं धार देऊन सहाणेवर लाविलेले होते. ते सर्व तेलपाणीं करून झगझगीत केलेले सुवर्णपुंख बाण नकुलानें आपल्या धनुर्ज्येचें आकर्षण करून शल्यावर सोडिले, तेव्हां शल्याला अतिशय पीडा झाली; आणि याप्रमाणें त्या बलशाली भाच्यानें प्रसन्न करून सोडिलेला तो वीर शल्य मग फारच क्षोभला व त्यानें बांकदार पेय्याचे बाणांचा भडिमार करून नकुलास जर्जर केलें ! राजा, मग धर्मराज युधिष्ठिर, भीमसेन, सात्यकि व माद्रीपुत्र सहदेव हे सर्व रथांच्या घणा-घणाटानें दशदिशा व्याप्त करित व सर्व भूमंडलाला हादरून टाकीत शल्यावर धावले, परंतु ते आपल्यावर धावून येत आहेत असें पाहतांच तत्काळ शत्रुजित् सैन्यापति शल्यानें त्यांजवर उलट चाल केली; आणि त्यानें रणांगणांत युधिष्ठिरावर तीन, भीमसेनावर पांच, सात्यकी-वर शंभर व सहदेवावर तीन बाण टाकून महात्म्या नकुलाचें सशर धनुष्य एका क्षुरप्र बाणानें छेदिलें ! राजा, ह्याप्रमाणें शल्याच्या शरांनीं नकुलाचें धनुष्य विदीर्ण झालें तेव्हां त्यानें दुसरें धनुष्य उचलिलें व तत्काळ बाणांचा भडिमार चालवून मद्रधराचा सर्व रथ

हां हां म्हणतां बाणांनीं भरून काढिला ! राजा, त्या समयीं धर्मराजानें व सहदेवानें प्रत्येकीं दहा दहा बाण सोडून शल्याचें वक्षस्थळ विंधिलें; भीमसेन व सात्यकि हे मद्राधिपतीवर मोठ्या आवेशानें धावून गेले; आणि त्यांनीं अनुक्रमें साठ व दहा कंकपत बाण त्याजवर टाकिले ! ते पाहून मद्रराजाला फार क्रोध चढला व त्यानें सात्यकीला प्रथम नऊ बाण मारिले व नंतर बांकदार पेऱ्यांचे सत्तर बाण त्याजवर सोडून बाणासहित त्याचें धनुष्य मूठीच्या ठिकाणीं तोडिलें; आणि त्याच्या चारही घोड्यांना यमसदनीं पाठवून दिलें ! ह्याप्रमाणें सात्यकीला विरथ केल्यानंतर महारथ शल्यानें त्याजवर चोहोंकडून शंभर बाण मारिले आणि शुब्ध झालेले माद्रीपुत्र, भीमसेन व युधिष्ठिर ह्यांजवर प्रत्येकीं दहा दहा बाण सोडून त्यांस विद्ध केले ! राजा, त्या वेळीं शल्यानें असें कांहीं अपूर्व शौर्य दाखविलें कीं, रणांगणांत सर्व पांडववीर एकत्र होऊनही शल्यावर चाल करूं शकले नाहींत ! अशा प्रकारें पांडवयोद्धे मद्र-राजाच्या पूर्ण कचाटीत सांपडले असतां सत्य-पराक्रमी सात्यकि दुसऱ्या रथांत आरूढ झाला आणि मोठ्या वेगानें शल्यावर तुटून पडला ! पण सात्यकीचा तो रथ आपणावर मोठ्या आवेशानें येतो आहे असें अवलोकन करून रणांगणास शोभविणाऱ्या त्या कुरुसेनापतीनें आपला रथ मोठ्या त्वेषानें त्याजवर घातला आणि मग मद्गेन्मत्त कुंजरांप्रमाणें त्या उभय वीरांचें तुंबळ युद्ध चालू झालें ! राजा, त्या दोघां योद्ध्यांचा त्या समयीं जो घनघोर संग्राम घातला त्याचें काय वर्णन करावे ! ते दोघेही शूर वीर एकमेकांशीं झुंजत असतां जणू काय शंवर व इंद्र हेच झुंजत आहेत असें भासूं लागलें ! आपल्यापुढें मद्रराज शल्य रणांत कुद्धाला तोंड देऊन लढत आहे असें

पाहून सात्यकीनें त्याला दहा बाणांनीं विंधिलें आणि 'थांब, थांब' अशी मोठ्यानें आरोळी दिली ! ह्याप्रमाणें महात्म्या सात्यकीनें अगदीं विद्ध करून सोडिलें असतां मद्राधिपति शल्यानें उलट चित्रपुंख जलाल बाणांचा भडिमार करून सात्यकीस विंधिलें ! अशा रीतीनें त्या कुरु-पांडववीरांचें भयंकर युद्ध जुंपलें असतां भीम-सेनादिक महाधनुर्धर पांडव हे मातुल शल्य ह्याच्या वधार्थ तत्काळ आपआपले रथ घेऊन त्याजवर चालून गेले ! राजा, मग गर्जना कर-णाऱ्या सिंहांप्रमाणें रणभूमीवर त्या शूर योद्ध्यांचा भयंकर रणसंमर्द मातला व त्यांत शोणिताची केवळ नदीच वाहूं लागली ! त्या वेळीं रणांगणांत ते योद्धे मोठमोठ्यानें आरोळ्या देऊन परस्परांशीं लढूं लागले, तेव्हां आभिषप्राप्त्यर्थ मोठमोठ्यानें गर्जत सिंहच एक-मेकांशीं लढत आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, त्या वेळीं त्यांनीं समरांगणांत सहस्रावधि बाण सोडिले, त्यांच्या योगें सर्व वसुधातल बाणांनीं आकीर्ण होऊन सर्व अंतरिक्ष एकाएकीं बाणमय झाले ! राजा, तेव्हां त्या महात्म्या वीरांनीं जो बाणांचा भडिमार केला त्याच्या योगें जणू काय अंतरिक्ष अभ्रच्छन्न होऊन सर्वत्र अंध-कार पडला ! त्या समयीं निकडे तिकडे सर्वत्र सुवर्णपुंख देदीप्यमान बाण प्रसृत झाले, तेव्हां जणू काय कात टाकलेले पन्नगच इतस्ततः विकीर्ण होत्साते झळाळत आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, त्या वेळीं शत्रुसंहारक शल्यानें मोठा अद्भुत पराक्रम गाजविला. तो असा कीं, तो एकटा वीर समरांगणांत अनेक योद्ध्यांशीं लढूं लागला; आणि त्या मद्रराजाच्या भुज-वीर्यानें जे कंकपिच्छ व मयूरपिच्छ बाण बाहेर पडूं लागले, त्यांनीं सर्व मेदिनी आच्छादित झाली ! राजा, पूर्वीं अमुरांचा महान् क्षय झाला तेव्हां

ईद्राचा रथ जसा महाकांतिमान् दिसत होता, तसा त्या वेळीं त्या महान् संग्रामांत शल्याचा रथ परिभ्रमण करीत असतां महाकांतिमान् दिसू लागला !

## अध्याय सोळावा.

—:—

### शल्य व युधिष्ठिर ह्यांचें युद्ध.

संजय सांगतो:—राजा, नंतर तुझी सैन्ये समरांगणांत मद्राज शल्याला पुढें करून मोठ्या वेगानें पांडवांवर धावली. जरी तीं अगदीं जर्जर झालीं होतीं, तरी त्यांनीं मोठ्या त्वेषानें पांडवांवर चाल केली आणि त्यांची संख्या अधिक असल्यामुळें त्यांनीं क्षणांत पांडवसेनेंत प्रवेश करून तिची दाणादाण उडविली ! तेव्हां कौरवांनीं पांडवांचा घोर संहार आरंभिला; आणि भीमोनें जरी त्यांना आवर घालण्याचा प्रयत्न केला, तरी अखेरीस कृष्णार्जुनांच्या देखत समरभूमीवरून त्यांनीं पळ काढिला ! तें पाहून धनंजय फार क्षुब्ध झाला आणि त्यानें कृपाचार्य व कृतवर्मा आणि त्यांचे अनुयायी ह्यांजवर शरांचा भडिमार चालवून त्या सर्वांस बाणांनीं झांकून काढिलें ! राजा, इकडे शकुनि व त्याची सेना ह्यांस सहदेवानें बाणाच्छादित केलें, आणि नकुलानें पार्श्वभागीं उभें राहून मद्राजाला नीट न्याहाळिलें ! द्रौपदीच्या पुत्रांनीं महान् महान् भूपाळांचा निरोध केला; पांचाल्य शिखंडीनें अश्व-  
त्याभ्यास खुंटविलें; भीमसेनानें गदाप्रहरांनीं सुद्ध दुर्योधनाचें निवारण केलें; आणि कुंतीपुत्र युधिष्ठिरानें शल्य व त्याचें सैन्य ह्यांस अडवून धरिलें ! राजा, नंतर रणांगणांतून पराङ्मुख न होणाऱ्या कौरवपांडवयोद्ध्यांचा जागोजाग निकराचा संग्राम प्रवर्तला; आणि त्या स्पर्धेला मला समरांगणांत शल्याचा आश्चर्य-

कारक पराक्रम दृग्गोचर झाला तो हा कीं, त्यानें एकट्यानें सर्व पांडवीय सैन्याशीं भयंकर युद्ध केलें !

त्या वेळीं युधिष्ठिराच्या समीप शल्याला जेव्हां मी पाहिलें, तेव्हां चंद्राच्या समीप शनैश्वरच आहे असा मला भास झाला ! नंतर शल्यानें सर्पतुल्य घोर बाणांनीं प्रथम युधिष्ठिराला पीडिलें आणि मग तो बाणांचा भयंकर भडिमार करीत पुनः भीमसेनावर धावून गेला ! राजा, त्या समयीं शल्याचें अस्त्रविधानैपुण्य व बाणक्षेपणकौशल्य अवलोकन करून केवळ तुझ्याच सैन्यांनीं त्याचा गौरव केला असें नाही, तर पांडवांच्या सैन्यांनीं सुद्धां त्याची वाहवा केली ! तेव्हां शल्यानें पांडवांना इतकें घायाळ केलें की, अखेरीस ते आक्रोश करणाऱ्या युधिष्ठिराला रणांगणांत सोडून सुद्ध-विमुख होत्साते पळून गेले ! ह्याप्रमाणें पांडव सैन्याची विपन्न अवस्था करून टाकून मग शल्यानें त्याचा घोर संहार आरंभिला; आणि तें पाहून युधिष्ठिरास मनस्वी क्रोध आला व त्यानें जय मिळो किंवा मरण येवो असा दंड निर्धार करून मोठ्या शौर्यानें मद्राधिपतीवर घोर शरवृष्टि केली ! त्या वेळीं त्यानें आपल्या सर्व आत्यांना व त्याप्रमाणेंच कृष्णाच्या हाक मारून म्हटलें कीं, “ वीरहो, भीष्म, द्रोण व कर्ण आणि त्याप्रमाणेंच कौरवांच्या अर्थसिद्धी-करितां प्रताप गाजविणारे सर्व भूपाळ रणांत पडले आहेत; तुम्हांला जीं कामें नेमून दिलीं होती तीं सर्व तुम्हीं आपल्या शक्त्यनुसार शेवटास नेलीं आहेत; आतां एक ह्या महारथ शल्याला मात्र वधण्याचें काम अवशिष्ट आहे व तें मी स्वतःकडे घेतलें आहे; ह्यासाठीं आज मी मद्राधिपतीला रणांगणांत जिंकण्याची इच्छा करीत आहे ! परंतु ह्या कामीं माझी जी मनीषा आहे ती मी तुम्हांस निवेदन करितों, तर ती



तुष्ठी ऐका. वीरहो, माझ्या रथचकांचें रक्षण या नकुलसहदेवांनीं करावें; हे दोघे समरांगणांत युद्ध करीत असतां इंद्रही ह्यांना जिकण्यास समर्थ होणार नाही; हे दोघे शूरसंमत वीर क्षात्रधर्मानें वागणारे असून रणांत मातुल शल्याशी संग्राम करण्यास योग्य आहेत; आज ह्या सत्यप्रतिज्ञे व सन्मान्य योद्ध्यांनीं मला मदत करण्याकरितां शत्रूंची लढावें; आज एक मी शल्याला ठार मारीन किंवा शल्य मला ठार मारील, हें पक्कें समजा. तुमचें कल्याण होवो ! प्रमुख वीरांनीं, हें माझे सत्य भाषण श्रवण करा. भूपहो, आज मी मातुलाशीं क्षात्रधर्मानें युद्ध करीन. शल्य हा माझा वांटा आहे, त्याला मारून मी एक विजयी तरी होईन किंवा स्वतः मरून तरी जाईन ! आतां रथयोजकांनीं युद्धशास्त्रांतील नियमानुसार ताबडतोब माझ्या रथावर शल्याच्या रथांतल्या-पेक्षां अधिक शस्त्रां हें व इतर सर्व उपकरणें ह्यांचा पुरवठा करावा. शैनेयानें माझ्या रथाचें उजवें चाक राखावें व धृष्टद्युम्नानें डावें चाक राखावें; माझ्या पृष्ठभागाचें रक्षण आज अर्जुनानें करावें; आणि माझ्या अग्रभागी आज महाशस्त्रधर भीमानें असावें ! वीरहो, अशी सर्व व्यवस्था झाली म्हणजे भयंकर रणांत मी शल्या-हून अधिक पराक्रम करीन ! ” राजा धृतराष्ट्र, धर्मराजाची ह्याप्रमाणें आज्ञा होतांच त्याचें प्रिय करण्याविषयीं सदा दक्ष अशा त्या वीरांनीं तत्काळ तदनुसार सर्व व्यवस्था केली; आणि मग फिरून रणांगणांत सर्व पांडवसैन्यामध्ये जिकडे तिकडे महान् आनंद प्रवर्तला ! पांचाल, सोमक व मत्स्य ह्यांना तर विलक्षण वीरश्री चढली ! ह्याप्रमाणें प्रतिज्ञा केल्यावर मग धर्मराजा तत्काळ मद्राधिपतीवर चाल करून गेला; आणि नंतर पांचालांनीं शतावधि दुंदुभि व शंख क्षात्रत्रिगुण्यस प्रारंभ केळ; आणि ते चवताळून

जाऊन मोठमोठ्यानें सिंहगर्जना करीत त्या शूर मद्रेशावर तुटून पडले !

अशा प्रकारें पांडवांचें सैन्य कौरवांवर मोठ्या त्वेषाने चाल करून गेलें तेव्हां कौरवांनाही मोठा हर्ष झाला; आणि महान् महान् कौरव-वीर मोठमोठ्यानें वीरश्रीच्या आरोळ्या देऊं लागले, जिकडे तिकडे हत्तीचे समुदाय गर्जू लागले, शंखांचा प्रचंड ध्वनि होऊं लागला व रणवाद्यांचा घोर ध्वनि चालू होऊन सर्व भूमंडल दणाणून गेलें ! नंतर वीरशाली सेनापति शल्य व कुरुपति दुर्योधन ह्यांनी आपल्या त्या प्रसुब्ध सैन्यानिशीं उलट पांडुवीरांवर चाल केली; आणि उदयास्तपर्वत जसे कितीही प्रचंड मेघ त्यांजवर चालून आले असतां त्यांची पर्वा करीत नाहीत; तशी त्यांनीं त्या पांडवसैन्याची मुळीच पर्वा केली नाही ! राजा, तेव्हां समरांगणांत शोभणाऱ्या शल्यानें शत्रुसंहारक धर्मराजावर शरांचा अगदीं पाऊस पडला; तेव्हां जणू काय देवेंद्रच शंबरामुराशी लढत आहे असें भासलें ! त्याप्रमाणेंच महात्म्या कुरुराज युधिष्ठिरानेंही सुंदर धनुष्य धारण करून द्रोणाचार्यांनीं शिकविलेलीं विविध अस्त्रें प्रकट केलीं आणि तो शल्यावर एकसारखा शिताफीनें अचूक बाण सोडूं लागला ! राजा, तेव्हां रणांगणांत धर्मराजा संचार करीत असतां कोणालाही त्याच्या ठिकाणीं कांहीएक व्यंग म्हणून दिसलें नाहीं ! त्या दोघांही महान् योद्ध्यांनीं नानाविध बाणांचा परस्परान्तर भडिमार चालवून परस्परान्तर अगदीं नखाशिखांत विद्ध केलें; त्या समयीं ते दोन शार्दूलच आमिषाच्या प्राप्तीसाठीं एकमेकांशीं मोठ्या शौर्यानें लढत आहेत असें भासलें ! राजा, त्या घोर समरांत भीमसेनानें तुझ्या युद्धविशारद पुत्राशीं लगट करून युद्ध आरंभिलें आणि धृष्टद्युम्न, सात्यकि, नकुल व सहदेव ह्यांनीं आसमंताद्भागी शकुनि-

प्रमुख कौबरवीरांना गांठिले !- राजा, नंतर पुनः त्या उभय सेनेंतील जयेच्छु वीरांचा घोर रणसंमर्द मातला आणि त्यांत भयंकर संहार झाला ! राजा, ह्या सर्व प्राणहानीचें कारण तूंच आहेस. जर तू दुष्ट सल्ला दिली नसतीस, तर हा अनर्थ खर्चात घडला नसता !

असो; राजा, दुर्योधनानें बांकदार पेच्यांचा एक बाण नेमकाच मारिला व रणांगणांत भीमसेनाचा सुवर्णमंडित ध्वज छेदिला; तेव्हां घागऱ्यांचे समुदायांनी अत्यंत शोभणारा तो महान् व मोहक असा ध्वज भीमसेन पाहात असतां रणभूमीवर कोसळला ! नंतर दुर्योधनानें पुनः भीमसेनावर एक तीक्ष्ण धारेचा क्षुर बाण टाकिला आणि त्याचें हत्तीच्या शुंडेसारखें प्रचंड असें तें विचित्र धनुष्य तोडिलें ! राजा, त्या वेळी भीमसेनाला अनावर क्रोध चढला व त्या धनुष्यहीन वीर्यशाली पांडुपुत्रानें रथांतली शक्ति मोठ्या त्वेषानें तुझ्या पुत्रावर सोडिली आणि त्याचें हृदय विदारिलें; तेव्हां तो एकदम वीरासनी मटकून बसला व बेशुद्ध झाला ! राजा, मग भीमसेनानें पुनः एक क्षुरप्र बाण दुर्योधनाच्या सारथ्यावर सोडिला आणि त्याचें मस्तक तोडून पाडिलें. तेव्हां दुर्योधनाच्या त्या सूतहीन रथाचे घोडे उधळले आणि वाट मिळाली तिकडे रथ घेऊन पळत चालले. तेव्हां कौरवसेनेंत मोठा हाहाकार झाला ! राजा, त्या समयी दुर्योधनाचें परित्राण करण्याकरितां महारथ अश्वत्थामा, कृप, कृतवर्मा वगैरे सर्व वीर दुर्योधनाच्या त्या रथामार्गे धावले; आणि भीमसेनानें कौरवसेनेची दाणादाण उडविल्यामुळे दुर्योधनाचे अनुयायी फार धावून गेले ! राजा, नंतर द्रोणपुत्रादिक कौरववीरांवर अर्जुनानें आपल्या गांडीव धनुष्याच्या योगें बाणांचा भडिमार चालविला; आणि युधिष्ठिरही अतिशय क्षुब्ध होऊन स्वतः आपल्या रथाचे श्वेत

वर्णाचे व मनोवेगानें दौडत जाणारे अश्व चालवीत मद्राधिपतीवर धावून गेला ! राजा, त्या वेळी कुंतीपुत्र युधिष्ठिराच्या ठिकाणी मला मोठा आश्चर्यकारक गुण आढळला तो हा की, ज्याचें मन मोठें कोमल व ज्याच्या ठायीं इंद्रियनिग्रहशक्ति विलक्षण असा तो महासात्विक युधिष्ठिर राजा एकदम क्षुब्ध झाला ! त्या समयी त्यानें शल्याकडे डोळे वटारून पाहिले आणि क्रोधानें तो नखशिखांत पेटला व थरथर कांपूं लागला ! राजा, त्या वेळी कौरवसेनेवर धर्मराजानें एकसारखा जलाल बाणांचा घोर वर्षाव केला आणि शतावधि व सहस्रावधि वीरांस ठार मारिले ! त्या वेळी धर्मराजानें ज्या ज्या सेनेवर चाल केली, त्या त्या सेनेला रणांगणांत त्यानें बाणांच्या भडिमारांनं वधिलें व जणू काय वज्रप्रहारांनीं पर्वतांनाच कोसळून टाकण्याचा सपाटा चालविला ! राजा, त्या समयी धर्मराजानें अश्व, सारथि, ध्वज व रथ ह्यांसह वर्तमान बहुत रथ्यांचें निर्दलन केलें; आणि प्रबल प्रभंजन जसा महामेघांशीं क्रीडा करितो, तसा तो एकटा कौरवसेनेशीं क्रीडत राहिला ! राजा, ज्याप्रमाणें क्रोधायमान झालेला रुद्र प्रलयकाली प्राण्यांचा संहार उडवितो, त्याप्रमाणें त्या प्रतापशाली पांडुपुत्रानें रणांत घोडेस्वारांसहित घोड्यांना व सहस्रावधि पायदळाला ठार मारिलें; आणि एकसारखा चोहोंकडे बाणांचा वर्षाव आरंभिला व सर्व रणभूमि शून्य करून टाकून अखेरीस तो मद्राधिपतीवर धावून गेला व त्यास ' थांब, थांब ' असें म्हणाला ! राजा, ह्याप्रमाणें संग्रामांत त्या कुंतीपुत्राचा भयंकर प्रताप अवलोकन करून तुझे सर्व सैनिक अतिशय भयले; तथापि शल्य मात्र मार्गे न सरतां धर्मराजाशीं लढण्यास तोंड देऊन पुढें झाला ! राजा, मग त्या शल्ययुधिष्ठिरांचा घोर संग्राम प्रवर्तला ! दोघेही अतिशय क्षोभले !

दोघांनीही शंख वाजविण्यास प्रारंभ केला ! व दोघेही एकमेकांना हाका मारून एकमेकांच्या उग्राळ्यापाग्राळ्या काढूं लागले ! त्या ममयीं शल्याने बाणांचा पाऊस पाडून धर्मराजाला पीडिले आणि धर्मराजांनीही शरांचा भडिमार करून मद्रराजाला झांकून काढिले ! राजा, तेव्हां ते दोघेही योद्धे कंकपत्र बाणांनीं नख-शिखांत ओतप्रोत व्यास आले; त्या शूरांच्या देहांतून रुधिराच्या चिलकांड्या उडूं लागल्या; आणि वसंत ऋतूंत फुललेले फळमाचे वृक्ष जसे अगदी आरक्त व लाल लाल दिमतात तसे ते दिमूं लागले ! राजा, त्या ममयीं ते दोघेही महावीर्यशाली रणभुरंभर योद्धे प्राणांची पैज लावून लढत अमतां जेव्हां सर्व सैन्यांनी त्यांज-कडे पाहिले, तेव्हां त्यांपैकी कोण विजयी होईल ह्याची अटकळ कोणासच होईना ! ते म्हणाले की, ' आज युधिष्ठिर हा मद्राधिपतीला मारून पृथ्वीचे राज्य मिळवील किंवा मद्राधिपति शल्य हा युधिष्ठिराला वधून दुर्योधनाला पृथ्वीचे राज्य प्राप्त करून देईल ! ' राजा, ह्याप्रमाणे त्या वेळीं सर्व सैन्ये दोन्ही अनुमाने करीत होती; पण अमुक एक निश्चय म्हणून त्यांना करितां येईना !

असो; राजा, अशा प्रकारे ते दोन्ही वीर तुंबळ युद्ध करीत अमतां धर्मराजांना आपले सैन्य उजवीकडे नेले; आणि मग शल्याने युधिष्ठिरावर शंभर शरांचा भडिमार करून त्याचे धनुष्य एका जलाल बाणाने छेदून टाकिले ! तेव्हां धर्मराजांना दुसरे धनुष्य धारण केले आणि त्याजवर तीनशे शर सोडिले आणि एका क्षुर बाणाने त्याचे धनुष्य तोडिले ! नंतर त्याने बांकदार पेण्याचे बाण सोडून शल्याचे चारही घोडे वधिले व दोन अत्यंत जलाल अशा अग्रांचे बाण मारून त्याचे पांढ्गिमारथि ठार मारिले ! राजा, मग धर्म-राजांनी पीतवर्णाचा, धार दिलेला व देदीप्य-

मान असा एक भल्ल बाण त्याच्या अग्रभागीं शल्याचा ध्वज फडकत होता त्याजवर सोडिला व त्याचे तुकडे केले ! ह्याप्रमाणे शल्याचा ध्वज भग्न होताच कौरवसैन्याची फळी फुटली आणि ते पळू लागले ! राजा, नंतर अश्वत्थामा पुढे आला; आणि विपन्न दशेस प्राप्त झालेल्या त्या मद्राधिपतीला आपल्या रथांत घेऊन मोठ्या त्वरेने पळून गेला ! राजा, ह्याप्रमाणे शल्याचा मोड आला तेव्हां मग युधिष्ठिर मोठमोठ्याने गर्जना करूं लागला; परंतु इतक्यांत लवकरच तो द्रोणपुत्र शल्याला घेऊन रणांगणांतून निवून जात असतां शल्याने त्याजकडे किंचित् हास्य करून पाहिले व तो तत्काळ दुसऱ्या रथावर आरूढ झाला ! राजा, तो रथ शुभ्र वर्णाचा अमून यथाविधि सिद्ध केलेला होता; तो महान् मेघाप्रमाणे दणदणाट करीत अमून त्याच्यावर शास्त्रास्त्रांची व इतर उपकरणांची उत्तम तरतूद केलेली होती; आणि तो रथ पाहून शत्रूंच्या अंगावर कांटा उभा रहात असे !

## अध्याय सतरावा.

—:०:—

### शल्यचा वध !

संजय सांगतो:—नंतर त्या महाबल्लिष्ठ मद्राधीश शल्याने पहिल्यापेक्षा अधिक वेग-वान् असें दुसरे धनुष्य धारण केले आणि युधिष्ठिराचे भेदन करून त्याने सिंहासारखी गर्जना केली. मग त्या महाशूर क्षत्रियपुंग-वाने एकसारखी शत्रूसैन्यावर बाणांची भयंकर वृष्टि सुरू केली; आणि त्यानें सर्वांना अगदी ' ब्राहि भगवत् ' करून सोडिले ! त्या वेळी शल्याने सात्यकीवर दहा आणि भीमसेन व सहदेव ह्यांजवर तीन तीन बाण सोडून त्यांस वधिले; आणि युधिष्ठिरावर बाणांचा अतिशय

भडिमार करून त्यासही जर्जर केले ! त्या समयीं जे जे दुसरे महाधनुर्धर रणांगणांत त्याच्याशीं लढण्यास सिद्ध झाले, त्या सर्वांना त्यांच्या अश्वांसुद्धा व रथकूबरांसुद्धा त्या मद्राधिपतीनें बाणांच्या वर्षावानें आर्त करून सोडिलें, तेव्हां जणू काय कुंजरांवर उल्कांचीच वृष्टि होत आहे असा भास झाला ! त्या महारथ शल्यानें हत्ती व हत्तीवर बसलेले वीर, घोडे व घोडेस्वार, आणि रथ व रथी ह्या सर्वांना एकदम वधिलें ! त्यानें मोठ्या आवेशानें पांडवांकडील वीरांचे आयुधांसह बाहु तोडिले, त्यांचे ध्वज छेदिले आणि घोर संहार उडवून सर्व भूतल योद्ध्यांनीं आच्छादित केलें; तेव्हां जणू काय यज्ञवेदी दर्भानींच आच्छन्न झाली आहे असें दिसू लागलें ! राजा, अशा प्रकारें तो शल्य पांडवांच्या सैन्यांचा अंतकाप्रमाणें घोर संहार करीत असतां पांडव, पांचाल व सोमक ह्यांनीं अतिशय क्रोधाग्रमान होऊन त्यास एकदम वेढा दिला; व तितक्यांत भीमसेन, सात्यकि, नकुल व सहदेव हेही त्या महाबलवान् धर्मराजाशीं लगट करून लढत असलेल्या शल्यावर चाल करून गेले; आणि मग ते प्रतिस्पर्धी एकमेकांना एकसारखे युद्धार्थ आह्वान करू लागले !

राजा, नंतर समरांगणांत पांडवांकडील शूर वीर व कौरवांकडील मद्राधिपति वीरश्रेष्ठ शल्य ह्यांचा घोर संग्राम चालू झाला ! त्या समयीं पांडवांनीं शल्याला चोहोकडून गराडा घातला आणि त्याजवर उग्र वेगाच्या बाणांची वृष्टि आरंभिली ! तेव्हां धर्मपुत्र युधिष्ठिर ह्याच्या संरक्षणासाठीं भीमसेन, नकुल, सहदेव व कृष्ण हे अगदीं तत्पर होते ! त्या समयीं युधिष्ठिरानें मद्राधिपाच्या वक्षस्थळीं उग्र वेगानें चाल करून जाणाऱ्या बाणांचा मारा चालविला आणि त्यास अत्यंत आर्त करून सोडिलें ! तेव्हां सम-

रांगणांत तुझ्या सैन्यांतले महान् महान् रथ्यांचे सुसज्ज समुदाय मद्रपतीला शरार्त पाहून दुर्गो-धनाच्या आज्ञेनें एकदम पुढें सरले व शल्याच्या भोंवतालीं जमा झाले ! नंतर तत्काळ मद्राधिपतीनें रणांगणांत युधिष्ठिरावर सात बाण सोडून त्यास विंधिलें; परंतु त्या महात्म्या कुंतीपुत्रानें त्या घोर समरांत लागलेच शल्यावर नऊ बाण टाकून त्यास विद्ध केलें. राजा, नंतर ते दोघेही वीर फारच निकारानें लडू लागले. तेव्हां त्या घनघोर रणांत दोघांनींही तेलपाणी करून खलखलीत केलेले भयंकर बाण आकर्ण खेचून एकमेकांवर सेडिले; आणि एकमेकांना बाणांनीं झांकून टाकिलें ! राजा, मग ते दोघेही विजयशाली व प्रबळ असे महारथ नृपवर रणांगणांत परस्परांचें व्यंग कोठें सांपडतें तें पाहू लागले आणि त्यांनीं लागलाच मोठ्या सपाट्यानें परस्परांवर बाणांचा अतिशय भडिमार चालू केला. ते दोघे महात्मे युधिष्ठिर व शल्य एकमेकांवर बाणांचे लोट सोडीत असतां त्यांच्या प्रत्यंचांचा जो प्रचंड ध्वनि होत होता, तो ऐकून जणू काय महेंद्राच्या वज्राचाच एकसारखा ध्वनि होत आहे असें वाटत होतें ! राजा, युधिष्ठिर व शल्य हे दोघे एकमेकांवर उड्या टाकीत एकमेकांशीं झुंजून लागले, तेव्हां जणू घोर अरण्यांत वाघांचे बबूच आमिषाकारितां झगडत आहेत किंवा मदोन्मत्त महान् हत्ती आपल्या दंतांनीं एकमेकांना प्रहार करून विदारीत आहेत असें भासलें !

ह्याप्रमाणें त्या लोकोत्तर योद्ध्यांचें तुंबळ युद्ध चाललें असतां महात्म्या मद्राधिपतीनें महाबलवान् धर्मराजावर सूर्य किंवा अग्नि ह्यांसारखा देदीप्यमान असा एक बाण, मोठ्या आवेशानें व वेगानें टाकिला व त्याचें वक्षस्थळ विंधिलें. तेव्हां त्या बाणानें महात्मा कुरुश्रेष्ठ युधिष्ठिर अतिशय घायाळ झाला; परंतु त्यानें

तत्काळ उत्तम नेम धरून उलट मद्राधिपतीवर एक बाण मारिला व त्यास मूर्छित पाडिले; तेव्हां त्यास पुनः आनंद झाला ! नंतर क्षणांत पाथिवेद्र शल्य सावध होऊन देहभानावर आला, आणि त्यानें क्रोधानें आरक्त नेत्र करून महेंद्राप्रमाणें विलक्षण शौर्यानें तावडतोव पांडु-पुत्रावर शंभर बाण सोडिले; पण ते पाहून महात्म्या धर्मपुत्रानेंही तत्काळ शल्यावर नऊ बाण क्रोधानें टाकिले व त्याचें वक्षस्थळ विदीर्ण करून त्याचें सौवर्ण्य चर्म दुसऱ्या सहा बाणांनीं भंगिलें. मग शल्यानें मोठ्या वीरश्रीनें धनुष्याचें आकर्षण केलें आणि धर्मराजावर बाणवर्षाव आरंभिला. त्या सगळीं त्यानें दोन बाण कुरुपुंगव युधिष्ठिरावर सोडिले व त्याचें धनुष्य तोडिलें. नंतर महात्म्या धर्मराजानें समरांगणांत अधिक भयंकर धनुष्य उचलिलें आणि इंद्रानें जसा नमुचीवर चोहोक्रडून तीक्ष्ण शरांचा मारा केला, तसा त्यान शल्यावर घोर मारा करून त्यास विद्ध केलें. मग शूर शल्यानें नऊ बाण सोडून धर्मराज व भीमसेन ह्यांच्या सुवर्णमय उत्कृष्ट ढाली तोडून टाकिल्या व त्यांचे भुज विदारिले ! नंतर त्यानें अग्नि व सूर्य ह्यांसारखा तेजस्वी असा दुसरा एक क्षुर बाण सोडून धर्मराजाचें धनुष्य छेदिलें; कृपाचार्यानें त्याच्या सारथ्यावर सहा बाण टाकिले तेव्हां तो एकदम अग्रभागी रणांगणांत पडला; पुनः मद्राधिपतीनें चार बाण सोडून युधिष्ठिराचे चारही अश्व मारिले; आणि अखेरीस धर्मराजाच्या सैनिकांचा घोर संहार आरंभिला !

ह्याप्रमाणें शल्यानें जेव्हां धर्मराजाची दुर्दशा उडविली, तेव्हां प्रतापशाली भीमसेनानें महावेगवान् शर टाकून त्या कुरुवीराचें धनुष्य तोडिलें व आणखी दोन बाण सोडून त्याला अतिशय घायाळ केलें. नंतर त्या पांडुपुत्रानें दुसरा एक बाण शल्याच्या सारथ्यावर टाकून,

ज्याचा मध्यभाग कवचाचें सुरक्षित केलेला होता अशा त्या त्याच्या देहापासून त्याचें मस्तक तोडून निराळें केलें आणि तत्काळ त्याच्या रथाचे चारही अश्व यमसदनीं पाठविले ! राजा, अशा प्रकारचा भयंकर संताप भीमसेनाला उत्पन्न झाला; व त्या सर्व धनुष्य-रांच्या नायकांनें रणांगणांत मोठ्या वेगानें संचार करणाऱ्या शल्यावर एकसारखे शंभर बाण सोडून त्यास झांकून काढिलें आणि ते पाहून माद्रीपुत्र सहदेवानेंही तोच क्रम चालविला व त्या कुरुवीरास बाणाच्छादित करून मूर्च्छित पाडिलें ! ह्याप्रमाणें कुरुसेनापति मूर्च्छित झाला असें जेव्हां भीमसेनानें पाहिलें, तेव्हां त्यानें आणखी बाण सोडून त्याची ढाल छेदिली. इतक्यांत तो मद्राधिप सावध झाला; आणि आपली ढाल भंग झाली असें पाहून त्यानें सहस्र तारे वसविलेली दुमरी एक ढाल व खड्ग धारण केलें आणि तो महात्मा रथांतून उडी टाकून कुंतपुत्रावर धावून गेला. मग त्यानें नकुलाच्या रथाची ईषा तोडिली आणि तो प्रतापवान् वीर युधिष्ठिरावर चालून गेला ! परंतु तो यमाप्रमाणें क्रोधायमान होऊन धर्मराजावर धावून जात असतां धृष्टद्युम्न, द्रौपदीपुत्र, शिखंडी व सात्यकि ह्यांनीं त्यास एकदम गराडा घालून अडविलें; आणि तितक्यांत महाशूर भीमसेनानें नऊ बाण सोडून त्याची ढाल तोडिली व आणखी भल्ल बाणांचा भडमार करून त्याच्या खड्गाची मूठ छेदिली आणि तो मोठ्या आनंदानें सैन्यांत गर्जे लागला !

राजा, भीमसेनाचा तो घोर पराक्रम अवलोकन करून पांडवांच्या महान् महान् रथिसमुदायांना विलक्षण हर्ष झाला; आणि ते आनंदाच्या भरांत येऊन प्रचंड गर्जना करूं लागले व चंद्रासारखे शुभ्र शंख वाजविण्यास त्यांनीं प्रारंभ केला. तो

भयंकर स्वन श्रवण करून कौरवांचें तें विजयशाली सैन्य अत्यंत भ्यालें; आपण कोठें आहों वगैरे भानही त्यास नाहीमें झालें; त्याला मनस्वी घाम सुटला; तें अतिशय खिन्न झालें व त्याला बहुतेक मूच्छांच आली ! राजा, नंतर भीमसेन आदिकरून प्रमुख पांडव-योध्यांनीं शल्यावर एकदम शरांचा घोर भडिमार केला; परंतु त्यास न जुमानितां, मृगाचा वध करण्याकरितां सिंह जसा त्यावर उडी घालितो तशी त्यानें युधिष्ठिराच्या वधासाठी मोठ्या आवेशानें त्यावर उडी घातली आणि त्याचे अश्व वसूत ह्यांस ठार मारिलें ! राजा, त्या वेळीं धर्मराजाला मनस्वी क्रोध चढला. तो केवळ अग्निप्रमाणें त्वशिश्रुतां भडकला आणि तत्काळ मोठ्या शौर्यानें त्या कुरुसेनापतीवर धावला ! राजा, त्या समयी धर्मराजाला गोविंदाच्या वचनाचें स्मरण झालें व त्यानें तत्काळ शल्याचा वध करण्याविषयी अंतर्-र्यामीं निर्धार केला ! नंतर त्यानें अश्वहीन व सूतहीन अशा आपल्या रथावर उभें राहून त्यांतली एक शक्ति शल्यावर सोडण्याचें मनांत योजिलें; आणि शल्याचें तें कर्म अवलोकन करून व त्याच्या वधाचा पतकर आपण घेतला असून तें कार्य अद्यापि सिद्धीस नेलें नाही हें अनुचित होय, अशी मनाशीं गांठ घालून, कृष्णाच्या सूचनेप्रमाणें त्यास आतां ठार मारिलेच पाहिजे असा त्यानें दृढनिश्चय केला ! नंतर, राजा, जिचा दांडा मुवर्णाचा असून जिच्यावर रत्नें वसविली होती अशी कांचनाप्रमाणें झळाळणारी शक्ति त्या पांडु-पुत्रांनें उचलली आणि मोठ्या क्रोधानें आपल्या अग्निप्रभ नेत्रांनीं एकदम शल्याकडे टोकारून पाहिलें ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या पत-चित्त व निष्पाप अशा धर्मराजानें मद्राधिपती-कडे डोळे वटारून पाहिलें तेव्हां मला वाटलें

कीं, आतां हा कुरुसेनापति भस्मच होईल ! पण तमें जेव्हां झालें नाही, तेव्हां तें मला मोठें नवल भासलें, असो; नंतर महात्म्या धर्मराजानें ती महातेजःपुंज, भयंकर दांड्याची व अत्यंत कांतिमान् अशा रत्नाप्रमाणें झळकणारी प्रदीप्त शक्ती मोठ्या आवेशानें मद्राधिपतीवर सोडिली ! राजा, धर्मराजानें मोठ्या बळांनें सोडिलेली ती शक्ति जेव्हां एकाएकीं शल्यावर येऊं लागली, तेव्हां तिच्यांतून एकसारख्या ठिणभ्या पडूं लागल्या आणि तें पाहून रणांगणांत जमलेल्या सर्व कौरवांना प्रलयकालीं अंतरिक्षांतून प्रचंड उल्काचक्रोसळत आहेत, असें भासलें ! धर्मराजानें मोठ्या सावधानचित्तानें सोडिलेली ती शक्ति जणू काय पाशधारी कालरात्रि किंवा यम-धर्माची महाभयंकर दाईच होती; व तिच्या ठायी ब्रह्मदंडाप्रमाणें अमोघ वीर्य वसत होतें ! सर्व पांडुपुत्र त्या शक्तीला मोठ्या प्रयत्नांनीं गंध, माला, श्रेष्ठासन, पान, भोजन इत्यादिकांनीं पूजित अमत; व प्रलयकालच्या सांवांतिक अग्नी-सारखें तिच्या ठिकाणी दुर्धर सामर्थ्य वसत असून अथर्वीगिरमी कृत्येप्रमाणें ती अत्यंत घोर-रूप होती ! त्वष्ट्रानें ती शंकराकरितां निर्माण केली असून शत्रूंचे प्राण आणि देह ह्यांना ती खाऊन टाकणारी होती; आणि तिच्या ठिकाणी इतकें अगाध बळ वसत होतें की, ती पंचमहाभूतांचाही मोठ्या जोरांनें नाश करण्यास समर्थ होती ! त्या शक्तीला घंटा व पताका लाविलेल्या असून तिजवर हिरे, वैदूर्य वगैरे रत्नांचा सुंदर जडव केलेला होता; त्वष्ट्रानें मोठ्या दीर्घ प्रयत्नानें व व्रतादिकांच्या बळांनें ती घडविली होती; आणि त्यामुळें ब्रह्मद्वेषाचा हटकून नाश कर-ण्याचें अमोघ सामर्थ्य तिला प्राप्त झालें होतें ! राजा, अशा त्या लोकोत्तर शक्तीवर धर्म-राजानें मोठ्या तत्परतेनें घोर मंत्रांनीं त्या त्या

घोर देवतांचें आवाहन केलें; आणि आपल्या अंगीं जेवढें बल व ज्ञान होतें, तेवढें सर्व खर्चून तिजमध्ये उग्र वेग उत्पन्न केला; आणि त्यानें ती मद्राजाच्या वधाकरितां श्रेष्ठ अंतरिक्षमार्गानें सोडिली व तो 'अधमा, मेलस, मेलस!' अशी मोठ्यानें गर्जना करीत—पूर्वीं अंधकामुरावर प्राणघातकी बाण सोडिल्यावर शंकर जसा नाचूं लागला तसा—मुदढ व मुंदर हात पुढें करून एकसारखा क्रोधानें नाचूं लागला ! राजा, ह्याप्रमाणें युधिष्ठिरानें आपल्या अंगच्या सर्व सामर्थ्यानें ती प्रचंड दुर्धर शक्ति शल्यावर सोडिली; तेव्हां होमकुंडांतील अग्नि उत्तम रीतीनें हुत केलेल्या धृतधारेचें ग्रहण करण्यास सिद्ध होतो तद्वत् तो कुरुवीर त्या भयंकर शक्तीचें ग्रहण करण्यास सिद्ध होऊन गर्जूं लागला ! राजा, त्या शक्तीनें शल्याचीं सर्व मर्मस्थळे विदारिलीं आणि ती त्याचें शुभ्र व विशाल वक्षस्थळ भेदून त्याच्या देहांतून एकदम बाहेर पडली ! आणि मद्राधिपतीचें विशाल यश दग्ध करीत तिनें भूगह्वरांत अनायासें—पाण्यांत जसा प्रवेश करावा तसा—प्रवेश केला ! त्या वेळीं, राजा, शल्याचें नाक, डोळे, कान व तोंड ह्यांतून आणि त्याप्रमाणें त्याला ज्या जखमा झाल्या त्यांतून एकसारखे रुधिराचे लोट वाहूं लागून त्याचीं सर्व गांठें रुधिरानें माखली व तो कार्तिकेयानें विदीर्ण केलेल्या कौंच नामक प्रचंड पर्वताप्रमाणें दिसूं लागला ! राजा, अखेरीस धर्मराजाच्या त्या जलाल शक्तीनें मद्राधिपतीला जी दुःसह पीडा उत्पन्न केली, ती त्यास सहन झाली नाहीं; आणि महेंद्राच्या ऐरावताप्रमाणें अवाढव्य देहाचा तो बलाढ्य योद्धा, अंगांतील चिलवत छिन्नभिन्न होऊन, वज्रानें विदीर्ण केलेल्या पर्वतशृंगाप्रमाणें बाहु पसरून प्रचंड इंद्रध्वजाप्रमाणें धर्मराजाच्या अग्रभागीं रथांतून धाडकन् धरणीवर कोमळला !

राजा, ह्याप्रमाणें सर्व अंगें छिन्नविछिन्न झालेला व रक्तानें न्हालेला तो नरवीर मद्रराज भूतलावर पतन पावला, तेव्हां ज्याप्रमाणें क्रीडा करण्यास उद्युक्त झालेल्या भर्त्याचें मोठ्या प्रेमानें त्याची प्रिय पत्नी स्वागत करिते, त्याप्रमाणें त्या मद्रराजपत्नी वसुंधरेनें मोठ्या प्रेमानें आपल्या पतीचें स्वागत केलें; आणि प्रिय भार्येप्रमाणें पृथ्वीचा पुष्कळ काळपर्यंत उपभोग घेऊन अखेरीस तिला सर्व गात्रांनीं आलिंगन देऊन तो मद्रराज प्रसुप्त झाला असें भासलें ! ह्याप्रमाणें धर्मयुद्धांत धर्मपुत्र धर्मराजानें मद्राधिपतीचा वध केला तेव्हां जणू काय यथाविधि हवन केलेला यज्ञकुंडांतला अग्निचं शांत झाला असें वाटलें ! असो; धर्मराजाच्या शक्तीनें हृदय विदारून आणि आयुधें व ध्वजपताका छेदून अखेरीस त्या मद्रेश्वराचा प्राणही जरी नष्ट केला, तरी त्याच्या देहावरील कांति नाहीशी झाली नाही ! अशा प्रकारें शल्याला वधिल्यावर धर्मराजानें इंद्रधनुष्याप्रमाणें देदीप्यमान असें धनुष्य धारण केलें; आणि अत्यंत तीक्ष्ण अशा मल्ल बाणांचा भडिमार चालवून, पक्षिराज गरुड जसा पक्ष्यांचा संहार उडवितो तसा त्यानें कौरववीरांचा रणांगणांत क्षणांत संहार उडविला ! त्या समयी धर्मराजाच्या बाणांनीं तुझे सर्व सैनिक नखशिखांत आच्छन्न झाले आणि डोळे मिटून एकमेकांशीं निकरानें लढत असतां त्यांच्या देहांतून रुधिराचे लोट चालू होऊन व आयुधांची वीरे वाताहत घडून ते अखेरीस मृत्युमुखी पडले !

धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें मद्राधिपति शल्य रणांगणांत पतन पावला तेव्हां त्याचा धाकटा भ्राता धर्मराजावर चालून गेला. तो तरुण वीर आपल्या वडील भ्रात्याप्रमाणेंच सर्वगुणसंपन्न असून उत्कृष्ट रथी होता. त्या दुर्धर नरवीरानें

आपल्या भ्रात्याच्या ऋणांतून मुक्त होण्यासाठी तत्काळ धर्मराजावर बहुत नाराचा बाणांचा जेराचा वर्षाव आरंभिला; पण इतक्यांत धर्मराजांने सहा महावेगवान् बाण त्याजवर सोडून त्यास घायाळ केले; दोन क्षुर बाणांनी त्याचे धनुष्य व ध्वज हीं छेदून टाकिलीं आणि एक धार दिलेला सुदृढ व तेजस्वी असा भल्ल बाण सोडून आपल्या अग्रभागीं असलेल्या त्या योद्ध्याचे मस्तक उडविले; तेव्हां कुंडलांनीं विराजित असलेले ते मस्तक रथांतून भूतलावर पडतांना दृग्गोचर झाले आणि स्वर्गांतून पतन पावणाऱ्या क्षीणपुण्य अमराप्रमाणें त्याचे ते भयंकर शरीर-ही रथांतून खाली पडले! व ते रुधिरांने माखलेले घड अवलोकन करून कोरवांच्या सैन्याची फळी फुटली आणि विचित्र कवच धारण करणारा तो मद्रपतीचा अनुज रणांगणांत मरण पावतांच जिकडे तिकडे हाहाकार उडून कोरवांची सेना चोहोंकडे पळत सुटली! राजा, शल्याचा भ्राता रणांगणांत पतन पावला असें पाहून तुझे सैनिक मृतप्राय झाले; आणि पांडवांच्या भीतीनें घडाघड भूतलावर कोसळून धुळींत अतिशय माखले! इतक्यांत त्या वाताहत झालेल्या सैन्यावर शैनेय सात्यकीनें बाणांचा भडिमार करीत हल्ला केला, पण तो महाधनुर्धर अजिंक्य वीर आपल्यावर चालून येत आहे असें अवलोकन करून तत्काळ हार्दिक्य कृतवर्मा मोठ्या धैर्यानें त्याच्यावर उलट धावून गेला! राजा, नंतर ते दोघेही विजयशाली यादववीर मोठ्या शौर्यानें एकमेकांशीं लढूं लागले, तेव्हां जणू काय ते दोन प्रबल सिंहच झुंजत आहेत असें भासले! त्या समयी त्यांनीं एकमेकांवर देदीप्यमान् बाण सोडून एकमेकांस झांकून टाकिले, तेव्हां जणू काय त्या सूर्यांनीं एकमेकांला सूर्यकिरणांनींच आच्छादित केले असें वाटले! नंतर त्या वृष्णि-

पुंगवांनीं आपापल्या धनुष्यांच्या योगें मोठ्या बळानें व त्वेषानें बाणांचा इतका घोर भडिमार चालविला कीं, आम्हांला अंतरिक्षांत मोठ्या वेगानें पतंगांचे समुदायच भराऱ्या मारीत आहेत असें दिसूं लागले! त्या घन-घोर संग्रामांत कृतवर्म्यानें सात्यकीवर दहा बाण टाकून त्यास विधिले; तीन बाणांनीं त्याचे घोडे भेदिले; आणि एका नतपर्व बाणानें त्याचे धनुष्य छेदिले! परंतु तेव्हां सात्यकीनें आपल्या हातांतले ते मोडकें श्रेष्ठ धनुष्य फेंकून दिले आणि तत्काळ त्याहूनही अधिक वेगवान् असें दुसरे धनुष्य धारण केले व त्याच्या योगें कृतवर्म्याच्या वक्षस्थळीं दहा बाण टाकून त्यास विधिले! नंतर त्यानें उत्कृष्ट भल्ल बाणांचा आणखी वर्षाव आरंभिला; आणि कृतवर्म्याचा रथ, जूं, ईषा, घोडे भेदून, दोन्ही पाष्णिंसारथि ताबडतोब ठार मारिले! ह्याप्रमाणें कृतवर्मा विरथ होऊन अगदीं विपन्नावस्थेस पोचला तेव्हां वीर्यवान् शारद्वत कृपाचार्यानें त्यास आपल्या रथांत घेतले व अगदीं विलंब न करितां रणांगणांतून एकीकडे नेले!

राजा, अशा प्रकारें मद्राधिपतीचा अंत झाला व कृतवर्म्याचा रथ भंगला, तेव्हां दुर्योधनाचे सर्व सैन्य पुनः रणांगणांतून पळत सुटले! नंतर सैन्यांत अतिशय धुळ उठली, त्यामुळे पुढें त्याचे वर्तमान समजले नाही! राजा, त्या समयीं कोरवांची बहुतेक सेना नष्ट झाली होती, आणि जे कोणी सैनिक उरले होते ते पळत होते! मग थोडक्याच वेळांत जमीनीपामून उधळलेली ती सर्व धूळ नाना-विध सैन्यांच्या रुधिरस्त्रावांनें शांत होऊन खाली बसली आणि कोरवसेनेचा भयंकर संहार झाला! ह्या प्रकारें आपल्यापाशीं असलेल्या सर्व सैन्याचा विध्वंस उडाला असें पाहून दुर्योधना-नें एकट्यानें आपल्यावर वेगानें चाल करून



येणाच्या सर्व पांडुपुत्रांना स्वतः निवारिले ! राजा, तेव्हां पांडव, पार्षत धृष्टद्युम्न व महाबलवान् आनर्ते हे आपआपल्या रथांतून दुर्योधनावर चालून येत असतां त्या सर्वांवर दुर्योधनानें जलाल बाणांचा मारा करून त्यांना मागे हटविलें. तेव्हां मर्त्य प्राणी जमे मृत्यूपासून दूर रहातात, तसे ते सर्व पांडववीर दुर्योधनाला भिऊन त्याच्यापासून दूर राहिले ! राजा, इतक्यांत दुसऱ्या रथावर आरूढ होऊन कृतवर्माही तेथें आला ! परंतु इतक्यांत महारथ युधिष्ठिरानें त्वरेनें बाणवर्षाव आरंभिला आणि कृतवर्म्याचे चारही अश्व ठार मारिले आणि लागलेच अतिशय धार दिलेले सहा भल बाण सोडून गौतमाला घायाळ पाडिले ! राजा, तेव्हां अश्वत्थाम्यानें धर्मराजाच्या हस्ते विरथ झालेल्या हताश्र कृतवर्म्याला आपल्या रथांत घेतलें व तो धर्मराजापासून एकीकडे निघून गेला ! नंतर इकडे शारद्वत कृपाचार्यानें सहा बाणांनी युधिष्ठिराला विंधिलें आणि आणखी आठ तीव्र बाण सोडून त्यानें त्याचे अश्व विद्ध केले ! अमो; राजा, मग ह्याप्रमाणें अल्पस्वल्प युद्ध अवशिष्ट राहिलें ! राजा, हा सर्व घोर अनर्थ होण्याचें कारण तुझी व तुझ्या पुत्रांची दुष्ट मसलत हेंच होय ! अमो; तो महाधनुर्धरांचा नायक मद्राधिपति शल्य रणांत कुरुश्रेष्ठ युधिष्ठिराच्या हस्ते मरण पावला तेव्हां सर्व पांडुपुत्र प्रमुदित होतमाते एकत्र जमले व मोठमोठ्यानें शंख वाजवूं लागले; आणि रणांगणांत इंद्रानें वृत्रामुराला मारल्यानंतर देवांनी जशी त्याची स्तुति आरंभिली, तशी त्या सर्वांनी युधिष्ठिराची स्तुति आरंभिली. आणि नानाविध वाद्यांच्या ध्वनींनी सर्व भूतल दुमदुमून टाकिलें !

## अध्याय अठरावा.

—:०:—

### संकुलयुद्ध.

मंजय सांगतो:—राजा, मद्राधिप शल्याचा वध झाल्यावर त्याचे सातशें शूर पदानुयायी रथी मोठ्या आवेशानें पांडवांशी लढाई करण्यास निवाले; पण तेव्हां दुर्योधन राजा पर्वतासारख्या प्रचंड हत्तीवर आरूढ झाला, आणि ज्याच्या मस्तकावर छत्र धरिलें होतें व ज्यावर चवऱ्या डाळण्यांत येत होत्या असा तो कौरवाधीश त्यांच्या समीप गेला आणि 'जाऊं नका, जाऊं नका !' अमें म्हणून त्यानें त्यांचें निवारण केलें. पण त्या सर्व माद्रवीरांना युधिष्ठिराला ठार मारण्याची प्रबळ इच्छा असल्यामुळे, दुर्योधनानें त्यांचें पुनःपुनः निवारण केलें तरी त्यांनी युद्ध करण्याचा निश्चय ठरवून पांडवांच्या सैन्यांत प्रवेश केला आणि प्रत्यंगाचा प्रचंड शब्द करीत त्यांनी पांडवांशी घोर युद्ध आरंभिलें ! इकडे, राजा, शल्य पडला व त्याचें प्रिय करण्याच्या उद्देशानें मद्रकमहारथांनी धर्मराजाला पीडिलें, हें वर्तमान अर्जुनाच्या कानी पडतांच तो गांडीव धनुष्याचा टणत्कार करीत आणि रथाच्या घणघणाटानें सर्व दिशा दणाणून टाकीत त्या स्थळी येऊन धडकला ! इतक्यांत भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, द्रोपदीचे पुत्र, धृष्टद्युम्न व शिखंडी हे महान् महान् योद्धे व त्याप्रमाणेंच पांचाल व सोमक हे सर्व बलाढ्य वीरही त्या ठिकाणी आले; आणि मग त्या अर्जुन—भीमसेनादिक सर्व वीरांनी धर्मराजाचें संरक्षण करण्यासाठी त्याचे भोंवतालीं गराडा घातला ! राजा, ते नरपुंगव पांडवीय योद्धे धर्मराजाच्या भोंवतालीं एकत्र जमा झाल्यानंतर, मगर सागराला क्षुब्ध करितात तद्गत त्यांनी तें कौरवसैन्य क्षुब्ध केलें ! त्या

वेळी, राजा, प्रचंड वारे वृक्षांना कांपवितात, तद्वत् त्यांनी त्या कौरवसेनेला कांपविले; आणि मग ती अतिशय चवताळून पांडवांवर धावली. व त्यामुळे, समोरून वायूचा ओघ आला असता महानदी गंगा ज्याप्रमाणे खवळून जाते, त्याप्रमाणे पांडवांची ती प्रचंड सेना अतिशय खवळली आणि नंतर त्या उभय सेनांत भयंकर युद्ध सुरू झाले ! त्या समयी मद्रकांडील अनेक शूर महारथ पांडवांच्या महान् सेन्यावर धावून आले; आणि ' तो धर्म राज युधिष्ठिर कोठे आहे ? त्याचे ते शूर भ्राते कोणीही येथें दिसत नाहीत हें काय ? तमाच तो शैनेय सात्यकि, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीचे पुत्र, ते पराक्रमी पांचाल व महारथ शिखंडी हे आहेत कोठे ? ' असे ते मोठमोठ्यांनीं ओरडून विचारूं लागले ! राजा, अशा प्रकारें ते शूर मद्रकवीर मोठमोठ्यांनीं गर्जत असतां त्यांजवर द्रौपदीच्या महारथ पुत्रांनीं व युयुधानांनीं हल्ले केले आणि मग तुंबळ युद्ध होऊन त्यांत तुड्या सैन्यापैकीं कित्येक वीर रथांच्या चाकांम्वालीं चुरडून मेले; व प्रचंड ध्वज तुटून पडले त्यांम्वालीं कित्येक सांपडून नष्ट झाले ! राजा, तेव्हां रणांत मद्रकवीरांचा पांडवांनीं चोहोंकडे संहार उडविण्याचा सपाटा लाविला असें पाहून दुर्योधनांनीं सर्व मद्रकांना परत बोलाविलें, तथापि ते पुनः पांडवांवर तुटून पडले ! राजा, नंतर दुर्योधनांनीं फिरून त्यांना चार समजुतीच्या गोष्टी सांगून माघारें वळण्याविषयी आग्रह केला; परंतु त्या माद्रमहारथांपैकीं कोणीही त्याची आज्ञा पाळिली नाही ! तेव्हां गांधार-राजाचा पुत्र शकुनि हा समयावर लक्ष देऊन दुर्योधनाला म्हणाला, " राजश्रेष्ठा, आपल्या सर्वांच्या डोळ्यांमधेच मद्रकांचें सैन्य पांडवांच्या हातून नाश पावत आहे; रणांगणांत तूं सन्निध असतांना हें घडवें हें अगदीं अनुचित होय !

आपण प्रथम असा ठराव केला आहे कीं, सर्वांनीं एकवटून युद्ध करावें; आणि असें असतां शत्रूंनीं मद्रकांचा जो संहार चालविला आहे, तो तूं कमा वरें सहन करितोस ? "

दुर्योधन म्हणाला:—शकुने, मीं ह्यांना आधींच ' तुम्ही पांडवांशीं लढूं नका ' म्हणून सांगितलें असतां त्यांनीं माझ्या आज्ञेला जुमानिलें नाही व हें युद्ध आरंभिलें आहे. हे सर्व पांडवमेनेवर माझ्या अनुमतीवांचून चालून गेले व त्यामुळे मृत्यूच्या जवळचांत सांपडले !

शकुनि म्हणाला:—राजा, शूर वीर संकुद्ध झाले म्हणजे रणांगणांत धन्याचें शासन ऐकत नाहीत. ह्यास्तव आतां त्यांजवर आपणखी रागावूं नको. ह्या वेळीं त्यांची उपेक्षा करणें प्रशस्त नव्हे. म्हणून आपण सगळे रथ, अश्व व गज ह्यांसह वर्तमान एकत्र होऊन त्या महाधनुर्धर शल्यपदानुयायांना मदत करण्यास जाऊं आणि मोठ्या सावधगिरीनें परस्परांचें संरक्षण करूं.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें शकुनीनें बापण केलें तें श्रवण करून सर्वांनीं तसें करण्याचें ठरविलें व मद्रकवीर जेथें लढत होते तेथें ते सर्वजण तत्काळ गेले. तेव्हां दुर्योधनांनीं आपल्या बरोबर प्रचंड सैन्य घेतलें आणि तो सिंहासारखी गर्जना करून सर्व मेदिनीला दणाणून सोडीत समरांगणांत प्राप्त झाला. राजा, त्या समयी तुड्या सैन्यांत जिकडे तिकडे 'धरा मारा, तोडा, झोडा, कापा' असा एकसारखा महान् शब्द चालला होता ! ह्याप्रमाणें मग जेव्हां मद्रकवीरांनीं इतर कौरव-वीरांशीं एकत्र होऊन रणांगणांत पांडवांवर हल्ला केला, तेव्हां पांडवांनींही आपली पहिली युद्धरीति सोडिली व ते मध्यम नामक व्यूह रचून त्या सर्व कौरवसेन्यांवर चालू करून गेले ! राजा, मग मोठा घोर संग्राम मातला, आणि

त्यांत सर्व वीर हातघाईवर येऊन हां हां म्हणतां मद्रकसेन्याचा संहार उडाला ! ह्या प्रकारें आह्मी सर्व रणांगणांत असतां आम्हांसमक्ष जेव्हां ते शूर मद्रक रणांत पडले, तेव्हां सर्व पांडव एकत्र होऊन आनंदानें गर्जू लागले ! राजा, त्या समयी रणभूमीवर जिकडे तिकडे वीरांची कबंधें उठली; आदित्यमंडलाच्या मध्यापासून महान् उल्कांचा पात होऊं लागला; ज्यांचीं जोखडें व कणे मोडले होते अशा भय रयांनी त्याप्रमाणेंच महारथ्यांच्या शवांनी व मरून पडलेल्या घोड्यांच्या शरीरांनी मही झांकून गेली; आणि जुवांशी बद्ध असलेले अश्व सारथिहीन होत्साते योद्ध्यांचा घेऊन वायुवेगानें रणांगणांत उधळत आहेत असेंही सर्वत्र दृग्गोचर झालें ! राजा, त्या वेळीं कित्येक घोडे समरभूमीवर चाकें मोडलेलेच रथ ओढीत होते; कित्येक गळ्यांत दोरखंडें लोंबत होती त्यांसुद्धां दौडत होते; आणि जे रथी युद्धांत पडत होते, ते पाहून जणू काय सिद्धच क्षीणपुण्य होत्साते अंतरिक्षांतून कोसळत आहेत असें भासे ! राजा, मद्राधिपतीचे शूर पदानुगामी रणांत हात झाले तेव्हां आह्मी महारथ पांडुपुत्रांवर चालून गेलों; आणि तें पाहून, आमचा नाश करून जय मिळविण्याच्या इच्छेनें उलट तेही आम्हांवर मोठ्या वेगानें तुटून पडले ! मग बाणांचा व शंखांचा महान् शब्द मुरू झाला; त्यांनीं आम्हांवर नेम धरून बाणप्रहार करण्यास आरंभ केला; आणि प्रत्यंच्यांचा शब्द व सिंहनाद करून ते मोठमोठ्यानें ओरडू लागले ! राजा, नंतर आपल्या सैन्यांनीं सर्व परिस्थितीचा विचार केला; त्यांनीं रणांगणांत मद्रराजाला मरून पडलें पाहिलें व त्याप्रमाणेंच त्याच्या पदानुगम्यांच्या प्रचंड सैन्याची वाट लागलेली अवलोकन केली, तेव्हां त्यांची आपस्वी युद्ध करण्याची छाती होईना व तीं

पुनः युद्धापासून पराङ्मुख होऊन पळू लागली ! राजा, तितक्यांत विजयशाली पांडवांनी त्यांजवर हल्ला केला व त्यांचा घोर संहार आरंभिला; तेव्हां त्यांमध्ये मोठी धांदल उडून त्या दृढधनुष्यधारी पांडवांच्या हस्तांतून जे वीर उरले ते दशदिशांस पळून गेले !

## अध्याय एकोणिसावा.

—:—:—

### संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो—राजा धृतराष्ट्र, पांडवांनी रणांगणांत विजयशाली महारथ मद्राधिपती शल्याला जेव्हां वधिलें, तेव्हां तुझ्या पुत्रांचें व त्याप्रमाणेंच तुझ्या सैनिकांचें मन प्रायः युद्धापासून परावृत्त झालें ! राजा, अगाध समुद्रांत नौका फुटून व्यापारी लोक आश्रयहीन झाले म्हणजे त्यांची जशी विपत्तावस्था होते, तशी त्यांची विपत्तावस्था झाली ! अगाध सागरांत बुडणाऱ्या प्राण्यांनी परतीरास पोंचण्याची इच्छा करणें जसें व्यर्थ, तसेंच पांडवांना जिंकण्याची इच्छा करणें व्यर्थ होय, अशी त्यांची खातरी झाली ! महात्म्या धर्मराज युधिष्ठिरानें शूर मद्राधिपतीचा वध केला तेव्हां पांडवांच्या शरांनी घायाळ झाल्यामुळे अगदी घाबरून जाऊन, सिंहांनें आर्त करून सोडिलेल्या मृगांप्रमाणें किंवा भयलूंग वृषभांप्रमाणें अथवा शीर्णदंत हत्तींप्रमाणें अगदीं दीन होत्साते ‘आतां आमचें कोण रक्षण करील ! आतां आमचें कोण रक्षण करील !’ असें ओरडत युधिष्ठिराच्या हस्ते पराभव पावून आम्ही मध्याह्नी परत माघारे आलों ! राजा, शल्याचें निधन झाल्यावर आपलीं सैन्यें पुनः व्यवस्थितपणें एकत्र करावी किंवा कांही शौर्य दाखवून शत्रूंवर जरब बसवावी, असें कोणाही योद्ध्याच्या मनांत येईना ! राजा, भीष्म,

द्रोण व कर्ण हे रणांत पडल्यानंतर तुझ्या योद्ध्यांना जसें अनावर दुःख झालें व भय पडलें, तसेंच शल्याच्या मृत्यूमुळे पुनः आम्हां सर्वांना अनावर दुःख झालें व भय पडलें ! राजा, तो महारथ शल्य रणांगणांत पडतांच आमची सर्वांची जयाशा नष्ट झाली; आणि कौरवमेनें-तील महान् महान् वीर अतिशय जलाल अशा बाणादिकांच्या प्रहारांनीं ठार मेल्यामुळे किंवा विध्वस्त अथवा छिन्नविछिन्न झाल्यामुळे बाकी राहिलेले तुझे योद्धे भयभीत होत्साते पळून गेले ! राजा धृतराष्ट्र, त्या समयी कित्येक महारथ घोड्यांवर, कित्येक हत्तींवर व कित्येक रथांत बसून मोठ्या वेगानें रणांगणांतून निघून गेले आणि पायदळांनींही तोच कित्ता गिरविला ! त्या समयी पर्वतासारखे प्रचंड असे दोन हजार झुंजार हत्ती अंकुश व पायांचे अंगठे ह्यांनीं प्रेरित होत्साते समरांगणांतून पळून गेले ! ह्या-प्रमाणें तुझे सर्व योद्धे जिकडे वाट मिळाली तिकडे पळून गेले, आणि पळत असतां आधींच शरांनीं त्वस्त झालेले ते सर्व वीर अगदीं धापा टाकीत चालले होते ! असो; राजा, जेव्हां तुझ्या सैन्याचा पराभव होऊन तें निरुत्साह व भय होत्सातें पळून जात आहे असें पांडवांनीं अवलोकन केलें, तेव्हां त्यांनीं व पांचालांनीं जयाच्या इच्छेनें त्याजवर हल्ला केला आणि मग जिकडे तिकडे बाणांचा सणसणाट सुरू झाला; शूर वीर सिंहासारखे गर्जून लागले, व सर्वत्र घोर शंखनाद प्रवर्तला ! राजा, कौरवांचें सर्व सैन्य भयभीत होत्सातें पळून जाऊ लागलें, तेव्हां पांडव व पांचाल वीर हे आपसांत संभाषण करूं लागले ! ते म्हणाले:—अहो, आज सत्यशील युधिष्ठिर राजाचे सर्व शत्रु नष्ट होऊन त्यास निष्कण्टक राज्य प्राप्त झालें ! आज दुर्योधनाची तेजःपुंज राजलक्ष्मी अस्तास गेली ! आज धृतराष्ट्र राजा हा दुर्योधन

मेला असें ऐकून विह्वल होत्साता मूर्च्छित पडो ! आज त्याला कौतेय हा सर्व धनुर्धरांचा अग्रणी आहे हें विदित होईल ! आज तो दुष्ट व पातकी पुरुष आपणा म्वतःला दोष देऊन हळ-हळूं लागेल ! आज त्याला हितवादी विदुराच्या सत्य भाषणाचें स्मरण होईल ! आजपासून त्याला पांडुपुत्राच्या आज्ञेत रहावें लागेल; व पांडुपुत्रांना जीं दुःखें भोगावीं लागलीं त्यांचा त्याला अनुभव येईल ! आज धृतराष्ट्र राजाला कृष्णाचें महात्म्य समजेल ! रणांत अर्जुनाच्या धनुष्याचा घोर ध्वनि काय करितो ह्याची आज धृतराष्ट्राला कल्पना येईल ! आज रणांत अर्जुनाचें अस्त्रबल व बाहुवीर्य कितपत आहे ह्याचें त्याला बरोबर ज्ञान होईल ! इंद्रांन बल दैत्याला मारिलें तसें भीमसेनानें दुर्योधनाला आज ठार मारिलें म्हणजे धृतराष्ट्राला भीमाचा बाहुयुताप व घोर शक्ति हीं यथार्थ कळतील ! त्या वेळीं दुःशासनाचा वध करितांना भीमसेनानें जें अचाट कर्म केलें, तें ह्या भूतलावर त्या एकट्या महाशक्तिमान् भीमसेनावांचून दुसऱ्या कोणाच्याही हातून घडलें नसतें ! आज देवांनाही अजिंक्य अशा त्या मद्राधिपतीच्या मरणाची वार्ता ऐकून धृतराष्ट्राला धर्मराजाचा पराक्रम समजून येईल ! आज रणांत बलाढ्य माद्रीपुत्रांनीं शकुनीचा व दुसऱ्या महान् महान् सर्व वीरांचा वध केला म्हणजे धृतराष्ट्राला त्या माद्रीपुत्रांच्या बलाची कसोटी समजेल ! धनंजय, सात्यकि, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीचे पांचही पुत्र, माद्रीपुत्र नकुल-सहदेव, महाधनुर्धर शिखंडी व धर्मराज युधिष्ठिर ह्या महान् महान् वीरांनीं ज्या सैन्याचा आश्रय केला आहे, सर्व जगाचा स्वामी जो कृष्ण तो ज्यांचा शास्ता आहे, आणि धर्म हा ज्यांचा महान् आधार आहे, त्यांना जय कसा मिळणार नाहीं बरें ? भीष्म, द्रोण,

कर्ण, मदराज शल्य व तसेच दुसरे शता-  
वधि व सहस्रावधि शूर राजे ह्यांस रणांगणांत  
धर्मराजाशिवाय दुसरा कोणता योद्धा जिंक-  
ण्यास समर्थ झाला असता बरे ? अहो, धर्म-  
राजाला तरी हा जो अपूर्व विजय प्राप्त झाला  
ह्याचें मुख्य कारण तो सत्ययशोनिधि हृषी-  
केश कृष्णाचा दाम आहे हेंच होय !

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें पांडव व पांचाल  
वीर मोठ्या आनंदानें भाषण करित तुझ्या  
पळून जात असलेल्या सैन्यांचा पाठलाग करूं  
लगले ! त्या समयी वीर्यशाली धनंजयानें  
तुझ्या रथसैन्यावर हल्ला केला, माद्रीपुत्र व  
महारथ सात्यकि ह्यांनी शकुनीला गांठिले, आणि  
भीमसेनानें सर्व सैनिकांची दाणादाण करून  
सोडिली, तेव्हां ते सर्व भीमसेन्याच्या धास्तीनें  
चोहोंकडे पळत मुटले ! राजा, तेव्हां दुर्योधन  
हा आपल्या सारथ्याम हंसत हंसत म्हणाला,  
“ बा मूता, येथें धनुष्य धारण करून युद्धा-  
करितां सज्ज अमलेला पार्थ माझा अतिक्रम  
करील, ह्यास्तव सर्व सैन्यांच्या पिछाडीस माझा  
रथ घेऊन चल. सारथे, मी सैन्यांच्या  
पिछाडीस लढत असतां पांडुपुत्र माझ्या सभों-  
वर्ती मुळीच फिरकण्यास धनंजणार नाही;  
कारण महासागर हा जसा मीमेचें उलंघन कर-  
ण्यास असमर्थ होतो, तसा तो माझें उलंघन  
करण्यास असमर्थ होईल ! मूता, आपल्या  
महान् सैन्यावर पांडवांनी किती भयंकर हल्ला  
केला आहे तो पहा; ही पहा सैन्याच्या योगानें  
चोहोंकडे कशी धूळ उडत आहे ! एकसारख्या  
सिंहगर्जना कशा भयंकर चालल्या आहेत त्या  
ऐक ! ह्याकरिता, मूता, हळूहळू आपला रथ  
पाठीमागें घेऊन चल आणि सैन्यांची पिछाडी  
संभाळ ! मी युद्धाला सिद्ध झालें व पांड-  
वांना मी खुंटवून धरिलें, म्हणजे माझी सेना  
फिरून शौर्यानें लढण्यास धावून येईल ! ”

ह्याप्रमाणें, राजा धृतराष्ट्रा, शूराला व कुलीन  
वीराला सजेल असें दुर्योधनानें जें भाषण  
केलें, तें श्रवण करून त्याच्या सारथ्यानें सुव-  
र्णाच्या अलंकारांनीं व भरजरीच्या वस्त्रादि-  
कांनीं शृंगारलेले असे ते अश्व हळूहळू  
सैन्यांच्या पिछाडीस चालविले ! तेव्हां गज,  
अश्व व रथ ह्यांनी विमुक्त झालेलें एकवीस  
हजार पायदळ रणांगणांत जिवावर उदार होऊन  
लढत होतें; ते वीर नानाविध देशांत जन्मलेले  
अमून त्यांचें वास्तव्यही नानाविध देशांत होतें;  
आणि ते महान् कीर्ति मिळविण्याच्या हेतूनें  
समरभूमीवर शत्रूशीं युद्ध करित होते ! राजा,  
दुर्योधनाला अवलोकन करून त्या पदाति  
योद्ध्यांना मनस्वी वीरश्री चढली; आणि ते मोठ्या  
आवेशानें पांडवमेनेवर तुटून पडले असतां मग  
परस्परानीं परस्परंशीं जो घनघोर संग्राम आरं-  
भिला त्याचें वर्णन काय करावें ! ह्याप्रमाणें  
घोर रणकंदन माजलें तेव्हां भीमसेन व पार्थ  
घुष्टघुस्न ह्यांनी चतुरंग सैन्यासह नानादेशीय  
कौरवदळांवर चालून जाऊन त्यांचें निवारण  
केलें; पण इतक्यांत दुसरे पदाति रणांत भीम-  
सेनावर तुटून पडले आणि ते खाका वाजवून  
व टिन्या बडवून मोठ्या आवेशानें वीरलोक  
मिळविण्याकरितां भीमसेनाशी वीरश्रीनें चवता-  
ळून जाऊन लढूं लागले ! राजा, त्या समयीं  
कौरवसेना एकसारखी गर्जू लागली; मग ते  
वीर दुसरी कोणतीही गोष्ट बोलतना ! आणि  
त्यांनी भीमसेनेला समरभूमीवर कोंडून टाकून  
त्याजवर सर्व अंगाकडून भयंकर मारा चाल-  
विला ! राजा, ह्याप्रमाणें चोहोंकडून पायदळा-  
च्या टोळ्यांनी वेढा देऊन रणांगणांत भीम-  
सेनावर भयंकर शस्त्रप्रहार चालविले, तरी तो  
महान् वीर आपल्या स्थानापासून मैनाक पर्वता-  
प्रमाणे अणुरेणु ढळला नाही ! राजा, अशा  
प्रकारें त्या कौरवसेनिकांनीं आपल्याला मराडा

घातला असें पाहून भीमसेनाला मोठा क्रोध आला व नंतर तो लागलाच रथांतून खाली उतरला व पादचारी होऊन त्यानें एका सुवर्ण-मंडित प्रचंड गदेनें तुझ्या सैनिकांस ठार मारण्याचा सपाटा लाविला; तेव्हां जणू काय दंडधर यमच प्राण्यांचा संहार करीत आहे असें वाटलें ! राजा, भीमसेनानें त्या समयी अश्व, गज व रथ, ह्यांनी हीन झालेल्या त्या एकवीस हजार पायदलाला वधिलें आणि तो सत्यपराक्रमी महान् योद्धा धृष्टद्युम्नाला पुढें करून क्षणांत अग्रमार्गी प्राप्त झाला ! राजा धृतराष्ट्रा, ते सर्व कौरववीर रुधिरानें माखून रणांत पडलेले पाहिले, तेव्हां जणू काय अति-शय फुललेले कर्णिकार वृक्षच वाऱ्यानें कोसळून पडले आहेत असें दिसत होतें ! त्या सैनिकांच्या हातांत, कमरेला वगेरे नानाविध आयुधे अमून त्यांच्या कानांत बहुविध कुंडले झळकत होती; आणि ते अनेक देशांतून त्या ठिकाणीं प्राप्त झाले अमून त्यांच्या जातिही अनेक होत्या ! असो; ते सर्व वीर रणांत हत झाले तेव्हां ध्वजपताकांनीं झांकून गेलेलें व गदाप्रहारांनीं छिन्नभिन्न झालेलें ते पायदल सैन्य पाहून भीतीनें हृदय अगदी विदीर्ण झालें !

धृतराष्ट्रा, युधिष्ठिरादि महारथ पांडववीर तुझ्या सैन्यांतले महाधनुर्धर पळून जात आहेत असें पाहून त्यांचा पाठलाग न करितां आप-आपल्या सैन्यांसहवर्तमान महात्म्या दुर्योधनावर धावून गेले; परंतु समुद्राची सीमा जशी समुद्राचें उलंघन करूं शकत नाही, तसे ते वीर दुर्योधनाचें उलंघन करूं शकले नाहीत ! राजा, त्या वेळी तुझ्या पुत्राचा पराक्रम पाहून आम्हांला फारच चमत्कार वाटला ! कारण युधिष्ठिरप्रभृति एकत्र जमलेल्या त्या सर्व पांडवीय योद्ध्यांना एकट्या दुर्योधनाला मार्गे हटवितां आलें नाहीं ! राजा, त्या वेळीं दुर्योधनाचें

सैन्य विद्ध होत्सातें समीप मार्गी पळून जाण्याच्या बेतांत होतें, त्याला दुर्योधन म्हणालाः—वीरहो, भूतलावर किंवा पर्वतावर असा एकही प्रदेश मला दिसत नाही की, ज्या ठिकाणी गेल्यानें तुमची पांडवांपासून सुटका होईल ! ह्यासाठी तुम्ही पळून जातां ह्यांत काय हंशील आहे ? अहो, आतां पांडवांचें सैन्य अगदी थोडें राहिलें आहे व कृष्णाजुन हे अतिशयित घायाळ झाले आहेत हें लक्षांत आणा. सांप्रत जर आपण सर्व ह्यांच्याशीं नेटानें युद्ध करूं तर खचीत आपणांस जय मिळेल ! अहो, जर तुम्ही फाटाफूट करून पळून जाल, तर ज्यांचें तुम्ही अनिष्ट केलें आहे, ते पांडव तुमचा पाठलाग करून तुम्हांस वधिलील ! ह्यास्तव तुम्ही युद्ध करून मरावें हेंच श्रेयस्कर होय ! ह्या स्थळी प्राप्त झालेल्या सर्व क्षत्रियांनो, मी काय सांगत आहे हें नीट ऐका. अहो, शूर किंवा अशूर ह्या दोघांनाही जर यमा-पासून निश्चयानें मरण येतें, तर असा कोणता मूर्ख क्षत्रिय युद्ध न करितां मरण्यास सिद्ध होईल बरें ! अहो, क्रुद्ध झालेल्या भीमसेनाच्या अभिमुख उभें राहणें ह्यांतच आपलें कल्याण आहे ! क्षात्रधर्मानें युद्ध करावें व संग्रामांत पडावें हें अत्यंत सुखावह होय ! मर्त्य पुरुषानें रणांतच अवश्य मरावें; घरांत कधीही मरूं नये ! क्षात्रधर्मानें लढावें व दुसऱ्यास मारावें किंवा स्वतः मरावें हा सनातन धर्म होय ! जर शत्रूचा वध घडला तर येथेंच सुख मिळेल व स्वतःस मरण आलें तर मेल्यावर स्वर्गाचा लाभ होईल ! कौरवहो, युद्धधर्माचाचून दुसरा कोणताही मार्ग आपणांस सुखानें स्वर्गास पोंचाविणार नाही ! अहो, युद्धांत पडलेला मनुष्य फार त्वरित त्या श्रेष्ठ लोकीं जातो व विविध भोग भोगितो !

राजा, ह्याप्रमाणें दुर्योधनाचें भाषण श्रवण

करून, पळून जाण्यास सिद्ध झालेल्या भूपतींना मोठी उमेद आली; व त्यांनीं दुर्योधनाचा गौरव करून, पुनः आपणांवर चालून येणाऱ्या पांडवांवर हल्ला केला ! राजा, नंतर तत्काळ पांडवांकडील योद्ध्यांना मोठा संताप आला व ते जय मिळविण्याच्या उत्कट इच्छेनें व्यहरचना करून त्या कौरवसैन्यावर चालून गेले ! राजा, तेव्हां वीर्यवान् धनंजय तिन्ही लोकांत प्रख्यात अशा त्या आपल्या गांडीव धनुष्याचें आस्फालन करून आपल्या रथांतून शत्रूवर धावून गेला; त्याप्रमाणेंच नकुलसहदेवांनीं शकुनीवर हल्ला केला; आणि महाबल सात्यकिही मोठ्या आवेशानें तुझ्या सैन्यावर तुटून पडला !

## अध्याय विसावा.

—:०:—

### शाल्वाचा वध.

संजय सांगतो:—राजा, कौरवांचें सैन्य पुनः युद्धाला तयार होऊन मार्गे वळलें, तेव्हां स्लेच्छांचा अधिपति शाल्व हा क्रोधायमान होऊन पांडवांच्या अफाट सैन्यावर धावून गेला. त्या वेळीं तो एका पर्वतासारख्या प्रचंड अशा धुंद व मदोन्मत्त हत्तीवर आरूढ झाला असून, तो हत्ती ऐरावतासारखा प्रख्यात व शत्रूंचे समुदाय ठार करणारा होता. राजा, तो हत्ती मोठ्या प्रतापशाली कुलांत जन्मला असून दुर्योधन हा त्याची नेहमी पूजा करीत असे; त्याच्यावर सर्व प्रकारची युद्धसामग्री व इतर उपकरणें यथास्थित घातलीं होती; आणि युद्धकलाप्रवीण पुरुषांनीं त्यास उत्तम शिकवून तयार केलें होतें. ह्यास्तव समरामध्ये त्याजवर बसून शाल्व राजा हा नेहमी युद्ध करीत असे. राजा, रात्र संपण्याच्या सुमारास सूर्य जसा उदयपर्वतावर आरूढ होतो, तसा तो शाल्व

राजा त्या श्रेष्ठ हत्तीवर आरूढ झाला व तो रणांगणांत एकत्र जमलेल्या पांडुसुतांवर चालून गेला. राजा, नंतर त्या शाल्वाचें व पांडवांचें मोठें घनघोर युद्ध झालें. तेव्हां शाल्वानें महेंद्राच्या वज्राप्रमाणें कतिशय कठोर व धार देऊन तीक्ष्ण केलेले बाण पांडवांवर सोडून त्यांस विदीर्ण केलें; आणि त्यानें घोर समरांत बाणांचा भडिमार करून शत्रूंकडील योद्ध्यांना यमसदनी पाठविण्याचा सपाटा लाविला, तेव्हां पूर्वी देवदानवांच्या संग्रामांत ऐरावतावर आरूढ झालेला इंद्र घोर प्रताप गाजवीत असतां ज्याप्रमाणें देवांना किंवा दानवांना त्याच्या ठिकाणीं वैगुण्य म्हणून कांहींएक दिसलें नाहीं, त्याप्रमाणें शाल्व राजाच्या ठिकाणीं कौरवांना किंवा पांडवांना कांहींएक वैगुण्य दिसलें नाहीं. राजा धृतराष्ट्रा, त्या समयीं पांडव, सोमक व मृंजय ह्यांना हा एकत्र हत्ती महेंद्राच्या हत्तीप्रमाणें सहस्रावधि रूपें घेऊन सर्वत्र आपल्या समीप संचार करीत आहे असें दिसे. त्या हत्तीनें शत्रुसैन्याला क्षुब्ध केलें तेव्हां तें मृततुल्य भासलें. त्या वेळीं पांडवांचें सैन्य इतकें घाबरलें कीं, तें धूम ठोकून पळत सुटलें व पळत असतां त्यांतील सैनिकांनीं परस्परांना पायांवालीं तुडवून ठार केलें ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या नरवीर शाल्वानें पांडवांची ती प्रचंड चमू उधळून लाविली आणि तिला त्या महान् हत्तीचा वेग सहन न झाल्यामुळे ती एकदम चारी दिशांस पळून गेली. अशा प्रकारें त्या वेगवान् सेनेचा शाल्व राजानें मोड केला, तेव्हां तुझ्या सैन्यांतील प्रमुख वीरांना मोठा आनंद झाला व त्यांनीं शाल्व राजाची वाहवा करून चंद्रासारखे शुभ्र शंख वाजविण्यास प्रारंभ केला.

ह्याप्रमाणें कौरवांना मोठा आनंद होऊन ते मोठमोठ्यानें गर्जावयास व शंख वाजवावयास लागले, तेव्हां पांडवमृंजयांचा मेनापति

महात्मा पांचालराजपुत्र धृष्टद्युम्न हा अतिशय खवळला; आणि पूर्वी इंद्राशी युद्ध करीत असता इंद्राचें वाहन जो ऐरावत त्यावर जसा जंभामुर धावून गेला, तसा तो पांडवीय योद्धा तत्काळ शाल्वाच्या त्या हत्तीवर धावून गेला ! त्या समर्थी रणांगणांत तो आपणावर मोठ्या वेगानें धावून येत आहे असे पाहून शल्व राजानें तत्काळ त्याला ठार मारण्याकरितां आपला हत्ती त्याच्यावर घातला ! तेव्हां तो हत्ती आपल्यावर उसळून येत आहे असें अवलोकन करून धृष्टद्युम्नानें अशीसारखे जलाल व लोहाराकडून अतिशय धार दिलेले तीन अतिभयंकर नाराच बाण त्याजवर सोडून त्यास विद्ध केले; आणि मग त्या महात्म्या पांडवीय वीरानें आणखी पांचशें उत्कृष्ट नाराच बाण त्याच्या गंडस्थळावर मारिले ! राजा, ह्याप्रमाणें धृष्टद्युम्नानें बाण-प्रहारांनीं त्या शल्व राजाच्या कुंजराला अतिशय बाणविद्ध केले, तेव्हां तो महान् हत्ती मोहरा फिरवून अतिशय पळत सुटला ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या पांचाल वीरानें बाणांनीं जर्जर करून शल्व राजाचा तो हत्ती मोठ्या सपाट्यानें उधळून लाविला असतां शल्व राजानें त्याला फिरून मागे परतविलें; आणि तत्काळ शूल व अंकुश ह्यांनीं त्यास चेव आणून त्या पांचाल योद्ध्याच्या रथावर उडी घालण्याविषयीं त्यास इशारा दिला व त्याप्रमाणें त्यानें तत्काळ केले ! तेव्हां धृष्टद्युम्न घाबरला आणि त्यानें ताबडतोब रथातील गदा घेतली व तो रथांतून मोठ्या वेगानें भूतलावर उडी टाकून उभा राहिला ! इकडे तो हत्ती धृष्टद्युम्नाच्या रथावर तुटून पडला असतां त्यानें तो सुवर्ण-मंडित रथ घोडे व सारथि ह्यांसह आपल्या सोंडेनें उचलून अंतरिक्षांत फेंकिला आणि भूतलावर आपटून त्याचें चूर्ण करून टाकिलें व

तो मोठमोठ्यानें गर्ज लागला ! ह्याप्रमाणें त्या महाद्विपानें धृष्टद्युम्नाला प्राणसंकटांत घातलें तेव्हां भीमसेन, शिखंडी व सात्यकि हे त्या हत्तीवर मोठ्या त्वेषानें धावले. त्या समर्थी तो हत्ती कावराबावरा होऊन चौहोंकडे उड्या टाकीत असतां त्या भीमसेनादिक रथवीरांनी त्याजवर एकदम घोर शरांचा भडिमार चालवून त्याचा वेग खुंटविला आणि मग तो रणांगणांत नुसता चालत राहिला ! तें पाहून, राजा, सूर्य जसा किरणजालांनीं दशदिशा भरून काढितो, तद्वत् शल्व राजानें बाणांचा घोर वर्षाव आरंभून दशदिशा भरून काढिल्या; आणि त्यामुळे पांडवांचें रथसैन्य भराभर मरूं लागलें व जिकडे वाट सांपडेल तिकडे पळून गेलें ! अशा प्रकारचें शाल्वाचें अनुपम सामर्थ्य अवलोकन करून पांडवसैन्यांत मोठा हाहाकार उडाला आणि मग महान् महान् पांचाल व सृजय ह्यांनीं रणांगणांत चौहोंकडून त्या हत्तीला कोंडून टाकिलें. मग शूर धृष्टद्युम्न हा तत्काळ आपली पर्वतशृंगतुल्य गदा उचलून मोठ्या आवेशानें त्या कुंजरश्रेष्ठावर धावून गेला; आणि पर्वतासारखा अवाढव्य व मेघासारखा मदलाव करणारा अशा त्या गजावर गदाप्रहार करून त्यानें एकदम त्याचें गंडस्थळ भेदिलें. तेव्हां मग तो गज मुखावाटे रक्त ओकीत व आक्रोश करीत—धरणीकंप झाला असतां महान् गिरि जसा धाडकन् कोसळतो तसा—रणांगणांत धाडकन् कोसळला ! राजा, ह्याप्रमाणें तो पर्वतासारखा प्रचंड हत्ती भूतलावर पडला तेव्हां तुझ्या सैन्यांत महान् आकांत झाला; आणि तितक्यांत सात्यकीनें एक जलाल भल्ल बाण सोडून शल्व राजाचें मस्तक छेदिलें ! तेव्हां इंद्रानें वज्रप्रहार करून तोडून टाकिलेल्या पर्वताच्या शिखराप्रमाणें त्या शल्व राजाचें धड भूमीवर पतन पावले !



## अध्याय एकविंशत्वा.

—०—

## सात्यकि व कृतवर्मा ह्यांचें युद्ध.

भंजय सांगतो:—हे महाराजा, समरांगणास शोभविणारा तो शूर शाल्व राजा मरण पावल्यानंतर. वाच्याने जसा महान् वृक्ष भग्न होतो तसें तुझे सैन्य तत्काळ भग्न झालें ! ह्याप्रमाणें तुझे सैन्य विदीर्ण होऊन पळूं लागलें तेव्हां शूर व बलाढ्य अशा महारथ कृतवर्म्याने त्यास थांबवून धरिलें; आणि शत्रूंनी रणांगणांत घोर शरांचा भडिमार चालविला असतांही तो कृतवर्मा पर्वतासारखा अडळ राहिला आहे असें पाहून, पळून जात असलेले ते शूर कौरववीर एकदम मागे परतले; आणि मग कौरव व पांडव ह्यांचा घोर संग्राम चालू झाला ! राजा, त्या समयी कौरव हे रणांत मारूं किंवा मरूं असा निर्धार करून पांडवांशी लढत होते. तेव्हां सात्वत कृतवर्म्याने पांडवांशी आश्चर्यकारक युद्ध केलें. त्यानें एकट्यानें त्या दुर्धर पांडुसेनेचें निवारण केलें आणि तें पाहून मग उभयतांच्या सुहृदांना विलक्षण वीरश्री चढली व त्यांनीं घोर पराक्रम केला; परंतु त्यांतही अखेरीस कौरवदळाची सरशी झाली व त्यांजकडील त्या विजयी वीरांनी अशी घोर गर्जना केली की, ती अगदी स्वर्गमंडलास जाऊन पोचली ! हे भरतश्रेष्ठा, त्या सिंहगर्जेनें पांचाल घाबरले; पण इतक्यांत महाबाहु शैनेय सात्यकि त्या स्थळीं प्राप्त झाला आणि त्यानें महापराक्रमी क्षेमधूर्ति राजाला गांठून त्याजवर सात जलाल बाण सोडिले व त्यास यमसदनी पाठवून तो कौरवांवर आणखी चाल करून गेला ! ह्याप्रमाणें तो विजयशाली सात्यकि जलाल बाणांचा भडिमार करीत आपणावर येत आहे असें पाहून महाबुद्धिमान् हार्दिक्य कृतवर्म्याने मोठ्या त्वेषानें त्याजवर उलट चाल

केली; आणि मग त्या महावीर्यशाली महारथ सात्वत योद्ध्यांचें दारुण युद्ध जुंपून त्यांनी परस्परांवर महान् महान् शस्त्रास्त्रांचा मारा आरंभिला ! राजा, त्यांचें तें अद्वितीय रण-कौशल्य अवलोकन करून सर्व मंडळी स्तब्ध झाली; आणि पांडव, पांचाल व दुसरे महान् महान् भूपाळ तें घोर रणकंदन पहात उभे राहिले ! त्या समयी मदोन्मत्त कुंजरांप्रमाणें त्या वृष्णि व अंधक ह्या कुलांतल्या महारथांनी परस्परांवर मोठ्या शौर्यानें नाराच व वत्समदंत बाणांची उग्र वृष्टि आरंभिली आणि नाना-प्रकारचीं मंडलें करीत ते परस्परांस पुनः पुनः बाणाच्छादित करूं लागले ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या वेळीं त्या उभयतांच्या धनुष्यांपासून मोठ्या वेगानें व बळानें जे बाणांचे लोट एकसारखे उमळत होते, ते पाहून जणू काय अंतरिक्षांत टोळांचे जमाव मोठ्या त्वरेनें धावत आहेत असें आह्मांस वाटलें. त्या प्रसंगीं त्या एकट्या सत्यपराक्रमी सात्यकीला कृतवर्म्यानें गांठलें आणि त्याजवर जलाल बाणांचा वर्षाव करून चार बाणांनीं त्याचे चारही घोडे मारिले ! तेव्हां त्या महाबाहु सात्यकीला विलक्षण क्रोध चढला ! जणू काय त्या वीरकुंजराला कृतवर्म्यानें अंकुशच टोंचला असे वाटलें आणि मग त्यानें तत्काळ आठ भयंकर बाणांनी कृतवर्म्याला विधिलें. नंतर कृतवर्म्यानें सहाणेवर धार लाविलेले तीन बाण सात्यकीवर सोडिले आणि आणखी एक बाण टाकून त्याचें धनुष्य छेदिलें ! राजा, तेव्हां त्या शिनिपुंगव सात्यकीनें तें छिन्न श्रेष्ठ धनुष्य फेंकून दिलें आणि तत्काळ दुसरे धनुष्य धारण करून त्यास बाण जोडिला; व तो अतिरथी मोठा क्षुब्ध होऊन तत्काळ कृतवर्म्यावर तुरून पडला ! नंतर त्यानें अतिशयित पाजविलेले दहा बाण कृतवर्म्यावर सोडून त्याचा सारथि,

अश्व व ध्वज ह्यांचा विध्वंस उडविला ! मग त्या महाधनुर्धर महारथ कृतवर्म्याने आपला मुवर्णमंडित रथ अश्वहीन झाला असे पाहून मोठ्या क्रोधाने शूल उचलून बाहुबलाने तो सात्यकीला ठार मारण्याकरिता त्याजवर फेंकिला ! परंतु रणांगणांत सात्यकीने त्याजवर घोर शरांचा भडिमार करून त्याची लकलें उडविली आणि तें पाहून तो मधुकुल्योत्पन्न कृतवर्मा गांगरून गेला ! नंतर कृतवर्म्याने पुनः स्थावरूढ होऊन सात्यकीच्या वक्षस्थळी एक भल्ल बाण मारिला; पण इतक्यांत युयुधानाने त्याला पुनः अश्वहीन व सारथिहीन करून विरथ केले. मग कृतवर्मा भूतलावर उतरला; आणि ह्याप्रमाणे त्या द्वैरथयुद्धांत कृतवर्म्याचा रथ पुनः भग्न झाला असे पाहून सर्व कौरव-योद्ध्यांची धावीं दणाणून गेली व तुझा पुत्र दुर्योधन अत्यंत घाबरला !

नंतर, राजा, कृतवर्म्याची ती विपन्नावस्था पाहून सात्यकीला वधण्याच्या हेतूने कृपाचार्य पुढें झाला आणि कृतवर्म्याला रथांत घालून सर्व धनुर्धरांच्या समक्ष रणांगणांतून निघून गेला ! राजा, अशा प्रकारें कृतवर्मा विरथ होऊन अखेरीस रणांतून निवृत्त झाला तेव्हां चोहोंकडे सात्यकीचा पूर्ण दारारा बसला व मग दुर्योधनाच्या सर्व सेनेनें पळ काढिला ! त्या समयी रणभूमीवर सर्वत्र धूळ उडून निबिड अंधकार मातल्यामुळे कौरवांची सेना पळत आहे हें शत्रूंना दिसलें नाही; आणि त्यामुळे एकटा दुर्योधनशिवायकरून बाकीची सर्व कौरवचमू धूम ठोकून पळून गेली ! तेव्हां दुर्योधनाने आपले सैन्य पळू लागले असे पाहून त्या सर्वांना त्यानें एकट्यानें मोठ्या वेगाने धावून जाऊन थांबवून धरिलें आणि त्यानें मोठ्या क्रोधाने सर्व पांडवसैन्यावर भयंकर शरवर्षाव आरंभिला ! त्या समयी त्यानें पार्षत धृष्टद्युम्न,

शिखंडी, द्रौपदीचे पुत्र, पांचाल, केकय, सोमक व संजय ह्यांचे समुदाय, ह्या सर्वांवर मोठ्या शौर्यानें जलालबाणांचा वर्षाव केला; आणि ज्याप्रमाणें यज्ञांत मंत्रांनीं पवित्र केलेला अग्नि आपल्या प्रदीप्त कांतीनें झळाळत असतो, त्याप्रमाणें तो महाबल धार्तराष्ट्र रणांगणांत, त्याजवर ते सर्व पांडववीर महान् शरवृष्टि करीत असतां, आपल्या दिव्य कांतीनें अत्यंत झळाळू लागला ! राजा, त्या समयी पांडवांना तो दुर्योधन प्रति-अंतकच भासला व कोणालाही त्याजवर चाल करून जाण्याला छाती झाली नाही; इतक्यांत हार्दिक्य कृतवर्मा दुसऱ्या रथांत आरूढ होऊन त्या स्थळी आला !

## अध्याय बाविसावा.

—:०:—

### संकुलद्वंद्वयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, त्या समयी तुझा पुत्र महारथ दुर्योधन हा रथावर आरूढ होतसाता जिवावर अगदीं उदार होऊन लढू लागला, तेव्हां जणू काय रणांगणांत प्रतापशाली रुद्रच युद्ध करीत आहे असें भासलें. तेव्हां त्यानें शत्रूवर घोर शरवर्षाव चालविला असतां जणू पर्वतावर पर्जन्याच्या सरीच कोसळत आहेत असें वाटलें ! त्या समयीं दुर्योधनाने पांडवचमूवर जो बाणांचा भडिमार केला, त्यानें सर्व भूतल झांकून गेलें. त्या वेळीं पांडवांच्या सैन्यसागरांत एकही नर, गज किंवा अश्व बाणविद्ध झाल्यावांचून राहिला नाही. जो जो वीर रणांगणांत माझ्या दृष्टीस पडला, तो तो तुझ्या पुत्राचे हस्ते नखशिखांत बाणांनीं खचून भरला होता ! त्या समयीं सैन्याच्या पावलांनीं रणभूमीवर जी धूळ माजली, तिनें ज्याप्रमाणें सर्व सैन्य अदृश्य झालें, त्याप्रमाणें महात्म्या दुर्योधनाच्या बाणांनीं,

सर्व रणांगण अदृश्य झाले. राजा, तेव्हां दुर्योधनांनं भराभरा जे बाण सोडिले, त्या बाणांनीं सर्व पृथ्वी बाणमय झालेली दिसली ! राजा, त्या वेळीं कौरवांचे व पांडवांचे हजारो योद्धे समरांगणांत होते, पण त्या सर्वांमध्ये एक दुर्योधन मात्र खरा वीर आहे, असा माझा समज झाला ! त्या समयी मला मोठा विलक्षण चमत्कार वाटला; तो हा की, त्या एकट्या दुर्योधनावर चालून जाण्याला त्या एकवटलेल्या सर्व पांडुपुत्रांना छाती झाली नाही ! तेव्हां रणांगणांत दुर्योधनानें युधिष्ठिरावर शंभर बाण सोडिले, भीमसेनावर सत्तर सोडिले, सहदेवावर सात सोडिले, नकुलावर चौसष्ट सोडिले, धृष्टद्युम्नावर पांच सोडिले, द्रौपदीच्या पुत्रांवर सात सोडिले व सात्यकीवर तीन सोडिले आणि त्यांनीं एक भल्ल बाण मारून सहदेवाचें धनुष्य छेदिलें ! राजा, त्या वेळीं त्या प्रतापशाली माद्रीपुत्रानें तें छिन्न धनुष्य फेंकून दिलें आणि दुसरे प्रचंड धनुष्य धारण करून तो दुर्योधनावर धावून गेला आणि त्यांनीं रणांगणांत दुर्योधनाला दहा बाणांनीं विंधिलें ! राजा, तितक्यांत महाधनुर्धर नकुलानें त्यावर भयंकर नऊ बाण टाकिले व तो मोठमोठ्यानें गर्जलागला; आणि मग सर्व पांडवीय वीरांनीं दुर्योधनावर बाणांचा भडिमार चालू केला ! तेव्हां सात्यकीनें बांकदार पेच्यांच्या एका बाणानें दुर्योधन राजाला विंधिलें, द्रौपदीच्या पुत्रांनीं त्याजवर ज्याहात्तर बाण सोडिले, धर्मराजानें त्याला पांच बाण मारिले, आणि भीमसेनानें त्याजवर ऐशीं बाण टाकून त्यास अगदीं जजेर केलें ! राजा, त्या वेळीं दुर्योधनावर सर्व अंगांनीं एकसारखा बाणांचा वर्षाव होत होता आणि सर्व सैन्य त्याजकडे पहात होतें, तरी तो स्वस्थानापासून अगुरेणु ढळला नाही ! तेव्हां त्यानें जें कांहीं हस्तकोशल्य, अस्त्रनैपुण्य व

अतुल बल व्यक्त केलें, तें केवळ अद्भुत होय, असेंच सर्वासवाळें ! राजा, त्या समयी कौरवांकडील वीर कांहीं फारसे लांब पळालेले नव्हते; त्यांनीं थोड्याशा अंतरावर जाऊन पाहिलें तों त्यांस आपणांमध्ये दुर्योधन राजा दिसला नाही आणि त्यामुळे ते कवचधारी वीर तत्काळ परत आले. राजा, मग दोन्ही दळांचा भयंकर संग्राम चालू झाला; आणि वरसात मुरू होण्याच्या समयी समुद्र खवळला म्हणजे तो जसा घोर गर्जना करितो, तशा त्या दोन्ही सेना घोर गर्जना करूं लागल्या. राजा, कौरवांचे योद्धे रणांगणांत परतल्यावर प्रथम त्या विजयशाली दुर्योधन राजाच्या समीप प्राप्त झाले; आणि मग ते सर्व महाधनुर्धर कौरववीर आपणांवर चालून येणाऱ्या पांडवांवर तुटून पडले. राजा, त्या समयी द्रोणपुत्र अध्वत्याम्यानें संकुद्ध झालेल्या भीमसेनाला मागे हटविलें आणि मग दोन्ही सैन्यांनीं एकमेकांवर इतका दारुण शरवर्षाव आरंभिला की, त्या समयी दिशा व उपदिशा मुळाच ओळखतनाशा झाल्या ! तेव्हां ते दोन्ही दुर्धर वीर भयंकर प्रताप गाजवीत रणांगणांत एकमेकांवर मोठ्या शौर्यानें चढ करूं लागले आणि प्रत्येकाच्या आस्फालनानें ज्यांच्या हातांच्या त्वचा कठीण झाल्या होत्या अशा त्या उभयतां योद्ध्यांनीं सर्व भूमंडल त्रस्त करून सोडिलें. राजा, त्या वेळीं शकुनीनें रणांगणांत युधिष्ठिरावर हल्ला केला आणि त्या बलिष्ठ सुबलसुतानें त्या पांडुपुत्राचे चारही घोडे ठार मारून मोठ्यानें गर्जना आरंभिली व त्यामुळे पांडवांची सर्व सैन्ये घाबरून गेली. इतक्यांत प्रतापशाली सहदेव समरांगणांत पुढें झाला आणि त्यानें अजिंक्य धर्मराजाला आपल्या रथांत घेऊन रणभूमीवरून एकीकडे नेलें ! राजा, नंतर धर्मराज युधिष्ठिर दुस्त्या

रथावर आरूढ झाला व त्याने शकुनीवर प्रथम नऊ व मग पुनः पांच बाण सोडिले आणि तो सर्वधनुर्धराप्राणी वीर मोठमोठ्याने गर्जू लागला. त्या समयी त्या दोघां वीरांचे अतिशय भयंकर व विचित्र युद्ध झाले आणि ते पाहून प्रेक्षकांना मोठे कौतुक वाटले व सिद्धचारण ते पाहण्यांत अगदीं गर्क झाले. राजा, तितक्यांत महाप्रतापी उलूक हा महाधनुर्धर व विजयशाली नकुलावर बाणांचा भडिमार करीत धावून गेला; परंतु ते पाहून शूर नकुलाने रणांगणांत त्या सौबलसुत उलूकावर चोहोंकडून शरांचा घोर वर्षाव चालविला आणि त्यास खुंटवून टाकिले! त्या वेळीं त्या दोघांही कुलवान शूर महारथांनीं भयंकर युद्ध आरंभिले आणि ते परस्परांस घायाळ करू लागले. त्याप्रमाणेच त्या समयी शूर शैनेय सात्यकीशीं कृतवर्मा लढू लागला; व त्या उभयतांचा तो घोर संग्राम पाहून, जणू काय अमरराज इंद्र हा बल देत्याशीच लढत आहे असें भासले! इकडे दुर्योधनाने घोर संग्रामांत धृष्टद्युम्नाचे धनुष्य छेदिले आणि त्यास धनुर्हीन करून त्याजवर जलाल बाणांचा भडिमार आरंभिला. तेव्हां धृष्टद्युम्नाने दुसरे प्रचंड धनुष्य धारण केले आणि सर्व धनुर्धरांच्या समक्ष दुर्योधन राजाशीं घोर संग्राम चालविला! राजा, त्या समयी त्या प्रबळ योद्ध्यांचे जे दारुण युद्ध झाले, ते पाहून, ज्यांच्या गंडस्थळांतून मदःत्वाव चालला आहे असे दोन मदोन्मत्त जवान हत्तीच एकमेकांशीं झगडत आहेत असें भासू लागले! राजा त्या समयी गीतमाने शुब्ध होऊन रणांगणांत द्रौपदीच्या महाप्रतापी पुत्रांवर हला केला आणि अनेक बांकदार पेऱ्यांचे बाण सोडून त्यांस विधिले. तेव्हां द्रौपदीचे पांच पुत्र व कृपाचार्य ह्यांचे जे युद्ध झाले, ते पाहून, जणू पांच इंद्रिये

व देही (प्राणी) ह्यांचेच युद्ध चालले आहे असा भास झाला! राजा, ह्याप्रमाणे कृपाचार्य व द्रौपदीपुत्र ह्यांचा भयंकर व अनिवार संग्राम झपाट्याने चालतां चालतां, अखेरीस, अज्ञान प्राणी ज्याप्रमाणे इंद्रियांकडून जर्जर होतसाता अतिदीन होतो, त्याप्रमाणे तो कृपाचार्य द्रौपदीपुत्रांच्या शरप्रहारांनीं जर्जर होऊन अतिदीन झाला; परंतु तशांतही त्याने पुनः द्रौपदीपुत्रांवर चढ केली व तो रणांगणांत त्यांशीं लढू लागला! राजा, अशा प्रकारचे विचित्र युद्ध कृपाचार्य व द्रौपदीपुत्र ह्यांमध्ये झाले; आणि इंद्रिये जशीं पुनःपुनः उसळ्या मारून प्राण्यास पीडा देतात, तसे ते द्रौपदीचे पुत्र त्या कृपाचार्यास पीडा देऊ लागले; आणि विचारी प्राणी मनोनिग्रह करून इंद्रियांना आवारितो, तद्वत् तो कृपाचार्य त्या द्रौपदीमुतांना आवरून लागला! राजा, तेव्हां दोन्ही सैन्ये फारच निकरांनीं लढू लागली! पायदळांनीं पायदळांशीं घोर युद्ध आरंभिले; हत्तींनीं हत्तींवर हल्ले केले; घोडे घोड्यांवर तुटून पडले; आणि रथ्यास्थ्यांचे निकरांचे युद्ध सुरू झाले! त्या समयी दोन्ही दळांत पुनः भयंकर व दारुण संग्राम चालू झाला, तेव्हां ते महापराक्रमी कुरुपांडववीर रणांगणांत एकमेकांना गांठून युद्ध करीत असतां त्यांचे जे युद्ध चालले होतें, ते पाहून केव्हां केव्हां मोठे आश्चर्य वाटे, केव्हां केव्हां भीती उत्पन्न होई, आणि केव्हां केव्हां तर धास्तीनें अगदीं छातीच फाटे! राजा, अशा रीतीनें घोर युद्ध चालतां चालतां त्यांत परस्परांनीं परस्परांना विद्ध केले व ठार मारिले! त्या वेळीं दोन्ही दळांत लगट होऊन घोर युद्ध झाले तेव्हां अश्वादिकांच्या पावलांनी, रथांच्या चाकांनी व हत्तींच्या श्वासोच्छ्वासांनीं अत्यंत धूळ उडाली आणि वाऱ्याने ती आकाशभर पसरून संध्याकाळच्या अन्ध्राप्रमाणे सर्वत्र निबिड

अंधःकार पडला व सूर्याची सर्व प्रभा लोपली. तेव्हां जिकडे तिकडे अतिशय काळोख झाल्यामुळे रणभूमी व तिच्यावर लढत असलेले शूर महारथ योद्धे दिसतनासे झाले; परंतु इतक्यांत असा चमत्कार झाला की, क्षणांत भूपृष्ठावर वीरांच्या रुधिराचा सडा पडून सर्व धूळ खाली बसली आणि पुनः सर्व प्रदेश निर्मळ व स्वच्छ दिसू लागला ! राजा, ह्याप्रमाणे ती भयंकर धूळ नाहीशी झाली तेव्हां मला फिरून महान् महान् वीरांची द्वेद्वे मध्याह्न समयी आपआपल्या शक्त्यनुरूप व शौर्यानुरूप एकमेकांशी दारुण युद्ध करीत आहेत असे आढळले ! त्या वेळीं जो भयंकर शस्त्रसंपात चालला होता, त्याच्या योगाने तेथे अतिशय तेज झळाळत होते; आणि अरण्यामध्ये कळकीच्या प्रचंड बेटास आग लागली असतां जसा घोर शब्द चालू होतो, तसा तेथे शरप्रहारांनी घोर शब्द चालला होता !

### अध्याय तेविसावा.

—:०:—

#### संकुलयुद्ध.

मंजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणे कौरव-पांडवांचे अतिशय दारुण युद्ध चालले असतां अश्वेरीस पांडवांनी तुड्या सेनेची दाणादाण उडविली. तेव्हां तुड्या सेनेतले महारथ पळून जाऊ लागले असतां तुड्या पुत्रांनी त्यांस मोठ्या प्रयत्नाने मागे परतविले आणि मग त्यांनी पुनः पांडवांच्या सैन्याशी युद्ध आरंभिले. राजा, ते सर्व त्वत्पक्षीय योद्धे तुड्या पुत्रांचे हेतु सिद्धीस नेण्यासाठी अगदी उत्तम असल्यामुळे पुनः रणांगणांत एकाएकी परतून आल्यानंतर त्यांचे पांडवसेनेशी इतके दारुण युद्ध झाले की, ते पाहून देवदातवांचेच युद्ध चालले आहे असा भास झाला ! त्या वेळी

तुड्या सैन्यांतला किंवा शत्रूच्या सैन्यांतला कोणीही वीर युद्धापासून पराङ्मुख झाला नाही. त्या समयी उभय दळांमध्ये इतका विलक्षण रणसंमर्द मातला की, ते वीर एकमेकांशी अनुमानाने व नावे घेऊन लढत होते ! तेव्हां परस्परांनी परस्परांचा महान् संहार केला आणि त्यांमध्ये अगदी घनघोर संग्राम चालू झाला. राजा, त्या समयी युधिष्ठिर राजा अत्यंत चवताळला व रणांगणांत भूपालांसह वर्तमान धार्तराष्ट्रांना जिकण्याकरितां कौरवांवर शरवर्षाव करू लागला ! त्या वेळीं त्याने सहाणेवर धार लावून जलाल केलेले तीन सुवर्णपुंव बाण शारद्वतावर सोडिले आणि चार नाराच बाण टाकून त्याने कृतवर्माचे चारही घोडे यमसदनी पाठविले असतां, अश्वत्थाम्याने त्या विजयशाली हार्दिक्याला आपल्या रथांत घेऊन रणांगणांतून एकीकडे नेले ! नंतर शारद्वताने युधिष्ठिरावर आठ बाण सोडून त्यास सिद्ध केले आणि तितक्यांत दुर्योधन राजाने सातशे रथ युधिष्ठिरावर पाठविले ! राजा, त्या समयी दुर्योधनाचे ते सातशे रथ मन किंवा मारुत ह्यांच्या वेगांने हां हां म्हणतां रथांसह वर्तमान युधिष्ठिराच्या रथावर तुटून पडले; आणि त्यांनी चोहोंकडून त्याला गराडा घालून त्याजवर बाणांचा घोर भडिमार आरंभिला; व मेघ ज्याप्रमाणे दिवाकराला अदृश्य करितात त्याप्रमाणे त्यांनी युधिष्ठिराला अदृश्य केले ! राजा, ते पाहून शिखंडि-प्रमुख पांडवीय योद्ध्यांचा मनस्वी क्रोध चढला; आणि ज्यांना अत्यंत वेगवान् अश्व जोडिले होते व ज्यांवर लहान लहान घंटांच्या माळा दांगल्या होत्या अशा रथांतून मोठ्या त्वेषाने ते युधिष्ठिराच्या मदतीकरितां त्या स्थळी तत्काळ प्राप्त झाले. राजा, नंतर मोठा भयंकर संग्राम प्रवर्तला आणि त्यांत रुधिराच्या नद्या चालू होऊन यमराष्ट्राची भरती झाली ! राजा.

त्या समयी पांडवांनी आपल्यावर चालून आलेले सातशे कौरवीय रथ ठार केले आणि पुनः कौरवसेनेला पेंचांत घातले. त्या वेळीं तुझ्या पुत्राचें व पांडवांचें फारच घोर युद्ध झाले ! तशा प्रकारचें दारुण युद्ध मीं कधीं पाहिलें नाहीं व ऐकिलेंही नाहीं ! तेव्हां रणांगणांत जिकडे तिकडे अमर्याद संग्राम होऊं लागला. दोन्ही दक्षांत एकसारखे वीरपुरुष धारातीर्थीं पडूं लागले, चोहोंकडे योद्ध्यांनी महान् शंखनाद आरंभिला, धनुर्धरांनीं मिहामारखी गर्जना चालविली, उभय पक्षांच्या योद्ध्यांनी एक-मेकांची मर्मस्थले छेदण्यास प्रारंभ केला, ते ज्याच्या आशेनें एकमेकांवर उड्या घालूं लागले, सर्वत्र भयंकर संहार घडूं लागून पृथ्वीवर महान् अनर्थ गुदरला; आणि अनंत वीरांगनांवर वैधव्य भोगण्याचा प्रसंग आला ! राजा, ह्याप्रमाणें घनघोर संग्राम चालला असतां तशांत आणखी अनर्थसूचक भयंकर उत्पात होऊं लागले ! तेव्हां पर्वत व अरण्ये ह्यांसह-वर्तमान सर्व पृथ्वी कडकड शब्द करीत थरथर कांपूं लागली; अंतरिक्षांतून रविमंडलाला स्पर्श करून भूतलावर चोहोंकडे जळत्या कोलितां-प्रमाणें उल्कांचा वर्षाव होऊं लागला, जिकडे तिकडे तुफान वारे वाहूं लागले, व त्यांनी भूतलावरील धूळ अंतरिक्षभर उधळून देऊन दशविशा भुंद केल्या; आणि हत्तींच्या नेत्रांतून अश्रु गळूं लागले व त्यांच्या देहांना कांपरे भरले ! राजा, इतके घोर उत्पात झाल्यावर तरी क्षत्रियांनीं दूरवर दृष्टि देऊन युद्ध थांबवावयाचें होतें, पण त्यांनीं तसें केलें नाहीं; आणि पुनः मसलत करून ते त्या उत्पातांची पर्वा न करितां त्या पुण्यकारक रमणीय कुत्सेत्रामध्ये स्वर्गप्राप्तीच्या इच्छेनें युद्धाला तोंड देऊन उभे राहिले ! नंतर, राजा, गांधार-राजाचा पुत्र शकुनि हा कौरवांकडील वीरांना

म्हणाला, 'वीरहो, तुम्ही बिनीवर युद्ध करा; मी पिछाडीस राहून पांडवांना वधितों !'

राजा धृतराष्ट्रा, त्या समयी आपल्या पक्षाचे जे वीर युद्धामाठी पुनः रणांगणांत प्राप्त झाले होते, त्यांपैकी पराक्रमी ऋद्रेक्षीय वीरांना व दुमच्या वीरांना अतिशय वीरश्री चढली आणि ते एकसारखे गर्जू लागले ! तेव्हां अजिंक्य पांडव पुनः आम्हांवर तुटून पडले आणि त्यांनी प्रत्यंचाचें आस्फालन करून एकसारखा आम्हां-वर बाणांचा अचूक भडिमार चालविला ! तेव्हां पांडवांच्या वीरांनी मदुराजाचें सैन्य वधिलें आणि ते पाहून कौरवसैन्य पुनः युद्धापामून पराङ्मुख झाले ! राजा, त्या वेळीं बलाढ्य गांधारराज फिरून कौरवसैन्यास म्हणाला, 'वीरहो, युद्धाला मिद्ध व्हा, मागे फिरा; असे अगदीं मूर्खे कमे झालां ! युद्धांतून पळून गेल्यानें काय होणार आहे ?' राजा धृतराष्ट्रा, गांधारराजाचें अश्वसैन्य दहा हजार असून त्या सर्व वीरांपाशी जलाल प्राप्त होतें. कौरवांच्या मेनेंत जेव्हां महान् संहार होऊं लागला, तेव्हां त्या अश्वसैन्यासहवर्तमान गांधारराजानें पृष्ठभागाकडून पांडवसैन्यावर चाल करून जलाल बाणांचा भडिमार आरंभिला; आणि वारा जसा अन्नाची दाणादाण उडवितो, तशी त्यानें पांडवांच्या प्रचंड सेनेची दाणादाण उडविली ! नंतर, राजा, आपल्या सेनेची वाताहत झाली असें पाहून धर्मराज युधिष्ठिरानें तत्काळ महाबलवान् सह-देवाला आज्ञा केली की. 'सहदेवा, हा दुष्ट कथंचधारी सुबलपुत्र शकुनि पृष्ठभागी आपल्या सेनेचा संहार करीत आहे पहा ! ह्यासाठीं द्रौपदीपुत्रांसह तूं त्याजवर चाल करून जा व त्यास ठार मार ! इकडे पांचालांसह मी रथसेनेला जाऊन टाकितों !' बा अनघा, सर्व कुंजर, घोडेस्वार व तीन हजार पायदळ इतकी

सेना बरोबर घे; आणि त्या सर्वांसह तूं शकुनी-  
वर हल्ला करून त्यास ठार मार ! '

धृतराष्ट्रा, नंतर वर आरूढ असलेल्या धनुर्धरांसह सातशे हत्ती. त्याप्रमाणेच पांच हजार घोडेस्वार, तीन हजार पायदल व द्रौपदीचे पुत्र, इतकी सेना बरोबर घेऊन महा-  
विक्रमशाली सहदेव युद्धधुरंधर शकुनीवर चालून गेला ! तेव्हां जयाच्या आशेने प्रतापी सौवलांने पृष्ठभागाकडून पांडवांवर मोठ्या निक-  
राचा हल्ला केला असतां मोठे भयंकर युद्ध सुरू झाले. राजा. त्या वेळी पराक्रमी पांडवांचे घोडेस्वार फारच चवताळले आणि त्यांनी कौरवांच्या रथसेनेची फळी फोडून तीत प्रवेश केला. इतक्यांत त्या स्थळी पांडवांचे गजमैन्यही धावून आले आणि मग पांडवांचे ते घोडेस्वार गजसैन्याच्या मध्यभागी उभे राहून सौवलाच्या त्या प्रचंड सेनेवर चोहोंकडून एकसारखा बाणवर्षाव करू लागले ! राजा. तुझ्या दुष्ट ममलतीमुळे उत्पन्न झालेले हे युद्ध नंतर फारच चेतले ! त्या समयी महान् महान् योद्धे मात्र गदा, प्राम इत्यादि आयुधांनी युद्ध करीत होते ! तेव्हां प्रत्येकाचा टणत्कार अगदी बंद पडला होता; कारण रथां हे केवळ युद्धचमत्कार पहात उभे राहिले होते. त्या समयी दोन्ही दळे अगदी एकसारखा प्रताप गाजवीत होती ! आपले सैन्य किंवा शत्रूचे सैन्य अधिक पराक्रमी आहे असें कांही दिसत नव्हते ! शूर वीर बाहुबलांने ज्या शक्ति फेंकित होते, त्या पाहून जणू काय अंतरिक्षांतून उल्काच खाली पडत आहेत असें दोन्ही सैन्यांना वाटे ! त्या वेळी लवळखणाऱ्या ऋष्टि सैनिकांवर पडत असतां त्यांच्या योगें सर्व आकाश व्याप्त होऊन अतिशय शोभा दिसत होती ! तेव्हां दोन्ही सैन्ये परस्परांवर प्रामांचा भडिमार करू लागली असतां जणू काय अंतरिक्षांत टोळधाडच

आली आहे असें दिसत होतें ! त्या समयीं घोडेस्वार अगदी जखमी झाले होते, तरी देखील त्यांनी शत्रूंकडील घोड्यांना जखमी करून त्यांच्या शरीरांतून रक्ताचे पाट वाहवून शतावधि व सहस्रावधि घोड्यांना ठार मार-  
ण्याचा सपाटा चालविला होता ! त्या वेळी कित्येक घोडे एकमेकांना गांठून ठार करीत होते व कित्येक घोडे घायाळ होऊन रक्त ओकतांना आदळत होते ! नंतर मनस्वी धूळ उडून सर्व सैन्य धुळीने व्याप्त झाले तेव्हां फारच अंधार पडला ! मग ते शत्रुसंहारक वीर व घोडेस्वार तेथून निघून जाऊ लागले व कित्येक अतिशय रक्त ओकित भूतलावर पडले असें मी पाहिलें ! राजा. त्या वेळी एकमेकांच्या शेंड्या धरून कित्येक योद्धे झगडूं लागले असतां त्यांना अगदी हालचालही करितां येत नव्हती ! कित्येक बलाढ्य वीर एकमेकांना घोड्यांच्या पाठीवरून ओढून मल्लयुद्ध करू लागले आणि अवेरीस त्यांत त्यांनी एकमेकांना ठार मारिलें ! त्या वेळी बहुत वीर घोड्यांवरच गतप्राण झाले असतां त्यांच्यामुद्रां ते घोडे रणांगणांतून निघून गेले ! आणि दुसरे अनेक शूर व अभिमानी वीर विजयप्राप्तीच्या इच्छेनें लढत असतां रणांगणांत चोहोंकडे मरून पडत आहेत असें आढळूं लागलें ! राजा. त्या समयी रणभूमीवर शतावधि व सहस्रावधि योद्धे पडले असून त्यांच्या शरीरांतून रक्ताचे पाट वहात होते व त्यांचे भुज तुटले असून त्यांच्या मस्तकां-  
वरील केशकलाप विदीर्ण झाले होते ! त्या वेळी वसुधातलावर हत्ती, घोडे व घोडेस्वार ह्यांचा संहार उडून सर्वत्र प्रेतांचे ढीग पडल्या-  
मुळे त्यांतून दूरवर घोडा चालण्यालाही मार्ग राहिला नव्हता ! त्या समयी रणांगणांत पडलेल्या त्या योद्ध्यांच्या अंगांतली चिलखते रक्तानें माखली असून त्यांची आयुधें हातां-

तल्या हातांतच होती आणि नानाविध घोर शस्त्रास्त्रांनी परस्परांस ठार मारण्यास उद्युक्त होऊन रणांगणांत लगट करून लढत असतां ते बहुतेक वीर धारातीर्थी पतन पावले होते! राजा, नंतर कांही थोडा वेळपर्यंत सौबल शकुनीने युद्ध केलें आणि मग तो उरलेल्या सहा हजार घोडेस्वारांसह रणांगणांतून निघून गेला; तें पाहून, रक्तांत न्हालेले पांडवांचें सैन्यही वाहनें थकून गेल्यामुळे उरलेल्या सहा हजार घोड्यांसह रणांतून निवृत्त झालें! राजा, त्या समयी त्या रणांत जिवार उदार होऊन लढण्यास मिद्ध झालेले व रुधिरानें न्हालेले असे ते पांडवांकडील घोडेस्वार म्हणाले की, 'अहो. ह्या स्थळी रथांनी देखील युद्ध करणें अशक्य झालें आहे, मग कुंजरांनीं कमें युद्ध करितां येणार' ह्यासाठी आतां रथांनी रथांवर व कुंजरांनी कुंजरांवर हल्ला करावा! सांप्रत शकुनि आपलें सैन्य घेऊन रणांतून निघून गेला आहे; तो आतां पुनः युद्धाला येणार नाही!'

धृतराष्ट्रा, नंतर द्रौपदीचे पुत्र व त्यांच्या-समवेत असलेले ते मदोन्मत्त प्रचंड हत्ती जेथें पांचाल्य महारथ धृष्टद्युम्न हा होता तेथें गेले; आणि सहदेवही, जिकडे तिकडे धुळीचे लोट उठले असतां, ज्या ठिकाणी एकटा धर्मराज होता त्या ठिकाणी गेला! पण, राजा, ह्या प्रमाणें ते द्रौपदीचे पुत्र व सहदेवादिक इतर योद्धे तेथून निघून जातांच सौबल शकुनि पुनः मागे वळला; आणि त्यानें मोठ्या संतापानें धृष्टद्युम्नाच्या सेनेवर पाठीमागच्या बाजूनें हल्ला करून तिचा संहार आरंभिला! राजा, त्या समयी फिरून दोन्ही दळांमध्ये भयंकर संग्राम चालू झाला आणि तुझ्या पक्षाचे व पांडवांचे वीर परस्परांना ठार मारण्याची हाव धरून जिवाची पर्वा न करितां मोठ्या आवे-

शानें लढूं लागले! तेव्हां त्या भयंकर रण-समर्दीत उभय सैन्यांतल्या योद्ध्यांनीं प्रथम एकमेकांकडे टाकलून पाहिलें आणि मग शतावधि व सहस्रावधि वीर एकमेकांवर धावून जाऊन तुटून पडले! राजा, मग ते खड्गांनीं एकमेकांची मस्तकें तोडूं लागले असतां—ताडाचे वृक्ष भूतलावर कोमळांना जसा शब्द होतो तसा—भयंकर शब्द होऊं लागला! त्याप्रमाणेंच त्या वेळीं छिन्नभिन्न झालेली ती वीरांची आयुधांसहवर्तमान धोंडे, बाहु व मांड्या हीं घडाघड भूतलावर कोसळूं लागलीं, तेव्हां देखील अतिशय भयंकर ध्वनी उद्भवला व त्याच्या योगें अंगावर कांटा उभा राहिला! त्या वेळीं रणांगणांत योद्ध्यांनीं व.प, पुत्र व भ्राते ह्यांजवर जळाल शस्त्रांचा मारा चालविला; आणि आमिषाकरितां पक्षी जसे एकमेकांवर तुटून पडतात, तसे ते एकमेकांवर तुटून पडले. राजा, त्या वेळी अतिशय क्षुब्ध होऊन सहस्रावधि कुरुपांडववीरांनी परस्परांना गांठिलें; आणि जो तो 'मी आधी! मी आधी!' असें म्हणून शत्रूंवर शस्त्रप्रहार करूं लागला! राजा, तेव्हां रणांगणांत इतके घोडेस्वार आसनांवरून मरून पडले की, त्यांच्या खाली शेंकडो व हजारों दुसरे वीर सांपडून चेंगरून मेले! त्या घोर संग्रामांत शस्त्रप्रहारांनी विद्ध झालेले वेगशाली अथ मोठमोठ्यानें गिवाळत होते आणि कवचधारी वीर गर्जत होते व तशांत आणखी तुझ्या दुष्ट मल्लयामुळे ते योद्धे परस्परांच्या मर्मस्थळांना भेदीत असतां शक्ति, क्रोधि व प्राम ह्यांचा दारुण ध्वनि चालला होता! राजा, अशा प्रकारें दोन्ही दळांत युद्ध-प्रसंग चालतां चालतां अवेरीम तुझ्या सैन्यांतले ते क्षुब्ध वीर दमले. त्यांचीं वाहनें थकून गेलीं, त्यांना अतिशय तहान लागली, शस्त्र-प्रहारांनी ते घायाळ झाले आणि शेवटी युद्धा-



तून मागे वळले ! राजा, त्या वेळीं रुधिराच्या गंधीनें बहुत वीरांना उन्माद चढला, त्यांचें देहभान नष्ट झालें, व जे जे म्हणून त्यांच्या समीप प्राप्त झाले त्या सर्वांना—ते मग शत्रु असोत की मित्र असोत—त्यांनीं ठार मारिलें ! राजा, तेव्हां जयाच्या आशेनें युद्ध करणारे बहुत क्षत्रिय शरवृष्टीनें नग्नशिखांत व्याप्त होत्साते धरणीवर मरून पडले ! राजा, त्या वेळीं तुझ्या पुत्राच्या डोळ्यांदेखत तुमें प्रचंड सैन्य धारातीर्थीं पडून मोठा घोर अनर्थ झाला आणि लांडगे, कोल्हे व गिऱ्याडे ह्यांची पोळी पिकली ! राजा, त्या समयी नर व अश्व ह्यांच्या शरीरांनीं सर्व मही आच्छादित झाली आणि सर्वत्र रुधिराचे प्रवाह सुरू होऊन भिऱ्या लोकांचें धावें दणाणून गेलें ! राजा, मग फारच घोर रणसंमर्द झाला ! खड्ग, पट्टिश व शूल ह्यांनीं दोन्ही दळांतले योद्धे पुनःपुनः एकमेकांवर मारा करूं लागले आणि मग कोणीही एकमेकांच्या जवळ येईनामे झाले ! राजा, मग त्यांनीं फिरून आपल्या अंगीं नेबडी शक्ति होती तेवढी सगळी खर्च करून मरेपर्यंत शत्रूवर भयंकर मारा आरंभिला; आणि अखेरीस रक्त ओकीत ते रणांगणांत पतन पावले ! राजा, तेव्हां रणांगणांत वीरांची बहुत धडे एका हातांत केशकलापांनीं युक्त असें मस्तक व दुसऱ्या हातांत रुधिरानें माखलेलें तीक्ष्ण खड्ग घेऊन उडलेलीं दिमू लागलीं, आणि शिवाय जिकडे तिकडे रुधिराचा दर्प सुरू झाला; त्यामुळे त्या समयी जे योद्धे रणांगणांत लढत होते ते सर्व भ्रांत होऊन मूर्च्छित पडले ! ह्याप्रमाणें समरांगणांतली गजबज शांत होतांच, पांडवांच्या त्या महासेनेवर सौबलानें आपल्या शिलक राहिलेल्या थोड्याशा घोडेस्वारानिशी हल्ला केला; परंतु ते पाहून तत्काळ विजयप्राप्तीच्या इच्छेनें पांडवांकडील हत्ती, घोडे व पायदळ हे

शस्त्रास्त्रांसह त्या कुरुवीरावर धावून आले आणि एकदांचें शकुनीला ठार मारून ते युद्ध शेवटास न्यावें अशा हेतूनें त्या सर्व पांडवीय वीरांना त्याला चोहोंकडून गराडा घालून कोंडिलें व त्याजवर नानाविध आयुधांचा भडिमार चालविला ! राजा, ह्या प्रकारें तुझ्या सैनिकांना पांडवांनीं चोहोंकडून घेरिलें तेव्हां तुमें चतुरंग सैन्य एकदम पांडवांवर चाल करून गेलें. त्या वेळीं पायदळांतल्या कित्येक शूर वीरांनीं आपलीं आयुधें नष्ट झाल्यावर केवळ मुष्टींनीं व पायांनींच समरांगणांत शत्रूंना ठार मारिलें व अखेरीस ते स्वतः पडले ! तेव्हां जे घोर समर मातलें, त्यांत, क्षीणपुण्य झालेले सिद्ध जसे विमानांतून खाली पडतात, तसे रथी रथांतून व गजवीर गजांवरून खाली पडले ! तेव्हां दोन्ही दळे एकमेकांचा भयंकर संहार करित असतां त्यांत त्यांनीं बाप, पुत्र, मित्र व भ्राते ह्या सर्वांचा वध आरंभिला आणि प्राम, खड्ग, बाण इत्यादिकांच्या प्रहारांनीं दारुण संग्राम चालू होऊन अमर्याद युद्ध मातलें !

## अध्याय चोविसावा.

—०:—

### अर्जुनाचा पराक्रम.

संजय मांगतो:—राजा, अखेरीस पांडवांनीं कौरवसैन्याचा विध्वंस उडविला आणि युद्ध-भूमीवर जो कलकलाट चालला होता तो सर्व शमला ! तेव्हां पुनः सौबल हा आपल्यापाशीं अवशिष्ट राहिलेल्या मातशें अश्वांसह रणांगणांत आला; आणि पुनःपुनः आपल्या सैनिकांजवळ त्वरेनें जाऊन त्यांस म्हणाला कीं, ' शत्रुनाशक वीरहो, वीरश्रीनें युद्ध करा. ' नंतर सौबल शकुनीनें ' महारथ दुर्योधन राजा कोठें आहे ? ' म्हणून तेथें असलेल्या क्षत्रियांस विचारिलें; तेव्हां शकुनीचें भाषण श्रवण करून

ते क्षत्रिय त्यास म्हणाले कीं, “ तो पहा महा-  
रथ कौरवाधिपति रणामध्ये उभा आहे; तें पहा  
त्याजवर पूर्णचंद्राप्रमाणें देदीप्यमान् महान् छत्र  
विराजत आहे; ते पहा त्याच्या समीप अंगांत  
चिलखतें घालून रथी युद्धार्थ सिद्ध आहेत;  
आणि हा पहा तेथून जणू काय दुसरी मेघ-  
गर्जनाच असा प्रचंड वीरघोष कार्त्ती पडत आहे !  
गांधारराज शकुने, तूं त्वरित त्या स्थळीं जा  
म्हणजे तेथें तुला तो कौरवेश्वर भेटेल.” राजा,  
ते शूर क्षत्रिय ह्याप्रमाणें म्हणाले तेव्हां सोबल  
शकुनि हा समरांगणांतून पराङ्मुख न होणाऱ्या  
कौरववीरांमहवर्तमान ज्या स्थळीं तुझा पुत्र  
होता त्या स्थळीं गेला आणि तेथें  
रथमेनेसह युद्धास सिद्ध असलेल्या दुर्यो-  
धनाला भेटला. राजा, शकुनि त्या ठिकाणी  
जातांच तुझ्या सर्व रथ्यांना व इतर योद्ध्यांना  
हर्ष झाला आणि मग शकुनीनें जणू काय  
आपल्याला कृतार्थ मानून मोठ्या उल्हासानें  
दुर्योधन राजाला म्हटलें, “ राजा, मी सर्व  
घोडेस्वार जिंकले आहेत; आतां तूं रथसेना  
ठार मार म्हणजे झालें ! रणांगणांत जिवावर  
उदार झाल्याशिवाय युधिष्ठिराला जिंकणें शक्य  
नाहीं ! राजा, ती पांडुपुत्रानें रक्षिलेली सेना  
वधिली म्हणजे आपण हे हत्ती, पायदल व  
इतर सर्व सैन्य ह्यांम तेव्हांच ठार मारूं ! ”

राजा, ह्याप्रमाणें शकुनीचें भाषण श्रवण  
करून जयाच्या इच्छेनें क्षुब्ध झालेले सर्व  
कौरववीर मोठ्या वीरश्रीनें व वेगानें धनुष्यें,  
बाण व तूणीर ह्यांसह पांडवांच्या सैन्यावर  
तुटून पडले आणि त्यांनीं धनुष्यांचें आस्फालन  
करून मोठी सिंहगर्जना आरंभिली ! राजा,  
मग पुनः प्रत्यंचांचा टण्टकार व बाणवष्टीचा  
सणसणाट सुरू झाला आणि ते सर्व धनुर्धारी  
कौरव अगदीं पांडवसेनेच्या सन्निध मोठ्या  
वेगानें प्राप्त झाले; तेव्हां कुंतीपुत्र धनंजय हा

देवकीपुत्राला म्हणाला, “ हे कृष्णा, मोठ्या  
शौर्यानें शत्रूवर रथ सोड आणि ह्या कौरवांच्या  
सेनासमुद्रांत प्रविष्ट हो. आज मी जखल  
बाणांचा भडिमार करून शत्रूंचा अंत करून  
याकितों. हे जनार्दना, हें घोर युद्ध सुरू  
होऊन आज अठरा दिवस दोन्ही दळें परस्परांस  
गांठून परस्परांस वर्षीत आहेत ! ह्या युद्धांत जे  
महात्मे युद्धाला मिद्ध झाले त्यांची केवळ अगणित  
सेना धारातीर्थीं पतन पावली ! तेव्हां देवघटना  
कशी आहे ती पहा ! माधवा, युद्धांत  
दुर्योधनापाशीं केवळ सागराप्रमाणें अफाट सैन्य  
होंतें; परंतु त्याची व आमची गांठ पडली तेव्हां  
केवळ गोप्पदाप्रमाणें त्याची अवस्था झाली !  
कृष्णा, भीष्म पडल्यावर जर दुर्योधनानें संधि  
केला असता, तर खचित उत्तम झालें अमर्ते  
व हा घोर अनर्थ टळला असता ! परंतु त्या  
महामूर्खे दुर्योधनाला हा मार्ग रुचला नाही व  
त्यानें पुढें युद्ध चालविलें ! कृष्णा, भीष्मानें जें  
कांहीं सांगितलें तें निःसंशय हिताचें व योग्य  
होंतें; आणि असें असतां दुर्योधनानें तसें केलें  
नाहीं, तेव्हां त्याची बुद्धि भ्रष्टच झाली, अमेंच  
म्हटलें पाहिजे ! अरे, भीष्म हा रणांत  
हत होऊन भूतलावर पडल्यानंतर दुर्योधनानें  
काय म्हणून हें युद्ध पुढें चालविलें, हें  
मला समजत नाही ! जनार्दना, शंतनूचा पुत्र  
रणांत पतन पावल्यावर ज्या धार्तराष्ट्रांनीं आणखी  
पुढें युद्ध चालविलें ते खचित मूर्ख व मंदमतिच  
असें मी मानितों ! बरें असो; पुढें महाब्रह्म-  
वेत्ते द्रोणाचार्य रणांत पडले ! नंतर राधेय  
कर्ण व विकर्ण ह्यांनींही तोच पथ स्वीकारिला !  
तरीही अजून ही जीवहत्या चालूच रहावीना ?  
अरे कर्णासारखे वीर हयात असतां युद्ध पुढें  
चालविलें, ह्यांत एक आशा हें तरी प्रधान  
कारण होंतें; पण तो नरव्याघ्र कर्ण पुत्रांसह  
धारातीर्थीं देह ठेऊन निवून गेला आणि सैन्यही

अगदीं अल्प अवशिष्ट राहिलें, तरीही घोर क्षय पुढें चालवावा ह्यांत काय अर्थ! कृष्णा, शूर श्रुतायुष रणांत पडला, पुरुकुलोत्पन्न शूर जलसंधही वधिला गेला, आणि श्रुतायुष राजाचीही तीच वाट लागली; तरी देखील आणखी संहार चालूच रहावा हें आहे तरी काय? जनार्दना, भूरिश्रवा, शल्य, शाल्व व आवन्त्य वीर, त्याप्रमाणेंच जयद्रथ, अलायुध राक्षस, बाल्हीक, सोमदत्त, शूर भगदत्त, कांबोज सुदक्षिण व दुःशामन हे सर्व प्रतापशाली योद्धे हत झाल्यावर आणखी पुढें युद्ध चालवावें व जनसंहार घडवून आणावा हें खचित आश्चर्य होय! जनार्दना, अनेक शूर व बलिष्ठ मांडलिक राजे रणांगणांत पतन पावल्यावर युद्ध थांबविणें हेंच अवश्य नव्हतें काय? भीमसेनानें युद्धांत अशोहिणी सेना वधिल्यावर दुर्योधनानें युद्ध संपविलें नाही, ह्यावरून एक तर त्याची बुद्धि अष्ट झाली असावी, किंवा त्यास भलतीच हाव सुटली असावी, असें मला वाटतें! कारण, दुर्योधनावांचून दुसरा कोणता बरें कुलवान् आणि तशांतही विशेषकरून कुरुकुलोत्पन्न भूपती निरर्थक असलें मोठें वैर करील! कृष्णा, सुज्ञ पुरुष नेहमी हिताहिताविषयी विचार करितो; ह्यास्तव कोणीही विचारी पुरुष आपल्यापेक्षां बलानें, शौर्यानें व गुणांनी अधिक अशा शत्रूंबरोबर युद्ध करणार नाही! कृष्णा, तूं स्वतः दुर्योधनाकडे जाऊन पांडवांबरोबर संधि करण्याविषयी त्याजवळ शिष्टाई केलीस आणि असें असतां तुझ्या हितोपदेशाचा त्यानें अन्यादर केला, तेव्हां दुसऱ्या कोणाची मला त्यानें ऐकिली असती असें मला वाटत नाही! अरे, शांतवनासारखा योद्धा, द्रोणासारखा गुरु व विदुरासारखा ज्ञानी साम कर म्हणून सांगत असतां ज्यानें त्या सर्वांना जुमानिलें नाही,

त्याला शुद्धीवर आणण्याला आणखी कोणता उपाय होता? कृष्णा, मूर्ख दुर्योधनानें वृद्ध पित्याची किंवा काकुळतीनें हितकारक भाषण करणाऱ्या मातेची देखील पर्वा केली नाही, आणि त्यांचा अन्यादर करून आह्मांशी हा घोर कलह आरंभिला, तेव्हां त्याला कोणाचें भाषण रुचलें असें? असो; जनार्दना, माझा तर असा ममज आहे की, हा खचित कुलाचा अंत करण्यासाठीच जन्मला आहे ह्यांत संदेह नाही! ह्याचें वर्तन व ह्याची ममलत परिणामी हेंच घडवून आणतील! हा खचित आह्मांला राज्य देणार नाही असा माझा ममज आहे! हे मानदा कृष्णा, महात्म्या विदुरानें मला अनेक वेळां सांगितलें आहे की, 'अर्जुना, जिवंत आहे तोंपर्यंत दुर्योधन तुझ्यांम राज्याभाग देणार नाही; जोंवर त्याच्या कुडीत प्राण आहे तोंवर तो तुझां सत्पुरुषांना दुष्कृत्यें करून गांजील; आणि त्याला जिंकण्याला युद्धाशिवाय दुसरा मार्ग नाही!' कृष्णा, ह्याप्रमाणें अमोघदृष्टि विदुर मला नेहमीं जें कांही सांगत असे, तें सर्व आज माझ्या पूर्ण प्रत्ययास आठें; त्या दुरात्म्याचीं सर्व कृत्यें आज माझ्यापुढें मूर्तिमंत उभी आहेत! कृष्णा, ज्या मूर्खानें जामदग्न्याच्या यथार्थ व हितकारक भाषणाचा धिक्कार केला, तो खचित मृत्यूच्या मुखान्तच उभा राहिला ह्यांत संदेह नाही! कृष्णा, दुर्योधनाचा जन्म होतांच अनेक सिद्ध पुरुषांनी भविष्य ठरविलें की, ह्या दुरात्म्याच्या योगानें सर्व क्षत्रियमंत्र नष्ट होईल! जनार्दना, प्रस्तुत त्या सिद्ध पुरुषांचें भाषण सत्य होत आहे ह्यांत संशय नाही. कारण, दुर्योधनाच्या कृतीमुलें आधींच बहुत राजे मृत्युमुखी पडले आहेत! ह्यासाठी माधवा, मी आज रणांगणांत कौरवांकडील सर्व योद्ध्यांना ठार मारितों म्हणजे सर्व क्षत्रिय

नष्ट होऊन सर्व शिविर शून्य झाल्यावर दुर्योधन हा स्वतः आपल्या नाशाकरिता आम्हां-ब्रगेवर लढण्यास उद्युक्त होईल; आणि मग आम्हीं त्याचा वध केला म्हणजे सर्व कलह संपेल असें मी तर्कांनीं, स्वतःच्या बुद्धीनें, विदुराच्या भाषणानें व त्या दुष्ट दुरात्म्याच्या कृतीनें अनुमान बांधितों ! म्हणून, बा वीरा यदुपुंगवा, शत्रूवर रथ घेऊन चल. म्हणजे हा पहा मी रणांगणांत दुर्योधनावर व त्याच्या सेनेवर जलाल बाणांचा भडिमार चालवितों ! कृष्णा, आज दुर्योधनाच्या डोळ्यादेखत त्याचें सर्व दुर्बल सैन्य मी वधीन व धर्मराजाचे मनोरथ मिद्धीम नेईन ! ”

संनय सांगतो :—राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनाचें भाषण श्रवण करून दाशार्ह कृष्णानें चाबूक हालवून अश्वाना इषारा केला आणि मोठ्या धैर्यानें व शौर्यानें आपला तो रथ शत्रूंच्या महान् सेनेंत घुसविला ! राजा, कौरवांचें तें सैन्य म्हणजे केवळ महान् अरण्यच होतें ! भाले व खड्गें हें त्या अरण्यांतलें तृण होतें, नानाविध शक्ति हे त्यांतले कंटक होतें, गदा व परिश्र हे त्यांतले जणू मार्ग होतें, रथ व हत्ती हे त्यांतले प्रचंड वृक्ष होतें, आणि घोडे व पायदळ ह्या त्यांतल्या लता होत्या ! राजा, अशा प्रकारच्या कौरवसेनारूप अरण्यामध्ये महायशस्वी कृष्ण अतिशय पताका फडकत अमलेल्या असा तो रथ घेऊन संचार करीत असतां, रणांगणांत ज्यामध्ये अर्जुन हा विराजत होता अशा त्या रथाचे श्वेत अश्व कृष्णाच्या प्रेरणेप्रमाणें सर्व दिशांम दृग्गोचर होत होते ! राजा, अशा त्या दिव्य रथांतून समरभूमीवर शत्रुसंहारक सत्यसाची अर्जुन शत्रूंचे शारांचा पाऊस पाडीत परिभ्रमण करूं लागला, आणि बांकदार बाणांचा भयंकर सणसणाट सुरू होऊन सर्व अंतरिक्ष दणाणून

गेलें ! राजा, तेव्हां समरांगणांत अर्जुनानें शत्रूंचे बाणांची घोर वृष्टि करून त्यांस अगदीं झांकून काढिले असतां ते बाण कौरवांकडील योद्ध्यांच्या चिलखतांत घुसून त्यांच्या अंगांतून बाहेर पडले व भूमीत शिरले ! राजा, गांडीव धनुष्यापामून सुटलेले ते बाण दणदणाट करणाऱ्या पार्थाप्रमाणें रणांगणांत शत्रूंकडील घोडे, हत्ती व मनुष्यें ह्यांजवर पडले तेव्हां जणू काय त्यांजवर वज्रपातच झालासें वाटलें आणि सर्वत्र जिकडे तिकडे त्या बाणांनी अंतरिक्ष व्याप्त होऊन निविड अंधकार पसरला व दिशोपदिशांचें ज्ञान नष्ट झालें ! राजा, त्या वेळी सर्व भूतल लोहारांनी धार दिलेल्या व तेलपाणी करून पाजललेल्या सुवर्णपुंख अशा पार्थनामाकित बाणांनी अगदी खचून भरलें; आणि त्या योगें कौरवांचे कुंजर तडफड करूं लागले तेव्हां ते जणू काय पार्थरूप पावकानें दग्ध होत अहेत असा भास झाला; आणि अखेरीस अर्जुनाच्या त्या जलाल शारांनी ते पटापट मळूं लागले ! राजा, त्या समयी तो धनुर्बाणधारी अर्जुन सूर्यासारखा तळपूं लागला; आणि अशि जसा तृणराशीला जाळितो, तसा त्यानें रणांगणांत कौरवांच्या सैन्याला जाळण्याचा सपाटा चालविला ! राजा, अरण्यामध्ये अरण्यवासी जनांनीं टाकिलेला अग्नि ज्याप्रमाणें वृक्षांनी व वाळलेल्या लतापत्रांनी गच्च भरलेल्या अरण्यास सों सों करीत मोठ्या जोरांनें जाळून फस्न करितो, त्याप्रमाणें अर्जुनानें टाकिलेल्या त्या नाराचशररूप भयंकर अग्नीनें मोठ्या त्वेपानें तुझ्या पुत्राच्या सर्व सेनेला जाळून फस्त केलें ! राजा, त्या वेळीं अर्जुनानें ते सुवर्णपुंख बाण इतक्या आवेशानें टाकिले की, कौरवांच्या सैनिकांच्या अंगांत चिलखतें होती तरी त्यांस न जुमानितां त्यांनीं त्यांचे देह विदारण करून त्यांचे प्राण घेतले !

राजा, तेव्हां अर्जुनानें नर, हय किंवा प्रचंड गज ह्यांजवर दुसरा म्हणून बाण टाकिला नाही; त्यानें नानाविध आकारांचे बाण शत्रूंवर सोडिले आणि एकेकच्या वीरावर एकेकच बाण टाकून, वज्रपाणि इंद्रानें ज्याप्रमाणें दैत्यांना, त्याप्रमाणें महाराथांच्या सर्व सैन्याला त्यानें ठार मारिलें!

### अध्याय पंचविंशत्वा.

—:०:-

#### संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—धृतराष्ट्रा, संग्रामांत मारूं किंवा मरूं, पण पळून म्हणून जाणार नाही, असा संकल्प करून ते शूर कौरव पांडवांचा नाश करण्यासाठीं अतिशय प्रयत्न करीत अमतां अखेरीस त्यांच्या डोळ्यांदेखत धनंजयानें गांडीव धनुष्याच्या योगें अशा प्रकारें त्यांचा संकल्प व्यर्थ घालविला! त्या समयीं, राजा, मेघ ज्याप्रमाणें पर्जन्याची वृष्टि करितो त्याप्रमाणें अर्जुन हा वज्रासारख्या कठोर, दुःसह व अत्यंत जलाल अशा बाणांची एकसारखी शत्रूंवर वृष्टि करीत आहे असें दिसूं लागलें; आणि अर्जुनाच्या शरप्रहारांनीं एकसारखा संहार होऊ लागला तेव्हां अखेरीस ते कौरव-सैन्य तुड्या पुत्राच्या समक्ष रणांगणांतून पळून गेलें! राजा, त्या वेळीं कित्येक कौरववीरांनीं बाप, बंधु व मित्र ह्यांना रणांत टाकून पळ काढिला, कित्येक रथांचे अश्व व सारथी मारले गेले, कित्येक रथांचीं चाक्रे, ईषा, कणे, जुवे भस्म झालीं, कित्येक योद्ध्यांच्या जवळचा बाणांचा पुरवठा संपला, कित्येक शरप्रहारांनीं घायाळ झाले, कित्येकांस काहीं इजा वगैरे झाली नव्हती तरी त्यांस भीतीनें गांगरून सोडिल्यामुळें ते पळत सुटले, कित्येक आपल्या पुत्रांसह रणांगणांतून धावूं लागले, सर्व बंधु-वर्ग धारातीर्थी पडल्यामुळें कित्येक मोठ-

मोठ्यानें आक्रोश करूं लागले आणि कित्येकांनीं आपल्या पित्यांना, कित्येकांनीं आपल्या मित्रांना, कित्येकांनीं आपल्या आत्मांना, कित्येकांनीं आपल्या भ्रात्यांना व कित्येकांनीं आपल्या सोयऱ्याधायऱ्यांना हाका मारण्याचा क्रम आरंभिला! तेव्हां जागोजाग कित्येक वीर आपल्या आसमुहदांना सोडून पळून गेले! राजा, त्या समयीं बहुत महारथ बाणप्रहारांनीं घायाळ होतसे ते केवळ श्वासोच्छ्वास मात्र करीत अहेत असें दिसलें; तेव्हां त्या मूर्च्छित महाराथांना दुसऱ्या वीरांनीं आपल्या रथांत घेतलें आणि त्यांस लवकरच सावध करून त्यांनीं त्यांस थोडासा विमावा दिला व पाणी पाजिलें आणि नंतर ते सर्व पुनः युद्धास गेले! त्या वेळीं कित्येक युद्धधुरंधर कौरवयोद्ध्यांनीं तुड्या पुत्राची आज्ञा श्रवण करून त्या घायाळ महाराथांकडे पाहिले सुद्धा नाही व ते त्यांस तसेच मरणोन्मुख अवस्थेत टाकून देऊन पुनः युद्धासाठीं धावून गेले! कित्येकांनीं स्वतः उदकपान केलें आणि घोड्यांनाही पाणी पाजून त्यांस ताजेतवाने केल्यावर अंगांत चिखलें चढविलें व रणभूमीचा मार्ग धरिला! कित्येकांनीं शिबिरांत जाऊन आपल्या घायाळ भ्रात्यांची, पित्यांची व पुत्रांची नीट व्यवस्था करून त्यांस तेथें ठेविलें आणि मग ते युद्धासाठीं पुनः रणभूमीवर परत आले! कित्येक वीरांनीं आपले रथ पुनः सज्ज केले आणि त्यांत कमीअधिक महत्वाच्या ज्या वस्तु पाहिजेत त्या सर्वांची तरतूद करून मग ते पुनः युद्ध करण्यासाठीं पांडवांच्या सेनेवर धावून गेले! राजा, त्या समयीं त्या शूर वीरांचे ते लहान लहान घंटांच्या माळांनीं झांकून गेलेले रथ समरभूमीवर दृग्गोचर झाले, तेव्हां जणू दैत्य व दानव हे त्रैलोक्य जिंकण्यासाठींच उद्युक्त झाले अहेत असें भासलें!

नंतर कौरवांकडील कित्येक रथी आपल्या मुर्णभूषित रथांतून एकदम पांडवांच्या सैन्यावर तुटून पडले व त्यांनी धृष्टद्युम्नाशी युद्ध आरंभिले ! तेव्हां महारथ शिबंडी व नकुल-पुत्र शतानीक हेही तत्काळ त्या कौरवांच्या रथसैन्याशी युद्ध करू लागले आणि मग मोठा घोर संग्राम मातला ! राजा, त्या समयी पांचाल्य धृष्टद्युम्न फारच क्षुब्ध झाला व प्रचंड सैन्यासह तुझ्या सैनिकांना ठार मारण्याकरिता त्यांजवर चालून गेला; तो तुझ्या पुढांन त्याजवर एकसारखा बाणवर्षाव आरंभिला; आणि धार दिलेल्या व वेगवान् अशा नाराच, अर्ध-नाराच व वत्सदंत बाणांनी त्याने त्यांचे वक्षस्थळ व भुजप्रदेश विंधून टाकिला; तेव्हां अंकुशांनी आर्त झालेल्या हत्तीप्रमाणे अतिशय क्षोभलेल्या त्या महाधनुर्धर पांचाल्य वीराने बाणांचा भडिमार चालवून दुर्योधनाचे चारही अश्व यमसदनीं पाठविले आणि एक भड बाण सोडून त्याच्या मारण्याचें मस्तक धडापासून वेगळे करून खाली पाडिले ! राजा, नंतर तो रथहीन झालेला शत्रुसंहारक दुर्योधन राजा घोड्यावर बसला व आपलें सैन्य हतवीर्य झालेलें पाहून युद्धपराड्मुख होतमाता जवळच मौवल शकुनि होता तिकडे निघून गेला !

ह्याप्रमाणें कौरवांच्या रथसैन्याचा मोड झाला तेव्हां कौरवांच्या तीन हजार बलाढ्य हत्तींनी पांडवांच्या रथांना वेढा दिला आणि त्यांत पांचही पांडव कोंडले गेले अमतां जणू काय ते पांच ग्रह मेघपटलांत अदृश्य झाले आहेत असें भासले ! राजा, नंतर महाभुज अर्जुन हा श्वेताश्व व कृष्णसारथि अशा रथांतून शत्रुंवर नेमके बाण मारीत चाल करून गेला ! तेव्हां त्याला कौरवांकडील पर्वतासारख्या प्रचंड हत्तींनी चोहोंकडून घेरिले. पण अर्जुनाने त्यांजवर लावल्यांत जलाल अशा नाराच

बाणांचा भडिमार करून त्या महान् गजांचे एकेका बाणाने विदारण केले असतां त्यांपैकी काहीं रणांगणांत पडले व कांही पडत आहेत, असें आम्हीं पाहिले ! इकडे, राजा, मदोन्मत्त कुंजराप्रमाणे बलाढ्य अशा भीमसेनाने कौरवांची ती गजसेना पाहून हातांत एक प्रचंड गदा धेतली; आणि तो त्वरेनें रथांतून उडी मारून भूतलावर उतरला व दंडधारी यमाप्रमाणे त्यानें शत्रुसैन्याचा संहार आरंभिला ! राजा, पांडवांकडील तो महारथ भीमसेन हातांत गदा धारण करून भूमीवर उभा आहे असें पाहाताक्षणीच तुझ्या सैन्यांची धावीं दणाणलीं आणि त्यांनीं मलमूलविसर्जन आरंभिले ! राजा, वृकोदर हा गदा उचलून युद्ध करू लागला असें पाहिल्याबरोबर तुझे सर्व सैन्य भयभीत झाले; आणि अखेरीस भीमसेनाने गदाप्रहारांनी त्या हत्तींची गंडस्थळे भेदिलीं अमतां रक्तानें न्हालेले ते पर्वतोपम हत्ती सैरा-वैरा चोहोंकडे धावत सुटले असें आमच्या नजरेस आले ! शेवटी पळतां पळतां घायाळ झालेले कित्येक हत्ती आर्त स्वर कादीत छिन्न-पक्ष पर्वतांप्रमाणे धरणीवर पडले व कित्येक पडण्याच्या रंगांत आले, आणि ते पाहून तुझे सैनिक अतिशय घाबरून गेले ! राजा, त्या समयी युधिष्ठिर व माद्रीपुत्र ह्यांसही अत्यंत क्रोध आला आणि त्यांनीही त्या गजसैन्यावर गुग्गुंध्रुव जलाल बाणांचा भडिमार चालवून ते यमसदनीं पाठविले !

राजा धृतराष्ट्र, इकडे धृष्टद्युम्न व दुर्योधन ह्यांचे युद्ध चालले होते, त्यांत धृष्टद्युम्नाने दुर्योधनाचा पराभव केल्यावर दुर्योधन घोड्यावर बसून रणांतून पळून गेला व धृष्टद्युम्न हा आपल्या सैन्यासह पांडवांस मिळण्यास निघाला. तो कौरवांच्या कुंजरांनीं सर्व पांडवांना अगदी चोहोंकडून कोंडून टाकिले

आहे असे त्याच्या दृष्टीस पडले ! तेव्हां तो त्या कुंजरांना ठार मारण्याकरितां एकदम त्यांजवर तुटून पडला. राजा, इकडे कोरवांच्या रथसेनेत शत्रुसंहारक दुर्योधन हा आढळला नाही तेव्हां अश्वत्थामा, कृपाचार्य व सात्वत कृतवर्मा 'हे दुर्योधन कोठें गेला' म्हणून क्षत्रियांस विचारूं लागले ! राजा, त्या कुरुवीरांना जेव्हां दुर्योधन कोठें दिसेना, तेव्हां त्या घोर रणांत भयंकर जनक्षय चालू असतां त्यांत तो मारिला गेला असे त्या सर्व महारथांना वाटले ! राजा, त्या समयीं त्या तुड्या योद्ध्यांची मुद्रा अगदीं उतरली आणि ते दीनवदनाने ज्यास त्यास त्याजविषयीं विचारूं लागले ! तेव्हां त्यांस कित्येकांनीं सांगितलें कीं, 'दुर्योधन राजाचा सारथि रणांत पडल्यावर पांचालराज धृष्टद्युम्न ह्याच्या दुर्धर सैन्याशीं आणखी न लढतां जिकडे सौबल शकुनि होता तिकडे तो निघून गेला ! राजा, त्या समयीं अत्यंत घायाळ झालेल्या कित्येक क्षत्रियांनीं त्या अधत्थामप्रभृति कुरुयोद्ध्यांस सांगितलें कीं, 'अहो, तुम्हांस दुर्योधनाशीं काय कर्तव्य आहे ? जर तो जिवंत असेल तर तुम्हांस भेटेल ! तुम्ही सर्व एका जुटीनें शत्रूशीं लढा; तुमचें राजा काय करणार आहे !' राजा, त्या वेळीं कित्येक क्षत्रियांचीं गात्रें बाणप्रहारांनीं अत्यंत भग्न झालीं असून त्यांचीं सर्व वाहनें वगैरेही मष्ट झालीं होतीं, आणि तशांत त्यांजवर शत्रूंकडून बाणांचा वर्षाव होतच होता; ह्यास्तव त्यांना जेव्हां अश्वत्थामादिकांनीं विचारिलें, तेव्हां ते स्पष्ट वाणीनें म्हणाले कीं, 'अहो, ज्यांनीं आम्हांस वेढा दिला आहे त्या ह्या सर्व पांडवसैन्यांस आम्ही आशीं मारिलें पाहिजे; हे पहा सर्व पांडव गजसेनेचा वध करून आम्हांवर चालून येत आहेत !' राजा धृतराष्ट्रा, त्या कौरववीरांनीं ते बाषण श्रवण करून महा-

बलवान् अश्वत्थाम्यानें पांचालराज धृष्टद्युम्नाच्या त्या दुर्धर सेनेची फळी फोडिली; आणि तो त्या रथसेनेशीं न लढतां, महाधनुर्धर व शूर अशा कृपाचार्य व कृतवर्मा ह्यांसहवर्तमान, जेथें सौबल होता तेथें निघून गेला ! राजा, ह्याप्रमाणें ते कौरवयोद्धे रणांगणांतून निघून गेल्यावर धृष्टद्युम्न आदिकरून पांडवांकडील वीरांनीं पुढें होऊन तुड्या सैन्याचा भयंकर संहार आरंभिला ! त्या वेळीं ते महारथ वीर मोठ्या वीरश्रीनें तुड्या सैनिकांशीं लढत असतां तुड्या सैनिकांनीं पराक्रमाची अगदीं पराक्राष्टा केली, आणि जिवाची आशा न धरितां पांडुसेनेशीं युद्ध केलें ! राजा, तेव्हां तुड्या सैनिकांची मुखश्री अगदींच म्लान झाली, लढतां लढतां त्यांचीं शस्त्रास्त्रे नाश पावली, व त्यांना पांडुयोद्ध्यांनीं चोहोंकडून कोंडून टाकिलें, असें पाहून सर्वतोपरी व्यंग अशा त्या तुड्या सैन्याच्या संरक्षणाकरितां मी पुढें झालें; आणि तुड्या सैन्यांतले चार योद्धे व पांचवा मी अशा आम्ही पांचजणांनीं जेथें कृपाचार्य होता तेथें उभें राहून पांचालाच्या सैन्याशी युद्ध केलें ! परंतु, राजा, अर्जुनाच्या बाणप्रहारापुढें आमचा तग निघेना; आणि अखेरीस आम्ही पांचही जण अगदीं जर्जर झालें; तरी आम्ही त्या महाभयंकर धृष्टद्युम्नावर हल्ला केला आणि मग तेथें दारुण युद्ध मातलें ! शेवटीं त्या घोर रणांत धृष्टद्युम्नानें आम्हां सर्वांना जिंकलें आणि त्यामुळें आम्ही रणांतून पळून गेलें ! राजा, नेतर आम्हांवर तो महारथ सात्यकि चालून येत आहे असें आम्ही पाहिलें; तो त्यानें चारशें रथांसह रणांगणांत माझा पाठलागही केला ! राजा धृतराष्ट्रा, वास्तविक पाहातां धृष्टद्युम्नापासून माझी सुटका होणें कठीण होतें, पण त्याचे घोडे थकल्यामुळें मी कमावसा त्याच्या कचाट्यांतून सुटलों !

परंतु तितक्यांत, पातकी मनुष्य जसा नरकांत पडतो, तसा मी पुनः माधवाच्या सैन्याच्या पैचांत पडलों आणि मग क्षणभर मोठें भयंकर युद्ध जुंपलें ! राजा, त्या वेळीं महाबाहु सात्यकीनें माझें तनुत्राण छेदिलें आणि मी भूमीवर मूर्च्छित पडलों असतां तो माझा प्राण घेण्यास उद्युक्त झाला ! नंतर अल्प अवकाशांत भीमसेनानें गदाप्रहारांनीं व अर्जुनानें घोर शरवृष्टीनें कौरवांचें गजसैन्य वधिलें आणि ते पर्वतासारखे प्रचंड हत्ती छिन्नभिन्न होत्साते रणभूमीवर चोहोंकडे मरून पडले असतां पांडवांचा मार्ग बंद झाला ! राजा, नंतर भीमसेनानें ते महान् महान् गज ओढून एकीकडे केले आणि पांडवांच्या रथांना मार्ग करून दिला ! इकडे अश्वत्थामा, कृपाचार्य व सात्वत कृतवर्मा ह्यांस रथसेनेंत शत्रुसंहारक दुर्योधन कोठेही सांपडेना आणि ते त्यामुळें अतिशय विपन्न होत्साते त्या तुझ्या महारथ पुत्रास शोधण्यासाठी त्या घोर रणांत धृष्टद्युम्नास सोडून जेथें सौबल होता तेथें निघून गेले !

### अध्याय सव्विसावा.

—:०:—

#### धृतराष्ट्राच्या अकरा पुत्रांचा वध.

संजय सांगतो:—राजा, पांडुपुत्र भीमसेनानें कौरवांच्या त्या गजसेनेचा वध केला आणि मग त्यानें रणांगणांत तुझ्या सैन्याला ठार मारण्याचा सपाटा लाविला; तों इकडे तुझा पुत्र कौरवेश्वर दुर्योधन राजा ह्याला तुझे बाकीचे जिवंत राहिलेले पुत्र शोधीत असतां त्यांस तो कोठेही आढळला नाही; आणि रणभूमीवर भीमसेन हा गदा धारण करून खळलेल्या दंडधारी यमाप्रमाणें संचार करीत कुरुसैन्याचा विध्वंस उडवीत आहे, असें पाहून ते सर्वजण एकत्र होत्साते रणांगणांत भीम-

सेनावर तुटून पडले ! राजा, त्या समयीं दुर्मर्षेण, श्रुतांत, जैत्र, भुरिबल, रवि, जयत्सेन, सुजात, शत्रुसंहारक दुर्विषह, दुर्विमोचन, दुष्प्रघर्ष व महाबाहु श्रुतर्वा हे तुझे सर्व युद्ध-विशारद पुत्र एकत्र होऊन चोहोंकडून भीमसेनावर धावून गेले व त्यांनीं त्यास सर्व बाजूंनीं कोंडून टाकिलें ! राजा, तें पाहून भीमसेन पुनः आपल्या रथावर चढला आणि त्यानें तुझ्या पुत्रांवर जलाल बाण सोडून त्यांचीं मर्मस्थळें विदारण केली ! तेव्हां ते त्या घोर संग्रामांत फिरून भीमसेनावर चाल करून गेले; आणि कड्यावरून ज्याप्रमाणें हत्तीला खालीं लोटून ठार मारावे, त्याप्रमाणें त्यांनीं भीमसेनाला रथांतून खालीं लोटून ठार मारण्याचा प्रयत्न आरंभिला ! राजा, त्या समयीं रणांगणांत भीमसेनाला अतिशय क्रोध चढला आणि त्यानें एक क्षुरप्र बाण सोडून दुर्मर्षेणाचें मस्तक तत्काळ छेदून भूमीवर पाडिलें ! नंतर महारथ भीमसेनानें तुझा पुत्र श्रुतांत ह्याजवर एक भल्ल बाण टाकिला आणि त्या योगें त्याचें सर्व कवच विदारून त्यास यमसदनीं पाठविलें ! मग त्या शत्रुसंहारक कुंतीपुत्रानें आपल्या वीरासनावरून हंसत हंसत एक नाराच बाण सोडून जयत्सेनास विधिलें असतां तो तत्काळ रथांतून भूतलावर पडला व मेल ! तें पाहून श्रुतव्याला फार क्रोध आला आणि त्यानें बांकदार पेयांचे शंभर गुग्गुंख बाण भीमसेनावर सोडिले ! तेव्हां भीमसेन फारच चवताळला आणि त्यानें विषासारखे किंवा अग्नीसारखे प्राणघातकी असे तीन बाण सोडून जैत्र, भुरिबल व रवि ह्यांस विद्ध केले असतां ते तिथेही महारथ गतप्राण होत्साते—वसंत ऋतूंत तोडिलेल्या प्रफुल्लित पळसाच्या वृक्षांप्रमाणें रक्तबंबाळ होऊन—आपआपल्या रथांवरून भूतलावर पडले ! नंतर त्या शत्रु-



संहारक भीमसेनानें दुर्विमोचनावर एक जलाल भल्ल बाण टाकिला असतां तो महारथ योद्धा एकदम मरण पावला; आणि पर्वताच्या शिखरावर वादलेल्या वृक्ष वाऱ्यानें उन्मूलित झाला म्हणजे जसा एकाएकी कोसळतो, तसा तो आपल्या रथांतून एकाएकी कोसळून भूमीवर पडला ! राजा, मग रणांगणांत सेनेच्या अग्रभागी भीमसेनानें तुझे पुत्र दुष्प्रभर्ष व मुजात ह्यांजवर प्रत्येकी दोन दोन बाण टाकिले असतां ते दोघेही महारथ बाणविद्ध होत्सते धारातीर्थी पतन पावले ! नंतर तुझा पुत्र दुर्विषह हा रणांगणांत भीमसेनावर धावून गेला, पण तो आपणावर धावून येत आहे असें पहातांच भीमसेनानें त्याजवर एक भल्ल बाण सोडिला आणि त्याच्या योगें तो तुझा पुत्र गतप्राण होत्सता सर्व धनुर्धरांसमक्ष रथांतून खाली पडला !

राजा, ह्याप्रमाणें समरांत एकट्या भीमसेनानें आपल्या बहुत भ्रात्यांना वधिलें असें पाहून श्रुतव्याला अतिशय क्रोध चढला; आणि तो सुवर्णविभूषित अशा प्रचंड धनुष्याचें आस्फालन करून विप किंवा अग्नि ह्यांप्रमाणें प्राणसंहारक शरांचा एकसारखा भडिमार करित भीमसेनावर चालून गेला व त्यानें घोर युद्धांत त्या पांडुपुत्राचें धनुष्य तोडून त्या छिन्नचाप वीरावर वीस बाण टाकिले ! राजा, मग त्या बलाढ्य भीमसेनानें दुसरे धनुष्य धारण केलें आणि तो तुझ्या पुत्रावर बाणांचा वर्षाव करून 'थांब थांब' असें त्यास म्हणाला ! तेव्हां पूर्वी समरांगणांत जंभासुर व इंद्र ह्यांचे जसें युद्ध झालें होतें, तसें त्या दोघांचें मोठें घनघोर व विचित्र युद्ध झालें ! त्या वेळीं त्यांनी एकमेकांवर यमदंडाप्रमाणें भयंकर शरांचा जो मारा केला, त्याच्या योगें सर्व पृथ्वी, आकाश, दिशा व उपदिशा हीं सर्व आच्छादित झालीं ! राजा,

तेव्हां श्रुतवा हा अतिशय संतापला आणि त्यानें धनुष्य उचलून भीमसेनाच्या वक्षस्थळावर व बाहूवर बहुत बाण टाकिले आणि त्यास अगदीं विद्ध करून सोडिलें ! त्या वेळीं तुझ्या पुत्रानें अत्यंत विद्ध केलेला तो कुंतीपुत्र—महासागर पर्वकाळी जसा खवळतो तसा—अतिशय खवळला आणि त्यानें मोठ्या क्रोधानें बाणांचा भडिमार चालवून तुझ्या पुत्राचे चारही अश्व व मारथि ह्यांस यमसदनी पाठविलें व तो रथहीन झाला असें पाहून त्याजवर त्या अनुलप्रतापी भीमसेनानें लोमवाही बाणांचा अचूक भडिमार करून आपलें हस्तलाघव व्यक्त केलें ! राजा, विरथ झालेल्या श्रुतव्यानें नंतर ढालतरवार हातांत घेतली, पण तितक्यांत भीमसेनानें तत्काळ एक क्षुरप्र बाण सोडून त्याचें शिर उडविलें आणि मग लागलेच ते त्या श्रुतव्याचें धड रथांतून धाडकनू भूतलावर पडलें व त्यामुलें सर्व भूमंडळ दणाणून गेलें !

'राजा, ह्याप्रमाणें तो शूरश्रुतवा रणांगणांत पडला असतां तुझे मैनिक अतिशय भयभीत झाले; तरी त्यांनी युद्धाची हाव धरून रणांगणांत भीमसेनावर हल्ला केला ! राजा, कौरवांच्या सैन्यसागरांपैकी अवशिष्ट राहिलेले ते योद्धे कवचें धारण करून आपल्यावर चालून येत आहेत असें पाहून प्रतापशाली भीमसेन त्यांजबरोबर युद्ध करण्यास पुढें सरसावला; आणि मग तत्काळ त्या सर्व कुरुवीरांनीं त्या पांडुपुत्राला चोहोंकडून वेढा दिला ! राजा, मग तेथें दारुण युद्ध माजलें आणि त्यांत कुरुवीरांनीं कोंडिलेल्या त्या भीमसेनानें, सहस्राक्ष देवेंद्रानें ज्याप्रमाणें असुरांना जर्जर केलें त्याप्रमाणें त्या सर्व कुरुमैनिकांस जलाल बाणांचा भडिमार करून अगदीं जर्जर केलें ! राजा धृतराष्ट्रा, नंतर भीमसेनानें कवचानें अवगुंठित असे पांचशे महान् रथ छेदिले आणि पुनः

सातशें हत्ती रणांगणांत ठार मारिले ! राजा, मग तो पांडुपुत्र भयंकर बाणांनीं दहा हजार पायदळ आणि आठशें घोडे वधून आपल्या दिव्य कांतीनें झळाळूं लागला व रणांगणांत तुझ्या पुत्रांना ठार मारल्याबद्दल त्यास मोठी कृतार्थता वाटली; आणि आपलें जन्म सफळ झालें असें त्यानें मानिलें ! राजा, ह्याप्रमाणें तो भीमसेन भयंकर युद्ध करीत तुझ्या सैनिकांचा घोर संहार उडवूं लागला असतां तुझ्या सेनेला वर मान करून त्याजकडे पाहण्याचीही छाती होईना ! तेव्हां भीमसेनानें तुझ्या सर्व सैनिकांस उधळून लाविलें जाणि त्यांस साहाय्य करण्यासाठी वीर जे कोणी आले त्यांस त्यानें ठार मारिलें व दंड ठोकून असा प्रचंड शब्द केला की, त्याच्या योगानें महान् महान् हत्ती घाबरून गेले ! नंतर, राजा, जिच्यांतील बहुतेक वीर मृत्युमुखी पडले होते अशी ती तुझी अल्प सेना अगदीं दीन झाली !

### अध्याय सत्ताविसावा.

—:०:—

#### सुदर्शन व सुशर्मा यांचा वध.

संजय सांगतो:—राजा, ह्या वेळीं तुझे युद्धांत जिवंत राहिलेले पुत्र जे दुर्योधन व सुदर्शन ते रणांगणांत घोडेस्वारामध्ये होते. पुढें दुर्योधन हा तेथें आहे असें पाहून देवकीपुत्र कृष्णानें कुंतीपुत्र अर्जुनाला म्हटलें, “ अर्जुना, आतां बहुतेक सर्व शत्रु मृत्युमुखी पडले, आपण आपल्या बंधुवर्गाचें संरक्षण केलें, आणि तो शिनिपुंगव सात्याकि संजयाला बंदिवान करून घेऊन परत आला पहा ! अर्जुना, रणभूमीवर पातकी धार्तराष्ट्र व त्यांचे अनुयायी ह्यांशीं लढल्यामुळें हे नकुलसहदेव किती दमून गेले तें अवलोकन कर. हे पहा कृप, कृतवर्मा व महारथ अश्वत्थामा हे तिघेही दुर्योधनाला

सोडून देऊन दुसरीकडेच आहेत ! हा पहा ! धृष्टद्युम्न रणांगणांत दुर्योधनाच्या सैन्याला वधून आपल्या सर्व प्रभद्रक वीरांसह दिव्य तेजानें झळाळत आहे ! तो पहा तेथें अश्वसेने-मध्ये दुर्योधन हा पुनःपुनः सभोवतालीं पहात असून त्याच्या मस्तकावर छत्र विराजत आहे ! अर्जुना, त्यानें फिरून सर्व सैन्याची यथास्थित रचना केली व तो रणांगणांत युद्धास सिद्ध झाला ! ह्यासाठी तूं त्याला जलाल शरांनीं ठार मार आणि कृतार्थ हो ! अर्जुना, आतां विलंब करण्यांत अर्थ नाही; गजसेनेचा वध झाला असें पाहून हे कौरववीर तुझ्यावर तुटून पडले नाहीत तोंच तूं त्या दुर्योधनाला ठार कर ! अर्जुना, पांचाल्य धृष्टद्युम्नानें खबर येथें यावें म्हणून कोणी तरी त्याजकडे जावें. बाबारे, प्रस्तुत समर्थी कौरवांचें सैन्य अगदीं धुकून गेलें आहे; ह्यास्तव ह्या वेळीं त्या दुरात्म्या दुर्योधनाची सुटका होतां उपयोगी नाही ! अर्जुना, सध्या रणांगणांत दुर्योधन हा तुझें सर्व सैन्य मारून ‘ आतां मी पांडवांना जिंकलेंच ’ अशा डोलांत आहे ! ह्यासाठी आपलें सर्व सैन्य पांडवांनीं पीडिलें व वधिलें असें त्याच्या दृष्टीस पडलें म्हणजे तो रणांगणांत पुढें येईल व स्वतःच मृत्युमुखी पडेल ! ”

धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कृष्णाचें भाषण श्रवण करून अर्जुनानें त्यास उत्तर दिलें, “ माधवा, भीमसेनानें धृतराष्ट्राचे बहुतेक सर्व पुत्र ठार मारिले; आतां काय ते दाघे मात्र जिवंत उरले आहेत, पण तेही आज पतन पावतील ! कृष्णा, भीष्म पडला, द्रोण मेला, विकर्तनपुत्र कर्णही यमसदनीं गेला, मद्रराज शल्याची देखील तीच वाट लागली, तसाच जयद्रथही हत झाला, आणि आतां सौबल शकुनीचे पांचशें श्रेष्ठ घोडे, दोनशें श्रेष्ठ रथ, सारे शंभर बलाढ्य हत्ती व तीन हजार पायदळ उरलें आहे; आणि

कृष्णा, आतां अश्वत्थामा, कृप, त्रिगर्ताधिप, उलूक, शकुनि व सात्वत कृतवर्मा हे इतकेच काय ते दुर्योधनाचे प्रबळ योद्धे हयात आहेत! तेव्हां मला असे वाटते की, ह्या मृत्युलोकीं कालापासून खचित कोणाचीही सुटका नाही! कृष्णा, ह्याप्रमाणे कुरुसैन्याचा संहार झाला असतांही अद्याप दुर्योधन हा युद्धार्थ सिद्ध आहेच! पण आज दिवस मावळण्यापूर्वीच महाराज युधिष्ठिर हा निदशत्रु होईल हे मी तुला खचित सांगतों. कृष्णा, माझी अशी समजूत आहे की, आज शत्रूकडील कितीही मदोन्मत्त योद्धे असले तरी ते येथे माझ्या हातून जिवंत सुटणार नाहीत! त्यांना जर जिवाची पर्वा असेल तर त्यांनी आज समरांगणांतून पळून जावे हेंच श्रेयस्कर आहे! कृष्णा, फार काय, ते जरी मनुष्यकोटीच्या वरच्या कोटीतले असले, तरीही मी त्यांचा आज वध केल्याशिवाय राहणार नाही! कृष्णा, आज मी मोठ्या क्रोधाने जलाल शरांचा वर्षाव करून गांधारराज शकुनीला ठार मारीन आणि धर्मराजाला फार कालपर्यंत जी तळमळ लागलेली आहे ती एकदांची नष्ट करीन! कृष्णा, त्या अधम सौबलाने कुरुसभेत द्यूतामध्ये आह्वांला गांजून आमची जी महान् महान् सुंदर रत्ने इत्यादि हरण केलीं, तीं सर्व मी आज पुनः परत मिळवीन! आणि आज हस्तिनापुरांतील त्या सर्व स्त्रिया रणांगणांत आपल्या पतींना व पुत्रांना पांडवांनीं वधिलें असे ऐकून आक्रोश करितील! आणि आज एकदांचें सर्व कर्तव्य समाप्त होईल! आणि, ह्याउपर दुर्योधनाला जर जगण्याची इच्छा असेल, तर त्यानें माझ्या भीतीनें रणांगणांतून युद्धविमुख होऊन पळून जावे हेंच विहित होय; नाहीं तर देदीप्यमान राजलक्ष्मी व प्राण ह्यांस त्याला आज अंतरावे लागेल! कृष्णा, कौरवांचें हें मूर्ख अश्व-

सैन्य आतां हत झालेंच म्हणून समज; कारण, माझ्या प्रत्येकाचा टणत्कारही ह्या सैनिकांना सहन होणार नाही; ह्यासाठीं रथ चालव, मला त्याचा संहार करू दे!"

राजा धृतराष्ट्र, ह्याप्रमाणे विजयशाली अर्जुनाचें भाषण श्रवण करून दाशाह कृष्णाने दुर्योधनाच्या सैन्यावर अर्जुनाचा रथ चालविला; आणि मग पांडवांकडील दुसरे दोन महारथ भीमसेन व सहदेव हेही ते सैन्य पाहून त्याजवर चाल करून गेले! राजा, ह्याप्रमाणे ते तिघेही महारथ दुर्योधनाला ठार मारण्याच्या इच्छेनें सिंहगर्जना करीत कुरुसैन्यावर धावून गेले आणि त्या सर्वांनीं मोठ्या आवेशाने शत्रूवर बाणांचा भडिमार चालविला, तेव्हां आपणांवर तुटून पडणाऱ्या त्या पांडुवीरांवर सौबल शकुनीनें उलट हल्ला केला! राजा, त्या वेळी तुझा पुत्र सुदर्शन हा भीमसेनावर चालून गेला, सुशर्मा व शकुनि ह्यांनी अर्जुनाशी युद्ध आरंभिलें आणि दुर्योधनाने घोड्यावर बसून सहदेवावर हल्ला केला व तत्काळ मोठ्या प्रयत्नाने त्याच्या मस्तकावर एक प्रास टाकून त्यास अतिशय विद्ध केले! राजा, तेव्हां तुझ्या पुत्राने ताडित केलेला तो पांडुपुत्र एकदम आपल्या रथांत वीरासनी बसला आणि त्याच्या सर्व देहांतून रक्ताचे पाट वाहू लागले व तो सर्पप्रमाणे सुसकारे देऊं लागला! राजा, नंतर कांहीं वेळाने सहदेव सावध झाला आणि त्यानें क्षुब्ध होऊन दुर्योधनावर तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार चालविला! मग कुंतीपुत्र धनंजयानेही मोठा दिव्य पराक्रम गाजविला व रणांगणांत घोड्यांवर बसलेल्या शूर योद्ध्यांचीं शिरे छेदून टाकण्याचा सपाटा लाविला. राजा, त्या समयीं अर्जुनाने बहुत बाणांचा वर्षाव करून ते सैन्य वधिलें आणि सर्व घोडेस्वारांना ठार मारून तो त्रिगर्ताच्या रथ्यांवर चालून

गेला ! राजा, तेव्हां त्रिगतीचे ते सर्व महारथ एकत्र झाले; आणि त्यांनीं कृष्ण व अर्जुन ह्यांस बाणाच्छादित केले ! तें पाहून त्या महा-यशस्वी पांडुपुत्रानें सत्यकर्मावर एक क्षुरप्र बाण सोडिला आणि मग त्याच्या रथाची ईधा छेदून दुसऱ्या एका सहाणेवर धार दिलेल्या क्षुरप्र बाणानें देदीप्यमान कुंडलें तळपत असलेलें त्याचें मस्तक एकदम उडविलें ! राजा, नंतर, वनांत क्षुधित झालेला सिंह जसा हरणावर उसळून जातो, तसा तो सत्येषूवर उसळून गेला व त्यानें कुरुयोद्ध्यांच्या समक्ष त्याजवर बाण टाकून त्यास ठार मारिलें ! नंतर अर्जुनानें सुशर्मावर तीन बाण सोडून त्यास विंधिलें व सुवर्णमंडित सर्व रथांचा फडशा पाडिला ! राजा, मग अर्जुन हा तत्काळ दीर्घ कालपर्यंत सांठवून ठेविलेलें जलाल क्रोधविष ओकीत प्रस्थलाधिपति सुशर्मावर धावून गेला आणि त्यानें त्याजवर शंभर बाण सोडून त्याचे घोडे वधिले व नंतर यमदंडाप्रमाणें भयंकर शर घेऊन तो हंसत हंसत तत्काळ सुशर्मावर टाकिला ! राजा, अत्यंत क्रोधायमान झालेल्या त्या शूर धनुर्धरानें सोडिलेला तो बाण सुशर्माला गांठून त्यानें त्याचें रणांत वक्षस्थळ विदारिलें; आणि तो कुरुवीर गतप्राण होऊन धरणीतलावर पडला असतां सर्व पांडवांना मोठा आनंद झाला आणि तुझ्या सैनिकांना अतिशय व्यथा उत्पन्न झाली ! राजा, नंतर अर्जुनानें सुशर्माच्या पंचेचाळीस महारथ पुत्रांवर बाणवृष्टि करून त्यांस यमसदनीं पाठविलें आणि आणखी जलाल बाण सोडून त्यांच्या सर्व अनुयायांना ठार मारिलें व तो महारथ पांडुपुत्र कौरवांच्या उर्वरित सेनेवर धावून गेला ! राजा, इकडे भीमसेनानें समरांगणांत क्रोधायमान होऊन हंसत हंसत तुझा पुत्र सुदर्शन ह्याजवर शरांचा भडिमार केला आणि त्यास शराच्छादित करून टाकून एका

सुतीष्ण क्षुरप्र बाणानें त्याचें मस्तक छेदिलें असतां तो एकदम भूतलावर मरून पडला ! राजा, ह्याप्रमाणें सुदर्शन हा मरण पावला तेव्हां रणांगणांत त्याच्या अनुयायांनी भीमसेनावर विविध शरांचा पाऊस पाडीत त्यास सर्व अंगांनी कोंडिलें, परंतु त्या वेळीं वृकोदरानें आसमंताद्वागीं तुझ्या सैन्यावर अतिशय घोर शरवृष्टि आरंभिली आणि इंद्राच्या वज्राप्रमाणें कठोर अशा त्या बाणांच्या योगें तुझें ते सर्व सैन्य क्षणांत मृत्युमुखीं पडूं लागलें ! राजा, तेव्हां त्या सैन्यांतील प्रमुख महारथांनीं भीमसेनावर हल्ला करून त्याच्याशीं घोर संग्राम आरंभिला ! राजा, त्या समयी पांडुपुत्रानें त्या सर्व कुरुवीरांवर घोर शरांची वृष्टि केली आणि त्या कुरुवीरांनींही उलट पांडवांकडील महारथांना प्रचंड शरवृष्टीनें झांकून काढिलें ! राजा, तेव्हां दोन्ही दळांत घोर रण मातलें आणि ती परस्परांच्या शरप्रहारांनीं घायाळ होऊन रणांगणांत पडूं लागलीं असतां जिकडे तिकडे बंधुवर्गाविषयी महान् आकांत सुरू झाला !

### अध्याय अष्टाविसावा.

—:०:—

#### शकुनि व उलूक ह्यांचा वध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कुरुवीरांचा व पांडवांचा घोर संग्राम चालू होऊन त्यांत अश्व, गज व नर ह्यांचा महान् क्षय सुरू झाला असतां सौबल शकुनि हा सहदेवावर धावून गेला ! तेव्हां तो आपल्यावर चालून येत आहे असें पाहून तत्काळ प्रतापशाली सहदेवानें त्याजवर वेगानें धावून जाणाऱ्या पक्ष्यांप्रमाणें बाणांचे लोट चालू केले. राजा, त्या समयी उलूकानें रणांगणांत भीमसेनावर दहा बाण टाकून त्यास विद्ध केले; आणि शकुनीनें भीमाला तीन बाणांनीं विंधून

नवद बाणांनीं सहदेवाला झांकून काढिलें ! राजा, त्या वेळीं दोन्ही दळांमध्ये मोठ्या निकराचा संग्राम झाला ! त्या शूरांनीं रणांगणांत एकमेकांना गांठून एकमेकांवर सहाणेवर धार दिलेल्या कंकपिच्छ व मयूरपिच्छ सुवर्ण-पुंख जलाल बाणांचा आकर्षण प्रत्यंचा ओढून भडिमार चालविला आणि त्या प्रतिस्पर्धी वीरांनीं बाहुबलानें आपआपल्या धनुष्यांच्या योगें जो शरवर्षाव केला त्यानें पावसाच्या वृष्टीप्रमाणें सर्व दिशा आच्छादित झाल्या ! राजा, नंतर रणांगणांत भीम व सहदेव ह्यांस मनस्वी क्रोध चढला आणि ते महाबलाढ्य योद्धे समरभूमीवर शत्रूंचें कंदन करित संचरूं लागले ! राजा, त्या समयीं त्या दोघांनीं शतावधि बाणांचा भडिमार करून तुझें सैन्य झांकून टाकिलें; आणि अंतरिक्षांत जिकडे तिकडे निविड अंधकार वातला ! राजा, तेव्हां शरांनीं आच्छादित झालेले घोडे बहुत मृत वीरांसहवर्तमान पळत सुटले आणि त्यामुळें जिकडे तिकडे मार्गाचा रोध झाला ! त्या समयीं समरभूमीवर जे घोडे व घोडेस्वार मरून पडले होते त्यांच्या अंगांतलीं चिलखतें छिन्नविछिन्न होऊन चोहोंकडे पसरली होती, त्याप्रमाणेंच सर्वत्र तुटलेले प्रास, ऋष्टि, शक्ति, भाले, खड्ग, कुऱ्हाडी ह्यांचा खच पडला होता, आणि ह्यास्तव सर्व पृथ्वी आच्छादित होऊन जणू काय तिच्यावर इतस्ततः पुष्पें पसरल्यामुळेंच तिला चित्रविचित्रपणा आला होता ! राजा, त्या वेळीं उभयसैन्यांतील वीर परास्परांवर तुटून पडले आणि मोठ्या क्रोधानें परस्परांना ठार मारीत रणांगणांत संचरूं लागले ! राजा, तेव्हां समरभूमीवर जिकडे तिकडे वीरांची मस्तकें दिसूं लागली ! त्यांच्या मुखचर्येवरून जणू काय ते वीर संतापानें डोळे फाडून पहात आहेत व दांतओंठ खान आहेत असें दिसत होतें !

आणि त्यांच्या कर्णांत कुंडलें झळाळत असून कमळाच्या केसरांप्रमाणें सुंदर कांति विराजत होती ! राजा, त्याप्रमाणेंच तेथें प्रचंड हत्तींच्या शूडांसारखे वीरांचे छिन्न भुज अंगादांसह शोभत असून त्याशिवाय त्यांची चिलखतें, प्रास, खड्ग व कुऱ्हाडी ह्याही सर्वत्र पसरल्या होत्या ! राजा, इतक्यांत त्या स्थळीं वीरांचीं तुटलेली धडें उठली व ती एकमेकांसहवर्तमान रणभूमीवर नाचूं लागली; आणि सर्वत्र मांस-भक्षक हिंसक प्राणी जमून रणांगणांत मोठा घोर देखावा दिसूं लागला ! राजा, अशा प्रकारें तुंबळ रण होऊन अगदी अल्प मेन्य शिलक राहिल्यानंतर त्या भयंकर संग्रामांत पांडवांना मोठी वीरश्री चढली व त्यांनी कौरवांना यमसदनीं पाठविण्याचा क्रम आरंभिला ! राजा, इतक्यांत प्रतापवान् शूर शकुनीनें सहदेवाच्या मस्तकावर प्रास टाकून त्यास अत्यंत पीडा दिली असतां तो विव्हल होऊन एकदम वीरसनीं बसला; आणि त्या पांडुपुत्राची ती अवस्था अवलोकन करून महाप्रतापी भीमसेनानें संतप्त होऊन कौरवांच्या सैन्याचें निवारण केलें व नाराच बाणांचा भडिमार चालवून शत्रूंकडील शतावधि व सहस्रावधि योद्ध्यांना वधिलें आणि तो शत्रूसंहारक योद्धा सिंहासारखा गर्जूं लागला असतां कौरवांचे नर, गज व हय धावरून जाऊन एकदम चोहोंकडे पळूं लागले व शकुनीच्या अनुयायांचीही तीच वाट लागली ! राजा, ह्याप्रमाणें आपल्या सैन्याची वाताहत झाली असें पाहून दुर्योधन राजा आपल्या सैनिकांस म्हणाला:—वीरहो, अमे स्वधर्मापासून भ्रष्ट कमे झालां ! अहो, युद्ध करा, पळून जाण्यांत लाभ तो कोणता बरे ! अहो, जो धीर वीर रणांत पाठ न दाखवितां प्राण देतो, तो ह्या लोकीं कीर्ति मिळवून मेल्यावर उत्तम लोकीं जातो ! राजा धृतराष्ट्रा.

ह्याप्रमाणें दुर्योधनाचें भाषण ऐकून सौबलाचे ते अनुयायी मारूं किंवा मरूं असा निर्धार करून मोठमोठ्यानें घोर गर्जना करीत पुनः पांडवां-  
वर चालून गेले आणि त्या सर्वांना सागरा-  
सारखा भयंकर क्षोभ उत्पन्न झाला ! राजा,  
अशा रीतीनें सौबलाचे अनुयायी आपणांवर  
चालून आले असें पाहून त्यांना जिकण्या-  
करितां पांडव हे त्यांजवर उलट चालून गेले  
आणि इकडे पराक्रमी सहदेवाही जग सावध  
होऊन पुनः युद्ध करूं लागला व त्यानें हंसत  
हंसत दहा बाणांनी शकुनीला विंधिलें. तीन  
बाणांनीं त्याचे अश्व वधिले आणि आणखी  
बाण सोडून त्याचें धनुष्य छेदिलें ! राजा, नंतर  
युद्धधुरंधर शकुनीनें दुसरें धनुष्य धारण केलें  
आणि नकुलावर साठ व भीमसेनावर महा  
बाण सोडून त्यांम विंधिलें ! राजा, त्या समयी  
उलूकांनेही आपल्या पित्याचें रक्षण करण्या-  
साठी भीमसेनावर सात व सहदेवावर सत्तर  
बाण टाकिले; परंतु तें पाहून रणांगणांत भीम-  
सेनानें उलूकावर नऊ, शकुनीवर चौसष्ट आणि  
त्यांच्या पार्श्वभागी युद्ध करणाऱ्या वीरांवर  
प्रत्येकीं तीन तीन बाण टाकून त्यांस विद्ध  
केलें ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या कुरुवीरांवर  
भीमसेनानें तेलपाणी दिलेले नाराच बाण टाकिले  
असतां ते फार चवताळले आणि ते रणां-  
गणांत—विद्युलतेनें सहित असे भेद्य ज्याप्रमाणें  
पर्वतावर पजेन्याची वृष्टि करितात त्याप्रमाणें  
—सहदेवावर वृष्टि करीत त्यावर चालून गेले !  
राजा, तेव्हां ते कौरवयोद्धे आपल्यावर धावून  
येत आहेत असें पाहून शूर व प्रतापशाली  
अशा त्या सहदेवानें उलूकावर एक मूळ बाण  
सोडून त्याचें शिर उडविलें आणि त्यामुळें  
रुधिरांत न्हालेलें असें तें त्याचें धड रथांतून  
भूतलावर पडलें व तें पाहून रणांगणांत सर्व  
पांडुवीरांना अनिश्चय आनंद झाला ! राजा,

ह्याप्रमाणें आपला पुत्र पडला असें जेव्हां  
शकुनीनें पाहिलें, तेव्हां त्याचा कंठ दुःखानें  
भरून आला आणि सुसकारे देत असतां त्यास  
विदुराच्या भाषणाचें स्मरण झालें ! राजा, नंतर  
त्यानें क्षणभर विचार केला आणि डोळे  
अश्रूंनीं भरून आले असतां तसेच सुसकारे  
देत देत त्यानें सहदेवावर चाल केली, व त्यास  
तीन बाणांनी विंधिलें ! राजा, त्या समयीं  
प्रतापशाली सहदेवानें शकुनीनें सोडिलेले ते  
तीन बाण अंगांत रुतले होते ते उपटून फेंकून  
दिले व उलट शकुनीवर बाणांचा लोट सुरू करून  
समरामध्ये त्याचें धनुष्य छेदून टाकिलें !  
राजा, ह्याप्रमाणें धनुष्यहीन झाल्यावर शकुनीनें  
खड्ग उचलिलें व तें सहदेवावर फेंकिलें; परंतु  
तें घोर खड्ग एकाएकी आपणावर येत आहे  
असें पाहून सहदेवानें हंसत हंसत त्याचे  
दोन तुकडे केले ! राजा, नंतर सौबलानें एक  
प्रचंड गदा उचलिली व ती सहदेवावर फेंकिली;  
पण तीही व्यर्थ होऊन रणांगणांत भूमीवर  
पडली ! राजा, तें पाहून शकुनीला अतिशय  
क्रोध चढला व त्यानें कालरात्रीप्रमाणें भयंकर  
अशी एक घोर शक्ति त्या पांडुपुत्रावर  
सोडिली; पण ती शक्ति आपणावर येत आहे  
असें पाहून सहदेवानें हंसत हंसत रणांगणांत  
सुवर्णमंडित शरांचा भडिमार आरंभिला व त्या  
सुवर्णमंडित शक्तीचे तीन तुकडे करून ती  
भूतलावर पाडिली; आणि त्यामुळें, अंतरिक्षांतून  
भूतलावर विद्युलता येत असतां जमा प्रकाश  
पडतो, तसा जिकडे निकडे विलक्षण प्रकाश  
पडला ! राजा, ह्याप्रमाणें ती घोर शक्ति व्यर्थ  
झाली तेव्हां सौबलही फार घाबरला आणि तें  
पाहून सौबलासह सर्व कौरववीर भयभीत  
होत्साले पळू लागले ! राजा, तेव्हां पांडवांना  
आपण आतां स्वाम विजयी झालों असें वाटलें  
आणि ते मोठमोठ्यानें आगेठ्या देऊं लागले !

राजा, त्या समयीं बहुतेक सर्व कौरव युद्धापासून पराङ्मुख झाले आणि त्यांची ती उद्भिन्नता अवलोकन करून प्रतापशाली माद्री पुत्रानें त्यांजवर महत्तावधि शरांचा वर्षाव आरंभिला व रणांगणांत त्यांस उधळून लाविलें! राजा, नंतर गांधार देशांतल्या बळकट घोडेम्बारांच्या बळावर अजूनही जयाची आशा करणारा तो कुरुवीर सौबल शकुनि रणांगणांत पांडुसेनेशी लढण्यास पुढें झाला असतां, सहदेवानें तो आपला भाग अवशिष्ट आहे असें मनांत आणून आपल्या सुवर्णमय रथांतून त्याजवर हल्ला केला; आणि आपल्या प्रचंड धनुष्यास प्रत्यंचा जोडून तिचें आस्फालन आरंभिलें! राजा, नंतर त्यानें महाणेवर धार दिलेल्या गृध्रपुंख बाणांचा सौबलावर भडिमार चालविला; आणि एखाद्या प्रचंड हत्तीला जसें अंकुशांनीं विद्ध करावें तसें त्यानें क्रोधायमान होऊन त्या गांधारराजाला बाणप्रहरांनीं अतिशय विद्ध केलें, व तो समयज्ञ पांडुपुत्र जणू काय त्या शकुनीला त्याच्या पूर्वकृत्यांचें स्मरण देण्याच्या उद्देशानें त्यास म्हणाला: — हे वीरा, क्षात्रधर्मांत अडळ राहून मजशी शौर्यानें युद्ध कर! हे अधमा, त्या वेळीं सभेंत अक्षांनीं द्यूत खेळत असतां जो तुला आनंद झाला होता, त्या दुष्कृत्याचें फळ आज तुला मिळेल! बाबारे, जे दुष्ट दुरात्मे पूर्वीं आम्हांस हंसले होते, ते सर्व ह्यापूर्वींच मृत्युमुखी पडले आहेत! आतां तो कुलांगार दुर्योधन व त्याचा मामा तूं हे तुम्ही दोघे मात्र उरले आहां! अरे, वृक्षावर कठीण काष्ठ्याचा प्रहार करून जसें त्याचें फळ पाडोंवे, तसें मी आज ह्या क्षुर बाणांचा प्रहार करून तुजें शिर तोडून पाडितों! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें भाषण करून तो रणपुरंधर महाबलवान् सहदेव क्रोधायमान होऊन मोठ्या वेगानें

सौबलावर धावून गेला आणि संतापानें नखशिखांत पेटलेल्या त्या पांडुपुत्रानें प्रत्येचेचें मोठ्या जोरांने आकर्षण करून शकुनीला दहा बाणांनीं विंधिलें, त्याचे चारही अध्वांना चार बाणांनीं वंधिलें, आणि त्याचा ध्वज, छत्र व धनुष्य तोडून टाकून सिंहासारखी गर्जना आरंभिली! राजा, ह्याप्रमाणें सहदेवानें एकसारखा बाणवर्षाव करून शकुनीचीं सर्व मर्मस्थळें भेदून त्याचा ध्वज, छत्र व धनुष्य हीं तोडून टाकिल्यावर बाणांचा घोर भडिमार आणखी तमाच चालविला; परंतु तें पाहून मुबलपुताला मनस्वी क्रोध चढला आणि तो त्या रणसंमर्दांत सुवर्णमंडित प्रामासहित सहदेवाला ठार मारण्याच्या हेतूनें त्याजवर लागलाच तुटून पडला! राजा, तेव्हां माद्रीसुतानें शकुनीच्या हातांतला तो प्रास व त्याचे दोन बळकट बाहु ह्यांवर तीन भल्ल बाण सोडिले व त्यांस एकदम छेदून टाकून तो रणांगणांत मोठ्या आवेशानें गर्जू लागला! राजा, नंतर त्यानें ताबडतोब नीट नेम धरून अतिशय कठोर अशा पोलादाचा एक सुवर्णपुंख भल्ल बाण त्याजवर टाकिला आणि त्याचें मस्तक तोडून अंतरिक्षांत उडविलें! राजा, अशा प्रकारें सूर्यासारख्या देदीप्यमान् अशा सुवर्णमंडित बाणानें सहदेवानें नेमकेंच शकुनीचें मस्तक छेदिलें, तेव्हां रणांगणांत कौरवांच्या दुष्ट ममलतीचें मूळ कारण असें तें शिर ग्वाली पडत आहे तों त्याजबरोबर त्या दुरात्म्या सौबलाचें धडही एकदम भूतलावर कोसळलें! राजा, ह्या प्रकारें सहदेवानें प्रथम शकुनीचे बळकट बाहु तोडिले, मग त्याचें मस्तक उडविलें, आणि नंतर रुधिरानें न्हालेंलें तें शकुनीचें धड थरथरत त्याच्या रथांतून खाली पडलें; व मग शकुनीचें तें रक्तांत लडवडलेलें शरीर मातीत लोळत आहे असें पाहून तुझ्या योद्ध्यांची भीतीनें पांचावर

धारण बसली आणि ते शस्त्रास्त्रांसह दशादिशांस पळत सुटले ! राजा, त्या वेळीं त्यांचीं मुखें अगदीं मुकून गेलीं, ते देहभान विसरले, गांडीवाच्या घोषानें त्यांना धडकी बसली, आणि अत्यंत भयविव्हाल होऊन ते कौरवांचें चतुरंग दळ पळून गेलें ! असो; राजा, सह-देवाच्या हस्ते शकुनि रथांतून भूतलावर पडला तेन्हां कृष्णासहवर्तमान पांडवांना मोठा आनंद

झाला व ते रणांगणांत मोठ्या उत्साहानें शंख वाजवूं लागले आणि त्यामुळें पांडवांच्या सर्व सैनिकांना मोठा हर्ष वाटला ! नंतर सर्वजण रणांगणांत सहदेवाच्या समीप प्राप्त झाले आणि त्यांनी त्याचा गौरव करून त्यास म्हटलें:—  
‘ वीरा तूं, सुदैवानें तो दुष्ट दुरात्मा शकुनी व त्याचा पुत्र उलूक ह्यांस समरांगणांत वधिलेंस हें फार उत्तम केलेंस ! ’





## न्हदप्रवेशपर्व.

—\*—

### अध्याय एकोणतिसावा.

—०—

#### दुर्योधनाचा न्हदप्रवेश.

संजय सांगतो: हे महाराजा, मग मोव-  
लाचे अनुयायी अतिशय म्बळले आणि त्यांनी  
प्राणांकडे न पहातां ममरांगणांत पांडवांस  
घेरलें तेव्हां महदेवाच्या जयार्थ तत्पर अम-  
लेल्या अर्जुनांन व चवताळलेल्या भुजंगाप्रमाणें  
दिसणाऱ्या तेजस्वी भीमसेनांन त्यांशीं तोंड  
दिलें; व शक्ति, ऋषि व प्रास हातांत घेऊन मह-  
देवाला खाऊं की गिळूं करीत आलेल्या त्या  
वीरांचा संकल्प अर्जुनांन गांडीवाच्या योगांन  
फोल करून टाकला ! त्यांन भळ बाणांनीं त्या  
धावून येत असलेल्या योद्ध्यांचे शस्त्रे घेतलेले  
उजवे हात तोडले, मस्तक कापली आणि  
त्यांच्या घोड्यांचीही छळलें उडविली. तेव्हां  
रणांत मंचरणाऱ्या लोकैकवीर सव्यसाचींन  
अतिविद्ध केलेले ते घोडे गतप्राण होऊन त्यांनी  
जमीन गांठली ! मग आपल्या सैन्याचा अगदी  
फडशा उडालेला पाहून संतप्त झालेल्या दुर्यो-  
धनांन उरलेले सर्व हत्ती, घोडे, पदाति आणि  
पुष्कळ रथांचे समुदाय एकत्र जमवून त्यांस  
म्हटलें, “ वीरहो, मुहद्दणांसह सर्व पांडवांस  
रणांत गांठून ठार करा; आणि पांचाल्य वृष्ट-  
बुध्नाला त्याच्या सैन्यामह कंठम्नान घालून  
सत्वर मागे परता. ”

राजा, दुर्योधनाचें तें भाषण त्या रणमस्त  
वीरांनीं शिरसा मान्य केलें आणि तुझ्या  
पुत्राच्या अक्षेप्रमाणें ते रणांगणांत पांडवांवर  
धावले. याप्रमाणें ते महायुद्धांतून वांचलेले लोक  
वेगांन चाल करून येत असतां पांडवांनीं  
त्यांवर सर्पाकार बाणांचा भडिमार केला; आणि

हे भरतश्रेष्ठा, दोन घटकांच्या अवकाशांत  
त्या महात्म्यांच्या हातून तें सर्व सैन्य धारातीर्थीं  
पतन पावलें. त्या वेळीं त्यांना तेथें कोणीच  
त्राता मिळाला नाही; पण पुढें सरसावलेल्या  
त्या निर्धारी सैन्यांन भीतींन बिलकूल माघार  
घेतली नाही. तेव्हां घोड्यांचें धावणें व सैन-  
कांची चाल, यांमुळें सर्व आकाश भुळींन व्यापून  
गेलें; आणि रणांगणांत दिशा, उपदिशा वगैरे  
कांहींच कळनामें झालें. राजा, नंतर पांडवांच्या  
सैन्यांतील पुष्कळ वीर बाहेर पडले; आणि  
त्यांनीं दोन घटकांपर्यंत तुझ्या लोकांची सारखी  
कत्तल चालविली. तेव्हां मग तुझ्या त्या सैन्या-  
पैकी कोणीच अवशिष्ट राहिला नाहीं—सर्वच  
ठार झाले ! प्रभो धृतराष्ट्रा, तुझ्या पुत्राकडे  
जमा झालेलें अकराच्या अकरा अक्षोहिणी  
सैन्य पांडुसंजयांच्या हातून युद्धांत निघून  
पावले; आणि, हे राजा, तुझ्या पक्षाकडील  
त्या एक हजार थोर राजांपैकीं एकदा दुर्योधन  
तेवढा जिवंत होता—पण तोही अत्यंत जखमी  
झालेला दिसत होता ! मग त्यांन चोहोंकडे  
पाहिलें तों सर्व पृथ्वी शून्याकार झालेली आहे,  
आपला एकही योद्धा जवळ नाही, आणि  
पांडव मात्र पुष्कळमे दिमताहेत, त्यांना हर्षाच्या  
उकळ्या येत आहेत, ते वरचेवर गर्जना  
करिताहेत व अगदी मज्ज राहिले आहेत, असें  
त्याच्या दृष्टीस पडलें. तेव्हां, हे महाराजा,  
आपणाजवळ कोणी नाही आणि पांडवांची  
अशी तयारी आहे हें पाहून व त्या महात्म्यांचे  
बाणांचे सणमणाट ऐकून दुर्योधनास फार विषाद  
वाटला; त्याच्या चेहऱ्यावर ग्विन्नता पसरली;  
आणि आतां येथून निघून दूर जावें असें त्या  
बलवाहनहीन राजाच्या मनानें घेतलें !

धृतराष्ट्रांन म्हटलें:—बरे सूता, मी तुला  
असें विचारितों, माझे सर्व सैन्य मरून शिबिर  
ओस पडलें त्या वेळीं पांडवांकडे किती सैन्य

शिलक राहिलें होतें? संजया, तूं या कामी मोठा कुशल आहेम; तेव्हां हें मला सांग. त्याचप्रमाणें तो सैन्यक्षय पाहून अगदीच एकाएकी राहिलेला माझा मतिमंद पुत्र राजा दुर्योधन यानें पुढें काय केलें, तेंही सांग.

संजय सांगतो:—राजा, दोन हजार रथ. मातशें हत्ती, पांच हजार घोडे आणि दहा हजार पायदळ इतकेंच काय तें पांडवांच्या त्या अफाट सैन्यापैकी बाकी उरलें होतें. तथापि तें सैन्य घेऊन धृष्टद्युम्न व्यवस्थेनें रणांत उभा होता; आणि इकडे, हे भरतश्रेष्ठा, दुर्योधन केवळ एकटा व निराधार पडला! त्या रथिवरास रणांत आपला साह्यकर्ता कोणीच दिसना! शत्रूंच्या तर गर्जना चालू होत्या! याप्रमाणें, राजा, आपल्या सैन्याचा पूर्ण संहार होऊन आपण केवळ एकटे पडलों असें जेव्हां त्यानें पाहिलें, तेव्हां त्याला भीति वाटून तो आपला मेलेला घोडा सोडून पूर्वेच्या बाजूस वेगानें पळून गेला! तो अकरा अक्षौहिणीचा अधिपति तुझा पुत्र तेजस्वी दुर्योधन गदा हातांत घेऊन पायीच सरोवराकडे निघून गेला! तो पायीच जात असतां फार दूर गेला नाही तोच त्याला धर्मशील व ज्ञानी विदुराचें भाकित आठवलें! 'खरोखर त्या महाप्रज्ञावंतानें रणांत आमची व सर्व क्षत्रियांची अशी होळी होणार म्हणून पूर्वीच जाणलें होतें!' असे विचार त्याच्या मनांत घोळू लागले. तो सैन्यक्षय झालेला पाहून त्याचें हृदय दुःखानें करपून गेलें होतें आणि डोहांत प्रवेश करावा अशी त्याला इच्छा झाली होती.

इकडे, हे महाराजा, आतांच सांगितल्याप्रमाणें धृष्टद्युम्नप्रभृति पांडवांकडील वीर चवताळून तुझ्या सैन्यावर घसरले; शक्ति व ऋषि व प्रास हातांत घेतलेल्या व गर्जणाऱ्या तुझ्या त्या सैन्याचा संकल्प अर्जुनानें गांडीवाच्या योगानें

विफल केला; आणि अमात्यबांधवांसहवर्तमान त्या सर्वांस त्यानें तीक्ष्ण शरांनीं ठार केलें तेव्हां तो श्वेतवाहन अर्जुन फारच शोभू लागला. राजा, रथ, वाजी व कुंजर यांसहवर्तमान सुबलपुत्र शकुनि निघून पावला, तेव्हां खर्ची केलेल्या महावनाप्रमाणें तुझ्या सैन्याची अवस्था झाली; आणि दुर्योधनाच्या त्या लक्षावधि सैन्यापैकी वीर अश्वत्थामा, कृतवर्मा, गौतम कृपाचार्य आणि तुझा पुत्र राजा दुर्योधन, याव्यतिरिक्त दुसरा कोणीच महारथी जिवंत अमलेला दिसला नाही!

इकडे मला पहातांच धृष्टद्युम्न सात्यकीस म्हणाला, "ह्याला घेऊन काय करावयाचें आहे?" हा जिवंत असून नमून मारखाच आहे!" धृष्टद्युम्नाचें हें भाषण ऐकून तो महापराक्रमी शनेय तीक्ष्ण खड्ग परजून मला मारण्यास उठला. इतक्यांत महाज्ञानी कृष्णद्वैपायन त्या ठिकाणी प्रकट होऊन त्याला म्हणाले, "संजयाला जिवंत सोड, त्याला कदापि मारूं नको!" द्वैपायनाचा शब्द ऐकतांच शिनिपौत्रानें हात जोडले आणि मग मला सोडून देऊन तो म्हणाला, "संजया, जा. तुझें कल्याण असो."

याप्रमाणें त्याची अनुज्ञा मिळाल्यावर कवचहीन, निःशस्त्र व रक्तबंबाळ झालेला असा मी संव्याकाळाचे वेळी नगराकडे यावयास निघालों. मी ज्या रस्त्यानें चाललों होतों त्याच रस्त्यावर सुमारे एक कोस गेल्यानंतर अत्यंत घायाळ झालेला व हातांत गदा असून एकटाच बसलेला दुर्योधन माझ्या दृष्टीस पडला! मला पाहतांच एकदम त्याचे डोले पाण्यानें भरून आले व त्याच्यानें मजकडे पाहावेना. पण शेवटीं मला तसा दीनासारखा उभा पाहून त्यानें वर मान केली. तो रणांत एकटा राहिलेला व शोकाकुल झालेला पाहून मलाही दुःखाचें भरतें आलें

आणि मुहूर्तमात्र माझ्याही तोंडांतून शब्द निघाला नाही ! मग कांही वेळानें, मला शत्रूंनीं कसें धरलें, कृष्णद्वैपायनांच्या प्रमादानें माझी तेथून कशी सुटका झाली, वगैरे वृत्तांत मी त्याला सांगितला. पण, राजा, दुर्योधन नुसता ध्यानस्थासारखा बसला होता; तो मुहूर्ताभरांनें शुद्धीवर आला, आणि आपले भाऊ व सर्व सैन्ये यांचा त्यानें मला समाचार विचारला. मी सर्व प्रत्यक्ष पाहिलेंच होतें, तें त्याला सांगितलें. मी म्हटलें, “ सर्व भाऊ व सैन्य नाश पावले, आणि तुझ्याकडचे फक्त तीन रथी शिल्लक उरले आहेत. असें निघतेवेळीं कृष्णद्वैपायनांनीं मला सांगितलें. ” हें ऐकून दुर्योधनानें एक मोठा उसामा टाकला; आणि तो पुनःपुनः मजकडे पाहूं लागला ! मग माझ्या खांद्यावर हात टाकून तो मला म्हणाला, “ संजया, तुझ्यावांचून ह्या संग्रामांत कोणीच वांचला नाही ! मला एकही जोडीदार दिसत नाही आणि पांडव तर सहायसंपन्न आहेत. असे; संजया, आतां प्रज्ञाक्षु धृतराष्ट्र राजाला जाऊन सांग की, ‘ तुझा पुत्र दुर्योधन डोहांत शिरला ! ’ कर्णासारखे जिवाचे मित्र सोडून गेले, भाऊ, पुत्र यांचाही वियोग झाला, आणि पांडवांनीं राज्य हिरावून घेतलें, अशा स्थितीत माझ्यासारखा कोण प्राण धारण करील बरें ? वडलेला हा सर्व प्रकार तूं त्यांना सांग. तसेंच, महायुद्धांतून मी निभावलों आहे, आणि अत्यंत घायाळ झालों आहे, तथापि जिवंत असून या खोल पाण्याच्या सरोवरांत गुप्तपणें राहिलों आहे, हेंही कळीव ! ” हे महाराजा, असे म्हणून त्यानें त्या महाव्हातांत प्रवेश केला आणि मथिच्या योगानें उदक स्तंभित करून टाकलें. दुर्योधन उदकांत गुप्त झाल्यावर मी एकटाच तेथें बसलों होतो, तों ज्यांचे घोडे थकून गेले आहेत असे तीन रथी एकत्र होऊन त्याच

ठिकाणाकडे येतांना मी पाहिले. ते तीन रथी म्हणजे वीर कृपाचार्य, रथिश्रेष्ठ अश्वत्थामा आणि भोजाधिपति कृतवर्मा हेच होते. ते तिघेही बाणांनीं फारच जखमी झाले होते. मला पाहतांच त्यांनीं त्वरेनें घोडे पिटाळले आणि माझ्या जवळ येऊन ते म्हणाले, ‘ संजया, तूं जिवंत सुटलास हें मदैव होय ! ’ मग, हे जनाधिपा, त्या सर्वांनीं तुझ्या पुत्राविषयी “ संजया, आमचा दुर्योधन राजा जिवंत आहे ना ? ” अशी मजजवळ चौकशी केली. तेव्हां ‘ राजा खुशाल आहे ’ म्हणून मी त्यांना सांगितलें; आणि दुर्योधन मजजवळ जें बोलला होता तेंही सर्व कळवून, ज्या व्हातांत राजानें प्रवेश केला तो मी त्यांना दाखविला. राजा, माझे तें भाषण ऐकून अश्वत्थामा हा त्या व्हाताकडे सारखी टक लावून फारच काकुळतीनें विलाप करूं लागला, “ अरेरे ! आम्ही जिवंत आहों हें राजाला माहीत नाही हें फार वाईट झालें. त्याच्या साह्यानें शत्रूंशीं लढण्याला आम्ही पुरेसे आहों ! ” अशा प्रकारें त्या महारथांनीं पुष्कळ वेळपर्यंत त्या ठिकाणीं विलाप केला; पण पांडव रणांत आलेले पाहून ते रथिश्रेष्ठ त्वरेनें पळून गेले; व कृपाचार्याच्या सुपरिष्कृत रथावर मला बसवून ते कत्तलीतून बचावलेले तीन रथी शिबिरांत आले. त्या ठिकाणीं भयतस्त झालेले लोकांचे थवे होते ते त्या सूर्यास्ताच्या वेळीं तुझ्या पुत्रांचा संहार उडालेला ऐकून सर्व मोठ्यानें आक्रोश करूं लागले ! मग, हे महाराजा, स्त्रियांच्या संरक्षणास असलेले वृद्ध लोक राज-स्त्रियांस घेऊन नगराकडे निघाले. तेव्हां तेथें सर्व सैन्याचा निःपात झाल्याचें ऐकून त्या स्त्रियांमध्ये सर्वत्र आक्रोश व रडारड सुरू होऊन मोठा कडोळ माजला. राजा, एकसारख्या रडणाऱ्या त्या स्त्रियांनीं कुररीप्रमाणें सर्व भू-मंडल दणाणून सोडलें. त्या बोटें मोडीत होत्या,

हातांनीं मस्तकें पिटीत होत्या; जेथें तेथें आ-  
क्रोश करीत होत्या, मोठ्यानें हाहाकार करीत  
होत्या, ऊर वडवीत होत्या, आणि शोक  
करीत व रडत ओरडत चालल्या होत्या !  
राजा, दुर्योधनाच्या अमात्यांचेही कंठ भरून  
येऊन ते अत्यंत व्याकूळ झाले होते. त्यांनीं  
मग राजस्त्रियांस घेऊन हस्तिनापुराकडे प्रयाण  
केलें; हातांत सतत राजदंड वागविणाऱ्या  
द्वारपालांचीही तशीच अवस्था झाली; स्त्रियांचे  
रक्षक स्पर्धा वाटण्याजोगी आस्तरणें घातलेले  
शुभ्र बिछाने गोळा करून नगराकडे धावले  
आणि दुसऱ्या कित्येकांनीं रेंवेंचरें जोडलेल्या  
रथांत बसून व आपआपल्या स्त्रियांस घेऊन  
नगरास प्रयाण केलें. हायहाय ! पूर्वीं  
रस्त्यावरची तर गोष्टच नको, पण वाड्यामध्येही  
प्रत्यक्ष सूर्याला देखील ज्यांचें नव्हे कधी दृष्टीस  
पडलें नव्हतें, त्याच स्त्रिया आज नगराप्रत  
आलेल्या सामान्य लोकांनीं पाहिल्या ! अशा  
प्रकारें त्या सौकुमार्यसंपन्न स्त्रिया, स्वजन-  
बांधवांचा नाश झाल्यामुळें लगवगीनें आश्र-  
यार्थ गांवांत येण्यास निघाल्या ! राजा, त्या  
तर बोलूनचालून स्त्रियाच, पण त्या वेळीं  
गुराग्वी—मेटपाळांपासून झाडून सारे लोक  
भीमसेनाच्या भयानें व्याकूळ होऊन व भांवा-  
वून जाऊन धूम ठोकित गांवाकडे धावले ! त्या  
वेळीं पांडवांची त्यांना इतकी विलक्षण दह-  
शान बसली होती की, ते एकमेकांकडे केविल-  
वाण्यासारखे पहात धूम नगराकडे धावत होते !  
याप्रमाणें ती अतिभयंकर पळापळ चालली असतां  
शोकसंमूढ झालेल्या युयुत्सूनें प्राप्तकालाविषयी  
विचार केला. तो आपल्याशीं म्हणाला, “एका-  
दश चमूंचा अधिपति दुर्योधन, परंतु त्यालाही  
भीमपराक्रमी पांडवांनीं रणांत जिंकिलें, त्याचे  
भाऊ ठार मारिले, आणि भीष्मद्रोणप्रभृति  
आटून मारे कौरववीर यमलोकी पाठविणें !

माझ्या कांहीं भाग्ययोगानें मीच तेवढा चुकून  
वांचलों. हीं सभोवतालचीं सर्व शिबिरे उध्वस्त  
झाली; हतनाथ व हततेज झालेले सेवक  
चोहोंकडे पळत आहेत; कल्पनातीत दुःखानें  
हे पोळले आहेत; भीतीनें त्यांचे डोळे कावरे-  
बावरे झाले आहेत आणि जणू सिंहच पाठीस  
लागल्याप्रमाणें भयभीत होऊन हे दशदिशांस  
धावत सुटले आहेत ! दुर्योधनाचे जे थोडकेसे  
सचिव अवशिष्ट राहिले होते ते राजस्त्रियांस  
घेऊन नगराकडे जात आहेत; तेव्हां प्रभु  
युधिष्ठिर व भीमसेन यांची अनुज्ञा घेऊन  
आपणही यांच्याबरोबर नगरांत प्रवेश करावा  
हेंच मांप्रत आपलें कालप्राप्त कर्तव्य होय,  
असें मला वाटलें.

नंतर, राजा, त्यानें आपला हा अभिप्राय  
युधिष्ठिर व भीम ह्या दोघांस निवेदन केला.  
तेव्हां नित्यकारुणिक असा युधिष्ठिर राजा  
त्यावर संतुष्ट झाला; आणि त्यानें त्याला  
प्रेमानें आलिंगून जाण्यास अनुज्ञा दिली. मग  
युयुत्सूनें रथारूढ होऊन वेगानें घोडे पिटाळले  
व लवकरच त्यानें त्या राजस्त्रियांस गांठलें; आणि  
त्यांस नीट संभाळून नगरांत पोचविलें. सूर्यास्ता-  
च्या सुमारास तो त्यांसह नगरांत शिरला,  
त्यावेळीं त्याचा कंठ दाटून आला होता, आणि  
डोळे पाण्यानें भरले होते. महाज्ञानी विदुर नुक-  
ताच राजवाड्यांतून बाहेर आलेला त्याला भेटला,  
त्याचेही डोळे अश्रुपूर्ण झाले होते, व हृदय  
दुःखानें दुभंग झाले होतें. त्याला पाहातांच युयु-  
त्सूनें त्यास प्रणाम करून तो जवळच उभा  
राहिला. तेव्हां तो सत्यभूति विदुर त्यास  
म्हणाला, “ बाळा, कौरवांचा एवढा संहार  
उडाला असतां तूं जिवंत आहेस हें सुदैव होय.  
पण राजप्रवेशाबरोबर यावयाचें सोडून तूच आधीं  
येथें कां आलास बरें ? याचें जें कारण बघलें  
असेल तें मला सविस्तर निवेदन कर.”

युयुत्सूने उत्तर दिलें:—भाऊचंद, पुत्र व भ्राते ह्या सर्वांमहवर्तमान शकुनीचा घात झाला आणि राजाजवळ थोडा परिवार शिल्लक राहिला होता त्याचाही जेव्हां चक्काचूर उडाला, तेव्हां राजा आपल्या घोड्यावरून उतरून पूर्वेकडे तोंड करून पळून गेला. राजा निघून गेल्यावर छावणीतील सर्वच लोक भयचकित होऊन नगराकडे धावत मुटले; तेथील अधिकारीही भयभीत झाले; आणि राजाच्या ब्रिया व त्याच्या सर्व बंधूंचा स्त्रीपरिवार मिळाली त्या वाहनांवर घालून त्यांसह भीतीने तेथून पळाले. मग मी धर्मराज व श्रीकृष्ण यांची आज्ञा घेऊन त्या पळणाऱ्या लोकांचे रक्षण करीत त्यांच्या बरोबर शहरांत आलों !

वैश्यापुत्र युयुत्सूचें तें भाषण ऐकून, आप-द्धर्मादि सर्व धर्म जाणणाऱ्या विदुराने विचार केला की, ' हा म्हणतो हें वाजवी आहे. याने केले असेंच करण्याची ही वेळ होय. ' असा विचार करून त्याने युयुत्सूची प्रशंसा केली आणि म्हटलें, ' भरतांचा क्षय झाला. तेव्हां तू केलेंस हें सर्व कालमानानुसार योग्य असेंच आहे. तूं ग्वरा अनुकोशपूर्वक कुलधर्म पाळ-लाम. आमच्या सर्वच वीरांचा निःपात उडाला असतां त्यांतून बचावून तूं परत नगरांत आलेला आम्ही पहात आहों हें आमचें भाग्य होय. अमावस्येनंतर प्रजांच्या दृष्टीस आल्हाद देणाऱ्या द्वितीयच्या चंद्राप्रमाणें तूं आज आमच्या नजरेस पडलाम लोभी, अदृग्दर्शी, पुष्कळ प्रकारें विनविलें असतांही न ऐकणारा,

दुर्दैवामुळें ज्याची विवेकबुद्धि नष्टप्राय झाली आणि म्हणून जो आज दुःखार्त होऊन गेला आहे अशा अंधाची काठी. पुत्रा, तूं नीट धरशील अशी मला आशा आहे. आजची रात्र येथें विश्रांति घेऊन उदर्याक त्वां युधि-ष्ठिराकडे जावें. ' असें बोलून, ज्याचे नेत्र पाण्याने भरून आले आहेत अशा त्या विदु-रानें युयुत्सूम हाती धरून राजनगरांत मोठ्या कष्टाने प्रवेश केला त्या वेळची ती नगरची कळा काय पुसावी ! पौरजनांवर व सर्व देशा-वर ओढवलेल्या अतर्क्य दुःखामुळें त्यांत सर्वत्र मारगवा हाहाकाराचा ध्वनि चालला आहे, तेथील आनंद व कळा पार मावळून गेली आहे, तें बहुतेक ओस व उन्वस्त झालेलें असून चोहोंकडे शुकशुकाट झाला आहे, आणि सभो-वतींच्या उद्यानांचा विध्वंस झाल्यामुळें भयाण दिसणाऱ्या सरोवराप्रमाणें तें भयाण होऊन गेलें आहे, असा तेथील तो हृदयद्रावक देखावा पाहून, सर्व धर्माधर्म व तत्त्वज्ञान जाणणारा विदुर, तथापि त्याचेंही अंतःकरण अगदी विव्हल होऊन गेलें, आणि, राजा, त्यानें राहून राहून दीर्घ निःश्वास सोडले. मग त्याच्या बोलण्यास मान देऊन युयुत्सु त्या रात्री आपल्या घरी राहिला. तेथें त्याच्या स्वजनांनीं त्याचें आदरातिथ्य केलें, परंतु तो अत्यंत दुःखित झाला असल्यामुळें व भरतकुलोत्पन्न वीरांचा एकमेकांकडून झालेला भयंकर संहार त्याच्या अंतःकरणांत मारगवा बोलत असल्या-मुळें त्यांत त्यास कांहीच गोडी वाटली नाही !



## गदायुद्धपर्व.

### अध्याय तिसावा.

—:—

#### दुर्योधनाचा शोध.

धृतराष्ट्र विचारितो:—संजया, पांडवांनी रणांगणांत माझीं सर्व सैन्ये ठार केलीं असतां त्यांतील अवशिष्ट वीरांनीं म्हणजे कृतवर्मा, कृपाचार्य व वीर्यशाली द्रोणपुत्र यांनीं व त्याच-प्रमाणें मंदमति दुर्योधन राजांनै पुढें काय केलें ते मला सांग.

संजय सांगतो:—थोर थोर क्षत्रियांच्या स्त्रिया हस्तिनापुर गांठण्यासाठीं वेगानें धावत सुटल्या, आणि शिविरांतील एकंदर सर्वच लोकांनीं पळ काढल्यामुळें तें शून्य झालें, तेव्हां ते तीन रथी अतिशय उद्विग्न होऊन गेले; आणि विजयी पांडवांचे सिंहनाद वगैरे जयशब्द ऐकून व आपला सर्व गोट उधळलेला पाहून त्या राजहितेच्छु वीरांना सायंकाळच्या वेळीं तेथें राहणें रुचलें नाहीं व मग ते पुनः व्हदाकडे गेले. तिकडे हर्षभरित झालेला धर्मशाल युधिष्ठिरही दुर्योधनास मारण्याची इच्छा धरून आपल्या भावांसहवर्तमान रणांगणांत चोहोंकडे हिंडत होता. राजा, तुझ्या पुत्राला जिंकण्याची इच्छा करणारे ते संक्रुद्ध पांडव अतिशय यत्नपूर्वक शोध करीत हिंडत होते, तथापि दुर्योधन त्यांच्या दृष्टीस पडला नाहीं. कारण तो गदा हातांत घेऊन रणांतून जो लागवगीनें निघाला, तो त्या व्हदांतील उदक आपल्या माथेनें स्तंभित करून त्यांत शिरला होता. पांडवांनीं त्यास पुष्कळ धुंढालें, परंतु तो सांपडला नाहीं. शेवटीं त्यांची वाहनें अतिशय थकून गेलीं, आणि मग तो नाद सोडून ते आपल्या सैनिकांसह आपल्या गोटांत जाऊन

स्वस्थ बसले. मग पांडवांची हालचाल बंद पडलेली पाहून ते कृपप्रभृति तिथेजण हळूहळू त्या व्हदाकडे जाऊ लागले; आणि राजा निजला होता त्या जलाशयाजवळ गेल्यावर ते त्या उदकमुप्त दुर्धर्ष राजाला उद्देशून म्हणाले, “ राजा, ऊठ; आमच्यासहवर्तमान युधिष्ठिराशीं युद्ध कर आणि पृथ्वी जिंकून तिचा उपभोग वे अथवा मरून स्वर्ग मिळव. दुर्योधना, आपलीच तेवढी सर्वस्वी हानि झाली आहे अमें नाहीं, तर त्याचेंही सर्व सैन्य तूं ठार केलें आहेस ! आणि जे त्यांचे सैनिक शिलक राहिले आहेत, त्यांशीं सामना देण्यास तूं समर्थ आहेस ! राजा, तुझी तडफ सहन करण्यास ते समर्थ नाहींत;—त्यांतून आम्ही तुझें रक्षण करीत असतां तर मुळीच नाहींत ! यास्तव, हे भारता, ऊठ, बाहेर ये !

दुर्योधनानें उत्तर केलें:—अशा भयंकर मनुष्यसंहारांतून तुम्हां पुरुषर्षभांस वांचलेले मी पहात आहे हें माझे भाग्य होय. आपल्याला विश्रांति मिळाली आणि आपला शीण गेला, म्हणजे आपण सर्व मिळून त्यांस जिंकू. तुम्हीही अतिशय थकलां आहां आणि आपल्याला अतिशयच जखमा झाल्या आहेत. शिवाय शत्रूंचें सैन्य अफाट आहे. यास्तव याच वेळीं युद्ध करणें मला रुचत नाहीं. वीरहो, जर तुमचें अंतःकरण इतकें थोर आहे, तर शत्रूंना जिंकणें ही कांही अद्भुत किंवा अशक्य गोष्ट नाहीं. आमच्या अंगीही तशीच विलक्षण शक्ति आहे; परंतु सांप्रत पराक्रम करण्याचा हा काळ नव्हे. आजची एकच रात्र विश्रांति घेऊन उद्यांच तुम्हांसहवर्तमान रणांत ठाकून शत्रूंशी लढेन, याविषयी मला तर बिलकूल संदेह वाटत नाहीं !

संजय सांगतो:—यावर अश्रुत्यामा त्या युद्धदुर्मद राजाला म्हणाला, “ राजा, ऊठ. तुझें

कल्याण असो. आम्ही शत्रूस जिंकू. राजा, इष्टापूर्त, दान, सत्य व जय यांची शपथ घेऊन मी सांगतो की, मी आजच्या आज सोमकांस ठार करीन ! जर आजची रात्र संपण्यापूर्वी माझ्या हातून शत्रूंचा संहार झाला नाही, तर यज्ञादि पुण्यकर्मांचें सज्जनोचित फल मला प्राप्त न होवो ! आणि, हे जनाधिपा, सर्व पांचालांचा निःपात केल्याशिवाय मी आपलें हें कवच सोडणार नाही हें सत्य सांगतो, ऐकून ठेव ! ”

अशा प्रकारें त्यांचें संभाषण चाललें असतां मांसाची ओझी घेतलेले कांहीं थकलेले पारधी पाणी पिण्यासाठी त्याच डोहावर जरा पलीकडच्या बाजूला येऊन उतरले. हे महाराजा, ते पारधी दररोज परमभक्तिपूर्वक भीमसेनाला मांसाची ओझी नेऊन देत असत. ते पलीकडे एकांतस्थली बसले होते, तेथून त्यांनी त्या तीन वीरांशीं चाललेले दुर्योधनाचें भाषण श्रवण केलें; आणि कौरवेंद्राची युद्धाची इच्छा नाही असें पाहून, युद्धाची आकांक्षा करणाऱ्या त्या सर्व महायुध्दरांनी जी महान् प्रतिज्ञा केली, तीही त्यांनी ऐकिली. मग त्या कौरवांकडील तिघां महारथांना त्यांनी नीट न्याहाळून पाहिलें; आणि पाण्यांत असलेल्या व युद्धाची इच्छा न करणाऱ्या राजाविषयी त्यांनी विचार केल; तेव्हां पाण्यातील राजा व बाहेरील ते तिघे वीर यांच्या भाषणावरून तो उदकांत असलेला राजा म्हणजे दुर्योधनच असा त्यांचा निश्चय झाला. कारण, कांहीं वेळापूर्वी भीमसेन दुर्योधनास शोधीत फिरत असतां त्यास हे व्याध सहज भेटले होते, तेव्हां त्यानें ‘सुर्योधन कोठें पाहिला काय’ म्हणून त्यांस विचारिलें होतें. तेव्हां, राजा, भीमसेनाच्या त्या भाषणाचें त्यांस स्मरण होऊन ते परस्परांशीं हळूहळू बोलू लागले, “ दुर्योधन कोठें आहे ते

सांगितलें म्हणजे पंडुपुत्र भीमसेन आपल्याला द्रव्य देईल. या वेळीं दुर्योधन डोहांत आहे म्हणून आम्ही त्यास वडीं दिली, तर तो आम्हांला पुष्कळ द्रव्य देईल, हें अगदी उघड दिसत आहे. यास्तव अमर्षी दुर्योधन उदकांत निजला आहे. हें सांगण्यासाठी चला आपण सर्वजण युधिष्ठिराकडे जाऊं आणि त्याला व भीमसेनाला दुर्योधन या डोहांत असल्याची बातमी देऊं. ती ऐकून तो खूप संतुष्ट होईल व आपणांस चांगलें बक्षीस देईल. चला आतां, हें रक्त आटवणारें शुष्क व भिकार मांस आपणांस काय करावयाचें आहे ! आज आपल्या जन्माची ददात मिटणार ! ”

राजा, असें म्हणून ते अतिशय हर्षित झालेले धनार्थी लुब्धक मांसाचे भारे घेऊन शिबिरास आले. इकडे त्या कपटी व पापी दुर्योधनाचा पुरता निकाल करूं इच्छिणाऱ्या वीर पांडवांस तो रणांगणांत कोठें सांपडेना, तेव्हां त्यांनी चोहोंकडे त्यास शोधण्यास आपले सैनिक पाठविले. परंतु त्या सर्वांनीं परत येऊन ‘दुर्योधन सांपडत नाही’ असेंच धर्मराजास कळविलें. हे भरतर्षभा, चारांचें हें भाषण ऐकून धर्मराजा अतिशय चिंतित पडला, आणि उसासे टाकू लागला. राजा, याप्रमाणें पांडव दीनमुद्रेनें बसले असतां ते लुब्धक त्या सरोवराजवळून निघून त्वरेनें शिबिरास आले. दुर्योधनास पाहिल्यामुळे त्यांस हर्ष झाला होता आणि त्यांत ते इतके गर्क झाले होते कीं, द्वारपालांनीं त्यांस प्रतिकार केला असतांही त्यांस न जुमानतां व हा प्रकार प्रत्यक्ष भीमसेन पहात असतांही तसेच आंत शिरले ! त्यांनीं त्वरेनें महाबली भीमसेनाजवळ जाऊन त्यास घडलेला व ऐकिलेला सर्व वृत्तांत निवेदन केला. तेव्हां परंतप भीमसेनानें त्यांस विपुल द्रव्य दिलें; आणि धर्मराजाच्या तें सर्व वर्तमान

सांगितलें. तो म्हणाला, “ राजन्, माझ्या लुब्धकांनीं त्या दुर्योधनाचा पत्ता लावला. ज्याच्याकरितां तुला चिंता पडली आहे, तो दुर्योधन जल स्तंभित करून आंत निजला आहे ! ”

राजा धृतराष्ट्रा, भीमसेनाच्या तोंडचें तें प्रिय भाषण ऐकून अजातशत्रु धर्मराजाला व त्याचे भावांना मोठा हर्ष झाला; व तो महाधनुर्धर डोहांत शिरला आहे असें ऐकतांच श्रीकृष्णाला बरोबर येऊन तो मोठ्या लगबगीनें त्या ठिकाणीं गेला. राजेंद्रा, मग आनंदित झालेले पांडव व सर्व पांचाल यांमध्ये मोठी गडबड झाली; सिंहनाद होऊं लागले; भुजा वाजूं लागल्या; आणि हे भरतर्षभा, ते क्षत्रिय त्वरेनें त्या द्वैपायन-व्हदाकडे गेले. “ पापी दुर्योधन सांपडला ! ”

“ दुर्योधन प्रत्यक्ष दिसला देखील ! ” इत्यादि प्रकारें ते सोमक मोठ्या हर्षानें चोहोंकडे ओरडूं लागले; आणि त्वरेनें बाहेर पडलेल्या त्यांच्या वेगवान् रथांचा प्रचंड शब्द आकाशास जाऊन भिडेल असा होऊं लागला. त्यांचे घोडे थकले असतांही ते मोठ्या त्वरेनें दुर्योधनास गांठण्याच्या इच्छेनें युधिष्ठिर जाईल तिकडे त्याच्या मागोमाग चालले. अर्जुन, भीमसेन माद्रीपुत्र नकुल-सहदेव, पांचाल्य धृष्टद्युम्न, अजिंक्य शिखंडी, उत्तमौजा, युधामन्यु, महारथी सात्यकि, पांचालांतील अवशिष्ट वीर, त्याचप्रमाणें, राजा, द्रौपदीचे पुत्र, सर्व घोडे व हत्ती आणि शेंकडों पदाति याप्रमाणें चालले होते. नंतर, हे महाराजा, प्रतापी धर्मराजा हा जेथें दुर्योधन होता त्या घोर द्वैपायन-व्हदावर येऊन पोचला. हे प्रभो भारता, तुझा पुत्र दैवदुर्विलसितामुळें अत्यंत अद्भुत विधीनें जलावरोध करून जेथें बसला होता, तें सरोवर अत्यंत मनोहर, शीत व स्वच्छ पाण्यानें भरलेंलें आणि दुसरा सागरच कीं काय असें गंधीर होतें; आणि, हे मनुजेंद्रा, तो गदापाणि राजा

तेथें खोल पाण्यांत शयन केला असल्यामुळें कोणाही मनुष्यास दृग्गोचर होण्याजोगा नव्हता. याप्रमाणें तो तेथें असतां मेघांच्या गर्जनेप्रमाणें तुमुल शब्द त्याच्या कानीं आला; आणि, हे राजेंद्रा, त्या शब्दांमागोमाग युधिष्ठिर राजाही आपल्या सोदरांसहवर्तमान प्रचंड शंखनादानें व रथांच्या नेमिघोषानें मेदिनी कंपायमान करीत व प्रचंड धूळ वर उडवीत तुझ्या पुत्राचा वध करण्यासाठीं तेथें आला. हे महाराजा, युधिष्ठिराच्या सैन्याचा शब्द कानीं पडतांच कृतवर्मा, कृपाचार्य व अश्वत्थामा हे महारथी राजाला म्हणाले, “ हे अत्यंत हर्षित झालेले जयोन्मत्त पांडव इकडे येत आहेत. यास्तव आम्ही तूर्त येथून निघून जातों; त्यास आपण अनुज्ञा द्यावी. ”

त्या चलाख वीरांचें तें भाषण ऐकून दुर्योधनानें ‘ ठीक आहे ’ असें म्हणून मायेच्या योगानें व्हदांतील उदक स्तंभित केलें, आणि हे महाराजा, अत्यंत शोकपरायण झालेले ते कृपप्रभृति तिघे रथी तेथून दूर निघून गेले; आणि, हे मारिषा, पुष्कळ लांब गेल्यावर एक पिंपळाचा वृक्ष पाहून ते अतिशय थकलेले थोडे राजाविषयीं चिंता करीत तेथें बसले. इकडे महाबली दुर्योधन व्हदाचें पाणी अगदीं स्तब्ध करून आंत निजून राहिला. इतक्यांत युद्धेच्छु पांडवही त्या ठिकाणीं येऊन पोचले; आणि, राजा, तिकडे ते कृपप्रभृति तिघे रथी रथांचे घोडे सोडून, “ युद्ध कसें उपस्थित होईल, राजाची स्थिति काय होईल, पांडवांना दुर्योधन कसा सांपडेल ! ” इत्यादि प्रकारें चिंतन करीत तेथें बसले !



## अध्याय एकतिसावा.

—:०:—

## सुयोधनयुधिष्ठिरसंवाद.

संजय सांगतो:—ते तिथे रथी दूर गेले न गेले तोंच ते पांडव जेथे दुर्योधन होता त्या न्हदावर येऊन पोचले. हे कुरूश्रेष्ठा, त्या द्वेषायन-न्हदावर येतांच दुर्योधनाने सरोवर स्तंभित केलेले पाहून धर्मराज वामुदेवाला म्हणाला, “कृष्णा, धर्ताराष्ट्राने उदकावरही कशी माया टाकली आहे बघ. उदक निश्चल करून हा निजला आहे. आतां त्याला मनुष्यापासून भीति नाही. अरे, ह्या देवी मायेचा प्रयोग करून हा उदकांतर्गत झाला आहे, तथापि अशा लुचेगिरीने हा कपटी माझ्या हातून जिवंत सुटणार नाही खास ! जरी आज स्वतः वज्रधारी इंद्र युद्धांत याचे साह्य करू लागला, तरी, माधवा, आज हा युद्धांत मरून पडले-लाच लोकांच्या दृष्टीस पडेल !”

वामुदेव म्हणाला:—हे भारता, मायावी दुर्योधनाची ही माया मायेच्या योगानेच हाणून पाड. युधिष्ठिरा. मायावी मायेने मारावा हेच खरे आहे. कपटाला कपट करणे हा राज-नीतीतील खरा व योग्य मार्ग होय. यास्तव, हे भरतश्रेष्ठा, अनेक धर्म्याधर्म्य उपायांनी तूही ह्या उदकावर मायाप्रयोग करून ह्या मायावी दुर्योधनाला जिंक. इंद्राने युक्ति-प्रयुक्तीनेच देवदानवांस जिंकिले; भगवान् विष्णूने अनेक युक्ति लढवूनच बलीला बद्ध केले; महादैत्य हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु हे अशाच छपवणीने प्राणांस मुकले; वृत्रासुरही अशा कपटकृत्यानेच मारला गेला; आणि गजा, अशाच प्रकारांनी श्रीरामचंद्राने पौल-स्त्याचा पुत्र रावण गणपरिवारामहवर्तमान यमलोकीं पाठविला; तेव्हां तूही कपटयोगाचा आश्रय करून शत्रूम जिंक. राजा, मीही पूर्वी

महादैत्य तारक व वीर्यवान् विप्राचित्ति हे पूर्व-कालीन दैत्य वाममार्गानेच परलोकीं पाठविले. त्याचप्रमाणे वातापि, इल्वल, त्रिशिरा व सुंदोषसुंद राक्षस अशा क्रियेच्याच योगाने ठार मारिले. राजा, इंद्र स्वर्गाचा उपभोग घेत आहे तो तरी असल्या क्रिया व अभ्युपाय यांचा आश्रय केल्यामुळेच ! क्रिया ही मोठी बलवती आहे. तिजवांचून दुसरे कांहींच तिजप्रमाणे समर्थ नाही. दैत्य, दानव, राक्षस व राजे ह्या कपटक्रिया व अभ्युपाय यांच्या योगानेच निहत झाले आहेत. यास्तव, युधिष्ठिरा, तूही क्रिया ( माया ) कर.

संजय सांगतो:—हे भरतकुलोत्पन्ना महा-राजा, याप्रमाणे वामुदेवाने सांगितले असतां संशितव्रत कुंतीपुत्र युधिष्ठिर तुझ्या जलस्थ पुत्रास हास्यपूर्वक म्हणाला, “सुयोधना, सर्वे क्षत्रियांचा व स्वकुलाचाही घात करून तूं पाण्यांत दडण्याचा हा उपक्रम किमर्थ केलास बरे ? केवळ जिवाची आशा धरून तूं आज जलशयांत शिरला आहेस, पण हे योग्य नव्हे ! यास्तव, वा सुयोधना, ऊठ आणि आम्हांबरोबर युद्ध कर. हे नरश्रेष्ठा, आज तूं जो भयभीत होऊन उदकांत लपला आहेस, त्या तुझा तो पूर्वीचा गर्व व ताठा कोणीकडे गेला ? अरे, सभेमध्ये सर्वे लोक तुला शूर, शूर, म्हणून म्हणतात, परंतु तूं तर आज उदकांत दडून बसलास, तेव्हां तुझी ते व्यर्थ प्रशंसा करतात असें मला वाटते ! तुझ्या अंगी खरेच शौर्य असेल तर ऊठ आणि युद्ध कर. तूं जात्या क्षत्रिय आहेस आणि त्यांतही विशेषकरून कौरवेय आहेस. तर आपले कुल व जन्म यांचे तुला कांहीं तरी स्मरण असू दे. अरे, कौरवांच्या थोर वंशांत आपले जन्म झाल्याबद्दल तूं फुशारकी मारीत असतोस ना ? मग आज युद्धांत भय पावून

येथें पाण्यांत शिरून कसा दडून बसतोस ? अरे, युद्ध न करणें हें अयोग्य आहे; हा कांहीं सनातन धर्म नव्हे. राज्यांत किंवा स्वर्गांत स्थान मिळविणें हें क्षत्रियाचें कर्तव्य होय, पण युद्ध टाकण्यानें यांतील कांहींच प्राप्त होत नाहीं. राजा, रणांतून पलायन करणें हें अनार्यासच शोभणारें व स्वर्गास मुकविणारें आहे. हे पुत्र, भाऊ, पिते, संबंधी, मित्र, मामा व सगेसोयरे मरून पडलेले पहात असतां युद्धाचा शेवट करण्यापूर्वीच तुला जीविताचा लोभ कसा सुटला ? अरे बाबा, या सर्वांचा घात करून सांप्रत तूं डोहांत बसला आहेस, तेव्हां तुला मरण्याची इतकी भीति वाटत होती तर तूं यांचा तरी एवढा संहार कशाला केलास ? तूं केवळ शूरपणाचा अभिमान भोगणारा आहेस, पण खरा शूर नव्हस ! हे भारता, सर्व लोकांसमक्ष 'मी शूर ! मी शूर !' म्हणून तूं खोटीच वल्गना करितोस ! अरे, जे शूर असतात ते शत्रूस पाहून कधीच पलायन करीत नसतात ! अथवा तूं जर शूर आहेस, तर, हे वीरा, तूं कोणत्या हेतूनें युद्ध टाकून दिलेस तें तरी सांग पाहूं ! वानप्रस्थत्व, न्यस्तशस्त्रत्व किंवा षंडत्व या तीनच गोष्टी येथें संभवतात. तुला राज्याचा लोभ आहे, त्यापेक्षां वानप्रस्थ होण्यासाठीं कांहीं तूं युद्ध सोडलें नाहीस खास; तमेंच तूं शस्त्रसंन्यासही केला नाहीस, कारण तुझे हातांत गदा आहे ! राहतापैकी षंडत्व राहिले ! परंतु, वीरा 'मी षंड असल्यामुळें पळालों !' असलें लज्जास्पद उत्तर तूं देऊं नये; तर उठ आणि आपल्या प्राणांची भीति सोडून युद्ध कर. सुयोधना, सर्व सैन्याचा व आपले भावांचाही घात करून सांप्रत तूं आपले प्राण वांचविण्याची बुद्धि धरावीस हें योग्य नाही. धर्माचरणाच्या दृष्टीनेंही हें योग्य नव्हे. सुयोधना, तुझ्या सारख्यानें तरी प्रथम क्षात्रधर्माचा आश्रय

करून शेवटीं असें वर्तन करूं नये. अरे, जो तूं कांहीं कालापूर्वीं कर्ण व सांबल शकुनि यांच्या जिवावर चढून जाऊन मूर्खपणानें आपणास देव मानीत होतास व आपली खरी योग्यता विसरला होतास, तोच तेव्हां तसें महत्पाप करून आतां कां चुकारपणा करतोस ! लढाईला ये ! अरे, तुझ्यासारख्यानें मोह पावून पलायनाविषयीं आवड धरावी हें कसें काय बाबा ? सुयोधना, तुझे पूर्वींचे ते आटोकाट प्रयत्न, तो अभिमान, तें शौर्य आणि ती प्रचंड गर्जना आज कोठें आहे ? अरे, तूं जलाशयांत कां निजलास ? तुझी ती कृतास्त्रता गेली कोठें ? हे भारता, खरा क्षत्रिय असशील तर उठ आणि क्षात्रधर्म पाळून लढाई कर. आमचा पराभव करून ह्या पृथ्वीवर सत्ता गाजीव; किंवा, हे भारता, आमचे हातून निघन पावून भूमीवर शयन कर ! हाच तुझा महात्म्या विधात्यानें उत्पन्न केलेला परम धर्म होय. त्याचें पालन कर; आणि हे महारथा, आपलें 'राजा' हें नांव यथार्थ कर ! ”

संजय सांगतो:—हे महाराजा, धीमान् धर्मराजानें असें भाषण केलें तेव्हां तुझा उदकांत बसलेला पुत्र तेथूनच बोलू लागला.

दुर्योधन म्हणाला:—महाराजा युधिष्ठिरा, मनुष्यास भीति वाटली तर त्यांत काय आश्चर्य आहे ! तें तर स्वाभाविकच होय ! परंतु, हे भारता, मी कांहीं जिवाच्या भीतीनें भिऊन पळालों नाही. मजजवळ रथ नाही, भाता नाही, माझा सारथि मरून गेलेला, एकही मनुष्य माझ्याजवळ उरला नाही, आणि मी रणांत एकटा राहिलों ! अशा स्थितींत जरा एकांतस्थली विश्रांति घेणें मला प्रशस्त वाटलें. राजा, मी जो ह्या जलांत शिरलों तो प्राण वांचविण्याच्या हेतूनें नव्हे, भीतीनें नव्हे, किंवा विषादानेही नव्हे; तर केवळ श्रमांमुळें शिरलों. हे कौतेया,

तुम्ही कांहीं वेळ विश्रांति घे; तशीच तुझ्या-  
मागून आलेल्या त्या लोकांनाही विश्रांति घेऊं  
दे; आणि मग उठून तुम्हां सर्वांबरोबर मी  
रणांत लढेन !

युधिष्ठिर म्हणाला:—अरे, आम्ही अगदीं  
ताजेतवानेच आहों, आणि केव्हांपासून तुला  
शोधतो आहों. तर, सुयोधना, आतांच उठ  
आणि येथेंच युद्ध कर. समरांत पांडवांना  
मारून निष्कलंक राज्य मिळीव; अथवा रणांत  
आमच्या हातून मरून वीरलोक प्राप्त करून घे!

दुर्योधन म्हणाला:—हे कुरुनंदा, हें  
कौरवांचें राज्य मी ज्यांच्यासाठीं इच्छीत होतो, ते हे माझे सर्व भाऊ तर निधन पावले.  
त्याचप्रमाणें, हे जनेश्वरा, सांप्रत ही क्षीण-  
रत्ना, क्षत्रियपुंगवांनीं वियुक्त व गतधवा  
स्त्रियेप्रमाणें झालेली पृथ्वी उपभोगावी असें  
माझ्या मनांतही येत नाही. युधिष्ठिरा, मी  
एकटा राहिलों आहें, तरी अजूनही सर्व  
पांडव-पांचालांचा मोड करून तुला जिंक-  
ण्याची माझी उमेद आहे, हें मी तुला सांगतो.  
परंतु द्रोण व कर्ण संशांत झाले, आणि पिता-  
महर्षी निधन पावले, यामुळें आतां युद्ध  
करून कांहींच कर्तव्य नाही असें मला वाटतें.  
कारण, आतां तुला जिंकून मिळविलेलें राज्य  
मला एकट्याला काय करावयाचें आहे? ही  
केवळ निर्जेन झालेली पृथ्वी आतां तुलाच  
लवलाभ होवो. कारण, सहायहीन झालेला  
कोणता राजा राज्य करूं इच्छील बरें? त्याच-  
प्रमाणें, मला जिवाची आशा आहे असें म्हण-  
तोस, तर कर्णशकुनीसारखे जिवाचे मित्र,  
आणि पुत्र, भ्राते व वडील यांचा वियोग  
झाला असतां आणि तुम्हीं राज्य हिरावून घेतलें  
असतां माझ्यासारखा कोण वीर जगूं शकेल?  
परंतु सांप्रत वस्तुस्थिति तशी नाही. तुम्हीं  
राज्य हिरावून घेतलें नाही; व अजून तुम्हांस

जिंकण्याची माझी धमक आहे; पण मला आतां  
तें कर्तव्य नाही. तेव्हां मी हरिणचर्म परिधान  
करून वनांत निघून जाईन. कारण, हे भारता,  
स्वपक्षाचा पूर्ण क्षय झाल्यामुळें मला राज्याची  
प्रीति राहिली नाही. जीतून आपले बहुतेक  
आप्तबांधव नष्ट झाले आहेत, तसेच घोडे व  
हत्तीही जीत उरले आहेत, अशी ही पृथ्वी,  
राजा, तूं सुखेनैव भोग, मला तिची जरूरी  
नाहीं. मी मृगचर्म घेऊन वनांतच जाईन!  
कारण, माझे असें कोणीच माणूस न राहिल्या-  
मुळें मला आतां जीविताची कांहीं किंमत  
वाटत नाही. तर, राजेंद्रा, खुशाल जा आणि  
राजहीन, योधहीन व नष्टरत्न झालेल्या या  
भूमीचा—ज्याला उपजीविकेचें साधनच राहिलें  
नाहीं अशा—तूं खुशाल उपभोग घे.

संजय सांगतो:—हें करुणाजनक भाषण  
श्रवण करून महाक्रीतिमान् युधिष्ठिर उदकस्थ  
दुर्योधनाशीं बोलूं लागला.

युधिष्ठिर म्हणाला:—अरे बाबा, पाण्यांत  
बसून आर्तप्रलाप करूं नको. राजा, हें तुझें  
भाषण माझ्या मनांतच उतरत नाही. मी द्याला  
केवळ कावळ्याची कावकाव समजतो. सुयो-  
धना, यदाकदाचित् तूं पृथ्वीदान देण्यास समर्थ  
असतास, तथापि तूं दिलेल्या पृथ्वीवर राज्य  
करण्याचें मीं मुळीच इच्छिलें नसतें. ही संपूर्ण  
पृथ्वी तूं देतास तरी ती मीं अधर्मानें घेतली  
नसती. कारण, राजा, क्षत्रियाला येथें प्रतिग्रह  
हा धर्म सांगितलेला नाही. ही अखिल पृथ्वी  
तूं दान दिलेली व्यावी असें माझ्या मनांतही  
येणार नाही. कारण, तुला युद्धांत जिंकून  
पृथ्वीचा उपभोग घेण्यास मी समर्थ आहे. शिवाय  
तूं सांप्रत पृथ्वीचा मालक नसतांना तिचें दान  
करण्याची कशी इच्छा करतोस? मग, राजा,  
पूर्वीच आपल्या कुलाची शांति व्हावी, व्यर्थ तंटे  
माजून नयेत म्हणून आम्ही धर्मतः याचना करीत

होतों तेव्हांच ही पृथ्वी कां नाहीं दिलीस ? राजा, प्रथम महाबलिष्ठ श्रीकृष्णाचा उपमर्द करून आतां राज्य कसें देतोस ? अरे, काय हा तुझ्या चित्ताला भ्रम झाला ! राज्य हातीं असलें तरी कोणता राजा तें सोडण्याची इच्छा करणार आहे ! आणि आज तर तूं पृथ्वी देण्याला किंवा स्वपराक्रमानें तिचें राज्य करण्याला—कशालाही समर्थ नाहीस. असें असतां, हे कौरवा, तूं पृथ्वीदान करू इच्छितोस हे काय ? मला रणांत जिंकून ह्या वसुंधरेचें पालन कर. हे भारता, पूर्वीं जो तूं सुईच्या अग्राएवढीही भूमी मला देत नव्हतास तोच तूं आतां सर्व भूमि कशी देतोस ? तेव्हां तूं सुईच्या अग्राएवढ्या जमिनीचाही त्याग केला नाहीस, मग आतांच संपूर्ण भूमीचा त्याग कसा करतोस ? अरे, आजवर अशा प्रकारचें ऐश्वर्य संपादून व ह्या अखिल पृथ्वीचें राज्य करून कोणता मूर्ख शत्रूला पृथ्वी देईल ? तूं केवळ मूर्खपणानें हें बोलतोस. तूं अगदी गांगरून गेला आहेस, आणि त्यामुळें तुला कांहींच कळत नाही. परंतु पृथ्वी देण्याची इच्छा केलीस तथापि तूं आतां वांचणार नाहीस. आमचा पराभव करून ह्या पृथ्वीवर आधिपत्य चालीव, अथवा आमच्या हातून निधन पावून सर्वोत्तम लोकां गमन कर. राजा, आपण दोघे जिवंत आहों तोंपर्यंत आपल्यापैकी कोणाचा विजय झाला, याविषयीं सर्व प्राण्यांना संशय पडेल. पण, हे दुर्बुद्धे, तुझें जीवित सांप्रत माझ्या हातांत आहे. मला वाटेल तितके दिवस मी खुशाल जगूं शकेन, पण तूं तसा जगण्याला समर्थ नाहीस. अरे, तूं पूर्वीं आम्हांला जाळण्याचा यत्न केलास, सर्व डसविलेस, पाण्यांत लेटलेंस; तसेंच, राजा, राज्य हरण करून तूं अनेक प्रकारें आमचा छल केलास, कटु भाषणें केलींस आणि द्रौपदीला फरफरां ओढलीस ! इतक्या प्रकारांनीं तूं

आमचे अपकार केले आहेस. या कारणास्तव, हे पापकर्मन्, तुझे प्राण आज राहाणार नाहीत. तर उठ, उठ जाणि युद्ध कर. युद्धांतच तुझें कल्याण होईल.

हे जनाधिपा, याप्रमाणें त्या वीरांनीं येथें पुनःपुनः आणखीही पुष्कळ प्रकारचीं वीरश्रीचीं भाषणें केलीं.

## अध्याय बत्तिसावा.

—:०:—

### युधिष्ठिरसुयोधनसंवाद.

धृतराष्ट्र विचारितोः—संजया, माझा पुत्र पृथ्वीपति दुर्योधन स्वभावतः कोपी असून तो शत्रूंस ताप देणारा व वीर आहे. त्याची अशी निर्भर्त्सना होऊं लागली तेव्हां त्याची काय अवस्था झाली ? कारण, त्यानें अशी निर्भर्त्सना कधींच ऐकलेली नाही, —तो सर्व लोकांपासून राजा याच नात्यानें मान पावला आहे. संजया, दुर्योधनाचा अभिमान कोठवर वर्णावा ? त्याला सीमाच नाही ! सूर्याची प्रभा आणि स्वकीय छत्राची छाया या दोन्ही त्याला सारख्याच खेदजनक वाटत ! सूर्याच्या प्रभेवर आपली सत्ता चालत नाही व ती आपणास तप्त करते म्हणून त्यास विषाद वाटे, तर छत्राची छाया आतपापासून दुर्योधन राजाचें संरक्षण करते हा प्रवादही त्याला तितकाच जाचक होई ! इतकें ज्याचें अभिमानित्व, त्याला युधिष्ठिराचे ते प्रलाप कसे सहन व्हावे ? म्लेच्छदेशासुद्धां ह्या संपूर्ण पृथ्वीचें जीवित केवळ ज्याच्या प्रसादावर राहिलेलें होतें—आणि संजया, ही गोष्ट त्वां प्रत्यक्ष पाहिलीच आहे—त्याचा असा अधिक्षेप आणि तोही पांडवांकडून होत असतां, सर्व स्वकीय सेवकांनीं विहीन झालेला व खोल उदकांत अंतर्हित झालेला माझा दुर्योधन तीं दिमाखाचीं व कटु

माणें वारंवार ऐकून पांडवांस काय म्हणाला, ते मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा, तुझ्या उदकस्थ पुत्राची युधिष्ठिरानें व त्याच्या भावांनीं अशी अवहेलना चालविली असतां, हे राजेंद्रा, तीं कटुतम वचनें श्रवण करून, तो विषम स्थितीत होता तथापि अगदीं संतप्त होऊन गेला. त्यानें पाण्यांत असतांच पुनःपुनः दीर्घ निःश्वास सोडले; वरचेवर हात वळीत त्यानें युद्ध करण्याचा निश्चय केला; आणि तो युधिष्ठिरास म्हणाला, “ तुम्ही सर्व पांडव रथवाहनांनीं युक्त असून तुमचे सुहृज्जनही तुम्हांबरोबर आहेत. मी तर केवळ एकटा, परिश्रान्त, विरथ व वाहनहीन असा आहे. शस्त्रें घेतलेल्या अनेक रथस्थ वीरांचा गराडा पडला असतां पादचारी व निःशस्त्र झालेला केवळ एकटा मनुष्य युद्धाचा उत्साह कसा धरील ? तेव्हां, युधिष्ठिरा, तुम्हांपैकीं एकेकानें माझ्याशीं लढावे. कारण, एकां रणांत अनेकांशीं लढणें न्याय्य नाही; आणि विशेषकरून कवचहीन, निःशस्त्र, अतिशय श्रान्त, आपद्धस्त, अत्यंत घायाळ झालेला व ज्याचे सैनिक व वाहनें मरून गेलीं आहेत अशांनें तर नाहीच नाही ! राजा, मला तुजपासून भीति नाही ! भीमसेनापासून नाही. अर्जुनापासून नाही, कृष्णापासून नाही, तशीच पांचालांपासूनही काडीची भीति नाही. त्याचप्रमाणें युयुधान किंवा नकुलसहदेव हेही माझे काडीमात्र वांकडें करू शकणार नाहीत. मी क्रुद्ध होऊन रणांत उभा राहिलों असतां हे तुझी सर्वजण व दुसरे जे तुझे सैनिक आहेत त्या सर्वांचें मी एकटा निवारण करीन. हे जनाधिपा, सज्जनांची कीर्ति धर्ममूलक असते म्हणजे ते जसा धर्म आचरितात, तशी त्यांची कीर्ति होते. तेव्हां येथें मी धर्म व कीर्ति या दोहोंचें पालन करीत असं म्हणतों कीं, एकेकाशींच

कशाला ? मागून आलेल्या सर्व ऋतूशीं जसा एकटा संवत्सर, तसा-मीही उदून एकटा तुम्हां सर्वांशीं लढेन. रात्रिसमाप्तीच्या वेळीं एकटा सूर्य जसा सर्व नक्षत्रांचें तेज हरण करितो, तसा आज मी निःशस्त्र व विरथ असतांही सशस्त्र, सरथ व वाहनयुक्त अशा तुम्हां सर्वांचा एकटा स्वतेजानें नायनाट करून टाकितों. उभे रहा, पांडवहो उभे रहा ! युधिष्ठिरा, आज बांधवांसहवर्तमान तुला ठार करून बाल्हीक, द्रोण, भीष्म, महाथोर कर्ण, शूर जयद्रथ, भगदत्त, मदप्रति शल्य, तसाच भूरिश्रवा आणि, हे भरतश्रेष्ठा, माझे पुत्र, सौबल शकुनि व दुसरे मित्र, तसेच सगेसोयरे व बांधव या सर्वांचे ऋणांतून मी आज मुक्त होईन ! ” इतकें बोलून तो थांबला.

मग युधिष्ठिर त्यास म्हणतो:—सुयोधना, सुदैवानें तूही क्षात्रधर्म जाणत आहेस व सुदैवानें तुझी बुद्धि युद्ध करण्याकडेच प्रवृत्त होत आहे. कौरवा, भाग्ययोगानें तूं शूर आहेस; आणि ज्यापेक्षां आम्हां सर्वांशीं एकटा युद्ध करण्यास तयार झाला आहेस, त्यापेक्षां तूं युद्धकर्मही जाणत आहेस यांत संशय नाही. तथापि, सुयोधना, तूं एकटा आहेस, तर तुला वाटेल तें आयुध घेऊन तूं आम्हांपैकीं एकाशींच युद्ध कर; आम्ही बाकीचे लोक तुमचे प्रेक्षक होऊं. हे वीरा, मीच होऊन आणखीही तुला एक इष्ट गोष्ट सांगतों, ती ही कीं, तूं युद्धांत आम्हां पांचांपैकीं एकाला मारलेंस म्हणजे तुला राज्य मिळेल; अथवा त्याचे हातून मरण पावलास तर स्वर्गप्राप्ति होईलच !

दुर्योधन म्हणाला:—रणांत माझ्याशीं लढावयास एकटाच इसम देणें असेल तर तुम्हांमध्ये जो अतिशय शूर असेल तोच द्या. आयुधांपैकीं ही गदा मी तुझ्या अनुमतीनें पसंत करितों. तुम्हांपैकीं जो कोणी एकटा





न्याला बाहेर निघालेला पाहून.....त्यांनी एकमेकांचे हातांवर हात मारिले. ( शल्यपर्व पृष्ठ ९७. )

मला मारण्यास पूर्ण समर्थ आहे असें तुम्हांस वाटत असेल, त्यानेंच पादचारी होऊन रणांत गदेनें माझ्याशीं लढवें. ह्या महायुद्धांत विचित्र प्रकारचीं रथयुद्धे पदोपदीं झाली आहेत; आज हें एक अद्भुत व महान् असें गदायुद्ध होऊं दे. एकच प्रकार फार वेळां झाला कीं कंटाळा येत असतो. अन्नाचाही पालट करण्याची मनुष्यांस इच्छा होते, तर आज तुझ्या संमतीनें युद्धाचाही पर्याय होऊं दे. हे महाबाहो, गदेनें मी भावांसह तुला, पांचालांना, संजयांना व तुझे जे दुसरे सैनिक आहेत त्यांना जिंकून; आणि, युधिष्ठिरा, तुम्हांपासून काय, पण प्रत्यक्ष इंद्रापासूनही मला बिलकूल कचर वाटणार नाही !

युधिष्ठिर म्हणाला:—हे गांधारे, ऊठ, ऊठ, माझ्याशींच लढ. सुयोधना, तूं मोठा बली आहेस, तर गदा घेऊन एकटा एकाशीच भिडून आपलें पुरुषत्व सिद्ध कर. गांधारे, अगदी सावधपणें लढ बरें का ! आज इंद्र जरी तुझ्या साहाय्यार्थ धावला, तरी तूं जगणार नाहीस !

संजय सांगतो:—राजा, हें बोलणें तुझ्या पुत्राला सहन झालें नाही. तो नरशार्दूल महा-नागाप्रमाणें फूत्कार सोडीत पाण्याच्या तळाशीं चळवळ करूं लागला. उत्तम घोड्याला चाबुकाचा फटकारा सहन होत नाही त्याप्रमाणेंच वाक्प्रतोदानें वरचेवर पीडित होणाऱ्या दुर्योधनाला तें बाषण सहन झालें नाही. तो वीर्यशाली दुर्योधन पाण्याची खळवळ उडवून सुवर्णा-गदांनीं सुशोभित केलेली लोहमय जड गदा घेऊन भुजगेंद्रासारखा फोंफावत खोल पाण्यांतून वेगाने उसळला; आणि स्तंभित केलेल्या जलाचा भेद करून व खांद्यावर लोखंडी गदा टाकून तो तुझा पुत्र सूर्याप्रमाणें तळपत वर आला ! नंतर त्या धैर्यशाली बलवंताने सुवर्णाने मढविलेली टोकदार अशी अवजड पोलादी गदा

उंच केली, तेव्हां सशृंग पर्वताप्रमाणें त्या गदाधारीला पहातांच, हा प्रजांचा संहार करणारा संकुद्ध शूलपाणिच उभा आहे काय असा भास झाला ! राजा, गदा घेतलेला तो भरतकुलोत्पन्न वीर प्रखर ताप देणाऱ्या सूर्याप्रमाणें झळकूं लागला; तो शत्रुमर्दक महाबाहु जेव्हां गदा हातांत घेऊन सरोवराच्या बाहेर आला, तेव्हां हा यमच दंड हातांत घेऊन आला आहे असें सर्व प्राण्यांस वाटलें आणि हे जनाधिपा, सर्व पांचालांना तुझा पुत्र तज्ज-धारी इंद्र किंवा शूलपाणि हर ह्यांसारखा दिसला. त्याला बाहेर निघालेला पाहून सर्व पांचालांना व पांडवांना मोठा हर्ष झाला आणि त्यांनीं एकमेकांचे हातांवर हात मारिले ! पण तुझा पुत्र दुर्योधन बाला तो मोठा उपहास वाटला. त्यानें संतापून, जणू पांडवांना दमघच करतो कीं काय अशा रीतीनें डोळे वटारून, भुकुटी वांकड्या करून आणि ओठ चावून सग कृष्णासह त्या पांडवांस प्रत्युत्तर दिलें.

दुर्योधन म्हणाला:—पांडवहो, तुम्ही मला हंसतां काय ? पण चिंता नाही; याचें फळ तुम्हांला लवकरच मिळेल ! आतांच पांचालां-सुद्धां तुम्ही सर्वजण गतप्राण होऊन यम-लोकची वाट धराल !

संजय सांगतो:—राजा, तो रक्तबंबाळ झालेला व त्या जलांतून वर आलेला तुझा पुत्र दुर्योधन हातांत गदा घेऊन उभा राहिला, तेव्हां त्या रक्तानें माखलेल्या वीराचें तें पाण्यानें भिजून पागळणारें शरीर—ज्यांतून जल-धारा चालल्या आहेत अशा पर्वताप्रमाणें भासत होतें. त्यानें गदा उगारली असतां हा कुद्ध यमच गदा उगारून उभा आहे असें पांडवांस वाटलें. नंतर, राजा, ज्याचा शब्द मेघासारखा गंभीर आहे अशा त्या सुयोधनानें हर्षानें महोक्षाप्रमाणें दुरकण्या दिल्या; आणि



त्या वीर्यवंतानें पांडवांस गदा घेऊन रणांत येण्याविषयी आह्वान केलें.

दुर्योधन म्हणाला:—युधिष्ठिरा, तुम्ही एके-कोटेच माझ्याशीं लढायला या. एकट्या वीरानें रणांत अनेकांशी लढणें न्याय्य नाही; आणि विशेषेकरून कवचहीन, अतिशय थकलेला, पाण्यांत बुडालेला, अत्यंत द्रायाळ आणि ज्याचे सर्व सैनिक व वाहनें मरून गेलीं आहेत असा तो असेल तर मुळीच नाही. तथापि तुम्हीं सर्वांनीच माझ्याशीं अवश्यमेव लढावे असें तुमच्या मनांत असेल, तर तें अयुक्त आहे हें तूं नित्य जाणतच आहेस !

युधिष्ठिरानें उत्तर दिलें:—सुर्योधना, जेव्हां अभिमन्यूला अनेक महारथांनीं मिळून रणांत मारिलें, तेव्हां तुझी ही धर्मबुद्धि अशीच कां नव्हती बरें ? क्षात्रधर्म हा अत्यंत क्रूर, कशाचीही अपेक्षा न करणारा आणि अतिशय निर्दय आहे. असें नसतें तर तुम्हीं अभिमन्यूला तशा शोचनीय स्थितींत कसें मारिलें असतें बरें ? तुम्ही सर्वजण धर्मज्ञ होतां, शूर होतां, जिवाची पर्वा न करणारे होतां, आणि न्यायानें लढणारांस उत्कृष्ट अशी इंद्रलोक्ची गति मिळते असें मांगितलेलें आहे तेंही तुम्हांस माहीत होतें ! मग जर एकाला बहुतांनीं मारूं नये हा धर्म आहे, तर त्या वेळी अभिमन्यूला बहुतांनीं आणि तेंही तुझ्या अनुमतीन कसें बरें मारिलें ? सारांश, असा नियमच आहे की, संकटांत पडलेला मनुष्य धर्माला कवटाळतो आणि तोच सुस्थितींत असेल तर स्वर्गाची कवाडें जणू लावलेलीच आहेत असें त्याला दिसतें. अस्तु; वीरा, कवच बांध, शिरस्त्राण घालून कैम आवळ, आणि, हे भारता, तुला आणखी जें जें साहित्य नसेल तेंही घे. वीरा, मी तुला आणखी एक अशी प्रिय सवलत देतों कीं, पांच पांडवांपैकी ज्याशी

युद्ध करावें अशी तुझी इच्छा असेल, त्या एकाला मारलेंस तर तूं राजा आहेस, अथवा तूं मारला गेलास तर स्वर्ग तुझाच आहे. हे वीरा, एक जीवदानाव्यतिरिक्त युद्धांत आम्हीं तुझें आणखी कोणतें प्रिय करावें ?

संजय सांगतो:—राजा, मग तुझ्या पुत्रानें सुवर्णाचें कवच धारण केलें आणि सोन्यानें मदविलेलें चित्रविचित्र शिरस्त्राण चढविलें. तेव्हां, राजा, तो कांचनाचें उज्ज्वल कवच ल्यालेला व शिरस्त्राण घातलेला तुझा पुत्र सुवर्णपर्वतासारखा झळकूं लागला. याप्रमाणें कवच वेगेरें वालन व गदा हातांत घेऊन रणांगणाच्या शिरोभागी सज्ज झालेला तुझा पुत्र दुर्योधन सर्व पांडवांस म्हणाला, “ तुम्हां भावांपैकीं कोणीही एकानें मजबरोबर गदायुद्ध करावें, मी आज सहदेवाशीं, किंवा भीमसेनाशीं किंवा नकुलाशीं अथवा अर्जुनाशीं किंवा, हे नरभ्रा, तुजबरोबर लढेन. मी रणांत येऊन युद्ध करीन आणि त्यांत विजयीही होईन. हे पुरुषन्यात्रा, सुवर्णाच्या पट्ट्यांनीं जखडलेल्या या गदेच्या साह्यानें मी आज ह्या वैराच्या अत्यंत दुर्गम अशा शेवटाला जाऊन पोचेंन. गदायुद्धांत माझी बरोबरी करणारा कोणीही नाही, अशी माझी समजूत आहे. तुम्ही सर्व एकदम आलां तथापि तुम्हां सर्वांना मी गदेनें ठार मारीन. न्यायानें युद्ध करावयाचें असल्यास तुम्ही सर्वजणही माझ्याशीं लढण्यास समर्थ नाही. स्वतःच गर्वोद्धत भाषण करणें युक्त नव्हे, तथापि मी हें आतांच तुमच्यापुढें खरें करून दाखवीन ! ह्याच घटकेला हें खरें किंवा खोटें याचा निवाडा होईल. आज माझ्याबरोबर जो कोणी लढणार असेल त्यानें गदा उचलवी ! ”

## अध्याय तेहतिसावा.

—:—

### भीमदुर्योधनाची युद्धाची तयारी.

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें दुर्योधन वरचेवर गर्जत असतां वासुदेव युधिष्ठिरावर रागावून त्याला म्हणाला, “युधिष्ठिरा, हें काय केलेंस ? जरकरितां हा युद्धांत तुला, अर्जुनाला, नकुलाला किंवा सहदेवाला वरील, तर कसें होईल ! राजा, ‘युद्धांत एकाला मारून कुलदेशाचा राजा हो.’ असें तूं म्हणालास हें केवढें साहस केलेंस ! त्या गदाधारी वीराच्या सामन्याला तुझी मुळीच समर्थ नाही, अशी माझी समजूत आहे. कारण गेल्या तेरा वर्षांत तुझाला गदायुद्धाचा बिलकुल सराव नाही. राजा, भीमसेनाच्या वधार्थ लोखंडी प्रतिमा केली असतां म्हणजे त्याच्याच हातून हें कार्य करविण्याचें ठरलेंलें असतां आपल्याकडून हें कार्य कसें होणार ! हे नृपोत्तमा, केवळ दयेमुळें तूं हें साहस केलेंस, पण येथें साफ घसरलास ! रणांत सुयोधनाला प्रतियोद्धा पृथापुत्र वृकोदरावांचून दुसरा मला कोणीच दिसत नाही; आणि तो देखील विशेष घटलेला नाहीच ! तेव्हां, राजा, मागे शकुनीशीं तूं जसें झूत केलेंस, तसेंच हें तूं पुनः मोठें अवघड झूत मांडलेंस, दुसरे कांहीं नाही ! भीमसेन बलवान् व समर्थ आहे; आणि राजा, दुर्योधन हा कृती आहे म्हणजे घटलेला, चपळ, डावपेंच जाणणारा व मोठा कुशल आहे. राजा, बलवान् आणि कृती या दोघांविषयीं विचार करतां कृतीच श्रेष्ठ ठरतो. कारण, डावपेंचां पुढें नुसत्या शक्तीची मात्रा चालत नाही. तेव्हां, राजा, तूं आपल्या शत्रूला फायदेशीर अशी अट देऊन त्याला चांगल्या जागेवर आणून ठेवलेस; आणि स्वतः मात्र खाड्यांत पडलास; असा या कृत्याचा

परिणाम झाला आहे ! एकंदरीत आपण पूर्ण विपत्तींत सांपडलों खरे. अहां, सर्व शत्रूला जिंकून हाती आलेले राज्य मोठ्या मुष्किलीनें सांपडलेल्या एकट्या शत्रूकडून कोण हारवून घेईल ! केवळ एका पणाची पैज लावून असें युद्ध करणें कोणाला पसंत पडणार आहे ? जो आज रणांत गदापाणि दुर्योधनाला जिंकू शकेल असा वीर—मग तो देव कां असेना—त्रिभुवनांत मला कोणी दिसत नाही ! तूं, नकुल, सहदेव आणि अर्जुन ह्यांपैकी कोणीही गद्दयायुद्धनिपुण कृती दुर्योधन राजाला न्यायानें जिंकण्यास समर्थ नाही. असें असतां, हे भारता, ‘गदा घेऊन लढ’ आणवी. आह्मांपैकी एकाला मारून राजा हो’ असें शत्रूला कसें सांगतोस ? भीमसेनाची व त्याची जुंपली तरीही धर्मयुद्धांत आपला जय होईल की नाही याची वानवाच आहे. कारण हा दुर्योधन मोठा बलाढ्य व गदायुद्धांत अतिशय वाकबगार व कसलेला आहे. असें असतां आह्मांपैकी कोणाही एकाला मारून राजा हो असें तूं पुनः म्हणतोस, त्यापेशां ही पंडूची व कुंतीची संतति राज्य-भागीच नाही—निरंतर वनवास व दारिद्र्य भोगण्यासाठीच हिचा जन्म आहे !”

भीमसेन म्हणाला:—हे मधुसूदना यदुनंदना, असा विषाद करूं नको. वीराच्या अत्यंत दुर्गम अशा अंतिम भागी मी आज जाऊन थडकेन ! आज मी दुर्योधनाला युद्धांत निःसंशय ठार मारीन. कृष्णा, धर्मराजालाच विजय मिळणार, असें दिसत आहे. ही माझी गदा पहा,—दुर्योधनाच्या गदेच्या दीडगट कार्यकारी व तिजहून वजनदार आहे, त्याची गदा हिच्या तोडीची नाही. माधवा, तूं किमपि चिंता करूं नको. सुयोधनाशी गदायुद्ध करण्याचा मला हुरूप आला आहे. जनार्दना, तुझी सर्वजण मी कसें काय युद्ध करतो तें

पहात बसा. कृष्णा, नानाप्रकारचीं शस्त्रें धारण करून देवांसुद्धां एकवटलेल्या तिन्ही भुवनांबरोबर मी रणांत युद्ध करीन; मग ह्या सुयोधनाची काय प्रतिष्ठा आहे !

संजय सांगतो:—ह्याप्रमाणें भीमसेनाचें हें भाषण ऐकून वामदेव संतुष्ट झाला व त्यानें त्याची प्रशंसा करीत म्हटलें, “ हे महाबाहो, तुझ्याच आश्रयानें धर्मराज युधिष्ठिरानें सकल शत्रूंचा निःपात करून स्वकीय उज्ज्वल राज-लक्ष्मी मिळविली आहे, यांत संशय नाही. धृतराष्ट्राचे सर्व मुल्ये तूच रणांत निजविलेस. त्याचप्रमाणें, हे पांडुनंदना, राजे, राजपुत्र व मोठमोठे हत्तीही ठार केलेस. कलिंग, मागध, प्राच्य, गांधार, तसेच कुरु हे रणांत तुझी गांठ पडतांच मृत्युमुखी पडले. आज सुयोधनालाही ठार करून, ज्याप्रमाणें विष्णूनें शचीपतीला त्याप्रमाणें तू धर्मराजालाही समुद्रवल्याकित पृथ्वी साध्य करून दे ! रणांत तुझी गांठ पडतांच पापी धार्तराष्ट्र नाश पावेल, आणि तूंही त्याची मांडी फोडून आपल्या प्रतिज्ञेतून उत्तीर्ण होशील. बा भीमा, दुर्योधनाशीं सर्वदा फार दक्षतेनें व प्रयत्नपूर्वक लढलें पाहिजे. कारण तो मोठा कुशल व बलवान् असून सदेदीत मातबर लढाई करणारा आहे ! ”

राजा, मग मात्यकीनें भीमसेनाची स्तुति केली; त्याचप्रमाणें पांचाल व धर्मप्रभृति पांडव यांनींही त्यास वाखाणिलें; आणि त्याच्या त्या आवेशयुक्त भाषणाची सर्वांनींच तारीफ केली. मग भीमबली भीमसेन हा संजयांसह-वर्तमान उभा असलेल्या व सूर्याप्रमाणें प्रकाशमान होत असलेल्या युधिष्ठिराम म्हणाला, “ मी ह्याशीं भिडून रणांत झगडेन. मला युद्धांत जिंकण्याला हा नराधम मुळीच समर्थ नाही. ज्याप्रमाणें अर्जुनानें खांडववनास अग्नि लावला, त्याप्रमाणें हृदयांत फार दिवस सांठवून

ठेविलेला क्रोध मी आज ह्या धार्तराष्ट्रसुयोधनावर काढीन; आणि गदेनें ह्या पाण्यास ठार करून पांडवांच्या हृदयांत घर करून राहिलेलें शल्य उपटून टाकीन. राजा, तूं स्वस्थ ऐस. हे अनघा, आज मी तुला कीर्तिरूप माळा अर्पण करीन आणि दुर्योधन आज प्राण, वैभव व राज्य यांस मुकेल; मी पुत्राला मारल्याचें ऐकून, शकुनीच्या बुद्धीला लागून केलेलें तें नीच कर्म आज धृतराष्ट्र राजाला आठवेल ! ”

असें बोलून तो वीर्यशाली भरतश्रेष्ठ गदा उचलून, वृत्राला आह्वान करणाऱ्या इंद्राप्रमाणें दुर्योधनास आह्वान करीत युद्धास उभा राहिला. तेव्हां तुझ्या अतिवीर्यवान् पुत्राला तें सहन न होऊन तो लगेच मत्तहत्तीसमोर येणाऱ्या दुमन्या मत्तहत्तीप्रमाणें त्याच्यासमोर आला. तुझा गदापाणि पुत्र युद्धाला उभा राहिला तेव्हां सर्व पांडवांना तो शृंगयुक्त कैलास पर्वतासारखा भासला. तो महाबली दुर्योधन कळपांतून चुकलेल्या हत्तीप्रमाणें एकटा सांपडल्यामुळें पांडवांना मोठा हर्ष झाला. दुर्योधनालाही संभ्रम, भीति, ग्लानि किंवा दुःख यांपैकी कांहींच होत असल्याचें दिसत नव्हतें, तो रणांत सिंहासारखा उभा होता. राजा, शृंगी कैलास पर्वताप्रमाणें त्या गदाधारी दुर्योधनाला पाहून भीमसेन त्यास म्हणाला, “ दुर्योधना, धृतराष्ट्र राजानें व तूं आमचें किती अनहित केलें आहे, त्याचें स्मरण कर. हे दुरात्मन्, वारणावतांत काय प्रकार घडला, रजस्वला द्रौपदीला भरसभेंत कसें छळिलें, शकुनीच्या कपटी बुद्धिवलानें झूतांत युधिष्ठिर राजाला कसें जिंकिलें, ही व दुसरीं पुष्कळ पापकृत्यें तूं निरपराध पांडवांना पीडा देण्यासाठीं केलीस. त्यांचें महत्फल आज भोग ! महायशस्वी. भरतकुलावतंस व आपणां सर्वांचा पितामह जो गंगानंदन भीष्म, तो

केवळ तुजमुळें निधन पावला ! तुझ्याचमुळें गुरुवर्य द्रोण, कर्ण व प्रतापशाली शल्य मृत्यु-मुखी पडले. वैराचा आद्यजनक जो शकुनि तोही रणांत निधन पावला. तुझे शूर शूर भाऊ व पुत्र आपआपल्या सैन्यांसह धुळीस मिळाले. अनेक राजे व समरांतून मार्गे न परतणारे शूर वीर गडप झाले. हे व यांबरोबरच दुसरेही मोठमोठे क्षत्रिय मारले गेले; आणि द्रौपदीला केश देणारा तो पापी प्रातिकाभीही ठार झाला ! आतां तूच एक कुलघ्न नराधम शिलक उरला आहेस. पण आज मी गदेच्या योगानें तुलाही ठार मारीन, यांत संशय नाही. राजा, आज रणांत मी तुझा सर्व ताठा उतरणार; आणि त्याबरोबरच राज्याची अनिवार हाव व पांडवांविषयीची दुष्टबुद्धिही पार विलयास नेणार ! ”

यावर दुर्योधन म्हणाला:—वृकोदरा, फार बडबड कशाला करतोस ? आज प्रथम माझ्याशीं लढ तर खरा ! तुझी लढाईची खुमखुमच आज मी निरवून टाकतों. पाण्या, हिमाल-याच्या शिखराच्या आकाराची प्रचंड गदा घेऊन गदायुद्धाला तयार होऊन राहिलेला मी तुला दिसत नाहीं काय ? आज गदाधारी अशा मला मारण्याचा उत्साह धरणारा कोण शत्रु आहे ! न्यायानें लढत असतां देवाधिपति इंद्रही समर्थ नाहीं, मग इतरांची कथा काय ? हे कुंतीपुत्रा, शरत्कालीन निर्जल मेघाप्रमाणें व्यर्थ गर्जना करूं नको, आज रणांत मरून पार नाहीस झाले नाहीं तोंपर्यंतच आपलें काय सामर्थ्य आहे तें युद्धांत दाखव !

राजा, मदोन्मत्त हत्तीप्रमाणें दिसणाऱ्या त्या दुर्योधनाचें हें भाषण ऐकतांच संजयांसह-वर्तमान सर्व विजयेच्छु पांडवांनीं अतिशय आनंदित होऊन त्याबद्दल त्याची टाळ्यांच्या गजरांत फार प्रशंसा केली. तेव्हां हत्ती मोठ्यानें

ओरडूं लागले, घोडे हिंसूं लागले आणि जयेच्छु पांडवांचीं शस्त्रें प्रदीप्त झालीं !

## अध्याय चौतिसावा.

—:—

### बलरामाचें आगमन.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, मग तें अत्यंत दारुण युद्ध कडाक्यानें सुरू झालें; आणि सर्व महात्मे पांडव तें पाहाण्यास खालीं बसले. इतक्यांत हें आपल्या शिष्यांचें युद्ध जुंपल्याची वार्ता बलरामाच्या कानावर जाऊन तो तालध्वज हलायुध त्या ठिकाणीं प्राप्त झाला. त्याला पाहातांच कृष्ण व पांडव परम हर्षित होऊन त्याजवळ गेले; आणि त्याचें आदरा-तिथ्य करून त्यांनीं त्याची विधिवत् पूजा केली. राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें विधिपूर्वक पूजन केल्यानंतर ते त्याला म्हणाले, “रामा, आतां येथें बसून आपल्या शिष्यांचें युद्धनेपुण्य अवलोकन कर.” मग कृष्ण, पांडव व गदा घेऊन उभा राहिलेला कुरुपति दुर्योधन यांकडे पाहून बलराम म्हणाला, “ मला प्रयाण करून आज बेचाळीस दिवस झाले. मीं पुण्य नक्षत्रा-वर गेलों, आणि श्रवण नक्षत्री परत आलों आहे. माधवा, या शिष्यांचें गदायुद्ध पहाण्याची माझी मनीषा आहे.”

राजा, तेव्हां मग ते युद्धभूमीवर उभे राहिलेले दोघे गदाधारी वीर भीमदुर्योधन झळकूं लागले. नंतर युधिष्ठिर राजानें बलरामास आलिंगन देऊन त्याला नीटपणें कुशलप्रश्न केले; महाधनुर्धर कृष्णार्जुनांनींही त्यास मोठ्या प्रेमानें व हर्षानें आलिंगन दिलें; शूर माद्रीपुत्र व द्रौपदीचे पांच मुलगे त्या महाबली रौहिणेयाला अभिवंदन करून जवळच उभे राहिले; आणि त्याचप्रमाणें राजा, त्या गदा उंच केलेल्या दोघां वीरांनीं म्हणजे बलवान् भीमसेव

व तुझा पुत्र ह्यांनीं त्यास प्रणाम केला. याप्रमाणे सर्वांनीं त्याचा आदरसत्कार व सन्मान केल्यावर, “हे महाबाहो, युद्ध अवलोकन कर.” असें ते रामास म्हणाले; आणि इतर राजांनींही त्याला तीच विनंती केली.

मग रामानें सृजयांस व पांडवांस आलिंगून त्या सर्व अमितपराक्रमी राजांचें कुशल विचारिलें; व त्यांनींही त्यास भेटून खुशाली विचारली. मग बलरामानें त्या सर्व थोर क्षत्रियांचा उलट सन्मान करून व यथाधिकार कुशल-प्रश्न वगैरे करून कृष्ण व सात्यकि यांस प्रेमानें पोटाशीं धरिलें; त्यांच्या मस्तकांचें अवघ्राण केलें; आणि ‘खुशाल आहांना’ म्हणून विचारलें. नंतर, राजा, ज्याप्रमाणें इंद्र व उषेन्द्र हर्षभरित होऊन देवाधिपति ब्रह्मदेवाचें पूजन करतात, त्याप्रमाणें त्या कृष्णसात्यकींनीही त्या श्रेष्ठांचें विधिपूर्वक पूजन केलें. मग, हे भारता, धर्मपुत्र युधिष्ठिर त्या शत्रुमर्दक बलभद्राला “हे राजा, हें भावाभावांचें महायुद्ध पहा.” असें म्हणाला. मग तो श्रीमान् महाबाहु केशवाग्रज परमहृष्ट होऊन त्यांच्यामध्ये जाऊन बसला. त्याला महारथांनीं उत्थापन दिलें; आणि त्या राजांच्या मध्यभागीं तो नीलवस्त्र व अतितेजस्वी राम आकाशांतील नक्षत्रगणांनीं परिवेष्टित निशाकराप्रमाणें शोभूं लागला. राजा, मग तुझ्या पुत्रांच्या वैराचा शेवट करणारा व अंगावर रोमांच उठविणारा तो तुंबळ संग्राम सुरू झाला !

### अध्याय पसतिसावा.

—:०:—

#### बलदेवतीर्थयात्रा.

प्रभासोत्पत्तिकथन.

जनमेजय प्रश्न करितो:—मुने, पूर्वीं हें युद्ध उपस्थित झालें तेव्हांच प्रभु बलराम

कृष्णास सांगून वृष्णींसह निघून गेला होता. ‘केशवा, मी दुर्योधनाचें साहाय्य करणार नाहीं व पांडवांचेही करणार नाही, मी कोठें तरी निघून जाईन.” असें बोलून तेव्हां जो क्षत्रांतक राम बाहेर पडला, तो परत कसा आला तें आपण मला सांगावें. ब्रह्मन्, हे सत्तमा, आपण कुशल आहां, तेव्हां राम तेथें कसा प्राप्त झाला, आणि त्यानें तें युद्ध कसे पाहिलें, हें मला विस्तारपूर्वक कथन करावें.

वैशंपायन सांगतात:—महात्मे पांडव उपप्लव्यास राहिले असतां त्यांनीं धृतराष्ट्राकडे कृष्णास शिष्टाईसाठीं पाठविलें. हे महाबाहो, कौरवपांडवांचा संधि व्हावा, व सर्व प्राण्यांवरील संकट टळावें, या हेतूनें कृष्ण हस्तिनापुरास जाऊन धृतराष्ट्रास भेटला; आणि त्यानें तथ्य व विशेषेंकरून पथ्य असें भाषण केलें. परंतु त्या वेळीं धृतराष्ट्र राजानें त्याचें बोलणें मान्य केलें नाहीं. शेवटीं अकृतकार्य होतासाता कृष्ण माघारा येऊन पांडवांस म्हणाला, “पांडवेयहो, कौरवांवर कालाचा पगडा बसल्यामुळे ते माझ्या वचनाप्रमाणें वागत नाहींत. आतां दुसरी तिसरी गोष्ट नाहीं. याच पुढ्य नक्षत्रावर माझ्या सह लढाईसाठीं बाहेर पडा.” नंतर, सैन्यांचे विभाग होऊं लागले तेव्हां बलिश्रेष्ठ महाशय बलराम आपल्या भावाला म्हणजे कृष्णास म्हणाला, “मधुसूदना, आपणांला पांडव व कौरव दोघेही सारखेच. तेव्हां, हे महाबाहो, तूं कौरवांचेही साह्य कर.” असें तो म्हणाला, पण कृष्णानें त्याचें ऐकिलें नाहीं. तेव्हां बलराम रागानें संतप्त झाला; आणि तो महा-क्रीर्तिमान् यदुनंदन रागारागानें सर्व यादवांसह अनुराधा नक्षत्रावर सरस्वती नदीकडे तीर्थ-यात्रेस निघून गेला ! शत्रुदमन भोज दुर्योधनाच्या आश्रयास गेला आणि सात्यकीसह कृष्ण पांडवांस येऊन मिळाला. शूर बलराम

पुण्य नक्षत्र असतां पांडवांकडून निघून गेल्यावर कृष्ण पांडवांस पुढें करून कौरवांसमोर गेला. तिकडे मार्गस्थ झालेला राम चालतां चालतांच सेवकांस म्हणाला, “ तीर्थयात्रेचे संभार, सर्व उपकरणें, अग्नि आणि याजक द्वारकेहून घेऊन या; त्याचप्रमाणें सोनें, रुपें, धेनु, वखें, घोडे, हत्ती, रथ, गाढवें, उंट, वाहनें व तीर्थयात्रेस अवश्य असें सर्व साहित्य सत्वर आणा; जलद चालणारे लोक लवकर सरस्वतीच्या तीरीं पाठवा; आणि तेथून ऋत्विजांस व शेंकडों ब्रह्मवरांस आणवा. ”

राजा, कौरवांची लढाई उपस्थित झाली तेव्हां महाबली बलराम सेवकांस अशी आज्ञा करून सरस्वती नदीच्या प्रवाहास प्रदक्षिणा घालण्यासाठीं ऋत्विज्, मित्र, दुसरे थोर थोर ब्राह्मण, रथ, हत्ती, घोडे, चाकरनोकर, आणि थकलेले, अशक्त, बाल व वृद्ध ज्यांत बसले आहेत अशीं बैल, गाढवें व उंट जोडलेली अनेक वाहनें एवढ्या परिवारानिशी तीर्थयात्रेस निघाला. प्रत्येक ठिकाणी जी जीं नानाप्रकारची दाने करावयाचीं ती ती त्यानें केलीं; आणि हे भारता, याचकांच्या संतोषार्थ त्या त्या देशांतील चालीरीतीप्रमाणें पुष्कळ नवी नवी दाने त्यानें मुद्दाम तयार करविली. भुकेलेल्यांसाठीं चोहोंकडे अन्न तयार असे. जो जो ब्राह्मण तेथें ज्या पदार्थाची इच्छा करी, त्याला त्याला तेथेंच तो पदार्थ तत्काळ मिळे! असें इच्छा-भोजन बलरामानें केलें. जागोजागी त्याच्या आज्ञेनें लोक उभे असत; आणि ते चोहोंकडे भक्ष्यपेयांच्या राशी घालीत. ज्या ब्राह्मणांना सुवाची इच्छा असे, त्यांस अर्पण करण्यासाठीं उंची उंची वखें व पलंगत्रिछानेही तेथें तयार असत. जनमेजया, फार काय सांगवें, कोणत्याही ब्राह्मणाचें किंवा क्षत्रियाचें मन ज्या ज्या ठिकाणीं रमत असे, तेथें तेथें त्याला आपणा-

साठीं सर्व प्रकारची तयारी असल्याचें आढळून येई! सर्व लोक आपल्या इच्छेस येईल त्याप्रमाणें चालूं लागत, किंवा तेथेंच थांबत. त्यांस दुसऱ्याच्या आज्ञेप्रमाणें वागावें लागत नसे. एखाद्याला जाण्याची इच्छा झाली की त्याचे पुढें मेणेपालख्या तयार! कोणाला तहान लागली की त्याचेपुढें सरबतें वगैरे हजर! आणि, हे भरत-पुत्रभा, क्षुधितापुढें मिष्टमिष्ट अन्नही सिद्ध असत! असा प्रकार नित्य चाललेला असे. त्यांच्यासाठीं सेवक हातांत वखें व अलंकारही घेऊन उभे असत. अशा प्रकारें, राजा, तो मार्ग सर्व प्रवासी लोकांस स्वर्गासारखा सुखावह झाला. कारण, तो सर्वदा मुदित जनांनीं युक्त, रुचकर भक्ष्य पदार्थांनीं भरलेला, ज्यांत जागजागी गुढ्यातोरणादि शुभसूचक गोष्टी आहेत असा, बाजारपेठा, बाजार व विक्रीचे पदार्थ यांनीं युक्त, हजारां लोकांनीं गजबजलेला, दोहों बाजूंच्या लतावृक्षांनीं व्याप्त आणि नानाप्रकारच्या रत्नादिकांनीं सुशोभित केलेला असा होता.

राजा, याप्रमाणें जातां जातां त्या स्थित-नियम महात्म्या यदुप्रवीर हलधरानें पवित्र तीर्थांवर ब्राह्मणांस पुष्कळ द्रव्य दिलें; यज्ञांत देतात तशा विपुल दक्षिणा दिल्या; त्याचप्रमाणें ज्यांच्या शिंगांवर सुवर्णाचीं टोपणें घातलीं आहेत अशा हजारां सवत्स दुभक्त्या धेनु, नाना-देशांत जन्मलेले उंची घोडे वाहनें, चांगले चांगले दास, तशींच रत्नें, मोतीं, पोवळीं, बावनकशी सोनें, शुद्ध रुपें आणि लोखंडी व तांब्याचीं भांडीं त्यानें द्विजवरांस अर्पण केलीं. याप्रमाणें त्या महात्म्यानें सरस्वतीतीरच्या श्रेष्ठ तीर्थांच्या ठिकाणीं अपार दानधर्म केला; आणि तो अतुलपराक्रमी उदारधी, क्रमाक्रमानें अशी तीर्थं करीत कुल्लेस्तास येऊन पोचला.

जनभेजय विचारतो:-हे द्विजवरा, सर-स्वतीतीरच्या तीर्थांचें सृष्टिसौंदर्यदिर्घजन,

त्यांची उत्पत्ति, तीर्थयात्राविधि वगैरे सर्व मला सांगा. हे भगवन्, क्रमानें सर्व तीर्थांच्छ्रद्धा ही सर्व प्रकारची माहिती मला आपण कथन करा. हे ब्रह्मन्, ती ऐकण्याची मला फार उत्सुकता आहे.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, या तीर्थांचें फल, त्यांचें गुणवर्णन, उत्पत्तिप्रकार वगैरे सर्व पुण्यकारक गोष्टी मी सांगतों, श्रवण कर. राजा, ऋत्विक्सुहृद्गणांसह वर्तमान तो यदुप्रवीर हलधर निघाला, तो प्रथम जेथें नक्षत्राधिपति चंद्र क्षयरोगानें ग्रस्त होऊन क्लेश भोगीत पडला होता, त्या पवित्र प्रभासतीर्थास गेला. हे नरेंद्रा, या ठिकाणीं चंद्राची शापापासून मुक्तता होऊन त्यास पुनः आपलें पूर्वतेज प्राप्त झालें; आणि तो सर्व जग प्रकाशमान करूं लागला. याप्रमाणें, हे राजेंद्रा, हें प्रभासतीर्थ पृथ्वीवरील तीर्थांत विशेष श्रेष्ठ असून तें प्रभासन ( तेजस्वी करणारें ) असल्यामुळें त्याला ' प्रभास ' ही संज्ञा प्राप्त झाली आहे.

जनमेजय विचारितो:—भगवन्, चंद्राला क्षयरोगानें कसें ग्रस्त केलें; त्याचप्रमाणें, हे महामुने, त्यानें त्या श्रेष्ठ तीर्थांत कसें अवगाहन केलें, आणि त्यांत बुडी मारून तो पुनः कसा वृद्धिंगत झाला, तें सर्व मला सविस्तर सांगा.

वैशंपायन सांगतात:—हे राजेंद्रा, दक्ष-प्रजापतीला सत्तावीस मुली होत्या, त्या त्यानें सोमास अर्पण केल्या. त्याच सत्तावीसजणीं करून सत्तावीस नक्षत्रांचीं नांवें पडलीं आहेत. त्या सदाचरणीं चंद्राच्या भार्या होत. त्या सर्वांचे डोळे विशाल असून सर्वजणीं रूपानें पृथ्वीत केवळ अप्रतिम होत्या. तथापि त्यांतल्या त्यांत रोहिणीची रूपसंपत्ति कांहीं विशेष होती. त्यामुळें तिजवरच निशापति चंद्राची प्रीति बसली. ती त्याची अतिशय आवडती झाली आणि त्यामुळें तो सदोदित तिचाच उपभोग घेत असे. याप्रमाणें, राजा, चंद्र

रोहिणीकडेच अतिशय राहूं लागला, त्यामुळें बाकीच्या नक्षत्राख्यकन्या त्यावर रागावल्या; आणि सत्वर दक्षप्रजापतीकडे जाऊन त्या आपल्या पित्यास म्हणाल्या, “ चंद्र कांहीं आमच्या येथें रहात नाही. सदोदित रोहिणी-जवळच रहातो. यास्तव, हे प्रजानाथा, आम्ही सर्वजणी अन्नपाणी वर्ज करून तुमच्या सन्निध तप करीत बसतों ! ”

राजा, मुलीचें हें भाषण ऐकून दक्ष सोमास म्हणाला, “ सर्व भार्यांशीं सारख्याच भावानें वागत जा. तुला महान् अधर्माचा विटाळ होऊं नये. ” याप्रमाणें चंद्राला सांगून त्यानें त्या सर्वजणींस सांगितलें, “ मुलीनो, आपल्या पतीकडे जा. तो माझ्या आज्ञेनें तुम्हां सर्वांचा सारखाच परामर्श घेईल. ” याप्रमाणें पित्यानें निरोप दिला, तेव्हां त्या चंद्राच्या घरी गेल्या. तथापि, राजा, भगवान् चंद्राची रोहिणीवर असलेली अत्यंत प्रीति विलकूल कमी न होतां तो तिचेच ठिकाणीं रममाण होऊन राहूं लागला; तेव्हां त्या सर्वजणी पुनः पित्याकडे जाऊन त्यास म्हणाल्या, “ बाबा, आह्मी तुमची सेवाचाकरी करीत तुम्हांपाशीच रहातों. चंद्र कांहीं आमचे येथें रहात नाही; आणि आपण त्यास सांगितलें तेंही तो ऐकत नाही. ” त्यांचें असें बोलणें ऐकून दक्ष पुनः सोमास म्हणाला, “ विरोचना, मी तुला आतांच शापीत नाही. एकवार क्षमा करितो. पण या-पुढें तरी सर्व भार्यांचे ठिकाणीं समसमान रहात जा. ” राजा, दक्षाच्या या भाषणाचाही अन्याय करून भगवान् शशी रोहिणीसहच राहूं लागला. तेव्हां त्याच्या इतर स्त्रियांना पुनः क्रोध आला; आणि त्या लगेच पित्याकडे जाऊन त्यास शिरसा प्रणाम करून म्हणाल्या, “ अजून सोम कांहीं आमचे येथें येत नाही; यास्तव आपण आमचें रक्षण करा. भगवान् चंद्रमा

सदोदीत रोहिणीसच घेऊन बसतो. तो तुमच्या शब्दास मोजीत नाही व आम्हांकडे हुकूनही पाहू इच्छीत नाही. यास्तव, बाबा, आम्हां सर्वजणींचे रक्षण करा; आणि जेणेकरून सोम आम्हांकडे येईल असे करा. ”

राजा, मुलींचे हे भाषण ऐकून भगवान् दक्षप्रजापतीला क्रोध आला आणि त्याने रागाने चंद्रावर क्षयरोग सोडला. तेव्हां त्या क्षयरोगाने तत्काळ चंद्रास पछाडून त्यास जर्जर केले आणि तो दिवसानुदिवस खंगत चालला. राजा, त्या यक्ष्यापासून मुक्तता व्हावी म्हणून चंद्राने नानाप्रकारचे यज्ञयागादि उपाय केले, परंतु कांही उपयोग झाला नाही. त्या दक्षशापापासून त्याची मुटका झाली नाही; आणि तो झिजत चालला. याप्रमाणे चंद्र क्षीण होऊं लागतांच औषधि उगवतनाशा झाल्या; ज्या औषधि होत्या त्यांचा आस्वाद व रस कमीकमी होऊं लागला; आणि त्या अगदीं छुकून गेल्या. याप्रमाणे औषधीचा जसजसा क्षय होऊं लागला, तसतसा प्राण्यांचाही क्षय होऊं लागला; आणि एकंदरीत, चंद्र क्षीण होऊं लागल्यामुळे सर्व प्रजा कुश होऊन गेल्या ! राजा, मग सर्व देव एकत्र जमून सोमास म्हणाले, “ बाबारे, हे काय ? तुझे शरीर हें असे क्षीण कशाने झालें ? तें मुळीच प्रकाशमान होत नाही हें काय ? बाबारे, तुजवर हें सर्व संकट कशाने ओढवलें, तें कारण आम्हांस सांग. तुझ्या तोंडून तें ऐकिलें म्हणजे आम्ही कांहीं तरी त्यावर उपाय योजूं. ” राजा, याप्रमाणे देव म्हणाले, तेव्हां शशलक्षण शशीने आपल्याला शाप कसा झाला, आणि तेणेकरून कसा क्षयरोग लागला हें त्यांस सांगितलें. तें ऐकून देव दक्षाकडे जाऊन म्हणाले, “ भगवन्, सोमावर प्रसाद करा आणि आपल्या ह्या शापाची निवृत्ति

करा. हा चंद्र अगदीं क्षीण झाला असून फारच थोडा अवशिष्ट आहे. हे देवेशा, याच्या क्षया-मुळे प्रजाही क्षीण झाल्या आहेत आणि लता, वेली, वृक्ष व नानाप्रकारची बीजे नष्टप्राय होण्याच्या वेतांत आली आहेत. यांचा पूर्ण नाश झाला म्हणजे आमचाही नाश होणार आणि आम्ही नष्ट झाल्यावर या जगाचे अस्तित्व तरी कसे राहील ? सारांश, सोमाच्या क्षीणते-मुळे सर्वसंहार होण्याची वेळ आली आहे. यास्तव, हे लोकगुरो, हें सर्व ध्यानीं आणून आपण चंद्रावर प्रसाद करणे योग्य आहे. ”

याप्रमाणे देवांनीं सर्व हकीगत निवेदन केली, तेव्हां प्रजापति त्यांस म्हणाला, “ माझे वचन सर्वथा फिरविणें शक्य नाही. तथापि, हे महाभागहो, तें कांही हेतूनं फिरूं शकेल. चंद्राने सदोदीत सर्व भार्याशीं सारखेपणानें वागावें. असें तो करूं लागला आणि सरस्वतीच्या श्रेष्ठ तीर्थांत त्यानें स्नान केलें म्हणजे तो पुनः वृद्धिगत होईल. देवहो, हें माझे भाषण सत्य आहे. तुम्हांस काळजी नमावी. तथापि, यापुढेही नेहमी चंद्र अर्धमासपर्यंत क्षीण होत जाईल आणि पुढील अर्धमासपर्यंत वृद्धि पावेल. असा हा क्रम यापुढें नित्य चालेल. आतां, पश्चिम समुद्राजवळ जेथें सरस्वतीचा समुद्राशीं संगम झाला आहे, तेथें जाऊन चंद्राने देवेशाचें आराधन करावें म्हणजे त्याची कांति पूर्ववत् होईल ! ”

नंतर दक्षप्रजापतीच्या या आज्ञेप्रमाणें चंद्र सरस्वती नदीवर गेला; आणि तिच्या कांठचे पहिले तीर्थ जें प्रभास त्यावर प्राप्त झाला. त्या वेळीं अमावास्या होती. त्यानें तेथें बुडी मारली आणि तो बाहेर निघाला, तो त्याला पुनः शीतांशुत्व प्राप्त झालें; आणि, तो आपल्या चंद्रिकेनें जग प्रकाशमान करूं लागला. हे राजेंद्रा, मग सर्व देवही प्रभामतीर्थी प्राप्त



ब्राले; आणि सोमासहवर्तमान दक्षाकडे गेले. मग दक्षप्रजापतीनें सर्व देवतांस निरोप दिला आणि प्रसन्न होऊन तो चंद्रास म्हणाला, “पुत्र, स्त्रियांचा अवमान करूं नको. त्याचप्रमाणे ब्राह्मणांचाही कदापि अवमान करूं नको. जा, नित्य दक्ष राहून माझे आज्ञेप्रमाणें वाग. ”

मग, हे महाराजा, प्रजापतीचा निरोप घेऊन चंद्र आपले घरीं आला. तेव्हां सर्व प्रजा आनंदित झाल्या आणि पूर्ववत् सुखानें काल-क्रमणा करूं लागल्या. याप्रमाणे चंद्रास शाप कसा झाला आणि सर्व तीर्थांतील श्रेष्ठ व मोठे तीर्थ जे प्रभास ते कोणत्या प्रकारचे आहे वगैरे सर्व तुला सांगितलें. हे महाराजा, अद्यापही नित्य प्रतिअमावास्याला चंद्र ह्या उत्तम प्रभास-तीर्थांत स्नान करून पुनः कांतिमान् होत असतो. त्यांत अवगाहन करून चंद्राला परमश्रेष्ठ अशी प्रभा प्राप्त होते. यास्तव, हे भूमिपा, या तीर्थास ‘प्रभास’ हें नांव पडलें आहे. अस्तु; नंतर तो बलाढ्य राम ज्याला लोक ‘चमसोद्भेद’ असें म्हणतात त्या तीर्थावर गेला. त्या ठिकाणीं त्यानें विशिष्ट दांनें दिली; विधिपूर्वक स्नान केलें; आणि एक रात्र राहून तो त्वरावान् कृष्णाग्रज पुढें उदपानास गेला. त्या ठिकाणीं त्याला प्रथमचें स्वस्तिवाचन आणि मोठे पुण्य प्राप्त झालें. जनमेजया, या ठिकाणच्या लतावृक्षांच्या हिरवेगारपणावरून व भूमीच्या स्निग्धपणावरून मिद्ध लोक नष्ट झालेली ही सरस्वती सहज ओळखू शकतात.

## अध्याय छत्तिसावा.

—:०:—

### त्रिताख्यान.

वैशंपायन सांगतात:—हे महाराजा, त्या चमसोद्भेद तीर्थाहून बलराम कीर्तिमान्

त्रिताच्या नदीगत कृपावर गेला. तेथें त्यानें पुष्कळ दानधर्म केला; ब्राह्मणसंतर्पण केलें आणि स्नानादिकांच्या योगानें त्यास मोठा आनंद झाला. येथें धर्मपरायण महातपस्वी त्रितानें तो कृपांत पडलेला असतांच सोमदान केलें ! येथेंच त्याला सोडून त्याचे भाऊ घरीं गेले; व त्यामुळें ब्राह्मणसत्तम त्रितानें त्यांस शपिलें.

जनमेजय विचारितो:—ब्रह्मन्, तो कृप कोणत्या प्रकारचा आहे ? त्यांत तो अत्यंत तपस्वी त्रित कसा पडला ? त्याचप्रमाणें, हे द्विजसत्तमा, त्याचे भावांनीं त्याची कां उपेक्षा केली ? त्रितामें तेथें कसा यज्ञ केला ? व सोमप्राशन कसें केलें ? ब्रह्मन्, हें सर्व श्रवणीय असें आपणास वाटत असल्यास—मला कथन करावें.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, पूर्वयुगामध्ये एकत, द्वित आणि त्रित या नांवांचे तिथे भाऊ मुनि होते. ते सूर्यासारखे तेजःपुंज व प्रजापती-प्रमाणें कुटुंबवत्सल होते. ते मोठे ब्रह्मवादी व तपःप्रभावांनीं ब्रह्मलोक जिंकलेले असे होते. त्यांचें तप, नियम व दम पाहून त्यांचा पिता नित्य धर्मपरायण गौतम मुनि यास सदेदीत संतोष वाटत असे. पुढें कालेंकरून भगवान् गौतम मुनि आत्मानुरूप अशा लोकीं गमन करिता झाला. तेव्हां राजा, गौतम ज्यांचे यज्ञ-याग करी, त्या राजांनीं मग त्याच्या मुलांस बहुमान देऊन त्यांकडून आपलीं कृत्ये कर-विण्यास सुरुवात केली. पुढें त्या तिषामध्ये अध्ययन व आचरण यांच्या योगानें त्रित हा आपल्या पित्याप्रमाणें मोठेपणा पावला आणि सर्व महाभाग पुण्यशील मुनि त्याचा पित्या-प्रमाणें सन्मान करूं लागले. राजा याप्रमाणें चाललें असतां कोणे एकेकाळी एकत व द्वित या दोघां भावांस यज्ञ करून वित्त मिळविण्याची इच्छा उत्पन्न होऊन त्याबद्दल

ध्यास लागला. मग, हे परंतपा, त्यांचे बुद्धीस वाटलें कीं, त्रितास घेऊन, ज्यांना ज्यांना यज्ञ करावयाचे असतील त्या सर्वांस आपण गांठांनि; म्हणजे आपणांस घेणु मिळतील, व एखादा महायज्ञ करावयास सांपडून सोमप्राशनही करावयाचा सुयोग येईल. राजा, याप्रमाणें त्या तिघां भावांचा विचार ठरून त्यांनीं त्याप्रमाणें केलें. घेणु मिळविण्यासाठीं, ज्यांना म्हणून यज्ञ करावयाचे होते, त्या सर्वांकडे ते हिंडले; आणि त्यांचे यज्ञ करून त्यांत विधिपूर्वक आचार्य दक्षिणा वगैरेंच्या हेतूनें पुष्कळच गाई संपादन केल्या. मग ते महर्षि पूर्वदिशेकडे जाण्यास निघाले. त्या वेळीं त्रित मोठ्या हर्षानें त्यांच्यापुढें चालला होता, आणि एकत व द्वित हे गाई हांकीत मागून जात होते. राजा, मनुष्याची बुद्धि कशी फिरेल, याचा कांहीं नेम नाही ! त्या दोघां पाण्यांनीं एकमेकांशीं काय बापण केलें तें श्रवण कर. “ त्रित हा यज्ञ करण्यांत कुशल आहे, तो वेदांत पारंगत आहे, त्याला दुसऱ्या पुष्कळ गाई मिळतील; तेव्हां आपण दोघेजण एक होऊन या गाई घेऊन मागच्या मार्गे पळून जाऊं चला ! आपण नागविलेल्या या त्रिताला पाहिजे तिकडे खुशाल जाऊं या ! ”

ह्याप्रमाणें विचार करित ते मार्गानें चालले होते. ती रात्रीची वेळ होती; त्यांचा रस्ता सरस्वती नदीच्या तीरांनें जात होता; आणि रस्त्याच्या कडेलाच एक कूप होता, या दोघां भावांच्या मनांत असे विचार आले, इतक्यांत समोरून एक लांडगा आला. या वेळीं त्रित त्या कूपाच्या अगदीं जवळ पोचला होता. इतक्यांत त्यास समोरच रस्त्यांत लांडगा उभा आहे असें दिसलें. लांडग्यास पहातांच तो भीतीनें बाजूला सरला व एकदम त्या अत्यंत घोर व प्राणिमात्तास भयभीत करणाऱ्या अगाध

कूपांत पडला ! मग, हे महाराजा, कूपांतून मुनिश्रेष्ठ त्रितानें मोठ्यानें आरोळ्या मारल्या आणि त्या एकत व द्वित या दोघांनीं ऐकिल्या; पण आपला भाऊ कूपांत पडला हें जाणून लोभा-मुळे व कांहीं लांडग्याच्या भीतीमुळे ते त्यास तेंथेंच टाकून निघून गेले ! आणि राजा, त्या पशुलुब्ध भावांनीं सोडलेला तो महातपस्वी त्रित त्या निर्जल व धुळीनें भरलेल्या त्या विहिरींत राहिला ! नंतर, हे भरतश्रेष्ठा, एखादा पापी मनुष्य नरककुंडांत निमग्न होतो, तद्वत् आपण या तृणलतावगुठित कूपांत पडलों आहों असें अवलोकन करून त्रितानें असें कां झालें याचा शांत चित्तानें व बुद्धिपुरस्सर विचार केला. तेव्हां त्यास कळून आलें कीं, मृत्युमयामुळे आपण बाजूला सरलों व पडलों. तेव्हां मृत्यूची भीति नाहीशी झाली पाहिजे. ज्यानें सोमपान केलें नाहीं, त्यासच मृत्युभय असतें. सोमपान करणारास तें उरत नाही. तेव्हां येथें असतां आपल्याला सोमपान कसें करतां येईल ?

राजा, असा विचार करित असतां, त्या कूपांत लोंबत असलेल्या एका वेळीकडे सहज त्या महातपस्याची दृष्टि गेली. तेव्हां तत्काळ त्या तपोनिष्ठ मुनीनें यज्ञ करण्याचा निश्चय करून त्या धुलीमय कूपांत सुकी जागा पाहून तेथें अग्नीची कल्पना केली; स्वतःस होता कल्पिलें; त्या वेळीवर सोमाची कल्पना केली; आणि ऋचा, यजुःसूक्त व सामें ह्यांचें मनानें चिंतन केलें. राजा, त्यानें तेथील लहान लहान गोट्यांचेच ग्रावे करून रस काढला; पाण्यालाच तूप मानिलें; देवांचे हविर्भाग तयार केले; सोमरस काढला; आणि खूप मोठ्यानें ध्वनि केला ! तेव्हां, राजा, ब्रह्मवादी जनांनीं निर्दिष्ट अशा पद्धतीनें तो यज्ञ करून त्रितानें पुनःपुनः केलेला तो प्रचंड शब्द स्वर्गास जाऊन पोचला ! महात्म्या त्रिताचा तो महायज्ञ चालू असतां

स्वर्गलोक भयाण होऊन गेला, कां तें कोणा-सच समजेना ! मग बृहस्पतीनें तो भयोत्पादक महाशब्द ऐकिला; आणि मग तो देवपुरोहित सर्व देवांस म्हणाला, “ सुरहो, त्रिताचा यज्ञ सुरू आहे. चला आपण तेथें जाऊं. आपण लवकर न गेल्यामुळें जर का तो रागावला तर आपल्या महातपःप्रभावानें दुसरे देवही निर्माण करील ! ”

राजन्, बृहस्पतीचें हें भाषण ऐकून सर्व देव एकत्र जमून त्रिताचा यज्ञ चालू होता तिकडे गेले. ज्या कृपांत तो होता त्यावर येऊन पांचतांच तेथें यज्ञकर्माची दीक्षा घेतलेला परम कांतिमान् महात्मा त्रित त्यांचे दृष्टीस पडला. त्या महाभागाची ती मूर्ति पाहून देव त्यास म्हणाले, “ आह्मी आपले भाग ग्रहण करण्याचे हेतूनें प्राप्त झालें आहों ! ” मग त्रित त्यांस म्हणाला, “ देवहो, ह्या अत्यंत भयंकर कृपांत पडलेल्या व हालचाल बहुतेक बंद झालेल्या मजकडे आपण कृपादृष्टीनें अवलोकन करा. ”

हे महाराजा, मग त्रितानें त्यांचे भाग त्यांस मंत्र म्हणून यथाविधि समर्पण केले, तेव्हां ते संतुष्ट झाले; आणि याप्रमाणें विधिपूर्वक भाग मिळून संतुष्ट झालेल्या देवांनी नंतर त्यास इच्छित वर दिले. त्यानें देवांजवळ मागितलें, “ देवहो, मला येथून बाहेर काढावें; आणि या कृपाला जो स्पर्श करील त्यास देवलोका प्राप्त व्हावा ! ”

नंतर, राजा, लगेच त्या कृपांतून उर्मि-युक्त अशी सरस्वती नदी एकदम बाहेर पडली ! आणि तिनें आपल्या ओघाबरोबर बाहेर काढिलेला त्रित मुनि देवांची स्तुति करीत त्यांचे सन्निध उभाराहिला ! राजा, मग देव ‘तथास्तु’ असें म्हणून आपल्या वाटेनें निघून गेले. आणि अत्यंत हर्षभरित झालेला त्रित मुनीही आपल्या घरी गेला. तेथें आपल्या दोघां भावांस पहा-

तांच त्यास एकदम संताप झाला; व तो त्यांस पुष्कळ टाकून बोलला; आणि शेवटीं त्यानें त्यांस शापही दिला, “ ज्यापेक्षां पशूंच्या लोभानें तुम्ही मला सोडून पळून आलां, त्यापेक्षां तुम्ही या पापकर्माच्या योगानें माझ्या शापामुळें सभोंवार संचार करणारे दंष्ट्रायुक्त भयंकर लांडगे व्हाल ! आणि तुमची संतति माकडें, अस्वळें व वानर होईल ! ”

राजा, त्याच्या तोंडून हीं अक्षरें निघाली मात्र, तों तत्काळ ते तद्रूप झालेले दिसू लागले ! असा त्या सत्यवादी त्रिताच्या वाणीचा प्रभाव होता ! असो, हे भारता, या ठिकाणीही अमित-विक्रांत हलधरानें उदकस्पर्श केला, विविध दांनें दिली, ब्राह्मणांचें पूजन केलें, त्या कृपा-कडे दृष्टि लावून पुनःपुनः त्याची स्तुति केली, आणि नंतर तेथून निघून तो उदारधी विनशन तीर्थावर प्राप्त झाला.

## अध्याय सदतिसावा.

—:०.—

### सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, मग बलराम विनशन तीर्थावर गेला. या ठिकाणीं शूद्राभीरांच्या द्वेषामुळें सरस्वती नदी नष्ट झाली, म्हणून ऋषि यास नित्य विनशन असें म्हणतात. या ठिकाणीं सरस्वतीचें स्नान करून बलराम तिच्या पुण्यकारक तीरावरील सुभूमिक तीर्थस गेला. या ठिकाणीं विमलानना शुभांगी अप्सरा मोठ्या हौसेनें नित्य विमलक्रीडा करीत असतात. येथें गंधर्वासह देव दर महिन्यास येतात. हें तीर्थ मोठें पवित्र व ब्राह्मणसेवित असें आहे. या ठिकाणीं, राजा, गंधर्व व अप्सरा यांच्या समुदायाच्या हरहमेशा गांठी पडून उभयतां यथेच्छ आनंद पावतात. त्याचप्रमाणें देव व पितर हेही येथें प्रमुदित होत असतात.

उत्तमोत्तम पुष्पांनी वरचेवर आकीर्ण होत असलेली ती अप्सरांची सरस्वतीतीरची क्रीडा-भूमि सुभूमिका या नांवाने विख्यात आहे. बलरामाने येथें स्नान करून, ब्राह्मणांस द्रव्य देऊन, वाद्यांचा मधुर ध्वनि व गीत श्रवण करून, आणि गंधर्वाप्सरांच्या पुष्कळ छाया अवलोकन करून गंधर्वतीर्थास प्रयाण केलें. विश्वावसुप्रभृति तपोनिष्ठ गंधर्व तेथें अत्यंत मनोहर असे नाच, गाणेंबजावणें करीत असतात. बलरामाने त्या ठिकाणी विप्रांस विविध मूल्यवान् पदार्थ अर्पण केले; शेळ्या, मेंढ्या, गाई, बैल, गर्दभ, उंट वगैरे प्राणी, सुवर्ण व रोप्य अर्पण केलें; ब्राह्मणभोजन घातलें; आणि पुष्कळ दक्षिणा देऊन त्यांस संतुष्ट केलें. नंतर ज्याच्या सभोवती ब्राह्मणांचा घोळका स्तुति करीत चालला ओहे असा तो राम त्या गंधर्व-तीर्थाहून निघून गर्गस्त्रत नामक महातीर्थावर प्राप्त झाला. त्या ठिकाणी, तपश्चर्येच्या योगाने ज्याचा आत्मा शुद्ध झाला आहे, अशा वृद्ध गर्गमुनीने सरस्वतीच्या पवित्र तीरावर काल-ज्ञानगति, ताऱ्यांची घडामोड, आणि दारुण व शुभकारक असे दोन्ही प्रकारचे उत्पात, यांचें ज्ञान संपादन केलें. हे महाराजा, त्या श्वेतानुलेपन रामाने त्या ठिकाणी जाऊन तेथील आत्मप्रत्ययवान् मुनीस विधिपूर्वक द्रव्य अर्पिलें आणि पक्वान्ने व साधी अन्न यांचें ब्राह्मणभोजन घातलें. नंतर तो नीलवस्त्र परिधान करणारा महायशस्वी बलराम तेथून शंख तीर्थास गेला. तेथें सरस्वतीच्या तीरावर वाढलेला महामेरूप्रमाणें उंच, श्वेतपर्वतासारखा झळकणारा आणि ज्याच्याखाली पुष्कळ ऋषिसंघ जमले आहेत असा एक महाशंख नांवाचा वृक्ष त्याच्या दृष्टीस पडला. तेथें यक्ष, विद्याधर, अत्यंत ओजस्वी राक्षस, महाबलादय असे पिशाच आणि हजारों सिद्ध हे इतर आहार सोडून वेळो-

वेळीं व्रतें व नियम यांच्या योगाने प्राप्त झालेले त्या वृक्षाचें फळ खातात. ते अनेक प्रकारचे नियम ग्रहण करून पृथक् पृथक् संचार करीत असतात; परंतु, हे राजा, ते आपणास दिसत नाहींत. कारण, मनुष्यांस अदृश्य अशा रूपांने ते संचार करितात. याप्रमाणें, हे नरव्याघ्रा, तो वृक्ष या भूलोकी विख्यात आहे. पुढें सरस्वतीचे लोकविश्रुत असे पावनतीर्थ आहे; तेथें त्या यदु-शाईलाने पयस्विनी गाई, तांब्यालोखंडाचीं भांडी व विविध प्रकारची वस्त्रे दान केली; ब्राह्मणांचें पूजन केलें; आणि उलट त्या तपो-धनांनीही त्याची प्रशंसा केली. राजा, मग हलायुध हा पुण्यकारक अशा द्वैतवनास प्राप्त झाला. तेथें नानावेप धारण केलेले मुनि त्याच्या दृष्टीस पडले. या ठिकाणीही त्यानें उदक-निमज्जन करून ब्राह्मणपूजन केलें; आणि त्यांस पृष्कळ उपभोग्य वस्तु अर्पण केल्या. नंतर, राजा, बलरामाने तेथून सरस्वतीस दक्षिणेकडे घालून प्रयाण केलें; आणि तो महायशस्वी वीर फार दूर गेला नाहीं तोंच नागधन्वा नांवाच्या तीर्थावर येऊन पोचला. या ठिकाणी, हे महाराजा, पुष्कळ पन्नगांनी युक्त अशा महातेजस्वी पन्नगराज वासुकीचें निवासस्थान आहे. शिवाय या ठिकाणी नित्य चौदा हजार मुनींची वसति आहे. याच ठिकाणी देवांनी जमून पन्नगोत्तम वासुकीला सर्व सर्पांच्या राज्यपदावर यथाविधि अभिषेक केला. हे पोरवा, या ठिकाणी सर्पांपासून बिल-कूल भीति नाहीं. बलरामानें या ठिकाणीही ब्राह्मणांस रत्नांच्या राशी विधिपूर्वक दान केल्या आणि नंतर त्यानें पूर्वे दिशेस प्रयाण केलें. या दिशेला पदोपदी प्रख्यात तीर्थ आहेत आणि त्यांची संख्या एक लक्ष आहे. या सर्व तीर्थांवर बलरामाने ऋषिप्रेक्ष-विधिपूर्वक स्नान, उपवास, नियम व सर्व प्रकारची दाने करून व प्रत्येक ठिकाणच्या तीर्थनिवासी ऋषीस

अभिवंदन करून तो उद्दिष्ट मार्गानें सरस्वतीच्या पुढील प्रवाहाच्या अनुरोधानें चालला; परंतु जातां जातां, वायूनें मागें फिरविलेल्या वृष्टीप्रमाणें तो मागें परतला आणि नैमिषारण्यांतील महाथोर ऋषींची मनोकामना पूर्ण करण्यासाठीं सरस्वती तेथून मागें परतलेली पाहून, हे राजा, तो श्वेतानुलेपन लांगली बलराम विस्मित झाला !

जनमेजय विचारितोः—हे ब्रह्मन्, सरस्वती पूर्वाभिमुख जात होती ती कां मागें फिरली, हे सर्व स्पष्टपणें कळावें अशी माझी इच्छा आहे. हे अश्वर्यसत्तमा, यदुनंदन तेथें कोणत्या कारणामुळे विस्मित झाला, व त्याचप्रमाणें सारिद्धरा सरस्वती कोणत्या हेतूनें व कशी मागें परतली बरें ?

वैशंपायन सांगतातः—राजा, पूर्वयुगामध्ये अतिविशाल असें द्वादशवार्षिक सत्र चालू असतां नैमिषारण्यांतील तपस्वी व पुष्कळ ऋषि तेथें जमले होते. त्या महाभाग मुनींनीं तें सत्र चालू असतां तेथें यथाविधि वसति केली, आणि पुढें तें द्वादशवार्षिक सत्र समाप्त झाल्यानंतर पुष्कळ ऋषि तीर्थवासास्तव तेथें येऊन राहिले. याप्रमाणें, हे राजेंद्रा, ऋषि फार जमल्यामुळे त्या काळीं सरस्वतीच्या दक्षिण-तीरचीं तीर्थे म्हणजे मोठमोठीं नगरेंच बनलीं होती ! जेवढा म्हणून समंतपंचक देश आहे, तेवढ्या सगळ्याभर त्या द्विजसत्तमांनीं तीर्थ-लोभांनै नदीकांठांनै सारखी वस्ती केली होती. तेथें हवन करणाऱ्या त्या शुद्धचित्त मुनींच्या अति प्रचंड स्वाध्यायघोषानें दिशा दुमदुमून जात. त्या महात्म्यांच्या अग्निहोत्रांचीं कुंडे चोहोंकडे पेटलेलीं असत, आणि त्यांच्या योगानें सरस्वती नदीस शोभा आलेली दिसे. वालखिल्य, तपस्वी अश्मकुट्ट, दंतोलूखली, तसेच दुसरे प्रसंख्यान वगैरे वायुभक्षण करणारे,

जलाहारी, पणाहारी, स्थंडिलांतच शयन करणारे व आणखी नानाप्रकारचे नियम पाळणारे तपस्वी मुनि तेथें सरस्वतीसमीप रहात असत. आणि देवांच्या योगानें जशी गंगा नदी तशी त्यांच्या योगानें सरिच्छ्रेष्ठ सरस्वती नदी शोभत असे. पुढें आणखी शेंकडों सत्रयाजी मुनि तेथें प्राप्त झाले. परंतु त्या महाव्रतांस सरस्वतीच्या तीरी मुळींच जागा सांपडेना. तेव्हां त्यांनीं यज्ञसूत्रांनीं तें तीर्थ निर्माण करून, अग्निहोत्रांचें हवन व दुसऱ्या विविध क्रिया केल्या. पुढें सरस्वतीच्या तीरी जागा न मिळाल्यामुळे तो ऋषींचा समुदाय निराश व संचित झाला आहे असें पाहून, हे राजेंद्रा, सरस्वतीस त्या पुण्यवान् तपस्व्यांची दया आली. आणि ती त्यांच्यासाठीं अनेक कुंज ( डोह ) उत्पन्न करून मागें परतली. राजेंद्रा, मग त्यांचे मनोरथ परिपूर्ण करण्यासाठीं सरस्वती मागें फिरली आणि पुनः पश्चिमाभिमुख वाहूं लागली. “ अमोघ आगमन करून मी पुनः त्या मुनींकडे जाईन ” असें म्हणून राजा, त्या वेळीं त्या महानदीनें असें अद्भुत महत्कार्य केलें ! राजा, याप्रमाणें उत्पन्न झालेला तो कुंज नैमिषीय या नांवानें प्रख्यात आहे. हे कुरुश्रेष्ठा, त्या कुरुक्षेत्रांत मोठें अनुष्ठान कर. असो; तेथें ते बहुत कुंज व निवृत्त झालेली सरस्वती पाहून महानुभाव बलरामास तेथें विस्मय वाटला; आणि त्या ठिकाणींही त्या यदुनंदनानें विधिवत् स्नानादिक केलें; द्विजांस भांडीं, दुसरे नानाप्रकारचे जिव्हास व विविध भक्ष्यभोज्य पदार्थ दान केले; आणि नंतर, राजा, तो द्विजांकडून प्रशंसिला जाणारा बलराम नानाद्विजगणांनीं युक्त बेरी, उंडी, काश्मरी, ओदुंबर, अश्वत्थ, बिभीतक, कंकौल, पळस, करीर, पीलु, तसेच सरस्वतीच्या

१ प्रसिद्ध भारतीयुद्धाची रणभूमि कुरुक्षेत्र तें हे नव्हे.

कांठी उत्पन्न झालेले नानाप्रकारचे वृक्ष आणि करूष, बिल्व, आम्रातक, अतिमुक्त (कुसरी), कण्ड व पारिजात यांनीं सुशोभित, ज्यावर जिकडे तिकडे केळींचीं बनेंच्या बनेंच लागून राहिलीं आहेत असें; डोळ्यांचें पारणें फेडणारें; मनोहर, फलाहारी, पर्णाहारी, जलाहारी व वायुहारी असे दंतोलूखली, अश्मकुट्ट, वानेय वगैरे बहुत मुनींनीं परिवारित; स्वाध्याय-घोषानें दुमदुमलेले; शेंकडों मृगकुलांनीं गजबजलेले आणि अहिंख व धर्मपर जनांनीं अतिशयें-करून सेवित असें जें सप्तसारस्वत नामक तीर्थ—जेथें मंकणक नांवाच्या सिद्ध महा-मुनीनें तपश्चर्या केली—त्या स्थलीं तो हला-युध प्राप्त झाला.

## अध्याय अदतिसावा.

—:०:—

### सप्तसारस्वतवर्णन.

जनमेजय विचारितोः—हे द्विजसत्तमा, सप्तसारस्वत तीर्थ कसें उत्पन्न झालें, मंकणक मुनि हा कोण, त्याला सिद्धि कशी प्राप्त झाली, त्याचा नियम काय होता, तो कोणाच्या वंशांत जन्मला आणि त्यानें काय अध्ययन केलें होते, तें सर्व यथार्थ श्रवण करावें अशी माझी इच्छा आहे.

वैशंपायन सांगतातः—राजा, तेथें सात सरस्वती नद्या असून त्यांनीं तो प्रदेश व्यापिला आहे. थोर लोकांनीं आमंत्रण केल्यावरून त्या त्या ठिकाणीं सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला, मनोरमा, ओघवती, सुरेणु आणि विमलेंदका या सात रूपांनीं सरस्वती अवतीर्ण झाली. हे महाराजा, महाशय ब्रह्मदेवाचा महायज्ञ चालू असतां यज्ञमंडप पसरला, ब्राह्मण सिद्ध झाले, विमल असा पुण्याहघोष आणि वेदांचे उच्चार यांनीं त्या यज्ञविधींत देव व्यापून झाले, आणि

प्रपितामह ब्रह्मदेवांनीं यज्ञदीक्षा घेऊन सर्व-कामसमृद्ध अशा सत्राच्या योगानें यजन करण्याचा उपक्रम केला. त्या समयीं तेथें धर्मार्थकुशल अशा लोकांच्या मनांत जे जे अर्थ जेथें येत, तेथेंच ते ते उद्भूत होत असत, आणि आवश्यक त्या त्या ठिकाणीं द्विज तयार असत. तेथें गंधर्व गायन करूं लागले, अप्सरा नृत्य करूं लागल्या, आणि वादक त्वरेनें दिव्य वाद्यें बाजवूं लागले. त्या यज्ञाची साहित्यसंपत्ति पाहून देवताही तुष्ट झाल्या व अतिशय विस्मय पावल्या; मग सामान्य मनुष्यादिकांची गोष्ट कशाला? राजा, या-प्रमाणें पुष्करतीर्थावर पितामह असतां यज्ञ सुरू झाला, तेव्हां ऋषि म्हणाले, “ ज्यापेक्षां येथें सरित्तरा सरस्वती कोठें दिसत नाही, त्यापेक्षां हा यज्ञ कांहीं बहुगुण होणार नाही; आपला सामान्यच होईल ! ”

तें ऐकून भगवान् ब्रह्मदेवानें प्रसन्न चित्तानें सरस्वतीचें स्मरण केलें. तेव्हां, हे राजेंद्रा, यज्ञ करणाऱ्या पितामहानें पुष्करदेशी आह्वान केलेली सरस्वती तेथें सुप्रभा या नांवानें प्राप्त झाली. राजा, पितामहास मान देऊन वेगानें आलेल्या त्या सरस्वतीस पाहून मुनि संतुष्ट झाले आणि त्या कतूस ते श्रेष्ठ मानूं लागले. याप्रमाणें ही सरस्वती पुष्करामध्ये पितामह ब्रह्मदेवासाठीं व मुनींच्या संतोषार्थ अवतीर्ण झाली.

राजा, एकदां ते नानास्वाध्याय जाणणारे असे पुष्कळ मुनि नैमिषारण्यांत येऊन एकत्र बसले होते. त्या वेळीं, राजा, त्यांच्यामध्ये वेदा-विषयीं पुष्कळ चमत्कारिक गोष्टी झाल्या. नंतर त्या सर्व मुनींनीं मिळून सरस्वतीचें स्मरण केलें. तेव्हां, हे महाराजा, सत्रयाजी मुनींनीं ध्यान केलेली महाभागा व पवित्र सरस्वती नदी त्या महात्म्यांच्या साहाय्यार्थ तेथें प्राप्त झाली ! हे भारता, याप्रमाणें सरिच्छ्रेष्ठ कांचनाक्षी सत्रयाजी

मुनींसाठीं आली; आणि तेथें त्यांनीं तिची पूजा केली. गयदेशामध्ये गय राजा महायज्ञ करीत असतां त्यांत सरिद्वरा सरस्वतीला आमंत्रण झालें; आणि तेथें गयासाठीं प्रादुर्भूत झालेल्या सरस्वतीस संशितव्रत ऋषि विशाला असें म्हणूं लागले. ही नदी हिमालयाच्या कुशीतून शीघ्र वेगानें बाहेर पडून तेथें आली होती. याचप्रमाणें, हे भारता, प्राचीन काळी पवित्र उत्तरकोसल देशामध्ये औदालकाच्या यज्ञांत तो महात्मा यजन करीत असतां, व सभोंवार तेजस्वी मुनींचें मंडल जमलें असतां यजन करणाऱ्या उदालकानें सरस्वतीचें ध्यान केलें; आणि ती सरिद्वरा मुनींच्यासाठीं तेथें प्राप्त झाली असतां वल्कलाजिनधारी मुनिगणांनी तिचें पूजन केलें व तिला **मनोरमा** असें नांव दिलें. राजर्षिसेवित व पवित्र अशा ऋषभद्वीपांत महात्मा कुरु यजमान असतां महाभागा सरस्वती नदी कुरुक्षेत्रांत **सुरेणु** नांवानें प्राप्त झाली. राजेंद्रा, ‘**ओघवती**’ हीही महात्म्या वसिष्ठानें कुरुक्षेत्रांत निमंत्रिलेली दिव्यतोया सरस्वतीच होय. गंगाद्वारा-मध्ये यज्ञ करणाऱ्या दक्षानें पाचारण केलें असतां तेथें शीघ्र गतीनें वहात आलेली सरस्वती ‘**सुरेणु**’ या नांवानें विख्यात आहे. आणि पुनः पवित्र हिमालय पर्वतावर ब्रह्मदेव यज्ञ करीत असतां त्याच्या आमंत्रणावरून तेथें भगवती ‘**विमलोदका**’ प्राप्त झाली. नंतर या सात नद्या एकत्र होऊन त्या तीर्थांत प्रविष्ट झाल्या म्हणून तें तीर्थ ‘**सप्तसारस्वत**’ या नांवानें जगांत प्रसिद्ध झालें. याप्रमाणें सात सरस्वती नद्यांचीं नांवें व हकीकत आणि पवित्र असें सप्तसारस्वत तीर्थ मीं तुला कथन केलें. आतां गंगास्नान करणाऱ्या बालब्रह्मचारी मंकणकाचें महान् कृत्य श्रवण कर. हे भारता, तो स्नानास नदींत उतरला असतां तेथें जवळच

उदकांत स्नान करीत असलेली एक कुलशीलवती व सर्वांगसुंदर नग्न स्त्री सहज त्याच्या दृष्टीस पडली; आणि हे महाराजा, तत्काळ त्याचें वीर्य उदकांत स्वलित झालें; तेव्हां त्या महातपोनिष्ठानें तें रेत कलशांत धरलें. तेथें त्याचे सात विभाग झाले. त्या विभागांपासून सात ऋषि उत्पन्न झाले आणि त्यांपासून मरुद्गणांची उत्पत्ति झाली. राजा, वायुवेग, वायुबल, वायुहा, वायुमंडल, वायुज्वाल, वायुरेता आणि वीर्यशाली वायुचक्र असे हे सात मरुतांचे जनिते उत्पन्न झाले. राजा, त्या मंकणक महर्षीचें त्रैलोक्यांत विश्रुत, अत्यंत अद्भुत व भूमीवर तर विशेष आश्चर्यकारक असें कृत्य श्रवण कर. आम्हीं असें ऐकिलें आहे कीं, पूर्वीं एकदां मंकणक सिद्धाच्या हाताला दर्भाकुरानें जखम झाली. तेव्हां, राजा, त्या जखमेतून शाकरस वाहूं लागला! आणि तो शाकरस नजरेस पडतांच मंकणक हर्षाविष्ट होऊन अतिशय नाचूं लागला. मग, हे वीरा, तो नाचूं लागतांच स्थावरजंगम सर्वच जग त्याच्या तेजानें मोहित होऊन नाचूं लागलें! तेव्हां, राजा, ब्रह्मदेव वगेरे देव आणि तपोधन ऋषि यांनी त्या मंकणक ऋषीविषयी महादेवास विज्ञापना केली कीं, “ देवा, हा मंकणक जेणेंकरून नाचण्याचा थांबेल असें आपण

१ मरुद्गणांची उत्पत्ति दितीपासून झाली असा अन्यत्र उल्लेख असतां, येथे ह्या सप्तर्षीपासून झाल्याचें वर्णिले आहे, हा विरोध दिसतो; पण हें वर्णन कल्पांतरविषयक आहे. म्हणजे, ज्या कल्पांत मरुद्गणांची उत्पत्ति दितीपासून झाल्याचें वर्णन आहे, त्या कल्पातून, ज्यामध्ये त्यांची उत्पत्ति ह्या सप्तर्षीपासून झाली तो हा कल्प भिन्न होय. मरुद्गणांची उत्पत्ति दितीपासून झाल्याविषयी साविस्तर वर्णन श्रीमद्भागवतांत आहे. पहा—आमचे “ श्रीमद्भागवताचे मराठी सुरस भाषांतर ” स्कंध ६, अध्याय १८.

करावें !” मग तो मुनि अत्यंत हर्षाविष्ट होऊन नाचत आहे असे पाहून देवांच्या हितबुद्धीने महादेव त्यास म्हणाले, “अरे ब्राह्मणा, हे धर्मज्ञा, तू कां बरे नाचतोस ? मुने, धर्म-मार्गाने वतणाऱ्या तुज शांत तपस्व्याला एवढा विलक्षण हर्ष कशामुळे झाला ?”

ऋषि म्हणाला, “ब्रह्मन्, माझ्या हातांतून शाकरस गळत आहे तो तुला दिसत नाही काय ? हाच पाहून मी मोठ्या हर्षाने नाचू लागलों !” मग त्या प्रेममोहित मुनीला देव हंमून म्हणाले, “विप्रा, यांत काय मोठें झाले ? मला तर याचें कांहीच आश्चर्य वाटत नाही; मजकडे पहा !” हे राजेंद्रा, असें म्हणून धीमान् शंकराने नव्वांने आपल्या अंगठ्यास क्षत केलें. तेव्हां, राजा, त्यांतून बर्फाप्रमाणें पांढरें स्वच्छ असें भस्म बाहेर पडलें ! राजा, तें पाहून ऋषि लाजला आणि त्यानें त्यास साष्टांग प्रणिपात केला. महादेवाची थोरवी त्याच्या मनांत बिंबली आणि तो विस्मित होऊन म्हणाला, “रुद्रदेवापेक्षां दुसरें कांहीच श्रेष्ठ किंवा महत् नाही, असें मला वाटतें. हे शूल-पाणे, सुरासुरांसह सर्व जगाची तूंच गति होस. हें सर्व विश्व तूंच उत्पन्न केलेंस, असें मनीषी म्हणतात; आणि हें सर्व कल्पांती तुझ्यामध्येच प्रविष्ट होतें. तुझें स्वरूप जाणणें देवांसही शक्य नाही; मग माझा पाड काय ? जगामध्ये जे जे भाव आहेत, ते ते सर्व तुजमध्ये दिसतात. हे अनघा, ब्रह्मादिक देवांनीं वरद अशा तुझीच उपासना केली आहे. देवांचा कर्ताकर-विता सर्व कांही तूंच आहेस. तुझ्याच प्रसादा-मुळे देव अकुतोभय होतसाते येथें आनंदानें राहातात !”

याप्रमाणें महादेवाची स्तुति करून ऋषीने त्यास प्रणाम केला आणि म्हटलें, “देवा, मी जो गर्व वगैरे केला. तो केवळ अज्ञानामुळे

केला हें मला कळून आलें. आतां, देवा, जेणें-करून माझी तपश्चर्या भंग न पावेल असा आपण मजवर प्रसाद करा.” मग संतुष्ट झालेले महादेव पुनः त्यास म्हणाले, “विप्रा, माझ्या प्रसादानें तुझें तप सहस्रगुणित वाढेल. मी तुझ्यासह याच आश्रमांत राहातो. या सप्त-सारस्वतांत जो मनुष्य माझें अर्चन करील, त्याला इहपरलोकीं कांहीच दुर्लभ राहाणार नाही; आणि अंती तो सारस्वतलोकी गमन करील !”

राजा, अमिततेजस्वी मंकणकाची करणी अशा प्रकारची आहे. कारण तो यःकश्चित् कोणी तरी नमून मातरिश्रयापासून मुकन्येच्या उदरीं जन्मलेला पुत्र होता.

## अध्याय एकुणचाळिसावा.

—:—

### सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन सांगतात:—रामानें तेथें राहून आश्रमवासी मुनींची पूजा केली, आणि मंकणकावर तर त्याची अकृत्रिम निष्ठा बसली. मुनिसंघांनी पूजित अशा त्या लांगली बल-रामानें विप्रांस दानें देऊन त्या रात्री उपोषण केलें; आणि प्रातःकाली उठून सर्व मुनींची अनुज्ञा घेऊन व उदकस्पर्श करून आपणवी तीर्थे पाहाण्याच्या हेतूनें तो त्वरेनें तेथून निघाला. नंतर तो ‘औशनस’ तीर्थावर प्राप्त झाला. या तीर्थाला ‘कपालमोचन’ असेही म्हणतात. कारण पूर्वी रामानें उडविलेलें राक्ष-माचें प्रचंड मस्नक ज्याच्या पायाला चिकटलें होतें. तो महोदर नामक महामुनि येथें मुक्त झाला. प्राचीन काळी महानुभाव शुक्राचार्यानें याच ठिकाणी तपश्चर्या केली. येथेंच त्या महात्म्याला अग्निल नीति अवगत झाली, आणि येथेंच बसून त्यानें देवदानवांच्या युद्धाचे वेत टगविले. राजा. या श्रेष्ठतम तीर्थराजावर



येतांच बलरामानें थोर थोर ब्राह्मणांस विधिपूर्वक द्रव्य समर्पिलें.

जनमेजय विचारितोः—ब्रह्मन्, जेथें महामुनि मुक्त झाला, तें कपालमोचन तीर्थ कोणत्या प्रकारचें आहे, आणि त्याच्या अंगाला मस्तक कोणत्या कारणानें व कसें चिकटलें, तो प्रकार मला सांगावा.

वैशांपायन सांगतातः—हे राजशार्दूल, प्राचीन काळी राक्षसांचा संहर्ता महात्मा रामचंद्र दंडकारण्यांत रहात असतां जनस्थानामध्ये त्यानें एका दुष्ट राक्षसाचें मस्तक तोडलें. तें लखलखीत बाणाच्या योगानें घोर अरण्यांत उडालें; आणि, हे राजा, महोदर ऋषि त्या वनांत सहज हिंडत असतां, कर्मधर्मसंयोगानें तें त्याच्या पायास लागलें. त्याच्या तडाक्यानें पायाचें हाड मोडलें आणि तें मस्तक तेथेंच चिकटून स्फुरण पावत राहिलें. याप्रमाणें तें चिकटून बसल्यामुळें त्या महाप्राज्ञास तीर्थ किंवा देवालयें करण्याचें सामर्थ्य राहिलें नाहीं. तथापि पायांतून लस गळत आहे आणि वेदनेनें व्याकूळ झाला आहे अशा स्थितीतही त्या महामुनीनें तशींच पृथ्वीतील सर्व तीर्थ केली, असें आम्ही ऐकिलें आहे ! तो महातपस्वी सर्व नद्या व समुद्र हिंडला आणि त्या त्या ठिकाणच्या थोर थोर ऋषींना त्यानें आपलें भावित निवेदन केलें. परंतु सर्व तीर्थांत बुड्या मारूनही त्या मस्तकापासून त्याची मुक्तता झाली नाहीं. राजेंद्रा, पुढें मुनींच्या तोंडून त्याला एक मोठी बातमी कळली की, सर्व पापांचें प्रशमन करणारें, सिद्धांचें वसतिस्थान व सर्वांहून उत्तम असें सरस्वतीच्या तीरी औशनस नामक एक प्रख्यात व श्रेष्ठ तीर्थ आहे. हें ऐकिल्यानंतर तो ब्राह्मण मग त्या तीर्थावर गेला आणि त्यानें त्यांत अवगाहन केलें. तेव्हां लगेच तें शिर त्याच्या चण्णापासून मुटून उदकांत पडलें.

त्या मस्तकापासून मुक्तता झाल्यामुळें त्याला मोठें सुख झालें, आणि, हे प्रभो, तें मस्तकही त्या जलांत अदृश्य झालें. नंतर तो मस्तकपीडिपासून मुक्त, प्रसन्नचित्त, नष्टदुःख, कृतकृत्य व संतुष्ट झालेला महोदर आपल्या आश्रमास गेला. तेथें पोंचतांच त्या मुक्त झालेल्या महातापसानें आत्मज्ञानी ऋषींना आपला तो सर्व वृत्तांत कथन केला. हे मानदा, त्याचें भाषण ऐकून त्या सर्व ऋषींनीं मिळून त्या तीर्थाचें नांव ' कपालमोचन ' असें ठेविलें; आणि तो महामुनि पुनः त्या तीर्थावर येऊन व त्याचें अपार जल प्राशन करून मोठी सिद्धि पावला. वृष्णिवीर बलरामानें तेथें विप्रांस पुष्कळ दांनें दिली; आणि नंतर, जेथें आर्षिषेणानें घोर तपश्चर्या केली त्या रुषंगूच्या आश्रमास तो गेला. हे भारता, विश्वामित्र महामुनीनें येथेंच ब्राह्मणत्व संपादिलें. राजा, हें आश्रमस्थान फार मोठें असून ब्राह्मण व मुनि येथें नित्य रहात असतात आणि सर्व प्रकारचे मनोरथ पूर्ण करण्याजोगी येथें समृद्धि आहे. असो; राजेंद्रा, ब्राह्मणांच्या घोळक्यामध्ये शोभणारा तो हलधर नंतर जेथें रुषंगूनें देह ठेविला त्या ठिकाणीं गेला. हे भारता, नित्य सारखें तप करणाऱ्या वृद्ध रुषंगु ब्राह्मणानें आपला देह गलितर्पण झाला असें पाहून, बहुत प्रकारें विचार करून देहत्याग करण्याचें ठरविलें; आणि नंतर आपल्या सर्व पुत्रांस जवळ बोलावून तो त्यांस म्हणाला, ' मला वृथूदकावर न्या ! ' रुषंगूचें आयुष्य संपलें असें जाणून ते तपोनिष्ठ पुत्र त्यास सरस्वतीकांठच्या त्या तीर्थाकडे घेऊन गेले. जीमय्यें शेंकडें तीर्थ असून ब्राह्मणांचे अनेक समुदाय जिचे कांठी राहातात, त्या पवित्र सरस्वती नदीवर मुलांनीं आणिलेल्या त्या ज्ञानसंपन्न तापमानें तेथें विधिपूर्वक स्नान केलें; आणि तीर्थमहिमा जाणून तो प्रसन्न झालेला

ऋषिसत्तम सर्व पुत्रांस जवळ बोलावून म्हणाला, “सरस्वतीच्या उत्तरतीरी या पृथूदक तीर्थामध्ये ध्यानस्थ असतां जो आपले देहाचा त्याग करतो, त्यास पुनः मरणाचा ताप होत नाही.” असें म्हणून त्यानें तेथें जलसमाधि घेतली. येथें धर्मशील व विप्रवत्सल हलधरानें बुड्या मारल्या, स्नान केलें, आणि ब्राह्मणांस बहुत दानें दिलीं. राजा जनमेजया, सर्व लोकांचा पिता-मह जो भगवान् ब्रह्मदेव त्यानें जेथें लोक उत्पन्न केले, सदाचरणी आर्क्षिषेणानें जेथें महान् तपश्चर्या करून ब्राह्मण्य संपादन केलें, आणि राजर्षि सिंधुद्वीप, महातपस्वी देवापि आणि त्याचप्रमाणें महातपस्वी व उग्रतेजस्वी भगवान् विश्वामित्र मुनि यांसही जेथें ब्राह्मण्य प्राप्त झालें, त्या ह्या तीर्थावर प्रतापशाली व बलाढ्य बलभद्र आला.

## अध्याय चाळिसावा.

—:०:—

### सारस्वतोपाख्यान.

जनमेजय विचारितोः—भगवान् आर्क्षिषेणानें मोठी तपश्चर्या कशी केली ? सिंधुद्वीपाला तेव्हां ब्राह्मण्य कसें प्राप्त झालें ? त्याचप्रमाणें, हे ब्रह्मन्, देवापीला ब्राह्मणत्व कसें प्राप्त झालें; आणि, हे सत्तमा, विश्वामित्रालाही ब्राह्मण्य कसें मिळालें, तें, हे भगवन्, मला सांगा. त्या-विषयी मला मोठी उत्सुकता आहे.

वैशंपायन सांगतातः—राजा, पूर्वीं कृत-युगांत आर्क्षिषेण नामक द्विजेत्तम गुरुगृही राहून नित्य अध्ययनांत तत्पर असे. राजा, गुरूच्या घरीं रहात असतां तो सदेदीत इतक्या तत्परतेनें वागत असे, तथापि, हे राजेंद्रा, त्याची विद्या पूर्ण झाली नाही. इतकेंच नव्हे, तर त्यास वेदही अवगत झाले नाहीत. मग, राजा, तो अगदीं वैतागून त्यानें मोठी तप-

श्चर्या केली. आणि तिच्या योगानें त्यास वेदांचें उत्कृष्ट ज्ञान झालें. मग त्या विद्वान् वेदज्ञ, सिद्ध व अत्यंत तपस्वी अशा ऋषिसत्तमानें त्या तीर्थाला तीन वर दिले. “महानदीच्या ह्या तीर्थांत आजपासून पुढें जो मनुष्य स्नान करील, त्यास अश्वमेधाचें महाफल प्राप्त होईल,” “यापुढें येथें सर्पादिकांची बाधा होणार नाही” आणि “या ठिकाणीं अल्पकाळांत पुष्कळ मोठे फल मिळेल.”

असें म्हणून तो महातेजस्वी मुनि स्वर्ग-लोकी गेला. याप्रमाणें प्रतापशाली व सिद्ध अशा त्या भगवान् आर्क्षिषेणाची हकीकत आहे. पुढें याच तीर्थांत प्रतापी सिंधुद्वीपानें आणि हे महाराजा, देवापिनेही महान् वेदसमूह प्राप्त करून घेतला; त्याचप्रमाणें, बाबारे, नित्य तप-श्चर्या करणारा जितेंद्रिय विश्वामित्र आपल्या उत्तम प्रकारें केलेल्या तपाच्या योगानें ब्राह्मण-त्वास जाऊन पोचला. ज्याची कीर्ति जगभर पसरली आहे, असा गाधि नामक एक महान् क्षत्रिय ( राजा ) होता. त्याला विश्वामित्र म्हणून एक प्रतापी पुत्र झाला. राजा, तो कुशिकपुत्र गाधि राजा पुढें महायोगी झाला. त्या महातपानें विश्वामित्रास गादीवर बसविलें आणि आपण देहत्याग करण्याचें मनांत योजिलें. तेव्हां त्याच्या प्रजा प्रणामपूर्वक त्यास म्हणाल्या, “हे महाप्राज्ञा, तूं आम्हांतून जाऊं नको; महाभयापासून आमचें रक्षण कर.” असें प्रजा म्हणूं लागल्या तेव्हां गाधीनें त्यांस आश्वासन दिलें, “जनहो, चिंता करूं नका. माझा पुत्र सर्व जगाचा पालनकर्ता असा होईल.”

असें म्हणून गाधीनें प्रजांचें आश्वासन केलें आणि नंतर विश्वामित्रास गादीवर बस-वून तो स्वर्गास गेला; व हे राजा, विश्वामित्र राजा झाला. तो आपल्याकडून अतिशय झटत असे, परंतु पृथ्वीचें रक्षण करण्यास तो समर्थ

झाला नाही. पुढे त्या राजाने राक्षसांपासून मोठी भीती उत्पन्न झाल्याचे ऐकिले, तेव्हा तो चतुरंग सैन्य घेऊन नगरांतून बाहेर पडला. तो बराच दूर गेल्यावर वाटेत त्यास वसिष्ठांचा आश्रम लागला. तेव्हा, राजा, त्याच्या सैन्याने तेथे फारच अत्याचार व नासधूस केली. नंतर कांहीं वेळाने भगवान् वसिष्ठ मुनि आश्रमास आले आणि सर्व महावन उध्वस्त होत आहे असे त्यांनी पाहिले. तेव्हा, हे महाराजा, वसिष्ठ मुनींम कोप घेऊन त्यांनी “ भयंकर भिल्ल उत्पन्न कर. ” म्हणून आपल्या धेनूस सांगितले. वसिष्ठांची आज्ञा होताच त्या गाईने अतिशय उग्र दिसणारे पुरुष उत्पन्न केले आणि त्यांनी त्या सैन्यास गांडून त्याची दाही दिशा दाणादाण उडविली !

राजा, गाधिपुत्र विश्वामित्राने आपले सैन्य पळाल्याचे ऐकिले, तेव्हा त्याच्या मनाची खात्री झाली की, तपहेंच श्रेष्ठ होय. मग तप करण्याचे त्याच्या मनांत भरले. राजा, मग सरस्वतीच्या ह्या श्रेष्ठ तीर्थावर येऊन त्याने एकाग्रतेने नियम व उपवास यांनी आपला देह भिजविला. तो कांही दिवस फक्त जलाहार, कांही काल पर्णाहार व कांही काल केवळ वायुभक्षण करून राहिला. तो स्थंडिलांत शयन करीत असे; आणि दुसरे जे जे म्हणून नियम आहेत, ते ते सर्व तो पृथक् पृथक् पाळीत असे. याप्रमाणे त्याची उग्र तपश्चर्या चालली असतां देवांनी वारंवार त्याच्या व्रताला विघ्ने केली; परंतु त्या महात्म्याचे मन नियमांपासून बिलकूल चळले नाही. याप्रमाणे परम यत्नाने नानाप्रकारची तपश्चर्या करून विश्वामित्र तेजाने केवळ सूर्यासारखा झाला ! असे त्याने तप केले तेव्हा महातेजस्वी व वरद ब्रह्मदेव त्याजवर प्रसन्न होऊन त्यास वर देण्यास सिद्ध झाला. तेव्हा, राजा, “ मी ब्राह्मण व्हावे ” हाच त्याने

वर मागितला. यावर सर्वलोकपितामह ब्रह्मदेवाने “ तथास्तु ” म्हटले आणि तो पूर्णकाम झालेला महायशस्वी व देवतुल्य विश्वामित्र अखिल पृथ्वीवर संचार करिता झाला.

या उत्तम तीर्थावर बलरामाने पुष्कळ द्रव्य वांटले आणि प्रेमाने ब्राह्मणांचे पूजन करून त्यांस दुभत्या गाई, याने, शयने, वस्त्रालंकार व उत्कृष्ट असे भक्ष्यपेय पदार्थ अर्पण केले. नंतर, राजा, तो बलराम, जेथे बक दाल्भ्याने तीव्र तपश्चर्या केली म्हणून प्रसिद्ध आहे, त्याजवळच असलेल्या बकाच्या आश्रमास गेला.

## अध्याय एकेचाळिसावा.

—:—

### सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन सांगताना:—राजा, मग बलराम त्या ब्रह्मयोगी तीर्थावरून, जेथे महातपस्वी, गोर तपश्चर्येने आपले शरीर क्षीण करणाऱ्या आणि अत्यंत क्रोधाविष्ट झालेल्या धर्मशील व प्रतापी दाल्भ्य बकाने आश्रमांत राहून विचित्र-वीर्यपुत्र धृतराष्ट्राचे राष्ट्र हवन केले, त्या ठिकाणी प्राप्त झाला. पूर्वी नैमिषीय ऋषींचे द्वादशवार्षिक सत्र व विश्वजित् यज्ञ संपल्यानंतर ऋषि तेथून निघून पंचाल देशास गेले. त्या ठिकाणी त्यांनी तेथील राजापाशी दक्षिणा मागितली. तेव्हा त्यांस सशक्त, निरोगी व तरुण अशा एकवीस गाई मिळाल्या. मग दाल्भ्य बक बाकीच्या ऋषींस म्हणाला, “ हे पशु तुम्ही वांटून घ्या; मी यांतला भाग न घेतां सार्वभौमराजाकडे भिक्षा मागेन.” राजा, असे त्या सर्व ऋषींस सांगून तो प्रतापवंत ब्राह्मणोत्तम धृतराष्ट्र राजाकडे गेला; आणि राजाच्या समेंत जाऊन त्याने त्याजवळ पशूंची याचना केली. तेव्हा कांही साहजिक मेलेलीं गुरे पाहून धृतराष्ट्र त्यास रोषाने म्हणाला, “ ब्रह्मन्,

तुला गुरे पाहिजेत तर ही घे!" राजाचें तसें भाषण ऐकतांच तो धर्मज्ञ ऋषि मनांत म्हणाला, "अहो, भरसभेंत राजा मला असें दुर्भाषण बोलला अं!" राजा, तें ऐकून त्याला अतिशय संताप आला; आणि मुहूर्तमात्र विचार करून त्यानें धृतराष्ट्र राजाचा विनाश करण्याचें मनांत योजिलें. मग त्यानें ते मृत पशु नेले आणि त्यांचें मांस काढून धृतराष्ट्राच्या राष्ट्राचें हवन चालविलें. हे महाराजा, सरस्वतीतीरच्या अवाकीर्ण क्षेत्रीं अग्नि प्रज्वलित करून त्या परमव्रतस्थ महातपस्वी दारुभ्य बक मुनीनें त्या मांसाच्या आहुति देऊन धृतराष्ट्राच्या राष्ट्राचा विनाश करणारें हवन केलें. राजा, ह्याप्रमाणें तें अत्यंत दारुण सत्र विधिपूर्वक सुरू झालें, तेव्हां धृतराष्ट्राचें राष्ट्र क्षीण होत चाललें! हे विभी, उत्तरोत्तर क्षीण होत चाललेल्या त्या राष्ट्राची स्थिति कुऱ्हाडीनें तुटत असलेल्या अफाट वनासारखी झाली; आणि तें आपद्ग्रस्त, जमीनदोस्त व चेतनाविहीन होऊन गेलें. राजा, राष्ट्र असें उचस्त होत चाललेलें पाहून धृतराष्ट्र राजाला फार वाईट वाटलें; आणि तो चिंता करूं लागला. त्यानें ब्राह्मणांचें साह्य घेऊन राष्ट्राच्या मुक्ततेसाठीं पुष्कळ खटपट केली. परंतु कांहीं यश आलें नाही—राष्ट्र एकसारखें क्षीण होतच होतें. हे अनघा, याप्रमाणें जेव्हां राष्ट्राच्या मुक्ततेचा कांहीं उपाय चालेना, तेव्हां तो राजा व ते ब्राह्मण अगदीं खिन्न झाले. पुढें, राजा जनमेजया, त्यानें ह्याविषयी ज्योतिष्यांस प्रश्न विचारिला, तेव्हां ते म्हणाले, "राजा, तूं पशु देतांना ज्याचा अपकार केलास, तो बक मुनि मांसाच्या योगानें तुझ्या राष्ट्राचा होम करीत आहे; आणि त्याच्याकडून या राष्ट्राचें हवन चाललें असल्यामुळें त्याचा असा भयंकर संहार उडत आहे! बाबारे, तुझा हा जबरदस्त विनाश

चालला आहे, हें त्या बकाच्या तपश्चर्येचें फळ होय. राजा, सरस्वतीच्या डोहावर तो बसला आहे; त्याला तूं प्रसन्न कर!"

नंतर तो राजा सरस्वतीच्या तीरीं जाऊन बकापुढें साष्टांग नमस्कार घालून व हात जोडून त्यास म्हणाला, "भगवन्, प्रसन्न व्हा, प्रसन्न व्हा; माझ्या अपराधाची क्षमा करा. मी लोभी असून मला विचारशक्ति नाही. मूर्खपणामुळें माझ्या हातून तसें घडलें. परंतु महाराज, मज दीनाचे आपणच नाथ आहां. मला तुम्हांवांचून दुसरी गति नाही. यास्तव आपणच मजवर प्रसाद करण्यास योग्य आहां!"

राजा, याप्रमाणें तो विलाप करीत आहे आणि शोकानें त्याचें चित्त पोळलें आहे, असें पाहून ऋषीला त्याची दया आली; आणि त्यानें त्याचें राष्ट्र मोकळें केलें. तो ऋषि रोष सोडून त्यावर प्रसन्न झाला आणि त्यानें त्याच्या राष्ट्राच्या मोक्षासाठीं पुनः आहुति दिल्या. नंतर राष्ट्र मुक्त करून व राजापासून पुष्कळ पशु घेऊन तो हर्षभरित अंतःकरणानें पुनरपि नैमिषारण्यांत निवृत्त गेला; आणि धर्मात्मा व थोर मनाचा धृतराष्ट्र राजाही स्वस्थ चित्तानें आपल्या समृद्ध नगरांत परत आला.

हे महाराजा, याच तीर्थाचे ठिकाणी उदारधी वृहस्पतीनें असुरांचा विनाश व्हावा आणि देवांची सुस्थिति व्हावी म्हणून मांसाच्या योगानें इष्टीचें हवन केलें आणि त्यामुळें देवांच्या हातून युद्धांत पराभव पावून दैत्य क्षय पावले. असो; या ठिकाणींही महाकीर्तिमान् बलरामानें ब्राह्मणांस हत्ती, घोडे, खेचरें, रथ, अमूल्य रत्ने व पुष्कळ धनधान्य विधिपूर्वक समर्पण केलें; आणि नंतर, हे पृथ्वीपते, तो महाबाहु 'यायात' तीर्थावर गेला. हे महाराजा, त्या ठिकाणीं नहुषपुत्र महात्म्या ययातीच्या यज्ञांत सरस्वती दूष व पातळ तूप

खवली. त्या ठिकाणीं पुरुषव्याघ्र ययाति राजानें यज्ञ करून आनंदित होऊन ऊर्ध्वमार्गानें प्रयाण केलें व उत्तम लोक मिळविले. या-शिवाय तेथें यज्ञ करीत असतां प्रभु ययाति राजानें आत्म्याचे ठिकाणीं शाश्वत भक्ति ठेऊन व परम औदार्य धारण करून, त्यानें जो जो ब्राह्मण जें जें पाहिजे म्हणून मनांत आणी तें तें त्यास अर्पण केलें. या यज्ञांत आमंत्रण केलेला जो जो ब्राह्मण जेथें जेथें उतरला होता, तेथें तेथें त्याला घरदार, अंभरुणपांशरुण, षड्रस भोजन व नानाप्रकारचे दान सरिद्वारा सरस्वतीनें पुरविलें; पण राजाचेंच हें उत्कृष्ट देणें आहे, असें त्या ब्राह्मणांम वाटलें; आणि ते संतुष्ट होऊन त्यांनीं राजाला शुभकारक आशीर्वाद देऊन तुष्ट केलें. तेथें यज्ञाची संपत्ति ( साहित्याची विपुलता ) पाहून गंधर्वांमुद्धां देवांसही संतोष वाटला आणि मनुष्य तर ती पाहून विस्मित झाले. असो; नंतर तो महाधर्माचा केवळ ध्वज, अंतःकरणाचा थोर, आत्मज्ञानी, नित्य महादानें देणारा, कृतात्मा व मनोजयसंपन्न तालकेतु बलराम—जेथील वेग महाभयंकर आहे अशा वसिष्ठापवाह तीर्थावर येऊन पोचला.

## अध्याय बेचाळिसावा.

—:०:—

### सारस्वतोपाख्यान.

जनमेजय विचारितोः—वसिष्ठाला वाहून नेणारा हा भयंकर वेगवान् प्रवाह कशा प्रकारचा आहे, तसेंच सरस्वतीनें त्या ऋषीस कां वाहून नेले आणि तिचें त्याशीं कसें व कां वैर पडले, तें, हे प्रभो, मी आपणांस विचारीत आहे. हे महाप्राज्ञा, आपण मला ही हकीकत सविस्तर सांगावी. आपण सांगितलें तेवढ्यानें कांहीं माझे समाधान होत नाही.

वैशांपयन सांगतातः—हे भारता, विश्वामित्र

व विप्रर्षि वसिष्ठ यांजमध्ये तपश्चर्येविषयींच्या स्पर्धेनें भयंकर हाडवैर पडलें होतें. राजा, स्थाणु-तीर्थावर वसिष्ठाचा मोठा आश्रम होता आणि त्याच्या बाजूला पूर्वेकडे धीमान् विश्वामित्राचा आश्रम होता. हे महाराजा, या तीर्थाला स्थाणुतीर्थ हें नांव पडण्याचें कारण असें कीं, येथें स्थाणूनें महान् तपश्चर्या केली. तेथें त्याच्या त्या घोर कृत्याविषयीं अजूनही तेथील मुनि कथा सांगतात. भगवान् स्थाणूनें तेथें यज्ञ करून सरस्वतीचें अर्चन केलें आणि स्थाणुतीर्थ म्हणून ह्या तीर्थाची स्थापना केली. हे नराधिपा, याच तीर्थावर देवांनीं सुरद्वेष्ट्यांचा नायनाट करणाऱ्या स्कंदास आपल्या मोठ्या सैनापत्याचा अभिषेक केला. या सारस्वत तीर्थावर विश्वामित्र महामुनीनें उग्र तपःसामर्थ्यानें वसिष्ठास दूर घालविलें. तो वृत्तांत श्रवण कर.

राजा, विश्वामित्र व वसिष्ठ या दोघां तपोनिष्ठांची दिवसानुदिवस तपाविषयीं भयंकर नुरस वाढत गेली. त्या दोघांमध्ये विश्वामित्र मुनि हा अधिक संतापी होता. त्याला वसिष्ठाचें तेज पाहून चिंता लागली. शेवटीं त्याला असा विचार सुचला कीं, “ही सरस्वती नदी तपोधन वसिष्ठाला आपल्या वेगाबरोबर त्वरित माझ्याजवळ आणिल आणि येथें येतांच त्या द्विजश्रेष्ठास मी निःसंशय ठार मारीन ! ” भगवान् विश्वामित्र महामुनीनें असें करण्याचा निश्चय केला. त्याचे नेत्र रागांनें लाल झाले आणि त्यानें सरिच्छ्रेष्ठ सरस्वतीचें स्मरण केलें. मुनीनें ध्यान करितांच सरस्वती व्याकूळ होऊन गेली.—विश्वामित्राचें विलक्षण सामर्थ्य व अनावर क्रोध तिला माहीत होता. तिचा चेहरा उतरून गेला आणि ती कांपत कांपत विश्वामित्रापुढें येऊन हात जोडून उभी राहिली; व एखाद्या पतिमेलेल्या स्त्रीप्रमाणे अत्यंत दुःखित झालेली ती सरस्वती त्या मुनि-

सत्तमास म्हणाली, “सांगा मी काय करावे !” तो क्रुद्ध मुनि तिला म्हणाला, “ वसिष्ठाला लवकर घेऊन ये म्हणजे मी आज त्याला ठार करितो ! ” तें ऐकून नदीचें हृदय फाटून गेलें. तिनें हात जोडले आणि ज्याप्रमाणें वायूनें लता कंपित होते त्याप्रमाणें ती भयभीत झालेली पुडरी-काशी थरथर कांपूं लागली. त्या महानदीची अशी अवस्था झालेली पाहून तिला विश्वामित्र म्हणाला, “ तू कांहीं एक विचार न करितां बेलाशक वसिष्ठाला माझ्या समीप आण. ” त्याचें भाषण ऐकून व त्याचा पापी मनोदय जाणून, वसिष्ठाचा जगांत अप्रतिम असा प्रभाव जाणणारी ती नदी वसिष्ठाजवळ गेली; आणि तिनें विश्वामित्राच्या सांगण्यांतला अभिप्राय त्यास कळविला. दोघांचाही विलक्षण प्रभाव जाणत असल्यामुळे एकीकडे आड आणि दुसरीकडे विहीर अशी तिची अवस्था झाली होती. ह्याचा नाहीं तर त्याचा भयंकर शाप होईल म्हणून तिला भय पडलें होतें, आणि तेणेंकरून ती एकसारखी कांपत होती. राजा, पांडरी फटफटीत, क्रुश व चिंतायुक्त अशा त्या सरस्वतीला नरश्रेष्ठ धर्मात्मा वसिष्ठ म्हणाला, “ हे सरिच्छ्रेष्ठे, शीघ्रगामिनी होऊन मला वाहून ने आणि तूं स्वतःचें रक्षण कर. कारण असें न करशील तर विश्वामित्र तुला शाप देईल. मला नेण्याविषयीं तूं विलकूल कांकूं करूं नको. ”

हे कौरव्या, त्या कृपाशीलाचें तें भाषण ऐकून ती नदी विचार करूं लागली कीं, “ कसें केलें असतां आपण नीट वागलों असें होईल. ” तिला चिंता पडली की, “ वसिष्ठ हा मजवर नित्य अत्यंत कृपा करीत आला आहे, तेव्हां त्याचें मला हितच केलें पाहिजे. ” मग, राजा, मुनिश्रेष्ठ कौशिक आपल्या तीरावर हवन व जप करीत बसला आहे असें पाहून व

हीच संधि आहे असें जाणून तिनें एकदम आपल्या वेगानें तीरें धुपविली. तेव्हां त्या लोंढ्याबरोबर मैत्रावरुण वसिष्ठ वाहून गेला. राजा, याप्रमाणें वहात जात असतां त्यानें सरस्वतीची स्तुति केली, “ हे सरस्वति, पितामह ब्रह्मदेवाच्या सरोवरापासून तुझी उत्पत्ति झाली आहे आणि तुझ्याच निर्मल उदकानें हें संपूर्ण जग व्यापून गेलें आहे. हे देवि, तूच आकाशगंगा असून मेघांमध्ये जलोत्पत्ति करतेस. सर्व उदकेंही तूच आहेस आणि तुझ्यापासून आह्मी अध्ययन करतो. पुष्टि, द्युति, कीर्ति, सिद्धि, बुद्धि व उमा हीं तुझीच स्वरूपें असून, वाणी व स्वाहाही तूच आहेस आणि हें जग तुझ्यावरच अवलंबून आहे, कारण येथें सर्व भूतांचे ठिकाणीं तूं चतुर्विध रूपानें राहातेस. ”

राजा, याप्रमाणें तो महर्षि स्तुति करीत असतां सरस्वतीनें त्यास वेगानें विश्वामित्राच्या आश्रमास आणून सोडलें; आणि “ मुनीस आणलें ” म्हणून विश्वामित्रास पुनःपुनः बजाविलें. सरस्वतीनें आणिलेल्या त्या वसिष्ठास पाहातांच विश्वामित्र रागानें खवळून जाऊन त्यास ठार मारण्यासाठीं इकडे तिकडे कांहीं लांकूड वंगरे शोधूं लागला. इतक्यांत, तो अति-शयच संतापला आहे असें पाहून ब्रह्महत्त्येच्या भीतीनें नदीनें लग्नगीनें वसिष्ठामुर्ध्व दिशेकडे वाहावीत नेलें; आणि अशा प्रकारें तिनें गांधि-जास फसवून उभयतांचें बोलणें पाळल्यासारखें केलें. तिनें वसिष्ठास दूर वाहावीत नेलें, असें पाहातांच विश्वामित्रास दुःख झालें; आणि तेणें-करून तो असहिष्णु अधिकच संतापून म्हणाला, “ सरिद्धरे, ज्यापेशां मला ठकवून तूं पुनः निघून गेलीस, त्यापेशां, हे कल्याणि, राक्षसा-दिकांना प्रिय अशा रक्ताचा प्रवाह वहा ! ” ह्याप्रमाणें विश्वामित्रानें शापिलेल्या सरस्वतीचें

उदक त्याच वर्षीं रक्तमिश्रित झालें. मग सरस्वतीची ती स्थिति पाहून देव, ऋषि, गंधर्व व अप्सरा अतिशय दुःखित झाल्या. याप्रमाणें, हे जनाधिपा, वसिष्ठापवाह तीर्थ जगांत प्रसिद्ध झालें आणि तें निर्माण करून सरस्वती पुनः आपल्या पूर्वमार्गानें वाहूं लागली.

## अध्याय त्रैचाळिसावा.

—:०:—

### सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन सांगतात:—संतप्त झालेल्या धीमान् विश्वामित्रानें शापिलेली ती सरस्वती त्या निर्मल व श्रेष्ठ तीर्थांत रक्त वाहूं लागली. पुढें, हे भारता, तेंथें राक्षस आले व तें रक्त नित्य प्राशन करीत तेंथेंच सुखानें राहिले. रक्तप्राशनानें ते तृप्त व सुखी झाले, आणि त्यांची रक्त मिळविण्याची काळजी नाहीशी होऊन जणू स्वर्गच हातीं आल्याप्रमाणें ते नाचूं लागले व हंसूं लागले ! अशा रीतीनें ते तेंथें आनंदांत रहात होते. राजा, पुढें कांही काळ लोटल्यावर, अत्यंत तपोधन असे कित्येक ऋषि सरस्वतीवर तीर्थयात्रेस आले. त्या तपोलुब्ध व विद्वान् मुनिश्रेष्ठांनीं मोठ्या प्रीतीनें सरस्वतीच्या सर्व तीर्थांवर उत्तम प्रकारें स्नानादिक क्रिया केल्या; आणि, राजा, अशा प्रकारें तीर्थयात्रा करीत येतां येतां, ते ह्या रक्तवाही तीर्थावर येऊन पोचले. त्या अत्यंत दारुण तीर्थावर येऊन पाहातात तों सरस्वतीचें उदक रुधिरानें भरलेलें असून पुष्कळ राक्षस तें पीत असतात, असें त्या महाभागांच्या दृष्टीस पडलें. त्या राक्षसांना पाहून त्या संशितव्रत मुनींनीं सरस्वतीच्या परित्राणार्थ अतिशय यत्न केला. त्या सर्व महाव्रतस्थ महाभागांनीं एकत्र जमून सरिच्छेष्ठ सरस्वतीला हाक मारून विचारिलें, “ हे कल्याणि, तुझा हा डोह

असा रक्तमय कशांनें झाला ? याचें कारण आम्हांस सांग, म्हणजे आम्ही त्याविषयीं कांहीं विचार करूं. ” मग थरथर कांपत तिनें झालेला सर्व वृत्तांत त्यांस सांगितला. नंतर तिला दुःखित पाहून ते तपोधन म्हणाले, “ हे सरस्वति, तुला झालेला शाप व त्याचें कारण आम्ही ऐकिलें. हे सर्व तपोधन आतां पुढें जें करावयाचें तें करतील, तुला काळजी नको. ”

राजा, असें सरस्वतीस सांगून त्यांनीं आपसांत मसलत करून ठरविलें कीं, “ आपण सर्व मिळून ह्या सरस्वतीस शापमुक्त करूं. ” मग त्या सर्व ब्राह्मणांनीं तपश्चर्या, नियम, उपवास, नानाप्रकारचे यम व कठीण कठीण व्रतें करून जगत्पालक पशुपति महादेवाचें आराधन करून त्या सरिच्छेष्ठ सरस्वती देवीस मुक्त केलें. त्यांच्या प्रभावाच्या योगानें सरस्वती पुनः पूर्वस्थितीवर येऊन तिचें उदक पहिल्याप्रमाणें निर्मल झालें; आणि ती मुक्त झालेली सरस्वती पूर्वाप्रमाणें शोभूं लागली. सरस्वतीचें उदक मुनींनीं तसें स्वच्छ केलेलें पाहून तेथील क्षुधित राक्षस त्यांनाच शरण गेले; आणि, राजा, भुकेनें व्याकूल झालेले ते राक्षस हात जोडून त्या सर्वे कृपालु मुनींस पुनःपुनः म्हणाले, “ आम्हांस फार भूक लागली आहे. आम्ही सनातन धर्मापासून भ्रष्ट झालों आहों, परंतु आम्ही येथें पापकर्म करीत आहों त्या अवस्थेंतच राहावें अशी कांही आम्हांस आवड नाही. आम्ही आपल्या दुष्कृत्यामुळे व आपला प्रसाद न झाल्यामुळे ही अवस्था भोगीत आहों. आमचें पाप वाढत आहे आणि आम्ही ब्रह्म-राक्षस आहों. स्त्रियांच्या पापानें व व्यभिचारादिकांनीं ब्राह्मण ब्रह्मराक्षस होतात; याचप्रमाणें जे क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र ब्राह्मणांचा द्वेष करतात. तेही राक्षसयोगीम जातात; आणि

आचार्य, ऋत्विज, गुरु व वृद्ध मनुष्ये याचा जे अपमान करतात, तेही येथे राक्षस होतात. यास्तव, द्विजसत्तमहो, आमचे येथे तारण करा. आपण सर्व जगाचे तारण करण्यास समर्थ आहां ! ”

राजा, राक्षसांचे हे भाषण ऐकून त्या तपोधनांनी त्यांच्या मुक्ततेसाठी त्या महानदीची प्रार्थना केली आणि ते अंतःकरणपूर्वक म्हणाले, “ भोक पडलेले, किडलेले, उच्छिष्टाने भरलेले, केशयुक्त, दूर उडालेले व रुदितोपहत असे जे जे अन्न असेल तो तो राक्षसांचा भाग होय. यास्तव ज्ञात्याने हे जाणून मदोदीत यत्नपूर्वक अमे पदार्थ वर्ज्य करावे. जो अशा प्रकारचे अन्न भक्षण करतो, तो राक्षसांचेच अन्न भक्षण करतो म्हणून समजावे. ” नंतर तीर्थ शुद्ध केल्यावर त्या तपोधनांनी राक्षसांच्या मोक्षार्थ नदीची प्रार्थना केली. तेव्हा. हे पुरुषर्षभा. महर्षींचा तो अभिप्राय जाणून सरिद्रा सरम्बतीने आपल्या देहांत अरुणेस आणिले. मग त्या अरुणेत स्नान करून राक्षसांनी आपल्या देहांचा त्याग केला व ते स्वर्गास गेले. हे महाराजा, अरुणा ही ब्रह्महत्येचे पातक नाहीसे करणारी आहे असे जाणून शतक्रतु देवेंद्राने त्या श्रेष्ठ तीर्थात स्नान करून आपली पापापासून मुक्तता करून घेतली !

जनमेजय विचारितोः—भगवान् इंद्राला ब्रह्महत्या कशी वडली आणि तो या तीर्थात स्नान करून कसा निष्पाप झाला !

वेशपायन मागतातः—हे जनेश्वरा. पूर्वी इंद्राने नमुचीला दिलेले वचन कसे मोडले याविषयीच हे आख्यायन जसे वडले तसे श्रवण कर. नमुचे वासवापासून भय पावून सूर्य-किरणांत शिरला आणि त्याने इंद्राशी संधि केली. तेव्हां इंद्राने त्याशी करार केला की. “ हे असुरेश्वरा मित्रा. मी तुला शपथपूर्वक मत्स्य

सांगतो की, मी तुला आर्द्र पदार्थाने किंवा शुष्क पदार्थाने मारणार नाही. त्याचप्रमाणे, रात्री मारणार नाही किंवा दिवसामही मारणार नाही. ” राजा, असे वचन देऊन इंद्राने धुकें पडले आहे असे पाहून पाण्याच्या फेंसाने त्याचे मस्तक तोडले ! तेव्हां. हे राजा. तें नमुचीचे छिन्न मस्तक “ अरे मित्रवातक्या पाण्या ! ” असे म्हणत त्याच्या पाठीस लागले. इंद्र कोठेही गेला तरी तें त्याची पाठ सोडीना ! शेवटी त्याने ब्रह्मदेवास हा घडलेला प्रकार निवेदन केला. तेव्हां लोकगुरु ब्रह्मदेवाने त्यास सांगितले. “ देवेंद्रा, अरुणेवर यथाविधि हवन करून त्या पापमोचक तीर्थात स्नान कर. शक्ता, मुनीना या नदीचे उदकास फारच पवित्रता आणिली आहे. पूर्वी नमुची गुप्तपणे येथे आला अभूत त्याने अरुणेवर जाऊन तिच्या उदकाने स्नान केले होते. सरस्वती व अरुणा यांचा हा संगम महान् पुण्यकारक आहे. देवेंद्रा. येथे तुं यज्ञ कर आणि अनेक प्रकारची दांने दे. येथे स्नान करून तुं या अति घोर पातकापासून मुक्त होशील. ” जनमेजया, पितामहाने असे सांगतांच तो बलभित् इंद्र सरस्वतीच्या त्या तीर्थावर यथावत् यजन करून अरुणेत स्नान करिता आला. तेव्हां त्या ब्रह्महत्येच्या पातकापासून त्याची मुक्तता झाली; आणि तो हर्षचित्त होत्समाता स्वर्गलोकी निवृत्त गेला ! इकडे हे भारता. त्याच्या पाठीस लागलेले तें नमुचीचे मस्तक त्याच तीर्थात पडून नमुचीलाही अक्षय्य असे इच्छित लोक प्राप्त झाले !

वेशपायन पुढे मागतातः—परमार्थ मात्रणारा महात्मा बलराम येथे स्नान करून अनेक प्रकारची दांने देऊन व धर्मसाधन करून तेथून श्रेष्ठ अशा सोमतीर्थावर गेला; हे पार्थिवेंद्रा, येथेच प्राचीन काळी भगवान् सोमाने राजसूय-यज्ञ केला. त्या श्रेष्ठ यज्ञांत ज्ञानसंपन्न महात्मा



अत्रि मुनि 'होता' असून, या यज्ञाच्या शेवटी दानव, दैत्य व राक्षस यांबरोबर देवांचे मोठे घनघोर युद्ध झाले. त्या युद्धांत अतिकूर तारकासुराला स्कंदाने ठार मारिले. याच ठिकाणी दैत्यांतक स्कंदाला देवमन्यांचे आधिपत्य प्राप्त झाले. येथेच तो मोठा वटवृक्ष असून नित्य कुमारावस्थेत राहणारा तो कार्तिकेय स्कंद येथेच राहिला होता.

### अध्याय चवेचाळिसावा.

—:०:—

#### कुमाराभिषेकोपक्रम.

जनमेजय विचारितोः—हे द्विजसत्तमा, सर्वस्वतीचा हा प्रभाव तुम्ही मला सांगितला; परंतु हे ब्रह्मन्, कुमाराच्या त्या अभिषेकाचे आपण वर्णन करावे. हे वक्त्यांतील वरिष्ठा. कोणत्या देशांत. कोणत्या काळी. कोणी, कोणत्या विधीने भगवान् स्कंदाला अभिषेक केला, तसेच त्या स्कंद प्रभूने दैत्यांचा भयंकर संहार कसा उडविला, ते सर्व मला सांगा. ते ऐकण्याविषयी मला मोठे कौतुक वाटत आहे.

वैशंपायन सांगतातः राजा, तुला उत्पन्न झालेले कौतुक तुझ्या कुरुकुलाम योग्यच आहे. जनमेजया, माझे भाषण हर्ष उत्पन्न करतेंच ! राजा, तू ऐकत आहेस तर ठीक आहे, मी तुला कुमाराचा अभिषेक व त्या महात्म्याचा प्रभाव कथन करतो; ऐक. पूर्वी एका वेळी महेश्वराचे तेज स्वलित होऊन अग्नीत पडले. भगवान् अग्नि सर्वभक्षक आहे खरा; परंतु तें अमोघ वीर्य दहन करण्यास तो समर्थ झाला नाही. त्याच्या योगानें तो प्रदीप्त व अत्यंत तेजःपुंज झाला आणि त्या वेळी त्यास तो तेजोमय गर्भ धारणही करवेना. मग त्या प्रभु अग्निने ब्रह्मदेवाच्या आज्ञेने गंगेशी संयोग करून तिच्या ठायी त्या सूर्यासमान तेजस्वी दिव्य गर्भाची

स्थापना केली. नंतर गंगेलाही तो गर्भ सहन न होऊन देवपूजित रम्य हिमालय पर्वतावर तिने तो गर्भ टाकून दिला. तो अग्निपुत्र तेथें लोकांस व्यापून वाहूं लागला, जनमेजया, पुढें अग्नीच्या स्त्रिया कृत्तिका यांनी तो शरवनांत पडलेला महात्मा अग्निपुत्र म्हणजे तो अग्निरूप गर्भ अवलोकन केला. तेव्हा “ हा माझा बाळ ” “ हा माझा बाळ ” असे त्या पुत्रार्थिनी मोठ्याने ओरडल्या. तेव्हां भगवान् प्रभूने ( त्या गर्भानें ) त्या मातांचा अभिप्राय जाणून, त्यांना पान्हा फुटल्यामुळे खवू लागलेले दुग्ध सहा मुखांनी प्राशन केले. हे भरतकुलोत्पन्ना, त्या बालाचा तो प्रभाव कृत्तिकांनी पाहिला, तेव्हां त्या दिव्यदेहधारी देवीस मोठा विस्मय वाटला. गंगेने ज्या पर्वतशिखरावर त्या प्रभूस टाकिले, ते शिखर सर्व मोन्यांचे होऊन अत्यंत झळकूं लागले. तो गर्भ जमजमा वाहूं लागला तस- तशी त्याने आमपासची भूमि सुवर्णमय केली आणि म्हणूनच सर्व पर्वत सोन्याच्या खाणीनी युक्त असे झाले. त्या सुमहावीर्यशाली कुमाराला कृत्तिकांसंबंधे कार्तिकेय असे नांव पडले. पूर्वी त्याला गंगेय असे नांव होतें. असो; तो महान् योगबलानें युक्त, व शम, तप, वीर्य यांनी समन्वित होता; आणि, हे राजेंद्रा, तो सुमनोहर कुमार चंद्राप्रमाणें भराभर वाहूं लागला. तो तेजःपुंज कार्तिकेय त्या दिव्य व सुवर्णमय दर्भाच्या बेडावर सदेदीत पडलेला असे. तेथें गंधर्व व मुनि त्याची स्तुति करीत; आणि दिव्य नृत्यवादन जाणणाऱ्या हजारों सुंदर देवकन्या त्याची स्तुति गात त्याच्याजवळ नृत्य करीत. हे भारता, सरिच्छ्रेष्ठ गंगा नदीही त्याजपाशी उभी असे आणि पृथ्वी सुंदर रूप धारण करून त्यास उचलून घेई. तेथें प्रत्यक्ष बृहस्पतीने त्याच्या जातकर्मादि क्रिया केल्या. चतुर्मुनि वेद त्याजपुढें हात जोडून उभा

राहिला. चतुष्पाद धनुर्वेद व ससंग्रह शस्त्र-समुदाय त्यापुढे खडा राहिला. आणि साक्षात् वाणी ( सरस्वती ) ही तेथे त्याजपार्शी प्राप्त झाली. शंकडों भूतगणांनी परिवारित अशा पार्वतीसह बसलेल्या देवाधिदेव महावीर्यवंत उमापतीला त्याने अवलोकन केले. भूतगणांचे ते समुदाय फारच अद्भुत दिमत होते. त्यांचे रूप चमत्कारिक. आकार भयंकर आणि ध्वज व आभरणे ही कांही विलक्षण होती. कित्येकांची तोंडे वाघ, सिंह व अस्वलयांसारखी. कित्येकांची मांजरासारखी व मगरासारखी आणि दुसऱ्या कित्येकांची काळमांजरासारखी होती ! त्याचप्रमाणे कित्येक गजमुखी, उष्ट्र-मुखी व घुबडतोंडचे होते, तर कित्येक गिधाडे व कोल्हरी यांसारखे दिसत ! कौच, पारवे व रांकव यांसारखी कोणाची तोंडे होती; आणि साळू, शल्यक, मुसर, बकरा, बोकड यांसारखे देह दुसऱ्या कित्येकांनी धारण केले होते. कांही पर्वताएवढे तर कांही मेघाएवढाले होते. त्यांनी चक्रे व उगारलेल्या गदा घेतलेल्या होत्या; आणि कित्येक मशीच्या ढिगामारखे काळेकुट्ट होते. तर कित्येक धवलगिरीसारखे शुभ्र होते ! राजेंद्रा, सप्तमातृगणही तेथे आले होते. त्याचप्रमाणे साध्य, विश्वेदेव, मरुत, वसु, पितर, रुद्र व आदित्य, तमेच सिद्ध, भुजग, दानव व खग सर्व तेथे गोळा झाले होते. पुत्रासहवर्तमान व विष्णुसह भगवान् स्वयंभू ब्रह्मदेव आणि इंद्र हे त्या अच्युत कुमार-वरास पाहाण्यासाठी तेथे प्राप्त झाले होते. नारदप्रभृति मोठमोठे देवगंधर्व, बृहस्पतिप्रभृति देवर्षि व सिद्ध तेथे जमले होते. इतकेंच नव्हे. तर जे, जगाचे श्रेष्ठ पितर व देवांचेही देव, तेही तेथे आले असून सर्व यामें व धामें तेथे एकत्र झाली होती !

याप्रमाणे शूलपाणि शंकरप्रभृति ती सर्व

मंडळी त्या कुमाराकडे येऊं लागली, तेव्हां तो महायोगबलान्वित बलवान् बालही, शूल-पाणि देवाधिदेव शंकराला सामोरा जाऊं लागला. तो येत आहे असें पाहतांच शंकर, पार्वती, गंगा व अग्नि या चौघांच्या मनांत एकदम विचार आला की, “ हा कुमार गौर-वार्थ आधी कोणाकडे बरे येईल ! ” “ माझ्याच-कडे येईल ! ” असें प्रत्येकानें आपल्या मनाशी उरविलें. त्या चौघांचा हा अभिप्राय जाणून स्कंदानें एकदम योगसामर्थ्याने निर निराळे देह उत्पन्न केले. क्षणांत त्या भगवान् प्रभूनें आपल्या चार मूर्ति केल्या ! आणि ‘ शाख ’ ‘ विशाख ’ व ‘ नैगमेय ’ अशा तीन मूर्ति त्याचे पाठीशीं दिसू लागल्या ! या-प्रमाणे त्या भगवान् प्रभूनें स्वतःस चतुर्धा केल्यावर त्यांपैकी अद्भुत दिसणारा स्कंद रुद्राकडे गेला. ज्या बाजूनें देवी पार्वती येत होती त्या बाजूला विशाख वळला. वायुमूर्ति भगवान् शाख अशीकडे गेला. आणि अग्निप्रमाणे तेजस्वी कुमार नैगमेय गंगेकडे गेला. त्या चौघांचेही देह मोठे तेजस्वी व अगदीं एकसारखे होते. ते जेव्हां त्या चौघांकडे जाऊं लागले तेव्हां ती एक अद्भुतच गोष्ट घडली. तें रोमोद्गम करणारे अदृष्टपूर्व महदाश्चर्य पाहून देवदानव व राक्षस यांमध्ये मोठा गलबला झाला. नंतर गंगेसहवर्तमान रुद्र, देवी पार्वती व अग्नि या सर्वांनी जगत्पति ब्रह्मदेवास प्रणाम केला; आणि, हे राजपुंगवा, विधिपूर्वक प्रणाम केल्यावर कार्तिकेयांचें प्रिय करण्याच्या हेतूनें त्यांनी अशी प्रार्थना केली की, “ भगवन्, या बाळाला आपल्या इच्छेप्रमाणे आधिपत्य द्यावें. हे देवेशा, आमचें प्रिय करण्यासाठी आपण यास योग्य अशी देणगी द्यावी. ” मग सर्व लोकांचा पितामह जो बुद्धिमान् भगवान् ब्रह्मदेव त्यानें मनाशी विचार केला की, “ याला काय मिळणें

योग्य आहे /” राजा. देव. गंधर्व व राक्षस यांची सर्व ऐश्वर्ये व तशीच भूत, यक्ष. पक्षी व सर्प या सर्वांची ऐश्वर्ये या कुमाराला महात्म्यांच्या समुदायांत पूर्वीच मिळालेली होती. यास्तव महामति ब्रह्मदेवाला तो सर्वैश्वर्यसंपन्न आहे हे कळून आले. हे भारता. नंतर देवांचें हित करण्यास तत्पर असलेल्या त्या ब्रह्मदेवांनं मूर्त-मात्र विचार करून त्याला सर्व भूतांचें मना-पत्य दिलें; आणि देवलोकांतील जे जे राजे म्हणून श्रुत आहेत त्या सर्वांस त्यानं त्याच्या हातांवाली काम करण्याची आज्ञा केली. मग ते ब्रह्मपुरोगम सर्व देव कुमाराला घेऊन अभिषेक करण्यासाठी शैलेद्र हिमालयावर आले; आणि ज्यांचे मनोरथ अगदीं परिपूर्ण झाले आहेत असे ते देव व गंधर्व तेथून हिमालयाची कन्या, सर्व नद्यांत श्रेष्ठ. व पवित्र आणि त्रैलोक्यांत विश्रुत अशी जी समंतपंचकांतील देवी सरस्वती नदी. तिच्या सर्वगुणसंपन्न व पुण्यकारक अशा तीरावर येऊन बसले.

## अध्याय पंचेचाळिसावा.

— ० —

### स्कंदअभिषेक.

वैशंपायन सांगतात:—नंतर शास्त्राप्रमाणें अभिषेकाचें सर्व साहित्य सिद्ध करून बृहस्पतीनं प्रदीप्त अग्नीत यथाविधि अग्नीचें हवन केलें. नंतर पाच, माणीक वगैरे मौल्यवान् खड्यांनी सुशोभित व दिव्य रत्नांनीं खचित अशा हिमालयांनं दिलेल्या पुण्यकारक सिंहामनावर तो कुमार बसला; आणि सर्व मंगलकारक साहित्याच्या योगानें अभिषेकोक्त विधि व मंत्र यांनी सिद्ध केलेलें अभिषेकाचें द्रव्य घेऊन देवतांचे समुदाय त्याचे सभोवती उभे राहिले. महावीर्यशाली इंद्र व विष्णु, सूर्यचंद्र, धाता-विधाता, अनिलानल, पूषा, भग, अर्यमा, अंश,

विवस्वान्, मित्र व वरुण यांसहवर्तमान धीमान् रुद्र, त्याच्याच सभोवती अष्ट वसु, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, उभय. अधिनीकुमार, तसेच विश्वदेव. मरुत्. सांध्य. पितर. गंधर्व, अप्सरा. यक्षराक्षस व पन्नग, असंख्य देवर्षि. ब्रह्मर्षि. वेङ्गानम. वालखिल्य. वामुहारी. मरीचिप. भृगु, अंगिरा व दुसरे थोर थोर यति; सर्प. विद्याधर तसेच पुण्यवंत योगसिद्ध हे उभे होते. दुसऱ्या बाजूला पितामह. पुलस्त्य मुनि. महातपस्वी पुलह. अंगिरा. कश्यप. अत्रि. मरीची, भृगु, ऋतु, हर, प्रचेता, मनु व दक्ष हे उभे होते. त्याचप्रमाणें, हे राजा, ऋतु. ग्रह व तारेही तेथें आले होते. नद्या स्त्रीरूपें धारण करून आल्या होत्या. तसेंच सनातन वेद, समुद्र, डोह. विविध तीर्थे, पृथ्वी, आकाश, दिशा व वृक्ष हीं सर्वजणें निर-निराळीं रूपें धारण करून तेथें एकत्र झालीं होती. देवमाता अदिति. ऱ्ही. श्री, स्वाहा, सरस्वती, उमा, शची. सिनिवाली, अनुमति, कुहू. राका, धिषणा व दुसऱ्या देवपत्नी. हिमालय, विंध्य, अनेक शृंगांचा मेरु. अनुचरांसह ऐरावत. कला. काष्ठा. मास, पक्ष, ऋतु आणि तसेंच, हे राजा. दिवस व रात्री हे तेथें हजर होते. हयश्रेष्ठ उच्चैःश्रवा. नागराज वासुकि, अरुण व गरुड. वृक्ष व ओषधि आणि भगवान् यमधर्म हे सर्वजण एकत्र होऊन तेथें आले होते; व काल, यम, मृत्यु व यमाचे अनुचरही तेथें हजर होते. राजा, हे व बहुत्वामुळें न सांगितलेले दुसरे नाना-प्रकारचे देवतागण आपआपल्या ठिकाणांहून तेथें कुमाराच्या अभिषेकासाठी जमले होते. राजा, त्या सर्व देवांनी अभिषेकद्रव्यांची भांडी व दुसरे सर्व प्रकारचे मंगल पदार्थ घेतले होते. देवांना मोठा हर्ष झाला होता. त्यांनी उत्तम सुशोभित केलेल्या सुवर्णकलशांत दिव्य उद-काच्या सात पवित्र सरस्वती नद्यांचें जल

वेऊन. त्याच्या योगानें. अमुरांम भय उत्पन्न करणाऱ्या त्या महानुभाव कुमाराम सैन्यापत्याचा अभिषेक केला. हे महाराजा, पूर्वी जलेश्वर वरुणा-ला केलेल्या अभिषेकाप्रमाणें त्यांनी स्कंदाम अभिषेक केला. त्याचप्रमाणें सर्वलोकपिता-मह ब्रह्मदेव, महातेजस्वी कश्यप मुनि, आणि दुसरे तेथें जे जगत्प्रसिद्ध लोक होते. त्यांनी-ही त्यावर अभिषेक केला. संतुष्ट झालेल्या प्रभु ब्रह्मदेवानें नंदिमेन. लोहिनाक्ष. घंटाकर्ण आणि प्रख्यात कुमुदमाली हे आपले चार महाबलाढ्य. इच्छेप्रमाणें पराक्रम करणारे, वायुवेगी व बल-वान् सेवक त्याच्या दिमतीस दिले. महा-तेजस्वी प्रभु स्थानां शेंकडों माया जाणणारा. इच्छेप्रमाणें बल व पराक्रम करणारा आणि देवशत्रूंचा नायनाट करणारा असा एक 'काम' नामक महापारिषद (सेवक) स्कंदाम दिला. हे राजेंद्रा. हा काम जेव्हा देवासुरांच्या युद्धांत संकुद्ध झाला. तेव्हां त्यानें भीम परा-क्रमी दैत्याची चौदा अयुते (एक कोटी चाळीस लक्ष) केवळ आपल्या बाहूंच्या धडकांनीं ठार केली. त्याचप्रमाणें सर्व देवांनीं मिळून राक्षसांनीं व्यास, देवांच्या शत्रूंचा क्षय उडविणारी व विष्णुरूपिणी अशी अजिंक्य सेना त्यास दिली. इंद्रासहवर्तमान सर्व देवांनीं सिंहनाद केला; आणि त्याचप्रमाणें गंधर्व, यक्ष, राक्षस, मुनि व पितर यांनींही ज्याच्या गर्जना ठोकल्या. नंतर महावीर्यशाली, मोठे तेजःपुंज व काल-तुल्य जे उन्माथ व प्रमाथ ते यमानें त्यास अर्पण केले; आणि प्रसन्न झालेल्या प्रतापवान् सूर्यानें आपले 'सुभ्राज' व 'भास्वर' हे दोघे अनुयायी त्याच्या सेवेस सादर केले. सोमानें-ही आपले कैलसशृंगासारखे चमकणारे व शुभ्र पुष्पें व गंध धारण करणारे 'मणि' व 'सुमणि' हे दोघे अनुचर त्यास दिले. 'ज्वालाजिह्व' व 'ज्योति' हे दोघे शूर व

परसैन्याची रावरांगोळी उडविणारे सेवक अशांनें त्या आपल्या पुत्राच्या हवाली केले. अशांनेंही 'परिव.' 'वट,' अत्यंत बलाढ्य असा 'भीम' आणि वीर्यवंतास मान्य अस-लेले प्रचंडदेही 'दहति' व 'दहन' हे पांच सेवक धीमान् स्कंदाच्या स्वाधीन केले. पर-वीरांतक इंद्रांनें 'उत्क्रोश' व 'पंचक' 'या नांवाचे दोन वज्रदंडधारी वीर त्या अनल-पुत्राम दिले. आणि त्या दोघांनीं रणांत इंद्राच्या पुष्कळ शत्रूंम ठार मारिले. 'चक्र,' 'विक्रमक' आणि महाबलाढ्य 'संक्रम' हे तीन सेवक महाकीर्तिमान् विष्णुनें त्यास दिले. भिषग्वर जे अश्विनीकुमार त्यांनीं त्यास सर्व विद्यांत पारंगत झालेले 'वर्धन' आणि 'नंदन' हे मोठ्या प्रेमानें अर्पण केले. महायशस्वी धात्यानें 'कुंद' 'कुमुम' 'कुमुद' 'डंबर' व 'आडंबर' हे त्या महात्म्याच्या सेवक-गणांत समाविष्ट केले. मेघ हीच ज्यांचीं सैन्ये आहेत, असे 'चक्र' व 'अनुचक्र' नामक दोन फार मायावी व बळकट सरदार त्वष्ट्यानें आपल्या तर्फेनं त्याच्याकडे पाठविले. 'सुव्रत' आणि 'सत्यसंध' हे दोन तपोविद्यासंपन्न महाथोर वीर मित्रांनें त्या कुमाराला अर्पण केले. अत्यंत देखणे, वरप्रद आणि त्रैलोक्यांत प्रख्यात असलेले 'सुव्रत' व 'शुभकर्मा' हे विधात्यानें त्या कार्तिकेयाच्या सेवेस वाहिले. आणि हे भारता, पृथ्वीनेंही त्याला महामायावी 'कालिक' व 'पाणीतक' हे दोन सेवक अर्पण केले. हे भरतसत्तमा जनमेजया. 'बल' आणि 'अति-बल' नांवाचे दोन विशाल तोंडाचे महाबल-वान् अनुचर वायूनें त्यास दिले. सत्यप्रतिज्ञ वरुणानें महाबलाढ्य व माशासारख्या मुखाचे 'यम' व 'अतियम' हे दोघे कार्तिकेयास दिले. राजा, महाथोर 'सुवर्चा' व तसाच 'अतिवर्चा' हे दोन हिमालयानें दिले. थोर 'कांचन'

आणि 'मेघमाली' हे मेरूनं त्यास दिले; आणि, हे भारता, 'स्थिर' व 'अतिस्थिर' हे दुसरे दोन महाबल पराक्रमी सेवक मेरूनं च त्यास अर्पण केले. विशाल पाषाण घेऊन लढणारे 'उच्छृंग' व 'अतिशृंग' हे विंध्यानें दिले; आणि समुद्रानेही 'संग्रह' व 'विग्रह' हे दोघे मोठ्या योग्यतेचे सेवक त्या अग्निपुत्रास समर्पण केले. जिचें दर्शन शुभकारक आहे अशा पार्वतीने 'उन्माद' 'शंकुकर्ण' व 'पुष्पदंत' यांस पाठविलें, आणि हे पुरुषव्याघ्रा, पन्नगेश्वर वामुकीने 'जय' व 'महाजय' या दोघां नागांस स्कंदाच्या सेवेस हजर राहण्यास आज्ञा केली.

याप्रमाणेंच साध्य, रुद्र, वसु, पितर, सागर, नद्या व मोठमोठे पर्वत या सर्वांनी आपापल्या वतीने शूल व पट्टे धारण करणारे, दिव्य आयुधें वापरणारे, व नानाप्रकारचे वेष व भूषणें घातलेले, सैन्याच्या तुकड्यांवरील अधिकारी त्याच्या सैन्यांत हजर केले. राजा, मी आतां सांगितले त्याशिवाय जे दुसरे विविध आयुधांनी युक्त व चित्रविचित्र वखालंकारांनीं विभूषित असे स्कंदाचे मोठमोठे सैनिक होते, त्यांचीही नांवें ऐक. शंकुकर्ण, निकुंभ, पद्म, कुमुद, अनंत, द्वादशभुज, कृष्ण व उपकृष्णक, घ्राणश्रवा, कपिस्कंध, कांचनाक्ष, जलधम, अक्ष, संतर्जन, तसाच. हे राजा, कुनदीक, तमोतकृत, एकाक्ष, द्वादशाक्ष, तसाच प्रभु एकजट, सहस्रबाहु, विकट, व्याघ्राक्ष, क्षितिकंपन, पुण्यनामा, सुनामा, मुचक, प्रियदर्शन, परिश्रुत, कोकनद, प्रियमाल्यालेपन, अजोदर, गजशिरा, स्कंधाक्ष, शतलोचन, ज्वालाजिह्व, करालाक्ष, क्षितिकेश, जटी, हरि, परिश्रुत, कोकनद, कृष्णकेश, जटाधर, चतुर्दंष्ट्र, जिह्व, मेघनाद, पृथुश्रवा, विद्युताक्ष, धनुर्वक, जाठर, मारुताशन, उदाराक्ष, रथाक्ष, वज्रनाभ, वसुप्रभ, समुद्रवेग, तसाच हे राजेंद्रा, शैलकंपी, वृष, मेघ, प्रवाह, त्याचप्रमाणें आनंद व उपनंदक,

धूम्र, श्वेत, कल्मि, सिद्धार्थ व तसाच वरद, प्रियक, नंद, प्रतापी गानंद, आनंद, प्रमोद, स्वस्तिक आणि तसाच ध्रुवक, क्षेमवाह, सुवाह, आणि, हे भारता, सिद्धपत्र, गोव्रज, कनकापीड, महापरिपदेश्वर. गायन, हसन, बाण व वीर्यशाली श्वङ्ग, वैताली, गतिताली, तसेच कथक व वादक, हंसज, पंकदिग्भाग, समुद्रोन्मादन, रणोत्कट, प्रहास, श्वेतसिद्ध, नंदन, कालकंठ, प्रभाम, तसाच कुंभांडकोदर, कालकक्ष, सित, तसाच भूतांचा मथन, यज्ञवाह, सुवाह, देवयाजी, सोमप, मज्जान, महातेजा, आणि, भारता, क्रथ व काथ, तुहर, तुहार व वीर्यवंत चित्रदेव, मधुर, सुप्रसाद, महाबली किरीटी, वत्सल, मधुवर्ण, कलशोदर धर्मद, मन्मथकर व वीर्यवंत मूर्चीवक्र; तसाच श्वेतवक्र, सुवक्र, व पांडुरवर्णाचा चारुवक्र; दंडबाहु, सुबाहु, रज व कोकिलक; अचल, कनकाक्ष, बालांचा प्रभु, संचारक, कोकनद्ध, गृध्रपत्र, जंबूक, लेहाजवक्र, जवन, कुंभवक्र, कुंभक, स्वर्णप्राव, कृष्णोजा, हंसवक्र, चंद्रभ, पाणिकूर्चा, शंबूक, पंचवक्र, शिक्षक, चाषवक्र, जंबूक, शाकवक्र, आणि कुंजल हे सर्वजण व योगी, महात्मे, सनत ब्राह्मणांवर प्रेम करणारे. ब्रह्मदेवाचे आश्रित व मोठमोठे मानकरी—कित्येक तरुण, कित्येक बाल, तर कित्येक वृद्ध, असे सर्व प्रकारचे हजारों सभासद, हे जनमेजया, त्या कुमाराजवळ जमले. याशिवाय, हे राजा, जे कित्येक नानाप्रकारच्या तोंडांचे लोक तेथें गोळा झाले होते, ते श्रवण कर. कासव व कोंबडा यांप्रमाणें ज्यांची मुखें आहेत असे; ससा व वृबड यांसारख्या तोंडांचे; खरमुखी व उष्ट्रमुखी; तसेच डुकरतोंडचे; मांजर व ससे यांसारख्या मुखांचे; तसेंच, हे भारता, दीर्घमुखी; नकुल व उलूक यांचीं तोंडें धारण करणारे; तसेच दुसरे

कावळ्यासारख्या तोंडाचे, उंदीर, चातक व मोर यांसारखी मुखें असलेले; दुसरे कित्येक मत्स्यमुखी व मेघमुखी, शेळी, मेंढी व म्हैस यांच्याप्रमाणें मस्तकें असलेले; अम्बलमुखी, व्याघ्रमुखी; चित्यासारखे तोंडाचे; सिंहमुखी; भयंकर गजमुखी; नक्रमुखी; गरुड, कंकपक्षी, लांडगा व कावळा यांच्यासारख्या तोंडाचे; दुसरे कित्येक बैल, गाढव व उंट यांच्याप्रमाणें तोंडें असलेले; आणि तसेच कित्येक मांजरासारख्या तोंडाचे होते. हे भारता, त्यांची पोटे, पाय व अवयव भले मोठे असून नेत्र ताऱ्यांप्रमाणें चमकत होते. दुसऱ्या कित्येकांची तोंडें पारव्यासारखी होती; व आणखी दुसरे बैलासारख्या तोंडाचे होते. कोणाची तोंडें कोकिलासारखी होती; कित्येकांची तोंडें ससाण्यासारखी व कोणाची तित्तिर पक्ष्यासारखी होती. कित्येकांची तोंडें सरळ्यासारखी असून त्यांनीं स्वच्छ वस्त्रें परिधान केली होती. कित्येकांची मुखें सर्पासारखी होती व कित्येकांची शूलाच्या आकाराचीं होती ! कित्येकांचीं तोंडें अक्राळ विक्राळ होती, तर कित्येकांची चांगली सुंदर होती. त्यांतील कित्येक वस्त्रें नेमलेले सर्प होते व तशीच कित्येकांची तोंडें शोणसासारखी होती. कांहींची पोटे मोठी, कांहींची कृश, कित्येकांचे हातपाय भले लघु, तर कित्येकांचे अगदी बारीक; कोणाच्या माना वसलेल्या तर कोणाचे कान भले लांब, असे त्यांचे आकार कांही विलक्षण होते. कित्येकांनी अनेक जातीचे साप भूषणांदाखल धारण केले होते ! कोणीं गजचर्म परिधान केले होते; आणि दुसऱ्या कित्येकांनी कृष्णाजिनें परिधान केली होती. हे महाराजा, कित्येकांना खांद्याशी तोंडें होती व कित्येकांस पोटावरच होती ! त्याप्रमाणें पाठीवर तोंडें असलेले, हनुवटीशीं तोंडें असलेले, व

१. एक सर्पजाति आहे.

ज्यांना गुडच्याशीच मुखें आहेत असेही कित्येक होते ! पुष्कळांची तोंडें कुशीस होती, व तशीच पुष्कळांना अनेक निरनिराळ्या भागी होती ! त्याचप्रमाणें कित्येक तुकड्यांवरील अधिकाऱ्यांची तोंडें कीट पतंगासारखी होती. दुसऱ्यांची तोंडें निरनिराळ्या जातीच्या सर्पांप्रमाणें होती. कित्येकांना अनेक हात व अनेक मस्तकें होती. नानाप्रकारचे वृक्ष कोणाच्या हातांत होते; व तसेच दुसरे कित्येक कमरेजवळ मस्तकें असलेले असे होते ! कित्येक भुजंगाच्या शरीरासारख्या तोंडाचे. नानाप्रकारच्या दोळीत व कपारीत राहणारे, वस्त्रां देह झांकून घेतलेले, नानाप्रकारची मुवर्णाची वस्त्रें ( चिलखतें ) लयालेले, नानाजातीची पुष्पे व उट्या धारण केलेले, अनेक प्रकारची वस्त्रें परिधान केलेले, सुंदर माना असलेले, मोठे तेजःपुंज दिसणारे, तमेच चर्मधारी, पागोटी व मुगट घातलेले, व किरिट धारण केलेले होते. कित्येकांचे केंस सोन्यासारखे होते. कांहीजणांस पांच शेंड्या. कांहीस तीन, कांहीस दोन आणि दुसऱ्या कित्येकांस मात सात शेंड्या राखिलेल्या होत्या. कांहींनी झुलपें राखिली होती; कांहींनी टोप घातले होते; कित्येकांनी मुंडन केले होते व कित्येक तर जटाधारीच होते ! कांहीजणांनीं चित्रविचित्र माळा घातल्या होत्या; आणि कित्येकांच्या तोंडावर दादीमिशी वाढलेली होती. ते नित्य एका युद्धाची आवड धरणारे असून मोठमोठ्या देवांसही ते हार जात नमत. कांही काले, कांही गालफडे वसलेले, कांही लांबकंद पाठी असलेले, ज्यांचीं पोटे खपाटीला गेली आहेत असे कित्येक स्थूल-घृष्ट, कित्येक म्हस्वपृष्ट, ज्यांचें उदर व मेहन फारच लांब आहे असे, लांब हातांचे, आखूड हातांचे, ज्यांचे सर्वच अवयव तोकडे आहेत असे, मुजे व कुवडे, आणि ज्यांच्या फक्त मांड्याच

आखूड आहेत अमे अनेक प्रकारचे लोक त्यांत होते. कित्येकांचे कान व मस्तकेंच हत्तीसारखी होती. कांहींची नाकें हत्तीसारखी, कांहींची कासवासारखी व दुसऱ्या कांहींची लांडग्यासारखी होती. कित्येकांचे उच्छ्वास दीर्घ चालले होते; कित्येकांच्या मांड्या लांब होत्या; कित्येक अक्रालविक्राल होते; व कांही खाली तोंडे घातलेले होते. मोठमोठ्या दादा असलेले. आखूड दादांचे, व तसेच दुसरे चार चार दादांचे होते. त्याचप्रमाणे, हे राजा, दुसरे हजारोजण मोठे भयंकर व गर्जेद्रासारखे पुष्ट दिसत होते. त्यांचे अवयव चांगले बाहेर निघालेले, तेजःपुंज व उत्तम सुशोभित केलेले होते. हे भारता, पिंगट नेत्रांचे, शंकूमारख्या कानांचे व लाल नाकें असलेले लोक तेथे होते. लहान दादांचे, मोठमोठ्या दादांचे, जाड ओठांचे व हिरवट केंस असलेले अमे कित्येक होते. हे भारता, त्यांचे पाय, ओठ, दादा, हात व केंस यांमध्ये अनेक प्रकारें भिन्नता होती. अनेक निरनिराळ्या प्रकारच्या चर्मांनी त्यांनी आपलें अंग आच्छादिलें होतें व त्यांच्या भाषाही नानाप्रकारच्या होत्या. त्या तुकड्यांवरील अधिपतींना देशभाषा उत्तम येत होत्या आणि ते त्या भाषांत एकमेकांशी बोलत होते. अशा प्रकारचे ते महापारिषद तेथें सभेवार ह्छ होतसाते घिरव्या घालीत होते. कांहीच्या माना उंच होत्या, कित्येकांची नखें लांब लांब होती, कोणाचे हात, पाय व मस्तकें लांबट होती. कोणाचे डोळे पिंगट. दुसऱ्यांचे कंठ निळे, आणि, हे भारता, आणिकांचे कानच लांबलांब होते. कांहीजण वृकोदरासारखे दिसत होते, तर कोणी काजळामारखे काळे कुट्ट होते. कांहीचे नेत्र स्वच्छ होते, कांहीच्या माना लाल होत्या, आणि दुसऱ्यांचे नेत्र पिंगट होते. तसेच. हे भारता, पुष्कळांचे अंगावर ठिपके

ठिपके होते; आणि, हे राजा, त्यांचे वर्णही चित्रविचित्र होते:-चवऱ्या धारण करणारांप्रमाणे दिसणाऱ्या, व मोरासारख्या कांतिमान् अशा त्यांच्या रंगबिरंगी व एकरंगीही तांबड्या व पांढऱ्या पंक्ति दिसत होत्या.

राजा, आणखी यांची आयुधें मी सांगत आहे ती श्रवण कर. कोणी हातांत पाश घेऊन सज्ज झाले होते. कोणी आपली गर्दभां-सारखी मुखें पसरली होती. त्याचप्रमाणे घृष्टाक्ष व नीलकंठ यांनी हातांत परिघ घेतले होते. कोणाचे हातांत शतघ्नी होत्या. कोणी चक्रे घेतली होती व कित्येकांचे हातांत मुसळें होती. कित्येकांनी तरवारी व मोगर घेतले होते. आणि, हे भारता, कांहीचे हातांत काठ्याच होत्या. आणि कितीएकांचे हातांत गदा व भुशुंडी असून दुसऱ्यांचे हातांत तोमर होते. याप्रमाणे विविध प्रकारची घोर आयुधें घेतलेले ते महानुभाव, महावेगी, महाबलाढ्य व रण-प्रिय परिषद कुमाराचा अभिषेक पाहून ह्छ झाले; आणि अंगास खुंगुरमाळा बांधलेले ते महाबलाढ्य वीर आनंदाने नाचूं लागले. राजा, हे व दुसरे पुष्कळ महापारिषद त्या महात्म्या यशस्वी कार्तिकेयाजवळ प्राप्त झाले होते. यांशिवाय, दुसरे अनरिक्षांतील अनिलसदृश, शूर व दिव्य राजे देवतांच्या आज्ञेप्रमाणे स्कंदाने सेवक झाले; आणि अशा प्रकारचे हे हजारों, लाखों वीर त्या अभिषिक्त महात्म्या-सभेवती गराडा देऊन उभे राहिले!

## अध्याय शेचाळिसावा.

—:०:—

### तारकाचा वध.

वेशंपायन सांगतात:— राजा, शत्रुगणांचा निःपात करणारे जे मातृगण कुमाराचे अनुचर झाले होते, ते मी तुला सांगतां; श्रवण कर.

वीरा जनमेजया, ज्या कल्याणींनी भागशः हे त्रेलोक्य व्यापिले आहे, त्या यशस्विनी मातांची नावे सांगतो, ऐक. प्रभावती, विशालाक्षी, पालिता, तशीच गोस्तनी, श्रीमती, बहुला, तशीच बहुपुत्रिका, अप्सुजाता, गोपाली, तशीच बृहदंबालिका, जयावती, मालतिका, ध्रुवरत्ना, अभयंकरी, वसुदामा, दामा, विशोका, तशीच नंदिनी, एकचूडा, महाचूडा, चक्रनेमि, उत्तेजनी, जयत्सेना, कमलाक्षी, शोभना, शत्रुंजया, तशीच क्रोधना, शलभी, खरी, माधवी, शुभवक्त्रा, तीर्थसेनि, गीतप्रिया, कल्याणी, रुद्ररोमा, अमिताशना, मेघस्वना, भोगवती, सुभ्रू, कनकावती, अलताक्षी, वीर्यवती, विद्युज्जिह्वा, पद्मावती, सुनक्षत्रा, कंदरा, बहुयोजना, संतानिका, तशीच कमला, महाबला, सुदामा, बहुदामा, सुप्रभा, यशस्विनी, नृत्यप्रिया, शतोल्लखलमेखला, शतघंटा, शतानंदा, भगनंदा, भाविनी, वपुष्मती, चंद्रशीता, भद्रकाली, ऋक्षा, अंबिका. निष्कुटिका, वामा, चत्वरवासिनी, सुमंगला, स्वस्तिमती, बुद्धिकामा, जयप्रिया, धनदा, सुप्रसादा, भवदा, जलेश्वरी, एडी, भेडी, समेडी, तशीच वेतालजननी, कंडूति, कालिका, देवमित्रा, वसुध्री, कोटरा, चित्रसेना, तशीच अचला, कुक्कुटिका, शंगवल्कि, तशीच शकुनिका, कुंडारिका, शंगवल्कि, कुंभिका, शतौदरी, उत्काथिनी, जलेला, महावेगा, कंकणा, मनोजवा, कंटकिनी, प्रघमा, तशीच पतना, केशवंत्री, त्रुटि, वामा, क्रोशना व तडित्प्रभा, मंदोदरी, मुंडी, कोटरा, मेघवाहिनी, सुभगा, लंबिनी, लंबा, ताम्रचूडा, विकशिनी, ऊर्ध्ववेणीधरा, पिंगाक्षी, लोहमेखला, पृथुवस्त्रा, मधुलिका, तशीच मधुकुंभा, पक्षालिका, मत्कुलिका, जरायु, जर्जरानना, ख्याता व दहदहा, तशीच धमधमा, खंडखंडा, पूषणा, मणिकुटिका, अमोघा, तशीच लवपयोधरा, वेणूवीणाधरा,

पिंगाक्षी, लोहमेखला, शशोल्लूकमुखी, कृष्णा, खरंजघा, महाजवा, शिशुमारमुखी, श्वेता, लोहिताक्षी, विभीषणा, जटालिका, कामचरी, दीर्घजिह्वा, बलोत्कटा, कालेहिका, वामनिका, मुकुटा, लोहिताक्षी, महाकाया, हरिपिंडा, एकत्वत्ता, मुकुमुमा, कृष्णकर्णी, क्षुरकर्णी, चतुष्कर्णी, तशीच कर्णप्रावरणा, चतुष्पथनिकेता, गोकर्णी, महिषानना, खरकर्णी, महाकर्णी, भेरीस्वना, महास्वना, शंखकुंभश्रवा, भगदा, महाबला, गणा, सुगणा. तशीच अभीति व कामदा, चतुष्पथरता. भूमितीर्था, अन्यगोचरी, पशुदा, वित्तदा, सुखदा, महायशः, पयोदा, गोमहिषदा, सुविशाला, प्रतिष्ठा, सुप्रतिष्ठा, रोचमाना, सुरोचना, नौकर्णी, मुखकर्णी, विशिरा, तशीच मंथिनी. एकचंद्रा, मेघकर्णी, मेघमाला, विरोचना, ह्या व दुसऱ्या पुष्कळ माता कांति-केयाच्या अनुयायी झाल्या होत्या. हे भरतर्षभा, त्या हजारे अमून त्यांची रूपेही नानाप्रकारची होती. कित्येक दीर्घनखी होत्या, कित्येक दीर्घदंती होत्या; आणि हे भूपते, कित्येकींची तोंडे लांब होती. कित्येक भरतारुण्यांत आलेल्या उत्तम दागदागिने घालून सजलेल्या व सशक्त असून त्यांची आकृतिही मधुर होती. त्या इच्छित रूप धारण करणाऱ्या असून त्या प्रत्येकींचे कांही पृथक् माहात्म्य होते. दुसऱ्या कित्येक अगदी हाडकुळ्या होत्या. कांही पाडऱ्या, कांही मुवर्णगौर, कांही कृष्णमेघाप्रमाणे श्याम. व इतर कांही धुरकट रंगाच्या होत्या; आणि, जनमेजया, कांही अरुणवर्णाच्या होत्या. त्या महाभोगी, दीर्घकेशी व स्वच्छ वस्त्रे परिधान केलेल्या होत्या. किती-एकीच्या वेण्या वर उचललेल्या होत्या, नेत्रपिण्ड होते, आणि मेखला लाबलाव होत्या. कित्येकींची पोटे मोठमोठी होती, कांहीचे कान लांब होते आणि कित्येकजणीचे स्तन लंबाय-



मान होते. कांहीचे डोळे लाल होते, कित्ये-  
कांच्या सर्वत्र शरीराचा रंग तांबडा होता,  
आणि दुसऱ्यांचे नेत्र हिरवट होते ! त्या वर-  
दायिनी, कामचारिणी व नित्यप्रभुदित अशा  
होत्या. याम्या, रौद्रा, सौम्या, महाबलाद्या  
कौबेरी, वारुणी, तशीच माहेंद्री, आग्नेयी, वायवी  
व कौमारी याच्याप्रमाणेच, हे भरतर्षभा,  
ब्राह्मी, वैष्णवी, सोरी आणि महाबला वाराही,  
ह्या सर्वजणीं रूपाने अप्सरांच्या तोडीच्या  
तशाच मनोहारिणी व मनोरम होत्या. त्यांची  
वाणी कोकिलसारखी; तशाच त्या संपत्तीत कुवे-  
राच्या बरोवरीच्या; युद्धांत इंद्राप्रमाणे पराक्रमी  
व तेजाने अद्वितीय होत्या. शत्रूंशी युद्ध चालू  
असतां त्या सदोदीत त्यांस चळचळां कांप-  
वीत ! त्या इच्छित रूप धारण करणाऱ्या असून  
वेगाने वायूच्या बरोवरीच्या होत्या. त्यांचे बल  
व वीर्य अचिंत्य होते; आणि पराक्रमही तसाच  
होता. त्या वृक्षचत्वरार राहाणाऱ्या, चवाठ्यावर  
राहाणाऱ्या, गुहांत व स्मशानांत वास करणाऱ्या  
आणि शैल व पाणवडा यांवर असणाऱ्या अशा  
होत्या. त्या नानाभूषणे ल्यायल्या होत्या,  
त्यांनी नानाप्रकारचीं फुले व वस्त्रे धारण केली  
होती, विविध प्रकारचे चित्रविचित्र पोषाक  
त्यांनी घातले होते, आणि त्यांच्या भाषाही  
नानाप्रकारच्या होत्या. हे नृपश्रेष्ठा, अशा  
प्रकारचे हे व शत्रूंम भयभीत करणारे पुष्कळ  
दुमरेही समूह त्रिदशेंद्राच्या अनुमतीने त्या  
महात्म्या कुमाराच्या मागून चाखले होते.

हे राजशार्दूल, मग भगवान् पाकशासनाने  
मुरद्वेष्ट्यांच्या विनाशार्थ गुहास शक्ति व अस्त्र  
दिले; एक मोठ्या आवाजाची, पांढरी स्वच्छ  
व चमकणारी अशी प्रचंड घंटा दिली; आणि  
हे भरतर्षभा, अरुणादित्य रंगाची एक पताकाही  
दिली. पशुपतीने त्याला एक सर्व भूतांची प्रचंड  
सेना दिली. ती उग्र. नानाआयुधे वापरणारी,

तप, वीर्य व बल यांनी युक्त व अजिंक्य  
असून तिजबरोबर शांकरगणाही होते. त्या  
सेनेचे नांव ' धनंजया ' असे होते. तीमध्ये  
रुद्रासारखे बलाढ्य असे तीन अयुत योद्धे  
होते ! आणि रणांतून मागे फिरणे हे त्यांस  
मुळी माहीतच नव्हते ! बलवर्धक अशी वैज-  
यंती माला विष्णूने त्यास दिली. उमेने सूर्या-  
मारखी उज्ज्वल अशी दोन स्वच्छ वस्त्रे दिली.  
ज्यांतून अमृताचा उद्भव झाला आहे, असा  
एक उत्तम दिव्य कमंडलु गोमेने त्यास अर्पण  
केला; आणि बृहस्पतीने प्रीतीने त्या कुमाराला  
एक दंड दिला. गरुडाने आपला लाडका पुत्र  
जो चित्रविचित्र पिच्छांचा मोर तो त्याच्या  
मेवेस वाहिला; अरुणाने ताम्रचूड व चरणा-  
युध दिले; जलराज वरुणाने एक बलवीर्य-  
ममन्वित नाग त्यास अर्पण केला; आणि प्रभु  
ब्रह्मदेवाने त्या ब्राह्मणप्रियास कृष्णाजिन दिले  
व त्या लोकभावनाने त्यास रणांगणांत विजय  
अर्पण केला.

याप्रमाणे, राजा, देवगणांचे सैन्यापत्य  
मिळाल्यावर तो स्कंद म्हणजे दुसरा प्रदीप्त व  
ज्वालामाली अश्विनी की काय असा शोभू लागला.  
नंतर पारिषद व मातृगण यांसह तो स्कंद  
देवांस हर्षवीत देत्यांचा नाश करण्यासाठी  
निघाला. जीत घंटा वाजत आहेत, ध्वज उभा-  
रले आहेत. आणि भेरी. शंख व मुरज यांचे  
शब्द चाखले आहेत, अशी ती आयुधे व  
पताका यांनी युक्त असलेली प्रचंड व भयंकर  
सेना—नक्षत्रांनी सुशोभित दिसणाऱ्या शरदतू-  
तल्या आकाशाप्रमाणे शोभत होती. नंतर ते  
देवसमुदाय व विविध भूतगण एकसारखे भेरी,  
पुष्कळसे शंख, पटह, झांज, क्रकच, गोविषा-  
णिक, आडंबर, गोमुख आणि मोठ्या शब्दांचे  
डिंडिम वाजवू लागले, तसेच ते इंद्रासुद्धां सर्व  
देव त्या कुमाराम तुष्ट करू लागले, देव व

गंधर्व गायन करूं लागले; आणि अप्सरांच्या ताप्यांनीं नृत्य आरंभिले. नंतर त्या संतुष्ट झालेल्या महासेनानें देवांस वरप्रदान केलें कीं, “जे तुमचा वध करूं पहात आहेत, त्या तुमच्या शत्रूंचा मी रणांत वध करीन !”

जनमेजया, त्या विबुधश्रेष्ठापासून असा वर मिळतांच देवांस हर्ष झाला; आणि ‘आतां शत्रु निघन पावलेच !’ असें ते महात्मे मानूं लागले. त्या महात्म्यानें तो वर दिला, तेव्हां सर्व भूतसंवांनीं हर्षनें ज्या आरोळ्या ठोकिल्या त्यांच्या ध्वनीनें तिन्ही लोक दुमदुमून गेले. नंतर, राजा, ज्याच्याभोंवती महान् सैन्याचा वेढा पडला आहे, असा तो महासेन देवांच्या रक्षणासाठी व युद्धांत दैत्यांचा वध करण्यासाठी बाहेर पडला. हे जनाधिपा, व्यवसाय, जय, धर्म, सिद्धि, लक्ष्मी, धृति व स्मृति ह्या त्या महासेनाच्या सैन्याचे अग्रभागी चालल्या होत्या. जिनें हातांत शूल, मोगर व अलात-चक्रे घेतली आहेत, अंगांत चित्रविचित्र आभरणें व कवचें चढविली आहेत, गदा, मुमळें, बाण, शक्ति व तोमर हीं हातांत घेतलीं आहेत, आणि जी मदनमत्त सिंहाप्रमाणें गर्जना करीत आहे, अशा त्या भयंकर सेनेसहवर्तमान तो गुह स्वतः गर्जना ठोकून बाहेर पडला. त्यास पाहातांच सर्व दैत्य, राक्षस व दानव भयभीत होऊन सर्व दिशांस पळूं लागले; आणि विविध आयुधें उगारून देव त्यांचा पाठलाग करूं लागले. मग दैत्यांस पाहातांच संतप्त झालेल्या त्या तेजस्वी व बलाढ्य अशा भगवान् स्कंदानें पुनःपुनः भयंकर शक्त्यस्त्राचा प्रयोग चालविला; आणि हविर्द्रव्यानें समिद्ध झालेल्या अग्नीप्रमाणें आपलें तेज प्रकट केलें. याप्रमाणें अमिततेजस्वी स्कंद एकसारखा त्या शक्त्यस्त्राचा प्रयोग करूं लागला, तेव्हां, हे महाराजा, प्रज्वलित उल्का भूमीवर पडूं लागल्या,

त्यांचे भयंकर शब्द होऊं लागले, आणि जमिनीवर प्रलयकालच्याप्रमाणें अत्यंत भयंकर धक्रे बसूं लागले. हे भरतर्षभा, त्या अग्निपुत्रानें तेव्हां एकच शक्ति फेंकली, परंतु तिजपासून कोट्यवधि शक्ति उत्पन्न झाल्या ! मग त्या संतुष्ट झालेल्या भगवान् स्कंद प्रभूनें महाबलाढ्य व महापराक्रमी जो दैत्येंद्र तारक, त्याचा, बलाढ्य व वीर्यशाली अशा दहा अयुत दैत्यांसहवर्तमान वध केला ! महिषासुरासभोंवतीं आठ पक्षे दैत्यांचा गराडा होता, तथापि त्याचाही त्या सर्वासह युद्धांत निःपात उडविला ! एक हजार अयुत दैत्यांनी युक्त असलेल्या त्रिपादास ठार केलें ! आणि दहा निर्वर्ष दैत्यांनी परिवारित अशा हृदोदरास—विविध आयुधें हातांत घेतलेल्या त्याच्या अनुचरांसह—परलोक दाखविला. राजा, याप्रमाणें शत्रूंचा वध होऊं लागला, तेव्हां कुमाराचे अनुचर दशदिशा दणाणवीत प्रचंड गर्जना करूं लागले, नाचूं लागले, वलाना करूं लागले, आणि हर्षभरित होतसाते मोठ्यानें हसूं लागले. राजेंद्रा, मग त्या शक्त्यस्त्राच्या तेजानें सर्व त्रैलोक्य त्रस्त झालें ! दुसरे हजारों दैत्य स्कंदच्या नुसत्या शब्दानेंच दग्ध झाले ! कित्येक सुरद्वेषे पताकेच्या वाऱ्यानें दूर उडविले गेले व ठार झाले ! कित्येक घंटा-नादानें त्रस्त होऊन भूतलावर पडले ! आणि कित्येक शस्त्रांनी छिन्नभिन्न होऊन गतप्राण होऊन पडले ! याप्रमाणें त्या बलवान् वीर कार्तिकेयानें अनेक आततायी देवशत्रूसं समरांगणांत ठार केलें.

राजा जनमेजया, बलीचा पुत्र बाण म्हणून एक महाबलाढ्य दैत्य होता. तो कौच पर्वताच्या आश्रयानें देवगणांस पीडा देत असे. त्या देवशत्रूवर मग उदारधी कार्तिकेयानें चाल केली असतां तो त्याच्या भीतीनें कौच पर्वतास शरण जाऊन त्याच्या पोटांत दडून बसला.

तेव्हां मग भगवान् कार्तिकेयानें तो कौंच पक्ष्यांच्या किलबिलाटांनें भरलेला कौंच पर्वतच अग्निदत्त शक्तीच्या योगानें भस्म केला. त्या वेळीं त्या पर्वतावरील शालवृक्षांच्या मोडून पडलेल्या फांद्या त्या सर्व पर्वतभर विखुरल्या; त्यावरील वानर व हत्ती त्रस्त झाले; पक्षी भयभीत होऊन दूर उडून गेले; भुजंग विळातून बाहेर पडले; माकडे व अम्बले यांचे थवेचे थवे चीं चीं करीत पळत सुटल्यामुळें तो पर्वत दणाणून गेला; आणि कुरंगांच्या शब्दांनें सर्व वन दुमदुमून गेलें; शरभ बाहेर पडूं लागले आणि सिंहही एकाएकी पळत सुटले! राजा, अशी सर्व प्रकारें देना उडाली असतांही तो पर्वत शोभतच होता. त्याच्या शिखरांवर राहाणारे विद्याधर दूर उडून गेले, आणि किन्नरही त्या शक्तिपाताच्या शब्दांनें दचकून अतिशय उद्विग्न झाले. मग जेव्हां तो पर्वत पडूं लागला, तेव्हां त्यांतून विलक्षण प्रकारचीं आभरणें व माळा घातलेले शेंकडों हजारों दैत्य बाहेर पडले; आणि कुमाराच्या अनुचरांनी त्या सर्वांचा रणांत पराभव करून त्यांस ठार मारिलें. आणि द्रैवेंद्रानें वृत्रास मारिलें तद्वत् स्वतः त्या क्रुद्ध भगवान् स्कंदानें तो दैत्येंद्राचा पुत्र पाठच्या भावांसहवर्तमान त्वरित ठार केला! अशा प्रकारें, राजा, परवीरांतक स्कंदानें शक्तीच्या योगानें मोठ्या जोरांनें त्या कौंच पर्वताचे अनेक तुकडे उडविले. त्यानें रणांत फेंकलेली शक्ति पुनःपुनः त्याचे हातांत येत असे,—असा त्याचा प्रभाव असल्यामुळें व तो तेज, शौर्य, यश व श्री यांनी इतरापेक्षां द्विगुणित संपन्न असल्यामुळें त्यानें कौंच पर्वताच्या ठिकच्या उडविल्या आणि शेंकडों दैत्य मारिले!

याप्रमाणें त्या भगवान् स्कंदानें देवशत्रूंस ठार केउं, तेव्हां देव त्याचें भजन करूं लागले व त्यांस परम हर्ष झाला. नंतर, हे भरत-

कुलोत्पन्ना राजा, दुंदुभि व शंख वाजूं लागले, शेंकडों हजारों देवस्त्रिया त्या योगिराजावर सर्वोत्तम अशी पुष्पवृष्टि करूं लागल्या, सुगंधानें भरलेला पुण्यवायु वाहूं लागला, आणि गंधर्व व यजन करणारे महर्षि त्याची स्तुति करूं लागले! कोणी त्याला 'पितामहाचा पुत्र' 'ब्रह्मयोनि' 'सर्वांचा अग्रज' व 'सनत्कुमार' असें म्हणूं लागले, कोणी त्यास महादेवाचा पुत्र, कोणी अग्नीचा, कोणी उमेचा, कोणी कृत्तिकांचा व कोणी गंगेचा पुत्र म्हणून म्हणूं लागले. इतकेंच नव्हे, तर ते त्या महाबलाद्वय योगेश्वरास एक, दोन, चारच काय—पण शेंकडों हजारों नांवांनी संबोधूं लागले. राजा, याप्रमाणें मी तुला स्कंदाभिषेकाची कथा सांगितली. आतां या सरस्वतीच्या श्रेष्ठ तीर्थाचें पावित्र्य कसें आहे तें श्रवण कर. हे महाराजा, कुमारानें देवशत्रूंचा निःपात केला असतां, दुसरा स्वर्गच की काय असें हें श्रेष्ठ तीर्थ उत्पन्न झालें. या ठिकाणीं असतांना प्रभु कार्तिकेयानें पृथक् पृथक् ऐश्वर्यें वांटून दिली, आणि देवांस त्रैलोक्य अर्पण केलें. असो; याप्रमाणें, हे महाराजा, त्या दैत्यकुलांतक भगवान् देवसेनापतीला या तीर्थावर देवांनीं अभिषेक केला. हे भरतर्षभा, या तीर्थाचें नांव तेजस असें असून येथेंच पूर्वीं मुरगणांनी वरुणाला जलपतित्वाचा अभिषेक केला!

या श्रेष्ठ तीर्थांत बलरामानें स्नान केलें, स्कंदाचें पूजन केलें, आणि ब्राह्मणांस सोने, वस्त्रें व अलंकार अर्पण केले. मग तो परवीरांतक माधव एक रात्र तेथें राहिला, आणि त्या तीर्थराजाचें पूजन व स्नान घडल्यामुळें; त्या माधवोत्तमास मोठा हर्ष व समाधान झालें, राजा, तूं विचारिल्याप्रमाणें, भगवान् स्कंदाला एकत्र जमलेल्या देवांनी कसा अभिषेक केला, तो सर्व वृत्तांत मी कथन केला आहे.

## अध्याय सत्तेचाळिसावा.

—:०:—

## सारस्वतोपाख्यान.

जनमेजय विचारतो:—ब्रह्मन्, आपणापासून मी हा जो कुमाराचा यथाविधि अभिषेक विस्तारपूर्वक ऐकिल्या, तो अत्यंत अद्भुत खरा. हे तपोधना, याच्या श्रवणानें मी पुनीत झालें असें समजतों. माझे प्रत्येक रोम हर्षपूर्ण व मन प्रसन्न झालें आहे. कुमाराचा अभिषेक व तसाच देव्यांचा वध ऐकून मला समाधान वाटलें. तथापि त्यावरोबरच आणखी एक उत्सुकता उत्पन्न झाली आहे. तेव्हां, हे महाप्राज्ञा, येथें पूर्वी देवांनी जलराज वरुणाला कशा प्रकारें अभिषेक केला, तें मला कथन करा. हे सत्तमा, आपण सांगण्याविषयी कुशल आहां.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, पूर्वकल्पांतील हा आश्चर्यकारक कथाभाग यथातथ्य श्रवण कर. राजा, पहिल्यानें कृतयुग नीटपणें चाललें असतांना, सर्व देवता वरुणासन्निध जमून त्यास ध्वणाल्या, “ज्याप्रमाणें सुरपति इंद्र आमचें भयापासून सर्वदा रक्षण करितो, त्याप्रमाणें तूं सर्व नद्यांचा भयापासून रक्षण करणारा पति हो. हे देवा, तुंजें गहाणें नित्य मकरालयसागरांत असवें. हा नदीपति समुद्र तुझ्या आज्ञेत रहात जईल. सोमाबरोबरच तुलाही क्षयवृद्धि होतील.” यावर “ठीक आहे. असें होऊं द्या.” असें वरुण त्या देवांस म्हणाला. तेव्हां मग ते सर्व देव त्या सागरनिवासी वरुणामर्भोवती जमा झाले; आणि विधिप्रयुक्त कर्माच्या योगानें त्यांनी त्याम जलाचा राजा केले. नंतर जलचरांचा अधिपति म्हणून वरुणास अभिषेक करून व त्याची पूजा करून देव स्वस्थानीं गेले; आणि मग तो देवगणाभिषिक्त महायशस्वी वरुण—देवांचें जसें

शतक्रतु तमें—नद्या, मागर, नद व सरोवरे यांचें यथाविधि पालन करूं लागला.

राजा, महाप्राज्ञ बलरामानें या तीर्थांतही स्नान करून नानाप्रकारचें द्रव्य दान केलें; आणि नंतर तो प्रलंबारि येथून अग्नितीर्थास गेला. या ठिकाणी शमीगर्भांत शिरलेला अग्नि आंतल्या आंत नाहीसा होऊन दिसेनासा झाला, आणि सर्व लोकांचा विनाश होण्याची वेळ येऊन ठेपली. तेव्हां सर्व देव हे सर्वलोकपितामह जो ब्रह्मदेव त्याकडे गेले आणि म्हणाले, “भगवान्, अग्नि नाहीसा झाला आणि कारण तर कांहींच दिसत नाही. महाराज, सांप्रत सर्व भूतांचा क्षय होण्याचा समय प्राप्त झाला आहे. तर, हे प्रभो, कसेंही करून अग्नीचा शोध लावा.” राजा, जेथें हा प्रकार घडला तेच हें अग्नितीर्थ.

जनमेजय विचारितो:—लोकांची स्थिति ज्यावर अवलंबून आहे. असा तो भगवान् अग्नि कां नष्ट झाला, आणि पुढें देवांस तो कसा सांपडला, तें मला तत्त्वतः स्पष्ट करून सांगा.

वैशंपायन सांगतात:—प्रतापी अग्नि भूगृच्या शापापासून अत्यंत भय पावून शमीगर्भांत शिरला आणि नाहीसा झाला. नंतर अग्नि नष्ट झाला असतां इंद्रामुद्धां सर्व देव अत्यंत दुःखित होऊन त्याचा शोध करूं लागले; शोधतां शोधतां ते या अग्नितीर्थावर आले; आणि तेथें त्यांस अग्नि शमीगर्भांत यथाविधि रहात असल्याचें दिसून आलें. हे नरव्याघ्रा, बृहस्पति व इंद्र यांसह ते सर्व देव अग्नि सांडपतांच संतुष्ट झाले आणि आल्या वाटेनें परत गेले. नंतर, हे महाभागा, तो अग्नि पूर्ववत् प्रकट झाला; पण भूगृच्या शापामुळे—तो ब्रह्मवादी बोलल्याप्रमाणें तो सर्वभक्षक

१ हे अग्निपाशाचे वृत्त आदिपर्व अध्याय ५, ६, ७ यांत सविस्तर दिले आहे ते पहावे.

झाला. जनमेजय राजा, येथें स्नान वगेरे करून बुद्धिमान् बलराम हा, सर्व लोकांचा पितामह भगवान् ब्रह्मदेव यानें पूर्वी जेथें उत्पत्ति केली त्या ब्रह्मयोगिनीतीर्थास गेला. तेथेंच पूर्वी देवांसहवर्तमान प्रभु ब्रह्मदेवानें स्नान करून देवतांचीं तीर्थे यथाविधि निर्माण केलीं. या ठिकाणीं स्नान व पुष्कळ द्रव्य दान करून बलराम मग कौबेरतीर्थास गेला. त्या ठिकाणीं, राजा, प्रभु कुबेरानें मोठी तपश्चर्या केली आणि धनाधिपतित्व मिळविलें. राजा, तो तेथेंच असतांना त्याजपाशीं द्रव्य व निधि प्राप्त झाले. हे नरश्रेष्ठा, हलधर बलरामानें त्या तीर्थावर जाऊन व विधिपूर्वक स्नान करून ब्राह्मणांस द्रव्य वांटलें; आणि महाधोर यक्षपति कुबेरानें पूर्वी ज्या ठिकाणीं मोठी तपश्चर्या करून पुष्कळ वर, धनाधिपतित्व, महातेजस्वी रुद्राशीं सख्य, देवपणा, लोकपालाची जागा आणि नलकूबर नामक पुत्र मिळविला, तें कौबेर वनांतील ठिकाण बलरामानें पाहिलें. हे महाबाहो, ज्या ठिकाणीं धनाधिपतीनें वरादिकांची प्राप्ति करून घेतली, त्याच ठिकाणीं देवगणांनीं जमून त्याला अभिषेक केला; आणि हंस जोडलेलें व मनाप्रमाणें वेगवान् असें तें वाहन म्हणजे पुष्पक नामक दिव्य विमान आणि देवांचें ऐश्वर्य त्यास दिलें. राजा, या ठिकाणीं स्नान, दान वगेरे करून तो श्वेतानुलेपन बलराम त्वरेनें 'बदरपाचन' नामक शुभ तीर्थास गेला. राजा, या ठिकाणीं नांदुरकीच्या झाडांची बनें असून हें फलपुष्पांनीं सदादीत भरलेलें असतें आणि येथें सर्व प्रकारचे प्राणी राहातात.

### अध्याय अठ्ठेचाळिसावा.

—:—

#### बदरपाचनतीर्थवर्णन.

वेशंपायन सांगतात:—नंतर, राजा,

तपस्वी व सिद्ध यांनीं सेवित अशा बदरपाचन नामक श्रेष्ठ तीर्थास राम गेला. राजा, सौंदर्यानें पृथ्वीत अप्रतिम असलेल्या श्रुतावती नामक भरद्वाजांच्या मुलीनें व्रत धारण करून, ब्रह्मचारिणी कुमारी राहून व अनेक नियम पाळून त्या ठिकाणीं अतिशय उग्र तपश्चर्या केली. 'देवराज इंद्रच पति मिळाला पाहिजे' असा निश्चय करून तत्प्राप्त्यर्थ त्या भामिनीनें ही तपश्चर्या केली. जनमेजया, स्त्रियांना आचरण्यास केवळ दुरापास्त असे भयंकर नियम पाळीत असतां तिची पुष्कळ वर्षे निघून गेली. शेवटी, राजा, तिची ती निर्धारी वृत्ति, तपश्चर्या व परमभक्ति यांच्या योगानें भगवान् इंद्र संतुष्ट झाला; आणि तो देवांचा राजा महात्म्या वसिष्ठ मुनीचें रूप घेऊन तिच्या आश्रमास प्राप्त झाला. हे भारता, तप करणारांत श्रेष्ठ, उग्र तपश्चर्या करणारे, आणि मुनिदृष्ट आचार पाळणारे ते वसिष्ठ मुनि पाहातांच तिनें त्यांची पूजा केली; आणि ती वर्तननियम जाणणारी मधुरभाषिणी कल्याणी त्यांस म्हणाली, "हे भगवन्, हे मुनिशार्दूल, आपली काय आज्ञा आहे? महाराज, एक या हाताशिवाय मी आज आपणांस आपल्या शक्तीप्रमाणें सर्व कांहीं अर्पण करीन. हे सुव्रता, माझी इंद्रावर भक्ति बसली असल्यामुळे मी आपला हात मात्र तुम्हांला कदापि देणार नाहीं! त्रिभुवनाचा अधिपति जो इंद्र त्यास व्रतें, नियम व तपश्चर्या यांच्या योगें मला संतुष्ट करावयाचें आहे!"

राजा, असें ती बोलतांच भगवान् इंद्रानें तिजकडे निरखून पाहिलें; आणि तिचा निर्धार जाणून तिला आश्वासन देत तो म्हणाला, "हे सुव्रते, तूं उग्र तपश्चर्या करीत आहेस, हें मी जाणतो. हे कल्याणि, ज्या उद्देशानें तूं हें आरंभिलें आहेस, तो तुझा

मनोदय पूर्ण होईल; आणि हे वरानने, तुला पाहिजे आहे तसें सर्व घडून येईल. अगे, तप-  
श्चर्येनें सर्व कांही प्राप्त होते; आणि पुनः, जसें  
पाहिजे तसें होते. हे शुभानने, देवांची जी  
दिव्य स्थाने आहेत, ती तपांनेच प्राप्त होतात;  
व महत्सुख हें तपोमूलकच आहे, तें तपावांचून  
मिळत नाही, हें मनांत जाणून मनुष्य घोर  
तपश्चर्या करून व देहत्याग करून देवत्व  
पावतात. अस्तु, हे कल्याणि, माझे एक  
लहानसें काम आहे तें ऐक. हे सुभगे  
शुभव्रते, मजपाशीं हीं पांच बोरें आहेत,  
एवढी शिजवून दे. ”

जनमेजया, असें म्हणून तो भगवान्  
बलसूदन तिचा निरोप घेऊन थोड्या अंतरावर  
गेला आणि जप करीत बसला. हे मानदा,  
इंद्र तेथें बसल्यामुळें, या कन्येच्या आश्रमा-  
पासून जवळच तें त्याचें बसण्याचें ठिकाण  
‘इंद्रतीर्थ’ म्हणून त्रैलोक्यांत विख्यात झालें.  
भरद्वाजकन्येच्या सत्त्वाची परीक्षा पहावी,  
अशी इंद्राला जिज्ञासा असल्यामुळें त्यानें ती  
बोरें शिजूच नयेत असें केलें ! मग राजा,  
जिनें मोठी तपश्चर्या केली आहे, वाणीचा  
नियग्रह केला आहे, श्रम जिकिले आहेत,  
आणि जी उद्दिष्ट कार्यांत तत्पर असे. अशा  
त्या पावित्र्यानें शोभणाऱ्या श्रुतावतीनें ती  
बोरें विस्तवावर ठेविली आणि ती महाव्रता  
ती शिजवूं लागली. हे राजशार्दूला पुरुषर्षभा,  
शिजवितां शिजवितां तिचा किती तरी वेळ  
गेला, तथापि ती मुळीच शिजली नाहीत !  
शेवटीं दिवसही मावळला, तिच्या आश्रमांत  
असलेली सर्व लांकडे जळून संपलीं, आणि  
चुलींत लांकडाचा तुकडाही राहिला नाही. शेवटीं  
आतां लांकडावांचून अग्नि विव्नेल, असें पाहून  
तिनें आपलें शरीर जाळून घेतलें, हे अनघा,  
त्या सुंदरीनें आपले पाय चुलींत घातले; आणि

ते जसजसे जळूं लागले तसतशी ती ते  
अधिक अधिक आंत सारूं लागली ! पाय  
जळत असतांही त्या निष्कलंकेनें त्यांची पर्वा  
केली नाही ! तिला त्याबद्दल कांहीच वाटलें  
नाही ! अशा प्रकारें महर्षीचें प्रिय करण्याच्या  
बुद्धीनें ती दुष्कर कर्म करीत असतां तिच्या  
मनाला वाईट वाटलें नाही, किंवा तोंडावरही  
दुःखाचा कांहीं विकार झाला नाही ! शरीर  
अग्नीनें पेटवून जणू पाण्यांतच उभी असल्या-  
प्रमाणें ती हर्षभरित होती ! हे भारता, तिची  
निराशा तर झाली नाहीच, पण “ काय  
पाहिजे तें होवो, बोरें शिजवावयाचींच ! ”

असा तिच्या मनाचा निर्धार उत्तरोत्तर वाढ-  
तच गेला ! एक “ बोरें शिजवून दे ” हें  
ऋषीचें वाक्य मनांत घट्ट धरून ती शुभांगी  
सारखी बोरें शिजवीत बसली; परंतु, राजा, तीं  
शिजलीच नाहीत ! भगवान् अग्नीनें तिचे  
दोन्ही पाय जाळून खाक केले, परंतु तिच्या  
मनाला यात्किंचितही दुःख झालें नाही ! नंतर  
तिचें हें कृत्य पाहून त्रिभुवनेश्वर इंद्र संतुष्ट  
झाला; आणि त्या कन्येला आपलें खरें रूप  
दाखवून तो त्या अत्यंत दृढतेनें व्रताचरण कर-  
णाऱ्या कन्येकडे म्हणाला, “ हे शुभे, तुझ्या  
भक्तीनें, तपांनें व नियमाचरणानें मी संतुष्ट झालों  
आहें. तेव्हां हे शुभांगि, तुझा जो इच्छित  
मनोग्र्य आहे तो परिपूर्ण होईल. तूं हा देह  
त्यागून स्वर्गांत मजममागमें वास्तव्य करशील.  
सर्व पातकें भस्म करणारें, त्रैलोक्यांत प्रख्यात  
व ब्रह्मर्षींनीं सेविलेलें असें हें तुझें बदरपाचन  
नामक उत्कृष्ट तीर्थ यावच्छंद्रदिवाकरी जगांत  
कायम राहील. हे महाभगे, हे निष्पापे सुंदरि,  
याच तीर्थवराचे ठिकाणी अरुंधतीचा त्याग  
करून सप्तर्षि हिमालयावर गेले. ते महापुण्य-  
शील महाभाग येथें राहात असतां उदरनिर्वाहा-  
साठीं फलें आणण्यास जात असत. याप्रमाणें

ते वृत्त्यर्थी हिमालयाचे अरण्यांत गेले असतां बारा वर्षे अवर्षण पडलें. तेव्हां त्या तपस्यांनी त्या वनांतच आश्रम करून तेथें वसति केली; आणि त्याच वेळी इकडे अरुंधतीही ह्या तीर्थावर नित्य तपश्चर्येत मग्न राहिली. पुढें अरुंधती कडक नियम पाळीत आहे असें पाहून वरदायक त्रिनेत्रधारी महादेव सुप्रीत झाला; आणि मग ब्राह्मणाचा वेप धारण करून तिच्या जवळ येऊन म्हणाला, “ हे शुभागि, मला भिक्षा घाल. ” त्या चारुमुंदरीने त्या ब्राह्मणास प्रत्युत्तर दिलें, “ हे विप्रा, अन्नाचा सांठा तर सर्व संपून गेला आहे. तेव्हां ही बोरें खा. ” मग महादेव म्हणाला, “ ठीक आहे; हे मुत्रने, हींच शिजव. ” तें ऐकून ब्राह्मणाचें प्रिय करण्याच्या हेतूने त्या यशस्विनीने ती बोरें प्रदीप्त अग्नीवर ठेवून शिजत ठेविली; आणि ती शिजत तोंपर्यंत तिने त्या ब्राह्मणापासून मनोरम व पुण्यकारक अशा दिव्य कथा श्रवण केल्या. याप्रमाणें ती बोरें शिजवीत व पवित्र कथा ऐकत निराहार बसली असतां ती बारा वर्षांची घोर अनावृष्टि निवून गेली. बाग वर्षपर्यंत ती तशीच बसली होती, परंतु हा एवढा अतिदारुण कालही तिच्या केवळ एका दिवसासारखाच वाटला ! नंतर ते मुनि पर्वतांतून फळें घेऊन तेथें आले, तेव्हां भगवान् महादेव अरुंधतीवर प्रसन्न होऊन तीस म्हणाले, “ हे धर्मज्ञे, पूर्वीच्या तुझ्या नियमाप्रमाणें या ऋषीस सामोरी हो. हे धर्मज्ञे, मी तुझ्या तपांने व नियमांने संतुष्ट झालों आहे ! ”

“ मग शंकरानें आपलें स्वरूप प्रकट केलें आणि त्या ऋषीस अरुंधतीचें सर्व चरित्र सांगून तो म्हणाला, “ विप्रहो, तुम्ही हिमालयावर जें तप संपादन केलें, तें अरुंधतीच्या तपाच्या मुळीच बरोबरीचें नाही, असें माझे मत आहे. ह्या तपस्विनीनें येथें कांहीएक न खातां ही

बोरें शिजविण्यांत संपूर्ण बारा वर्षे घालवून अत्यंत दुश्चर असें तप केलें आहे. ” मग भगवान् पुनः अरुंधतीला म्हणाला, “ हे कल्याणि, तुझ्या हृदयांत जो मनोरथ असेल तो वर माग. ” तेव्हां ते सप्तर्षि भोंवती बमले असतांना ती वृयुताम्राक्षी देवास म्हणाली, ‘ भगवन्, जर आपण मजवर संतुष्ट झालां आहां, तर हें एक अद्भुत तीर्थ व्हावें. याचें नांव ‘ बदरपाचन ’ असें असावें. हें देव, ऋषि व सिद्ध यांस प्रिय व्हावें; आणि तसेंच, हे देवदेवेशा, जो कोणी शुद्धपणें येथें त्रिरात्रपर्यंत राहिल, त्याला बारा वर्षे उपोषण केल्याचें पुण्य प्राप्त व्हावें. ” तिचें हें भाषण ऐकून, ‘ तथास्तु ’ असें महादेवानें त्या तपस्विनीस प्रत्युत्तर दिलें. नंतर सप्तर्षींनी त्याची स्तुति केली आणि मग तो देव आपल्या लोकी निवून गेला. हे कल्याणि, एवढ्या तपश्चर्येनेही अरुंधती विलकूल थकलेली, तोंड उतरलेली किंवा तहानभुक्तेने व्याकूल झालेली दिसत नाही, असें पाहून त्या ऋषीस मोठें आश्चर्य वाटलें. अमो; याप्रमाणें त्या अतिपवित्र अरुंधतीनें परम सिद्धि संपादिली होती. हे महाभागे पतिव्रते, ज्याप्रमाणें तूं मजसाठी आचरण केलेंस, तसेंच त्या अरुंधतीनें केलें. परंतु, हे कल्याणि, तूं ह्या व्रतांत तिजपेक्षांही ताण केलीस. त्यापेक्षां, हे कल्याणि, मीही आज तुझ्या नियमानें अतिमंतुष्ट होऊन तुला विशेष वर देतो. हे कल्याणि, अरुंधतीला त्या महात्म्यानें दिलेल्या वराचा प्रभाव आणि तुझें तेज यांच्या योगानें मी या तीर्थीस आपणवी एक वर यथाविधि देतो तो असा की, जो मनुष्य केवळ एक रात्र येथें पवित्रपणें राहिल, व स्नान करील, त्याला देहत्यागानंतर अत्यंत दुर्लभ असे लोक मिळतील ! ”

राजा, तो भगवान् प्रतापी सहस्राक्ष त्या पुण्यशील श्रुतावतीला असें सांगून पुनः स्वर्गास

गेला. हे भरतश्रेष्ठा राजा, वज्रधारी इंद्र गेल्या-  
नंतर तेथें उत्तम सुवासिक अशा दिव्य पुष्पांची  
वृष्टि झाली; देवांच्या दुंदुभी मोठ्याने वाजूं  
लागल्या; आणि पुण्यगंध वहाणारा पवित्र  
वाराही सुरू झाला. मग, राजा, ती कल्याणी  
देहत्याग करून इंद्राची भाय्या झाली. हे  
भारता, उग्र तपश्चर्येनें तिनें इंद्र पति जोडला  
आणि ती त्यासमागमें रममाण झाली.

जनमेजय विचारितोः—त्या श्रुतावतीची  
माता कोण, व ती शोभना कोठें वाढली हें  
मी ऐकूं इच्छितों. हे विप्रा, याविषयी मला मोठें  
कौतुक वाटत आहे.

वैशंपायन सांगतातः—विशालाक्षी घृताची  
नामक अप्सरा येतांना पाहून महाभाग भर-  
द्वाज विप्रर्षाचें रेत स्वलन पावले. तें त्या  
तपोनिष्ठानें हातांत धरले; परंतु तें खालीं पर्ण-  
पुटांत पडलें व तेथें ती मुलगी उत्पन्न झाली.  
तपोधन भरद्वाजांनी तिचे जातकर्मादि सर्व  
संस्कार केले आणि देवर्षिगणांच्या सभेंत त्या  
धर्मात्म्यानें तिचें नामकर्म करून श्रुतावती असें  
नांव ठेविलें. मग तिला आपल्या आश्रमांत  
ठेवून तो हिमालयाचे अरण्यांत गेला. अस्तु;  
या तीर्थावरही स्नान व ब्राह्मणांस द्रव्यदान  
करून तो अतिपवित्र अंतःकरणाचा महानुभाव  
वृष्णिवीर पुढें शक्रतीर्थास गेला.

## अध्याय एकुणपन्नासावा.

—३ः—

### इंद्रतीर्थादिवर्णन.

वैशंपायन सांगतातः—राजा, मग इंद्र-  
तीर्थास गेल्यावर तो यदूंचा अधिपति बलराम तेथें  
यथाविधि स्नान करून ब्राह्मणांस द्रव्य व रत्नें  
देता झाला. त्याच तीर्थाचे ठिकाणी अमरराज  
इंद्रानें शंभर अश्वमेध केले आणि बृहस्पतीस  
विपुल द्रव्य समर्पण केलें. त्यानें तेथें सर्व यज्ञ

वेदपारंगतांनीं सांगितलेल्या पद्धतीस धरून, पूर्ण  
ममुद्ध व विविध दक्षिणांनी युक्त असे निर्विघ्न-  
पूर्ण पार पाडिले. हे भरतश्रेष्ठा, ते शंभर क्रतु  
करून त्या महातेजस्व्यानें त्यांची विधिपूर्वक  
सांगता केली; यामुळे त्याला शतक्रतु असें  
नांव प्राप्त झालें. तें पवित्र, मंगल व सनातन  
तीर्थ त्याच्या नांवामुळे इंद्रतीर्थ याच नांवानें  
प्रख्यात झालें. हें सर्व पापांपासून मुक्त करणारें  
आहे. राजा, मुसलायुध बलरामानें येथेही  
यथोक्त स्नान केलें, ब्राह्मणांस उत्तम वस्त्रें व  
भोजन घालून संतुष्ट केलें, आणि मग तेथून  
तो सर्व तीर्थांत वरिष्ठ असें जें शुभकारक राम-  
तीर्थ त्याकडे निघून गेला. या ठिकाणी सुमहा-  
तपस्वी महाभाग भार्गवानें पृथ्वीवरील सर्व मोठ-  
मोठ्या क्षत्रियांची कत्तल उडवून व वारंवार  
पृथ्वी जिंकून, आपला उपाध्याय जो मुनिश्रेष्ठ  
कश्यप, त्याच्या अनुमतानें एक वाजपेय यज्ञ  
व शंभर अश्वमेध केले; आणि त्या आचार्यास  
समुद्रवलयोक्तिन सर्व पृथ्वी हीच दक्षिणा दिली !  
त्यानें नानाप्रकारची रत्नें, गाई, हत्ती, दासी,  
शेळ्यामेंढ्या वगैरेंमुद्धां विविध दानें दिली,  
आणि तो वनांत निघून गेला. राजा, देवर्षि व  
ब्रह्मर्षि ज्याचें सेवन करतात अशा ह्या पुण्य-  
कारक श्रेष्ठ तीर्थावर तीर्थनिवासी मुनीस अभि-  
वादन करून बलराम यमुनातीर्थास जाता  
झाला. राजा, ज्याची कांति स्वच्छ आहे, असा  
अदितीचा पुत्र महाभाग वरुण यानें प्राचीन  
काली या ठिकाणी राजसूय यज्ञ करण्यासाठीं  
मुनीस आणिलें होतें. परवीरातक वरुणानें  
मनुष्य व देव ह्यांस संग्रामांत जिंकून तेथें  
मोठा ( राजसूय ) यज्ञ केला. तो यज्ञ झाल्या-  
नंतर देवदानवांचा त्रेलोक्यास भय उत्पन्न  
करणारा संग्राम झाला. जनमेजया, क्रतूंत श्रेष्ठ  
असा राजसूय यज्ञ झाला असतां क्षत्रियांचा  
अत्यंत घोर असा संग्राम होत असतो. याचा



अनुभव पांडवांच्या राजसूयांतही आलेलाच आहे. असो; या ठिकाणी बलरामाने ऋषींची पूजा केली आणि त्या उदाराने इतरही याचकांस द्रव्य देऊन संतुष्ट केले. नंतर, महर्षि ज्याची स्तुति करित आहेत व जो हर्षभरित झाला आहे, असा तो वनमाली कमलनयन बलराम तेथून आदित्यतीर्थास गेला. हे राजसत्तमा, येथेच यजन करून भगवान् भास्कराने नक्षत्रादिक तेजस्वी पदार्थांचे आधिपत्य व मोठा प्रभाव संपादन केला. हे राजसत्तमा, इंद्रामुद्धां सर्व देव, मरुतांसह विश्वेदेव, गंधर्व व अप्सरा, द्वैपायन व्यास, शुक मुनि, मधुसूदन कृष्ण, यक्ष, राक्षस, पिशाच हे व दुसरे पुष्कळ हजारों योगसिद्ध सरस्वतीच्या याच मंगल व पुण्यकारक तीर्थाच्या सेवनाने श्रेष्ठत्व पावले आहेत. हे भरतश्रेष्ठा, याच श्रेष्ठ तीर्थावर स्नान करून पूर्वी विष्णूने मधु व कैटभ नांवांचे दोन अमुर मारिले. धर्मशील द्वैपायनास येथेच स्नान करून परम योग प्राप्त झाला, व ते परम सिद्धीस पोचले; आणि महातपस्वी असितदेवलाने येथेच अचल भक्तिभावाने योग संपादिला.

### अध्याय पन्नासावा.

—०:—

#### जैगीषव्यवृत्तांत.

वैशंपायन सांगतात:—त्याच ठिकाणी पूर्वी तपोधन व धर्मशील असितदेवलमुनि गृहस्थाश्रमाने रहात असे. तो, सदैव धर्मपरायण, शुचिर्भूत, इंद्रिये स्वाधीन ठेविलेला, ब्रह्मचर्याचे अंती दंडन्यास केलेला व महातपस्वी होता. त्याची वाणी, मन व कृति एकरूप असून, तो प्राणिमात्राचे ठिकाणी समतेने वागत असे. हे महाराजा, त्याला क्रोध कसा तो मुळीच येत नसे; निंदा व स्तुति दोन्ही तो समानच लेखी; प्रिय व अप्रिय दोन्ही प्रकारच्या वस्तूविषयी

त्याची वृत्ति तुल्य असे; तो यमासारखा समदर्शी होता; त्या महात्म्यास कांचन व मुक्तिका सारखीच दिसत; तो नित्य द्विज, अतिथि व देव यांचे पूजन करी; आणि सद्गोदीत ब्रह्मचर्य-तत्पर व धर्मपरायण असा असे.

हे महाभागा, एकदां जैगीषव्य नामक एक ज्ञानसंपन्न व शुद्धाचरणी मुनि भिक्षकाच्या वेषाने त्या तीर्थावर येऊन देवलाच्या आश्रमांत राहिला. तो मोठा तेजःसंपन्न, नित्ययोगी व सिद्धीप्रत पोचलेला महातपस्वी होता. याप्रमाणे जैगीषव्य महामुनि तेथे रहात असतां देवलाने त्यास पहात असूनही त्याचे धर्मतः जें आतिथ्य करावयाचें तें कांहीच केले नाही. याप्रमाणे, हे महाराजा, पुष्कळ काळ लोटला. नंतर एकदां, राजा, पवित्राडू व बुद्धिमान् देवलाला तो जैगीषव्य महामुनि भोजनाचे वेळी दिसला नाही; तो धर्मज्ञ देवलाकडे भिक्षेच्या वेळी प्राप्त झाला. तो महामुनि भिक्षुरूपाने आलेला पाहून देवलाने त्याचा उत्तम गौरव केला. हे भारता, त्याचेविषयी त्याचे मनांत अपार प्रेम उद्भवले; आणि त्याने त्याचे पुष्कळ वर्षेपर्यंत ऋषिदृष्ट विधीप्रमाणे यथाशक्ति पूजन केले. पुढे त्या महातेजस्वी मुनीस पाहून महात्म्या देवलाला मोठी हुरहुर लागली. एकदां “ मी पुष्कळ वर्षेपर्यंत सारखे पूजन करित आहे, परंतु हा आळशी भिक्षु चकार शब्दही बोलत नाही ! ” अशी मनांत त्याची अवहेलना करित, तो अंतरिक्षांतून चालणारा श्रीमान् देवल वागर घेऊन महोदधीवर गेला. परंतु, हे भारता, तो धर्मात्मा सरित्पति सागरावर पोचतो तो जैगीषव्य तेथे पूर्वीच जाऊन बसला आहे असे त्याच्या दृष्टीस पडले ! तेव्हां त्या अमिततेजस्वी देवलास मोठा विस्मय वाटला आणि त्याच्या मनांत त्याविषयी विचार घोळू लागले, “ इतक्यांत हा भिक्षु येथे येऊन समुद्रांत स्नानही

केला, हें कसें काय ? ” असें तो असित महर्षि तेव्हां मनांत चिंतन करूं लागला. मग देवलांनै समुद्रांत विधिवत् स्नान करून करावयाचा तो जप केला आणि जप, आह्निक वगैरे आठोपल्यावर तो कलश, भरून घेऊन आपल्या आश्रमास आला. पण जनमेजया, आपल्या आश्रमांत पाय ठेवतो न ठेवतो तोंच जैगीषव्य तेथें आश्रमांत बसलेला त्यास दिसला ! जैगीषव्य त्याशीं अवाक्षरही बोलत नसे, तो महातपस्वी आपला काष्ठवत् आश्रमांत बसलेला असे. राजा, सागराप्रमाणें गंभीर अशा त्या मुनीनै आपल्यापूर्वींच समुद्रावर पाण्यांत बुडी मारली, आणि येथें आश्रमांतही तो पूर्वींच येऊन बसला हें असित देवलांनै पाहिलें; आणि त्याच्या मनांत विचारांचें काहूर उठलें. तेव्हां, हे राजेंद्रा, जैगीषव्याच्या तपाचा व योगाभ्यासाचा प्रभाव पाहून त्या मुनिसत्तमास चिंता लागली. राजा, ‘ ह्याला मी समुद्रावर व आश्रमांतही पाहिलें हें कसें ? ’ असा विचार करीत तो मंत्रपारंगत मुनि, जैगीषव्य भिक्षूविषयीची जिज्ञासा पूर्ण करण्यासाठीं आपल्या आश्रमांतून उंच अंतरिक्षांत उडाला. तेथें अंतरिक्षांत चालणारे सिद्ध मोठ्या तत्परतेनै एकत्र झालेले त्यानै पाहिले. ते सिद्ध तेथें जैगीषव्याचेंच पूजन करीत आहेत असें त्यास दिसलें. मग त्या अगदी भांबावून गेलेल्या, उद्योगी व दृढनिश्चयी असितानै जैगीषव्य तेथून गेल्याचें पाहिलें. तेथून तो पितृलोकीं जात आहे असें त्यानै पाहिले आणि पितृलोकाहून तो त्यास यमलोकास गेलेला दिसला. असित त्याचा पाठलाग करीत होताच, पण तो यमलोकीं जातो न जातो तोंच जैगीषव्याने उड्डाण करून सोमलोक गांठला; आणि तेथें तो संचार करीत आहे असें असिताच्या दृष्टीस पडलें.

परंतु इतक्यांत महामुनि जैगीषव्य एकांतयाग करणारांच्या लोकीं गेला. असित तेथें जातो तों हा अग्निहोत्र्यांचे लोकीं गेला. तेथून दशै-पौर्णमासयजन करणारांचे लोकास गेला; आणि तेथून धीमान् असितानै त्या देवपूजित निष्पाप मुनीस पशुयाजींचे लोकीं जातांना पाहिलें ! मग अनेक प्रकारचे चातुर्मासयाग करणाऱ्या तपोधनांचे लोकीं; तेथून अग्निष्टोम यज्ञ करणारांचे लोकीं, आणि तेथून अग्निष्टुत करणाऱ्या तपोधनांचे लोकीं तो गेलेला असितानै पाहिला. मग, जे महाप्राज्ञ वाजपेय महायज्ञ करतात, तसेच जे दुसरे बहुमुवर्णक नामक यज्ञ करतात, त्यांच्या लोकांमध्ये असितानै त्या जैगीषव्यास पाहिलें. याचप्रमाणें, जे राजसूय किंवा पुंडरीक यज्ञ करतात, त्यांचे लोकांतही तो असितास दिसला. तेथून मग, जे सर्वश्रेष्ठ अश्वमेध करतात, तसेच जे नरमेध करतात, त्या नरश्रेष्ठांचे लोकीं तो गेल्याचें आढळून आलें. अति अवघड सर्वमेध, तसाच सौत्तामणि हे यज्ञ करणारांचे लोकीं देवलांनै जैगीषव्यास अवलोकन केलें. राजा, याप्रमाणेंच विविध प्रकारचीं द्वादशाह सत्रें करणारांचे लोकींही त्यास देवलांनै पाहिले. नंतर मित्र, वरुण व आदित्य यांच्या लोकीं त्यास सलोकता प्राप्त झाली आहे, असें त्याच्या दृष्टीस पडलें. रुद्र, वसु व बृहस्पति यांचीं सर्व स्थानें उलंघून तो पुढें गेल्याचें त्यास आढळून आलें. मग असित देवल मुनि गोलोकीं आरोहण करून तेथून ब्रह्मसत्र करणारांचे लोकास निघाला. त्यानै ते सर्व लोक पाहिले; तेव्हां जैगीषव्य पुढेंच चालला आहे, आणि स्वतेजोबलांनै दुसरे तीन लोक उलंघून जात आहे, असें त्याच्या दृष्टीस पडलें ! पुढें तो पतिव्रतांच्या लोकीं जात असतां त्यानै पाहिला; परंतु, हे अरिंदमा, तेथून जैगीषव्य जो कोठें गुप्त झाला तो पुनः असिताच्या

कोठेंच दृष्टीस पडेना. तेव्हां तो महाभाग देवल जैगीषव्याचा प्रभाव, सुव्रतत्व व योगाची अतुल सिद्धि यांविषयीच्या विचारानें थक्क होऊन गेला. नंतर असितांन त्या लोकांतील श्रेष्ठतम सिद्धांजवळ त्याविषयी चौकशी केली. तो श्रीमान् व निग्रही मुनि हात जोडून त्या ब्रह्मसत्र करणाऱ्या सिद्धांस म्हणाला, “ महाराज, मला जैगीषव्य कोठें दिसत नाही. तो विलक्षण सामर्थ्याचा मुनि कोठें आहे तें मला सांगावें. मला त्याविषयी मोठें आश्चर्य वाटत आहे आणि तेणेंकरून त्याचें वर्तमान ऐकण्याची मला इच्छा उत्पन्न झाली आहे. ”

सिद्धांनी उत्तर दिलें:—देवला, हे दृढव्रता, आम्ही झालेला प्रकार सांगतो, ऐक. तो जैगीषव्य शाश्वत अशा ब्रह्मलोकी गेला आहे!”

वैशंपायन सांगतात:— राजा, ब्रह्मसत्री सिद्धांचें भाषण ऐकतांच असितांन त्वरेनें उंच उडी मारली, परंतु तो खाली पडला! तेव्हां ते सिद्ध पुनः देवलास म्हणाले, “ देवला, तूं तपोधन आहेस खरा; परंतु विप्रा, जैगीषव्य जेथें गेला आहे त्या ब्रह्मलोकी जाण्याचें तुला सामर्थ्य नाही. उगाच धडपड करूं नको!”

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, त्या सिद्धांचें हें बोलणें ऐकून देवलानें तो नाद सोडला; आणि तो ज्या क्रमानें वर गेला होता त्याच क्रमानें एकेक लोक खाली उतरत उतरत सर्व लोक उतरून पक्ष्याप्रमाणें पुनः आपल्या पवित्र आश्रमास आला; आणि आंत शिरतो तो तेथें जैगीषव्य त्याच्या दृष्टीस पडला! तेव्हां तो जैगीषव्याचा योगसामर्थ्यानें प्राप्त झालेला व तपाचा प्रभाव पाहून देवलानें धर्मयुक्त बुद्धीनें त्याचा विचार केला; आणि, राजा, विनयानें नम्र होतसाता तो त्या महात्म्याजवळ जाऊन त्यास म्हणाला, “भगवन्, मोक्षधर्म जाणण्याची माझी इच्छा आहे, ती आपण

पूर्ण करावी.” त्याचें तें भाषण ऐकून जैगीषव्यानें त्यास उपदेश दिला. राजा, योगाचा श्रेष्ठ विधि व काय करावें, काय काय करूं नये, वगैरे नियम शास्त्राप्रमाणें त्यानें त्यास उपदेशिले; आणि संन्यास ग्रहण करावा अशी त्याची बुद्धि झालेली जाणून त्या महातपस्यानें संन्यास घेतांना कराव्या लागतात त्या सर्व क्रिया विधीप्रमाणें करून त्यास संन्यास दिला. त्यानें संन्यासाचा विचार केला. असें पाहून पितर व भूतें “ आतां आम्हांस अन्नोदकांचे विभा कोण देईल! ” असा आक्रोश करूं लागली राजा, देवलानें त्यांचे असे दाही दिशांस चाललेले हाहाकार ऐकिले, तेव्हां त्याचें मन द्रवलें आणि “ संन्यास सोडून पुनः पूर्वाश्रम स्वीकारावा, ” असें त्याच्या मनानें घेतलें. तेव्हां, हे भारता, पवित्र फलमूलें, पुष्पें व हजारों वनस्पति हीं आक्रोश करूं लागली कीं, “ हा दुष्ट व हलक्या बुद्धीचा देवल पुनः आमचा छेद करणार! अहो, सर्व भूतांना अभय वचन देऊन तें हा विसरला आहे! ” मग मुनिश्रेष्ठ देवलानें पुनः विचार केला कीं, “ संन्यास व गृहस्थधर्म यांपैकी अधिक श्रेयस्कर कोणता? ” हे राजसत्तमा, असा विचार करून शेवटीं त्यानें गृहस्थाश्रमाचा त्याग करून मोक्षधर्म (संन्यास) हाच पतकरला. अशा प्रकारें विचार करून केलेल्या निश्चयामुलें मग देवलाला परम सिद्धि व श्रेष्ठ असा योग प्राप्त झाला. राजा, नंतर बृहस्पतिप्रभृति देव तेथें जमले आणि त्यांनी तपस्वी जैगीषव्याची व त्याच्या तपाची प्रशंसा केली. मग ऋषिवर नारद देवांस म्हणाला, “ अहो, ज्यानें असितास विस्मित केलें, त्या जैगीषव्याचे जवळ कांहींच तप उरलें नाही! ” तेव्हां लगेच ‘ छे छे, असें नव्हे ’ असें म्हणत व जैगीषव्य महामुनीची स्तुति करीत देवांनी त्यास उत्तर दिलें, “ या जैगीषव्याचा प्रभाव,

तेज, तप व योग यांपैकी एकाही गोष्टीत कोणी याची बरोबरी करणारा नाही; मग याहून अधिक प्रभावादिकांची गोष्ट दूरच राहिली! महात्म्या जैगीषव्याच्या असा प्रभाव आहे आणि त्याचप्रमाणे असितही लोकोत्तर महात्मा आहे!" असो; राजा, हे तीर्थ त्या दोघां महात्म्यांचे श्रेष्ठ स्थान होय. महानुभाव हलधराने येथे स्नान केले; ब्राह्मणांस दक्षिणा दिल्या; धर्म जोडला आणि मग तो परमार्थसाधक हलधर महातीर्थात ज्याची गणना होते अशा सोमतीर्थास गेला.

### अध्याय एकावन्नाव.

—:—:—

#### सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, या सोमतीर्थावर नक्षत्राधिपति चंद्राने राजसूय याग केला, व तेथेच तारकासुराशी मोठा संग्राम झाला. या ठिकाणी आत्मज्ञानी बलरामाने स्नानादानादिक केले; आणि मग तो धर्मात्मा सारस्वत मुनींच्या तीर्थास गेला. त्या ठिकाणी पूर्वी सारस्वत मुनीने बारा वर्षांचे अवर्षण संपल्यानंतर ब्राह्मणांस वेद पढविला.

जनमेजय विचारितो:—मुने, पूर्वी द्वादश-वार्षिक अनावृष्टीनंतर सारस्वत मुनीने द्विज-श्रेष्ठांस वेद शिकविला, हा कथाभाग कसा आहे?

वैशंपायन सांगतात:—हे महाराजा, पूर्वी दधीचि नामक एक महातपस्वी मुनि होता. तो मोठा ज्ञानी, ब्रह्मचारी व जितेंद्रिय असे. राजा, त्याच्या अति मोठ्या तपश्चर्येला इंद्र सदोदित भीत असे. अनेक प्रकारच्या फलाशेने त्यास भुलवितां येईना, तेव्हां मग इंद्राने त्यास भुलविण्यासाठी अलंबुषा म्हणून एक सुंदर, पवित्र व दिव्य अप्सरा पाठविली.

जनमेजया, महात्मा दधीचि सरस्वतीवर देव-तर्पण करीत होता, त्याच्या समीप येऊन ती सुंदरी उभी राहिली. तेव्हां तिचे तें दिव्यरूप पाहून त्या आत्मज्ञानी मुनीचे रेत स्खलन पावले. तेव्हां, हे पुरुषर्षभा, तें रेत सरस्वती नदीने ग्रहण केले, आणि त्यास आपल्या उदरांत ठेविले. राजा, त्या महानदीने पुत्र-कामनेने तो गर्भ धारण केला आणि योग्य समय प्राप्त होतांच ती पुत्र प्रसवली. मग, हे राजा, ती सरिच्छेष्ठ सरस्वती त्या पुत्रास घेऊन दधीचि ऋषीकडे गेली. त्या वेळी तो मुनिश्रेष्ठ ऋषीच्या समेत बसला होता. राजा, त्यास पाहून तिने तो मुलगा त्याचे हाती देत म्हटले, “ हे ब्रह्मर्षे, हा तुझा पुत्र आहे. तुझ्या भक्तीने मी याचे धारण केले. अलंबुषा नामक अप्सरेस पाहून तुझे रेत स्खलन पावले; तेव्हां, हे ब्रह्मर्षे, तुजवरील प्रेमांमुळे, तुझे हे तेज व्यर्थ जाऊ नये असे मनांत ठरवून मी तें आपल्या उदरीं धारण केले. हा तुझा शुद्ध पुत्र मी तुझ्या स्वाधीन केला आहे; ह्याचा स्वीकार कर ! ”

राजा, असे ती त्या ऋषीस म्हणाली, तेव्हां त्याने मुलास जवळ घेतले. त्या वेळी त्या-विषयी त्याचे मनांत अपार प्रेम उद्भवले व त्याने प्रेमाने त्या पुत्राचे मस्तक हुंगले; आणि त्यास पुष्कळ वेळपर्यंत पोटाशी कवटालून धरले. नंतर, हे भरतसत्तमा, प्रसन्न झालेल्या महामुनीने सरस्वतीस वर दिला की, “ हे सुभगे, तुझ्या उदकांने तर्पण केल्यास विश्वदेव, पितर व गंधर्वाप्सरसांचे समुदाय तृप्त होतील ! ” राजा, असे बोलून, त्या परमहंसित झालेल्या मुनीने पुनः त्या महानदीची जी स्तुति केली, ती श्रवण कर. तो म्हणाला, “ हे महाभगे, तूं पूर्वी ब्रह्मसरोवरापासून वाहून लागलीस. तेथेच तुझी उत्पत्ति झाली. मोठमोठे व्रताचारी

मुनि तुझा महिमा जाणतात. हे प्रियदर्शने, तूं सदोदीत माझे प्रिय करीत असतेम. यास्तव, हे वरवर्णिनि, तुझा हा महाथोर व लोकपालक पुत्र तुझ्याच नांवाने प्रसिद्ध होईल. हा महातपस्वी होईल व सारस्वत ह्या नांवाने विख्यात होईल. हे महाभागे, पुढे बारा वर्षांची अनावृष्टि झाली असतां हा सारस्वत मोठमोठ्या ब्राह्मणांस वेद शिकविल; आणि, हे शोभने, माझ्या प्रसादाने तूही सदोदीत सर्व पवित्र नद्यांमध्ये अतिशय पुण्यकारक होशील ! ”

हे भरतर्षभा, अशी त्यानें स्तुति केल्यानंतर व त्याचेकडून वर मिळाल्यानंतर ती हर्षभरित झालेली महानदी मुलास घेऊन निघून गेली. याच सुमारास तिकडे देवदानवांचा विरोध झाला होता. तेव्हां आयुध शोधण्यासाठीं इंद्र तिन्ही लोक हिंडला, परंतु दानवांस मारण्यास उपयोगीं पडेल, असें आयुध त्यास मुळींच मिळालें नाहीं. मग तो इंद्र देवांस म्हणाला, “ देवांचे शत्रु जे मोठमोठे राक्षस आहेत, ते दधीची ऋषीच्या अस्थीवांचून इतर कशांनेंही मला मारतां येणें शक्य नाहीं. यास्तव, मुरश्रेष्ठहो, त्या ऋषीजवळ जाऊन त्याच्या अस्थि मागून आणा. ” राजा, मग देव त्याजवळ गेले; आणि, हे कुरुश्रेष्ठा, “ हे दधीचा, आपल्या अस्थि आम्हांस दे, म्हणजे त्यांनीं आम्ही शत्रूस ठार करूं. ” याप्रमाणें त्यांनीं मोठ्या मिनतवारीनें त्याजपाशीं याचना केली. तेव्हां त्यानें कांहीएक कांकू न करतां प्राणत्याग केला; आणि अशा प्रकारें त्या देवांचे प्रिय करणाऱ्या दधीचास अक्षय्य लोक प्राप्त झाले. मग, राजा, मनांत अत्यंत हर्षित झालेल्या इंद्राने त्याच्या अस्थीची गदा, वज्रें, चक्रे व पुष्कळ जड जड दंड अशी नानाप्रकारचीं दिव्य आयुधें करविली. राजा, त्या महाथोर ऋषीनें तीव्र तपश्चर्या करून

आपला देह कमाविला होता; प्रजापतिपुत्र भूगनें तो जगाचें कल्याण करणारा, मोठा धिप्पाड, तेजस्वी व सर्व लोकांहून कणखर असा बनविला होता; तो पर्वतासारखा उंच व दृढ असून आपल्या मोठेपणाने प्रख्यात झाला होता; आणि त्याच्या तेजामुळे पाकशासन इंद्र नित्य उद्विग्न होत असे. असो; हे भारता, भगवान् इंद्राने तें ब्रह्मतेजापासून निर्माण झालेलें वज्र मंत्रपूर्वक व अत्यंत क्रोधाने सोडून त्याच्या योगाने दैत्यदानवांपैकीं आठशें दहा वीर ठार मारिले ! असो; राजा, पुढें अति भयंकर असा मोठा काल निघून गेल्यावर बारा वर्षे अवर्षण पडलें. तेव्हां, राजा, मोठमोठे ऋषिही क्षुधार्त होऊन उदरभरणार्थ सर्व दिशांस भटकूं लागले. ते निघून गेलेले पाहून सारस्वत मुनींनेंही जाण्याचा विचार केला; परंतु इतक्यांत सरस्वती त्यास म्हणाली, “ पुत्रा, येथून जाऊं नको. मी तुला आहारार्थ नेहमी उत्तमोत्तम मत्स्य देत जाईन. तू येथेंच रहा. ”

हे भारता, याप्रमाणें त्या सारस्वताने तेथेंच राहून पितर व देव यांचें तर्पण चालविलें; आणि तो प्राण व वेद धारण करून नित्य सरस्वतीदत्त आहार करीत असे. पुढें ती अनावृष्टि संपल्यावर महर्षि अध्ययन करण्यासाठीं पुनः एकमेकांस ‘ मला शिकवाल काय ? ’ असें विचारूं लागले. कारण, हे राजेंद्रा, क्षुधाकुल होऊन भटकण्यांत व पोटाच्या विवंचनेंत वर्षेच्या वर्षे निघून गेल्यामुळे, ते सर्वजण वेद विसरून गेले होते; ज्याला सर्व वेद वागत आहेत, असा त्यांत एकही नव्हता. पुढें त्यांतील एक ऋषि सहज सारस्वताच्या आश्रमास आला, आणि त्यानें तो शुद्धात्मा ऋषिश्रेष्ठ वेदस्वाध्याय करीत आहे असें अवलोकन केलें. तेव्हां लगेच तो त्या महर्षीकडे गेला; आणि विज्ञान अरण्यांत कोणी एक

सारस्वत नामक देवतुल्य व अत्यंत तेजस्वी मुनि उत्तम वेदशेष करीत आहे, म्हणून त्यांस सांगितलें. मग, राजा, ते सर्व महर्षि सारस्वता-कडे गेले आणि “ आम्हांस वेद शिकव ” असे त्या मुनिश्रेष्ठास म्हणाले. तेव्हां त्या मुनीने उत्तर दिलें, “ तुम्ही माझे यथाशास्त्र शिष्यत्व पतकरा, मग मी तुम्हांस शिकवीन. ” नंतर ते महर्षींचे समुदाय त्यास म्हणाले, “ पुत्रा, तू केवळ बालक आहेस. यास्तव आम्ही तुझे शिष्य व्हावें हें योग्य नाही. ” यावर सारस्वत ऋषि पुनः त्या मुनींस म्हणाला, “ माझा धर्म नष्ट होऊं नये. जो अधर्मानें उपदेश करील, व जो अधर्मानें उपदेश घेईल, ते उभयतांही नाश पावतात, किंवा एकमेकांचे शत्रु होतात. ऋषींनीं असा धर्म सांगितला आहे कीं, पुष्कळ वय, पांढरे केंस, संपत्ति किंवा बांधव (सहाय) यांच्या योगानें मोठेपणा येत नाही. तर जो अनू-चान् म्हणजे विद्वान् असेल तोच मोठा होय. ” हें त्याचें भाषण ऐकून त्या मुनींनी त्याच्या-पामून विधानपूर्वक वेदग्रहण केलें आणि पुनः आपला धर्म सुरू केला. राजा, स्वाध्याया-साठीं साठ हजार मुनींनीं विप्रर्षि सारस्वताचें शिष्यत्व पतकरलें; आणि तो बाल होता तथापि त्याचे आज्ञांकित राहून त्याच्या आसनासाठीं मूठमूठ दर्भ आणिले (त्याची सेवा केली) !

असो; राजा, कृष्णाचा वडील भाऊ जो महाबलाढ्य बलराम त्यानें येथेंही दानधर्म केला; आणि हर्षित होत्साता, जेथें अत्यंत वृद्ध अशी एक कन्या तप करीत होती, त्या पुढीलच प्रख्यात तीर्थास तो जाता झाला.

## अध्याय बावन्नावा.

—०:—

### दृढकन्याख्यान.

जनमेजय विचारितोः—भगवन्, प्राचीन काळी ती कुमारी कशी तपोयुक्त झाली ? तिनें कशासाठी तप केलें ? आणि तिचा नियम कशा प्रकारचा होता बरें ? ब्रह्मन्, आपल्या मुखांतून ही एक अत्यंत दुष्कर व श्रेष्ठ गोष्ट मी ऐकिली, परंतु ती कां व कशी तपश्चर्या करूं लागली, तें अखिल वर्तमान मला यथार्थ कथन करावें.

वेशंपायन सांगतातः—राजा, कुणिर्गर्ग नामक एक महायशस्वी व महावीर्यशाली ऋषि होता. त्या तपस्वीवरानें अतिशय तपश्चर्या केल्यानंतर एक लावण्यवती मानसकन्या उत्पन्न केली. राजा, तिला पाहून त्या महाकीर्तिमान् कुणिर्गर्ग मुनीला समाधान वाटलें; आणि त्यानें देह ठेवून स्वर्गारोहण केलें. मग, जिचे नेत्र पुंडरीक कमलासारखे तेजस्वी आहेत, व भ्रुकुटी शोभायमान आहेत, अशी ती निर्मल कन्या तेथेंच आश्रम करून, उग्र तपश्चर्या व उपवास यांच्या योगानें देव व पितर यांचें आराधन करूं लागली. राजा, उग्र तपश्चर्या करतां करतां तिचा पुष्कळ मोठा काळ निवून गेला. पूर्वी पित्यानें तिला एका ठिकाणीं देऊं केली होती, परंतु त्या पुण्यवतीला तें स्थल आवडलें नाही, व तिला अनुरूप असा पति मिळाला नाही. यामुळे ती विजन अरण्यांत उग्र तपश्चर्येनें आपला देह झिजवून पितृदेवांच्यांत निमग्न राहिली. पुढें, आपण कृतकृत्य झालों असें जरी तिला वाटत होतें, तथापि ती तशीच श्रम करीत राहिली; परंतु, राजेंद्रा, जेव्हां वार्षिक्या-मुळे व तपाच्या योगानें ती अगदीं क्षीण झाली, व तिला आपल्या आपण एक पाऊलभरही चाल-

ण्याची शक्ति उरली नाही, तेव्हां तिने पर-  
लोकी जाण्याचा विचार केला. याप्रमाणे ती  
देहत्याग करण्याचा विचार करीत आहे इत-  
क्यांत नारद तिला म्हणाले, “ हे निष्पापे तप-  
स्विनि, संस्कार न झालेल्या तुज कन्येला उत्तम  
लोक कोठून मिळणार ? हे महाव्रते, आम्ही  
देवलोकी असे ऐकिले आहे की, तू मोठी तप-  
श्चर्या केलीस खरी, पण कांही पुण्यलोक  
जिकिले नाहीस ! ”

राजा, नारदांचे ते भाषण ऐकून ती ऋषींच्या  
सभेत जाऊन म्हणाली, “ श्रेष्ठहो ” जो माझे  
पाणिग्रहण करील, त्यास मी आपले अर्धे तप  
देईन. ” ते ऐकून गालवाचा पुत्र प्राक्शुंगवान्  
नामक ऋषि होता त्याने तिचे पाणिग्रहण केले  
आणि अशी अट सांगितली की, “ हे शोभने,  
तुझ्यासह मी फक्त एकच रात्र राहीन. ह्या  
अठीवर पाहिजे तर मी आज तुझे पाणिग्रहण  
करतो. ” तेव्हां “ ठीक आहे ” असे म्हणून  
ती त्याशी विवाह करण्यास कबूल झाली. मग  
त्या गालवीने विधिपूर्वक होम वेगरे करून व  
तिचे यथाशास्त्र पाणिग्रहण करून, तिशी  
विवाह लावला. नंतर राजा, रात्री ती वर-  
वर्णिनी तपस्विनी दिव्य वस्त्राभरणे धारण केलेली  
व उत्तम सुगंधि काजळकुंकू ल्यालेली व उठी  
लाविलेली अशी सुंदर तरुणी झाली ! अशा  
प्रकारे, राजा, जणू लावण्याने प्रकाशाच्या अशा  
तीस पाहतांच गालवि संतुष्ट झाला. पुढे रात्र  
संपल्यावर ती कन्या त्यास म्हणाली, “ हे  
तपस्विनरा विप्रा, आपण अट घातली होती  
तीप्रमाणे मी एक रात्र आपणासमागमें राहिले.  
आतां मी जाते. आपले कल्याण असे. ”  
राजा, ती तेथून निघून जातांना आणखी  
म्हणाली, “ जो कोणी या तीर्थावर देवतर्पण  
करून एक रात्र वसति करील, त्यास अष्टावन्न  
वर्षे ब्रह्मचर्य करणारा इतके फल प्राप्त होईल. ”

राजा, असे बोलून ती साध्वी देह टाकून  
स्वर्गास गेली. इकडे तिचे रूप आठवून तो  
ऋषिही दीन झाला; व त्याने तिच्या प्रतिज्ञे-  
प्रमाणे संपूर्ण अर्धे तप ग्रहण करून आत्म-  
साधन केले; आणि हे भारतश्रेष्ठा, तिच्या  
अनुपम रूपाने मोहित व दुःखित होऊन  
तिच्यामागून लवकरच तो स्वर्गांत तिला भेट-  
ण्यास गेला. राजा, याप्रमाणे हे वृद्ध कन्येचे  
मोठे चरित्र, तसेच ब्रह्मचर्य व उत्तम स्वर्गगति  
तुला कथन केली. बलराम या तीर्थास अस-  
तांना शल्यमेल्याची बातमी त्याने ऐकिली. येथे  
त्याने ब्रह्मणांस दांने दिली; तेव्हां पांडवांनी  
युद्धांत शल्यास मारिल्याचे त्यास समजले.  
मग तो समंतपंचक्राच्या द्वारांतून बाहेर  
पडला; आणि त्याने ऋषिगणांस कुरुक्षेत्राचे  
फल विचारिले. तेव्हां, हे विभो, त्या महा-  
त्म्यांनी त्यास सर्व याथातथ्य सांगितले.

## अध्याय त्रेपन्नावा.

—:—

### कुरुक्षेत्रमाहात्म्य.

ऋषि म्हणाले:—रामा, सनातन समंतपंच-  
काला प्रजापतीची उत्तरवेदि म्हणतात. येथेच  
महावरदायक अशा देवांनी मोठे सत्र करून  
यजन केले. राजर्षींत वरिष्ठ, धीमान् व अभित-  
तेजस्वी असा जो महात्मा कुरु त्याने पुष्कळ  
वर्षपर्यंत हे प्रयत्नपूर्वक नांगरिले, म्हणून याला  
कुरुक्षेत्र असे नांव पडले.

रामाने विचारिले:—हे तपोधनहो, महात्म्या  
कुरुने हे क्षेत्र कां नांगरिले, ते आपल्या मुखे  
ऐकण्याची माझी इच्छा आहे.

ऋषि सांगू लागले:—रामा, पूर्वी कुरुराजा  
सतत तत्परतेने ते क्षेत्र नांगरीत असतां इंद्र  
स्वर्गांतून खाली आला आणि त्याने त्यास  
त्याविषयीचे कारण विचारिले. इंद्र म्हणाला,

“ राजा, हा अतिशय मोठा खटाटोप कशाचा चालला आहे ! हे राजर्षे, तू कोणत्या उद्देशाने ही जमीन नांगरीत आहेस ? ” कुरु म्हणाला, “ हे शतक्रतो, या क्षेत्रांत जे लोक मरतील ते पापविवर्जित अशा पुण्यलोकी जातील. ” यावर उपहासपूर्वक हंसून इंद्र स्वर्गास गेला. पण तो राजर्षि बिलकूल विपाद न पावतां सारखा पृथ्वी नांगरीतच होता. इंद्र पुनःपुनः तेथें येऊन त्या उत्साहपूर्ण राजास “ काय चाललें आहे ! ” म्हणून विचारि व थडें हंसून निघून जाई. याप्रमाणें पुष्कळ वेळां झाले; तथापि कुरुराजाचा नित्यक्रम चाललाच होता. पुढें जेव्हा त्या राजानें उग्र तपश्चर्येच्या योगानें पृथ्वी नांगरिली, तेव्हां इंद्रानें त्याचें कृत्य देवांस सांगितलें. ते ऐकून देव इंद्रास म्हणाले, “ इंद्रा, शक्य असेल तर त्या राजर्षास वर देऊन स्वस्थ बसवावें. जर येथें मेलेले सर्वच लोक यज्ञयागांनी आमचें यजन केल्याशिवायही स्वर्गास येतील, तर मग आपणांस हविर्भाग मिळणारच नाहीत. ” मग इंद्र ग्वाली उतरून त्या राजर्षाला म्हणाला, “ राजा, खेद करू नको; माझे ऐक. येथें जे मनुष्य उपोषित असतां सावधचित्तानें देह ठेवतील ते व युद्धांत समोर लढत असतां जे प्राणी मरतील—मग ते निर्यग्योनीतील कां असेनात—ते सर्व. हे राजेंद्रा, स्वर्गाचे अधिकारी होतील. ” यावर “ तथास्तु ” असें तो कुरुराजा इंद्रास म्हणाला. तेव्हां बलमूदन इंद्र त्यास आशीर्वाद देऊन संतुष्ट अंतःकरणानें पुनः सत्वर स्वर्गास गेला.

हे यदुश्रेष्ठा, अशा प्रकारें हें क्षेत्र प्राचीन-कालीं कुरुराजानें निर्माण केलें आणि त्यास इंद्रानें व ब्रह्मप्रभृति देवांनी अशी संमति दिली की, “ पृथ्वीवर याहून अधिक पुण्यकारक असें स्थान अमणार नाही येथें जे मनुष्य परम

तपश्चर्या करतील ते देहत्यागोत्तर ब्रह्मलोकीं जातील. जे पुण्यवान् पुरुष येथें दांन देतील, त्यांस ते ते पदार्थ सहस्रगुणित व सत्वर प्राप्त होतील. जे शुभचिंतक मनुष्य येथें नित्य रहातील, ते यमलोक कधीही पाहणार नाहीत. जे राजे मोठमोठे यज्ञ करतील, त्यांचें, ही पृथ्वी असेपर्यंत स्वर्गास वास्तव्य होईल. येथें स्वतः सुरपति इंद्रानें कुरुक्षेत्राविषयी गाथा गाईली आहे, ती, हे हलायुधा, श्रवण कर. “ कुरुक्षेत्रांतून वायूनें उडून आलेले रजःकणही पाण्यांना देखील परम गतीस नेतात, ” बलराम, मोठमोठे देव, थोर ब्राह्मण व नृग-प्रभृति विस्वयात राजे येथें मोठमोठे यज्ञ करून व देह ठेवून उत्तम गतीस पोचले. तरंतुका-पामून अरंतुकापर्यंत आणि रामचंद्रांपासून मचक्रुकापर्यंतचा भाग हें कुरुक्षेत्र-समतपंचक होय. याला प्रजापतीची उत्तरवेदि म्हणतात. हे स्थान कल्याणकारक, महापुण्यप्रद, देवांना सुमंमत आणि सर्व गुणांनी युक्त असें आहे. यास्तव येथें रणांत निघून पावलेले सर्व राजे सदोदीत पवित्र व अक्षय्य गतीस जातात. ” जनमेजया, ब्रह्मादिकांसह स्वतः इंद्रानें तेव्हां असें अभिवचन दिलें, आणि ब्रह्माविष्णु-महेश्वरांनी त्या सर्वांस अनुमोदन दिलें !

## अध्याय चौपन्नावा.

—:—

### सारस्वतोपाख्यानसमाप्ति.

वैशंपायन सांगतातः—राजा जनमेजया, मग कुरुक्षेत्र पाहून व दांनें वगैरे देऊन बलराम निघाला, तो अतिविशाल व दिव्य अशा एका आश्रमास येऊन पोचला. राजा, मधूक व आम्र या वृक्षांची जेथें बनें लागून राहिली आहेत, वडांपिंपळांची गर्दी झालेली आहे, मधून मधून चिर व त्रिल्व वृक्ष दिप्त आहेत.



आणि फणस व अर्जुन वृक्षांनी जो व्यापून गेला आहे, असा तो पुण्यलक्षणांनी युक्त असलेला श्रेष्ठ व पवित्र आश्रम पाहून, यादवश्रेष्ठ हलायुधाने 'हा कोणाचा आश्रम ?' म्हणून तेथील सर्व ऋषीस विचारिले. तेव्हां, राजा, ते सर्व त्या महात्म्यास म्हणाले, " रामा, पूर्वी हा आश्रम कोणाचा होता, हे विस्तारपूर्वक श्रवण कर. प्राचीन काळी येथे विष्णुदेवाने उत्तम तपाचरण केले. येथेच त्याचे सर्व सनातन यज्ञ विधिवत् पूर्ण झाले. येथेच एक ब्राह्मण जातीची ब्रह्मचारिणी कुमारी स्वर्गस्थ झाली. ती योगसंपन्न, मिद्धीस पोचलेली व मोठी तपस्विनी होती. तप करणे म्हणजे तिला कांहीच अवघड वाटत नसे—ते तिच्या अगदी अंगवळणी पडले होते. राजा, ती श्रीमती महात्म्या शांडिल्याची कन्या होय. ती साध्वी, व्रत उत्कृष्ट पाळणारी, इंद्रिये स्वाधीन राविलेली आणि ब्रह्मचारिणी होती. स्त्रीजनांस करण्यास अति अवघड अशी चार तपश्चर्या करून, ती देवब्राह्मणांकडून धन्यता पावलेली महाभागा येथे स्वर्गस्थ झाली ! "

राजा, ऋषींचे हे भाषण ऐकून बलराम त्या आश्रमांत गेला. मग त्या ऋषीस अभिवंदन करून, व हिमालयाच्या पार्श्वभागी सर्व संध्यावंदनादि कृत्ये उरकून तो पर्वतावर चढला; आणि फारसा दूर गेला नाही तोच त्यास एक उत्कृष्ट तीर्थ दिसले. ते प्लक्षप्रस्त्रवणतीर्थ व सरस्वतीचा प्रभाव पाहून बलरामास मोठा विस्मय वाटला. मग तेथून तो कारपवन नामक श्रेष्ठ व उत्कृष्ट तीर्थावर येऊन पोचला. राजा, महाबली हलायुधाने येथेही दानधर्म केला; पवित्र, निर्मल, आरशाप्रमाणे स्वच्छ व बर्फाप्रमाणे थंडगार अशा त्या तीर्थजलांत स्नान केले; आणि देवपितरांचे त्या तीर्थेद्वारे तर्पण केले. मग ब्राह्मण व यति यांच्यासह तो तेथे एक रात्र राहिला; आणि नंतर मित्रावरुणांच्या पुण्यकारक आश्रमास

गेला. प्राचीन काळी जेथे इंद्र, अग्नि व सूर्य यांची मैत्री जडली, त्या यमुनातीराच्या ठिकाणी तो कारपवनाहून गेला. तेथे त्या महात्म्याने स्नान केले, तेणेकरून त्याच्या अंतःकरणांत प्रेम उद्भवले; आणि तो महाबलाद्वय बलराम तेथे ऋषि व सिद्ध यांच्या मंडळीत बसून त्यांच्या मुखांतून चांगल्या चांगल्या कथा श्रवण करिता आला.

राजा, याप्रमाणे ते तेथे गोष्टी सांगत बसले असता भगवान् नारद मुनि बलरामाजवळ प्राप्त झाला. ज्याच्या मस्तकावर जटाभार आहे, ज्याची वस्त्रे अत्यंत स्वच्छ आहेत, मुवर्णाचा दंड व कमंडलु ज्याचे हातभार आहे, देव व ब्राह्मणही ज्याची पूजा करितात, आणि ज्याला कलहाची नित्य आवड असून जो मुद्दाम भांडणे लावून देतो, तो नृत्यगीतांत प्रवीण असलेला महातपस्वी नारद मुनि मधुर शब्द करणारी मनोहर कच्छपी वीणा हातांत घेऊन, श्रीमान् बसला होता त्या ठिकाणी प्राप्त झाला. त्याला पहातांच बलराम उभा राहिला; त्याने त्या व्रतस्थ मुनीचे यथासांग पूजन केले; आणि त्या देवर्षीस " कोरवांकडील वर्तमान कसे काय आहे ? " म्हणून विचारले. मग, राजा, कोरवांचा भयंकर संहार कोरे झालेला सर्व प्रकार त्या धर्मवेत्त्या मुनीने त्यास सांगितला. नंतर बलरामाने दीन वाणीने त्यास विचारले, " त्या क्षेत्राची काय स्थिति आहे, व तेथे कोण कोण राजे होते, हे सर्व सामान्यपणे मी पूर्वीच ऐकिले आहे. परंतु, हे तपोधना, इत्थंभूत हकीकत ऐकण्याची मला उत्कंठा झाली आहे. "

नारद सांगतात:—भीष्म तर आरंभीच पडले; मग द्रोण, तसाच जयद्रथ, वैकर्तन कर्ण व त्याचे महारथी पुत्र निघन पावले. त्याचप्रमाणे, रामा, भरिश्रवा व वीर्यशाली मद्रराजाही मरण पावला. हे व युद्धांत मायार न घेणारे दुसरे

महाबलादय राजे व राजपुत्र दुर्योधनाच्या विजयार्थ आपले प्रिय प्राण सोडून जागजागी पतन पावले. हे महाबाहो माधवा, ह्या मृतांची नांवनिशी सांगण्यापेक्षा जिवंत राहिलेल्यांचीच सांगतो. म्हणजे किती संहार झाला हें तुला कळेल. दुर्योधनाच्या सैन्यापैकी कृपाचार्य, कृतवर्मा व वीर्यवान् अश्वत्थामा हे तिथेच काय ते महावीर जिवंत राहिले आहेत: आणि, रामा, ते तरी काय ? त्या वेळीं भीतीनें दशदिशांस पळून गेले आहेत ! शल्य निधन पावला, आणि कृपाचार्य वगैरे पळून गेले, हें दुर्योधनानें पाहिलें, तेव्हां तो अत्यंत दुःखित होऊन द्वेषायन नामक व्हदांत शिरला; आणि तेथें जल स्तंभित करून त्यांत तो निजून राहिला असतां पांडवांनीं व कृष्णानें अनेक प्रकारें कठोर भाषणें करून त्यास सताविण्यास सुरुवात केली. रामा, ते चोहोंकडून वाक्शरांनीं प्रहार करूं लागले, तेव्हां तो बलादय वीर प्रचंड गदा घेऊन डोहांतून वर आला; आणि सांप्रत तो भीमाबरोबर लढण्यास पुढें सरसावला आहे. रामा, आज त्या दोघांचें मोठें भयंकर युद्ध होईल; तुला पाहाण्याची उत्सुकता असेल, तर, माधवा, लवकर तेथें जा. उगाच दिरंगाई करूं नको; आणि मनांत येत असेल तर आपल्या शिष्यांचें घनघोर युद्ध पहा. "

वैशंपायन सांगतात:—राजा, नारदांचें भाषण ऐकून बलरामानें त्या द्विजर्षमांची पूजा वगैरे केली; जे त्याच्याबरोबर आले होते, त्यांस अनुज्ञा दिली; आणि आपल्या सेवकांसही द्वारकेस जाण्याची आज्ञा केली. मग तो त्या वृक्षप्रस्रवण नामक पवित्र पर्वतावरून खाली उतरला; आणि महान् तीर्थमहिमा श्रवण करून मनांत संतुष्ट झालेल्या त्या रामानें विप्रांच्या सन्निध हा श्लोक गाडला.—

सरस्वतीवाससमा कुतो रतिः

सरस्वतीवाससमाः कुतो गुणाः ।  
सरस्वती प्राप्य दिवं गता जनाः  
सदा स्मरिष्यन्ति नदीं सरस्वती ॥  
सरस्वती सर्वनदीषु पुण्या  
सरस्वती लोकशुभावहा सदा ।  
सरस्वती प्राप्य जनाः सुदुष्कृतं  
सदा न शोचन्ति परत्र चेह च ॥

( सरस्वतीवर वास करीत असतां त्या स्थानाविषयी मनांत जसें प्रेम उत्पन्न होतें, तसें ते इतरत्र कोटून होणार ? सरस्वतीवासांत जे गुण आहेत, ते इतरत्र कोटून आढळणार ? फार काय सांगावें, सरस्वतीवर ज्यांना एकदां रहावयास सांपडलें आहे, ते लोक स्वर्गांत गेले तरी त्यांस एकसारखें सरस्वती नदीचें स्मरण होत राहील. सरस्वती ही सर्व नद्यांत पवित्र आहे. ती सदोदीत जनांचें कल्याण करीत असते. सरस्वतीची प्राप्ति झाल्यानंतर, लोकांस इहलोकी अथवा परलोकीही आपल्या अत्यंत भयंकर अशाही पातकाबद्दल शोक करण्याचा प्रसंग येत नाही; ते सर्व येथें भस्म होतें ! )

राजा, मग वरचेवर प्रेमानें सरस्वतीकडे पहात तो परंतप राम घोडे जोडून सज्ज असलेल्या रथांत बसला आणि त्या शीघ्रगामी रथाच्या योगानें, उपस्थित झालेलें आपल्या शिष्यांचें युद्ध पाहाण्यास उत्सुक झालेला तो बलराम जेथें तें युद्ध चाललें होतें तेथें प्राप्त झाला.

## अध्याय पंचावज्ञावा.

—:०:—

### समंतपंचकगमन.

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, अशा प्रकारें ते तुमुल युद्ध उपस्थित झालें, तेव्हां त्याविषयीं दुःख पावलेल्या धृतराष्ट्र राजानें असें विचारिलें.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, गदायुद्धास सुरुवात झाल्यावर राम जवळ आलेला पाहून माझा पुत्र भीमार्शी कसा काय लढला बरें ?

संजय सांगतो:—हे भरतकुलोत्पन्ना. राम सन्निध येतांच तुझा महाबलिष्ठ, वीर्यशाली व युद्धाची इच्छा करणारा पुत्र दुर्योधन याम मोठा हर्ष झाला. धृतराष्ट्रा. बलरामास पाहातांच युधिष्ठिरानें त्यास अभ्युत्थान दिलें. परम प्रीतीनें त्याचें यथाविधि पूजन केलें, आणि त्यास बसावयास आमन देऊन कुशल विचारिलें. मग रामानें युधिष्ठिराशी मधुर, धर्मयुक्त व शूरांच्या हिताचें अमें भाषण केलें. तो म्हणाला, “ हे राजसत्तमा. ऋषीच्या तोंडून मी अमें ऐकिलें आहे की. कुरुक्षेत्र हें परम श्रेष्ठ, पुण्य-कारक, पवित्र व स्वर्गदायक अमें असून देवता, ऋषि व थोर थोर ब्राह्मण यांनी त्याचा आश्रय केलेला होता. जे युद्धेच्छु वीर तेथें देह ठेवतील, त्यांचा इंद्राबरोबर स्वर्गांत वाम होत असतो, हें निश्चित होय. याम्त्व, राजा, आपण येथून समंतपंचकास जाऊं. देवलोकांत ती भूमि प्रजापतीची उत्तरवेदि म्हणून प्रसिद्ध आहे. राजा, त्रेलोक्यांत सर्वपेशां महापुण्यप्रद अशा त्या मनातन क्षेत्रांत युद्ध करीत असतां निधन पावले म्हणजे निश्चयानें स्वर्गलोक मिळत असतो. ”

हे महाराजा, यावर कुंतीपुत्र युधिष्ठिर “ ठीक आहे ” असें म्हणाला; आणि तो वीर्यवान् राजा समंतपंचकाकडे जाऊं लागला. मग अमर्षी व तेजस्वी दुर्योधन राजा प्रचंड गदा खांद्यावर टाकून पांडवांसहवर्तमान पायीच चालूं लागला. याप्रमाणें तो चिलवत ल्यालेला व गदा हातांत घेतलेला वीर ऐंटीनें जात असतां अंतरिक्षांतून संचार करणाऱ्या देवांनी ‘शाबास’ ‘शाबास’ असें म्हणून त्याची प्रशंसा केली. आणि जे वातिक व चारण तेथें जमले होते,

त्यांनाही दुर्योधनास पाहून हर्ष झाला. धृतराष्ट्रा, पांडवांनी घेरलेला असतांही, तो तुझा पुत्र कुरुपति दुर्योधन मत्तगजेन्द्राप्रमाणें धिमेपणानें चालला होता ! मग शंखांचे ध्वनि. भेरीचे प्रचंड शब्द आणि वीरांचे सिंहनाद यांच्या योगानें दशदिशा दुमदुमून गेल्या. नंतर ते श्रेष्ठ नग्वीर कुरुक्षेत्रास येऊन पोचले. तेथें ते तुझ्या पुत्राच्या इच्छेप्रमाणें जरा पश्चिमेकडच्या भागी गेले. तेथें सरस्वतीच्या दक्षिणतीरावर ‘स्वयन’ नामक उत्तम तीर्थ आहे; तेथील जागेंत खांचवळगे नमल्यामुळें नीच त्यांनी युद्धासाठी पसंत केली. मग कवचधारी भीमसे-नानें, जिला लांब लांब तीक्ष्ण धारा आहेत अशी गदा उचलली; तेव्हां, हे महाराजा, तो गरुडासारखा दिगं लागला. त्याचप्रमाणें, राजा, ज्यानें शिरस्त्राण बांधलें असून सुवर्णाचें कवच अंगांत चढविलें होतें, असा तो तुझा पुत्रही तेथें रणांगणांत सुवर्णाच्या मेरुपर्वतासारखा झळकत होता. समरांगणामध्यें ते चिलखतांनी तकडबंद झालेले उभयतां वीर भीमदुर्योधन क्षोभ पावलेल्या गजांसारखे भासत होते. हे महाराजा, रणमंडलाच्या मध्यभागी उभे असलेले ते नरश्रेष्ठ धाते उदय पावलेल्या चंद्रसूर्यासारखे शोभले. राजा धृतराष्ट्रा, ते क्रुद्ध गजेन्द्रांप्रमाणें एकमेकांकडे टक्कारून पहात होते; ते दोघेही भयंकर पराक्रमी असून उभयतांमही अत्यंत क्रोध चढला होता; ते दोघेही गदायुद्धांत धीमान् बलरामाचे चेले होते; आणि इंद्र व यम यांप्रमाणें त्या उभयतांचा पराक्रम अगदी समान होता. दोघेही महाबलाढ्य असून त्यांचें युद्धनेपुण्य वरुणासारखें होतें. हे महाराजा, ते युद्धामध्यें वामुदेव, बलराम आणि तसाच कुबेर यांच्या वरोवरीचे होते. राजा, मधु आणि कैटभ तसेच सुंद व उपसुंद, राम व रावण आणि

वालि व सुग्रीव या जोड्या जशा समान, तसेच ते सर्व प्रकारें समान होते. शत्रूंमधील करणारे ते वीर काल व मृत्यु यांच्या बरोबरीचे होते. ज्याप्रमाणे शरद्वृत्त एका तरुण हत्तीच्या संगमप्रसंगी मदींमत्त व बेफाम झालेले दोन प्रचंड हत्ती एकमेकांकडे पहात परस्परांवर धावून जातात ते ते एकमेकांच्या अंगावर धावत होते. जणू काय ते दोघेही क्रोधरूपी जहर विष ओकणारे भुजंगच एकमेकांकडे संतापानें पहात आहेत असा भास झाला. भरतकुलास ललामभूत असलेले ते दोघेजण पराक्रमसंपन्न व गदायुद्धविशारद असून, सिंहाच्या अंगावर चालून जाणें जसें दुर्घट असतें, तसेंच त्यांच्यावरही हल्ला करणें दुर्घट होतें. ते अतिभयंकर उत्साही वीर—ज्यांना नवें व दांत एवढीच आयुधे आहेत, असे वाघच भासत. जणू काय प्रलयकाली क्षोभलेले ते दोन दुस्तर सागरच होते. राजा, रागांनं मंगळामारखे लाल होऊन तळपत असलेले ते महारथी म्हणजे वर्षाकालीं भयंकर गर्जना व वृष्टि करणारे पूर्वपश्चिममेघच एकमेकांवर आदळले. ते महाबली तेजस्वी महात्मे भीमदुर्योधन म्हणजे दोन सहस्त्ररश्मि कालसूर्यच उदय पावलेले दिमत होते. ते वाघांसारखे खवळलेले व मेघांसारखे गर्जणारे महावीर—दोन सिंह एकमेकांवर तुटून पडत असतां हर्ष पावतात तद्वत् हर्षभरित झाले होते. ते महात्मे म्हणजे अनिशय संतापलेले दोन हत्तीच किंवा पेटलेले दोन अग्निच. अथवा शृंगयुक्त पर्वतच की काय असे दिसत होते. क्रोधावेशामुळें त्यांचे ओंठ अतिशय हालत होते; आणि ते परस्परांकडे तीक्ष्ण दृष्टीनं पहात होते. मग ते गदाधारी थोर नरवीर एकमेकांशीं भिडले. राजा, त्या वेळी प्रत्येकास अतिशय हुरूप चढला होता व ते दोघेही परममान्य होते. धृतराष्ट्रा, जातिवंत

अश्वामघाणें हिंमणारे, हत्तीप्रमाणें गर्जना करणारे व वृषभांप्रमाणें डुरकण्या फोडणारे ते नरश्रेष्ठ भीमदुर्योधन एकमेकांशीं भिडले. तेन्हां ते दोन बलान्मत्त झालेले दैत्यच भासले. मग, राजा, महात्मा कृष्ण, अमितपराक्रमी राम, केकय, संजय, महात्मे पांचाल व आपले भाऊ यांनी युक्त असलेल्या व विजयामुळें चढून गेलेल्या युधिष्ठिरास दुर्योधन असें सगर्व म्हणाला, “ पांडवहो, जमलेल्या राजांसह वर्तमान तुम्ही सर्वजण जवळच स्वस्थ बसून मी व भीम यांचें मुरू झालेलें हें युद्ध पहा ! ”

राजा, दुर्योधनाचें हें भाषण ऐकून त्यांनी त्याप्रमाणें केलें. मग ते खाली बसलेले अति मोठें राजमंडल आकाशातील सूर्यमंडलासारखें विराजमान दिसू लागलें. हे महाराजा, सर्वत्र पृथ्वी जाणारा महाबाहु श्रीमान् बलराम त्या सर्वांच्या मध्यभागी बसला होता. राजांच्या मध्यभागी बसलेला तो नीलवस्त्र परिधान करणारा तेजस्वी राम—रात्री नक्षत्रांच्या योगें शोभणाऱ्या पूर्णनिशाकरासारखा शोभला. हे महाराजा, मग ते अत्यंत दुःसह असलेले व सज्ज झालेले गदाधारी वीर उग्र वाग्भाणांनी परस्परांस ताडून करूं लागले. मग एकमेकांस पुष्कळ दुरुत्तरे बोलल्यावर ते दोघे कुरुश्रेष्ठ एकमेकांकडे टक्कारून पहात वृत्र व इंद्र यांसारखे रणांत उभे राहिले !

### अध्याय छप्पन्नाथा.

—०:—

#### गदायुद्धारंभ.

वैशंपायन सांगतात:— जनमेजया, नंतर भयंकर वाग्युद्ध झालें, त्याची हकीकत सांगण्यापूर्वी, दुःखविह्वल झालेला धृतराष्ट्र राजा काय म्हणाला, तें ऐक.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—बा संजया, ज्याचा हा

असा परिणाम होतो, त्या मनुष्यत्वाला धिःकार असे ! एकादश चमूंचा अधिपति माझा पुत्र— जो सर्व राजांना आज्ञा करीत असे व या संपूर्ण वसुंधरेचा ज्याने उपभोग घेतला, तो गदा घेऊन रणांत पायीच धावत गेला अं ! अरे, माझा पुत्र एकदां जगाचा नाथ होऊनही आज जर केवळ अनाथासारखा पायीच गदा उंच करून चालला आहे, तर हा त्याचा दैवयोगच, दुसरें काय ! बा संजया, माझ्या पुत्रास हे मोठेंच दुःख प्राप्त झालें ! असें बोलून तो दुःखार्ता राजा थांबला.

संजय सांगतो :— ज्याचा आवाज मेघा-प्रमाणें गंभीर आहे, अशा त्या वीर्यावान् दुर्योधनानें तेव्हां हर्षानें बेलाप्रमाणें दुरकण्या देत पृथापुत्रास समरांगणांत युद्धास बोलाविलें. राजा, महात्मा कुरुपति भीमास आह्वान करीत असतां नानाप्रकारचीं अति घोर दुश्चिन्हें झालीं. निर्घातांसह वारे वाहूं लागले, धुळीची वृष्टि झाली, सर्व दिशा अंधकारानें व्याप्त झाल्या, अंगावर रोमांच उठविणारे मोठ्या सोसाट्याचे भयंकर वारे सुटले, तशाच फडाफड फुटणाऱ्या शेंकडों उल्का आकाशांतून खाली पडल्या; राजा, अमावास्या नसतांही राहून सूर्यास ग्रासिलें, वृक्ष व अरण्यें यांमुद्धां सर्व पृथ्वी अति-शय कांपूं लागली; जमिनीजवळ इतके जोराचे वारे सुटले की, त्यांच्याबरोबर दगडगोटेही उडूं लागले; पर्वतांचीं शिगवेही भूमीवर कोसळून पडलीं; अनेक जातीचे मृग दशदिशांस वेगानें पळत सुटले; अतिभीषण स्वरूपाच्या, भयंकर व खवळलेल्या कोलह्या ओरडूं लागल्या,

अंगावर रोमांच उठतील असे अतिभयंकर निर्घात होऊं लागले; त्या भयंकर दिवशी, ज्यांना अशुभ गोष्टी कळतात असे मृग बाहेर पडले; चोहांकडील विहिरीचें पाणी वाढलें; आणि राजा, त्या वेळी आपोआप अंतरिक्षांत वंगरे झालेले प्रचंड ध्वनि ऐकूं येऊं लागले !

राजा, अशा प्रकारचीं चिन्हें झालेलीं पाहून, आपला ज्येष्ठ भाऊ जो धर्मराजा युधिष्ठिर त्यास भीमसेन म्हणाला, धर्मराजा, हा मदात्मा दुर्योधन रणांत मला जिकण्यास मूळीच समर्थ नाही. खांडववनावर सोडलेल्या अग्नीप्रमाणें, हृदयांत चिरकाल सांठलेला क्रोध मी आज कौरवेंद्र दुर्योधनावर सोडीन. युधिष्ठिरा, आज या पापी कुरुकुलाधमास गदेनें ठार करून, मी तुझ्या हृदयांतील शल्य उपटून काढीन. रणांगणाच्या अग्रभागी या पापकर्म्यास गदेनें ठार करून, आज मी तुझ्या गळ्यांत कीर्तिरूप माळ घालीन. या गदेनें मी आज त्याचा देह शतधा भिन्न करून टाकीन ! हे अनघा, हा कांहीं पुनः हस्तिनापुरांत जिवंत प्रवेश करणार नाही. विद्यान्यावर सर्प सोडण्याचें, अन्नांत विष घालण्याचें, प्रमाणकोटीवर पाण्यांत लेटण्याचें, जतुगृहांत जाळण्याचें, सभेंत केलेल्या उपहासाचें, सर्वस्वहरणाचें, वर्षभर अज्ञातवासाचें व बारा वर्षे वनवासाचें, या सर्व दुःखांचा मी आज शेवट करीन. हे भारता, यानें जी हीं दुःखें आम्हांस दिली, त्यांचा प्रतिकार न घडल्यामुळें एक प्रकारचें स्वतःचेंच ऋण आम्हांस झालेलें आहे. तें फेडण्याला आतां फक्त आजच्याच एका दिवसाचा अवकाश आहे. यास ठार करून मी आज आत्मऋणांतून मुक्त होणार ! हे भरत-श्रेष्ठा, आज या अकृतात्म्या दुष्ट धार्तराष्ट्राचें आयुष्य संपलें आहे आणि मातापितरांचें दर्शनही ह्यास पुनश्च होणार नाही. राजेंद्रा, आज दुर्मति कुरुपतीचें सौख्य संपलें आणि स्त्री-

१ वायुना निहतो वायुर्गगनाच्च पतत्यधः । प्रचण्ड-घोरनिर्घापो निर्घात इति कथ्यते ॥ वाऱ्यावर वारा आपटून आकाशांतून खाली आला असतां जो प्रचंड व भयंकर नाद होतो, त्याला 'निर्घात' असे म्हणतात.

जनांचें दर्शनही आटोपलें ! कुरुराज शंतनूच्या वंशास कलंक लावणारा हा पातकी आज आपले प्राण, ऐश्वर्य व राज्य सोडून भूतलावर शयन करील ! आज मी दुर्योधनाला मारिल्याचें ऐकतांच, धृतराष्ट्र राजाला तें शकुनीच्या बुद्धीस लागून केलेलें अशुभ कर्म आठवेल !”

हे राजशार्दूला, असें बोलून तो वीर्यशाली भीम गदा हातांत घेऊन वृत्रास आह्वान करणाऱ्या इंद्रासारखा युद्धास उभा राहिला. इकडे दुर्योधनही गदा सरसावून पुढें झाला. तेव्हां गदा उंच केल्यामुळें सशृंगकेलामाप्रमाणें दिसणाऱ्या दुर्योधनास पाहून खवळलेला भीमसेन पुनः त्यास म्हणाला, “ राजा धृतराष्ट्राचें व तूं आपलेंही वारणावतांतील तें अत्यंत दुष्टपणाचें कर्म आठव. रजस्वला द्रौपदीस मभेमध्ये तुम्ही जे अत्यंत क्लेश दिले, तूं आणि शकुनीनें घृतांत धर्मराजास जें ठकविलें, तुझ्यामुळें आम्हांस अरण्यांत जें महद्दुःख भोगावें लागलें, आणि विराटनगरांत वेप पालटून राहणाऱ्यांत आम्हांस जे कष्ट झाले, त्या सर्वांचें, हे दुर्मते, मी आज तुजवर उमनें काढीन ! बरा सांपडला आहेम ! अरे, तुझ्यामाठी हा रथिश्रेष्ठ प्रतापी गंगानंदन शिष्वंडीच्या हातून निघन पावून शरशय्येवर पडला ! तुझ्याचसाठीं द्रोण, व कर्ण व तसाच प्रतापशाली शल्य ठार झाला ! वैराग्नीचा आदिजनक जो सुबलपुत्र शकुनि तोही मरून गेला ! द्रौपदीला क्लेश देणारा पापी प्रतिकामीही ठार झाला ! आणि प्रख्यात लढवय्ये व शूर असें तुझे सर्व भाऊ निघन पावले; हे व दुसरे पुष्कळ राजे तुजसाठीं बळी पडले; आणि तुलाही मी आज या गदेनें निःसंशय ठार करणार !”

राजेंद्रा, याप्रमाणें उच्चस्वरानें बोलणाऱ्या त्या वृकोदरास तुझा सत्यपराक्रमी पुत्र निर्धास्तपणें म्हणाला, “ अरे वृकोदरा, पुष्कळ बडबड

कशाला ? लढायाला लाग. कुलाधमा, मी आज तुझी युद्धाची रगच जिरवून टाकतो ! अरे, तुझ्यासारख्या यःकश्चित् मनुष्यानें मोठमोठ्यानें आरडून ओरडून भिवविण्याजोगा हा दुर्योधन क्षुद्र नाही, समजलास ! व्यर्थ बडबडीला भिणारे सामान्य पुरुष निराळेच असतात. देवांपासून संपादिलें गदायुद्ध एकदां तुजबरोबर खेळावें, ही माझी फार दिवसांपासून इच्छा आहे; आणि माझ्या हृदयांत वास करणारी ही इच्छा सुदैवानें आज पूर्ण होण्याची संधि आली आहे ! दुर्मते, पुष्कळ बडबड व आत्मश्लाघा कशाला करतोस ? या बोलण्याप्रमाणें कृति करून दाखव, उगाच वेळ दवडूं नको !” राजा, त्याचें तें भाषण ऐकून तेथे जमलेल्या सर्व राजांनी व सोमकांनी त्याची प्रशंसा केली. याप्रमाणें सर्वांनी अतिशय स्तुति केली असतां, कुरुनंदन दुर्योधनाचा रोमनूरोम स्फुरण पावून, त्यानें युद्धाचा दृढ निर्धार केला. तेव्हां त्या मातंगाप्रमाणें उन्मत्त झालेल्या असहिष्णु दुर्योधनास पुनः टाळ्यांच्या गजरांनें राजांनी अतिशय चैव आणिला, इतक्यांत इकडून महात्मा पंडुपुत्र भीमसेन त्या महाथोर धार्तराष्ट्रावर वेगानें धावला; तेव्हां लगेच हत्ती गर्जू लागले, घोडे हिंसू लागले, आणि जयैषी पांडवांची शस्त्रेही प्रदीप्त दिसूं लागली !

## अध्याय सत्तावन्नावा.

—३०:—

### गदायुद्ध.

संजय सांगतो:—नंतर, राजा, भीमसेन याप्रमाणें चालून आलेला पाहून थोर मनाचा दुर्योधन गर्जना करीत मोठ्या वेगानें त्यास सामोरा झाला; आणि मग ते दोघेजण शृंगयुक्त वृषभांप्रमाणें एकमेकांवर तुटून पडले असतां त्यांनी एकमेकांवर जे प्रहार केले,

त्यांपासून निर्धातध्वनीसारखा भयंकर आवाज झाला. राजा धृतराष्ट्रा, इंद्रप्रल्हादांप्रमाणें एकमेकांस जिंकू पहणाऱ्या त्या उभयतांचें अंगावर कांटा उठेल असें तुंबळ युद्ध जुंपलें; आणि ते उदार मनाचे गदाधारी महात्मे नख-शिखात रक्तानें मागून फुललेल्या पळसांमारखे दिसूं लागले. याप्रमाणें त्यांचें तें अतिदारुण महायुद्ध सुरू झालें असतां गदांच्या आघातां-बरोबर एकसारख्या ठिणग्या उडूं लागल्या; व त्या योगें आकाश जसें कांहीं काजव्यांच्या थव्यांनींच सुशोभित झाल्यासारखें दिसूं लागलें. याप्रमाणें तें अत्यंत तुंबळ व हातवाईचें युद्ध चाललें असतां, ते दोघेही अरिंदम लढतां लढतां अगदी थकून गेले, आणि मुहूर्तपर्यंत विसावा घेत स्वस्थ बसले. मग किंचित विसावा मिळतांच पुनः आपल्या उत्कृष्ट गदा उचलून ते एकमेकांशीं भिडले. राजा, ते दोघेही महावीर्यशाली नरपंथ चांगले तज्ज्ञेतां झाले होते; दोघांचेही हातांत गदा असून त्यांचा पराक्रमही समान होता; आणि एका तरुण हस्तिणाच्या हेतूनें परस्परांवर तुटून पडणाऱ्या दोन बलाढ्य व मदोन्मत्त गजांसारखे ते दिसत होते. त्यांस पाहून देव, गंधर्व व मानव या सर्वांसच परम विस्मय वाटला. राजा, त्या भीमदुर्योधनांनी गदा उचलल्या आहेत अशा स्थितीत त्यांस पाहून, यांपैकी कोण विजयी होईल, याविषयी सर्वांसच संशय पडला. मग, बलवंतांत वरिष्ठ असे ते भाऊ पुनः एकमेकांशीं भिडले; आणि एकमेकांस मारण्याची संधि पहात पवित्रे करूं लागले. राजा, भीमसेनाची ती अवजड व केवळ यमदंडोपम प्राणघातक अशी भयंकर गदा म्हणजे इंद्राचें उगारलें वज्रच आहे असें पहाणारांस भासलें. भीमसेन रणांत गदा फिरवीत अमतां मुहूर्तपर्यंत घोर व अति-

तुंबळ शब्द चालाय होता. राजा, तो गदा फिरविणारा शत्रु भीमसेन व त्याची ती अनुल वेगानें फिरणारी गदा पाहून क्षणभर दुर्योधनही विस्मित झाला; आणि हे भारता, एकंदरीत तो नानाप्रकारची मंडलें व मार्ग करणारा वीर वृकोदर त्या वेळीं फारच शोभला.

नंतर, राजा, ज्याप्रमाणें दोन मांजरे भक्ष्यार्थ एकमेकांवर तुटून पडतात, त्याप्रमाणें ते वीर आपआपल्या रक्षणाविषयी दक्ष राहून एकमेकांशीं भिडले व परस्परांवर वस्त्रेवर प्रहार करूं लागले. भीमसेनानें पुष्कळ प्रकारचे मार्ग दाखविले; तशीच विचित्र प्रकारचीं मंडलें व पुढें चाल, पीछेहाट वेगरे प्रकार मोठ्या सफाईनें चालविले. चमत्कारिक अस्त्रयंत्रें, निरनिराळीं स्थानें, शस्त्रांची फेक, शस्त्र चुकविणें, डावी किंवा उजवी घालणें, वेगानें समोर धावून येणें, प्रतिरोध करणें, स्थिर उभें रहाणें, पुनः युद्ध करणें, शत्रूवर प्रहार करण्यासाठीं चोहोंकडून धावणें, शत्रूच्या धावण्यास अवरोध करणें, प्रहार चुकविण्यासाठीं खाली पडणें किंवा उंच उडी मारणें, पुढें येऊन प्रहार करणें, मार्ग वळून मागच्या हातानेंच फटका लगावणें, इत्यादि प्रकार ते गदायुद्धविशारद वीर एकसारखे करीत होते. राजा, ते परस्परांस जोरांनें हाणीत एकमेकांचे प्रहार चुकवीत, प्रतिपक्ष्यास चकवीत आणि पुनः मंचार करूं लागत. त्या दोघांसही युद्धाचा अतिशय सराव असून अंगांत उत्तम ताकत असल्यामुळे त्यांनीं पुष्कळ मंडलें केली. याप्रमाणें रणांगणांत चोहोंकडे युद्धचमत्कार दाखवितां दाखवितां त्यांनीं एकदम एकमेकांवर गदाप्रहार केले. त्या वेळीं, हे महाराजा, ते रक्ताची आंबोळ झालेले वीर—

१ शत्रूस वर किंवा बाजूस फेकण्याचे प्रकार.  
२ निरनिराळे पवित्रे.

एकमेकांशीं भिडून शुंडाप्रहार करणाऱ्या दोन गजांप्रमाणें शोभले. हे परंतपा, याप्रमाणें त्या सायंकाळच्या वेळी त्यांचें इंद्रवृत्रांसारखें घोर युद्ध झालें. राजा, मग ते बलाढ्य गदाधारी पुनः मंडले घेऊं लागले. दुर्योधन उजव्या बाजूनें मंडल करूं लागला आणि भीम डाव्या बाजूनें वळला. हे महाराजा, भीमसेन याप्रमाणें रणांत डावें मंडल फिरत असतां, दुर्योधनानें त्याच्या कुशीत प्रहार केला. परंतु भीमानें तिकडे लक्षही दिलें नाही ! तो प्रहार आपल्या विसगणतीतही नाही, असें दाखवीत भीमसेन आपली अवजड गदा फिरवूं लागला. हे महाराजा, त्या वेळी भीमसेनाची ती गदा इंद्रधनुष्याप्रमाणें घोर व उगारलेल्या कालदंडासारखी भासली. भीमसेन गदा फिरवीत आहे असें पाहून तुझ्या परंतप पुत्रानेंही आपली भयंकर गदा फिरविण्यास मुरुवान करून तिनें भीमाच्या गदेवर टोला दिला ! तेव्हां, राजा, तुझ्या पुत्राची गदा गरगर फिरत असतां तिजमुळें जो वायु उत्पन्न झाला, त्याच्या वेगामुळें अत्यंत तुंबळ असा शब्द व तेजही उत्पन्न झाले. सुयोधन विविध मार्ग व मंडले भागशः करीत होता; त्या वेळी तो तेजस्वी वीर भीमसेनाहूनही विशेष शोभला. राजा, भीमसेन होती नव्हती तेवढ्या शक्तीनें आपली प्रचंड गदा फिरवूं लागला; आणि अत्यंत भयंकर व मोठा आवाज करणाऱ्या त्या गदेनें आपल्या वृमण्याच्या वेगानें धूर व ज्वाला यांनी युक्त असा अग्नि उत्पन्न केला ! राजा, भीमसेन गदा फिरवीत आहे असें पाहून सुयोधनही आपली पोलादी अवजड गदा फिरवूं लागला; तेव्हां तो फारच शोभला. त्या महात्म्याच्या गदा-मरुताचा वेग पाहून पांडवांस व सर्व सोमकांस मोठें भय पडलें. मग रणांगणात चौहोंकडे युद्धक्रीडा दाखवितां दाखवितां त्या अरिद-

मांनीं एकाएकीं एकमेकांवर गदांचे प्रहार केले, त्याबरोबर त्यांच्या अंगावर रक्ताचा शिडकाव झाला; आणि, हे महाराजा, ते वीर दांतांनी लढणाऱ्या हत्तींप्रमाणें शोभले. याप्रमाणें त्या संध्याकाळच्या वेळी त्यांचें ते इंद्रवृत्रांच्या युद्धासारखें क्रूर, घनघोर व अनिवार युद्ध झालें.

मग, राजा, भीम व्यवस्थेनें उभा आहे असें पाहून तुझा महाबली पुत्र फारच आश्चर्यकारक मार्ग करीत त्याजवर धावला. त्या वेळीं त्याला अत्यंत संताप चढला होता. राजा, इकडे भीमही खवळला होताच. त्यानें सुयोधनाच्या त्या सैन्याचा मुलामा दिलेल्या व मोठ्या वेगानें फिरणाऱ्या गदेवर तडाका मारला ! तेव्हां, हे महाराजा, त्यांच्या आघाताबरोबर, फेंकलेल्या दोन वज्रांचाच आघात झाल्याप्रमाणें त्या ठिकाणीं ठिगण्या उडाल्या आणि प्रचंड गडगडाटही झाला. हे महाराजा, भीमसेनानें जोरानें फेंकलेली ती गदा जेव्हां वेगानें खाली पडूं लागली, तेव्हां पृथ्वीही कंपित झाली. पण आपल्या गदेचा रणांत पाडाव झाला हें दुर्योधनास खपलें नाही. एक मत्त हत्ती दुसऱ्या मत्त हत्तीस पाहातांच जसा खवळून जातो तसा तो खवळला; आणि त्यानें त्याचें उसनें फेडण्याचा निश्चय केला; व लगेच उजवें मंडल घेऊन उडी मारली आणि भयंकर वेगानें भीमाच्या डोक्यांत गदा घातली ! परंतु, राजा, आश्चर्य हें की, तुझ्या पुत्रानें गदेचा एवढा तडाका दिला तरी त्या पंडुपुत्रानें नुमती मानही हालविली नाही ! गदेचा तो आघात झाला असतां भीमसेन एक पाऊलभरही चळला नाही, हें पाहून सर्वास विस्मय वाटला आणि त्यांनी त्याची प्रशंसा केली. मग भीमपराक्रमी भीमसेनानें अधिक जड अशी आपली सुवर्णपरिष्कृत उज्ज्वल गदा दुर्योधनावर फेंकली. परंतु महाबली दुर्योधनानें बिलकूल न गडबडतां मोठ्या चलाखीनें



तो प्रहार चुकविला ! तेव्हां तेंही एक आश्चर्यच झालें ! राजा, भीमानें फेंकलेली व मोठा गडगडाट करीत येणारी ती गदा व्यर्थ जाऊन जेव्हां जमिनीवर पडली, तेव्हां पृथ्वी हादरून गेली. मग, गदा खाली पडली आणि भीमसेन फसला गेला असें जाणून, दुर्योधनानें जेणेंकरून प्रतिपक्ष्यास चीड येईल अशा पुनःपुनः उड्या मारिल्या; आणि अशा प्रकारें भीमास अगदी बेफाम करून त्याच्या वक्षःस्थलावर मोठ्या जोरानें व संतापानें गदाप्रहार केला ! गदेचा तडाका वसतांच भीमसेन रणांगणांत भांबावून गेला आणि पुढें काय करावयाचें हेंही त्यास क्षणभर मुचेनासें झालें. राजा, अशी त्याची अवस्था होतांच सोमक व पांडव यांच्या आशा बहुतेक मावळल्या आणि त्यांचीं अंतःकरणें उदास होऊन गेलीं. परंतु इतक्यांत, त्या प्रहारानें बेफाम झालेल्या हत्तीसारखा तो वृकोदर—एक हत्ती दुसऱ्या हत्तीवर धावतो त्याप्रमाणें—तुझ्या पुत्रावर धावून आला; आणि, राजा, वनगजावर झडप घालणाऱ्या सिंहाप्रमाणें वेगानें तुझ्या पुत्रावर झडप घालून, गदेची फेंक करण्यांत कुशल असलेल्या त्या पंडुपुत्रांनं दुर्योधन राजाजवळ येऊन त्याच्या कुशीवर नेम धरून गदा हाणली. त्या वेळीं, राजा, दुर्योधन त्या तडाक्यानें विव्हल झाला. आणि त्यानें भूमीवर गुदघे टेकले ! हे जगत्पते. कुरुकुलश्रेष्ठ दुर्योधन गुदघ्यांवर येतांच सृंजयमंडळींत मोठा हंशा पिकला. परंतु, हे भरतश्रेष्ठा, सृंजयांचा तो हर्षशब्द ऐकतांच तुझ्या पुत्राचा संताप झाला. तो लगेच उठला; आणि महाभुजंगाप्रमाणें फूत्कार टाकीत जणू भीमसेनास जाळतोच कीं काय अशा प्रकारें डोले लाल करून त्याकोडे पाहूं लागला. मग तो गदा घेतलेला भरतश्रेष्ठ एकदम भीमसेनावर धावला, तेव्हां जणू काय हा त्याचें मस्तक चूर्णच करून टाकणार की

काय असा भास झाला ! मग भीमपराक्रमी सुयोधनानें त्याच्या आंखावर तडाका दिला, परंतु तो पर्वततुल्य वीर नुसता चळलाही नाही ! गदेच्या प्रहारानें त्याच्या मस्तकांतून रक्ताचा प्रवाह निघाला; आणि तेणेंकरून, ज्याच्या गंडस्थलांतून मद गळत आहे अशा हत्तीप्रमाणें तो पृथापुत्र अधिकच शोभला ! मग त्या शत्रुकर्षक पार्थाग्रजानें वीरांस ठार करणारी व इंद्रधनुष्याप्रमाणें शब्द करणारी आपली लांखंडी गदा घेऊन मोठ्या बलानें शत्रूस चीत करून त्यावर प्रहार केला. तेव्हां, राजा, वनांत प्रफुल्लित शालवृक्ष वायुवेगानें उलथून पडावा त्याप्रमाणें तुझ्या पुत्राचें चिलखत खिळखिळें होऊन तो जमिनीवर पडला ! मग काय विचारातां ? तुझा पुत्र जमिनीवर पडलेला पाहून पांडव मोठ्यानें गजेना करूं लागले व हंसू लागले ! परंतु इतक्यांत तुझा पुत्र पुनः शुद्धीवर येऊन डोहांतून बाहेर येणाऱ्या हत्तीसारखा एकदम उभा राहिला. राजा दुर्योधनाचा देहस्वभाक्च असा होता की, त्यास कोणाचीच वरचढ सहन व्हावयाची नाही. शिवाय तो तसाच पराक्रमीही होता. त्यानें लगेच निष्णात वीराप्रमाणें घेर घेऊन समोरच असलेल्या वृकोदरावर प्रहार केला. त्याबरोबर त्याचें शरीर विव्हल होऊन तो भूमीवर पडला ! याप्रमाणें स्वसामर्थ्यानें भीमास जमिनीवर पाडून कौरवाधिपति सुयोधनानें सिंहनाद केला आणि गदेच्या तडाक्यानें त्याचें वज्रतुल्य चिलखतही फोडिलें ! तेव्हां अंतरिक्षांत देव व अप्सरा यांचा मोठा गलका होऊं लागला आणि त्यांनीं सुयोधनावर चित्रविचित्र पुष्पांची उत्तम वृष्टि केली. ते वेळीं, राजा,, नरश्रेष्ठ वृकोदर भूमीवर असून त्याच्या अत्यंत बळकट चिलखताचाही भेद झाला आहे, आणि दुर्योधनाचें बल बिलकूल क्षीण होत नाही, असें पाहून शत्रूस भयाची

धडकी बसली. नंतर मुहूर्तभराने वृकोदर शुद्धी-  
वर आला; त्याने आपले रक्ताने भरलेले तोंड  
पुसले, धैर्याचा अवलंब केला, डोळे बटारले आणि  
बळाने शरीर सावरून तो उभा राहिला !

### अध्याय अट्ठावन्नावा.

---:०:---

#### दुर्योधनवध !

संजय सांगतो:—राजा, याप्रमाणे त्या  
कुरुमुख्यांचा संग्राम असा चांगला रंगास आलेला  
पाहून अर्जुन हा यशस्वी कृष्णास म्हणाला,  
“ जनार्दना, या दोघां वीरांच्या युद्धामध्ये तुला  
अधिक कोण वाटतो, अथवा कोणाचा कोणता  
गुण अधिक आहे, ते मला सांग. ”

वासुदेवाने उत्तर दिले:—दोघांचे शिक्षण  
सारखेच आहे; परंतु भीम अधिक बलवान्  
आहे आणि दुर्योधन हा त्याच्यापेक्षा अधिक  
घटलेला व प्रयत्नशील आहे. भीमसेन जर  
धर्माने लढेल, तर त्यास जय मिळणार नाही.  
परंतु जर अन्यायाने युद्ध करील, तर खात्रीने  
सुयोधनास ठार करील. देवांनी युद्धां कपटानेच  
दैत्यांस जिंकिले, म्हणून आह्मी ऐकिले आहे.  
इंद्राने विरोचनास मायेनेच जिंकिले आणि त्याने  
वृत्राचे तेज देखील मायेनेच लोपविले ! म्हणून  
म्हणतो, भीमानेही कपटप्रचुर असा पराक्रम  
करावा ! शिवाय, धनंजया, द्यूताचे वेळीं  
भीमाने तशी प्रतिज्ञाही केली आहे की,  
“ युद्धांत मी तुझी मांडी गाढेच चूर्ण करीन ! ”  
अर्जुना, असे तो तेव्हां सुयोधनास म्हणाला  
होता, तर या वेळीं शत्रुकर्षक वृकोदराने ती  
आपली प्रतिज्ञा पूर्ण करावी, म्हणजे झाले.  
राजा दुर्योधन तरी मायावीच आहे. तेव्हां  
उलट भीमानेही त्याचे मायेनेच तुकडे उडविले  
पाहिजेत. जर भीम हा केवळ आपल्या बळा-  
वर भिस्त ठेऊन न्यायाने लढू लागेल, तर

राजा युद्धिष्ठिर संकटांत पडेल, यांत संशय  
नाहीं. अर्जुना, मी तुला पुनः सांगतो, ऐक.  
धर्मराजाच्या अपराधामुळेच पुनश्च आपणांस  
भय उत्पन्न झाले आहे. एवढा थोर उद्योग  
केला, भीष्मप्रभृति कौरवांचा निःपात उडविला,  
जय मिळविला, उज्जल कीर्ति पसरली, आणि  
वैराचे उसने पुरापूर उगवून निघाले, एवढे सर्व  
होऊन विजय अगदी हातांत आल्यासारखा  
झाला असतां धर्माने तो संशयांत घातला !  
खरोखरच अर्जुना, धर्माला ही मोठीच दुर्बुद्धि  
आठवली. अशा प्रकारचे हे घोर युद्ध करून  
जे मिळविले, ते ‘ केवळ एकाला जिंकले असतां  
हारवीन ’ असे म्हणून त्याने हे युद्ध पणास  
लाविले ! तेव्हां काय म्हणावे ? दुर्योधन हा  
मोठा घटलेला वीर आहे. शिवाय त्याचे काय ?  
तो आज जिवावर उदार आहे ! अर्जुना, पुरातन-  
काली भार्गव शुक्राचार्याने तत्त्वार्थाने भरलेला  
असा एक श्लोक म्हटला आहे, तो मी  
तुला सांगतो.

**पुनरावर्तमानानां भजानां जीवितैषिणाम् ।**

**भेतव्यं अरिशेषाणामेकायनगता हि ते ॥ १ ॥**

जिवाची इच्छा करणारे पण एकदां भज  
पावले असून पुनः उलटून येणारे असे जे  
शत्रूकडील उरलेले लोक, ते थोडे असले तरी  
त्यांचे भय धरोंवे. त्यांकडे दुर्लक्ष करू नये.  
कारण, त्यांचे सर्व लोक मेल्यामुळे त्यांस  
कोणाचीही आशा राहिलेली नसते. एक मारीन  
किंवा मरेन, एवढाच विषय त्यांच्या दृष्टीपुढे  
असतो, आणि जिवावर उदार असल्यामुळे, ते  
थोडे असले तरी बहुतांस भारी असतात.  
ज्यांनी धाडसाने उडी घातली आहे व जे  
जिवावर उदार आहेत, त्यांच्या पुढे उभा राह-  
ण्यास इंद्रही समर्थ नाही. बाबारे, सुयोधनाची  
सांप्रत अशीच स्थिति आहे. त्याचे सर्व सैन्य  
मरून गेले; आणि हताश होऊन तो डोहांत

शिरला; तो पराभव पावला, राज्य मिळविण्याची त्याची पूर्ण निराशा झाली, आणि ज्यासाठी जगावें अशी कोणतीच गोष्ट न राहून, आयुष्याचे उरलेले दिवस कंठण्यासाठी तो वनांत जाण्याची इच्छा करूं लागला. अशा स्थितीत कोणता शहाणा मनुष्य त्यास द्वंद्वयुद्धास आह्वाण करील बरें? ज्याने त्रयोदश वर्षेपर्यंत सारखा गदायुद्धाचा सराव चालविला आहे, आणि भीमसेनास ठार मारण्याच्या हेतूने जो सांप्रत ऊर्ध्वमार्गाने व तिर्यग्मार्गाने संचार करित आहे, त्या ह्या दुर्योधनाने आपल्या हातीं आलेले राज्य परत हिसकून न घ्यावें म्हणजे झाले! छे छे, पार्था, जर महाबाहु भीम यास अन्यायाने न मारील, तर हा कौरव दुर्योधनच आपला राजा होईल!

राजा धृतराष्ट्रा, महात्म्या केशवाचे हे शब्द ऐकून, भीमाचे लक्ष आहे असे पाहून अर्जुनाने आपली डावी मांडी हाताने ठोकली! तेव्हां भीमाने लगेच ती खूण जाणली; आणि तो गदा घेऊन रणांत संचार करूं लागला. त्याने विचित्र प्रकारची मंडलें व दुसरी यमकें केली; डावें, उजवें व गोमूत्रक मंडल केलें; आणि तो जसा काहीं प्रतिपक्षास भूल पाडीतच रणांत संचार करूं लागला. राजा, तुझा गदामार्ग-विशारद पुत्रही भीमास ठार करण्याच्या हेतूने चित्रविचित्र व चलाखीचे मार्ग दाखवूं लागला. त्या वेळीं, राजा, चंदनागर. चर्चिलेल्या घोर गदा फिरविणारे, वैराचा अंत करूं पाहणारे, रणांत यमाप्रमाणे खवळलेले आणि परस्परांस ठार करूं इच्छिणारे ते नाणावलेले वीर—नागरूपी आमिषासाठीं भांडणाऱ्या दोन गरुडांप्रमाणे घिरट्या घालूं लागले. राजा, विचित्र मंडलें घेणाऱ्या त्या भीमदुर्योधनांच्या गदा एकमेकींवर आदळून उंच ज्वाला उठत; वादळांने खवळलेले दोन समुद्र एकदम एकमेकांवर

आदळतात त्याप्रमाणे ते दोघे शूर व बलवान वीर तेथें रणांगणांत एकदम एकमेकांशीं भिडून प्रहार करित; त्यांच्या गदा एकमेकींवर आपटत; आणि ते दोघेही मत्तमातंगतुल्य वीर अगदीं बरोबरीचे असल्यामुळे प्रहाराबरोबर गदांच्या आघातांचा भयंकर गडगडाट होई! याप्रमाणे तेव्हां अत्यंत भयंकर व हातघाईची हाणामारी चालली असतां, शत्रूस दमविणारे ते दोघेही वीर लढतां लढतां अगदीं थकून गेले. मग, परंतपा, मुहूर्तमात्र विसावा घेऊन ते पुनः आपल्या मोठ्या गदा घेऊन त्वेषाने एकमेकांशीं भिडले. नंतर, राजेंद्रा त्यांचे भयंकर स्वरूपाचे व अनिवार युद्ध झाले. ते गदांच्या तडाक्यांनीं परस्परांस घायाळ करित होते. ज्यांचे नेत्र वृषभांसारखे आहेत, असे ते चपल वीर वेगांने रणांत धावले; आणि चिखलांत उभे असलेले दोन रेडे परस्परांवर तुटून पडतात, त्याप्रमाणे त्यांनीं एकमेकांवर शिस्त धरली. त्यांचे सर्व अवयव प्रतिपक्षाच्या प्रहारांनीं जर्जर झाले; ते रक्ताने न्हाऊन निघाले; आणि हिमालयावरील प्रफुल्ल पळसांसारखे दिसूं लागले. मग भीमाने अवधिदेतांच दुर्योधन काहींसा हर्ष पावून एकदम पुढें सरसावला. पण तो रणांत जवळ आला असे पाहातांच शहाण्या व बलवंत वृकोदरांने त्यावर मोठ्या वेगांने गदा फेंकली! परंतु, राजा दुर्योधनही कमी नव्हता! भीम गदा फेंकतो आहे असे पाहतांच तो तेथून चलाखीने बाजूला सरला, त्यामुळे ती गदा विफल होऊन भूमीवर पडली! हे कुरुसत्तमा, याप्रमाणे तो प्रहार चुकवून तुझ्या पुत्राने मोठ्या लगबगीने भीमावर गदेचा टोला दिला! त्याबरोबर जो रक्ताचा प्रवाह चालला त्यामुळे व प्रहाराच्या जोरातून त्या अमितसामर्थ्यावान् भीमालाही मूर्च्छा आल्यासारखें झालें, परंतु त्याची तशी अवस्था झाल्याचे दुर्योधनाचे लक्षांत

आले नाही; व भीमसेन आपले तें अत्यंत पीडित झालेले शरीर तसेंच संभालून उभा होता, तेव्हां तो जणू आतां आपणावर रणांत प्रहार करण्याचेच विचारांत आहे, असें दुर्योधनास वाटले आणि त्यामुळे त्याने त्यावर पुनः मारा केला नाही. नंतर मुहूर्तपर्यंत तसाच विसावा घेऊन प्रतापी भीमसेन समोरच उभा असलेल्या दुर्योधनावर वेगानें धावला. हे भरतर्षभा, तो अमित-पराक्रमी वीर स्वबळून धावत येत आहे असें पहातांच तुझ्या पुत्रानें त्यास झुकांडी देण्याचा विचार केला; आणि, राजा, वृकोदर अगदी जवळ येतांच त्यास फसविण्यासाठीं उंच उडी मारण्याचा त्यानें बेत योजिला. परंतु एकंदर धोरणावरून वृकोदरानें तो बेत ताडला; व एकदम जोरानें धावून त्यानें सिंहासारखी मोठी गर्जना केली. आणि इकडे तिकडे वळून प्रहार चुकविणाऱ्या व आतां उंच उडी मारू पाहाणाऱ्या दुर्योधनाचे मांड्यांवर जोरानें गदा फेंकली. राजा, भीमानें झुगारलेल्या त्या वज्रतुल्य गदेनें दुर्योधनाच्या दोन्ही सुंदर मांड्या मोडून गेल्या! आणि याप्रमाणें भीमसेनाच्या हातून मांड्या चूर्ण झालेला तो तुझा नरव्याघ्र पुत्र पृथ्वी दणाणवीत तीवर पडला! तो पडतांच निर्घृतांसह वारे जोरानें वाहूं लागले; धुळीची वृष्टि झाली; आणि वृक्ष, झुडपे व पर्वत यांसुद्धां सर्व पृथ्वी कंपित झाली! तो सर्व राजांचा अधिराज पतन पावतांच एक प्रदीप्त, भयंकर व मोठी उल्का जोरानें कडाडत येऊन धाडकन् जमिनीवर पडली! त्याचप्रमाणें, हे भारता, तो पृथ्वीपति पडला असतां इंद्रानें धुळीची व रक्ताची वृष्टि केली; अंतरिक्षांत यक्ष, राक्षस व पिशाच यांचा मोठा गलबला चाललेला ऐकूं येऊं लागला; आणि, राजा, त्या घोर शब्दांत चोहोंकडे चाललेले श्वापदांचे व पक्ष्यांचे शब्द मिसळून सर्वत्र अतिभयंकर असा एकच

कोलाहल माजला. हे भारता, तुझा पुत्र पडतांच तेथें अवशिष्ट असलेले घोडे, हत्ती व मनुष्ये मोठ्याने आक्रोश करूं लागलीं, आणि त्याबरोबरच भेरी, शंख व मृदंग यांचा प्रचंड ध्वनि सुरू झाला, तो भूमीच्या आतील वाजूसही कोंदाटला. ज्यांना पुष्कळ पाय व पुष्कळ हात असून जीं दिमण्यांत अकाळविकाळ आहेत, अशीं भयंकर कबंधें नाचूं लागून, त्यांनीं तें रणांगण सर्व दिशांनीं व्यापिलें. ध्वज-युक्त (स्थान बसलेले), अस्त्रसंपन्न व शस्त्रधारी वीरही, राजा, तुझा पुत्र पतन पावला असतां चळचळां कांपूं लागले! विहिरी व डोह यांतून रक्ताचे फवारे उडूं लागले! नद्या फारच वेगानें व खळबळाट करीत वाहूं लागल्या, आणि स्त्रिया पुरुषांसारख्या व पुरुष स्त्रियांसारखे झाले! राजा, तुझा पुत्र दुर्योधन पडला त्या वेळीं ते अद्भुत उत्पात पाहून पंचाल व पांडव या सर्वांचीच मनें उद्दिग्ध होऊन गेलीं. हे भारता, मग गंधर्व, अप्सरा व देव तुझ्या पुत्राचें ते अद्भुत युद्ध वर्णन करीत आपआपल्या उद्दिष्ट स्थली जाते झाले; आणि तसेच, राजेंद्रा, सिद्ध, वातीक व चारण हेही त्या नरश्रेष्ठांची प्रशंसा करीत आपल्या वाटेनें निघून गेले!

## अध्याय एकुणसाठावा.

—:—

### युधिष्ठिरविलाप !

मंजय सांगतो:—राजा, उंच वाढलेल्या शालवृक्षाप्रमाणें त्यास पाडिलेले पाहातांच सर्व पांडव मनांत अतिशय हर्ष पावून तिकडे अवलोकन करूं लागले; आणि सर्व सोमकही हर्षभरित होऊन, सिंहानें पाडलेल्या उन्मत्त मातंगासारख्या त्या दुर्योधनाकडे पाहूं लागले. इकडे, दुर्योधनास मारिल्यानंतर प्रतापी भीमसेन त्या लोळविलेल्या कौरवाधिपतीजवळ

जाऊन म्हणाला, “ मंदा, पूर्वी सभेत एकवखा द्रौपदीस उद्देशून “गायरे गाय” असें तूं हास्यपूर्वक आम्हांस म्हणाला होतास, तें आठ-वर्ते काय? दुर्मेते, त्या अवहासाचें फळ आज पुरापुर भोग !” असें म्हणून तेथें त्यानें डाव्या पायानें दुर्योधनाचे मस्तकावर लाथ मारिली, आणि त्या राजर्षभाचें मस्तक पायानें उलथेंपालथें केलें ! त्याचप्रमाणें, राजा, तो क्रोधानें लाल झालेला परबलमर्दक भीमसेन पुनः त्यास जें बोलला तें श्रवण कर. तो म्हणाला, “ मूढा, पूर्वी जे गायरे गाय करीत आम्हांपुढें नाचत होते, त्यांचेचपुढें आज आम्ही ‘गायरे गाय’ म्हणत मिरवत आहों ! कपटाचा घाला. अग्नि, अक्षयूत किंवा ठकबाजी यांपैकी कशाचाही आम्ही उपयोग केला नाही. तर केवळ स्वतःचे बाहुबलाच्या जोरांनें शत्रूची रग जिरविली !” नंतर, राजा, तो वैराचे अगदीं शेवटास जाऊन पोंचलेला वृकोदर पुनः सावकाश हंसून युधिष्ठिर, कृष्ण, संजय, अर्जुन व नकुलसहदेव ह्यांस म्हणाला, “ ज्यांनीं रजस्वला द्रौपदीस सभेत आणिलें, आणि तेथें तीस भरसभेत वस्त्रहीन केलें, ते धार्तराष्ट्र याज्ञसेनीच्या तपःप्रभावेकरून पांडवांनीं रणांत ठार केले आहेत पहा ! धृतराष्ट्र राजाच्या ज्या क्रूर पुत्रांनीं पूर्वी आम्हांस ‘पोंचट तीळ’ म्हणून हिणविलें, ते तर आम्हीं सगण सपरिवार ठार मारिले ! आतां आम्हांस स्वर्ग मिळेल किंवा पाहिजे तर आम्ही नरकास जाऊं, तो भाग निराळा !” मग, राजा, भूमीवर पडलेल्या त्या दुर्योधन राजाचे खांद्यावरील गदा हिसकून त्यानें पुनः त्याचें मस्तक डाव्या पायानें तुडविलें ! आणि तो त्यास टोंचून बोलला ! राजा, हर्षवेश चढलेल्या क्षुद्र मनाच्या भीमसेनानें कुरुश्रेष्ठ दुर्योधन राजाचे मस्तकावर पाय दिलेला पाहून पांडवांकडील मंडळींत जे

धर्मात्मे होते त्यांनीं कांहीं त्यास चांगलें म्हटलें नाहीं. याप्रमाणें भीमसेन तुझ्या पुत्रास ठार करून अहंपणाचीं भाषणें करीत अनेक प्रकारें नाचत असतां धर्मराजत्यास म्हणाला, “ अरे, चांगल्या अथवा वाईट—कशाही प्रकारचीं कृत्यें करून तूं एकदांचा वैराचा सूड उगविलास, आणि कशी तरी प्रतिज्ञा शेवटास नेलीस. पण आतां पुरे कर ! याचें मस्तक पायानें तुडवूं नको. तेणेंकरून तूं धर्म उलंघिला असें होईल. हे निष्पापा, हा राजा व आपला भाऊबंद आहे. याची अशी विटंबना करणें न्याय्य नाहीं. अरे, हा एकादश चर्मचा स्वामी व कौरवांचा अधिपति आहे. या राजाचे व आपल्या भावाचे मस्तकास पादस्पर्श करूं नको. भीमा, या राजेश्वराचे बंधु मेले, अपत्य मेले, सर्व सैन्य नष्ट झालें आणि अशा स्थितीत हा युद्धांत मरण पावला आहे ! त्यापेक्षां सर्व प्रकारें याबद्दल कळवळा येणें योग्य आहे. हा उपहासास बिलकूल पात्र नाहीं. ज्याचे मंत्री, भ्राते व पुत्र मरून गेले, आणि सर्व प्रकारें ज्याचा विध्वंस उडाला, असा हा आपला विकलांग झालेला भ्राता आहे. याचा तूं अवमान केला, हें कांहीं तूं बरोबर केले नाहींस. अरे पूर्वी ‘हा भीमसेन धर्मात्मा’ असें तुला लोक म्हणत असत; आणि, भीमा, तोच तूं राजाचे मस्तकावर पाय देऊन उभा आहेस हें काय ? ”

राजा, याप्रमाणें युधिष्ठिर भीमसेनास म्हणाला व मग त्याचा कंठ दाटून आला; आणि तो शत्रूचीं हाडें मऊ करणाऱ्या दुर्योधनाजवळ जाऊन त्यास लीनपणें म्हणाला, “ बा दुर्योधना, आमचा राग मानूं नको, किंवा तूं स्वतःसही दूषण देणें बरोबर नाहीं. अरे, हें खडतर पूर्वसंचितक भोगावें लागत आहे ! हे कुरुसत्तमा, तूं आमचें आणि आम्ही तुझें जे हाडवैर धरलें होतें, तें दुष्ट व खडतर फळ



त्याने डाक्या पायांना दुर्गोधनाचे ममकावर लाथ मारिली. (शाल्यापत्र पृष्ठ १३८.)



ब्रह्मदेवानेंच आपल्या भाळीं लिहिलें होतें. हे भारता, लोभ, गर्व व बालिशता या गुणांनीं आणि केवळ स्वतःच्या अपराधामुळें तुला हें अशा प्रकारचें महत्संकट प्राप्त झालें. तूं प्रथम आपले मित्र, भाऊ, वडील, पुत्र, पौत्र व दुसरे साथीदार यांचा घात करविलास, आणि मग मरण पावलास. तुझ्याच अपराधामुळें आम्हांस तुझ्या भावांस मारणें भाग पडलें; आणि दुसरे भाऊबंद वगैरे ठार झाले ते तरी तुझ्याच अपराधामुळें ! हें जरी खरें आहे, तरी त्यास कांहीं उपाय नव्हता. कशानेंही हें टळलें नसतें, अशी माझी समजूत आहे. यास्तव याबद्दल वाईट वाटून घेऊं नको. शिवाय, हे निष्पापा, तूं स्वतःबद्दलही शोक करण्याचें कारण नाही. कारण, तुला अभिनंदनीय अशा प्रकारचें मरण आलें आहे. हे कुरुकुलोत्पन्ना, सांप्रत आमची स्थितिच सर्व प्रकारें शोचनीय आहे. प्रियबांधवां-वांचून आतां आम्हांस सदोदीत मुणें मुणें होणार ! पुत्र व बांधव यांच्या शोकानें विह्वल झालेल्या व धाय मोकलून रडणाऱ्या त्या विधवांना आतां मी कसें तोंड दाखवूं ? राजा, खरोखर तुझीच एकट्याची स्थिति उत्तम आहे ! तुला स्वर्गांत स्थान मिळणार, हें निश्चित आहे. आम्ही मात्र येथेच नरकासारखें दारुण दुःख भोगणार ! आणि धृतराष्ट्राच्या विह्वल झालेल्या शोकग्रस्त व विधवा सुना आणि तशाच नात-सुना आमची खरोखर निंदा करणार ! ”

संजय सांगतो:—राजा, असें म्हणून त्या धर्मपुत्र युधिष्ठिर राजानें अत्यंत दुःखातें होऊन निःश्वास सोडला आणि पुष्कळ वेळ विलापही केला.

### अध्याय साठावा.

—:—

### बलदेवक्रोधसांत्वन.

धृतराष्ट्र विचारितो:—सूता, राजा दुर्योधन

अधर्मानें मारिला गेला हें पाहून यादवश्रेष्ठ महाबलाढ्य बलराम त्या वेळीं काय म्हणाला ? तो गदायुद्धांत वाकबगार आहे इतकेंच केवळ नव्हे, तर त्यांतील एकूण एक खांचीखोची तो जाणतो. तेव्हां, संजया, या प्रसंगीं त्या रोहिणी-पुत्रानें काय केलें, तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा, भीमसेनानें तुझ्या पुत्राचे मस्तकावर लत्ताप्रहार केला असें पाहतांच तो वीराप्रणी बलवान् राम फारच कोपला; आणि सर्व राजांच्या मध्यभागीं एकदम हात उंच करून व भयंकर आरोळीं ठोकून म्हणाला, “ धिःकार, धिःकार असो ह्या भीमाला ! अहो, धर्मयुद्ध चाललें असतां यानें बैबीच्या खालच्या भागीं प्रहार केला, त्यापेक्षां धिःकार असो याला ! भीमानें केलें असलें नीच कृत्य गदा-युद्धांत कोणी केलेलें आजवर कधींच अवलोकनांत नाहीं. ‘ बैबीचे खालचे बाजूस प्रहार करूं नये ’ हा शास्त्राचा नियम आहे. हा भीम केवळ अडाणी—याला शास्त्राचें बिलकूल ज्ञान नाहीं. हा मनसोक्त वर्तन करितो ! ”

राजा, असें बोलतां बोलतां त्याला फारच संताप चढला. मग, हे महाराजा, तो दुर्योधनाकडे पाहून व रोषानें डोळे लाल करून बोलू लागला, “ कृष्णा, हा केवळ माझ्या तोडीचा शत्रु, हा पडला असें समजूं नको. आश्रिताचे दुर्बलतेमुळें यजमानाची निंदा होते. यास्तव मला तिचें निराकरण केलेंच पाहिजे ! ”

राजा, असें बोलून तो बलराम नांगर उचलून भीमावर धावला. तेव्हां हात उंच केलेल्या त्या महात्म्याचें रूप फारच विचित्र अशा त्रिशूल श्वेतपर्वतासारखें दिसलें. या-प्रमाणें तो धावत येत असतां केशवानें विनयानें पुढें येऊन मोठ्या प्रयत्नानें आपल्या पुष्ट बाहुंनीं त्यास घट्ट धरलें. त्या वेळीं एक गौर व दुमरा श्यामवर्ण अमे ते दोघे यादवश्रेष्ठ,



पौर्णिमेच्या दिवशी सूर्यास्तसमयी आकाशांत दिसणाऱ्या चंद्रसूर्याप्रमाणे फारच शोभिवंत दिसले. मग कृष्ण त्या संतप्त बलरामास शांत करीत म्हणाला, “ दादा, हे काय ? अहो, वृद्धि सहा प्रकारची मानतात. ( १ ) आपली स्वतःची वृद्धि, ( २ ) आपल्या शत्रूचा नाश. ( ३ ) आपल्या मित्राचा उत्कर्ष, ( ४ ) त्याच्या शत्रूची हानि, ( ५ ) आपल्या मित्राच्या मित्राचा उदय आणि ( ६ ) त्या मित्र-मित्राच्या शत्रूचा विनाश, असे आपल्या उत्कर्षाचे सहा प्रकार आहेत. आतां याच्या उलट जेव्हां आपली किंवा आपल्या मित्राची स्थिति होते, तेव्हां मन उद्विग्न व्हावे. परंतु या वेळीं तसें काय आहे ? हा प्रकार आपणांस लवकर शांतिकारक होवो. शुद्ध पौरुषाचे पांडव हे स्वाभाविकच आपले मित्र आहेत; शिवाय ते आपले आप्त-अतिभाऊ-आहेत; आणि त्यांस शत्रूंनीं अतिशयच वाईट रीतीनें वागविलें आहे. येथें प्रतिज्ञा पाळणें हाच मी क्षत्रियांचा धर्म समजतो. ‘ महायुद्धांत मुयोधनाच्या मांड्या गदेनें चूर्ण करीन ! ’ अशी पूर्वीच सभेमध्ये भीमानें प्रतिज्ञा केली होती. शिवाय मेत्रेय महर्षीनें “ हे परंतपा, भीमसेन गदेनें तुझ्या मांड्या फोडील ! ” असा दुर्योधनास शाप दिला होता. यास्तव, हे प्रलंबारे, यांत कांहीं दोष झाला, असें मला वाटत नाही. आणि तशांतून कांहीं झाला असला, तरी रागावणें आपणांस बरें नाही. कारण, पांडवांचे मातामह व आपले पितामह एक असल्यामुळे त्यांचा-आपला एका रक्तामांसाचा संबंध आहे; तसाच अर्जुन हा आपला मेहुणा, हा दुसरा निकट संबंध; आणि ते व आपण एकमेकांस सुख देणारे अकृत्रिम स्नेही, हा तिसरा संबंध. अशा अनेक प्रकारें त्यांचा व आपला इतका निकट संबंध जडलेला आहे

कीं, त्यांचा उत्कर्ष झाला असतां तेणेंकरून आपलाही उत्कर्ष होणार आहे. यास्तव, दादा, शांत व्हा, रागावू नका ! ”

राजा, वासुदेवाचे भाषण ऐकून धर्मवेत्ता बलराम म्हणाला, “ संत धर्माचे आचरण करितात. तो धर्म दोन गोष्टींनीं हीन होत असतो. एक अर्थानें आणि दुसरा कामानें. अतिलोभ्याचा अर्थ व अतिविषयी मनुष्याचा काम हे धर्मबाधक होतात. जो मनुष्य सुख-लालसेनें ( कामानें ) धर्माधीन धक्का लागू देत नाही, अर्थ साधण्यासाठीं धर्मकाम बुडवीत नाही, आणि केवळ धर्माचे पाठीस लागून कामार्थावर पाणी सोडीत नाही, तर धर्म, अर्थ व काम या तिघांचेही एकसमयावच्छेदेकरून समसमान सेवन करितो, तोच आत्यंतिक सुख भोगतो. येथें तर भीमानें धर्माची पायमल्ली करून सर्वच घोंटाळा उडविला आहे. गोविंदा, तूं कांही तरी लटपटपंची करून आपलें म्हणणें सिद्ध करीत आहेस; बाकी हें तुझें बोलणें बिल-कूल धर्मास अनुसरून नाही ! ”

कृष्ण म्हणाला:—दादा, तुम्ही धर्मात्मे व धर्माचे मोठे केवारी अमून तुम्हाला राग कधीच येत नाही, अशी तुमची लोकांत प्रसिद्धि आहे. यास्तव, दादा, या वेळींही आपण क्रोध करू नका, शांत व्हा. आतां कलियुग प्राप्त झालें आहे, हें मनांत आणा, व भीमाची प्रतिज्ञाही लक्षांत घ्या. म्हणजे त्याचे कृत्य वाईट व पापाचे असलें तरी तितकें संतापकारक नाही, असें आपणासही वाटे. असो; झालें तें झालें ! भीमाची प्रतिज्ञा तरी एकदांची शेवटास जावो आणि तो या वैराच्या मुडांतून पार पडो ! ”

संजय सांगतो:—राजा, केशवाचे तोंडून धर्माची पायमल्ली झालेली ऐकून रामास बरें वाटलें नाही आणि तो त्या सभेंत म्हणाला, “ धर्मात्म्या मुयोधन राजास मारून हा भीम

जगांत 'कपटयोधी' म्हणून प्रसिद्ध होईल ! याची निंदा होईल ! आणि धर्मशील दुर्योधन राजास शाश्वत गति प्राप्त होईल ! राजा दुर्योधन सरळ मार्गानें लढतां लढतां मारला गेला आहे. त्यानें युद्धदीक्षा घेऊन, रणांत प्रवेश करून, मोठा रणयज्ञ विस्तारून व शेवटीं शत्रुरूप अग्नीत स्वतःचेंही हवन करून कीर्तिरूपी अवभृथ जोडलें !” इतकें बोलून तो प्रतापी रौहिणेय रथांत बसून द्वारकेकडे निघून गेला ! राजा, राम द्वारकेकडे गेला तेव्हां वार्ष्णेयांसह पांचाल व पांडव ह्यांस जरा वाईट वाटलें; युधिष्ठिर तर दीनासारखा खालीं मान घालून चिंता करीत बसला होता; आणि शोकागुळे त्याचा निश्चय पार दासळला होता. अशी त्याची स्थिति पाहून वामुदेव त्यास असें बोलला.

वामुदेव म्हणाला:—धर्मराजा, अरे, तूं अधर्मीला कशी संमति दिलीस ? ज्याचा कोणी वाली उरला नाही, अशा या निश्चेष्ट पडलेल्या दुर्योधनाचें मस्तक भीम पायानें तुडवीत असतां, राजा, तूं मोठा धर्मज्ञ असतांना नुस्ता पहात कसा राहिलास ?

युधिष्ठिर म्हणाला:—कृष्णा, भीमानें क्रोधा-वेशांत जो राजाचे मस्तकास पादस्पर्श केला, तो मला आवडला असें मुळीच नाही ! हा असा कुलक्षय झाला असतां मला तरी कांही हर्ष होत नाही ! तथापि मी भीमाची जरा उपेक्षा केली, त्यास तसेंच कारण होतें. धृतराष्ट्राच्या पुत्रांनीं आम्हांस कपटांनै नित्य छळलें आणि पुष्कळ कठोर भाषणें करून वनांत धाडलें, तें दुःख भीमसेनाच्या मनांत अतिशय डांचत होतें आणि त्यामुळेच त्याचा संताप अनावर झाला होता; हें मनांत आणून मी तेव्हां त्याची उपेक्षा केली इतकेंच ! बाकी मला तें मुळीच मानवलें नाही ! कृष्णा, या मूर्ख, कामी व लोभी दुर्यो-

धनास ठार करून भीमास जो काय धर्म किंवा अधर्म घडला असेल तो असो !

धृतराष्ट्रा, धर्मराजा असें म्हणाला तेव्हां यदुकुलाग्रणी वामुदेव मोठ्या संकटांनै “ बरे, असें कां होईना ! ” इतकेंच बोलला. भीमाचें प्रिय व हित करावें अशी इच्छा करणाऱ्या त्या वामुदेवानें असें म्हटलें; आणि त्यानें रणांत जें जें कांही केलें, त्या सर्वांस अनुमोदन दिलें. राजा, भीमसेन तुझ्या पुत्रास रणांत ठार करून हर्षभरित झाला होता; त्याचे डोळे हर्षानें टव-टवीत झाले होते; आणि स्वतःच्या विनयाचा त्यास अभिमान होता. मग तो पुढें येऊन धर्म-राजासमोर प्रणाम करून व हात जोडून म्हणाला, “ महाराज, आज सुखमय व निष्कं-टक झालेली ही संपूर्ण पृथ्वी आपली आहे; तीवर राज्य करा आणि स्वधर्माचें परिपालन करा. हे पृथ्वीपते, या वैराचा आदिजनक जो कपटप्रिय दुर्योधन, तो हा येथें जमिनीवर मरून पडला आहे. भयंकर दुर्भोषणें करणारे ते दुःशासनप्रभृति सर्व भाऊ व कर्ण, शकुनि वगैरे आपले सर्व शत्रु ठार झाले; आणि, महाराज, रत्नांनी भरलेली ही वनपर्वतांमुद्धां अखिल पृथ्वी निःशत्रु झालेल्या आपल्या ताब्यांत आली आहे ! ”

युधिष्ठिर म्हणाला:—राजा दुर्योधन मेलला, आणि त्याचे बरोबर वैराचाही अंत झाला ! श्रीकृष्णाच्या सल्लामसलतीप्रमाणें वागून आम्ही ही वसुंधरा जिंकली. भीमा, मुदेवानें तूं मातेच्या व द्रौपदीच्या अशा उभयतांच्या कोपांतून अतृणी झालास ! मुदेवानें तुझा शत्रु मारला गेला आणि तुला जय मिळाला !

## अध्याय एकसष्टावा.

—:०:—

### पांडव व कृष्ण आणि दुर्योधन यांचा संवाद.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, भीमसेनानें युद्धांत दुर्योधनास मारिलेलें पाहून पांडव व संजय यांनी काय केलें ?

संजय सांगतो:—हे महाराजा, सिंहांने मत्तवनगज मारावा, त्याप्रमाणें भीमानें रणांत दुर्योधनास मारिल्याचें पाहातांच कृष्णासह पांडव, पांचाल व संजय हे मनांत अतिशय हर्ष पावले; तो कुरुराज पडतांच त्यांचा हर्ष हृदयांत मावेनासा होऊन ते उत्तरीय वस्त्रें फडकावू लागले; सिंहनाद करू लागले; आणि त्या हर्षाच्या भरांत आलेल्या वीरांस धागण करणें ह्या पृथ्वीस जड वाटू लागलें ! कोणी धनुष्ये हालवू लागले, कांहीं ज्या ओढू लागले, कित्येक मोठमोठे शस्त्र फुंकू लागले, कांहीं जणांनीं दंडुभि वाजविण्यास सुरुवात केली, दुसरे कित्येक उड्या मारू लागले, आणि, राजा, तुझे कित्येक शत्रु मोठ्यानें हंसू लागले ! ते वीर भीमास वारंवार म्हणाले, “ भीमसेना, अतिशय घटलेल्या अशा या कौरवेंद्रास रणांत गदेनें ठार करून तूं आज एक फारच मोठें व दुष्कर कर्म केलेंस ! घनघोर लढाईत इंद्रानें वृत्राचा वध केला त्याच तोडीचें हें तुझें कृत्य—हा शत्रूचा वध—होय, असें लोकांस वाटलें ! दुर्योधन काय सामान्य वीर होता ? विविधमार्ग व सर्व प्रकारचीं मंडलें करणाऱ्या त्या शूरास वृकोदरावांचून दुसरा कोण मारता ? इतरांस अतिशय दुर्गम असा जो वैराचा अंत, तेथें तूं जाऊन पांचलास ! खरोखर, हे वीरा, संग्रामाच्या शिरोभागी तूं जो मत्तगजेंद्रासारखा पराक्रम केलास, असला पराक्रम इतरांच्या हातून होणें अशक्य आहे ! तूं सुदैवानें दुर्योधनाचें मस्तक पायांनें ठेंबलेंस;

आणि, हे अनघा, सिंहांनें टोणग्याचें रक्त प्राशन करावें, त्याप्रमाणें तूं उत्कृष्ट संग्राम करून सुदैवानें दुःशासनाचें रक्त प्यालास ! भीमा, थोर भाग्यायोगें तुझी अतिशय मोठी कीर्ति जगभर पसरली आहे. वृत्रासुर मारला गेला तेव्हां बंदिजनांनीं इंद्राची अशीच स्तुति केली होती; आणि हे भारता, शत्रूचा निःपात करून मोकळा झालेल्या तुजेंही आम्ही तसेंच अभिनंदन करीत आहों ! भीमा, दुर्योधनाचा वध झाल्यामुळें, आमच्या रोमनूरोमास जो आनंद झाला आहे, तो अनूनही मावळत नाहीं पहा ! ”

राजा, हर्षानें बहकून गेलेले जे लोक भीमास भोंवतीं जमले होते ते त्यास असें म्हणाले. याप्रमाणें पांडवांसह सर्व नरश्रेष्ठ पांचाल हर्षानें वेडे होऊन भलभलतें बडबडत असतां कृष्ण त्यांस म्हणाला, “ नराधिपहो, मेलेल्या शत्रूवर आणखी प्रहार करणें न्याय्य नाही. वारंवार केलेल्या भयंकर दुर्भाषणांनीं हा दुर्योधन आधींच मेल्या आहे. ज्याचे साह्यकर्तेही दुष्टच होते, असा हा इष्टमित्रांचा उपदेश न ऐकणारा, निलाजरा, लोभी व पातकी जेव्हां विदुर, द्रोण, कृपाचार्य व भीष्म परोपरी विनवीत असतांही त्यांचें न ऐकतां, पांडवांस वडिलाजित राज्याचा हिस्सा साफ देत नाहीं म्हणाला, तेव्हांच हा दुष्ट ठार झाला आहे ! ह्या अत्यंत दीन झालेल्या व केवळ काष्ठवत् पडलेल्या पातक्याशीं बोलून काय करावयाचें आहे ? नृपहो, चला, रथावर आरूढ व्हा. आपण सत्वर जाऊं चला. आपल्या थोर पूर्वपण्याईनें हा पापात्मा अमात्य, ज्ञातिबंधव कौरवे सर्वासह ठार झाला ! चला, निघा लवकर ! ”

राजा, कृष्णानें आपली अशा प्रकारें अव-  
हेलना केलेली ऐकून दुर्योधन राजाच्या अंगाचा तिळपापड झाला आणि तो एकदम उठला !

त्याने. कमर टेंकून व कोपरांवर जोर घेऊन मान वर उचलली आणि भिवया चढवून तो वासु-  
देवाकडे डोळे वटारून पाहू लागला. त्या वेळीं,  
राजा, शैषटी तुटलेला सर्प जसा दिमतो तसेंच  
त्या अर्धवट बसला राहिलेल्या क्रुद्ध राजाचें  
रूप दिसलें, त्याला प्राणांतिक घोर वेदना होत  
होती, तथापि क्रोधावेशांत तीही विसरून तो  
वासुदेवास उग्र वाणीनें म्हणाला, “ अरे कंस-  
दासाच्या पोरा, तूं मला जें अधर्मानें युद्धांत  
मारविलें, त्याची तुला लाज वाटत नाही ?  
' मांड्यावर प्रहार कर ' अशी भीमास लबाडीनें  
आठवण देण्यासाठीं तूं अर्जुनाशीं जें बोललास,  
तें मला कळलें नाहीं असें तूं समजतोस काय ?  
सरळ सरळ मार्गानें लढणाऱ्या हजारां राजांस  
अनेक कुटिल उपायांनीं मारूनसवरून तुला  
लज्जा वाटत नाहीं, आणि रोजरोज अशीच  
ठकवाजीनें शूर वीरांची भयंकर कत्तल करतांना  
तुला दयामायाही येत नाहीं, त्या तुला काय  
म्हणावें ? लज्जा व दया यांची तुला ओळखही  
नाहीं. शिखंडीला पुढेंकरून पितामह भीष्माला  
मारविलेंस; त्याचप्रमाणें, हे सुदुर्मते, अश्वत्थामा  
नांवाचा एक हत्ती मारून आचार्यांकडून शस्त्र  
खालीं ठेवविलेंस, हें काय मला माहीत नाहीं ?  
हा घातकी धृष्टद्युम्न वीरशाली आचार्यांचा शिर-  
च्छेद करीत असतां तूं उघड्या डोळ्यांनीं  
चांगला पहात होतास, पण कांहीं त्याचें निवा-  
रण केलें नाहींस ! पंडुपुत्र अर्जुनाचे वधासाठींच  
म्हणून मागून घेतलेली शक्ति ज्या तूं घटोत्क-  
चावर व्यर्थ दवडविलीस, त्या तुजपेक्षां अधिक  
पापी कोण असणार आहे ? तसाच तो बलाढ्य  
भूरिश्रवा हात तुटून जाऊन प्रायोपवेशन करून  
बसला होता, पण तुझ्याकडेच पाठविलेल्या  
महात्म्या सात्यकीनें त्याचा घात केला ! पार्थास  
जिकण्याच्या हेतूनें थोर पराक्रम करणाऱ्या  
कर्णाच्या मात्यांतील पन्नगेंद्र अश्वसेन व्यर्थ

घालवून, त्याचें चाक रुतलें असतां व तो तें  
उचलण्यांत गुंतला असतां तूं त्या नराग्रणीस  
रणांत पाडविलेंस ! जर मी, कर्ण आणि भीष्म-  
द्रोण या चौघांशीं तूं सरळ मार्गानें लढला  
असतास. तर तुझा विजय कदापि होता ना !  
परंतु त्वां अनायानें स्वधर्मानें वागणाऱ्या आमचा,  
राजांचा व इतरही वीरांचा कुटिल मार्गानें  
घात करविलास ! ”

वासुदेव म्हणाला:—हे गांधारीपुत्रा, पाप-  
मार्गानें चालणारा तूं भाऊ, मुल्यो, आप्त-इष्ट,  
मित्र व सर्व सैन्ये यांसह ठार झालास ! तुझ्याच  
दुष्कृत्यामुळें वीर भीष्मद्रोण मारले गेले; आणि  
तुझ्या मताप्रमाणें वागणारा कर्णही तुझ्याचमुळें  
रणांत पडला ! मूढा, मी याचना करीत असतां  
तूं लोभामुळें व शकुनीच्या बुद्धीनें पांडवांस त्यांचें  
स्वतःचें राज्य व वडिलाजित राज्याचा हिस्सा  
दिला नाहीं ! तूं भीमसेनाला विष चाल्लेस  
आणि सर्व पांडवांना त्यांच्या मातेसह जतु-  
गृहांत जाळण्याचा प्रयत्न केलास ! हे सुदु-  
र्मते, द्यूताचे वेळीं रजस्वला द्रौपदीस तूं  
जेव्हां भरसभेंत ओढलेंस, तेव्हांच, दुष्टा  
निलेज्जा, तुला ठार करावयास पाहिजे होतें ! धर्म-  
राजास अक्षज्ञान नसतां त्यास अक्षपटु शकुनी-  
कडून कपटांनें जिकिलेंस, यासाठीं तुला युद्धांत  
मारिलें ! पांडव वनांत तृणबिंदूच्या आश्रमांत  
रहात असतां, ते मृगयेस गेल्यावर पापी जय-  
द्रथानें द्रौपदीस क्लेश दिले आणि एकट्या बाल  
अभिमन्यूस तुझ्या दोषांमुळें बहुतांनीं रणांत  
मारिलें, म्हणून तुझा वध केला ! जीं जीं अकार्यें  
आम्हीं केलीं म्हणून म्हणतोस, तीं तीं सर्व  
तुझ्या अत्यंत नीचपणामुळेंच आह्मांस करणें प्राप्त  
झालें. अर्थात् तें सर्व तुझ्या दोषांनींच घडवून  
आणलें ! उशाना बृहस्पतीचा उपदेश त्वां ऐकिला  
नाहीं, वृद्धांचा सन्मान ठेविला नाहीं, व त्यांचें  
योग्य सांगणेंही मानिलें नाहीं ! तुला अत्यंत

बलवान् अशा लोभानें व तृष्णेनें ग्रासलें होतें; म्हणून तू पुष्कळ वाईट कृत्यें केलींस, त्यांचें आतां फळ भोग ! ”

यावर दुर्योधनानें उत्तर दिलें:—मी अध्ययन केलें आहे, विधिपूर्वक दानधर्म केला आहे, समुद्रवलयोक्त पृथ्वीवर अधिकार गाजवीत होतां, आणि शत्रूंच्या मस्तकावर पाय दिला होता! अशा माझ्याहून उत्तम प्रकारें मरणारा कोण आहे? स्वधर्मानें वागणाऱ्या क्षत्रियांना इष्ट असें हें युद्धांत मरण मला प्राप्त झालें आहे; याहून उत्तम प्रकारें मरणारा कोण आहे? राजांसही दुर्लभ असे मनुष्यलोकचे व केवळ देवांस योग्य असेही सर्व भोग आणि उत्कृष्ट ऐश्वर्य मी उपभोगिलें; त्या मजहून उत्तम प्रकारचें मरण कोणाला प्राप्त होणार आहे? अच्युता, मी तर आपले इष्टमित्र व सर्व चाकरनोकर यांसुद्धां स्वर्गास जाणार! विफल-मनोरथ झालेले तुम्ही खुशाल येथें रडत रहा!

संजय सांगतो:—राजा, धीमान् कुरु-राजाचें हें निधनकालचें भाषण होतांच त्यावर पुण्यगंधी पुष्पांची फारच मोठी वृष्टि झाली! गंधर्व अति मनोहर वाद्यें वाजवूं लागले! अप्सरा त्या राजाचें उत्कृष्ट यश गाऊं लागल्या! आणि, राजेंद्रा, सिद्धही त्यास “उत्तम उत्तम” असें म्हणूं लागले! पुण्यगंधानें युक्त व सुखकारक असा वारा झुळझुळ वाहूं लागला! दिशा प्रसन्न झाल्या! आणि आकाश स्वच्छ होऊन वैद्यरत्नासारखें झळळू लागलें!

राजा, ह्या अत्यंत अद्भुत गोष्टी व सुयोधनाची देवांनी केलेली स्तुति पाहून ते वासुदेवपुरोगम सर्व पांडव लज्जित झाले! आणि भीष्म, द्रोण, कर्ण व तसाच भूरिश्रवा अधर्मानें मारला गेला, हें ऐकून ते शोकात होऊन त्यांबद्दल शोक करूं लागले. याप्रमाणें पांडव दीन होतसाते चिंता करीत आहेत असें पाहून,

मेघ किंवा दुंदुभि यांसारख्या आवाजाचा कृष्ण त्यांस म्हणाला, “पांडवहो, हा अति जलद अखें सोडणारा दुर्योधन आणि ते सर्व महा-पराक्रमी महारथी समरांगणांत सरळ युद्धांनं तुम्हांकडून मारले जाणें केवळ अशक्य होतें. या दुर्योधन राजाला धर्मयुद्धांनं मारणें मुळींच शक्य नव्हतें; आणि तसेच ते भीष्मप्रभृति सर्व महाधनुर्धर महारथी तुम्हांस केवळ अजिंक्य होते. यासाठींच मी वारंवार अनेक युक्ति-प्रयुक्ति योजून नानाउपायांनीं तुमच्या हितार्थ त्या सर्वांचा रणांत वध करविला. जर रणांत असा हा कुटिलमार्ग मीं अंगीकारिला नसता, तर तुमचा विजय कोठून होता? आणि मग तुम्हांस राज्य व धन तरी कोठचें मिळालें असतें? ते भीष्मप्रभृति चारही महात्मे या लोकचे अतिरथी होते! लोकपाल जरी खाली उतरते, तरी धर्म-युद्धांनं त्यांस मारण्यास समर्थ न होते! मग तुमची काय कथा? तमाच हा कधीही न दमणारा गदाधारी दुर्योधन—याला प्रत्यक्ष दंड-धारी यमाच्यानेही धर्मयुद्धांत जिंकलें नसतें! या शत्रूस असें मारविलें ही गोष्ट तुमच्या मनास लागून राहाण्याचें कांहीं कारण नाहीं. तुम्ही हें मनांत आणूंच नका. शत्रु पुष्कळ व अधिक बलवान् असले म्हणजे ते अशाच उपायांनी मारवे लागतात! असुरांस मारणाऱ्या देवांपासून हा असाच मार्ग चालत आला आहे, आणि याच संतसंमत मार्गानें सर्व चालतात. चला, आपण कृतकृत्य झालों! संन्याकाळही झाला आहे, तेव्हां आतां आपण शिबिरास जाऊं आणि नृपहो, घोडे, हत्ती व रथ यांसुद्धां आपण सर्वजण विश्रांति घेऊं.”

हे भरतर्षभा, वासुदेवाचें भाषण ऐकून तेव्हां पांडवांसह पांचालास अतिशय हर्ष झाला; सिंहांच्या कळपांत गर्जना चालाव्या त्या-प्रमाणें ते गर्जना करूं लागले; आणि दुर्योधन





अर्जुन म्हणाला, “गोविंदा, हे भगवन्, हा रथ अग्नीवांचून कसा  
जळावा !” ( शल्यपर्व पृष्ठ ११३ )

मेलेला पाहून आनंदित झालेल्या त्या लोकांनीं मग शंख वाजविले, व माधवानेही पांचजन्य फुंकला !

### अध्याय बासष्टावा.

—:०:—

#### अर्जुनरथज्वलन !

संजय सांगतो:—मग, राजा, हर्षभरित झालेले ते सर्व दीर्घबाहु वीर शंख वाजवीत राजाच्या शिबिरास जाऊं लागले. हे पृथ्वीपते, पांडव आपल्या शिबिराकडे येत असतां महाधनुर्धर युयुत्सु व सात्यकि त्यांचे मागून चालले होते; पण धृष्टद्युम्न, शिखंडी, सर्व द्रौपदीपुत्र आणि इतर सारे वीर इकडे न येतां ते आपल्या शिबिरास गेले. मग, राजा, जेथील मगर बाहेर काढला आहे अशा डोहाप्रमाणें निर्भय, उत्सव बंद पडलेल्या नगराप्रमाणें उदास, प्रेक्षक निघून गेलेल्या रंगभूमीप्रमाणें भयाण, आणि निस्तेज व राजहोन अशा दुर्योधनाच्या गोटांत पांडव येऊन पोचले. त्या वेळीं तेथें स्त्रिया व पंडित मुख्यत्वे होते आणि कांही वृद्ध मंत्री होते. राजा, पांडव तेथें जातांच, दुर्योधनापुढें चालणारे बंदिजन हात जोडून त्यांच्या सेवेस सादर झाले. हे महाराजा, आंत जातांच रथिश्रेष्ठ पांडव आपआपल्या रथांखाली उतरले. मग गांडीवधारी पार्थाचें प्रिय व हित करण्यास अतिशय झटणारा कृष्ण त्यास म्हणाला, “हे निष्पापा पार्था, आपलें गांडीव धनुष्य व अक्षय्य असे हे दोन मोठे भाते रथाखाली काढ, म्हणजे मग मी खाली उतरेन, हे भरतसत्तमा, तूंही आधींच खाली उतर. तेंच तुला हितावह आहे.” राजा, तेव्हां पांडुपुत्र वीर धनंजयानें तसें केलें; आणि मग बुद्धिमान् श्रीकृष्णही घोड्यांचे लगाम सोडून देऊन अर्जुनाच्या रथाखाली उतरला.

राजा, तो थोर महात्मा भूतनाथ श्रीहरि खाली उतरतांच पार्थाच्या ध्वजावरील हनुमान् गुप्त झाला; तों लगेच द्रोण व कर्ण यांनीं दिव्य अस्त्रांनीं दग्ध केलेला तो रथ अग्नीवांचूनच एकदम पेटला ! आणि, राजा, भाता, घोडे, लगाम, जूं व दांड्या यांमुद्धां तो अर्जुनाचा रथ सर्व भस्म होऊन जमिनीवर पडला ! हे प्रभो, याप्रमाणें तो रथ भस्म झालेला पाहून पांडव विस्मित झाले; आणि, राजा कृष्णापुढें साष्टांग प्रणिपात करून व हात जोडून अर्जुन विनयपूर्वक असे म्हणाला, “गोविंदा, हे भगवन्, हा रथ अग्नीवांचून कसा जळला ? हे महाबाहो, हें मोठें आश्चर्य कसे घडलें तें मला ऐकण्यायोग्य आहे असें तुला वाटल्यास सांग. मला ऐकण्याची उत्कंठा लागली आहे.”

वामदेव म्हणाला:—अर्जुना, बहुविध अस्त्रांच्या योगानें हा रथ पूर्वीच दग्ध झाला होता. परंतु, हे परंतपा, मी वर बसलों असल्यामुळें रणांतच हा नाश पावला नाहीं. सांप्रत, हे कौंतेया, तूं कृतकार्य झालास, तेव्हां मी खाली उतरलों; आणि मी खाली उतरतांच हा ब्रह्मास्त्रतेजानें दग्ध झालेला रथ नाश पावला !” मग किंचित् हंसून व युधिष्ठिर राजास आलिंगन देऊन तो शत्रुनाशक भगवान् केशव म्हणाला, “हे कुंतिपुत्रा, सुदेवानें तुझा जयजयकार होत आहे; थोर पूर्वपुण्याईमुळेंच तुझे शत्रु जिंकिले गेले; आणि त्याचप्रमाणें, राजा, गांडीवधारी अर्जुन, भीमसेन, तूं आणि उभय माद्रीपुत्र हे तुम्ही सर्वजण खुशाल आहां, हें तरी तुमचें मोठें सुदैवच समजलें पाहिजे. तुम्ही एकदांचे वीरांच्या भयंकर संहारांतून निःशत्रु होतसाते मुखरूप राहिलां ! आतां, हे भारता, यापुढील प्राप्त कार्यें सत्वर कर. मी पूर्वी अर्जुनाबरोबर उपप्लव्यास येत असतां मजपुढें तूं मधुपर्क घेऊन आलास, तेव्हां तूं म्हणाला होतास कीं, ‘कृष्णा,



हा माझा भाऊ अर्जुन तुझा मित्र आहे. हे प्रभो, हे महाबाहो, सर्व आपत्तींतून त्वां यांचें रक्षण केले पाहिजे. ' असें तूं म्हणालास, तेव्हां मी ' ठीक आहे ' असें म्हटलें होतें. त्याप्रमाणें, हे जनेश्वरा, मी विजयी सत्यसाचीचें संरक्षण केले. राजेंद्रा, तो शूर व सत्यपराक्रमी वीर आपल्या भावांसहवर्तमान या अंगावर शहारे आणणाऱ्या व वीरांची सारखी कत्तल उडविणाऱ्या घोर संग्रामांतून मुक्त झाला आहे ! ”

धृतराष्ट्रा, धर्मराज युधिष्ठिराला कृष्ण असें म्हणाला असतां त्याचे अंगावर हर्षानें रोमांच उभे राहून त्यानें जनार्दनास प्रत्युत्तर केले. धर्मराज म्हणाला, “ हे अरिमर्दना, द्रोण व कर्ण यांनीं सोडलेलें ब्रह्मास्त्र तुझ्याशिवाय दुसऱ्या कोणास सहन होणार आहे ? साक्षात् वज्रधारी इंद्राचीही तें सोसण्याची प्राज्ञा नाही. कृष्णा, तुझ्याच प्रसादानें संशसकगण जिकिले गेले. महाराणांत शिरल्यावर पार्थ पराङ्मुख झाला नाही तो तुझ्याचमुळे ! तसेंच, हे महाबाहो, मी देखील अनेक निरनिराळ्या प्रसंगांतून व अनेक पराक्रमी लोकांच्या कचाट्यांतून तुझ्याच प्रसादानें मुक्त झालों ! उपह्वयांत कृष्ण-द्वैपायन महर्षि मला म्हणाले, जेथें धर्म असेल तेथें कृष्ण असतो व कृष्ण असेल तेथें जय असतो ! ”

### वासुदेवप्रेषण.

धृतराष्ट्रा, इतकें बोलणें झाल्यावर ते वीर तुझ्या ( दुर्योधनाच्या ) शिबिरांत शिरले. तेव्हां भांडागारांतील रत्नदिकांच्या राशी त्यांचे हस्तगत झाल्या. त्याचप्रमाणें सोनें, रूपें, रत्नें, मोतीं, उंची उंची अलंकार, शालजोड्या व चर्म-वस्त्रे, असंख्य दासदासी आणि राज्योपयोगी इतर सामान त्यांस मिळालें. याप्रमाणें, हे भरतर्षभा, कधीही संपणार नाही इतकें विपुल द्रव्य त्यांचे ताब्यांत येतांच, ते महाभाग्यवान् विजयी वीर हर्षानें आरोळ्या देऊं लागले.

राजेंद्रा, याप्रमाणें फार हर्षित होऊन त्या वीरांनीं घोडे सोडले, आणि सर्व पांडव व सात्यकि खाली उतरून वारंवार तेथें द्रव्या-जवळ उभे राहिले. हे महाराजा, मग महा-यशस्वी वासुदेव त्यांस म्हणाला, ‘ मंगल ( इष्ट ) हेतूसाठीं आपण शिबिराच्या बाहेरच राहिलें पाहिजे. ’ यावर ‘ ठीक आहे ’ असें म्हणून ते सर्व पांडव व सात्यकि वासुदेवासह मंगलार्थ बाहेर गेले; आणि, राजा, ज्यांचे शत्रु नष्ट झाले आहेत, असे ते पांडव पुण्यकारक व ओघयुक्त अशा नदीवर जाऊन तीं रात्र तेथेंच राहिले. त्या ठिकाणी गेल्यावर युधिष्ठिरानें पुढील कर्तव्याचा विचार केला. तो म्हणाला, “ माधवा, गांधारी क्रोधानें लाल झाली असेल; तिच्या सांत्वनार्थ तुलाच जाणें प्राप्त आहे असें मला वाटतें. हे अरिदमा, सहेतुक, सकारण व कालानुरूप भाषणें करून तूं गांधारीस त्वरित शांत करशील. हे महाभाग, भगवान् पिता-मह व्यासही या वेळीं तेथें असतील. ”

राजा, मग धर्मानें वासुदेवास हस्तिनापुरास पाठविलें. तो प्रतापी वासुदेवही तत्काळ दारु-कास रथावर बसवून त्वरेनें धृतराष्ट्राकडे जाव-यास निघाला. शैब्य व सुग्रीव हे ज्याचे घोडे आहेत, अशा त्या निघालेल्या श्रीकृष्णास पांडव म्हणाले, “ कीर्तिमती गांधारीचे पुत्र मेले असल्यामुळे तिला फार शोक झाला असेल; यासाठीं तूं तिचें उत्तम सांत्वन कर. ” पांडवांनीं असें म्हटल्यावर त्या सात्वतश्रेष्ठानें हस्तिना-पुराकडे प्रयाण केलें; आणि मग तो लवकरच हतपुत्रा गांधारीसमीप येऊन पांचला.

### अध्याय त्रेसष्टावा.

—:—

धृतराष्ट्र व गांधारी यांचें सांत्वन.

जनमेजय विचारितोः—द्विजश्रेष्ठा, धर्मः

राज युधिष्ठिरानें परंतप वासुदेवाला गांधारीकडे कशासाठी पाठविलें ? पूर्वी कौरवांशीं साम करण्यास कृष्ण गेला होता; परंतु त्याचा तो मनोरथ सिद्धीस गेला नाही आणि मग हें युद्ध झालें. आतां सर्व योद्धे मरून गेले, दुर्योधनही निधन पावला, पृथ्वी युद्धांत निःसपत्न होऊन पांडवांस प्राप्त झाली, कौरवांच्या सेनेची पळापळ होऊन त्यांचें शिबिरही ओस पडलें, आणि पांडवांस उत्तम प्रकारचें यश प्राप्त झालें ! अशा वेळी, हे ब्रह्मन्, कृष्ण पुनः तिकडे गेला याचें कारण मला सांगा. ज्यापेक्षां ब्रह्मांडनायक जनार्दन स्वतः गेला, त्यापेक्षां तें कारण यःकश्चित् नसावें, असें मला वाटतें. यासाठी, हे अध्वर्यु-तमा, 'कृष्णानेंच तिकडे जावें,' असें जें ठरलें त्याचें काय कारण, तें मला तत्त्वतः स्पष्ट करून सांगा.

वैशंपायन सांगतातः—राजा, तूं मला विचारतोस हा प्रश्न तुला येणें युक्त आहे. हे भरतर्षभा, मी तुला तें सर्व नीट सांगतों, ऐक. राजा, भीमसेनानें रणांत आर्षी केलेल्या ठरावाचें उल्लंघन करून महाबली दुर्योधनास मारिलें, आणि विशेषकरून गदायुद्धांत अन्यायानें मारिलें हें पाहून, हे महाराजा, युधिष्ठिरास तेव्हां मोठें भय पडले आणि महाभागा गांधारीविषयी त्यास चिंता लागली. तो मनांत म्हणाला, त्या तपस्विनीचें तप मोठें उग्र आहे. तेणेंकरून ती त्रेलोक्यही दग्ध करूं शकेल. मग आमची काय कथा ! राजा, अशी चिंता करीत असतां त्याचे मनांत आलें कीं, 'क्रोधानें लाल झालेल्या गांधारीचें आर्षीच सांत्वन झालें पाहिजे. आह्मी अशा प्रकारें पुत्रवध केला हें ऐकून ती संतप्त होई; आणि अशा वेळीं आम्ही तिचे पुढें गेलों तत्काळ मानसिक अग्नीनें ती आमचें भस्म होई. सरळ युद्ध करणाऱ्या आपल्या पुत्रास

(दुर्योधनास) केवळ कपटानें मारिल्याचें ऐकून तें तीव्र दुःख गांधारीस कसें सहन होईल ? ' राजा, भय व शोक यांनीं युक्त होऊन धर्मराजानें याप्रमाणें पुष्कळ चिंतन केलें आणि मग तो वासुदेवास म्हणाला, "गोविंदा, हें राज्य मिळविण्याची गोष्ट मनांतही आणणें केवळ दुर्धर होतें; परंतु, हे अच्युता, तुझ्या प्रसादानें तें आह्मांस निष्कण्टक असें प्राप्त झालें ! हे महाबाहो यादवनंदना, प्रत्यक्ष माझ्या देखत तूं अंगावर शहारे आणणाऱ्या घोर युद्धांत फारच मोठा संहार उडविलास ! पूर्वी देव व अमुर यांचे युद्धप्रसंगी देवशत्रूंच्या वधार्थें तूं जसें देवांस साह्य केलेंस व अमुरांस मारिलेंस, त्याचप्रमाणें, हे महाबाहो अच्युता, तूं आह्मांस साह्य दिलेंस. हे वाष्ण्या, स्वतः सारथ्य करून तूं आमचें रक्षण केलेंस. जर महायुद्धांत अर्जुनाचा तूं पाठीराखा नसतास, तर तो बलार्णव शत्रूस जिकण्यास कसा समर्थ होता ? कृष्णा, पुष्कळ गदाप्रहार, परिघांचे तडाके, आणि परशु, मिंदिपाल, तोमर, शक्ति इत्यादि शस्त्रांचे प्रहार तुला केवळ आमचेसाठीं सोसावे लागले ! पुष्कळ कठोर भाषणें ऐकून ध्यावीं लागली ! आणि केवळ वज्रासारखे तीव्र असे शस्त्रपात रणांत सहन करावे लागले ! हे अच्युता, दुर्योधन मेला तेव्हां या सर्वांचें साफल्य झालें आहे; परंतु, कृष्णा, जेणेंकरून हें सर्व फुकट जाणार नाही, अशी तजवीज आतां कर ! कृष्णा, आपला विजय झाला खरा, पण माझे चित्त अद्याप संशयानें हेलकवे खात आहे ! हे महाबाहो माधवा, गांधारीचा कोप कसा काय आहे, हें मनांत आण. ती महाभागा नित्य उग्र तपश्चर्येनें आपला देह भिजवीत आली आहे. तिनें पुत्रपौत्रांचा वध झाल्याचें ऐकिलें म्हणजे आम्हांस ती जाळून भस्म करील हे निश्चित होय !

यास्तव, हे वीरा, तिला आधी प्रसन्न केलें पाहिजे, असें मला वाटतें. हे पुरुषोत्तमा, पुत्रशोकानें दुःखित झालेल्या व क्रोधानें लाल झालेल्या तिज-कडे पाहाण्यास तुजवांचून दुसरा कोण समर्थ आहे ? यास्तव, हे पुरुषोत्तमा माधवा, क्रोधानें लाल झालेल्या गांधारीचें सात्वत करण्यास तूच तेथें जावेंस, हें मला बरें दिसतें ! हे अरिंदमा, देवा, तूं लोकांचा कर्ताकरनिता असून प्रभव व अव्यय आहेस. तूं हेतु व कारणें दाखवून आणि कालानुरूप भाषण करून गांधारीला तेव्हांच शांत करशील. भगवान् पितामह व्यासही या वेळीं तेथें असतील. हे सात्वतश्रेष्ठा, तूं पांडवांचें हित पाहाणारा आहेस; तेव्हां त्वां गांधारीचा राग पार नाहीसा करून टाकावा ! ”

धर्मराजाचें हें भाषण ऐकून यदुमुख्य कृष्णानें दारुकास हाक मारून रथ सज्ज करण्यास सांगितलें. त्याच्या आज्ञेप्रमाणें दारुकानें लग्नागिनि रथ तयार करून त्याविषयीं महात्म्या केशवास वर्दी दिली. मग त्या रथांत बसून शत्रुतापन यादवराज प्रभु केशव त्वरेनें हस्तिनापुरास गेला. मग, हे महाराजा, रथांत बसलेला तो भगवान् माधव हस्तिनापुरास पोचून रथघोषानें नगर दणाणवीत आंत शिरला; तेव्हां धृतराष्ट्रासही तो आल्याचें समजलें. इतक्यांत कृष्ण त्या उत्तम रथांतून उतरून धृतराष्ट्राचे राजवाड्यांत शिरला, तों कृष्णद्वैपायन मुनि तेथें आधींच येऊन बसलेले त्यानें पाहिले. मग आंत जातांच जनार्दनानें व्यासांचे व धृतराष्ट्राचे पाय धरले आणि बिलकूल न गडबडतां गांधारीसही अभिवंदन केलें. राजा, लगेच त्या यादवश्रेष्ठ अधोक्षजानें धृतराष्ट्राचा हात धरून मोठ्यानें रडण्यास सुरुवात केली. याप्रमाणें सुमारे दोन घटकांपर्यंत सारखा शोक करून आसवें गाळल्यावर मग त्यानें डोळे पाण्यानें

धुऊन चूळ वगैरे भरली; आणि मग धृतराष्ट्र तो प्रस्तुत-प्रसंगानुरूप असें म्हणाला, “हे भारता, तूं वृद्ध आहेस; तुला सर्व कांहीं कळतच आहे. प्रभो, काळाचे खेळ सर्व तुला विदित आहेत. हे भारता, तुझ्या मनाप्रमाणें वागणाऱ्या सर्व पांडवांनीं कुलक्षय व क्षत्रियांचा उच्छेद होऊं नये म्हणून पुष्कळ खटपट केली. धर्मवत्सल धर्मराजानें आपल्या भावांस शपथ घालून सर्वांची क्षमा केली; आणि द्यूतांत कपटानें जिंकिले गेलेल्या त्या पुण्यशील आत्यांसह वनवास पत्करला. नानाप्रकारचे वेप धारण करून त्यांनीं अज्ञातवास कंठिला आणि दुमरेही पुष्कळ क्लेश नित्य सोसेले;—जणू त्यांस प्रतिकाराचें सामर्थ्य नव्हतेंच ! पुढें युद्धाची वेळ आली असतां स्वतः येऊन तुजपाशीं सर्व लोकांच्या समक्ष पांच गांव मागितले; परंतु “ बुद्धिः कालानुसारिणी ” म्हणतात तशी गत होऊन तुम्हीं लोभामुळें तितके देखील सोडले नाहीत ! राजा, तुझ्या अपराधामुळें सर्व क्षात्रकुलाचा क्षय झाला. भीष्म, सोमदत्त, वाल्मीकि, कृपाचार्य, द्रोण व त्यांचा पुत्र आणि धीमान् विदुर यांनीं नित्य साम् करण्याविषयीं तुझी प्रार्थना केली; परंतु तसें केलें नाही. हे भारता, तूं तरी काय करशील ! कालानुरूप बुद्धि होऊन सर्वांस मोह पडत असतो ! अरे, तुझ्यासारख्या शहाण्यानें एवढ्या मोठ्या ढळढळीत गोष्टींत मूढपणा केला; तेव्हां हा कालयोगच, दुसरे काय ? बाबारे, हें अगतिक प्राक्तन बरें ! राजा, तूं मोठा ज्ञानी आहेस; झाल्या गोष्टींचें खापर पांडवांवर उगाच फोडूं नको. खरोखर, हे परंतपा, महाभयान् पांडवांचें वर्तन धर्म, नीति व स्नेह यांपासून लवमात्र देखील चळलेलें नाही. आतां झाले हें केवळ तुझ्या दोषांचें फळ आहे असें जाणवेली आणि, धृतराष्ट्रा, पांडवांची अमुक करूं नको;

तें तुला योग्य नाही. पांडव हे तुझ्या कुलांतले, एका वंशांतले व एका पिंडाचे आहेत, हें मनांत आण. तसेंच तुझ्या पुत्राच्या कृतीचें व गांधारी आणि तूं यांच्या चुकीचें फळ पांडवांच्या माथीं आलें आहे, हेंही लक्षांत घे. हे कुरुशार्दूला, पांडवांस नसता दोष लावून तूं व कीर्तिमती गांधारी शोक करूं नको. हा सर्व आपल्या चुकीचा परिणाम आहे हें ध्यानांत वागवून, हे भरतर्षभा, तूं पांडवांकडे कृपादृष्टीनें पहा. मी तुझ्या पायां पडतो ! हे महाबाहो, धर्मराजाचा स्वाभाविकच तुजकडे किती ओढा आहे आणि तुजवर त्याची किती भक्ति आहे हें तूं जाण-तोमच. अपकारक शत्रूंचाही संहार करून त्यास समाधान वाटलें नाही. इतकेंच नव्हे. तर तो अहर्निश दुःखानें जळत आहे. त्याला मुळीच सुख वाटत नाही ! तसेंच, हे नरशार्दूला, तुज-विषयी व यशस्विनी गांधारीविषयी त्याचे मनाला एकसारखी तळमळ लागली असल्या-मुळें त्याला शांति कशी ती मुळीच मिळत नाही. पुत्रशोकानें संतप्त झालेल्या व मन आणि बुद्धि व्याकूल झालेल्या तुजकडे यावें असें त्यास फार वाटतें; परंतु तो अत्यंत लज्जायमान झाला असल्यामुळें त्याच्यानें येवढा नाही ! "

हे महाराजा, याप्रमाणें धृतराष्ट्रशीं बोलून त्या यादवराजानें शोकविह्वल गांधारी-जवळही उत्तम भाषण केलें. तो म्हणाला, " हे सुवलङ्गन्ये, मी काय म्हणतो तें चित्त स्थिर करून नीट ऐकून घे. हे शुभे, तुझ्या-सारखी सीमंतिनी ( स्त्री ) आज या जगांत नाही. हे राज्ञि, सभेमध्यें माझ्या समक्ष तूं उभयपक्षांस हितकारक व धर्मार्थयुक्त असें भाषण केलेस, तें तुला आठवत असेलच. तूं चांगला उपदेश केलास, परंतु तुझ्या मुलांनीं

तसें वर्तन केलें नाही. जयार्थी दुर्योधनास तूं असेंही रागानें म्हणालीस कीं, ' मूर्खा, माझे भाषण ऐक. जिकडे धर्म तिकडेच जय व्हाव-याचा. हें लक्षांत ठेव. ' हे नृपात्मजे. तुजें तेंच वाक्य हें सांप्रत प्रत्ययाम आलें आहे असें जाणून, हे कल्याणि, तूं शोक करूं नको. पांड-वांचा विनाश करण्याचें तुझ्या बुद्धींत कदापि न यावें. हे महाभाग. पांडवांची कथा काय, पण ही सचराचर सर्व पृथ्वी केवळ क्रोधानें लाल झालेल्या एका दृष्टिपाताबरोबर दग्ध कर-ण्याचें सामर्थ्य तपोबलाच्या योगानें तुझ्या अंगी आहे. परंतु विवेक कर व पांडवांवर व्यर्थ आग पाववूं नको ! "

वामुदेवाचें भाषण ऐकून गांधारी म्हणाली, " हे महाबाहो केशवा, तूं म्हणतोस त्याप्रमाणेंच मानसिक दुःखांनीं दग्ध होणाऱ्या माझी बुद्धि चळली होती; परंतु, जनार्दना. तुजें भाषण ऐकून ती ताळ्यावर आली. केशवा, आतां या पुत्रहीन, वृद्ध व अंध राजाला, हे नरश्रेष्ठा, तूं व पांडवहीर हेच आधार आहां ! "

इतकें बोलतांच तिला रड्याचा हुंदका आला आणि पुत्रशोकानें व्यास झालेली ती तोंडास पदर लावून मोठ्यानें रडूं लागली. मग शोकानें विह्वल झालेल्या त्या गांधारीचें केश-वानें कार्यकारणयुक्त भाषणांनीं समाधान केलें. याप्रमाणें, राजेंद्रा. तो धृतराष्ट्र व गांधारी यांचें सात्वत करीत आहे तांच त्याला अश्वत्थाम्यानें ठरविलेल्या वेताचें स्मरण झालें. तेव्हां तो त्वरित उठला व व्यासांचे पायांवर मस्तक ठेवून धृतराष्ट्रास म्हणाला, " हे कुरुश्रेष्ठा, मी तुझी अनुज्ञा मागतों. तूं मुळीच शोक करूं नको. अश्वत्थाम्याचा काही दुष्ट वेत आहे, त्यामुळें मी एकदम उठलों. पांडवांचा राज्ञी वध करण्याविषयी विचार त्यानें व्यक्त

केला होता ! ” हें ऐकून गांधारी व महाबाहु धृतराष्ट्र हीं एकदम म्हणाली, “ हे केशिसूदना केशवा, जा, जा लवकर व पांडवांचें रक्षण कर. जनादेना, तुला पुनः इकडे त्वरित येतां येईल ! ”

मग तो अच्युत दारुकासहवर्तमान त्वरेनें निघून गेला. राजा, वामुदेव गेल्यावर ज्यांस सर्व लोक वंदन करितात त्या महात्म्या व्यासांनी धृतराष्ट्र राजांचें आश्वामन केलें. इकडे धर्मशाल वामुदेवही कृतकृत्य होत्साता पांडवांस भेटण्यासाठी हस्तिनापुराहून शिविग-कडे निघाला; तो रानोरात गोटास येऊन पांडवांकडे गेला; आणि झालेलें वर्तमान त्यांस सांगून त्यांसह दक्षतेनें राहिला.

## अध्याय चौसष्टावा.

—:—

### दुर्योधनाचा विलाप !

धृतराष्ट्र विचारितो:—संजया, शत्रूनें मस्तकावर पाय दिलेला व मांड्या मोडून जमिनीवर पडलेला माझा शौर्याभिमानी पुत्र तेव्हां काय म्हणाला ! राजा दुर्योधन अत्यंत कोपी असून पांडवांशीं त्याचें हाडवेर होतें. तो हें प्राणसंकट आल्यावर महारणांगणांत काय बोलला बरें ?

संजय सांगतो:—राजा, हे नराधिपा, झालेला प्रकार मी जसाच्या तसा सांगतों. मांड्या मोडून तें संकट प्राप्त झालें असतां राजा दुर्योधन जे बोलला तें श्रवण कर. राजा, ज्याच्या मांड्यांचे पार तुकडे झाले आहेत, व अंग धुळीनें माखले आहे, अशा त्या दुर्योधनानें तेथें कैम आवळतां आवळतां सभोंवार गरगर दृष्टि फेंकली आणि मोठ्या प्रयासानें कैस आवरून सर्पप्रमाणें सुमकारे टाकीत त्वेषामुळें अश्रुपूर्ण झालेल्या नेत्रांनीं मजकडे पाहिलें. इतक्यांत एकदम अत्यंत माज चढलेल्या हत्ती-

प्रमाणें बेकाम होऊन त्यानें दोन्ही हात जमिनीवर चोळले ! आणि दीर्घ निःश्वास सोडून तो आपले विष्कलित झालेले कैम हालवीत, दांतओठ चावीत व ज्येष्ठ पांडव जो धर्मराज त्याची निर्भर्त्सना करीत म्हणाला, “ शांतनव भीष्म, शस्त्रधरांत अग्रेसर असा कर्ण, गौतम, शकुनि, प्रत्यक्ष अस्त्रधराग्रणी द्रोणाचार्य, तसाच अश्वत्थामा, शल्य आणि शूर कृतवर्मा हे माझे पाठीराखे असतांना मला ही स्थिति प्राप्त झाली, त्यापेक्षां कालाच्चा महिमा अगाध आहे ! काल खरोखर दुरतिक्रम होय ! ज्याच्या पदरीं अकरा असौहिणी सैन्य होतें. त्या माझीच आज अशी दशा झाली ! तेव्हां, हे महाबाहो. काल प्राप्त झाला असतां कोणासही त्याचें अतिक्रमण करतां यावयाचें नाहीं हेंच खरें ! अमो; या युद्धांतून माझ्याकडील जे कोणी जिवंत राहिले असतील त्यांस, भीमसेनानें प्रतिज्ञा मोडून मला कसें मारलें हें सांग. खरोखर पांडवांनीं भूरिश्रवा, कर्ण, भीष्म, श्रीमान् द्रोणाचार्य, इत्यादिकांसंबंधी पुष्कळच राक्षसी कृत्यें केलीं; त्यांतलेंच आजचें हें एक दुष्कीर्तिकारक कृत्य त्या नराधमानीं केलें ! त्याच्या योगानें सज्जनांच्या सभेंत त्यांचा धिक्कारच होईल अशी माझी बुद्धि मला सांगते ! जो खरा सत्वशील असेल, त्यास अशा कपटांनें मिळविलेल्या जयाबद्दल काय प्रेम वाटणार आहे ? अथवा कोणता ज्ञाता करार मोडणारास चांगलें म्हणणार आहे ? ज्याप्रमाणें पापी पांडुपुत्र वृकोदरास सांप्रत हर्ष झाला आहे, त्याप्रमाणें कोणता पंडित अधर्मानें जय मिळवून हर्ष पावेल बरें ? आज मी मांड्या मोडून पडलों असतां माझे प्रत्यक्ष आपल्या भावाचें—कातीनें झळकणारें व देदीप्यमान मस्तक क्रुद्ध भीमसेनानें पायांनें

तुडविलें, याहून चमत्कारिक कृत्य काय आहे ? संजया, विशेष आश्चर्य हें की, अशा प्रकारचें नीच कृत्य करणारा जो पुरुष त्याचा येथें जयजयकार झाला ! माझी माता व पिता युद्धधर्म चांगले जाणतात. संजया. त्या दुःखातीना तूं माझ्या वचनावरून असें सांग की, मी यजन केलें, आश्रितांचें उत्तम भरण केलें, समुद्रवल्यांकित पृथ्वीवर अधिकार गाजविला, आणि शत्रु जिवंत-चांगले धेट्टे-कट्टे-अमतांना त्यांचे मस्तकावर उभा राहिलों, मी यथाशक्ति दानधर्म केला. मित्रांचें प्रिय केलें, आणि सर्व शत्रूंस दे माय धरणी ठाय करून सोडलें ! अशा प्रकारें सर्व ऐहिक कृत्यें उत्कृष्ट पार पाडल्यानंतर मला मरण आलें. त्यापेक्षां मजहून उत्तम मरण कोणाम येणार आहे ? मी सर्व बांधवांचा चांगला मानमरातव ठेविला, आज्ञांकित राहणारांची चांगली संभावना केली, आणि त्रिविध पुरुषार्थांचें-धर्म, अर्थ व काम यांचें-उत्तम सेवन केलें. तेव्हां मजहून अधिक चांगलें मरण कोणास प्राप्त होणार आहे ? मोठमोठे राजे-महाराजे यांज-वर मी हुकूम बजावले, अत्यां दुर्लेभ असा मान मिळविला, आणि उत्तम जातिवंत ( अजानेय ) अध्यांच्या वाहनांतून हिंडलों; तेव्हां मजहून उत्तम स्थितीत मरणारा कोण आहे ? मां परराष्ट्रें पादाक्रांत केली, राजांकडून दासाप्रमाणें सेवा घेतली, आणि प्रिय मित्रांचें उत्तम कोड पुरविलें ! अशा मजपेक्षां उत्तम मरण कोणास मिळणार आहे ? मी अव्ययन केलें, विधिपूर्वक दानधर्म केला, निरोगी आयुष्य संपादिलें आणि स्वधर्मानें जग जिंकिलें; तेव्हां आज मजपेक्षां उत्तम प्रकारें मरणारा असा कोण असणार आहे ? सुदैवानें मी समरांत जिंकिला जाऊन शत्रूंचा गुलाम होऊन राहिलों

नाहीं; आणि मेल्यावरही मला माझ्या थोर दैवानें अन्य लोकचें विपुल ऐश्वर्य मिळेल ! स्वधर्मानें वागणाऱ्या क्षत्रियांसां जें इष्ट तेंच ( युद्धांत सन्मुख ) मरण मला प्राप्त झालें; मजहून उत्कृष्ट स्थितीत मरणारा कोण आहे ? एखाद्या सामान्य मनुष्याप्रमाणें मी जिंकिला जाऊन वर सोडून शत्रूपुढें लाळ घोटूं लागलों नाहीं, किंवा सुदैवानें कोणतीही दुर्बुद्धि स्वीकारून पराभव पावलों नाही ! निजलेल्याम किंवा बेफाम अमलेल्यास मारावें किंवा एखाद्यास विषप्रयोग करावा, त्याप्रमाणेंच ठरावाचें उल्लंघन होऊन मी अधर्मानें मारला गेलों ! महाभाग अश्वत्थामा, सात्वत कृतवर्मा व शरद्वतीपुत्र कृपाचार्य, यांम माझा असा निरोप मांग की, अनेक प्रकारें अधर्मास प्रवृत्त झालेल्या व प्रतिज्ञाभंग करणाऱ्या पांडवांवर तुम्ही बिलकूल विश्राम ठेवूं नका ! ”

राजा धृतराष्ट्र, मग तुझा तो मत्यपराक्रमी पुत्र दुर्योधन राजा हेरांस म्हणाला, “ भीम-सेनानें मला अधर्मानें रणांत मारिल्यामुलें द्रोण, कर्ण व शल्य, महावीर्यशाली वृषसेन, सुबल-पुत्र शकुनि, महावीर्यवान् जलसंध, राजा भग-दत्त, महाधनुर्धर सोमदत्त, सिंधुपति जयद्रथ, दुःशासनप्रभृति स्वतःच्या बरोबरीचे भाऊ, पराक्रमी दौःशासन व लक्ष्मण तमेच दोघे पुत्र हे व दुसरे पुष्कळच हजारां आसस्वकीय यांच्या मागून मी कळपांतून मागें राहिलेल्या पांथस्थाप्रमाणें जाईन. माझी बहीण दुःशला ही भावांस व भर्त्यांम मारल्याचें ऐकून दुःखार्त होऊन टाहो फोडील. हाय हाय ! माझा वृद्ध पिता राजा धृतराष्ट्र व गांधारी यांचे मर्भोवती सुना व नातसुना जमल्यावर त्यांची काय अवस्था होईल ! खरोबर ती लक्ष्मणाची माता, जिचा पुत्र व पति निधन पावला आहे अशी ती विशा-

लाक्षी कल्याणी, लवकरच दुःखानें प्राण सोडील ! वाक्पटु चार्वाक परित्राजकालाहें समजेल तर तो महाभाग निश्चयानें याचा मूड उगवील ! त्रैलोक्यांत प्रख्यात अशा पवित्र समंतपंचकांत निधन पावून मी शाश्वत लोक मिळविणार खास ! ”

मग, हे महाराजा, तेथील ते हजारों लोक राजाचे हे उद्गार ऐकून डोळ्यांतून आसवें गाळीत दशदिशांस निघून गेले. या वेळीं सागर, वने व सर्व चराचर पदार्थ यांमुद्धां पृथ्वी कांपूं लागली; ती घोर दिमूं लागली; तिजमध्ये भयंकर घरघराट होऊं लागला, आणि दिशाही उदास झाल्या. मग तेथून गेलेल्या लोकांनीं द्रोणपुत्रास गांठून गदायुद्धांत घडलेला प्रकार, राजाचा पाडाव वगैरे सर्व गोष्टी त्यास निवेदन केल्या; आणि ते सर्वजण बराच वेळ तेथेंच संचित्तपणें उभे राहून मग व्याकुल होत्साते आपआपल्या वाटेनें निघून गेले !

## अध्याय पांसष्टावा.

—:०:—

अश्वत्थाम्यास सैनापत्याचा अभिषेक.

संजय सांगतो:—राजा, हेरांकडून दुर्योधन मेल्याची वार्ता ऐकून कौरवांकडील अवशिष्ट राहिलेले परंतु तीक्ष्ण बाण, गदा, तोमर, शक्ति, इत्यादिकांनीं अतिशय जखमी झालेले महारथी अश्वत्थामा, कृपाचार्य व सात्वत कृतवर्मा हे त्वरेनें घोडे पिटाळीत रणांगणांत प्राप्त झाले. तेथें, वनांत वायुवेगानें मोडून पडलेल्या मोठ्या शालवृक्षाप्रमाणें पतन पावलेला महात्मा दुर्योधन त्यांचे दृष्टीस पडला. तो अरण्यांत व्याधानें पाडलेल्या महागजासारखा रक्तबंबाळ झाला असून जमिनीवर लोळत होता. त्याच्या अंगांतून वहाणाऱ्या रक्तानें त्यास सचेल स्नान झालें होतें; आणि तो अनेक प्रकारें विवळत

होता. तो धुळीनें भरलेला गजेंद्रोपम पराक्रमी महाबाहु वीर आकाशांतून यदृच्छेनें खालीं पडलेल्या सूर्यमंडलासारखा, प्रचंड वावटळीनें शुष्क केलेल्या सागरासारखा, अथवा किंचित् अभ्रपटलानें आच्छादिलेल्या आकाशातील पूर्णचंद्रासारखा दिमत होता. राजा धृतराष्ट्रा, ज्याप्रमाणें धनेच्छु सेवकांचा राजेंद्राभोवतीं गराडा असतो, त्याप्रमाणें दुर्योधनाचे सभोवतीं भयंकर भुतांचे समुद्राय व क्रूर श्वापदे जमलीं होती; त्याच्या भुक्रुटी वक्र झाल्या होत्या; रागानें डोळे विस्तीर्ण झाले होते; आणि तो त्रायाळ पाडलेल्या वाघाप्रमाणें आंतल्या आंत जळफळत होता. जमिनीवर पडलेल्या त्या महाधनुर्धर राजास पाहातांच त्या कृपप्रभृति सर्व महारथांस एकदम भडभडून आलें; आणि ते त्याच्याजवळ जाऊन जमिनीवर बसले. नंतर हे महाराजा, ज्याचे डोळे पाण्यानें भरून आले होते, असा अश्वत्थामा सुमकारे दाकीत त्या भरतश्रेष्ठ राजराजेश्वरास म्हणाला, “ हे पुरुषव्याघ्रा, ज्यापेक्षां तूं येथें धुळीनें मागवून पडला आहेस, त्यापेक्षां मनुष्यलोकींचे कांही-एक सत्य नाही हेंच खरें ! अरे, एवढा थोर राजा असून व सर्व पृथ्वीवर सत्ता गाजवून आज या निर्जेन अरण्यांत तूं एकटा कसा राहिलास ? हे राजेंद्रा, मला येथें दुःशासन दिसत नाही; महारथी कर्ण दिसत नाही; तसेंच, हे भरतर्षभा, सदोदित तुजबरोबर असणारे ते सर्व इष्टमित्रही कोठें दृष्टीस पडत नाहीत हें काय ? तूं येथें असा धुळींत लोळत पडशील असें पूर्वीं कोणास तरी वाटलें होतें काय ? खरोखर कालगति लोकांस समजणें सर्वथा कठीण आहे ! हा परंतप मूर्धाभिषिक्त राजांचें एकदां अग्रेसरत्व पटकावून आज येथें गवत व धूळ खात पडला आहे ! कालाचा

फेरा कसा आहे पहा ! राजा, तुझें तें विमल छत्र आणि चामर कोठें आहे ? तशीच, राजेंद्रा, तुझी ती प्रचंड सेना कोठें गेली ? हाय हाय ! आपण काय काय कार्ये करावयाची ठरवितों, व तीं सर्व सिद्ध होतील अशी दृश्य गोष्टी-वरून आपली खात्री असते. परंतु अदृष्ट कांहीं निराळेंच घडवितें ! अदृष्ट कारणांनीं त्या दृष्ट गोष्टींचा व कार्यांचा शेवट काय होणार हें कळणें खरोखर महाकठीण आहे ! सर्व लोकांहून श्रेष्ठ अशा तुझी ही दशा झाली याच गोष्टीवरून हें स्पष्ट होत आहे. माझात इंद्राशी अतिशय स्पर्धा करणाऱ्या तुझें हें दुःख पाहून सर्व मर्त्यांचें ऐश्वर्य पूर्ण अशाश्रित आहे हेंच दिमून येतें ! "

राजा, त्यांचें तें भाषण ऐकून व विशेष-करून तो दुःखित झाला आहे असे पाहून तुझ्या पुत्रानें देहो हातांनीं डोळे पुमून शोकोत्पन्न उत्पन्न आमवें गाळीत त्या कृपप्रभृति सर्व वीरांस असें कालानुरूप भाषण केलें, "अहो, कालाचा फेरा आला असतां सर्वच प्राण्यांचा विनाश व्हावयाचा, अशा प्रकारची ही जगाची रहाटी ब्रह्मदेवानेंच लावून दिली आहे. तोच हा अवश्य येणारा मृत्यु आज तुमच्या देखत मला प्राप्त झाला आहे इतकेंच ! यांत अघटित असें काय आहे ? पृथ्वीचें परिपालन करून मला ही अवस्था प्राप्त झाली आहे. सुदैवानें मी युद्धांत कशाही आपत्तीचे वेळी माघार घेऊन पळालों नाही. सुदैवानें पापी अधमांनीं मला विशेष-करून कपटानें मारिलें आहे. मी लढत असतां नित्य उत्साहच धरीत गेलों, -कधीही हात-पाय गाळले नाहीत. मी या युद्धांत सर्व ज्ञाति-बांधवांचा नाश झाल्यानंतर पडलों ! या सर्व गोष्टी माझ्या पूर्वपुण्याईनेंच घडून आल्या. या लोकमक्ष्यांतून तुम्ही जिवंत सुटल्याचें मी पहात

आहे हें माझें भाग्य होय. तुम्ही क्षेमरूप व सुखरूप असावे, यापरतें मला अधिक प्रिय असें कांहीच नाही. माझ्या मरणाबद्दल तुम्ही स्नेहा-मुळें दुःख करीत बसूं नका. त्यांत काय आहे ! जर वेद हे तुम्हांस प्रमाण वाटत असतील, तर मीं अक्षय्य असे लोक जिकिले आहेत, हें पक्कें समजा. अमिततेजस्वी कृष्णात्मा प्रभाव मी जाणून आहे. त्यानें जंगजंग पळाडलें तरी उत्तम प्रकारें आचरिलेल्या क्षात्रधर्मापासून मला च्युत करणें त्याच्यानें घडलें नाही ! मीं क्षात्रधर्म बरोबर पाळला आहे. अर्थात् कोण-त्याही प्रकारें माझी स्थिति शोचनीय नाही. तुम्हीही आपापल्यापरी शिकस्त करून माझ्या विजयार्थ फार यत्न केला, परंतु दैवाचें अति-क्रमण करणें दुरापास्त आहे ! "

राजेंद्रा, इतकें बोलून तो थांबला. कारण, त्याचे नेत्र भरून आले होते व वेदनेनें तो अतिशय विह्वल झाला होता. अशा प्रकारें तो शोकाकुल होऊन आमवें गाळीत आहे, असें पाहून अश्वत्थामा कल्पांतकाळच्या अग्नीप्रमाणें क्रोधानें जळूं लागला. त्यानें संतापाच्या भरांत हातावर हात चोळून योग्या आवाजानें राजास म्हटलें, " राजेंद्रा, त्या चांडाळांनी अति नीच-पणानें माझ्या पित्याचा घात केला या गोष्टीनें-ही मला जितकें दुःख झालें नव्हतें, तितकें आज तुजमुळे झाले आहे ! हे प्रभो, मी सत्य-पूर्वक सांगतो तें श्रवण कर. मी इष्टापूर्ते, दान-धर्म व मुकृत यांच्या शपथेनें सांगतो की, आज वामुदेवाच्या समक्ष हरप्रयत्नानें सर्व पांचालांस यमलोकी पाठवीन ! हे महाराजा, मला तुझी अनुज्ञा मात्र अमावी ! "

द्रोणपुत्राचें हें मनास आल्हाद देणारें भाषण ऐकतांच राजा कृपाचार्यास म्हणाला, " आचार्य, जाल्यें भरलेला कलश लवकर आणा. "



राजाची आज्ञा होतांच ब्राह्मणश्रेष्ठ कृपाचार्य  
एक भरलेला कलश घेऊन त्याच्याजवळ  
गेले. तेव्हां, हे महाराजा, तुझा पुत्र त्यांस  
म्हणाला, “ द्विजश्रेष्ठा, तुमचें कल्याण असो.  
माझे प्रिय करावें अशी तुमची इच्छा असेल  
तर माझ्या आज्ञेनें द्रोणपुत्रास सैनापत्याचा  
अभिषेक करा. सर्वांनीं व विशेषेंकरून क्षात्र-  
धर्मानें वागणाऱ्या ब्राह्मणांनीं राजाज्ञेनें लढावें  
अशी शास्त्रमर्यादा धर्मज्ञ समजतात ! ”

राजाचें भाषण ऐकून शारद्वत कृपाचार्यानीं  
राजाज्ञेवरून अश्वत्थाम्यास सैनापत्याभिषेक  
केला. हे महाराजा, अभिषेक होतांच अश्व-  
त्थामा राजास आलिंगन देऊन सिंहनादामें  
सर्वे दिशा दणाणवीत निघून गेला ! आणि,  
राजेंद्रा, रक्तानें माखलेला दुर्योधनही, सर्व  
भूतांस भयावह वाटणाऱ्या त्या रात्री तेथेच पडून  
राहिला ! इकडे, राजा, ते कृपप्रभृति वीर  
त्वरें रणांगणांत दूर जाऊन शोकानें उद्ध्वि-  
चित्त होत्साते विचार करीत संचित बसले !





कृष्णार्जुनो राजाश्वेवकन अश्वाम्नाम मेनापलाभिपेक केला. ( शाल्यपर्वे दृष्ट १७४ )







उलूकोपदेशग्रहण ( सौप्तिकपर्व दृष्ट १ )



# श्रीमन्महाभारत.

## सौप्तिकपर्व.

अध्याय पहिला.

मंगलाचरण.



नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।  
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

ह्या अखिल ब्रह्मांडांतील यच्चयावत् स्थावर-जंगम पदार्थांच्या ठिकाणीं चिदाभासरूपानें प्रत्ययास येणारा जो नरसंज्ञक जीवात्मा, नरसंज्ञक जीवात्म्यास सदासर्वकाळ आश्रय देणारा जो नारायण नामक कारणात्मा, आणि नरनारायणात्मक कार्यकारणसृष्टीहून पृथक् व श्रेष्ठ असा जो नरोत्तमसंज्ञक सच्चिदानंदरूप परमात्मा, त्या सर्वांस मी अभिवंदन करितों; तसेंच, नर, नारायण व नरोत्तम ह्या तीन तत्त्वांचें यथार्थ ज्ञान करून देणारी देवी जी सरस्वती, तिलाही मी अभिवंदन करितों; आणि त्या परमकारुणिक जगन्मातेनें लोकहित करण्याविषयीं माझ्या अंतःकरणांत जी स्फूर्ति उत्पन्न केली आहे, तिच्या साहाय्यानें ह्या भव-

बंधविमोचक जय म्हणजे महाभारत ग्रंथाच्या सौप्तिकपर्वास आरंभ करितों. प्रत्येक धर्मशील पुरुषानें सर्वपुरुषार्थप्रतिपादक अशा शास्त्राचें विवेचन करितांना प्रथम नर, नारायण आणि नरोत्तम ह्या भगवन्मूर्तींचें ध्यान करून नंतर प्रतिपाद्य विषयाचें निरूपण करण्यास प्रवृत्त व्हावें हें सर्वथेव इष्ट होय.

### उल्लुकोपदेशग्रहण.

संजय सांगतो:—मग ते मगळे वीर मिळून दक्षिणाभिमुख चालले आणि सूर्यास्ताचे केलीं छावणीजवळ येऊन पोहोंचले. राजा, ते भयभीत झाले असल्यामुळें मोठ्या त्वरेनें गर्द झाडीची जागा पाहून तेथे रथांचे घोडे सोडून लपून बसले. त्यांच्या अंगावर तीक्ष्ण शस्त्रांनीं निकडेतिकडे

जखमा झाल्या होत्या. तशाच स्थितीत सैन्याच्या छावणीभोंवतीं जवळच छपून राहिलेले हे वीर पांडवांच्छलच्याच विचारांत गर्क झाले आणि मोठ्या दुःखानें उसासे टाकूं लागले. राजा, अधिकाधिक विजय मिळविण्याच्या उत्सुकतेनें पांडव भयंकर गर्जना करीत सुटले, तेव्हां ती त्यांची गर्जना ऐकून पुनः हे आपल्याच पाठोपाठ आले कीं काय न कळे, अशा भयानें ते वीर पूर्वदिशेकडे पळत सुटले! आणि थोड्या वेळानें तेथून दुसऱ्या एका जागीं जाऊन कांहीं वेळ थांबले. त्या वेळीं त्यांचे घोडे अगदींच थकून गेलेले असून ते स्वतः तहानेनें व्याकूळ होऊन गेले होते; तशांत राजा दुर्योधन मारला गेला म्हणून मनांत तळमळ चाललेली; मग काय विचारावें! त्या महाशूर वीरांच्या पोटांत क्रोधाग्नि भडकून जाऊन एकंदर स्थिति त्यांना दुःसह वाटूं लागली!

धृतराष्ट्र बोलतो:—अरे संजया, हजारों हत्तीचें बळ ज्याचे अंगीं, अशा माझ्या मुलाला भीमानें मारिलें म्हणून सांगतोस, हें त्यानें केलेलें कृत्य खरें देखील वाटण्यामारखें नाही! संजया, संपूर्ण प्राण्यांना अवध्य, वज्रदेही व तारुण्यसंपन्न अशा माझ्या मुलाला समरांगणांत मारिलें असेंच ना तूं म्हणतोस? कुंतीच्या मुलांनी मिळून रणांत माझ्या मुलाला ज्यापेक्षां मारलें, त्यापेक्षां समारामध्ये देवसंकल्प टाळणें हें माणसांना शक्य नाही खचित! अरे संजया, शंभर मुल्ये मेलेले कानांनी ऐकून माझे हृदय फुटून त्याचे हजारों तुकडे व्हावयास पाहिजे होते! पण तमें झालें नाहीं त्यापेक्षां हें माझे हृदय दगडाचेंच केलेलें अमावें! आतां हे शंभर मुल्ये मेल्यावर ह्या पुत्रशोकांत आह्मां वृद्ध नवरात्रायाकोची काय बरें अवस्था होईल? कारण, ह्या पांडुपुत्रांच्या राज्यांत राहाण्याला तर माझे मन वेणार नाही! संजया, स्वतः

राजपद भोगून व नंतर राजाचा पिता ह्या नात्यानें राहून आतां नोकरासारखा होऊन पांडवांच्या आज्ञेत म्यां कसें बरें रहावें? अरे, ह्याच ना पांडवानें (भीमानें) माझे पुरे शंभरचे शंभर मुल्ये मारून टाकिले? व आतां सर्वांच्या डोक्यांवर पाय देऊन सर्व पृथ्वीभर हाच ना अंमल चालविणार? संजया, माझ्या मुलानें महात्त्या विदुराचा उपदेश न ऐकून त्यानें सांगितलेलें सर्व भविष्य खरें करून दाखविलें! आतां या भीमाचा गुलाम होऊन त्या स्थितींत जें दुर्मरण येणार तें मी कसें बरें पतकरूं? आणि त्या भीमाचीं वर्मां लानणारीं एकेक भाषणे माझ्यानें कशीं बरें कानांनीं एकवतील? असो; संजया, अधर्मयुद्धानें माझा बाळ दुर्योधन मारला गेला, त्या वेळीं कृतवर्मा, कृप व अश्वत्थामा ह्यांनी काय बरें केलें?

संजय सांगतो:—राजा, तुझ्या बाजूचे वीर निघून जाऊन जवळच थांबून पाहूं लागले, तों वृक्षलतांनी युक्त असें एक निविड अरण्य त्याचें दृष्टीस पडलें. मग तेथें क्षणभर विश्रांति घेऊन घोड्यांना पाणी वगैरे मिळाल्यावर ते सूर्यास्ताचे वेळी दुसऱ्या एका मोठ्या अरण्यांत येऊन पोहोंचले. तेथें नानाप्रकारचीं झाडेझुडपें यांची गर्दी असून कित्येक निरनिराळ्या श्रापदांचे कळप होते; तशीच असंख्य पांखरे होती व निरनिराळ्या सर्पजातीचीही तेथें वस्ती होती; जागजागी लहानमोठे पाण्याचे झरे व डबकीं होती; तऱ्हेतऱ्हेचीं कमळांचीं व इतर फुलें जिकडे तिकडे दिमत असून त्यांनीं सर्व प्रदेशाला विशेष शोभा आली होती. मग त्या घोर अरण्यांत शिरून सभोंवती पहातात तों हजारों फांद्या असलेलें एक अफाट वडाचें झाड त्या वीरांच्या दृष्टीस पडलें. तेव्हां हे महारथ, वृक्षांमध्ये राजाप्रमाणें शोभणाऱ्या त्या

वडाच्या झाडाजवळ गेले आणि त्यांनीं तें जळफळत असलेला द्रोणपुत्र अश्वत्थामा याला झाड न्याहाळून पाहिलें.

मग, राजा, ते सर्व रथांवरून खाली उतरले आणि घोडे सोडून यथाशास्त्र मुख-माजेन करून त्यांनीं संव्योपासन केले. मग भगवान् सूर्य अस्ताचलाप्रत प्राप्त झाल्यावर, प्राणिमात्राला मातेप्रमाणें जपणारी जी रात्र ती येऊन पोहोंचली. वर पहावें तों जिकडे तिकडे ग्रह, नक्षत्रे, तारे उदय पावले असून त्यामुळें चित्रविचित्र कशिदा काढलेल्या नाजूक नीलवस्त्राप्रमाणें नभोमंडलाची अपूर्व शोभा दिसें लागली आहे. रात्री संचार करणारे प्राणी मनःपूत शब्द करूं लागले व दिवसास संचार करणारे प्राणी निद्रावश झाले; रात्री हिंडणाऱ्या श्वापदांची गर्जना अधिकाधिक भयंकर होऊं लागली; आणि हिंस्र पशूंना उन्माद येऊन रात्र फार भयप्रद वाटूं लागली. राजा, त्या भयंकर रात्रिसमयी, दुःखानें व शोकांने विह्वल होऊन गेलेले कृप, अश्वत्थामा आणि कृतवर्मा हे तिघे शेजारी शेजारीं बसले. तेथें त्या वडाच्या झाडाजवळ बसून ते आतां-पर्यंत झालेला पाडवांचा व कौरवांचा मंहार आठवून आठवून शोक करूं लागले. नंतर, नानाप्रकारच्या बाणांनीं जखमा झाल्या असल्यामुळें अगोदरच थकवा आलेला, त्यांत आतां झोंपेनें घेरल्यामुळें आळसावून ते जमिनीवर आडवे झाले ! राजा, महारथी कृपाचार्य व भोज—ज्यांना सुवांत राहाण्याची संवय, दुःख कधी माहीत नाही, ते—आज जमिनीवर पडून राहिले असतां त्यांना झोंपेनें पछाडलें. मग, राजा, श्रमानें व शोकांने व्याप्त झाले असल्यामुळें, नेहमी जरी मऊ मऊ बिछान्यांवर निजण्याचा अभ्यास. तरी आज अनाथांप्रमाणें भुईला पाड टेंकूनच ते दोघेही झोंपी गेले ! राजा. त्यांना झोंप लागली. परंतु मनांत

मात्र झोंप येईना; तो सर्पाप्रमाणें उसासे टाकीत बसून राहिला. तो नखशिखांत संतापानें पेटून गेला असल्यामुळें त्याला झोंप येईचना. मग त्या भयंकर अरण्याकडे त्यानें एकदां नजर फेंकली. राजा, नानाप्रकारच्या श्वापदांची जेथें वस्ती, अशा त्या अरण्याकडे अवलोकन करितां करितां त्या वडाच्या झाडावर सहस्रावधि कावळे पडून राहिलेले त्याचे नजरेस पडले. राजा, हे सहस्रावधि कावळे आपापल्या वेगवेगळ्या जागी पडून स्वस्थ झोंप घेत रात्र काढीत होते. याप्रमाणें सभोंवतीं जिकडे तिकडे ते कावळे खुशाल निर्भयपणानें निजून राहिले असतां, अकस्मात् दिसण्यांत उग्र अशी एक घुबडाची स्वारी चाललेली त्यानें पाहिली. हें घुबड आकारानें चांगले मोठें असून त्याच्या डोळ्यांचीं वुबुळें हिरवींचार होती; अंगवर्ण धुकट पिंगटसर होता, चोंच व नखें लांब-लांब होती; त्याचा धृत्कार भयंकर होता आणि सामर्थ्यानें तें गरुडासारखें दिसत होतें. मग एखाद्या गरीब ढबा धरून बसलेल्या पांखराप्रमाणें हळू शब्द करून त्या वटवृक्षाच्या शाखेची प्रार्थना करून मग तें घुबड त्या खांदीवर तुटून पडलें; आणि कावळ्यांचा कर्दनकाळ अशा त्या घुबडानें झोंपी गेलेल्या अनेक कावळ्यांचा अंत केला ! त्यानें काहींचे पंख उपटले, कांहींचीं मुंडकीं तोडली व कांहींचे पाय मोडले ! अशा रीतीनें, पंजेच त्याचें आयुध, त्या आयुधानें संहार करण्याचा त्यानें सपाटा चालविला आणि पहाता पहाता त्या शक्तिमान् पक्ष्यानें जे जे कावळे नजरेस पडले ते सर्व मारून टाकिले ! मग. राजा. त्या कावळ्यांच्या प्रेतांनीं व छिन्नविच्छिन्न होऊन पडलेल्या अवयवांनीं त्या वडाच्या झाडाखालचा सर्व प्रदेश व्यापून गेला; आणि अशा रीतीनें



ते कावळे मारून टाकल्यावर त्या घुबडाला आनंद झाला !

ह्याप्रमाणे त्या घुबडेंचें शत्रूंवर यथेच्छ सूड उगवण्याचें काम संपल्यावर, तें त्याचें कपटाचरण रात्रीचे समयी पाहून त्याचा गुण उचलण्याचा निश्चय करून अश्वत्थामा विचार करितो, “ ह्या आणिबाणीच्या प्रसंगी या पक्ष्यानें मला चांगली अकल शिकविली ! शत्रूंचा अंत करण्याला योग्य वेळ ही आतांच होय असें मला वाटूं लागलें आहे. हे पांडव मोठे बलशाली आहेत, हिंमतवान् आहेत, नेम मारण्यांत कुशल आहेत, आणि असह्य प्रहार करणारे आहेत; तेव्हां ह्यांना मारून टाकण्याचें काम आज माझ्या हातून होण्यासारखें नाही ! इकडे तर ‘ त्यांना मारून टाकतों ’ अशी प्रतिज्ञा मी राजाचे समक्ष करून बसलों आहे. धर्मयुद्ध करावें तर दिव्यासमोर पतंगाचें जमें आत्मघातक वर्तन होऊन त्याची अवस्था होते तशी माझी होणार आणि मी प्राणाला मुकणार, ह्यांत मुळीच संशय नको ! तेव्हां आतां कपट करूनच कार्य माघलें पाहिजे व शत्रूंचा संहार केला पाहिजे. ज्यांत धोका आहे अशा मार्गापेक्षां धोका नसलेला मार्गच चांगला असें शहाण्या शहाण्या लोकांचें देखील मत आहे. शिवाय अशा प्रसंगी, शास्त्रांत ज्याला दूषण दिलें असेल व लोकांत ज्याला नावें ठेवितात असा उपाय असला तरी तो देखील क्षत्रिय-धर्म पतकरल्यावर माणसानें खुशाल योजावा ! ह्या दुष्ट पांडवांनी देखील सर्व प्रकारची वाईट, लाजिरवाणी व दगलबाजीची कृत्ये पावलो-पावली केली आहेत. प्राचीन काळी धर्माधर्म पहाणार व न्याय-अन्याय शोधणार जे मोठे विचारां तत्त्ववेत्ते होऊन गेले, त्यांनी ह्याच विषयावर वचनें लिहून ठेविली आहेत त्यांतील तान्पर्य की, शत्रू थकलेला असेल, मेरीला

आला असेल, भोजन करीत असेल, बाहेर कोठें निघाला असेल. किंवा घरांत प्रवेश करीत असेल, तर अशा कोणत्याही वेळी त्याजवर खुशाल घाला घालावा; तसेंच शत्रूचें सैन्य मध्यरात्री निद्रेच्या अधीन झालें असेल, त्याचा अधिपति नाहीसा झाला असेल, त्यांतील योद्ध्यांची फुटाफुट झाली असेल, किंवा त्या सैन्यांत दुही झाली असेल, तर असली संधि साधून त्या सैन्यावर खुशाल छाप घालून कत्तल उडवावी ! ”

राजा, असा विचार करून, अश्वत्थामा पराक्रमी गुरा—तरी त्यानें पांडव पांचालांसह-वर्तमान निजलेले असतांना रात्रीचे वेळी छाप घालून त्यांना ठार मारण्याचा निश्चय केला. ही क्रूर कल्पना मनांत आणून, ती तडीस नेण्याचा निश्चय वरचेवर विचार करीत करीत पक्का करून मग आपला मामा कृपाचार्य व भोज ह्या दोघांना त्यानें झोंपेतून उडविलें. ते महात्मे कृप व भोज जागे झाल्यावर, प्राप्त स्थितीची त्यांना शरम वाटून ते अश्वत्थाम्याचे म्हणण्याला नीटमें उत्तर देईनात. मग क्षणभर डोळे मिटून विचार करून अश्रु दाळीत अश्व-त्थामा म्हणतो, “ वीरांमध्ये वीर असा जो बलिष्ठ दुर्योधन राजा, त्याच्याकरितां आपण पांडवांशी वर आर्भिल्लें; त्या अकरा असौ-हिणी सैन्याच्या पराक्रमी अधिपतीला युद्धांत एकटा गांठून ह्या नीच पांडवांनीं सर्वांनी मिळून भीमाला पुढें करून त्याचे हातून मारून टाकिलें ! राज्याभिषेकानें पवित्र झालेल्या दुर्यो-धन राजाच्या मस्तकावर त्या नीच भीमसेना-नेच पाय देऊन हें दुष्ट कृत्य केलें ! आतां पांचा-लांना इतका आनंद होऊन गेला आहे की, ते हंसत आहेत, ओरडत आहेत, नाचत आहेत, शेंकडों शंख फुंकीत आहेत व दुंदुभि वाजवीत आहेत ! शस्त्रांचा ध्वनि व वाद्यांचा गजर एकांत एक

मिसळून जो एकच भयंकर घोष चालला आहे. देवानें कामें होत नसतात किंवा नुसत्या एका तो वाऱ्यानें चोहोंकडे पसरून त्यानें दिशा उद्योगानेंही होत नसतात; तर दोहोंच्या संयोगा- गजबजून गेल्या आहेत ! घोडे ग्विकाळत नें कोणतेंही काम सांभत असतें. महत्वाच्या आहेत, हत्ती मोठ्यानें ओरडत आहेत. व काय किंवा किरकोळ काय, मर्व गोष्टी देव योद्धे गर्जना करीत आहेत. त्यांचा हा आणि उद्योग ह्या दोहोंच्या अशीन असून केवदा गलका ऐकूं येत आहे ! पूर्वदिशेकडे त्यांच्याच तंत्रानें चालू असलेल्या किंवा बंद मोर्चा फिरवून आनंदाच्या भरांत खुशाल पडलेल्या सर्वत्र दृष्टीस पडतात. पाऊस डोंगरा- रथांतून चाललेले जे योद्धे, त्यांच्या रथांचा वर पुष्कळ पडला तरी काय फल देतो ? बरें, शब्द ऐकून अंगावर कांटा उभा रहातो. पांड- तोच नांगरलेल्या शेतावर पडला, तर किती वांनी दुर्योधन वेगरे धार्तराष्ट्रांची ही जी कत्तल तरी फलद्रूप होतो ! देव सबळ असल्यावर उडविली, तीतून ह्या घोर प्रसंगी आपणच उद्योगाची कांही प्रतिष्ठा नको; तथापि उद्योगा- काय ते तिथे उरलों. शेंकडों हत्तीचें बळ अम- वांचून नुसतें देवही फुकटच जातें; हा लेंले कित्येक वीर आणि अस्त्रविद्येत मी मी सिद्धांत पूर्वींपासून सर्वत्र ठरलेला आहे. शेत म्हणणारे कित्येक वीर ह्या पांडवांनी मारून चांगलें नांगरून पेरून ठेविलेलें असावें व देवानें टाकिले, त्यापेक्षां काळच फिरला असें मला पर्जन्यवृष्टि भरपूर द्यावी, ह्मणजे मग जसें पीक वाटतें ! कारण, ह्या काळाचा महिमा असा आहे विपुल येतें, तशीच माणसानें आरंभिलेल्या की, अमुक एक गोष्ट अशा रीतीनें व्हावयास कोणत्याही कामाची स्थिति समजावी. आतां, पाहिजे असा त्याचा संकल्प एकदां झाला, त्यांतल्या त्यांत देवाचा प्रभाव इतका आहे की, म्हणजे मग ती कितीही दुष्कर असली तरी अमुक एक गोष्ट घडवून आणावयाची असा त्यानें संकल्प केला ह्मणजे त्याच्या एकट्याच्या बाणीचे प्रसर्गां मन गांगरून जाऊन तुमची जोरावर ती तडीस जाते. तरी पण शहाणे लोक अकळ गुंग झाली नसेल तर आतां कोणता मार्ग प्रयत्नावरच भरंवसा ठेवून चालतात. कारण, मनुष्यमात्राची सर्वे कार्ये दोहोंच्याही तंत्रानें आपल्याला श्रेयस्कर होईल तें सांगा. ”

## अध्याय दुसरा.

—०:—

**कृपाचार्याचा अश्वत्थाम्याला उपदेश.**

कृपाचार्य म्हणाले:—अरे शूरा, तूं जें जें बोललास तें सर्व मी ऐकून घेतले; आतां मला- ही थोडें सांगावयाचें आहे तें ऐकून घे. सर्व माणसें दोन प्रकारच्या कर्मांनी गुरफटून जाऊन बांधली गेली आहेत. एक देव ( जन्मांतरी केलेलीं कर्मे ) व दुसरा प्रयत्न. ह्या दोहोंच्या पलीकडे तिसरें कांहीं नाही. भल्या माणसा, तुला एक सांगून ठेवितां, कीं नुसत्या एकट्या

देवानें कामें होत नसतात किंवा नुसत्या एका उद्योगानेंही होत नसतात; तर दोहोंच्या संयोगा- नें कोणतेंही काम सांभत असतें. महत्वाच्या काय किंवा किरकोळ काय, मर्व गोष्टी देव आणि उद्योग ह्या दोहोंच्या अशीन असून त्यांच्याच तंत्रानें चालू असलेल्या किंवा बंद पडलेल्या सर्वत्र दृष्टीस पडतात. पाऊस डोंगरा- वर पुष्कळ पडला तरी काय फल देतो ? बरें, तोच नांगरलेल्या शेतावर पडला, तर किती तरी फलद्रूप होतो ! देव सबळ असल्यावर उद्योगाची कांही प्रतिष्ठा नको; तथापि उद्योगा- वांचून नुसतें देवही फुकटच जातें; हा सिद्धांत पूर्वींपासून सर्वत्र ठरलेला आहे. शेत चांगलें नांगरून पेरून ठेविलेलें असावें व देवानें पर्जन्यवृष्टि भरपूर द्यावी, ह्मणजे मग जसें पीक विपुल येतें, तशीच माणसानें आरंभिलेल्या कोणत्याही कामाची स्थिति समजावी. आतां, त्यांतल्या त्यांत देवाचा प्रभाव इतका आहे की, अमुक एक गोष्ट घडवून आणावयाची असा त्यानें संकल्प केला ह्मणजे त्याच्या एकट्याच्या जोरावर ती तडीस जाते. तरी पण शहाणे लोक प्रयत्नावरच भरंवसा ठेवून चालतात. कारण, मनुष्यमात्राची सर्वे कार्ये दोहोंच्याही तंत्रानें चाललेली किंवा बंद पडलेली दृष्टीस पडतात. खटपट केली असतां ती देवानें साधून खटपट करणाऱ्याचा हेतु तडीस नेते. तसेंच मोठ्या तत्परतेनें उद्योग करणाऱ्याचाही उद्योग चांगला व्यवस्थित रीतीनें झालेला असला तरी फुकट गेलेला आपण पहातो. मग तेवढ्यावरून, जे लोक स्वभावतः आळशी व सुर्व असतात ते उद्योगाची थट्टा करू लागतात; तें अर्थात् शहाण्या लोकांना आवडत नाही. परंतु लोकांत फार करून उद्योग केला असतां तो अगदींच फुकट गेलेला दिसत नाही; तसेंच दुसरे पक्षी उद्योग न केला तर माणसाला फारकरून दुःखच प्राप्त

होतें. आतां जर एखाद्या माणसाला प्रयत्न न करितां आपोआप विलक्षण लाभ होऊन गेला, किंवा एखाद्याला उद्योग पुष्कळ करून कांहींच लाभ झाला नाही असें झाले, तर हे दोन्ही प्रकार विरळा घडणारे आहेत असें समजावें. तत्पर राहून काम करणारा मनुष्य उपाशी मरत नाही; आणि आळशी मनुष्याला सुख झणून मिळत नाही. या दुनियेंत उद्योगी लोकांचें कल्याणच झालेलें पहाण्यांत येतें. जर उद्योगी माणसानें उद्योग आरंभून त्यापासून त्याचें कार्य साधलें नाही, तर त्याचेकडे बोल तरी कांही रहात नाही; साधलें तर हवी असलेली वस्तु मिळून जाते. खटपट न करितां दुनियेंत ज्याला देवाच्या जेरावर कांही तरी मिळून जातें, त्याची बहुतकरून निंदा होते आणि तो दुसऱ्यांच्या द्वेषाला पात्र होतो. तेव्हां ह्या सर्व गोष्टी ध्यानांत न आणितां तिकडे दुर्लक्ष करून भलत्या धोरणानें जो मनुष्य चालतो, तो आपल्यावर संकटें ओढवून घेतो असें शहाण्या लोकांचें मत आहे. उद्योग व देव ह्या दोहोंतून एक कमी पडेल तर कोणत्याही कामाला यश येणार नाही. उद्योगाची बाजू लंगडी पडल्यावर नुसतें देव कांहीं करू शकत नाही. झणून कायोरंभी देवतांचें स्मरण करून खटपट करण्याची उमेद धरून जो उद्योगी मनुष्य चांगल्या शिस्तीनें कोणत्याही कार्याला हात घालील, त्याला अपयशाचे प्रसंग कधी येणार नाहीत. शिस्तीनें कार्य आरंभणें झणजे असें की, वृद्ध व वडील माणसें असतील त्यांचेकडे मर्यादेनें जाऊन, काय करणें श्रेयस्कर होईल हें विचारवें; व आपल्या पथ्याचें झणून जें काय ते सांगतील तें करावें. उद्योग चालू असतां पदोपदीं जाऊन वडील माणसांची सल्ला विचारावी. कारण इच्छित वस्तु मिळण्याला तेंच उत्कृष्ट साधन

होय व कोठेही यश येण्याला तेंच मूळ होय. वृद्ध माणसांची मसलत घेऊन जो प्रयत्नाची दिशा ठरवितो, त्याच्या खटपटीचें उत्तम चीज होतें व वेळ देवील न लागतां काम होतें. उच्छृंखळ मनाचा व ज्याची त्याची मानसबुद्धी करणारा असा जो एखादा पुरुष उलूपाणानें किंवा संतापानें अथवा भीतीनें किंवा लोभीपणानें कोणत्याही वस्तूवर मन ठेवून खटपट चालवितो तो लवकरच वैभवाला मुक्तो. तर हा अशाच तऱ्हेचा न साधण्यासारखा वेडगळ उद्योग ह्या महालोभी आणि अदूरदर्शी दुर्योधनानें पुढचा विचार न करितां आरंभिला. आपले जे हित सांगणारे त्यांचेकडे ह्यानें लक्ष दिलें नाही व वाईट लोकांची सल्ला घेऊन वागला; नको नको म्हणून सगळे सांगत असतां आपल्यापेक्षां सर्व गुणांनी अधिक अशा पांडवांशीं वैर केलें; त्याचें शीलच वाईट, म्हणूनच वैर आरंभल्यावरही अगोदर हातून कांहींच नेटानें काम झालें नाही व मागून संकटांत सांपडल्यावर तो संताप करून घेऊं लागला; व मित्रांची सल्लाच घेईना. त्या पापी पुरुषाची बाजू घेऊन आळी चाललों, त्यामुळें आमच्यावर असा भयंकर प्रसंग येऊन गुदरला ! ह्या संकटामध्ये माझे मस्तक इतकें तापून गेलें आहे की, कितीही विचार केला तरी हिताचा मार्ग ध्यानांत येत नाही. माणसाच्या बुद्धीला मोह पडला झणजे इष्टमित्रांची सल्ला विचारावी; कारण, ह्याला हवा असलेला कल्पकपणा व धोरणीपणा त्यांच्यामध्ये सांपडतो आणि ह्याला तरणोपाय दिसू लागतो. अशा शहाण्या शहाण्या इष्टमित्रांना विचारल्यावर ते ह्या माणसाचा कार्यभाग साधण्याचें रहस्य कशांत आहे ह्याचा नीट विचार करून जी युक्ति सांगतील तिला अनुसरून त्यानें वागावें. म्हणून आपण सर्व मिळून धृतराष्ट्र, गांधारी व बुद्धिशाली विदुर यांकडे जाऊन

त्यांचें मत विचारूं आणि विचारल्यावर पुढें ते आमच्या हिताचा म्हणून जो उपाय सांगतील तो आपण करावा हेंच मला फार बरें वाटतें. उद्योगच आरंभिला नाही तर कधीही काम व्हावयाचें नाही. आतां, उद्योग केल्यावरही ज्यांचें काम होणार नाहीं, ते हतभागीच होत हें ठरलेलें; तेव्हां ह्याबद्दल जास्त विचारच नको!

### अध्याय तिसरा.

—:०:—

#### अश्वत्थाम्याची मसलत.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, कृपाचार्यांचें हें सरल व सुनीतीचें भाषण ऐकून, दुःखानें व्याकूल झालेला व शोकानें नखशिखांत पेटून गेलेला अश्वत्थामा मन निवृत्त करून त्या उभयतांसें म्हणतो, “प्रत्येक माणसामध्ये जो म्हणून अकलेचा भाग असतो, तेवढ्यावर जो तो आपल्या ठिकाणीं खुष असतो, अशी सर्वांची स्थिति आहे. दुर्निर्घत प्रत्येकजण आपल्याला अकलवान् समजतो, आणि जो तो आपल्यालाच धन्य मानून आपलीच प्रशंसा करीत असतो. अशा रीतीनें प्रत्येकाची बुद्धि आपली वाहवा करून घेण्यांत खर्च होत असते. सर्वजण दुसऱ्याच्या अकलेला नांवें ठेवून आपलीच शेखी मिरवीत असतात. कारण, प्रसंगानें एकदिल करून एकाच धोरणानें सुयंत्रणानें जे कांहीं काळपर्यंत चाललेले असतात आणि एकमेकांवर खुष राहून परस्परांबद्दल आदर दाखवितात, त्यांचीच बुद्धि पुढें कालांतरानें पालटून ते एकमेकांला विरोध करून नडवूं लागतात. मूर्ति तितक्या प्रकृति; त्यांतून विशेषकरून प्रसंगानें मन गोंधळून गेलें म्हणजे त्या घटकेत एकाला एक व दुसऱ्याला दुसरी अशी प्रत्येकाला कांहीं तरी अकल सुचते. ज्याप्रमाणें एखादा चतुर वैद्य रोगाची परीक्षा

करून यथाशास्त्र उपचार करितो, त्याप्रमाणें आपलें इष्ट कार्य साधण्याकरितां म्हणून माणसें युक्ति योजीत असतात; व ज्याची जेवढी अकल तेवढी तो खर्च करीत असतो; मग दुसरी माणसें मात्र त्याच्या अकलेला नांवें ठेवितात. माणसाची आपल्या इतिकर्तव्यते-बद्दलची बुद्धि तारुण्यांत एक तऱ्हेची बनते, मध्यम वयांत दुसऱ्या तऱ्हेची बनते व वृद्धपणीं तिसरेंच एखादे धोरण त्याला पसंत पडूं लागतें. एकदम एखादें मोठें संकट येऊन गुदरल अथवा एकदम मोठा भाग्योदय झाला, म्हणजे माणसाच्या बुद्धीत पालट होतो. एकाच माणसामध्ये देखील समयानुरूप जी जी बुद्धि उत्पन्न होऊं लागते, तीच पुढें त्यालाच नापसंत वाटूं लागते. आपल्या अकलेप्रमाणें आपल्याच मनाशीं योजून पाहिल्यावर जी युक्ति चांगली वाटे, त्या युक्तीनें माणूस आपलें कार्य करूं लागतो आणि हीच उद्योग करण्याची खरी दिशा. भोजा, प्रत्येक मनुष्य हेंच चांगलें असें एकदां मनाशीं ठरवून मग उमेदीनें कंबर बांधून जिवाकडेही न पहातां उद्योगाला लागतो. आपलें धोरण आपल्याशीं कायम करून आपल्या चातुर्यानें माणसें निर-निराळ्या खटपटी करीत असतात व त्यांतच आपलें हित आहे, असें मानीत असतात!

“तर आतां या प्रसंगांत मला जी युक्ति सुचून हुषारी वाटत आहे व शोकाचाही विसर पडत आहे, ती तुम्हांला सांगतो. ब्रह्मदेवांनें सर्व प्रजा निर्माण करून व त्यांच्या पाठीमागे कांहीं तरी कर्तव्य लावून देऊन ब्राह्मण, क्षत्रिय वगैरे जाति करून वर्णपरत्वे एकैक गुण ठरवून दिला आहे. ब्राह्मणामध्ये उत्तम प्रकार-ची विद्या असावी, क्षत्रियामध्ये उत्तम पराक्रम असावा, वैश्यामध्ये उद्योगाविषयी दक्षता असावी व शूद्रामध्ये वरच्या तीन वर्णांना

साहाय्य करण्याबद्दलची तत्परता असावी. काम-  
क्रोधादिक मनोविकार ज्याने निकले नाहीत,  
तो ब्राह्मण कुचक्रामाचा; पराक्रम ज्याच्या-  
मध्ये नाही तो क्षत्रिय कशाचा 'वैश्य आळशी  
असेल तर तो निंद्य होय; व शूद्र प्रतिकूल-  
पणाने वागेल तर तो नीच समजावा !

“ आतां मी ब्राह्मणाच्या एका श्रेष्ठ व पूज्य  
अशा कुळांत जन्म घेतला आणि कम-  
नशीबाचा म्हणून क्षत्रियधर्मांत शिरलों आहे.  
तर क्षत्रियधर्म एकदां पतकरल्यावर जर  
मी ब्राह्मणधर्माला अनुसरून शमदमादिक  
मोठमोठीं साधनें करीत बसेन, तर तें कांहीं  
बरे नव्हे असें माझे मत आहे. दिव्य धनुष्य  
व उत्तम उत्तम अस्त्रे जवळ बाळगून मी  
युद्धांत पित्याचा वध झालेला डोळ्यांनीं  
पाहिला तर आतां मंडळीत दुसरे तिसरे काय  
बरे सांगत बसण्याला मला तोंड आहे ? म्हणून  
आज मी यथेच्छ क्षत्रियधर्माचे आचरण  
करणार आणि दुर्योधन राजाची व माझ्या  
महात्म्या पित्याची जी गति झाली त्याच  
गतीला जाऊन पोहोचणार व त्यांचा उतराई  
होणार ! आज पंचालमैत्र्यांतील सर्व योद्धे  
कवचकुंडलादिक काढून ठेवून आनंद करीत  
मोठ्या भरंवशांने झोपी जातील; कारण त्यांना  
मेहनत फार झाली असल्यामुळे ते थकले-  
भागलेले असणार व त्यांत आतां विजय  
झाला म्हणून ते त्याच संतोषांत असणार !  
तेव्हां अर्थात् आपल्या छावणीत आज रात्री  
बिनघोरपणे ते गाढ निद्रा घेणार; तर ही संधि  
साधून त्यांच्या छावणीवर आपण असा  
नेटाचा छाप घालणार कीं, एका सपाट्यांत  
त्यांच्यावर तुडून पडून, इंद्रांने दैत्यांचा संहार  
केला त्या मासल्याचा पराक्रम करून सर्वांची  
कत्तल करून प्रेतांचा दीग पाडणार ! पेटलेला  
वणवा ज्याप्रमाणे संबंध रान जाळून खाक

करितो, त्या तऱ्हेची कर्तवगारी करून धृष्ट-  
द्युम्न वगैरे सर्वत्र योद्ध्यांचा मी एकदम  
समाचार घेतों ! या पंचालवीरांना ठार  
करूनच मनाची शांति करून घेणार ! पिनाक-  
पाणी शंकर आपला रुद्रावतार प्रकट करून  
ज्याप्रमाणे पशूंमध्ये संहार करीत असतां  
शोभतो, त्याप्रमाणे आजच्या दंगलीत पांचालां-  
मध्ये कत्तल करितांना उग्र स्वरूप मी प्रकट  
करणार ! आज मी रणामध्ये या पांचालांना  
व पांडुपुत्रांनाही ठार करून मोठ्या संतोषाने  
त्यांची प्रेते ओढून टाकून तुडवून काढणार !  
आज पांचालांच्या प्रेतांनीं भूमातेला मी शरीर-  
दान करणार ! आणि त्यांच्यामध्ये एकेकास  
ठार करीत करीत आपल्या पित्याच्या ऋणांतून  
मुक्त होणार ! व दुर्योधन, कर्ण, भीष्म आणि  
जयद्रथ ह्या मंडळींचाही उतराई होणार !  
मी पांचालांची आज दुर्देशा करून सोडणार !  
आजच्या रात्री तो पांचालांचा राजा धृष्टद्युम्न  
ह्याचें एखाद्या पशूप्रमाणे मस्तक फोडून  
क्षणांत चक्काचूर करून टाकणार ! आज  
पांचालांची व पांडवांची पोरें रात्री निजलेलीं  
असतील ती ह्या तीक्ष्ण खड्गाने कत्तलीत  
ठेंवून काढणार ! तात्पर्य, आज रात्री त्या  
पांचालसेनेची झोपेत कत्तल उडवून मी  
कृतकृत्य व धन्य होऊन दुःखांतला जीव  
सुखांत नेणार ! ”

### अध्याय चौथा.

—:०:—

#### कृपाचार्यांचे भाषण.

कृपाचार्य म्हणतात:— “हे शूरा, शत्रूंवर  
सुड उगवण्याची जी मसलत तूं काढलीस,  
ती अभिन्नदनीय आहे. तुझे निवारण करण्याला  
प्रत्यक्ष इंद्र देखील समर्थ होणार नाही. आम्ही-  
ही पहाटे उठून तुला मदत करण्याकरितां बरो-

बर येऊं. आतां कवच वगैरे काढून तूं रातोरात विश्रांति घे. उद्यां तूं शत्रूंचेर चाल करून जाण्याकरितां निघालास म्हणजे मी व कृत-वर्मा उभयतां रथांवर बसून कवच घालून तुझ्याबरोबर निघूं. मग आह्वाला बरोबर घेऊन उद्यां पराक्रम करून पंचालवीर व त्यांचे अनुयायी या सर्वांस तूं ठार करूं शकशील; कारण, तूं तसाच महारथी योद्धा आहेस. तर एवढी रात्र विश्रांतीमध्ये काढ. तुझा फार वेळ झोपेपांचून गेला आहे, म्हणून एवढी रात्र स्वस्थ झोप घे. हे मानदा, झोप चांगली मिळून थकवा गेला आणि जिवाला आराम वाटूं लागला, म्हणजे आह्वांलाही बरोबर घेऊन युद्ध करून तूं शत्रूंना मारून टाकशील ह्यांत संशय नाही. वत्सा, वीरांमध्ये महावीर असा तूं एकदा आयुधें घेऊन सज्ज झाल्यावर प्रत्यक्ष देवांचा राजा इंद्रही तुला जिंकू शकणार नाही. अरे, हा कृपाचार्य बरोबर असल्यावर आणि कृत-वर्मा पाठीराखा असल्यावर युद्धांत अश्वत्थामा चवताळून पुढें सरमावला असतां त्याच्या-पुढें माझात इंद्राचें देखील कांही चालणार नाही ! तर, बाबारे, एवढी रात्र विश्रांति घेऊन झोप संपून आह्वांला हुषारी वाटूं दे. की पहाटे थोडी रात्र असतांनाच देखील चालून जाऊन आपण शत्रूंना मारून टाकूं. तुझ्या-जवळ उत्कृष्ट अस्त्रे आहेत, तशीच माझ्या-जवळही आहेत आणि कृतवर्माही मोठा धनुर्धारी असून युद्धांत कुशल आहे, तर आपण तिघे एकजुटीने जाऊन रणांत गोळा झालेल्या सर्व शत्रूंना निकारानें लडून मारून टाकूं व आनंदाच्या शिगवरावर जाऊन बसूं ! तूं आपलें मन स्थिर करून विश्रांति घे आणि रात्रभर तुला स्वस्थ झोप मिळूं दे. हे नरश्रेष्ठा, मी व कृतवर्मा दोघे शत्रूंची खोड काढणारे असेच धनुर्धारी वीर आहो; तेव्हां तूं रथांत बसून आवेशानें

निघालास म्हणजे आम्हीही कवच धारण करून रथांत बसून तुझ्याबरोबर चलूं. व नंतर तूं त्यांच्या छावणीत जाऊन आपलें नांव सांगून उघड उघड सामना करून शत्रूंची चांगली कत्तल उडीव; आणि मग मोठमोठ्या असुरांना मारल्यावर इंद्रानें जसा आनंद केला तसा तूं आनंद कर. कारण, तो दैत्यारि जसा संतापल्या-वर सर्व दैत्यांना जिंकू शकला, तसाच तूं-ही समरांगणांत शिरल्यावर पांचालांची सर्व भेना जिंकू शकशील. युद्धांत मी बरोबर असलों आणि कृतवर्म्याचाही पाठिंबा असला म्हणजे. एवढा शक्तिमान् प्रभु इंद्र खरा, पण तो जरी उतरून आला तरी त्याचा देखील तुझ्यापुढें निभाव लागणार नाही. बाबारे, आणखी तुला असेंही सांगून ठेवितों की, रणांत पाऊल टाकल्यावर मी काय किंवा कृत-वर्मा काय, पांडवांना जिंकल्यावांचून म्हणून तेथून हालणारच नाही ! युद्धांत चिडून गेलेल्या पांचालांना आणि त्यांबरोबरच पांडवांना ठार करूं तेव्हांच माघारे फिरूं; किंवा हें जर न होईल तर स्वतः धारातीर्थी देह ठेवून स्वर्गाला जाऊं. वा शूर वीरा, उदयीक प्रातः-काळी युक्तिप्रयुक्तींनीं आम्ही तुला मदत करूं हें मी तुला खरं खरें सांगतों !

### अश्वत्थाम्याचा कोप.

राजा. मामानें हिताचें म्हणून जें हें भाषण केलें, तें ऐकून अश्वत्थामा संतापून डोळे लाल करून आपल्या मामाला उत्तर करितो, "मनुष्य दुःखानें व्याकूल झालेला असला, किंवा संतापा-च्या आवेशांत असला, अथवा एवादी गोष्ट मनांत आणून आणून विचारांत गेले झालेला असला, अगर कांही तरी माघण्याच्या नादांत लागला असला, तर त्याला झोप कशाची येणार ! तर आज हे चारही प्रकार मजमध्ये आहेत, हें व्यानांत आणा. या चौकडीपैकी एक जो

संताप, तो माझ्या झोंपेवर क्षणांत घाला घालील. पित्याचा वध झालेला राहून राहून मनांत आल्यावर किती तरी माझ्या मनाला दुःख होत असेल ! माझ्या अंतःकरणांत जो आज भडका झाला आहे, तो रात्रंदिवस केव्हांच म्हणून शांत होत नाही. त्यांत विशेषेकरून त्या चांडाळांनीं माझ्या डोळ्यांदेश्वर माझ्या पित्याचा वध केला ही गोष्ट मनांत धोळून धोळून माझे अंतःकरण तिळतिळ तुटतें आहे ! माझ्यासारखा मनुष्य जगांत एक क्षणभर देखील जगूं नये, तो मी जगलों कसा ? आणि द्रोणाचार्य मारला गेला, हे पांचालांचे आनंदाचे उद्गार ऐकून घेतों कसा ? धृष्टद्युम्नाची मरशी झाल्यामुळे आतां जगांत देखील जिवंत राहूं नयेसें मला वाटूं लागलें आहे. त्यानें माझ्या पित्याचा वध केला त्यापेक्षां तो ठार व्हावयास पाहिजे आणि सर्वत्र पंचालवीर ठार व्हावयाम पाहिजेत !

“ भीमाच्या गदेच्या प्रहारानें मांडी फुटल्यावर दुर्योधन राजानें जो विलाप केलेला मी कानांनी ऐकला, तो ऐकल्यावर. कितीही क्रूर माणूस असला तरी त्याचें देखील अंतःकरण फुटलें असतें, आणि कितीही निर्दय जरी माणूस असला; तरी त्याच्या डोळ्यांतून टप-टप अश्रु गळले असते ! ऊरुभंगानें जीव कासावीस होऊन त्या वेदनेंत दुर्योधनाचे तोंडून जे उद्गार निघाले, ते कानांवर पडलेले अमल्यावर. आणि माझ्या जिवांत जीव असतांच आमच्या पक्षाचा पुरा मोड झालेला मनांत आल्यावर, उमळणाऱ्या लाटांनी जमा समुद्र फुगत जातो तसें माझ्या शोकाला भरतें येऊन तो अनावर होतो ! मग एकांत सांपडून मनाचे विचार सुरू झाल्यावर मला झोंप मिळावी कशी ? आणि जिवाला स्वस्थपणा यावा कसा ? त्या शत्रूंना जोंपर्यंत श्रीकृष्ण

व अर्जुन यांचें रक्षण आहे, तोंपर्यंत इंद्राला देखील ते भारी आहेत अशी माझी समजूत आहे. तरी पण संतापाभि जो आंत पेटला आहे तोही माझ्यानें आवरून धरवत नाहीं. हा माझा आवेश कमी करून मला थांबवून धरील असा माणूस एकही मला जगांत दिसत नाही. या संतापांत जो माझ्या मनाचा निश्चय ठरला तोच मला पसंत आहे. आपल्या पक्षांतील लोकांचा पराभव होऊन पांडवांचा जय झाला ही वार्ता जासुदांचे तोंडून ऐकल्यापासून माझ्या मनाची जळजळ अतिशय तीव्र होत आहे. म्हणून मी आज शत्रु निजले असतांच त्यांची कत्तल करून मग विश्रांति घेणार आणि स्वस्थपणानें झोंप घेणार ! ”

## अध्याय पांचवा.

—:—:—

### शिबिरद्वारीं आगमन.

कृपाचार्य म्हणतात:—जो मनुष्य स्वभावतः मंदबुद्धीचा असून मनोविकारांच्या ताब्यांत राहिलेला असतो, त्यानें धर्माचें व नीतीचें रहस्य समजून घेण्याचें मनांत जरी आणिलें, तरी त्याला तें कधीही पूर्ण समजू शकणार नाही असें माझे मत आहे. त्याचप्रमाणें, मनुष्य बुद्धिशाली जरी असला, तरी ज्याच्या मनाला वळण चांगलें लागलें नाही त्याला धर्माची व नीतीची तच्चें कधीही समजणार नाहीत. जो बुद्धीचा जड, तो धिमेपणानें फार दिवस जरी एखाद्या पंडिताजवळ राहिला, तरी पक्षाचांच्या रसांत पळा पुष्कळ बुडून निघून ही जशी त्यांची गोडी त्याला समजत नाही. तसा या माणसाला धर्मतत्त्वांचा बोध म्हणून होत नाही; पण तोच बुद्धिमान् पुरुष पंडिताजवळ येऊन थोडाच वेळ जरी त्याच्या सह-वामांत राहिला. तरी तेव्हांच सर्व धर्म-

रहस्य ग्रहण करितो. याला दृष्टांत जिह्वा, तिला पक्कान्नांना स्पर्श केल्याबरोबर त्यांची गोडी पुरी समजून जाते ! माणसाची बुद्धि तीव्र असून व मनाला शिस्त लागलेली असून ज्ञान संपादण्याचें अगत्यही जर त्यामध्ये असेल तर तो सर्व शास्त्रें आपलीशी करून टाकील आणि त्यांपैकी जो उचलण्यासारखा भाग असेल त्यासंबंधानें वितंडवाद घालीत बसणार नाही. परंतु कोणाची किंमत न ठेवणारा, हेकड, हलकट असा जो असेल, तो हिताची गोष्ट कोणी सांगितल्यास ती टाकून पापकर्म करीत सुटतो. ज्याला हितचिंतक व इष्टमित्र असतात, त्यालाच ते पापमार्गापासून परतवूं पहातात; मग त्याची ग्रहदशा चांगली असली तर तो उद्देशानें माथारा फिरतो, व ती फिरली असली तर त्याला विपरीत बुद्धि आठवते. ज्याप्रमाणें भांबावून गेलेल्या माणसाला इकडच्या तिकड-च्या चार गोष्टी सांगून ताळ्यावर आणितां येतें, त्याचप्रमाणें कुमार्गांत शिरणाऱ्याला त्याच्या मित्रानें सन्मार्गावर आणणें शक्य असतें; आणि तें जर शक्य नसलें, तर त्या माणसाचा घातच होतो. ह्मणून पापकर्माला प्रवृत्त होणाऱ्या मुजाण मित्राला शहाणे लोक आपली अकल सर्व खर्च करून वरचेवर मागें ओढीत असतात !

तर, बाबारे, हिताकडे दृष्टि ठेवून व आपल्याशी विचार करून मन आवरून धर आणि मी मांगतों तें ऐक, ह्मणजे तुला मागून पश्चात्तापांत पडण्याचा प्रसंग येणार नाही. झोंपी असतील त्यांचा वध करणें हें शास्त्राच्या दृष्टीनें प्रशस्त नाही त्याचप्रमाणें, हातचें शस्त्र ज्यांनी टाकून दिलें, अथवा ज्याचें रथ, अश्व वगैरे कोणतेंही वाहन नाहीसं झालें, किंवा ज्यांनी 'मी आपला आहे' असें ह्मणून याग मागितला, अगर जे शरण आले, किंवा

ज्यांचें शिरस्त्राण उडून गेलें, अगर घोडा मारला गेला, अशा कोणाचाही वध करणें शास्त्रानें अगदीं अप्रशस्त गणलें आहे; आणि आज तर ते पांचाल कवच काढून ठेवून निः-शंकपणानें प्रेताप्रमाणें निजून रहाणार; अशा स्थितीत जो कोणी कपटानें त्यांचा घात करण्यास प्रवृत्त होईल तो अफाट, घोर आणि दुस्तर नरकांत जाऊन बुडेल हें अगदी उघड आहे ! जगांत जेवढे अश्ववेत्ते आहेत त्यांत तूं अग्रगण्य व विख्यात आहेस आणि ह्या लोकी आजपर्यंत तुला पातक तिळभर देखील शिवलेलें नाही. ह्मणून सूर्यासारखा तेजस्वी असा तूं उद्या सूर्योदय झाल्यावर पंचमहाभूतांना साक्षी ठेवून उघड रीतीनें शत्रूंना जिंकून टाकशील. कोणतेंही निधकर्म तूं करावें हें तुझ्या प्रतिष्ठितपणाला अगदी शोभणार नाही; पहा—निर्मल व शुभ्र पटलावर रक्तकलंक कसा दिसतो ? तर हें असें माझे मत आहे !

अश्वत्थामा उत्तर करितो:—मामा, तुझीं जें आतां सांगितलें तें सर्व खरें आहे ह्यांत संशय नाही. परंतु हा शास्त्राचा बंधारा शत्रूंनी शेंकडों वेळां फोडून टाकिला आहे. सर्व राजे लोकांच्या नजरेदेखत व तुझी देखील जवळ असतांना, हातचें शस्त्र टाकल्या वेळीं माझ्या पित्याचा वध धृष्टद्युम्नानें केला ! महा-रथी कर्ण याच्या रथाचें चाक निसटून तो परमावधीच्या संकटांत पडलेला पाहून अर्जु-नानें त्याला मारलें ! त्याचप्रमाणें शंतनुपुत्र भीष्म शास्त्रायुधे सर्व टाकून स्वस्थ उभा असतां तशी वेळ माधुन—शिखंडीला पुढें केलेलाच होता—त्याच्या आडून अर्जुनानें भीष्माला बाण-प्रहागानें मारलें. तसेच महावधुर्धारी भृश्रिश्वा रणांत महज मापडला तव्हा राजे लोक हाहाकार करीत असतां त्यांचे समक्ष सात्यकीनें त्याला मारून पाडलें. पुढें आणखी भीमानें



गदा धेऊन समरांगणांत येऊन राजे लोक तटस्थपणानें पहात उभे असतां अधर्मयुद्ध करूनच दुर्योधनाला चीत केलें ! दुर्योधन एकटा पाहून महारथी योद्धे बरोबर धेऊन त्या कर्दनकाळ भीमानें त्याला वेढून अधर्मानेंच मारून टाकलें नाहीं तर काय ? मांडी फोडली गेल्यावर दुर्योधनाचा जो विलाप जासुदांचे तोंडून मी ऐकला, तो मनांत येऊन माझे अंतःकरण तिळतिळ तुटतें आहे. अशा रीतीनें त्या दुष्ट, अधम, पापी पांचाळांनीं वारं-वार धर्माचा आळा मोडून टाकला व मर्यादा टाकली; असें असतां तुम्ही त्यांची कां निंदा करीत नाहीं ? माझ्या पित्याचा वध ज्यांचे हातून झाला, त्या पांचाळांना मी आज रात्री झोंपेत मारून टाकणार ! मग त्या पातकानें मला किडा किंवा पांखळें अशा क्षुद्र योनींत जन्म घ्यावा लागेल हें कळलें; तरी पण हें जें काम करण्याचें माझ्या मनांत येऊन चुकलें तें केव्हां माझे हातून होईल अशी हुरहुर मला लागून राहिली आहे; मग ती मला झोंप कशाची लागू देणार ? व मला स्वस्थपणा तरी कसा मिळू देणार ? त्यांना मारून टाकण्याचा जो हा माझा संकल्प झाला आहे, तो फिरविणारा माणूस जगांत झालेला नाहीं व होणारही नाहीं !

संजय सांगतो:—हे महाराजा, याप्रमाणें बोलून तो प्रतापी अश्वत्थामा एकांतांत मुकाट्यानें रयाला घोडे जोडून शत्रूंवर हल्ला करण्याकरितां निघाला, तेव्हां पोक्त बुद्धीचे जे कृपाचार्य आणि कृतवर्मा ते दोघे त्याला विचारितात, “ रथ काय उद्देशानें जोडलास, काय करण्याचें मनांत आणिलें आहेस ? अरे नरवरा, तुझे जे प्रयत्न आणि उपाय तेच आमचे; तुम्हां जें मुख आणि दुःख तेंच आमचें; या संबंधानें मुळीं मुद्धां किंतु मनांत आणूं नका. ” तेव्हां पित्याचा वध झालेला आठ-

वून आठवून संतापून गेलेला अश्वत्थामा आपल्या मनांत जें करण्याचें आलें होतें तें सर्व त्यांना खरें खरें सांगू लागला, “ प्रखर बाणांनीं लक्षावधि योद्धे मारून मग हातचें शस्त्र खालीं टाकून दिल्यावर माझ्या पित्याला धृष्टद्युम्नानें मारलें; तर असा अधर्म करणाऱ्या त्या पापी पांचालराजपुत्राला मीही दुष्ट उपायानेंच मारणार ! मग माझ्या हातून त्या चांडाळाला एखाद्या यज्ञांतल्या पशूप्रमाणें मरण आल्यावर धारातीर्थीं देह टाकणाऱ्या वीरांना मिळणारी उत्तम गति त्याला कशाची मिळणार ? मिळणारच नाहीं, अशी मला खात्री आहे. तर तुम्ही उभयतां महारथी वीरहो, तुम्ही कवच धारण करून खड्ग व धनुष्य हातांत धेऊन माझ्या पाठोपाठ रहा !

राजा, इतकें झणून रथावर बसून अश्वत्थामा शत्रूंवर चाल करून निघाला. मग त्याच्या मागोमाग कृप व कृतवर्मा हेही निघाले. अशा रीतीनें शत्रूंवर चालले तेव्हां ते तिघे यज्ञांत आहुति पडून पेटलेल्या तीन अग्नी-प्रमाणें देदीप्यमान दिसले. मग शत्रूंकडील लोक छावणींत गाढ झोपीं गेले होते त्या ठिकाणीं ते येऊन पोचले, तेव्हां तो शूर अश्वत्थामा छावणीच्या दाराशीं येऊन थंबकला.

## अध्याय सहावा.

—१०:—

### महद्भूतदर्शन.

धृतराष्ट्र प्रश्न करितो:—संजया, दाराजवळ अश्वत्थामा थांबला तें पाहून कृप व कृतवर्मा या उभयतांनीं काय केलें तें सांग पाहू !

संजय सांगतो:—कृप व कृतवर्मा यांशीं मसलत करून अश्वत्थामा संतापाच्या आवेशांत वेगानें दाराच्या अगदीं तोंडाशीं तर येऊन ठेपलाच. मग तेथें दार अडवून बस-





अश्वत्थाम्यानें त्यावर दिव्य अस्त्रांची वृष्टि केली. ( सौमित्रपर्व शृष्ठ १३. )

लेला जो एक प्राणी त्यानें पाहिला त्याचें काय वर्णन करावें ? तो किती तरी धिप्पाड असून चंद्रसूर्यप्रमाणें त्याचें तेज होतें; त्याचे अंगावर व्याघ्रचर्म होतें; रक्ताचे पाट त्याच्या अंगावरून वहात होते; त्यानें कृष्णाजिन पांघरलें होतें; नागांचें यज्ञोपवीत त्यानें धारण केलें होतें; त्याचे हात किती तरी लांबलचक आणि लठ्ठ असून नानाप्रकारचीं शस्त्रां घेऊन प्रहार करण्याला तयार असे होते; बाहुभूषणांच्या ऐवजीं मोठमोठे सर्प त्यानें बांधले होते; आणि त्याचें तोंड ज्वाळांच्या लोळांनीं व्यापून गेलें होतें; त्याचा जबडा पसरसेला असल्यामुळें दांत बाहेर दिसत असून तोंड अकाळविकाळ दिसत होतें; त्यांत चित्रविचित्र हजारों डोळ्यांचा चमत्कार; मिळून अंगावर कांटा येण्यासारखें भेसूर एकंदर ध्यान होतें,—त्या रूपाचें आणि वेषाचें वर्णन करावें तितकें थोडेंच ! तें पाहिल्यावर खचित डोंगर मुद्रां मीतीनें दुभंगतील ! त्याच्या तोंडांतून, नाकांतून, कानांतून आणि त्या हजारों डोळ्यांतून जिकडे तिकडे आगचे लोट बाहेर निघत होते. त्याजप्रमाणें त्याच्या तेजाच्या किरणांतून शंख, चक्र, गदा हातांत धारण केलेल्या कृष्ण-परमात्म्याच्या मूर्ति शेंकडें दिमू लागल्या; पहातां पहातां हजारों दिमू लागल्या !

राजा, असा तो महाभयंकर व अद्भुत प्राणी पाहिल्यावरही गांगरून न जातां अश्वत्थाम्यानें त्यावर दिव्य अस्त्रांची वृष्टि केली, परंतु समुद्रांत वडवानल ज्याप्रमाणें पाण्याचे ओष पोटांत घेऊन गडप करून टाकतो, त्याप्रमाणें अश्वत्थाम्यानें सोडलेले सहस्रावधि बाण त्या अवाढव्य प्राण्यानें गिळून टाकिले ! आपण सोडलेले बाणांचे वर्षाव त्यानें गिळून टाकले आणि त्यांपासून काम कांहींच झालें नाहीं असें पाहून अश्वत्थाम्यानें आगीच्या

लोळाप्रमाणें लकलकणारी आपली रथशक्ति त्याच्यावर सोडली; परंतु टोंकाशीं जळत असलेली ती रथशक्ति त्या प्राण्याच्या अंगावर थडकून भंगून गेली ! राजा, मिथुनराशीवरून कर्कराशीवर जाऊन सूर्याचें तेज अतिप्रखर झालें असतां त्या स्थितींत सूर्यमंडलावर आकाशांतून निघून एखादी मोठी उल्का येऊन पडावी आणि फुटून खाक व्हावी, तसा प्रकार त्या वेळीं झाला ! मग अश्वत्थाम्यानें म्यानांतून सोन्याची मूठ असलेलें अति तेजःपुंज खड्ग झटकन् उपसून काढलें, तेव्हां जणू तीव्र विषाणें जळणारा एक सापच बिळांतून बाहेर ओढून काढला काय असें वाटलें. नंतर तें दिव्य खड्ग त्या धोरणी अश्वत्थाम्यानें त्या प्राण्यावर सोडलें, परंतु मुंगूस जसा बिळांत सहज शिरतो तसें तें खड्ग येऊन त्या प्राण्याच्या अंगांत कोठें शिरलें तें समजलें देखील नाहीं ! तेव्हां अगदीं संतापून जाऊन अश्वत्थाम्यानें विद्युल्लतेप्रमाणें झळकणारी गदा त्या प्राण्याचे अंगावर फेंकली. परंतु त्यानें तीही गिळून टाकली !

#### अश्वत्थाम्याचा पश्चात्ताप.

राजा, इतकें झाल्यावर जवळचीं सर्व आयुधें संपली, तेव्हां अश्वत्थामा इकडे तिकडे पाहूं लागला, तों आकाश सर्व जनार्दनाच्या मूर्तींनीं व्यापून जाऊन रिती जागाच उरली नाहीं असें झालेलें त्याच्या नजरेस पडलें. राजा, अगोदरच निःशस्त्र झालेला, त्यांत तो चमत्कार पाहिल्यावर अश्वत्थामा चरफडून कृपाचार्याचें भाषण आठवून ह्मणतो, आधीं कडू परंतु परिणामी हितकर असा उपदेश मित्रमंडळी करित असतां जो मनुष्य ऐकत नाहीं, तो संकटांत सांपडला म्हणजे पस्ताव्यांत पडतो; ह्याला माझाच दाखला पहा. त्या दोघांनीं सांगितलेलें मी ऐकलें नाहीं ह्मणून मला अशी वेळ आली. ज्यांना मारूं नये

म्हणून शास्त्रांत मांगितलेले आहे, त्यांना दांड-  
गाईने शास्त्र न जुमानतां जो मारू पहातो तो  
सन्मार्गातून कुमार्गांत शिरल्यामुळे शेवटीं आ-  
पला घात करून घेतो ! गाई, ब्राह्मण, राजा,  
स्त्रिया, मित्र, माता, पिता, दुबळे, मूर्ख, अंधळे,  
ओंपी गेलेले, भयांनं दचकून उठलेले, माथेफिरू,  
हर्षवायु झालेले, इत्यादि प्रकाराच्या माणसां-  
वर कधीही शास्त्र उगारू नये; याप्रमाणें वाड-  
वडिलांनीं सर्व माणसांना बोध करून ठेविला आहे.  
तो पुरातनचा सशास्त्र मार्ग सोडून अनीतीनें  
हें काम आरंभून मी या भयंकर संकटांत येऊन  
पडलों ! एखादें मोठें कृत्य आरंभून पराक्रमानें  
तें काम शेवटाला नेण्याचें न साधून माणसांनं  
भीतीनें माघार खावी ही फार भयंकर आपत्ति  
होय असें शास्त्रवेत्त्यांचें मत आहे. देवापुढें  
माणसाच्या पराक्रमाचें काहीं चालत नाही असें  
मांगितले आहे. मनुष्याच्या हातून शक्य तो  
प्रयत्न तो करीत असतां जर तो देवानें साधत  
नाहीसें झालें, तर त्या माणसाचें मुकृत संपलेंच  
हणून समजावें; आणि तो निःमंशय संकटांत  
पडतो, मी अमुक गोष्ट करीनच करीन अशी  
प्रतिज्ञा करणें हा केवळ मूर्खपणा आहे असें  
शाहण्या लोकांचें मत आहे. कारण, उमेदीनें  
मोठें कार्य आरंभून पुढें भिऊन मागे परतण्याची  
वेळ येते, तर तात्पर्य काय की, अधर्माचरणानें  
हें भय मला प्राप्त झालें आहे, अश्वत्थामा लढा-  
ईत जाऊन मागे फिरला असें कधीही होऊं  
नये; परंतु पहा कसें हें प्रचंड धूड काळदंडा-  
प्रमाणें आडवें आलें आहे तें ! कितीही विचार  
केला तरी हें काय असावें तें ध्यानांतच येत  
नाहीं. एवढें खचित को, ही माझी चळलेली  
बुद्धि जी अधर्माकड वळली तिचें हें भयंकर  
फळ असून याचा शेवट फार घातक होणार,  
तर आज मी लढाईत मागे फिरवें असा देवा-  
चाच संकल्प दिसतो. देवसंकेताविरुद्ध कोणा-

च्याही हातून काहीं होणें शक्य नाहीं. तर  
मी आतां सर्वशक्तिमान् प्रभु जो महादेव  
त्यालाच शरण जातों; म्हणजे हा मला आडवा  
आलेला देवदंड तो नाहींसा करून टाकील !  
देवांचा देव, जटाधारी, कपालमाला धारण  
करणारा, उमापति जो शंकर तोच तपोबलांनं  
व पराक्रमानें सर्व देवांहून श्रेष्ठ आहे, तेव्हां  
त्या शूल्पाणि गिरिशालाच मी शरण जाणार !”

## अध्याय सातवा.

—:०:—

### अश्वत्थाम्याचें ईशस्तवन.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, असा  
विचार ठरवून अश्वत्थामा रथावरून खालीं  
उतरला आणि हात जोडून शंकराचें ध्यान  
करीत उभा राहिला. तें असें:—

उग्रं स्थाणुं शिवं रुद्रं शर्वमीशानमीश्वरं ।  
गिरिशं वरदं देवं भवभावनमीश्वरं ॥ १ ॥  
शितिकंठमजं शुक्रं दक्षकतुहरं हरं ।  
विश्वरूपं विरूपाक्षं बहुरूपमुमापतिं ॥ २ ॥  
इमंशानवासिनं दमं महागणपतिं विभुं ।  
खट्वांगधारिणं रुद्रं जटिलं ब्रह्मचारिणं ॥ ३ ॥  
मनसा सुविशुद्धेन दुष्करेणालपचेतसा ।  
सोऽहमात्मापहारेण यध्ये त्रिपुरघातिनं ॥ ४ ॥  
स्तुतं स्तुत्यं स्तूयमानममोघं कृत्तिवाससं ।  
विलोहितं नीलकंठमसह्यं दुर्निवारणं ॥ ५ ॥  
शक्रं ब्रह्मरुजं ब्रह्म ब्रह्मचारिणमेव च ।  
व्रतचतं तपोनिष्ठमनंतं तपतां गतिं ॥ ६ ॥  
बहुरूपं गणाध्यक्षं त्र्यक्षं पारिषदप्रियं ।  
धनाध्यक्षं क्षितिमुखं गौरीहृदयचलं ॥ ७ ॥  
कुमारपितरं पिंगं गोवृषोत्तमवाहनं ।  
तनुवाससमत्युग्रामुमाभूषणतत्परं ॥ ८ ॥  
परं परेश्वरं परमं परं यस्मान्न विद्यते ।  
इष्वत्तोत्तमभर्तारं दिगंतं देशरक्षिणं ॥ ९ ॥  
हिरण्यकवचं देवं चंद्रमौलिबिभूषणं ।  
प्रपद्ये शरणं देवं परमेण समाधिना ॥ १० ॥

राजा, याप्रमाणें स्तवन करून अश्वत्थामा  
पुढें हणतो, “ हें जें माझ्यावर घोर, दुस्तर  
संकट येऊन पडलें आहे, यांतून जर मी

पार पडलों, तर मी त्या पवित्र महादेवा-  
प्रीत्यर्थ याग करून परम पवित्र असा सर्व-  
भूतबलि अर्पण करीन ! ”

### शंकराच्या गणांचें दर्शन.

राजा. त्या पुण्यवान् अश्वत्थाम्याचा तो  
निर्धार योगमामर्थ्यानें जाणून शंकरानें जी  
माया प्रकट केली, तिच्या योगानें त्या महात्म्या  
अश्वत्थाम्यासमोर एक सुवर्णमय वेदी प्राप्त  
झाली; आणि त्या वेदीवर तत्काळ अग्नि  
प्रज्वलित होऊन त्याच्या ज्वालांनी दिशा-  
उपदिशा, अंतरिक्ष सर्व व्यापून गेलें; आणि  
त्या अशीतून दीपासारखे आणि पर्वतासारखे  
मोठमोठे शिवगण प्रकट झाले. त्यांच्या तोंडां-  
तून व डोळ्यांतून ज्वाला निघत होत्या;  
प्रत्येकाला किती तरी पाय, डोक्रीं आणि  
हात होतें; चित्रविचित्र रत्नवर्चित बाहुभूषणें  
घातलीं असून त्यांनीं हात वर केले होते;  
त्यांपैकी कित्येकांचें कुठ्यांप्रमाणें रूप होतें;  
कित्येकांचें डुकरांप्रमाणें होतें; कित्येकांचें उंटां-  
सारखें होतें; कित्येकांची घोड्यासारखी तोंडे  
होतीं; कित्येकांची केल्ह्यासारखी हातीं;  
कित्येकांची बैलासारखी हातीं; अम्बलांसारखी  
कांहींची तर मांजरांसारखी कांहींची; वाघां-  
सारखी कांहींची तर हत्तींसारखी कांहींची;  
कांही कावळ्यांसारख्या तोंडांचे तर कांही  
पोपटांतोड्ये व कांही माकडांतोड्ये होते; प्रचंड  
अजगरांसारखे कांही होते; कांही शुद्ध श्वेत-  
वर्णाचे व हंसांसारखे होते; कांही चाषपक्ष्यां-  
सारखे होते; कांही कामवतांतोड्ये होते; कांही  
सुमरतांतोड्ये होते; कांहीचीं लहान पोरान्प्रमाणें  
तोंडे होती; कांहीची मोठ्या माणसांप्रमाणें  
होतीं; कांही मगरांसारखे व कांही देवमाशां-  
सारखे होते; कांही वानरांसारखे, कांही कौंच-  
पक्ष्यांसारखे, कांही कपोतांसारखे व कांही  
पारव्यांसारखे होते; कांहीचे हातांस कान

होते; कांहीना हजारों डोळे होते; कांहीचीं  
खूप मोठीं पोटां होतीं; कांही केवळ अस्थिपञ्जर  
होते; कांही काकमुखी व कांही श्येनमुखी  
होतें; कांहीना डोक्रींच नव्हतीं; कांहीचे डोळे  
आणि जिभा पेटलेल्या होत्या; कांहीच्या  
केंसांतून ज्वाळा चालल्या होत्या; कांहीचे  
चारही हात आणि अंगांवरील रोम पेटलेले होते;  
कांहीचें सर्वांग ज्वाळांप्रमाणें होतें; कांहीची  
तोंडे मेंढ्यासारखी व कांहीचीं हरणांसारखीं  
होतीं; कांहीचीं शंखांसारखीं तोंडे, शंखांसारखा  
अंगवर्ण व शंखामारखा शब्द असून शंखांच्या  
माळा त्यांनीं अंगावर घातल्या होत्या; कांही  
जटाधारी होते; कांही पांच शेंड्यांचे होते;  
कांही बोडके होते; कांही अगदी लहान  
पोटांचे, तर कांहीना चार चार सुळे, व  
कांहीना चार चार जिभा; कांही शंक्सासारख्या  
कानांचे व कांही किरीट घातलेले होते; कांही  
मौंजी धारण केलेले तर कांही आंखूड केंसांचे  
होतें; कांही मुकुट घातलेले होते, परंतु कांही  
नुमता चूडामणि धारण केलेले होते; कांही  
सूदूर तोंडांचे असून चांगले अलंकार घातलेले  
होतें; कांहीनीं कमळांच्या माळा घातल्या  
होत्या; आणि, राजा, सगळ्यांचें सामर्थ्य  
फार अद्भुत होतें. याप्रमाणें, हे भारता, असे  
ते शेंकडें हजारों गण दिवूं लागले. कांहीचे  
हातांत शतघ्नी नांवाच्या शक्ति होत्या; कांहीचे  
हातांत वज्रें होतीं; कांहींच्या हातांत एकेक  
मुसळ तर कांहींच्या हातांत भुशुंडी आणि  
कांहींच्या हातांत पाश व कांहींच्या काठ्या;  
कांहींच्या पाठीस नानाप्रकारच्या चित्रविचित्र  
बाणांनीं भरलेले भाते लटकलेले होते आणि  
कांहीजवळ निशाणें व बाहुटे फडकत होते;  
तशांत घंटांचा शब्द चाललाच होता;  
कोणाच्या हातांत परश्वध नांवाचें शस्त्र होतें;  
कोणी महापाश हातांत घेऊन सज्ज होते;

कोणी दांडकीं घेतलीं होतीं; कोणी मोठाले खांब घेतले होते; कोणीं खड्डें घेतलीं होतीं; कोणाच्या डोक्यावर मोठमोठ्या सर्पांचेच किरीट होते व सर्पांचीच बाहुभूषणे होतीं; शिवाय इतरही चित्रविचित्र भूषणे त्यांच्या अंगावर होतीं; कोणाच्या निशाणांभोंवती जिकडे तिकडे धूळच धूळ झाली होती आणि कोणाची अंगें चिखलानें भरली होती; कोणाचीं वस्त्रें शुभ्र व माळाही शुभ्र होत्या; कांहीचा अंगवर्ण निळा होता व कांहीचा पिंगट होता. राजा, त्या दिव्यकांतीच्या गणांपैकी कांहीजण मोठ्या आनंदानें नगारे, शंख, मृदंग, झांजा, तबले, शिंगे वगैरे वाद्ये वाजवूं लागले; कांहीं गाऊं लागले व कांही नाचूं लागले. कांहीं खूब लांब लांब टांगा टाकीत चालले, कांहीं उड्या मारीत चालले व कांहीं रथांतून भरघाव चालले; कांहीं वेगानें धावत होते; कांहीचीं डोकीं अगदी बोडकी होती व कांहीचे केंस वाऱ्याने उडत होते; व कांहीं माजलेल्या हत्तींप्रमाणें वरचेवर भयंकर शब्द करीत होते. राजा, एकेकाचें रूप पहावें तर भयंकर व अक्राळविक्राळ असून हातांत शूळ आणि भाले होते; निरनिराळ्या रंगांचे पोषाख त्यांच्या अंगावर होते आणि निरनिराळ्या प्रकारच्या उट्या त्यांनीं लावल्या होत्या. कांहींनीं रत्नखचित भूषणें हातांत घालून हात वर केले होते; शत्रूंना जेर करून सहज मारून टाकणारे असे ते एकापेक्षां एक शूर आणि पराक्रमी होते; ते रक्ताचे व चरबीचे पाटचे पाट पिऊन टाकणारे आणि मांस व आंतडीं हींच अन्न म्हणून खाणारे होते; कांहीच्या टाळूवरच तेवेढे तुऱ्यासारखे केंस होते; कांहीच्या कानांसच कर्णभूषणांप्रमाणें भूषणें होतीं; कांहीचीं पोटे खोल जाऊन वाटीसारखी दिसत होतीं; कांही फार ठेंगणे होते,

कांही फारच उंच होते, कांहीचे हातपाय लांबच लांब होते; मिळून एकेक तऱ्हेनें एकेक असे सर्व भेसूर दिसत होते. कांहीचे ओंठ काळेभोर व लांबते असून अगदीं हिडीस दिसत होते; कांहीच्या पायांच्या पोट्याच मात्र लड्ड; आणि कांहीचें वृषण तर कांहीचें दुसरें एखादेच मात्र इंद्रिय खूब मोठें होतें!

राजा ! त्यांचा महिमा काय सांगावा ? भूतलावर सूर्य, चंद्र, नक्षत्रे यांसुद्धां आकाश निर्माण करून दागविण्यासारखें त्यांचें सामर्थ्य; चतुर्विध भूतग्रामाचा क्षणांत नायनाट करून टाकण्यासारखी त्यांची उमेद; प्रत्यक्ष शंकराची स्वारी क्रुद्ध होऊन रुद्ररूप दाखवूं लागली असतां ते पाहूनही त्यांच्या मनाला भय नाहीं, उलट सदा त्यांच्या मनाला आनंद व संतोष असून कधीही असूया ठाऊक नाहीं; वामदेवता त्यांना वशच आणि आठही प्रकारचें ऐश्वर्य स्वाधीन असून त्याबद्दल त्यांना गर्व नाहीं; त्यांचीं अद्भुत कृत्यें पाहून शंकरालाच नेहमीं कौतुक वाटावें ! हे भारता, असे हे शिवगण नेहमीं कायावाचामनेंकरून शंकराचें आराधन करीत असतात; आणि शंकरही कायावाचामनेंकरून अगदीं पोटच्या पोरांप्रमाणें त्यांचा सांभाळ करीत असतो. हे रागावले असतां, ब्रह्मद्वेष्टे जे असुरदेत्यादिक त्यांचें रक्तमांस वगैरे खाऊन टाकून यज्ञयागांत हविर्भाग घेऊन चतुर्विध सोम भक्षण करितात ! स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य, तपश्चर्या, शमदम वगैरे साधनांनीं त्या शूलीची उपासना करून ते त्याच्या सायुज्याला येऊन पोहोंचलेले ! राजा, पार्वतीसहवर्तमान भगवान् परात्पर प्रभु श्रीशंकर हा आपल्या सायुज्याला येऊन मिळालेल्या या आपल्या अंशभूत गणांच्याच साहाय्यानें चराचर विश्वाचें परिपालन करीत असतो. असो !

**अश्वत्थाम्यास शिवदर्शन व खड्गप्राप्ति !**

हे भारता, याप्रमाणें निरनिराळीं वाद्यें वाजवीत, हंसत, गर्जना करीत, संतापत, ओरडत असे नानाप्रकार करून जगाला भयभीत करून सोडणारे हे गण चित्रविचित्र तेज प्रकट करीत व शंकराचें स्तवन करीत करीत अश्वत्थाम्याचे जवळ आले. त्या महात्म्या अश्वत्थाम्याचा महिमा वादविण्याकरितां, त्याचें तेज पाहाण्याकरितां आणि त्याचे हातून होणारा सौप्तिकयुद्धाचा चमत्कार पाहाण्याकरितां ते गणांचे थवेचे थवे उग्र रूप धारण करून खड्ग, शूल वगैरे विविध शस्त्रें घेऊन तेथें गोळा झाले होते. ज्यांचें दर्शन झालें असतां संपूर्ण त्रिभुवन भयानें गडबडून जावें, ते अगदीं जवळ आलेले पाहूनही त्या बलशाली अश्वत्थाम्याच्या चित्ताला यत्किंचित् देखील पीडा झाली नाही. उलट हातांत धनुष्यबाण घेऊन व बोटांना वगैरे अंगुलित्र घालून सज्ज असलेल्या त्या वीरानें आपण होऊन आपल्या देहाचा बलि समर्पण केला ! राजा, त्या बलिकर्माच्या विधीला धनुष्याच्या समिधा आणि शुभ्र बाणांचे दर्भ होते; आणि शंकराला आहुति पाहिजे तर ती याचें शरीरच; अशी सामग्री होती ! मग त्या प्रतापी अश्वत्थाम्यानें आपला रागीट स्वभाव अगदीं विसरून जाऊन एक सौम्य मंत्र म्हणून आपला देह समर्पण केला; आणि नंतर, राजा, एकापेशां एक भयंकर करामत करून दाखविणारा अविनाशीस्वरूप जो रुद्रावतारी शंकर, त्याचें स्तवन करून व हात जोडून तो बोलू लागला.

अश्वत्थामा म्हणाला, “हे प्रभो, हा अंगिरसाच्या कुळांत उत्पन्न झालेला देह आज मी या अग्नीमध्ये आहुतिस्थानी समर्पण करीत आहे त्याचा तूं स्वीकार कर. हे चराचरव्यापी महादेवा, या शीर संकटांत भक्तीनें चित्ताची

एकाग्रता करून तुझ्यासमोर मी आत्म्याचें निवेदन करितों, जडाजड विश्व सर्व तुजमध्ये आहे आणि सर्व भूतांचे ठायीं तूं आहेस; तसेंच सत्त्व, रज, तम, हे तिन्ही गुण तुजमध्ये एक-त्वाला पावलेले आहेत; प्राणिमात्राला तूंच आधार आहेस; व तूं विश्वाचा नाथ आहेस. तेव्हां, हे देवा, शत्रु जर मला अजिंक्य झाले आहेत तर हा असाच माझा स्वीकार कर ! ”

राजा. इतकें बोलून, ज्या वेदीमध्ये अग्नि प्रज्वलित झाला होता त्या वेदीवरून अग्नीमध्ये उडी टाकून अश्वत्थामा खुशाल तेथें चढून बसला. मग, हात वर करून निश्चेष्टपणें बसलेल्या त्या अश्वत्थाम्याची आहुति येऊन पडलेली पाहून तो प्रत्यक्ष भगवान् श्रीशंकर मंद हास्य करून झणतो, “ सत्य, शौच, आर्जव, दान, तप, नियम, क्षमा, भक्ति, धृति, बुद्धि, वाणी वगैरे सर्व साधनांनीं त्या पुण्यशाली कृष्णानें यथाविधि माझे आराधन ज्यापेक्षां केलें आहे, त्यापेक्षां त्याच्याहून अधिक प्रिय मला कोणीही नाही. झणून, बाबारे, त्याचा बहुमान करण्याकरितां आणि तुझी परीक्षा पाहाण्याकरितां मी एकदम ते पांचाल गुप्त केले आणि नानाप्रकारची माया करून दाखविली. पांचालाचें रक्षण करून मी केवळ त्यांचाच बहुमान केला; पण आज काळानें त्यांना गांठले असून आतां ते जिवंत राहू शकत नाहीत ! ”

त्या महात्म्या अश्वत्थाम्याला इतकें सांगून आणि दिव्य खड्ग देऊन शंकरांनीं त्याच्या तनूमध्ये प्रवेश केला. मग साक्षात् शंकराचा संचार अंगांत झाल्यावर अश्वत्थाम्यावर पुनः तेज चढलें आणि तो देदीप्यमान दिसू लागून त्या परमेश्वरी तेजामुळें त्याला युद्धाचा फारच आवेश चढला; आणि तो शत्रूंच्या छावणीवर साक्षात् शंकराप्रमाणें वेगानें चालून जाऊं



लागला, तेव्हां राक्षस, भूतें वीरे अहङ्ग्य प्राणी त्याच्या सभोवती संचार करू लागले !

## अध्याय आठवा.

—०:—

### रात्रियुद्ध व सर्वसंहार !

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, अशा रीतीने महात्मी अश्वत्थामा छावणीवर चालून गेला, तेव्हां कृप व कृतवर्मा हे उभयता भीतीने गांगरून माघारे परतले नाहीत ना ' यःकश्चित् कोणी तरी नजरेने त्यांना पाहिले नाही ना ! आणि त्यांस कोणी अडविले नाही ना ' त्या शूरांना तो एकंदर प्रकार दःमह वाटला नाही ना ' व ते माघारे तर फिरले नाहीत ना ' शत्रूंची छावणी तुडवून काढून पांचाल व पांडव यांची कत्तल उडवून रणांत एकदांचे ते उभयतां दुर्गोधनाचे उतराई झाले काय रे ' पांचालांनी मोड केलेला आठवून, ते जमिनीवर पडून झोप घेत अमतां त्यांचा समाचार त्या दोघांनी चांगला घेतला ना रे ! संजया, हें सर्व तूं मला सांग.

संजय मांगतो:—हे महाराजा, तो महात्मा अश्वत्थामा शत्रूंच्या छावणीकडे निघाला तेव्हां कृप आणि कृतवर्मा हे दाराशीच उभे राहिले. मग, ते शूर योद्धे नेटाने लढण्यास तयार असलेले पाहून मनांत संतोष पावून अश्वत्थामा हळूहळू त्यांस झणतो. " तुझी अशी कंबर बांधून तयार झाल्यावर सगळ्या क्षत्रियांचा उच्छेद करण्यास मुद्धां दोघेच पुरेसे आहां. मग हे कोठे लढाईतून उरलेले थोडे योद्धे, तेही आतां झोपी असलेले. तेव्हां त्यांचा तर महज समाचार घ्याल ' तेव्हां आतां मी छावणीत शिरून प्रत्यक्ष काळ पुरुषाप्रमाणे संचार करितों. तोंपर्यंत तुमच्या बाजूला जो कोणी येईल तो तुमच्या हातून जिवंत

सुटून जाऊं नये एवढें करा; असाच माझा बेत ठरला ! "

राजा. इतकें बोलून अश्वत्थामा पांडवांच्या त्या विस्तीर्ण छावणीत शिरला. मरळ वाट सोडून कोणीकडून तरी बुसून तो वीर बेधडक जो आंत शिरला, तो धृष्टद्युम्न ज्या ठिकाणी असल्याचे त्याला ठाऊक होते तेथे बेतबेताने येऊन ठेपला. इकडे छावणीतले लोक दिवम-मर पराक्रमावर पराक्रम करून अगदी थकून गेलेले होते, कित्येकांची दाणादाण होऊन कसे तर्ग पळून आलेले होते, व आतां त्या श्रमाने मगळे गाढ झोपी गेलेले होते. मग, राजा. धृष्टद्युम्नाच्या महालांत शिरून पहातो तो धृष्टद्युम्न स्वस्थ निजलेला त्याच्या दृष्टीस पडला. तो ज्या विछान्यावर निजला होता तो शुभ्र रेशमाप्रमाणे मऊ व स्वच्छ असून त्यावर नाजूक पलंगपोस पसरलेला होता; सभोवती फुले पसरली होती; मुगांधि द्रव्यांचा धूर चालला होता; व अष्टगंधासारख्या पदार्थांचा घमघमाट सुटला होता.

राजा, ते थोर धृष्टद्युम्न निर्धास्तपणे खुशाल विछान्यापर निजला अमतां त्याला अश्वत्थाम्यानें लथ देऊन जागे केले. तेव्हां लगेच पायाच्या धक्क्यानें तो मोठा हिंमतदार व रण-मस्त वीर धृष्टद्युम्न उठला व त्यानें तत्काळ त्या शूर अश्वत्थाम्याला ओळखिले. पण तो विछान्यावरून उठून उभा रहात आहे तोच त्या बलिष्ठ अश्वत्थाम्यानें दोहों हातांनी त्याची शेंडी धरून त्याला जमिनीवर लोळविले. मग, त्याच्याकडून जोरानें बुक्क्यांचा मार होऊं लागला तेव्हां कांहीसा घाबरल्यामुळे आणि कांहीसा झोपेत अमल्यामुळे धृष्टद्युम्नाच्या हातून कांहीं प्रतिकार होईना. मग, राजा, त्याला पायांखाली दाबून आणि गळा व छाती दोन्ही घेपून, तो आरडं लागला व धडपड करू

लागला तरी अश्वत्थाम्यानें तमाच जनावरा-  
प्रमाणें त्याचा जीव घेतला ! तथापि त्याला  
नखांनी ओरवाडीत शेवटी शेवटी अस्पष्ट  
शब्दांनी तो अश्वत्थाम्याला म्हणाला, “ अरे  
गुरुपुत्रा, तूं मला शस्त्रप्रहारानें तरी मारून  
टाक. उशीर करूं नको. म्हणजे, हे ब्राह्मण-  
श्रेष्ठा, तुझ्यामुळे पुण्यलोक तरी मला लाभेल ! ”  
राजा, इतकें बोलून त्या शूर अश्वत्थाम्यानें  
व्याकूळ करून टाकल्यावर धृष्टद्युम्न थांबला,  
आणि तें त्याचें अस्पष्ट भाषण ऐकून अश्व-  
त्थाम्यानें उत्तर केलें, “ अरे कुलकल्का, गुरु-  
हत्या करणाऱ्यांना सद्गति मिळत नसते. म्हणून  
मूर्खा, शस्त्रप्रहारानें तुझा वध होणें योग्य नाही ! ”  
हे महाराजा, इतकें बोलता बोलतां सिंह ज्या-  
प्रमाणें माजलेल्या हत्तीला दाबून मारतो त्या-  
प्रमाणें त्या संतापलेल्या अश्वत्थाम्यानें गुड-  
ध्यांनी जोरानें त्याच्या मर्मस्थळी दाबून दाबून  
धृष्टद्युम्नाला ठार केले ! मरतां मरतां त्या  
वीरानें ज्या किंकाळ्या फोडल्या, त्या ऐकून  
शिविरांतल्या सर्व स्त्रिया व त्याचे हुजरे जागे  
झाले. तेव्हां हा अमानुष पराक्रम करणारा  
प्राणी पाहून तो कोणी तरी भूतच असला  
पाहिजे असें मनाशी ठरवून भीतीनें ते सर्व  
आरडाओरड करूं लागले. इकडे अशा रीतीनें  
धृष्टद्युम्नाला यमसदनाला पाठवून तो तेजस्वी  
अश्वत्थामा परतून आपल्या सुंदर रथावर चढून  
बसला; आणि धृष्टद्युम्नाच्या शिविरांतून बाहेर  
पडतांना गर्जना करून त्यानें दाही दिशा  
दणाणून टाकिल्या. नंतर आणखी राहिलेल्या  
शत्रूंना मारावें अशा उद्देशानें रथांत बसून  
तो बलशाली वीर पुनः छावणीत शिरला.

इकडे, अश्वत्थामा बाहेर निवून गेल्यावर  
त्या स्त्रिया आणि ते हुजरे आकांत करूं  
लागले; आणि राजा धृष्टद्युम्न मरून पडलेला  
पाहून परमावधीच्या शोकांनं धृष्टद्युम्नाच्या

पदरचें सर्व क्षत्रिय योद्धे हाहाकार करूं  
लागले. त्या स्त्रियांच्या आरोळ्या ऐकून जव-  
ळचे क्षत्रिय वीर झटकन् उठून सज्ज होऊन  
‘ ही काय गडबड आहे ! ’ अशी चौकशी  
करूं लागले. तेव्हां, राजा, अश्वत्थाम्याला पाहून  
अगदीच घाबरून गेलेल्या त्या स्त्रिया, ‘ लवकर  
धावा हो ! हा कोण राक्षस आहे का मनुष्य  
आहे हेंच आह्मांस समजत नाही; परंतु धृष्ट-  
द्युम्नाला मारून टाकून हा पुनः रथावर चढून  
बसला आहे ! ’ असें दीनपणानें भाकूं लागल्या !  
मग एका क्षणांत ते पुढारी योद्धे तेथें गोळा  
झाले; आणि जेव्हां सर्वजण हल्ला करूं लागले  
तेव्हां अश्वत्थाम्यानें रुद्रास्त्र सोडून त्या सर्वांचा  
समाचार घेतला. अशा रीतीनें धृष्टद्युम्नाला  
आणि त्याच्या अनुयायांना ठार केल्यावर  
त्यानें जवळच दुसऱ्या बिछान्यावर निजलेला  
उत्तमोजा नांवाचा वीर पाहिला. तेव्हां त्यानें  
त्यालाही खाली पाडून त्याचा गळा आणि ऊर  
जोरानें पायांखाली दडपून तो ओरडत असतां  
तसेंच मारून टाकिलें. इतक्यांत युधामन्यु तेथें  
आला आणि तो मेलेला पाहातांच कोणी तरी  
राक्षसानें याला मारिलें असावें असा तर्क  
करून त्यानें गदा उगारून ती जोरानें अश्व-  
त्थाम्याच्या छातीवर फेंकली. तेव्हां अश्व-  
त्थाम्यानें त्याच्या अंगावर धावून जाऊन  
त्याला जमिनीवर पाडलें, आणि त्याचें अंग  
लटलट कांपत असतां त्यालाही पूर्वाप्रमाणेंच  
—जनावराला मारावें तसें—मारून टाकलें ! या-  
प्रमाणें त्याला मारून मग तेथून तो दुसऱ्या  
योद्ध्यांच्याच्या अंगावर धावून गेला. राजा, हे  
एकापेक्षां एक रथी-महारथी वीर सर्व झोपेत  
होते, ते आतां थगथर कांपूं लागले; तरी  
यज्ञामध्ये शामित्रकर्मकर्ता ज्याप्रमाणें पशूंचा  
संहार करतो त्याप्रमाणें अश्वत्थामा त्यांचा  
संहार करूं लागला. पुढें हातीं खडग घेऊन

दुसऱ्या कांहीं वीरांना ते ज्या ज्या भागांत होते त्या त्या भागांत क्रमाक्रमाने प्रवेश करून अस्थिर युद्धांत प्रवीण असलेल्या अश्वत्थाम्याने मारून टाकिले ! त्याचप्रमाणे छावणीच्या आणखी एका भागांत मधोमधच्या सैन्याच्या तुकडीतले लोक थकून आयुधे टाकून निजलेले होते त्या सर्वांचा एका क्षणांत त्याने जीव घेतला. योद्धे काय, घोडे काय, हत्ती काय, सर्व त्याने आपल्या उत्कृष्ट तरवारीने कापून काढले. तेव्हां रक्ताने त्याचे सर्वांग भरून जाऊन तो प्रत्यक्ष यमदूतांसारखा दिसें लागला. राजा, लवळवीत अस्त्रांनी, तरवारीने व दुसऱ्या शस्त्रांनी प्रहार करून करून अश्वत्थाम्याचे अंग तीन प्रकारांनी रक्ताने माखून गेले होते. तशा स्थितीत तो देदीप्यमान खड्ग घेऊन युद्ध करित असता तो अक्राळविक्राळ दैत्याप्रमाणे भासें लागला. हे राजा, त्यांतून जे वीर जागे झाले, तेही याच्या गर्जनेने भांबावून जाऊन एकमेकांकडे टकटकां पाहूं लागले आणि भीतीने व्याकूल झाले. ते त्याचे उग्र स्वरूप पाहून, ते वीर मोठे कर्दनकाळ होते तरी पण हा कोणी तरी राक्षसच आहे असे त्यांना वाटून त्यांनी चटकन डोळे मिटले. इकडे तो उग्ररूपी अश्वत्थामा छावणीत काळाप्रमाणे संचार करितच राहिला. इतक्यांत द्रौपदीचे मुलगे आणि शिल्पक राहिलेले पांचालयोद्धे त्याच्या दृष्टीस पडले. तेव्हां ते मोठे शूर राजपुत्र त्याची गर्जना ऐकून अस्वस्थ झाले, आणि धृष्टद्युम्न मारला गेल्याचें ऐकून डगमगल्यासारखे न दाखवितां त्यांनी अश्वत्थाम्यावर बाणांचा वर्षाव केला. नंतर त्या गलबल्याने जागे होऊन कित्येक पांचाल वीर आणि शिखंडी यांनी बाणांनी अश्वत्थाम्याला पुरे पुरे केले. अशा प्रकारे राजा, ते महारथी योद्धे बाणाची वृष्टि करित आहेत हे पाहून त्यांना मागण्याच्या तयारीने अगोदर

अश्वत्थाम्याने मोठ्याने सिंहनाद केला; आणि आपल्या बापाचा वधप्रसंग आठवून अतिशय चवताळलेला तो वीर रथावरून खाली उतरून वेगाने त्यांच्यावर चाल करून गेला; आणि सहस्रचंद्रांप्रमाणे उज्वल अशी ढाल घेऊन व तसेच लखलखणारे उत्कृष्ट खड्ग घेऊन तो द्रौपदीच्या मुलांवर तुटून पडला, तेव्हां त्याला अतोनात स्फुरण चढले; मग त्या भयंकर चक्रमर्कांत त्या नरव्याघ्राने प्रतिविंब्याच्या बरगडीत वार केला, त्याबरोबर तो भुईवर मरून पडला ! इतक्यांत पराक्रमी सुतसोम हा अश्वत्थाम्यावर शक्ति फेकून पुनः खड्ग उगारून त्याच्या अंगावर गेला, तेव्हां त्या सुतसोमाचा खड्गासहित हातच तोडून टाकून अश्वत्थाम्याने पुनः त्याला वार केला, त्याबरोबर त्याची छाती फुटून तोही बाजूला मरून पडला ! तेव्हां शूर नकुलपुत्र शतानिक याने दोन्ही हातांनी रथचक्र उचलून वेगाने अश्वत्थाम्याच्या छातीवर प्रहार केला, पण त्याचे हातून ते रथचक्र सुटतांच या ब्राह्मणाने शतानिकावर उलट प्रहार केला. तेव्हां तो कासावीस होऊन जमिनीवर पडला; तो लगेच त्याने त्याचे शिर धडापासून वेगळे केले ! इतक्यांत ध्रुतकर्माने परिघ घेऊन त्याने अश्वत्थाम्याला प्रहार केला. परंतु तो परिघ उजव्या बाजूस अश्वत्थाम्याच्या ढालीवर जोराने आपटून बाजूला निसटला, तेव्हां त्याने आपल्या दिव्य खड्गाने ध्रुतकर्माच्या तोंडावर तडाखा दिला, त्याने त्याचे तोंड वेडेवाकडे होऊन तो वैशुद्ध होतसाता जमिनीवर पडला ! ती गडबड ऐकून शूर महारथी जो ध्रुतकीर्ति त्याने अश्वत्थाम्याला गांठून त्याच्यावर बाणांची वृष्टि केली. तेव्हां त्याचीही ती बाणवृष्टि आपल्या ढालीवर घेऊन अश्वत्थाम्याने त्याचे ते कर्णकुंडलांनी शोभणारे तेजःपुंज शिर धडावेगळे केले ! मग शिखंडीला आणि त्याच्या-

बरोबर आणखीही राहिलेल्या वीरांना त्या बहादुरांनी नानाप्रकारच्या आयुधांनी मारून टाकिले. त्या मंतापलेल्या अवसानदार अश्व-  
त्थाम्याने शेवटी शेवटी एक तीव्र बाण शिखंडीच्या भिंव्यांच्या मधोमध मारला असून जवळ येऊन त्याचे शिर तरवारीने धडापामून तोडून वेगळे केले होते ! नंतर त्याच आवेशांत तो निकराने प्रभद्रकांवर तुटून पडला आणि विराटाच्याही राहिलेल्या सैन्यावर त्वेपाने चालून गेला ! त्याचप्रमाणे दुपदाचेही मुलगे. नातू व स्नेही जसजसे भेटले तसतशी तो बलिष्ठ योद्धा त्यांची भयंकर कत्तल करीत सुटला. याशिवाय दुसऱ्याही लोकांवर धावून जाऊन हा खड्गयुद्धामध्ये निपुण असा अश्व-  
त्थामा तरवारीने त्यांना तोडीत सुटला !

राजा, मूर्तिमंत काली आपल्या गणांसह-  
वर्तमान गात गात जवळ येऊन उभी राहिलेली त्या वीरांच्या दृष्टीस पडली होती; तिचे तांड व डोले लाल असून तांबड्या फुलांच्या माळा तिने अंगावर घातल्या होत्या आणि तांबडी उडी लाविली होती; रक्तवस्त्र परिधान केले होते; हातांत पाश घेतले होते; त्या भयंकर पाशांनी ती माणसे, घोडे व हत्ती बांधवांभून चालली होती; त्याचप्रमाणे मुकुटाशिवाय बोटक्याच वीरांची नानाप्रकारची प्रेत, व शस्त्रे हातांत नमलेल्या मोठमोठ्या शूर वीरांची प्रेत आणि तसेच झोपेत ठार झालेल्या योद्ध्यांची प्रेत आपल्या पाशांनी आवळून बांधून ती घेऊन चालली होती. हा चमत्कार पुढारी पुढारी वीरांना पूर्वी कित्येक रात्री स्वप्नांत दिसू लागला होता आणि सदा संहार करीत असलेल्या अश्वत्थाम्याची मूर्ति पुढे दिसू लागली होती. जेव्हापासून कौरव व पांडव यांच्या सैन्यांमधील हे घनघोर युद्ध सुरू झाले, तेव्हापासूनच ही काली आणि हा

अश्वत्थामा ही त्यांच्या नजरेपुढे मूर्तिमंत उभी असत. त्या सर्वांचाच घडा भरून ते मेल्या-  
सारखेच होते; तेव्हा त्यांना अश्वत्थामा मार-  
ण्याला केवळ निमित्तमात्र झाला ! तो भयंकर गर्जना करून प्राणिमात्राला भिक्वीत असलेला दिसत होता. तेव्हा तो सर्व मागचा देखावा आतां नजरेसमोर खराच आला असे त्या काळाने गांठलेल्या वीरांना वाटू लागले; आणि त्या त्याच्या गर्जनेने पांडवांच्या छावणीतील शंकडो हजारां धनुर्धारी योद्धे एकामागून एक जागे होऊ लागले ! इकडे, राजा, प्रत्यक्ष यमानेंच पाठविलेल्या दूताप्रमाणे तो कोणाचे पाय तोडू लागला, कोणाच्या मांड्या मोडू लागला व कांहीच्या बरगड्या फोडू लागला. मग छिन्नविच्छिन्न झालेल्या, कासावीस होऊन ओरडत असलेल्या, आणि हत्ती व घोडे यांच्या पायांवाली चिरडून गेलेल्या वीरांनी पृथ्वी व्यापून गेली ! हे काय ! हा कोण ! ही कसली गर्जना ! हा काय अनर्थ ! ' असे घाबरून ओरडतां ओरडतां अश्वत्थाम्याने त्यांचा अंत केला ! शस्त्रास्त्रे घेऊन आणि कवच घालून सज्ज असलेल्या पांडवीय सृज्यांना निःशस्त्र व उघडे करून अश्वत्थाम्याने मृत्युलोकी पाठविले; तेव्हा त्याच्या शस्त्रांचा प्रभाव पाहून भिऊन दचकून जागे झालेले व अर्धवट झोपेत असलेले कित्येक वीर भांबावून जाऊन जागच्या जागी लपू लागले; व त्यांचे पाप भरले असल्यामुळे अगदीच उत्साह-  
शून्य व हातपाय हालेनातमे होऊन ते नुसते ओरडत दीनवाणे तांड करून एकमेकांकडे पाहू लागले. तेव्हा भयंकर आवाज करीत जाणाऱ्या आपल्या रथांत बसून चाललेला धनुष्पाणि अश्वत्थामा बाण मारून त्या वीरांपैकी कित्येकांना यमसदनाला पाठवू लागला ! त्यांपैकी कित्येक एकापेक्षा एक

मोटे वीर लांबून उड्या मारीत हल्ला करीत येत होते; त्या सर्वांना तो कालीच्या स्वाधीन करू लागला. एका बाजूला शत्रूंना रथाखाली चिरडू लागला; आणि दुसऱ्या बाजूला बाणांचा वर्षाव करू लागला. पुनः तो धनुष्यबाण ठेवून व आपली विचित्र ढाल आणि लखलखणारी तरवार हातांत घेऊन संचार करी ! राजा, ज्या प्रमाणे माजलेल्या हत्ती मोठा तलाव स्वळवळून टाकतो, त्याप्रमाणे कोणालाही न आवरणाऱ्या त्या अश्वत्थाम्याने त्यांच्या छावणीमध्ये एकच गडबड उडवून दिली ! त्याच्या त्या दुंग्याने झोपेतून दचकून जागे झालेले वीर भीतीने गांगरून मेरावेरा धावू लागले; आणि कांही तर वेडीवाकडी बडबड करीत मोठमोठ्याने ओरडू लागले; परंतु कोणीही वस्त्र नेमेना किंवा शस्त्र हातांत घेईना. त्यांचे कैम विसकटलेले असल्यामुळे ते एकमेकांना ओळखूही येईनात. धावून मेरावेरा उड्या मारतां मारतां थकून जाऊन कांहींजण जमिनीवर पडले आणि कांही तमेच भ्रमण करीत राहिले. कांही तर जागच्या जागीच मूत्रपुरीपोतसर्ग करू लागले. त्याप्रमाणेच घोडे व हत्ती माखळदंड तोडतोडून एकदम मोकळे मुटून धुमाकूळ करू लागले. कांही माणसे भीतीने जागोजाग लपू लागली. तीं माणसे काय व ते हत्तीघोडे काय, तो अश्वत्थामा सर्वांची कत्तल करीत मुट्या ! त्याचा हा अमा क्रम चालला असता राक्षस व भूत यांना अतिशय आनंद होऊन ती ओरडू लागली; आणि त्यांच्या त्या गलक्याने व आनंदाच्या धुमाकूळीने दशदिशा भरून गेल्या ! राजा, त्यांचा तो दंगा आभाळापर्यंत देखील घुमत गेला अमेळ ! योद्ध्यांच्या दीनपणाच्या आरोळ्या ऐकून जे हत्तीघोडे बुजून जाऊन मोकळे मुटले, ते छावणीतील लोकांना पायांखाली चिरडीतच चालले ! अमे ते पळत मुटले असतां त्यांच्या

पायांनी उडालेल्या भुळीने छावणीतील तो रात्रीचा अंधकार पहिल्यापेक्षां दुणावला. इतका अंधकार झाल्यावर जिकडे तिकडे माणसे वेड्यासारखी होऊन गेली आणि बापांना मुलगे व भावांना भाऊ ओळखू येईनातमे झाले ! मोकळे हत्ती व घोडे एकमेकांना थडकून चालले असतां एकमेकांच्या अंगांवर आदळून एकमेकांची हाडे मोडून लागले व एकमेकांना चेंगरू लागले ! त्याचप्रमाणे, ही दाणादाण उडाल्यामुळे मनुष्येही पळतां पळतां एकमेकांवर आपटून पडू लागली. कांहीना जमिनीवर लोळवावे आणि कांहीना लोळवून तुडवावे अमा प्रकार त्या अर्धवट झोपी असलेल्या भांबावून गेलेल्या लोकांमध्ये त्या काळोखांत चालला. प्रत्यक्ष काळाच्याच प्रेरणेने आपल्याच पक्षांतील लोकांना ते ठार करू लागले. वेशींतील आपापलीं ठिकाणे सोडून द्वारपाल लोक व सैन्यद्यूह मोडून सैन्यांतील लोक दिशेचेंही भान न राहून होईल तितकें करून जलद पळत मुटले. अशा रीतीने जे नाहीतमे झाले ते एकमेकांना पुनः सांपडेनात. देवच फिरलें म्हणून अकळ जाऊन वेड्याप्रमाणे कोणी 'बाबाहो !' कोणी 'मुलारे !' अशा आरोळ्या टोकीत आपल्या इष्टवांधवांना मुद्धां सोडून देऊन पळत मुटले; आणि त्या लोकांना त्यांची दुसरी माणसे गोत्रनामांनीं हाका मारू लागली व कांही हाय हाय करीत जमिनीवरच पडून राहिली ! त्यांना ओळवून अश्वत्थामा त्या रणरंगी त्यांचा संहार करू लागला. याप्रमाणे तो कत्तल करीत असतां कांही वीर मधून मधून भिऊन भिऊन छावणीतून जीव घेऊन बाहेर पडू लागले, तीं दाराशी कृतवर्मा आणि कृप हे त्यांना मारू लागले ! राजा, अंगावरील कवच वगैरे गळून जाऊन, व कैम मोकळे मुटून ते धावरेपणाने कांपत कांपत हात जोडून पुढे

आले असतांही त्यांना कृतवर्मा आणि कृप हे जिवंत सोडीनात! छावणीतून जो म्हणून बाहेर पडूं पाही, तो त्यांच्या तडाख्यांतून जिवंत सुटतच नसे! हे महाराजा. तो कृप व तो निर्दय कृतवर्मा ह्या उभयतांनीं पुनः अश्वत्थाम्याचें कल्याण करण्याची इच्छा धरून छावणीला तीन ठिकाणीं आग लावली. तेव्हां छावणीत जिकडे तिकडे उजेड होऊन त्या उजेडांत हा अश्वत्थामा अधिकच चलाखीनें संचार करूं लागला; व कांही वीर अंगावर धावून आले त्यांना व कांहीं पळून जाऊ लागले त्यांना तरवारीनें ठार करूं लागला. तो कांहीना तरवारीनें मधोमध कापून मारून पाडी व कांहीना त्वेषानें तोडून त्यांचे तिळा एवढेले तुकडे करून टाकी! त्या वेळीं व्याकूळ होऊन आरडत ओरडत पडलेलीं माणसें, घोडे व हत्ती यांनीं सर्व जमीन व्यापून गेली. त्या मरून पडलेल्या हजारों माणसांमध्ये कित्येकांची धडें पुनः उठून उभी राहून तुटून पडत. तसेंच शस्त्रांचे व भुषणें यांमुद्धां मबंध हात व कांहींची शिरे तो अश्वत्थामा तोडी; हत्तीच्या सोंडेमारखे एकेकाचे जंगी हात आणि पाय तोडी, कांहीच्या पाठीवर वार करी, कांहीच्या वरगड्या फोडी व शिरच्छेद करी; कांही जे परत फिरत त्यांची कंवर तोडी; कांहीचे कान तोडी; कांहीच्या खांद्यांवर वार करी; आणि, राजा, कांहीच्या धडामध्ये त्यांचींच शिरे खुपशी! याप्रमाणें असंख्यात लोक मारीत मारीत तो संचार करीत असतां अगोदरच काळोखानें भयंकर दिसणारी ती रात्र फारच भयाण दिसूं लागली! थोडीशी भुग-भुगी राहिलेले हजारों लोक व अगदीं गेलेले हजारों लोक, शिवाय घोडे व हत्ती पृथ्वी अगदीं छावून गेल्यामुळे ती भूसूर दिसूं लागली! यक्ष, राक्षस

जिकडे तिकडे फिरूं लागले. त्या संतापलेल्या अश्वत्थाम्याचा वार लागून जमजमे भूमीवर वीर पडूं लागले तसतसे कोणी भावांना. कोणी बापांना व कोणी मुलांना हाका मारूं लागले! कांहीजण तळमळत म्हणाले, “आज या कूर राक्षसांनीं आम्हांला ओंपेंत गांठून जी अवस्था करून टाकली आहे. ती चवताळलेल्या धातूपाट्टांनीं देखील केली नव्हती! पांडव आज जवळ नाहींत म्हणूनच ही आमची कत्तल होत आहे! साक्षात् श्रीकृष्ण ज्याचा पाठीराखा, त्या अर्जुनाला जिकण्याचें सामर्थ्य अमुरांमध्ये नाही, गंधर्वांमध्ये नाही, यक्षांमध्ये नाही किंवा राक्षसांमध्येही नाही! ब्राह्मणांचा कैवारी, सत्यवक्ता, संयमी आणि सर्व भूतांचे ठायी दया करणारा असा जो कुंतीपुत्र अर्जुन, तो कधीही निजलेल्याला, भावावलेल्याला, निःशस्त्र असणाऱ्याला, हात जोडून शरण येणाऱ्याला, जीव घेऊन पळणाऱ्याला किंवा शिरच्छाण निसटून कंस मोकळे सुटलेल्याला मारीत नमतो. पण हें असलें कूरकृत्य हे निर्दय गक्षम आमच्यामध्ये येऊन करीत आहेत!” असा विलाप करीत कित्येक लोक पडले होते, कित्येक किकाळ्या फोडीत होते, व कित्येक कण्हत होते. पण, राजा, पुढे त्यांचा तो कल्होळ एका क्षणांत थांबला; आणि पृथ्वीवर जी भयंकर धूळ उडालेली होती तीही रक्ताचा सडा पडल्यामुळे क्षणांत नाहींशी झाली. त्या वेळी कांही हातपाय हलवीत होते. कांही नाउमेद होऊन धडपड करण्याचें सोडून देऊन पडले होते. कांही एकमेकांना कवटाळीत पडले होते, कांही तेथून निमट्टे पहात होते, कांही लपत होते व कांही लढत होते; अशा हजारों लोकांचा अश्वत्थाम्यानें प्राण घेतला. एकीकडून आगीनें ते भाजू लागले व दुसरीकडून अश्वत्थामा त्यांना मारीत सुटला, तेव्हां ते थोडे आपा-

पसांत एकमेकांचाच जीव घेऊं लागले. अशा प्रकारें, राजा, रात्र अर्धी लोटली असेल, इतक्या अवधीत पांडवांचें एवढें अफाट मैस्य अश्वत्थाम्यानें परलोकीं पाठविलें ! माणसें, हत्ती, घोडे यांच्या प्रेतांनीं अतिशय भयंकर झालेली ती काळरात राक्षसभूतादिकांना फार आनंददायक झाली. त्या ठिकाणीं हे नानाविध राक्षस व ही भूतें मांस खात असलेली व रक्त पीत असलेली निकडे तिकडे दिसूं लागली. या प्राण्यांत कांहीं अगदीं कुरूप, कांहीं पिंगट रंगांचे, कांहीं मोठ्या दांतांचे, कांहीं अगदीं धूलिधूसर, कांहीं जटा वाढविलेले, कांहीं लांब लांब शंख हातीं घेतलेले, कांहीं पांच पांच पायांचे आणि कांहीं मोठ्या पोटांचे असे होते. तसेच कोणी मागच्या बाजूस बोटें असलेले, कोणी रुद्राक्षांसारखे वाळलेले, कोणी भयंकर शब्द करणारे, कोणी घांटांच्या माळा घातलेले, व कोणी निळसर गळ्यांचे—असे चित्रविचित्र रूप असलेले निर्दय, क्रूर आणि भयंकर राक्षस मुलांवायकांच्या सुद्धां दृष्टीस पडूं लागले ! रक्त पिऊन आनंद पावून ते टोळ्याटोळ्यांनीं नाचूं लागले ! ' हें मोठें उंची खाद्य आहे ! हें फार पवित्र आहे ! हें अतिशय गोड आहे ! ' असें म्हणत म्हणत ते मेद, स्नायु, अस्थि, रक्त यथेच्छ खाऊं लागले ! त्यांत कोणी मांसावर उपजीविका करणारे होते ते मांसच खाऊं लागले ! दुसरे कोणी चरबी वगैरेचा स्वाहा करून इकडे तिकडे धावूं लागले ! पुष्कळ बरगड्या असलेले, पुष्कळ तोंडें असलेले असे ते मांसाहारी भयंकर राक्षस सहस्राविध, लक्षाविध व कोट्यविध एके ठिकाणीं मिळालेले त्या भयंकर प्रसंगी आनंदित होऊन तृप्त झालेले दिसूं लागले !

नंतर, हे प्रभो, पहाट झाली तेव्हां छावणीतून निघून जाण्याचें अश्वत्थाम्याचे मनांत आलें. या वेळीं तो रक्तानें अगदीं न्हालेला असल्यामुळे

त्यानें हातांत धरलेली तरवार आणि त्याचा हात ही दोन्ही एकत्र वाटूं लागली. इतक्या लोकांचा संहार झाल्यानंतर दुष्कर असें कृत्य करून अश्वत्थामा एकदांचा कृतकृत्य होऊन शोभूं लागला ! प्रलयकाली संपूर्ण मृष्टि जालून भस्म केल्यार प्रलयाशि ज्ञाप्रमाणें आपोआप शमतो त्याप्रमाणें प्रतिज्ञानुरूप तें कृत्य आटोपल्यावर पित्याच्या ऋणातून मोठ्या कष्टांनं मुक्त झाल्याप्रमाणें अश्वत्थाम्याला वाटून त्याचा संतापाशि शांत झाला ! मग, हे जनाधिपा, माणसें गाढ निजली असतां रात्रीच्या काळोखांत छावणीमध्ये तो जसा प्रवेश करून गेला होता, तसाच सर्वांची कत्तल उडवून निकडे तिकडे सामसूम असतां पुनः बाहेर आला आणि छावणीतून बाहेर पडतांच कृप व कृतवर्मा, यांच्या-जवळ येऊन मोठ्या संतोषानें आपला सर्व पराक्रम कळवून त्यांना आनंदवूं लागला; मग तेही त्यास आपण त्याचें केलेलें काम म्हणजे पांचाल आणि सृंजय हजारां मारून पाडल्याचें वृत्त सांगूं लागले. नंतर ते तिथेही मोठ्या संतोषानें ओरडूं लागले व टाळ्या वाजवूं लागले ! अशा रीतीनें, हे जनाधिपा, निजलेल्या व वेडे झालेल्या पांचालांचा समूळ उच्छेद होऊन त्यांची ती रात भयंकर रीतीनें गेली ! राजा, काळाचा फेराच फार कठीण ह्यांत संशय नाही. क्षणूनच शत्रूकडील तसले एक-एक वीर आमच्याकडील लोकांचा समूळ संहार केल्यावर शेवटी आपणही मरून पडले !

धृतराष्ट्र प्रश्न करतोः—संजया, माझ्या मुलाचा जय व्हावा असा अभिमान अश्वत्थाम्याला वाटत असतां त्या पराक्रमी वीरांनीं असा अपूर्व प्रताप आधींच कां बरें केला नाही ? तो माझा मुलगा मारला गेल्यावर मग त्या महात्म्यानें असा पराक्रम करावा असा क्षुद्रपणा त्याचे हातून कां झाला, तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा, पांडव, धीमान् श्रीकृष्ण आणि सात्यकि यांच्या भयानेच अश्व-  
त्थाम्याचे हातून आधी कांही झालें नाहीं, व  
ते जवळ नसल्या वेळीच त्यानें हें काम  
सावळें ! ते त्या वेळी असते तर त्यांच्यासमक्ष  
असा संहार करण्याचें कोणाच्या हातून झालें  
असतें ? प्रत्यक्ष रुद्राच्या हातूनही नसतें !  
असो; याप्रमाणें त्या पांडवांच्या निजलेल्या  
सैन्यांत असा दुर्घट संहार केल्यावर ते तिथे  
महारथी योद्धे एकत्र जमून परस्परांचें अभि-  
नंदन करूं लागले. कृप व कृतवर्मा अश्व-  
त्थाम्याचा धन्यवाद करूं लागले; आणि  
अश्वत्थाम्यानें त्यांना आर्लिमन दिलें. मग  
पोटांत आनंद मावेनासा होऊन तो ह्मणतो,  
“ द्रौपदीचे मुलगे, तसेच पांचाल, सोमक आणि  
मत्स्य हे सर्व जिकडे तिकडे माझ्या हातून  
मरून पडले आहेत ! आणि आपण कृतकृत्य  
झालों आहों ! तेव्हां आतां राजा जिवंत  
असेल तर आपण तिकडे लवकर जाऊं आणि  
त्याला हा सर्व वृत्तांत सांगूं ! ”

### अध्याय नववा.

-:०:-

#### दुर्योधनाला सौप्तिककथन.

संजय सांगतो:—राजा, अशा रीतीनें द्रौपदी-  
च्या मुलांना आणि सर्व पांचालांना मारिल्या-  
वर, जेथे दुर्योधन पडला होता तेथे ते तिथेही  
येऊन पोहोचले. मग जवळ जाऊन पहातात  
तों राजाच्या शरीरांत थोडी धुगधुगी राहिली  
होती. नंतर ते स्थावरून खाली उतरून त्या  
तुड्या मुलाच्या समोवती उभे राहिले. धृतराष्ट्र,  
दुर्योधनाची अवस्था काय विचारावी ! त्याच्या  
मांडीच्या हाडाचा चुराडा झाला असून तो  
मोठ्या कष्टानें श्वासोच्छ्वास करीत होता, त्याला  
शुद्धिही नव्हती. तो तोंडांतून रक्त ओकत होता;

समोवतीं भयंकर लांडगे व इतर श्वापदे यांच्या  
टोळ्या जमल्या असून दुर्योधनाचें प्रेत फाडून  
खाण्याकरितां वाट पहात होत्या आणि तो मोठ्या  
कष्टानें त्या टपलेल्या श्वापदांचें निवारण करीत  
होता ! त्याला प्राणांतिक यातना होत असल्या-  
मुळें तो भुईवर गडबडां लोळत होता; आणि त्याचें  
सर्वांग रक्तानें भरून गेलें होतें ! राजा, तशा  
स्थितींत तो भूमीवर पडलेला पाहून हे उरलेले  
तीन वीर शोकाकुल होऊन समोवतीं उभे राहिले.  
त्या वेळी, राजा, मध्येंदुर्योधन आणि त्याच्या  
समोवती हे रक्तानें माखून गेलेले तिथे महारथ  
अश्वत्थामा, कृप आणि कृतवर्मा म्हणजे जणू  
काय वेदीच्या भोवती तीन बाजूस तीन अग्निच  
आहेत असें भासलें ! नंतर हे भारता, अशा  
वाईट अवस्थेंत दुर्योधन त्या ठिकाणी पडलेला  
पाहून दुःख न आवरून ते तिथे रडूं लागले;  
मग हातांनी त्याच्या तोंडावरील रक्त पुसून ते  
रणांत पडलेल्या त्या राजाबद्दल दीनमुद्देनें  
शोक करूं लागले !

कृप म्हणतो:—देवाच्या प्रभावापुढें कांहीही  
अशनय नाही. पहा—हा अकरा अशौहिणी  
मेनेचा नायक दुर्योधन रक्तानें माखून मरत  
पडला आहे ! त्याची कांति सोन्यासारखी  
असून सोन्यानें मदविलेली त्याची गदा त्याच्याच  
जवळ भुईवर पडली आहे ! या गदेनें या  
शराला एकाही युद्धप्रसंगांत सोडलें नाहीं !  
आणि आतां सुद्धां हा यशस्वी पुरुष स्वर्गाला  
निघाला अमतांही ती त्याला सोडीत नाहीं !  
पहा ही सुवर्णानें शृंगारलेली गदा अत्यंत प्रेम  
करणाऱ्या भायेंप्रमाणें कशी या वीराजवळ जणू  
शय्येवरच शयन करीत आहे ! मूर्धाभिषिक्त  
राजामध्ये जो हा अग्रगण्य असे, तोच हा  
आतां कशी धूळ खात पडला आहे ! पहा ही  
केवढी काळाची विपरीत गति ! ज्यानें लढाईंत  
मागलेले शत्रु रणांत पडलेले दृष्टीस पडावे, तोच



हा कौरवांचा राजा शत्रूंचे हातून मरून कसा भुईवर पडला आहे ! ज्याच्यापुढे भयाने हात जोडून शेंकडों राजांनी उभे राहावे, तो हा धारातीर्थी पडला अमून सभोवती हिंख पशु जमले आहेत ! पूर्वी द्रव्य मिळण्याच्या इच्छेने ज्या या राजाधिराजाच्या सभोवती ब्राह्मण वाट पहात रहात, त्याच्याच भोवती आज मांस-च्छेने मांसभक्षक श्वापदे वाट पहात उभी आहेत !

संजय सांगतो:—नंतर, राजा, तेथे पडलेल्या त्या कौरवश्रेष्ठ दुर्योधनाकडे अवलोकन करीत करीत अश्वत्थात्मा करुणस्वराने शोक करितो, “ हे नरव्याघ्रा, तू सर्व धनुर्बारी वीरांमध्ये श्रेष्ठ अमून युद्धांत कुबेरामारुवा आहेस आणि बलरामासारख्याचा शिष्य आहेस, असें सर्वजण म्हणतात. मग, हे अनघा, त्या भीमसेनाने तुझे छिद्र कसे बरे जाणलें ? राजा, त्या पापात्म्या भीमसेनाने बलिष्ठ आणि वैभवशाली अशा तुला कसे बरे मारलें ? ह्या संसारी काळाचा प्रभाव विलक्षण आहे, म्हणूनच भीमसेनाचे हातून तुला मरण आलेलें आम्ही पहात आहों ! तू मोठा धर्मात्मा असतां तुला त्या नीच पापी भीमसेनाने कसे बरे प्रहार करून मारून टाकलें ? कालगतिच अनिवार हें स्वचित ! धर्म-युद्ध चाललें असतां त्यांत अधर्म करून उन्मत्तपणाने तुला युद्धांत ओढून भीमसेनाने आपल्या गदेनें तुझ्या मांड्या फोडल्या ! आणि अशा रीतीनें तुला अधर्माने मारून पाडल्यावर रणांत त्यानें तुझे मस्तक पायांवाली तुडविलेलें पाहूनही ज्या नीच कृष्णाने आणि धर्मराजाने त्या भीमाची उपेक्षा केली, त्यांस धिक्कार असो ! ज्यापेक्षां भीमसेनाने अन्यायाने तुझा वध केला आहे, त्यापेक्षां, जोंपर्यंत हें चराचर विश्व राहिल तोंपर्यंत युद्धाची गोष्ट निघाली असतां योद्धे लोक भीमसेनाची निंदाच करतील ! यदुकुलश्रेष्ठ बलराम नेहमी

तुझ्यासंबंधाने असें ह्याने की, ‘ गदायुद्धामध्ये दुर्योधनासारखा पराक्रमी कोणी नाही ! ’ राजा, तो यादववीरमणि सभेमध्ये बुद्धिवाद करण्यांतही तुझी फार प्रशंसा करित असे. गदायुद्धांत तर कौरवांमध्ये हाच एक मात्रा शिष्य असे तो ह्याने. क्षत्रियांना जी गति श्रेष्ठ म्हणून मोठमोठ्या ऋषींचे म्हणणे आहे, तीच सद्गति तू आज समरांगणाच्या अग्रभागी पडल्यामुळे तुला मिळाली आहे ! हे वीरश्रेष्ठा दुर्योधना, तुझ्याबद्दल मला दुःख वाटत नाही, परंतु पुत्रशोक झालेल्या तुझ्या मातापितरांबद्दल मला फार दुःख होत आहे ! आतां ते मातापितर अनाथ होऊन शोक करीत पृथ्वीच्या पाठीवर भटकत रहातील ! धिक्कार असो त्या गोपालकृष्णाला आणि त्या दुष्ट अर्जुनाला, की जे धर्मज्ञपणाचा अभिमान बाळगीत अमून प्रत्यक्ष डोळ्यांदेखत अधर्माने तुझा वध होत असतां स्वस्थ बसले ! राजा, ते सर्व पांडवही लाज सोडून ह्यातील कीं, ‘ पहा आम्ही कसे दुर्योधनाला मारून टाकलें ! ’ परंतु, दुर्योधना, धारातीर्थी पडलेला तू धन्यच आहेस ! काण, क्षत्रियधर्माला अनुसरून शेवटपर्यंत शत्रूंना पाठ न दाखवितां तू ममोरच लढत राहिलास. तथापि सर्व मुलगे मेल्यावर आणि ज्ञातिबांधवही निःशेष झाल्यावर त्या गांधारीची आणि त्या मानी धृतराष्ट्राची काय बरे गति होईल ? कृतवर्मा, कृप आणि मी तुझ्या पाठोपाठ स्वर्गाला ज्या अर्थी चाललों नाही, त्या अर्थी आम्हांला धिक्कार असो ! सर्व कामना पूर्ण करणारा व प्रजेचे हित साधून परिपालन करणारा असा तू परलोकाला निघाल्यावर आम्ही तुझ्या पाठोपाठ येऊं नये ही आम्हांला केवढी शरमेची गोष्ट आहे ! राजा, तुझ्या, कृपाच्या, माझ्या पित्याच्या व माझ्या पराक्रमाने आपली व आपल्या पदराच्या नोकर माणसांची-

ही घरे संपूर्ण ऐश्वर्याने भरलेली असत. तुझ्या प्रसादामुळे आम्हांम इष्ट, मित्र, बांधव यांसह-वर्तमान तू पुष्कळ द्रव्य खर्चून चालविलेल्या मोठमोठ्या यज्ञांचालाभ होत असे ! मग आम्हां पाप्यांची मात्र अशी कां बरें प्रवृत्ति होत आहे, कीं सर्व राजे लोकांना बरोबर घेऊन तू निघून चाललास आणि तुला सद्गति मिळणार तरी आझी मात्र तुझे मार्ग रहात आहे ! राजा, हीच गोष्ट मनांत येऊन आमचें मन हळहळत आहे; आणि स्वर्गाला मुकून कोणताही पुरुषार्थ न साधतां आझी तुझे पुण्य आठवीत वसलों आहे ! असें काय बरें आमचें पूर्वकर्म असेल, की ज्यामुळे आम्ही तुझ्याबरोबर येऊं शकत नाहीं ? हे कौरवश्रेष्ठा, आतां आम्ही दुःखानें या पृथ्वीवर भटकत रहाणार खचित ! राजा, तू आम्हांला सोडून गेल्यावर आतां आमच्या मनाला कशाची स्वस्थता आणि कशाचें सुख ! राजा, येथून गेल्यावर तू स्वर्गां रथीमहारथी वीरांना जाऊन भेटशील तेव्हां वडीलपणाच्या आणि श्रेष्ठपणाच्या अनुक्रमानें त्यांना माझे नमस्कार सांग. सर्वधनुर्धराग्रणी गुरु द्रोणाचार्य यांना माझे वंदन करून सांग कीं, आज मी धृष्टद्युम्नाला मारून टाकिलें ! त्याचप्रमाणें महारथि बाल्हिक, जयद्रथ, सोम-दत्त, भूरिश्रवा, तसेच आजपर्यंत स्वर्गलोकीं गेलेले दुसरेही श्रेष्ठ श्रेष्ठ राजे यांना आमचा प्रेम-पूर्वक नमस्कार सांगून कुशल विचार ! ”

संजय सांगतो : — राजा, भग्नोर व बेशुद्ध पडलेल्या दुर्योधन राजाला असें बोलून अश्व-त्थाम्याने त्याच्याकडे अवलोकन केलें आणि पुनः म्हटलें, “ दुर्योधना, तू जिवंत आहेस तोच तुझे कान तृप्त करणारे हें माझे भाषण ऐक. पांडवांच्या बाजूचे मात असामी उरले आहेत आणि धृतराष्ट्राच्या पक्षाचे हे आम्ही

तिथे उरलों आहों. ते सात म्हणजे पांच भाऊ, सहावा श्रीकृष्ण व सातवा सात्याकि; आणि इकडे मी, कृतवर्मा व कृप ! द्रौपदीचे मुलगे, धृष्टद्युम्नाचे मुलगे आणि राहिलेले सर्व पांचालवीर पार मारले गेले ! त्यांनी अनर्थ केला तरी त्यांवर सूडही कसा उगविला तो पहा ! कारण, पांडवांचे सर्व मुलगे नाहीतसे झाले; सौप्तिकयुद्ध करून राहिलेल्या माणसांसहित व वाहनांसहित मी त्यांची सगळी छावणीच नाहीशी करून टाकिली ! राजा, त्या पापात्म्या धृष्टद्युम्नाला मी ठार केलें ! मी रात्रीची वेळ साधून त्यांच्या छावणीत शिरलों, आणि खाटीक जनावरें कापून मारतो त्याप्रमाणें सर्व लोक कापून काढले ! ”

धृतराष्ट्रा, ती अतिशय आवडती बातमी ऐकून दुर्योधनाला पुनः शुद्धि आली आणि तो उत्तर करतो, “ जें काम भीष्माचे हातून झालें नाही, कर्णाचे हातून झालें नाही आणि तुझ्या पित्याचेही हातून झालें नाही, तें आज कृप आणि कृतवर्मा यांना बरोबर घेऊन तू केलेंस ! तो नीच सेनापति धृष्टद्युम्न शिखंडीसह एकदांचा ठार झाला, त्यामुळे इंद्राच्याच बरोबरीला आज मी जाऊन पोहोंचलों की काय असें मला वाटतें ! तुमचें कल्याण होवो ! स्वर्गलोकी पुनः आपली गांठ पडेल ! ”

### दुर्योधनप्राणत्याग !

राजा, इतकें बोलून तो उदार दुर्योधन स्तब्ध झाला; आणि त्या वीरानें प्राण सोडून मित्रवर्गाला दुःखांत लोटलें ! त्याचा आत्मा शुभ अशा स्वर्गलोकी जाऊन त्याचें शरीर मृत्तिकेला मिळालें ! राजा, अशा रीतीनें तुझा शूर पुत्र दुर्योधन समरांगणांत सरसावून मागून शत्रूंकडून मारला जाऊन त्याचा अंत झाला ! मग पुनः पुनः राजाला आलिंगन देऊन आणि

त्याच्याकडे अवलोकन करून ते तिथे आपापल्या रथांवर चढले. राजा, त्या वेळी अश्व-  
त्थाम्याने करुणस्वराने विलाप केल्या तो ऐकून  
कृप व कृतवर्मा हे अतिशय शोकार्त झाले. मग  
पहाट झाली तेव्हां ते तिथेही उदामीनतेने  
नगराकडे गेले !

राजा, अशा रीतीने कौरवपांडवमैत्र्यांचा  
भयंकर संहार झाला ! बावारे, तुझ्या दुष्ट मध्ये-  
मुळे हा सर्व घोर अनर्थ ओढवला ! अमो;

हे अनघा, आतां तुझा पुत्र स्वर्गलोकीं गेल्या-  
मुळे मलाही शोकाचा उमाळा येत असून, भग-  
वान् व्यासांनी दिलेली दिव्य दृष्टि आतां पार  
मावळून गेली आहे.

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, धृत-  
राष्ट्रांने आपल्या पुत्राचा तो मरणवृत्तांत ऐकून  
एक लांब मुस्कारा टाकला व तो चिंताकुल  
होऊन बसला !



## ऐषीकपर्व.

### अध्याय दहावा.

—:०:—

#### युधिष्ठिराचा शोक !

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, ती रात्र निवून गेल्यावर धृष्टद्युम्नाच्या सारख्या-ने सौप्तिकयुद्धांत झालेला सर्व महार धर्म-राजाला कळविला.

सारथि म्हणाला:—महाराज, द्रौपदीचे मुलगे द्रुपदाच्या मुलांमह रात्री आपल्या शिविरांत बेसावधपणे खुशाल निजले असतां कृतवर्मा, कृप व अश्वत्थामा या तिघां दृष्टांनी त्यांचा वध करून छावणी संबंध पार उडविली ! प्रास, शक्ति वगैरे नानाप्रकारच्या आयुधांनीं माणसें, हत्ती, घोडे हजारों तोडतोडून त्यांनीं सैन्याचा समूळ नाश करून टाकला ! एखाद्या मोठ्या अरण्यांतल्या झाडांची कुऱ्हाडीनी तोड चालली असतां जशी गडबड ऐकू येते तशी आपल्या सैन्यांत ऐकू आली ! महाराज, त्या सर्व सैन्यांतून मी एकटा उरलों आणि कृतवर्मा दुमरीकडे गेल्या असतां त्याला चुकवून कमा तरी निसटलों !

राजा, ही वाईट बातमी ऐकून कुंतीपुत्र धर्मराजा युधिष्ठिर पुत्रशोकानें गहिवरून मूर्च्छा येऊन भूमीवर पडला ! पडतां पडतां सात्यकीनें त्याला सावरून धरले; आणि भीमसेन, अर्जुन, नकुल व सहदेव हेही जवळ आले. मग थोड्या वेळानें धर्मराज शुद्धीवर आला; आणि अतिशय दुःखार्त होत्साता, प्रथम शत्रूंना जिंकून मागून पाडाव झाल्यावर तळमळणाऱ्या वीराप्रमाणें शोक करूं लागला. तो म्हणाला, “ जे दिव्यज्ञानी आहेत त्यांना देखील कालगति समजण्यास कठीण आहे ! पहा—शत्रूंचा पाडाव झाल्या-

वरही त्यांची आतां सरशी झाली व आमचा जय झाल्यावरही आतां हा आमचा मोड झाला ! भाऊवंद, इष्टमित्र, बाप, आज्ञे, मुलगे. नातू, बांधव व मंत्रिजन या सर्वांना जिंकून शेवटी आमचाच पाडाव झाला ! जेथें अनर्थ दिसत होता, तेथें उत्कृष्ट कार्य-भाग साधलेला दिसत आहे; आणि जेथें उत्कृष्ट कार्यभाग साधलेला वरवर दिसला, तेथें शेवटी पहातां अनर्थ ! यशालाच परिणामी अपयशाचें रूप आले. तेव्हां हा जय कशाचा ' पराजय ! जय मिळविल्यानंतर विपत्तींत पडलेल्या मूर्खाप्रमाणें जर पश्चात्ताप करण्याचा प्रसंग येतो, आणि शत्रूंकडून शेवटी अधिकच पाडाव होतो, तर तो विजय कमा मानावा ' आखी सावध राहून, विजयी म्हणविणाऱ्यांनाही ज्यांच्याकरितां जिंकून टाकिले. व इष्टमित्रांचाही वध होऊं दिला, आणि अशा रीतीनें पातक शिरावर घेऊन विजय मपादिला. व जे कर्णामारख्या चवताळलेल्या मिहाचे हानून मुटले, तेच आमच्या बेसावधपणामुलें आता मारले गेले ! तो कर्ण खरोखर मिहामारखाच होता. कारण, त्याचे चित्रविचित्र बाण हे दंष्ट्रांप्रमाणें होते, त्याची तरवार जिद्धेप्रमाणें होती. त्याचें धनुष्य पमरलेल्या जवड्यांप्रमाणें होतें, त्याच्या धनुष्याचा टणत्कार गर्जनेसारखा होता आणि त्याचें तें समरांगणांतील एकंदर स्वरूप मिहाप्रमाणें भयंकर होतें ! मोठमोठे रथ हेच ज्या ठिकाणी डोह, बाणांच्या वृष्टि ह्याच ज्या ठिकाणीं लाटा, घोडे व इतर वाहनें हीच ज्या ठिकाणीं रत्नें, भाले, बर्च्या वगैरे आयुधें हेच ज्या ठिकाणीं मासे, हत्ती हे ज्या ठिकाणीं मगर, धनुष्यें हीं ज्या ठिकाणीं भोंवरे, बाण हाच ज्या ठिकाणीं फेंस, युद्धप्रसंग हाच ज्या ठिकाणीं चंद्रोदय, आणि धनुष्यांचा

टणत्कार हाच ज्या ठिकाणीं घोष, अमा द्रोणाचार्यस्वरूपी समुद्र नानाविध-शस्त्ररूपी नौकांनीं जे तरून गेले. तेच आमच्या बेसावधपणामुळे कसे मारले गेले हो ! या जगांत माणसांचें मरण बेफिकीरपणांत जसें असतें तसें दुसऱ्या कशांतही नसतें; कारण, बेफिकीर अमणाऱ्या माणसाला चोहोंकडून सुयोग सोडून जातात, आणि त्याच्यावर अनर्थ येऊन कोसळतात ! अहो, उत्कृष्ट अशा उंच उभारलेल्या ध्वजाचें अग्र हा जेथें धुराचा लोट, विविध बाण ह्या जेथें ज्वाला, रागाचा आवेश हा जेथें सोसाट्याचा वारा, धनुष्याचा टणत्कार हा जेथें फडफड शब्द, आणि कवच व नाना-प्रकारची शस्त्रे ही ज्या ठिकाणी आहुति अमा भीष्मस्वरूपी दावानल—जो प्रचंड—मेन्यस्वरूपी अरण्यांत भडकला होता. तो ज्यांनीं सहन केला, ते राजपुत्र आमच्या प्रमादामुळे की हो मारले गेले ! जो पुरुष मत्त झाला, त्याच्या हातून विद्या साधणार नाही, तपश्चर्या साधणार नाही, लक्ष्मी साधणार नाही, किंवा विपुल कीर्ति जोडणें होणार नाही ! पहा, सावध राहून सर्व शत्रूंना मारून टाकून इंद्र कसा मुख भोगीत आहे तो ! पण इंद्रासारखे शूर शूर राजपुत्र केवळ बेपरवाईनें सरसकट मारले गेले की हो ! ऐश्वर्यसंपन्न वैश्य लोक ज्याप्रमाणें समुद्र तरून जाऊन त्या घमेंडी-मध्ये लहानशा एखाद्या नदीमध्ये बुडून नष्ट व्हावे त्याप्रमाणेंच ही अवस्था झाली ! ते झोंपेत असतां ज्या अर्थी त्यांना त्या क्रूर निर्दय लोकांनीं मारून टाकिलें, त्या अर्थी ते स्वर्गलोकीं गेले यांत शंका नाही ! परंतु ही साध्वी द्रौपदी आज ह्या शोकसमुद्रामध्ये न डगमगतां कशी प्रवेश करील हेंच मनांत येऊन मला फार दुःख होत आहे ! तिचा वृद्ध पिता, हे तिचे भाऊ आणि तिचे मुलगे ह्या सर्वांचा वध

झाल्याचा वृत्तांत ऐकून ती खचित मूर्च्छा येऊन पडेल आणि पुढें शोकानें भिजून भिजून अगदीं कश होईल ! हा शोक सहन करून त्यांतून ती पार न पडली तर तिला सुखोपभोगाचें नांव कशाला ! पुत्रशोकानें व भ्रातृशोकानें ती पिटून निघेल, आणि शोकाग्नि जळत राहून त्यानें ती पोळून जाईल ! ”

राजा, याप्रमाणें त्या कुरुकुलनायक धर्म-राजानें विह्वल होऊन विलाप केला आणि मग तो नकुलाला म्हणाला, “ जा आणि त्या विचाऱ्या द्रौपदीला व तिच्या मातृपक्षाकडील माणसांना येथें घेऊन ये ! ” राजा, त्या साक्षात् धर्म-स्वरूपी राजाचें तें भाषण नकुलानें मर्यादेनें शिरमा वंघ करून, द्रौपदीच्या महालांत द्रौपदी व द्रुपदाच्या राण्या होत्या तिकडे तो रथांत बसून गेला. याप्रमाणें नकुलाला द्रौपदीस आणण्याकरितां पाठवून शोकानें विह्वल झालेला धर्मराज हा मित्रमंडळीसह मुलगे जेथें युद्धांत पडले होते आणि भोंवती राक्षसपिशाचा-दिकांचा घोळका जमलेला होता तेथें रोदून करीत करीत गेला ! नंतर त्या अमंगळ व भयंकर स्थली प्रवेश करून पुत्र, मित्र, इष्ट, बांधव वगैरे सर्व भूमीवर पडलेले त्यानें पाहिले ! त्यांचीं अंगें रक्तानें चिब झालेली होती, हात-पाय छिन्नविच्छिन्न झाले होते, आणि त्यांच्या मस्तकांवर प्रहार झालेले होते. तशा स्थितीत त्यांना पहातांच त्याला अतिशय दुःख दाटून आलें; आणि तो महाधर्मात्मा युधिष्ठिर परि-वारासह वर्तमान आक्रोश करू लागला व देह-भान सुटून जमिनीवर पडला !

### अध्याय अकरावा.

—:—

भीमाचें मणिहरणार्थ गमन.  
वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, युद्धांत

पुत्रपौत्र, इष्टमित्र सर्व मरून पडलेले पाहून तो राजा दुःखानें तळमळू लागला. पुत्रपौत्रांची, बांधवांची व स्वजनांची मागची आठवण काढून तो महात्मा अतिशय विलाप करू लागला. त्याचे डोळे अश्रूंनी भरून आले, अंग थरथर कांपू लागलें आणि देहभानही नाहीसें झालें. तेव्हां मितमंडळी संचित होऊन त्याचें समाधान करू लागली. इतक्यांत नकुल हा देदीप्यमान रथांत बसून दुःखित द्रौपदीला बरोबर घेऊन आला. तो घोर अनर्थ ऐकून आधीच द्रौपदी व्याकूल झाली होती. त्यांतून आतां सर्व मुलांचा नाश झालेला प्रत्यक्ष पाहून ती अत्यंत विह्वल झाली; आणि मोसाट्याचा वारा लागून केळ थरथर कांपावी त्याप्रमाणें कांपत कांपत शोकांनं दीन होऊन तिनें धर्मराजाजवळ येऊन धाडकनू भुईवर अंग टाकलें ! राजा, शोकांनं व्याप्त झालेलें त्या कमलाक्षी द्रौपदीचें मुख एकाएकी राहूनें ग्रासून टाकलेल्या चेद्राप्रमाणें दिवूं लागलें ! मग ती मूर्च्छित पाहातांच भीमानें लगबगीनें एकदम उठून हातांनीं तिला सावरून धरलें. मग भीमसेनानें आश्वासन दिल्यावर ती साध्वी रडत रडत त्याला ह्मणाली, “ फार चांगली गोष्ट झाली, कीं क्षत्रियधर्माला अनुसरून आपले मुल्यो मृत्युमुखी देऊन आतां हें हातीं आलेलें पृथ्वीचें संपूर्ण राज्य आपण भोगित रहाल ! फार मुद्देवाची गोष्ट आहे कीं, आपण सुखरूप राहून आपल्याला पृथ्वीचें राज्य व गजान्त लक्ष्मी मिळाली ! आणि आतां सुभद्रेचा तनय अभिमन्यु याची आठवणही होणार नाही ! क्षत्रियधर्माप्रमाणें ते आपले शूर पुत्र धारातीर्थी पडलेले ऐकून असल्या प्रसंगांतही आपण माझ्यासहवर्तमान सुखानें त्या मुलांची कधीं आठवण न काढतां रहाल ही फार आनंदाची गोष्ट आहे !

“अहो प्राणनाथ, त्या चांडाल अश्वत्थाम्यानें

झोंपेंत आमचेकडील लोकांचा वध केलेला ऐकून, अग्नि ज्याप्रमाणें आपल्या आश्रयाला जाळतो त्याप्रमाणें हा शोक मला जाळीत आहे ! तर युद्धांत पराक्रम करून त्या दुष्ट अश्वत्थाम्याचा आणि त्याच्या अनुयायांचा प्राण जर आपण आजच न घ्याल आणि अश्वत्थाम्याला त्याच्या पापकर्माचें फळ न द्याल, तर काहीं न खातांपितां मी ही अशी बसून राहून प्राण सोडीन, हें पक्कें समजा ! ”

जनमेजया, इतकें बोलून द्रौपदी माउली धर्मराजापुढें येऊन बसली ! ती आपली पट्टराणी तशी हडानें पुढें येऊन बसलेली पाहून तो धर्मात्मा युधिष्ठिर तिला म्हणतो, “ हे कल्याणि, तुला धर्म सर्व अवगतच आहे आणि हे तुझे पुत्र व भ्राते यांना क्षत्रियधर्माला साजेसेच मरण आलेले आहे, म्हणून त्यांच्याबद्दल तूं शोक करूं नये. सुंदरी, तो अश्वत्थामा येथून दूर एखाद्या निविड अरण्यामध्ये निघून गेला असेल; तर आतां युद्धांत त्याचा वध झालेला तुझ्या कानांवर येणें कसें बरें शक्य होईल ! ”

द्रौपदी ह्मणते:—अश्वत्थाम्याच्या मस्तकांत जन्मापासून एक मणि आहे असें मी ऐकलें आहे, तर त्या चांडाळाला युद्धांत मारून तो मणि तुमच्या मस्तकावर जर मी पाहीन, तरच मी प्राण ठेवीन असा माझा निश्चय आहे !

राजा, धर्मराजाला इतकें सांगून सुंदरी द्रौपदी भीमसेनाजवळ आली आणि काकुळतीस येऊन त्याला ह्मणाली, “ अहो भीमसेन, आपल्या क्षत्रियधर्माला जागून या वेळीं माझें रक्षण करा ! इंद्रानें शंबरासुराला मारलें त्याप्रमाणें त्या पापी चांडाळाला मारून टाका ! तुमच्यासारखा पराक्रमी पुरुष दुसरा कोणी नाही अशी त्रैलोक्यांत ख्याती आहे. वारणावतांत सर्वच पांडवांवर मोठें संकट आलें त्या वेळीं तुमच्याच

आश्रयानें त्यांची त्यांतून सुटका झाली; हिडिंब राक्षसाची गाठ पडली तेव्हां तुझी निदानीला उपयोगी पडलां ! त्याचप्रमाणे इंद्रानें जसें पोलोमीला संकटांतून सोडविलें, तसेंच विराट नगरीं कीचकानें मला अतिशय छळलें तेव्हां तुझी मला सोडविलें. ही जशीं एकापेक्षां एक कामें पूर्वीं तुझी केली, तमाच आतांही या घातकी अश्वत्थाम्याचा वध करून तुझी कृतकृत्य व्हा ! ”

राजा, याप्रमाणें तिचे नानाप्रकारचे विलाप ऐकून त्या बलिष्ठ भीमसेनाला संतापाचा आवेश आवरेना. मग आपल्या सुवर्णमय दिव्य रथावर चढून, सुंदर धनुष्य, बाण वगैरे सामग्री घेऊन, नकुलाला सारथि करून, अश्वत्थाम्याचा वध करण्याच्या निर्धारानें बाण जोडून व प्रत्यंचा ओढून त्यानें जलद घोडे हांकले ! ते वाऱ्यासारखे चपळ घोडे निघाले ते वेगानें भरभाव चालले. अशा रीतीनें तो शूर पुरुष आपल्या छावणींतून रथ घेऊन तर निघून गेला !

### अध्याय बारावा.

—:—

#### अश्वत्थाम्याचा एक अविचार !

वैशंपायन सांगतात:—तो निघून गेल्यावर यदुकुलश्रेष्ठ राजीवाक्ष श्रीकृष्ण कुंतीपुत्र युधिष्ठिराला म्हणाला, “ युधिष्ठिरा, पुत्रशोकानें व्याकूल झालेला तुझा भाऊ भीमसेन संग्रामांत अश्वत्थाम्याचा वध करावा या इराद्यानें एकटाच निघून जात आहे. राजा, सर्व भ्रातृवर्गीत हा भीमच तुला विशेष प्रिय असून, तो आज अशा संकटांत सांपडला असतां तूं त्याचे संरक्षणाचा प्रयत्न करीत नाहीस हें काय ? अरे, वीरश्रेष्ठ द्रोणानें आपल्या मुलाला जें ब्रह्मशिर नांवाचें अख शिकवून ठेविलें आहे, तें संपूर्ण भूलोकाला जाळून टाकील इतकें उग्र

आहे ! तेंच अख त्या महाभयुर्धरी महात्म्या द्रोणगुरूनें प्रसन्न होऊन अर्जुनालाही देऊन ठेविलें आहे ! राजा, एकादां त्या द्रोणपुत्रानें एकांतीं आपल्या बापाजवळ उतावीळपणानें तें अख मागितलें. परंतु द्रोणाचार्याला आपल्या मुलाचा निर्दयपणा व अविचारीपणा ठाऊक होता; म्हणून त्याचें मागणें फारसें न आवडून त्या युक्तायुक्तविचार पाहणाऱ्या द्रोणानें मुलाला नीट बजावून असें सांगितलें कीं, ‘ बावारे, युद्धांत आणीबाणीचा प्रसंग जरी आला तरी तूं या अस्त्राचा प्रयोग करूं नको. आणि त्यांत विशेषेंकरून माणसांवर तें अख कधीच सोडूं नको ! ’ इतकें सांगून तो आणखी पुढें मुलाला म्हणाला, ‘ तूं चांगल्या मार्गानें चालणार नाहीस ! ’ युधिष्ठिरा, तें बापाचें कटू लागणारें बोलणें ऐकून त्या दृष्ट अश्वत्थाम्याची आपले हातून कोणतेंही मत्कार्य होण्यासंबंधानें निराशा होऊन तो उदासपणानें पृथ्वीवर भटकूं लागला. तेव्हां, हे कुरुश्रेष्ठा, तूं वनांत रहात असतां तो द्वारकेंत येऊन यादवांमध्ये पूज्य होऊन राहिला. याप्रमाणें समुद्रकिनार्यावर द्वारावतीचे तीरी रहात असतां एकादां एकांतीं मला गांठून तो हंसत हंसत म्हणाला, ‘ कृष्णा, उग्र तपश्चर्या करून माझ्या पराक्रमी पित्याला अगस्त्यापासून जें ब्रह्मशिर नांवाचें देवगंधर्वांनाही पूज्य असें अख मिळालें, तें जसें त्या भारतांच्या आचार्याजवळ सिद्ध आहे तसेंच माझ्याजवळही सिद्ध आहे. तर, हे यदुकुलश्रेष्ठ, तें अख माझ्यापासून घेऊन त्याच्या मोवदला रणांत शत्रूंचा संहार करणारें तुझे सुदर्शन चक्र मला दे. ’ धर्मराजा, याप्रमाणें तो हात जोडून माझ्यापाशीं माझे अख हरप्रयत्न करून मागूं लागला; तेव्हां मीही न रागावतां संतोषानें त्याला म्हटलें, ‘ देव, दैत्य, गंधर्व, मानव,

पक्षी व सर्प सर्व एकत्र जरी केले, तरी त्यांच्याने माझ्या पराक्रमाची बरोबरी शंभराव्या हिश्रानें देखील होणार नाही. तेव्हां, हें माझे धनुष्य आहे, ही शक्ति आहे, हें चक्र आहे, ही गदा आहे; ह्यांपैकी माझ्यापामून तुला जें जें हवें असेल तें तें मी तुला देतां. यांतून जें तुला पेलतां येईल व रणांत शत्रूवर चालवितां येईल तें खुशाल घे; शिवाय, तूं मला आपलें अश्व देऊ करीत आहेस तेंही मला नको !'

“ युधिष्ठिरा, त्या स्वारीने माझ्याशीच स्पर्धा धरून पुढें ठेविलेल्या त्या शस्त्रास्त्रांतून तें सुंदर, सहस्वार, वज्रनाभ चक्र मागितलें. तेव्हां 'बरे तर घे !' असें मी म्हटलें असतां एकदम त्या चक्रावर झडप घालून त्यानें डाव्या हातांत तें धरलें; परंतु त्याला तें जाग्यावरून नुसतें हलेना देखील ! तेव्हां तो त्याला उजवा हात लावून व आपलें सर्व बळ खर्चून उचलें लागला, तरीही तें हलेना, मग पेलतें कशाच ! तेव्हां खटपट करून करून शेवटी थकून हिरमुसला होऊन तो माचारा वळला ! याप्रमाणें तो अश्वत्थामा तो नादच सोडून देऊन व खडू होऊन अश्वत्थपणें वसला, तेव्हां त्याला मीच हाक मारून म्हटलें, 'अरे, जो अर्जुन मानवांमध्ये परमावधीच्या योग्यतेला जाऊन पोहोंचला आहे; ज्याच्याजवळ गांडीवासारखें धनुष्य; ज्याच्याजवळ विख्यात श्वेतवर्णाचे अश्व; ज्याच्या निशाणावर प्रत्यक्ष मारुतीचा निरंतर वास; ज्यानें देवाधिदेव जो उमापति शंकर त्यालाही साक्षात् युद्धामध्ये पुरे पुरे करून प्रसन्न केलें; ज्याहून भूलेकी मला अधिक प्रिय वाटणारा माणूस दुसरा नाहीच; ज्यानें मागितलें असतां मी देणार नाही अशी वस्तुच नाही, -प्रत्यक्ष बायकामुलें देखील मी ज्याला देईन, तो माझा परम मित्र पुण्यशाली अर्जुन

यानें सुद्धां तूं आतां माझ्याजवळ केलेंस असें भाषण कधीं केलें नव्हतें ! त्याचप्रमाणें, अरे, बाग वर्षे घोर ब्रह्मचर्यव्रत पाळून हिमाचलावर राहून तपोबलानें जो पुत्र मी संपादिला व जो माझ्याचप्रमाणें व्रतस्थ राहिलेल्या रुक्मिणीचे उदरी जन्माला आला, तो माझा तेजस्वी पुत्र प्रद्युम्न यानेही हें माझे दिव्य आणि अप्रतिम चक्र कधीही मागितलें नव्हतें; तें, मूर्खा, तूं आज मागितलेंस ! आतां तूं केलेलें मागणें यापूर्वी माझ्यापाशी बलशाली बलरामानेही केलें नाही; किंवा गद यादवानेही केलें नाही; अथवा सांब नामक यादवानें केलें नाही; अगर वृष्णि, अंधक वगैरे द्वारकेतील जे मोठमोठे महारथी योद्धे त्यांपैकी देखील कोणीही माझ्याजवळ असले मागणें केलें नाही ! बा वीरश्रेष्ठा, सर्व, भारतांचा गुरु द्रोणाचार्य त्याचा तूं मुलगा, तुलाही सर्व यादव फार मानतात; असें असतां, हें चक्र घेऊन तूं कोणाशीं युद्ध करूं पहातोस ?'

“ राजा, हें माझे भाषण ऐकून अश्वत्थामा यानें उत्तर दिलें, 'कृष्णा, तुझी पूजा करून तुझ्याचबरोबर पाहिजे असल्यास मी युद्ध करीन. प्रभो, मी अगदीं खरे सांगतां की, देवांना काय किंवा दैत्यांना काय, फार पूज्य वाटणारे तुझे हें चक्र मी जें मागितलें, तें मी सर्वत्र अजिंक्य व्हावें म्हणून मागितलें. आतां, केशवा, दुर्मांड अशी वस्तु मी मागितली व ती मला मिळाली नाही, तेव्हां आलों तसा मी परत जातां ! परंतु, गोविंदा, आतां तरी माझ्याशी नीट बोल. तुझ्याशी स्पर्धा करणारा कोणी शत्रुच नाही असा तूं वीरश्रेष्ठ आहेस आणि तूं धारण केलेलें हें सर्व भयंकर अस्त्रांमध्ये भयंकर असें चक्र या भूतलावर दुसऱ्या कोणालाही मिळण्यासारखें नाही.' इतकें माझ्याशी बोलून गेल्यावर अश्वत्थाम्यानें चांगले चांगले रथाला जोडण्या-



मारवे घोडे, पुष्कळ द्रव्य व नानाप्रकारचीं रत्नें बरोबर घेऊन गमन केलें. तो कालेंकरून पुनः येऊन पोहोंचला आहे. तो फार अविचारी आहे, दुष्ट आहे, खोडसाळ आहे, निर्दय आहे व त्याला ब्रह्मशिर अख्ख चांगलें अवगत आहे. म्हणून त्यापासून भीमाचें रक्षण करणें अवश्य आहे ! ”

## अध्याय तेरावा.

—:—

### अश्वत्थामकृत अस्त्रप्रयोग.

वैशंपायन सांगतातः—इतकें बोलून तो सर्व यादवांना संतोष देणारा वीरनायक श्रीकृष्ण संपूर्ण उत्कृष्ट आयुधांनीं सज्ज केलेल्या अशा आपल्या उत्तम रथावर आरूढ झाला, त्या रथाला सुवर्णाच्या माळांनीं शृंगारलेले कांबोज देशचे निवडक घोडे जोडलेले अमून, उदय-कालच्या रवीप्रमाणें देदीप्यमान दिसणाऱ्या त्या रथाच्या जुंवाची उजवी बाजू शैव्यानें व डावी बाजू सुग्रीवानें संभालली होती; आणि त्यांच्या मार्गे अनुक्रमें भैरवपुष्प व बलाहक हे होते. रथाच्या शिरोभागी विश्वकर्मानें तयार केलेला व रत्नादिकांनीं मढविलेला दिव्य ध्वज उंच फडकत होता. त्या ध्वजावर तेजःपुंज असा साक्षात् सर्पाचा शत्रु जो गरुड तो उभा असलेला दिसत होता. अशा त्या रथावर सर्व धनुर्धारी योद्ध्यांचा अग्रणी श्रीकृष्ण हा चढून बसला; आणि अर्जुन व कुरुंचा राजा सत्य-शील धर्म हे उभयतां महात्मे श्रीकृष्णाच्या दोन बाजूंला विराजमान झाले. त्या वेळीं, जनमे-जया, शाङ्ग धनुष्य धारण करणारा इंद्र आपल्या रथावर बसला असतां त्याच्या पार्श्व-भागीं अश्विनकुमार बसलेले जसे शोभतात, तसे ते शोभले. अशा रीतीनें आपल्या लोक-मान्य रथावर त्या दोघांना आपल्या शेजारी

बसवून घेतल्यावर श्रीकृष्णानें चाचूक हातीं घेऊन ते वेगानें धावणारे उत्कृष्ट घोडे हांकले. तेव्हां ते दोन पांडव व यादवश्रेष्ठ श्रीकृष्ण हे त्रिवर्ग ज्यांत बसले आहेत असा तो रथ घेऊन ते घोडे एकदम भरधाव सुटले; आणि या-प्रमाणें त्या शाङ्गधर श्रीकृष्णाला घेऊन जेव्हां ते घोडे भरधाव चालले, तेव्हां अनेक पक्षी उडत असल्याप्रमाणें मोठा शब्द होऊं लागला. हे भरतश्रेष्ठा, मग ते तिथे वीरश्रेष्ठ उग्र धनुष्य धारण करणाऱ्या भीमसेनाच्या मागोमाग जातां जातां एका क्षणांत त्याला गांठीत आले; परंतु त्यांनी त्याला गांठलें तरीही संतापाच्या आवेशानें शत्रूचा पाठलाग करणाऱ्या त्या भीमसेनाला त्या महावीरांच्यानें आवरून धरवेना ! हे तिथे युद्धविशारद वीर पहात असतांही त्यांना न जुमानतां, ज्या ठिकाणी महात्म्या पांडवांच्या पुत्रांचा वध करणारा अश्वत्थामा असल्याची वार्ता समजली होती त्या भागीरथीतीराकडे तो भीमसेन घोडे वेगानें हाकीत तसाच चालला ! मग भागीरथीतीरीं ऋषीसहवर्तमान बसलेले महात्मे भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यास त्याच्या दृष्टीस पडले; व तेथेंच शेजारी तो क्रूर कर्म करणारा अश्वत्थामा तुषानें माखलेला, दर्भवस्त्र धारण केलेला व धुळीनें भरलेला असा बसलेला दिसला ! तेव्हां लगेच भीमसेन धनुष्यबाण घेऊन त्याच्या अंगावर धावला आणि “ अरे थांब थांब ! ” असें ओरडून म्हणाला ! तेव्हां, राजा, हातीं उग्र धनुष्य घेऊन येत असलेल्या त्या भीमाला पाहून व त्याच्या पाठीमागे श्रीकृष्णाच्या रथा-वर बसलेले त्याचे दोन भाऊ पाहून अश्वत्थामा भयभीत झाला; आणि आतां मात्र आपल्या प्राणावर प्रसंग येऊन गुदरला असें त्याला वाटलें ! मग न डगमगतां धैर्य धरून त्यानें आपल्या दिव्य व श्रेष्ठ अस्त्रांचें स्मरण केलें;

आणि उजव्या हातानें दर्भाची एक लांब काडी घेऊन त्या विकट प्रसंगी तें अख मोडलें! हे पांडव शूर आहेत, त्यांच्याजवळ दिव्य आयुध आहेत, वेगरे कांही विचार त्यानें मनांत आणिला नाही; व अत्र मोडते वेळी “ अम्बा, जा, पांडवांचा निःपात कर ! ” असे शब्द रागाच्या आवेशानें उच्चारले. अशा रीतीने त्या महाप्रतापी द्रोणपुत्रानें सर्व लोकाना मोहून टाकण्याकरितां अख सोडलें. त्या वेळीं त्या अखमंलितकाडीतून जो अग्नि उत्पन्न झाला तो प्रलय करणाऱ्या कृतांतप्रमाणें संपूर्ण लोक जाळून टाकील की काय असें वाटलें !

## अध्याय चौदावा.

— ० —

### अर्जुनकृत अस्त्रप्रयोग.

वैशंपायन सांगतात:— राजा, आजानुवाहू श्रीकृष्ण यानें तो अश्वत्थाम्याचा विचार अगोदरच धोरणानें ओळखिला व अर्जुनाला म्हटलें “ अर्जुना, ए अर्जुना, द्रोणानार्यानीं तुला दिलेले जें दिव्य अख तुजजवळ आहे, तें सोडण्याची ही वेळ आहे. म्हणून, हे भरत-कुलश्रेष्ठा, आपल्या व आपल्या भावांच्या रक्षणाकरितां, शत्रूकडील कमल्याही अखांचें निवारण करणारे तें तुझें अख या युद्धप्रसंगी मोड. ”

जनमेजया, हे श्रीकृष्णाचे बापण ऐकल्यावर शत्रूंना त्राहि त्राहि करून सोडणारा तो अर्जुन धनुष्यबाण घेऊन सत्वर रथांतून उतरला; आणि “ कल्याण अमो ! ” असे शब्द प्रथम अश्वत्थाम्याला उद्देशून व नंतर आपल्याला व आपल्या भावांना उद्देशून त्यानें उच्चारले आणि देवतांना व सर्व वडील माणसांना नमस्कार करून तें अख सोडलें. सोडते वेळी त्यानें “ या अखानें शत्रूच्या अखाचा परिहार होवो ! ” असें शुभ मनांत चिंतिलें. मग अर्जु-

नानें एकदम सोडलेलें तें अख प्रज्वलित झालें व भयंकर जाळ होऊन तें प्रलयकालच्या अग्नीप्रमाणें दिप्तू लागलें. त्याचप्रमाणें अश्वत्थाम्याचेही अख पेटून भयंकर बंबाळ होऊन जिकडे तिकडे ज्वाळा दिप्तू लागल्या; अतिशय निर्घात होऊन हजारों उल्का पतन पावल्या; सर्व प्राणी भयानें गर्भगळीत होऊन गेले; आकाश आगीच्या लोळानी व्यापून जाऊन शब्दमय होऊन गेले; आणि पर्वत, अरण्ये व झाडे यांसहवर्तमान पृथ्वी थरथर कांपू लागली ! याप्रमाणें ती दोन्ही पेटलेली अखें लोकांना जाळीत राहिलीं, तेव्हां सर्वभूतात्मा नारद मुनि व भारतांचा पितामह व्यास मुनि या दोन्ही महर्षींनी त्या ठिकाणीं बरोबर येऊन तें अवलोकन केलें; आणि प्राणिमात्राची दया करणारे व महाज्ञानी असे ते उभयतां तेजस्वी मुनि अश्वत्थामा व अर्जुन या दोन्ही वीरांना शांत करण्याकरितां त्या पेटलेल्या अखांच्या मध्यें उभे राहिले. राजा, प्रज्वलित अग्नीप्रमाणें तेजस्वी अशा त्या मुनींना कशापासून भय असणार ? तेव्हां ते त्या दोन अखांच्या मध्यदेशी तसेच उभे राहिले ! देव आणि दानव हे उभयतां ज्यांना पूज्य मानतात, त्यांच्यापुढें कोणाचें काय चालणार ? त्यांचा हेतु हा होता की, दोन्ही अखांचें शमन करून प्राण्यांचें रक्षण करावें. नंतर ते ऋषि म्हणाले, “ पूर्वीं शस्त्राखवियेंत महाप्रवीण असे महारथी होऊन गेले, पण असे अख माणसांमध्ये त्यांनी केव्हांही सोडले नाही ! परंतु, वीरांनो, तुम्ही हें काय घोर साहस करून ठेविलें आहे ! ”

## अध्याय पंधरावा.

— ० —

### अर्जुनकृत अस्त्रोपसंहार.

वैशंपायन सांगतात:— हे पुरुषव्याघ्रा. त्या अग्नीमारग्या तेजस्वी मुनींना पाहतांच अर्जु-

नानें लगवणीनें आपलें दिव्य अस्त्र माघारें घेतलें. नंतर हात जोडून तो त्या ऋषीम म्हणाला, “ या अस्त्रानें शत्रूच्या अस्त्रांचें शमन व्हावें म्हणून मी तें सोडलें होतें व आतां हें आवरून घेतलें ! तर हा पापाला न भिणारा अश्वत्थामा त्वास आम्हां सर्वांना आपल्या अस्त्राच्या तेजांनें जालून टाकील. तेव्हां अशा स्थितींत जेणेंकरून आमचें व सर्व लोकांचें सर्व प्रकारें रक्षण होईल अशी आज्ञा आपणच उभयतांनीं करावी. कारण, आपण देवांप्रमाणें सर्वांस वंद्य आहां.” इतकें बोलून अर्जुनांनो पुनः आपल्या अस्त्राचा उपसंहार केला. युद्धामध्ये अशा रीतीनें अस्त्राचा उपसंहार करणें हे देवादिंकांनाही साधण्यासारखें नाही. तमलें उग्र अस्त्र एकदां रणामध्ये सोडल्यावर तें माघारें घेण्याला एका अर्जुनावानून दुसऱ्या कोणामध्ये सामर्थ्यच नाही, - प्रत्यक्ष इंद्रामध्ये दखील नाही ! ब्रह्मदेवाच्या तेजापामून त्या अस्त्राची उत्पत्ति; तेव्हां तें अस्त्र जर कोणी अविचारानें सोडलें, तर तें माघारें घेणें कडकडीत ब्रह्मचारी असेल त्यावांचून इतरांना शक्यच नाही. ब्रह्मचर्यव्रत बरोबर रीतीनें न पाळतां, जर कोणी तें अस्त्र सोडलें व पुनः तो तें माघारें काढून घेऊं लागला. तर तें अस्त्र त्याचें व त्याच्या परिवाराचें ममत्कच छेदून टाकील ! ब्रह्मचर्य न दळूं देतां कडकडीत व्रत पाळीत असून मोठ्या संकटाच्या समयी सुद्धां अर्जुनांनो तें अस्त्र कधीं सोडलें नव्हतें. असा तो अर्जुन सत्य व ब्रह्मचर्य पाळणारा, शूर व गुरूची आज्ञा शिरसा बंद्य करणारा असल्यामुळेच पुनः तें अस्त्र त्याला माघारें काढून घेतां आलें. समोर घेऊन उभे राहिलेल्या त्या उभयतां मुनीना अश्वत्थाम्यानेंही पाहिलें, परंतु आपण सोडलेलें घोर अस्त्र आपल्या सामर्थ्यानें माघारें काढून घेण्याचें

त्याच्या हातून होईना. रणांत तें उग्र अस्त्र परत घेतां येईना; तेव्हां, राजा, तो अश्वत्थामा निराश होऊन व्यास मुनीम म्हणाला, “ मुनिवरी, भीमसेनाचें भय वाटून परमावधीच्या संकटांतच आपल्या प्राणाचें रक्षण करण्याच्या हेतूनें मी हें अस्त्र सोडलें; आणि आपणच पहा कीं, युद्धामध्ये भीमसेनानें कपटाचरण करून दुर्योधनाचा वध केला हा मोठाच अधर्म त्याचे हातून घडला आहे ! म्हणूनच मी हें अस्त्र परिणामाचाही विचार न करितां सोडलें आहे. तें आतां पुनः माघारें घेण्याचें माझ्या हातून होणार नाही. अशीसारखें प्रखर व दुर्माल असें हें दिव्य अस्त्र पाडवांप्रीत्यर्थ राखीं योजनां असें मंत्रून मी सोडलें आहे. तग पाडवांच्या वधाच्या उद्देशानें सोडलेलें हें अस्त्र आज मर्या पाडवांचा प्राण घेतल्यावांचून राहाणार नाही. रागाच्या आवेशामध्ये पाडवांचा अंत व्हावा असा हेतु धरून मी हें अस्त्र रणामध्ये सोडण्याचें पातक केले आहे ! ”

व्यास मुनि म्हणतात - बावोरें, धनुर्विद्येंत पंडित असा जो अर्जुन, त्यानें ब्रह्मशिर अस्त्र सोडलें तें रागाच्या आवेशानें सोडलें नाही, किंवा युद्धांत तुझा नाश व्हावा म्हणून सोडलें नाही; तर त्या अस्त्रानें तुझ्या अस्त्राचें रणांगणी शमन व्हावें असा उद्देश धरून त्यानें तें अस्त्र सोडलें व पुनः माघारेंही घेतलें. असलें ब्रह्मास्त्र तुझ्या पित्याच्या उपदेशानें मिळालें असूनही या थोर अर्जुनानें आपल्या क्षत्रियधर्म सोडला नाही. सर्व अस्त्रविद्या अवगत असून मनाची समता न दळूं देणारा असा सज्जन हा अर्जुन आहे; असें असून त्याच्या भावांसहवर्तमान त्याचा अंत करावा अशी इच्छा तूं मनांत कां वागवितोस ? ज्या ठिकाणीं ब्रह्मास्त्राचा ब्रह्मास्त्रानेंच परिहार होतो, त्या ठिकाणीं बारा वर्षे-पर्यंत पर्जन्यदेवता वृष्टि करीत नाही; म्हणून, व

अर्जुनामध्ये सामर्थ्य असूनही तो महात्मा प्रजेचे कल्याण करण्याकरितां तुझ्या अस्त्राचा पाडाव करीत नाही. पांडव, तूं व संपूर्ण राष्ट्र या सर्वांचे रक्षण होणें इष्ट आहे. म्हणून, भल्या गृहस्था, हें दिव्य अस्त्र तूं माघारें घे. तुझाही राग शांत होवो व पांडवही मुखरूप असोत. राजर्षि अर्जुन हा अधर्मानें तुला जिंकू इच्छीत नाही. तुझ्या मस्तकी जो मणि आहे तोही आज पांडवांच्या स्वाधीन कर, म्हणजे तो घेऊन तुला पांडव प्राणदान करतील !

अश्वत्थामा म्हणाला:—पांडवांनी जीं जीं रत्नें व दुसऱ्या कोणत्याही प्रकारची संपत्ति आजपर्यंत मिळविली असेल, त्या सर्वांहून माझा हा मणि अधिक योग्यतेचा आहे. तो एकदां मस्तकी धारण केला की. शस्त्रांचे भय नाही, रोगराईचे भय नाही, भुकेची चिंता नाही, व देवांपासून म्हणा, दैत्यांपासून म्हणा, नागांपासून म्हणा, भीति कमलीही नाही; त्याचप्रमाणें राक्षसांची किंवा तस्करांचीही भीति नको. अशा प्रकारचे ज्या मण्यांचे सामर्थ्य तो मी कधीही हातावेगळा करणार नाही. तथापि, हे महर्षे, आपण जें म्हणतां तें तत्काळ करणें मला प्राप्त आहे. हा मणि आहे व हा मी आहे. परंतु अस्त्रयाष्टि मात्र पांडवांच्या गर्भावर जाऊन पडणारच, कारण ती फुकट जाणार नाही; व एकदां हातून सुटलेलें हें अस्त्र पुनः माघारें घेण्यास मी असमर्थ आहे. तर त्याची योजना मी गर्भावर करितों. मुनिश्रेष्ठा, आपण सांगितलेलें मी मोडतों असें नाही !

व्यास म्हणतात:—बरे तर, तमें कर. मात्र आतां बुद्धि पालटूं देऊं नको. पांडवांच्या गर्भाकडे या अस्त्राची योजना करून तरी स्वस्थ रहा.

वैशंपायन सांगतात:—नंतर ते रणांगणीं सुटलेले श्रेष्ठ अस्त्र अश्वत्थाम्याने व्यासमुनींच्या सांगण्यावरून गर्भावर सोडले !

## अध्याय सोळावा.

—०:—

### अश्वत्थाम्याला कृष्णशाप.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, त्या पापी अश्वत्थाम्यानें तें अस्त्र सोडलें असें पाहून श्रीकृष्ण आनंदानें अश्वत्थाम्याला म्हणाला, “ विराटाची मुलगी—अर्जुनाची सून ही एका वेळीं उपप्लव्यांत असतां एका थोर ब्राह्मणानें तिला म्हटलें आहे की, ‘कुरुकुलांतले सर्व पुरुष परिशीण (नष्ट) होतील अशा ममयीं तुला पुत्र होईल व या कारणानें तो गर्भांत असतांना त्याला परिशित् ही संज्ञा प्राप्त होईल. ’ तें त्या मत्पुरुषाचें भाषण खरें होण्याचा हा योग आहे. तेव्हां ह्या पांडवांना पुनः वंशवृद्धि करणारा हा परिशित् मुलगा होणारच ! ”

राजा, श्रीकृष्णाचे हे शब्द ऐकतांच अश्वत्थामा रगानें लाल होऊन म्हणाला, “केशवा, तूं हें जें पशुपातानें म्हणत आहेस तें तमें नाही. कृष्णा, माझ्या तांडून निघालेले शब्द खोटे होणार नाहीत. विराटाच्या मुलीच्या ज्या गर्भाचें रक्षण तूं करूं पहात आहेस, त्या गर्भावर मी सोडलेलें अस्त्र जाऊन पडणार ! ”

श्रीकृष्णानें उत्तर दिलें:—हें अस्त्र परमश्रेष्ठ, तेव्हां तें पडलें म्हणजे फुकट तर जाणारच नाही; परंतु मूल जें मेलेलें जन्माला येईल तें जिवंत होऊन दीर्घायुषी होईल ! तुला मात्र सर्व ज्ञाने पुरुष दुष्ट व पापी ममजतील; आणि हा थोर कर्म करणारा—बालहत्या करणारा आहे असें मानतील. म्हणून तूं या पापकर्माचें फळ भोगीत रहा ! अरे, तीन हजार वर्षे या भुमंडळावर तूं भ्रमण करीत राहाशील. कोणाशी कधीही तुजें संभाषण देखील न होतां तूं एकटाच निर्जन प्रदेशांत फिरत राहाशील. अरे नीचा, माणसांमध्ये तुजें रहाणें कधी होणार नाही;—निविड अरण्यांत कोटें

तरी राहून रक्त—पू याच्या दुर्गंधीने शरीर व्यापून जाऊन नानाप्रकारचे रोग सोडीत तू पापी रानोरान हिंडशील ! हा परिशित राजा मात्र मोठा होऊन कृपाचार्यापासून वेदोपदेश घेऊन संपूर्ण अस्त्रविद्या ग्रहण करील; आणि उत्कृष्ट अस्त्रे सर्व संपादन केल्यावर तो महात्मा क्षत्रियधर्म योग्य रीतीने पाळीत साठ वर्षेपर्यंत पृथ्वीचे राज्य करील. तर, अरे दुष्टा, तुझ्या देवत हा मुलक्षणी कुमार कुरुवंशाचा अधिपति होऊन परिशित राजा या नांवाने प्रसिद्ध होईल ! कारण, नीचा, शस्त्राशीने दग्ध झालेल्या ह्या बालकाला मी जिवंत करीनच करीन ! माझी तपश्चर्या खरी असून तिचे सामर्थ्य काय आहे ते तू पहा !

मग व्यास म्हणाले :—द्रोणपुत्रा, आत्मांलाही न जुमानतां ज्यापेक्षां तू असे घोर कर्म केलेस व तू ब्राह्मण जातीचा असूनही ज्यापेक्षां असले वर्तन तुझ्या हातून झाले त्यापेक्षां श्रीकृष्णाने जे आतां तुला सांगितले ते योग्य सांगितले व त्याचप्रमाणे सर्व घडून येणार आहे ह्यांत तिळमात्र संशय नाही. कारण तू क्षत्रियधर्म स्वीकारिलास !

अश्वत्थामा उत्तर करितो :—मुनिवर्य, आपल्या सहवर्तमान ह्या लोकां मानवांमध्ये मी वास करीन; आणि अशा रीतीने भगवान् श्रीकृष्णाची वाणी खरी होऊं द्या म्हणजे झाले !

### मणिहरण व द्रौपदीसात्वत.

वैशंपायन सांगतात :—नंतर महात्मा पांडवांना तो मणि देऊन टाकून स्वित्त होत्साता सर्वांच्या देवत तो अश्वत्थामा वनांत निवृत्त गेला. आतां पांडवांना वेरा कोणी उरला नाहीच, तेव्हां तेही श्रीकृष्णाला, व्यासमुनींना व नारद महामुनींना पुढे करून अश्वत्थाम्याचा तो जन्मादारभ्य अंगावर असलेला मणि बरोबर घेऊन त्वरेने द्रौपदीकडे धावत निघाले. त्या

वेळी इकडे ती मानी स्त्री जलपानही न करितां प्राणत्याग करण्याच्या निर्धाराने बसली होती !

वैशंपायन पुढे सांगतात :—ने शूर पांडव निघाले ते वाय्यासारखे धावणारे उत्कृष्ट घोडे ग्याला जोडून लवाजम्यानिशी पुनः आपल्या शिविरापाशी येऊन पोहोचले; आणि ते महा-रथी योद्धे लग्नार्गीने रथांतून उतरून त्यांनीं द्रौपदीची भेट घेतली; तेव्हां ती अश्वत्थाम्याच्या परामबामुळे संतुष्ट, पण पुत्रादिकांच्या मरणामुळे कष्टी झालेली आहे असे पाहून तेही फार कष्टी झाले. असो; मग मनाला उल्लाम मुळी नमून दुःखाने व शोकाने व्याकूल झालेल्या स्थितीत तिच्याजवळ जाऊन ते पांडव तिच्यासमोवती श्रीकृष्णासहवर्तमान उभे राहिले. नंतर धर्मराजाच्या अनुमतीने बलशाली भीमाने तो मणि तिला अर्पण केला व असे भाषण केले, “ प्रिये, तुझ्या पुत्राचे प्राण ज्याने घेतले, त्या शत्रूचा हा मणि जिंकून आणिला आहे पहा ! तर शोक करण्याचे सोडून देऊन तू ऊठ व क्षत्रिय-स्त्रीचा धर्म काय ते मनांत आण. सुंदरी, श्रीकृष्ण शिष्टाई करण्याकरितां निघाला त्या वेळी तू जे भाषण केलेस, की मला पति नाहीत, पुत्र नाहीत, भ्राते नाहीत, आणि कृष्णा, तूही माझा नव्वेस; असे जे जे कठोर पण क्षत्रियधर्माच्या शोभणारे उद्गार धर्मराजा शत्रूशीं सलोखा करून पहाते वेळी तू श्रीकृष्णाजवळ काढिलेस, ते आतां तू आठव बरे ! राज्यप्राप्तीला आड आलेला जो पापी दुर्योधन. तो तर मारला गेलाच ! माजलेल्या दुःशासनाचे रक्तप्राशन मी केलेच ! वैन्यांचा मूड उगवावयाचा तो सर्व आतां आदळी उगवला ! दोष देणाऱ्यांना आत्मांला दोष लावण्यास जागा ठेविली नाही ! अश्वत्थाम्याला जिंकून मगच हा ब्राह्मण म्हणून तेवढी मर्यादा

राखून त्यास सोडून दिलें ! प्रिये, त्याचें तेज तर नाहीसें झालेंच व शरीर मात्र राहिलें आहे; त्याचा मणि काढून घेतला व त्याला आयुधें खाली ठेवण्यास लाविलें ! ”

त्यावर द्रौपदी ह्मणाली:—माझे वैग साधा-  
वयाचें तेवढे साधलेंच. गुरुपुत्र अश्वत्थामा मला गुरूसारखा आहे. अमो; आतां हा मणि धर्मराजांनो आपल्या मस्तकावर धारण करावा ह्मणजे झालें !

नंतर गुरु द्रोणाचार्य यांचा प्रसाद ह्मणून व द्रौपदीनेंही सांगितलें ह्मणून धर्मराजांनो तो मणि घेऊन मस्तकी धारण केला. तो दिव्य मणि मस्तकावर धारण करितांच धर्मराजा शिरोभागी चंद्र असलेल्या पर्वतप्रमाणें शोभू लागला. मग पुत्रशोकानें व्यास झालेली ती मानी द्रौपदी उठली; व नंतर धर्मराजा श्री-  
कृष्णाला प्रश्न करिता झाला.

## अध्याय सतरावा.

—:०:—

### कृष्णकथित शिवमाहात्म्य.

वैशंपायन सांगतात:—सौप्तिकयुद्धांत त्या तीन रथ्यांनी सर्व सैन्याचा संहार केल्यावर धर्मराजा शोकाकुल होऊन श्रीकृष्णाला म्हणाला, “ कृष्णा, ज्याच्या पदरी मुकुत लेशमात्रही नाही अशा ह्या पापी व नीच अश्वत्थाम्यानें माझ्या सर्व महारथी पुत्रांचा कसा बरें वध केला ? त्याचप्रमाणें अस्त्रविद्येंत प्रवीण आणि शूर अशा सहस्त्रावधि दुपद राजाच्या मुलांचा संहार ह्या अश्वत्थाम्याचे हातून कसा बरें झाला ? एवढे धनुर्धारी द्रोणाचार्य, परंतु त्यांनी देखील ज्या धुष्टद्युम्ना-  
समोर उभे राहण्याचें टाळिलें, त्या वीरश्रेष्ठ धृष्टद्युम्नाचाही प्राण कसा बरें ह्यानें घेतला ? पुरुषोत्तमा, असें काय बरें अपूर्व पुण्यकर्म

त्या द्रोणपुत्रांनो केलें होतें म्हणून रणांत त्याचे एकट्याचे हातून सर्वांचा वध व्हावा ? ”

श्रीकृष्ण सांगतात:—आवारे, देवाधिदेव साक्षात् जो शंकर, त्याला तो अश्वत्थामा शरण गेला. ह्मणून त्या एकट्याचे हातून अनेकांचा वध झाला. कारण, तो महादेव प्रसन्न झाल्या-  
वर अमरत्व देखील देईल. तो कैलासनाथ असें सामर्थ्य देऊं शकेल की, ज्याच्या योगानें इंद्राचाही नाश करितां येईल. हे भरतश्रेष्ठा, त्या महादेवाचें स्वरं स्वरूप काय आहे व प्राचीनकाली त्यानें काय काय अद्भुत कर्मे केली आहेत, हें सर्व मी जाणतो. तो सर्व भूतांचा आदि, मय्य व अंत आहे. त्याच्याच सामर्थ्यानें ह्या सर्व जगाची हालचाल होत आहे. एके समयी भूतांची सृष्टि करण्याचें मनांत आणून ब्रह्मदेव प्रथम शंकराचें दर्शन घेऊन त्यास म्हणाला की, ‘ आपण पुष्कळ कालपर्यंत प्रजा उत्पन्न करूं नका. ’ तेव्हां बरें जणून, भूतमात्रांचे ठायी दोष भरलेले आहेत असे पाहून पाण्यांत बुडी मारून फार काल-  
पर्यंत शंकर तप करीत राहिला. नंतर फार वेळ वाट पाहून ब्रह्मदेवानें मनापामून दुसरा एक प्रजापति उत्पन्न केला. शंकर पाण्यांत निद्रित असलेला पाहून हा प्रजापति आपल्या पित्याला म्हणतो, “ जर माझ्याहून वडील कोणी नमेळ तर मी प्रजा उत्पन्न करितों. ” तेव्हां त्याच्या पित्यानें सांगितलें की, ‘ तुझ्या-  
पेक्षा मोठा असा कोणीही पुरुष नाही. हा शंकर पाण्यांत बुडी मारून वसला आहे. तर तूं मुशाल सृष्टि कर. ’ तेव्हां त्यानें दक्ष वेगेरे सात प्रजापति करून त्यांजकडून ही चार प्रकारची संपूर्ण भूतसृष्टि उत्पन्न करविली. राजा, उत्पत्ति होतांक्षणीच सर्व प्राणी प्रजापतीला खाण्याकरितां एकदम धावून आले. ते आपल्याला खाणार असें पाहून जीव वांच-

विषयाकरितां तो पितामहाकडे ( हिरण्यगर्भाकडे ) गेला व म्हणाला कीं, ' आपण मला ह्यांच्या हातून सोडवा व ह्यांच्या जीवनाचें साधन कांही तरी उत्पन्न करा. ' नंतर त्यानें तृणधान्यवृक्षादिक वनस्पतिकोटीतले अन्न व बलिष्ठांकरितां दुर्बल प्राण्याच्या रूपानें मांसान्न असें दोन प्रकारचें अन्न उत्पन्न केलें. याप्रमाणें अन्नाची योजना होतांच सर्व उत्पन्न केलेले प्राणी आले तसे परत गेले. मग, राजा, प्रजा सर्व संतुष्ट होऊन आपआपल्या योनीमध्ये वृद्धि पावूं लागल्या. अशा रीतीनें प्राण्यांची मृष्टि वाढली व हिरण्यगर्भालाही आनंद झाला. नंतर सर्वांत मोठा जो परमेश्वर तो प्राण्यांतून वर आला, तो संपूर्ण प्रजा त्याच्या दृष्टीस पडली. ती प्रजा नानाप्रकारची असून आपआपल्या सामर्थ्यानें वृद्धिगत झालेली होती. तें पाहतांच शंकर रागावला व त्यानें आपलें लिंग छोटलें, तेव्हां तें छोटलें लिंग तसेंच भुईमध्यें रावून राहिलें ! मग त्याचें सांत्वन करण्याकरितां म्हणून तो अविनाशी ब्रह्मदेव म्हणाला, " हे शंकरा, प्राण्यांत इतका वेळ राहून काय केलें ? आणि आतां हें लिंग उत्पन्न करून जमिनींत कशाकरितां रावून ठेविलें ? " तेव्हां संपूर्ण विश्वाचा नायक तो परमेश्वर संतापून ब्रह्मदेवाला उत्तर करितो, " हे प्राणी दुमऱ्या कोणी उत्पन्न केले आहेत, तेव्हां आतां मला ह्या लिंगाचा काय उपयोग ! आणि, हे ब्रह्मदेवा, त्या प्राण्यांकरितां अन्नही तपोबलानें उत्पन्न करून ठेविलें आहे. या ओषधिवनस्पतीची उत्पत्ति परंपरेनें अव्याहत चालणार व त्यांबरोबर प्राण्यांचीही उत्पत्ति निरंतर चालणार ! " राजा, याप्रमाणें बोलून रागाच्या आवेशांत शंकर विव्ध मनानें तेथून निघाला, तो मूजवान पर्वताच्या पायथ्याशी तपश्चर्या करण्याकरितां गेला !

## अध्याय अठरावा.

—:०:—

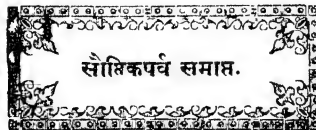
### कृष्णकथित शिवमाहात्म्य.

श्रीकृष्ण सांगतात:—नंतर कृतयुग संपल्यावर वेदाच्या आधारानें विधियुक्त यागादिक कर्मे करण्याच्या संकल्पानें देवांनी यज्ञ निर्माण केला; व त्या यज्ञकर्माला साधनभूत जे हविर्भाग ते ठरविले; आणि त्या त्या हविर्भागांकरितां निरनिराळ्या देवताही ठरवून होमद्रव्यांची योजना केली. हे राजा, त्या परमेश्वराचें खरें स्वरूप न ओळखितां देवतांची योजना केलेली असल्यामुळे अर्थात् त्या शंकराकरितां त्यांनी हविर्भाग ठेविला नाही. देवांनी यज्ञामध्ये आपल्याकरितां हविर्भाग ठेविला नाही असें पाहून त्या शंकरानें त्यांच्या यज्ञाचा उच्छेद करण्याचा उद्देश मनांत धरून आरंभी एक धनुष्य उत्पन्न केलें. लोकयज्ञ, क्रियायज्ञ, गृहयज्ञ व मनुष्ययज्ञ, या चार यज्ञांनी हें जग चाललें होतें. त्यांपैकी लोकयज्ञ व मनुष्ययज्ञ यांहींकरून ( इतर दोन यज्ञांचा झणजे क्रियायज्ञ व गृहयज्ञ यांचा नाश करण्याकरितां ) शंकरानें धनुष्य निर्माण केलें. त्या धनुष्याचें माप पांच विनी झालें; त्याच्या दोरीच्या ठिकाणी वषट्काराची योजना झाली; व यज्ञाची जीं चार अंगे ती त्या धनुष्याची दोरी बांधण्याला साधन झाली. नंतर तें धनुष्य घेऊन तो क्रुद्ध झालेला शंकर, ज्या ठिकाणी देव यज्ञ करीत बसले

१ ' लोकयज्ञ ' म्हणजे लोकांना आपल्याला बरे झपावे असे लोकमतावद्दल अग्न्य व नांवाळीकि-काची चाड: ' मनुष्ययज्ञ ' ( यालाच मुळांत ' पंचभूतयज्ञ ' असें झटले आहे. ) झणजे पंचमहाभूतात्मक जे विषय त्यांपासून मनुष्यमात्राला होणाऱ्या मुखाची लालसा. ' क्रियायज्ञ ' झणजे गर्भाधानादि-संस्कार. व ' गृहयज्ञ ' झणजे विवाहानंतर पत्नी-गृहवर्तमान करण्याची अग्निहोत्रादिक कर्मे. याप्रमाणें या शब्दाचा अर्थ टीकेत केला आहे.

होते तेथें येऊन पोंचला. तो तेजःपुंज ब्रह्म-  
चारी शंकर हातांत धनुष्य घेऊन आलेला  
पहातांच भूदेवी भयभीत होऊन गेली, पर्वत  
धरथर कांपूं लागले, वारा वाहीनासा आला,  
पेटविलेला अग्नि जळनासा आला, आकाशांत  
नक्षत्रमंडळ व्याकूळ होऊन जागच्या जागीं  
भ्रमण पावूं लागले, सूर्याचा प्रकाश लोपला,  
चंद्रबिंब इतकें सुंदर परंतु तें निम्मेज झालें.  
संपूर्ण आकाश अंधःकारानें भरून गेलें. देवही  
हवाळदिल झाले व त्यांचा ऐषआराम नाहीसा  
झाला, यज्ञ कोठें झळकेनासा आला व देवतांची  
वेधा उडाली. मग शंकरानें आपल्या तीव्र  
बाणानें यज्ञाला काळजात प्रहार केला ! नंतर  
सर्वांना पुनीत करणारा यज्ञपुरुष सृगरूप पावून  
तेथून नाहीसा झाला आणि त्याच रूपांनं  
स्वर्गां जाऊन नभोमंडळांत तो पुढें व त्याच्या  
मागोमाग शंकर असे चालले असतां अपूर्व  
शोभा दिमूं लागली. यज्ञपुरुष तेथून नाहीसा  
होतांच देवांची ज्ञानाची ज्योत मावळली व ती  
मावळतांच देव सर्व मृद होऊन गेले. शंकरानें  
रागाच्या आवेशांत आपल्या धनुष्याच्या योगानें  
सवित्याचे हात छेदून टाकले, भगाचे डोळे  
काढिले व पूषाचे दांत पाडिले. मग ते देव व  
यज्ञांमै सैरावैरा धावूं लागली; व कांहीं जागच्या  
जागी तडकड करून भेल्यासारखे पडले ! अशा  
रीतीनं शंकरानें सर्व कांहीं तेथून नाहीसें करून  
निस्स्कारपूर्वक हास्य केलें आणि धनुष्याची  
कोटि दाबून देवांची हालचाल बंद पाडली !

मग देवांनीं जी वाणी उच्चारिली तिच्यासरशी  
धनुष्याची दोरी गळून पडली. मग, राजा, दोरी  
एकदम तुटून पडल्यावर धनुष्य दोरीवांचूनच  
झळकूं लागलें. अशा रीतीनं धनुष्य नाहीसें  
होतांच ते सर्व देव यज्ञपुरुषासहवर्तमान शंकरा-  
च्या शरण गेले व शंकरानें त्यांच्यावर कृपा  
केली. परमेश्वर प्रसन्न झाला तेव्हां आपला  
क्रोध त्यानं उदकांत ठेवून दिला. राजा, तोच  
शंकराचा क्रोध अशिरूप होऊन समुद्राचें पाणी  
रात्रंदिवस शोषून टाकत अमनो. मग शंकरानें  
भगाला डोळे दिले, सवित्याला हात दिले व  
पूषाला दांत दिले आणि पूर्वीप्रमाणें यज्ञ  
चालण्यास मोकळीक दिली. इतकें झाल्यावर  
पुनः जिकडे तिकडे स्थिरस्थावर झालें आणि  
देवांनींही तेव्हांपासून शंकराला अथास्थित  
हविर्भोग ठरवून दिला. राजा, तो शंकर रागा-  
वला तेव्हां संपूर्ण विश्व अस्वस्थ होऊन गेलें व  
तो प्रसन्न झाला तेव्हां सर्वत्र शांतता झाली  
तर, युधिष्ठिरा, अशा त्या शंकराच्या कृपेनं  
तुझ्या सर्व महारथी पुतांना व धृष्टद्युम्नाच्या  
पदरच्या असंख्यात शूरयोद्ध्यांना रणांत मार-  
ण्याचें काम त्या अश्वत्थाम्याचे हातून झालें.  
तें तूं अगदी मनांत आणूं नको; कारण त्याचें  
श्रेय अश्वत्थाम्याकडे मुळीच नाही; शंकराच्या  
कृपेमुळें तें सर्व घडून आलें ! तेव्हां त्याच  
परमेश्वराची कृपा भाकून तूं आपल्या  
पुढील कार्यास लाग.









# श्रीमन्महाभारत.

## स्त्रीपर्व.

अध्याय पहिला.

मंगलाचरण.



नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।  
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

ह्या अखिल ब्रह्मांडांतील यच्चयावत् स्थावर-जंगम पदार्थांच्या ठिकाणीं विदाभासरूपानें प्रत्य-यास येणारा जो नरसंज्ञक जीवात्मा, नरसंज्ञक जीवात्म्यास सदासर्वकाळ आश्रय देणारा जो नारायण नामक कारणात्मा, आणि नरनारायणा-त्मक कार्यकारणसृष्टीहून पृथक् व श्रेष्ठ असा जो नरोत्तमसंज्ञक सच्चिदानंदरूप परमात्मा, त्या सर्वांस मी अभिवंदन करितों; तसेंच, नर, नारा-यण व नरोत्तम ह्या तीन तत्त्वांचें यथार्थ ज्ञान करून देणारी देवी जी सरस्वती, तिलाही मी अभिवंदन करितों; आणि त्या परमकारुणिक जगन्मातेनें लोकहित करण्याविषयीं माझ्या अंतःकरणांत जी स्फूर्ति उत्पन्न केली आहे, तिच्या

साहाय्यानें ह्या भवबंधविमोचक जय म्हणजे महाभारत ग्रंथाच्या स्त्रीपर्वास आरंभ करितों. प्रत्येक धर्मशील पुरुषांनें सर्वपुरुषार्थ-प्रतिपादक अशा शास्त्रांचें विवेचन करितांना प्रथम नर, नारायण आणि नरोत्तम ह्या भगवन्मूर्तींचें ध्यान करून नंतर प्रतिपाद्य विषयाचें निरूपण करण्यास प्रवृत्त व्हावें, हें सर्वथैव इष्ट होय.

धृतराष्ट्राचा शोक.

जनमेजय विचारतो:—मुनिमहाराज, दुर्यो-धन मारला गेला आणि सर्व सैन्याची वाता-हत झाली, तेव्हां तें ऐकून धृतराष्ट्रांनें काय केलें ? त्याचप्रमाणें, थोर अंतःकरणाचा धर्मपुत्र युधिष्ठिर राजा आणि कौरवसैन्यातील अव-शिष्ट राहिलेले ते कृपप्रभृति तीन वीर यांनी

पुढें काय केलें ? अश्वत्थाम्याचें तें घोर कृत्य मीं श्रवण केलें आहे. अश्वत्थामा व कृष्ण यांनीं परस्परांसं शाप दिल्याच्या हकीकतीनंतर-चा संजयानें सांगितलेला वृत्तांत आपण मला कथन करा.

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, शंभर पुत्र मेल्यामुळें जो फांद्या तोडलेल्या वृक्षा-प्रमाणें दीन झाला आहे, पुत्रशोकानें ज्याच्या शरीराचा दाह होत आहे, विचारमग्न होऊन जो मुक्यासारखा स्तब्ध बसला आहे, आणि ज्याला चित्तेनें अगदीं घेरून टाकिलें आहे, अशा त्या पृथ्वीपति धृतराष्ट्र राजाजवळ जाऊन संजय त्यास म्हणाला, “हे महाराजा, असा शोक काय करतोस ? शोक करून कधींच फायदा होत नसतो. अठराही अक्षौहिणींचा संहार झाला असून ही पृथ्वी सांप्रत निर्जन, राजहीन आणि अगदीं शून्याकार झाली आहे ! नानादेशचे राजे नानादिशांकडून येऊन यथ एकत्र झाले, आणि तुझ्या पुत्रांबरोबर सर्वजण निधन पावले; आतां त्यांजबद्दल शोक करून काय उपयोग होणार आहे ? तेव्हां आतां, राजा, पिते, पुत्र, पौत्र, ज्ञातिबांधव, मित्र आणि गुरु हे समरांगणांत ज्या क्रमानें पतन पावले त्या क्रमानें त्यांची और्ध्वदेहिक कार्यें करिव ! ”

वैशंपायन सांगतात:—मुलगे व नातू यांच्या मृत्यूनें व्याकूल झालेला धृतराष्ट्र संजयाचें तें कठोर भाषण ऐकतांच वायूनें उन्मूलित झालेल्या वृक्षाप्रमाणें धाडकन जमिनीवर पडला आणि शोक करूं लागला.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—माझे पुत्र, अमात्य आणि सर्व इष्टमित्र मरून गेले; आतां मी या

१ टीकाकारांनीं याचे स्पष्टीकरण—‘ पांडवांच्या गभांचे ठिकाणीं हें अस्त्र पडो ’ हा अश्वत्थाम्याचा शाप, आणि ‘ तूं गळितकुठ होशील ’ वगैरे हा कृष्णाचा शाप, (सौप्तिकपर्व, अध्याय १६ पहा.) असे केले आहे.

पृथ्वीवर संचार करूं लागलों म्हणजे मला खरो-खर पदोपदी दुःख होईल ! बंधुविहीन झालेल्या मला आतां जगून तरी काय करावयाचें आहे ! ज्याचे पंख गळून गेले आहेत आणि शरीर जरेनें अगदीं जीर्ण झालें आहे, अशा पक्ष्या-प्रमाणें माझे जीवित व्यर्थ झालें आहे ! माझे राज्य गेलें, बंधु गेले आणि माझी दृष्टिही गेली आहे; तेव्हां, हे महाप्राज्ञा, मावळत्या सूर्याप्रमाणें-च माझेंही आतां विलकूल तेज पडणार नाही. मी आपल्या मित्रांच्या बोलण्याकडे लक्ष दिलें नाहीं, जामदग्न्य परशुरामाचा उपदेश ऐकिला नाहीं, देवर्षि नारद व कृष्णद्वैपायन व्यासमुनि यांच्याही भाषणाप्रमाणें वागलों नाहीं; आणि श्रीकृष्णानें सभेमध्यें “ राजा, वैर पुरे कर. आपल्या पुत्रांस आवरून धर. ” वगैरे माझ्या कल्याणाची मसलत दिली असतां तीही मी ऐकिली नाहीं; आणि त्याच्या त्या उपदेशा-प्रमाणें न वागल्यामुळेंच मज मूर्खाला आतां हा विलक्षण ताप होत आहे ! पितामह भट्टिमांचें तें धर्मयुक्त भाषणही मी ऐकिलें नाहीं ! हाय हाय ! वृषभाप्रमाणें गर्जणाच्या दुर्योधनाचा अंत, दुःशासनाचा वध, कर्णाची विपरीत स्थिति आणि द्रोणसूर्यास लागलेलें ग्रहण, या गोष्टींनीं माझे हृदय कसें विदीर्ण होत आहे ! ना संजया, ज्याचें हें इतकें भयंकर फळ मज मूढाला भोगावें लागत आहे, असें कांहीं दुष्कृत्य या जन्मीं तरी मागें कधीं केलेलें मला स्मरत नाहीं; तेव्हां मीं पूर्वजन्मींच कांहीं तरी दुष्कर्म केलें असलें पाहिजे; आणि त्या-मुळेंच ब्रह्मदेवानें मजवर असे दुःखाचे प्रसंग आणले असावे ! आधींच माझे अगदीं उतारवय झालेलें आणि त्यांत दुर्दैवानें सर्व मुलाबाळांचा आणि इष्टमित्रांचा विनाश केला ! हाय हाय ! माझ्यापेक्षां अधिक दुःखी मनुष्य ह्या जगांत दुसरा कोणी तरी असेल का ? तेव्हां आतां

आजच मी ब्रह्मलोकच्या विस्तीर्ण व दीर्घ  
मार्गीत प्रवेश केल्याचें सदाचरणी पांडव पाहोत !

**संजयकृत धृतराष्ट्रात्वन.**

वैशंपायन सांगतात:—राजा, याप्रमाणें  
धृतराष्ट्र शोकाकुल होऊन नानाप्रकारें विलाप  
करीत असतां संजय त्याचें सांत्वन करीत  
झणतो, “ राजन् शोक सोडून दे. त्वां वेदांतील  
सिद्धांत श्रवण केले आहेत; आणि, हे नृप-  
सत्तमा, वृद्धांच्या तोंडून अनेक प्रकारचे शास्त्रा-  
गमही ऐकिले आहेत. पूर्वी संजय राजा पुत्र-  
शोकांत झाला असतां त्याला ऋषींनीं केलेला  
उपदेश तूं श्रवण केला आहेस; आणि, राजा,  
प्रत्यक्ष तुझा पुत्र तारुण्यमदानें धुंद होऊन अन-  
न्वित कृत्यांस प्रवृत्त झाला असतां त्यास वृद्धांनीं  
केलेला उपदेशही तुला श्रुत आहे. परंतु, धृत-  
राष्ट्रा, तुझे सुहृद् तुला परोपरी सांगत असतां  
त्वां त्याचें मुळीच ऐकिलें नाहीं; आणि भलत्याच  
आशेला गुंतून आपला स्वाधीही साधला नाहींस !  
एकधारेच्या तरवारीप्रमाणें केवळ आपल्या  
कुटिल बुद्धीस वाटलें तसा तूं वागलास; आणि  
बहुतकरून दुराचरणी लोकांचेच नेहमीं देव्हारे  
माजविलेस. अरे, दुःशासन, दुरात्मा कर्ण, दुष्ट-  
पणाचा पुतळाच असा शकुनि, दुर्मति चित्रसेन  
आणि सगळ्या जगास शल्याप्रमाणें बोंचत अस-  
लेला शल्य हे ज्याचे मंत्री, त्या तुझ्या पुत्रानें  
कुरुवृद्ध भीष्माचार्य, माता गांधारी, विदुर, महात्मा  
द्रोणाचार्य, शारद्वत कृपाचार्य, भगवान् श्रीकृष्ण,  
त्रिकालदर्शी नाद व दुसरे मुनि यांचेचसें  
काय—पण अमिततेजस्वी साक्षात् व्यासांचेही  
भाषण मानिलें नाहीं ! त्यानें धर्म कसा तो  
कर्धीच जुमानला नाहीं ! त्याला सदोदीत  
युद्धाची खुमखुम ! तो कोत्या बुद्धीचा व गर्विष्ठ  
असल्यामुळें नेहमीं ‘ युद्ध युद्ध ’ हेंच ह्मणाव-  
याचा ! आणि तो वीर्यशाली होता तरी क्रूर,

कोपिष्ठ आणि नित्य असंतुष्ट असे ! राजा, तूं  
वेदांतज्ञ आणि बुद्धिमान् असून सदोदीत सत्य-  
परायण असतोस; असे तुझ्यासारखे बुद्धिमान्  
साधुपुरुष कधीही मोह पावत नाहींत ! हे  
मारिषा, तुझ्या पुत्रानें सद्धर्माचा कधीच सत्कार  
केला नाहीं. त्यानें सर्व क्षत्रियांचा संहार केला.  
आणि शत्रूंची मात्र कीर्ति वाढविली ! राजा,  
पूर्वी तूंही तटस्थ राहिलास, त्यांना योग्य असें  
कांहीच सांगितलें नाहींस. अरे, तुला त्या वेळीं  
तराजूची दांडी समतोल धरतां आली नाहीं !  
बाबारे, जेणेकरून अर्थनाश होऊन पश्चात्तापास  
कारण होणार नाहीं, अशा प्रकारची यथायोग्य  
वर्तणूक मनुष्यानें आधीच ठेविली पाहिजे.  
राजा, आपल्या पुत्रांस मोठेपणा मिळावा म्हणून  
तूं दुर्योधनाच्या मनाप्रमाणें वागलास आणि  
त्यामुळेच शेवटीं पस्तावलास ! आतां मागून  
शोक करण्यांत काय अर्थ आहे ? अरे, ज्याला  
तुटलेल्या कड्यास लटकणारें मधाचें पोलें मात्र  
दिसतें, पण तो तुटलेला भयंकर कडा व  
खालची खोल दरी दिसत नाहीं, तो मधाच्या  
लोभानें पुढें जाऊन खालीं घसरतो; आणि हळीं  
तूं शोक करीत आहेस असाच मागून पश्चात्ताप  
करीत बसतो ! परंतु, धृतराष्ट्रा, शोक केल्यानें  
अर्थ प्राप्त होत नाहीं, कांहीं फल प्राप्त होत  
नाहीं, संपत्ति मिळत नाहीं किंवा मोक्षप्राप्तिही  
होत नाहीं ! अरे, स्वतः अग्नि पेटवून तो वखानें  
गुंडाळूं लागलें कीं अंग भाजावयाचेंच ! अंग  
भाजूं लागल्यावर मग ज्याला पश्चात्ताप होतो  
तो पंडित नव्हे ! आतां तूं आपली स्थिति पहा.  
पुत्रांसहवर्तमान तूं स्वतःच पार्थक्रोपरूपी अग्नि  
उत्पन्न केलास; दुर्भाषणरूप वायूनें तुझीच त्याला  
चेवतला आणि त्यांत लोभरूपी तूप ओतलें,  
तेव्हां तो भडकला; मग त्या अतिप्रदीप्त झालेल्या  
अग्नीत पतंगांप्रमाणें तुझे पुत्र जाऊन पडले !  
अशा रीतीनें ते शररूप ज्वालांनीं दग्ध होऊन

गेले आहेत; यास्तव त्यांबद्दल शोक करणे तुला योग्य नाही. राजा, सांप्रत तुझ्या नेत्रांतून सारखा अश्रुपात होत असल्यामुळे त्याचे ओघळ येऊन तुझे तोंड अगदी ओंगळ झालेलं आहे. असे तोंड असणं हे खरोखर अशास्त्रयुक्त होय. पंडित कांही याला चांगलं द्खणत नाहीत, शोक हा निखाच्याप्रमाणे मनुष्यास भाजून काढतो. यास्तव, हे विचारी राजा, विवेकाचं हा शोक आवर आणि धैर्याने चित्ताचा निरोध कर. ”

वैशंपायन सांगतात:—राजा, महात्म्या संजयाने अशा प्रकारे त्याचें सात्वत केल्यानंतर परंतप विदुरानेही त्यास मोठ्या शहाणपणाचा उपदेश केला.

## अध्याय दुसरा.

—०:—

### विदुरकृत धृतराष्ट्रसात्वत.

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, मग विदुराने बोलण्यास प्रारंभ केला, तेव्हां त्याच्या अमृततुल्य गोड वचनांनी धृतराष्ट्राचा शोक कमी होऊं लागला, आणि त्याच्या अंतःकरणांत समाधान व आनंद यांचा उगम होऊं लागला. आतां विदुराचें तें भाषण मी तुला सांगतो, श्रवण कर.

विदुर म्हणाला:—राजा, ऊठ, असा निजतोस काय? जरा विवेक करून आपलें मन आवरून धर. बाबारे, सर्व प्राण्यांना देवाने हीच गति लावून दिली आहे. भांडारे कितीही भरलेली असोत, ती शेवटीं रिकामी व्हावयाचीच; सर्व सांठ्यांचा शेवटी क्षय व्हावयाचा; जे जे वर आले असतील ते ते सर्व पडावयाचे; संयुक्त असतील त्यांचा वियोग व्हावयाचा; आणि उपजले असतील ते मरावयाचे! अरे, संचय होण्याबरोबरच त्याचा क्षय होणार हें ठरलेलं आहे; उंच उभारणी होण्याबरोबरच

त्याचें पतन होणार हें ठरलेलं आहे; संयोग होण्याबरोबरच वियोग निश्चित झाला आहे; त्याचप्रमाणे, प्रत्येक जीवाचा मृत्यु हा शेवट ठरलेला आहे! हे भारता, शूर आणि भिन्ना या दोघांसही यम आकर्षण करितो, अशी जर स्थिति आहे, तर, हे क्षत्रियश्रेष्ठा, खरे क्षत्रिय कां लढणार नाहीत बरे? रणांत पाऊल न टाकणाराही मरतो, आणि घनघोर रण-कंदनांतूनही मनुष्य जिवंत राहू शकतो, हें आपण पहात नाही काय? सारांश, ज्याची वेळ भरली तो कोठेही असला तरी त्यास मृत्यु चुकवितां यावयाचा नाही, हा सिद्धांत होय. धृतराष्ट्रा, हें जग म्हणजे खरोखर स्वप्न आहे, स्वप्नांत आपणांस जें ऐश्वर्य मिळतें तें तत्पूर्वी कोठें असतें? आणि मग तरी कोठें जातें? वास्तविक तें नसतेंच,—आद्यंती त्याचा सर्वथा अभावच असतो; मध्येंच मात्र क्षणभर आपणांस त्याचा भास होतो! त्याचप्रमाणे प्राणिमात्राची स्थिति आहे. उत्पत्ति होण्यापूर्वी त्यांचा अभाव असतो, आणि अंतीही त्यांचा अभावच होतो. मध्यंतरी स्वप्नसृष्टीप्रमाणे त्यांचा आपणांस भास होतो इतकेंच! अशी जर स्थिति आहे, आणि स्वप्नांतील ऐश्वर्याच्या नाशाने जर जागृतावस्थेंत आपणांस शोक होत नाही, तर तत्सदृश अशा या वेळीं तरी तुला कां बरे शोक व्हावा? शोक करण्यानें मनुष्य कांही मृताच्या मागून जाऊ शकत नाही, किंवा कोणी शोक करण्यानें मरतो अशीही गोष्ट नाही. अशी स्वभावसिद्ध स्थिति असतां उगाच शोक कां करतोस बरे? नानाप्रकारच्या सर्व प्राण्यांस व यज्यावत् स्यावरजंगम पदार्थांस काल आकर्षण करितो; तेथें आपला पाड काय? हे कुरुमत्तमा, कालाचा कोणी आवडता नाही व कोणी नावडताही नाही. हे भरतर्षभा, ज्याप्रमाणें वायु गवताचे

सर्व शेंडे हालवितो, त्याप्रमाणेंच सर्व प्राणी कालवश होतात. राजा, आपण सर्वजण एकाच मेळ्यांतले आहो; सर्वांनी त्याच ठिकाणी जावयाचें आहे; फरक इतकाच की, ज्याची वेळ येते तो पुढें जातो ! तेव्हां येथें शोक करण्यास कोठें जागा आहे ! शिवाय, राजा, तुझे पुत्रपौत्र वगैरे सर्व युद्धांत मरण पावले आहेत; त्यांच्याबद्दल तर शोक करण्याचें मुळीच कारण नाही ! जर तुला शास्त्रें प्रमाण वाटत असतील, तर ते सर्वजण खचित उत्तम गतीला गेले आहेत ! कारण, सर्वजणांनी यथासांग वेदाध्ययन केलें आहे; सर्वांनी योग्य काल-पर्यंत ब्रह्मचर्य व्रत पाळिलेलें आहे; आणि सर्वही सन्मुख मरण पावले आहेत ! याप्रमाणें जर ते उत्तम गतीला गेले आहेत, तर शोक करण्यास स्थल कोठें राहिलें ? आपल्याला दिसत नाही अशा स्थलापामून ते उत्पन्न झाले, आणि आपल्याला दिसत नाही अशा स्थली ते पुनः गेले ! वास्तविक ते तुझे कोणी नव्हत किंवा तूं त्यांचा कोणी नाहीस; मग शोक कसला करावयाचा ? अरे, आपणां क्षत्रियांना युद्धा-सारखें श्रेयस्कर दुसरें काय आहे ? मरण आलें तर स्वर्ग मिळतो, शत्रूस मारलें तर यश मिळतें, दोन्ही आपणांस इष्टच आहेत. यास्तव कांहीं झालें तरी युद्ध हें निष्फल होत नाही ! हे भरतर्षभा, तुझ्या मुलांना इंद्र फार श्रेष्ठ प्रतीचे म्हणजे जेथें इच्छित वस्तु तत्काळ प्राप्त होतात असे लोक देईल; आणि त्या ठिकाणी ते सर्वजण इंद्राच्या घराचे पाहुणे होऊन रहातील ! राजा, रणांत मरणाच्या शूरांना जी गति मिळते तशी उत्तम गति मोठमोठ्या यज्ञांनी किंवा तपश्चर्यानें अथवा मोठ्या विद्ये-नेही प्राप्त होत नाही ! धन्य आहे त्या शूरांची ! शूरांच्या शरीररूपी अग्नीवर त्यांनी शराहुतीचें हवन केलें आणि याप्रमाणें परस्परांकडून

हविले जाणारे बाण त्या तेजस्वी वीरांनी सहन केले ! अशा प्रकारें, राजा, युद्ध हाच स्वर्गाचा उत्तम मार्ग आहे, हें मी तुला सांगून ठेवितों. क्षत्रियांना या जगांत युद्धाहून अधिक योग्य-तेचें कांहीएक नाही ! सांप्रतच्या युद्धांत पतन पावलेले ते क्षत्रिय महायोर, शूर व सभेंत शोभायमान होणारे पंडित होते; आणि मरणापूर्वी त्यांना उत्तम आशीर्वाद मिळालेले होते; यास्तव त्यांबद्दल शोक करण्याचें कांहींच कारण नाही. तेव्हां, हे पुरुषर्षभा, विवेक कर आणि मन आवरून धर; शोक करू नको. आज शोकविह्वल होऊन देहत्याग करणें तुला उचित नाही. अरे, आजपर्यंत आपण हजारों जन्म घेतले आहेत व त्यांमध्ये हजारों मातापितरें, शेंकडों मुल्ये व बायका यांचा अनुभव घेतला आहे; त्यांपैकी आपले कोण ? आणि आपण तरी कोणाकोणाचे ? सारांश, जो मूर्ख अमता त्याला दररोज हजारों शोकाच्या जागा व शेंकडों भयोत्पादक स्थलें दिसतात; परंतु जो शहाणा आहे, त्याला यांपैकी कशा-चीच बाधा होत नाही. हे कुरुसत्तमा, कालाचा कोणी प्रिय नाही व कोणी शत्रुही नाही; किंवा एखाद्याकडे काल दुर्लक्ष करतो असेही घडत नाही. तो सर्वासच आकर्षण करितो. काल भूतांचा नाश करितो, सर्व प्रजांचा संहार करितो आणि प्राणी निजले तरी तो जागृत असतो,—त्याचा कोणासही अतिक्रम करतां यावयाचा नाही ! बाबारे, तारुण्य, सौंदर्य, आयुष्य, द्रव्यसंचय, आरोग्य व प्रियांचा सहवास ही सर्व अनित्य आहेत; यांच्या ठिकाणी पंडित लुब्ध होत नाहीत. शिवाय, सांप्रत सर्व देशाला दुःखाचा प्रसंग आलेला आहे, त्या-बद्दल त्वां एकट्यानेच शोक करावा हें योग्य नाही ! आतां असें समज कीं, तूं आपला प्राणांत केलास, म्हणून तें दुःख नाहीसं व्हाव-याचें आहे काय ? कदापि होणार नाही !

तेव्हां शोक न करितां त्याचा प्रतिकार करावा हेंच योग्य होय ! अशा प्रकारचें दुःख नाहीसें करण्यास एकच औषध आहे. तें हें कीं, दुःखकारक गोष्टीचें मुळीच चिंतन करूं नये. चिंतन करूं लागले असतां दुःखाचा नाश तर होत नाहीच, पण उलट तें वाढतें मात्र ! अनिष्ट गोष्टी घडल्या, किंवा प्रिय वस्तूचा वियोग झाला, म्हणजे अल्पबुद्धीचे मनुष्य मानसिक दुःखांनीं होरपळूं लागतात,—बुद्धिमान् कांहीं होरपळत नाहीत. अरे, तूं हा जो शोक करीत आहेस, यांत कांहीं अर्थ साधतो आहे, कांहीं धर्म घडत आहे किंवा कांहीं सुख होत आहे काय ? कांहींएक नाही. यापासून कोणाचा कांहीं फायदा तर होत नाहीच; पण मनुष्य धर्म, अर्थ व काम या त्रिवर्गास आंचवतो मात्र ! कम-जास्त मानाची सांपत्तिक स्थिति प्राप्त झाली असतां कित्येक असेतुष्ट होतात व मोह पावतात; परंतु पंडित सर्व अवस्थांत संतुष्ट रहातात. अरे, बुद्धीनें मानसिक दुःख नाहीसें करावें, व औषधानें शारीरिक दुःख दूरकरावें हा नियम होय. अशा रीतीनें दुःखाचा उपशम करणें हेंच ज्ञानाचें कार्य होय. राजा, तूं सज्जन आहेस,—शोक करून अज्ञान बालांच्या पंक्तीस बसूं नको. बाबारे, हें प्राक्तन आहे; तें कोणासही सुटत नाही; मनुष्य निजला तर तें त्याबरोबर निजतें, तो उठला कीं त्याबरोबर उभें रहातें, आणि तो धावूं लागला तर त्याच्यामागून धावूं लागतें ! ज्या ज्या अवस्थेंत मनुष्य जें जें कर्म करतो, त्याचें त्याचें फळ त्या त्या अवस्थेंत त्यास प्राप्त होतें. तसेंच, ज्या ज्या शरीरांनें जें जें कर्म करितो, त्या त्या शरीरांनें तें त्यास भोगावें लागतें. उदाहरणार्थ असें पहा कीं, या स्थूल देहानें केलेल्या कर्माचें फळ या स्थूल देहासच भोगावें लागतें. त्याप्रमाणें तुझ्या मुलांस तें भोगावें

लागलें आणि तूं मनानें वाईट आचरण केल्यामुळें तुला मानसिक दुःख प्राप्त झालें आहे ! बाबारे, हें ज्याच्या त्याच्या कर्माचें फळ आहे. तेथें दुसऱ्याचा उपाय नाही. आपणच आपले हितकर्ते आहों; आपणच आपले शत्रु आहों; आणि आपण जें काय बरेंवाईट केलें असेल त्याचे साक्षीही आपले आपणच आहों ! शुभ-कर्मांनें सौख्य मिळतें व पापकर्मांनें दुःख मिळतें, सर्वत्र चांगल्या किंवा वाईट क्रिया चाललेल्याच असतात. कांहीं घडत नाहीं असें कोठेही असत नाहीं. ज्याच्या हातून जसें कर्म घडतें तसें त्याला फल मिळतें. या सर्व गोष्टी मनांत आणून तुझ्यासारखे बुद्धिमान् लोक विवेक करतात; आणि आत्मज्ञानास विरुद्ध व अतिशय अपायकारक अशा देहत्यागाच्या कृत्यास कधीच तयार होत नाहीत !

## अध्याय तिसरा.

—:०:—

### धृतराष्ट्रविशोककरण.

धृतराष्ट्रानें विचारलें:—हे महाप्राज्ञा, तुझ्या सुंदर भाषणानें माझा हा शोक दूर झाला. तथापि तुझ्या मुखांतून आणखी कांहीं तात्त्विक भाषण श्रवण करण्याची माझी इच्छा आहे. विदुरा, अनिष्ट गोष्टी प्राप्त झाल्या असतां आणि दुष्ट गोष्टी नष्ट झाल्या असतां होणाऱ्या मानसिक दुःखापासून ज्ञाते कसे मुक्त होतात ?

विदुर सांगतो:—हे नरर्षभा, जसजसें मन दुःखापासून किंवा सुखापासून परावृत्त होत जाईल, तसतसें त्याचें नियमन करून शाह्याने शांति पावतात. आपण ज्याचें चिंतन करितों, आणि ज्याबद्दल आपल्या मनास दुःख वगैरे होतें, तें हें सर्व जग अगदीं अशाश्वत आहे. याची स्थिति केळीसारखी आहे; म्हणजे, केळीचीं सोपटें काढीत गेलें असतां शेवटीं गाभा

( सार ) म्हणून कांहींच उरत नाही, त्या-  
प्रमाणे ह्या जगातही सार कांहींच नाही. हें  
तत्त्व समजलें म्हणजे तत्काळ शांति प्राप्त होते.  
राजा, येथें जे सुखदुःखाचे प्रसंग येतात,  
त्यांचा पुढेंमार्गे कांहींच संबंध नाही असें  
आहे काय ? हें पहा—जर शहाणे व मूर्ख  
आणि श्रीमान् व दरिद्री सर्वच लोक यमलोकी  
गेल्यावर तापरहित होत्साते सुखानें निद्रा करीत  
असते, तर मग सर्वच पंचाईत टळली असती.  
पण तसें असेल तर मग तपस्विजन तपश्चर्येच्या  
योगानें शरीरशोषण करून अवयव, मांसरहित,  
अगदीं अस्थिपञ्जर, केवळ स्नायूंच्या योगानेंच  
एकमेकांस चिकटून राहिलेले असे क्षण कर-  
ण्यांत कोणता अर्थ पहातात बरें ? आणि जर  
तपश्चर्येत कांहीं अर्थ असेल, तर मरणोत्तरही  
समविषम गति प्राप्त होत असल्या पाहिजेत.  
राजा, ह्या जन्मीं केलेल्या कर्माचा संबंध  
पुढें आहे, तसाच सांप्रतच्या सुखदुःखाशीं  
पूर्वसंचिताचा संबंध आहे. आपणास विशिष्ट  
कुल, रूप इत्यादि जें प्राप्त होतें त्या  
सर्वांचा संबंध अदृष्टाशीं आहे; आणि केवळ  
त्याच्या अनुरोधानेंच पुत्रांचा संयोग, वियोग  
वगैरे सर्व गोष्टी घडत असतात. असें जर आहे,  
तर पंडित एकमेकांची आशा कशाला धरतील  
बरें ? धृतराष्ट्रा, जशीं निरनिराळीं बरें असतात  
त्याचप्रमाणें प्राण्यांचीं शरीरें आहेत असें पंडित  
म्हणतात, व एक घर सोडून दुसऱ्या घरीं  
जावें त्याप्रमाणेंच जीव यथाकालीं एक देह  
टाकून दुसऱ्यांत प्रवेश करतो. हे देह कांहीं  
शाश्वत नाहीत, जीव मात्र शाश्वत आहे.  
ज्याप्रमाणें मनुष्य जीर्ण झालेलें किंवा कधीं  
कधीं नवेंही वस्त्र टाकून देऊन दुसरें ग्रहण  
करतो, त्याचप्रमाणें शरीरी जो जीव तो  
देहाचा त्याग करितो. राजा, प्राणिमात्रास जें  
सुख किंवा दुःख प्राप्त होतें, तें त्यास केवळ

स्वतः केलेल्या कर्मानेंच मिळतें. हे भारता,  
कर्मानें स्वर्ग मिळतो, आणि सुखदुःखही  
त्याच्याच योगानें प्राप्त होतें. मग त्याची खुषी  
असो किंवा नसो; त्याला तो भार सहन करावा-  
च लागतो,—त्यावांचून गत्यंतर नाही. आतां  
कोणी बाल्यावस्थेत तर कोणी तारुण्यांतच मरण  
पावतात हें कसें झणशील, तर ऐक. कुंभाराच्या  
घरीं एखादें मडकें चाकावर असतांच मोडतें,  
एखादें नीटनेटकें करीत असतां किंवा एखादें  
तयार झाल्यावरच मोडतें ! तेथें झांकून ठेवल्या-  
वर एखादें फुटतें, एखादें चकावरून खालीं उत-  
रतांना आणि एखादें उतरल्यावरही छिन्नभिन्न  
होतें ! ओलीं असतांना कित्येक मोडतात,  
कित्येक सुकल्यावर तडकतात. भट्टीत घालून  
आंच देतांना कांहीं फुटतात, आणि कांहीं भट्टी-  
तून काढतांना, कांहीं काढल्यावर आणि कांहीं  
वांशीत असतां फुटतात ! जशीं कुंभाराकडचीं  
मडकीं तशींच हीं प्राण्यांचीं शरीरें आहेत !  
गभीत असतां, प्रसूत झाल्याबरोबर, चारदोन  
दिवसांनीं, पंधरा दिवसांनीं, महिन्याचें झाल्यावर,  
एक वर्षाचें किंवा दोन वर्षांचें असतांना, भर-  
तारुण्यांत, मध्यमवयांत किंवा वृद्धावस्थेत केव्हां  
तरी ह्याचा नाश होतो; आणि पूर्वकर्मानुरोधानें  
कित्येक प्राणी पुनः जन्मास येतात व कित्येक  
ज्ञानसंपन्न झालेले येतही नाहीत. अशा प्रकार-  
ची ही जगाची रहाटी स्वभावसिद्ध असतांना  
व्यर्थ अनुताप कां करतोस बरें ? राजा, ज्या-  
प्रमाणें एखादें जनावर सहज क्रीडेसाठीं उदकांत  
पोहत असतां खालीं बुडी मारतें किंवा वर मान  
काढतें, तद्वत् या संसारसागरांत जीवांचें उन्म-  
ज्जननिमज्जन चाललेलें आहे. यामध्यें अल्प-  
बुद्धीचे पुरुष कर्मभोगांनीं बद्ध होऊन क्लेश  
पावतात; परंतु जे ज्ञानी असतात, ज्यांना  
स्वऱ्या हिताची कळकळ असते, व ज्यांना



प्राण्यांचा समागमवियोग कसा होतो यांतील रहस्य कळतें, ते परमगतीला जातात.

## अध्याय चौथा.

—०:—

### भूतोत्पत्त्यादिकथन.

धृतराष्ट्र विचारितो:—हे वाक्पटो, संसार-रूप अरण्य कसें जाणावें हें श्रवण करण्याची माझी इच्छा आहे, तर मला यांतील तत्त्व निवेदन कर.

विदुर सांगतो:—राजा, गर्भोत्पत्ति झाल्या-पासूनच प्राण्याच्या एकंदर क्रियांस प्रारंभ होतो. शुक्रशोणित्वांचा संयोग होतांच गर्भोत्पत्ति होते. तें शुक्रशोणित एकरात्र राहिलें ह्मणजे त्याला कलिल म्हणतात. त्यांत एका रात्रीतच कांहीं फरक पडलेला असतो, व त्यांतच (सत्तामात्र) जीव रहातो. पुढें पांचवा महिना संपला ह्मणजे त्यांत चैतन्याचा आविर्भाव होतो. मग दहाव्या महिन्यापर्यंत सर्वावयव-संपूर्ण असा गर्भ तयार होतो. या वेळीं हा गर्भ—ज्यावर रक्तमांसांचा लेप आहे, अशा अमंगल पदार्थांत गुरफटलेला असतो. मग पुढें तो वायुवेगाच्या योगानें खाली मस्तक व वर पाय असा उलटा योनिद्वाराशीं येतो व तेथें आवळला जाऊन आपल्या प्राक्तनानुसार फार हेरा पावतो. तेथून एकदांची मुटका झाली म्हणजे तो संसारांत येऊन पडतो, आणि तेथें त्यास दुसरे पुढकळ उपद्रव होतात. ज्याप्रमाणें कुत्रे आमिषाच्या मार्गे लागतात, त्याप्रमाणें ग्रह त्याच्या मार्गे लागतात; आणि पुढें स्वकर्मांनी बद्ध असलेल्या त्या जीवामार्गे अनेक प्रकारचे व्याधि लागतात. पुढें राजा, ज्यांना विषयसंग फार प्रिय आहे अशा इंद्रियरूप पाशांत तो बद्ध होतो; आणि एकदां का तो इंद्रियांच्या तडाख्यांत सांपडला, म्हणजे मग त्याला नाना-

प्रकारचीं व्यसनें जडतात. बरें, त्या व्यसनांत गुंग झाल्यावर तरी त्याला तृप्ति होते काय ? मुळीच नाही. पुढें पुढें अशी स्थिति होते कीं, आपण करतो ते चांगलें का वाईट, याचाही विचार त्याच्या मनांत येईनासा होतो. जरी मूर्खांची अशी स्थिति होते, तरी ध्यानधाण्या-निष्ठ साधुपुरुष यथाशास्त्र वर्तन करून दुराच-रणांपासून स्वतःचें संरक्षण करतात. मूर्खाला मात्र प्रत्यक्ष यमलोक सन्निध आला असतांही उमज पडत नाही. पुढें कालांतरानें यमदूत त्याला आकर्षण करतात व तो मृत्यु पावतो. सर्व इंद्रियें विकल झालीं आहेत, व यमदूत आकर्षण करीत आहेत, अशा वेळीं तरी तो सावध होतो काय ? मुळीच नाही. पूर्वीं केलेल्या बऱ्यावाईट गोष्टींबद्दल त्याची वासना रहाते; आणि तेणेंकरून पुनः गर्भवासादि बंधनांत सांपडत असतांही तो आपली उपेक्षा करितो ! अहो, हें जग अगदीं हीन स्थितीस पोचलें असून त्यावर लोभाचा पूर्ण पगडा बसला आहे. लोभ, क्रोध व भय यांनीं उन्मत्त झाल्यामुळें स्वस्वरूपाची ओळख कोणासच राहिली नाही. ते कुलीनपणाचा अभिमान बाळगतात आणि नीचकुलोत्पन्नांची निंदा करितात ! ऐश्वर्यमदानें स्वतः धुंद होतात आणि गरीबांचा उपहास करतात ! दुसऱ्यास बेधडक मूर्ख म्हणतात, पण स्वस्वरूपाविषयीं मुळीच विचार करीत नाहीत ! दुसऱ्याचे दोष बाहेर काढतात, पण आपले दोष काढून टाकण्याची त्यांस इच्छा नसते ! परंतु जेव्हां शहाणे व मूर्ख, श्रीमंत व दरिद्री, कुलीन व कुलहीन, गर्विष्ठ व साधेभोळे—सर्वच लोक मांसहीन, अस्थिमय व केवळ स्नायुमय अशा अवयवांनीं युक्त होतसाते पितृवनांत येऊन कांहींएक पांथर-ल्याशिवाय उघडे पडतात, तेव्हां त्या ठिकाणीं त्यांच्यामध्ये 'हा श्रीमंत व हा दरिद्री'

अशा प्रकारचा फरक स्वर्गस्थ लोकांम मुळींच दिसत नाही; सर्व सारखेच दिसतात ! कारण, कुल, रूप इत्यादि गोष्टीकडे त्यांची दृष्टिच नसते ! अरेरे ! सर्वांचे देह एकसारखेच जमिनीवर पडतात हे प्रत्यक्ष पहात असतां व एकत असतां ' मला ही भार्या अन्य जन्मी मिळू दे; मला हा पुत्र मिळू दे. ' इत्यादि प्रकारें एकमेक मिळण्याविषयी मूर्ख लोक कां इच्छितात बरे ? खरोखर या क्षणभंगुर मर्त्यलोकीं जो जन्मापासून धर्माचें पालन करून तदनुसार परमार्थ साधन करील, तोच अंती परमगति पावेल. राजा, याप्रमाणें सर्व गोष्टी जाणून जो तत्त्वास अनुसरतो, तो अधोगतीचे सर्व मार्ग सोडून उर्ध्वमार्गांनंच गमन करितो !

## अध्याय पांचवा.

—०—

### संसाररूपक.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—विदुरा, जर ह्या धर्मरूपी अरण्यांत बुद्धीनें प्रवेश करावयाचा आहे, तर त्यांत तिनें कोणत्या मार्गांनें प्रवेश करावा, तें मला विस्तारपूर्वक कथन कर.

विदुर म्हणाला:—ठीक आहे. प्रथम स्वायंभुव ब्रह्मदेवास नमस्कार करून, मोठमोठे ऋषि या संसाराला ' अरण्य ' कां म्हणतात, तें तुला समजून सांगतां.

एक द्विज एका महान् अरण्यांत फिरत असतां वाट चुकून हिंस्र पशूंनी गजबजलेल्या अशा एका अतिगहन वनांत येऊन पोचला. त्या अति घोर वनांत सिंह, वाघ, हत्ती, अम्बलें वेगरे मांसाहारी श्वापदांचे थवेच्या थवे चोहोंकडे फिरत होते. ते पशु मोठे भयंकर व अक्राळ-विक्राळ असून मोठमोठ्यानें गर्जना करीत होते. यामुळे ते वन इतकें भीतिदायक झाले होतें कीं, तें पाहून माक्षात् यमधर्मही भिडून जाईल !

तें अरण्य पहातांच या ब्राह्मणाचें हृदय तर अगदीच भेदरून गेलें ! राजा. त्याचे अंगावर रोमांच उभे राहिले आणि तो थरथरा कांपू लागला ! मग ' आतां कोणाला शरण जावें ! ' अमें म्हणत व दाही दिशांकडे घाबऱ्या घाबऱ्या पहात तो त्या वनांत इतस्ततः धावू लागला. तो भयभीत झालेला ब्राह्मण कोठे वाट मांपडते काय म्हणून पहात एकसारखा धावत होता, परंतु त्या वनांतून त्याम बाहेर पडतां आलें नाहीं, किंवा त्या भयंकर श्वापदांपासूनही त्याची सुटका झाली नाहीं ! पुढें धावतां धावतां त्यानें सभोंवार पाहिलें तों त्या घोर अरण्यांत जिकडे तिकडे मांपळे व पाश मांडले आहेत, एका अतिभयंकर स्त्रीनें आपल्या हातांनीं त्यास मगरमिठी मारिली आहे, पांचपांच फडांचे पर्वतप्राय नाग सर्वत्र दिप्त आहेत, आणि गगनाम भेटून जाणाऱ्या प्रचंड वृक्षांनी तें महावन व्यापून गेले आहे. असे त्याच्या दृष्टीम पडलें ! ज्या वनामध्ये हामनुष्य होता तेथेच एक खोल विहीर होती. तिच्या सभोंवार वेलीची गुंतागुंत झाली असून त्यांतच पुष्कळ गवत रुजलेलें होतें; आणि त्या वेलीनी त्या भयंकर विहिरीचे कांठ अगदी झांकून गेले होते. धावतां धावतां तो बिचारा ब्राह्मण त्या खोल व झांकलेल्या जलाशयांत पडला ! परंतु नशिबानें एका वेलीच्या गुंतागुंतीत त्याचे पाय अडकले; आणि फणसाचें मोठें फळ लोंबतें त्याप्रमाणें तो खाली डोकें वर पाय होऊन त्या जलाशयांत उलटा लोंबू लागला ! याप्रमाणें मांप्रत तो तेथें लोंबत आहे. परंतु, राजा, त्याचें दुर्दैव एवढ्याचेंच संपले नाहीं,—तेथें त्याला आणखी उपद्रव आहे. त्या कूपामध्ये एक महाबलाढ्य व भयंकर सर्प त्याच्या नजरेस पडत आहे, व वर विहिरीच्या कांठावरच एक भला मोठा हत्ती आहे. त्या हत्तीला

सहा तोंडें आहेत; आणि अंधे काळे व अंधे पांढरे असे बारा पाय आहेत ! ज्या वृक्षावरून खाली लोंबलेल्या वेलीत हा मनुष्य अडकला आहे. तोच वृक्ष मोडून खाण्यासाठी तो हत्ती त्याकडे हळूहळू येत आहे. त्या वृक्षाच्या खांद्यांवर नानाप्रकारचे घोर स्वरूपाचे व भीति-कारक भुंगे घोंगावत आहेत. ते त्या वृक्षा-वरील मधाभोंवती गराडा देऊन बसले आहेत; आणि, हे भरतर्षभा वरचेवर तो मध चाटीत आहेत. जो प्राणिमात्रास गोड लागतो व विशेषकरून बालक ज्यास लुब्ध होतो त्या मधाची एक धार खाली गळत आहे आणि तो लोंबणारा पुरुष ती एकसारखा पीत आहे. याप्रमाणे तो संकटांत पडला आहे तरी मध पिण्याची त्याची तृष्णा नाहीशी होत नाही. तो नित्य अतृप्तच अमून एकसारखा मधाची इच्छा करीत आहे; आणि राजा, त्याला जीविताबद्दलही निर्वेद उत्पन्न झाला नाही ! त्या मधावर त्याची जीविताशा गुंतून राहिली आहे. कांही काळे व पांढरे उंदीर त्या वृक्षाचीं मुळे कुरतुडीत आहेत ! भयंकर वनांतील मध व ती अत्युग्र स्त्री, कृपांतील नाग, तीरावरील हत्ती, वृक्ष पडण्याचे भय, उंदरा-पामूनचे पांचवे भय, आणि भुंगे मध खात आहेत. तो भेपण्याचे महावे भय, अशा महा प्रकार-च्या भीतीत तो तेथे भवमागारांत पडला आहे. तथापि त्याची जीविताशा बिलकूल सुटत नाही !

### अध्याय सहावा.

— — —

#### रूपकाचा स्पष्टार्थ.

धृतराष्ट्र म्हणाला : अरे ! त्या विद्याभ्यास स्वर्गोत्तर फारच दुःख प्राप्त झाले. या वेळी तर तो बिलक्षण पेंचांत मां पडला आहे. असें असतां हे वाक्पटो, त्या ठिकाणी त्याचे मन कसे रम-

माण होतें, व त्याला कसें समाधान होत आहे, हें मला मांग. बा विदुरा, तो ब्राह्मण जेथें या अशा भयंकर संकटांत पडला आहे, ते ठिकाण कोठे आहे, तसेच त्याला या संकटांतून कोणत्या उपायानें मुक्त करतां येईल, हें सर्व मला मांग; ह्मणजे आपण त्याच्या मुक्ते-साठी खटपट करूं. त्याच्याबद्दल माझ्या मनांत फार कळवळा उत्पन्न झाला आहे. त्याला या स्थितींतून बाहेर काढावे असें मी योजिलें आहे !

विदुर ह्मणाला :—राजा, मोक्षमार्ग जाण-णाऱ्या ज्ञात्यांनी वर्णिलेले हें एक केवळ रूपक आहे. हें तत्त्वतः जाणले असतां परलोकीं मनुष्याचे कल्याण होतें. राजा, महान् अरण्य ह्मणजे महामंसार होय. ज्याला गहन वन झटले तो प्राणिमात्राचा मंसार होय. ज्यांना व्याल झटले आहे ते व्याधि होत; आणि जी परम घोर स्त्री त्या ठिकाणी रहाते ह्मणून मांगितले, ती मौदर्य व तेज नष्ट करणारी जरा होय. राजा. तेथे जो कृप झटला तो तर आपला—प्राण्यांचा—देह होय. त्यामध्ये खोल जो एक भयंकर भुजंग रहातो ह्मणून मांगितले, तो सर्व भूतांचा व प्राण्यांचा नाश करणारा आणि यच्चयावत् सर्व हरण करणारा काल होय ! त्या कृपामध्ये उत्पन्न झालेली वेल—जिला अडकून तो मनुष्य लोंबत आहे, ती प्राण्यांची जीविताशा होय. या जीविताशेलाच सर्व गुंतलेले असतात. राजा. त्या कृपाच्या तीरावरून त्या वृक्षाकडे एकसारखा येत असलेला तो महा तोंडांचा गज कोणता समजलास काय ? त्याला तर संवत्सर असें ह्मणतात. महा ऋतु हीच त्याची महा मुखें व बारा महिने हेच त्याचे बारा पाय त्या वृक्षाला जे उंदीर व सर्प कुरतुडीत आहेत. ते दिवस आणि राती होत. ज्यांना भुंगे झटले ते काम—वासना—होत. त्या मधाच्या धारा ह्मणजे विषयमौल्ये

जाणावीं. या विषयसौख्यांतच मानव गर्क झालेले असतात ! धृतराष्ट्र, संसारचक्राचें रूपक अशा प्रकारचें आहे. ज्ञाते हें जाणतात आणि तेणेंकरून ते भवपाश छेदून टाकतात !

## अध्याय सातवा.

—:—

### संसारनिवृत्त्यर्थं तत्त्वोपदेश.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—अहा विदुरा ! खरो-  
खर तू फारच मनोहर आख्यान सांगितलेंस. तूं  
खरा तत्त्वज्ञ आहेस. तूजें हें अमृततुल्य भाषण  
श्रवण करून माझी तृप्ति होतों आणि पुनः  
हेंच ऐकण्याची मला फार इच्छा उत्पन्न झाली  
आहे. हेंच आख्यान तूं पुनः सांग.

विदुर म्हणाला:—राजा, हाच मार्ग मी  
पुनः विस्तारपूर्वक सांगतों. श्रवण कर. तो  
ऐकिल्याच्या योगानें विचक्षण पुरुष संमारा-  
पामून मुक्त होतात. राजा, ज्याप्रमाणें एखादा  
मनुष्य फार लांब रस्ता चालत असतां थकून  
वाटत जागजागी विश्रांतीस्तव बसतो, त्याप्रमा-  
णेंच, हे भारता, संमृतीच्या फेऱ्यांत मांडलेले  
जीव निरनिराळ्या गर्भस्थानांत वास करितात;  
पण मूर्ख जन तेथें राहिल्यावर पुढें जायचें  
विमरून तेथेंच अडकून पडतात, आणि ज्ञानी  
जन त्यांतून मुक्त होतात. म्हणूनच शास्त्रग्रहस्य  
जाणणारे पुरुष या संसारचक्राच्या मार्ग असें  
म्हणतात; आणि तो मार्ग आक्रमीत असतां  
ज्या ह्या संमारांत जीव पडतो, त्यास मनन-  
शील पंडित वन असें म्हणतात. हे भरतर्षभा,  
स्थावरजंगम प्राण्यांस भ्रमविणारा हा एक विल-  
क्षण भोंवरा आहे; पंडित मात्र त्यांत अडकत  
नाहींत. प्रत्यक्ष व परोक्ष असे जे अनुक्रमें  
शारीरिक व मानसिक व्याधि या मर्त्यांना जड-  
तात, त्यांना पंडित व्याल असें म्हणतात. हे  
भारता, त्यांच्या योगानें अज्ञ लोक नित्य

पुष्कळ क्लेश पावत असतात; व त्यांचें निवारण  
करण्यासाठीं घडपडत असतात; परंतु पूर्वकर्मा-  
मुल्लें या महाव्यालांपामून त्यांची मुटका होत  
नाहीं ! राजा, यदाकदाचित् मनुष्य या व्याधी-  
पामून मुटल्या, तथापि पुढें शरीर विरूप कर-  
णारी जरा त्याला घेरतेच. राजा, जेथें मज्जा-  
मांमरूप जिवल आहे अशा देहरूप कृपांत  
निराधार पडला असतांही शब्दस्पर्शादि विविध  
विषयांत हा गुंग होतो; आणि संवत्सर, मास,  
पक्ष, अहोरात्र व सधिकाळ हे क्रमाक्रमानें  
त्याचें रूप व आयुष्य हरण करीत असतात.  
संवत्सर, मास वेगरे हे कालाचे निधि आहेत,  
ते एकसारखे आयुष्य हरण करीत असतात, हें  
मूर्खांच्या ध्यानांत येत नाहीं. राजा, सर्व  
प्राणी कर्मरूप विधात्यानें उत्पन्न केले आहेत  
असें ज्ञाते म्हणतात. शरीर हा जीवांचा रथ  
होय. बुद्धि सारथि होय, इंद्रियें घोडे होत आणि  
मन हा लगाम होय. जो मनुष्य हा मनरूपी  
लगाम मेल मोडून इंद्रियरूपी अश्र्वांस पाहिजे  
तसे भडकूं देतो. व त्यांच्या वेगाप्रमाणें आपला  
देहरूप रथ जाऊं देतो. तो या संसारचक्रांत  
चक्रवत् फिरत रहातो; आणि जो बुद्धिरूप  
सारथ्याकडून मनरूप लगाम गेवून इंद्रियरूप  
अश्र्वांस आवरून धरतो, तो मृत झाल्यावर पुनः  
संमारांत पडत नाही. चाकाप्रमाणें गरगर फिर-  
णाऱ्या या संसारचक्रांत फिरत असतां जे मोह  
पावत नाहींत, त्यांस त्याबरोबर फिरावें लगाम  
नाहीं; त्यांची लवकर मुटका होते आतां कोणी  
म्हणेल की, यांत फिरलें म्हणून काय झालें ?  
तर हें झणणें बरोबर नाही. कारण, त्यापामून  
सुख तर नाहींच, पण दुःख मात्र निश्चयानें  
होतें. यामाठी शाहाण्यानें त्यांतून मुटण्याविषयी  
अवश्यमेव यत्न करावा,—विलकूल उपेक्षा करूं  
नये; कारण तेणेंकरून या संसारवृक्षाची वाढ  
होते. राजा, ज्यानें इंद्रियांचें नियमन केलें

आहे, क्रोध व लोभ यांचें निगकरण केलें आहे, आणि जो सदोदीत संतुष्ट व सत्यवादी आहे त्याला शांति प्राप्त होत. राजा, ज्याच्या योगानें अज्ञ लोक मोहून जातात, त्या ह्या संसाराला याम्य म्हणजे यमलोकी पोंचविणारा रथ असें म्हणतात. या रथाच्या योगानें, तुला प्राप्त झाली आहे तीच स्थिति प्राप्त व्हावयाची ! परंतु, हे मारिषा, राज्यनाश, पुत्रनाश, मित्रनाश यांच्या योगानें तृष्णाशीलास मात्र दुःख होतें; समाधानी पुरुषास दुःख होत नाही. शहाण्यानें कितीही भयंकर दुःखे आली तरी त्यांवर दुःखें घालविण्याचा जो खरा उपाय तोच करावा. आत्मसंयमी मनुष्यानें ब्रह्मज्ञान-रूपी दिव्य आषधि मिळवून तिच्या योगानें दुःखरूप महारोग नाहीसा करावा. स्थिरसंयमी पुरुष जसा आपला आपण दुःखापासून पूर्ण मुक्त होतो, तसे कांही त्यास पराक्रम, द्रव्य, मित्र किंवा आस हे मुक्त करू शकत नाहीत. यास्तव, हे भारता, मी मित्रभावानें सांगत आहे त्यावर भरंवसा ठेवून तूं शील संपादन कर. दम, त्याग व अप्रमाद हे तीन ब्रह्मलोकी पोंचविणारे घोडे आहेत. राजा, शीलरूप लगाम धरून जो मनोरूप रथांत आरूढ होतो, तो मृत्यूची भीति सोडून ब्रह्मलोकी जातो. हे महीपते, प्राणिमात्रास जो अभय देतो त्यास सत्यलोकी निरामय व सर्वश्रेष्ठ असें स्थान प्राप्त होतें. अभयप्रदानानें मनुष्यास जें फल प्राप्त होतें तें हजारों यज्ञ केल्यानें किंवा नित्य उपवास केल्यानेंही प्राप्त होत नाही ! प्राणिमात्रास स्वतःचा जीव प्यारा आहे, त्याहून अधिक प्रिय असें दुसरे कांही-एक नाही, हा मिद्धांत होय; आणि म्हणूनच मरण हें कोणासच नको असतें. सर्व त्यास भीत असतात. यास्तव, राजा, सुज्ञ मनुष्यानें प्राणिमात्रावर दया करावी. राजा, नाना-

प्रकारच्या मोहांत सांपडलेले व अज्ञानपटलानें आच्छादिलेले स्थूलदृष्टीचे मंद लोक संसारचक्रांत ठिकठिकाणी भ्रमण करितात; परंतु, धृतराष्ट्रा, जे अत्यंत सूक्ष्मदृष्टीचे लोक असतात, ते सनातन, ब्रह्मपदीं गमन करतात.

## अध्याय आठवा.

—०.—

### व्यासांचा उपदेश.

वैशंपायन सांगतात:—जनेमेजया, विदुराचें तें भाषण ऐकून, कुरुश्रेष्ठ धृतराष्ट्र राजा हा पुत्रशोकांनं अतिशय व्याकूल होत्साता भूमीवर मूर्च्छित पडला. तो तमा बैशुद्ध पडलेला पाहातांच त्याचे आस, कृष्णद्वैपायन व्यास, विदुर, संजय, दुसरे इष्टमित्र, द्वारपाल, वगैरे सर्वजण त्याच्या भोंवताली जमले; व कोणी त्याच्या मस्तकावर गार पाणी शिंपडले, कोणी ताडाच्या पंख्यांनीं वारा घालूं लागले, आणि कोणी त्याच्या अंगावरून हळूहळू हात फिरवूं लागले. त्याप्रमाणे त्यांनीं पुष्कळ वेळपर्यंत प्रयत्न चालविले; तेव्हां बऱ्याच वेळानें धृतराष्ट्र राजा एकदांचा शुद्धीवर आला; आणि पुत्रशोकविह्वल होऊन फार वेळपर्यंत विलाप करीत जमला. तो म्हणाला, 'प्रभो, या मनुष्यजन्मांत वारंवार दुःखें उत्पन्न होतात, तस्मात् या मनुष्यत्वासच धिक्कार असो ! या मनुष्ययोनीत पुत्रनाश, द्रव्यनाश आणि आसस्वकीयांचा नाश यांपासून विष किंवा अग्नि यांप्रमाणे जाज्वल्य व अपार दुःख होत असतें, त्याच्या योगें सर्वांगाचा भडका होतो, बुद्धि नष्ट होते आणि त्या दुःखानें होरपळून गेलेल्या त्या मनुष्यास 'मरण येईल तर फार बरें.' असें वाटूं लागतें ! अशाच प्रकारचें भयंकर दुःख दुर्भाग्यामुळें मला प्राप्त झालें आहे. त्याचा शेवट होण्याचा उपाय प्राणांतावांचन

दुसरा तर मला कांहींच दिसत नाही. तेव्हां. हे द्विजसत्तमा, आजच मी प्राणांत करून या दुःखापामून मोकळा होणार ! ”

जनमेजया. आपला पिता ब्रह्मज्ञवर व्यास मुनि यास इतकें म्हटल्यावर धृतराष्ट्राच्यानें पुढें बोलवेना. शोकाचा मोठा उमाळा येऊन तो मोहित झाला; आणि मनांत त्याचें चिंतन करीत अगदी स्तब्ध बसला. मग, त्याचें तें भाषण ऐकून, भगवान् कृष्णद्वैपानन मुनि हे पुत्रशोकाकुल झालेल्या त्या आपल्या पुत्रास उपदेश करूं लागले.

व्यास म्हणाले:—हे महाबाहो धृतराष्ट्रा, मी तुला जें मांगत आहे, तें लक्ष देऊन ऐक. तुला वेदरहस्य माहीत आहे; तसाच तूं बुद्धिमान् आहेस; धर्म व अर्थ माधण्याविषयी कुशल आहेस; आणि, हे परंतपा, जें जें मनुष्यास अवगत पाहिजे तें तें सर्व तुला अवगत आहे. त्याचप्रमाणें, सर्व मर्त्य प्राणी अनित्य आहेत, हेंही तूं निःमंशय जाणतोस. तमेंच, राजा, इहलोक व परलोक दोन्ही अशाश्रित आहेत हें तूं जाणत असून निष्कारण शोक कां करतोस ? राजेंद्रा, तुझ्या मुलाला निमित्तमात्र करून भवितव्यानें तुझ्या समक्ष हें वैर उत्पन्न केलें. राजा, कांहीं केलें तरी ज्या गोष्टी अवश्य व्हावयाच्याच अशा अमतात, त्यांपैकीच कौरव-पांडवांचें युद्ध एक असतांना, त्या उत्तम लोकी गेलेल्या श्राव्हल तूं कां शोक करतोस ? राजा, ज्ञानी विदुरानें हें सर्व भविष्य जाणून शम करण्यामाठी पुष्कळ प्रयत्न केला; परंतु देवानें ज्या गोष्टी ठरविल्या अमतात, त्या अन्यथा करण्यास मनुष्य—कितीही झटत असला तरी—समर्थ नाही असें माझें मत आहे. शिवाय, या युद्धासंबंधानें देवांचें जें कार्य मी प्रत्यक्ष ऐकिलें आहे, तें मी तुला मांगतो. नेणेंकरून तुझें अंतःकरण स्थिर होईल.

राजा. पूर्वीं मी एकदां महज इंद्रसभेंत गेलों अमतां तेथें सर्व देव जमलेले पाहिले. तेथें नारदप्रभुनि सर्व देवांपि आले होते; आणि त्या ठिकाणीं पृथ्वीही आलेली माझ्या दृष्टीस पडली. ती कांही कार्यास्तव तेथें देवांकडे आली होती. मग जरा जवळ जाऊन ती त्या एकत्र जमलेल्या देवांस म्हणाली, “ हे महा-भागहो, मागें ब्रह्मलोकी तुम्ही माझें जें कार्य करण्याविषयी कबूल केलें आहे, तें कार्य सत्वर करा. ”

तिचें तें भाषण श्रवण करून लोकश्रेष्ठ भगवान् विष्णु किंचित् हंमून त्या देवसभेंत पृथ्वीस म्हणाला, “ धृतराष्ट्राच्या शंभर पुत्रांपैकी वडील पुत्र—ज्याला दुर्योधन म्हणतात, तो तुझें कार्य करील. तो राजा झाला म्हणजे तुझें इच्छित पूर्ण होईल. त्याच्यामाठी राजे कुरुक्षेत्रांत एकत्र होतील; आणि ते झंजार वीर तीक्ष्ण शस्त्रांनी परस्परांचा नाश करतील. त्या वेळी, हे देवि, युद्धामध्ये तुझा भार उतरेल. हे शोभने, आतां तूं सत्वर स्वस्थानी जा आणि आपलें लोकधारणाचें कर्तव्य कर. ”

धृतराष्ट्रा, तुझा पुत्र दुर्योधन हा कलीच्या अंशापामून गांधारीच्या उदरी जन्मला असल्यामुळें तो अमहिष्णु. अस्थिरबुद्धि व रागीट असून, त्यास उपदेशानें वाटेवर आणणें शक्य नव्हतें. देवयोगानें त्याचे भाऊही त्यासारखेच आले. त्याचप्रमाणें त्याचा मामा शकुनि, परम-मग्ना कर्ण, आणि पृथ्वीवरील दुसरे राजे हे सर्वजण विनाशामाठी समगुणीच उत्पन्न झाले ! अमा नियमच आहे की, यथा राजा तथा प्रजा ! स्वामी धार्मिक अमेल तर सेवक अधर्मी असला तरी धार्मिक होतो. धन्याच्या गुणदोषांप्रमाणें चाक्रगाचे गुणदोष अमतात, हें निःमंशय होय. राजा, दुष्ट राजा मिळाल्यामुळें ते सर्वजण अस्तंगत आले. हे महाबाहो, मी देवसभेंतील

जी ही हकीकत सांगितली, ती तत्वज्ञानी नारदा-  
सही विदित आहे. हे पृथ्वीपते, केवळ स्वाप-  
गात्रामुळे तुझे पुत्र नष्ट झाले आहेत. यास्तव,  
राजेन्द्रा, त्याबद्दल शोक करू नको. शोक कर-  
ण्यास वास्तविक कांहीच कारण नाही. शिवाय,  
हे भारता, पांडवांनी तुझा कांही अपराध  
केलेला नाही; तुझे पुत्रच दुष्ट होते व त्यांनीच  
सर्व पृथ्वीचा घात केला राजा. तुझे कल्याण  
असो. पूर्वीच नारदाने राजसूय यज्ञाचे वेळी  
मयमभेत धर्मराजाच्या हें भविष्य सांगितलें होतें  
की, ' पांडव व कौरव एकमेकांशी युद्ध करून  
नाश पावणार आहेत. यास्तव कोतिया, तूं आपलें  
कर्तव्य कर. ' नारदाचें तें भाषण ऐकून त्या  
वेळी पांडवांस फार वाईट वाटलें. याप्रमाणें.  
राजा, देवांचें काय कार्य होतें व तें तुझ्या  
मुलांनीं कसें बजाविलें. हें सर्व मी तुला निवे-  
दन केलें आहे; आणि माझी अशी खात्री  
आहे की, याच्या श्रवणानें तुझा शोक नाहीसा  
होऊन, तुझे चित्त प्राणत्यागापासून पराङ्मुख  
होईल; आणि ह्या देवाधीन गोष्टी आहेत. हें  
जाणून पांडवांविषयी तुझ्या मनांत स्नेहबुद्धि  
उत्पन्न होईल. हे महाबाहो, असें होणार म्हणून  
मी पूर्वीच ऐकिलें होतें: आणि राजसूय यज्ञाचे  
वेळी मी धर्मराजाच्या हें सर्व सांगितलेंही होतें.  
मी हें गुह्य सांगितल्यावर, कौरवपांडवांची  
लढाई न व्हावी म्हणून धर्मराजानें होतें नव्हते  
तेवढे प्रयत्न केले; परंतु त्यांचा उपयोग झाला  
नाहीं; तस्मात् देव बलवत्तर होय राजा. ब्रह्म-  
लिखिताचा अतिक्रम करणें स्थावरजंगम सर्व  
भूतांस मुळीच शक्य नाही. हे भारता, तूं  
इतका धर्मनिष्ठ व ज्ञानी अमून व प्राण्यांची  
स्थितिमात्र सर्व जाणूनही जर अमा मोह  
पावतोस. तर तूं अमा शोकाकुल झाला आहेस  
व वारंवार बेशुद्ध पडत आहेस हें समजल्यावर  
मला वाटतें, युधिष्ठिर राजा प्राणत्याग सुद्धां

करील ! राजेंद्रा, तो वीर क्रमिकीटकांशीही  
सर्वदा मद्यतेनें वागतो. त्याला तुझी दया येणार  
नाहीं असें कसें होईल ? हे भारता, तूं माझ्या  
आज्ञेनें. देव अनतिक्रमणीय अमल्यामुळे, आणि  
पांडवांच्या कारण्यास्तव प्राणत्याग करू नको.  
वानारे, अशा रीतीनें तूं वागलास, म्हणजे या  
लोकी तुझी कीर्ति होईल. तुला फार मोठा धर्म  
व अर्थ प्राप्त होईल. आणि चिरकाल तपश्चर्या  
केल्यासारखें घडेल. प्रज्वलित अशीमारवा भयं-  
कर पुत्रशोक तुला प्राप्त झाला आहे खरा;  
तथापि. हे महाभागा, मी आतां तुला जो उप-  
देश केला त्या उपदेशरूप उदकांनं त्याला  
कायमचा विझवून टाक !

वैशंपायन सांगतात:—अमिततेजस्वी व्यासांचें  
हें भाषण श्रवण करून धृतराष्ट्रानें मुहूर्तमात्र  
मनाशी विचार केला. आणि नंतर तो म्हणाला.  
" द्विजवरा. महान् शोकजालानें मी अगदी  
जर्जर झालों आहे. वरचेवर मला मोह उत्पन्न  
होतो आणि स्वप्नरूपांचें भान रहात नाही !  
तथापि आपलें हे देवयोगपर भाषण श्रवण  
केल्यामुळे मी प्राणधारण करीन; आणि शोक  
न करण्याविषयी प्रयत्न करीन. " जनमेजया.  
धृतराष्ट्राचें हें भाषण श्रवण करतांच मत्स्यवती-  
पुत्र त्यास मुनि तेंच अंतर्धान पावले !

## अध्याय नववा.

### विदुराचें सांत्वनपर भाषण.

जनमेजय विचारतो:—विप्रपं, भगवान्  
व्यास अंतर्धान पावल्यावर धृतराष्ट्र राजानें  
काय केलें. तें मला आपण सांगावें. त्याचप्रमाणें,  
कुरुकुलाधिपति थोर युधिष्ठिर राजा आणि  
कृपाचार्यप्रभृति ते तिथेजण यांनी पुढें काय  
केलें. हंही कथन करावें. अवस्थाभ्याचें कृत्यई.  
आणि एकमेकांनी दिलेले शाप मी ऐकिलेन

आहेत; तर पुढें संजयानें जो वृत्तांत सांगितला तो मला निवेदन करा.

वैशंपायन सांगतात:—दुर्योधन पडल्यानंतर आणि सर्व सैन्याचा नाश झाल्यावर, संजयाची व्यासदत्त दिव्यज्ञानशक्ति नष्ट झाली. मग तो धृतराष्ट्राजवळ येऊन त्याम वडलेलें वर्तमान सांगूं लागला.

संजय सांगतो:—राजा, नानादेशचे राजे आपापल्या देशांतून येऊन तुझ्या मुलामहर्षीमान धारातीर्थी पतन पावले आणि पितृलोकी गेले. हे भारता, सर्वजण नको नको क्षणतः अमतां तुझ्या मुलांनै वैराचा शेवट करण्याचा हेतु धरून सर्व पृथ्वीचा वात केला ! अमो ! आल्या गोष्टीस उपाय नाही. आतां पुत्र, पौत्र व वडील यांची यथाक्रमानें उत्तर कायें करीव !

वैशंपायन सांगतात:—संजयाचें तें श्रावण श्रवण करून धृतराष्ट्र जमिनीवर गेल्यासारखा निश्चल पडला ! याप्रमाणें तो पडला अमतां सर्व धर्म जाणणारा ज्ञानी विदुर त्याजवळ जाऊन क्षणाला, ‘‘ राजा, उठ, निजतोस काय ! हे भरतर्षभा, शोक करूं नको; सर्व प्राण्यांची शेवटी हीच गत आहे. प्राणिमात्र ब्रह्मापामून उत्पन्न होता व शेवटी त्याच लय पावतो; मर्त्ये मात्र तो उगाच भ्राममान होतो; वास्तविक तेंही मिथ्याच आहे. मग शोक कां करावा बरें ? शोक करणारा शोक केल्यानें मृतामागून जाऊ शकत नाही किंवा शोक करून कोणी मरत नाही. अशा प्रकारची वस्तुस्थिति असतां तूं कशामाटी शोक करतोस बरें ? मनुष्य लढाईस न जातां घरी बिलान्यावर पडला असला तरी तेंही त्याला मृत्यु येतो, आणि घनघोर रणकंदनांतही एखादा जिवंत निभावतो. हे महाराजा, वेळ भरली म्हणजे ती कोणामच टाळतां येत नाही; काल सर्वास

नाही. हे कुरुमत्तमा, ज्याप्रमाणें वायु सर्वच तृणांचे शेडे हालवितो, त्याप्रमाणेंच सर्व भूतांस मृत्युपुष्टे मान वांकवावी लागते. हे भरतर्षभा, आपण सर्वजण एकाच घोळक्यांतले असून सर्वास त्याच एका ठिकाणी जावयाचें आहे; त्यांत ज्याची वेळ भरने तो आधी जातो इतकेंच, असें जर आहे. तर याबद्दल शोक तो

कमला करावयाचा ! राजा, युद्धांत मरण पावलेल्या ज्या वीरांबद्दल तूं शोक करीत आहेस, ते महान्मे तर स्वर्गास पांचले आहेत. अर्थात् त्यांबद्दल शोक करण्याचें कांहीच कारण नाही. मोठमोठे दक्षिणायुक्त यज्ञ, उत्तम तपश्चर्या किंवा विद्या यांच्या योगानेंही युद्धांत मरणांरांप्रमाणें उत्तम गति प्राप्त होत नाही ! ते सर्वजण वेदज्ञ, शूर व व्रतानुष्ठानें केलेले असे थोर योग्यतेच असून सर्व मनुष्य मरण पावले आहेत. मग त्यांबद्दल शोक करण्यास कोठे जागा राहिली ! शरांच्या शरीररूप अग्नीत त्यांनी शररूप आहुति दिल्या आणि शत्रूंनी हवन केलेले बाण त्या श्रेष्ठानी सहन केले ! राजा, याप्रमाणें युद्धांत मरणें हा स्वर्गास जाण्याचा उत्तम मार्ग मी तुला सांगितला. खरोखर इहलोक क्षत्रियस युद्धापरंतें श्रेष्ठ कांही नाही. ते क्षत्रिय महायोर, शूर व सभेत शोभायमान होणार असून त्यांनी उत्तम आशीर्वाद मिळविलेले आहेत. त्यांपैकी कोणाबद्दलही शोक करण्याचें कांही कारण नाही. तेव्हां, हे पुरुषर्षभा, आपलें आपणच मन आवरून धर व शोक करूं नको. आज शोकविह्वल होऊन प्राप्त कार्य मोडणें तुला उचित नव्हे.

अध्याय दहावा.

— ० —

धृतराष्ट्रनिर्गमन.

वैशंपायन सांगतात:—विदुराचें तें भाषण ऐकून धृतराष्ट्रानें ग्य जोडण्यास मागितलें आणि



तो पुनः क्षणाला, 'गांधारीला व सर्व भरतस्त्रियांस लवकर घेऊन ये. त्याचप्रमाणे कुंती व तिच्या येथे असलेल्या सर्व स्त्रिया यांसाठी लवकर आण.'

याप्रमाणे धर्मज्ञावर विदुराला सांगून तो शोकमूढ झालेला धर्मशील राजा मोठ्या कष्टाने रथावर बसला. मग, पुत्रशोकाने विह्वल झालेली गांधारीही केवळ पतीच्या आदेश मान दिला पाहिजे म्हणून, कुंती व इतर स्त्रिया यांमह, जेथे धृतराष्ट्र राजा होता तेथे त्वरित प्राप्त झाली. त्या अत्यंत शोकाकुल झालेल्या स्त्रिया धाय मोकलीत तेथे आल्या; आणि एकमेकींम हाका मारून व रडून त्यांनी एकच गोंधळ करून सोडला. त्यांची ती स्थिति पाहून विदुराला त्यांच्यापेक्षाही अधिक दुःख झाले; परंतु विचारा करतो काय! तसेच दुःख गिळून त्याने त्यांचे समाधान केले आणि कंठ दाटून आलेल्या त्या स्त्रियांस कशा तरी रथावर बसवून तो नगरा-बोहेर निघाला, मग काय विचारता 'कौरवांच्या सर्व मंदिरांत आणि सर्व नगरांत जो हाहाकार मुरू झाला. त्यास पारावाच उरला नाही! आबालवृद्ध सर्व लोक शोकाकुल होऊन हंबरडे फोडू लागले, "अहो! प्रत्यक्ष देवांम-ही ज्यांचे नव्व कधी दिमले नाही, त्याच स्त्रिया आज अनाथ झाल्यामुळे नीच लोकांच्याही नजरेम पडताहेत! हाय हाय! काय ही ह्यांची स्थिति! ह्यांचे कुळ केंम अस्ता-व्यस्त झाले आहेत, ह्यांनी भूषणे फेंकून दिली आहेत, आणि एक वस्त्र परिधान करून ह्या अनाथ दुबळ्यांप्रमाणे की हो चालल्या आहेत!"

राजा. यूथपति मरून गेल्यावर अनाथ झालेल्या हरिणी ज्याप्रमाणे पर्वताच्या गुहांतून बाहेर पडाव्या, त्याप्रमाणे त्या कौरवस्त्रिया स्फटिकाचे जणू शुभ्र पर्वतच अशा आपल्या मंदिरांतून बाहेर पडल्या. राजा जनमेजया, नृत्य शिकविण्याच्या पटांगणावर लहान लहान

अश्वशावकी धांवत जातात, त्याप्रमाणे त्या शोकार्त झालेल्या स्त्रियांचे अनेक समुदाय मोठ्याने आक्रोश करीत धावू लागले. आपले हात आंवरून कोणी पुत्रांच्या नांवाने, कोणी भावांच्या नांवाने आणि कोणी पित्यांच्या नांवाने आक्रोश करीत चालल्या होत्या; आणि त्यांची ती स्थिति पाहून जणू काय प्रलय-कालचा लोकसंहारच झाला आहे असा भास होत होता! त्या मोठमोठ्याने विलाप करीत व रडतओरडत पुढेपुढे धांवत होत्या; आणि शोकाने त्यांचे देहभान सुटल्यामुळे आपण कोण व आपणांस करावयाचे काय, ह्यांचे ज्ञान त्यांस राहिले नव्हते. ज्या स्त्रियांना पूर्वी सखीजनांचीही लाज वाटत असे, त्याच या वेळी एक वस्त्र धारण केले असतांही सामू-सामन्यांपुढे मुद्धा लाजत नव्हत्या! राजा, त्या स्त्रिया त्यांतल्या त्यांत एकमेकींच्या स्थिती-तील सूक्ष्म भेद काढून एकमेकींचे समाधान करीत होत्या; आणि शोकविह्वल होतसात्या दीनवदनाने एकमेकीकडे पहात होत्या.

असे; याप्रमाणे हजारों प्रकारांनी विलाप करणाऱ्या त्या स्त्रियांसहवर्तमान तो दीन धृतराष्ट्र राजा त्वरेने नगराबाहेर पडून रणांगणाकडे जाऊ लागला. त्या वेळी कारागीर, वाणी, शेतकरी व इतर सर्व वर्गांचे लोक राजापाठीमागून नगराबाहेर पडले. राजा, कौरवांच्या मृत्यूमुळे व्याकूल झालेल्या त्या स्त्रियांनी जो भयंकर टाहो चालविला होता, त्याच्या प्रचंड शब्दाने चतुर्दशभुवने व्यथित होऊं लागली! युगांतकाली प्राणिमात्र दग्ध होऊं लागतात तशाच प्रकारचा हा प्रलय प्राप्त झाला आहे असे सर्वांस वाटले. राजा, कौरवांचा क्षय झाला असतां त्यांवर अत्यंत अनुरक्त असलेल्या सर्व पौरजनांची अंतःकरणे अत्यंत व्यथित झाली आणि ते मोठमोठ्याने हंबरडे फोडू लागले. न

## अध्याय अकरावा.

—:०:—

## कृप-द्रौणि-भोज-दर्शन.

वैशंपायन सांगतात:-याप्रमाणें तो घोळका नगरापासून सुमारे एक कोस गेल्यावर त्यांस शारद्वत कृपाचार्य, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा आणि कृतवर्मा हे तिथे भेटले. प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्र राजास पहातांच त्यांचे कंठ दाटून आले, त्यांनीं दीर्घ निःश्वास सोडले, आणि शोक करीत असलेल्या त्या राजास ते म्हणाले, “हे महाराजा, आपल्या पुत्रांनै इतरांस अत्यंत दुष्कर असा अवदित पराक्रम केला आणि नंतर तो आपल्या अनुचारांसमवेत इंद्रलोकी गेला. दुर्योधनाच्या सर्व सैन्यापैकी आम्ही तिथेच काय ते वांचलों आहों! हे भरतर्षभा, आपलें बाकीचें सर्व सैन्य पतन पावले.

याप्रमाणें राजाला सांगितल्यावर शारद्वत कृपाचार्य हे पुत्रशोकार्ते गांधारीला उद्देशून बोलू लागले. ते ह्मणाले, “राज्ञि, तुझे पुत्र अगदीं निर्भयपणें लढले. त्यांनीं अनेक शत्रुसंघांस ठार मारिलें आणि पराक्रमाचीं कृत्यें करतां करतां शेवटीं ते निधन पावले. त्यांस शस्त्रप्रतापानें मिळणारे निर्मल लोक मिळून ते तेथें देदीप्यमान देह धारण करून देवांप्रमाणें विहार करतील, यांत बिलकूल संदेह नाही. त्या शूरांपैकी एकांनेही लढत अमतां पाठ दाखविली नाही किंवा एकही शत्रूस शरण गेला नाही! सर्वजण लढतां लढतां सन्मुख शस्त्रानें मरण पावले! अशा प्रकारच्या श्रेष्ठ क्षत्रियांना परम-गति प्राप्त होते असें प्राचीन ऋषिर्वर्य म्हणतात; आणि म्हणूनच रणांगणांत शस्त्रानें मरण आलें असतां त्याबद्दल शोक करणें योग्य नाही. शिवाय, हे राज्ञि, त्यांच्या शत्रूंची ह्मणजे मोठीशी वंशवृद्धि होणार आहे असें मुळाच नाही. अश्वत्थामप्रभृति आम्ही जें कृत्य केले

तें श्रवण कर. भीमसेनानें तुझ्या मुलाला अश्वर्मानें मारल्याचें ऐकून, पांडव रात्री शिविरांत निजले असतां आम्ही त्यांच्यावर घाला घातला. त्यांत धृष्टद्युम्नप्रभृति झाडून सारे पांचाल ठार केले; आणि दुपदाचे सर्व पुत्र व द्रौपदीचे पांचही मुलगे यमसदनी पाठविले. याप्रमाणें तुझ्या मुलाच्या शत्रूंचा नाश करून आम्ही तेभून पळालो. आम्ही केवळ तिथेच अमल्यामुळे आम्हांम रणांगणांत उभें रहावत नाही, कारण ते शूर व महाधनुर्धर पांडव रागांनै लाल होऊन सड उगविण्यासाठी लवकरच येथें येतील! आपले मुलगे मारले हें ऐकून त्या पुरुषश्रेष्ठांचें रागांनै देहभान सुटलें असेल, आणि आमचा माग काढीत ते शूर वेगांनै येत असतील! हे यशस्विनि, पांडवपुत्रांचें निर्दलन केल्यामुळे पांडवांपुढें रणांत उभें रहाण्याचें आम्हांस धैर्य होत नाही. याम्त्व आह्मांस जावयान अनुज्ञा दे; आणि, हे राज्ञि, तूं असा शोक करू नको. हे धृतराष्ट्र राजा, तुंही आह्मांस रजा दे. राजा, उत्तम धैर्य धारण कर आणि विचार करून पहा. ह्मणजे तुला कळून येईल की, मरण हाच एक क्षत्रियाचा स्वरा धर्म ( कर्तव्यकर्म ) होय!”

राजा जनमेजया, याप्रमाणें बोलून कृपाचार्य, कृतवर्मा व अश्वत्थामा यांनी धृतराष्ट्राम प्रदक्षिणा केली; आणि त्या मननशील राजाकडे पहात त्यांनी आपल्या घोड्यांस टाच मारली व त्वरेनै गंगेच्या अनुरोधानें घोडे पिटाळले. याप्रमाणें ते तिथे महारथी धृतराष्ट्रास सोडून दूर गेल्यावर परस्परांशी कांही मसलत करून उद्दिग्धचित्तानें तिथे तीन वाटांनी निघून गेले. शारद्वत कृपाचार्य हस्तिनापुरांत गेले, हार्दिक्य कृतवर्म्यांनै आपल्या राज्याची वाट धरली, आणि द्रोणपुत्र व्यासांच्या आश्रमास निघून गेला. महान्या पांडवांचा अपराध केल्यामुळे त्यांच्या मयांनै व्याकळ झालेले ते

वीर याप्रमाणें एकमेकांकडे पहात दूर निघून गेले. त्यांनीं धृतराष्ट्र राजाचीही गांठ सुयोदय होण्यापूर्वीच घेतली; आणि मग त्या महात्म्यांनीं इच्छेस येईल तिकडे गमन केलें. हे राजा, पुढें महापराक्रमी पांडवांनीं अध्व-  
त्थाभ्यास गांठले आणि मोठ्या पराक्रमानें त्याम जिंकलें, हें वृत्त तुला विदित आहेच !

### अध्याय बारावा.

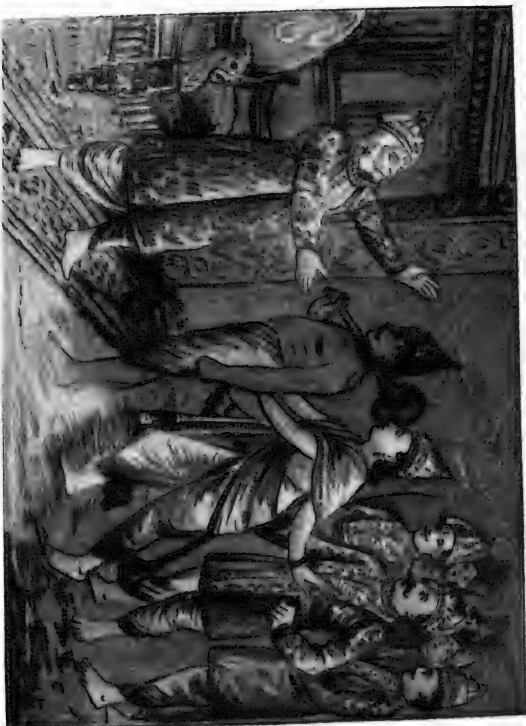
—०:—

#### लोहभीमभंग !

वैशंपायन मांगतात:—जनमेजया, सर्व मैत्र्यांचा नाश झाल्यानंतर आपला वृद्ध चुलता हस्तिनापुरांतून बाहेर पडल्याची खबर धर्म-  
गजाम कळली. तेव्हां पुत्रशोकानें आत झालेला तो युधिष्ठिर पुत्रशोकानें दुःख करीत असलेल्या धृतराष्ट्राकडे आपल्या भावांमहवर्त-  
मान झोला. धर्मराज निवाल्याबरोबर दाशार्ह श्रीकृष्ण, युयुधान आणि युयुत्सु हेही त्याच्या मागून निघाले. त्यांच्या मागून, पुत्र-  
शोकानें अत्यंत दुःखित व आत झालेली द्रौपदी तेथें जमलेल्या पांचालांच्या स्त्रियांसह शोक करीत चालली. हे भरतमत्तमा, या-  
प्रमाणें जातां जातां, गंगेच्या तीरी, अत्यंत आत झालेल्या कुररीप्रमाणें आक्रोश करणाऱ्या भरत-  
स्त्रियांचे समुदायचे समुदाय त्यांच्या दृष्टीस पडले. राजा धृतराष्ट्राच्या ममोवती त्यांचा गराडा पडला होता. त्या हजारों प्रकारें विलाप करीत होत्या आणि वर हात करून वेडेवांकडे बोलत रुदन करीत होत्या. “हाय हाय ! धर्मराजाची धर्मनीति कोठें गेली ? ती त्याची दयाशीलता आज कोणीकडे आहे ? अहो, आपले वडील, भाऊ, गुरुपुत्र व मित्र यांचा घात त्यानें कसा हो केला ! हे धर्मराजा, द्रोणाचार्य, पितामह भीष्म आणि

मेहुणा जयद्रथ यांना मारून तुझे मन शांत झालें ना ? अरे, आपले वडील व भाऊ कोठें दिसत नसतांना आणि त्याचप्रमाणें अभिमन्यु व सर्व द्रौपदीपुत्र अमंगत झाले असतांना तुला राज्य घेऊन काय करावयाचें आहे ? हे भारता, तुला कसा रे एवढा राज्य-  
लोभ सुटला ? ”

अशा एक ना दोन—हजारों प्रकारें आक्रोश करणाऱ्या त्या स्त्रियांतून कसा तरी पुढें जाऊन युधिष्ठिरानें धृतराष्ट्रास प्रणाम केला, आणि मग सर्व पांडवांनीं त्यास अभिवंदन करून आपापली नांवे मांगितलीं. युधिष्ठिरामुळे धृतराष्ट्राच्या सर्व पुत्रांचा अंत झाला असल्या-  
मुळे युधिष्ठिरास भेटण्यानें त्याच्या मनांत मोठें प्रेम उत्पन्न होण्याचा मुळीच संभव नव्हता. तथापि त्या शोकविव्हाल राजानें मोठ्या नानुषांगीनें परंतु शिष्टाचाराम अनुसरून धर्मास आलिंगन दिलें. त्यानें धर्मास आलि-  
गन देऊन त्याचें समाधान केलें. परंतु, जनमेजया, त्याच्या अंतःकरणानें एकदम पेट घेतला आणि भीमाम ठार मारण्याची दुष्ट वामना त्यास उत्पन्न झाली. हे भारता, शोकरूप वायूनें प्रज्वलित झालेला त्याचा तो कोप-  
रूप अग्नि भीममेनरूप वनाची रक्षा करूं पहात आहे असें भामलें ! पण याप्रमाणें भीमाचा घात करण्याविषयी त्याचा संकल्प झाला आहे हें त्याच्या चेहऱ्यावरून तत्काळ ताडून, भीम त्याला भेटावयास जात असतां श्रीकृष्णानें हातांनीं भीमास मार्गे ढकलून भीमाचा लोखंडी पुतळा पुढें केला ! तेव्हां हा वृकोदरच आहे असें समजून बलाढ्य धृतराष्ट्रानें त्याचा चुराडा केला ! धृतराष्ट्रास दहा हजार हत्तींचें बळ होतें, हणूनच त्यास लोखंडी भीमाचा चूर करतां आला ! तथापि या कृत्यानें त्याची छाती फाटून मुखांतून रक्त वाहूं लागलें; आणि



श्रीकृष्णाने हातांनी भीमास मागे दकलून भीमाचा लोखंडी पुतळा पुढे केला ! ( स्त्रीपर्व पृष्ठ १८० )



तो रक्तानें न्हाऊन भूमीवर पडला व फुललेल्या पारिजातकासारखा शोभू लागला. मग विद्वान् संजय त्याच्याजवळ जाऊन ' राजा, हे काय ? ' वगैरे बोलून त्याचें समाधान व सांत्वन करूं लागला, तेव्हां त्याचा क्रोध शमला; आणि मग त्या थोर मनाच्या राजास फार पश्चात्ताप होऊन तो ' हायरे भीमा ' असें झणून आक्रोश करूं लागला ! याप्रमाणें त्याचा क्रोध नाहीसा झाला आहे, आणि भीमसेनाचा वध झाला असें वाटून त्यास शोक झाला आहे, असें पाहून नरश्रेष्ठ वामदेव त्यास म्हणाला. " धृतराष्ट्रा, शोक करूं नको. तूं कांही हा भीम मारला नाहीस ! राजा, ही भीमाची लोखंडी प्रतिमा तूं भंग केलीस ! हे भरतर्षभा, तूं क्रोधवश झाला आहेस, असें जाणून मी काळाच्या दाढेंत गेलेला भीम मागें ओढला आणि ही लोहप्रतिमा पुढें केली. हे राजशार्दूल, तुझ्या बरोवरीचा बलादच दुसरा कोणीच नाही. हे महाबाहो, तुझ्या हातांची मगरमिठी कोणास बरें म्हण होईल ' यमाच्या हातून कोणीही जिवंत मुटत नाही, तद्वत् तुझ्या मगरमिठीत सांपडून कोणीही जिवंत रहावयाचा नाही ! यास्तव, हे राजा, तुझ्या मुलांनें भीमाची जी लोहमूर्ति केली होती तीच मी तुझ्या पुढें केली. पुत्रशोकांनें तुझें अंतःकरण संतप्त होऊन त्यांत धर्माधर्मविचार येईनासा झाला; आणि त्यामुळेच, हे राजेंद्रा, भीमाम ठार मारावें अशी इच्छा तुला झाली. परंतु, राजा, वृकोदराला ठार मारणें तुला योग्य नाही. कारण, तुझ्या मुलांची आयुर्मर्यादाच संपली असल्यामुळे ते आतां जिवंत रहाणें शक्य नव्हतें. त्यांस मारण्यास भीमसेन हा निमित्त-मात्र होय. तेव्हां आर्क्षी जें केलें त्या मर्मास तुम्ही संमति द्या आणि शोक आवरून धरा ! "

## अध्याय तेरावा.

—:—

### धृतराष्ट्रकोपविमोचन.

वैशंपायन सांगतात:— इतक्यांत परि-  
चारिका हस्तपादप्रक्षालनाची तयारी करून धृतराष्ट्राजवळ उभ्या राहिल्या. मग मुखमार्जन वगैरे झाल्यावर पुनः कृष्ण त्यास म्हणाला, " राजा, तूं वेद व विविध शास्त्रें यांचें अध्ययन केलें आहेस, पुराणें श्रवण केली आहेस, आणि संपूर्ण राजधर्मही ऐकिले आहेस. असा तूं विद्वान्. महाबुद्धिमान् व स्वपरबलाबल जाणण्यास समर्थ असून आपल्या अपराधाचा असा दुसऱ्यावर राग कां करतोस बरें ? त्याच-वेळीं मी. भीष्मद्रोणांनी, विदुरानें व संजयानें तुला परोपरीनें मागितलें; पण, राजा, तूं आमच्या भाषणाचा अन्याय केलास. आर्क्षी नको नको झणत असतां आणि पांडव बलानें व शौर्यानें आपल्या पुत्रांहून अधिक आहेत हें जाणत असतां-ही तूं आमच्या मागण्याप्रमाणें तेव्हां वागला नाहीस. राजा, जो स्थिरप्रज्ञ स्वतः दोष जाणतो, व देशकालवर्तमान जाणून वागतो. त्यास उत्तम श्रेय प्राप्त होतें. श्रेय कशांत आहे. आणि हित कोणतें व अहित कोणतें. हें दुसरे सांगत असतांही जो ऐकत नाही, व अन्याया नें वागतो. तो विपत्तीत पडून शोकान्न करितो. तेव्हां, हे भारता, या दोहोंपैकी तूं दुसऱ्याच प्रकारांनें वागलास, हें विचारांनीं तुझें तुलाच समजेल. राजा, तुझ्या अंगी स्वतःचें कर्तृत्व कसें तें मुळीच नाही. दुर्योधन नाचवील तसा तूं नाचलास; आणि आपल्याच अपराधांमुळे खाड्यांत पडलास. मग भीमाम मारण्याची व्यर्थ कां बरें इच्छा करतोस ' वात्रारे, आपला कोप आवरून धर आणि आपलेंच पूर्वीचें दुष्कृत आठव. अरे, ज्या नीचांनें स्पर्धेनें पांचाली-स सभेंत आणविलें, त्यालाच वैरास प्रतिवैर

करणाच्या भीमानें ठार मारलें ! या कामांत आपल्या दृष्ट पुत्रानेंच मूळ किती अमर्यादा केलेली आहे याचा तूं विचार कर; आणि त्याचप्रमाणें निरपराध पांडवांचा त्याग करण्यांत तुझी किती चूक झाली याचाही विचार कर. ”

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, या-प्रमाणें कृष्णानें खरें खरें सांगितलें, तेव्हां धृतराष्ट्र राजा त्या देवकीपुत्रास झणाला, “हे महाबाहो माधवा, तूं झणतोस तें अक्षरशः खरें आहे. बलवान् पुत्रस्त्रहानें मला नीतिधैर्यापासून भ्रष्ट केलें. परंतु, कृष्णा, खरा पराक्रमी, मोठा बलवान् व केवळ तुझ्या योग्यतेचा असा तो पुरुषश्रेष्ठ भीमसेन माझ्या बाहुपाशांतून सुटला ही मोठ्या सुदैवाची गोष्ट झाली, नाहीपेक्षां मोठा वात झाला अमता ! हल्लीं माझे चित्त स्थिर झालें आहे. माझा राग आणि दुःखही शांत झालें आहे. माधवा, आतां मध्यम पांडव जो वीर अर्जुन त्यास पहावें अशी माझी इच्छा आहे. सर्व राजे व महाराजे नष्ट झाले आणि माझे पुत्रही नाश पावले; आतां पांडुपुत्रांचें कल्याण व्हावें, अशी माझी इच्छा असून त्याविषयी प्रेमही माझ्या अंतःकरणांत वसत आहे ! ”

राजा, मग धृतराष्ट्रानें भीम, अर्जुन व माझीपुत्र नकुलसहदेव यांस रडत रडत द्वालिंगन देऊन आश्वासन दिलें; आणि त्यांस कल्याणकारक आशीर्वादही दिले !

### अध्याय चौदावा.

—०:—

#### व्यासकृत गांधारीसांत्वन.

वैशंपायन सांगतात:—धृतराष्ट्राची आज्ञा घेऊन कृष्णासहवर्तमान सर्व पांडव गांधारीकडे गेले. तेव्हां ज्यानें आपल्या सर्व शत्रूस

ठार मारिलें आहे असा तो युधिष्ठिर राजा येत आहे असें समजतांच पुत्रशोकानें विह्वल झालेल्या पतिव्रता गांधारीनें त्यास शाप देण्याचा विचार केला. परंतु पांडवांस शापण्याचा तिचा इरादा सत्यवतीपुत्र व्यास मुनींनीं आधींच जाणला; आणि लगेच गंगेच्या पुण्यांघि पवित्र उदकास स्पर्श करून ते मनोवेगानें गांधारीसमीप प्राप्त झाले. सर्व प्राण्यांच्या अंतःकरणांतील अभिप्राय दिव्यदृष्टीनें जाणणाऱ्या त्या मुनींनीं गांधारीचा भाव जाणला; आणि त्या हितवादी महातापसानें “ ही शाप देण्याची वेळ नव्हे, शांत होण्याची वेळ आहे. ” असें म्हणून आपल्या सुनेस योग्य वेळीं उपदेश केला. व्यास म्हणाले, “ गांधारि, शांत हो, शांत हो. पांडवांवर कोप करूं नको. तूं बोलावयाचें योजलें आहेस तें आवरून धर आणि माझे भाषण ऐक. अगे, आपणास जय मिळावा म्हणून तुझ्या पुत्रानें ‘ माते, मी शत्रूंशी लढत असतां मला जय-सूचक आशीर्वाद दे ’ म्हणून तुला अठराही दिवस सांगून ठेविलें होतें; आणि त्याप्रमाणें तूंही त्याचा जय व्हावा ह्या इच्छेनें वारंवार ‘ जिकडे धर्म असेल तिकडे जय असो ! ’ ‘ धर्म असेल तिकडे जय असो ! ’ असें झणत असस. गांधारि, तुझ्या तोंडून स्वसंतोषानें निघालेलीं वाक्यें कधीही अन्यथा झालेलीं मला स्मरत नाहीत; मग या वेळींच तीं अन्यथा कशीं होतील ? आतां ज्यापेक्षां मोठमोठ्या राजांशी तुमुल रणकंदन झालें असतां पांडव त्यांतून पूर्णपणें पार पडून विजयी झाले, त्यापेक्षां त्यांची बाजू अधिक न्यायाची आहे हें निर्विवाद होय. गांधारि, आजवर तूं क्षमारूप व्रत पाळलेस, मग आतांच कशी क्षमा करीत नाहीस ? तूं मोठी धर्मज्ञ आहेस, यास्तव तुझ्या अंतःकरणांत आलेला अधर्मयुक्त विचार दाबून टाक; आणि ‘ जिकडे धर्म तिकडे जय ’

ही खूणगांठ घाल. हे मनस्विनि, तूं स्वतःचें कर्तव्य आणि पूर्वीचें भाषण स्मरून आपला कोप आवरून धर; आणि, हे सत्यवादिनि. अशी शापास प्रवृत्त होऊं नको ! ”

गांधारीनें उत्तर केलें:-भगवान्, मी पांडवांचा मत्सर करीत नाही, किंवा त्यांचा नाश व्हावा अशीही माझी इच्छा नाही. तथापि पुत्रशोकानें माझे मन फारच विह्वल झालें होतें ! कुंतीप्रमाणेंच मीही पांडवांचें रक्षण करावें; आणि त्यांचें रक्षण करणें धृतराष्ट्राचें कर्तव्य आहे तितकेंच तें माझेही कर्तव्य आहे. दुर्योधन, सौबल शकुनि, कर्ण व दुःशासन यांच्याच अपराधामुळे हा कुरूकुलाचा संहार झाला ! यांत अर्जुनाचा अपराध नाही, भीमसेनाचा नाही, नकुलसहदेवांचा कांहीं दोष नाही, किंवा राजा युधिष्ठिराचीही कांहींएक चूक नाही. शिवाय, कौरव-माझे पुत्र-मोठ्या अभिमानानें लढत असतां सर्व इष्टमित्रांसह पतन पावले, याबद्दल ही मला कांहीं वाईट वाटत नाही. परंतु, महाराज, कृष्णासमक्ष भीमानें जें निघ कृत्य केलें, त्यानें माझ्या अंतःकरणास कसे घेर पडत आहेत ! त्या महायोर ह्यणविणारानें दुर्योधनाला गदायुद्धास बोलाविलें; आणि तो रणांत नानाप्रकारें संचार करीत आहे व विद्येनें आपणाहून अधिक आहे असें पाहून वेंवीच्या खालीं प्रहार केला, या कृत्यानें मला अनिश्चय संताप आला ! अहो, हे शूरक्षत्रिय ह्यण-वितात; आणि यांनी रणांत यःकश्चित् प्राण वांचविण्यासाठी, धर्मज्ञ महात्म्यांनी घालून दिलेल्या धर्माची अशी पायमल्ली करावी काय ?

## अध्याय पंधरावा.

—:०:—

### गांधारीकोपशमन.

वैशंपायन सांगतात:-गांधारीचें तें भाषण

ऐकून भीमसेनानें निर्भयपणें परंतु नम्रतेनें तिला असें प्रत्युत्तर दिलें, “ माते, त्याटिकाणीं भीती-मुळे आपलें संरक्षण करण्यासाठी मीं धर्म किंवा अधर्म जो काय केला असेल, त्याची तूं मला क्षमा कर. तुझ्या पुत्राचें बल अपार होतें; त्याला धर्मयुद्धानें जिकण्यास कोणीच समर्थ नव्हता; यास्तव मीं विषमाचरण केलें. शिवाय पूर्वी बृतांत त्यानें धर्मराजास अधर्मानेंच जिंकिलें व आम्हांस सदैव छळिलें; यास्तव मींही अधर्माचा अवलंब केला. सर्व सैन्यापैकीं एकटाच उरलेला जो हा प्रतापी वीर, त्यानें गदायुद्धांत मला मारून राज्य हरण करूं नये यास्तव मीं तसें केलें. माते, राजपुत्री पांचाली रजस्वला व एकवस्त्रा असतांना तिला तो तुझा मुलगा काय काय दुरुत्तरें बोलला, तीं सर्वे तुला विदितच आहेत. दुर्योधनास जिंकिल्यावांचून ही समुद्रवल्याकित पृथ्वी आझांस निष्कंटक भोगावयास सांपडणें शक्य नव्हतें, यास्तव मी तसा वागलों. माते गांधारी, तुझ्या पुत्रांनें आमच्या काळजाला झोंबणारी थोडीथोडकीं कृत्ये केली आहेत काय ? त्यानें भरसभेंत द्रौपदीला आपली डावी मांडी दाखविली, त्याच वेळी त्या दुराच्यान्यास ठार करावयाचें; परंतु धर्मराजाच्या आज्ञेमुळे आम्ही तेव्हां गंय केली आणि स्वस्थ बसलों. हे राज्ञि, तुझ्या मुलांनें असें हें हाडवैर पेटविलें, आणि वनांतही आझांस नित्य क्रेश दिले, यास्तव मीं असें केलें ! दुर्योधनास ठार मारून आम्ही एकदांचे ह्या भांडणनेट्यांतून सुटलों; युधिष्ठिरास राज्य प्राप्त झालें, आणि आमच्या अंतःकरणांतली जळजळही शांत झाली ! ”

गांधारी ह्यणाली:-तुं माझ्या मुलाची सामर्थ्याबद्दल प्रशंसा करीत आहेस, त्यापेक्षां त्याचा वध झाल्याच नाही असें मी समजतें ! शिवाय तूं मला सांगितलीं इतकीं सर्व कृत्ये



त्याने केली खरी. तेव्हां तुझे हे कृत्य एकवेळ बरोबर मानले, तरी रणांत वृषसेनाने नकुलचे घोडे मारून त्यास पेंचांत आणले असताही त्याच्या साह्यास जावयाचें सोडून तूं भररणांगणांत दुःशासनाचें रक्त प्यालाम ! अरेरे, भीमा, सज्जनांनीं निंद्य मानलेलें, अत्यंत घोर व अनार्यासच शोभणारें असें हें कूर कर्म तूं केलेंस, तें तर अगदींच अयोग्य होय !

भीमसेन म्हणालाः—छी छी ! माते, दुसऱ्याचेंही रक्त पिऊं नये, मग आपलें आपण कसें प्यावें ? जमा हा माझा देह तमाच माझा भाऊ दुःशासन ! ह्यांत दुजाभाव कांहीएक नाही. मग मी त्याचें रक्त कसें बरें पिईन ! माते, शोक करूं नको. रक्त ओठाच्या वर बिलकूल गेलें नाही, हें एक त्या युग्धर्माला ठाऊक आहे. माझे हात मात्र रक्तानें भरले होते. ते तरी काय ? वृषसेनाने नकुलचे घोडे मारिल्यामुळे कोरवांना अतिशय हर्ष झालेला पाहून माझ्या अंगाची आग आग झाली होती; आणि घृताच्या वेळीं द्रौपदीच्या केंसांना त्यानें हिंसडे दिले. त्या वेळीं संतापानें माझ्या तोंडून जें निघालें होतें, तें माझ्या अंतःकरणांत एकसारखें धोळत होतें. तेव्हां ती प्रतिज्ञा जर पूर्ण केली नसती, तर माझ्या क्षात्रधर्मास जो कायमचा बड्डा लागला असता, तो लागूं नये एवढ्याकरितांच मीं तमें केलें ! गांधारि, मी अगदींच कांही गैर वागलों असेन, अशी शंकाही तूं मनांत आणूं नये. पूर्वीं तुझे पुत्र आह्मांस छळीत असतां त्यांस न आवरूनसवरून आतां आम्हांला कां बरें दोष लावूं पाहातेस ?

गांधारी ह्मणालीः—तें अमो. पण, बाबा, या म्हाताऱ्याचे शंभरचे शंभर पुत्र मारून तूं जो विजयी झालास, तो, ज्यानें कमी अपराध केला असेल, असा एखादा तरी कां नाही वगळलास ? आह्मां राज्यभ्रष्ट झालेल्या वृद्धांचा

एक तरी तंतु—उभयतां आंधळ्यांची एक तरी काठी—तुं कशी रे नाहीं शिळक ठेविलीं ? अरे, एखादा मुलगा तरी जिवंत असता, आणि तूं धर्माला जागला असतास, तर मला अमें दुःख झालें नसतें !

वैशंपायन मांगतातः—अमें ह्मणून, पुत्र-पौत्रांच्या वधानें पीडित झालेली गांधारी रागा-रागानें 'तो धर्म कोठें आहे' अशी युधिष्ठिराची चौकशी करूं लागली. तेव्हां सार्वभौम युधिष्ठिर राजा हात जोडून कांपत कांपत तिच्या जवळ गेला; आणि अमें मधुर भाषण करता झाला, "हे देवि, मी युधिष्ठिर तुझ्या मुलांना मारणारा नीच राक्षस आहे. मी शापाम पात्र आहे. पृथ्वीच्या नाशाला मी कारण झालों; मला शापून टाक ! इष्टमित्रांचा असा भयंकर संहार करून मी मूढानें मित्र-दोहाचें पातक पदरी बांधलें. आतां मला राज्य नको, धन नको व जीवितही नकोमें झालें आहे ! " जनमेजया, युधिष्ठिर राजा भिऊन गेला होता, परंतु तो जवळ जाऊन असें बोलूं लागला तेव्हां गांधारी कांहींच बोलली नाही. ती एकमाग्वी मोठमोठे सुसकारे टाकीत होती. युधिष्ठिरानें खालीं वांकून तिच्या पायांवर हात ठेविले, तेव्हां डोळ्यांस बांधलेल्या पट्ट्याच्या फटीतून त्याच्या हातांची बोटें गांधाराच्या दृष्टीम पडली. त्याबरोबर ती तेजस्वी व सुंदर नखें निमतेज व हीन होऊन गेली ! तिच्या दृष्टीचा तो प्रभाव पाहतांच अर्जुन कृष्णाच्या आड लपला; न जाणों कदाचित् आपणावर दृष्टि पडून असाच प्रकार व्हावयाचा अमें त्याला वाटलें ! नंतर, हे भारता, ह्याप्रमाणें पांडव इकडून तिकडे जात व लपत असतां काही वेळानें गांधारीचा राग शांत होऊन मग तिनें त्यांचे मातेप्रमाणें समाधान केलें.

### पृथापुत्रदर्शन.

नंतर तिची आज्ञा घेऊन ते विशालवक्ष पांडव वीरमाता कुंतीकडे गेले. राजा. फार दिवसांनी ही मातापुत्रांची गांठ पडली ! त्या वेळीं मुलांस झालेल्या पीडेमुळे तिचें हृदय भरून आलें आणि तोंडास पदर लावून ती अश्रु दाळूं लागली. मग डोळे पुमून तिनें मुलांकडे न्याहाळून पाहिलें. तों शस्त्रास्त्रांनी त्यांच्या अंगांची अगदीं चालण होऊन गेलेली पाहून त्या माउलीचें अंतःकरण कालवून गेलें ! व तिनें एककास जवळ घेऊन पुनःपुनः कुरवाळलें. द्रौपदीचे मुलगे भेल्यामुळें तिजविषयी कुंतीला फारच वाईट वाटून तिच्या डोळ्यांना खळकन् पाणी आलें आणि पलीकडे जमीनीवर पडून आक्रोश करणाऱ्या द्रौपदीकडे तिची दृष्टि गेली. त्याबरोबर द्रौपदी बालें लागली, ‘‘ अहो सामुवाड ! अभिमन्यु व माझे मगले बाल कोठें हो गेले ? तुम्हांला मोडून गेल्याला पुष्कळ वेळ झाला तरी ते आज अजून तुम्हाजवळ कसे येत नाहीत ? माझ्या तान्ह्यांवांचून मला हें राज्य काय करावयाचें आहे ! ’’ मग कुंतीनें आपले डोळे पुमले आणि द्रौपदीचें मांतवून केलें. द्रौपदीला पुत्रशोकानें रड्याचे हुंदक्यांवर हुंदके येतच होते, तरी तमेंच तिला उठविलें, आणि तिला व आपल्या मुलांना

घेऊन ती गांधारीकडे गेली. गांधारीला शोक झालाच होता; पण कुंती तिजपेक्षांही अधिक शोकाकुल झाली होती !

वैशंपायन सांगतातः—‘‘राजा, त्या वेळीं आनंदांत असें कोणीच नव्हतें. सर्वास बहुतेक सारखाच शोक झाला होता; आणि अशा शोकाकुल माणसांनीच आपलें दुःख क्षणभर बाजूला ठेवून दुसऱ्यांचें सांतवून करण्याचा प्रसंग आला होता. कुंती व द्रौपदी फारच शोक करीत आहेत, असें पाहून गांधारी त्यांस म्हणाली, ‘‘ मुली, उगी; असें काय बरें करतेस ? माझ्याकडे पहा. मला वाईट नाही का वाटत ? पण करायचें काय ! काळाचा फेरा आला आणि असा हा अंगावर कांटा उठविणाऱा संहार उडाला ! व्हायचेंच तें कोटून चुकणार ! कृष्णाची शिष्टाई व्यर्थ झाली, तेव्हां महाज्ञानी विदुराने मांगितले तें कमें अक्षरन् अक्षर दत्त म्हणून पुढें उभें राहिलें. काय करायचें ? अपरिहार्य गोष्ट आणि तीही होऊन चुकली ! कुंति, अशी रडूं नको. तुझे नातू तरी युद्धांतच मेले. त्यांच्याबद्दल शोक नको करायला ! अग, जशी तूं तशीच मी ! आपणच दोघी रडूं लागलों तर आपलें कोण बरें समाधान करील ? माझ्याच अपराधांमुळें आपल्या श्रेष्ठ कुलाचा सर्वस्वी नाश झाला ! ’’



## स्त्रीविलापपर्व.

—\*—\*—

### अध्याय सोळावा.

—:०:—

#### गांधारीस रणभूदर्शन.

वैशांपायन सांगतात:—राजा, इतकें बोलल्यावर गांधारीनें तेथूनच दिव्यदृष्टीनें कौरवांची समरभूमि अवलोकन केली. गांधारी मोठी पतिव्रता, थोर व खरी सहधर्मचारिणी असून नित्य सत्यच भाषण करीत असे; शिवाय तिनें उग्र तपश्चर्या केली होती; आणि पुण्यवान् कृष्णद्वैपायन मुनीच्या वरदानानें तिला जागच्या जागी विविध गोष्टी दिसें लागल्या. अशा प्रकारचें ज्ञान झाल्यामुळे, तें अंगावर रोमांच उठविणारें वीरांचें अद्भुत रणांगण वास्तविक पुष्कळ दूर असतांही अगदी जवळच असल्याप्रमाणें तिला स्पष्ट दिसें लागलें. जनमेजया, जें अस्थि, केश व वसा यांनी व्यापून गेलें आहे; जेथें रक्ताचे पाट चालले आहेत; छिन्नविच्छिन्न झालेली शरीरें जिकडे निकडे पसरलीं आहेत; हत्ती, घोडे व वीर यांची रक्तानें भरलेली मस्तकहीन कवंधें आणि तुटलेली मस्तकें यांचे जागजागी ढीग पडले आहेत; बायाळ झालेले हत्ती, घोडे, योद्धे आणि तेथें जमलेल्या स्त्रिया यांच्या दीन किंकाळ्यांनी जें दणाणून गेलें आहे; कोल्हे, बगळे, कर्कशांचे, डोमकावळे व कावळे ह्यांची जेथें गर्दी झाली आहे; मनुष्यभक्षक राक्षसांना मोठा हर्ष झाला आहे; आणि अमंगल कोल्हीं व गिधाडें जेथें चहूंकडे बसली आहेत, अशा प्रकारचें तें भयंकर रणमैदान तिनें अवलोकन केलें. मग व्यासांच्या आज्ञेनें धर्मप्रभृति पांडवांसहवर्तमान धृतराष्ट्र राजा कृष्णास पुढें करून व कुरुस्त्रियांस वरो-

वर घेऊन रणांगणांत गेला. तेथें जातांच त्या गतभर्तृका स्त्रियांनीं आपले पति, पुत्र, भ्राते व पिते मरून पडलेले पाहिले. त्या ठिकाणीं कोल्हे, बगळे, कावळे हे कित्येकांचे लचके तोडीत होते; आणि भूतें, पिशाचें, राक्षस व नानाप्रकारचे निशाचर प्राणी यांनीही तोच सपाटा चालविला होता ! याप्रमाणें ती रुद्राच्या क्रीडास्थानासारखी युद्धभूमि—तो अदृष्टपूर्व देखावा पहातांच त्या भरतस्त्रियांस शोकाचें भरतें आलें; आणि मोठ्यानें हंबरडे फोडीत त्यांनीं रथावालीं उड्या घेतल्या ! त्यांपैकी कित्येक प्रेतांस अडखळल्या आणि दुसऱ्या कित्येक तर ग्वाली पडल्या ! राजा, अनाथ झाल्यामुळे आधीच त्यांची कंवर खचली होती, आणि त्यांत श्रांत झाल्यामुळे त्यांची चेतनाही नष्टप्राय झाली. विशेषकरून पांचाल व कौरव यांच्या स्त्रियांची फारच भयंकर अवस्था झाली. राजा, ज्यांची चित्ते दुःस्वानें पोळली आहेत, अशा त्या स्त्रियांचे चो-होंकडे आक्रोश चालल्यामुळे अति भीषण झालेलें तें आयोध्या पाहून धर्मवती गांधारी पुरुषोत्तम श्रीकृष्णाम जवळ बोलावून व कौरवांच्या त्या मंहाराकडे दृष्टि फिरवून असें ह्मणाली, “हे पुंडरीकाक्ष, ह्या माझ्या गतधवा मुनांकडे पहा. माधवा, यांचे केंस अस्ताव्यस्त झाले आहेत आणि कुरुरीप्रमाणें ह्या आक्रोश करीत आहेत. भर्त्यांचीं प्रेतें पाहून यांस त्यांचे गुण व भाषणें आठवत आहेत; आणि पुत्र, भ्राते, पिने व पति ह्यांकडे या कशा पृथक्पृथक् धाव घेत आहेत पहा ! कृष्णा, ज्यांचे पुत्र मेले आहेत अशा वीरमातांनी आणि ज्यांचे वीर पति निधन पावले आहेत अशा वीरपत्नींनीं सांप्रत हें रणांगण कसें फुलून निघालें आहे ! कर्मगति कशी विचित्र आहे पहा—कर्ण, भीष्म, द्रोण, अभिमन्यु, दुपद, शल्य अशा अशा प्रवींस अशीप्रमाणें झळकणाऱ्या

नरशार्दूलांची प्रेते येथें इतस्ततः पडली आहेत ! त्या महात्म्यांची सुवर्णकवचे, निष्क, मणि. अंगदे, केयूर, माळा वगैरे अलंकारांनी ही रणभूमि अलंकृत झाली आहे ! वीरांच्या हातांतून मुठलेल्या शक्ति, परित्र, नानाप्रकारचे तीक्ष्ण खड्ग व सज्ज धनुष्यबाण चोहोंकडे पसरले आहेत ! हे पहा हिंस्र पशूंचे कळप हर्षानें कसे नाचताहेत, कोठें एकत्र जमून उभे आहेत, व कोठें सुवानें लोळत आहेत ! वीरा कृष्णा, अशा प्रकारच्या या रणांगणाकडे एकदां दृष्टि फेंक. हें पाहून, हे जनार्दना, मी शोकांत कशी जळून जात आहे ! मधु-सूदना, पांचाल व कौरव यांचा निःपात झाला त्यापेक्षा पांचही महाभूतांचा अर्थात् सर्व जगाचाच वध झाला असें मी समजतें ! शिव शिव ! अशा या धनुष्यांना आज गरुड व गिधाडें फरफरां ओडीत आहेत ! आणि एके-कावर हजारहजारांच्या टोळ्या पडून ते पायांनी विचकटून मांस भक्षीत आहेत ! हाय हाय ! जयद्रथ, कर्ण, तमेच भीष्म, द्रोण व अभिमन्यु यांचा असा नाश होईल, हें कोणाच्या स्वप्नांत तरी येत होतें काय ! खरोखर जवळ जवळ अवश्यच भासणारे हे वीर आज निघून पावले आहेत आणि गतप्राण होतसाते निपचीत पडले आहेत ! आणि गृध्र, कंक, वट, श्येन, श्वान, झुगाल यांनी त्यांचे लचके तोडले आहेत ! दुर्योधनाच्या अज्ञित राहिलेले व क्रोधाग्रपेटलेले हे नरव्याघ्र सांप्रत विजालिल्या अग्नीप्रमाणें कसे शांत झाले आहेत पहा ! अहो, जे सर्व पूर्वी मऊमऊ विजान्यावर निजावयाचे, तेच आज विपन्न होऊन मोकळ्या जमीनीवर की हो पडले आहेत ! ज्यापुढें नित्य वेळो-वेळी बंदिजन ललकारत असावयाचे. त्याच्या सभोवती आज अमंगल शिवांनी कोल्हेकुई चालविली आहे ! जे यजस्वी वीर पूर्वी

मंचकांवर पडत व ज्यांच्या अंगाला कृष्णा-गरुची उठी लागलेली असे, तेच आज धुळीत लोळत आहेत. त्यांचे अलंकार, हे गृध्र, गोमायु व वायस फोडीत आहेत आणि कोल्ही त्यांचे सभोवती वरचेवर कुई करिताहेत. तीक्ष्ण बाण, पाणी दिलेले निखिंश, आणि लखलखीत गदा या युद्धाभिमानांनी वीरांच्या हातांत अजून जशाच्या तशाच उगारलेल्या आहेत; यामुळे वाटें की, जणू हे जिवंतच आहेत ! बहुतेकांचे मुदुर देह हिंस्र पशूंनी विरूप केले आहेत, पांचेच्या माळा वातलेले हे वीर दोंरांसारखे पडले आहेत; आणि दुसरे कित्येक महाबाहु प्रिय कांताप्रमाणें गदांस आलिंगन देऊन त्यांकडे तोंडे करून आडवे पडले आहेत ! हे जनार्दना, कित्येकांच्या अंगात कवचें व हातांत लखल-खीत शस्त्रे तशीच आहेत, यामुळे ते जिवंतच आहेत असें समजून श्वापदें त्यांच्या वाटेस जाण्यास धनत नाहीत ! कित्येक महात्म्यांना श्वापदें फरफरा ओडीत आहेत, त्यांच्या कंठ्या तुटून त्यातील मणि चोहोंकडे पडले आहेत ! हे मयंकर गोमायु मेलेल्या यशस्वी वीरांच्या गरुद्यातील हारांचे चावून चावून तुकडे करीत आहेत पहा ! केशवा, परवां रात्री शिक्षित बंदी ज्यांची स्तुति गात होते, आणि ज्यांस उत्तम उपचार करीत होते, त्यांच्याचजवळ सांप्रत दुःखातें झालेल्या त्यांच्या पट्टराण्या शोकविह्वल होऊन दीन हंबरडा फोडीत आहेत ! केशवा, या श्रेष्ठ स्त्रियांची मुदुर मुखें नित्य रक्तकमलांप्रमाणें प्रफुल्ल असत, तीच आज अगदीं सुकलेली दिसत आहेत. ह्या पहा कित्येक स्त्रिया रडावयाच्या थांबल्या आणि डोळ्यांस पदुर लावून व्यान करीत बसल्या ! त्या पहा कौरवांच्या स्त्रिया दुःख करीत आपआपल्या पतीजवळ जात आहेत ! ह्या कुरुस्त्रियांची मुखें अरुणवर्णाची, सुवर्णा-

सारस्वी, रागानें लाल आणि रुडण्यानें गोरी-  
मोरीं आली आहेत ! केशवा, एक वस्त्र परिधान  
केलेल्या, व श्याम, गौर वगैरे श्रेष्ठ वर्णाच्या  
दुर्योधनाच्या राण्यांचे हे समुदाय बघ ! यांचे  
हे तुटक तुटक विलाप कानांवर पडत आहेत,  
परंतु इतरांच्या कोलाहलांत यांचे शब्द कोणाम  
उमजत नाहीत ! ह्यांच्याकडे पाहून कित्येक  
धुगधुगी असलेले वीर दीर्घ जांभई देऊन,  
डोळ्यांत पाणी आणून व विलाप करून दुःखा-  
तेनें प्राण मोडीत आहेत ! पतीच्या कले-  
वरांकडे पाहून पुष्कळजणी आक्रोश व  
विलाप करीत आहेत ! दुमच्या मृदू हस्ताच्या  
खिया हातांनीं मस्तक पिटीत आहेत ! तुटून  
पडलेलीं मस्तकें, हात, पाय व शरीरें एक-  
मेकांवर पडून त्यांचे ढिगांनीं पृथ्वी व्याप्त आली  
आहे ! कीर्तिमान् वीरांची नुसती शिररहित  
धडे व दूर पडलेली नुसती मस्तके पाहून,  
ह्यांतील आपल्या पतीचें कोणतें, ह्याविषयी  
खियांना संशय पडत आहे. शिरएका धडाला  
जोडावे आणि कांहीं वेळ शून्य अंतःकरणानें  
त्याकडे टक लावावी, पण लगेच हें आपल्या  
पतीचें नव्हे असें दिसतांच, दुःखित होऊन  
दुसरे धड धुंडाळावे असें चालले आहे ! कित्येक  
दुःखाबद्दल खिया शरांनीं छिन्नभिन्न झालेले  
हात व पाय धडास जोडून पहात आहेत व  
वरचेवर मूर्च्छित होताहेत ! पशुपक्ष्यांनी कित्येक  
मस्तकांचे लवके तोडून खाळे असल्यामुळे  
कित्येक भरतखियांस पती समोर दिसत अस-  
तांही ओळखू येत नाहीत ! हे मधुसूदना,  
आते, पुत्र, पिते व पति शत्रूंनी मारलेले पाहून  
कित्येक कपाळावर हात मारून येत आहेत !  
सखडग बाहु, संकुंडल शिरकमले आणि गनप्राण  
झालेले प्राणी चोर्हांकडे विखुरले आहेत ! आणि  
रक्तमांसांचा सडा झाला आहे. यामुळे या  
रणभूमीवरून फिण्हेही जवळ जवळ अशस्त्र

झाले आहे ! कृष्णा, या खियांना आजवर  
दुःखाचा जरा देखील अनुभव नाही, आणि  
आज त्याच पतिव्रता दुःखसागरांत नटंगव्या  
की रे स्वात आहेत ! कारण, ह्यांचे माऊ, पति  
व पुत्र यांच्या प्रेतांनी भूमि कशी व्याप्त होऊन  
गेली आहे ! जनार्दना, किशोरींच्या युधां-  
प्रमाणें धृतराष्ट्राच्या मुकेशी मुनांचे हे अनेक  
समुदाय कमे दुःखित झाले आहेत पहा !  
केशवा. या अशी वेडींवाकडी तोंडें करीत  
आहेत, हें पाहाण्यापेक्षां मला अधिक दुःख-  
दायक असें काय आहे ! खरोखर, माधवा,  
पूर्वजन्मी मी घोर पातक केले क्षणूनच पुत्रपौत्र  
व भ्राते मरून पडलेले आज पहात आहे !”

जनमेजया, आर्त झालेल्या गांधारीनें असें  
विलाप करीत कृष्णाशी पुष्कळ भाषण केले, तां  
त्या पुत्रशोकार्ते झालेल्या मातेनें आपल्या मृत  
पुत्रास पाहिले !

## अध्याय सतरावा.

—o—

### गांधारीचा दुर्योधनाविषयी विलाप !

वैशंपायन सांगतात:—ती शोकाकृष्ट गांधारी  
दुर्योधनाचें प्रेत पाहातांच वनांत मोडलेल्या  
केळीप्रमाणें धाडकून जमीनीवर पडली. मग  
थोड्या वेळानें ती शुद्धीवर आली; व रक्त-  
बवाळ होऊन पडलेल्या दुर्योधनाकडे पहात  
तिनें मोठ्यानें आक्रोश व विलाप केला; आणि  
मग त्याला पोटाशी कवठाळून त्या विकलेंद्रिय  
व शोकार्ते गांधारीनें ‘ हा पुत्रा ! ’ वगैरे विलाप  
करीत फारच आकांत केला. मग, हारांनीं व  
निष्कमालांनीं सुशोभित असलेले त्याचें पुष्ट व  
विशाल वक्षःस्थल डोळ्यांतील आसवांनीं भिज-  
वीत ती शोकतप्त गांधारी जवळच असलेल्या  
कृष्णाम क्षणाली. ‘ हे प्रभो वाष्पेया. हा ज्ञाति-  
क्षयकारक संग्राम उपस्थित झाला तेव्हां दुर्यो-

धन राजा हात जोडून मला म्हणाला, ' माने, या भयंकर संग्रामांत माझा जय असा झणून मला आशीर्वाद दे. ' वा पुरुषव्याघ्रा. असे तो म्हणाला, तेव्हां हें पुढील आमचें दुर्दैव माहीत असल्यामुळे मी त्याला म्हटलें—जिकडे धर्म तिकडे जय होईल. परंतु, पुत्रा, लढत असतां तूं जर मोह पावला नाहीस, तर, हे राजा, स्वशस्त्रप्रभावानें देवांच्यासारखे श्रेष्ठ लोक तुला मिळतील, यांत संशय नाही,

“ कृष्णा, पूर्वी मी असे म्हटलें होतें. अर्थात्च दुर्योधन मेला याबद्दल मी शोक करीत नाही. परंतु ह्या हतबांधव व दीन धृतराष्ट्राबद्दल मला फार वाईट वाटतें. माधवा, अमर्षण, वीरश्रेष्ठ, अस्त्रसंपन्न व युद्धांत प्रसक्त होणारा असा माझा हा पुत्र वीरशयनावर पडला आहे बघ. अरे, जो हा परंतप पूर्वी मूर्खाभिपिक्त राजांच्या अग्रभागी चालत असे, तोच आज धुळीत कीं रे लोळत आहे! कालाचा फेरा कसा आहे पहा! हा वीरोचित शय्येवर असा सन्मुख पडला आहे. त्यापेक्षा या वीराला हलकीसलकी गति मिळाली नाही न्वास! पूर्वी उत्तम उत्तम स्त्रिया सभोवतीं जमून ज्याला रिझवीत, त्या ह्या वीरशय्येवर निजलेल्या वीरास आज अमंगळ कोलव्या रिझवीत आहेत! मोठमोठे राजे सभोवतीं बसून ज्याचें मनोरंजन करीत, त्याच ह्या मरून भूतलावर पडलेल्या वीराची गिधाडें सेवा करीत आहेत! अहो, ज्याला पूर्वी स्त्रिया सुंदर पंख्यांनीं बारा घालीत, त्यालाच आज पक्षी आपल्या पंखांचा बारा घालताहेत! नसा मिहानें हत्ती तसा भीमानें रणांत पाडिलेला हा महाबाहु, महाबली व सत्यपराक्रमी वीर असा पडला आहे! कृष्णा, भीमसेनानें गदेंने मारलेला हा दुर्योधन कसा रक्तबंबाळ होऊन पडला आहे बघ! केशवा, ज्यानें पूर्वी अकरा असौहिणी

रणागणावर उभ्या केल्या, तो शेवटीं अन्यायानें मारला गेला रे! मिहानें मारलेल्या शांख-प्रमाणें भीमानें पाडलेला हा महाबली व महा-धनुर्धर दुर्योधन असा निजला आहे! शिव शिव! ह्या मंदभाग्यानें विदुराचा व प्रत्यक्ष आपल्या पित्याचाही अवमान केला; आणि शेवटीं वृद्धांच्या अपमानामुळे हा मूर्ख पोर मृत्युमुखी पडला! ज्यानें त्रयोदश वर्षपर्यंत ही संपूर्ण पृथ्वी निष्कण्टक उपभोगिली, तोच माझा हा पृथ्वीपति पुत्र भूमीवर मरून पडलाना! कृष्णा, ही पृथ्वी थोडे वेळापूर्वी धार्तराष्ट्राची आज्ञाकिन व हत्ती, बैल व घोडे यांनीं समृद्ध अशी मी पहात होतें; परंतु, वार्ष्णेया, तेंचिर-काल कोटून टिकणार! त्याच पृथ्वीवर, हे महाबाहो, आज दुसऱ्याची सत्ता झालेली, आणि हत्ती, बैल व घोडे यांनी ती शून्य झालेली मी पहात आहे! माधवा, आतां मी कोणत्या आशेवर प्राण धारण करावे! अरे, ह्या पहा स्त्रिया रणांत मृत भर्त्यांची परिचर्या करीत आहेत. वा कृष्णा, ह्यांना पाहिलें म्हणजे मला पुत्रवधापेक्षाही अधिक कष्ट होतात! कृष्णा, मुवर्णवेदीप्रमाणें जिची कानि, अशी ही लक्ष्मणाची माता मुश्रोणी भानुमती पहा! दुर्योधनाचे अंकावर बसणाऱ्या ह्या भानुमतीचे केस बघ कसे विखुरले आहेत! खरोखर पूर्वी राजा जिवंत असतांना ही मनीस्विनी बाला त्या मुमुजाचे बाहुपाशांत शिरून रममाण होत असे; आणि आज—हाय हाय! काय विपरीत प्रकार मी पहातें आहे! बाल लक्ष्मणासह पुत्र दुर्योधन रणांत पडलेला पहात असतांही माझे हें हृदय शतधा विदीर्ण कसे होत नाही! ही वामोरु भानुमती एकीकडे रक्तानें भरलेल्या मुलानें अवघ्राण करीत आहे, आणि दुमरीकडे हातानें दुर्योधनास कुरवाळीत आहे! शिव शिव! ही मनीस्विनी पतीबद्दल व पुत्राबद्दल मोठमोठ्यानें

शोक करीत आहे काय ? छे ! पुत्राकडे टक लावून ती तशी निश्चल बसलेली दिसत आहे. अरे ती पहा, माधवा, दोन्ही हात कपाळावर मारून वेऊन वीर कुरुराजाच्या वक्षःस्थलावर पडली ! पुंडरीकासारखी हिची गौर कांति, परंतु ही त्याहूनही म्हणजे पुंडरीकाच्या आंतील भागाप्रमाणे पांढरी फटफटीत पडली ! व ही तपस्विनी पुत्राच्या व पतीच्या तोंडांवरून हात फिरवून स्तब्ध झाली ! शिव शिव ! जर वेद व श्रुति स्वऱ्या असतील, तर स्वचित राजा दुर्योधनानें बाहुबलाजित पुण्यलोक मिळविले आहेत ! "

### अध्याय अठरावा.

—:—:—

#### गांधारीचा दुःशासनादिकांविषयी विलाप !

गांधारी आणखी म्हणते:—माधवा, ज्यांना थकवा कसा तो माहीत नव्हता, असे हे माझे शंभर पुत्र पहा. ह्यांना भीमानें बहतकरून गढेंनेच रणांत ठार केले आहे. यांचेही मला इतके दुःख होत नाही; पण ज्यांचे मुल्योही मरून गेले आहेत अशा ह्या माझ्या मुना केंम मोकळे सोडून आक्रोश करीत रणांगणात धावत आहेत ह्यामुळे मला विशेष दुःख होतें ! अरे, पायांत नूपुरादिक भूषणें घालून ज्या राज-वाड्यांतील गुलगुळीत जमिनीवरून मंदमंद पावले टाकीत चालवयाच्या, त्याच आज विप-त्तावस्थेत पडून ह्या रक्तानें भिजलेल्या जमिनी-वरून कीं रे चालताहेत, सभोंवार विरट्या घाल-णारे गृध्र, गोमायु व वायस मोठ्या कष्टानें हाकलीत आहेत, आणि दुःखांत होऊन रुदन करीत बेहोप झाल्याप्रमाणें इकडून तिकडे संचार करीत आहेत ! ही पहा एक कामलांगी—हिची कमर हातभर बारीक आहे, ही वीर रणांगण पाहून दुःखातिशयानें खाली पडली ! हे महा-बाही, ह्या लक्ष्मणाच्या मातेकडे पाहिलें म्हणजे

माझ्या अंतःकरणांत कशी कालवाकालव होते. अरे, ह्या पहा इकडे कित्येक आपल्या भावांना, पित्यांना व पुत्रांना भूमीवर मृत पडलेले पाहून त्यांचे मडक लांब हात धरून धरणीवर अंग टाकीत आहेत. वा, अपराजिता, ह्या दारुण संहारांत ज्यांचे आप्त-इष्ट ठार झाले, अशा तरुण व वृद्ध स्त्रियांचे सर्वत्र आक्रोश चालले आहेत ऐक ! कित्येक श्रमित व मोहित झालेल्या स्त्रिया रथनीडांच्या किंवा मेलेल्या हत्तीघोड्यांच्या आश्रयानें कशा उभ्या आहेत बघ ! कुष्णा, ती पहा पलीकडे एकनण आपल्या बंधूनें—देहापासून उडविलेलें व ज्याचें नाक तरतरीत असून कानांत मनोहर कुंडलें लटकत आहेत असें—मस्तक पोटाशी धरून उभी आहे ! हे अनघा केशवा, त्या अभागी स्त्रिया आणि मंदबुद्धि मी यांनी पूर्वजन्मी केलेले पातक कांहीं थोडेथोडे नाही, असें मला वाटतें; आणि त्याच पातकांचें हें फळ यमधर्म आम्हां-कडून भोगवीत आहे ! खरोखर, वाणेंया, पापकर्म किंवा पुण्यकर्म—कशाचाच नाश होत नाही; तें भोगिलेंच पाहिजे. माधवा, ऐन-तारुण्याचे भरांत आलेल्या लावण्याच्या केवळ खाणी, कुलवती, मयीदशील, ज्यांचे केश, डोळ्यांच्या पापण्या व चुबुळें काळींभोर आहेत आणि हंसासारखा ज्यांचा शब्द आहे, अशा ह्या स्त्रिया दुःखशोकांनं प्रमोहित होऊन हरिणीप्रमाणें पडल्या आहेत पहा ! हे पुंडरी-काक्षा, यांचीं प्रफुल्ल पद्मांप्रमाणें तेजस्वी व निर्दोष सुवक्त्रमले हा रश्मिभान् सूर्य उन्हांनें तप्त करीत आहे. हाय हाय ! वामदेवा, अरे, मत्तमातंगा-प्रमाणें स्वाभिमान व ईर्ष्या बाळगणाऱ्या माझ्या मुलांच्या जननग्वान्याकडे आज हलकेसलके लोकही पहात आहेतना ? गोविंदा, ही पहा माझ्या मुलांची सुवर्णकवचें, शेंकडें टिकल्या लाविलेल्या ह्या ढाली, हे सूर्यासारखे तेजस्वी

ध्वज, ते सुवर्णाचे निष्क, आणि तशीच ही शिर-  
स्त्राणें सर्व रणांगणभर ममिद्ध अशीप्रमाणें कशी  
प्रदीप्त दिसताहेत ! हा येथें माझा वाळ दुःशा-  
सन पडला आहे. शत्रूघातक शूर भीमानें  
ह्याला युद्धांत पाडलें आणि ह्याच्या सर्वांगां-  
तील रक्त शोषण केलें. हे माधवा, ह्यांत  
दिलेले क्लेश स्मरून व द्रौपदीच्या प्रोत्साहना-  
मुळें भीमानें गदेनें माझ्या मुलाची कशी वाट  
लाविली बघ ! जनादिना, आपल्या ज्येष्ठ  
आत्याचें व कर्णाचें प्रिय करावें ह्मणून हा  
नकुल, सहदेव, अर्जुन वगैरेच्या समक्ष समेत  
पांचाळीस ह्मणाला, “ तूं ह्यांत जिंकिली  
गेली आहेस. पांचालि, तूं आमची दासी झाली  
आहेस. आतां आमच्या घरांत चल ! ”

कृष्णा, त्याच वेळीं मीं दुर्गेधन राजाला  
सांगितलें, ‘ वाळा, ह्या शकुनीच्या गळ्यांत  
मृत्यूचा पाश पडला आहे, असें दिसतें.  
ह्याच्यापासून तूं दूर रहा. हा तुझा मामा  
अत्यंत दुष्टबुद्धीचा व कळहप्रिय आहे. वाळा,  
ह्याचें हें स्वरूप ओळखून ह्याला त्वरित दूर  
कर आणि पांडवांशी सख्य कर. अरे, तुला  
ही दुर्बुद्धि आठवली आहे आणि हत्तीला अंकु-  
शांनीं टोचवें, त्याप्रमाणें तूं वाकशरांनीं भीमास  
टोचत आहेस ! परंतु, वाळा, ह्या अमर्षी  
वीराला तूं पुरतें ओळखलें नाहीस रे ! ’

माधवा, ह्याप्रमाणें मी त्याला एकीकडे  
पुष्कळ बोललें, पण कांहीं उपयोग झाला  
नाहीं. सभेंत क्रुद्ध भीमसेनानें त्या वेळीं ती  
सर्व वाकशल्यें सहन केली; आणि आतां बैलांस  
सर्प डसावा त्याप्रमाणें त्यानें माझ्या सर्व मुलां-  
वर तो राग काढला. सिंहानें मोठा हत्ती  
मारावा त्याप्रमाणें भीमानें पाडलेला हा दुःशा-  
सन आपले प्रचंड हात पसरून निजला आहे !  
हाय हाय ! कृष्णा, तामसी भीमसेनानें रागा-

रागानें रणांत दुःशासनानें रक्त प्राशन केलें !  
अरेरे ! हें त्यानें अत्यंत अवोर कृत्य केलें !

## अध्याय एकोणिसावा.

—०—

### गांधारीचा विकर्णादिकांविषयीं विलाप.

गांधारी ह्मणाली:—मधुमूदना, हा माझा  
विद्वन्मान्य पुत्र विकर्ण भूमीवर मरून पडला  
आहे. अरेरे ! भीमानें ह्याच्या शेंकडों ठिकच्या  
उडविल्या आहेत. मधुमूदना, शरदत्त अनेक  
नीलमेवांच्या मध्ये सूर्य चमकावा, तसा हा  
हत्तीच्या मध्यभागी पडला आहे ! धनुष्य  
धरून धरून घट्ट झालेला ह्याचा प्रचंड हात ही  
खादाड गिधाडें मोठ्या प्रयासानें छेदीत आहेत.  
माधवा, ती बघ त्याची पतिव्रता स्त्री मांसेच्छु  
गिधाडांना व कावळ्यांना एकसारखी हांकीत  
आहे, पण तिच्यानें त्यांचें निवारण करवत  
नाहीं ! हे पुरुषर्षभा, हा तरुण, सुंदर व  
शूर विकर्ण सुखांत वाढला असून सुख भोग-  
ण्यासच योग्य आहे. परंतु, माधवा, तो आज  
धुळीत की रे निजला आहे ! कर्णि, नालीक,  
नाराच वगैरे बाणांनीं रणांत ह्याची मर्मैन्मर्में  
भेदली आहेत, तथापि ह्या भरतसत्तमाचें तेज  
अद्याप उतरत नाही ! तसाच इकडे हा प्रतिज्ञा  
पाळणाऱ्या त्या संग्रामशूरानें मारलेला शत्रु  
गणांतक दुर्मुख सन्मुख पडला आहे ! कृष्णा,  
अरे, ह्याचें हें मस्तक तर श्वापदांनीं अर्धे  
भक्षण केलें, तरी मज्जतीच्या चंद्राप्रमाणें तें  
अधिकच शोभत आहे ! वा कृष्णा, ह्या नर-  
वीराचें अशा प्रकारचें हें मुखकमल अवलोकन  
कर. याला शत्रूंनीं कमें हो मारलें ! कृष्णा, हा  
माझा मुलगा धूळ म्हात रे कसा पडला ! अरे,  
युद्धाच्या आग्नी आग्नी ज्याच्या समोर उभा  
गहाणाग कोणीच नव्हता, तो माझा देवलोक  
जिंकणारा दुर्मुख शत्रूच्या हातून कसा रे



मेल ! मधुसूदना, धरणीवर मरून पडलेला हा चित्रसेन पहा ! अरे, हा धृतराष्ट्रपुत्र ह्मणजे धनुर्धरांचा सर्वोत्कृष्ट नमुना होय. याच्या शोककर्षित स्त्रिया श्वापदसंघासह चित्र-विचित्र पुष्पे व अलंकार घातलेल्या या वीरा-सभोवती बसून रडत ओरडत आहेत. कृष्णा, स्त्रियांच्या रड्याचा कळोळ व श्वापदांच्या गर्जना यांनी रणांगण दणाणून गेलें आहे आणि हें ऐकून मला कसेंसेंच होत आहे ! ज्या तरुण सुंदराची नित्य उच्च प्रतीच्या स्त्रिया सेवा करीत, तोच हा विविशति धुळीत अस्ताव्यस्त पडला आहे. कृष्णा, ज्याचें कवच बाणांनी फुटून गेलें आहे, अशा या युद्धांत पडलेल्या वीर विविशतीसभोवती गिधाडें कशीं गराडा देऊन बसलीं आहेत बघ ! हा शूर समरांगणांत पांडवांच्या सेन्यांत प्रवेश करून सत्पुरुषोचित वीरशय्येवर शयन केला आहे. कृष्णा, विविशतीच्या मुक्काकडे दृष्टि दे. त्याचें नाक किती तरतरीत, भिवया कशा रेवलेल्या, तारकाधिपति चंद्रासारखा गोल व अतिशय स्वच्छ चेहरा, आणि मुखावर तें बघ कसें स्मित झळकत आहे ! बहुतकरून नेहमी वरस्त्रिया याच्या सभोवतीं असावयाच्या, आणि हजारों देवकन्यांसह कीडा करणाऱ्या गंधर्वा-सारखा हा शोभावयाचा; पण त्याची आज काय स्थिति झाली आहे ! शत्रूची सेन्यें तुडविणारा, अतिशय शूर, सभेंत शोभणारा आणि शत्रूंचीं पाळेंमुळें खणणारा हा माझा दुःसह-याच्या समोर कोण उभा राहू शकेल ? पण हाय हाय ! त्याच बाळ दुःसहाचें शरीर बाणांनी कसें व्यापून गेलें आहे; आणि हा प्रफुल्ल कर्णिकार वृक्षांनीं भरलेल्या पर्वताप्रमाणें दिसत आहे ! हा गतप्राण झाला आहे तथापि सुवर्णाची माळ व चकचकीत कवच यांमुळें

अग्नीनें देदीप्यमान दिसणाऱ्या श्वेतपर्वता-सारखा झळकत आहे !

## अध्याय विसावा.

—:०:—

### गांधारीचा अभिमन्यूविषयी विलाप !

गांधारी ह्मणाली:—केशवा, जो शौर्यांत व बलांत आपल्या बापाच्या व तुझ्याही दीडपट होता ह्मणून ह्मणतात, व ज्यानें एकद्वयानें माझ्या पृथांची ही दुर्भेद्यसेना भेदिली, तो मत्त सिंहाप्रमाणें अभिमानी अभिमन्यु. अनेक शत्रूंचा काळ होऊन शेवटी स्वतःही कालमुखीं पडला ! कृष्णा, हा अभिमन्यु निधन पावला आहे, तथापि त्या अमिततेजस्वी वीराची कांति लवभरही उतरलेली मला दिसत नाही. ही पहा विराटाची मुलगी व गांडीवधारी अर्जुनाची सून पतिव्रता उत्तरा आर्तदृष्टीनें आपल्या अगदीं तरुण परंतु शूर पतीकडे पाहून शोक करीत आहे ! कृष्णा, ती बघ आपल्या भर्त्या-जवळ जाऊन बसली आणि हातांनें त्याला कुरवाळूं लागली ! अरेरे, ह्या कमनीय रूपवती भामिनीनें सौभद्राचें तें प्रफुल्ल कमलाच्या आकाराचें व शंखाच्या पाठीप्रमाणें सुंदर मस्तकानें युक्त असें मुखकमल उचलून त्याचें चुंबन घेऊन त्यास आलिंगन दिलें बघ ! कृष्णा, ही उत्तरा पूर्वा मधुसेवनानें धुंद झाली असतांही अभिमन्यूस लाजत असे, परंतु आज दुःखानें कांही बाकी ठेविली आहे काय ? तें पहा, कृष्णा, तिनें त्याचें जखमांतील रक्तानें लेडबडलेलें सुवर्णविभूषित चिखत सोडलें; आणि आतां ती त्याचें शरीर निरखून पहात आहे. कृष्णा, ऐक, आपल्या पतीकडे पहात तुला उद्देशून ती काय ह्मणत आहे तें ! ती ह्मणते -- हे पुंडरी-काक्षा श्रीकृष्णा, तुझ्याचसारखे ज्याचे नेत्र आहेत असा हा अभिमन्यु येथें पडला आहे !

नुसते डोळेचसे काय, पण ह्याचें सर्व रूप अगदी हुबेहूब तुझ्यासारखें आहे; इतकेंच नव्हे, तर बल, पराक्रम व तेजही अगदी त्वत्तुल्य आहे. केशवा, असा हा तुझ्या बरोबरीचा तुझा भाचा भूमीवर मरून पडला आहे! प्राणनाथा, आपलें शरीर अत्यंत सुकुमार, मऊमऊ, गादीही आपल्याला खुपावयाची, म्हणून आपण रंकु नामक हरणाचें अति मऊ अग्निन तीवर पसरून मग निजत असां; आणि आज असे उघड्या जमीनीवर हो कां पडला? ही जमीन आपल्याला खुपत नाही का हो? महाराज, धनुष्याची दोरी लागून लागून कठीण झालेले व सुवर्णाची अंगदे वातलेले हे आपले हत्तीच्या सोडेच्या आकाराचे लांब सडक हात खाली सोडून आपण निजलां आहां. खरोखर फार वेळ लढाई खेळल्यामुळें श्रमानेच आपणाला अशी गाढ झोप लागली वाटते! पण, नाथा, मी आर्तस्वरानें अशी विलाप करीत असतां आपण माझ्याशीं मुळीच बोलत नाही. माझ्यावर रागावलां काय? कां हो बोलत नाहीं? अमा अबोला धरण्याला मी कांही अपला अपराध केल्याचें तर मला स्मरत नाही. खरोखर पूर्वी मला दुरून पाहतांच आपण माझ्याशी बोलू लागत असां आणि आतांच कां हो एक अक्षर देखील बोलत नाही? प्राणनाथ, माझा एवढा काय अपराध तो मला कांहीं आठवत नाही! आर्य, देवी सुभद्रेला, देवांसारख्या ह्या आपल्या पित्यांना आणि मज अभागिणीला दुःखसागरांत दकलून आपण कोठें हो चाललां? ”

कृष्णा, ती बघ, त्याचे रक्तानें माखलेले कंस हातानें सावरून त्याचें मस्तक मांडीवर घेऊन जणू तो जिवंतच आहे असे समजून त्यास विचारीत आहे—“ महाराज, आपण वामुदेवाचे भाचे आणि गांडीवधारी अर्जु-

नाचे पुत्र असून, ह्या महारथांनीं रणाच्या मध्यभागी आपल्याला कसे हो मारलें? ज्यांनी मला वैधव्य आणलें, त्या कर्णकृप-जयद्रथप्रभृति क्रूरकर्म्यांना आणि द्रोण व अश्वत्थामा या उभयतांसाठी धिःकार असो! अल्पवयस्क अशा तुझाला एकट्याला मारून मला दुःख देण्यासाठी ठार करते वेळीं त्या सर्व महारथांचें अंतःकरण होतें तरी कसे? त्यांच्या पाषाणहृदयाला कांहीच दया कशी आली नाही! तसेंच हें अग्रेर कर्म पाहणाऱ्या पांडव-पांचालांच्या मनाला कांहीच वाटलें नाही काय? वीरा, तुमचे चुलते, बाप, मामा हे बलाढ्य असतां व आपण चांगले सनाथ असतां, ज्याला कोणी वाली नाही अशा अनाथा-सारखा आपल्याला मृत्यु यावा ना! हाय हाय! आपला पिता मोठा नरशार्दूल वीर आहे. आपण धुमश्चक्रीत अनेकांच्या हातून मरण पावल्याचें पाहून तो नरश्रेष्ठ प्राण कसे धारण करील हो? हे पुष्करेक्षणा, मोठा राज्यलाभ, किंवा शत्रूंचा पराभव यांच्या योगानें आपणां-वांचून पांडवांना मुळीच आनंद होणार नाही. महाराज, आपण आपल्या धर्माचरणानें, आत्मसंयमनाच्या योगानें आणि शस्त्रप्रतापानें जे लोक मिळविले असतील, तेथें मी लवकरच आपल्या मागून येईन. त्या ठिकाणीं आपण माझे परिपालन करावें. हाय हाय! नाथा, आपणास रणांत मरून पडलेले प्रत्यक्ष आपल्या डोळ्यांनी पाहून मी दुर्दैवी अजून जिवंत आहेना? वेळ आल्यावांचून कोणी मरत नाही झणताच तेंच खरें! हे नरव्याघ्रा, त्या पितृलोकांत आपण आपल्या खुबीदार व सस्मित वाणीनें मजव्यतिरिक्त दुसऱ्या कोणाशी गुजगोष्टी कराल बरें! अथवा आपणाला काय कमी आहे! खरोखर आपण आपल्या मदनतुल्य स्वरूपानें आणि स्मित-

पूर्वक भाषणांनें स्वर्गांत अप्सरांचीं मनें मोहित कराळ. सौभद्रा, पुण्यवंतांचे लोकीं जाऊन आपण अप्सरांशीं रममाण होऊन विहार करीत असतां, या दीन दासीच्या अल्प सेवेची आपणाम आठवण तरी होईल का' हाय हाय ! येथें आपला व माझा एवढाच समागम होता. सहा महिनेच काय ते पूर्ण झाले; आणि, वीरा, सातव्याच महिन्यांत आपण निघन पावलां कीं हो ! ”

कृष्णा, असें ती बोलली, इतक्यांत पहा मत्स्यराजाच्या स्त्रियांनीं तिला मागें ओढिलें ! जिचे सर्व मनोरथ निष्फल झाले आहेत अशा ह्या दुःस्वार्त झालेल्या उत्तरेला मागें सारतात न सारतात तोंच त्या बव स्वतः विराटाचें प्रेत पाहानांच तिच्यापेक्षांही अधिक व्याकूल होऊन आक्रोश व विलाप करीत आहेत ! द्रोणाच्या अस्त्रमंत्रित शरांनीं छिन्नविच्छिन्न व रक्त-बंबाळ होऊन पडलेल्या ह्या विराटराजाला ही गिधाडें, कोरही व कावळे टोंचीत आहेत. या असितेशणा स्त्रियांचें काळीज तिळतिळ तुटत आहे व त्या आपली पराकाष्ठा करीत आहेत. परंतु—अरेरे ! त्यांच्याच्यानं पश्यांपासून विराटाचें निवारण करवत नाही ! या स्त्रियांची दुःखानें निस्तेज झालेलीं तोंडें उन्हांनें तप्त व श्रमामुळें विवर्ण झाली असून त्यांची कळा अगदींच लोपून गेली आहे. माधवा, हा उत्तर, हा अभिमन्यु; पलीकडे तो कांचोजाधिपति मुदक्षिण, आणि तसाच तो सौंदर्यशाली लक्ष्मण हे लहान लहान बालक मरून पडले आहेत बव ! माझवा, एवढ्या लहान वयांत असतांही यांनीं रणभूमीच्या अगदी शिरोभागी शयन केलें आहे पहा !

## अध्याय एकविसावा.

—०:—

### गांधारीचा कर्णाविषयी विलाप !

गांधारी ह्मणाली:—हा येथें महाधनुर्धर व महारथी वैकर्तन कर्ण शांत झालेल्या अग्नी-प्रमाणें रणांत निजला आहे ! हा प्रदीप्त अग्नि पार्श्वपराक्रमरूप उदकानें अगदी विझून गेला आहे ! कृष्णा, अनेक अतिरथांस ठार करून जमीनीवर शयन केलेल्या या कर्णाकडे पहा. रक्तप्रवाहांनीं ह्याचें सर्व अंग भरून गेलें आहे. अरे, हा अतिशय तापट, दीर्घद्वेषी, बाका धनुर्धर व महाबलाढ्य वीर गांडीवधारी अर्जुनाच्या हातून रणांत मरून असा निजला आहे ! हत्ती आपल्या गृध्रपतीला पुढें करून शत्रूंशीं झुंजतात, तद्वत् माझ्या महारथी पुत्रांनीं पांडवांच्या भीतीनें ज्याला पुढें करून लढाई केली, तोच हा वीर कर्ण मिहांनें मारलेल्या शार्दूलासारखा किंवा एका मत्त मातंगानें ठार केलेल्या दुसऱ्या मातंगासारखा अर्जुनानें रणांत पाडला ! हे नर-श्रेष्ठा, युद्धांत निघन पावलेल्या ह्या शूराच्या स्त्रिया पहा त्याच्या भोंवती गराडा घालून केंस अस्ताव्यस्त सोडून रडत बसल्या आहेत ! कृष्णा, ज्याच्या भीतीमुळें धर्मराज युधिष्ठिराचें मन सदोदीत उद्विग्न असे, व तेरा वर्षपर्यंत ज्याच्या चित्तेमुळें त्याला धड झोपही आली नाही, जो इंद्राप्रमाणें रणांत शत्रूस हार जात नसे, युगांतीच्या अग्नीसारखें ज्याचें तेज, आणि हिमालय पर्वताप्रमाणें ज्याचें धैर्य, तो हा वीर कर्ण कोरवांस आधारभूत होऊन, हे माधवा वातभग्न वृक्षाप्रमाणें जमीनीवर मरून पडला आहे ! कृष्णा, ही पहा कर्णाची पत्नी व वृषमेनाची माता दीनविलाप करीत व रडत धरणीवर पडली आहे ! बाकर्णा, खरोखर हा गुरु परशुरामाचा शापच तुला भोंवला—त्यामुळेंच भूमीनें चाक गिळले आणि मग रणांत आहवशोभी

पार्थानें बाणानें तुझे मस्तक उडविलें ! हाय हाय !  
ही सुपेणाची माता सुवर्णकवच घातलेल्या ह्या  
महाधैर्यवान् व महाबलाढ्य कर्णाकडे पाहून  
अत्यंत आते होऊन रुदन करतां करतां बेशुद्ध  
पडली ! मांसभक्षक पशुपक्ष्यांनी या महा-  
त्म्याच्या अंगाचे लचके तोडून तोडून ह्याला  
अगदी क्षीण केलें आहे, तथापि कृष्णचतुर्द-  
शीच्या चंद्राप्रमाणें अद्यापही आत्मांस ह्या-  
कडे पहावत नाही ! ती पहा कांहीं वेळानें पुनः  
सावध होऊन उठली आणि पुत्रवधानें तस  
झालेली ती दीन माता कर्णाचें मुख हुंगीत पुनः  
हळूहळू विलाप करीत आहे !

### अध्याय वाविसावा.

—:—

#### गांधारीचा जयद्रथाविषयी विलाप !

गांधारी ह्मणाली:—भीमसेनानें पाडलेल्या  
त्या शूर अवतिपतीला पुष्कळ भाऊबंध असतां-  
ही एखाद्या निराश्रिताप्रमाणें ह्याला कोल्ही-  
कुर्ची खात आहेत ! हे मनुमुदना, शूरांस  
निर्दालून शेवटीं रक्तानें माखलेला असा हा  
वीरशय्येवर पडाला आहे बघ. ते पहा कोल्हे,  
करकेंचि व दुसरे पुष्कळ प्रकारचे मांसाहारी  
प्राणी त्याला इकडून तिकडे ओढीत आहेत !  
कृष्णा, कालाचा फेरा कसा आहे पहा ! घन-  
घोर संग्राम करणाऱ्या व वीरशय्येवर पडुड-  
लेल्या ह्या शूर अवतिनाथासभोंवती बसून  
त्याच्या स्त्रिया धाय मोकलीत आहेत. तसाच,  
कृष्णा, हा थोर अंतःकरणाचा महाधनुर्धर  
प्रतीपपुत्र बाल्हीक एका भलानें गतप्राण होऊन  
निजलेल्या वाघासारखा आडवा झाला आहे  
पहा ! हा गतप्राण झाला आहे तथापि याच्या  
चेहऱ्यावर पौर्णिमेच्या उदयोन्मुख पूर्णचंद्रा-  
प्रमाणें फारच तेज खेळत आहे. पुत्रशोकांनं  
अतिसंतप्त झालेल्या व, प्रतिज्ञा पाळणाऱ्या

पार्थानें इकडे रणांत हा जयद्रथ लोळविला  
आहे. या जयद्रथाच्या रक्षणास अकरा अशौ-  
हिणी सैन्य होतें, परंतु तेवढ्याचाही भेद  
करून त्या महावीरानें यास ठार केलें ! हे  
जनार्दना, सिंधुसौवीराधिपति, अत्यंत गर्विष्ठ  
व मनस्वी अशा या जयद्रथास कोल्ही व  
गिधाडें कीरे भक्षण करीत आहेत ! हे अच्युता,  
याच्या भार्या याचें रक्षण करीत आहेत तरी  
त्यांना भिववून ही याच्या खोल बेंबीचे जवळ-  
चा भाग ओढीत आहेत ! कांबोज व यवन  
देशाच्या स्त्रिया या महाबलाढ्य सिंधुसौवीर-  
राजाचें रक्षण करीत त्याच्याभोंवती बसल्या  
आहेत ! हे जनार्दना, जेव्हां हा द्रौपदीला  
घेऊन केकयांसह पळाला, तेव्हांच याला पांड-  
वांनीं मारणें योग्य होतें; परंतु आपली बहीण  
दुःशला इकडे पाहून व तिला मान देऊन  
त्यांनीं ह्याला तेव्हां सोडलें. मग, कृष्णा,  
आजच हे पांडव दुःशलेला कसे विसरले बरे !  
आज ते तिला पुनः कां मान देत नाहीत !  
ही पहा माझी मुलगी बाला दुःशला दुःस्वानें  
विलाप करीत व पांडवांच्या नांवानें आक्रोश  
करीत ऊर बडवून घेत आहे ! कृष्णा, माझी  
मुलगी विधवा झाली आणि सर्व सुनांचेही नवरे  
मेले, यापरतें मला अधिक दुःख कोणतें व्हायचें  
गहिलें ! हाय हाय ! ही पहा दुःशला भर्त्याचें  
मस्तक न सांपडल्यामुळें इतस्ततः धावत आहे !  
हिचा शोक व भीति हीं पार नष्ट झाली आ-  
हेत. अभिमन्यु चक्रव्यूहांत शिरला असतां ज्यानें  
सर्व पुत्रवत्सल पांडवांना अडवून धरलें, तो  
वीर जयद्रथ पुष्कळ सैन्याचा फडशा पाडून  
स्वतःही मृत्युवश झाला. त्या मातंगाप्रमाणें  
उन्मत्त व अत्यंत दुर्जय वीराला वेढून त्या  
चंद्रमुखी स्त्रिया सारखा आक्रोश करीत आहेत;  
हाय हाय !

## अध्याय तेविस्सावा.

—:०:—

### गांधारीचा भीष्मद्रोणादिकांविषयीं विलाप.

गांधारी ह्मणते:—बा केशवा, हा प्रत्यक्ष नकुलाचा मामा शल्य येथें मरून पडला आहे. ह्याला तर, बाबा, धर्मज्ञ धर्मराजांनैच लढाईत मारलें! हे पुरुषर्षभा, जो सदासर्वदा प्रत्येक गोष्टीत तुझी बरोबरी करूं पहात असे, तोच हा महाबली मद्राज येथें गतप्राण होऊन निजला आहे! बा कृष्णा, यानें युद्धांत कर्णाचें सारथ्य करीत असतां पाडवांचा जय व्हावा म्हणून कर्णाचा तेजोवध केला, तस्मात् धिःकार असो याला! कृष्णा, याचें हें पद्मपत्राप्रमाणें हिरव्या रंगाच्या डोळ्यांनीं युक्त, पूर्णचंद्रासारखें शोभिवंत व अगदीं व्रणहीन मुखकमल कावळे टोंचीत आहेत! कृष्णा, ह्या सुवर्णगौराची तोंडांतून बाहेर पडलेली ही तप्तकांचनासारखी लाल जीभ पक्षी भक्षीत आहेत! युधिष्ठिरानें मारलेल्या या सभेंत ब्रलकणाच्या मद्राजासभेंवतीं त्याच्या कुलस्त्रिया रडत बसल्या आहेत. झिरझिरीत पातळें नेसलेल्या ह्या क्षत्रियस्त्रियांनीं नरश्रेष्ठ शल्याजवळ कसा हलकळोळ चालविला आहे! पंकांत रुतलेल्या यूथपति गजाभेंवतीं तरुण हत्तिणी जमाव्या त्याप्रमाणें ह्या स्त्रिया निधन पावलेल्या शल्याला चोहोंकडून गराडा देऊन बसल्या आहेत! हे वृष्णिनंदना, शरणांगतांस अभय देणाऱ्या ह्या शूर शल्याकडे पहा—बाणांनीं याचीं खांडेकें झालीं अमुन वीरशय्या जी समरभूमि तिजवर हा पडुडला आहे! तसाच पलीकडे हा अंकुश धेऊन हत्तीवर बसणारा व डोंगराळ प्रदेशांत राहाणारा प्रतापी व श्रीमान् भगदत्त राजा भूतलावर आडवा झाला आहे! ह्याची ती सुवर्णमाला मस्तकावर तशीच लटकत आहे. श्वापदांकडून भक्षिल्या जाणाऱ्या

ह्या वीराच्या केशांस ती कशी शोभवीत आहे पहा! कृष्णा, वृत्राशीं इंद्राचें युद्ध झालें त्याप्रमाणें ह्याशीं अर्जुनाचे अंगावर रोमांच उठविणारे फारच घनघोर युद्ध झालें. हा महाबाहु धनंजय पाथोशी लढून व त्यास अगदीं पुरेपुरे करून शेवटीं त्याच्या हातून पतन पावला! अहो! शौर्य व वीर्य ह्यांमध्ये ज्याच्या बरोबरीचा वीर सर्व पृथ्वीत कोणीच नाही, तो हा भीष्म रणांत भयंकर पराक्रम गाजवून असा शरशय्येवर पडला आहे! कृष्णा, ह्या निजलेल्या शांतनवाकडे दृष्टि दे! हा सूर्यासारखा तेजस्वी दिसत आहे,—जणू कल्पांतीं कालयोगें करून सूर्यच खाली पडला! ह्या वीर्यवंतांनै अस्त्रतेजांनै रणांत शत्रूंस तप्त करून सोडले; आणि, केशवा, सायंकाळच्या सुर्याप्रमाणें हा नरसूर्य सांप्रत हलके हलके अस्ताचलाचा मार्ग आक्रमीत आहे. कृष्णा, शूरसेवित अशा शय्येवर (शरतल्यावर) पडलेला व निधड्या छातीचा असा हा ऊर्ध्वरेता भीष्म अवलोकन कर! पूर्वीं भगवान् स्कंद शरवनांत निजला होता, तद्वत् हा भीष्म कर्णी, नालीक व नाराच बाणांचा उत्तम विछाना पसरून त्या बिनकापसाच्या विछान्यावर निजला आहे आणि गांडीवधारी अर्जुनांनै ह्याला ही तीन बाणांची उत्तम उशी करून दिलेली आहे! हे माधवा, पित्याची आज्ञा पाळण्यासाठीं ज्यांनै आमरण ब्रह्मचर्य व्रत आचरिलें, तो हा महाकीर्तिमान् व युद्धांत केवळ अप्रतिम असलेला शांतनव येथें शयन केला आहे! बाबारे, हा खरा धर्मात्मा व सर्वज्ञ आहे आणि ह्मणूनच इहपरलोक-विषयक सर्व सिद्धांतज्ञानाच्या बळानें त्यांनै मर्त्य असतांही अमराप्रमाणें अजून प्राण धारण केले आहेत! ज्यापेक्षां शांतनव भीष्म आज शरहत होऊन पडले आहेत, त्यापेक्षां संपूर्ण भूतलावर युद्धांत

खरी कृती, विद्वान् व पराक्रमी असा वीर कोणीच नाही ! माधवा, पांडवांनी विचारल्यावरून त्या धर्मज्ञ व सत्यवादी शूरानें आपणास रणांत कसा मृत्यु येईल हें स्वतः त्यांस सांगितलें ! धन्य त्या वीराची ! अहो, नष्टप्राय झालेला कुरुवंश ज्याने पुनः चांगला नांवारूपास आणला, तो महाबुद्धिमान् भीष्म-कौरवांसमवेत आज पराभूत झाला ! माधवा, हे देवासारखे देवव्रत भीष्माचार्य परलोकवासी झाल्यावर कुरुकुलांतील लोक धर्माधर्माविषयी कोणाची रे सहा घेतील ? कृष्णा, अर्जुनाचा व तसाच सात्यकीचा आचार्य आणि सर्व कौरवांचा श्रेष्ठ गुरु द्रोणाचार्यही येथें मरून पडला आहे बघ ! माधवा, चतुर्विध अस्त्रे जशीं त्रिदशेश्वर इंद्राला व महापराक्रमी भार्गवमाला माहीत आहेत, तशीच तीं सर्व द्रोणालाही अवगत होती ! अरे, पंडुपुत्र अर्जुनाला केवळ ज्याच्या प्रसादामुळे असा अद्भुत पराक्रम करण्याचें सामर्थ्य आलें, तो गुरु द्रोणाचार्य मरून पडला ना ? एवढीं अस्त्रे, पण त्यांनीं कांहीं त्याचें रक्षण केले नाहीं. कौरव ज्याच्या बलावर पांडवांस युद्धार्थ आह्वान करीत, त्या ह्या शस्त्रधराग्रणी द्रोणाचें शरीर बाणांनीं क्षतमय झालें आहे. जो वीर सेना दग्ध करूं लागला ह्याजने अग्नीप्रमाणें अखंड मंडलाकार गमन करी, तो द्रोणाचार्य निघन पावून ज्वाला शांत झालेल्या अग्नीप्रमाणें भूतलावर पडला आहे. माधवा, द्रोणाचार्याच्या धनुष्याची ती मूठ व हें हस्तावरण कसे अभंग आहे पहा. ह्याला बिलकूल धक्का लागला नाही; आणि हीं मृत द्रोणांच्या हातांत आहेत, तथापि एखाद्या जिवंत योद्ध्याच्या हातांत असल्याप्रमाणें दिसत आहेत. माधवा, प्रारंभी विश्वकर्त्या ब्रह्मदेवापासून वेद निर्माण होऊन सर्वांस प्राप्त झाले, त्याचप्रमाणें सांप्रत

काळीं येथील सर्व ब्राह्मणक्षत्रियांना चारही वेद व सर्व अस्त्रे ज्यापासून प्राप्त झालीं, त्या द्रोणाचार्यांचे हे वंदन करण्यास योग्य, ज्यांना बंदिजन नित्य प्रणाम करीत ते व शेंकडों शिष्य ज्यांवर मस्तकें ठेवीत असे पूज्य चरण कोल्हीं कीं रे ओढीत आहेत ! हे मधुसूदना, ती दुःखमूढ कृपी धृष्टद्युम्नानें ठार केलेल्या द्रोणाजवळ उदासवाणी बसली आहे बघ ! कृष्णा, पहा तिनें केंस मोकळे सोडले आहेत, मान खालीं घातली आहे, अत्यंत आर्त झालेल्या तिच्या डोळ्यांतून पाणी गळत आहे, व अशा प्रकारें ती आपल्या मृत पतीची— शस्त्रधराग्रणी द्रोणाचार्यांची उपासना करीत आहे व त्यांच्या अंगावरून हात फिरवीत आहे ! केशवा, धृष्टद्युम्नानें ज्याचें कवच बाणांनीं फोडलें आहे अशा त्या ह्या द्रोणाची भायरी ही जटिल व ब्रह्मचारिणी कृपी रणांगणांत पतीची सेवा करीत आहे ! ती पहा ती सुकुमारी यशस्विनी अत्यंत आतुरतेनें पतीच्या प्रेतकार्याच्या खटपटीला लागली. माधवा, हे जटिल ब्रह्मचारी धनुष्ये, शक्ति व रथांचे मोडकेतोडके भाग यांची चिता रचीत आहेत. ह्या सामवेद्यांनीं विधिपूर्वक अग्न्याधान करून व सर्व बाजूंनीं चिता चांगली पेटवून तीवर द्रोणास निजविलें; आणि आतां ते तीन सामें ह्यात आहेत ! नानाप्रकारचे बाण व इतर पदार्थ ह्यांच्या योगानें हे अमिततेजस्वी आचार्यांचें दहन करून कोणी त्यांची प्रशंसा करीत आहेत, कोणी रडत आहेत, आणि दुसरे कित्येक मरणकालोचित तीन सामांनीं

१ वेर्णाला फणी वगैरे न लावल्यामुळे जिचे केंस जटेसारखे बुंतेले आहेत अशी. २ ग्रहस्थाश्रमी श्री-पुरुषांना योग्य काळी संभोग केला असतां ते त्यांचे ब्रह्मचर्यच होय अशा अर्थाने ब्रह्मचारिणी हे विशेषण योजिलें आहे. यापासून 'व्रताचरणी' एवढाच तात्पर्यार्थ ध्यावयाचा.

त्यांना स्तवीत आहेत ! ते पहा द्रोणाचे ब्राह्मण  
जातीचे सर्व शिष्य चितेला अपसव्य घालून  
व कृपीस पुढे करून गंगेच्या अनुरोधाने चालले !

## अध्याय चोविसावा.

—:०:—

### गांधारीचा भूरिश्रव्याविषयी विलाप !

गांधारी म्हणाली:—माधवा, हा जवळच  
युयुधाने पाडलेला सोमदत्ताचा पुत्र अव-  
लोकन कर. ह्याला पक्षी अनेक प्रकारे इजा  
देत आहेत. जनार्दना, हा इकडे पुत्रशोकाने  
संतप्त झालेला सोमदत्त राजा धनुधर युयुधा-  
नाची जणू निर्भर्त्सनाच करीत आहे असे  
भासते. ही शोकसागरांत बुडालेली भूरिश्रव्याची  
माता आपल्या पतीचे—सोमदत्ताचे—आश्वासन  
करीत आहे. “महाराज, हा भरतकुलाचा घोर  
संहार, ही कौरवांची भयंकर कत्तल, आणि  
हा सर्व प्रलय पाहाण्यास आपण सुदैवाने जिवंत  
नाहीं. उदार हस्ताने हजारों मोहोरा धर्म  
करणारा व अनेक यज्ञ करणारा हा आपला  
यूपकेतु पुत्र मृत झाल्याचे पाहाण्यास आपण  
मागे राहिला नाही, ही आपली पूर्वपुण्याई  
होय. महाराज, आपण मोठे सुदैवाचे, म्हणून  
सागरांत बुडत असतां तडफडणाऱ्या हंसी-  
प्रमाणे या रणसागरांत आक्रोश करणाऱ्या  
मुनांचे घोर व दीर्घ विलाप आपणास ऐकू येत  
नाहींत. प्राणेश्वरा, ज्यांचे पुत्र व पति निधन  
पावले आहेत, अशा त्या आपल्या स्नुषा  
एका वखाने अर्धवट अंग झाकून व आपले  
काले-भोर केश अस्ताव्यस्त सोडून इतस्ततः धावत  
आहेत. अहो, अर्जुनाने ज्याचा हात छेदला  
त्या आपल्या नरव्याघ्र पुत्राला श्वापदे भक्षीत  
आहेत, हे सुदैवाने आपणास दिसत  
नाहीं ! हा रणांत मरून पडलेला शल व  
भूरिश्रवा आणि तशाच ह्या सर्व मुना देवयो-

गांने आपणास पहाव्या लागत नाहीत ! नाथा,  
महात्म्या यूपकेतूचे ते सुवर्णछत्र रथोपस्थावर  
मोडून तोडून पडलेले पाहाण्यास सुदैवाने  
आपले डोळे मिटलेले आहेत ! अहो, सात्य-  
कीने मारलेल्या भूरिश्रव्याच्या ह्या असितेक्षणा  
स्त्रिया भर्त्यासभोंवतीं बसून शोक करीत आहेत.  
पतिशोकाने व्याकूळ झालेल्या ह्या अतिशय  
विलाप करून भूमीवर बेभुद्ध पडत आहेत !  
हाय हाय ! त्यांस पाहून माझे हृदय कसे  
उलत आहे. तो बीभत्सु ह्यणजे अति शुद्ध  
कर्म करणारा ना ? मग त्याने हे असे अध-  
र्माचे व अत्यंत बीभत्स कृत्य कसे केले ? हा  
यजनशील वीर दुसऱ्याशीच लढण्यांत गुंतला  
असतां त्याने याचा बाहु कसा तोडला ? हाय  
हाय ! सात्यकीने तर याहूनही अधिक पाप-  
कर्म केले. कारण तो शुद्धात्मा प्रायोपवेशन  
करून बसला असतां त्याने त्यास प्रहार केला !  
हे धार्मिक सोमदत्ते, अरे माझा बाळा, तुला  
दोघांनीं मिलून मारले, त्यापेक्षां खरोखर तू  
अधर्मानेच निधन पावलास. मंडळीत चांगल्या  
चांगल्या गोष्टी निघाल्या असतां किंवा सभां-  
मध्ये वादविवाद निघाला असतां ह्या पापमय  
व दुष्क्रीतिकारक कृत्याचे सात्यकि स्वतः तरी  
कसे समर्थन करील ? ”

माधवा, यूपध्वज भूरिश्रव्याच्या ह्या स्त्रियाही  
असाच टाहो फोडीत आहेत. ही पहा त्या  
सौमदत्तीची पट्टराणी—हिची कमर केवळ एक  
हातभर बारीक आहे, ही भर्त्याचा तो हात  
मांडीवर घेऊन फारच आक्रांत करीत आहे—  
“अहो, शत्रूस ठार करणारा व मित्रांस अभय  
देणारा हाच तो हात ! ह्याच हाताने हजारों  
गाई दान केल्या आणि क्षत्रियांचा अंत केला !  
कमरपट्टा वर ओढणारा, पीनस्तनांचे मर्दन कर-  
णारा, नाभी, ऊरु व जघन यांस स्पर्श कर-  
णारा आणि वसनग्रंथी सोडणारा हाच तो

हात ! हाय हाय ! महाराज, आपण दुसऱ्याशी लढण्यांत गुंग असतां, थोर कर्मे करणारा ह्मणून टेंभा मिरविणाऱ्या पार्थानें प्रत्यक्ष श्री-कृष्णासमक्ष हा हात छेदिला ! हे जनार्दना, सभामध्ये किंवा मंडळींत निघालेल्या गोष्टीत ही गोष्ट तूं कशी साजरी करशील ? किंवा स्वतः अजून तरी हिचें काय समर्थन करील ? ”

कृष्णा, अशी निंदा करून ती वारांगना स्तब्ध बसली आहे आणि मुनेबद्दल शोक करावा तद्वत् तिच्या सवती तिजविषयी शोक करीत आहेत ! माधवा, गांधार देशाचा राजा बलवान व सत्यपराक्रमी शकुनि हा येथें पडला आहे ! ह्याला सहदेवानें ह्मणजे भाच्यानें मामास ठार मारिलें ! अहो, सुवर्णाच्या दांड्यांची दोन मोरचेलें ज्यावर वारिलीं जात असत, त्याच येथें निजलेल्या वीरास आज पक्षी आपल्या पंखांनीं वारा घालीत आहेत ! जो मायावी शेंकडों हजारों सोंगें करी, त्या या शकुनीच्या सर्व माया पंडुपुत्राच्या प्रतापानें दग्ध झाल्या ! ह्या कपटपटनें पूर्वीं सभेंत धर्मराजाचें अफाट राज्य हिरावून घेतले, परंतु येथें तोच आज आपलें जीवित हरवून बसला ! कृष्णा, ह्या शकुनीसभोंवतीं शकुंत ( पक्षी ) घिरट्या घालीत आहेत. माझ्या पुत्राच्या विनाशास हेतुभूत झालेलें कपट ह्यानेच त्याम पदविलें; आणि यानेंच पांडवांशीं हें हाडवें पाडलें, कशासाठी ? तर माझ्या पुत्रांच्या व गणगोतांसह आपल्या स्वतःच्या नाशासाठीं ! प्रभो कृष्णा, माझ्या पुत्रांना स्वर्गनिर्जित पुण्यलोक प्राप्त झाले आहेत व हा दुष्टही तेथेंच गेला आहे. तेव्हां, हे मधुसूदना, तेथें तरी हा दुर्बुद्धि माझ्या सरळ बुद्धीच्या मुलांस भावांशीं वेंच करावयास न लावील यास काय बरें उपाय करावा ?

## अध्याय पंचविंसावा.

—:०:—

### गांधारीचा शोकातिरेक !

गांधारी ह्मणाली:—माधवा, शालजोडी-वर पडावयास योग्य असा हा वृषस्कंध दुर्धर्ष कांबोज मरून धुळीत पडला आहे बघ ! ह्याचे हे चंदनदिग्ध हात रक्तानें माखलेले पाहून अति दुःखित झालेली त्याची भार्या कशी करुणा भाक्रीत आहे ऐक—“ पूर्वीं ज्यांची मिठी पडली असतां तीत किती वेळ असलें तरी माझी तृप्तताच होत नसे, तेच हे परिघांसारखे बाहु ! ह्यांच्या अंगुली व तळहात किती सुंदर आहेत. प्राणेश्वरा, आपल्यावांचून माझी कशी अवस्था होईल ! ”

कृष्णा, ही अनाथ व बंधुहीन झालेली मधुर-भाषिणी बघ कशी थरथर कांपत आहे ती ! उन्हांत चक्राकणाऱ्या विविध रत्नमालांप्रमाणेंच ह्या क्ळांत स्त्रियांचेही तेज बिलकूल उतरत नाही. मधुसूदना, सन्मुख शयन केलेल्या ह्या कालिमाकडे दृष्टि फेंक. ह्याच्या दोन्ही हातांना लखलखीत अंगद बांधिलेले आहेत. तसाच, जनार्दना, इकडे हा मागधांचा अधिपति जय-त्सेन पहा ! अत्यंत विह्वल झालेल्या स्त्रिया त्याला सर्व बाजूंनी घेरून आक्रोश करीत आहेत. ह्या विशालाक्षीचे आवाज फारच गोड आहेत. मनमोहक व कर्णमधुर आवाजांनीं ह्या माझ्या मनाला जणूं मोहच पाडीत आहेत. कृष्णा, ज्यांचीं वस्त्रें व अलंकार अस्ताव्यस्त झाली आहेत, व ज्या शोककर्षित होऊन धाय मोकलीत आहेत, अशा ह्या मागधास्त्रिया—पसर-लेले उत्तमोत्तम बिछाने सोडून जमीनीवर कीं पडल्या आहेत ! तो कोसल देशाचा अधि-पति राजपुत्र बृहद्बल पहा. त्याच्या भार्या आपल्या पतीच्या शवभोंवतीं जमून पृथक् पृथक् विलाप करीत आहेत ! सौभद्रानें जोरानें



फेंकलेले जे बाण ह्याच्या शरीरांत खोल रुतून बसले आहेत, ते ह्या अस्वस्थचित्तानें उपटीत आहेत. असें करीत असतां दुःखानें ह्यांस वरचेवर घेरी येत आहे ! माधवा, ह्याचीं सर्व-सुंदर मुखें सूर्याच्या उन्हांनें व परिश्रमामुळें कोमजलेल्या कमलांसारखीं म्लान दिसत आहेत व येथेंहे सुंदर अंगदल्यालेले धृष्टद्युम्नाचे शूर पुत्र द्रोणांच्या हातून मरून पडले आहेत ! हे अगदीं लहान लहान शिशु सोन्याच्या दागिन्यांनीं जसे भरलेले आहेत. रथ हें ज्याचें स्थंडिल, धनुष्य हीच ज्याची ज्वाला, आणि बाण, शक्ति, गदा वगैरे ज्याचीं इंधनें, अशा त्या द्रोणरूप अग्नींत सांपडून हे टोळांसारखे होरपळले ! तसेंच हे सुंदर अंगदें घातलेले केकय देशचे राजपुत्र पांचही भाऊ द्रोणांच्या हातून सन्मुख पतन पावले. ह्या वीरांचीं सुवर्णाचीं चिखलें उन्हांनें तापली आहेत; आणि तेणेंकरून, माधवा, हे जणू पेटलेले अग्निच आपल्या तेजानें रणभूमि प्रकाशमान करीत आहेत ! माधवा, प्रचंड सिंहानें अरण्यांत मारलेल्या महागजाप्रमाणें द्रोणानें युद्धांत ठार केलेला हा द्रुपद राजा पहा ! ह्या पंचालराजाचें पुंडरीकासारखें स्वच्छ व निर्मल छत्र शरद्वृत्तील चंद्राप्रमाणें फारच शोभत आहे ! वृद्ध द्रुपदाला दग्ध करून ह्या त्याच्या खिन्न स्त्रिया व मुना त्यास अपसव्य प्रदक्षिणा घालून निघाल्या बघ ! द्रोणानें यमलोकी पांचविलेल्या शूर चेदिपति धृष्टकेतूचें प्रेत त्याच्या दुःखानें भांबावलेल्या स्त्रिया उचलून नेत आहेत ! मधुसूदना, ह्या महावीरानें द्रोणाचें अख भग्न केलें; आणि नंतर हा नदीप्रवाहानें उन्मळून पडलेल्या वृक्षाप्रमाणें हाणामारींत मृत्यु पावला ! हा चेदिपति धृष्टकेतु ह्मणजे मोठाच शूर महारथी—हा हजारों शत्रूस मारून रणांत पडला ! हृषीकेशा, सैन्यबांधवांसह हा

मरून गेला असून सध्या पक्षी ह्यास टोंचीत आहेत व स्त्रिया त्याच्याभोंवतीं जमल्या आहेत. हा दाशार्हा राजाच्या मुलीचा मुलगा. ह्या चेदिराजाच्या थोर थोर स्त्रिया ह्या सत्य-पराक्रमी वीरास अंकावर घेऊन रुदन करीत आहेत. हृषीकेशा, धृष्टकेतूच्या मुलाचें सुंदर मुख मनोहर कुंडलांनीं कसें शोभत आहे पहा. ह्याचे तर द्रोणानें बाणांनीं अनेक तुकडे उडविले आहेत. ह्या पितृभक्तानें समरांगणांत शत्रूंशीं लढत असतांचसें काय—पण अद्यापही पित्यास सोडलें नाहीं ! मधुसूदना, माझा नातू लक्ष्मण असाच आपल्या पित्याच्या—दुर्योधनाच्या अगदी पाठीशीं असे ! माधवा, हिंवाळ्याचे शेवटीं वाऱ्यानें मोडलेल्या प्रफुल्ल शालवृक्षासारखे हे अवतीचे विद्वानुविंद येथें पडले आहेत, यांकडे अवलोकन कर. यांचे अंगद व चिखलें सोन्याचीं आहेत; यांचे हातांत खड्ग व धनुर्बाण तसेच आहेत; यांचे डोळे वृषभांच्यासारखे टपोरे असून यांच्या गळ्यांत लखलखीत माळा आहेत; आणि अशा रीतीनें हे येथें निजले आहेत ! बा कृष्णा, तुझ्यासह पांचही पांडव—जे भीष्म, द्रोण, वैकतेन कर्ण, कृपाचार्य, दुर्योधन, अध्वत्यामा, सिंधुपति जयद्रथ, सोमदत्त, विकर्ण व शूर कृतवर्मा ह्यांच्या हातून जिवंत सुटले, त्यांस कोणापासूनही मरण नाहीं. अरे, ज्या नरश्रेष्ठांनीं शास्त्र-प्रभावानें देवांसही ठार करवें, ते हे वीर रणांत निधन पावले ! कालचक्रच फिरलें, दुसरे काय ? खरोखर, माधवा, देवाला म्हणजे कोणती गोष्ट अवघड आहे असें मुठीच नाहीं, कारण देवघशातू हे एवढाले शूर क्षत्रिय श्रेष्ठ दुसऱ्या क्षत्रियांच्या हातून मारले गेले ! बा कृष्णा, तुझा हेतु तडीस न जाऊन तूं पुनः उपप्लव्यास परतलास, तेव्हांच माझे हे कपटी व चपळ पुत्र निधन पावले ! शांतनव भीष्मांनीं.

व ज्ञानी विदुरानें तेव्हांच मला सांगितलें कीं, 'आपल्या पुत्राची माया धरूं नको,' त्यांचें तें भाकित खोटें कोटून होणार ! त्यानंतर थोड्याच दिवसांत माझे पुत्र भस्मसात् झाले !

### गांधारीचा श्रीकृष्णास शाप.

वैशंपायन सांगतात:—हे भारता, इतकें बोलतां बोलतांच गांधारीस शोकाचा झटका आला, त्याबरोबर दुःखानें तिचें देहभान व आत्मज्ञान लुप्त झालें, धैर्य गळालें, आणि तिनें धरणीवर अंग टाकलें ! तिच्या अंगाचा संताप झाला, गात्रें व्यथित झालीं, आणि शोकसागरांत निमग्न होऊन ती कृष्णास दूषणें देऊं लागली.

गांधारी म्हणाली:—अरे कृष्णा, पांडव व कौरव परस्पर दग्ध झाले; पण, जनार्दना, ते नाश पावत असतां तूं त्यांची काय म्हणून उपेक्षा केलीस ? तुझ्या अंगीं सामर्थ्य होतें, तुझ्या पदरीं पुष्कळ लोक होते, व पुष्कळ सैन्यही होतें. शिवाय तूं मोठा बहुश्रुत व चतुर असून दोहींकडे तुझ्या शब्दाला मान होता. तूं मनावर घेतास तर हें भांडण केव्हांच मिटलें असतें. पण, मधुसूदना, तूं ज्यापेक्षां कौरवांचा नाश होत असतां मुहाम जाणून-बुजून त्यांची उपेक्षा केलीस, त्यापेक्षां, हे महाबाहो, याचें तुला फळ मिळेल ! पतिसेवेनें मीं जें कांहीं थोडेंसें सुकृत जोडलें असेल, त्या दुर्मीळ सुकृताच्या योगानें तुज चक्र-गदाधराला मी शाप देतें, ऐक. ज्यापेक्षां

सगेसोयरे कौरवपांडव एकमेकांच्या हातून नाश पावत असतां, हे गोविंदा, तूं त्यांची उपेक्षा केलीस, त्यापेक्षां, तूंही आपल्या जात-भाईंचा वध करशील ! कृष्णा, आजपासून छत्तिसाव्या वर्षी—ज्याचे ज्ञातिबांधव, अमात्य व पुत्र निधन पावले आहेत असा तूं अनाथा-सारखा अगदीं अप्रसिद्ध व ज्याकडे कोणी दुकूनही लक्ष देत नाहीं असा वनांत संचार करीत असतां निंघमार्गानें निधन पावशील ! आणि ज्यांचे पुत्र व ज्ञातिबांधव मरून गेले आहेत अशा तुझ्या स्त्रियाही या भरतस्त्रियां-सारख्याच धरणीवर अंग टाकतील ! ”

वैशंपायन सांगतात:—तिचें तें भयंकर भाषण ऐकून तो उदारधी वामुदेव किंचित् हंसल्यासारखेंच करून देवी गांधारीस झणाला, “ हे क्षत्रिये, हें सर्व असें होणार म्हणून मला ठाऊकच आहे ! हें तूं पिष्टपेण मात्र केलेंस ! देवयोगानें वृष्णिही असेच नाश पावतील, यांत संशय नाही. ह्या वृष्णिसेनेस मारणारा माझ्या-वांचून दुसरा कोणीच नाही. हे शुभांगि, ते नरांनाच काय, पण दुसऱ्या देवदानवांनाही अवध्य आहेत; आणि ह्मणूनच यादव परस्प-रांच्या हातूनच नाश पावणार आहेत ! ”

राजा, दाशार्ह कृष्णाचे तोंडून असे शब्द निघतांच पांडव मनांत एकदम दचकले. ते अतिशय उद्विग्न झाले आणि त्यांस जीविताची आशा उरली नाही !



## श्राद्धपर्व.

—! \* !—

### अध्याय सव्विसावा.

—:०:—

#### और्ध्वदेहिक.

श्रीभगवान् ह्यणाले:—गांधारि, ऊठ ऊठ, शोकाकडे मनाची प्रवृत्ति करू नको. तुझ्याच, अपराधामुळे कौरव निधन पावले. कारण, ईर्ष्या बाळगणारा, अत्यंत अभिमानी व दुष्ट-बुद्धीचा जो पुत्र दुर्योधन त्याचा पुरस्कार करून तूच त्याच्या वार्डट आचरणास मान दिलास. दुर्योधन हा केवळ पाषाणहृदयी, वैराचा मूर्तिमंत पुतळा व वयोवृद्धांच्या आज्ञेस न जुमानणारा असा असून, तू त्याचा पाठ-पुरावा केलास. असें असतां ह्या आपल्या दोषांचें खापर माझ्या डोक्यावर कसे फोडूं पहातेस? शिवाय असें पहा कीं, मृत व नष्ट ह्यांबद्दल जो मागून शोक करीत बसतो, तो दुहेरी दुःख पावतो. नष्ट गोष्ट पुनः येत तर नाहीच; पण उलट दुःखानें दुःख वाढतें माव. अगे गांधारि, तू जरा विचार करून पहा—ह्या मर्त्यलोकांत ब्राह्मणस्त्री जो गर्भ धारण करते, तो तपोर्थाय ह्यणजे तप करण्यास योग्य असतो. तशीच धेनु नांगर ओढणारा, घोडी धावणारा, शूद्री दास, वैश्या गुरें वळणारा आणि तुझ्यासारखी क्षत्रिया राजकन्या वधार्थां गर्भ धारण करते. मुलगे मेले त्याबद्दल तुला एवढें वार्डट कां वाटतें? रणांत मरून जाण्यासाठीं तर क्षत्रिय जन्मास येतात !

वैशंपायन सांगतात:—वामुदेवानें पुनः केलेलें तें अप्रिय भाषण ऐकून, जिचे नेत्र शोकानें व्याकूल झाले आहेत अशी ती गांधारी स्तब्ध बसली. मग राजर्षि धृतराष्ट्र हा अवि-वेकापासून होणारें अज्ञानरूप तम आवरून

धर्मराज युधिष्ठिरास विचारूं लागला. तो ह्यणाला, 'हे पंडुपुत्रा, या सैन्यापैकी कोण-कोण जिवंत आहेत हें तर तुला माहीत असेलच. पण येथें एकंदर कितीजण मेले ह्याचें परिमाण तुला ठाऊक असल्यास तें मला सांग.' युधिष्ठिर सांगतो:—राजेंद्रा, ह्या संग्रामांत एकंदर सहासष्ट कोटि, एक लक्ष, तीस हजार लोक पडले.

यावर धृतराष्ट्र ह्यणाला:—हे पुरुषसत्तमा युधिष्ठिरा, ते वीर कोणकोणत्या गतीला गेले हें मला सांग. हे महाबाहो, तुला सर्व कांहीं समजतें अशी माझी समजूत आहे.

युधिष्ठिर सांगतो:—ज्यांनी मोठ्या हर्षानें घनघोर संग्रामांत शरीरें हवन केलीं त्या सत्य-पराकमी वीरांस अमरावतीच्या बरोबरीचे लोक मिळाले; जे कित्येक उदासीन चित्तानें मरणें भाग आहे ह्यणून लढत असतां रणांत पडले, ते गंधर्वांच्या मंडळींत मिसळले; समरांगणांत शत्रु आह्वान करीत असतांही तेथून जे तोंडें फिरवून पळूं लागले व पळतां पळतां पण शस्त्रप्रहारानें मरण पावले, ते गुह्यकामध्ये गेले; शत्रु खाली पाडीत आहेत, शक्ति क्षीण होत आहे, जवळ शस्त्र मुळीच उरलें नाहीं, व शत्रु तीक्ष्ण शरांनी सारखे जखमी करीत आहेत, अशा स्थितीतही जे क्षत्रधर्मपरायण महात्मे लज्जायमान होऊन रणांत शत्रुसन्मुख पतन पावले, ते ब्रह्मलोकीं जाऊन पांचले; याबद्दल मला मुळीच संशय नाहीं. त्याचप्रमाणें, राजा, जे येनकेनप्रकारेण रणांगणाच्या हद्दींत मरण पावले, ते सर्व उत्तरकुरुंत प्रविष्ट झाले !

१ दशायुतानामयुतं सहस्राणि च विशातः ।  
कोऽथः षष्ठिश्च षट्चैव ह्यस्मिन् राजन् मधे हताः ॥'  
असे मूळ आहे. परंतु मागे आदिपर्वांत जे अक्षो-  
हिणीचें परिमाण दिले आहे, त्याच्याशा याचा मेळ  
बसत नाहीं. शिवाय, ह्या श्लोकाचा पाठही बरोबर  
आहेसें दिसत नाहीं.

धृतराष्ट्र विचारतोः—वत्सा, असें सिद्ध पुरुषासारखे हें तुला कोणत्या ज्ञानबलानें सम-जतें ! हे महाबाहो, कांही हरकत नसेल तर तें मला सांग.

युधिष्ठिर सांगतोः—राजन्, आपल्या आज्ञे-प्रमाणें आह्मी पूर्वीं वनांत संचार करीत असतां तीर्थयात्राप्रसंगानें मला हा सिद्धानुग्रह झाला. देवर्षि लोमशाचें मला दर्शन घडलें आणि त्यांचे प्रसादानें मला अनुस्मृति व ही दिव्य दृष्टि प्राप्त झाली !

धृतराष्ट्र ह्मणालाः—हे भारता, आतां अनाथ व सनाथ अशा ह्या सर्वांची शरीरें तुह्मी विधिपूर्वक दहन करणार काय ! ज्यांचा कोणी-च संस्कर्ता नाही व जे आहिताग्निही नव्हत, अशांची फारच मोठी संख्या आहे. तेव्हां, बाबा, आपण थोडेजण कोणकोणाच्या दहन-क्रिया करणार ! वा युधिष्ठिरा, ज्यांना गरुड व गिधाडें जिकडे तिकडे ओढून नेत आहेत, त्यांना कोठवर शोधणार ? युधिष्ठिरा, त्यांना त्यांच्या त्यांच्या कर्मानुसारें मिळावयाची असेल ती गति मिळेल !

वेशंपायन सांगतातः—हे महाराजा जन-मेजया, कुंतीपुत्र युधिष्ठिराला धृतराष्ट्रानें असें सांगितल्यावर त्यानें दुर्योधनाचा पुरोहित सुधर्मा, धौम्य, सूतपुत्र, संजय, महाज्ञानी विदुर, कुरूकुलोत्पन्न युयुत्सु, आणि तसेच इंद्रसेन आदिकरून सर्व चाकर व सारथि यांस आज्ञा केली की, “तुह्मी ह्या सर्वांचीं प्रेतकार्ये करा, आणि एकही वीर अनाथाप्रमाणें तसाच पडून राहून कुंज नये, अशी तजवीज करा.” राजा मग युधिष्ठिराच्या आज्ञेप्रमाणें विदुर, संजय, सुधर्मा, धौम्य आणि ते इंद्रसेनप्रभृति भूय-यांनी चंदनागरूची व कालीयक चंदनग्री लांकडें, तूप, तेल, कर्पूरादि सुवासिक पदार्थ, मोठी मौल्यवान् रेशमी वस्त्रे आणि लांकांचे

मोठमोठे पुष्कळ ढीग जमविले; मोडके रथ व नानाप्रकारची आयुधें गोळा केली; आणि मोठ्या प्रयासानें त्यांच्या चिता रचून प्रथम मोठमोठे, व त्यांच्या मागून त्यांहून कमी योग्यतेचे, अशा क्रमानें त्यांनीं शांतचित्तानें शास्त्रोक्त-विधिपूर्वक त्यांचें दहन केलें. दुर्यो-धन राजा, त्याचे शंभर भाऊ, शल्य राजा, शल, भूरिश्रवा, राजा जयद्रथ, तसाच अभिमन्यु, दौःशासनि लक्ष्मण, पृथ्वीपति धृष्टकेतु, वृहत सोमदत्त, शंभरांहून अधिक सृजय, राजा क्षेमधन्वा, विराट व द्रुपद, पांचालपुत्र शिखंडी, पार्षत धृष्टद्युम्न, पराक्रमी युधामन्यु व उत्तमौजा, कोसलदेशचा राजा, द्रौपदीचे पुत्र, सौबल शकुनि, अचल, वृषक, भगदत्त राजा, पुत्रासहवर्तमान अमर्षी कर्ण, महाधन्वर् केकय, महारथी त्रिगर्त, राक्षसेंद्र वटोत्कच, बकासुराचा भाऊ राक्षसेंद्र अलंबुप, तलसंध राजा, हे व दुसरे हजारों राजे-ज्यांवर तुपाच्या धारा धरल्या आहेत अशे प्रदीप्त अग्नीत दग्ध केले. मग कित्येक महाम्यांचे पितृयज्ञ सुरू झाले. कित्येकांजवळ सां पठन होऊं लागलीं, आणि दुसऱ्या वित्येकांबद्दल शोक चालू झाला. तो साम-त्रांचाच घोष व तें स्त्रियांचें तें रुदन यांच्या-गानें त्या रात्रीच्या वेळीं प्राणिमात्रास उद्धि-ता प्राप्त झाली; व धडधडून पेटलेले ते वृमरहित प्रदीप्त अग्नि आकाशातील तुरळक अग्निानी आच्छादिलेल्या ताऱ्यांप्रमाणें शोभू लागले. यांशिवाय, नानादेशांहून गोळा झालेल्या ज्या लोकांचे कोणीच बारस तेथें नव्हते, त्यांच्या प्रेतांचे विदुरानें राजाज्ञे-वरून हजारों ढीग करविले, त्यांच्या समो-वती पुष्कळ लांकडें रचविलीं, आणि वर पुष्कळसें तूप ओतून त्या सर्वांचें दहन कर-विलें ! याप्रमाणें त्यांचा प्रेतसंस्कार करून

कुरुराज युधिष्ठिर धृतराष्ट्रस पुढें करून त्या-  
सह गंगेवर निघून गेला.

## अध्याय सत्ताविंसावा.

—:—

### कर्णगूढजत्वकथन.

वैशंपायन सांगतात:—जिचें पात्र अफाट  
असून आंत पुष्कळ डोह आहेत व पाण्याला  
अतिशय वेग आहे, तथापि जी प्रसन्न व  
शुभकारक असून जिचें जल पवित्र आहे,  
अशा त्या गंगेच्या कांठी पोंचल्यावर कुरु-  
क्षत्रियांनी आपले अलंकार, अंगांवरील शाली व  
बुरखे कोरे उतरून ठेवले; आणि मा पिते,  
भ्राते, पौत्र, आसजन, पुत्र, सासरे व पति ह्यांना  
सर्वांनी अत्यंत दुःखित होऊन रडत रडत उदक-  
प्रदान केलें; आणि त्या धर्मज्ञांनी इधमित्रां-  
सही जलांजलि दिले. याप्रमाणें त्या वीर-  
पत्नींनी उदकक्रिया केली तेव्हां गंगेचें जल  
अगदीं खळबळून जाऊन गढूळ झालें; आणि  
मग कांही वेळानें पुनः पहिल्यासारखें वाहूं  
लागलें. मग तें वीरपत्नींनीं भरलें, आन्धे-  
त्साहरहित व महोदधीसारखें विस्तीर्ण गंगातेर  
फारच उदासवाणें व भयाण दिसूं लागलें. भा  
हे महाराजा, कुंतीला एकाएकी शोकाच  
उमाळा आला आणि तीं रडत रडत मंद  
वाणीनें पुत्रांस म्हणाली, “अहो, तो रथयुध-  
पांचा नायक वीरलक्षणांनीं भरलेला महाधनुर्धर  
वीर—ज्याला अर्जुनानें रणांत जिंकिलें आणि,  
पांडवहो, ज्याला तुझी राधापुत्र म्हणून सम-  
जतां; जो प्रतापी वीर सेनेमध्ये सूर्यासारखा  
झळकत असे; अनुयायांसह तुझा सर्वांबरोबर  
जो पूर्वीं झगडला; दुर्योधनाच्या सर्व सेन्यांत  
जो ठळकपणें झळकत असे; पराक्रमांत ज्याच्या  
तोडीचा पृथ्वीत एकही राजा नव्हता; आणि  
ज्या शूराने येथें नित्य प्राणाचीही पर्वा न

वाळगतां निष्कलंक कीर्ति जोडली, तो सत्य-  
प्रतिज्ञा संग्रामांत पराङ्मुख न होणारा व थोर  
वागणुकीचा तुमचा भाऊ कर्ण ह्यास जलां-  
जलि द्या! तो तुमचा थोरला भाऊ आहे!  
जन्मतःच कवचकुंडलांनीं युक्त व दिवाकरा-  
मारखा तो तेजःपुंज वीर सूर्यापासून माझ्या  
ठिकाणीं जन्म पावला!”

जनमेजया, मातेचें तें हृदयद्रावक भाषण  
ऐकून पांडव कर्णाविषयी शोक करूं लागले  
व त्यांस ह्या बातमीनें फारच दुःख झालें. मग  
थोड्या वेळानें कुंतीपुत्र युधिष्ठिर सर्पाप्रमाणें  
दीर्घ निःश्वास सोडीत मातेस म्हणाला, “महा-  
रथी कर्ण म्हणजे—शर ह्या ज्याच्या लाटा  
आहेत, ध्वज हा ज्याचा भोंवरा आहे, त्याचे प्रचंड  
बाहु हेच ज्यांतील मकर आहेत; आणि ज्यांत  
तलशब्दाचा खळबळाट चालला आहे, असा  
प्रचंड डोहच होय. माते, ज्याच्या नाणांच्या  
टप्प्यांत धनंजयावाचून दुसरा कोणीच उभा  
राहूं शकत नसे, तो तुझा देवगर्भ पुत्र पूर्वींच  
कसा उत्पन्न झाला? ज्याच्या बाहुप्रतापानें आह्मी  
सर्व प्रकारें तप्त झालों, त्याला, वस्त्रानें अग्नि  
झांकावा तद्वत् तूं छपवून कसें ठेवलेस? तो  
आमचा भाऊ आहे हें पूर्वींच कां नाही सांगि-  
तलेस? आह्मी गांडीवधारी अर्जुनाच्या बलाचा  
आश्रय केला, त्याप्रमाणें कौरवांनी नित्य कर्णा-  
च्याच बळाची कांस धरली होती. एवढे सर्व  
कर्णावांचून दुसऱ्या कोणाच्याच बळाचा भरंवसा  
नव्हता. माते, तो सर्व शस्त्रधरांत अग्रेसर कर्ण  
आमचा वडील भाऊ झणतेस, तर लग्नापूर्वींच  
ते अद्भुतपराक्रमी वीर तूं कसा प्रसवलीस बरें?  
हस हाय! तूं हें वृत्त गुप्त ठेवून आमचा घात  
केतस! कर्णाच्या वधामुळें आह्मां सर्वांस  
फाच दुःख होत आहे. अभिमन्यूचा अंत  
झाला, द्रौपदीपुत्र मारले गेले, त्याचप्रमाणें

पांचाल व विशेषतः कौरव पतन पावले, या-  
मुळें माझे अंतःकरण पोळल्याप्रमाणें झाले  
आहे; परंतु या गोष्टीनें मला त्याच्या दत-  
गुणित अधिक दुःख होत आहे ! हल्लीं मला पत्त-  
कर्णाबद्दलचा शोक होत आहे. पण तो इतका  
की, जणू जिवंतपर्णीच अशीत पडल्याप्रमाणें  
मी शोकानें दग्ध होत आहे ! हाय हाय ! कर्ण  
आमचा भाऊ आहे हें आधी कळतें तर मग  
काय ? स्वर्गातीलही कोणती वस्तु आवांस  
दुर्लभ नसती; आणि कौरवांचा अंत करणारे  
हैं घोर युद्धही मग झालें नसतें ! ”

राजा, याप्रमाणें धर्मराज युधिष्ठिरानें  
पुष्कळ विलाप करून फारच आकांत केला.  
नंतर बऱ्याच वेळानें त्यानें कर्णाची उत्तर-  
क्रिया केला. कर्णाचें जन्मवृत्त कळतांच राणी

देण्यासाठीं तेथें पुढें बसलेल्या सर्व स्त्रिया  
एकाएकी फारच आक्रोश करूं लागल्या. मग  
ज्ञानसंपन्न युधिष्ठिरानें बंधुप्रेमानें कर्णाच्या  
स्त्रिया बुरख्यांसह तेथें आणविल्या आणि त्यां-  
सहवर्तमान धर्मशील उत्तरक्रिया केली. मग तो  
झणाला, “ ह्या कुंतीच्या लबाडीमुळें माझ्या  
हातून वडील भावाचा अंत झाला, त्यापेक्षां  
यापुढें स्त्रियांचे मनांत कांहीएक गोष्ट गुप्त  
राहाणार नाही ! ”

राजा जनमेजया, इतकें बोलून तो विकलें-  
द्रिय झालेला धर्मराजा गंगेतून बाहेर निघाला;  
आणि आपले भाऊ व इतर सर्व मंडळी यांसह  
तीरावर येऊन बसला.

